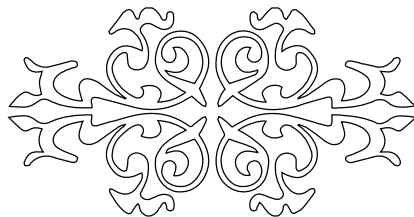


СВОД КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКОГО ФОЛЬКЛОРА

КЪАРАЧАЙ-МАЛКЪАР ФОЛЬКЛОРНУ СВОДУ



ГУМАНИТАР ИЗЛЕМЛЕНИ ИНСТИТУТУ –
«РОССЕЙ ИЛМУ АКАДЕМИЯНЫ КЪБАРТЫ-МАЛКЪАР ИЛМУ АРАСЫ»
ДЕГЕН ФЕДЕРАЛ ИЛМУ АРА» ДЕГЕН ФЕДЕРАЛ КЪЫРАЛ БЮДЖЕТЛИ ИЛМУ
УЧРЕЖДЕНИЯНЫ БЕЛЮМО

КЪАРАЧАЙ-МАЛКЪАР ФОЛЬКЛОРНУ СВОДУ

3-чю том

КЪАРАЧАЙ-МАЛКЪАР ЖОМАКЪ



Нальчик
2017

ИНСТИТУТ ГУМАНИТАРНЫХ ИССЛЕДОВАНИЙ –
ФИЛИАЛ ФЕДЕРАЛЬНОГО ГОСУДАРСТВЕННОГО БЮДЖЕТНОГО НАУЧНОГО
УЧРЕЖДЕНИЯ «ФЕДЕРАЛЬНЫЙ НАУЧНЫЙ ЦЕНТР «КАБАРДИНО-
БАЛКАРСКИЙ НАУЧНЫЙ ЦЕНТР РОССИЙСКОЙ АКАДЕМИИ НАУК»

СВОД КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКОГО ФОЛЬКЛОРА

ТОМ 3

КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКАЯ СКАЗКА



Нальчик
2017

Отв. ред. и автор вступ. ст. *Х.Х. Малкондуев*

Составление, перевод, комментарии – *Малкондуев Х.Х., Берберов Б.А., Гулиева (Занукова) Ф.Х., Гергокова Л.С.*

Рецензенты:

доктор филологических наук *Тетуев Борис Инзрелович*,
доктор филологических наук *Гузев Жамал Магомедович*

С25 Свод карачаево-балкарского фольклора. Том 3. Карачаево-балкарская сказка / отв. ред. Х.Х. Малкондуев. – Нальчик: Редакционно-издательский отдел ИГИ КБНЦ РАН, 2017. – 990 с.

Книга представляет собой III том серии «Свод карачаево-балкарского фольклора», являющийся наиболее полным двуязычным научным изданием карачаево-балкарских народных сказок. Сборник сопровождается обширной вступительной статьей и глоссарием. Композиция книги сформирована в соответствии с ее содержанием, по жанровому принципу и включает разделы, посвященные сказкам мифологическим, волшебным, волшебнo-героическим, героическим, о животных и бытовым. Все тексты снабжены справочным аппаратом и научно обоснованными комментариями.

Издание адресовано как специалистам-филологам, так и широкому кругу читателей.

Жуаплы редактор эм ал сёзлени автору *Малкъондуланы Х.Х.*

Жарашдырыу, орус тилге кёчюрюу, ангылатыула – *Малкъондуланы Х.Х., Берберланы Б.А., Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х., Гергёкъланы Л.С.*

Китапны рецензентлери:

филология илмуланы доктору *Теттуланы Инзрелни жашы Борис*,
филология илмуланы доктору *Гузеланы Магомедни жашы Жамал*

Къарачай-малкъар фольклорну своду. 3-чю том. Къарачай-малкъар жомакъ / жуаплы редактор Малкъондуланы Х.Х. – Нальчик: РИА КъМИЦ ГИИ-ни редакторлу-басма бёлюмю, 2017. – 990 б.

Китап «Къарачай-малкъар фольклорну своду» деген серияны къарачай-малкъар халкъ жомакъланы эм толу эки тилли илму басмаланыуу болгъан III томуду. Жыйымдыкъгъа уллу ал сёз бла сёзлюк (глоссарий) киргендиле. Китапны композициясы аны магъанасына, жанр жорукъгъа кёре къуралгъанды эм миф, сейир-тамаша, сейир-тамаша-жигитлик, жигитлик, жаныуарланы юсюнден, жашау-турмуш жомакълагъа аталгъан бёлюмлеге юлешинеди. Битеу текстле ангылатыула эм илму жаны бла тамаллы тюшондюрюле бла берилдиле.

Жыйымдыкъ филологияны тинтген алимлеге эм башха тюрлю окъуучулагъа деп жарашдырылгъанды.

Editor-in-chief and author of introductory articles *H.H. Malkonduev*

Compiling, translating, commenting – *Malkonduev H.H., Berberov B.A., Gulieva (Zanukoeva) F.H., Gergokova L.S.*

Reviewers:

Doctor of Philology *Tetuev Boris Inzrelovich*,
Doctor of Philology *Guzeev Jamal Magomedovich*

The set of karachay-balkarian folklore. T. 3. Karachay-balkarian fairy-tale / editor-in-chief H.H. Malkonduev. – Nalchik: Editorial-publishing department of IHR KBSC RAS, 2017. – 990 p.

The book represents the III volume of the series «The set of karachay-balkarian folklore», which is the most complete bilingual scientific edition of karachay-balkarian national fairy-tales. The collection is accompanied by extensive introductory article and a glossary. The composition of the book is formed in accordance with its content, by a genre principle and includes sections, dedicated to mythological, magical, magical-heroic, heroic, animalistic and household fairy-tales. All texts are provided with reference apparatus and scientifically proved comments.

The edition is addressed both to specialists-philologists, and the broad audience of readers.



БАШЛАРЫ ОГЛАВЛЕНИЕ

| | |
|--|-----|
| КЪБАРАЧАЙЛЫЛАНЫ БЛА МАЛКЪАРЛЫЛАНЫ ХАЛКЪ ЖОМАКЪЛАРЫ – Малкъондуланы Х.Х. | 13 |
| КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКАЯ НАРОДНАЯ СКАЗКА – Малкондуев Х.Х. | 33 |
| I. Миф жомакъла (Мифологические сказки) | 119 |
| 1. Уучу эр кишиле бла сабанчы тиширыула | 121 |
| Мужчины-охотники и женщины-хлеборобы | 122 |
| 2. Ай бла кюн тутулууну юсюнден | 124 |
| О затмении луны и солнца | 125 |
| 3. Кюн бла Ай | 128 |
| Солнце и Луна | 129 |
| 4. Чолпан жулдузгъа «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» деп нек айтхандыла? | 130 |
| Почему звезду Чолпан (Венеру) назвали «Звездой, продавшей свою мать за золотую шубу»? | 131 |
| 5. Тейри къылыч къалай болгъанды? | 133 |
| Как появилась радуга? | 133 |
| 6. Суу бла От | 135 |
| Вода и Огонь | 136 |
| 7. Намыс | 139 |
| Намыс | 139 |
| 8. Ырысхы юлешиу | 141 |
| Деление богатства | 141 |
| 9. Пулгура къаура | 142 |
| Стебель пулгура | 142 |
| 10. Къаргъа нек болгъанды къара? | 143 |
| Отчего ворона стала черной? | 143 |
| 11. Бизде зурнукла нек зашамайдыла? | 145 |
| Почему у нас не живут журавли? | 146 |
| 12. Итле сюек ючюн нек талашадыла? | 149 |
| Почему собаки грызутся из-за кости? | 149 |
| 13. Къоянны эрини нек жырыкъ болгъанды? | 151 |
| Почему рассеклась у зайца губа? | 152 |
| 14. Кёгюрчюн уяны къалай салгъанды? | 154 |
| Как голубь свил гнездо? | 155 |



| | |
|---|-----|
| II. Сейир-тамаша эм сейир-тамаша-жигитлик жомакъла (Волшебные и волшеббно-героические сказки) | 157 |
| 1. Жарыкъбий | 159 |
| Жарыкъбий | 179 |
| 2. Сют кёл | 200 |
| Молочное озеро | 209 |
| 3. Къолан атла | 219 |
| Пегие кони | 230 |
| 4. Эки суюген (I) | 242 |
| Двое влюбленных (I) | 246 |
| 5. Эки суюген (II) | 251 |
| Двое влюбленных (II) | 253 |
| 6. Къара-Гебенек | 256 |
| Кара-Гебенек | 262 |
| 7. Жашы бла атасы | 269 |
| Сын и отец | 272 |
| 8. Къаракёз | 277 |
| Каракёз | 279 |
| 9. Ындырбай улу Махамет | 282 |
| Ындырбаев Махамет | 283 |
| 10. Бай улу Бат | 285 |
| Баев Бат | 285 |
| 11. Бай улу Махамет | 287 |
| Баев Махамет | 288 |
| 12. Ёксюз кызчыкъны юсюнден жомакъ | 291 |
| Сказка о девочке-сиротке | 293 |
| 13. Ёксюз Фатиматчыкъ | 297 |
| Маленькая сирота Фатимат | 298 |
| 14. Ёксюз кыз | 301 |
| Девушка-сирота | 305 |
| 15. Фатимат | 310 |
| Фатимат | 314 |
| 16. Тюз ётмеги тюзге жетеди | 319 |
| Праведный хлеб праведному достается | 320 |
| 17. Юч къарындаш (I) | 322 |
| Три брата (I) | 331 |
| 18. Юч къарындаш (II) | 341 |
| Три брата (II) | 347 |
| 19. Сокъур Алиюкъ | 355 |
| Слепой Алиюк | 358 |
| 20. Худуйчукъ | 363 |
| Худуйчик | 364 |
| 21. Иш кёллю жаш | 367 |
| Трудолюбивый парень | 371 |
| 22. Этген ахшылыгъынг къайтыр | 376 |
| Сотворенное тобой добро возвратится | 381 |

| | |
|--|------------|
| 23. Саудюгерчини жашы | 387 |
| Сын торговца | 389 |
| 24. Жомакъ (Алтын чабакъ) | 393 |
| Сказка (Золотая рыба) | 394 |
| 25. Эльяс бла золоуцу | 396 |
| Эльяс и путник | 398 |
| 26. Къозучукъ | 402 |
| Ягненок | 404 |
| 27. Къошунчукъ | 408 |
| Кувшинчик | 409 |
| 28. Киши бла сарыуек | 412 |
| Мужчина и дракон | 414 |
| 29. Огъурсуз къатын | 417 |
| Злобная жена | 418 |
| 30. Алтын тюклю къуш | 420 |
| Птица с золотыми перьями | 422 |
| 31. Алтын къуш | 426 |
| Золотой орел | 431 |
| 32. Мырза улу Къанмырза | 437 |
| Мырзаев Канмырза | 442 |
| 33. Оруслан | 448 |
| Оруслан | 450 |
| 34. Къаратон хан | 454 |
| Бездетный хан | 461 |
| 35. Алмажаш | 469 |
| Алмажаш | 470 |
| 36. Асхат бла аны эгечи | 473 |
| Асхат и его сестра | 478 |
| 37. Баш сюек | 485 |
| Череп | 487 |
| 38. Алладин | 491 |
| Алладин | 494 |
| III. Жигитлик жомакъла (Героические сказки) | 499 |
| 1. Тазрет | 501 |
| Тазрет | 507 |
| 2. Къаракъундет улу Къундет | 514 |
| Каракундетов Кундет | 516 |
| 3. Таурух | 518 |
| Легенда | 523 |
| 4. Ногъай улу сокъур Ногъай-Неф | 529 |
| Ногаев слепой Ногай-Неф | 530 |
| 5. Ахшы-уланни хапары | 532 |
| История Ахшы-улана | 535 |
| 6. Жанакъайыт | 539 |
| Жанакайт | 539 |

| | |
|---|------------|
| 7. Жети жаланбыдыр | 541 |
| Семеро голопузых | 543 |
| 8. Ариу Кокуй | 547 |
| Красавица Кокуй | 549 |
| IV. Жаныуарланы юсюнден жомакъла (Сказки о животных) | 553 |
| 1. Аман акъыллы тюлкюню адам къалай алдады | 555 |
| Как человек обманул хитроумную лису | 556 |
| 2. Тюлкю бла тирменчи | 557 |
| Лиса и мельник | 561 |
| 3. Тирменчи бла тюлкючюк | 565 |
| Мельник и лисичка | 568 |
| 4. Тюлкюню хыйласы | 572 |
| Хитрость лисы | 573 |
| 5. Жарлы киши бла тюлкю | 576 |
| Бедняк и лиса | 577 |
| 6. Тюлкю бла Жандар | 579 |
| Лиса и Жандар | 581 |
| 7. Улакъ | 584 |
| Козленок | 585 |
| 8. Къарт бла айыу | 588 |
| Старик и медведь | 589 |
| 9. Къой бла эчки | 592 |
| Баран и козел | 593 |
| 10. Юч уручу | 596 |
| Три вора | 597 |
| 11. Ышаннгысыз юч нёгер | 600 |
| Ненадежные три друга | 602 |
| 12. Айыу, бёрю, тюлкю | 605 |
| Медведь, волк, лиса | 606 |
| 13. Жарлы киши бла бай киши | 609 |
| Бедняк и богач | 611 |
| 14. Жилиялла бла къыз | 614 |
| Змеи и девушка | 614 |
| 15. Айыу улучукъ | 616 |
| Сын медведицы | 617 |
| 16. Ахшылыкъ жерде къалмаз | 620 |
| Добро на земле не останется | 621 |
| 17. Ётюрюкню арты бир тутум | 623 |
| У лжи ноги коротки | 623 |
| 18. Эки къарындаш | 625 |
| Два брата | 627 |
| 19. Чыгырчыкъ бла тюлкю | 629 |
| Чыгырчик и лиса | 630 |
| 20. Тюлкю эм аны къонгуроуу | 633 |
| Лиса и ее колокольчик | 634 |

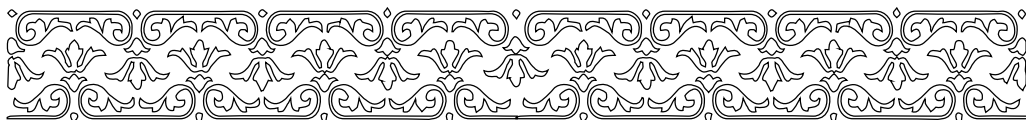
| | |
|---|-----|
| 21. Тюлкю хыйла | 636 |
| Хитрость лисы | 637 |
| 22. АлаMAT тайчыкь | 639 |
| Чудесный жеребенок | 643 |
| 23. Бит бла бюрче | 648 |
| Вошь и блоха | 649 |
| 24. Битчик бла бюрче | 650 |
| Вошка и блоха | 651 |
| 25. Чычханны жомагъы | 653 |
| Сказка о мышонке | 653 |
| 26. Албёрю бла Тутбёрю | 654 |
| Албёрю и Тутбёрю | 656 |
| 27. Бёрю бла кьой | 659 |
| Волк и баран | 659 |
| 28. Тюлкю бла бёдене | 660 |
| Лиса и перепелка | 661 |
| 29. Айыу, бёрю, кьызыл тюлкю | 663 |
| Медведь, волк и рыжая лиса | 664 |
| 30. Эки кьоншу | 667 |
| Два соседа | 667 |
| 31. Бёрю бла золоуцу | 669 |
| Волк и путник | 670 |
| 32. Ёгюз бла ит | 672 |
| Вол и собака | 673 |
| 33. Жёге-хан | 675 |
| Жёге-хан | 679 |
| 34. Тели Зондар бла амалчы тюлкю | 684 |
| Тупой Зондар и находчивая лиса | 687 |
| 35. Бугъа таначыкь | 692 |
| Бычок | 694 |
| 36. Къартцыкь бла тюлкю | 697 |
| Старик и лиса | 698 |
| 37. Тал терек бла сангыраукъулакь | 700 |
| Ива и гриб | 700 |
| 38. Улакь бла гылыу балачыкь | 702 |
| Козленок и крысенок | 703 |
| 39. Къоян бла борсукъчукь | 706 |
| Заяц и барсучок | 707 |
| 40. Къызыл жилин | 708 |
| Рыжая змея | 710 |
| 41. Къарт бла жилин | 712 |
| Старик и змея | 714 |
| 42. Бёрю, тюлкю, ат | 716 |
| Волк, лиса, лошадь | 717 |
| 43. Кюлтыпысчыкь | 719 |
| Лентяй | 720 |

| | |
|--|------------|
| 44. Къаргъа бла балалары | 722 |
| Ворона и ее птенцы | 723 |
| 45. Бёрю | 724 |
| Волк | 724 |
| 46. Улакъчыкъла | 726 |
| Козлята | 727 |
| 47. Кюнню чыкъгъанын ким алгъа кёрюр? | 728 |
| Кто первым увидит восход солнца? | 729 |
| 48. Киштик бла чычханла | 731 |
| Кот и мыши | 732 |
| 49. Нёгерчикле | 733 |
| Друзья | 734 |
| 50. Ичгичиле | 737 |
| Алкоголики | 737 |
| V. Жашау-турмуш жомакъла (Бытовые сказки) | 739 |
| 1. Оразай | 741 |
| Оразай | 743 |
| 2. Салима | 746 |
| Салима | 752 |
| 3. Мурат бла Абидат | 759 |
| Мурат и Абидат | 765 |
| 4. Зан улу Адилгерий | 772 |
| Адилгерий, сын Зана | 778 |
| 5. Табылгъан Саубар | 785 |
| Найденыш Саубар | 788 |
| 6. Хариб бла Санам | 791 |
| Хариб и Санам | 795 |
| 7. Ахшылыкъ унутулмайды | 800 |
| Добро не забывается | 801 |
| 8. Оюмсуз патчах | 804 |
| Неразумный царь | 805 |
| 9. Махмут бла Алакёз | 807 |
| Махмут и Алакёз | 809 |
| 10. Мараучу бла агъач киши | 813 |
| Охотник и лесной человек | 814 |
| 11. Жалчы бла бай | 815 |
| Батрак и богач | 816 |
| 12. Чомарт Къойчу | 818 |
| Щедрый Чабан | 822 |
| 13. Халал сомла | 827 |
| Праведные деньги | 830 |
| 14. Юсюп | 834 |
| Юсюп | 837 |
| 15. Акъылгъа тюшоннген | 841 |
| Уразумевший | 845 |

| | |
|--|-----|
| 16. Болжалчы келин | 850 |
| Сноха, которая все дела оставляла на потом | 850 |
| 17. Сангырау элде | 852 |
| В селении глухих | 853 |
| 18. Алтынларын тас этген кыызгъанч | 855 |
| Скупой, потерявший золото | 855 |
| 19. Уручуну суйген кызы | 857 |
| Любимая девушка вора | 859 |
| 20. Улутха | 863 |
| Взятка | 863 |
| 21. Орадада бла Жабагъы | 865 |
| Орадада и Жабаги | 866 |
| 22. Кёсе бла жашчыкъ | 868 |
| Кёсе и мальчик | 872 |
| 23. Билгичле | 878 |
| Ведуны | 881 |
| 24. Бузочу бла шайтан | 885 |
| Пастух телят и шайтан | 887 |
| 25. Уручуну жашы | 890 |
| Сын вора | 895 |
| 26. Залим | 902 |
| Залим | 905 |
| 27. Жарлыны айтханы чапыракъдан ётмез | 910 |
| Слово бедняка не имеет веса | 911 |
| 28. Тузлу хычинле | 913 |
| Соленые хычины | 915 |
| 29. Акъыллы кыыз бла юч соруу | 918 |
| Умная девушка и три вопроса | 918 |
| 30. Эки къарындаш бла бир башха жашчыкъ | 920 |
| Два брата и чужой мальчик | 920 |
| 31. Дуния былай турмаз | 922 |
| Мир не останется таким | 923 |
| 32. Патчах бла бир байны жалчысы | 925 |
| Царь и слуга одного богача | 926 |
| 33. Бир абыннган минг сюрюнюр | 929 |
| Один раз споткнувшийся тысячу раз пошатнется | 932 |
| 34. Атасыны жашына осуяты | 936 |
| Завещание отца сыну | 938 |
| 35. Тауукъ – айта билгеннге зауукъ | 941 |
| Курица – тому, кто умеет говорить, наслаждение | 942 |
| 36. Аллай тере да болады | 944 |
| Бывает и такое случается | 946 |
| 37. Кертме кесе | 948 |
| Грушевый кесе | 949 |
| 38. Киштик къуйругъу бла ойнагъанлай | 951 |
| Словно кошка хвостом вильнула | 953 |



| | |
|-------------------------|-----|
| 39. Батыр Зауур | 956 |
| Храбрый Заур | 957 |
| 40. Жюз ёгюрюк | 959 |
| Сто небылиц | 960 |
| 41. Юч эгеч | 962 |
| Три сестры | 963 |
| ГЛОССАРИЙ | 965 |
| Литература | 989 |



КЪАРАЧАЙЛЫЛАНЫ БЛА МАЛКЪАРЛЫЛАНЫ ХАЛКЪ ЖОМАКЪЛАРЫ

Къарачай-малкъар кёлден чыгъармачылыкъ кёп тюрлю жанрладан къуралгъанды. Аны санына жомакъла бла жомакъдан тышында проза (хапарла, таурухла, керти таурухла, мажюсюлюкден къалгъан таурухла, муслийман дин таурухла, кёз кёрген таурухла) киредиле. Ала барысы да бир бирлеринден жаратылыулары, суратлау сыфатлары, магъаналары, ёзегини къуралыу онглары бла айырмалыдыла.

Къарачай-малкъар халкъ жомакъланы, адетде бола келгенича, кеслерини тохташдырылгъан жорукълары бардыла: башлангы (зачин), андан ары барыуу (завязка), тилни энчи жорукълары (инверсияла) жомакъланы толу магъаналарын ачыкъларгъа себеплик этедиле.

Жомакъны къуралыуунда (композициясында) алгъын бек магъаналы жерни чыгъарманы аллында бек эртте заманладан келген башлангы (присказка) тутханды. Аны жашырын хыйны-халмаш (магия) тили барды, ол а, дунияны жашырын кючлерине ийнаныу бла байламлы болуп, тынгылагъан адамгъа хата, къыйынлыкъ жетмезча этилгенди. Сёз ючюн, бир жомакъны ал тизгинлеринде быллай тутхучлу сёзлери бардыла: *багуш, ит, жилин, макъа* бла *къаргъа*. Ала, жашырын хыйла (магия) кючню белгиси болуп, тынгылагъан адамланы кюйсюз, кёзге кёрюндеген кючледен сакъларгъа деп берилгендиле.

Халкъда жюрюген терминлеге кёре, жомакъла эрттеги жомакълагъа, нарт, миф, сейир-тамаша, батырлыкъны юсюнден, Насра-Хожаны юсюнден, чам, сабий, жаныуарланы юслеринден жомакълагъа юлешинедиле.

Къарачай-малкъар кёлден чыгъармачылыкъны юсюнден Къараланы А.И. [3; 4], Холаланы А.З. [13], Орусбийланы Ф.А. [12] жазгъандыла эмда фольклористиканы айныууна уллу къошумчулукъ этгендиле. Алай къарачай-малкъар жомакъланы жанр энчиликлери илмуда бюгюнлюкде да толу ачыкъланмагъанлай турадыла.

Кесибишни ишибизде биз жомакъ эпосда миф жорукълу, сейир-тамаша эм сейир-тамаша-жигитлик, батырлыкъ неда жигитлик, жаныуарланы юслеринден эм жашау-турмуш жомакъланы энчилейбиз эм алагъа къарарыкъбыз.

Энди халкъ жомакъланы терениракъ тинтейик.

Бизни оюмузгъа кёре, *мифле бла байламлы жомакъла* бек эрттегиле саналырчадыла. Таулу фольклорну тинтгенле (Къараланы А.И., Холаланы А.З., Орусбийланы Ф.А. эм бирсиле) аланы энчи жанрныча белгилемегендиле эм аллай санда къарамагъандыла.



Арт заманда орус эм кавказлы фольклористлени быллай жомакъланы энчи жанргъа чыгъаргъан эм ол ниетни тохташдыргъан бир къауум ишлери басмаланнганды. Биз аланы тюзге санасакъ, жангыллыкъ туююлбюз деген умутдабыз.

Миф жомакълада баш ниет къарам дуня къудурети къалай жаратылгъанын ачыкълаудады, алада мажюсюлюк бла байламлы ниетле баш жерни аладыла. Бу къауум чыгъармалагъа быллай къарачай-малкъар жомакъла киредиле: «Суу бла От» [5, 403–405], «Кюн бла Ай» [7], «Ашхам жулдуз» [6, 188–189], «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» [7]. Аланы энчи фикирлери адамланы бек эртте, мажюсюлюк бла байламлы заманда ниетлери, акъыл-оюмлары, дуньяда бола тургъан тюрлю-тюрлю затлагъа къарамларыдыла.

«Суу бла От» деген жомакъда композиция шартларын тохташдыргъан къыйынды. Чыгъарманы башланыуу алайды: ала бир бирге жолда адам халда тюбейдиле, саламлашадыла, сора Суу, Отха айланып: «Сен къайры жол алгъанса?» – деп сорады. Ол а: «Жипи жерлени къургъакъсытыргъа», – дейди. Суу а: «Кимни эсе да юйю кюеди да, аны ёчюлтюрге барама», – деп жууаплайды.

Алайда аланы араларында диалог халда берилген, къайсылары табийгъатда, къудуретде магъаналыракъ болгъаныны юсюнден даулаш чыгъады. Суу, Отха айланып: «Мен болмасам, жер къурур эди, зат ёсмез эди. Мен болмасам, нартох, будай, арпа, зынтхы, къудору, чёплеу болмаз эди. Ол заманда адамла не ашар эдиле, ала битмеселе, къурусала?» – дейди.

От а, анга айланып: «Махтанма! Алай болса, адамла картох, хыяр, харбуз, хууан, наша, помидор, быхы эм башха затла ашарла», – деп жууаплайды. Суу да, ол болмаса, зат ёсмезлигин билдиреди. От да, анга айланып: «Мен болмасам, къышда адамла сууукъдан къырылыр эдиле», – дейди.

Алай бла, чыгъармада диалог баш композиция халны алады. Ол мында 36 айтыудан (репликадан) къуралады, аладан да 25 Отну бла Сууну бирбирлерине берген эм къайтаргъан соруула бла жууапладыла.

Кёп даулаша, экиси да бир бирлери бла жау боладыла эм кюрешни башлайдыла. От тегерекни алады, Суу, ызындан жетип, аны ёчюлтеди. От юйлени кюйдюрюп тебирейди, Суу аны шошайтады, ёчюлтеди. Ахырында От Суугъа кесин атады, секиреди, алай къарыуу жетмейди анга хата этерге.

Чыгъарманы айтыууна кёре, кюрешде киши кишини хорлаялмайды. Хапарлауда жомакъчы экисинден къайсыны жанын тутханы ангылашынмайды.

Жомакъ тап, иги халда бошалады: экиси да, арып-талып, къарыусуз болуп, къайсы тюз бла терс болгъанларын ачыкъларгъа ётюп баргъан къарт кишини тилейдиле. Ол алагъа айланып: «Тохтагъыз! Экигизни да кёпдю кючюгюз, амалыгъыз да. Экигиз да жер юсюнде хата эм хайыр келтирирге боллукъсуз. Бюгюнден тебиреп, даулашыгъызны къоюгъуз!» – дейди.

Къайсы замандан бери таулу халкъны ичинде жюрюй болур бу чыгъарма? Аны алгъын, биринчи айтылгъан вариантын тапхан чексиз къыйын ишди. Ол болмазлыкъ затха ушайды. Алай а къоншу кавказ эм тюрк-монгол миллетлени кёлден чыгъармачылыкълары терен тинтилсе, ол зат бир къауум соруугъа жууап берлик эди.

«Кюн бла Ай» деген чыгъарма 1974 ж. жаланда бир вариантда Яникой элде жашагъан Мызыланы Адрай Жарахмат улудан жазылгъан эди. Адрай

айтханнга кёре, бу жомакъны ол 1920 жж. Думала элде Ахматланы, Мызыланы, Гемуланы, Къалабекланы къартларындан эшитген эди. Ол эл бурунгу таурухла, жырла, жомакъла иги сакъланган жер эди. Хапаргъа кёре, аны эски аты Дюгер-эл болгъанды.

Жомакъны башлардан алгъа назму халда ол быллай сёзле айтхан эди:

Кюндю, Айды жарытхан,
Къымылдагъанны жашатхан.
Кюндюз жылыуун ийген,
Кече жолну кёргюзтген.

Былайда керти да къыйынды айтыргъа, бу тизгинле эрттеден келген, халкъны кёлден чыгъармачылыгъында тохташдырылгъан жомакъны башлануумудула (присказкасы) неда назму халда жюрюген уллу чыгъарманы унутулгъан бир кесегимидиле? Бу соруугъа жууап берген тынч туююлдю, болсада, биз бу тизгинле присказкагъа къаршы келгенине ийнанабыз.

Жомакъны башланганы алайды: бурун, эртте заманлада Кюн бла Ай ариу адамла болгъандыла. Кюн – жаш, Ай а къыз эдиле. Ала бир бирлерин бек суйгендиле, алай бир бири къатларына бармай, сыфатларына узакъдан суймеклик кёз бла къарап болгъандыла. Алай бла къауум жыл ётеди.

Ол узакъ заманлада жер юсюнде кюндюз бла кече болмагъанды. Жерни жаланда жулдузла жарытхандыла, адамла уа, терекде не битсе, ашап, чабакъ тутуп, агъач жаныуарла ёлтюрюп, алай бла кечингендиле.

Жер юсюнде адамла кёпден-кёп болуп тебирейдиле да, сора, Итиль боюнуна жыйылып, Уллу Тейриден, Уллу Аллахдан тилейдиле: «Жерни кюндюз жарыкъ жарытырча, кече да анга азыракъ жарыкъ берирча, сен эт!» – деп. Адамланы тилеклерин къабыл эте, Уллу Аллах Кюн атлы жашны къудуретге эм жерге жарыкъ берген кюн этеди, ол ариу Ай атлы къызны уа кече жарыкъ ийген ай этип, экисин да кёкге чыгъарады. Ала да, ол замандан тебиреп, жерни жарытадыла, бери жарыкъ нюрлерин иедиле. Аланы жанлары эм адам акъыл-ниетлери сакъланганлай къалады.

Алай кёкде аланы суймеген эриши, огъурсуз Желмаууз жашап болгъанды, ол Кюнню бла Айны, не да этип, къурутургъа кюрешгенди. Ала жукълагъан заманны сакълап, аланы бирлерини къатларына барып, жутаргъа кюрешгенди. Ол заманда жерде къарангы болуп тебирегенди да, Беш да Таулу Элни адамлары, тышына чыгып, кёкге айландырып, ушкокла атхандыла, отла жандыргъандыла, темир тегенелени, челеклени туйгендиле, «Чоппа» деген тепсеуню тепсегендиле, Айны неда Кюнню уятхан этебиз деп.

Бир кесек замандан аланы биринден жарыкъ уруп тебирегенде, адамла къууангандыла, той этгендиле. Мажюсю диннге къуллукъ этгенле: «Биз Желмауузну хорладыкъ», – деген оюмгъа ийнангандыла.

Былайда сёз айны, не кюнню тутулгъаныны юсюнден барады. Ислам дин киргенден сора быллай адет-тёреле къарыусуздан-къарыусуз бола, ахырда уа унутуладыла, жаланда къартланы эслеринде къаладыла.

Мифле бла байламлы бу чыгъарманы бек сейир фикирлерине Айны бла Кюнню бир бирлери бла жашырын тюбешгенлери болады. Алай бу



тюрлю затла жомакъда иги ачыкъланмайдыла. Жомакъчы айтханнга кёре, аланы экисинден да айтхылыкъ, Нарт элине эмда саулай нарт миллетге кёп ахшылыкъла этген, эмегенле бла кюрешде алагъа бек болушхан тиширыу Сатанай тууады.

Чыгъарма сейир-тамаша миф фикирле бла бошалады: Кюн атлы жаш кюн къудуретинде, Ай деген тиширыу а ай къудуретинде жанларын береди, экиси да алайлада сайлайдыла ёллюк жерлерин.

Жомакъны айтыуунда төреде болгъан, аууздан-ауузгъа айтыла келген композиция жорукъла кеслерини жерлерин аладыла. Мында башланыу, ал билдириу фикирле, баргъаны, баш магъана тутхан жери, бошалгъаны, халкъ прозаны жомакъ жанрында жюрюген эм тохташдырылгъан ахыр айтымы («Биз аны кёрмегенча, ауруу, талау кёрмейик!») бардыла.

Биз оюм этгенге кёре, бу эки жомакъда айтылгъан фикирлени тамырлары терен заманладан мажюсюлюк ниет бла байламлы уллу маданиятлары болгъан Индиядан, Ирандан, Арап дуниясындан келеди эм бирси халкъланы фольклор чыгъармаларына заманнга кёре ётгендиле эм жерлерин алгъандыла.

Миф жорукъла бла айтылгъан халкъ жомакъланы араларында бек игилеринден бирине «Ашхам жулдуз» деген чыгъарма саналады. Айтыуда баш фикир Ашхам жулдуз бирсиледен эсе кёк кенгинде эрттеракъ чыкъгъаны бла байламлыды.

Чыгъарманы бир сейири заман эм къудурет бла байламлыды. Иш Чегем ауузунда Кам деген гитче элчикде болгъанды. Аны жомакъчы былай суратлайды: «Эртте-эртте заманлада Кам сууну боюнунда нартла жашап болгъандыла. Ашхам жулдуз а Окъулай деген уучуну анасы эди».

Бу тизгинле чыгъарманы башланыуу болуп, ызы бла уа экинчи кесеги барады. Былайда оюм фикирледе Окъулай уста уучу болгъаны, аны ушкогу атхан затын жазмагъаны, тиймей къоймагъаны, андан кийик, агъач жаныуарла бек сакъ болгъанлары эм ол уугъа чыкъгъанын билселе, бугъуп, тышына чыкъмагъанлары, кеси да уугъа жаланда киршиде, жауун неда къар жауса, чыгып болгъаныны юсюнден айтылады.

Андан арысында жомакъчы чыгъарманы баргъан хапарлауу (развитие действия) бла шагъырей этеди. Бу тюрлю композициялы ёзекни биз юч хапарлау кесекге бёлюрге тийишли кёребиз. Биринчисинде, Окъулай, тауда кёп айланып, зат тапмай, кеси кесине: «Ах, энди мени Апсаты къаргъагъан болур, жолум иги болмаз!» – деген жарсыулу оюмларыдыла.

Юйюне келип, жукълагъанлай, ол тюш кёреди. Анга айланып, бир ауаз: «Сен Кам сууну чыкъгъан жеринде дорбуннга бар да, анда садакъ окъну ал. Алайды Апсатыны буйругъу. Сен ол затны этмесенг, сени уучулукъ бла байламлы ишинг барлыкъ туююлду», – деп билдиреди.

Чыгъарманы экинчи хапарлау бёлюмю ол кёрген тюшюнден сора уучу, осал халгъа кетип, жукъусу бёлюнюп, мудахлыкъ кирип, ашы осал болгъан шартла бла байламлыды. Анасыны: «Не болгъанды санга?» – деген соруууна, ол толусунлай хапар айтады. Ол а, жашына айланып: «Алыкъа Жекеме дорбуннга баргъанладан киши сау къайтмагъанды», – деп жууап береди.

Жашын тыялмагъанда, жомакъчы анасыны халы бла нени да билген, эсли, уллу акъылы болгъанын лирика монолог халда кесини энчи оюмун билдиреди.

Чыгъармада «кыркъ» деген санау энчи поэтика-фикир хал алады: анасы жашына кыркъжыллык жугъутурну терисинден чабырла этеди, кыркъ кюннге бла кечеге болурча аш хазырлайды, сора жолуна алай ашырады. «Ол садакъ окъ бла мен сау-эсен кыайтырма юйге, сен а хар кече сайын мени кыайтырымы сакъларса!» – деп, Окъулай ол ауаз айтхан жерге жол салады.

Былайда жомакъны баргъан кесегини баш фикири болады. Окъулайны анасы жашын кыркъ кюн, ызы бла кыркъ жыл сакълайды. Келмезлигин билгенден сора, Кёк тейриге айланып:

«Тёбен тейри,
Огъары тейри,
Бу жаш – мени,
Бу жаш – сени.
Че, че, мен да сени», –

дейди да, олсагъат окъуна кёкге учуп кетеди. Кёк тейриси уа аны Ашхам жулдуз этеди.

Чыгъарма быллай тюрлю жомакълада адет-тёре болмагъан сёзле бла бошалады: «Бюгюн да ол (Ашхам жулдуз) кюн батхандан сора чыгъады, жер юсюнде къарангы болгъандан сора. Ол бюгюн да умутун къурутмагъанды жашыны кыайтырыгына. Аны сакълайды. Ашхам жулдуз чыкыгъандан сора, жолоучула хар заманда да юйлерине кыайтычудула».

Эслеп къарасакъ, чыгъарма къуралыу эм сюжет бёлюмлери бла керти да сейир этерчады. Заман эм къудурет бла байламлы мында быллай шартлагъа тюбейбиз: жашау болумла Кам элде Кам сууну жагъасы бла байламлыдыла. Андан бийик таулагъа, Жекеме дорбуннга кёчедиле, алайдан а Уллу Тейрини буйругъу бла бийик кёкге ётедиле.

Жомакъны баш ниет магъанасы Апсаты бла Окъулайны арасында жарашалмазлык шартдады (конфликтдеди): Апсаты анга ёч болгъанда, Окъулай да аны малларын чексиз кыыргъандады.

Чыгъарманы энчи, бирси жомакълагъа ушамагъан суратлау тили барды. Мында бурун тюрк-монгол лексиканы шатлары эсленедиле. Сёз ючюн, «Кёк тейри», «кыркъ» деген санау бла тюрк тарих дуниясында «кыркъ-кыыз» (кыыргъыз), «кыркъ мажар», «кыркъ огъуз» деген миллет этнонимле тюрк халкълада бурундан бери айтылып келгени туурады. Биз акъыл этгеннге кёре, муну айтхан жомакъчы бир-бир фикирлени эсинде толу тутмагъанды, сакъламагъанды, аны себепли чыгъарма толусунлай, халкъда бурун жюрюгенича кыагъытха жазылмагъанды.

Миф ниетле бла байламлы къарачай-малкъар халкъ жомакъланы араларында халкъгъа бек белгилиледен бири «Айны бла кюнню тутулууу» деген чыгъармады. Ол кеси да бир ненча кере тюрлю-тюрлю китапада басмаланганды.

Жомакъ алай бла башланады: жашы болгъан бир адамгъа кыызчык тууады; бешикде окъуна ол ашдан тоймагъан бир зат болады; ол аман зат болуп ёсерин сезип, къарындашы атасына бла анасына: «Муну, къалай да этип, жояргъа керекди», – дейди; «Ол затланы къалай айтдынг?!» – деп, жашларын юйден кыыстап кыоядыла; агъачда айлана кетип, бир тиши

арслан балала табаргъа хазырланнганын кёрюп, анга аначылыкъ этеди да, ол а балачыкъла табады; анга къарагъаны ючюн бир баласын жашха береди: «Бу санга нёгерлик этер», – деп, жаш, энтга да бир баласын урлап, экиси бла да агъачны теренине кирип, анда уучулукъ бла кюрешип, алай бла жашайды; ала, ёсюп, уллу боладыла да, жашдан айырыла туруп, анга бирер тюклерин берип: «Болушлукъ керек болса, быланы жандырырса, биз а терк окъуна жетербиз», – дейдиле.

Къарындаш башкир халкъда не жаны бла да бу чыгъармагъа ушагъан жомакъ жюрюйдю. Ол зат быллай фикирле бурун тюрк дуниясында белгили айтыула эм сюжетле тубей болурламы деген сагъышха келтиреди.

Битеу да жомакъны композиция халы тюрленеди эм ачыкъ хапарлау, айтыу башланады. Бир къауум замандан сора жаш, къайтып, элине келеди да, анда хазна адам тапмайды. Атындан тюшюп, юйге кирсе, ол къызны кёреди да, тёгерекге къарайды. Къыз а, анга айланып: «Мен атынгы ашагъанма, мен келгинчи тазгъа ургъанлай тур, аны тауушу тохтамазча», – деп, кеси уа эшикге чыгып кетеди.

Былайдан башлап, чыгъармагъа бир къауум хыйны-халмаш фикирле киредиле: алайгъа чычханчыкъ чыгып, адам тилде анга айланып: «Ол къыз келгинчи, мен тазны уруп турум, сен а быланы ал да, жолгъа тебуре», – деп, кюзгю, таракъ, биз береди.

Андан арысында жомакъда сейир-хыйла халда жаш къыздан къалай къутула келгенини юсюнден айтылады. Ол жууукъ келгенде, жаш арслан тюклени кюйдюреди да, ала уа, терк окъуна жетип, къызны этегинден тутадыла. Къыз, аладан къоркъуп, кёкге учханда, ала аны бла бирге кётюрюледиле эм барысы да кёкде къаладыла.

Андан сора иш болумла жерден узакъ, кёк бийигинде барадыла. Жомакъ фикир жорукълада келгенича, ол тиширыу анда да тынчаймайды: айны бла кюнню жутаргъа кюрешеди, алай эгер арсланла аны къудуретге жарыкъ берген затланы къатларына къоймайдыла. Ай не кюн тутулсала, аны ол желмаууз къыз жутаргъа кюрешеди деген оюмгъа келип, жерде адамла къычырадыла, кёкге айландырып, ушкокларын атадыла, отла жандырып, аланы тёгерегинде хахай этип тепсейдиле. Быллай тёре-адет оюнла башха тюрк халкълада да бардыла.

Былайда къысха халда бир жомакъны къуралыу-айныу жорукъларына къараллыкъды. Ол 1970 жж. КъМАССР-ны Чегем районуну Булунгу элинде жазылганды. Миф, тамаша жомакълада бола келгенича, мында адам жаныуар сыфатха киргенини юсюнден сюжет ёзеге аны бек эрттегили болгъанын чертеди. Анда адет-къылыкъ жаны биринчи жерге чыгып, чыгъармада баш жерни алады.

«Тюлкю, Бёрю, Къоян» деген жомакъны суратлау-къуралыу онглары бек сейирдиле, анда адамла жаныуар сыфатлагъа киредиле.

Бу чыгъармада болгъан башланыу (присказка) да бек сейирди эм адетде жюрюген, тохташдырылгъан халдан энчиди. Ол, фольклорда бола келгенича, назму-поэтика халда бериледи:

Жомакъ ахшыгъа айтылсын,
Жукълаучуну уятсын,
Бастырыкъгъанны къачырсын,
Юйюбюзден кери этсин,

Аягына шинжи кирсин,
Кёзюне кирпи тюшсюн,
Къантулукъну къаны тамсын,
Этген тилегибиз жетсин.

Къысха халда жомакъны ачыкълау онгларына эс бёлейик. Мында адамны кемчиликлерине айып салынады – хыйлалыкъгъа, зорлукъгъа, къатылыкъгъа, къоркъакълыкъгъа. Къайда эсе да Ногъай тюзледе адамла жарыкъ, бай жашагъандыла: арпа сепгендиле, бичен чалгъандыла, кёп мал тутхандыла, сайгаклагъа, дударак къанатлылагъа уугъа чыкъгъандыла.

Алай битеу эл кёрюп болмагъан юч адам бар эди. Бирине хыйлалыгъы ючюн Тюлкю атагъандыла, башхасына, жаны болгъан затны (эчкилени, маралланы, кийиклени) ёлчемсиз къырып баргъаны ючюн, Бёрю атагъандыла, ючюнчюге уа къоркъакълыгъы ючюн Къоян дегендиле.

Тюлкю аты болгъан, къолундан келгенича, къалгъан адамланы барын алдаргъа суйгенди: къартланы, жашланы, сабийлени, тиширыуланы. Бир кере уа ол дуньягъа белгили ётюрюкчю Алдарны окъуна алдагъанды.

Бёрю атлы, бек къаты жюрекли болгъаны себепли, уучулукъда тохташдырылгъан адетге толу сыйынмагъанды: аяусуз жылны хар чагъында да жаныуарланы, балаларын да бирге къырып баргъанды. Бир кере уа, жаз башында, ол тыншчыкъ Ауар тюзледе, Буздан бла Эдил сууну арасында отлай тургъан эки гитче марал балачыкъны, юч эчки балачыкъны, бир талай да кийик тайчыкъланы ёлтюргенди.

Бир къартха уа Къоян деп атагъандыла, жаш заманындан башлап, алагъа уугъа жюрюгени ючюн. Аны тону, бёркю, кёнчеги да къоян териден болгъандыла. Андан сора да ол жаланда къоян этни ашагъанды, аны ючюн окъуна болур эди аны къоркъакълыгъы. Ол уугъа танг аласында чыкъгъанды, ингир бола, аны бошагъанды, кече уа, эшиклерин бегитип, кишиге ачаргъа унамагъанды, бир адамны къыйынлыгъына болушлукъ этмегенди. Кече арасында ары-бери барыргъа тюшсе уа, аны биргесине къатынлары баргъандыла. Аны юч къатыны болгъанды, бири биринден эришиле. Ала аны къоркъакълыгъына кюлюп тургъандыла.

Бир кере, кюз артында, элни адамлары тийреде белгили Эмгек деген къуртхадан тилейдиле да, бирин хыйлалыгъы ючюн тюлкю, башхасын къатылыгъы ючюн бёрю, ючюнчюню уа къоркъакълыгъы ючюн къоян этдиредиле.

Бир кесекден хар зат тамам алай болгъанды: бири тюлкю болгъанды, экинчиси – бёрю, ючюнчюсю уа – къоян. Алай бла ючюсю да къая тюбюнде бир дорбунда жашагъандыла, кючден-бутдан кеслерин азыкъ бла кечиндиргендиле. Адамла алагъа кюлгендиле, жаныуарла уа, аланы жашаулары, къылыкълары бузукълу болгъанларын сезип, кеслерине жууукъ къоймагъандыла.

Ёлде алагъа азыкъ элтген, жарсыгъан адамла да болгъандыла. Заман оза баргъаны сайын, аллай адамла кёпден-кёп бола баргъандыла.

Бир жол да, элни къартлары жыйылып, алагъа келгендиле, сора, ол хариплени алгъын сыфатларын ызына къайтарса эди деп, къуртха Эмгекден тилегендиле.

Уллу, кенг Буздан сууну жагъасында Эмгекни кезиулю хыйнысындан сора, ала биягъы адам сыфатха къайтхандыла. Элчилени аллай ахшылыкъ



ишлери мындан арысында Тюлкюге хыйлачы болмазгъа, Бёрюге огъурсузлугъун, ёчлюгюн тыяргъа, Къояннга уа алгъадан эсе, бир кесек тири, жууаш болургъа себеплик этгенди.

Бу чыгъарманы эс этип окъугъанда, анда юйюр-турмуш, миф, тамаша жомакъланы элементлери да эсленедиле. Баш магъана уа адамны жаныуар сыфатха киргенине бериледи. Нек дегенде, дуньяны бир къауум халкъларыны фольклорларында «... жаныуарланы юслеринден биз кёп тюрлю хапарлагъа тюбейбиз, аланы жаратылыуларыны, халилерини, адамгъа жууукълукъларыны, сёз ючюн, адамла бла жаныуарланы бир юйюр къурагъанларыны, адамланы жаныуар сыфатха киргенлерини, жаныуарланы уа адам сыфат алгъанларыны юслеринден фантастикалы хапарла. Бек аллындан жаныуарланы юслеринден жомакъланы кёбюсю миф халда жазылгъан хапарлагъа ушайдыла, алагъа хыйны-халмаш (магия) кюч берилгенди» [10, 242].

Башында айтханыбызча, жомакъланы суратлау-къуралыу жанын тинтиу аланы тамалларында адет-къылыкъ жаны бла адамны аман къылыкълары (хыйлалыкъ, зорлукъ, къоркъакълыкъ) чертилгенлерин, терсге саналгъанларын кёргюзтгенди.

Жанр жаны бла къарагъанда уа, бу чыгъарма адамны жаныуар сыфатха киргени бла байламлы миф, сейир-тамаша жомакъгъа да келишеди.

Къуралыу жаны бла да айырмалыды бу хапар. Башланыуу (присказканы) ызындан «зачин» деген композиция бёлум барады. Анда иш къайда, къалай бардырылгъаныны юсюнден айтылады, аны бла бирге ол жигитлерини атлары бла шагъырейлендиреди, аны себепли, «зачин» деген терминнге келишеди. Дагъыда былайда айтыргъа кереклиси – муну къуралыуу ал сёз бла терен байламлыды.

Жомакъда хапарлауу хар жаны ачыкъ кёрюнеди: ишни айныу халы баш жигитлени жашау болумларын, этген ишлерин ачыкълау бла байламлыды, баш магъаналы кесеги – кульминацияда адамла жаныуар сыфатха киргенлери кёргюзтюледи, ахырында уа къуртханы кючю бла аланы жангъдан адам сыфатха къайтаргъанларында элчилени жүрек тазалыкълары, халаллыкълары ачыкъланады.

Чыгъарманы тили ангылашыныулуду, сабийни сезимине жараулуду. Анда бурун тюрк тилледе жүрюген суу атла Буздан (Дон), Этиль (Волга), аны кибик, бурундан келген бир къауум термин, сёз тутуш да тюбейдиле.

«Тюлкю, Бёрю, Къоян» деген чыгъармагъа къарагъанда, быллай оюм жаратылады: аны тамыр оюмун адамны жаныуар сыфатха киргени къурайды, аны себепли аны эскиге санарчады, юч затны бирлешдирип, адамны кемчиликлерин къужур болумлада кёргюзтюу, ачыкълау бла байламлыды.

Быллай тюрлю миф фикирли чыгъармаланы санында «Тейри къылыч къалай болгъанды?» [7], «Чолпан жулдузгъа «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» деп, нек айтхандыла?» [7], «Къаргъа нек болгъанды къара?», «Бизде зурнукла нек жашамайдыла?», «Кёгюрчюн уяны къалай салгъанды?» эм башха жомакъла халкъны кёлден айтылгъан ниет байлыгъында бурун тийишли жерни алгъандыла, атадан сабийине ётгендиле, халкъда жүрюгендиле.

Къарачай-малкъар халкъны жашауунда *тамашалыкъ бла байламлы жомакъла* кёлден чыгъармачылыгъыбызны сейирлик тил маданиятына



саналадыла, энчи тюрлюню жерин тутадыла. Ала бек эрттеден келген, асламында мажюсюлюкден окъуна алгъын жаратылгъан, инсанланы дунягъа хар тюрлю жаны бла къарамы бла байламлыдыла. Белгили алимле-фольклористле айтханнга кёре, бир-бирледе миф жомакъланы бла тамаша жомакъланы араларын айыргъан тынч туююлдо. Нек дегенде, биринде миф жаны хорлайды, башхасында уа – тамашалыкъны белгилери.

Таулу фольклористикада биринчи кере ол чыгъармалагъа илму халда къарагъан, миллетибизни кёлден чыгъармачылыгъын тинтиуге уллу къыйын салгъан белгили алим Къараланы А.И. болгъанды. Ызы бла анга къошумчулукъ этгенле Холаланы А.З. бла культурология илмуланы доктору, фахмулу алим Орусбийланы Ф.А. болгъандыла. Башха жаш алимле да арт жыллада бу ишге тири къатышадыла.

Къараланы Асиятны оюмуна кёре, «Тамаша жомакъланы келечилери халкъны ичинден чыкыгъан батырладыла, огъурсуз адам ашаучу желмауузланы, эмегенлени, сарыуеклени, аманакъыллы эмеген къатынланы хорлагъан инсанладыла. Батырлагъа ол кюрешде болушлукъ этгенле сейирлик атла Гемуда бла Тарпан-Ат, мардасыз уллу Къара-Къушдула. Мында быллай сейирлик затла да тюбейдиле: гоппан, сырпын, токмакъ таякъ, учхан намазлыкъ», – деп жазады халкъыбызны белгили алими [4, 18]. Бу илму сезимле адамланы фольклорда кёп тюрлю фикир жорукъла жюрютгенлерине керти да ийнандырычадыла.

Фольклорист Холаланы Азрет да, тамаша халкъ жомакъланы тинте, кёп тюрлю чыгъармалагъа къарайды, алада айтылгъан жигитлени сыфатларын тинтеди, кёп жерде Къараланы Асиятны ишлерине уллу багъа бичеди [13, 26].

Орусбийланы Фатима жомакъланы юсюнден илму ишинде сейир-тамаша жомакълагъа энчи бёлюмню – «Типы сюжета и мировые мотивы волшебной сказки» – жоралайды. Анда алим кёп тюрлю миллетлени чыгъармалары бла къарачай-малкъар халкъ жомакъланы ич сырларын, ниет дуняларын эм суратлау халларын тенглеширедиди [11, 21–42].

«Темир-Болат», «Фатима», «Иллука», «Гитче къарындаш», «Алтын къанатлы», «Къарабатыр», «Быжма-папах», «Зынгырдауукъ» деген бир къауум тамаша жомакъны тинте келсек, аланы суратлау-къуралыу онгларыны миллет энчиликлеринден сора да, славян эмда башха кавказ халкъланы жомакъ эпосларына ушашлыкъларын кёрюрге боллукъду. Алай бла «Темир-Болат» бла «Быжма-папах» деген жомакълада кюйсюз кёзбаучу Кеси Бир Къарыш – Сакъалы Минг Къарыш деген жигитни халы ахшылыкъны эмда аманлыкъны кёргюзтген жигитди, аны чуруму жомакъны текстине тюрлениуле кечирек киргизтилгенлерин белгилейдиле.

Кёбюсюнде тамаша жомакълада осал жигитлени хорлауда, жолда тюбеген чырмауладан ётюуде къуш, бёрю, жаннет чыпчыкъ, Конёк-Горбунокга ушагъан тайчыкъ, бир-бирледе уа жилин да уллу болушлукъ этедиле. «Жомакъда ахшылыкъ аманлыкъны хар заманда хорлайды. Жигитге ол жазыкъсынган жаныуарла болушадыла, ёксюз къызчыкъгъа ол жан аурутхан сауут-сабала эмда жаныуарла болушадыла» [9, 61].

Къарачай-малкъар миф адетде эм жомакъ эпосда атха уллу сый бериу эки эрттегили маданиятны бирикгенлерин кёргюзтеди: эрттегили кавказлыла бла тюрк-монголлулада бу хайыуанны сыйы бек бийик, бир-бирледе уа



тейрилеге тенг окъуна болгъанды, аны жаратылыуу да алам бла байламлы болгъаннга саналгъанды. Нарт эпос, миф-адет, тарых-жигитлик эм лирика поэзия дегенча кёлден чыгъармачылыкъны жанрларында атха сыйлы жер бериледи: Гемуданы, Къоланны, Акъжалны, Къара-Бууну, д.а.к. башхаларыны эсге тюшюрсек да, тамамды.

Орус фольклорда Конёк-Горбунокга ушаш ат сыфат къарачай-малкъар сабий жомакълада да тюбейдиле. «Гитче къарындаш» деген жомакъда огъурсуз, тамашалыкъ ариу къыз тайны къуйругъундан тутаргъа аздан къалгъанда, «... ол жерден акъырын айырылып, булутлагъа жетишеди... уллу агъачланы башлары бла учуп, кенг ёзенлени, бийик тауланы башлары бла, шош халда жерге тюшюп, бир дорбунну аллында тохтайды» [2, 45].

Бёрюню да бу къауум жомакълада, жер юсюнде жюрюгенден сора да, тауланы, агъачланы башлары бла учаргъа къарыуундан келеди, аны бла бирге жигитге кёлню тюбюнден тамаша чабакъны тутуп, чыгъарыргъа болушады, ёлюмден къутхарады. Аллай ёзек «Алтын къанатлы» деген къарачай-малкъар халкъ жомакъда кёрюнеди [2, 61–64]. «Сюжети былай болгъан, – бёрю, атны ашагъандан сора, адамгъа болушуу хунерликни кеси ыразылыгъы бла боюнуна алгъанын» [1, 49] орус жомакъ эпосда да кёрюрге боллукъду.

Тамаша жомакълада зорлукъ кюнню кёбюсюнде обурну сыфатында кёребиз. Ол, жигитни ышанмакълыгъы бла хайырлана, аны башха адамла бла ушакъларына тынгылай, кесини хыйла ишлерин бардырады. Бу сыфатны Шимал Кавказны халкъларыны жомакъ эпосларындан къуралыуу эм суратлау жаны бла айырмалыгъы обур тиширыуну зорлукъ ишлеге ёчлюгюдю. Ол бирде къара киштик болуп, адамны эсине келмезлик таша жерледе бугъунады. Кёбюсюнде ол кесине ашаугъа ариу, жаш тиширыуланы сайлайды, аланы эрлери юйде болмагъан заманда кече тунчукъдуруп ёлтюрюрча. Бир ажымсыз, бу ишни аллай болумуну тамыры бек эрттегили замандан келеди, нек дегенде, «...жаныуарланы юслеринден жомакълада, тамаша жомакъланы кёбюсюндеча, халкъны ауузунда бюгюннге дери айтылып тургъан, кертиси бла адам улуну жангы айный башлагъан кезиуюне келеди» [9, 25]. Биз оюм этгенден, къара киштик, жыл саны келген къара обур бла байламлы ишле, бурунгулу адамланы дуньягъа кёз къарамларына кёре, ёлгенлени жанлары тирилип, хата этип айланганларын кёргюзтеди.

Жомакълада быллай жорукъла къара къочхарны сыфатында да кёрюнедиле: ол жер тюбюндеги къара кючлени белгисиди. Аны кибик, къара къаргъа ёлюмню белгиси болуп кёрюнеди, къара бауур, къара кюбюр къара кюнню кёргюзтедиле. Бир-бир кезиуледе бу тюрлю сыфатла тасхалыкъны белгилейдиле. Алай бла къара тюлкюню сыфатына адет-тёре поэзияда бла нарт эпосда, жомакълада бла хапарлада уллу сый бериледи, нек дегенде, халкъны оюмуна кёре, ол жамауатха берекетлик, байлыкъ, юйюрге, тийреге мамырлыкъ бергенди. Аны себебинден адамла къара тюлкюню терисин багъалатып тутхандыла, аны бир тёлюден башхасына сыйлап ётдюргендиле.

Къарачай-малкъар тамаша жомакъланы къурауда, адыг, абхаз, дюгер эмда къумукъ жомакъладача, бир затны аны кесеги бла алышыуу бла байламлы тамашалыкъ кюнню (магияны) бир тюрлюсю толу

хайырланылады. Сёз ючюн, «Къарабатыр» деген жомакъда төрт тюрлю амал-формула хайырланылады, суратлау онгланы башындан энишге келтиреді: дорбун, анда – къара кюбюр, аны ичинде – сауутчукъ, аны ичинде – ун маталлы бир зат. «Эй, ахшы инсан! Ол унну адам суюклеге сеп, олсагъатда сау болурла эртте заманда ёлгенле!» – дейди тутмакъгъа тюшгенледен бири Къарабатыргъа [2, 101].

Бешкъатлы суратлау амал «Гитче къарындаш» деген тамаша жомакъда да тюбейди: бир тала, талада – юй, юйде – бир ариу къыз, аны аллында – алтын тегене, анда алтын чабакъла жюзедиле. Мынга ушаш адабият жорукъла нарт эпосну чыгъармаларында бла жигитлик жомакълада да тюбейдиле. Алада сёз баш жигитни, кёбюсюнде бир батырны, ханны жашыны неда иги юйюрден бир ариу къызны, ёлюп, жангыдан сау болууларыны юсюнден айтылады.

Халкъыбызны тамаша ниет жорукъла бла айтылгъан жомакълары, биз тинтиу иш бардыргъаннга кёре, иги кесек бардыла. Аланы ичинде не жаны бла да айырмалы «Жарыкъбий» деген чыгъармады. Аны 1959 ж. 2-чи ноябрьде Бёзюланы А.Ю. Тёбен Чегем элде 1910 ж. туугъан Бепайланы Назир Ахмат улудан жазып алгъан эди.

Жомакъны баш ниет-хапарлау ышанларында къысха тохтайыкъ.

Мында сёз айтхылыкъ уучу, патчахланы патчахы Арабийни юсюнден барады; ол онбеш жылында кийикни жаралы этеди, ол а адам тилде сёлешеди; Арабийни къатыныны хатаны билдирген, тамаша жюзюгю болгъанды; кёп жылланы ичинде болмай туруп, артда уа алагъа сабий туугъанды; анга Жарыкъбий деп атагъандыла; Жарыкъбий уучулукъ бла байламлы, жаш заманындан тебиреп, кёп хатагъа тюбегенди; болмагъанча къыйын чырмауладан къутулгъанды; артда уа сау-саламат юйюне келгенди.

Жомакъда заман бла къудурет бир жерден бир жерге кёчедиле: Жарыкъбий нёгерлери бла, жаралы этген кийиклерин къууа, аны ызындан тенгизге киредиле; анда, атып, аны ёлтюредиле; тенгиз, чайкъалып, жел болуп, къайыкъларын маймулла жашагъан айрыкамгъа элтеди; аладан къачаргъа, къутулургъа амал излейдиле. Алайдан башлап, хапар бир кесек заманнга Жарыкъбийни атасы жашагъан жерге кёчеди. Арабий къатыныны сейирлик, аманни-игини кёргюзтген жюзюгюне къарайды да, жашы Жарыкъбий хатагъа тюшгенин биледи. Ол, терк окъуна жыйын къурап, жашын излерге адамла жибереди, аны табып, юйюне келтирирча. Кеси уа, ол жаралы этген кийигин излей, андан бир хапар сораыйым деп, таугъа чыгъады да, сора тау бийигинде къулагъына таууш эшитиледи: «Игимиди кесини сабийинден айырылгъан?!» – деп.

Бир кесекден таурухну баргъаны Жарыкъбий тургъан, ол маймулла бла асланла жашагъан айрыкамгъа кёчеди. Не да этип, маймул жыйынны алдап, Жарыкъбий нёгерлери бла алайдан къачады да, кеси жангыз сау къалып, эркин жерге чыгъады. Алайда керуаннга тюбеп, бир саудюгерчи аны, сахаргъа келтирип, саулугъуна бакъдырып, аякъ юсюне салады.

Андан ары жомакъгъа тюрлю-тюрлю сейир-тамаша фикир айтыула къошуладыла. Жарыкъбийни сыфаты ала бла байламлыкъда ачылады. Ол, кёп тюрлю жигитлик этип, кёп чырмауладан къутулуп, юйюне алай къайтады.

Анга ол къыйын жашауунда болушхан, къанатлылагъа ие болгъан, ала баш ургъан адам сыфатлы бир къартчыкъ болгъанды. Кесини оноуу бла



ол юч кыуш эгечден кичилерин Жарыкбийге эрге береди. Жаш бир кыауум замандан сора, кесини жарсыуун билдирип, кыартны ыразылыгы бла, кыатыныны сыртында кёк бла учуп, тууган элине келеди. Анда жууукылары бла кыууанч жашау этип, ол жерни патчагы болуп, жашап кыалады.

Жомак халкыбызны фольклор проза чыгармаларында айырмалыгы саналырчады. Мында кёп тюрлю, адамны сагыш этдирирча сейир, бай фикир оюмла бардыла. Ала асламында философия хал аладыла. Тилин халкыда жюрюген тап, ариу, ангылашымлы миллет хазнагы санаргы боллукыду. Жомакчы, заман бла кыудуретни бир бирлеринден айырмай, айтыу баргыанына кёре тюз ниет-суратлау жолну алады эм халк тил бла уста хайырланады.

Кыарачай-малкыар сейир жомакыла, бирси халкылары кёлден чыгармаларыча, узак эм кёп тюрлю жолладан ётгендиле. Алагы бирси жанрладан да иги кесек фикирле, сыфатла ётгендиле. Аны себепли, уллу алим В.П. Аникин, ол затны энчи черте, былай айтханын тюзге санарчады: «Сейир-тамаша жомакылары бирсиледен айыргы хар заманда тынч болмайды» [1, 88]. Керти да, бир-бирледе жаныуарлары, батырлыкны юсюнден, мифле бла байламлы чыгармаланы тинте, алада сейирлик бла айтылгы фикирлеге тюбейсе эм аланы кыайсы жанргы санаргы тийишли болур деген сагышха да киресе.

«Кыолан атла» деген жомакыны бир ненча варианты барды, ол халкыбызны арасында кенг жайылгы чыгармагы саналады. Аны бир тюрлюсюн 1959 ж. 27 декабрьде Хасанья элде жашагы Гадийланы Матгерий, эшитгенича, кеси халкыдан жазып, илму-излем институтха тапдыргы эди.

Биз сабий заманыбыздан окыуна аны тюрлю-тюрлю вариантларын эшите тургыбыз. Чыгармада аслам эс эмеген ананы, сора тамаша тайла тапхан ол сейир кыолан байталны, бёрюню (байталланы тайларын нек урлагыны текстде ангылашыммай кыалады), кыуртха кыатынны сыфатларына бериледи.

Жомакчы хапарын юч кыарындашны юсюнден башлайды да, ала, ёсюп, уллу болгыларынды, учулук бла жашагыларын айтады. Эки кыарындаш жыйынлары бла кезиу-кезиу жортуулгы чыкгыанда, бир зат жашыртын, кёрюнмей, туманчык ичинде келип, ала тургы уучу кыошну, адамланы, жаныуарлары да кюйдюрюп кыояды. Ол не зат болгыанын ачыклагы, аны тапхан, керти да кёп сейир жигитликле этген кичи кыарындашлары болады.

Чыгармада аны сыфатына энчи эс бурулады. Ол акыллыды, эслиди, бола тургы эм келлик заманы ойлайды.

Кеси жангыз кыалгыанда, кичи кыарындаш, айлана кетип, эмегенле жашагы жерге жолугады, ала бла шуёхлук, кыарындашлык жюрютюп, аладан болушлук табады. Эмеген жашла анга керти да уллу себеплик этедиле: кыарындашларын ёлтюрген кыыз болгыанын ачык этедиле да, аны кыалай бла хорларгы боллугун юйретедиле.

Былайда кыолан атны сыфаты эм кыызны хорлауда аны энчи болуму чыгарманы фикир оюмларынды кесини жерин табады. Ол жаныуаргы аллай бир эс берилгени, эштада, бурун, эртте тюрк-монгол ниет жорукыладан келе болур дерчады.

Кёп чырмауладан ётноп, кёп кыйынлык сынап, кичи кыарындаш кызыны табады, аны бла юйюр кыурап, кыатыныны юйюнде кыалады; бир кыауум замандан ханны адамлары, аны урлап, ханнга келтиредиле; эмегенлени бла кыолан атланы болушлуклары бла жаш кыатынын кыайтарады эм эмегенле жашаган дорбуннга элтеди да, сора ала бла бирге жашау кыурайды.

Чыгъармада кыолан атладан сора, кыара туманнга, жыюзюкге, кызыны суратына, обур кыатыннга, окыга, минчакыга энчи эс бурулады, хар бирине кереклисича сыфат оюмла бериледиле. Аланы магъаналары, кыочлери жомакыда бир ненча кере тийишлисича ангылатыладыла.

Кыарачай-малкыар халкыны фольклорунда «Кыиши бла сарыуек», «Кыозучукы», «Элияс бла золоуцу», «Худуйчукы», «Тюз ётмеги тюзге жетеди», «Алтын чабакыны жомакы» эм бирси сейирлик-тамаша жомакыла бардыла. Ала миллет маданиятыбызны кёлден айтылган прозасыны алаamat юлгюлеридиле. Жарсыугы, ол чыгъармалагы биз мында уллу эс буралмайбыз эм аланы юсюнден сёзюбюзню тынгылы айталмайбыз.

Кыарачай-малкыар жомакылары араларында **батырлыкыны юсюнден** айтыула да бардыла. Ниет халкы прозабызда ала бек игилерине саналадыла. Бу кыауум чыгъармалагы «Тазрет», «Таурух», «Кыаракыундет улу Кыундет», «Ахшы уланы хапары», «Ногъай улу сокыур Ногъай-Неф», «Жанакыайыт» эм дагыда аны кыбик жомакыла киредиле. Алада жыгитликни юсюнден фикирле хыйны-халмаш, миф, жаныуарланы, юй-турмушну юсюнден ниетлени айтылыу халлары бла иги да хорлайдыла. Аланы бир кыауумларына кыарайыкы.

«Тазрет» деген жомакыда хапар халкы бек сюйген, батырлыкыны бла узакы жерлеге айтылган Тазрет деген абрекни юсюнден барады. Ол, узакы жортууулгы жол алып, андан элине малла, хапчыкле келтирип, адамлагы юлешип болганды. Бир жол элни кыартлары, эсли адамлары, жыйылып, оноу этедиле: «Не да этип, Тазретни юйдегили этейик. Ол элине сакы болган ахшы адам эндиге дери кыатынсыз, сабийсиз кыалай турады?» – деп. Аладан бири: «Ол затны Тазретге тап билдирге керекди, – дейди, – эсине алырча, сагыш этерча».

Узакы жолдан кыайтып, элине киргенде, Тазрет адамланы мутхуз, жарсыулу болганларын эслейди да: «Не болган болур элиме, мен кетгенли?» – деген сагышха киреди, эллилерине сорады жарсыуларын. Аланы: «Да биз жарсымай кыалай кыалайыкы? Сен эндиге дери юйдегили болмагыанынга жарсыбыз!» – деген сёзлерин эшитгенден сора, ол кесини элинден кыыз алады да, юйдегили болады. Алай алгынынгы кыылыгыны а кыоймайды: абрекликге, узакы жолгы, жортууулгы барганлай турады.

Барганы бла артдан-артха чыгъармада кёп тюрюлю жангы айтыула, сейир фикир оюмла, хапарлау шартла жомакыны игиден-иги этедиле, кесине тартадыла.

Бир жол Тазрет элине кыайтып келгенде, аны кыатыныны урланган хапарын эшитеди, сора: «Юйдегими тапмай кыоймам мен, сау болуп», – деп, узакы жолгы тебирейди эм кёп тюрюлю затлагы тюбейди.

Алайдан башлап, чыгъарманы энчи барыу халы (развитие действия) башланады. Ала уа быллай фикирледиле: тенгиз боюнунда Тазрет кемелени, кыайыкылары кёреди, кеме ишлеучю устагы тюбейди эм анга



жарсыу хапарын айтады. «Манга тенгизни ары жанына ётерча кьайыкъ ишлеп бер, мен юйдегими анда излерча», – деп тилейди.

Алайда Тазрет кеси танымагъан бир адамгъа тюбейди да, анга жарсыуун айтады. Ол а Тазретге нёгерлик этерин эм кьатыны узакъда, иги сакъланган кьаланы ичинде тургъанын билдиреди да, сора ала оноу этедиле, кьайсы жау аскерни тыярыгъын, кьайсы уа тиширыуну хатасыз кьаладан алып чыгъарыгъын.

Кенгешгенлерича, бирлери аскерни тыяды, бирлери уа тиширыуну кьаладан алып чыгъарады да, барысы да, кьайыкъгъа минип, тенгиз бла юйлерине жол аладыла.

Былайда жомакъны экинчи барыу фикир башланады. Бир кесекден нёгери, Тазретге айланып: «Бу кьатынны экибизге да тенг бёлейик», – дейди. Тазрет а: «Да сау адамны экиге юлеширге кьалай болады», – деп, сейирге кьалады. Ол заманда шуёху, кьамасын чыгъарып, аны бла урады. Ол тиширыуну, экиге бёлүп, тенгизге атады да: «Чюйютлюден кьалгъан бла кьалай жашау этериксе? Сен андан иги адамгъа тийишлисе. Быллай жерде, быллай элде юч кьарындаш жашайды. Аланы уа айтхылыкъ бир эгечлери барды. Ол адам санга тийишлиди. Изле да, аны тап, жашауунгу аны бла кьура!» – деп, кеси алайдан, Тазретден айырылып кетеди.

Кёп да турмай, Тазрет, ол юч кьарындашны табып, ала бла ушакъ этип, умутун билдиреди. Ала уа: «Бизге да ол оноу этеди. Кесине тюбеп хапар айт», – дейдиле. Къызны ыразылыгъы бла юйюне келтиредиле.

Жомакъны андан ары айныуу ол тиширыуну сейир халы бла байламлыды эм былайда жомакъны барыу фикир оюмларыны ахыр кесеги болады. Быллай айтыу фикирле арап, фарс халкъланы кёлден чыгъармачылыкъларында кенг жайылыпдыла.

Кече белинде Тазретни кьатыны, эр киши кийимле кийип, сауут-саба алып, атха минип, кьайры эсе да тебирейди. Андан арысында жомакъ ол, жыйын кьурап, бай адамланы, ханланы тонагъаныны юсюнден хапарлайды. Бир жол а Тазрет, ызындан кьарай, биргесине жашырын барып, аны ачыкъ этеди. Ол гудучу аскерге кьошулуп, кьатынына эки кере болушады, ючюнчю кере, жаралы болуп, кьатыны кьол жаулугъу бла байлайды кьан келген жерин.

Юйлеринде кьатын аны эслегенде, сейир этип, хапарны толусунлай айтады эрине: «Мен болгъанма сени кьатынынгы урлатхан, аны кьама бла уруп, эки этип, тенгизге атхан да мен болгъанма. Ол сен тюбеген юч жаш а мени кьарындашларымдыла. Бюгюнден ары, сенден сормай, эшикге чыкъмазгъа ант этеме», – дейди. Бу кьауум фикирле чыгъарманы баш айтыу келишимини жорукъларыдыла.

Жомакъ төреде айтылып келгенича, чыгъарма «Ала ёлмеген эселе, экиси да, бир бирлеринден жигитле, бюгюн да жашайдыла», – деген сёзле бла бошалады.

Жомакъда жигитлик бла байламлы хапарлаула аслам жерни аладыла. Анга Тазрет бла кьатыны саулай да уллу аскерни тыйгъанлары шагъатлыкъ этеди. Чыгъармада хыйла оюмла да белгили жерни аладыла. Ала уа Тазретни юйдегисини халлары бла байламлыдыла.

Чыгъарманы лексикасы халкъ тилге бек жууукъду. Тилде аз хайырланылгъан эски сёзле, айтымла, архаизмле тюбейдиле.

«Къаракъундет улу Къундет» деген жомакъ айтылыу эм фикир магъанасы бла биз къарагъан «Тазрет» деген чыгъармагъа къаршы келишеди. Экисинде да тиширыула тонау иш бла кюрешедиле, жаулары бла туююшде жигитликле этедиле, эки хапарда да тиширыулары ючюшер къарындашлары барды, жигитлеге эрге барадыла, артда уа эрлери бла къазауатда тубейдиле. Эки чыгъармада да, сакъланмай туруп, болунган ишге уллу магъана бериледи.

Бу чыгъарманы къысха тинтейик.

Къаракъундет улу къауум адам бла жортууулгъа тебирейди да, узакъда бир акъ атлыны кёреди; аны нёгерлери: «Тутайыкъ да, жесирликге сатайыкъ», – деген умутларын билдиредиле, алай Къундет: «Ол бош адам туююлдо, тиймегиз анга», – дейди алагъа; алай анга тынгыламай, нёгерлери ол адамны тегерегинден аладыла да, тутар мадар этедиле; ол а, аланы барысын да хорлап, къолларын артларына къысып, уллу ёзенде сюрюп тебирейди; Къундет аны къатына барып: «Ол адамланы эркин эт», – деп тилейди да, аланы эркин этдиреди; акъ атлы ол Къундет болгъанын билгенден сора, анга бир айгъа къонакъ этерин тилейди; «Ол затха анамдан эркинлик алыргъа керекме», – деп, анасындан соргъанда, анасы уа: «Ол алаамат къонакъ болмаз, аны бла сакъ бол, алай намыс адамны жанындан эсе бийикдеди да, келмеге къой», – дейди.

Былайда чыгъарманы барыу халларыны аслам айтылыу-фикир жорукълары башланадыла. Бир къауум замандан ол акъ атлы Къундетни жылкъы сюрюрге нёгерлик этерге чакъырады да, ала юч кере да жылкъыны сакълагъан адамланы ёлтюргенлеринде, ол акъ атлы юч кере да аланы къанларындан бирер уртлагъанын Къундет эслейди.

Кече ортада ол жашыртын тохтагъан жерлеринден къайры эсе да тебирейди да, Къундет да аны ызындан барады. Бир заманда ол акъ атлы, адамла жыйылгъан жерге келип тешинсе, ариу къыз болуп чыгъады. Ол алагъа жылкъыны сюргенлени ючюсюн да Къундетни болушлугъу бла ёлтюрюп, къанларын ичгенин айтады. Ала уа: «Бюсюрей эсенг, жашауунгу Къундет бла къура, биз ыразылыкъ беребиз», – дейдиле.

Юйге къайтып келгенинде, Къундет хар затны юсюнден билгенин анга ангылатады, сора ол жигит тиширыуну къатыннга алып, экиси да жашап къаладыла.

Чыгъарманы баш ниет магъанасы мында баш жигит Къундетни батырлыгъын, адамлыгъын ачыкълаудады. Текстде терен, бурунгу заман матриархатха энчи намыс, сый берилгени эсленеди, анга айтхылыкъ акъ атлы тиширыу болгъаны, ол этген жигитликле да шагъатлыкъ этедиле.

«Жанакъайыт» деген чыгъармада сёз тау элде жашагъан, къуру да батырлыкъ излеген, аллай бир жаш адамны юсюнден барады. Аны фикир-оюм магъанасына къысха къарайыкъ.

Жомакъчы адамланы ичинде Жанакъайыт керти да затдан къоркъмагъан батыр болгъанын аны халындан, жашау-турмуш халинден ачыкълайды. Текст башланганында окъуна ол ёзенде жашагъан къарындашла Жантемирге бла Темиржаннга: «Келигиз, Буху деген байны жылкъысын сюрюрге барайыкъ», – деп тилейди. Ала уа унамайдыла: «Ары барып, алыкъа киши сау къайтмагъанды», – деп.

Андан арысында чыгъарманы бек магъаналы фикир оюмлу жорукълары башланадыла: ол айтхан жерине кеси аллына тебирейди да, жолда уа



Букунагъа тубеп къалады; къарт, ол Жанакъайыт болгъанын билип: «Жашым ызынгдан тебиресе, аны жанын алмай, саулай иерсе юйюне», – деп тилейди; Жанакъайыт жылкыны сюрюп тебирегенде, ызындан къуууп, Букунаны жашы жетеди, жылкысын къайтарып муратда; Жанакъайыт а, сёзюне кертичи болуп, аны ёлтюрмей, ат иер юсюне байлап, юйюне жиберип къояды; жылкыны жартысын Жантемирге бла Темиржаннга къалыннга къоюп, аланы ариу эгечлерин къатыннга алып, юйюне элтеди.

Чыгъармада керти да жигит адамны сыфаты суратланады. Аны бла айтхылыкъ Букуна окъуна сермеширге базынмайды. Жомакъчы бу айтыуда халкъ суйген сыфатны чыгъарады, аны баш ниет магъанасы батырлыкъ бла байламлыды.

«Ахшы уланны хапары» бла «Ногъай улу сокъур Ногъай-Неф» деген чыгъармалада баш ниет магъана батырлыкъ бла байламлы эсе да, былада намысха, адетге, адамлыкъгъа да уллу эс бурулады.

Биринчи жомакъда хапарланган иш Басхан ауузунда, экинчиде уа – Къабартыда барады. Чыгъармала ниет халлары эм фикир мадарлары бла бир бирлерине тамам келишедиле. Экисинде да баш жигитле, къатынларына махтанып: «Къалай уста атабыз», – деп, аланы башларына кийген бёркчюклерин атып урадыла. Былайда жомакъгъа обурну сыфаты киреди. Жашыртын тиширыулагъа:

– Эринге: «Сен алай уста эсенг, бир сокъур къарт барды да, аны бла (неда сокъур Ногъай-Неф бла) эриш», – деп айт, – деп юйретедиле.

Басханчы да, Къабартыда жашагъан да алагъа хорлатадыла, андан сора, кеслеринден кёллери чыгып, къатынларына махтанганларын да къоядыла, тынч жашап къаладыла.

«Ахшы жашны хапары» деген жомакъны къарачай-малкъар халкъ чыгъармаланы бек игилеринден бирине санаргъа тийишлиди. Анда халкъ суйген адамны сыфаты, аны жигитлиги, ахшылыгы ачыкъланады. Ол эрттеден бери жомакъчыла суйюп айхан чыгъармады.

Батырлыкъны юсюнден къарачай-малкъар халкъ жомакъланы араларында не жаны бла да бек айырмагъа «Таурух» деген чыгъарманы да санаргъа боллукъду. Жомакъчы «таурух» деген сёзню былайда жангылып айтханы ишексизди, нек дегенде, чыгъарма не жаны бла да «жомакъ» деген жанргъа келишеди.

Халына кёре бу биз къарарыкъ халкъ айтыу бизге къыбыла жаны фольклор культурадан келгени ишексизди. Мында ишле бийик маданият тохташдырылгъан фарси къыралда, Иранда барады. Чыгъарманы къуралыу халы (композициясы) эм фикир оюмлары (сюжети) кёп тюрлю сейир жорукъладан эм шартладан къураладыла.

Алада къысха тохтайыкъ.

Иранда бир патчахны онеки къатыны болады; биринчи юйдегисинден юч жаш бла бир къыз жаратыладыла, бирси тиширыуладан а сабийлери болмайды. Жашларын ол, хар бирине да жыйырма устаз тохташдырып, школда окъутады.

Чыгъарманы барыуунда, андан ары хапарлау ышанларында къысха тохтайыкъ.

Патчахны бек артда алгъан къатыны, ётюрюклени къурап, ала анга чабып, аманла айтып, бичакъ бла къолларын да кесгендиле деп, эрин

жашларына кьозутуп тебирейди; патчах анга ийнанып, аланы асаргъа буйрукъ береди, алай биринчи ёзюрю: «Къой, алай огъурсуз иш этме халкъ аллында, мен аланы агъачны теренине элтип, анда жанларын алырма да, къанларын санга келтирirme», – дейди; алай айтып, ёзюр жашланы агъач ичине элтеди, хар бирине бирер ат бла ушкок берип, ийип къояды, кеси уа, къоянны ёлтюрюп, аны къанын шешагъа къуяды да, патчахха элтип: «Жашланы ёлтюргенме, къанларын шешагъа къуюп келтиргенме», – деп, аны жапсарып къояды.

Мындан арысында жашланы жашаулары эм къадарлары бла байламлы ишле Ирандан тышында, кеслери танымагъан жерде болады. Оноуну кесине, адетде болгъаныча, тамата къарындашлары алады. Биринчи кече таматалары арсланны, экинчи кече ортанчылары уллу жилинны ёлтюредиле. Гитчелери уа ючюнчю кече болмагъанча жигитлик ишле этеди. Жомакъны бу кесегинден тебиреп, чыгъармада аны эслилигине, батырлыгына энчи аперимлик бериледи. Андан арысында жомакъны баргъанында ала кёп тюрлю къыйынлыкъдан, лагъымладан ётгенлери айтылады. Кичи къарындаш бир патчахны хазнасын огъурсуз жыйындан къутхарады да, жашла, аны къызларын алып, анга киеу боладыла.

Хыйлачы ёзюрню хатасындан биягъы жоюлургъа аздан къалып, жашла кетер акъылгъа келедиле, алай къайын аталары, кечгинлик тилеп, жиберирге унамайды.

Ахырында: «Туугъан элибиз Ираннга барайыкъ», – деп тебирейдиле да, алайгъа жетип, сахарны къыйырында тохтайдыла. Аталары патчахха хапар жетеди да: «Былайда узакъ болмай, бир адамла шатырла салып орналгъандыла», – деп, ол а буйрукъ береди: «Аланы бери алып келигиз, бир кёрейим, не адамла эселе да», – деп.

Былайда чыгъарманы баш фикир айтыуу эм магъанасы ачыкъланады. Жашла ючюсю да олтурадыла да, патчахны: «Кимсиз? Не адамласыз?» – деген соруууна таматалары битеу хапарларын, аллындан башлап, айтып тебирегенде, ол ёзюр, аланы танып, кеси уа зат билмегенча этип, алагъа аллай бир къыйынлыкъ кёргюзтген патчахны къатыны алайдан къачаргъа деп, ёрге тургъанлай, ёзюр аны тохтатады. Хар затны кертисин толу билгенден сора, патчах ол къатынны асаргъа буйрукъ береди, ёзюрню акъылына, эслилигине уллу багъа бичеди. Жашлары, къызы, къатыны бла да ырахат жашап къалады. Алайда олтургъан аналары бла эгечлери да бек къууанадыла.

Жомакъ сейир халда къуралгъан халкъ айтыуду. Чыгъармагъа къатышхан адамла игилеге бла осаллагъа юлешинедиле. Хапар узакъ Иран ханны арбазыны юсюнден жомакъ халда бара эсе да, ол бизни таулу маданиятыбызгъа тамам келишеди. Тёреде айтылгъанча, мында энчи аперимлик кичи къарындашха бериледи. Жомакъны лексикасында «школ», «жандарма», «собрания», «доклад», «шпион», «километр», «крепость», «приказ» деген къарачай-малкъар тилде бурун жюрюмеген, орус тилни юсю бла келген сёзле тубейдиле. Андан сора «шатыр», «хазна», «ёзюр» деген архаизмле да бардыла.

Суратлау эм композиция-фикир байлыгы эм усталыгы бла бу халкъ жомакъны бек айтхылыкъгъа санаргъа боллукъду десек, уллу жангыллыкъ туйюлбюз.



Жаныуарланы юслеринден къарачай-малкъар жомакъла магъана жаны бла, дуньяда жюрютюлген жорукълагъа кёре, адамны жашауу эм табийгъат бла байламлыдыла. «Бурунгу адамланы учхара сезимлери инсанланы жашаулары бла табийгъатны арасында болгъан чеклени кетерип къойгъандыла. Адам улу кеси бла жаныуарланы араларында башхалыкъ кёрмейди. Аланы жаныуарланы жашауларына ол кёзден къарагъанларыны себебинден жаратылгъанды жаныуарла бла байламлы эпос», – деп жазады В.П. Аникин, европачы алимлени жомакъ жанрны юсюнден оюмларын бирге тийишдире [1, 41].

Жаныуарланы юслеринден айтылгъан жомакъла кеслерини эрттегили ышанлары бла тамаша жомакълагъа бек жууукъ болгъанлары себепли, аланы тинтирге алимлеге уллу сейири барды. Аланы ичлеринде бек белгили чыгъармала – «Къаргъа бла балалары», «Къозучукъ», «Мараучу бла агъач киши», «Тели Зондар бла амалчы тюлкю», «Къой бла эчки», «Экисинден да улакъ эсли», «Тюлкю хыйла», «Ал-бёрю бла Тут-бёрю», «Тюлкю, айыу, бёрю», «Ёгюз бла эшек» д.а.к.

Былагъа ушаш жомакълада хайыуанла бла жаныуарла адамланы жашауларын бла къылыкъларын кёргюзтедиле: ёгюз ишлерге сюеди; жилин, дуняны битеу халкъларыны чыгъармаларындача, аурууланы багъады, аны бла бирге акъыллыды; айыу эр кишини къарыуун белгилейди; къуш ышаныулу жёнгерди, тириди, ёхтемди; эшек ишчини белгилейди; тюлкю хыйлачыды, эки бетлиди; бёрюню жигит халиси барды, жыртышыуну сюеди. Башында саналгъан жаныуарланы ичинде, бир ажымсыз, барындан да бек сейирлик болумлары бла бёрю бла ат айырмалыдыла.

Эл-юй жашау турмушла бла байламлы жомакъла (бытовые сказки) миллет проза чыгъармачылыгыбызда айтылгъан-жюрюген саны бла бек аслам жерни аладыла. Бу чыгъармаланы жанр халларыны юсюнден фольклористикада бюгюн да тюрлю-тюрлю кёз къарамла бардыла, аланы бир ызгъа келишдириуде алыкъа даулаш тохтамагъанды. Алай биз оюм этгеннге кёре, аны юсюнден кесини акъылын белгили алим Э.В. Померанцева тап келишдиргенди: «Алада (жашау-турмуш жомакълада) болум орус элде болады. Аланы жигитлери – элни жарлылары, къул адам, неда солдат – огъурсуз, акъылы кемирек болгъан байны, хурметсиз бай тиширыуну, тыйгъысыз бабасны алдаяладыла. Ол чыгъармаланы ичинде эринчеклени, жаншакъланы, акъылларын, хунерлерин терс жанына бургъанланы юслеринден хапарлагъанла кёпдюле» [8, 41].

Къарачай-малкъар фольклор бла байламлы илмуда бу тюрлю чыгъармаланы, жарсыугъа, хазна киши тинтмегенди, аны себепли бу затха тынгылы тохашдырылмагъан оюмгъача къараргъа тийишлиди. Тюрлю-тюрлю фондладан жыйылгъан бу къауум чыгъармаланы саны жюзге жууукъ болгъанды. Ала асламында юй турмуш эм таулу элни жашауу бла байламлыдыла.

Бу халлы жомакъла ич сырлары бла бир талай тюрлюге бёлюнедиле: юй жашау, соймеклик, ёге ананы бла эрини сабийлери бла байламлы чыгъармала; патчахланы, ханланы, байланы, бийлени юсюнден айтыула; жаш малчыны, усталыгы болгъан жаш ишчини, кесини акъылы, хунери, мадар излеую бла айырма болгъанланы халини кючю бла ханны хорлагъан, неда бийни къызын алгъан фикирле бла байламлыла; чам жорукъла бла



айтылгъан жомакъла: намыс-адет бла байламлы, зорчуланы, намыссызланы, моллаланы аман ишлерине къжау жомакъла; бурун заманда жюрюген адет-къылыкъ бла байламлы чыгъармала.

Жашау-турмуш жомакъны айныуунда жигитликни, эркинликни сынау уллу жерни алады. Аланы бир къауумунда тюрлю-тюрлю чурумладан, къыйынлыкълардан юч къарындашха ётерге тюшеди. Мында абадан къарындашла зар, къоркъакъ, болумсуз адамла болуп кёрюнедиле, аны бла къалмай, кичи къарындашларына кёп тюрлю жарсыула келтиредиле. Гитче къарындашлары уа хар сынауладан бет жарыкълы ётеди, бир-бирледе уа тыш жерледе этген жигитликлери ючюн патчахны тоханасына ие да болады.

Жомакълада сабийле бек суйген сыфатладан бири эринчек жашчыкъ Кюлтыпысды. Ол кёп ашайды, къайда тап тюше, алайда жукълайды. Аны суу алыргъа жиберселе – ол суу жанында жукълайды, отун алыргъа агъачха ийселе – терек тюбюнде къалкъып къалады, эчкиге ханс алыргъа буюрсала – аны талада жукълап тургъанлай табадыла. Ишге барыргъа кереклисин билсе, ол кесин ауругъан адамча жюрютеди. Аны суйген жери юйде от жагъады, ол алайда жукълап турургъа бек сюеди, кюлде жатып тургъаны ючюн анга Кюлтыпыс деп атагъандыла.

Къарачай-малкъар чам жомакъла кёбюсюнде Насра-Хожаны, аны бла бирге диннге къуллукъ этген эфендиле, халкъ адетлени бузгъан халилери амалтын, хар заманда кюлкюлю болумгъа тюшгенлерини юсюнден хапарла бла байламлыдыла.

Къысха жазылгъан ишибизде бу къауум жомакъланы тынгылы тинтирге амалыбыз жокъду.

Халкъыбыз не къыйынлыкъны, огъурсузлукъну сынагъан эсе да, ниет хазнасын, кёлден чыгъармачылыгъын амалда болгъан къадарда сакълагъанды. Халкъ жомакъла ол хазнаны бек бай эм тынгылы ёзегине саналадыла. Бу китапха кирген чыгъармала ол затха толу шагъатлыкъ этедиле.

ХАЙЫРЛАНЫЛГЪАН ЛИТЕРАТУРА

1. *Аникин В.П.* Русская народная сказка. М.: Просвещение, 1977. 208 б.
2. Балкарские и карачаевские сказки. М.: Дет. лит-ра, 1983. 112 б.
3. *Караева А.И.* О фольклорном наследии карачаево-балкарского народа. Черкесск: Карач.-Черкес. кн. изд-во, 1961. 59 б.
4. *Караева А.И.* Очерк истории карачаевской литературы. М.: Наука, 1966. 320 б.
5. Къарачай-малкъар жомакъла, таурухла, айтыула: экитомлукъ. Т. 2 / жарашдыргъан Хаджиланы Т.М. Нальчик: Эль-Фа, 2003. 472 б.
6. Къарачай-малкъар фольклор: Хрестоматия / жарашдыргъан Хаджиланы Т.М. Нальчик: Эль-Фа, 1996. 529 б.
7. Малкъондуланы Хашимни жашы Хамидни энчи архиви.
8. *Померанцева Э.В.* О русском фольклоре. М.: Наука, 1977. 120 б.
9. *Померанцева Э.В.* Русская народная сказка. М.: Изд-во АН СССР, 1963. 128 б.
10. Русское народное поэтическое творчество: пособие для вузов / под ред. П.Г. Богатырева. М.: Учпедгиз, 1954. 526 б.

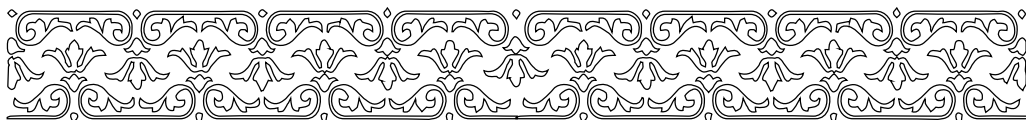


11. *Урусбиева Ф.А.* Карачаево-балкарская сказка. Вопросы жанровой типологии. Владикавказ: ИПО СОИГИ, 2010. 128 б.

12. *Урусбиева Ф.А.* Карачаево-балкарский фольклор. Черкесск: Карач.-Черкесск. кн. изд-во, 1979. 95 б.

13. *Холаев А.З.* Народное устно-поэтическое творчество // Очерки истории балкарской литературы. Нальчик: Эльбрус, 1981. Б. 13–31.





КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКАЯ НАРОДНАЯ СКАЗКА

I

Первые записи и публикации текстов карачаево-балкарской народной сказки относятся ко второй половине XIX в. Их авторами были представители русской интеллигенции того периода, хорошо относившиеся и высоко оценивавшие народную духовную словесность народов Кавказа.

Одним из таких деятелей русской культуры был Е.З. Баранов, собравший и опубликовавший ряд сказок и преданий карачаево-балкарского народа в различных изданиях, освещавших культуру Кавказа на русском языке в конце XIX в. Об этом хорошо сказала доктор филологических наук, известный фольклорист А.И. Алиева: «Большое число публикаций произведений фольклора балкарцев и карачаевцев принадлежит журналисту Е.З. Баранову. В конце XIX – начале XX в. сказки и предания балкарцев в переводах Баранова систематически печатались на страницах газеты «Терские ведомости» и в «Сборнике материалов для описания местностей и племен Кавказа» (вып. XXIII, XXXII, XXXIV). Весьма важно отметить, что во многих случаях публикации Баранова сопровождаются сведениями о времени и месте записи произведения, данные об информаторе. Комментарии содержат характеристику публикуемых текстов в сопоставлении с аналогичными произведениями фольклора соседних народов.

... Е.З. Баранов печатал свои записи произведений карачаево-балкарского фольклора и на страницах такого авторитетного издания, как «Сборник материалов для описания местностей и племен Кавказа». В XXIII выпуске СМОМПК, например, он опубликовал девять балкарских сказок – «Всадник в шкуре жеребенка», «Трус», «Хитрый сын», «Жена охотника», «Коварная жена», «Женщина с серыми глазами», «Пасынок», «Чомарт и Момарт», «Лиса, медведь и волк».

... Особую значимость публикация приобрела еще и потому, что ее сопровождали примечания Е.З. Баранова, в которых объясняется значение образов сказочных персонажей (эмеген, куртха, обур, Су-анасы и Су-ата-сы), этнографических и бытовых реалий» [1, 29–30].

Известный кавказовед, человек всесторонне образованный, Л.Г. Лопатинский дал обстоятельный анализ публикаций Е.З. Баранова. Мотив почти каждого текста объясняется им в сравнительном аспекте с произведениями соседних кавказских и тюркских народов или же с фольклорными сюжетными компонентами мировых цивилизаций: китайцев, индусов, арабов.



Так, анализируя сказку «Всадник в Шкуре Жеребенка», Л.Г. Лопатинский дает краткое, но содержательное описание всего сюжетно-содержательного компонента произведения в сопоставительном плане. Он сравнивает ее с татарской сказкой «Патам бедняк» и с кабардинскими «Красавица Елена и богатырь-женщина», «Отцовские друзья». По своему содержанию она напоминает волшебные произведения устной народной традиции и в настоящее время почти забыта, а некоторые ее элементы, возможно, носят фрагментарный характер и контаминируются с другими текстами. Эти проблемы будут нами изучаться в будущем.

Если временно приостановить свои рассуждения о публикации Л.Г. Лопатинского и по-своему подойти к объяснению содержания сказки, то главным образом придется обратить внимание на следующие повествовательные элементы: был сельский весельчак, хорошо умевший танцевать и смешить людей, по имени Топпучук (в интерференц. «Яичечко»). Его приглашает на семейное торжество местный князь Холхаш. Из разговора пировавших становится известно, что некий князь Адильгерий Занов больше всех помогает бедным; Топпучук отправляется в путь, находит и встречается с Адильгерием. Подружившись, они держат путь куда-то и видят 60 пар юношей и девушек, веселивших ханскую дочь; княжна, которая ни с кем не танцевала, долго пляшет с князем Адильгерием; Адильгерий идет на дерзость, похитив княжескую дочь и говорит Топпучуку: «Возьми себе княжну: я украл ее для тебя; береги ее как родную сестру, а если ее будут сватать, отдай за того, за кого она сама пожелает; за нее ты получишь богатый калым». Вскоре он выдает ее за очень богатого князя, получает калым в 160 тысяч золотых монет. Однажды Топпучук решил повидать Адильгерия Занова и женить его на старшей дочери князя Холхаша, на что она дала согласие, но предупредила, что плеть, которую она сшила, волшебная: если долго его не будет, и родители девушки согласятся выдать ее замуж за другого человека, кончик плети расплетется. Однажды так и случилось: когда Занов Адильгерий ударил своего коня плетью, кончик ее начал расплетаться и он понял, что его невесту выдают замуж за другого человека, и решил двинуться в путь к ней с богатыми подарками.

Поспешно он отрывается от своей дружины и ночью слышит голос: «Проклят тот человек, который утром и вечером ездит одиноким». Утром Адильгерий находит мертвого кабана, возле которого лежали ружье, пистолет, кинжал, шашка, и приказывает закопать его в землю вместе с оружием. Вдруг в степи его догоняет всадник в шкуре жеребенка, у которого кроме шашки в черных ножнах, другого оружия нет.

Перед тем, как захватить в аул, они отбивают у разбойников лошадей, перебив их хозяев; с всадником в шкуре жеребенка и дружиной он везет невесту домой, но вдруг их покидает этот странный человек, а когда Адильгерий его догоняет и спрашивает в чем дело, тот отвечает: «Я пренебрег правилами стариков о том, что одному нельзя пускаться в путь, и был наказан: меня ранил клыками кабан, я умер, был превращен в кабана, и мы долго лежали в степи мертвые, но ты нас спас, предав нас земле, а бог за истребление гяуров в благодарность вновь обратил меня в человека».

Всадник в шкуре жеребенка, простившись с Адильгерием Зановым, советует ему никогда одному не ходить в поход, ибо это очень опасно; сам же



Адильгерий хорошо отпраздновал свою свадьбу, которая была богатой и весьма веселой.

Кратко останавливаясь на мотивах данной сказки, весьма обоснованно размышляет Ф.А. Урусбиева, что: «Герой сказки живет в двух мирах, нижнем и среднем, сообщающихся в некоем эзотерическом пространстве исходной истины» [69, 31].

На наш взгляд, главной сюжетно-повествовательной канвой произведения является, как выразился Л.Г. Лопатинский, «мотив о благородных мертвецах, широко распространенный в сказках всех народов, но в нашем произведении побуждение мертвеца к оказанию помощи выражено неясно, он спешит на помощь как будто только за тем, чтобы доказать пригодность правила – не пускаться одному в опасный путь, но на деле им руководит чувство благодарности за то, что Занов предал его тело земле» [47, 134].

Культ мертвых в мифологии и литературе различных культур мира хорошо и богато рассмотрен в работе М.Ю. Рахно [59].

Данная сказка по своим сюжетно-повествовательным признакам близка к героической, а по внутрижанровым особенностям к семейно-бытовой. По своей содержательной сущности она больше подходит к жанру волшебной, т.к. все признаки сюжетно-содержательных повествований убеждают нас в этом.

Кто же он, этот загадочный всадник в шкуре жеребенка? Некоторые повествовательные элементы данного произведения с названием «Тай тери кийген атлы» вплоть до 1970 гг. хранились в памяти носителей устной словесности Чегемского ущелья, где мог записать в конце XIX в. данное произведение Е.З. Баранов.

Композиция произведения чисто сказочная: уже в начале повествования становится ясным образ сельского весельчака, доброго, любознательного персонажа Топпучука, который, случайно познакомившись с отважным князем Адильгерием, начинает дружить с ним и вскоре предлагает ему жениться на княжне из богатой и зажиточной семьи.

В самый опасный момент, когда князь Адильгерий отрывается от своей дружины и остается в поле один против врагов, вновь появляется загадочный всадник в шкуре жеребенка, помогающий ему одолеть злодеев, напавших на село, где проживала княжна, его будущая невеста, которую он хотел проведать со своей дружиной.

Действия в произведении развиваются ровно, пока в лесу отважный Адильгерий не встретил мертвого, в крови кабана, а рядом с ним валявшиеся на земле кинжал и ружье. Вырыв яму, он предает труп земле, после происходит резкое преломление всего сюжетного повествования сказки.

Далее в произведении, согласно сказочным мотивам, возникает небольшой моральный конфликт. Из слов отважного и беспощадного к своим врагам и верного в дружбе загадочного всадника князь узнает, что в прошлой жизни он был такой же, как все остальные. Но однажды, не прислушавшись к заветам своих стариков, ночью отправился один в опасный путь и стал жертвой кабана, который нанес ему смертельную рану своими клыками, после чего и сам он превратился в вепря – лежал мертвым в лесу, пока он не предал его земле.



Здесь сказывается влияние идей ислама: это Великий Аллах его помиловал и вновь вдохнул в него жизнь и вернул человеческий облик за его беспощадность к гяурам – врагам ислама. Мы уверены, что в раннем инвариантном тексте не могли усматриваться подобные мотивы, а если и существовали они, то были связаны с именем другого, верховного божества тюрко-монгольского пантеона Уллу Тейри – Великого Тейри (Тенгри).

Согласно утвердившемуся в науке мнению, деяния благородных мертвых весьма подходят к содержанию данного произведения и занимают главенствующее место в нем, т.к. вокруг него складываются основные повествовательные элементы сказки: этот персонаж дает название сказке; появившись неожиданно он помогает беспомощному князю Адильгерия одолеть агрессивных злодеев; мертвый, он воскресает, после чего возвращается в темный лес, откуда он вышел. Как выразился В.Я. Пропп: «Классифицировать по персонажам, например, возможно только тогда, когда будет установлено, что данный персонаж стабильно связан с определенными действиями или сюжетами» [58, 42], – что вполне приемлемо в данном случае.

Всадник выступает положительным человеком, как и другие сказочные персонажи – Топпучук, добрые князья Адильгерий и Холхаш, умница-невеста Адильгерия и т.д. Отрицательные персонажи в сказке почти отсутствуют, а указанные герои совершают только добро, делясь своим богатством с бедными.

Таким образом, записанные Е. Барановым произведения содержат сюжетные компоненты героической, бытовой и мифологической сказки. Отдельные фрагменты из них сохранились в памяти людей вплоть до 1970 гг., где ярко выделяются иносказательные системы карачаево-балкарского языка.

Другие карачаево-балкарские народные сказки в записи Е. Баранова также представляют большую ценность для исследования в наше время, в связи с чем и остановимся на некоторых из них. Такие произведения, как «Трус», «Хитрый сын», «Жена охотника», «Женщина с серыми глазами», «Пасынок», «Ломарт и Чумарт», «Лисица», посвящены семейно-бытовым проблемам и близки по жанровой дифференциации к бытовым, а также к сказкам о животных. Проблемы семейной общины в их содержании являются доминирующими.

В указанных текстах содержатся значительные мотивы волшебной сказки, которые играют положительную роль в победе добра над злом. Очевидно, В.Я. Пропп был прав, когда писал: «Волшебная сказка, в отличие от сказок других разрядов, сравнительно бедна бытовыми элементами. Роль быта в создании сказки часто переоценивалась. Мы можем решить вопрос об отношении сказки к быту лишь в том случае, если будем помнить, что художественный реализм и наличие бытовых элементов – понятия разные...» [58, 159]. В своих весьма ценных исследованиях по сказкам, выдающийся ученый не был склонен выделять в самостоятельный жанр бытовую сказку, что нами не воспринимается как положительный момент его научных изысканий. В данном случае, исходя из контекста, под термином «художественный реализм» следует понимать художественно-сказочную

поэтику, составляющую идейную основу в формировании сюжетного ядра самого произведения.

Таким образом, карачаево-балкарские народные сказки, записанные Е.З. Барановым, хотя и отсутствуют их варианты на родном языке, представляют большую ценность для исследования. Некоторые из них давно исчезли из народной памяти, а содержание отдельных упомянутых нами текстов сохранилось до 60–70-х гг. XX в.

Среди дореволюционных изданий карачаево-балкарского фольклора следует также особо подчеркнуть труды Н.П. Тульчинского. В 1903 г. под названием «Поэмы, легенды, песни, сказки и пословицы горских татар Нальчикского округа Терской области» в VI номере «Терского сборника» им была опубликована большая подборка фольклорных текстов различных жанров карачаево-балкарской устной словесности [65]. Эти материалы повторно были изданы в 1983 г. в книге «Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях» [64], в том числе сказки «След льва», «Торжество добродетели и наказанное зло», «Преданность холопа и неблагодарность царевича», «Добродетельная жена», записанные Н.П. Тульчинским в различных ущельях Балкарии. Они представляют бесспорную ценность для научного исследования. Следует отметить, что хотя это и переводы, они осуществлены на высоко профессиональном уровне.

В 1909 г. известный венгерский ориенталист Вильгельм Преле опубликовал девять карачаево-балкарских народных сказок («Жанакайт улу Жан», «Айтек улу Айтек», «Потерявшийся сын хана», «Танду», «Сон», «Девять сыновей одной женщины», «Глупая мать одного юноши», «Мужчина, который имел глупую жену», «Три дочери одного человека») на языке оригинала (карачаево-балкарском) и в переводе на русский язык [56; 57].

Весьма справедливы мысли А.И. Алиевой о том, что: «Публикации В. Прёле занимают исключительное место среди сохранившихся до наших дней дореволюционных записей карачаево-балкарского фольклора, ибо содержат тексты на языке оригинала. В силу этого они представляют несомненный интерес не только для фольклористов, но и для лингвистов» [1, 27].

В советский период сбор и публикация произведений устного народного творчества карачаевцев и балкарцев, в том числе и сказочного эпоса, приобрели системный характер благодаря экспедиционной деятельности сотрудников КБНИИ и КЧИГИ. Собранные материалы позволили создать рукописный и фоноархивы на базе этих институтов, а следовательно и базу для дальнейших научных изысканий.

Тем не менее, жанр сказки все еще остается одним из слабоизученных разделов карачаево-балкарского фольклора. Различные ее аспекты исследовались в прошлом А.И. Караевой [41, 16–21], А.З. Холаевым [70, 25–28] и Ф.А. Урусбиевой [69], внесших определенный вклад в развитие национального сказковедения.

Впервые данную проблему затронула А.И. Караева в академическом издании «Очерк истории карачаевской литературы» (глава «Устное народное творчество») [41, 16–21]. Рассматривая на конкретном материале внутрижанровые особенности карачаево-балкарской народной сказки, она выделяет цикл о животных, тесно увязывая его с мотивами сказаний о нартском эпосе. Исследователь выявляет также волшебные, бытовые, сатирические



сказки, в которых доминируют восточные мотивы о смешном, коварном, безбородом проходимце Кёсе и о мудром, находчивом Насреддине, а также произведения о духовенстве, в которых высмеиваются образ жизни и поведение мусульманских служителей, в частности, эфенди, нередко ведущих аморальный образ жизни.

Кратко остановимся на них. Исследуя внутреннюю структуру карачаево-балкарских народных сказок, А.И. Караева справедливо отмечает, что порой бывает трудно провести резкую жанровую границу между ними, т.к. мотивы, характерные для одного жанра, могут легко проникать в другой, раздвигая при этом пространственно-временные координаты текста, видоизменяя его повествовательный характер.

Заслуживают внимания наблюдения автора о наличии сказочных мотивов в нартском эпосе на примере произведений «Ёрюзмек» и «Бычья лопатка». Данный тезис мы бы дополнили следующими соображениями: в обоих случаях, на наш взгляд, речь идет об идее миротворчества, которая лежит в основе создания наиболее ранних фольклорно-художественных модусов, в том числе, сказочного и богатырского эпосов.

Давая научную характеристику волшебной сказке, А.И. Караева отмечает наличие элементов мифа и в ее структурно-содержательной основе. По мнению ученого, это видно на примере культовых элементов и в образах покровителя диких зверей Апсаты и домашних животных Аймуша, которые наделяются сверхъестественными волшебными качествами.

Опираясь на конкретный материал, автор с большой убедительностью выстраивает комплекс содержательного материала, составляющий целостную картину данного жанра, который складывался веками в народном сознании: «Героями волшебных сказок являются богатыри из народа, побеждающие злых людоедов-желмаузов, эмегенов, драконов-сарыубеков, коварных старух – эмеген катын. Помощь герою в его борьбе оказывают чудесные кони – Гемуда и Тарпан-ат, могучий орел Кара-куш. Фигурируют чудесные предметы: чаша – гоббан, меч – сырпын, палка-самобойка – токмак, летающий коврик – намазлык» [41, 18]. В то же время, следует отметить, что являясь первопроходцем в исследовании сказочной прозы карачаево-балкарского народа, А.И. Караева в 1950–1960 гг. не могла достаточно широко владеть эмпирическим фольклорным материалом, т.к. он еще к этому времени был собран лишь частично, а потому рассуждения ученого относительно сюжетно-повествовательных схем рассматриваемого материала были несколько ограничены.

На сказках о животных ученый почти не останавливается, а ограничивается пересказом сюжетных элементов произведений «Медведь, волк, лиса», «Овцы и козы», «Волк и собака», подчеркивая особенность аллегорических образов и наличие в них сатирических мотивов, носящих типологический характер.

Более подробно А.И. Караева рассматривает бытовые сказки, в которых образ жизни людей и характер уклада сельской семейной общины передаются отвлеченными картинками, постоянными традиционными персонажами, играющими существенную роль в мотивах данных сказок. Конечно, исследовательница не избежала классового, идеологического подхода в анализе народных произведений, характерного для этого времени. Особенно

это проявляется в оценке автором героев сказок: «Положительный герой не фантастический богатырь, а простой пастух, бедняк, батрак, обобщающий социальные признаки эксплуатируемых масс, борющийся и побеждающий своих врагов не благодаря чудесным помощникам, не в богатырских сражениях, а живостью ума, хитростью, смекалкой» [41, 18].

На примере содержательно-событийного плана бытовых сказок «Овцевод», «Как горец путешествовал» ученый обращает внимание на положительный гендерный аспект: в них выводятся образы мудрых женщин, превосходящих умом и находчивостью собственных мужей.

А.И. Караева подчеркивает, что в карачаево-балкарском сказочном эпосе рельефно представлены мотивы сатиры и юмора, где высмеивается исламское духовенство, ловко приспособливающееся к любой обстановке в жизни общины, если в этом есть материальная выгода.

В 1981 г. под грифом КБИИФЭ выходит фундаментальное исследование «Очерки истории балкарской литературы». В этом издании автором главы «Народное устно-поэтическое творчество» выступил известный фольклорист А.З. Холаев. Ученый, характеризуя особенности народных сказок, отмечает: «Сказочный эпос балкарцев представлен разнообразными жанровыми формами: сказки о животных, бытовые, волшебные-фантастические и авантюрно-новеллистические. Их хранителями и исполнителями были специальные рассказчики (сказочники – *Х.М.*) – жомакъчыла» [70, 25].

Касаясь внутрижанровых проблем национальной сказки, ученый подробно останавливается на исследовании жанра волшебной сказки. Однако, на наш взгляд, в теоретических положениях А.З. Холаева не всегда соблюдается научно обоснованное разграничение между мотивами волшебной сказки и героической. К примеру, он пишет: «В таких балкарско-карачаевских сказках, как «Золотая птица», «Младший брат», «Темирболат», «Младший брат Абоковых», «Карабатыр» и другие, младший брат одерживает победу над эмегенами, желмаузами, циклопами» [70, 27]. Не вызывает сомнения, что в указанных произведениях победа над врагами одерживается главными персонажами во многом благодаря храбрости, героизму и отваге, т.е. мотивы героизма в них значительно преобладают над волшебными. Вместе с тем, нельзя согласиться с мнением ученого о том, что произведение о смешном, ленивом сказочном персонаже Кюльтыпысе (в интерф. Спящий у Очага), о котором существует и веселая детская песенка, относится к жанру волшебной сказки. Главные, доминирующие мотивы в нем – сельский семейный быт, его предметно-хозяйственный мир и аксессуары, чего избегает и чем не хочет пользоваться ленивый Кюльтыпыс, типологически близкий к персонажу русских народных сказок Иванушке-Дурачку. Эти факты не оставляют сомнения в том, что данное произведение относится к жанру бытовой сказки, где весьма слабо представлены сюжетные элементы волшебства.

Кроме того, в соответствии с реалиями советской эпохи, в рассуждениях ученого о сказках ощутим идеологический подход к проблеме, о чем говорит, к примеру, следующее суждение: «...представители эксплуататорских классов – конкретные носители социального зла – баи, ханы, муллы, кёсе и др. Против них выступают представители трудового народа – батрак, бедняк, пастух» [70, 28].



Обобщая сказанное выше, можно отметить, что А.И. Караевой и А.З. Холаевым в свое время был сделан результативный шаг в изучении весьма сложного, архаического и малоразработанного жанра устной словесности карачаево-балкарского народа – сказок.

В 2010 г. карачаево-балкарское сказковедение обогатилось монографическим исследованием доктора культурологических наук Ф.А. Урусбиевой [69], посвященным, как отмечает автор, жанровой типологии национальной сказки. Книга состоит из введения, трех глав и заключения. Во введении обозначается видение автором проблемы жанра сказки в карачаево-балкарском фольклоре, особенность исследуемого материала и содержание глав, определяющих композицию книги.

При ознакомлении с монографией бросается в глаза нетрадиционный в фольклористике метод исследования. Комментируя содержание глав книги, автор поясняет, что первая глава посвящается волшебной, вторая – кумулятивной, а третья – бытовой сказке, внутри которой выделяются поджанровые модификации, не присущие природе сказочного эпоса, а именно – «женская сказка», «пастушеская сказка» и т.д.

Выделяя разделы сказки о животных, волшебные сказки и бытовые сказки, автор дает весьма лаконичную, но емкую характеристику их сюжетно-повествовательным особенностям. Однако некоторые выводы автора нам кажутся дискуссионными. Так, размышляя о специфике сказки-аполога (в основе которой лежит басня нравоучительного характера), для подтверждения своих мыслей о времени и характере его появления в карачаево-балкарской устной художественной словесности Ф.А. Урусбиева большей частью ограничивается умозрительным теоретизированием, не приводя убедительных фактов.

Вместе с тем дается система четкой аргументации при научной характеристике волшебной сказки, где на примере популярных фольклорных текстов рассматривается ряд мотивов, характерных для международных сюжетно-сказочных повествований. В этом плане интересны и своеобразны суждения исследователя, о том, что «классическая схема волшебной сказки – отправка героя в иной мир, получение чудесного средства, выполнение трудных задач, сватовство, избавление от злых сил. Идеи волшебной сказки интернациональны, сказку такого типа можно встретить в фольклоре любого народа» [69, 9].

Рассматривая во «Введении» особенности бытовой сказки, автор с самого начала отмечает, что новеллистические и сатирические сказки относятся к этой категории устной прозы. обстоятельно характеризует Ф.А. Урусбиева образ восточного лжеца – коварного и беспощадного к своим врагам Кёсе, образ которого в основном строится на юмористической самохарактеристике героя в многочисленных сценах его побед над баями, муллами и чиновниками. Не обходит исследователь стороной и повествования об исламских священниках.

Существуют ли в карачаево-балкарской сказочной прозе новелла или сказка типа новеллы? Обозначаются ли они какой-либо устойчивой национальной терминологией? Данные вопросы остаются в книге без ответа, а рассуждения ученого о том, что фоном для действия в новеллистической сказке, в отличие от обычной, служит «город, рынок, суд,



ремесленники и т.д.», больше подходят для европейской литературной традиции (где новелла и возникла как прозаический жанр), нежели для северокавказской.

В ряде произведений («Кто больше?», «Сказка-небылица», «Приключения пчелки», «Смышленный мальчик»), содержащих элементы притчи, Ф.А. Урусбиева усматривает жанровые признаки бытовой сказки, хотя, на наш взгляд, они с большей достоверностью относятся к разряду детских.

Знакомство с первой главой монографии «Типы сюжета и мировые мотивы волшебной сказки» приводит к следующим выводам: значительная ее часть посвящается истории публикации и изучения карачаево-балкарской народной сказки, начиная с XIX до начала XXI в. Автором дается определенная оценка эдиционной работе в этой области и содержательному материалу публикации с выделением в нем жанровых особенностей. Однако при этом почти не уделяется внимания карачаево-балкарскому сказковедению, берущему начало со второй половины XX в.

На наш взгляд, целесообразней было рассмотрение комплекса данных вопросов во «Введении», а не в первом разделе книги. На следующих страницах дается анализ восточных мотивов (Насреддин, Кёсе) в сопоставлении данных образов с сюжетной конструкцией тюркоязычных народов Северного Кавказа и Средней Азии. К сожалению, здесь почти нет развернутого анализа какой-либо карачаево-балкарской волшебной сказки.

Следующая глава – «Роль сказки в структурировании космического и социального пространства» – посвящается исследованию проблемы кумуляции в карачаево-балкарском сказочном эпосе. На примере русской (И.О. Капица, Н.М. Ведерникова, Э.В. Померанцева, В.Я. Пропп) и мировой фольклористики (М.Х. Хаавио, И.Ф. Амроян, А. Тейлор) автором кратко рассматриваются теоретические проблемы данного вопроса, которые после В.Я. Проппа практически оставались вне поля зрения ученых-фольклористов России.

Глава делится на две части. В первой части – «Цепочные структуры карачаево-балкарской сказки» – на примере ряда текстов из различных жанров фольклора (эпос, сказка, детские песни), автором рассматриваются структурообразующие принципы четырех основных типов повторяемости: нанизывание, кумуляция, кольцевой повтор, маятниковый повтор. Основным материалом для исследования послужил здесь детский песенный фольклор, в котором весьма развиты типы различной повторяемости, создающие цепевидные структуры текстов.

Здесь автором проводится весьма удачный сравнительный анализ широко распространенной сказки «Мышиный сход», берущей начало из древнеиндийской устной словесности. Центральный мотив данного повествования сопоставляется с типологически сходными мотивами сказаний разных народов мира, где благодаря хитрости и мудрости кот одерживает победу над грызунами, заперев и уничтожив их в мельнице. Однако, здесь автор не выделяет кумулятивные мотивы как особую структуру композиции в контексте исследуемого произведения. То же самое следует сказать и о «Сказке о Кёсе», где, подробно останавливаясь на ее базовых канонических сюжетных модулях, исследователь обходит стороной кумулятивные структурообразующие элементы текста.



В связи с тем, что во второй части главы – «Тексты детского (материнского) фольклора и заговорной магии» – не рассматриваются произведения сказочного эпоса, а проводится исследование лишь поэтических текстов, считаем нецелесообразным давать ей какую-либо оценку.

Завершающая, третья глава книги – «Карачаево-балкарская бытовая сказка» – состоит из шести кратких частей: «Бытовая новеллистическая сказка», «Романтизация сказочной новеллы», «Сказочная рефлексия. Логоцентризм карачаево-балкарской сказки», «Пастушеская сказка», «Женская сказка. Гендерный аспект», «Новеллистическая сказка в зеркале контактов», в которых ученый дает теоретическое объяснение внутрижанровой дифференциации бытовой сказки, исходя из своеобразия композиции и содержательных особенностей текста.

Изучение данного раздела книги показывает, что, увлекаясь термином «новелла», который весьма сомнительно подходит по содержанию к текстам карачаево-балкарской народной сказки, ученый не поясняет ее национальные повествовательные элементы, которые могли бы в какой-то мере характеризовать поэтику данного жанра или приблизить к нему некоторые тексты данного национального сказочного эпоса. На наш взгляд, видеть в каждой бытовой сказке новеллу, по крайней мере, неубедительно, хотя и бывает порой весьма сложно отличить собственно устный рассказ от новеллы. Рассуждение же автора, о том что «новеллистические (бытовые) сказки притягивали слушателей занимательным переплетением сюжетов, описанием ловкости героя и его умением выпутываться из самых сложных ситуаций» [69, 86], к сожалению, не сопровождается какими-либо достоверными аналитическими доводами на примере конкретного текста или контекста родного фольклора.

Положительным в данном разделе книги является то, что Ф.А. Урусбиева, обращаясь к трудам Е.Г. Тхамоковой, проводит ряд сопоставительных исследований с адыгскими народными сказками. Весьма справедливы и ценны рассуждения автора о том, что «отсутствие главного – т.е. структурного признака сказочной поэтики, который должен был бы предшествовать описанию и классификации сказочного материала, заставило нас искать структурно-содержательные разновидности сказки...» [69, 18]. Указанная проблема – дело будущего, над чем ученые-фольклористы должны серьезно поработать.

В целом монографию Ф.А. Урусбиевой мы бы отметили как положительное явление в исследовании карачаево-балкарского сказочного эпоса, поскольку ученый поднимает ряд существенных проблем, ранее не рассматривавшихся в сказковедении.

Как мы отметили выше, в последние годы ряд работ о сказках написал автор данной статьи, коснувшись проблем ее изученности и исследования отдельных мотивов в данном жанре. В статье «Фольклор и фольклористика» он кратко останавливается на сказке, давая оценку трудам своих предшественников, привнесшим определенный вклад в ее изучение. Особо отмечается роль А.И. Караевой, выступившей пионером в исследовании данной проблемы [54, 10–13].

В 2014 г. на страницах «Вестника КБИГИ» Х.Х. Малкондуев публикует статью «Карачаево-балкарская народная сказка. Мотивы о Змее и Лисе.



Композиция» [49], где впервые в отечественной фольклористике на примере исследования нескольких десятков произведений дается подробный научный анализ их композиции, образной системы и художественно-индизказательных элементов, образующих целый ряд мотивов, которые, в свою очередь, способствуют созданию повествовательной структуры произведения. При этом следует учесть, что многие рассматриваемые тексты, взятые из архива КБИГИ, впервые вводятся автором в научный оборот.

В статье «Карачаево-балкарские народные сказки и легенды в записи Е.З. Баранова. Особенности жанра и повествовательных элементов» [50] Х.Х. Малкондуев рассматривает ряд публикаций 1914 г.

В указанной статье фольклористом кратко рассматривается и ряд карачаево-балкарских легенд в записи Е.З. Баранова с преимущественным вниманием к произведениям, содержащим библейские мотивы.

В последние годы несколько интересных статей о карачаево-балкарской народной сказке опубликовала молодая исследовательница Л.Б. Берберова, продемонстрировав современный, междисциплинарный подход к исследуемой проблеме [27; 28; 29; 30; 31]. Основной интерес автора при изучении национальной сказки сосредоточен на морально-этической категории «альтруизм», корни которой уходят в глубокую мифическую древность. Другая примечательная особенность трудов названного исследователя: в них дается сравнительно-типологический анализ карачаево-балкарских «альтруистических» сказок и аналогичных сказок русского и американского народов. В отличие от своих предшественников, Л.Б. Берберова к изучению национальной сказки подходит с философской точки зрения, выделяя в ней этнопедагогический, воспитательный потенциал.

На основании проведенного исследования автор приходит к концептуальному выводу о том, что альтруизм – неоднозначное понятие, которое при нарушении чувства меры легко переходит в свою противоположность, порождая такие деструктивные явления как «избыточный альтруизм», «негативный альтруизм», «вредоносный альтруизм», «принудительный альтруизм», «невротический альтруизм» и т.д. Логически продолжая данный тезис, исследовательница вводит в сферу национального сказковедения термин «разумный альтруизм», квалифицируемый как высшая форма адекватной добродетели. Различные формы деструктивного и разумного альтруизма Л.Б. Берберовой рассмотрены на примере таких карачаево-балкарских сказок, как «Добрый Ходжа», «Умный учитель», «Отец и сын», «Три сестры», «Уж», «Поклонение шерсти» и др.

Исследование молодым ученым карачаево-балкарских народных сказок показало, что данный жанр нуждается в обстоятельном сравнительно-типологическом изучении с выявлением общих и особенных сказочных мотивов в фольклоре кавказских и родственных тюркских народов.

В 2015 г. карачаево-балкарское сказковедение пополнилось статьей кандидата филологических наук Л.С. Гергоковой, в которой молодой ученый на примере убедительных, архивных материалов рассматривает национальные особенности произведений устной народной словесности о животных [35]. Осуществив внутрижанровую классификацию, автор проводит научный анализ текстов о животных, особо останавливаясь на мотивах о Медведе, Волке, пернатых и Змее, Козе и Овце и т.д. Достоинством



работы является освещение неисследованных ранее материалов из архива КБИГИ.

Следует здесь упомянуть и статьи Б.А. Берберова о бытовых сказках [23; 24; 25; 26] и Ф.Х. Гулиевой (Зануковой) по общим вопросам карачаево-балкарского сказковедения [36; 38; 39] и волшебным сказкам [37], в частности.

Таким образом, анализ материалов карачаево-балкарского сказковедения второй половины XX – начала XXI вв. показывает, что проделана определенная работа по научному осмыслению национальной сказки, но вместе с тем остаются серьезные пробелы, ждущие своего исследователя.

II

Согласно существующему национальному терминологическому обозначению, карачаево-балкарские сказки подразделяются на «эрттегили жомакъла» (старинные, видимо, волшебные), «нарт жомакъла» (сказки о нартах), «батырлыкъны юсюнден жомакъла» (героические сказки), «Насрахожаны жомакълары» (сказки о Насреддине), «сабий жомакъла» (детские сказки), «чам жомакъла» (сатирические сказка), «жаныуарланы юсюнден жомакъла» (сказки о животных) и т.д. Эти произведения богаты мотивами на тему культа, о древнейших представлениях, о природных явлениях, жизни общины, ханов, мудрецов, хитрецов, о семейно-бытовых проблемах, образе жизни семьи в ее эволюционном изменении, а также об удачливых бедняках, злой мачехе, ведьмах, несущих всегда зло.

В науке все это многообразие сказочного эпоса принято подразделять, в основном, на три группы – волшебные, бытовые и сказки о животных. Тем не менее, опираясь на опыт своих предшественников и основываясь на фольклорном материале, мы выделяем мифологические, волшебные и волшеббно-героические, собственно героические, сказки о животных и бытовые сказки.

Карачаево-балкарская народная сказка имеет традиционные ритмические клише: зачины, завязку, устойчивые инверсии, служащие вспомогательными композиционно-стилевыми позициями в передаче основного смысла текста.

В своем исследовании особое внимание мы уделяем проблеме сюжета, композиции и своеобразию повествовательных особенностей карачаево-балкарских народных сказок. «Поскольку одна из важнейших проблем поэтики – определение границ того или иного жанра и вместе с тем исследование в нем общего с другими (жанрами – *Х.М.*)... в сказках, представляющих тот или иной сюжетный тип, есть своя система персонажей со своими определенными отношениями, которые и формируют движение сказочного сюжета. В свою очередь, приемы сюжетосложения, характерные для сказок того или иного типа, являются важным средством характеристики персонажей», – размышляет известный исследователь адыгского сказочного эпоса А.И. Алиева [2, 9].

При рассмотрении проблемы композиции нами главным образом рассматриваются такие ее компоненты, как присказка, поскольку смысл ее слов остается загадочным, а также зачин и развязка, т.к. в них наиболее ярко аккумулируются сюжетно-повествовательные особенности текстов.



На наш взгляд, в данной разновидности устной прозы наиболее древними являются повествования о природных явлениях, носящих весьма сложный, народно-философский характер. К группе сказок мифологического, этиологического содержания относятся сказки «Суу бла От» [44, 403–405] – «Вода и Огонь», «Кюн бла Ай» [46] – «Солнце и Луна», «Ашхам жулдуз» [45, 188–189] – «Вечерняя звезда», в содержательных элементах которых кроется много интересного в подаче информации о древнем образе мышления народа.

Так, сказка «Вода и Огонь» [44, 403–405], в которой трудно уловить и выстроить ее композиционную модель, начинается с повествования о том, что однажды Вода и Огонь встречаются на дороге по пути следования куда-то, приветствуют друг друга. Вода спрашивает у Огня, куда он идет. Тот отвечает: «Осушить болотистое место», – а Вода говорит, что горит чей-то дом, и она спешит его потушить.

Здесь начинается длинный диалог между ними, главной темой которого является спор о том, кто из них полезнее в природе, где каждый старается доказать, что он благороднее и полезнее оппонента. Так, Вода говорит: «Если бы не я, вся земля бы высохла, и ничего бы не росло. Не было бы кукурузы, пшеницы, ячменя, овса, фасоли, подсолнечника. Что бы тогда могли есть люди, если бы они высохли?».

Огонь же отвечает: «Не хвастайся! Тогда люди ели бы картошку, тыкву, арбуз, дыню, огурцы, помидоры, морковь и многое другое!»

Вода же твердит: «Как бы они могли расти без меня? Без воды бы они высохли».

Огонь же уверен: «Если бы не я, люди бы вымерли зимой... Как бы они могли выпечь хлеб? Сварить мясо, картошку, суп? Приготовить другую пищу?»

Диалог, который выполняет основную композиционную роль в формировании данного произведения, состоит из тридцати шести вопросно-ответных формул, двадцать пять из которых составляют диалог между Огнем и Водой.

В контексте повествования эти два грозных явления природы становятся оппонентами в споре, который перерастает в конфликт, составляя кульминацию произведения. Данная композиционная особенность, на наш взгляд, представляет наиболее интересную часть текста, в содержательную формулу которой сказочник вложил высокое мастерство мышления и красоту народного языка. Приведем ее в кратком изложении: «Таким образом, споря между собой, Огонь и Вода доходят до поединка. Огонь охватывает пламенем все вокруг. Вода же начала его тушить. Огонь охватил сенокосные угодья. Вода следом потушила их. Огонь двинулся в сарай, а Вода следом. Огонь направился в дом. Вода преградила ему путь. Тогда Огонь бросился на Воду. Вода начала тушить пламя».

Судя по содержанию текста, победителя в поединке не было, трудно уловить здесь и авторскую мысль, на чьей стороне его симпатия.

Сказка завершается на благородной ноте: усталые и беспомощные, они обращаются за помощью к случайно проходившему мимо старцу, прося его разобраться, кто из них прав. Тот, проявляя мудрость, отвечает им: «Остановитесь! У обоих вас много силы и возможностей. Каждый из вас может



принести много зла и добра на земле. С сегодняшнего дня прекратите спор между собой!»

С каких времен бытует данная сказка в карачаево-балкарской устной сказочной словесности и как выяснить ее изначальные национальные истоки? Вопрос этот весьма серьезен и требует глубокого научного изучения.

Остановившись на детерминанте воды, как выдающемся феномене художественно-предметного мира в славянском и мировом фольклоре, В.П. Аникин подчеркивал: «Вода, чистая принадлежность обрядового действия, в сказках творит чудо за чудом: она возвращает зрение, дает молодость, исцеляет от болезней, оживляет, лишает силы, делает героя сильнее самых страшных чудовищ. Есть и такая вода, которая может обратить человека в зверя, птицу, но есть и другая, которая возвращает людям человеческий облик» [4, 95]. Не менее ценны рассуждения ученого и об огне, сыгравшем значительную роль в становлении человека, как общественного явления: «Загадочное природное явление – огонь, переменчивое, самозарождающееся, ненасытное, способное сжечь и уничтожить все подверженное горению, было не только бедствием, но и благодеянием... Коварный и дружественный, огонь очень рано вошел в число тех природных стихий, которые люди окружили почитанием. Так было вероятно, у всех народов» [4, 123].

Содержание текста показало, что в нем нет ясности в описании внешних особенностей и характеров Огня и Воды: то они беседуют мирно и ведут диалог между собой, затем завязывается конфликт: Огонь охватывает все вокруг пламенем, а Вода своей струей гасит его. Нетрудно догадаться, что со временем, под влиянием различных религий, они приняли облик обыкновенных людей и вид у них вполне антропоморфный.

Текст «Солнце и Луна» [46] записан в одном варианте в исполнении Мизиева Адрая Жарахматовича в 1974 г. Эту сказку он слышал в 1920 гг. от стариков из рода Ахматовых, Мизиевых, Гулиевых, Калабековых в старинном балкарском ауле Думала, где хорошо сохранились элементы древней аланской культуры в языке, топонимике, парном и десятичном счете, богатырском эпосе и обрядово-мифологической поэзии. Даже само поселение в прошлом называлось, судя по преданиям, Дюгер-эл (в концепте «Дигорский аул»).

Перед вступлением сказочник повторял следующие поэтические формулы, весьма близкие по своей композиционной структуре к параллелизму:

Кюндю, Айды жарытхан,
Къымылдагъанны жашатхан,
Кюндюз жылыуун ийген,
Кече жолну кёргюзтген.

Это Солнце и Луна освещающие,
Шевелящимся (на Земле) жить способствующие,
Днем свое тепло посылающее (Солнце),
Ночью путь указывающая (Луна).

Конечно же, время наложило ощутимый отпечаток на весь фонд сюжетно-повествовательных и художественно-стилевых средств, что ясно



проглядывается в языке текста, его лексике, а потому в нем не сохранился ряд архаичных мотивов, через которые мы бы могли иметь представление об ее изначальных мифических элементах, что дало бы ответ на многие интересующие нас вопросы.

Здесь весьма сложно разобраться, следует ли признать эти строки присказкой, или они являются отрывками из какого-либо поэтического текста сказочного характера. На наш взгляд, не исключено ни первое, ни второе.

Согласно канонам сказочного эпоса, присказка имеет устоявшуюся формулу, за редчайшим исключением, носящую традиционный характер, что весьма сложно признать в контексте данного произведения. Считать же, что приведенные строки являются отрывком из какого-либо крупного стихотворно-поэтического текста, в прошлом бытовавшего в карачаево-балкарской среде, у нас нет основания.

Вступление начинается с небольшого повествования о том, что в очень давние времена Солнце и Луна были красивыми людьми. Солнце было парнем, а Луна – девушкой. Они безумно любили друг друга, но избегали встречи и любовались избранниками на расстоянии. Так продолжалось несколько лет.

Тогда не было на Земле дня и ночи, и только звезды освещали ее, а потому в темноте люди мучились, питаясь в основном плодами деревьев, ловили рыбу, охотились на лесных зверей.

Людей становилось все больше и больше, и тогда они собрались на берегу реки Адиля (Волги) и стали просить у Великого Тейри и Аллаха, чтобы Земля освещалась какой-то силой днем ярко, а вечером слабее. Тогда Великий Аллах превратил этого мужчину, которого звали Кюн в Солнце, освещающее землю днем, а красавицу-девушку, которую звали Ай – в ночное светило – Луну. И стали они освещать Землю, сохраняя душу и дух человеческий.

Но на небе жило злое чудовище Желмауз, которое ненавидело их и старалось уничтожить Солнце и Луну. Когда они засыпали, чудовище спускалось с Неба, приближалось к одному из них, открывало свою огромную пасть и старалось проглотить его, после чего на Земле становилось темно.

Тогда люди собирались во всех селлах и ущельях Беш да Таулу Эл (в пяти обществах Таулу, т.е. в Балкарии и Карачае), зажигали огни, били в тазы и металлическую посуду, громко исполняли песню «Чоппа», стреляли в небо, стараясь разбудить светило и его охрану, чтобы оно не стало жертвой дракона, а на Земле не наступил бы мрак.

Спустя какое-то время, светило начинало показываться все больше и больше и вскоре на Земле становилось ярко. Люди в честь этого устраивали празднества, т.к. язычникам казалось, будто они одержали победу над их извечным врагом – драконом.

Конечно же, здесь идет речь о затмении Солнца или Луны. С принятием ислама, данный общинный обряд начал слабеть и забываться и люди все больше склонялись к мысли, что подобные явления происходят по воле Всевышнего Аллаха.

Пожалуй, наиболее интересной повествовательной частью текста является ряд сюжетных элементов о тайных встречах Солнца и Луны. К сожалению, в них ярко не раскрывается, где и как они встречались, но кратко сообщается, что от этого священного брака рождается мудрая красавица



Сатанай, много сделавшая для усиления нартского племени в их борьбе с великанами-эмегенами.

Заканчивается произведение на драматической ноте: Солнце умирает в своих владениях на небе, и с Луной происходит то же самое.

Концовкой служит традиционная формула: «Как мы не видели этого, да не испытать нам болезни и проказу!»

Сюжетные элементы говорят в пользу того, что в обоих произведениях доминирующими мотивами является мифологическое воззрение на окружающий нас предметный мир, а потому сложно определить жанровую особенность этих сказок. Судя по содержанию, они прошли весьма длительный и сложный путь в своем эволюционном развитии. Мы склонны считать, что сюжетная основа рассматриваемых произведений берет начало из древнейших языческих цивилизаций Востока (Индии, Ирана, семитской и египетских культур), а затем распространилась по всему миру.

В системе сказок со значительным преобладанием мифических мотивов своеобразным и весьма интересным произведением является текст «Ашхам жулдуз» [45, 188–189] – «Вечерняя звезда* (Венера)», главную сюжетно-повествовательную основу которого составляет ряд мотивов фантастического характера о том, каким образом появилась на небесах Венера, и почему она начинает светить раньше других.

Как сама композиция и, в целом, сюжетно-повествовательные элементы текста, интерес в нем вызывают пространственно-временные мотивы, освещающиеся здесь: «Давным-давно, когда на берегу речки Кам жили нарты, Вечерняя звезда (Венера) была, говорят, матерью охотника Окулая (проживающего тут)», – начинается вступительная часть произведения, которую мы бы условно разделили на две части.

Далее дается характеристика Окулая как охотника, в которой подчеркивается, что он стрелял без промаха. На промысел он ходил, когда было пасмурно, туманно. О его повадках знали дикие звери, и, когда он промышлял в горах, они не выходили из своих нор.

Последующие повествовательные элементы мы бы определили, как развитие действия, которое, исходя из сюжетных схем, будет правильно разбить на три части. В первой говорится, что однажды Окулай долго бродил по горам, по знакомым местам, но не найдя никакой добычи, про себя размышлял: «Ах, теперь меня Апсаты проклял, не будет доброй моя дорога (на охоту)!» – переживал он.

Вернувшись домой без добычи, он видит сон: к нему подходит какой-то посланник и говорит: «На истоке реки Кам, в пещере Жекеме находится стрела. Окулай пусть возьмет эту стрелу и на охоту теперь отправляется с ней. Апсаты передал, чтобы, пока не найдет эту стрелу, он не охотился, ни с кем не общался, домой не возвращался», – произнеся эти слова, загадочный незнакомец исчезает.

Следующая сюжетная ситуация повествует о том, что после виденного сна, Окулай становится подавленным, плохо ест и спит, не общается с людьми, и обеспокоенная мать обращается к нему с вопросом: «В чем дело?» В этой части сказки диалог, как композиционный прием, играет существенную роль в создании основной содержательной канвы произведения,

* Балкарцы и карачаевцы ошибочно считали планеты солнечной системы звездами.

в которой раскрываются внутренний мир и характеры таких персонажей, как таинственный посланник божества охоты Апсаты, мать знаменитого охотника Окулай и сам охотник, который стал жертвой виденного им сна и совета матери.

В лексике его безымянной в тексте матери прослеживаются следы древнего язычества, где некромантии отводилась большая роль в судьбе человека и общины, что мы определили бы как третью сцену развития действия. Так, уговорив сына рассказать ей виденный им сон, выслушав его, она молвит, весьма расстроенная и опечаленная: «Да, дитя мое, из пещеры Жекеме нет обратного пути, оттуда из рода человеческого никто еще не возвращался!» Убедившись же, что его невозможно остановить, она предпринимает следующие меры: из шкуры сорокалетнего тура изготавливает чабуры, из барсучьей шкуры сшивает шаровары, натянув на пояс ремень из воловьей шкуры, в мешки упаковывает пищу, которой могло бы хватить на сорок дней и сорок ночей, и провожает его в путь, пока не выпала роса.

«С этой стрелой живым, здоровым я вернусь домой, а ты каждый вечер жди моего возвращения!» – сказав, Окулай отправляется в путь.

Кульминацией текста служит повествовательный элемент о том, что мать Окулая сорок дней ожидала его возвращения, а затем еще сорок лет смотрела на дорогу, надеясь увидеть сына. Убедившись, что он не вернется, она обращается к *Кёк Тейри* «Тейри Неба», покровителю звездного мира со словами просьбы-заговора:

*Тёбен Тейри,
Огъары Тейри,
Бу таш мени,
Бу таш сени.
Че, че, мен да сени...*

Тейри Земли,
Тейри Неба,
Этот камень мой,
Этот камень твой.
Че, че, я тоже твоя...

И тут же взлетает на небо, а Тейри Неба превращает ее в Вечернюю звезду (Венеру).

Завершается текст интересной концовкой, не совсем характерной для мотивов данного вида сказки: «И сегодня она (Вечерняя звезда – *Х.М.*), восходит после заката Солнца, когда на земле становится темно. Пока она не потеряла надежды на (возвращение) своего сына. Ждет его. Если восходит Вечерняя звезда, путники обязательно вернуться (к себе домой)».

Анализ сюжета и композиции сказки показал, что пространственно-временные каноны в ней фантастичны: действия в ней происходят на берегу маленькой речушки Кам, которая протекает мимо старинного аула Кам в верховьях Чегемского ущелья, разыгрываются то в его родном ауле, то высоко в горах, то, по велению божества охоты и лесных зверей Апсаты, в загадочной пещере Жекеме и, наконец, по велению верховного божества тюрко-монгольского пантеона Великого Тейри, на небесах.

И все же в основе всех существенных событий произведения лежит скрытый конфликт: здесь сталкиваются знаменитый охотник Окулай, которого очень боятся звери, и покровитель Апсаты, ищущий пути наказать его за беспощадность к его стадам. Достигает своей цели божество, давая ему знать во сне через своего посланника, что он должен подняться в пещеру



Жекеме и забрать с собой находящуюся там стрелу, иначе у него никогда не будет удачной охоты.

Не возвращается Окулай ни через сорок дней, ни через сорок лет, после чего в конфликт неосознанно вступает его мать, которая до этого уговаривала своего сына не ходить в ту пещеру, поскольку оттуда еще никто не возвращался, тем самым, очевидно, разгневав Апсаты, идя наперекор ему.

В образной системе произведения значительное внимание уделяется весьма почитаемому древними тюрками священному числу «къыркъ» – «сорок», нередко встречающемуся в обозначении эндотнотонимов или субэтнотонимов. Вспомним этнонимы «кыргыз» от «кырккыз», т.е. «сорок девушек», «кырк мажар» – «сорок мажар», «кырк огуз» – «сорок огузов (племен)» и т.д.

В сказке в качестве могущественной силы задействован верховный бог тюрко-монгольского языческого пантеона Тейри, который по просьбе-обращению матери Окулая, уставшей ожидать своего сына-охотника, забирает ее на небеса, а затем превращает в Вечернюю звезду.

Слова заговора весьма латентны, хотя как произведение магической поэзии он представляет большой интерес для исследования.

Нам представляется, что у исполнителя-сказочника записан далеко неполный его вариант, т.к. он мог быть просто утерян из памяти народа.

К сказкам, связанным с древними культурами, относится и произведение «Къой жилин» – «Веретеница» [45, 138–139], в котором повествуется о том, что в давние времена у одной женщины была дочь по имени Ариука (в интерф.: «Красавица»). Однажды она пошла с подругами купаться на речку и, как только вышла из воды на берег, вдруг выползает крупный змей-веретеница и сворачивается на ее одежде. Когда подруги ушли, оставив ее одну, змей на человеческом языке говорит, что он вернет ей одежду, если она согласится выйти замуж за него. После небольшой паузы она дает слово и соглашается с его условием.

Придя домой, Ариука обо всем случившемся рассказывает своей матери.

В развитии действия повествуется о том, что вскоре сотни змей окружают их дом, давая знать, что они пришли сватать Ариуку. Поняв, что они не смогут зайти в дом через двери, они взлетают в небо и, спустившись оттуда вниз, заходят в помещение через окно и умыкают Ариуку в свое подземное, водяное царство.

Через несколько лет Ариука возвращается к матери с дочкой и сыном, имевшими человеческий облик, и рассказывает ей, что жизнь в подводном мире интереснее, чем на земле, и хочет вернуться с детьми обратно в свое логово. Матери удается узнать у дочери латентные ключевые слова, после произнесения которых подплывает к берегу змей и забирает семью к себе в подземный мир.

Втайне от дочери она всю ночь точит топор, а утром подходит к берегу реки и произносит кодовые слова, после чего подплывает к берегу змей. Она же метким ударом отрубает ему голову, отделив ее от туловища.

Ничего не подозревая, Ариука подходит к реке и видит на ее берегу отрубленную голову змея-веретеницы, своего мужа. Поняв, в чем дело, Ариука крепко обнимает свою дочь и сына и на прощание говорит им: «Теперь у вас нет отца, пусть не будет и матери. Ты, дочка, будь красивой ласточкой



и летай над рекой; а ты, мальчик, превратись в соловья и вечно пой; я же превращусь в кукушку и буду вечно куковать и оплакивать своего мужа, твоего отца от зари до зари!» Как только она произнесла эти слова, все трое превратились в пернатых и улетели в три стороны.

В произведении прослеживаются определенные мотивы международного сказочного сюжета о благородных змеях, наделяющихся волшебными и человеческими качествами. Веретеница может влюбиться в красивую девушку; от этого брака рождаются дети; рептилия владеет человеческой речью и может взлетать, как птица, высоко в небо и опускаться на землю и т.д.

В тексте наблюдается, пусть сказочный, но весьма интересный конфликт между человеком и рептилией, а также вытекающее из этого столкновение между матерью и дочкой. Мать никак не может смириться с подобным браком, что мы видим как в начале, так и в развитии действия произведения, который заканчивается трагедией.

Пожалуй, наиболее трогательной частью сказки является развязка, в которой волшебные мотивы играют существенную художественно-повествовательную роль, когда на жестокое убийство матерью ее мужа-змея героиня сказки Ариука отвечает превращением себя и своих детей в пернатых. Печальна сцена прощания ее с детьми перед тем, как они превратились в птиц и улетели в небо.

Довольно сложно объяснить древнее художественно-эстетическое мышление народа на примере сюжетных элементов данной сказки, но оно, безусловно, заслуживает уважения.

Среди мифологических сказок большой популярностью в народе пользуется произведение «Айны бла Кюнню тутулууу» [44, 12–14] – «Затмение Луны и Солнца», строящееся на своеобразном сюжете и композиции.

Повествовательные элементы его таковы: вступление начинается с рассказа, что у одного известного в народе человека, имеющего сына, рождается дочь; оставаясь с ней наедине, брат начинает подозревать ее еще в колыбели, что в ней кроется какая-то злобная, внушительная сила, и угрожает родителям избавиться от нее, за что те прогоняют его из дома; бродя по лесу, он видит, как тигрица готовится рожать тигрят и выполняет обязанности повитухи, за что она дарит ему одного из своих детенышей, а другого он крадет у нее и удаляется с ними глубоко в лес; здесь он учит их искусству охотиться на дичь, и становятся они вскоре большими; прощаясь, тигры дают ему по одной волосинке из своих шкур и говорят, что если он будет нуждаться в их помощи, нужно будет сжечь их, и они быстро придут на помощь.

Через какое-то время юноша возвращается к себе в село и там видит только кузнеца, который на его вопрос: «Что случилось с селом, куда делся народ?» – ответил, что его сестра Желмауз (всепоглощающий дракон) съела всех, кроме своих родителей и его, кузнеца, чтобы он точил ее железные зубы.

Далее композиция текста меняется в сторону развития действия, и поддерживающие элементы его повествуют о том, что, войдя в дом, девушка видит брата. В диалоге с ним она дает знать, что съела его коня, и вручает ему таз, чтобы до ее возвращения, он стучал по нему. Здесь в текст вклиниваются волшебные сказочные мотивы, повествующие о том, что неожиданно



появляется мышь, которая хочет помочь ему и на человеческом языке говорит, что она будет стучать по тазу до возвращения девушки, и дарит ему три предмета: зеркальце, расческу и шило. Грызун объясняет, что девушка будет его преследовать. Если же станет догонять его, нужно бросать по одной эти вещи, т.к. они способны остановить ее: зеркальце превратится в море, расческа – в крепость, а шило – в железную решетку.

Согласно сказочной традиции, так и развиваются события. Когда же, преодолев все волшебные препятствия, девушка начала приближаться к брату, он сжигает тигриные волоски, вскоре после этого они появляются и начинают ее грызть. Испугавшись их, она взлетает в небо, а охотничьи тигры, вцепившись зубами в ее одежду, поднимаются вместе с ней.

Далее события переносятся в небеса, где, согласно сказочным мотивам, девушка-дракон также старается сотворить зло, пытаясь проглотить Луну и Солнце, чтобы на земле было темно, но охотничьи тигры не позволяют ей достичь цели, вцепляясь ей в лицо.

Согласно народному мировоззрению, когда дракону удастся приблизиться к Луне или Солнцу, происходит затмение, и земля окутывается мраком. Тогда люди на земле бьют в тазы, стреляют в небо, создают как можно больше шума, чтобы пробудить стражников светил.

Хотя повествовательные элементы текста и его композиционные особенности не выделяются высоким художественным уровнем, чрезвычайный интерес вызывает ряд мотивов, образующих сюжетные схемы на мифическую, сказочную тему.

Среди сказок данного жанра, для исследования представляют интерес такие произведения, как «Тейри кылыч кылай болгъанды?» [46] – «Как появилась радуга?», «Чолпан жулдузгъа «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» деп нек айтхандыла?» [46] – «Почему звезду Чолпан (Венеру) называли «Звездой, продавшей свою мать за золотую шубу»?», «Тенгиз тузлу некди?» [43, 409–410] – «Почему море соленое?» и др. Кратко коснемся некоторых из них.

Первое произведение было записано нами в 1976 г. при случайных обстоятельствах в исполнении Кулиевой Зулейхи Ш., которая слышала его от своей очень старой бабушки из рода Этезовых. Произведение состоит из нескольких мотивов, в которых наиболее привлекательными являются сюжетные элементы, повествующие о том, что радуга была создана по велению *Кёк Тейри* – Тейри Неба, чтобы другие божества, покровители воды, огня, леса, полей и животных, могли свободно передвигаться по небесам.

Сказка о том, по какой причине Утреннюю звезду (Венеру) в народе принято называть светилом, продавшим свою мать за золотую шубу, весьма странная и трудно поддается объяснению. Основным мотивом в ней является сказание, что это название она получила в древние времена по имени женщины из аула Дюгер-Эль (позже его называли Думала) в верховьях Чегемского ущелья, которая любила острые, забавные игры, а однажды и не в шутку похитила у своей пожилой матери ее *кьундуз тон* – шубу из шкуры выдры, за которую ту в народе было принято называть Алтын-Тон – Золотой Шубой. Вследствие проклятия своей матери за воровство, она однажды взлетела на Венеру, откуда и пошла, очевидно, данная сказка.

В группу сказок мифологического характера можно включить и сказки о животных, посвященные объяснению их внешних особенностей, среди которых мы бы выделили такие тексты, как «Къоянны эрини нек жырыкъ болгъанды?» – «Почему рассеклась губа у зайца?», «Къаргъа нек болгъанды къара?» – «Почему ворона стала черной?», «Макъа къуйрукъсуз нек болгъанды?» – «Почему лягушка осталась без хвоста?», «Пил узунбурун нек болгъанды?» – «Почему слон стал длинноносым?», «Маймул агъачда нек къалгъанды?» – «Почему обезьяна осталась жить в лесу?» и др., в содержание которых народ вложил свои складывавшиеся веками представления об окружающем его живом мире, особо выделяя мотивы о животных, с которыми он тесно соприкасался.

Кратко остановимся на их сюжете, композиции и повествовательных особенностях, выделяя художественно-стилевые средства. Сказка «Почему рассеклась губа у зайца?» имеет интересную сюжетную основу, в которой предводитель этого племени желает, чтобы они исчезли с лица земли, т.к. над ними как трусами смеются и животные, и люди. А потому он предлагает собраться всем дружно, добраться до ближайшего моря и утопиться в нем, чтобы в дальнейшем не быть объектом насмешек для окружающих.

Признав его слова объективными, зайцы двинулись следом за своим предводителем к морю и недалеко от него заметили одинокую овцу, которая, испугавшись их, бросилась бежать в свое стадо. Оно же, не разобравшись в чем дело, от испуга тоже ударилось в бегство. Пастухи и собаки, которые их охраняли, как ни старались, не могли остановить стадо овец.

Здесь наступает кульминация, когда зайцы начинают насмехаться над трусостью племени овец, после чего повышается их уверенность в себе, и сюжет принимает другую повествовательную особенность, что весьма интересно передается репликой сказочника: «Увидев это, потерявшие интерес к жизни, шедшие к смерти зайцы очень удивились и развеселились. Они попадали на бок, до коллик в животе, до трещин верхней губы смеялись». Так, на веселой ноте завершается данная сюжетная ситуация, которая приводит к интересной и неожиданной развязке, передающейся устами предводителя племени зайцев: «Остановитесь. Не следует нам тонуть в воде. Мы не такие слабые и немощные, как думаем о себе! Если объединимся, если придем к единому мнению, мы тоже будем сильны!» Зайцы возвращаются обратно в лес, откуда они вышли.

Последнее предложение отвечает на поставленный в названии текста вопрос следующей концовкой: «Но с этого дня на верхней губе племени зайцев навсегда остается трещина».

Небольшая по объему сказка состоит из ряда интересных мотивов и композиционных элементов, среди которых мы бы выделили следующие особенности: решившись исчезнуть с лица земли, благодаря чудом произошедшему внутреннему конфликту зайцы решаются на выживание; создатели мотива, почему на верхней губе серого появилась трещина, причину нашли, якобы, в их собственном смехе. Т.о. юмор выделяется в произведении как главное художественно-эстетическое средство: стадо овец приходит в ужас, видя многочисленное племя зайцев, подумав, что оно замышляет что-то плохое против них. О глубокой древности сказки говорит отсутствие в



ней какого-либо имени персонажа или просто упоминаний временно-пространственного порядка.

Текст «Почему ворона стала черной?» по жанровой особенности, бесспорно, напоминает сказку о животных, в которой значительно превалирует мотив народного представления об истории появления отличительных внешних черт данного пернатого.

Здесь два персонажа – ворона и сова, которые очень дружат и доверяют друг другу. Диалог как оппозиционный прием в тексте играет главную роль в передаче взаимоотношений между птицами, а также в раскрытии основной содержательной мысли произведения, которая должна ответить на поставленный в названии сказки вопрос.

В этом небольшом произведении повествование начинается с того, что в древние времена ворона и сова имели яркий белый цвет и были легко уязвимы для хищников на земле и в небе, а потому ворона однажды предлагает сове перекраситься в другой цвет, чтобы они были незаметны для людей и других животных. Ворона первой разукрашивает сову в разные яркие цвета, что очень понравилось ей. В ответ сова также нарядно и красиво старается разукрасить ворону, да так постаралась, что она стала выглядеть красивее самой совы.

Заметив это, сова начинает завидовать, что ворона красивее ее, и насыпает на подругу черную сажу, а сама улетает из этих мест. Беспомощная и обиженная ворона кричит вслед сове: «Что ты сделала со мной, ужасная длинноноготная, огромноглазая? Я отомщу тебе за это! Как мне теперь появляться в таком виде? Теперь все будут замечать меня!» – и начинает рыдать.

Устами сказочника текст заканчивается сообщением, что сажа глубоко проникла в перья и тело вороны, навсегда изменив ее внешний вид.

Анализ текста показывает, насколько хорошо была развита фантазия у сочинителей данного мотива. Невольно задаешься вопросом, почему ворона и сова в древности были белого цвета? Почему неожиданно между ними появляется такой человеческий порок, как зависть, ведущий пернатых к конфликту, через который сказочник достигает поставленной цели: раскрыть причину, почему ворона стала черного цвета, а сова вобрала в себя разные цвета?

Вся сюжетно-повествовательная канва данного произведения, на наш взгляд, строится на стремлении через взаимоотношения животных показать такое отрицательное явление человеческого общества, как зависть, которая, присутствуя в сознании вполне здравомыслящих людей, нередко может управлять ими, порождая конфликты и столкновения.

Сказка «Почему лягушка осталась без хвоста?», записанная в одном экземпляре, представляет интересное произведение, в основе повествовательных элементов которого лежит проблема нравственности. Очевидно, мотив ее заимствован из устной восточной традиции, ибо об этом говорят сами содержательные элементы произведения.

Вступительная часть начинается с того, что в далеком Иране в одно время стало мало воды, и падишах этой страны однажды поручает лягушке сторожить колодец и отпускать людям и животным воду только по его распоряжению. В начале лягушка добросовестно и честно выполняла

порученное ей дело, но со временем, почувствовав власть, начала вести себя заносчиво, проявлять строгость, а затем возомнила, что она является владыкой воды и начала обижать людей.

В развитии действия есть небольшой эпизод, в котором повествуется о том, что однажды, возвращаясь с караваном из далекого пути и остановившись у колодца, люди хотели напоить усталых верблюдов и сами захотели напиться воды. На их просьбу лягушка спрашивает: «А взяли на это разрешение у падишаха?» – на что купцы отвечают: «Да, у нас есть разрешение пользоваться колодцем от его величества падишаха». Но лягушка не пускает воду из колодца, и они уходят, жажда напиться, слабые и беспомощные, о чем становится известно самому падишаху.

Подобные сцены повторяются несколько раз. А однажды главный визирь страны со своими людьми возвращался в Иран из далекого Мисира (Египта). Усталый, со своим караваном он останавливается у того колодца и, представившись, просит у лягушки пустить воду из колодца, чтобы смогли напиться их верблюды, а они – набрать ее в кувшины. На это лягушка отвечает отказом и говорит: «Пусть падишах сам просит у меня пустить воду колодца своим визирям!»

Услышав об этом, падишах является к тому колодцу, отрубает у лягушки длинный хвост, а саму ее приказывает отвезти и бросить в песчаное место, где нет воды.

Произведение заканчивается словами сказочника: «С этого дня из-за жадности и заносчивости лягушка лишилась своего хвоста и долго бродила слабая и беспомощная по пустыне, пока не напоролась на вонючий омут, где было много червей и насекомых».

Если образ и поступки лягушки перенести в человеческий мир, нетрудно догадаться, что в нем подобные события могли происходить нередко, т.к. разум играл не только положительную, но и весьма отрицательную роль в судьбе страны, целых народов, большой и малой общины, а также отдельного индивида. Хотя повествование носит наивный характер, в нем веет восточной мудростью, ибо люди ясного ума неслучайно выбрали лягушку, чтобы через ее образ, анатомическую особенность показать пороки в человеческом обществе.

Сказка «Почему слон стал длинноносым?», очевидно, заимствовано опять-таки из восточных мотивов, хотя в ней четко не обозначаются пространство и время. Нам представляется, что подобного рода мотивы в карачаево-балкарский фольклор могли проникать через Турцию, посредством духовных лиц, совершавших паломничество в Мекку и Медину, которые были до некоторой степени носителями богатого восточного культурного наследия.

В произведении сложно выделить какие-либо морально-нравственные или поучительные мотивы, хотя и вызывает удивление поставленный в его названии вопрос. Весьма краткая по объему сказка повествует о том, что в давние времена у слона не было хобота, и он с трудом доставал пищу, а еще с большими затруднениями пил воду, пригибаясь вниз, к земле.

Однажды к слону подходит какая-то обезьяна и говорит, что она наблюдает за ним и ей становится его жалко, т.к. он мучается, пытаясь достать себе пищу и выпить воду, на что слон отвечает: «А что ты можешь предложить, чем можешь помочь?!»



Обезьяна говорит, что на дереве, где они живут, водится липучая, толстая змея, у которой следует убрать хвост и голову, а остальную часть рептилии прикрепить к его носу. Это значительно облегчит его жизнь.

Так оно и было сделано. Слон начал легко доставать себе пищу и пить воду.

Сказка заканчивается авторским монологом, что так и возник у слона «пил бурун» – хобот, который он очень берег, а обезьяне был благодарен за мудрый совет и помощь.

Изучение сказки наводит на мысль, что ряд сюжетных элементов либо опущен, либо отсутствует в ней, поскольку заимствованные из другой культуры мотивы не всегда полно и без трансформаций приживаются в другой словесной духовности. Очевидно, такое случилось и с данным произведением, хотя и следует отметить как положительное явление, фрагментарное бытование в карачаево-балкарском фольклоре исследуемого мотива.

Сказка «Почему обезьяна осталась жить в лесу?», очевидно, заимствована нашими этническими предками (гуннами, аварами, огузами, булгарами, хазарами, печенегами, кипчаками-половцами) из китайского фольклора. Не секрет, что в период проживания по соседству с Поднебесной они воспринимали у нее широкий аспект материальной и духовной культуры.

Небольшая вступительная часть начинается с повествования о том, что в далекие времена в стране Чин (Китай) в лесу дружно проживали люди и звери. Но со временем люди начали обижать зверей: устраивать охоту, убивать и прогонять их из пещер.

Обезьяны и люди были друзьями, и их было трудно отличить друг от друга. Однажды, когда люди начали устраивать охоту на вольных, непослушных обезьян, они собрались и разом покинули те места, где проживали люди, и начали проникать в глубокие густые леса. Там они мирно жили с тиграми, львами, змеями, дикими лошадьми и волками. Здесь у них появилась шерсть на теле, хвост, изменились руки и ноги, они все больше и больше походили на зверей, проживая с ними в лесу.

Проходило время, и обезьяны забыли человеческую речь, а люди стали хозяевами окружающего мира и начали истреблять и обезьян. Беспомощные обезьяны стали тогда уходить из Чина в другие страны и края. Так они распространились по всему миру, а древней родиной их был Чин.

В карачаево-балкарском фольклоре существует ряд произведений о пернатых, в которых присутствуют интересные сказочные мотивы, носящие нравственный, философский и познавательный характер. Это такие произведения, как «Кёгюрчюн уясын къалай салгъанды?» – «Как свила себе гнездо голубка?», «Бизде зурнукла нек жашамайдыла?» – «Почему у нас не живут журавли?», «Къаргъа бла балалары» – «Ворона и воронята», «Акбыллы жумарукъ» – «Умный улар» и др.

К сожалению, мы не имеем возможности провести научный анализ этих текстов, хотя их содержательно-повествовательный характер, язык и композиция содержат много интересного и своеобразного.

Сказка «Змея, ласточка, оса» развивает весьма распространенный мотив в тюркской народной сказочной прозе. У кумыков и ногайцев она

называется «Змея, ласточка и комар». Мало чем отличаются друг от друга их сюжетно-содержательные особенности. Сказка интересна для детей с познавательной точки зрения, т.к. в ней дается толкование того, почему у ласточки хвост раздвоенный, а комар или оса не могут издавать другого звука, кроме «з-з-з», и почему они прислушивались к змее.

Главным образом в сказке повествуется о том, что в давние времена крепко дружили змея, ласточка и оса. Змея в основном питалась мясом, ласточка насекомыми, а оса пила кровь животных.

Однажды змея поручает осе испробовать кровь всех животных и сообщить ей, чье мясо самое сладкое, а ласточке – сопровождать ее. Через несколько дней оса хвастливо сообщает ласточке, что она узнала, чье мясо самое сладкое – это человечье. Как только она улетела и об этом хотела дать знать змее, ласточка, опередив осу, откусила ей язык, и она вместо слов могла издавать только звук «з-з-з».

Почувствовав что-то в этом неладное, змея откусила хвост ласточке, из-за чего он стал раздвоенным. Но перед тем, как улететь, ласточка сообщила змее, что оса ей сказала, что самое сладкое мясо на земле – это мясо лягушки. После этого змея начала глотать лягушек, а ласточка и оса, став врагами, разлетелись в разные стороны.

Интересен и своеобразен сюжет сказки «Лис, Волк и Заяц» на тему превращения людей в животных. Своеобразна и присказка к произведению, которая, опять-таки носит не совсем традиционный характер. Бытует она, как принято в данном жанре фольклора, в стихотворно-поэтической форме и звучит следующим образом:

*Жомакъ ахшыгъа айтылсын,
Жукълаучуну уятсын,
Бастырыкъгъанны къачырсын,
Юйюбюзден кери этсин,
Аягъына шинжи кирсин,
Кёзюне кирпи тюшсюн,
Къантулукъну къаны тамсын,
Этген тилегибиз жетсин.*

Пусть к добру служит сказка,
Сонливого пусть разбудит.
Пусть Бастырыкгана* прогонит,
Удалит подальше от нашего дома.
Чтобы заноза зашла в его ногу,
Чтобы в глаз его попал еж,
Чтобы у Кантулука** кровь капала,
Чтобы сбылась наша просьба.

Кратко остановимся на повествовательных элементах сказки. В ней осуждаются такие человеческие пороки, как хитрость и коварство, жестокость и трусость. Где-то далеко в Ногайских степях люди жили весело и богато: сеяли ячмень, косили сено, держали много скота, охотились на сайгаков и на крупную птицу дударак. Но все село ненавидело трех жителей. Одному

* *Бастырыкган* – злой дух, мучающий людей, когда они спят.

** *Кантулук* – злое существо, приносящее беду.

за хитрость дали прозвище *Тюлкю* – Лис, другого за чрезмерное истребление всего живого (косуль, маралов, диких лошадей) прозвали *Бёрю* – Волк, а третьего, за трусость наградили прозвищем *Къоян* – Заяц.

Человек по прозвищу Лис старался обмануть всех, кого мог: и старых, и молодых, и детей, и женщин. Однажды удалось ему обмануть даже известного в округе вруна по прозвищу *Алдар* – Обманщик.

Тот, кого прозвали Волком, был очень жестоким и не придерживался никаких охотничьих правил: безжалостно истреблял в любое время года всякую дичь и их детенышей. Однажды, ранней весной он даже подстрелил двух оленят, трех косулят и несколько диких жеребят, которые мирно паслись в Ауарских степях между Бузданом и Этилем.

Зайцем прозвали старика, любителя охотиться с молодости на этих животных. И шуба, и шапка, и брюки у него были из заячьей шкуры. Кроме того, он питался исключительно заячьим мясом, видимо, потому и был большим трусом. Выходил он на охоту, когда рассветало, заканчивал ее до темноты, ночью закрывался и никому не открывал двери, никому не оказывал в беде помощи. А если надо было ему куда-то пойти ночью, то его сопровождали жены. Их у него было три, одна страшнее другой, они посмеивались над ним из-за его трусости.

Однажды осенью жители села обратились к самому знаменитому колдуну в округе по имени Эмгек (в интерф. «Гадкий»), чтобы он превратил одного из них за хитрость в лиса, другого за жестокость в волка, а третьего за трусость в зайца. Так оно и случилось: один превратился в лиса, другой – в волка, а третий – в зайца, и жили они вместе в пещере под скалой, еле добывая себе пищу. Люди над ними хохотали, а звери, чувствуя что-то неладное в их поведении и образе жизни, не подпускали к себе.

Находились и добрые люди в селе, которые носили им пищу. Со временем таких добрых в селе становились все больше и больше.

Однажды старики села посетили их и решили вернуть несчастным прежний облик и просить у знаменитого колдуна Эмгека об этом.

На берегу большой, широкой реки Буздан после повторного колдовства Эмгека они приняли прежний облик. Такой благородный поступок односельчан научил Лиса больше не хитрить, Волка обуздать свою кровожадность, а Заяц стал значительно смелее и добрее, чем раньше.

Внимательное изучение произведения показывает, что в нем наблюдаются элементы семейно-детской, мифологической, волшебной сказок. Конечно же, главным повествовательным элементом в ней является мотив превращения человека в животное. Ибо в фольклоре ряда народов мира «... мы находим многочисленные рассказы о животных, их происхождении, их особенностях, о близости к ним человека, например, фантастические рассказы о брачных отношениях между животными и людьми, о превращении людей в животных и о животных, принявших человеческий облик. Первоначально многие сказки о животных были рассказами мифологического характера, которым придавалось магическое значение» [60, 242].

Как мы отметили выше, художественно-композиционный анализ сказки показывает, что в основе ее морально-этического аспекта лежит осуждение таких человеческих пороков, как хитрость, жестокость и трусость.

В жанровом же отношении она принадлежит к мифологической сказке, в которой преобладает мотив превращения человека в животного.

Произведение несколько своеобразно в композиционном формировании. Вслед за присказкой начинается его вступительная часть, которая повествует о месте и времени происходящих событий, а также знакомит с именами персонажей текста, что вполне подходит к термину зачин. Следует оговорить, что данная композиционная модель тесно переплетается здесь с вступлением.

Сказка имеет четкие грани развития действия, заключающиеся в показе образа жизни и поступков ее персонажей, основную часть – кульминацию, где они превращаются из людей в животных, а также заключение, в котором преобладает акт гуманизма со стороны жителей села, когда их с помощью колдуна снова превращают в людей.

Язык текста прост, доступен для детского мышления. В нем встречаются древние тюркские гидронимы Буздан – Дон, Этиль – Волга и ряд терминов и словосочетаний архаического характера.

Анализ текста «Лиса, Волк и Заяц» позволяет рассуждать, что в основе его повествования лежит мотив превращения человека в животное.

На других текстах мифологического характера мы не будем останавливаться подробно.

III

Волшебная сказка является одним из интереснейших, но до настоящего времени не раскрытых в должной мере разделов устной прозы. Отчасти в прошлом ее коснулись в своих научных исследованиях А.И. Караева [41, 17–18], А.З. Холаев [70, 25–28], Х.Х. Малкондуев [54, 10–13], доктор культурологических наук Ф.А. Урусбиева [69, 21–42]. Указанные авторы в основном опирались на одни и те же эмпирические материалы, в которых тексты по волшебной сказке были представлены недостаточно полно.

В последние годы в карачаево-балкарской фольклористике наметился определенный прогресс в изучении волшебного сказочного эпоса, что подтверждается публикацией ряда статей по данной тематике [36; 37; 48; 50; 51; 52]. Несмотря на это, в целом данная проблема остается недостаточно разработанной, не говоря о том, что до сих пор в карачаево-балкарской фольклористике отсутствует какое-либо исследование, посвященное сюжетному указателю по системе А. Аарне и С. Томпсона. Конечно же, «Выделение международных типов сказок способствовало упорядочению имеющегося материала, выявлению сходства произведений разных народов, раскрытию особенностей национальных репертуаров и специфики отдельных сказок» [42, 203]. Думаем, что это упущение в науке будет наверстано учеными в будущем.

История изучения вопроса свидетельствует о том, что в русской фольклористике он успешно исследован в трудах выдающихся ученых В.Я. Проппа [58, 122–158], В.П. Аникина [4, 40–88], Ю.М. Соколова [62, 292–371] и др. В кавказоведении же поэтике и типологии адыгской волшебной сказки посвящено солидное академическое исследование д.ф.н. А.И. Алиевой [2]. Определенный успех достигнут в изучении народных



сказок дагестанскими учеными, в трудах которых успешно рассматриваются особенности внутрижанровой структуры многоязычной сказочной прозы Дагестана, где в отдельный раздел выделяется ее волшебная разновидность [34]. Возвращаясь к собственно карачаево-балкарской волшебной сказке, следует заметить, что национальной индивидуальной ее особенностью является наделение сверхъестественными качествами отдельных предметов, которые нередко помогают герою выбраться из тяжелой ситуации, побеждая своих врагов.

Волшебными качествами могли обладать конь и меч героя, которые являлись его надежными друзьями и спутниками, предупреждали об опасности, грозящей в пути. Мотивы, связанные с мечом, нам представляются весьма архаичной традицией, берущей начало от древнетюркской мифологической культуры. Как известно, гунны, авары, кидани и другие племена поклонялись мечу и обожествляли его.

Так, впервые в отечественной фольклористике обращаясь к анализу волшебных сказок, А.И. Караева замечает, что: «Героями волшебных сказок являются богатыри из народа, побеждающие злых людоедов-джелмаузов, эмегенов, драконов-сарыубеков, коварных старух – эмеген къатын. Помощь герою в его борьбе оказывают чудесные кони – Гемуда и Тарпан-Ат, могучий орел Къара-Къуш. Фигурируют чудесные предметы: чаша – гоббан, меч – сырпын, палка-самобойка – токмак, летающий коврик – намазлык» [41, 18].

Из цитаты видно, что в своих рассуждениях ученый несколько выходит за пределы волшебных сказок. Упомянутые в ней кони Гемуда и Тарпан-Ат – это персонажи богатырского эпоса «Нарты», текст же произведения, где упоминается орел Кара-Куш, который помогает герою выбраться из подземного царства, скорее всего, относится к разряду героической сказки, в которой мотивы храбрости и решительных действий сказочного персонажа значительно превалируют над волшебными сюжетно-повествовательными элементами.

На более обширном материале данную проблему рассматривал А.З. Холаев, приводя ряд примеров из различных жанров устной словесности. Весьма убедительны суждения ученого о том, что: «Благодаря помощи чудесных предметов (чаша – гобпан, удлиняющийся меч-сырпын, летающий коврик, палка-самобойка, гребень, зеркало, ножницы, а также говорящий, летающий или плавающий конь) герой возвращается домой с победой, выполнив поставленную перед ним задачу» [70, 26].

Однако отдельные выводы А.З. Холаева относительно жанровой принадлежности некоторых текстов не всегда соответствуют сложившимся канонам сказковедения. Это подтверждается на примере интерпретации ученым сюжета об ужасно ленивом мальчике Кюльтыпысе, который вечно спит у очага и засыпает там, куда его пошлют по делу [70, 27]. На наш взгляд, не вызывает сомнения, что данный текст относится к бытовой сказке, в которой главная морально-эстетическая роль отводится побуждению у детей чувства смеха над отрицательными человеческими пороками в раннем возрасте.

В целом А.З. Холаев внес значительный вклад в исследование данной проблемы.

В отличие от своих предшественников, Ф.А. Урусбиева в своей монографии посвящает рассматриваемому вопросу специальную главу «Типы сюжета и мировые мотивы волшебной сказки», в которой предметом исследования служит обширный материал из сказочной прозы многих народов мира [69, 21–42].

Остановившись на классификации сказок Ореста Миллера, В.Я. Проппа, А.Н. Веселовского, В. Гана, Г. Гольма, А. Христенсена, В. Вундта и др., Ф.А. Урусбиева справедливо замечает, что указанные авторы «... в течении 100-летнего развития этой науки не выработали никакой общепринятой классификации» [69, 22].

На наш взгляд, вообще сложно дать какое-либо устойчивое определение жанра сказки, хотя она и является наиболее древним и типологически доступным видом традиционной устной словесности, а потому вполне оправдан индивидуальный подход каждого ученого в видении и решении поставленной проблемы относительно теоретического ее обоснования.

Касательно собственно карачаево-балкарских народных сказок и сказковедения Ф.А. Урусбиева ограничивается анализом дореволюционных публикаций Е. Баранова, что, конечно, не дает ясного представления о месте волшебной сказки в системе карачаево-балкарской устной прозы.

Позиция автора этих строк относительно карачаево-балкарских волшебных сказок была высказана ранее таким образом: «Анализ текстов ряда волшебных сказок, таких как «Темир-Болат», «Фатима», «Иллеука», «Младший брат», «Золотая птица», «Карабатыр», «Быжмапах», «Зынгырдаук», показывает не только их поэтико-повествовательную национальную особенность, но и помогает понять близость их мотивов к сказочному эпосу славянских и кавказских народов» [54, 11], что вполне характерно для данного жанра устной словесности.

Изучение архивного материала из фонда КБИГИ дало ощутимые положительные результаты: в нем был обнаружен богатый и разнообразный материал по карачаево-балкарской волшебной сказке. В народной традиции она обозначается термином «*сейирлик жомакъла*» – «удивительные сказки» или «диво-сказки».

Одним из наиболее крупных текстов, которые представляют интересующий нас жанр, является сказка «Жарыкбий», записанная 2 ноября 1959 г. к.ф.н. Бозиевым А.Ю. в сел. Нижний Чегем в исполнении Беппаева Назира Ахматовича (1910 г.р.) [12].

Композиционная, содержательно-повествовательная и художественно-стилевая особенности текста говорят о том, что он до некоторой степени трансформировался под влиянием времени. В нем объединены основные мотивы, которые образуют будто бы целостную картину произведения. В основном они строятся на конфликте – столкновении героя с явлениями, носящими волшебный характер.

Текст начинается с повествования о том, что бывалый охотник Арабий, он же падишах этой земли, однажды ранит оленя, который на человеческом языке выражает свой гнев Арабию; выдавая свою дочь Ариу (в интерф.: – «Красавица») замуж за Арабию, ее отец подарил ей кольцо, сказав: «Дочь, если Арабий из далекого пути долго не будет возвращаться, взгляни на кольцо и у Всевышнего попроси удачу ему!» Случай с оленем



монарх горько переживает, кольцо покрывается ржавчиной, небо затягивается тучами, за которыми скрывается солнце, в стране перестают рождаться дети; умирает старый падишах, и Арабий начинает править страной, отринув все свои тревоги. Долгое время он остается бездетным, но в один день все меняется: на небе показывается солнце, народ радуется, волшебное кольцо очищается. В семье Арабия рождается мальчик, которого нарекают Жарыкбием; у него необыкновенное детство: растет быстро, обладает необыкновенной физической силой, метко стреляет (зеркало, что было подвешено высоко в небе, сбивает выстрелом из лука только он). В возрасте пятнадцати лет, однажды, охотясь за дичью с друзьями, Жарыкбий встречает оленя, прицеливается в него и слышит, как подает голос зверь: «Жарыкбий, твой отец Арабий, ранив меня в ногу, лишил возможности обитать в горах, если же ты ранишь мою вторую ногу, я не смогу прожить и в степи!» Сказав так, после выстрела охотника олень бежит от преследователей и, не видя другого выхода, бросается в морские волны, но Жарыкбий со своей дружиной продолжает его преследовать и там.

В дальнейшем события переносятся в море. Мотивы волшебства подчеркиваются в следующих повествовательных элементах: в море Жарыкбий и его друзья убивают преследуемого оленя, а лодку и его друзей волны после бури выбрасывают на берег; вскоре они попадают в плен к племени Обезьян, которые заставляют их воевать со своими извечными врагами Львами.

Здесь сказочник прерывает свой рассказ, и действие переносится в страну, где правит отец Жарыкбия Арабий. Обеспокоенный дурными предзнаменованиями, тревожась за сына, он обращается к волшебному кольцу, которое вновь оказывается заржавевшим. Поняв, что случилась беда, Арабий, собрав свою общину, сообщает о случившемся, велит снарядить поисковый отряд из десяти человек, и сам отправляется искать того оленя, надеясь узнать у него о судьбе своего сына. Вскоре в горах Арабий слышит голос: «Хорошо ли лишиться своего ребенка? На себе теперь испытай это!» – и, будучи бессильным против рока, возвращается домой.

Тем временем, после заключения перемирия между враждующими войсками Обезьян и Львов, находясь на прогулке со своими друзьями, Жарыкбий видит стеллу с надписью: «Если вдруг человек окажется в этих местах, пусть двигается в сторону заката!» – и составляет план побега. Вновь развязав войну, он начинает поздно ночью со своей группой тайно перебираться на запад.

Догадавшись, что Жарыкбий покинул поле боя, обезьянье и львиное войска начинают их преследовать. В результате из шести соратников-друзей царевича от голода и усталости умирают пятеро, и он остается только с одним из них. Вскоре они добираются до большой реки. Здесь, пытаясь переплыть реку, погибает и шестой из товарищей. Недалеко от берега Жарыкбий замечает три дерева, подплывает к одному из них и хватается за его ветви. А на другом берегу видит Обезьян и Львов, готовых с ним расправиться, но не имеющих такой возможности.

Вскоре Жарыкбий перебирается на берег, бродя в одиночестве по лесу и горам, чтобы выжить, он питается чем угодно, но в основном птенцами и яйцами, разрушая гнезда пернатых.

Здесь как бы начинается третья повествовательная часть текста. Герой сказки, скитаясь, набредает на пустынные степи, где вдали замечает идущий по пустыне караван из восьми навьюченных верблюдов. Когда он подошел ближе, торговец спросил: «Аллах-Аллах, человек со стороны заката солнца, как ты оказался здесь, где восходит солнце?» Попытавшись и не сумев накормить его, торговец сажает Жарыкбия на верблюда и доставляет к себе домой. Его, слабого и больного, здесь лечат знахари.

В дальнейшем события разворачиваются согласно канонам традиционной волшебной сказки, где мотивы приключения героя и освобождения его от неволи или тяжелых обстоятельств являются доминирующими.

Не прислушавшись к советам своего доброго спасителя, Жарыкбий из любопытства следует за коварным и алчным человеком, который обещает ему много золота. Согласно его поручению, для этого он режет коня, на котором приехал, и влезает в его шкуру, т.к. огромный орел должен поднять тушу на гору, где много золота. Так оно и случается. Жарыкбий удачно приземляется с тушей в намеченном месте, сбрасывает много золота и когда решает узнать, не хватит ли, видит, что наниматель, бросив его, уже удался. В отчаянии Жарыкбий вновь прячется в лошадиной шкуре, однако орел и не думает спускать его вниз, наоборот, набрасывается на лошадь и начинает рвать шкуру когтями. Тогда царевич убивает пернатого. Претерпев множество лишений, после долгих скитаний по горам, однажды ему все-таки удается спуститься с гор в лес, в котором он прожил несколько лет, прежде чем выбраться к равнине. Здесь он видит башню, внутри которой жил глубокий старец. После знакомства тот принимает Жарыкбия как своего сына. В один из дней он сообщает герою, что является покровителем всех пернатых и ему необходимо отлучиться на их сбор, где постарается разузнать вести с родины царевича.

В отсутствие старика к озеру, чтобы искупаться, прилетают три орлицы, которые, сняв с себя орлиные личины, оказываются девушками-красавицами. Видя это, Жарыкбий прячет личину одной из них. Но им удается перехитрить Жарыкбия, о чем он рассказывает старику. Так повторяется два раза.

С этого эпизода значительно усиливаются повествовательные волшебные мотивы произведения в контексте мировоззрения сказочника о положительном исходе событий после долгих и мучительных страданий главного персонажа сказки.

В третий раз, по совету старика, Жарыкбий, не дав себя усыпить, дожидается возвращения старца. Покровитель пернатых вынуждает младшую из трех сестер-орлиц выйти замуж за отважного царевича Жарыкбия. Через некоторое время супруги решили побывать на родине царевича. По пути домой орлица рассказывала герою о событиях, которые он пережил в этих землях. На вопрос, откуда она знает все это, та ответила, что она взирала на происходящее из сада высоко в горах.

В диалоге между ними встречаются архаизмы, ряд определительных формул, характерных для языка традиционной народной сказки, что говорит о древности некоторых сюжетно-повествовательных элементов произведения.

Так, мотив о том, как на спине своей жены-орлицы Жарыкбий добирался до знакомых мест, передается следующей содержательно-диалогической



конструкцией: «Много ли летели, мало ли летели они, когда Жарыкбий открыл глаза, находился в знакомых для себя местах». Тут орлица спрашивает: «Жарыкбий, не забыл ли, как со своими друзьями здесь начал преследовать оленя?» На слова Жарыкбия, откуда она все это знает, та ответила: «Я тогда сидела в саду. Слышала обращение к тебе оленя, смо- трела и видела вас».

Они снова поднимаются в воздух, и, как всегда, орлица предупреждает Жарыкбия, чтобы он закрыл свои глаза, а открыл, когда они приземлятся в положенном месте. Когда они сели недалеко от города, где жил отец Жарыкбия Арабий, вскоре увидели всадника, который рассказал им, что сорок лет прошло, как пропал царевич Жарыкбий с друзьями, и вся община находится в поиске.

В ответ на это жена царевича произнесла: «Ты сейчас пойдешь к Арабию и скажи, чтобы он, собрав народ, прибыл сюда, и мы расскажем ему новости о Жарыкбие». Развязка делится на две части. В первой повествуется о трогательной встрече отца и сына, большом празднике и основании на месте встречи нового города. Во второй говорится о том, как Жарыкбий прячет одеяние (орлиную личину) своей жены, но та, будучи оскорбленной его недоверием, находит, забирает ее и улетает, сообщив, где он сможет при должном желании найти свою супругу. Прожив некоторое время в одиночестве, Жарыкбий решает отправиться на поиски своей любимой. Проплутав довольно долго, он все же добирается до заветного сада, находит супругу и некоторое время живет там с ней. Затем они все же возвращаются в родное поселение, где жена отдает свою орлиную шкуру, которую Жарыкбий сжигает, после чего они начинают жить тихо и мирно.

Кратко коснемся композиции и основных сюжетно-повествовательных схем, определяющих данное произведение как волшебную сказку. Оно имеет традиционное вступление: «*Эртте-эртте, бир заманда жашай болган эди патчахладан патчах, жигитледен жигит Арабий*» – «Давным-давно, некогда жил падишах из падишахов, отважный из отважных Арабий». Заканчивается повествование формульным заключением, характерным в основном для бытовых и волшебных сказок: «*Аны кёрмегенибиз кибик, ауруу-талау кёрмейик*» – «Как мы не были свидетелями этого, так нам не испытать болезни».

В тексте трудно уловить зачин или элементы, его составляющие, что трудно поддается объяснению. На наш взгляд, это в основном зависело от того обстоятельства, что в окончательном формировании сказки доминировал ряд мотивов, среди которых сложно выделить начальную, архаическую ее сюжетную основу, что повлияло на формирование вступительной части данного произведения.

Как отмечено выше, сказка состоит из трех сюжетно-повествовательных частей, на содержании которых мы остановились подробно. В каждой из них наличествует ряд волшебных эпизодов и мотивов, которые и способствуют формированию данного произведения как волшебной сказки.

В качестве таких элементов из данного контекста мы бы выделили следующие знаковые структурные координаты: загадочный олень, который встречается в триаде дед–отец–внук и говорит на человеческом языке;

волшебное кольцо жены Арабия, умеющее показывать сложившуюся ситуацию; необычное детство сына Арабия – Жарыкбия; встреча с племенем Обезьян, которые могут говорить на человеческом языке; загадочный голос в горах, упрекающий Арабия за то, что он безжалостно истреблял дичь; надпись на стелле, способствующая Жарыкбию выйти из тяжелой ситуации, в которой он оказался; сцена неожиданной встречи с караваном и лексика доброго торговца говорит о влиянии арабской духовно-словесной культуры на данное произведение; эпизод о том, как на огромном орле он с тушей лошади поднялся на высокую скалу в намерении раскрыть тайну своего нанимателя и чуть не поплатился за это жизнью; встреча со старцем – покровителем пернатых; появление девушек-орлиц, похищение орлиной личины у одной из них и женитьба на младшей из сестер; возвращение после сорокалетней разлуки на спине своей жены-орлицы к отцу Арабию, в родной город и общину; трогательная встреча героя и красавицы, его жены-орлицы, с родственниками и друзьями; похищение Жарыкбием орлиной одежды у своей жены; потеря и возвращение жены.

В целом, сказитель показал искусное владение материалом и мастерство исполнителя. Мы уверены, что сравнительно-типологический анализ данного произведения в контексте сюжетных указателей сказочного эпоса народов Северного Кавказа выявит много общих мест с аналогичными произведениями данного региона.

Карачаево-балкарские волшебные сказки в своем формировании прошли сложный и долгий путь, вбирая в себя мотивы самых разных сказочных жанров, где стержнем и основой их составляющих явились магические повествовательные и сюжетные элементы. А потому В.П. Аникин был вполне справедлив, когда рассуждал, что: «Отличить волшебную сказку от других видов не всегда легко» [4, 88].

Эта мысль выдающегося ученого подтверждается на примере ряда произведений, которые мы относим к волшебной сказке. Иногда бывает сложно вычлениить, какие мотивы (бытовые, о животных, мифические или героические) преобладают в них.

Сказку «Пегие кони» нам пришлось с детства слышать в разных вариантах, где буквально контаминируется, принимая форму «клише», ряд мотивов, в особенности касающихся образов «*кьуртха кьатын*» – ведьмы, «*эмеген ана*» – матери-эмегенши, а также волшебной пегой кобылицы «*кьолан байтал*», приносящей волшебных жеребят, волчицы «бёрю» или «*бёрю ана*», в поступках которой остается загадкой, почему она похищала волшебных жеребят.

Кратко остановимся на образах, мотивах и композиционной системе данного произведения, которое было исполнено и записано Гадиевым Матгерием 27 декабря 1959 г. в п. Хасанья [6].

Чтобы представить ясную картину об этих проблемах, необходимо показать фон десятков мотивов, составляющих сюжетную особенность сказки, с чего мы и начнем свои рассуждения.

Сказочник начинает повествование с сообщения, что некогда жили три брата, которые занимались охотой, составлявшую их основную деятельность. Повзрослев, они выбрали самостоятельный путь, и старший решил



создать небольшую группу из своих друзей и отправиться на промысел. Ничего не найдя, они поднимаются на возвышенность и видят охотничий стан. Мокрые и усталые, разведя огонь, они решаются переночевать здесь. К закату солнца, когда начало темнеть, снизу вверх начало быстро подниматься черное облако и вскоре, достигнув их, обратило охотников в пепел. И не осталось никого, кто смог бы поведать о том, что произошло.

То же самое повторилось со средним братом, на том же месте, в том же стане. Спустя какое-то время, решается пойти с друзьями на охоту оставшийся в живых третий, младший из братьев.

Повторив тот же маршрут и оказавшись в том же стане, где раньше погибли его братья, он наблюдает за всем, что происходит вокруг, и видит быстро поднимающееся в их сторону черное облако и прячется в удобное место, чтобы наблюдать за дальнейшими событиями.

Вдруг врывается небольшое черное облако и все превращает в пепел, а внутри него раздается голос: «Теперь со всеми покончили, в живых никого не осталось!»

В дальнейшем волшебные мотивы значительно усиливаются в тексте: удивленный произошедшим, герой спускается вниз, видит скалу и трещину в ней, а внутри нее замечает необыкновенно крупную эмегеншу, которая, свои огромные груди перебросив за плечи, месила тесто на хлеб; он тайком подходит к ней и цепляется за ее сосок своим ртом, на что эмегенша говорит: «Жаль, что ты стал моим ребенком, ибо я могла тебя проглотить, как сладкий кусок», – на что человеческий сын ответил: «Жаль, что ты стала моей матерью, ибо я мог на твоей шее ржавчину своего меча почистить (т.е. убрать)».

Зная, что ее сыновья не оставят в живых человека, эмегенша прячет его в надежное место. Сыновья по запаху догадываются, что где-то поблизости находится человек, но по требованию матери дают слово, что не тронут его. Эмегены принимают его хорошо, и они становятся побратимами.

Узнав о похождениях и приключениях охотника, эмегены раскрывают ему тайну, что внутри загадочного «черного облака» находится девушка, а само облако, это выделение пара из ноздрей трехногого жеребца. «Когда наша пегая кобыла родила жеребенка, его схватила волчица. Девушка смогла его спасти, но волчица унесла одну его ногу, и он стал трехногим и верно ей служит.

Ты сумеешь ее одолеть, если только, подкараулив, когда будет рожать наша кобыла, спасешь жеребенка от той волчицы. Она должна скоро принести жеребенка, если останется он в живых, будет расти очень быстро и верно послужит тебе».

Подкараулив, он забирает только что родившегося жеребенка в целости и сохранности, чему радуются братья-эмегены, и начинает его откармливать. Жеребенок быстро растет и набирает силу.

Однажды герой говорит братьям-эмегенам, что хочет, во что бы то ни стало, найти девушку, которая погубила его братьев. Они объясняют ему, что ее сторожит тот трехногий пегий конь, который никого не подпускает к девушке и начинает громко ржать, когда кто-либо появляется поблизости. «Ты же должен выкопать яму, спрятаться в ней, а потом показываться оттуда и прятаться снова. Это должно повториться три раза. Никого не

увидев, девушка в третий раз накажет коня, и он больше не будет ржать и гневаться.

Успокоив его, ты зайдешь к ней в комнату (а спит она, не просыпаясь, день ли, месяц ли) и крепко привяжешь ее волосы к кровати. Проснувшись, она будет тебя умолять, клясться и обещать сделать что угодно, если ты ее освободишь. Но ты не верь ей, поверишь лишь тогда, когда она даст клятву своим «хамаилом*», который хранит под волосами на голове. А потом обо всем случившемся расскажешь нам».

Юноша, отправляясь в дорогу, достает из кармана пулю и говорит эмегенам, что, если о нем долго не будет вестей, нужно бросить ее в огонь и по тому, что произойдет, узнают о его судьбе.

Пожелав человеку доброго пути, они здесь расходятся. Охотник вскоре находит место, где жила та девушка. Он строго следует всем советам братьев-эмегенов, а девушку освобождает лишь тогда, когда она клянется своей святыней – «хамаилом», которым она очень дорожила.

Однажды девушка дарит охотнику свою фотографию и просит пойти куда-нибудь и развеяться, а если он сильно соскучится, может посмотреть на фото.

Бродя по берегу моря, парень роняет фотографию и замечает, как, подплыв, какая-то рыба глотает ее и уплывает вглубь водной стихии. Опечаленный, он возвращается домой, рассказывает о случившемся, а девушка старается успокоить охотника, которого она полюбила всей душой.

Тем временем рыбакам местного хана удается случайно поймать ту рыбу, распороть ей живот и вытащить из нее фотографию. Когда ее показали монарху, тот, пораженный красотой изображенной на ней девушки, дает слово щедро отблагодарить того, кто сумеет ее найти.

На этот поступок решается лишь *куртха катын* (ведьма), умеющая разгадывать многие тайны и угадывать слабые стороны в человеке. Она просит у хана дать в сопровождение несколько человек, которые строго бы следовали ее указаниям. Собрав свою группу, ведьма велит им не уходить далеко из указанного ею места, а когда заметят густой дым, поспешить туда готовыми к любым событиям.

Заметив дом и двор, в котором жили влюбленные, ведьма подходит туда, притворяется бедной, жалкой старушкой и просится переночевать у них, т.к. ей некуда пойти. Поверив ее словам, охотник пускает ее в дом, угощает, чем может, и обходится с ней весьма гостеприимно.

При виде старушки у девушки появилось чувство недоверия к ней, и она дала знать об этом охотнику, но никак не смогла его убедить в странном поведении загадочной старухи. Со временем, ведьма стала входить в доверие к девушке. Однажды старуха говорит ей: «Мне кажется, муж твой недостаточно любит тебя, а если любит, пусть откроет секрет, где находится его душа».

По совету ведьмы, она начала расспрашивать своего мужа, где спрятана его душа, на что он отвечает: «В венике за дверью». Это слышит старуха и тут же сжигает веник, но с охотником ничего не происходит. Тогда она продолжает натравливать жену на мужа, и он раскрывает тайну, где спрятана его душа: «*Арт желкемде, чач тюгюмде бир мынчагъым барды да, мени*

* *Хамил (хамайыл)* – молитвенник, псалтырь [6, 783].

жаным олду» – «На затылке, на волоске находится одна бусина, она и есть моя душа».

Прознав об этом, ведьма тут же начинает принимать меры: готовит много хмельных напитков, устраивает пир, спаивает и усыпляет парня. Девушку же старуха зовет гулять к реке, а там говорит ей, что быстро сбегает за кумганом и вернется. Направившись домой, она срывает с головы спящего охотника бусину, выкидывает в темный угол дома, затем бросает в огонь свежий конский навоз и возвращается к девушке.

Тем временем от конского навоза поднимается из очага густой-прегустой дым, который был хорошо виден издалека. Как и договорились, люди хана прибывают туда, забирают с собой девушку, пегих коней и все ценное, что находят в доме, и доставляют к хану.

Во дворе хана идет большой праздник. По всем канонам женитьбы, он готовится к свадьбе, но девушка дает знать, что пока не пройдет год после смерти ее мужа, она не готова к венчанию, с чем хан соглашается. Кони же никого, кроме девушки, к себе не подпускают.

Тем временем обеспокоенные судьбой своего побратима эмегены, как завещал охотник, бросают оставленную им пулю в огонь, и из нее начинает выделяться кровь. Видя такое, они молвят: «А-а-ха, разве нам пристало так сидеть, когда умер наш брат!» – и двигаются в сторону, где жила девушка.

Войдя в дом, они видят мертвого побратима, ограбленное помещение и пустой двор. Обеспокоенные этим, они ищут выхода, и один из них находит в темном углу дома блестящую бусину и прикладывает ее к голове мертвеца, который сразу же оживает и думает, что спал. Узнав, что произошло, поблагодарив братьев-эмегенов, он отправляется на поиски своей возлюбленной и добирается до ханского двора, где проходило веселье. У служанки, что несла воду к «ханской невесте», он просит немного воды и тайно бросает в кувшин «*мухур жюзюк*» – свой перстень-печатку.

Когда невеста, собравшись помыть голову, вылила воду в таз, видит на дне перстень и догадывается, что ее возлюбленный жив и находится где-то поблизости. А у служанки она спрашивает, не встречала ли кого на своем пути. Та отвечает, что какой-то незнакомый мужчина попросил выпить воды из кувшина и что она дала на это согласие.

Тем временем охотник подходит к ханскому двору, где идет богатая, роскошная свадьба. Никто не обращает на него внимания, даже ведьма. Пегие кони же никого не подпускают к себе близко.

Здесь наступает переломный момент в структуре композиции и после ряда сюжетно-повествовательных элементов, которые выполняют роль развития действия, начинается завершающаяся часть сказки – развязка, которая включает в себя следующие детерминантные, структурно-содержательные мотивы: пегие кони разрешают только ему оседлать и сесть на них и ведут себя вполне спокойно; тогда ханская прислуга доверяет ему коней, чтобы с ними провести свадебные ритуалы, посадив на трехногого жеребца дружка жениха; он резвится на пегих конях, а когда выбираются на свободное место, ударом меча рассекает ведьму надвое, возлюбленную сажает рядом с собой на четвероногого коня и громко крича: «Ура-а-а, трехногий!» – уходит от погони; он держит путь прямо к братьям-эмегенам,

догнать их никто не сумел; с собой он доставил туда и ханского дружка и, обращаясь к эмегенше, произнес: «Мать, я приехал и тебе привез кусок съестного. Пусть подластит твой рот, может сухо и в горле твоём», – передал его эмегенше.

Сказка заканчивается предложением: «Со своими братьями-эмегенами, если он не умер, продолжает жить в той упомянутой скальной трещине».

Данное произведение является одним из замечательных образцов карачаево-балкарской народной волшебной сказки. О неоспоримой принадлежности к ней говорят следующие мотивы, образующие цепь сюжетных ситуаций: появление загадочного черного облака в ясный день; встреча человека с эмегенами и их рассказ о волшебной пегой кобылице, жеребят которых старается унести волчица; душа охотника находится в бусине на голове; фотография девушки, ставшая причиной трагических событий; образ ведьмы, сыгравшей благодаря своему коварству и лицемерию печальную роль в их судьбе; волшебная пуля охотника, оставленная им у братьев-эмегенов, сообщающая им о его смерти; печатка охотника на дне кувшина, дающая знать девушке, что жив ее возлюбленный и, наконец, сами пегие кони, рожденные пегой кобылицей эмегенов, играющие на протяжении всей сказки положительную роль в судьбе охотника и его возлюбленной.

Нет строгой ограниченности в художественно-пространственном понятии в тексте. Действия в нем происходят то в горах, то в пещере, то на море, то в ханском дворце, где и наступает завершение нашей сказки, если не вернуться к последнему предложению, которое во многих текстах является канонической завершающей формулой.

Внимательное изучение образной системы сказки говорит о победе в ней добра над злом. Образ девушки весьма сложен и противоречив: она то губит братьев-охотников, то становится верной супругой третьему брату, т.к. дав ему клятву своим «хамаилом», теряет волшебные качества и превращается в обыкновенного человека.

Интерес представляет и образ третьего, младшего из братьев-охотников, который не сомневается в странности быстро надвигающегося черного облака в ясный день. Смелость, решительность и мудрость его проявляются и при контакте с грозным племенем эмегенов, к которым он входит в доверие, что приводит к появлению между ними родственно-дружественных отношений. Свою чудесную пулю он доверяет эмегенам, которые по ней узнают о случившейся беде и принимают срочные меры по спасению своего побратима. Его конфликт с ведьмой-куртха вполне объясним мотивами народной волшебной сказки, т.к. здесь сталкивается человек, борющийся за справедливость со злом, у которого нет предела.

Образ пегих коней, на наш взгляд, берет свои истоки из древней тюрко-монгольской мифологии и этнографии, в которых достаточно большое внимание отводится данному животному. Они и спасают охотника и его возлюбленную от возможной погони за ними во время ханской свадьбы. Интересен здесь мотив о трехногом пегом коне. Вспомним, что трехногими в карачаево-балкарской мифологии и обрядово-мифологической поэзии являются оленихи Умай – покровительница материнства и диких животных и Фатима – дочь покровителя охоты и лесных зверей Апсаты.



Достаточно ясно и красочно показан и образ великанов-эмегенов, которые принимают вполне человеческие черты, наделяясь мудростью, уважением к представителю другого, враждебного племени, которого приглашают к своему очагу с почестями. В развязке охотник везет свою невесту не в село, где он родился и вырос, а в скальную пещеру, где живут поборимые великаны-эмегены.

В образной системе сказки интересен и мотив повествования о море, в котором связующими элементами художественно-предметного мира триады являются рыба, фотография и само море.

Незначительное сравнение текстов сказок «Жарыкбий» и «Пегие кони» показывает, что в них постоянным, утвердившимся художественно-символическим является число «юч» – «три». Так, в сказке «Жарыкбий» триада поколений «дед–сын–внук» преследует олениху; на островке, где спасается Жарыкбий, растут три дерева; орлицы – три сестры; в сказке «Пегие кони» братьев-охотников трое, трое и братьев-эмегенов, волшебные лошади также объединяются в триаду: пегая кобылица – трехногий пегий – четырехногий пегий.

Сравнительный анализ рассматриваемых текстов показал, что они представляют самостоятельные, веками утвердившиеся произведения, хотя в них и присутствует ряд близких мотивов, носящих в основном типологический характер.

В системе карачаево-балкарских волшебных сказок, как искусстве слова и художественно-эстетического мышления народа, представляют определенный интерес такие произведения, как «Киши бла сарыуек» – «Мужчина и дракон», «Къозучукъ» – «Ягненок», «Эльяс бла золоуцу» – «Эльяс и путник», «Худуйчукъ» – «Худуйчик», «Тюз ётмеги тюзге жетеди» – «Праведный хлеб праведному достается», «Алтын чабакъны жомагъы» – «Сказка о золотой рыбе» и т.д., на мотивах, образной системе и сюжетно-повествовательных элементах которых остановимся кратко.

Сказка «Мужчина и дракон» состоит из нескольких мотивов, среди которых доминирующими являются следующие элементы: мужчина никак не может ужиться с ворчливой, злой женой, которая доводит его до отчаяния; чтобы избавиться от жены, он обманывает ее и приводит к озеру в скальной пещере и толкает туда; однажды, вспомнив жену, муж отправляется в то место, чтобы посмотреть на нее, и видит в озере огромного дракона, который просит помощи, чтобы покинуть эту местность и выйти на сушу, ибо в его водах откуда-то появилась женщина, от которой ему нет жизни и покоя; человек оказывает помощь рептилии и между ними зарождается дружба; оказавшись на свободе, дракон предлагает перекрыть реку, чтобы люди платили ему дань за воду; человек соглашается с условиями рептилии; это повторяется три раза; в четвертый раз, благодаря своему уму и находчивости, мужику удается обхитрить дракона.

Когда он подошел к дракону близко, тот спрашивает у человека: «Аха, почему теперь ты явился?! Я обещал выполнить три твои просьбы и выполнил!» – на что мужик ответил: «Затем я явился, чтобы сообщить тебе, что подходит сюда та женщина, которую ты оставил в озере!»

Услышав это, дракон делает последний вдох, от испуга душа его покидает тело, а мужик, женившись на другой женщине, начинает жить богато и счастливо.

Нечто подобное мы наблюдаем и в мотивах русских народных сказок: «Крестьянин сталкивает свою злую жену в яму, в которой живут черти. Через некоторое время он хочет достать ее и спускает туда веревку. Вытянул веревку, а за нее уцепился чертенок: «Вынь меня мужик! Твоя жена всех нас замучила, загоняла. Что ни прикажешь, все буду делать!» Когда черт отказывается что-либо делать, мужик пугает его тем, что вернет в яму («Злая жена»)» [4, 175].

Вся нравственно-философская основа текста строится на раскрытии образа злой женщины, от которой нет покоя не только человеку, но и все-сильной рептилии, которую она доводит до смерти.

Язык произведения типично фольклорный, народный, существенная композиционная роль в нем отводится монологу и диалогу. В лексике человека и дракона замечаются незначительные различия, хотя язык рептилии более лиричен.

До настоящего времени в народе употребляется формула «*Сарыуекни тешигинден къачарча этген, аны жюрегин ачитхан тиширыу не да этерикди!*» – «Заставившая дракона бежать из своего логова, его сердце ранившая женщина способна на все!»

Данный мотив, с незначительными изменениями бытует и в адыгской сказочной среде [67, 797]. Мы уверены, что он также широко распространен и в международном сказочном указателе.

«Сказка о золотой рыбе» типологически и по содержанию напоминает ряд произведений народной прозы германских, славянских и кавказских народов, которые соприкасались с морями, вели рыбачий образ жизни и воспевали это существо как священное. Хотя мотив в ней чисто восточный и действия происходят в одной из неизвестных морских держав, устами сказочника вполне убедительно повествуется, что в далеком прошлом тюркоязычные предки карачаево-балкарского народа соприкасались с морскими царствами Востока и Запада. В кратком по объему тексте наблюдаются яркие образы и богатые по содержанию выразительные средства.

Тяжело больной хан, чтобы спасти свою жизнь, обращается к ведьме-обур, которая предсказывает, что где-то в морях водится волшебная *алтын чабакъ* – золотая рыба, если смогут ее поймать и доставить сюда, она сможет вылечить правителя.

Заняться этим делом монарх поручает своему сыну и верному слуге, которые после долгих поисков ловят золотую рыбу. Но царевичу становится жаль такое красивое создание и, сказав: «Она тоже имеет душу. Какой смысл, убив ее, вылечить моего отца?!» – отпускает рыбу в море. Он договаривается со слугой, ничего хану об этом не говорить.

Придя к отцу, царевич сообщает, что не нашли эту рыбу. Не поверив его словам, хан отдельно допрашивает слугу, который рассказывает всю правду, после чего он прогоняет сына из дома и своего царства.

По пути царевич встречает незнакомого человека, которому рассказывает о себе. Вскоре они оказываются в гостях у другого хана, который, согласно народной традиции, после трех дней спрашивает у них, кто они такие и чем может им помочь. Правитель, в свою очередь, также делится и своими проблемами: как только его дочь выходит замуж, в ту же ночь ее супруг умирает. Он предлагает одному из них жениться на его дочери,



обещая, если ее муж останется жив, щедро одарить их золотом и другими богатствами.

Царевич заключает брак, а друг охраняет их покой, забравшись под кровать. Посреди ночи он вдруг видит, что изо рта девушки выползает змея и старается вползти в рот царевича. Друг хватается и душит ее. Так повторяется три ночи. После этого хан позволяет гостям уехать, забрав дары и девушку.

Перед расставанием друзья поделили между собой добро, но не знают, как быть с девушкой. Тогда они договариваются ударом кинжала разделить ее на две части и поделить между собой. При этих словах изо рта девушки выползает еще одна змея. Здесь наступает развязка, и устами путника сполна раскрываются волшебные мотивы произведения: «Пусть твоими будут богатство и девушка. Твой отец умер. Золотая рыба, которую ты поймал и бросил в море, – это я!» – сказав, прыгнул он в море.

Таким образом, царевичу достаются ханская дочь, золото и наследная власть.

Хотя согласно канонам данного жанра и допускается, что сказочными мотивами можно управлять весьма свободно, в данном тексте есть кое-какие вопросы, требующие ответа: почему отсутствует просьба золотой рыбки, чтобы ее отпустили на свободу; почему она принимает облик мужчины, а не девушки, как это традиционно принято в мотивах мировой сказочной прозы? Загадочными остаются и сцены, связанные со змеями, творящими зло. Возможно, что все это пробелы в исполнении сказочника.

Краткая, но ясная по содержанию сказка «Худуйчик» состоит из трех основных повествовательных элементов. Главный герой произведения, Худуйчик, сталкивается с ханом, а затем пятиглавым великаном-эмегеном. В конце произведения, благодаря хитрости, уму и решительности он побеждает их и сам становится ханом.

Хотя сюжет сказки весьма краток, конфликтные элементы в ней весьма прозрачны и играют существенную роль в формировании содержательного материала произведения. Повествование начинается с того, что отец семерых сыновей Худуйчик ведет диалог с ханом, в котором просит дать ему работу, т.к. трудно содержать семью. Проявив царскую вежливость и коварство, монарх старается избавиться от него и посылает просителя к владениям пятиглавого эмегена, где в начале ставит условие доставить ему из владения великана дрова для топки, затем – отборные куски леса, из которых можно было бы изготовить ярмо для бычьей шеи, а в третий раз – самого эмегена.

Худуйчику удается исполнить все условия монарха, а затем обхитрить пятиглавого великана, которого он заманивает в сундук. «Поздние сказочники наделяли предметы и вещи такими свойствами, которых обряд не знает... Чудесный ящик, где скрыта воинская сила – это выдумка какого-нибудь служивого», – замечает В.П. Аникин, исследуя русские волшебные сказки, многие из которых типологически близки к карачаево-балкарским [4, 95].

Эмегена герой доставляет хану, который в итоге становится жертвой великана. Хитростью Худуйчик губит эмегена, занимает трон и сам становится правителем этой земли.

Из композиционных элементов существенная роль здесь отводится диалогу.

Сказка представляет известные мотивы устных персидских произведений, в которых воспевается мудрость и находчивость представителей простого сословия и ограниченность ума высших социальных слоев.

Замечательным творением волшебного сказочного эпоса является и незнакомое до последнего времени читателям произведение карачаево-балкарской народной прозы «Къозучукъ» – «Ягненок», представляющее своеобразный феномен как в композиционном, так и в сюжетно-повествовательном плане, где симбиоз указанных систем формирует синтез целостной конструкции.

В каждой части сказки прослеживаются волшебные мотивы, характерные для определенной ее композиционной структуры.

Вступление начинается с повествования о том, что у стариков, которые очень мечтали о ребенке, рождается *къозучукъ* – «ягненок», который на языке сказителя характеризуется национальным этнографическим термином «*марка*», т.е. раннерожденный, смысленный, разумный, крупный, как традиционно было принято считать в народной среде.

Время идет, но никаких изменений во внешности и образе жизни сына не наблюдается. Заметив, что родители грустны, печальны, ягненок впервые на человеческом языке обращается к ним со словами: «Отец, ты из-за меня не печалься. Я тебя пошлю по делу. В таком-то селе живет шейх. Его зовут Хаджимурза. К нему пойди и скажи: «Твой родственник ягненок просит, чтобы ты нашел ему невесту». Слова его потом передай мне!»

Затем действия развиваются по традиционной сказочной схеме: на фатоне привозят невесту, а в селе по-разному воспринимают этот брак. Волшебные мотивы здесь налицо: у ягненка появляется человеческая речь и желание жениться; в этом деле ему помогает его загадочный родственник, святой, ясновидящий Хаджимурза. Тем не менее, нигде в тексте не указывается степень их родства. На этот вопрос возможно было бы дать ответ, если бы удалось найти другой вариант данного текста или же проследить типологическую близость его к сказочной прозе кавказских или восточных этносов, откуда много заимствований в устной сказительской традиции карачаево-балкарского народа.

Главная сюжетно-повествовательная часть произведения наступает, когда ягненок снимает с себя баранью шкуру-одеяние, и перед плачущей женой предстает «...словно луч солнца, удивительной красоты юноша, который, обращаясь к ней говорит: «Теперь у меня будет к тебе одна просьба. Это – беречь мое баранье одеяние. Если с ним что-либо случится, тогда у нас с тобой не будет совместной жизни. Что бы ни было, береги его!»

Продолжением главной повествовательной части сказки является появление в их дворе такого отрицательного персонажа, как ведьма-обур, сыгравшей трагическую роль в их судьбе: усыпив молодую женщину, она сжигает в огне священную, волшебную шкуру-одеяние ягненка. Догадавшись о случившемся, он спешит к себе домой и убивает ведьму.

Далее наступает момент, когда в контексте перехода от главной повествовательной части к развязке несколько усиливаются волшебные мотивы

сказки, принимая форму трагического монолога красавца-человека, что ярко прослеживается в содержании данной конструкции: «Мои последние слова таковы: сколько бы мы ни жили, теперь у нас не будет совместной жизни. Всевышний Аллах, видимо, так распорядился. Как бы то ни было, тебе – здоровья, а мне – покоя. Оставайся здоровой, счастливой!» – сказав, тут же он превращается в золотого голубя и взлетает в небо.

Жена, беспомощная, скорбно причитает об этом и вскоре отправляется на его поиски. Долгие скитания приводят ее к успеху: у случайных путников она узнает, что голубь с золотым оперением сидит на одиноком дереве где-то в степи. Она находит его и радостная протягивает руки, чтобы поймать голубя, но тот, очнувшись, говорит человеческим голосом: «Ай, несчастная, зачем мучилась столько времени? Я ведь сказал тебе, что теперь у меня не будет жизни с тобой. Это воля Аллаха. Не мучай себя!» – и взлетает в небо.

Текст завершается лирическим монологом сказителя сообщаящим, что: «Под тем деревом находится могила той женщины. Это дерево ей послужило надгробным памятником».

Данное произведение состоит из довольно сложных сюжетных элементов, вполне соотносимых с жанром волшебной сказки, где особо следует выделить такие мотивы, как рождение в человеческой семье ягненка, его загадочное родство со святым шейхом Хаджимурзой, владение человеческой речью, особая обида за поджог ведьмой-обур его святыни-одеяния (овечьей шкуры), которое он берег от всякой нечисти, превращение его в золотого голубя.

Выведен и замечательный образ его жены, которая, не зная покоя, проводила много времени в поисках мужа и умерла под тем деревом, откуда в последний раз на ее глазах тот взлетел в небо в образе золотого голубя.

В сказке наблюдается наложение мотивов исламской религии: в языке текста имеет место обращение сказителя ко всевышнему Аллаху о помощи и милосердии.

Произведение «Эльяс бла золоуцу» – «Эльяс и путник» по своей структурной сущности мало чем отличается от аналогичных типологических волшебных сказок на тему дружбы между случайно встретившимися людьми, вокруг которых развивается ряд событий, составляющих основу содержания текста. Как положительное явление следует отметить, что текст записан на черекском (цокающем) диалекте Ж.М. Гузеевым у сказителя Занкишиева Керима Якубовича, который хорошо владел локальными особенностями языка.

Сюжет произведения прост и строится в основном на бытовых мотивах, которые в зависимости от композиционных элементов сказки повествуют о следующем: в бедной семье рождается мальчик, которому дают имя Эльяс; растет он необыкновенно смышленным, но вскоре у него умирает мать, и отец женится на другой женщине, которая невзлюбила его; однажды отец Эльяса замечает, что теща хотела отравить сироту, и передает мальчика на воспитание своей старой матери; прожив у нее лет пять, тот покидает бабушку и отправляется познавать мир; однажды, бродя по селам и городам, он случайно встречает путника, который приглашает его к себе в гости и предлагает жить у него.



На этом завершается вступительная композиционная часть произведения и начинаются повествовательные элементы развития действия, ведущие к следующим мотивам: пройдя через моря, друзья-товарищи входят в огромный дом путника, где тот предлагает Эльясу жить вольготно, просторно во всех девяти отсеках помещений, но запрещает заходить в большой зал. Попрощавшись с ним, он отправляется в дальнейшее путешествие, откуда не возвращается тридцать лет. Прекрасная жизнь здесь продлилась, как показалось Эльясу, три дня. Но однажды он нарушает данное слово и заходит в запретное помещение.

Здесь лексика сказителя меняется, и в целом содержательный материал произведения смыкается в сторону национального повествовательного контекста, где основной упор делается на волшебные структурные схемы, выражающиеся следующим образом: «В нем (помещении – *Х.М.*) было полно позолоченных картин и роскошных вещей из золота. В середине комнаты находился золотой трон, а над ним висело большое зеркало. Он даже забыл (от удивления), где находится. Эльяс поднялся на трон, взял это зеркало и долго смотрел в него. В нем он увидел не себя, а других: в первый раз – людей в другой стране, во второй раз – свой собственный дом, престарелого отца, спящего в постели...»

Художественно-предметный мир сказки выражается свойствами волшебного зеркала – «*кюзгю*», его фантастическая роль в дальнейшем повествовании несколько усиливается, т.к. пространство и время (в данном случае сказочное) определяются в контексте отражения в нем происходящих далеко за морями, в другой стране событий, за которыми наблюдает Эльяс.

Вдруг в зеркале отражается, как в дом его престарелого отца проник вор и старается украсть ценности из сундука. Эльяс дает знать об этом отцу. Проснувшись, тот убивает вора.

Во второй раз он видит, как поздно ночью местный эфенди тайно уходит к своей любовнице, и сообщает об этом его жене.

Затем, наступает вторая часть развития действия, которая повествует о том, что вдруг появляется хозяин дома, который упрекает Эльяса в нарушении данного слова, святотатстве, клятвопреступлении и сообщает, что свои грехи он должен очистить благодеяниями (т.к. из-за него произошло убийство и распалась семья), оказывая помощь и милосердие нищим и пожилым людям, скитаясь по селам и городам. После выполнения всего перечисленного, путник обещает выдать замуж за Эльяса свою красавицу-дочь.

Так оно и случается: совершив соответствующий ритуал, спустя три года, герой возвращается и женится на дочери путника, но перед этим, он дает слово, больше не входить в зал, где находится зеркало, т.к. это несет бедствие.

Здесь смыкаются языческие и исламские мотивы, что прослеживается в культуре зеркала и арабской религиозной лексике, выражающейся бинарной оппозицией «*гюнях-сууап*» – «грех-благодеяние», «*эфенди-тос къатын*» – «эфенди-любовница» и т.д.

Завершающая часть произведения традиционно повествует о том, что путник оказывается монархом и через какое-то время, прожив более ста лет, он покидает этот мир. Устами сказочника говорится, что: «Вскоре о



ясности ума и об его знаниях становится широко известно, и Эльяса избирают ханом над другими ханами».

В развязку вкрапляются мотивы, не совсем характерные для данной композиционной структуры. Это – наказание общиной мачехи Эльяса за злодеяния, творимые ею, путем выселения ее на необитаемый остров, а также в дальнейшем счастливая жизнь Эльяса в кругу детей и семьи.

Как показало исследование, в рассматриваемых сказках чрезвычайно сложно раскрыть общий стержень глубоко отдаленного, древнего сюжетного ядра, создающего фон повествовательной схемы, что характерно и для фольклора других народов.

Небольшая по объему волшебная сказка «Ындырбай улу Махамет» – «Ындырбаев Махамет» [7] представляет интереснейшее произведение данного жанра. Сказитель Сарбашев Исмаил Каншауович, считавшийся в с. Булунгу одним из лучших знатоков родного фольклора, продемонстрировал в данной записи высокое мастерство владения искусством народного языка.

Сюжет сказки прост. Вступление начинается с диалога двух людей, которые рассказывают друг другу интереснейшие приключения. Один из собеседников вспоминает, что однажды он убил дикую козу и, пожарив из нее шашлык, только приступил к трапезе, как дичь вдруг ожила и выскочила на свободу.

«Твой рассказ не совсем интересен. Более интересную историю поведает Ындырбаев Махамет, если ты с ним увидишься», – отвечает ему собеседник.

Рассказ Ындырбаева Махамета, переданный сказочником в форме диалога, состоит из нескольких мотивов, где наиболее детерминантными мы бы признали следующие повествовательные элементы, переданные от первого лица, в которых волшебные мотивы значительно доминируют над остальными: наш герой женится на красивой женщине, у которой в первую брачную ночь умирают и первый, и второй ее мужья; в первую же ночь, когда Махамет остался с женой, раздался стук в дверь, когда он открыл ее, какой-то незнакомый человек ударяет его плетью, сказав: «Аллах, преврати его в лошадь!»; до утра он был лошадью, а потом, ударом плети, снова был превращен в человека; вечером следующего дня, когда на стук опять открыл дверь, ударив плетью, тот самый человек заговаривает: «Аллах, преврати его в собаку», – и герой стал собакой; бродя по селу, голодный, Ындырбаев однажды пробрался на кошару, где его заметил хозяин и хотел накормить, как и остальных псов, из корыта, но тот отказался есть; тогда он понял, что в собаке скрывается что-то необыкновенное, и стал давать ему пищу в тарелке; хозяин был в тревоге, неспокоен от того, что какой-то волк уничтожил его стада; поняв это, Махамет поймал волка и разорвал его перед кошарой, после чего хозяин стал к нему относиться значительно лучше; однажды его брат попросил, чтобы необычный пес три дня посторожил его саклю, т.к. какая-то ведьма поздно ночью душил его дочь; пес поймал ведьму, когда она спускалась из очага в саклю, но она пообещала: «Я знаю, что ты Ындырбаев. Теперь я не буду беспокоить девушку, а тебе когда-нибудь пригожусь!» – и он отпустил ее; на радостях брат хозяина повесил на шею псу золотые монеты и отправил обратно, но тот побежал домой; жена, догадавшись, что это Махамет, сняла с его шеи



золотое ожерелье и ударом плети превратила его в сову; после этого герой летал в виде совы, которую обижали дети, а однажды сломали ему лапку; отпущенная им когда-то ведьма пожалела его, вылечила и сказала: «Плеть, которой ударили тебя, находится внутри дома. Ты зайди туда, когда никого не будет, потришь об эту плеть»; он так и поступил и снова превратился в человека; подождав до вечера, когда придут жена с любовником, ударил их этой плетью и превратил в ослов; он превращал их то в быков, то в ослов и заставлял работать на себя.

Сказку «Бай улу Махамет» – «Баев Махамет» [10] мы бы назвали одним из вариантов произведения «Ындырбаев Махамет», хотя кое-какие мотивы и композиционные элементы незначительно расходятся в них.

Особой разницы не наблюдается во вступлении и развитии действия, если не обратить внимания на следующие сюжетные элементы, в которых представлены своеобразные, присущие данному произведению мотивы: у героя была жена-красавица, которую он застал с любовником в постели; после этого ударом плети она превращает мужа в собаку; на кошаре, где она охраняла стада, удивляла пастухов своей сообразительностью; местный бай попросил ее на время, чтобы охранять своего ребенка от ведьмы, которая обычно съедала только-что родившегося младенца; пес ловит ведьму, которая обращается к нему со словами: «Оставь меня, теперь я не приду сюда. Тебя еще ожидает неприятность, и я помогу тогда, спасу тебя», – и он отпускает ее; с золотым ожерельем собака возвращается к себе домой, жена же, опознав мужа, отбирает золото и ударом плети превращает его в сову; однажды ведьма видит, что дети издеваются над совой, и, отобрав ее у них, ухаживает за ней и лечит птицу; прощаясь с героем, ведьма советует через очаг пробраться в дом, натереть себя снадобьем, которое она дала, потихоньку достать из-под кровати плеть и, ударив, превратить их либо в ослов, либо в коней; Махамет поступил так, как его научила ведьма, и они превратились в черных ослов.

Сказка заканчивается словами Баева Махамета, что один из этих ослов некогда был его женой, а другой – ее любовником. «А та ожившая коза послала тебя ко мне, чтобы я обо всем случившемся рассказал тебе!»

В своем монологе сказочник употребляет термин «*тамаша хапар*» – «удивительное повествование», что следует понимать в научном осмыслении или переводе, как «волшебная сказка».

Хотя в названии произведения имеется незначительное различие, касающееся фамилии сказочного персонажа Махамета, в них наблюдается явная вариативность и повествовательная индивидуальность в ряде мотивов исследуемых текстов, которые заключаются в следующих повествовательных микросхемах: в первом варианте Махамет женится на красивой женщине, у которой при загадочных обстоятельствах умирают первый и второй мужья, тогда как Баев Махамет был первым мужем красавицы; в первом тексте, превращенного в собаку Махамета просит остерегать от ведьмы свою семью брат хозяина кошары, а во втором местный бай; в первом тексте не говорится прямо, что женщина распознала в раненой сове Ындырбаева Махамета, а во втором, ведьма знает эту тайну и помогает Махамету одержать победу над коварной женой и ее любовником и снова превратиться в человека.

В чем волшебные элементы данного произведения? Они заключаются в следующих мотивах, представляющих знаковые элементы повествовательных микросхем: коза, которая, будучи убитой и зажаренной, когда охотник приступает к трапезе, оживает и обращается к нему на человеческом языке; плеть, которая может человека превратить в лошадь, собаку, сову, осла или быка.

Особая роль в сказке отводится образу собаки, в которую был обращен главный персонаж Махамет. Ей доверяют поймать «*обур къатын*» – ведьму, творящую зло, но отвечающую на добро добром, помогая Махамету, освободиться от колдовства и снова превратиться в человека.

В 2005 г. в с. Булунгу Чегемского района нам пришлось несколько дней заниматься сбором фольклорного материала, и мы убедились, что в народной памяти все еще сохранились предания старины: сказки, песни, басни, легенды и этно-исторические материалы, касающиеся отдельных патронимий и заселения ныне занимаемой ими территории.

Неплохой знаток фольклора Юсуп Салахович Сарбашев нам рассказал ряд фольклорно-этнографических текстов, которые представляли бесспорный интерес в исследовании родной словесности. Тогда же была записана в его исполнении и небольшая сказка «*Ындырбай улу Мухамет*» – «*Ындырбаев Мухамет*», которая мало чем отличается от исследуемого нами текста. На наш вопрос, имела ли она присказку, сказитель ответил: «*Жомакъ быллай айтыу алгыши бла башлана эди*» – «Сказка начиналась следующей присказкой-заговором»:

*Сейир жомакъ жолунга,
Жарашсын акъылынга.
Жолоучу жолда ажашма,
Кесинги сен алдатма.
Адам аманд обурдан,
Къаргыши этген къаргыдан.*

Волшебная сказка тебе в путь,
Пусть усвоится твоим разумом.
В пути не заблудись,
Не дай соблазнить себя.
Человек – хуже ведьмы,
Вороны, посылающей проклятье.

Изучение языка сказки показало, что в ее лексику вошел ряд слов, которые несколько осовременивают текст. Так, влияние ислама как веры, которая довольно поздно (в XVIII в.) проникла в карачаево-балкарскую этническую среду, прослеживается в обоих вариантах сказки. Чтобы ударом волшебной плети превратить Махамета в животное, его жена или ее любовник обращаются с просьбой к Аллаху, тогда как в некоторых произведениях в подобной ситуации сказочные персонажи обращаются к Тейри (Тенгри), верховному божеству тюрко-монгольского пантеона, которого долго почитали в карачаево-балкарской этнической среде.

Ни столько типологически, сколько по структуре содержания близко к рассмотренным нами сказкам кратко изложенное произведение «*Бай улу Бат*» [9], в котором явно прослеживаются атрибуты композиции национальной волшебной сказки, как полноценного, завершенного текста.

Если учесть, что материал был записан в Теберде в 1958 г. фольклористом А.З. Холаевым у карачаевского сказителя О.Л. Канаматова, вполне допустимо, что в отличие от чегемских вариантов, здесь могут быть кое-какие вкрапления в текст, что придаст ему определенное своеобразие и индивидуальность.

При присутствии основных мотивов рассматриваемых нами сказок, различие мы уловили в следующем: волшебная плеть, ударом которой можно было превратить человека в животное, в прошлом, якобы, принадлежала нарту Карашауаю, а от него переходила к другим и оказалась позже в доме той коварной женщины, которая стала женой Баева Бата; в данном варианте не указывается, в кого был превращен Баев Бат, а лишь его устами передается, что он принял прежнюю форму человека, когда спустился в дом через отверстие очага и потерял об волшебную плеть Карашауая. А свою жену и ее любовника превращает то в ослон, то в свиней.

Как видно из содержания материала, текст значительно ограничен смысловыми мотивами: в нем отсутствует образ ведьмы; не указано, когда, как и в какое животное был превращен герой, кто ему помог снова принять свой обычный облик человека.

В целом, рассмотренные нами тексты представляют прекрасные образцы искусства народного языка и мышления, в содержании и мотивах которых волшебные сюжетные элементы являются доминирующими.

Волшебные сказки «Про девочку-сиротку» и «Слепой Алиюк» также представляют интереснейшие произведения карачаево-балкарской сказочной прозы, в которых присутствует ряд сюжетно-композиционных элементов, характерных для лучших образцов данного жанра.

«Сказка про девочку-сиротку» [8] не только типологически, но и по содержанию близка многим произведениям кавказских и восточных народов. В ней повествуется о том, как в давние времена жила подаяниями сирота по имени Кулидам. Ее забирает к себе богатая женщина, у которой она допоздна пасет корову, прядет веретено, а питается в основном чуреком, выпеченным в золе.

Однажды, когда Кулидам пасла корову, неожиданно налетает сильный ветер, который вырывает из ее рук и уносит *юзмельт* (шерсть, подготовленную для прядения). Девочка бежит за ним до небольшого отверстия, разверзшегося в земле, и в отчаянии кричит, обращаясь к божеству ветра Жел Анасы Кибитки (в концепте «Мать Ветра Кибитки»), произнося традиционный заговор:

*Жел анасы – Кибитки,
Эшик арты – сибиртги,
Юзмелтими бер (бери – Х.М.).*

Мать Ветра – Кибитки,
За дверью (находится) – метла.
Отдай мой юзмельт.

Вдруг она слышит голос: «Спустись!» – и слушается его.

Внизу сиротка видит пещеру, внутри нее – богатый дом, а рядом сидит древняя старуха. Кулидам подбегает и обнимает ее, восклицая: «Матушка, матушка, верни мой юзмельт!»

А женщина отвечает девочке: «Дитя мое, я верну тебе шерсть. Но я постарела, поднимись-ка на чердак, не ленись перемешать мою пшеницу и спустись».

Девочка быстро поднялась на чердак и видит там большие залежи запыленных денег. Эти золотые монеты Кулидамка аккуратно перемешала,



спустилась с чердака вниз и обратилась к женщине: «Матушка, я выполнила твою просьбу, перемешала сказанное».

Старуха затем попросила, чтобы она сняла пояс и отряхнула свою одежду, и постелила под нее ковер.

Девочка выполняет ее просьбу, но не догадывается с какой целью это сделано. Видя, что она оказалась порядочной и ничего не похитила у нее, ударив, одну половину ее лица одарила солнечным сиянием, а другую половину – лунным. Поднявшись на чердак, девочке много золотых денег поднесла, вернула шерсть и ласково ее проводила.

Здесь вступает в действие древнейший магио-этнографический прием художественной условности: раздается крик домашнего петуха, предсказателя доброй или злой вести: «Ку-ку-ре-ку! Возвращается наша солнцеликая, луноликая девочка!»

Увидев Кулидамку, мачеха очень удивилась. Заметив, что щеки ее сияют как солнце и луна, разгневалась, избивала девочку, а деньги отобрала. Проведав обо всем, на следующий день она посылает на то же место пасти корову свою дочь с пожеланиями, чтобы она вернулась домой красавицей.

Проделав тот же ритуал, что и Кулидам, та крадет на чердаке золотые деньги, что становится очевидным для божества Жел Анасы Кибитки, после чего, влепив ей пощечины, наказывает ее появлением на одной щеке ослиной бородавки, а на другой – собачьей.

В отчаянии девушка возвращается домой, а увидев ее, петух издает крик: «Ку-ку-ре-ку! С щекой с ослиной бородавкой, с щекой с собачьей бородавкой наша девушка возвращается!»

Тут выскочила ее мать, разгневалась на петуха, но увидела свою дочь с огромными бородавками. Вместе с дочерью она глубоко переживает ее приобретенное уродство.

Тем временем слух о красоте Кулидам распространился широко. Об этом становится известно и хану. Вскоре он посылает на ее поиски своих людей и войско.

Услышав об этом, мачеха прячет Кулидам и вместо нее в качестве невесты выводит свою дочь, которую наряжает в богатые, роскошные одежды.

По пути к себе во дворец у хана появляется желание посмотреть на свою невесту. Приподняв ее вуаль, он видит уродливое лицо, после чего возвращается и жестоко наказывает ее мать: здесь присутствует традиционный восточный мотив о разрывании на части провинившегося путем привязывания его рук и ног к хвостам молодых неук. Хан женится на сиротке Кулидам, и у них начинается счастливая жизнь.

Анализ сюжетно-повествовательных особенностей сказки показал, что в ней традиционной формулой является вступление «Давным-давно...» и развязка «... стали жить-поживать». Присутствует и трехступенчатое сужение образа «большая пещера – роскошный дом – старушка», что значительно обогащает ее композиционную художественно-повествовательную систему. То же самое следует сказать и относительно присутствия в произведении образа покровительницу ветра Жел Анасы Кибитки, к которой обращаются с традиционным заговором, чтобы задобрить ее. Она играет в произведении не только положительную роль в качестве языческого персонажа, но и помогает сиротке Кулидам стать счастливой. Благодаря ее



помощи к ней приходит большая радость, после чего резко меняется в лучшую сторону ее судьба.

Таковы основные повествовательные элементы произведения, строящиеся в основном на конфликте сказочной поэтики, где добро одерживает победу над злом.

Сказка «Сокьур Алиюкь» – «Слепой Алиюк» [11] – весьма сложное по своей жанровой особенности произведение. Она состоит из двух не очень-то между собой связанных повествовательных разделов.

Вступление, как и в сказках «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет», начинается с популярного мифического мотива о том, как однажды охотник убивает оленя, снимает с него шкуру, разделывает, жарит шашлык. Но едва он собрался приступить к трапезе, как вдруг олень оживает и начинает убегать.

«Эй! Что за чудо?» – вслед кричит охотник.

«Ай, это не чудо, более удивительное тебе расскажет Слепой Алиюк!» – произносит животное и покидает эти места.

Охотник клянется найти Слепого Алиюка и приступает к его поиску.

Далее начинается первая часть развития действия, в которой повествуется о том, что охотник останавливается на краю села, под скалой у реки, заходит в один дом, где видит, что в теле крупного мужчины с плеча до пяток с двух сторон торчат огромные железные шампуры. От боли он стонал, а рядом находившиеся две женщины плакали.

Здесь происходит небольшой диалог между ними, после которого охотник клянется своим ружьем найти, во что бы то ни стало, злодея, который с ним так жестоко поступил, и наказать его. Эпизод клятвы ружьем напоминает древний ритуал гуннов, когда они, заключая мирный договор с китайцами, клялись мечом. Привнесение же в данную сказку предметного мира «ушкок» – «ружье», на наш взгляд, явление довольно позднее в мотивах сказочного эпоса.

В ответном слове мученик говорит, что это он – Слепой Алиюк, у него было девять сыновей, один отважнее другого. Они позволяли себе бросать в круг огромного льва и веселились, гоняя его, как теленка.

Далее речь Слепого Алиюка носит монологический характер лирического повествования о себе и своих сыновьях. Постараемся изложить ее кратко: «Однажды девять моих сыновей, оседлав девять коней, и я вместе с ними, отправляемся в путь. Встречаем огромного эмегена, который пас свои стада: «Да умножится богатство!» – говорим. А он отвечает добродушно: «Спасибо, здравия вам, добро пожаловать, будьте гостями!» – приглашает нас в пещеру. Угощает он нас вольготно, но пещеру перекрывает огромной скалой, чтобы мы не могли выйти на улицу. Утром, когда он погнал свои стада, как вдесятером мы ни старались, не смогли сдвинуть скалу.

Таким образом, эмеген съел сперва наших лошадей и девятерых моих сыновей, и наконец, решил съесть и меня. Нанизал меня на огромные шампуры с плеч до ног, приготовил огонь, чтобы пожарить из меня шашлык. Я же, воспользовавшись моментом, когда он задремал у очага, бросился вниз с обрыва, подумав, что лучше умереть дома, чем оказаться в желудке у чудовища. Путники меня забрали и привезли домой.



Видишь, теперь мучаюсь, не могу умереть. Жена и дочь от слез ослепли. Такова наша история!» – сказав, Алиюк завершил свой рассказ.

Далее начинается вторая часть в развитии действия, в которой доминирующими сюжетно-повествовательными элементами служат клятва героя о мести, встреча его с эмегеном, диалог между ними с целью перехитрить друг друга, а затем конфликт и поединок.

Повторная клятва охотника носит открыто императивный характер. В ее содержании присутствуют вышедшие ныне из употребления обороты речи и словосочетания: «Либо погибну как твои сыновья, либо за кровь их враг поплатится!» – сказав, он направляется в сторону той пещеры.

В описании внешности эмегена присутствуют явно архаические мотивы, характерные для древнейших текстов, в которых мифические мотивы являются доминирующими в контексте: «На возвышенности лежал огромный эмеген, который, единственный свой глаз направив в его сторону, разинув рот, словно крокодил, бормотал что-то».

При первой же их встрече симпатия сказочника явно на стороне отважного охотника, который обращается к великану со словами: «Ой, мерзкий, толстопузый...», – а затем, поздоровавшись с ним, силой своего рукопожатия ломает ему два пальца. Охотник значительно умнее и хитрее своего врага, что наблюдается в его действиях и диалоге. Заранее испытывая свою силу, без особого труда он поднимает скалу, которой великан прикрывал пещеру, тайно обнаруживает останки девяти братьев, в ответ на его угощение не режет своего коня, что приводит к конфликту между ними, а затем и к поединку, в котором победу одерживает охотник.

Беспомощному великану, у которого только голова была видна над землей, а остальное тело было погружено в землю, он обращается со словами: «Если не подскажешь, как оживить сыновей Алиюка, отрежу тебе голову!» В ответных словах эмегена наблюдаются магические действия, коварство, символика цвета, трусость, которые ему ничем не помогли: «Подними очажный камень, возьми из-под него войлочную плеть, ударь ею по воде, пойдя ударь по их чучелам, тогда люди и лошади оживут. Будь проклят Аллахом. Если ты не оставляешь меня в живых, в пещере из черного сундука достань мой нож и им отрежь мою голову. В моем стаде водится красный баран, зарежь его. Если Алиюк съест его мясо, выпьет половину растопленного жира, а остальное выльет, он выздоровеет. Теперь, будь проклят Аллахом, после того, как убьешь меня, вытащи из живота мою толстую кишку, обмотай ею свою поясницу, тогда сильнее тебя никого не будет на свете!» – учил его, как поступить, великан.

Охотник не верит его словам и проверяет его советы, испытывая их на других предметах и животных, таким образом, раскрывая код его сущности, направленной против человеческого рода: он осторожно открывает черный сундук, оттуда вылетает волшебный меч эмегена, как тростинку разрезав железный кол, но не нанеся вреда охотнику; толстую кишку эмегена охотник обматывает вокруг ствола дерева, который был сломлен как тонкая ветка; кусок мяса красного барана он скармливает собаке, которая тут же подышает. Герой одолевает его благодаря разуму, силе воли и решительным действиям.

Здесь наступает третья, завершающая часть развития действия, где согласно проделанному ритуалу и сказочным мотивам оживают девять братьев и их кони.

Охотник доставляет братьев живыми домой к их отцу Слепому Алиюку, из тела которого вытаскивает шампур. Вскоре он, его жена и дочь становятся зрячими, и охотник женится на сестре братьев.

Когда он прощался, его спросили, что бы он хотел взять с собой из дома, на что охотник ответил: «Подарите сундучок «Мушт», больше ничего не надо!» – и, породнившись с ними, покидает их дом.

Далее начинается второй раздел сказки. Изучение его сюжетно-повествовательных особенностей показало, что сложно провести связь между содержательными материалами этих разделов. Однако, кратко коснемся этой проблемы.

По пути домой охотник открывает загадочный ларец «Мушт», и оттуда выбегает большой табун лошадей. Загнать его обратно помогает волк, который в ответ на свой поступок требует у охотника отдать ему своего сына, а затем, когда настает срок, предлагает вместо этого привезти ему невесту, которая ни за кого не хотела выходить замуж.

Сын охотника не знает, как выйти из ситуации, но ему помогает откуда-то появившаяся лиса, которая принимает облик то овцы, то красивой девушки. А обманутый волк остается ни с чем.

Второй раздел произведения, скорее всего, является контаминацией самостоятельного текста, где главными, детерминантными мотивами были сюжетно-повествовательные схемы о волшебном сундуке, табуне, хитрости лисы, жадности и глупости волка.

В целом сказка представляет собой один из лучших образцов карачаево-балкарской народной сказочной прозы.

Следует отметить, что в карачаево-балкарских волшебных сказках с участием животных, пожалуй, больше всех необыкновенными свойствами наделяются волк и конь.

Волк не только ходит по земле, но и способен преодолевать горы и леса, помочь герою достать со дна озера волшебную рыбу, спасти его от смерти. Сюжет с подобным детерминантным ядром развит в карачаево-балкарской народной сказке «Золотая птица» [21, 106–111]. «Сюжет о том, что волк, съев коня, затем берет на себя его обязанности помогать человеку добровольно, без принуждения...» имеет место и в русском сказочном эпосе [4, 49].

Культ лошади в карачаево-балкарской мифологической традиции и в сказочном эпосе говорит о том, что здесь наблюдается бинарность двух архаических культур: субстратно-кавказской и тюрко-монгольской, в которых это животное почиталось не только как тотемное, но и как существо космического происхождения.

В сказке «Младший брат», когда злая красавица чуть было не схватила жеребенка за хвост, «...он, плавно оторвавшись от земли, оказался под облаками... перелетев через дремучие леса, широкие ущелья, над хребтами высоких гор, мягко опустился на землю перед пещерой» [21, 89]. Типологический образ карачаево-балкарского Конька-Горбунка развит и в детских сказках.



Тексты «Птица с золотыми перьями» и «Мырзаев Канмырза» были записаны научной экспедицией нашего института в 1965 и 1967 гг. и до настоящего времени нигде не публиковались.

Сюжетную основу сказки «Птица с золотыми перьями» [13] формирует конфликт между пожилыми супругами, где выводится образ алчной, деспотичной старухи и скромного, трудолюбивого старика Бийбо, из которого вытекают десятки мотивов, создающих повествовательный фон всего произведения.

Анализ текста показал, что он состоит из следующих сюжетно-повествовательных семантических микроструктур: семья занималась разведением цветов в своем огороде, за счет чего она и существовала; часто какое-то пернатое поедало их, за что старуха жестоко наказывала старика; однажды происходит чудо: освещая все вокруг, неведомое, загадочное пернатое, прилетев, садится на кукурузный стебель, под которым муж сторожил свою оранжерею; воспользовавшись этим, старик хватается за птицу, которая человеческим языком глаголет: «Ой, душа моя, Бийбо, ты вытаци одно перо из моего крыла и отпусти меня. Если ты в чем-либо будешь нуждаться, дай свободу этому перу, а сам следуй за ним. Оно приведет тебя ко мне, я же помогу тебе во многом!»

Вытащив одно перо, старик отпускает птицу и об этом рассказывает своей старухе: «Сегодня ночью поймал золотую красавицу – птицу, но она начала умолять, и я отпустил ее», – за что жена наказывает его избиением и приказывает найти и доставить ей птицу. Старик выходит на улицу, пускает перо по ветру, а сам следует за ним; оно приводит его к вершине высокой скалы, у которой раздвигаются два огромных камня, и тропа между ними ведет их в крепость, где сидела на царском троне эта птица; выслушав старика, она приказывает слугам доставить «хант къанга» – «обеденный стол», и те приносят трехножный столик; пернатая царица раскрывает секрет ключевых слов, после произнесения которых этот волшебный предмет будет заполняться богатой пищей: «Но это следует держать в секрете, пока не придешь домой», – велит она.

Продолжение затем носит новеллистический, приключенческий характер, где традиционно «Художественное своеобразие новеллы коренится в противоречивом сочетании картины прозаического, повседневного бытия и острых, необыкновенных, иногда даже фантастических событий и ситуаций, как бы взрывающих изнутри привычное, упорядоченное движение жизни» [61, 240]. Исходя из подобных принципов, некоторые фольклористы иногда выделяют новеллистические сказки в системе видов народной прозы в самостоятельный жанр [4, 16–77], что на наш взгляд, не совсем убедительно, т.к. подобные мотивы могут присутствовать в любых сказочных жанрах.

Возвращаясь со столиком домой, припозднившись, старик ночует у табунщиков, которым раскрывает ключевые слова; воспользовавшись этим, они подменяют его на другой столик, а волшебный оставляют себе; придя домой, в надежде обрадовать старуху, старик обо всем рассказывает ей, когда же он произнес загадочные, таинственные слова, столик так и остался пустым, после чего старуха избивает его палкой.

Затем наступает второй этап развития действия: опечаленный старик возвращается к владыке пернатых и рассказывает ей о своих злоключениях.



Выслушав его, птица распоряжается доставить ему «къара тюклю токълу» – «ярочку черной шерсти» и раскрывает тайные ключевые слова, после произнесения которых она будет испражняться золотом вперемешку с пшеничными зернами, но велит держать их в тайне и не произносить, пока домой не дойдет.

По пути к себе домой Бийбо ночует на кошаре у чабанов и по своей наивности выдает им волшебные слова, после чего они подменяют ее на другое, похожее животное. Придя домой, старик рассказывает старухе о волшебных качествах животного, но проделанные ритуалы никакие необыкновенные свойства в ярочке не выявляют, и старуха в гневе прогоняет его из дома.

Далее наступает третий, завершающий мотив развития действия, ведущий к развязке: явившись к владыке орнитологического мира старец дает ей знать о своих неудачных приключениях с ярочкой.

Выслушав его, на этот раз пернатое дает старцу дубинку-самобойку и просит, чтобы он, пока домой не дойдет, нигде бы не произносил формулу «Ур, токъмакъ!» – «Бей, дубинка!» Но по пути домой он останавливается на той же кошаре табунщиков, показывает этот предмет и просит не произносить запретные слова. Они же догадавшись, что в них кроется что-то таинственное, произносят: «Бей, дубинка!» Выскочив, та тут же начала лупить человека, подменившего ранее волшебный столик, и тот обращается за помощью к Бийбо: «Останови ее и заведи тот столик обратно!»

Забрав с собой волшебный столик и дубинку-самобойку, старик доходит до кошары чабанов, где ранее ночевал, показывает дубинку и просит не произносить запретные слова. Догадавшись, что в этих словах кроется что-то волшебное, они произносят: «Бей, дубинка!» – та тотчас выскакивает и начинает колотить того человека, который подменил ярочку.

Забрав с собой волшебный столик, ярочку и дубинку-самобойку, Бийбо возвращается домой, где после соответствующего ритуала столик наполняется разной пищей, ярочка испражняется золотом и пшеничными зернами. Но старуха все еще остается недовольной и ворчит на старика, что могло бы быть еще лучше.

Последние действия волшебной дубинки-самобойки были таковы: по велению старца она охаживает старуху за ее скверное отношение к нему, после чего она дает слово, что впредь будет уважать мужа. Согласно традиционным сказочным мотивам, данный эпизод в развязке текста несколько усиливается устоявшимся каноническим сюжетным элементом о том, что старуха, испытав на своей шее наказание за все прошлое, была настолько покорной, что возилась со старцем, как с ребенком: «... и на своей спине его выносила на улицу».

Рассматриваемое произведение уникально по своим сюжетно-повествовательным, типологическим и национальным особенностям. Сказочники восточного культурного мира (индусы, персы, арабы) издревле создавали образ злой демонической старухи и доброго послушного старца.

Как известно, данный мотив послужил сюжетной основой и при создании поэмы А.С. Пушкина «Сказка о рыбаке и рыбке».

Если в сказке Пушкина по велению золотой рыбки в хижине бедных рыбаков появляются роскошные дворцы и прислуга, то в карачаево-



балкарской сказке птица с золотым оперением творит чудеса через художественно-предметный мир (столлик, ярочка, дубинка-самобойка). В обоих случаях вырисовывается образ добрых стариков и алчных, ненасытных старушек, страдающих по велению золотых рыбки и птицы – владык моря и орнитологического мира. Нет сомнения, что эпитет «золотой» в данном случае является привнесением в русскую литературу из восточной словесности, т.к. он не был характерным в качестве изобразительно-эстетической формулы для славянской художественной культуры.

«Сказка о рыбаке и рыбке» примыкает к тому широкому кругу восточных (азиатских) сказаний, в которых одно, два или несколько лиц получают от сверхъестественного существа дары, которые, однако, по вине самих просителей приносят вред или исчезают... Известны сказки, где чудесным помощником выступает святой, живущий на волшебном дереве, птичка-дрозд, птичка-нос, птичка-коток – золотой лобок...» – размышляет Е.И. Токарева, исследуя данное произведение на русском фольклорном материале [63, 111–112]. Из контекста данной научной мысли нетрудно догадаться, что пернатые мифологизировались и в русском сказочном эпосе, наделяясь волшебными свойствами, что, на наш взгляд, следует воспринимать как заимствование из восточной духовной словесности.

В сказке «Птица с золотым оперением» значительная роль отводится волшебной дубинке-самобойке, которая наказывает всех, кто допустил несправедливость по отношению к доброму старцу Бийбо: и чабана, и табунщика, и злую старушку, часто издевавшуюся над ним, недостаточно довольную неожиданным для нее богатством. «Сменяя картину абсолютной бедности описанием полного благополучия, народные исполнители пользуются приемом контраста. Резкое изменение обстановки позволяет дать первую характеристику жадности героев: оказавшись в положении, которое им раньше и не снилось, они остаются недовольными», – что имеет место и в сказочном эпосе других народов России [63, 112–113].

«Сказка создала поразительно живой, замысловатый мир. Все в нем необыкновенно: люди, земля, горы, реки, деревья, даже вещи, предметы, орудия труда, и те приобретают в сказках чудесные свойства. Топор сам рубит лес, дубина сама бьет врагов... Чем ближе конец повествования, тем острее и напряженнее становится борьба. Очень часто, подведя героя к исполнению желанной цели, сказочник вновь возвращает его к тому положению, с которого он начал свою борьбу», – глубоко аргументированно размышляет В.П. Аникин, на примере особенности поэтики сюжета русских народных сказок [4, 160].

Сказка «Птица с золотыми перьями», представляющее собой сложное сюжетно-образное повествование, вобрало в себя множество интересных мотивов из словесной культуры народов Востока, преобразованных в соответствии с национальным менталитетом, и нашло себе достойное место в устной словесности карачаево-балкарского народа.

Карачаевская сказка «Мырзаев Канмырза» [14] по своим повествовательным особенностям представляет своеобразное произведение народной прозы, вобравшее в свою сюжетно-композиционную структуру ряд порой

не очень связанных между собой, а потому трудно поддающихся исследованию мотивов из бытовых, героических и волшебных сказок.

Текст начинается с традиционного вступления о том, что у бездетного хана рождается мальчик и отдают его на воспитание прославленному охотнику и смелому человеку Мырзаеву Канмырзе.

Затем, без всякого перехода к временно-пространственным канонам об его детстве и мужании, вступает в действие монолог между подростком-царевичем и аманом-воспитателем, который просит у охотника дать ему оружие и охотничью собаку, т.к. у него появилось желание поохотиться на зверей, а потому трудно уловить в контексте повествования вступление и начало развития действия. Судя по содержанию произведения, в отрочестве царевича начинается его первая охота, когда он самостоятельно, без сопровождения каких-либо неофитов, отправляется на этот опасный промысел.

Далее разворачиваются события, весьма характерные для волшебных сказок: дважды встречается ему на охоте на одном и том же месте, на земле, покрытой рододендронами, заяц, которого он преследует. Заяц ведет его в глубокое ущелье, где в самом низу он видит каменную стеллу и на ней фотографию необыкновенно красивой девушки.

Отец (воспитатель), догадавшись в чем дело, находит его на том месте, где подросток дает знать Канмырзе, что хочет жениться на ней, а потому просит, чтобы он не пожалел сил для исполнения его мечты. В речи отца наблюдается древнейшая лексика, присущая языческой архаической форме карачаево-балкарского языка: «*Сени Тейрибиз урмасын! Тейриден аман тан! Танмай амал жокъду!*» – *дегенди*» – «Чтобы ты не был наказан нашим (повелителем) Тейри! Обрети от Тейри добро! Не найти, возможности нет!» – он сказал». В данной конструкции антропоним Тейри (Тенгри) выражает имя верховного божества тюрко-монгольского пантеона, а словоформа «аман» древнейший и почти забытый архаизм, который изначально означал понятие «хороший», «добрый», «удачный», но с течением времени данная словоформа начала выражать противоположный смысл «плохой», «неудачный», «мерзкий» по отношению к какому-либо субъекту и объекту.

Далее начинается развитие действия, которое состоит из ряда сюжетных элементов. Долгие поиски приводят их к зарослям камыша, откуда поднимается густой дым. Здесь они видят огромную, роскошную крепость, где их встречает некий юноша, который рассказывает им, что девушка находится внутри семикратно укрепленной железной крепости. Снаружи она охраняется семикратно выстроенным войском.

После этого Канмырза серьезно задумывается и решается выкопать туда тоннель, что и осуществляет вполне успешно.

Данную композиционную часть произведения, исходя из его содержательных особенностей, мы бы назвали вторым этапом развития действия, который состоит из следующих повествовательных элементов: Канмырза встречается с девушкой и дает ей знать о намерении женить на ней своего сына; ее продолжительный монолог, включающий в себя ряд сложных, имеющих сказочно-фантастический характер мотивов, в котором детерминантами являются сюжетные ситуации, связанные с предстоящим



поединком между богатырским конем ее отца и лошадью Канмырзы, где она дает знать, на какую пойти хитрость и как одолеть это сильное животное; потерпев поражение, богатырский конь противника на человеческом языке молвит, что теперь он готов верой и правдой служить Канмырзе; добившись с помощью девушки цели и доставив ее в крепость, он женит их и объявляет сына и девушку мужем и женой.

Казалось бы, на этом должна была завершиться сказка, но дальнейшие события в произведении несколько теряют смысл и уводят слушателей из мира интересных приключений, в события не совсем характерные для жанра сказки, в которых мы бы выделили следующие структурно-содержательные элементы, не имеющие отношения к данному произведению: из крепости выходит юноша, который просит у Канмырзы повести его на охоту, т.к. и он был когда-то намерен жениться на этой девушке, а сейчас он голоден; отправляясь в путь, на поиски дичи, отец просит сына не спать, пока он не вернется с охоты, а вернувшись, застает его спящим, а жены его нет на том месте, и он отправляется на далекие поиски, чтобы найти и вернуть ее.

Дальнейшее повествование в тексте носит несколько контаминированный характер и заимствован из других популярных карачаево-балкарских волшебных сказок, где главным детерминантным сюжетным элементом является мотив о дружбе между героем богатырского склада и огромным, с фантастическим размахом крыльев орла, способного нести на своей спине туши семи быков и спасителя его орлят из подземного мира в средний мир, где традиционно обитает и где старается оказаться вновь наш герой.

Кратко вернемся к содержательно-повествовательным и сюжетно-композиционным особенностям продолжения сказки: Канмырза просыпается от какого-то шума и видит дракона, который старается доползти до огромного орлиного гнезда; поднявшись на дерево, своим кинжалом он убивает рептилию, после чего выходят из гнезда два орленка и приглашают героя к себе в гости, речи их полны фольклорно-сказочной гиперболы и сложными сравнительными элементами: «Наша мать отправилась на поиски пищи, она скоро вернется. От слез ее потекут реки, а от шума ее крыльев будут склоняться верхушки этих деревьев!» – рассказывают они о том, что произойдет, если орлица не увидит их. Ведь убитый им дракон, ежегодно, под караулив, поедает орлят.

Далее, с появлением орлицы, наступает сцена, традиционно характерная для прозы карачаево-балкарского нартского эпоса, когда чудовище-эмеген, почуяв запах богатыря, обычно произносит: «Ас-мус (ийис), адам ийис» – «Запах ас-мус, запах человека». В данном случае это исходит от птицы, которая очень обрадовалась, увидев живыми своих птенцов.

Диалог между орлицей и Канмырзой носит теплый, дружеский характер. В нем пернатое дает знать ему, что невесту его сына похитил злой волшебник Жансыз-Мыжык* (в концепте «Бездушный Мужик»), и, как традиционно принято в мотивах подобных сказок, доставляет его на своих крыльях до нужного места и советует ему: «Канмырза, иди по этой тропе. Она

* *Мыжык* – этнографический термин, выражающий понятие «бескультурный, аморальный, тупой мужик», в основном употребляющийся в семейно-бытовых условиях.

тебя приведет к крепости Жансыз-Мыжыка. Очевидно, в крепости Жансыз-Мыжык спит, а невестка твоя плачет. Но не старайся увести невестку с собой, т.к. в подобном случае, он убьет нас обоих. Если же ты застанешь невестку плачущей, скажи ей: «Как только проснется Жансыз-Мыжык, он у тебя спросит: «Почему плачешь?», – ты же должна ответить: «Да как же мне находиться там, где нет ни людей, ни души!»»

Дальнейшие события в сказке разворачиваются таким образом, что определяющими являются образные системы художественно-предметного мира разного формата: веник, стрела, олень, три голубя, три мухи, несущие в своих действиях кумулятивный характер по нисходящей линии, способствующие смерти злого волшебника Жансыз-Мыжыка. Главное в данной ситуации – разгадать тайну, где сокрыта душа злодея, иначе, согласно законам сказочной поэтики, победить его невозможно. Благодаря своей хитрости, войти к нему в доверие, узнать это может только невестка Канмырзы, которой предстоит выполнять в его дворце обязанности служанки или наложницы.

Затем события развиваются таким образом, что женщине удается добраться до волшебной тайны. То ли вследствие утраты некоторых повествовательных модусов или явления, несколько позднее привнесенного в текст, он имеет несколько сложный, а порой и противоречивый характер.

Кое-какие повествовательные элементы сказки удивляют странностью своего содержания: злодей сообщает ей, что для того, чтобы его убить собственный кузнец Жансыз-Мыжыка должен выковать стрелу для орлицы и Канмырзы; в тот момент, когда охотник завладел стрелой, орлица из камыша вывела оленя; выстрелом Канмырза убивает эту дичь. А когда он распорол живот оленя, оттуда вылетают три голубя, которых орлица, поймав, доставляет Канмырзе; он распарывает им животы, оттуда вылетают три мухи, которых, пернатое доставляет Канмырзе. Здесь и приближается смерть Жансыз-Мыжыка: раздавив двух слепней, третьего, схватив за крылышко, охотник подносит к злодею, который, беспомощный и бессильный, молвит: «Оставь теперь ослабленную мою душу. Подскажу, где находится моя казна!» Овладев его казной, Канмырза раздавливает муху, и навсегда душа покидает могущественного Жансыз-Мыжыка.

«Образы-символы, замещают реальные персоналии и передают их внутреннее состояние. Значение таких образов раскрывается в отношениях с реальными персонажами или в своеобразных совмещениях», – рассуждает Л.А. Астафьева-Скалбергс, исследуя символическую образность в русском фольклоре [20, 33], что типологически совместимо с карачаево-балкарской устной словесностью. В данном случае, символами смерти выступают олень, голуби и мухи.

Развитие действия завершается весьма традиционным для подобного рода сказок композиционным мотивом: из подземного мира на своей спине орлица доставляет Канмырзу, его невестку и казну, в прошлом принадлежавшую злодею, на земную поверхность, в мир, где живет человеческое общество. На этом, казалось бы, сказка должна завершиться, но покуда композиция ее не совсем традиционна для данного жанра, развязка наступает в дальнейшем, неся в себе неожиданные повествовательные сцены: тепло попрощавшись с орлицей, Канмырза вместе с царевичем и его женой



держат путь в родное село, но, ночуя в пути, ему слышатся голоса, говорящие: «Канмырза своему воспитаннику везет невестку, а хан хочет забрать ее себе!»

Здесь, безо всякого на то основания, повествование ведет к конфликту Канмырзы и царевича с ханом, который замышляет по восточному методу коварно убить юношу и забрать его молодую красавицу-жену себе. Догадавшись о возможности будущих столкновений с ханом, Канмырза останавливается у себя дома и поздно ночью предотвращает гибель своего воспитанника: он убивает пятерых наемников, спрятавшихся на чердаке, после чего превращается в камень.

Согласно предсказанию таинственных ночных голосов, вернуть Канмырзу к жизни можно было только, если, дождавшись рождения ребенка царевича, зарезать его и кровью обмыть камень.

Вскоре невестка родила ребенка и обратилась к мужу, чтобы он принес его в жертву. Тот отказывается. Тогда она сама, когда супруг отправляется спать, проводит этот ритуал и кровью младенца обмывает каменное тело Канмырзы, после чего, оставив их, заходит к себе в комнату. Вдруг она слышит голос свекра: «Невестка! Я выздоровел! Мальчик плачет, забери его!»

Сказка завершается предложением: «Когда наступило утро, своей саблей (Канмырза) истребил всех, и остался жить со своей женой, сыном, невесткой и внуком». Под словом «*барын да*» – «всех», очевидно следует понимать хана и его окружение. Но здесь к содержанию текста возникает много вопросов, ответить на которые довольно сложно. Очевидно, здесь имеют место сказительские ошибки.

Развязкой текста служит постоянная, традиционная формула, характерная для волшебных сказок: «Как мы не видели это, так нам не испытать болезни-хвори».

IV

Героическая сказка как жанр народной прозы в карачаево-балкарской фольклористике, к сожалению, до настоящего времени не рассматривался, хотя и следует отдать должное нашим предшественникам, внесшим определенный вклад в анализ сказки как народной словесной культуры.

В кавказоведении до настоящего времени отсутствует специальная работа по данной проблеме, если не учитывать монографию молодого фольклориста М.Ф. Бухурова «Адыгская богатырская сказка» [32], которую мы бы охарактеризовали как положительное явление в изучении народной словесной прозы адыгов.

Изучая глубоко и всесторонне проблему героя в жанре сказки, фольклорист А.И. Алиева вполне разумно рассуждает, что «... в центре сказочного повествования – главный герой, вокруг которого группируются все события: именно в отношении к нему раскрываются все остальные персонажи» [2, 62]. То же самое мы бы отметили в работе А.М. Гутова: «Распространенная у адыгов богатырская сказка тяготеет к неосознанности вымысла. Тематический диапазон его близок к определению С.Ю. Неклюдова: кровная месть, борьба с демоническими существами (великанами), богатырское



сватовство. В поэтике значительное место занимает гиперболоизация естественных свойств, в особенности, силы богатыря. Чудесные свойства не занимают центральное положение и чаще всего присущи не самому герою, а его коню, вещам или противнику. Повествовательная стилистика нередко бывает близка к стилю преданий» [40, 17].

Конечно же, чрезвычайно сложно выделить в системе сказок собственно героические произведения, т.к. традиционно сложилось, что мотивы одного жанра могут легко проникать в другие, о чем весьма удачно выразился в своей монографии М.Ф. Бухуров: «... в волшебных сказках решающая роль в достижении героем цели принадлежит помощникам и чудесным предметам, тогда как в богатырских они выполняют вспомогательную функцию... При сравнении этих жанров обнаруживается множество сходных мотивов, каковыми являются отдельные средства поэтического языка. Архаические мотивы и даже целые сюжеты, как, например, рождение или происхождение героя, богатырское детство, чудесные свойства оружия и коня и т.д.» [32, 141].

При определении жанровой принадлежности карачаево-балкарского народного повествования «Таурух» – «Легенда» [15], на наш взгляд, исполнителем-сказочником была допущена ошибка, т.к. основной фон ее повествовательных элементов говорит в пользу того, что она является сказкой героического характера. Сюжет и композиция произведения несколько своеобразны, а потому сложны, нетрадиционны и весьма близки к мотивам интриг, творящихся в дворцах восточных царей – шахов, султанов, каганов.

Сказка состоит из более чем десяти повествовательных сегментов, а композиция – из нескольких последовательных элементов. Остановимся на них кратко.

Согласно зачинной композиции, события в ней происходят в давние времена в Иране, где правил страной падишах, у которого было девятнадцать жен. От первой жены у него было трое сыновей и одна дочь, а остальные восемнадцать были бездетными. Монарх обучал своих сыновей в школе, приставив к каждому из них по двадцать учителей.

Далее начинается первая часть развития действия, где главная роль отводится конфликту, который подталкивает повествование к дальнейшим событиям: самая поздняя из его жен начала настраивать правителя против его сыновей, заявив, что они, якобы, оскорбляли, издевались над ней, не только пугая ножом, но даже порезав в кровь ее руки; падишах, поверив навету, повелевает арестовать и повесить их, но первый визирь уговаривает его не делать этого прилюдно, обещая самолично расправиться с принцами и доставить их кровь своему повелителю; по приказу монарха жандармы доставляют его сыновей в тюрьму и знакомят с указом отца; визирь отвозит их подальше и, дав по коню и по ружью, отпускает братьев, предупредив, чтобы они не возвращались в город, а сам, убив зайца, наполняет его кровью бутылку и подносит падишаху как свидетельство казни его сыновей.

Здесь завершается первая часть развития действия и события перенесутся из города Иран в местность, где оторванные от человеческой среды молодые люди стараются жить самостоятельно.

В сказке соблюдаются традиционные восточные нормы майората: старший из братьев берет на себе руководство над остальными, и ночью они



дежурят по-очереди и охраняют друг друга; в первую ночь старший брат убивает тигра, во вторую средний – огромную змею, а младшему в произведении отводится особая, можно сказать, судьбоносная роль.

Ночью, когда заснули старшие братья, вдали, в лесу он видит огонек и добирается туда. В помещении, откуда исходил свет, он замечает шестьдесят человек, из разговора которых догадывается, что они ведут разбойный образ жизни и ищут разведчика-шпиона, и заходит к ним.

В диалоге с ними, принц идет на хитрость: убеждает разбойников, что вырос сиротой и всю жизнь провел в краже, воровстве, шпионаже и т.д. Поверив, разбойники дают ему поручение: в восемнадцати километрах от этих мест живет падишах, он должен обнаружить, где тот прячет свое богатство.

Младший брат соглашается на это, и вскоре они добираются до крепости монарха. Перекинув веревку, он спускается вниз, и через какое-то время дает им знать, чтобы они спускались по веревке по-одному на помощь ему, т.к. груз внизу весьма тяжелый. Ударом меча, по-одному он обезглавливает всех, а затем отправляется осматривать город. Доходит до царского дворца, где замечает спящего охранника, у которого забирает ключи и заходит внутрь помещения, где замечает трех спящих красавиц-дочерей падишаха. Затем тихо покидает помещение и возвращается к своим братьям. Примечательно, что ни один из братьев не сообщает другим о своих подвигах.

Согласно сказочным канонам, в данной повествовательной части текста каким-либо образом должны были отразиться временные рамки происходящих событий, что мы в произведении не наблюдаем. Очевидно, это либо упущение сказителя-сказочника, либо какая-то часть произведения выпала из народной памяти. Если даже допустить, что в данном случае речь идет о сказочном мотиве, тем не менее кажется невозможным с ночи до утра тайно посетить убежище грабителей, провести их к стенам дворца падишаха, обманом обезглавить шестьдесят разбойников и спокойно вернуться к своим братьям. Все это в содержательном плане звучит странно, хотя героическая сказка в повествовательном плане и допускает многое.

В завершающей части развития действия чаша весов склоняется в пользу канонов левирата, и младшему брату начинает отводиться главная роль в дальнейшем содержании текста. Он уговаривает старших принцев покинуть лес и жить среди людей, на что они соглашаются и поселяются на окраинах того города, где произошла трагедия.

Узнав об обезглавленных телах и о том, что в его царстве ничего не исчезло, падишах стремится разобраться в этом происшествии.

После опроса всех жителей, монарху докладывают, что на окраине города поселились какие-то пришельцы, и никому не известно, кто они такие. Тот дает распоряжение доставить их во дворец и допросить. В результате выясняется, что младший из братьев совершил этот поступок из благородных побуждений. После этого шах поселяет их в своем дворце, выдает за них замуж своих трех дочерей, а младшему поручает охранять свою казну.

Здесь имеет место конфликт между визирем и младшим из братьев, когда первый путем обмана, коварства и лжи, опасаясь, что он займет его место, старается убедить падишаха в неискренности его зятя. Но вскоре его разоблачают и казнят.

Последующие действия весьма интересны в повествовательном плане: братья тайно покидают шахский дворец и разворачивают свои шатры недалеко от города своего отца. Узнав об этом, шах приказывает доставить их в свой дворец и просит рассказать, кто они такие.

Здесь-то и наступает кульминация. В содержательной композиционной части произведения повествуется о том, что из любопытства на незнакомых людей приходят посмотреть их мать, сестра, самая последняя из жен шаха и визирь, который догадывается обо всем. Согласно традиции восточных сказок, шах просит рассказать о себе что-то интересное, на что старший из братьев обещает поведать не виденную самим, но слышанную интересную историю.

Он рассказывает все, как случилось, какое они испытали зло в своей жизни, и завершает свое повествование следующими словами, выполняющими роль финальной формулы: «Вот он, тот визирь, спасший нас от смерти, вот она, та женщина, доставившая нам столько мучений, ты, падишах, – наш отец, она – наша мать, она – наша сестра, а те парни – мы!»

Убедившись, что они сыновья шаха, его последняя жена старается покинуть помещение, но ее останавливает визирь, который вмешивается в дело. Когда становится все ясно, ту женщину казнят, а позже устраивают большие празднества в честь братьев. Визирь упрекает шаха за прошлые ошибки, говоря, что, если бы он тогда не ослушался, не видать было бы тому живыми своих сыновей.

Особенности сюжета, композиции и языка произведения мы бы охарактеризовали следующим образом: персонажи сказки делятся на положительных и отрицательных, где с большими трудом добро одерживает победу над злом; положительными являются визирь, сыновья падишаха и, частично, падишах далекой земли, на дочерях которого женятся братья; отрицательными, сам шах и молодая, девятнадцатая его жена, шестьдесят разбойников и визирь того далекого царства, пытавшийся путем лжи и коварства погубить младшего из братьев из ревности.

Как традиционно принято в сказках, наиболее находчивым, решительным и смелым из братьев оказывается младший, чьи поступок с злодеями-грабителями, спасение его свекра-падишаха от змеи и другие события дают возможность определить сказку, как героическую. В ее композиции четко выделяются элементы зачина, после чего сразу же начинается развитие действия, которое в сюжетно-повествовательном плане делится на три элемента, составляющих основное ядро содержательных схем. Кульминацией текста служит весьма распространенный в восточных сказках мотив, когда очевидец событий, притворившись незнакомцем, рассказывает о себе реальные события, имевшие место в жизни.

В языке сказки много современных слов, активно употребляющихся ныне в лексиконе народа: «школа», «жандармы», «собрания», «доклад», «шпион», «километр», «крепость», «приказ», имеют место и архаизмы «*шатыр*» – «шатер», «*хазна*» – «казна», «*ёзюр*» – «визирь» и т.д.

Исполнительница текста Соттаева Жаухар Абдуловна, очевидно, была знакома с восточными сказками и, возможно, ряд мотивов был заимствован отсюда.

Чрезвычайно интересна в сюжетно-повествовательном плане и народная сказка «Тазрет» [5].



Своеобразна и композиция произведения, где сложно уловить зачин, а вступление начинается с традиционной формулы: «В давние времена в одном селе жил некий парень Тазрет», – и далее дается характеристика его образа жизни, повествуется, что он доставлял сюда все им награбленное, обеспечивал всех жителей, за что его очень любила сельская община.

Затем наступает экспозиция, которая до элементов развития действия в содержательном плане дает знать, что жители села, пожилые и молодые начинают беспокоиться, что он до сих пор не завел семью и ведет вольный образ жизни. Старейшины села, собравшись, слушают умный совет одного из мудрецов, что это дело следует преподнести Тазрету корректно и хитро, что они и сумели сделать.

Когда Тазрет вошел в аул, ему встречались люди только с опущенными головами, из-за чего, удивленный и обеспокоенный, он спрашивает у односельчан: «Почему мое село опечалено, что-либо случилось с тех пор, как я вас покинул?!» Ему дают знать, что они печальны потому, что у него до сих пор нет семьи. Тазрет соглашается с решением односельчан, и его вскоре женят на девушке из этого же села. Тем не менее, образ жизни героя особо не меняется. Молодая жена часто остается одна, чем и пользуется вошедшая к ней в доверие незнакомая старуха: она организовывает на берегу моря ее похищение. Вернувшись после очередного похода, Тазрет узнает об этом от своей общины и начинает поиски пропавшей супруги.

Далее начинается развитие действия, которое в содержательно-повествовательном аспекте делится на ряд эпизодов, где в качестве основных мы бы выделили следующие элементы: на берегу моря Тазрет видит корабли, лодки, встречает здесь мастера по кораблестроению, которому рассказывает о своих проблемах, и просит его изготовить лодку, чтобы он мог переплыть на другой берег моря и продолжить поиски своей жены.

Недалеко от чужого берега герой видит плывущего на лодке незнакомца, который спрашивает у него, куда он путь держит, на что Тазрет отвечает: «Как же мне быть-то, жена моя потерялась, и я дал слово найти ее, где бы она ни находилась. На берегу моря, где мы живем, никаких вестей о ней нет, а потому ищу ее на этом берегу».

Незнакомец дает согласие быть с ним рядом и помочь ему всем, чем сможет. И вскоре он сообщает: «Твоя жена в таком-то месте находится у одного богатого еврея. Он похитил ее. Крепость охраняет войско. Выбирай, Тазрет, будешь останавливать войско или же выведешь невредимой из нее свою жену!» Герой выбирает второе.

Когда они явились туда, заметили здание в пять-шесть этажей, которое охраняется войсками, и решаются на штурм. Как договорились, сопровождавший Тазрета останавливает войско, а ему удается вывести из крепости свою жену, и они встречаются у лодки и берут курс к себе домой.

Далее наступает следующий, второй этап в развитии действия, который несколько меняет ход событий: напарник предлагает поделить его жену так, чтобы досталась и ему доля, на что Тазрет недоумевает, как можно человека разделить на две части. На это спутник отвечает упреком, говоря, что он, Тазрет, достоин лучшей жены, чем та, которая побывала в руках у какого-то еврея, и ударом меча разрубает ее надвое и сбрасывает в море. Затем, обратившись к нему говорит: «Тазрет! В таком-то месте проживают



три брата. Они сейчас заняты обмолотом зерна. У них единственная сестра. Если ты женишься на ней, она будет достойной тебя женой. Как ты мог дать обмануть себя таким недалеким людям. Если постарайся, то найдешь ее!» Сказав так, он покидает Тазрета и уходит прочь.

Без особого труда Тазрет находит этих трех братьев, которые у себя во дворе занимались обмолотом зерна. Между ними происходит весьма корректный диалог, в котором Тазрет дает им знать о своих намерениях жениться на их сестре. На это они отвечают гостю, что у них нет силы и возможности повлиять на нее и что она руководит ими, а потому, когда явится их сестра, они должны сперва поговорить с ней.

С ее согласия, братья выдают свою сестру замуж за Тазрета, и он вскоре привозит ее к себе домой.

Последующие события мы бы выделили как завершающую часть развития действия, всецело связанную с загадочным поведением жены Тазрета. Подобные мотивы не только имеют место в восточных сказках, но широко распространены в них. Кратко остановимся на них.

Заметив поздно ночью странное поведение жены, делая вид, что спит, Тазрет следит за ней и видит, что она переодевается в мужскую одежду, берет с собой боевые доспехи, садится на коня и скачет в каком-то направлении.

Он садится на своего коня и незаметно следует за ней. Вскоре они подъезжают к месту, где собралось множество людей, а жена его проводит собрание: «Сегодня ночью мы должны сделать набег в такое-то место, разрушить крепость, столько человек должны остановить войско, столько-то человек разграбить крепость!» – командует она людьми.

В сказке отдается должное боевым качествам Тазрета, который сам удерживал огромное войско, пока другие отступали с добычей, за что его жена, не узнав супруга в темноте, распоряжается из добытого дать ему двойную долю.

Согласно мотивам сказки так повторяется три раза, но в третьем набеге Тазрет получает рану. Ничего не подозревая, его жена своим платком перевязывает ему рану. Закончив делить награбленное, озабоченная женщина спрашивает: «А где тот раненый?» – но его там уже не было.

Далее события переносятся в их дом, где и настает кульминация произведения: ни о чем не подозревая, в постели она замечает свой платок, которым перевязана рана мужа, и догадывается, что это он проявлял чудеса храбрости, героизм в борьбе с войсками, охранявшими замки.

Она промывает рану Тазрета, перевязывает ее чистыми бинтами, извиняется перед ним и получает разрешение рассказать все как было: «Это я организовала похищение твоей жены, это я встречалась с тобой в море. Это я разрубила твою жену (ударом меча) на две части. Эти трое – мои братья. Уверю, что без твоего ведома отныне я никуда не пойду!» – завершила она свой рассказ.

Мы бы отметили, что развязка носит традиционный для данного жанра характер. В ней явно прослеживаются магические элементы, направленные на эмоциональное воздействие на слушателей: «Если не умерли, они вдвоем по сей день живут, один храбрее другого».

В целом, в данном произведении доминируют героические мотивы, выражающиеся поступками Тазрета и его жены, которые могли успешно



противостоять целому войску. В нем значительный интерес представляет образ жены Тазрета: то она притворяется беспомощной старухой, затем завлекает его первую жену на корабль и передает ее богатому еврею, то в образе мужчины она в море встречает Тазрета и помогает освободить его жену из хорошо охраняемой крепости, победив огромное войско, то возглавляет большую группу грабителей, передевшись в мужскую одежду. У себя же дома она верховодит над братьями: очевидно, в этом прослеживаются следы матриархата.

Язык произведения простой, народный, образы и мотивы в нем скорее всего заимствованы из восточных сказок, а потому весьма сложно выделить в сказке ее национальные особенности, если не говорить о вступлении и заключении, как о композиционных элементах.

Употребление в тексте форм слов типа «*мынгар*» – «ему», «*ангар*» – тому, «*алар*» – «они», заканчивающихся на букву «*р*», что ныне в живом карачаево-балкарском языке утеряно, свидетельствуют о его древности.

Основные мотивы сказки «Къаракундет улу Къундет» – «Сын Каракундета Кундет» [18] типологически близки к рассмотренному нами произведению Тазрет. В обоих случаях женщины ведут грабительский образ жизни, совершая героические поступки в бою со своими противниками, в обоих текстах они имеют троих братьев и выходят замуж за отважных, прославленных рыцарей, с которыми сталкиваются в бою. В обоих сказаниях случайность играет весомую роль в главных сюжетно-повествовательных элементах.

Краткое содержание сказки таково: с группой отважных друзей Кундет отправляется в наездничество и вдали видит всадника на белом коне; группа склонна взять его в плен с целью продать в рабство, но Кундет уговаривает друзей не трогать его, ибо он, по всей видимости, не простой человек; не послушав его, они окружают всадника, и в поединке тот одолевает их, затем связывает за спину руки и гонит по степи; к нему подъезжает Кундет, прося освободить их, и просьба его выполняется; узнав, что он – Кундет, незнакомец напрашивается на месяц к нему в гости.

Согласно устоявшимся в сказочных мотивах традициям, Кундет отвечает, что на этот счет он должен посоветоваться с матерью, т.к. все будет зависеть от ее желания. Мать отвечает, что это гость нежелательный и следует с ним быть осторожнее, но честь выше человеческой жизни, а потому его следует принять в гости, раз он желает этого.

Пробыв у них месяц, незнакомец уговаривает Кундета совершить с ним поход-наездничество в степи, что они вскоре и делают. Здесь разворачиваются главные события: они отбивают табуны, но их преследует какой-то всадник, и сподвижник вызывается разобраться с ним, а Кундет гонит краденных лошадей. Убив преследователя, белый всадник отпивает его крови.

Так повторяется три раза, в последнем случае Кундету приходится помочь своему спутнику. Они пригоняют табун в село и пускают его пастись.

Развитие действия завершается тем, что сподвижник Кундета уговаривает его отдохнуть, а сам тихо покидает жилище. Кундет незаметно отправляется за ним, видит, что тот заходит в дом, где собрались люди, и рассказывает им, что с помощью Кундета вернул табун, убил трех братьев

и испил их крови. Когда же снимает шапку, белый всадник оказывается прекрасной девушкой.

Выслушав ее, собравшиеся спрашивают, нравится ли ей Кундет и готова ли она выйти за него замуж, на что девушка отвечает положительно. Она возвращается к Кундету, и он дает ей знать, что в курсе ее тайны и что также благоволит к ней.

Развязкой текста служит традиционный мотив свадьбы.

Содержательно-повествовательный фон произведения говорит о том, что основным мотивом в нем являются героизм и подвиги, совершаемые главным персонажем сказки. Здесь явно прослеживаются следы матриархата и древнейшего язычества, когда считалось, что глоток крови врага передавал победителю его силу и мужество.

Весьма краткая, но по содержанию ясная сказка «Жанакаит» [19] повествует о героизме сельского парня. Зачин в ней расплывчат и развит слабо, а потому произведение начинается с рассказа о том, что Жанакаит был одним из тех рыцарей, который постоянно искал возможность совершить подвиг.

Горец Жанакаит обращается к жителям равнины, прославленным братьям Жантемиру и Темиржану, с просьбой совершить вместе с ним набег на табун Буху, но те отказывают ему, поскольку еще никто живым не возвращался из похода туда.

Жанакаит отправляется один. По дороге он встречает самого Буху, который, заранее зная из гадания на лопатке, зачем тот прибыл, проклинает его, но просит отпустить живым его сына, поскольку именно ему суждено первым нагнать злоумышленника.

Жанакаит успешно отбивает табун прославленного Буху, чей сын догоняет его с намерением вернуть лошадей. Жанакаит одерживает верх, но, как и обещал старику, привязывает его сына к лошади и отпускает живым домой.

Оказавшись во дворе братьев Жантемира и Темиржана, половину лошадей он оставляет им в качестве калыма, увозит к себе в горы их сестру-красавицу и женится на ней.

В сказке выведен образ отважного героя, равного которому нет там, где ступала его нога. С ним не хочет тягаться и сам Букуна, который никого не отпускал в живых, если только совершали набег на его владения.

Сказки «Ахшы-уланны хапары» – «История Ахшы-улана» [17] и «Ногъай улу сокъур Ногъай-Неф» – «Сын Ногая слепой Ногай-Неф» [16] по своей содержательной сущности посвящаются теме морали, хотя доминирующими мотивами в них являются героические подвиги, состязания и испытания на силу и выносливость в сложных, сказочных обстоятельствах, присущих произведениям эпического жанра.

В первой сказке события происходят в Баксанском ущелье, а во второй – в Кабарде. В обоих произведениях молодой муж хвастается перед женой, что равных ему нет в смелости, меткости, отваге, наездничестве. В обоих текстах они стреляют и метко попадают в шапочки своих жен, и им помогает ведьма, которая подговаривает женщин, чтобы они сказали своим мужьям, если они такие смелые, пусть соревнуются в храбрости в первом случае со слепым стариком, а во втором – со слепым Ногай-Нефом.



В обоих случаях герои сказок, выходцы из Баксана и Кабарды, терпят поражение от своих соперников, хотя и стараются одолеть их, после чего оба становятся значительно скромнее в отношении своих жен и прекращают свое хвастовство.

В развитии действия в сказках присутствует ряд мотивов, типологически и по содержанию весьма близких к сюжетным элементам богатырского нартского эпоса. Это игры – испытания, кто сильнее, ловчее и находчивее.

Произведение «История Ахшы-улана» значительно богаче по повествовательным и сюжетно-композиционным особенностям по сравнению со сказкой «Сын Ногай слепой Ногай-Неф». Хотя сюжетная основа у них одна, ряд мотивов весьма близок друг другу, на наш взгляд, их никак нельзя назвать вариантами одного и того же произведения. Во всяком случае очевидно, что время внесло в их содержательно-повествовательные особенности значительные коррективы.

Острым остается до настоящего времени вопрос в фольклористике, является ли героическая сказка самостоятельным жанром в системе устной сказительской традиции. На наш взгляд, в будущем следует продолжить исследование данной проблемы.

V

Сказки о животных до настоящего времени остаются весьма слабоизученным разделом карачаево-балкарского фольклора. Кратко их касались в прошлом в своих исследованиях А.И. Караева [41, 17–21], А.З. Холаев [70, 25–28] и Ф.А. Урусбиева [69, 104–108], выделяя отдельные образы и персонажи. Но круг рассматриваемых проблем указанных авторов весьма ограничен, что объясняется, на наш взгляд, недостаточным владением ими эмпирическим материалом, неплохо представленным в архивных фондах КБИГИ и КЧИГИ.

Карачаево-балкарские сказки имеют архаическую, традиционную при сказку, тайный магический язык, что объясняется анимистическим миропредставлением и желанием предостеречь слушателя «от порчи». В частности, во вступлении ряда сказок о животных опорными словами являются «навоз», «собака», «змея», «лягушка» и «ворон», символизирующие тайную магическую силу, которая должна оберегать слушателей от злой, нечистой силы.

Наиболее устойчивой, популярной и архаической вступительной формулой для любого вида данной словесной прозы является следующая традиционная знаковая присказка, имеющее магическое значение оберега от враждебного воздействия на слушателей нечистых сил:

*Жомакъ, жомакъ жолунга,
Бокълу кюрек къолунга!
Итле чычсын тонунга,
Къаргъа къонсун башынга,
Жилян чыкъсын аллынга!
Шинжи курсин белинге,
Сарыуек кёрюнсюн кёзюнге!*



Сказку, сказку тебе в путь,
Навозную лопату тебе в руки!
Чтобы собаки испражнились на твою шубу,
Чтобы ворон сел на твою голову,
Чтобы змея появилась на твоём пути!
Чтобы колючка вонзилась в твою поясницу,
Чтобы дракон тебе померещился!

Опорные слова «путь», «навоз», «собака», «ворон», «змея», «колючка», «дракон», сопровождаясь соответствующими глагольными формулами, образуют разные словосочетания, усиливая в устах сказочника магическое воздействие слов на слушателей. Наиболее ярко это проявляется в сказках о животных, что следует считать неслучайной композиционной традицией.

Карачаево-балкарские сказки о животных по содержательной структуре типологически близки к мировым мотивам и тесно связаны с жизнью человека и природы, которая является их царством. «Наивная первобытная фантазия стерла границы, отделяющие мир людей от мира животных. Человек не делал различия между собой и животными. Анимистические воззрения первобытных людей и создали возможность появления животного эпоса», – рассуждает В.П. Аникин, обобщая труды европейских ученых о сказках как особом жанре, аккумулирующем в себе древние воззрения людей [4, 41].

Замечательными произведениями народного искусства слова и эстетического мышления этноса являются такие произведения сказочного эпоса, как «Козленок», «Старик и медведь», «Овца и коза», «Медвежонок», «Замечательный жеребенок», «Вошь и блоха», «Бычок», «Почему собаки дерутся за кость?», «Вол и собака» и т.д.

Изучение материала показало, что для названий карачаево-балкарских сказок и художественно-предметного мира весьма характерно присутствие эпитета «*къара*» – «черный», который является многозначным и зависит от контекста. На конкретном примере они звучат следующим образом: «*Къара къуш*» – «Черный орел», «*Къара къаргъа*» – «Черный ворон», «*Къара тюлкю*» – «Черная лиса», «*Къара жоргъа*» – «Черный иноходец», «*Къара ат*» – «Черная лошадь», «*Къара жилиян*» – «Черная змея», «*Къара сыра*» – «Черное пиво», «*Къара баур*» – «Черная печень», «*Къара кече*» – «Черная ночь», «*Къара от*» – «Черное пламя».

Повествования о животных, которые по своим архаическим особенностям весьма близки к текстам волшебных сказок, представляют также большой интерес для исследования. Излюбленными среди них являются такие произведения, как «*Къаргъа бла балалары*» – «Ворона и ее птенцы», «*Къозучукъ*» – «Ягненок», «*Тели Зондар бла амалчы тюлкю*» – «Наивный Зондар и изворотливая лиса», «*Къой бла эчки*» – «Овца и коза», «*Экинсинден да улакъ эсли*» – «Козленок умнее их двоих», «*Тюлкю хыйла*» – «Хитрость лисицы», «*Ал-бёрю бла Тут-бёрю*» – «Ал бёрю и Тут бёрю», «*Тюлкю, айыу, бёрю*» – «Лисица, медведь и волк», «*Ёгюз бла эшек*» – «Бык и осел» и т.д.

В подобных сказках животные олицетворяют жизнь и поведение людей: бык трудолюбив; змея, как и в мифологии многих народов мира,



наделается свойствами лекаря и чрезвычайно мудра; медведь символизирует мужскую силу; орел – надежный друг, смел и отважен; осел – символ труженика; лиса коварна и хитра; волк мужественен, смел и кровожаден.

Сказки о животных представляют наиболее сложный и противоречивый раздел в системе жанра данной народной словесности, поскольку в свой содержательный материал они вбирают множество сюжетно-повествовательных элементов из других видов сказочной прозы: волшебных, героических, бытовых, мифологических и т.д.

В связи с этим, в состав сказок о животных мы решили включить все произведения, которые имеют в своей сюжетной основе непосредственное отношение к данной теме.

Учеными высказан ряд интересных мыслей о сказке о животных. Так, венгерский фольклорист А. Ковач следующим образом определяет ее: «Сказка считается животной, если в ней животные, подобно людям, мыслят, говорят и поступают, не вызывая этим поведением у людских персонажей рассказа, у рассказчика или слушателей ощущения чуда» [34, 359].

Покуда сказка представляет один из древнейших жанров фольклора, как традиционно принято в системе ролей ее персонажей, каждое из животных наделяется человеческими качествами: носит имя или прозвище, владеет речью и легко вступает в диалог со своим оппонентом или врагом, наделяется устойчивым характером. Как и в человеческом мире, одни выделяются мудростью и мастерством, другие коварны, жестоки и кровожадны, третьи – глупы, трусливы и наивны.

Среди текстов о животных наиболее известными и распространенными являются произведения о змее, лисе, пернатых (орле, голубе, павлине, чибисе), медведе, дикой козе и олене, кошке и мышах, волке. Как уже отмечалось, змея наделяется качествами мудрости и способности лечить больных во всем живом мире; лиса необыкновенно хитра и лицемерна; пернатые в основном играют положительную роль в столкновении человека с жестокими врагами; медведь доброжелателен, но коварен, от него можно ожидать чего угодно; олени и дикие козы часто становятся жертвами хищных зверей (волка, тигра или льва).

«В карачаево-балкарском репертуаре много змеиных сюжетов. Змей в сказке присутствует во всех ипостасях ранней мифологической стадии», – вполне объективно рассуждает Ф.А. Урусбиева, анализируя особенности жанра карачаево-балкарской народной сказки [69, 32].

Рассмотрим, как в народном мировоззрении запечатлелся образ змеи, на примере поведения и деятельности этой рептилии в народной прозе.

Кратко остановимся на содержании и повествовательных особенностях сказок, в которых доминирует мотив взаимной любви между человеком и змеей. В какой-то мере в них прослеживаются сюжеты и мотивы мировых и родственных тюркских народов, с которыми соприкасались в духовной сфере сотни лет, местные кавказские и собственно карачаево-балкарские традиции.

Мотив мировых сказочных сюжетных элементов о брачной связи человека с рептилией ярко запечатлен в карачаево-балкарских народных сказках «Жиян минчакъ» – «Талисман змеи» и «Солтан-Герий».

Сказка «Жиян минчакъ» – «Талисман змеи» – одно из распространенных произведений в карачаево-балкарском народном прозаическом эпосе,

в котором главным образом повествуется о брачных отношениях человека со змеей с периода его младенчества, что имеет место и в международном сюжетном каталоге на данный мотив.

Помимо упомянутого «Талисмана змеи» нам известны два текста на данную тему. Первый, под названием «Жашчыкъ бла жилиян» – «Мальчик и змея», имеет интересную и весьма редко встречающуюся, своеобразную присказку, архаические корни которой не вызывают сомнения, и звучит она следующим образом:

*Жомакъ болсун жолунга,
Тишсиз къатын къойнунга...
Эмгек анга къадалсын,
Жанынг бла озмасын...
Жилиян минчакъ бойнунга,
Ол жарасын жанынга,
Хата жетсе санынга.
Акъ къочхар – союмгъа,
Къара теке – жолунга...*

В путь тебе сказку,
Беззубую старушку в объятия...
Эмгек* пусть к ней пристанет
И пусть обойдет тебя...
На шею твою – змеиный талисман,
Пусть он оберегает тебя,
Если беда настигнет тебя.
Белый баран – для жертвы,
Черный козел – (подарок) тебе на (удачную) дорогу.

В нем повествуется о невезучем мальчишке по имени Кочхар (в интерф. «Баран»), который, рано потеряв отца, пасет стада у местного бая Каплана (в интерф. «Тигр»). Когда исполнилось девять лет, ему удалось спасти от стаи волков черного быка, который принадлежал Каплану. В возрасте десяти лет, он спасает от коршуна девять змеенышей, выползших на свет из норы, когда их мать уползла доставать им пищу. В возрасте одиннадцати лет он спасает семь маленьких орлят от смерти, когда над ними кружит ястреб и хочет их унести. За эти благородные поступки мальчишку ответили добром бай Каплан, мать змей Беккахан и орлица Жютюкёз.

Когда Кочхару исполнилось двенадцать лет, однажды он увидел на дереве змею, которая обратилась к нему на человеческом языке. Их дружба приводит к любви и браку. Вскоре, после колдовства ее матери Беккахан, она превращается в красивую девушку и навсегда покидает логово, где она выросла.

С этого момента зарождается широкая дружба между потомками человека и змеи, которую удастся испортить лисе, натравив их друг на друга, т.к. подобные добрые отношения между ними могли быть не в ее пользу.

Среди сказаний о змее, в которых доминирует сюжетная ситуация брака младенца, человеческого дитя с рептилией, популярной является сказка

* Эмгек – видимо, злой дух, в качестве архаизма употребляется в значении «дерзкий, непослушный».

«Солтан-Герий», которая имеет ряд публикаций в фольклорных изданиях по карачаево-балкарской устной словесности.

В ней рассказывается о том, как в колыбель спящего младенца Солтан-Герия вползает змея, которая на его шее закрепляет «*жилян минчакъ*» – «змеиную бусину», а на рукояти меча, принадлежащего его покойному отцу, оставляет отметину и какие-то надписи.

Спустя много лет, когда Солтан-Герию исполнилось двадцать два года, на пути ему встречается змея, которая общается к нему на человеческом языке. Она ведет его к себе в крепость, где знакомит со своим отцом, огромным драконом, который, преградив речку, не пускал ее воды к людям, из-за чего они очень страдали от засухи. Увидев его, чудовище выражает свою радость и дает знать Солтан-Герию, что это он велел надеть на его шею в колыбели змеиную бусину и поставить метку на рукояти меча, т.к. он поклялся выдать свою дочь замуж за того, кто родится в один день с нею.

Завершается сказка, как традиционно принято в развязке данного жанра, смертью дракона, что удается совершить Солтан-Герию благодаря хитрости, сообразительности, смелости, после чего люди начали свободно пользоваться водой.

Таким образом, при всей схожести мотивов и сюжетных элементов, в рассматриваемых произведениях наблюдается внутренняя особенность содержательно-повествовательных моделей: не во всех текстах присутствует присказка; образы человека и рептилии подаются в разных психологических аспектах: в одних доминирует жестокость человека, а в других – мудрость змеи и т.д.

Своеобразны повествовательные особенности и произведений «Царица змей и черный орел», «Бедняк и змея».

Сказка «Царица змей и черный орел», записанная нами в 1979 г. в с. Яникой Чегемского района в исполнении носителя карачаево-балкарской устной словесности с богатым репертуаром Эттеева Мусы, – одно из интереснейших произведений народной прозы. В ней четко выделяются такие сюжетные компоненты, как присказка, зачин, кульминация и развязка. В качестве композиционного приема в исследуемых текстах впервые встречается подобная присказка, хотя типологически в ней много общего с приводимыми нами формулами:

*Аман иги жомакъ – жолунга,
Жарыкъ тамчы – башынга,
Терен сингсин чархынга,
Жарасын тёрт санынга.
Къочхар, Теке сакъласын,
Беккаханны Ойматха къоймасын.
Къара Къой алда барсын,
Акъ Къой да артха къалмасын.
Къара Ёгюз тынчаймасын.
Къаманы жютюсюн сынасын,
Аманны, игини айырсын.*

Прекраснейшая сказка – тебе в путь,
Добрые капли (пусть капают) – тебе на голову,

Пусть залечат твои органы,
Пусть глубоко просочатся в твое тело.
Пусть Кочхар, Теке* берегут тебя,
Пусть Беккахан не подпустят к Оймат**.
Пусть Кара Кой*** идет впереди,
Пусть не отстает и Ак Кой****.
Пусть Кара Ёгюз***** не успокоится.
Пусть испытает остроту кинжала,
Да сумеет отличить плохое от доброго.

Язык текста несколько своеобразен: в нем встречаются архаизмы, ныне почти вышедшие из употребления; несколько антропонимов, без сомнения, показывают присутствие в нем этнографических терминов, выражающих названные древнеогузские племенные объединения: Кочхар, Теке, Кара Кой, Ак Кой, Кара Ёгюз, в интерференции означающие «Баран», «Козел», «Черная Овца», «Белая Овца», «Черный Бык».

Внешность змеи характеризуется в текстах нередко цветовыми эпитетами «къара» – «черный», «талгъыр» – «бурый», «акъ» – «белый», на что в прошлом мы обращали внимание при исследовании карачаево-балкарской обрядовой поэзии: «В заговорах змеи активно применяемым эпитетом является художественно-поэтическая формула «акъ жилиян» – «белая змея», в контексте употребляемая в значении «красавица змея», что выразили бы термином В.М. Гацака «топосом оценочной передачи» [53, 257].

Ныне обозначающее бинарную оппозицию сочетание «аман иги» – «плохой хороший», которое встречается в начале данного текста, в архаической модели выражает значение «очень хороший, прекраснейший». Первая часть атрибутива является усиливающей значение основного компонента конструкции словосочетания – редупликация.

Вторая строка присказки «Добрые капли (пусть капают) – тебе на голову...», очевидно, выражает мифическое представление древности, согласно которому с неба могли капать злые и добрые капли.

Основной мотив произведения – конфликт между царицей змей и черным орлом из-за того, что пернатый хочет быть владыкой не только на небе и высоте, но и на земле. Этому может помешать и приостановить пернатого рептилия: она дает знать своему врагу, что в сила доползти до любой высоты и унести его орлят.

Хвастовство и самонадеянность черного орла приводят к его поражению. Победу одерживает царица змей, которая заставляет пернатого хищника не появляться в ее владениях.

Сказки «Змеи и девушка», «Бедняк и змея» главным образом носят бытовой характер: хотя они и несколько разнятся по содержанию, в обоих текстах благодаря мудрости и совету рептилии, с одной стороны, собственной жестокости и коварству – с другой, люди завладевают золотом и становятся зажиточными.

* *Кочхар, Теке* – очевидно, названия одних из огузских племен.

** *Оймат* – очевидно, мифологический топоним.

*** *Кара Кой* – огузское племя.

**** *Ак Кой* – то же самое.

***** *Кара Ёгюз* – очевидно, одно из огузских племен.

В первом произведении расплывчато вырисовывается в качестве художественно-композиционного приема зачин, повествующий о том, где, за кого и по какому случаю князь хочет выдать свою дочь замуж. В этом ему помогает своим советом ворон, который, пролетая над селом, восклицает: *«Ахшы тиширыу аман эркегырыну къоймаз! Аман эркегырыу иги тиширыуу тутмаз!»* – «Хорошая женщина не оставит плохого мужчину (мужа)! Плохой мужчина не уживется с хорошей женщиной!»

Здесь выступает в качестве смысловнесущего приема традиционная восточная народная философия, воспевающая в письменной и устной народной художественной словесности правителей-мудрецов, их ум, честь и дальновидность, что имеет место и в данном произведении.

Прислушавшись к словам ворона, монарх сознательно рискует судьбой дочери и выдает ее замуж за одного бедного, нищего человека, который попрошайничал в селе.

Однажды ей удается подслушать диалог двух змей, прячущихся глубоко в своих норах, и узнать, что они владеют большим количеством золота. Хитростью и жестокостью она убивает рептилий и завладевает их богатством.

Как традиционно принято в сказках, в развязке муж становится разумным, трудолюбивым и начинает вести правильный образ жизни.

Согласно сказочной сюжетно-повествовательной схеме, в произведении «Бедняк и змея», как и в предыдущем тексте, основными детерминантами составляющими являются образные системы царя, его загадочного сна, мудрость змеи, жадность бедняка и золото, в котором скрывается земное богатство. Диалог между персонажами, как и в рассмотренном нами выше тексте, в данном произведении выполняет смысловнесущую, художественно-композиционную, вспомогательную роль в раскрытии основного содержания текста.

В обоих произведениях рептилии выглядят значительно гуманнее и мудрее человека, что объясняется, очевидно, воззрением древности, когда могло иметь место почитание данного животного.

В карачаево-балкарских сказках лиса чаще сталкивается с человеком, нежели с животными. Образ ее во всех случаях закодирован: она должна обмануть, провести, безжалостно выйти победителем во всех случаях, благодаря коварству, вероломству и лжи, как установлено в мотивах о ней в устной мировой словесности. В этом вопросе на примере дагестанских сказок высказался весьма удачно и глубоко аргументированно академик РАН, выдающийся ученый Г.Г. Гамзатов: «Явственно обнаружено два подхода к разработке сказочных сюжетов с участием лисы: одно решение, когда рядом с лисой стоит человек, другое – когда в сказке действуют одни звери. В первом случае лиса выступает в роли помощника и друга человека, ее действия согласуются с законами человеческого поведения. Во втором же – волшебство отсутствует, и в силу вступают часто звериные законы: право сильных и коварных на жестокость и неблагодарность, измену и корысть» [33, 81].

Сказки о лисе или связанные с ней мотивы представляют популярные и излюбленные тексты фольклорной прозы, в которой богато представлена народная мудрость, художественное мышление, философия и фантазия не одного поколения наших предков, бережно относившихся и хорошо сохранивших в своей памяти предания старины.

В карачаево-балкарском фольклоре известен цикл текстов о лисе. Он представлен такими произведениями, как «Аман акъылы тюлкюню адам къалай алдады» – «Как хитрую лису обманул человек», «Тюлкю бла тирменчи» – «Лиса и мельник», «Тюлкю бла Жандар» – «Лиса и Жандар», «Тирменчи бла тюлкючюк» – «Мельник и лисичка», «Жарлы киши бла тюлкю» – «Бедняк и лиса», «Тюлкюню хыйласы» – «Хитрость лисы», «Чыгырчыкъ бла тюлкю» – «Чыгырчик и лиса», «Айыу бла тюлкю» – «Медведь и лиса», «Жилян бла тюлкю» – «Змея и лиса», «Жут, Бут, Къурт бла тюлкю» – «Жут, Бут, Курт и лиса», в которых вырисовывается отточенный веками образ рассматриваемого животного.

«В народных сказках герои обычно выступают носителями какого-то одного качества. Дополнительная характеристика возможна лишь в том случае, если она служит более полному раскрытию этого качества» – весьма профессионально, убедительно и аргументированно высказывает свою мысль Е.И. Токарева, рассматривая некоторые устоявшиеся мотивы русских народных сказок и, сравнивая их с литературными вариантами [63, 115].

Народная сказка «Тюлкю къуйругъу бла от салгъанлай» – «Как лиса своим хвостом огонь разожгла», записанная нами в 1978 г. в с. Яникой Чегемского района КБАССР в исполнении чудесного знатока карачаево-балкарского фольклора и духовной поэзии Трамова Ахмата, в какой-то мере дополняет мотивы на данную тему. Она состоит из трех основных повествовательных модулов, из которых вырастает ее образ, как полноценного персонажа данного жанра. В начале произведения лиса предстает как, якобы, наивное существо и входит в доверие к волку, медведю и старому льву.

Затем ей удается натравить зверей на великана – эмегена, прогнать его из крепости и завладеть его богатством.

Лиса завоевывает доверие зверей и удачно управляет ими, пока сама не становится жертвой собственного коварства и обмана. Однажды она зовет своих друзей в гости и обещает их хорошо угостить. Почувствовав в этом что-то неладное, медведь предлагает послать в разведку ворона, который извещает лису, что ее друзья во главе со львом собираются к ней в гости. Она тут же сжигает мост и устраивает пожар у себя в сакле и на сеновале, но не замечает, как сама становится жертвой собственных проделок: сильное пламя на сеновале достает ее пушистый хвост. Когда она побежала к реке, чтобы окунуться в нее, с другого берега реки смотрели звери и громко хохотали над ней. Она, беспомощная, с обнаженным, сгоревшим хвостом ныряла в речку и выходила из нее.

Таким образом, казалось бы неуязвимый персонаж народных сказок в конце произведения предстает смешным, одиноким и беспомощным существом.

Таковы основные элементы содержания данной сказки. Теперь кратко остановимся на ее композиции. Текст начинается с небольшой присказки, содержащей ряд магических формул, очевидно, берущих начало из глубокой языческой древности, но вполне удачно вписывающихся в содержание данного произведения, в котором представлены элементы волшебства, мудрости и богатой народной фантазии.



*Жомакъ болсун жолунга,
Агъаз сийсин жауунга,
Кюрек-бийче къолунга!
Къутурдан сен къутулгъун,
Алдардан кери болгъун,
Айыутосдан сакъланнгын.
Къуйрукълугъа сакъ къара!
Къара териси – къойнунга,
Къундуз башы – гумунга.*

В путь тебе сказку,
Твоему врагу – моча ласки,
Наряженную лопату – в твои руки!
От матерого (волка) освободись,
От вруньи будь подальше,
От лицемерной оберегайся.
На хвостатую осторожно зрирай!
Ее черную шкурку – тебе в объятия,
Голову выдры – в твое гуму*.

Данная вступительная часть, по своему содержанию тесно связанная с языческой обрядовой поэзией, вобрала в себя ряд труднообъяснимых архаических словосочетаний и терминов идиоматического характера, давно вышедших из активной лексики карачаево-балкарского языка. Остановимся на них кратко и постараемся дать научно-этнографическое и лексическое объяснение им на примере данного контекста.

Нет сомнения, что начальная строка текста, в которой сказочник традиционно желает слушателю произведение искусства своего репертуара, т.е. «сказку в путь», носит магический характер опотропей, т.е. оберега его от злых сил. Согласно поверью старины, послушав сказку, человек должен был до некоторого времени быть спокойным, защищенным от отрицательных потрясений.

Вторая строка текста связана с тем, что, согласно народному поверью, моча ласки весьма ядовита, чем она могла изредка пользоваться, чтобы принести бедствие обидевшему ее человеку, отравив его съестные припасы.

В следующей поэтической формуле под этнографическим термином «*Кюрек-бийче*» (в интерф.: «Княгиня-Лопата») скрывается понятие «ряженная лопата». Ее могли ритуально наряжать различными украшениями с целью уберечь нивы от сглаза. В контексте же содержания формулы сказочник желает слушателю владеть этим достоянием и быть хозяином богатых полей.

Особое внимание в присказке отводится лисе, приводится ряд эвфемизмов, выражающих табуированное терминологическое обозначение ее образа, дающих понять отношение к ней сказочника: *алдар* – «врунья», *айыутос* – «лицемерная», *къуйрукълу* – «хвостатая». Словосочетание «*къара тери*» – «черная шкурка (лисы)», как отмечено выше, таит в себе древнее поверье периода язычества, согласно которому, владелец шкурки лисы этой масти ничем не болел и становился богатым человеком.

* *Гуму* – специальное помещение, где в прошлом хранили мясо, сыр, муку и т.п.

Последняя строка присказки «*Къундуз башы – гумунга*» – «Голова выдры – в твое гуму», очевидно, выражает мысль, что этого зверька очень боялись грызуны и не портили продукты, хотя в основном она водилась в чистых горных речках и питалась рыбой.

Таким образом, анализ данного текста о лисе убеждает нас в том, что присказка как композиционный прием таит в себе ряд архаичных иносказательных формул, которые используются для раскрытия характеров сказочных персонажей, интереснейших художественно-эстетических образных систем метафорического характера, нередко носящих этнографический оттенок.

В качестве традиционной идиоматической формулы в живом карачаево-балкарском языке по сей день употребляется инвариантный порядок слов иносказательного характера «*Тюлкю къуйругъу бла от салгъанлай*» – «Как лиса своим хвостом огонь разожгла», который переносится на человека коварного, способного сравить людей друг с другом, а самому остаться в стороне.

Главный сюжетно-композиционный элемент произведения – кульминация – наступает в эпизоде, когда лиса, пытаясь обмануть своих друзей, выглядит беспомощной, и они насмеются над ней. Заканчивается оно традиционной словесной развязкой «Как мы не видели это, да не испытать нам болезней, да будем осторожны с плохим путником...» с незначительными привнесениями в нее сказочником строк, что подтверждает позднейшую трансформацию устной словесности и влияние на нее литературных норм.

В текстах о лисе основную сюжетно-повествовательную группу составляют произведения карачаево-балкарской сказочной прозы, посвященные хозяйственно-бытовой деятельности людей, что объясняется, очевидно, традиционным укладом их жизни. К ним относятся такие широко известные в народе произведения, как «*Тюлкю бла тирменчи*» – «Лиса и мельник», «*Тюлкю бла Жандар*» – «Лиса и Жандар», «*Тирменчи бла тюлкючюк*» – «Мельник и лисичка», «*Аман акъыллы тюлкюню адам къалай алдады*» – «Как хитрую лису обманул человек», «*Чыгырчыкъ бла тюлкю*» – «Чыгырчик и лиса» и «*Тюлкю хыйла*» – «Хитрость лисы».

Особо следует выделить среди них текст «Лиса и мельник», в котором удачно сочетаются бытовые, фантастические и философские мотивы. Язык его прост, красив, интересен, в нем народное мастерство художественного мышления достигает высокого повествовательно-эстетического уровня.

Сказка состоит из нескольких сюжетно-композиционных элементов, среди которых следует подчеркнуть следующие повествовательные части: жил на краю села молодой мельник, который откармливал несколько овец для женитьбы; узнав об этом, лиса начала посещать его по вечерам и уговаривать резать по одной овце каждый день, на что мельник высказывает свое недовольство; она убеждает мельника, что недалеко от этих мест живет богатый хан, у которого есть красавица-дочь, и она сделает все, чтобы женить его на дочери монарха, и начинает посещать дворец хана с целью убедить его, что нашла богатого, красивого жениха для его дочери; дальше разыгрывается сцена, когда сваты со стороны жениха берут путь в сторону ханского дворца, лиса поджигает мост, а хану докладывает, что, когда



они переходили через мост с подарками и живностью, кто-то поджег его, и они еле спаслись, а их будущий зять, едва живой, беспомощный, голый, находится под мостом; услышав об этом, хан направляет на помощь ему людей с богатой одеждой и охраной; засватав, лисе удается увезти ханскую дочь не в бедную хижину мельника, а в богатый дворец великанов-эмегенов, заранее обманув их, будто против них двигаются хорошо вооруженные люди, их извечные враги, которые могут их истребить; поверив ей, эмегены покидают крепость, оставив там свое богатство; вскоре лисе приходит на ум новая мысль: натравить эмегенов на мельника и прогнать его из обжитого им дворца; послушав лису, эмегены отправляют с ней вместе на переговоры с мельником одного разумного эмегена из своего племени; увидев их издали, мельник в чем-то нехорошем заподозрил лису и, обращаясь к своей жене, громко произнес: «Быстро вынеси топор и нож», – а обратившись к лисе, сказал: «Давай, веди его сюда. Давно мы не насыщались мясом эмегена, теперь насытимся!» – услышав это, подумав, что лиса снова обманула его и их племя, эмеген, высоко подняв за хвост, ударил о землю и убил ее; с этого дня мельник со своей женой жил спокойно, богато и весело, а великан-эмеген, явившись к своему племени, рассказал о проделках лисы и словах человека-эмегеноеда и о наказании им лисы за коварство и хитрость.

Сказка завершается интереснейшей народной художественно-философской мыслью, что, услышав о человеке-эмегеноеде, великаны «...*жолгъа чыкъдыла. Ма бюгюн-бюгече да, тохтамай, жолда бара турадыла. Эн-та да ала бир бёлек жылыны барлыкдыла. Ала ары жетмей турлукъ кибик, сиз да, биз да, шуёхларым, дуниядан кетмей турайыкъ*» – «...двинулись в путь. Днем и ночью, не останавливаясь, они и сегодня идут по дороге. Еще они будут идти несколько лет. Как они не смогут дойти туда (до конечного пункта – *Х.М.*), и вам, и нам, друзья, да не покинуть этот мир».

В этих, казалось бы, простых мыслях, где главной детерминантной образностью выделяется лексема «*жол*» – «путь-дорога», по которой, согласно сказочной временно-пространственной схеме двигаются великаны-эмегены, кроется традиционная загадка-отгадка сказочника, что сказка, как искусство слова, продолжает жить в народе, и что она никогда не угаснет в человеческой памяти.

Весьма своеобразна народная сказка «Жут, Бут, Курт и лиса», сразу же вводящая слушателей в зачинную систему композиции, где указывается место, время и образ жизни персонажей: «Под Черной горой, в Черной пещере жили три брата-волка, которые охотились только черной ночью. Черная шерсть на них блестела, словно шкура черной выдры на солнце. Звали их Жут, Бут, Курт. Перезимовав в пещере, голодные и холодные, ранней весной они решаются напасть на стадо овец местного бая Малькёпа».

Хотя сказка и невелика по объему, в ней ярко прослеживается последовательность образных и повествовательных систем: неожиданно на пути волков появляется черная лиса, которая ведет их за добычей по надежной тропе, после чего входит к ним в доверие; конфликт среди волков перерастает во вражду между ними, как давно мечтала об этом лиса, сумевшая внести разлад между ними, лицемерно заявляя каждому, что его ноги быстрее, пасть крепче, обоняние чувствительнее, он смелее и т.д.

Образ лисы в сказке явно отрицателен. Однажды ее изобличают в обмане и коварстве, за что она была наказана волками: три дня ее держали в пещере без пищи, после чего она стала значительно осторожнее и хитрее. Но со временем ей удается окончательно рассорить хищников, которые далеко уходят из этих мест, а самой обосноваться в их жилище.

В тексте наблюдаются мифологические и осовременившиеся мотивы, где, в одном случае звери обращаются к небу, к верховному божеству Тейри с просьбой ниспослать им яркую ночь для удачной охоты, а в другом – встретившись с другой стаей волков, легко спариваются с волчицами и по совету черной лисы уходят глубоко в лес, обещая отомстить людям за зло, творимое ими в отношении их племени.

Язык текста прост, народен. В нем содержатся разного типа архаизмы, где прежде всего следует отметить латентного характера мифологические антропонимы «Жут», «Бут», «Курт», выполняющие роль эвфемизмов, а на языке табу выражающие понятие «волк». Данные знаковые словесные формулы-антропонимы встречаются при обозначении волка как тотема в древнетюркской мифологической культуре, откуда они, очевидно, перешли в карачаево-балкарский охотничий и сказочный фольклор.

Эпитет «*къара*» – «черный», употребляясь с различными опорными словами, создает в контексте совокупность реальных художественных координат, выражающихся определительными формулами «*къара тау*» – «черная гора», «*къара дорбун*» – «черная пещера», «*къара кече*» – «черная ночь», «*къара тери*» – «черная шкура», «*къара къундуз*» – «черная выдра», «*къара бёрю*» – «черный волк», «*къара тюлкю*» – «черная лиса», «*къара тюрк*» – «черная трава».

Краткий анализ мотивов сказок о змее и лисе показал, что в древнем представлении язычников образы этих животных могли быть тесно связаны с судьбой и жизнью людей. В повествованиях о них наблюдается три этапа: мифологический, когда человек был близок к животному миру, культ тотема и поклонение ему и последний, когда еще до появления мировых религий в мировоззрении людей начинается возвышение себя над животным и окружающим миром.

В карачаево-балкарском фольклоре существует также ряд сказок об овце и козе. Они в основном связаны с хозяйственно-бытовой деятельностью сельской общины. Это такие произведения сказочной прозы, как «Овца и коза», «Козленок и осленок», «Как коза обманула овцу», «Козленок» и т.д., в которых дается народное представление их образов, где овце традиционно отводится роль честного и послушного персонажа в животном мире, а коза, заботливая мать, не лишена лицемерия, лжи и коварства.

Кратко рассуждая, таковы мотивы о животных в карачаево-балкарской сказочной прозе.

VI

В фольклористике нет определенного, устойчивого мнения об особенностях жанра бытовой сказки, а потому мы придерживаемся мнения В.П. Аникина о том, что «Бытовизм действительно отличает эти сказки от волшебных. А их отличие от сказок о животных выражается в том, что в



бытовых сказках по-другому изображаются обыденные явления. Рассказчики бытовых сказок не прибегают к иносказаниям, свойственным другим видам сказок. Есть и другое, более точное название бытовых сказок – новеллистическая сказка» [4, 167].

Отдавая должное суждениям выдающегося фольклориста, мы бы хотели высказать мнение, что определять бытовую сказку термином «новеллистическая» несколько сомнительно по ряду причин, в том числе и по ее жанровой модификации. Данный термин, широко употребляемый в западно-европейской фольклористике, переключался в труды исследователей русской народной сказки, а оттуда заимствован учеными-кавказоведами [41, 17; 3, 420; 69, 113–120; 66, 7].

Следует отметить, что новелла – жанр итальянской литературы XIV–XV вв. периода ренессанса и барокко, а в литературоведении существует мнение, что «... новелла типично острое, напряженное действие, драматизм сюжета, ибо личность сталкивается в ней с законами и нормами старого мира... Художественное своеобразие новеллы коренится в противоречивом сочетании картины прозаического, повседневного бытия и острых, необыкновенных, иногда даже фантастических событий и ситуаций, как бы изрывающих изнутри привычное, упорядоченное движение жизни» [61, 240].

Весьма интересные мысли высказывает относительно своего видения данной проблемы Ф.А. Алиева: «...в современной фольклористике нет специальной работы, в которой бы обоснованно освещался вопрос, можно ли считать новеллу самостоятельным жанром. Какова генетическая связь между сказочными жанрами, анекдотами и новеллой, какие признаки могут быть использованы при классификации конкретного материала по этим жанрам» [3, 420]. К сожалению, эти вопросы остаются в фольклористике нерешенными до настоящего времени, а потому, проведя по типам сюжетов внутрижанровую классификацию карачаево-балкарской бытовой сказки, мы не смогли найти устойчивые традиционные каноны, чтобы выделить их в качестве жанра новеллы.

Определяя доминантную функцию бытовых сказок, Э.В. Померанцева пишет: «Местом действия их чаще всего является русская, при этом крепостная, деревня. Герой их – деревенский бедняк, батрак или солдат, которому удастся перехитрить глупого и жестокого барина, вздорную и капризную барыню, оставить в дураках жадного, сластолюбивого попа. Среди этих сказок много анекдотов о лентяях, упрямых и болтливых женах, глупцах, попадающих впросак» [55, 41]. И далее она выделяет новеллистическую сказку наряду с волшебными, о животных и бытовыми в отдельный вид данного жанра [55, 42], что, конечно, весьма спорно с научной точки зрения.

На наш взгляд, искусственно вводить синоним жанру «бытовая сказка» и пользоваться термином «новеллистическая сказка», представляется странным, тем более, если учесть, что русские сказочники в своем репертуаре не пользовались им.

Конечно же, острые, приключенческие сюжетные элементы и мотивы значительно больше доминируют в бытовых сказках, чем в волшебных или о животных, не говоря о мифологических, богатырских и т.д. В данном случае, было бы целесообразнее выделить их как бытовые сказки

новеллистического характера, поскольку они в основном посвящаются жизни сельской общины с ее причудами и юмором, где люди стараются обхитрить друг друга, нередко вступая в конфликтные отношения ради достижения поставленной цели.

В карачаево-балкарской фольклористике кратко коснулись данной проблемы в прошлом А.И. Караева [41, 18–20] и А.З. Холаев [70, 28]. Более подробно она освещена в работе Ф.А. Урусбиевой, где ей выделяется отдельная глава монографического исследования «Карачаево-балкарская бытовая сказка» [69, 83–120].

Суждения А.И. Караевой интересны и вполне обоснованны. Она впервые пускает в научный оборот восточные мотивы о Насреддине, Кёсе и т.д., останавливается на национальном своеобразии карачаево-балкарской бытовой сказки, в которой повествуется о многообразии жизни в сельской общине, коварстве эфенди, жадности баев, хитрости любимого сказочного персонажа Алдара, о ленивом мальчике Кюльтыпысе и т.д.

А.З. Холаев почти то же самое пишет в своей статье, незначительно дополняя Караева А.И. балкарскими материалами из устной народной словесности.

Несколько сложно дать научную оценку работе Ф.А. Урусбиевой. Указанная глава монографического исследования состоит из шести параграфов, которые спорны как в терминологическом звучании, так и в исследовательском плане. Особые претензии вызывает то, что ученым не дается конкретный анализ какого-либо произведения из богатого жанра карачаево-балкарской бытовой сказки, а употребляемые ею термины «апологи, басни», «пастушеская сказка», «женская сказка» не воспринимаются с научной точки зрения, т.к. в природе сказок таких видов не было, не говоря о жанре. Возможно автору следовало использовать термины «мотивы», «сюжетные элементы» и т.д.

Анализ около сотни сказок с бытовым уклоном содержания показал, что они нуждаются в тематической классификации. Это дало бы ясное представление о наличии в них определенных мотивов, создающих сюжетное ядро в рамках определенных видов произведений рассматриваемых текстов.

Вследствие проживания высоко в горах основной трудовой деятельностью народа долгое время оставалось скотоводство и связанный с ним разносторонний образ жизни: обработка шерсти и шкур домашних и диких животных, из которых затем изготавливали ковры, шубы, бурки, башлыки, чабуры, шили разную женскую и мужскую одежду. Существенную тягловую силу составляли быки, лошади и ослы, которых сельская община широко использовала в своей хозяйственной деятельности: на них пахали землю, доставляли дрова и сено, возили при строительстве домов на бричках камни, песок, глину, воду и т.д. Все это не могло не повлиять на содержание народных сказок, в мотивах которых существенное внимание уделяется сельской бытовой жизни.

Множество сказок повествует о семье и семейных отношениях, очевидно, берущих начало из периода существования архаической, большой семьи, где значительное внимание отводится гендерному аспекту, любви и коварству в рамках семейной и сельской общины.



Нам представляются привнесенными из иноэтнических культур произведения, в которых повествуется о жизни, полной интриг в дворцах восточных султанов, ханов, шахов и т.д.

Системно-аналитическое исследование по внутржанровой классификации имеющегося у нас материала, взятого в основном из архивного фонда КБИГИ, двухтомника «Карачаево-балкарские сказки, легенды, предания» [43; 44], различных изданий и личных записей автора, вывело следующую разновидность сюжетно-повествовательных схем, которую никак нельзя считать полной по охвату материала, т.к. мы еще не владеем достоверным количеством текстов по данной проблеме: произведения, посвященные теме супружеской измены, любви и трагедии, где жертвой из-за зависти становится девушка или невестка, которая сталкивается с мачехой, свекровью, царицей, ведьмой или же другой девушкой, желавшей стать женой ее мужа; сказки о падишахах, султанах, князьях и баях; мотивы сказок, посвященных пастушескому образу жизни, где молодому батраку или холопу, сталкивающемуся с баем, ханом или правителем страны, благодаря мудрости, смелости, личным качествам и взаимной любви удается жениться на дочери султана, хана или шаха; мотив о ведьмах – обур, которые могут играть как отрицательную, так и положительную роль в сельской жизни, где элементы волшебства значительно нивелируют над бытовыми мотивами (сюда мы относим и произведения о шайтанах, нечистой силе, старающейся обмануть людей, Агач киши – Лешем); повествования об исторических личностях и, в которых воспеваются их мудрость, умение предвидеть будущее; сказки, в которых преобладают сатирические мотивы; группа произведений на тему морали, осуждающих зло, насилие, коварство, обман, зависть, жестокость, тексты о духовенстве (о муллах, эфенди), где либо высмеивается их аморальное поведение, либо изображается их скрытность и жестокость в поступках; сказка на мотив о сбрасывании стариков в пропасть; тексты, посвященные воспеванию предметного мира.

Изученные нами произведения требуют ясного, взвешенного, научно-аргументированного терминологического обозначения, которое соответствовало бы национальной особенности и содержательной структуре рассматриваемых текстов в рамках жанра бытовой сказки, что привело нас к следующей сюжетно-повествовательной схеме:

- 1) семейно-бытовые сказки (о женщинах, измене, коварстве и любви);
- 2) сказки о падишахах, султанах, князьях и баях;
- 3) сказки о мудрости, сообразительности и находчивости пастуха;
- 4) сказки о ведьмах – обурах, шайтанах, леших – Агач киши и т.д.;
- 5) легендарные сказки об исторических личностях;
- 6) юмористические сказки (куда входят и произведения о муллах, эфенди);
- 7) сказки на тему морали в быту, семье и общине;
- 8) сказки о предметном мире и о происхождении домашней пищи.

Семейно-бытовые сказки о женщинах, коварстве, любви, измене и неудачливых мужчинах в карачаево-балкарском фольклоре представлены следующими произведениями: «Оразай», «Салима», «Бир жашны тели анасы» – «Ненормальная мать одного парня», «Мурат бла Абидат» – «Мурат и Абидат», «Зан улу Адилгерий», «Хариб бла Санам» – «Хариб и Санам»,



«Акъяллы кыыз бла тели жаш» – «Умная девушка и неразумный парень», «Акъяллы келин бла жашчыкыла» – «Умная невестка и мальчики», «Къарт киши бла къатын» – «Старик и старуха», «Уручуну сюйген кызы» – «Любимая девушка вора», «Къарауаш кызычык» – «Девочка-прислуга», «Харам ата» – «Недобрый отец».

Сказки о падишахах, султанах, князьях и баях включают такие произведения, как «Жаш бла патчах» – «Парень и царь», «Сокъур хан» – «Слепой хан», «Оюмсуз патчах» – «Неразумный царь», «Халал сомла» – «Праведные деньги», «Акъяллы кыыз бла юч соруу» – «Мудрая девушка и три вопроса», «Ханны жашы бла жарлыны кызы» – «Сын хана и дочь бедняка», «Къарабий хан бла аны кызы» – «Хан Карабий и его дочь», «Табылгъан Саубар» – «Найденыш Саубар», «Залим ханны жашы» – «Сын хана Залима».

Мудрость, сообразительность и находчивость пастуха в народном сознании освещается в сказках «Жалчы бла бай» – «Слуга и богач», «Чомарт къойчу» – «Щедрый пастух», «Патчах бла бир байны жалчысы» – «Царь и холоп одного бая».

Сказками о ведьмах – обурах, леших – Агъач киши, шайтанах, нечистой силе являются произведения «Мараучу бла Агъач киши» – «Охотник и Лесной человек», «Бузоучу бла шайтан» – «Пастух телят и шайтан», «Хомух бла Агъач киши» – «Лентяй и леший».

Легендарные сказки об исторических личностях и мудрецах представлены такими текстами, как «Орадада бла Жабагъы» – «Орадада и Жабаги», «Жабагъы эчки бла эки улакъны юсюнден даулашны сюзеди» – «Жабаги разбирает спор о козе и двух козлятах».

Юмористические сказки с элементами сатиры в основном строятся на восточных сюжетах, которые посвящаются хитрости, коварству, лжи в общении с людьми таких персонажей, как Насра Хожа (Насреддин), Кёсе (Безбородый). Присутствуют повествования на мотив широко распространенного в тюркском мире сказания о встрече отважного дровосека с хозяином леса (Агъач киши), который, поняв недобрые намерения лешего, с помощью сообразительности и хитрости наказывает его, поставив в смешное положение (в татарском варианте человек говорит, что его зовут В-Году-Минувшем, а в карачаево-балкарском – Сам-Наказал-Себя). Отдельные группы юмористических произведений составляют и сказки о ленивом мальчике Кюльтыпысе, а также о служителях культа эфенди, муллах. Имеется ряд текстов и семейно-бытового характера.

Ленивый мальчик Кюльтыпыс был любимым персонажем малышей, который много ел, засыпал где придется. Пошлют его за водой – он спит у реки, в лес за дровами – засыпает под деревьями, принести траву для козы – его находят спящим на лугу. Он может притвориться больным, если узнает, что его ждет какая-либо работа. Его излюбленное место – домашний очаг, где он больше всего любит засыпать, отсюда и имя его – Кюльтыпыс, что значит «Лежащий на Золе».

Карачаево-балкарские сатирические сказки базируются на сюжетах о Насреддине и аморальном поведении религиозных служителей, всегда оказывающихся в трагикомичной ситуации.

Народные сказания о Насреддине помещены в сборнике Азрета Урренова «Насра Ходжаны хапарлары» – «Рассказы Насреддина» [68].



В группу юмористических и сатирических сказок можно отнести и произведения, извлеченные из архивных фондов КБИГИ и различных публикаций: «Сангырау элде» – «В селении глухих», «Аллай төре да болады» – «Бывает и такое случается», «Кёсе бла жашчыкъ» – «Кёсе и мальчик», «Эфенди бла жаш къатынчыкъ» – «Эфенди и молодая женщина», «Эфендини алдау» – «Обман эфенди», «Барысы да акъсакъла» – «Все хромые».

Тема морали в быту, семье и общине освещается в таких произведениях, как «Ахшылыкъ унутулмайды» – «Добро не забывается», «Махмут бла Алакёз» – «Махмут и Алакёз», «Акъылгъа тышюннген» – «Уразумевший», «Болжалчы келин» – «Сноха, которая все дела оставляла на потом», «Алтынларын тас этген къызгъанч» – «Скупой, потерявший золото», «Улутха» – «Взятка», «Уручуну жашы» – «Сын вора», «Залим», «Жарлыны айтханы чапыракъдан ётмез» – «Слово бедняка не имеет веса», «Тузлу хичинле» – «Соленые хычины», «Бир абыннган минг сюрюнюр» – «Однажды споткнувшийся тысячу раз пошатнется», «Атасыны жашына осуяты» – «Завещание отца сыну», «Тауукъ – айта билгеннге зауукъ» – «Курица – тому, кто умеет говорить, наслаждение», «Къартланы бурун къаядан къалай атхандыла» – «Как раньше стариков со скалы сбрасывали», «Жашы къарт атасын ёлюмден къалай къутхаргъанды» – «Как сын спас своего старого отца от смерти», о которых в своей статье высказал интересные суждения д.ф.н., фольклорист Б.А. Берберов [22].

Сюда бы мы отнесли и сказку «Обур эфенди» – «Эфенди-колдун», поразительно сходную по содержательно-повествовательным элементам с адыгейским текстом «Колдун мулла», эстетическому мастерству которой поражаюсь Максим Горький, и повествование «Билгич эфенди» – «Ясновидящий эфенди».

Сказки, описывающие предметный мир и происхождении домашней пищи, вобравшие в себя мотивы ряда жанров фольклорной прозы, представлены в следующих текстах: «Гокка ханс» – «Цветок», «Гыпы» – «Молочный грибок», «Айран», «Кийиз» – «Ковер», «Къазан» – «Котел», «Акъ ат» – «Белый конь», «Нарат» – «Сосна», «Тарпан атла» – «Лошади-тарпаны».

Таким образом, изучение карачаево-балкарских бытовых сказок и их классификация дали ясную картину об их сюжетно-повествовательных особенностях. Тем не менее, не следует считать наши суждения окончательными, поскольку вопрос о внутржанровой модификации народных сказок до настоящего времени в фольклористике остается до некоторой степени спорным, а порой и противоречивым.

ЛИТЕРАТУРА

1. Алиева А.И. История записи и публикации фольклора балкарцев и карачаевцев в XIX – начале XX века // Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях. Нальчик: Эльбрус, 1983. С. 5–32.

2. Алиева А.И. Поэтика и стиль волшебных сказок адыгских народов. М.: Наука, 1986. 280 с.

3. Алиева Ф.А. Бытовые сказки // Традиционный фольклор народов Дагестана. М.: Наука, 1991. С. 385–432.

4. *Аникин В.П.* Русская народная сказка. М.: Просвещение, 1977. 208 с.
5. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 6, п. 7.3 (15).
6. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 2.
7. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 4.
8. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 5.
9. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 10.
10. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 11.
11. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 19, п. 13.
12. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 20, п. 1.
13. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 20, п. 2.
14. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 20, п. 3.
15. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 20, п. 7.
16. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 23, п. 10.
17. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 23, п. 12.
18. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 23, п. 14.
19. Архив КБИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. П. 23, п. 23.
20. *Астафьева-Скалбергс Л.А.* Символический персонаж (предмет) и формы его изображения в народной песне // Вопросы жанров русского фольклора. М.: МГУ, 1972. С. 18–34.
21. Балкарские и карачаевские сказки / сост. А. Алиева и А. Холаев. М.: Дет. лит., 1971. 191 с.
22. *Берберов Б.А.* Почему стариков не стали изгонять (сравнительно-типологический анализ одного архетипического мотива) // Актуальные вопросы карачаево-балкарской филологии. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2015. С. 215–218.
23. *Берберов Б.А.* Архетипический образ медведя в карачаево-балкарской бытовой сказке // Типология и поэтика традиционного фольклора народов Северного Кавказа. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2016. С. 28–36.
24. *Берберов Б.А.* Культ разума в карачаево-балкарской бытовой сказке // Вестник Калмыцкого института гуманитарных исследований РАН. 2016. № 1. С. 250–256.
25. *Берберов Б.А.* Специфика художественного конфликта в карачаево-балкарской бытовой сказке // Вестник КБИГИ. 2016. № 1 (28). С. 84–87.
26. *Берберов Б.А.* Ценностная картина мира в карачаево-балкарской бытовой сказке // Вестник КБИГИ. 2016. № 4 (31). С. 95–98.



27. *Берберова Л.Б.* Альтруистический лейтмотив в карачаево-балкарской сказке // Устойчивое развитие: Проблемы. Концепции. Модели. Материалы Международного симпозиума. Т. III. Нальчик, 2013. С. 159–161.

28. *Берберова Л.Б.* Карачаево-балкарские и американские сказки как средство экологического воспитания учащихся // В мире научных открытий. Красноярск, 2015. № 1.1 (61). С. 470–480.

29. *Берберова Л.Б.* Принципы разумного альтруизма в карачаево-балкарской сказке // Актуальные проблемы общей и адыгской филологии. Материалы VIII Международной научной конференции. Майкоп, 2013. С. 102–103.

30. *Берберова Л.Б.* Сказка: этнопедагогический аспект // Типология взаимосвязи и национальная специфика фольклора народов Дагестана и Северного Кавказа. Материалы Международной научной конференции. Махачкала, 2010. С. 34–37.

31. *Берберова Л.Б.* Уроки альтруизма в фольклорной педагогике // Фольклор монгольских народов: историческая действительность. Материалы международного конгресса. Элиста, 2013. С. 406–412.

32. *Бухуров М.Ф.* Адыгская богатырская сказка. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2015. 160 с.

33. *Гамзатов Г.Г.* Фольклор: мера историзма. Махачкала: Наука ДНЦ, 2010. 368 с.

34. *Ганиева А.М.* Волшебные сказки // Традиционный фольклор народов Дагестана. М.: Наука, 1991. С. 369–385.

35. *Гергокова Л.С.* Карачаево-балкарская сказка: внутрижанровые особенности сказок о животных // Известия КБНЦ РАН. 2015. № 1. С. 252–256.

36. *Гулиева (Занукоева) Ф.Х.* К проблеме внутрижанровой классификации карачаево-балкарских народных сказок // Актуальные вопросы карачаево-балкарской филологии. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2015. С. 226–230.

37. *Гулиева (Занукоева) Ф.Х.* Карачаево-балкарская волшебная сказка. К вопросу определения жанровых границ // Вестник КБИГИ. 2016. № 1 (28). С. 95–98.

38. *Гулиева (Занукоева) Ф.Х.* Карачаево-балкарская народная сказка // Типология и поэтика традиционного фольклора народов Северного Кавказа. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2016. С. 58–65.

39. *Гулиева (Занукоева) Ф.Х.* Карачаево-балкарское сказковедение: современное состояние и перспективы // Вестник КБИГИ. 2016. № 4 (31). С. 118–121.

40. *Гутов А.М.* Поэтика и типология адыгского нартского эпоса. М.: Наука, 1993. 207 с.

41. *Караева А.И.* Очерк истории карачаевской литературы. М.: Наука, 1966. 320 с.

42. *Кербелите Б.П.* Сюжетный тип волшебной сказки // Фольклор. Образ и поэтическое слово в контексте. М.: Наука, 1984. С. 203–250.

43. Къарачай-малкъар жомакъла, таурухла, айтыула (Карачаево-балкарские сказки, легенды, предания): в 2-х томах. Т. 1 / сост., предисл. Т.М. Хаджиевой. Нальчик: Эльбрус, 1999. 472 с.

44. Къарачай-малкъар жомакъла, таурухла, айтыула (Карачаево-балкарские сказки, легенды, предания): в 2-х томах. Т. 2 / сост., предисл. Т.М. Хаджиевой. Нальчик: Эль-Фа, 2003. 472 с.



45. Къарачай-малкъар фольклор (Карачаево-балкарский фольклор): Хрестоматия / сост. Т.М. Хаджиева. Нальчик: Эль-Фа, 1996. 529 с.
46. Личный архив Х.Х. Малкондуева.
47. *Лопатинский Л.Г.* Предисловие // Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях. Нальчик: Эльбрус, 1983. С. 132–140.
48. *Малкондуев Х.Х.* Волшебная сказка «Сын Ындырбая Махамет» и ее варианты // Актуальные вопросы карачаево-балкарской филологии. Нальчик: Изд. отдел КБИГИ, 2015. С. 206–211.
49. *Малкондуев Х.Х.* Карачаево-балкарская народная сказка. Мотивы о Змее и Лисе. Композиция // Вестник КБИГИ. 2014. № 4 (23). С. 99–116.
50. *Малкондуев Х.Х.* Карачаево-балкарские народные сказки и легенды в записи Е.З. Баранова. Особенности жанра и повествовательных элементов // Известия КБНЦ РАН. 2015. № 2 (64). С. 223–228.
51. *Малкондуев Х.Х.* Карачаево-балкарское сказковедение в XX – начале XXI века // Известия КБНЦ РАН. 2015. № 5 (67). С. 199–206.
52. *Малкондуев Х.Х.* О композиции карачаево-балкарской волшебной сказки «Жарыкбий» // Известия КБНЦ РАН. 2015. № 6 (68). С. 185–191.
53. *Малкондуев Х.Х.* Обрядово-мифологическая поэзия балкарцев и карачаевцев (Жанровые и художественно-поэтические традиции). Нальчик: Эль-Фа, 1996. 272 с.
54. *Малкондуев Х.Х.* Фольклор и фольклористика // Очерки истории балкарской литературы. Нальчик: Эль-Фа, 2010. С. 8–35.
55. *Померанцева Э.В.* О русском фольклоре. М.: Наука, 1977. 120 с.
56. *Преле В.* Балкарские тексты // Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях. Нальчик: Эльбрус, 1983. С. 330–419.
57. *Преле В.* Карачаевские тексты // Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях. Нальчик: Эльбрус, 1983. С. 288–329.
58. *Пропп В.Я.* Фольклор и действительность. М.: Наука, 1976. 327 с.
59. *Рахно М.Ю.* Войско мертвых: нартовский мотив в романе Джона Р.Р. Толкина «Властелин колец» // Нартоведение в XXI веке: современные парадигмы и интерпретации. Сборник научных трудов. Вып. 11. Владикавказ, 2013. С. 225–235.
60. Русское народное поэтическое творчество. Пособие для вузов / под ред. П.Г. Богатырева. М.: Учпедгиз, 1954. 526 с.
61. Словарь литературоведческих терминов / сост. Л.И. Тимофеев и С.В. Тураев. М.: Просвещение, 1974. 590 с.
62. *Соколов Ю.М.* Русский фольклор. М.: Учпедгиз, 1941. 560 с.
63. *Токарева Е.И.* Народные варианты «Сказка о рыбаке и рыбке» А.С. Пушкина // Вопросы жанров русского фольклора. М.: МГУ, 1972. С. 111–130.
64. *Тульчинский Н.П.* Поэмы, легенды, песни, сказки и пословицы горских татар Нальчикского округа Терской области // Карачаево-балкарский фольклор в дореволюционных записях и публикациях. Нальчик: Эльбрус, 1983. С. 219–287.



65. *Тульчинский Н.П.* Поэмы, легенды, песни, сказки и пословицы горских татар Нальчикского округа Терской области // Терский сборник. Владикавказ, 1903. Вып. VI. С. 249–334.

66. *Тхамокова Ж.Г.* Адыгская бытовая сказка (Сюжетный состав в сравнительном освещении). Нальчик: КБИГИ, 2014. 222 с.

67. *Тхамокова Ж.Г.* Сравнительный указатель сюжетов адыгских (кабардинских, черкесских, адыгейских) бытовых сказок по системе Аарне – Томпсона // Адыгэ таурыхьхэр (Адыгские сказки) / сост. Тхамокова Ж.Г. Т. I. Нальчик: Эль-Фа, 2005. С. 775–820.

68. *Уртенев А.Л.* Насра Ходжаны хапарлары (Рассказы Насреддина). Черкесск: Карач.-Черкес. отд. Ставроп. кн. изд-ва, 1987. 232 с.

69. *Урусбиева Ф.А.* Карачаево-балкарская сказка. Вопросы жанровой типологии. Владикавказ: ИПО СОИГИ, 2010. 128 с.

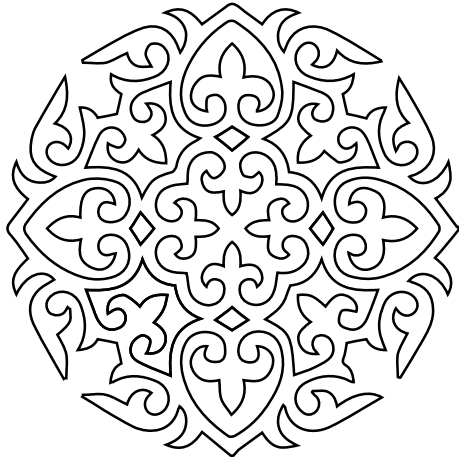
70. *Холаев А.З.* Народное устно-поэтическое творчество // Очерки истории балкарской литературы. Нальчик: Эльбрус, 1981. С. 13–31

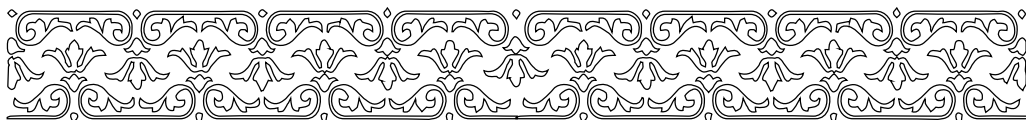


I. МИФ ЖОМАКЪЛА

I. МИФОЛОГИЧЕСКИЕ СКАЗКИ







УУЧУ ЭР КИШИЛЕ БЛА САБАНЧЫ ТИШИРЫУЛА

Къалыубалада, Уллу Тейри адамланы джаратханда, аланы экиге юлешгенди – тишилеге бла эркекlege. Ол заманда джер юсюнде джаланда бир уллу суу барыб болгъанды. Аны эки джаны да эки тюрюлю джер болгъанды: бир джагъасы – таула, бир джагъасы уа – ёзенле. Уллу Тейри тиширыулары ёзенде джашаргъа, эр кишилени уа таулада джашаргъа, суудан ётюб, бир бирге тюбемезге буюргъанды. Эр кишиле таулада уучулукъ бла джашагъандыла, тиширыула уа – джерчилик бла. Ала, джерде сабан этиб, ашлыкъ ёсдюрюрге юйренгендиле.

Бир кюн тиширыула суу бойнуна тамыр къазаргъа бара тургъанлай, джемджегун чыбчыкъчыкъ ауузу бла, чурасы бла не эсе да бир бюртюкчюкле алыб келиб, джерге басдыра тургъанлай кёргендиле. «Не болур?» – деб, сейир этиб, ол джерчикни малтамай, иги къараб сакълагъандыла. Кёб турмай, алайчыкъда бир ариу кырдык чыкъгъанды. Дагъыда бир айдан а ол кырдык, ёсюб, къылкъыла ийгенди. Дагъыда айны бир кере толурун сакълагъанларында уа, къылкъыла сютден толуб, энишге бюгюлгендиле. Сора ол джемджегун чыбчыкъчыкъ келиб, чурасы бла уруб, къылкъыны силкгенди, андан джерге бир ариу бюртюкчюкле акъгъандыла. Тиширыула, чабышыб, чыбчыкъны «битимин» сыйыргъандыла. Кеслери, андан кёргенлерин этиб, аланы ашаб къоймай, джерге басдыргъандыла. Алай бла тиширыула, ашлыкъ сабан этерге юйрениб, аны бла джашагъандыла. Хар тиширыу кесини сабаныны башына джемджегун чыбчыкъны ашлыкъ саламдан этилген ушхуласын салыб болгъанды.

Эр кишиле, уугъа джюрюб, эт ашай болгъандыла.

Бир джол ала, уудан келе, четенле кётюрюб, сабандан келе тургъан тиширыулагъа тюбегендиле. Уучула, тохтаб:

– Не элтесиз четенле бла? – деб соргъандыла.

– Четенледе элтгенибиз бизни къарын ашыбызды, – дегендиле тиширыула.

– Ол къарын аш къалай болур? Къарын аш деген ма былай болады! – деб, кийик учаны кёргюзтгендиле.

Тиширыула анга ийнанмагъандыла.

– Келигиз сора, – дегендиле эр кишиле, – сиз да, биз да аш этейик да, билгенибизча, ашаб кёрейик.

Алайда тохтаб, хар бири кесини болгъанындан азыкъ этгендиле. Энчи-энчи. Тиширыула – ашлыкъ къалачла, эр кишиле – кийик шишликле. Эки къаууму этгенни да ашаб кёргендиле. Кёрселе уа – зынтхы как бла къууурулгъан эт бютюн да татыулу! Тиширыула бла эр кишиле, алайда



Уллу Тейрини буйругъун унутуб, хар бири юйреннгенича кърарын ашны алай этерге, бирге ашаб, бирге джашаргъа келишгендиле.

Андан бери уучу эр кишиле бла сабанчы тиширыула бирге джашайдыла. Эт бла мирзеу къалай джарашханларын кърюб, кеслери да алай джарашыб джашаргъа юйреннгендиле.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 5 паспорт. КъЧАО-ну «Теберда» курортунда 78-жыллыкъ Къанаматланы Лолокайны жашы Омардан 27.08.1968 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кърчюргенди.

Жомакъны Омар атасы Къанаматланы Лолокайдан эшитгенди.

МУЖЧИНЫ-ОХОТНИКИ И ЖЕНЩИНЫ-ХЛЕБОРОБЫ

В древности, когда Великий Тейри создал людей, их надвое поделил – на женщин и мужчин. В те времена по поверхности земли только одна большая река протекала. Обе ее стороны двумя разными землями были: один ее берег – горы, а один берег – равнины. Великий Тейри женщинам жить на равнине, а мужчинам жить в горах, переходя реку, друг с другом не встречаться повелел. Мужчины охотой в горах жили, а женщины – земледелием. Они, на земле обрабатывая поля, научились выращивать ячмень.

В один день, в то время, как женщины шли на берег реки выкапывать коренья, увидели, как чижик во рту, в клюве какие-то зернышки принеся, закапывал в землю. «Что будет?» – думая, удивившись, не топча это местечко, хорошо ухаживая, охраняли. В скором времени, там проросла красивая трава. А еще через один месяц та трава, выросши, пустила колосья. А когда подождали, пока луна еще раз станет полной, колосья, наполнившись молоком, склонились вниз. Тогда тот чижик, прилетев, ударив клювом, потряс колос, оттуда на землю посыпались красивые зернышки. Женщины, набежав, отняли у птицы ее «растение». Сами, проделав то, что от нее увидели, не съев их, закопали в землю. Таким образом женщины, научившись обрабатывать ячменное поле, этим жили. Каждая женщина над своим полем устанавливала изготовленное из ячменной соломы чучело чижа.

Мужчины, ходя на охоту, питались мясом.

Однажды они, возвращаясь с охоты, встретили женщин, которые, подняв корзины, шли с поля. Охотники, остановившись:

– Что несете в корзинах? – спросили.

– То, что в корзинах несем, – наша пища, – сказали женщины.

– Как это может быть пищей? Пища вот такой бывает! – сказав, показали тушу оленя.

Женщины в это не поверили.

– Давайте тогда, – сказали мужчины, – и вы, и мы приготовим еду, как умеем, и попробуем поесть.

Остановившись там, каждый из них приготовил пищу из своего (своих продуктов). По-отдельности. Женщины – ячменные калачи, мужчины –

шашлыки из оленины. Попробовали съесть приготовленное обеими группами. А когда попробовали – с овсяной кашей жареное мясо еще вкусней! Женщины и мужчины, там забыв повеление Великого Тейри, каждый, как научился, пищу так готовить, вместе питаясь, вместе жить договорились.

С тех пор мужчины-охотники и женщины-хлеборобы вместе живут. Увидев, как сочетаются мясо и хлеб, и сами научились, так сочетаясь, жить.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 5. Записал А.З. Холаев 27.08.1968 г. на курорте «Теберда» в КЧАО от 78-летнего Канаматова Омара Лолокаевича.

Сказку Омар слышал от отца Канаматова Лолокая.

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.



АЙ БЛА КҮОН ТУТУЛУУНУ ЮСҮНДЕН

Бир белгили кишини уллу, акъылбалыкъ болгъан бир джашы бар эди. Ол кишиге артда бир сабий къыз туугъан эди.

Джашы, къызчыкъ туугъандан сора, бешик ичинде аны кёрюб, атасы бла анасына:

– Атам, анам! Бу къызчыкъны къоратмай болмайды, къоратмасагъыз да чогъож болурсуз! – дейди.

Атасы да, анасы да бу джашха бек ачыуланадыла, джаш къаты болгъанда:

– Сен къора, муну уа къоратмайбыз! – дейдиле.

Анда джаш кетиб къалады да, айлана-джюрюю кетиб, бир джерде уллу чегетде къапланны къозлай туруб кёреди эм анга аначы болады. Къаплан юч бала табады да, бу джаш къозлаугъа болушханы себебли, бир баласын джашха береди. Джаш, аны бла къанмай, экинчи баласын да урлаб алады. Алгъан балаларыны урлагъанын кёнчек аууна атыб джашырады.

Къаплан балаланы да алыб кетиб, бир джерде кьош салады да, ол къаплан балаланы ёсдюреди, ала уллу эгерле боладыла. Сора бу эгерле бла джаш бир бирден айырылыргъа тюшеди да, ариулукъ бла айырылыргъа келишгенде, эгерле джашха адам тил бла:

– Энди биз сенден айырылабыз, сен биз экибизден да бирер тюк ал. Санга бир къутулалмаз кыйынлыкъ джетсе, тюклени кюйдюр. Шел сагъатчыкъдан окъуна биз сени къатынга джетербиз. Не уллу палахдан да къутхарырбыз, – дейдиле да, тюклени бериб айырыладыла.

Бёлек замандан сора джаш, къайтыб, юйюне келеди да, къараса, атасын бла анасын мудах кёреди да, элге айланады. Элде джаланда бир темирчиден башха адам табмайды.

Сора джаш темирчиге тюбегенде:

– Эй, сен джангыз къалай къалгъанса? – дейди.

Темирчи:

– Сарыубек мени кесини тишлерин билерге къойгъанды, – деб, джууаб берди.

Алайдан джаш, къайтыб, анасына бла атасына келди.

– Ай джаш, нек келдинг? – деб сордула.

Шел сагъатда сарыубек къыз кириб келди да:

– Келдингми, къарнашым? – деди.

Къарнашы да:

– Келдим, – деб, джууаб этди.

Сора сарыубек эгечи, чыгъыб кетиб, дагъыда къайтыб келиб:

– Ай къарнашым, не бла келгенсе? – деб сорду.

Къарнашы:

– Ат бла келгенме, – деди.

Къыз-сарыубек:

– Атынгы ненча аягъы барды? – дегенде:

– Атымы тёрт аягъы барды, – деди.

Дагъыда чыгъыб кетиб, къайтыб келиб:

– Атынгы юч аягъымы бар эди? – деб сорду.

Джаш:

– Хо, – деди.

Энтда да чыгъыб кетиб, къайтыб келиб:

– Атынгы эки аягъымы бар эди? – деб соргъанда, биягъы джаш:

– Хо, – деди.

Дагъыда чыгъыб келди да:

– Къарнашым, атынгы бир аягъымы бар эди? – деб сорду.

Биягъы къарнашы:

– Хо, – деди.

Сарыубек къыз, юйде тазны алыб, къарнашына бериб:

– Ма, муну мен келгинчи къагъыб, таууш этдире тур, – деб, чыгъыб кетди.

Ол заманда бир чычхан келиб, адамча сѐлешиб, джашха:

– Бир миз, бир таракъ, бир да кюзгю ал, – дейди да, алдырыб, джашдан тазны алыб, – энди мен тазны сенича къагъыб, таууш этдире тураим, сен а бу затланы да ал да, къач, – деди. – Алай а, къачыб бара, сени эгечинг джете башлагъанда, кюзгюню атсанг: «Я Аллах, муну тенгиз эт», – дерсе, ол тенгиз болур. Сарыубек сени джете башлагъанда, таракъны ат да, биягъыча: «Я Аллах, муну сюек къала эт», – дерсе. Ол да, сюек къаланы чачыб, сени джете башлагъанда, мизни атарса да, миз темир буруу болур. Сени сарыубек эгечинг, темир бурууну чачыб, сени джетгинчи, сен узайырса. Алай биягъы сарыубек эгечинг сени джетер, джетгенде намаз этиб башларса. Ол сени ашаргъа башлар, ол заманда: «Эй, эгечим, джаланда эки рекеат намаз этме къой», – деб тилерсе.

Энди джашха уллу къыйынлыкъ джетиб, сарыубек эгечи сау къоймазын ангылаб, эгерлени тюклерин кюйдюрюр амал бла:

– Эки рекеатны этеме, – деб тилегенде, сарыубек:

– Эт намазынгы, – деб, сабыр болады.

Ол заманда эгерлени тюклерин кюйдюредди. Шел сагъатдан эгерле джетедиле да, къызны тутуб чачсала да, джаягъын айыралмадыла да, сарыубек къыз кѐкге эгерлени да алыб учду. Мураты уа айны, кюнню ашаргъа эди. Алай а бу эгерле кюнню, айны да ашаргъа чырмау болуб къоймайдыла ансы, дунья айсыз, кюнсюз бузулуб къалыр эди.

Сарыубек энтда да сауду, аны джаягъына илиниб эгерле, ол кюннге, айгъа чабханда да, кюнню, айны да тутулгъаны андан болады деб, хапарда айтылады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 43 папка, 7 паспорт. КъЧАО-да Шайлыланы Ахъяны жашы Алиден 25.04.1965 жылда Насталаны С.Б. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѐчюргенди.

Айны бла кюнню тутулууларын ангылатхан миф жомакъ. Мында муслийман динни ызы да эсленеди, анга текстде тюбеген арап сѐзле (Аллах, намаз, рекеат) шагъатлыкъ этедиле.

О ЗАТМЕНИИ ЛУНЫ И СОЛНЦА

У одного знаменитого человека был большой, взрослый сын. У этого человека затем родилась девочка.



Его сын, после того, как родилась девочка, увидев ее в колыбели, сказал отцу и матери:

– Папа, мама! Эту девочку надо уничтожить, а если не уничтожите, то пожалеете!

И отец, и мать очень рассердились на сына, когда же сын стал настаивать, сказали:

– Ты убирайся, а от нее мы не избавимся!

Тогда парень ушел и, бродя, скитаясь, увидел в одном месте в большом лесу котящуюся тигрицу и помог ей. Тигрица родила трех детенышей и, поскольку юноша помог ей, одного детеныша отдала ему. Парень, не удовлетворившись этим, украл и второго тигренка. Из взятых детенышей украденного он утаил, закинув его в штаны.

Забрав тигрят, он ушел и, построив в одном месте кошару, вырастил этих тигрят, они стали умелыми охотниками. Потом пришлось юноше расстаться с этими охотниками и, когда решили расстаться по-доброму, охотники на человеческом языке сказали парню:

– Теперь мы расстаемся с тобой, ты у нас обоих возьми по волоску. Если ты попадешь в беду, из которой не сможешь выбраться, сожги волоски. В тот же час мы доберемся до тебя. От самой страшной беды спасем, – и, отдав волоски, ушли.

Через какое-то время парень возвращается домой, посмотрел и увидел, что отец и мать печальны, и пошел в село. В селе кроме одного кузнеца ни одного человека не нашел.

Тогда, встретившись с кузнецом, парень спросил:

– Эй, как это ты один остался?

Кузнец ответил:

– Драконица оставила меня точить ее зубы.

Уйдя оттуда, юноша вернулся к родителям.

– Ай сын, зачем пришел? – спросили.

В тот же час вошла девушка-дракон и спросила:

– Пришел, брат?

И брат ответил:

– Пришел.

Тогда сестра-дракон вышла и затем, снова вернувшись:

– Ай брат, а на чем приехал? – спросила.

Брат ответил:

– На коне.

Когда девушка-дракон:

– Сколько у твоего коня было ног? – спросила:

– У моего коня было четыре ноги, – ответил.

Опять выйдя, и зайдя обратно, спросила:

– У твоего коня было три ноги?

Парень сказал:

– Да.

Когда, снова выйдя и вернувшись обратно:

– У твоего коня было две ноги? – она спросила, опять парень:

– Да, – ответил.

Снова вышла и вернулась:

– Брат мой, у твоего коня была одна нога? – спросила.

Брат снова:

– Да, – сказал.

Девушка-дракон, взяв дома таз и дав его брату, сказав:

– На, пока я не приду, стуча в него, создавай шум, – вышла.

В это время пришла какая-то мышь и человеческим языком обратилась к юноше:

– Возьми одно шило, одну расческу и одно зеркало, – заставив взять (все это), забрала у парня таз, – теперь я буду бить в таз как ты, производя шум, а ты бери эти вещи и беги, – сказала. – Однако, когда будешь убегать и твоя сестра начнет тебя нагонять, если бросишь зеркало и скажешь: «О Аллах, преврати его в море», – оно превратится в море. Когда дракониха начнет тебя догонять, брось расческу и как раньше скажи: «О Аллах, преврати ее в костяную башню». Когда она, разнеся костяную башню, начнет догонять тебя, брось шило, и оно превратится в железную ограду. Пока твоя сестра-дракон, разнеся железную ограду, нагонит тебя, ты уже будешь далеко. Но опять твоя сестра-дракон догонит тебя, когда догонит, начни делать намаз. Она захочет тебя съесть, тогда попроси ее: «Эй, сестра, позволь мне сделать хотя бы две части намаза».

Теперь, когда парень попал в большую беду и понял, что сестра-дракон не оставит его в живых, чтобы суметь спалить волоски охотников, попросил:

– Дай сделать две части намаза.

Дракониха, сказав:

– Делай свой намаз, – стала ждать.

Тогда он спалил волоски охотников. В тот же час охотники примчались и хотя, удерживая, разорвали девушку, не смогли оторвать щеку, и девушка-дракон вместе с охотниками улетела на небо.

А хотела она съесть луну и солнце. Но эти охотники мешают ей съесть солнце или луну, а то бы мир без луны и солнца погиб.

Дракониха еще жива, вцепившись в ее щеку, и охотники тоже, если она нападает на солнце и луну, происходят солнечное и лунное затмения, говорится в рассказе.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 43, паспорт 7. Записал С.Б. Настаев 25.04.1965 г. в КЧАО от Шайлиева Алия Ахьяевича. Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукова) Ф.Х. Объясняющая лунное и солнечное затмения мифологическая сказка. Здесь прослеживается влияние исламской религии, о чем свидетельствуют встречающиеся в тексте арабские слова (Аллах, намаз, рекеат).

КЮН БЛА АЙ

Айды, Кюндю жарытхан,
Къымылдагъанны жашатхан,
Кюндюз жылыуун ийген,
Кече жолну кёрюзтген.

Бурун-бурун, эртте заманлада Кюн бла Ай болмагъанча ариу адамланы атлары болгъандыла. «Кюн» деген атны жюрютген – жаш, «Ай» деген а, адамла къарасала, кёзлери къамарча, ариу къызны аты эди. Ала, узакъдан къарап, бир бирлерин суююп, алай бир бирлеринден уялып болгъандыла. Экисини да кёзлери не узакъда затланы да иги кёргендиле, эслегендиле, аладан ургъан нюр тегерекни жарытханды.

Ол заманлада кече, кюн деп айыргъан къыйын болгъанды, нек дегенде, жерни жалаңда жулдузла жарытхандыла, аны себепли, саулай да жер юсюнде къарангы бет хорлагъанды.

Артдан-артха адамла кёбюракъ бола, аш-азыкъ хазна уа азыракъча кёрюне башлайды. Ол халны эслеп, адамланы игилери, эслилери, акъылманлары, уллу Итиль суу боюнуна жыйылып, Уллу Тейриге айланып: «Кечени кюнден айырырча бир жарыкъ ий жер юсюне. Адамла апчымазча, къууанып жашарча эт!» – деп тилейдиле.

Аланы тилеклерин ол къабыл кёреди да, кюнню бла айны жаратады. Кюн кюндюз жарыгъын иерча, ай а кече, къарангыда жарытырча. Кюн атлы жаш кюнде жашайды, Ай атлы къыз а айда жашайды. Ала бир бирлерин асыры суйгенден, кёкде, жерде да тубешип боладыла. Алай асламысында кёк бийигинде болгъанды аланы жашырын халда бир бирлерине ич ниетлерин билдиргенлери.

Кюнлени биринде Уллу Тейрини буйругъу бла алагъа неках этиледи, сора бир къауум замандан сора Ай дуньяны башында болмагъанча акъыллы, чырайлы, келлик заманны билиучю Сатанайны табады. Аны атасы Кюн, анасы уа Ай боладыла. Алай кёкде жашагъан огъурсуз Желмаууз аланы суймейди эм сабий Сатанайны урларгъа амалла этеди. Аны эслеп, ала къызларына бек сакъ боладыла эм кече, кюн да сакълайдыла.

Кюнлени бирлеринде Кюн ёледи да, аны къабыры кюнде болады, Айны къабыры уа айда болады. Сатанай а, нарт батырлагъа оноу этген, бир сейирлик, акъыллы жан болуп, жерде, Нарт элинде жашайды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. Малкъондуланы Х.Х-ны энчи фонду. КъМАССР-ны Яникой элинде 1909 жылда туугъан Мызыланы Адрайдан 1974 жылда Малкъондуланы Х.Х. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

СОЛНЦЕ И ЛУНА

Это Луна, Солнце освещающие,
Всему движущемуся жить дающие,
Днем тепло посылающее,
Ночью путь указующее.

Давным-давно, в ранние времена Солнце и Луна были именами небывало красивых людей. Имя «Солнце» носящий – парень, а «Луна», если люди смотрели, чтобы глаза слепила, такой красивой девушки именем была. Они, издалека глядя, друг друга полюбив, но друг друга стеснялись. У обоих глаза в любой дали предметы хорошо видели, замечали, исходившее от них сияние освещало все вокруг.

В те времена сложно было разобрать ночь ли, день ли, поскольку землю только звезды освещали, поэтому на всей поверхности земли темные тона преобладали.

Со временем людей становясь все больше, а запасы еды все меньше стали казаться. Это обстоятельство заметив, из людей лучшие, наблюдательные, мудрые, на берег большой реки Итиль (Волги) собравшись, обратившись к Великому Тейри: «Чтобы отделить ночь от дня пошли свет на землю. Сделай так, чтобы люди не страдали (мучились), радуясь, жили!» – просят.

Их просьбу он исполняет и солнце и луну заставляет светить. Чтобы солнце днем свой свет посылало, а луна чтобы ночью, в темноте светила. Парень по имени Солнце на солнце живет, а девушка по имени Луна на луне живет. Они друг друга так любят, что на небе и на земле встречаются. Но в основном в небесной вышине происходило их в тайной форме объяснение друг другу своих чувств.

В один из дней по воле Великого Тейри они заключают неких (брак), затем, через некоторое время Луна такую, что не бывало на всем свете, умную, красивую, знающую будущее Сатанай родила. Ее отцом Солнце, а матерью Луна являются. Но живущий на небе свирепый Желмаууз их не любит и, маленькую Сатанай чтобы украсть, козни строит. Заметив это, они становятся очень осторожны в отношении дочери и ночью и днем ее охраняют.

В один из дней Солнце умирает и его могила на солнце находится, а могила Луны на луне находится. А Сатанай, руководящей нартскими богатырями, удивительной, умной душой став, на земле, в стране Нартов живет.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Личный фонд Малкондуева Х.Х. Записал Х.Х. Малкондуев в 1974 г. в с. Яникой КБАССР от Мизиева Адрая Ж. (1909 г.р.).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

ЧОЛПАН ЖУЛДУЗГЪА «АНАСЫН АЛТЫН ТОННГА САТХАН ЖУЛДУЗ» ДЕП НЕК АЙТХАНДЫЛА?

Мен гитче заманымда эшитип тургъанма къартладан, жомакъ эсе да, таурух эсе да, бу айтыуну. Ол заманда къартла да кѣп болгъандыла. Ала, ныгъышда олтуруп, эрттенден башлап, ингирге дери жомакъланы, эски жырланы, таурухланы айтыучу эдиле. Бир кере уа Эрттен жулдузгъа «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» деп нек айтылгъаныны юсюнден даулаш болады. Ары кѣп къартла къатышадыла. Алай мени эсимде Мызыланы Хахай деген, жылы келген къартчыкъны айтханы къалгъанды.

Ол айтханнга кѣре, Думала бек эрттегили элледен бирлери болгъанды. Ёлет кирип, эл, юч кере къуруп, юч кере тирилгенди. Бурун былайда дюгерлиле жашагъандыла, аны себепли болур, аты да Дюгер эл болгъанды деп айтыучу эдиле жашаулу адамла.

«Жомакъны эшитгенимча айтайым, бу эрттегили кѣп тюрлю айтыулу хапар таурухну», – деп, сора эшитгенича, билгенича айтды аны.

«Бурун-бурун, эртте-эртте заманлада, ислам дин киргинчи кезиуледе, Думала элде оюн, кюлкю, тепсеу бек жүрюгенди. Мындача уста сырачыла бир жерде да болмагъандыла. Ингир кезиуде уа адамла, жыйылып, кѣкде хар бир жулдузну къалай жаратылгъаныны юсюнден таурухла айтып болгъандыла.

Анасын алтын тоннга сатхан жулдузну уа хапары былайды.

Бурун эртте заманлада адамла, Уллу Тейриге баш уруп, анга табынып болгъандыла. Асламында Ач-Элия-Ургъан деген жерчикде, тѣш башында къылгъандыла аны.

Элде бир оюнчу, къобузчу, чамгъа уста болгъан бир тиширыу жашагъанды. Халкъ аны бек суйюп, анга жүрюгендиле, къыйын жумушлары болсала. Ол а, ойнагъан, кюлген кибик этип, адамланы бир бирлери бла жарашдырып болгъанды.

Къартыракъ болуп, анасы сериракъ болгъанды да, къызы уа аны суусар териден этилген, кюнден бек жылтырагъан, къарангыда уа жулдуз-жаухар бет алгъан тонун урлап, саудюгерчи эбизелеге сатханды, дей эдиле. Халкъда уа анга алтын тон дегендиле. Ол къарт къатын Ач-Элия-Ургъан деген жерге тогъуз жыл бла, тогъуз ай бла, тогъуз кюн жүрюгенди: «Мени ол алтын тонуму урлагъан адамны сен ачыкъ эт, ким эсе да, сора жер юсюнден къурут!» – деп.

Бир кюн а, ингирала, халкъ Ач-Элия-Ургъан жерге жыйылып тургъанлай, ол къатынны къызы кѣкге учуп кетеди да, думп болады. Адамла сейир-тамаша боладыла: «Къайтырмы?» – деп, кѣп заман сакълайдыла, алай ол ызына къайтмайды.

Бир жол а, ол къарт къатынны тюшюнде къатына акъ сакъаллы къарт киши келеди да, алай айтады: «Сени тилегинг Уллу Тейриге жетгенди. Аны буйругъу бла ол жер юсюнден кетгенди. Шынжыр ийип, аны кѣк бийигине чыгъаргъандыла эм бек жарыкъ жаннган жулдуз болгъанды ол энди. Ол, кече бла танг ата чыгып, санга бийик кѣкден къарайды, этген заты ючюн сокъуранып жилайды, сокъураннганын билдирирге амал табалмайды. Анда жулдуз болуп, жулдуз сыфатда турлукъду, Уллу Тейриден ол анга буйрукъду. Аны халкъгъа, адамлагъа билдирирсе. Бир-бирледе уа къызынгы



тюшюнгде кёрюрге!» – деп, кетип кьалады. Ол а Жер иеси Дауле болады.

Ол кюнден башлап, ол жулдузгъа «Анасын алтын тоннга сатхан жулдуз» дегендиле.

Аны кёрмегенча, аман затдан кери болайыкъ, иги затдан юлюшюбюзню алайыкъ».

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. Малкъондуланы ХХ-ны энчи фонду. КъМАССР-ны Булунгу элинде 1897 жылда туугъан Мызыланы Арслан-Герийден 1974 жылда Малкъондуланы Х.Х. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

ПОЧЕМУ ЗВЕЗДУ ЧОЛПАН (ВЕНЕРУ) НАЗВАЛИ «ЗВЕЗДОЙ, ПРОДАВШЕЙ СВОЮ МАТЬ ЗА ЗОЛОТУЮ ШУБУ»?

Я в детстве слышал от стариков, то ли сказка, то ли легенда, это сказание. В то время и стариков много было. Они, сидя на ныгыше*, начиная с утра, до вечера сказки, старинные песни, легенды рассказывали.

А один раз поспорили о том, почему Утреннюю звезду (Венеру) прозвали «звездой, продавшей свою мать за золотую шубу». Туда много стариков вмешалось. Но у меня в памяти осталось сказанное Мизиевым Хахаем, стариком в возрасте.

Согласно тому, что он говорил, Думала был одним из очень древних сел. Из-за эпидемии чумы село, три раза вымерев, три раза восстановилось. В древности здесь жили дигорцы, наверное поэтому и название было Дюгерэль (Дигорское село), говаривали пожилые люди.

«Сказку, как слышал, расскажу, эту древнюю многовариантную прозаическую легенду», – сказав, затем как слышал, как умел поведал ее.

«В давние-давние, ранние-ранние времена, в периоды до водворения исламской религии, в селе Думала игра, смех, танцы были широко распространены. Как здесь умелых пивоваров нигде (ни в одном месте) не было. А в вечернее время люди, собравшись, о том, как на небе появилась каждая звезда, легенды рассказывали.

А история звезды, продавшей свою мать за золотую шубу, такова.

В древности в давние времена люди, поклоняясь Великому Тейри, его почитали. В основном в местечке под названием Ач-Элия-Урган, на вершине холма совершали его (обряды).

В селе одна игривая, гармонистка, умелая в шутках некая женщина жила. Народ ее очень любя, к ней ходили, если были сложные дела. А она, вроде как шутя, смеясь, людей друг с другом мирила.

Постарев, мать стала поглупее, а дочь, ее изготовленную из меха куницы, на солнце сильно блестевшую, а в темноте звездно-жемчужный цвет приобретающую шубу украв, грузинским купцам продала, говорили. А в народе ее называли золотой шубой. Та старая женщина в местность под названием Ач-Элия-Урган ходила девять лет, девять месяцев и девять

* *Ныгыши* – место, куда обычно собираются мужчины села для беседы, решения проблем села, отдыха и т.п. [5, 1003].



дней: «Ты выяви человека, укравшего мою ту золотую шубу, кем бы ни был, затем с лица земли удали!» – прося.

А в один день, ближе к вечеру, в то время, как народ собрался в место Ач-Элия-Урган, той женщины дочь на небо улетает и исчезает. Люди удивляются, поражаются: «Вернется ли?» – размышляя, много времени ждут, но она назад не возвращается.

А однажды, к той старой женщине во сне белобородый старик подходит и так говорит: «Твоя просьба дошла до Великого Тейри. По его велению она поверхность земли покинула. Спустив цепь, ее в небесную высь подняли и самой ярко горящей звездой стала она теперь. Она, на закате и восходе выходя, на тебя с высокого неба глядит, раскаиваясь в совершенном поступке, плачет, что сожалеет, сообщить способа не может найти. Там, став звездой, в образе звезды будет находиться, таков приказ Великого Тейри ей. Это народу, людям сообщишь. А иногда свою дочь во сне будешь видеть!» – сказав, уходит. А это был властелин Земли Дауле.

Начиная с того дня, ту звезду назвали «Свою мать за золотую шубу продавшей звездой».

Как того не видели, от дурных вещей будем держаться подальше, от добрых вещей свою долю возьмем».

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Личный фонд Малкондуева Х.Х. Записал Х.Х. Малкондуев в 1974 г. в с. Булунгу КБАССР от Мизиева Аслан-Герия (1897 г.р.).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

ТЕЙРИ КЪЫЛЫЧ КЪАЛАЙ БОЛГЪАНДЫ?

Тейри къылычха бурун огъурлу къылыч, адамлагъа болушхан къылыч, аман затны тыйгъан къылыч (дегендиле – *Х.М.*), Уллу Тейриден келген, аны къолу бла ишленген, къудуретни бир жанындан бирси жанына жетген, юсю бла нартла, тейриле жюриген, аллай сейир бир (зат – *Х.М.*) болгъанды деп айтычу эдиле къартла.

Бурун заманлада адамла, тейрилени бир къаууму да жер юсюнде жашап болгъандыла. Алай кѣп заман ѳтеди. Бир кере уа тейрилени эслерине аллай бир зат тюшеди: «Бизни башха адамладан, не нартладан хазна кѣп башхалыгъыбыз жокъду. Келигиз, Минги таугъа минейик да, Кѣк Тейриден: «Биз кѣк кенгинде эркин айланырча бир амал эт», – деп тилейик», – дейдиле.

Суу, Жер, От, Агъач тейриле, алагъа Апсаты, Тотур эм бирсиле къошулуп, Минги тауну этегинде Уллу Тейриге – Кѣк Тейриге айланып: «Биз кѣкде эркин жюрирча, андан жерге эркин къарарча, бирсиледен энчи затыбыз болурча эт!» – деп тилейдиле.

Аланы ол тилеклери Уллу Тейриге жетеди да, тогъузунчу кюн адамла жашагъан жер юсюню бир къыйырындан бирси къыйырына дери жетген, кѣк бийиги бла ѳтген, аллай сейир, тюрлю-тюрлю бояу бет алгъан кѣпюр кѣрюнеди. Адамла анга бек сейир ѳтедиле, сора Уллу Тейриге андан да бек баш уруп тебирейдиле.

Аны юсю бла жаланда тейриле жюригендиле, бирси жанла къатына баралмагъандыла, нек дегенде, къатына жууукъ баргъанла кюйюп болгъандыла.

Нартланы ичинде Тейри къылычны юсюнде айланганла Дебет, Ёрюзмек, Сатанай, Сосурукъ болгъандыла. Бирсиле, къоркъуп, къатына баралмагъандыла деп айтычу эдиле.

Аны кѣрмегенча, ауруу-талау сынамайыкъ.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. Малкъондуланы Х.Х-ны энчи фонду. КъМАССР-ны Биринчи Чегем элинде 1928 жылда туугъан Къулийланы Зулѳхадан Шамшюдюн къызындан 1976 жылда Малкъондуланы Х.Х. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди. Жомакъны Зулѳха къарт анасы ѳтезланы Къундуздан ѳшитгенди.

КАК ПОЯВИЛАСЬ РАДУГА*?

Радугу в древности приносящей счастье дугой**, людям помогающей дугой, злые вещи останавливающей дугой называли, исходящей от Великого Тейри, его рукой сотворенной, с одной стороны сущего до другой стороны достигающей, по поверхности которой нарты, боги ходили, такой удивительной вещью была, говаривали старики.

* Досл.: «Дуга Тейри».

** В современном карачаево-балкарском языке слово *къылыч* может переводиться как «меч, сабля, шашка», «коромысло», «засов» [5, 773], однако при переводе, исходя из контекста, нами используется слово «дуга» (*Х.М.*).

В древние времена люди и группа богов жили на поверхности земли. Так много времени проходит. А как-то раз на ум богов такая мысль приходит: «У нас от других людей или нартов особо больших отличий нет. Давайте, поднимемся на Минги-тау (Эльбрус) и у Небесного Тейри: «Чтобы мы по небесной шире свободно ходили, способ сотвори», – попросим», – говорят.

Воды, Земли, Огня, Лесов божества, к ним Апсаты, Тотур и другие присоединившись, у подножия Минги-тау к Великому Тейри – Небесному Тейри обратившись: «Чтобы мы по небу свободно ходили, оттуда на землю свободно смотрели, чтобы отдельно от других наша вещь была, сделай!» – просят.

Та их просьба доходит до Великого Тейри и на девятый день достигающий с одного конца земли, где жили люди, до другого конца, проходящий по небесной выси, такой удивительный, переливающийся разными цветами мост показывается. Люди тому очень дивятся, затем Великому Тейри еще больше поклоняться начинают.

По его поверхности только боги ходили, другие души близко не могли подойти, потому что те, кто близко подходили, сгорали.

Среди нартов по поверхности радуги ходившими Дебет, Ёрюзмек, Сатанай, Сосурук были. Другие, боясь, к ней приблизиться не могли, говаривали.

Как того не видели, да не испытаем болезни-хвори.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Личный фонд Малкондуева Х.Х. Записал Х.Х. Малкондуев в 1976 г. в с. Чегем I КБАССР от Кулиевой Зулейхи Шамшюдиновны (1928 г.р.).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

Сказку Зулейха слышала от своей бабушки Этезовой Кундуз.



СУУ БЛА ОТ

Эртте-эртте бир кюн, жолда кетип бара, Суу бла От бир бирге жолугъуп кьалдыла.

– Салам алейкум! – деди Суу.

– Алейкум салам! – деди От.

– Къайры бараса? – деп сорду Суу.

– Анда бир жерде бир суу жер барды да, аны кьурутургъа, – деди От. – Сен а?

– Мен а, анда бир юй кюе турады да, аны ёчюрюрге, – деп жууап берди Суу.

– Экибизден ким хайырлы болур? – деди От.

– Мен! – деди Суу.

– Угъай, мен! – деди От.

– Ёчешейик! – деп кьычырды Суу.

– Ёчешейик! – деп, андан да бек кьычырды От.

– Мен болмасам, – деди Суу, – жерде жукъ битмез эди, нартюх, будай, ашлыкъ, зынтхы, бурчакъ, чёплеу да болмаз эди. Адамла ол заманда не ашар эдиле?

– Махтанма! – деди От. – Картоф, хыяр, харбуз, хууан, наша, бадыражан, быхы, башха затла ашар эдиле.

– Ала уа, мен болмасам, къалай битер эдиле?! – деди Суу. – Суусуз кьуруп къалыр эдиле да!

– Жарсыма, – деди От. – Терекледе алма, кертме, шаптал, балли, жюзюм да кёпдю.

– Мен болмасам, терекле да кьуруп къалыр эдиле, – деди Суу.

– Эт, сют, жау, бишлакъ, башха затла ашап турур эдиле, – деди От.

– Мен болмасам, – деди Суу, – кырдык кьурур, кырдык болмаса, бичен болмаз да, малла ачдан кьырылырла. Ол заманда эт да, сют да, жау, бишлакъ да болмаз. Дунияны тутуругъу менме!

– Мени хайырым сеникинден аз тьююлдю, – деди От.

– Не хайырынг барды сени? – деп кьычырды Суу.

– Мен болмасам, кьышда адамла сууукъдан ёлюр эдиле.

– Къоркъма, – деди Суу. – Къалын, жылы тонла киер эдиле адамла, юйлери ахшы сюртюп, эшиклери, терезелери кьаты этер эдиле!

– Гыржынны къалай биширер эдиле? Этни, картофну, шорпаны? Башха азыкъланы уа?

– Аны ючюн сен къоркъма. Биширирге керек болмагъан аш дунияда кёпдю: ненча жемиш барды!

– Бишмеген ашны не татыуу болады?

– Къарын толса, не башхасы барды?

Алай эте, былай эте, сёзге сёз кьоша, От бла Суу сермешдиле. От тегерекни жалын этдирип жандырды – Суу, ол жерге кьуюлуп, ёчюре башлады. От биченликге чапды – Суу, ызындан жетип, ёчюрдю. От чалманнга чапды – Суу ызындан жетди. От юйге тебиреди – Суу аны аллын тьйды. Ол заманда От кесин Сууну юсюне атды – Суу жалын отланы ёчюре башлады. Алай бла бир талай заман ётдю. Экиси да арып-талып, кюреше тургъанлай, кьолунда таягъы бла бир къарт киши, быланы кьатларына келди да:



– Эй, Суу бла От, салам алейкум! – деди.
 – Алейкум салам! – деди ала да.
 – Не кюрешесиз? – деп сорду къарт.
 – Ёчешген этебиз, – деди Суу.
 – Къалай? – деди киши.
 – От мен хайырлыма, мен кючлюме деп кюрешеди. Мен а – угъай, мен хайырлыма, мен кючлюме дейме, – деди Суу.
 – Айхай! – деди От.
 – Угъай, менме хайырлы да, кючлю да! – деди Суу.
 – Менме, менме! – деди От.
 – Угъай, менме! – деди Суу.
 Экиси да жангыдан сермешдиле.
 Къарт киши Сууну ары, Отну бери атды да:
 – Тохтагъыз, мен айырайым сизни. Экигизни да хайырыгъыз да, кючюгюз да кёпдю. Къайсыгъызны да дуняда хайыр да, хата да этерге кьолугъыздан келликди. Бюгюнден ары уа ёчешиуню кьоюгъыз, – деди.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 313–314 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Суу бла От» деген къарачай-малкъар чыгъарманы «Кимди къарыулу?» деген философиялы жомакъланы тизмисине кьошарчады. Аланы халкъ дуняда бир бирге къажар тургъан затланы бирликлерин кёргюзтюр ючюн къурагъанга ушайды. Жер юсюнде биринчи болгъан От бла Сууну тенгиликлери жомакъда бек ачыкъ ангылашынады.

ВОДА И ОГОНЬ

Давным-давно, в один из дней в пути встретились друг с другом Вода и Огонь.

– Салам алейкум*! – сказала Вода
 – Алейкум салам**! – ответил Огонь.
 – Куда направился? – спросила Вода.
 – В одном далеком краю есть болотистое место, иду туда, чтобы осушить, – ответил Огонь. – А ты?
 – А я, там горит один дом, иду туда тушить, – ответила ему Вода.
 – Из нас двоих от кого больше пользы? – спросил Огонь.
 – От меня! – ответила Вода.
 – Нет, от меня! – ответил Огонь.
 – Давай, поспорим! – закричала Вода.
 – Поспорим! – сказал Огонь и закричал еще сильнее.
 – Если бы меня не было, – сказала Вода, – на земле бы ничего не выросло, ни кукурузы, ни пшеницы, ни ячменя, ни овса, ни гороха, ни подсолнуха.

* Салам алейкум – приветствие.

** Алейкум салам – ответ на приветствие.

– Не хвались! – ответил Огонь. – Картошку, тыкву, арбуз, дыню, огурцы, помидоры, морковь и другие овощи ели бы.

– А они, если бы не было меня, как выросли бы?! – спросила Вода. – Без воды они бы высохли!

– Не переживай, – сказал Огонь. – На деревьях яблок, груш, абрикосов, вишен, винограда много.

– Если бы не было меня, и деревья бы запросто высохли, – сказала Вода.

– Мясом, молоком, маслом, сыром и другими продуктами питались бы, – сказал Огонь.

– Если не будет меня, – сказал Огонь, – высохнет трава, не будет травы – не будет сена, и животные от голода подохнут. Тогда и мяса, и молока, и масла, и сыра не будет. Я – основа жизни!

– Моя польза не меньше твоей, – сказал Огонь.

– Какая польза от тебя? – закричала Вода.

– Если бы не было меня, люди зимой умерли бы от холода.

– Не бойся, – сказала Вода. – Люди бы надели на себя толстые, теплые тулупы, хорошо заштукатурив свои дома, двери и окна закрыли бы плотно!

– А как они могли бы испечь хлеб? Сварить мясо, картошку, суп? А другие блюда?

– Из-за этого ты не беспокойся. Много на свете еды, что не нужно готовить: сколько овощей имеется!

– У несваренной пищи какой вкус может быть?

– Если полон живот, какая разница?

Таким образом, и так, и сяк, слово за слово, Огонь и Вода сильно поссорились. Тогда Огонь объял все вокруг сильным пламенем – Вода, потекла в то место и начала тушить. Огонь достиг до покоса – Вода, догнав его следом, потушила. Огонь накинулся на плетень – Вода и там догнала. Огонь направился в сторону дома – Вода стала перед ним. В это время Огонь бросил себя на Воду – Вода начала тушить языки пламени. И так прошло некоторое время. Когда они вдвоем сильно уставшие, боролись между собой, один старик, с палкой в руке, приблизился к ним:

– Эй, Вода и Огонь, салам алейкум! – сказал он.

– Алейкум салам! – ответили они так же.

– Чего возитесь? – спросил старик.

– Мы поспорили, – сказала Вода.

– Как? – спросил старик.

– Огонь говорит от меня больше пользы, я сильнее. А я говорю – нет, от меня больше пользы, я сильнее, – ответила Вода.

– Ну, конечно! – сказал Огонь.

– Нет, от меня больше пользы, я сильнее! – сказала Вода.

– Я, я! – сказал Огонь.

– Нет, я! – сказала Вода.

Они снова начали бороться между собой.

Старик, Воду в одну сторону, Огонь в другую сторону разбросав:

– Остановитесь, я решу проблему. От вас обоих много пользы, вы сильны. Каждый из вас может на свете совершить добро или зло. А с сегодняшнего дня прекратите спорить, – сказал он.



Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 313–314) и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Произведение может быть причислено к разряду философских сказок из серии «Кто сильнее?». Они придумывались народом для того, чтобы подчеркнуть диалектическое единство противоположностей в мироздании. В тексте наглядно иллюстрируется равенство двух первичных материй – Огня и Воды.

НАМЫС

Эртте заманлада бир тар ёзенде бир бай киши жашап болганды. Бир кюн ол, эрттенбла эртте туруп, эшикге чыккыганды да, терен жаугъан кьарда юйден бир ыз кетип тургъанын кёргенди.

– Ярабий, мал, адам да кьозгьалгынчы, бу не ызды? – деп, ызлай барып, ол ызны бир чырпы ичине кирип тургъанлай тапханды.

– Ий, маржа, сен не затса? Ызынга кёре, мени юйюмден чыгып бараса, – дегенди бай.

– Мен сени Ырысхынг-Насыбынгма. Сенден кетип барама, алай ызымдан кьуууп келгенинг ючюн, бир суйген затынгы кьоя барайым. Суйсенг – жылкынгы, суйсенг – тууарларынгы, суйсенг – кьойларынгы, суйсенг а – юй хапчугунгу кьояйым, сайла, – дегенди Ырысхы-Насып.

– Сен былай тур. Мен, барып, юйдегим бла кенгешип келейим да, нени сайлагъанымы билдирейим, – деп, бай юйюне кетгенди.

Ол, юйюне барып, жашларын, кьызларын жыйып, ишни болушун айтып ангылатды. Ала иги кесек заманны кенгешдиле: кими жылкыны алайыкь деди, кими – тууарланы, кими – кьойланы, кими – юй хапчукну алайыкь деп, кёп чайкьалдыла. Кенгешге кьошулмай, отоуда бир жангы келинлери кьалды. Аны да чакъырып соргъанларында, ол жангы келин:

– Атабыз, амал бар эсе, намысны алыгъыз. Намыс болса, ырысхы да табылыр, – деди.

– Тюз айтаса! – деп, бары да намысны алыргъа таукел болдула.

Бай, ызына кьайтып:

– Небизни ала эсенг да, Намысыбызны кесибизге кьой. Кьалгъан мюлкюбюзню уа барын да элт, – деди.

– Да алай эсе, сиз мени кьолуму-аягъымы байладыгъыз. Мен сизден кетмейме, – деп, ол байны биргесине кьайтып, ызына келди.

Ол юйюр а, байлыгъы да кьорамай, насыбы тутхан юйюр болуп кьалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 314–315 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Намыс» деген жомакъ адамгъа адет-кьылыкъны тохташдырыргъа себеплик этеди. Мында айтылгъаннга кёре, жашауда хар адам «намысха» кесича магъана береди. Намысны бек бийик даражасына чыгъара билген келин аны насыпха тенг кёреду.

НАМЫС*

В давние времена в узком ущелье жил один богатый человек. Однажды он встал рано утром, вышел во двор и увидел, что в глубоком снегу от дома в сторону уходит какой-то след.

– Ярабий**, пока еще не начали ходить ни люди, ни животные, а что за след может здесь быть? – подумал он, пошел по этому следу и пришел туда, где этот след уходил в кусты.

* *Намыс* – честь, нравственность; нормы поведения; воспитанность.

** *Ярабий* – эмоциональный возглас, боже мой.

– Ий, маржа*, ты кто такой? Судя по следу, ты вышел из моего дома, – сказал богатый человек.

– Я твое Имущество, Счастье. Я уйду от тебя, однако, из-за того, что ты меня быстро догнал по следу, я тебе оставлю одну твою любимую вещь. Если пожелаешь – табуны, если захочешь – коров, если скажешь – овец, а если захочешь – домашнее имущество оставлю, выбирай, – сказала Имущество-Счастье.

– Ты оставайся здесь. Я сейчас схожу домой и посоветуюсь с домочадцами и сообщу тебе, что я выбрал, – сказал богач и отправился к себе домой.

Придя домой, он собрал своих сыновей и дочерей, объяснил им свою проблему. После долгого совещания одни сказали, давайте возьмем табуны, другие – коров, третьи – овец, четвертые – домашнее имущество, они долго не могли что-то одно выбрать. В этом разговоре не принимая участия, в своей комнате находилась молодая сноха. Когда они ее вызвали и спросили, эта молоденькая сноха им ответила:

– Отец, если есть возможность, возьмите намыс. Если будет намыс, то будет и имущество, – сказала она.

– Правильно говоришь! – сказали все и, поддержав ее, согласились оставить у себя намыс.

Богатый человек, вернувшись обратно:

– Забирай все, что хочешь, только оставь нам намыс. А остальное имущество забирай с собой, – сказал он.

– Если так, то вы меня связали по рукам и ногам. Я от вас не уйду, – сказала она и вернулась обратно с этим богатым человеком.

А это семейство, не потеряв в богатстве, стало одним из самых счастливых семейств.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 314–315) и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Нравоучительная сказка, которая помогает определиться личности с системой нравственных приоритетов. Судя по тексту сказки, у разных людей счастье ассоциируется с разными ценностями бытия. Носительницей наивысшей мудрости в данной сказке представлена невестка, связывающая счастье с честью (намысом).

* Маржа – обращение.

ЫРЫСХЫ ЮЛЕШИУ

Битеу жаныуарлагъа ырысхы юлешинген кюн, айыу жыйылыугъа барыргъа бошайлмай, кесини юлюшюн алыргъа чабакъгъа аманат этгенди. Чабакъ экисини да юлюшлерин алып келгенди. Айыу чабакъны келгенин кӛргенлей, аны аллына чыкъгъанды да, жарыкъ саламлашханды.

– Чабакъ, манга не жетди? – деп соргъанды.

– Санга – агъачны къалыны, манга – сууну терени.

– Амал кимге жетди, чабакъ?

– Амал адам улугъа жетди.

– А, шуӛхум, чабакъ! Амал адам улуна жетди эсе, сени сууну теренинде да къоймаз, мени агъачны къалынында да къоймаз, – деди айыу. Ма аны ючюн, боллукъну алгъа билгенлеге айыу акъыллы деп да айтадыла.

Айыу бла чабакъ шуӛх эдиле: айыу суугъа кирмей эд, чабакъ суудан чыкъмай эд.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 32 папка, 1 паспорт. КъМАСССР-ны Кенделен элинде Улакъланы Магоматгерийни жашы Зейтундан 14.03.1964 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кӛчюргенди.

Жомакъны Зейтун къарт атасы бла анасындан эшитгенди.

«Ырысхы юлешу» деген чыгъарма миф жомакъгъа саналады. Анда дунияны биринчи жаратылыуу суратланады. Ол заманда аламны къудуретинде табийгъатда болгъан хар бир затны, адамны излемлерин эсге ала, энчи жери тохташдырылгъанды.

ДЕЛЕНИЕ БОГАТСТВА

В тот день, когда всем зверям раздавали богатства, медведь, не сумев освободиться и пойти на собрание, поручил забрать свою долю рыбе. Рыба принесла долю для обоих. Медведь, увидев, что рыба идет, вышел ей на встречу и тепло поздоровался.

– Рыба, что мне досталось? – спросил он.

– Тебе – гуща леса, а мне – глубина реки.

– А изобретательность кому досталась, рыба?

– Изобретательность досталась сыну человеческому.

– А, друг мой, рыба! Коли изобретательность досталась сыну человеческому, и тебя в глубине реки не оставит, и меня в густом лесу не оставит, – сказал медведь.

Вот поэтому тех, кто заранее знает, что случится, называют «медвежьего ума (людьми)».

Медведь с рыбой были друзьями: медведь в воду не заходил, рыба из воды не выходила.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 32, паспорт 1. Записано 14.03.1964 г. в с. Гунделен КБАСССР от Зейтуна Магоматгериевича Улакова (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Зейтун слышал от своих бабушки и дедушки.

Произведение «Деление богатства» относится к роду мифологических сказок. В ней воссоздается эпоха «первовременья», когда происходит осмысление истинного места природных объектов в мироздании с учетом человеческой власти.

ПУЛГУРА КЪАУРА

Пулгура къаура адам эм мал къыйналып кирген къая ыранлада битеди. Ол къаурадан ишленген сыбызгы алапат ариу согъады. Ол угъай эсе, къаураны баш къусхан кесеги тюшсе, жел, аяз ургъан кезиуде ол кеси аллына кюйле согъуучуду. Муну битген жерине кюйла жетселе, ала ол къаураны тюп тамырына дери ашайдыла. Ол иш алай нек болгъанына быллай жууап барды: «Бурун кюйланы уллу аталары алтын урлагъанды. Урлагъан а ол заманлада арталлы да жүрюмеген иш болгъанды. Кюйну алтын урлагъанын пулгура къаураны уллу атасы кѳргенди. Энди пулгура бешишибизни халкъгъа жаярыкъды деген кѳркѳуудан кюйла пулгураны артын юзерге кюрешедиле. Пулгура да аны билип, кюйла киралмаз, бек жерледе битеди.

Ахшы сыбызгычы, пулгура къаурадан сыбызгы ишлеп, кюй тартыуну тартса, кюйла макъырып, сыбызгычыны тѳгерегине басынадыла».

КЪМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 32 папка, 1 паспорт. КЪМАССР-ны Кѳнделен элинде Улакъланы Магомметгерийни жашы Зейтундан 14.03.1964 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

Айтъугъа кѳре, ол битим адамла жеталмагъан къаялада битеди.

«Пулгура къаура» деген миф жомакъда адамда адетни, къылыкъны мажарыргъа жарагъан, жарамалмагъан затланы юслеринден ангыламла жаратылгъан маданият кезиу суратланады.

«Уят» деген ангылам табийгъатда болгъан сыфатла бла ачыкъланады.

СТЕБЕЛЬ ПУЛГУРА*

Пулгура растет на выступах скал, куда люди и животные проходят с трудом. Сделанная из его стебля свирель играет удивительно красиво. Не то, что это, если попадетсѳ та часть, где бывала метелка, когда дул ветер, она сама по себе начинает наигрывать кюй**. Если туда, где растет эта трава, добираются овцы, они это растение съедают до самых корней. На то, почему это так происходит, есть такой ответ: «В древности дедушка овец украд золотѳ. А в те времена воровство совсем не водилось. То, что овца украд золотѳ, увидел дедушка пулгуры. Из страха, что теперѳ пулгура растрезвонит про этот позор всему народу, овцы стараются истребить пулгуру полностью. И пулгура, зная это, растет в труднодоступных местах, куда овцы не смогут добраться.

Если хороший игрок на свирели, сделав из стебля пулгуры свирель, сыграет на ней овечью мелѳдию, овцы, блея, собираются вокруг играющего на свирели».

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 32, паспорт 1. Записано 14.03.1964 г. в с. Гунделен КЪАССР от Зейтуна Магомметгериевича Улакова (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Согласно сказке, это растение произрастает на неприступных для человека скалах.

* Пулгура – название лекарственного растения.

** Кюй – песня-плач.

КЪАРГЪА НЕК БОЛГЪАНДЫ КЪАРА?

Бек эртте заманлада къаргъа да, уку да акъ болгъандыла. Эжиси да была антлы шуёхла эдиле.

Бир кюн къаргъа да, уку да ойнай кетдиле. Бир заманда къаргъаны къайдан эсе да эсине тюшюп:

– Уку, нёгерим, биз не заманнга дери акълай турлукъбуз? Не зат да бизни кёреди. Кел, андан эсе бир бирибизни бир омакъ этип бояйыкъ. Адам да, башха жаныуар да кёрмезча, букъгъан заманда эслемезча, – дейди къаргъа.

Уку да, къууанып, кесини ыразылыгъын билдирди.

– Къайсыбызны алгъа бояйыкъ? – дейди къаргъа.

– Да бу ишни сен алгъа сагъыннганса, сен мени бир боя! – деди уку.

– Алай окъуна болсун, – деп, къаргъа къурумну суу бла къатыш этип, къанатындан да бир уллу тюгюн алып, аямай укуну бояп башлады. Уку сын къатыш, къууанып тура эди. Кюреше кетип къаргъа укуну бек ариу бояды.

Бояп бошап:

– Тур да, кесинге бир къарачы, бюсюремей эсенг? – деди.

Уку жангы тюрсюнюн чексиз жаратып, къууанды.

– Энди сен да мени бир бояп кёр, менича ариу эталлыкъ эсенг, – деди къаргъа анга.

Уку да, кюреше кетип, къаргъаны алапат омакъ этип къойду. Къарай кетип, къаргъаны кесинден омакъ болгъанын кёргенде, зарлыкъ этип, битеу къалгъан къурумну къаргъаны юсюне къуюп, учуп кетеди.

– Не этдинг сен манга, аман уллутырнакъ, уллукёз! Мен аны санга жетдирирге, ашыкъма сен! Энди мен къалай айланайым былайлай. Хар ким да кёрлюкдю мени! – деп, къаргъа жилий къалды.

Ол къурум а аны тюгюне сингип, ёмюрде да кетмезча болуп къалды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 5 паспорт. КъМАССР-ны Ташлы-Тала элинде жашагъан, 1911 жылда туугъан Цаколаны Ацейни жашы Алийден 15.02.1960 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Гергёокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ къаргъа бла укуну шуёхлугъуну юсюнденди. Мында ала биринчиден акъ болгъанлары айтылады. Шуёхлукъда зарлыкъ этерге жараматгъаны бу эки къанатлыны юсюнде билдириледи. Юйретиу халда жазылгъанды.

ОТЧЕГО ВОРОНА СТАЛА ЧЕРНОЙ?

В очень давние времена и ворона, и сова были белыми. Они двое были душевными друзьями.

Однажды ворона с совой играли. Вдруг откуда-то вороне пришла мысль:

– Друг мой, сова, как долго мы еще так белыми будем? Все нас замечают. Давай лучше мы друг друга красиво покрасим, чтобы ни человек, ни другие животные нас не видели, а когда спрячемся, не замечали, – сказала ворона.

Сова тоже, обрадовавшись, дала согласие.

– Кого первым покрасим? – спросила ворона.



– Да это дело ты первая предложила, так ты меня покрась! – сказала сова.

– Пусть так и будет, – сказав, ворона разбавила сажу водой, выдернула из крыла одно большое перо и начала красить сову.

Сова, застыв, радовалась. Постаравшись, ворона очень красиво покрасила сову.

– Встань и посмотри на себя, нравится? – спросила.

Сове очень понравился ее новый цвет, и она обрадовалась.

– Теперь и ты попробуй меня покрасить, сможешь сделать это так же красиво, как я? – спросила ворона.

Сова тоже старалась и сделала ворону очень нарядной. Смотрела, смотрела, а когда увидела, что ворона стала красивее ее, позавидовав, всю оставшуюся сажу высыпала на ворону и улетела.

– Что ты со мной сделала проклятая с длинными когтями, большеглазая! Я тебе это припомню, ты не спеши! Как я теперь так буду ходить / жить. Все меня будут замечать! – так ворона осталась в слезах.

А эта сажа впиталась в ее перья так, что теперь никогда не отойдет.

Архив КБГИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 5. Записал И.И. Гузев 15.02.1960 г. в с. Ташлы-Тала КБАССР от Цакоева Алия Ацевича (1911 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка – о дружбе вороны и совы. О том, что они изначально были белыми. Мораль сказки, что нельзя позволять зависти портить дружеские отношения, выражается в образе этих двух птиц. Сказка носит поучительный характер.



БИЗДЕ ЗУРНУКЛА НЕК ЗАШАМАЙДЫЛА?

Мыннан кѣп заманла алгъа, бусагъатда бизде зашагъан битеу къанатлыла кюнчыгъышда, зылы къыраллада зашап тургъандыла. Алагъа анда тар болуп, жер зетмей, исси болуп, аш зетмей башлагъанда, къанатлыла зыйылып, мыннан ары къалай зашау этерлерини юсюнден оноу этедиле.

Оноугъа уллутырнакъ тауухцу къуш, арба заудан цыкъгъан кибик къара къаргъа, аякълары да сууукъда юшюген кибик къызылаякъ, акъбыдыр чаука, къоркъакъ жумарукъ, узунаякъ, узунбоюн зурнук, залфакъякъ, кенгбурун папуш, букъса кѣрюнмеген жаубѣдек, дагъыда анга кѣре тюрлю-тюрлю кѣп къанатлыла зыйылгъан эдиле. Зыйылыугъа зыйылгъан эдиле. Зыйылыугъа уллутырнакъ тауухцу, кѣзлери ашдан тоймагъан уллу къуш башчылыкъ эте эди.

Зыйылыуда ашы кѣп, туругъа эркин, бек исси да болмагъан, балала цыгъарыхха иги онгу болгъан зангы зер излерге, кимни зиберге деп оноу эте эдиле. Барысы да кѣп сагъыш этгенден сора кюнцыгъышха, кюнбатышха, дагъыда кѣп тюрлю зерлеге барып, андан хапар билип юц зылны ичинде къайтып келирге бѣкем къанатлары болгъан, къарыулу бутлары болгъан, талмай кѣп уцхан зурнукну тюз кѣрдюле.

Алай бла зурнук къатынын да зангыз къоюп зангы зер излеп кетди. Ол алай кетгенлей, гитце заумелехцик (жауберди) зурнукну къатынына кесин омакълай башлады. Кѣп болмай анга нѣгер болду. Зурнук юц зыл болгъан зерни къыдырып, бизни таулада эркин, ашы кѣп, салкъын зер да табып юйюне къайтды. Ол кирип келгенни эслеп, заумѣлехцик секирип, зурнукну къатынын да къоюп, бир занына бухту. Аны да эслемей, зурнук къатыны бла тансыкълап саламлашды. Саламлашып бошап, ол къатынына баргъан ишинден быллай хапар айтды:

– Мен Кавказ таулада ашха бай, туругъа кенг, хауасы салкъын, балала заяргъа алапат зер тафтым. Алай тамбла зыйылыуда манга сорсала уа, аны айтырыкъ туююлме. Ары къуру кесим сени алып кетерикме, – деди.

Къатыны да, ол этген ишлерими билип палах этер деп, сѣз къайтармады. Бу хапарны айагъына дейри эшитип тургъан заумѣлек, цыдамай, секирип цыгъып, уцуп кетди. Кесин кѣрмесе да тауушун эшитип, уллу боюн зурнук бу не тауушду деп къатына сорду. Къатыны уа

– Билмейме, сен кетгенли къуру аллай тауушла цыгъып туралла. Кесим да кѣп кеце къоркъуп, зукъламай цыкъгъанма, – дейди.

– Зюреги тышына термилсе болууцуду алай да. Энди биргебиз, къоркъма! – деп зурнук къатынын тынцайтды. Экинци кюнню эртденлигинде битеу къанатлыла зыйылып, зурнукга хапар сора келдиле.

Зурнук къанатлыланы алдап:

– Бир да тап зер тапмагъанма. Кавказ таула уа тап зер угъай, кесим кюшден сау къалгъанма – анда быцакътырнакълы уллу, къарыулу къанатлыла бардыла. Ала бизни къырып къоярыкъдыла, – деп хапар айтады.

Аны ѳтюрюк айтханына цыдамай заумѣлехцик цартлап цыгъып:

– Муну айтханына ыйнанмагъыз. Бу бизни алдагъан этеди. Мен тюнене кеце къатынына айтханын эштхенме. Зурнук Кавказда биз излегенца,



аламат зерле тапханды, алай аны бизден бухтуруп, кеси къатыны бла кетер акъыл этеди, – дейди.

Аны эшитип, ацыуланьп, зурнук секирип тутуп, заумёлекни ямай тьююп халек этеди. Аны алай этгенине зюреклери ауруп, зурнукну тыядыла.

– Заумёлек ётюрюк айтса, сен аллай бир ацыуланьрыкъ тьююленг – ол керти айтады. Сен бизни шаньп, сени сыйлап зибергенибиз бла файдалынып, бизни алдагъанынгы биз санга кецмебиз, – дедила.

Къанатлыла зангьдан зыйылыу къурап, Кавказгъа уллутырнакъ къушну зибередила. Ол бир зылгъа айланып, Кавказны омакъ зерлеринде да солуп, артха къайтады. Барып толу керти хапар айтады.

Къанатлыла оноу этип, Кавказгъа учуп тебирейдиле. Тебирерни аллында заумёлекцик къанатлыладан:

– Мени къоюп кетмегиз. Мен алыкъа сау болмагъанма. Сизсиз мында къалсам, ашдан ёлюп къаллыкъма, – деп тилейди.

Къанатлыла оноу этип:

– Заумёлекни зурнук тьююп этгенди былай. Къавказгъа да ол сыртына кётюрюп элтсин, – дейдиле.

Зурнук заумёлекни кётюрюп келялмагъанлыкъдан, бери учуп келмейди, эм бизде жашамайды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 8 паспорт. КъМАССР-ны Ташлы-Тала элинде жашагъан, 1911 жылда туугъан Цаколаны Ацейни жашы Алийден 14.03.60 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ къанатлыланы юсюнденди. Юйретюу халда жазылгъанды. Бир-бирге харамлыкъ этерге жарамагъанын билдиреди. Ц/з-диалектде жазылгъанды.

ПОЧЕМУ У НАС НЕ ЖИВУТ ЖУРАВЛИ?

Много лет тому назад, все птицы, которые сейчас у нас живут, жили на востоке, в теплых странах. Им там стало тесно, не хватало места, было жарко, не хватало еды, и птицы собравшись, обсудили то, как они дальше будут жить.

В обсуждении принимали участие: с большими когтями пожиратель куриц – орел, черная, словно вышедшая из машинного масла, ворона, красноногая, словно ноги замерзли в воде, белогрудая чайка, трусливый улар, длинноногий, длинношеи журавль, широколапая, ширококлювая утка, чиж, которого не видно когда прячется, еще подобные много птиц собрались. Все собрались на собрание. Собрание возглавил пожиратель куриц с большими когтями, с голодными, ненаедающимися едой глазами, огромный орел.

На собрании обсуждали о том, кого послать, чтобы найти местность, где много еды, много места, не очень жарко, с хорошими условиями для выведения потомства. После того как все хорошо подумали, чтобы полететь на восток, запад, и еще облететь много разных мест, вернуться

и принести вести оттуда в течение трех лет, решили послать обладателя мощных крыльев, сильных ног, не уставая, долго летающего, журавля.

Таким образом, журавль, оставив жену одну, улетел в поиске нового места. Как только он улетел, маленький чиж начал красоваться перед женой журавля. Через немного начал с ней жить. Журавль через три года, облетев много мест, нашел в наших горах широкую прохладную местность, где много еды и вернулся домой. Как только чиж заметил, что тот зашел, оставив жену журавля, спрятался в стороне. Не заметив его, журавль радостно поздоровался с женой. После приветствия, он рассказал жене всю историю про свою работу:

– Я нашел в Кавказских горах местность, где жить просторно, прохладный воздух и хорошие условия для выведения потомства. Но завтра на собрании, когда меня спросят, я это не расскажу. Туда я сам один с тобой полечу.

Жена же, побоявшись, что он узнает про ее дела и что-нибудь сделает, ничего не ответила. Услышав эту историю от начала до конца, чиж, не выдержав, выскочил и улетел. Если даже самого не увидел, услышав шум, длинношей журавль, спросил у жены, что это за звук.

– Не знаю, с тех пор как ты улетел, все время слышатся такие звуки. Я и сама, испугавшись, много ночей не спала, – ответила.

– Когда сердце волнуется за того, кто в дороге, так бывает. Теперь мы вместе, не бойся! – сказав, журавль успокоил жену.

На следующее утро все птицы, собравшись, пришли к журавлю услышать новости.

Журавль, обманув птиц, рассказал:

– Нигде не нашел хорошую местность. А на Кавказских горах, не то что хорошее место, сам еле выжил – там живут огромные, сильные птицы с острыми как ножи когтями. Они нас перебьют.

Не выдержав того, что он лжет, чиж выскочил и сказал:

– Не верьте тому, что он говорит. Он нас обманывает. Я вчера ночью слышал все, что он говорил жене. Журавль на Кавказе нашел такие места, которые мы искали, но он хочет это от нас скрыть и улететь туда с женой.

Как только это услышал, журавль вскочил и сильно побил чижа. С болью в сердце, что он так поступил, останавливают журавля.

– Если бы чиж соврал, ты бы так не злился. Он говорит правду. То, что мы, на тебя надеявшись, выбрали и отправили, а ты нас обманул, мы тебе не простим, – сказали.

Птицы снова собравшись, отправили на Кавказ орла с большими когтями. Он за год, облетев и отдохнув в прекрасных местах Кавказа, вернулся назад. Прилетев, рассказал правдиво всю историю

Птицы, посоветовавшись, начали перелетать на Кавказ. Перед тем как собрались, чиж попросил у птиц:

– Не оставляйте меня. Я еще не исцелился. Оставшись здесь без вас, умру от голода.

Птицы, посоветовавшись, решили:

– Так как журавль избил и покалечил чижа, пусть до Кавказа он на спине и несет его, – сказали.

Так как журавль не может на себе привести чижа, он не может перелететь сюда, и поэтому у нас не живет.



*Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 8.
Записал И.И. Гузеев 14.03.60 г. в с. Таилы-Тала КБАССР от Цакоева Алия
Ацеевича (1911 г.р.).*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

*Эта сказка про пернатых поучительного характера. Учит тому, что
нельзя желать плохое другому. Текст написан на ц/з диалекте.*



ИТЛЕ СЮЕК ЮЧЮН НЕК ТАЛАШАДЫЛА?

Къалыубалада, адамла уучурукъ бла жашагъан заманда, бир уучуну эки эгерити болгъанды. Уучу эки итин да бирча суйгенди, хар заманда ашларын – не тюрлю эт, суюк, башха зат болса да, – теппе-тенг этип бергенди, хар заманда аланы алгъа ашатып-тойдуруп, кеси алай ашагъанды.

Заманланы бир заманында уа уучула, жыйын болуп, доммай бугъаны ары тюшюрюп, тутхандыла. Жютю къязыкъла бла жан жанындан чанчып, уру ичинде ёлтюргендиле. Доммай бугъаны урудан ёрге къалай чыгъарлыкъ эдиле, ортагъа алсала да!

Жаны кетгенден сора, бугъаны къарыуу кетгенден сора, аны урудан ёрге къазауат этип, чыгъарып, сойгъандыла. Этин уллу къазанда биширгендиле. Юлюшле этип, юлешгендиле. Эки эгер итни иесине жапхакъ жетгенди. Ол а бир татыулу эт, уучу кеси да ач – итлерин да унутуп, юлюшюн кеси ашап къойгъанды. Къараса, итлери ач! Жапхакъ суюкни эки сындырып, тенг эталмай: «Охо, бирге кемирирле», – дегенди да, суюкни алайлай алларына атып къойгъанды.

Ач итле суюкге чапхандыла. Талашхандыла. Аллай бир талашхандыла, бир-бирлерин ёлтюргюнчю.

Быллай хапарла къалыубалада болгъандыла, халкъла бары да бир болгъан заманлада. Жашауда жарашыурукъ излей эсегиз – хар итни да кеси суюги болсун, хар тиширыуну да кеси эри болсун!

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 9 паспорт. КъМАСССР-ны Эльбрус элинде 77-жыллыкъ Непеланы Локъмандан 27.08.1975 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ уучу бла аны эгерлерини юсюнденди. Жарашыурукъ болур ючюн, хар зат хар кимни кесини болургъа керекди.

ПОЧЕМУ СОБАКИ ГРЫЗУТСЯ ИЗ-ЗА КОСТИ?

В незапамятные времена, в те времена, когда люди жили охотой, у одного охотника было две охотничьи собаки. Охотник обеих собак любил одинаково, каждый раз еду – будь то какое-нибудь мясо, кость, или будь это что-то другое, – давал, разделив ровно пополам, и каждый раз сначала кормил их досыта, а потом сам ел.

Однажды, как-то охотники группой загнали в яму быка-буйвола и поймали. Со всех сторон закалывая острыми копьями, убили внутри ямы. Как бы они вытащили быка-буйвола из ямы, если даже взялись бы все вместе!

Когда у быка-буйвола иссякли все силы, и жизнь от него ушла, его быстро вытащили из ямы и разделали. Мясо сварили в огромном котле. Разделили на части и раздали. Хозяину двух охотничьих собак досталась лопатка. А это очень вкусное мясо, охотник сам был голодным, и, забыв про собак, ту часть, которая ему досталась, съел сам. Смотрит, его собаки голодные! Так как не смог сломать лопаточную кость на две половины поровну: «Пусть грызут вместе», – сказав, бросил им кость целиком.



Голодные собаки бросились на кость. Начали грызться между собой. Они грызлись так, пока не убили друг друга.

Эти истории были в незапамятные времена, в то время, когда все люди были едины. Если ищете в жизни мир – пусть у каждой собаки будет своя кость, пусть у каждой женщины будет свой муж!

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 9. Записано 27.08.1975 г. в с. Эльбрус КБАССР от 77-летнего Непеева Локмана. Автор записи неизвестен.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка про охотника и его собак. Чтобы был мир, нужно, чтобы у всех были свои вещи.

КЪОЯННЫ ЭРИНИ НЕК ЖЫРЫКЪ БОЛГЪАНДЫ?

Бир кюн къоян атауулну бары бир уллу нарат терекни тюрбюне жыйылып, бир-бирлерине тарыгыуларын айтадыла.

Ичлеринден эм тамата къоян, жашланы сёзюне тынгылап бошагъандан сора, кеси, жыйылгъанланы аллына чыгып:

– Э, жанларым, къарындашларым! Биз хариплени бу дуняда кёрюп айланган кюнубюз кзурусун! Агъачны ичинде жюрюген жаныуарланы тауушун къулагыбыз чалса да, жаныбыз чыгъады; агъачны башындан бош чапыракъ тюшсе да, бизни жаныбыз бурунубузну къыйырына келип тыгылады. Сабий-субийлени кёзлерине тюшюп къалсакъ: «Къоян къачды, майна кетди», – деп, бизден сора кюлкюлери болмаз. Биз неден да, барындан да къоркъабыз. Бизден а эм гитче ургуйчукъ окъуна къоркъмай, къулагыбызгъа, бурунубузгъа кирип, тынчлыгыбызны бузады. Бу артыкълыкыгъа, бу къыйынлыкыгъа чыдап, тири жюрюгенден эсе, тенгизге барайыкъ да, кесибизни суугъа атып ёлейик. Ахыры кёп болсун, кеч болсун – бир ёлум, – дейди.

Тамата къоянны сёзюн барысы да дурус кёрюп: «Суугъа кесибизни атып ёлейик», – дей, барысы да жыйылып, тенгиз таба атландыла. Азмы-кёпмю бардыла, тенгиз жагъаларында бир уллу жайлыкълагъа жетдиле. «Энди тенгизге кёп къалмагъанды, бусагъат жетебиз», – деп, чабышып, бары бирча бир къапхакъчыкъдан ары чыгъадыла. Алайда сюрюуден айырылып, берлагъыракъ келип, отлай тургъан бир къойну юсюне чыгъадыла. Отлай тургъан къой, чабып келип, юсюне чыкыгъан къоян жыйындан элгенип, жутуп къояды дегенча, къоркъуп, сюрюу таба айланып къачады. Аны къачханын кёрюп, къой сюрюу гурулдап, юркуюп, энишге айланып къачады.

Неден юркгенлерин, къайры къачып баргъанларын билген къой жокъду, алай гюркюлдеп, юркуюп, узакъ кетедиле. Къойланы ызларындан къойчула да, таякъларын кётюрюп, итлери да юскюрюп, итле да, кеслери да къошулуп чабадыла.

Азан-къазан, къычырыкъ-хахай болады!

Бу ишни кёрюп, жашаудан тюнгюлюп, ёлумге бара тургъан къоянла, уллу сейир тамашагъа, къууанчха къаладыла. Ала, артларына аууп, чегилери тюрюлюп, къарынлары ауругъунчу, баш эринлери жырылгъынчы кюледиле.

– Къойчугъуз, суугъа батып ёлгенни къояйыкъ. Кесибиз айтханча онгсуз, къарыусуз биз да тюрюлюбюз! Бирге жыйылып, бир акъыллы болсакъ – биз да кючлюбюз, – дейдиле.

Аны бла ала суугъа батып ёлгенни къоюп, бурунгу орунларына, агъачха кетедиле.

Алай, ол кюнден сора, къоян атауулну баш эринлери жырыкъ болуп къалады.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 4 паспорт. КъМАССР-ны Налъчик шахарында Джапуланы Рашидден 25.06.1958 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Къоян къарачай-малкъар жомакълада къарыусуз жигитди. Ол кёбюсюне къоркъакълыкъны белгилеп кёргюзтюледди. Бу берилген жомакъда къоянла къоркъакълыкъны белгиси болуп бериледи, текстни барыуунда, кеслеринден къоркъгъанланы кёрюп, бу къоркъакъ персонажла башихача тюрленедиле. Къоянла асыры къууаннгандан, асыры кюлгенден баш эринлери жырылгъанды.

ПОЧЕМУ РАССЕКЛАСЬ У ЗАЙЦА ГУБА?

Однажды весь заячий род собрался под большой сосной, и (все) жаловались друг другу.

Самый старший заяц среди них, после того, как выслушал всех молодых, вышел перед всеми и сказал:

– Эй, душа моя, мои братья! Пусть пропадут эти дни, что мы несчастные в этом мире видим! Если даже наши уши услышат звуки, ходящих в лесу животных, душа выскакивает; если с верхушки дерева падает простой лист, наша душа, выскочив, забивается в кончик носа. Когда оказываемся в поле зрения маленьких детей: «Заяц побежал, вот ушел» – крича, только над нами и потешаются. Мы всего боимся. А нас даже самый маленький комарик не боится, лезет в нос, в уши, тем самым нарушает наш покой. Чем терпеть эти насилия и несчастья и активно убежать, пойдём к океану и умрем, бросившись в воду.

Одобрив слова старшего зайца, все, повторяя: «Умрем, сбросив себя в воду», – собравшись, отправились по направлению к морю. Мало-ли, много-ли шли, дошли до большой поляны на берегах моря. «Теперь до моря много не осталось, сейчас дойдем», – сказав, побежали все вместе, и вышли через косогор. Пройдя чуть вперед, они вышли на отбившегося от стада, пасущегося одного барана. Пасущийся баран, вздрогнув от бежавших на него стада зайцев, с ощущением, что его сейчас проглотят, испугавшись, побежал в сторону своего стада. Увидев, что он бежит, стадо баранов с шумом, испугавшись, побежало вниз.

От чего всполошились, куда бегут, ни один баран не знал, но с шумом, шарахаясь, ушли далеко. За баранами побежали пастухи, подняв посохи, натравливая собак, и сами, и их собаки бежали вместе.

Стоял крик, шум, гам!

Увидев это дело, уставшие от жизни, идущие на смерть зайцы, дались диву, очень обрадовались. Они смеялись до тех пор, опрокинувшись назад, пока их кишки не завернулись, животы не разболелись, верхняя губа не рассеклась.

– Оставьте, забудем про то, чтобы утопиться и умереть. Как мы сами говорим, мы не настолько беспомощные и слабые! Когда мы соберемся вместе и будем одинаково мыслить – и мы сильны, – сказали.

И так они оставили мысль, умереть, утопившись, и ушли в свои старые места, в лес.

Но с этого дня начиная у всего заячьего рода, верхняя губа осталась рассеченной.

*Архив КБГИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 4.
Записано 25.06.1958 г. в г. Нальчике КБАССР от Джаппуева Рашида.
Автор записи неизвестен.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Заяц – персонаж слабый. Он часто выступает олицетворением трусости. В данной сказке сначала зайцы представляются нам символом трусости и пугливости, но по ходу повествования, увидев тех, кто испугался их, эти трусливые персонажи преображаются. Зайцы были настолько рады, что от смеха их верхняя губа рассеклась.



КЁГЮРЧЮН УЯНЫ КЪАЛАЙ САЛГЪАНДЫ?

Къаллай къанатлы болса да, уясын жарашдырып, жашаугъа жарарча ишлейди. Кёгюрчюнню уясын а кёрсенг – уягъа ушамайды, чачакъ-чачакъ болуп, энди жумуртхасы тышоуп кетеди деп, къоркъурча болуп турады.

«Ол неге алай болду?» – десегиз. Ол былай болгъанды, экен. Эртте заманлада кёгюрчюн, уя салгъаны дегенни, билмегенди, экен. Жазгъа чыкыгъанлай, бир чунгуруракъ жер таппса, олтуруп жумуртха табады да, алайгъа гурт басып, бала чыгъарады, экен.

Бир кюн, хыйлачы тюлкю жашырын келип, аны тапхан жумуртхасын барын да ашап кетгенди. Кёгюрчюнле келип кёргенден сора, жилиу-сийытха къаладыла. Кёгюрчюнню хоразы «пыр» деп учуп барып бир уллу терекни бутагъына къонады:

– Уябызны жартысын толтуруп, жумуртха салгъан эдик, бир жангыз да къалмай къалгъанды! Харам хыйлачы тюлкю барында урлап кетип турады, – деп мурулдады.

Ары мурулдап, бери гурулдап, кёп ачыу этедиле да, ахырында бир тюлкю кирмезча, бегирек жерден уя салырча башлайды. Жайылып, чырпыланы жыйып, алып келеди, алай уяны къалай салыргъа керегин, билмейди да, жайылып, битеу таудагъы къанатлылагъа барып, уяны къалай салыргъа кереклигин юйретселе деп тилейди. Къанатлыла, жыйылып келип, кёгюрчюннге уя ишлеп берирге киришедиле. Ала эки бутакъны бирикген жеринден эки-юч чымыртаны ары-бери кенделен салып, болур-болмаз:

– Билдим, билдим! Юйрендим, юйрендим! – деп кычырды да, къанатлыланы андан ары ишлерге къоймады.

– Э! Кеси уста болду эсе, бизни уа къолубузму кичип турады, неге кюрешебиз! – дедиле да къанатлыла, жан-жанына учдула да кетдиле.

Кёгюрчюн изеуню атландырып, терек башында кёп кюрешеди, алай: «Юйрендим, билдим!» – деген кёгюрчюн, ууакъ чырымталаны ары айландырып салып къараса да, бери айландырып салып къараса да, чырымтачыкъланы бирикдирип, уягъа ушагъан зат ишлеялмайды.

«Иш къылыгъын билмеген, ит къылыгъын кёрю» дерча болуп: «Энди къалгъанын ишлерге керекди», – деп, биягъы кёгюрчюн амалсыздан жайылып къанатлыланы изеуге чакъырады. Къанатлыла бу жол да, жыйылып келип, жангыдан ишге киришедиле. Уяны жартысына жете келген кезиуде:

– Билеме эндигисин кесим да! Энди къалгъанын кесим да ишлерикме! – деп, кёгюрчюн ишлеучюлени къулакъларын жалчытады.

– Жарайды, кесинг уста болдунг эсе – кесинг ишле. Къолубуз кичиб тургъан биз туюлюбюз, юйде бизни да ишибиз жетеди, – деп, къанатлыла учуб-учуб кетедиле.

Кёгюрчюн, биягъы изеуню ашырып, ишге кеси киришеди. Чырпыланы алай салады, былай салады, алай бирда жукъгъа ушагъан зат чыгъаралмайды. Ишлеялмагъанына алай уялады, алай уялады. Биягъы къанатлыланы, жангыдан барып, болушургъа чакъырады. Къанатлыла уа: «Эки бардык, эки кетдик, энди кесибизни да ишибиз барды», – деп келмедиле. Аланы бир къаууму уа: «Кеси устаны юйретебиз деп неге кюрешебиз», – деп къойдула.

Алай бла кёгюрчюнню уясы битмеген халы бла къалады. Кёгюрчюнле – хоразы, жюжеги да бюгюннге дери да ол жарты ишленген уяларында жашау этерге кюрешген хапарлары барды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 11 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Кёгюрчюнледе уяны, кёгюрчюн тауукъ угъай, жаланда кёгюрчюн хораз ишлейди. Ол ишлеучю хазнаны табады – хансчыкъла, агъач чёпле, иничге бутакъчыкъла эм гитче таякъчыкъла, аладан артда бегимли уя салыр ючюн.

Аллай уяланы жыйымсыз сыфатлары болады, тюсюн айтханда хъшмыш сыфатлы. Бу жомакъ ол алай нек болгъаныны юсюнден айтылады.

КАК ГОЛУБЬ СВИЛ ГНЕЗДО?

Какая бы птица ни была, ставит гнездо так, чтобы можно было там жить.

Когда видишь гнездо голубя – на гнездо не похоже, разорванное в ключья, думаешь и боишься, не выпадет ли яйцо.

«Почему это так получилось?» – спросите. Это случилось так. Давным-давно голубка не знала, что такое ставить гнездо. Как только наступала весна, находила углубление в земле, садилась и сносила яйцо, высиживала и выводила птенца.

Однажды хитрая лиса подкралась и съела все снесшие ею яйца. Когда голуби прилетели и увидели, они расплакались. Голубь «пыр» и сел на ветку высокого дерева.

– Половину гнезда, наполнив, положили яйца, а там ни одного не осталось! Подлая, хитрая лиса все украла, – пробормотал.

Туда прошептав, сюда пробормотав, разлились и в конце решили, строить так, чтобы лиса не достала: начали ставить гнездо повыше. Собрал щепки, принес, но как строить гнездо не знает, походил по всем птицам в горах, попросил, чтобы они научили, как строить гнездо. Птицы, собравшись, прилетели и решили голубю свить гнездо. Как только они две щепки поставили вместе, две-три хворостинки поставили поперек туда-сюда, как началось:

– Знаю, знаю! Научился, научился! – закричал и не дал птицам работать дальше.

– Э! Если сам теперь стал мастером, а у нас что руки чешутся, что мы стараемся! – сказали птицы и разлетелись в разные стороны.

Голубь, отправив помощников, долго возился на дереве, но: «Научился, узнал!» – кричавший голубь, хоть туда, повернув, поставив мелкий хворост, смотрел, хоть сюда повернув, поставив, смотрел, но не смог собрать хворостинки вместе так, чтобы построить что-то похожее на гнездо.

Пришел к тому, что: «Тот, кто не знает правила работы, испытает собачьи повадки». «Теперь надо строить дальше», – сказав, полетел и вынужденно позвал всех птиц помочь ему. Птицы и на этот раз собрались и прилетели, снова начали работать. Как только начали доходить до половины гнезда:



– Остальное и сам знаю! Теперь дальше и сам построю! – сказав, прокричал в уши всем работникам.

– Хватит, если сам стал мастером – сам работай. Мы тоже не из тех, у кого руки чешутся, нам и дома хватает работы, – сказав, птицы улетели прочь.

Голубь опять, проводив помощников, сам внедрился в работу. Ставит щепки то так, то сяк ставит, но не может построить что-то похожее на что-либо. Так стыдится, что не может построить, так стыдится. Опять идет и зовет помочь тех же птиц. Птицы же: «Два раза пошли, два раза ушли, теперь и у себя есть заботы», – сказав, не пришли. А некоторые из них сказали: «Зачем мы стараемся научить мастера».

И так гнездо голубя остается в недостроенном виде. И голубь и голубка до сегодняшнего дня стараются устроить жизнь в этом наполовину недостроенном гнезде, говорят.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 11. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Постройкой гнезда у голубей занимается только самец, а не самка. Он добывает строительные материалы – травинки и деревянные щепки, тонкие сучки и мелкие палочки, чтобы сложить из них потом прочное гнездо. Такие гнезда имеют довольно неаккуратный вид, точнее даже неопрятный. Данная сказка свидетельствует о том, почему это так случается.

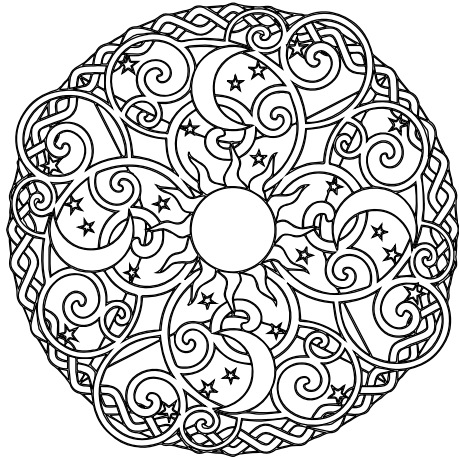


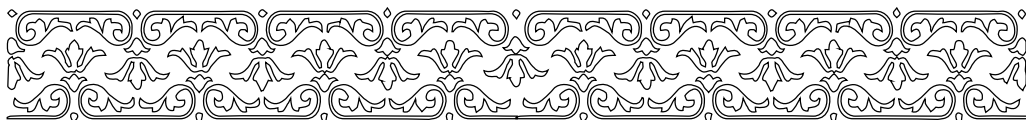


**II. СЕЙИР-ТАМАША
ЭМ СЕЙИР-ТАМАША-ЖИГИТЛИК ЖОМАКЪЛА**

**II. ВОЛШЕБНЫЕ
И ВОЛШЕБНО-ГЕРОИЧЕСКИЕ СКАЗКИ**







ЖАРЫКЪБИЙ

Ол заманла озгъандыла. Андан бери суу къаллай (бир – Ф.Г.) кетген болур, аны тергеген бек къыйынды. Мен ол заманда жаш болсам да, кѳргенлерими унутмай, халкъ арасында хапарлай кюнден-кюннге эсима тюшюре, болгъан затланы кѳзюмю юсюнде тутама.

Энди сиз тынгылагъыз, аны хапарын мен сизге айтып башлайым.

Эртте-эртте, бир заманда жашап болгъан эди патчахладан патчах, жигитледен жигит Арабий.

Арабий уллу болуп, адамлагъа къошулуп башлагъанда, атасы Арабийге, сайлап къыралында, Ариу деген къызыны алгъан эди. Арабийни тоюнда, къууанчында битеу дунюя* жыйылып, бир жылгъа жууукъ къууанч этген эдиле.

Халкъ Арабийни къууанчындан бошагъандан сора, хар ким кеси ишлерине кетген эдиле.

Арабий эрттенликде, акътуякъ атына иер салып, атасы бла саламлашып, жортууулгъа тебиреген эди.

Кетип бара эди тулпар-жигитлиги атасын да озгъан бир.

Къаллай бир жюрюдю, аны ким биледи, алай бир кюн, тау башына чыгъып, тѳгерекге къарай тургъанлай, бир буу чыкъды аллындан. Арабий, садагъын алып, ат юсюнден бууну атхан эди. Буу, къачханын да къоюп, Арабийге огъурсуз къарагъан эди.

– Эй, жигит Арабий! – деди тилленип буу. – Мени кишиге хатам тиймеген эди. Дунюяны башында хар жаныуар да жашаргъа сюеди. Садакъ бла атып, бутуму къыркыгъанса, энди мен таулада жюрюялмазча болдум. Ёзенлеге барсам, итле жашатмазла мени, – деген эди.

Арабий, кѳп сагъыш этип: «Нек атхан болур эдим?» – деп, тѳгерегин тартды.

– Эй, тау жаныуары, антым барды, аллымда тюбегенни атаргъа. Сокъурандым атханыма... Не амал этейим санга?

– Эй, Арабий. Сен манга этеригинги этдинг. Мени да антым бар эди: манга жаугъа жау сюелирге, – деген эди буу, тилленип.

Арабий садакъгъа экинчи окъ салып башлады. Ол заманда буу, тилленип:

– Эй, Арабий, мени атма, кѳкге къарамай, – деген эди.

Арабий кѳкге къарагъанында, ариу чууакъ аязып тургъан кѳк къара булутдан толуп тура эди.

– Не сейир, не алапат! Бусагъатда кюн тийип тура эди, энди уа кѳк къара булутдан толуп къалды! – деп, буу таба къарагъанында, буу къачып кетип тура эди.

* Дунья.



Бууну къачханы ачыу тийип, тегерекге къарай тургъанлай, ташла ташлагъа, таула таулагъа тийип, жер тепген эди.

Арабий не этерге да билмей тургъанлай, къулагъына бир ауаз келди:

– Эй, Арабий! Жарыкъ дунюяны къарангы этдинг, чууакъ кекге булутланы чапдырдинг, кеси ёмюрюнг къарангылыкъда эм мудахлыкъда кетсин! – деп.

Арабий, тегерекге къарап, киши да кёрмей, башын энишге бошлап, юйюне кетген эди.

Арабий элге кирген заманда, халкъ, аллына чыгып, мудахлыгъын кёрюп:

– Не болгъанды санга? – деп соргъан эдиле.

Арабий, жукъ да айтмай, атдан тюшюп, таш юсюне олтурду. Халкъ, Арабийни тегерегине басынып:

– Нек мудахса, Арабий? Санга мудахлыкъ – бизге да мудахлыкъ, санга къууанч – бизге да къууанч, – деп сюелдиле.

– Эй, халкъым, жамауатым!.. Онгмагъаннга хапар сормагъыз. Кёремисиз кекню къара булутдан толгъанын? – деп, башын энишге бошлагъан эди.

Арабийни хапарын эшитип, атасы чабып келген эди.

– Эй, балам, не болгъанды санга? Кёремисе халкъынгы тегерегинге басыннганын? – деп соргъан эди.

– Атам, кёремисе кекде къара булутланы? Мени дунюям къарангы болду: хатасы тиймеген бууну юсюме айландырып тиллендиргенме, – деп, сабий кибик жилигъан эди.

Арабийни кёзлеринден жилимукъ тегюлгенин керебиз, энди къатынчыгъы Ариу къалай тура болур, андан хапар айтайым.

Ариуну гитче заманындан, атасы берип, алтын жюзюк бармагъында.

Ариуну атасы, Арабийге бере туруп:

– Къызым! Арабий узакъ кетип, келмей кеп къалса, жюзюгюнге къарап, Аллахдан тилек эте тур, – деп айтхан эди.

Арабий келмей кеп къалгъанда, Ариу Аллахдан, жюзюкге къарап:

– Арабийни сау келтир, – деп (тилеп – *Ф.Г.*) тургъан эди.

Бир кюн, тюш бола: «Не кеп къалды Арабий!» – деп, къайгъы этип, терезеге барып, терезеден кеп къарап тургъан эди. Келмейди Арабий... Ариуну жюреги къайгъыгъа кетип, борбайлары тутмай, жыгъыла-къоба, ундурукъгъа барып жатхан эди.

– Эй, мени жаратхан Аллах, жюрегим не аман тебеди! Жарыкъ дунюямы къарангы этме! – деп, жюзюкге къарагъанды.

Жюзюкге къарагъанында, Ариуну кёзлерине къан чапхан эди.

– Не болгъанды манга? Санларым тутмайды, кёзлерим жукъ кёрмейди! – деп, кёзлерин сюртюп, кюзюге къарагъанында, жюзюк къаралып тура эди.

Азмы, кепмю турду Арабий келмей, аны келген хапарын эшитгинчи, Ариу, жеринден къопмай, жатханлай тургъан эди.

Арабийни келген хапарын эшитгенде, Ариу, секирип къобуп, терезеге барып, халкъ ичинде Арабийни къарап кёрген эди.

Ол заманда Ариуну жюреги асыры къууаннгандан тау кибик болуп: «Жюзюк мени алдагъанмы этди?» – деп, жюзюкге къарагъан эди. Алай жюзюк биягъы къаралгъанлай тура эди.



«Не болду мени жаным кибик суйген Арабийиме? Жюзюкню кьаралгъаны кетмейди», – деп, мудах болгъан эди.

Алай не мадар этсин? Жюзюкню сыйпап, ариу этсин, жюрекни кьайгъысын кьайры атсын, кекде кьара булутланы кьалай чачсын?

Кеси емрююнде жарыкьлыкьны суйген, дунюягъа ариулугъу айтылгъан Ариугъа кьарасанг, адам танымазлыкь болгъан эди. Барыр эди чабып Арабийге, алай халкъдан уяла эди.

Ариу жюзюкню, кьолундан алып:

– Аллах, бу жюзюкню мындан бек кьаралтмазынгы тилейме! – деп, кюбюрге салгъан эди.

Ариу не бек сакълай эсе да Арабийни, алай Арабийни сагъыш эм кьайгъылыкь башын алып, халкъ ортасында олтуруп тура эди.

Арабийни атасы, кекге кьарап:

– Эй, балам, буйрукъ алай болур эди: мен ол бууну кеп марагъанма, алай атхан огъум тиймеучю эди. Энди, сагъыш этип, кесинги кьыйнама да, юйге барып солу, – деп, юйюне ийген эди.

Арабий юйге кирген заманда, Ариуну кезлеринден акъгъан жилимукълары ешюнюн жибитип тура эди.

Арабий, аны кергенлей, чабып, Ариуну кьучакълап:

– Жанымдан суйген Ариуум, не болгъанды санга? Ким не айтханды санга? – деп, ешюнюне кьысхан эди.

– Сен кетгенли, не кечем, не кюнюм жокъду, санга асыры кьайгъы этгенден. Нек кьалдынг быллай бир? – деп, Ариу кезлеринден жилимукъларын сюртген эди.

– Узакъ кетип, терк кьайталмадым, бу жолдан сора кеп кьала турмам, – деп, Арабий ундурукъгъа олтургъан эди.

Ариу, Арабийни боюнундан кьучакълап:

– Сен кетгенли, кьуру жюзюкге кьарап, кьуру тилек этгенлей тургъанма, – деп, жюзюкге кьарады, алай бармагъында жюзюк жокъ эди.

Арабий, аны эслеп:

– Къайдады жюзюкюнг? – деп соргъан эди.

Ариу, жилигъан да эте, хапар да айта, жюзюкню, кюбюрден алып, Арабийге берген эди.

Арабий, жюзюкню кергенден сора, хапарны барын да айтхан эди.

Озгъан затны кьайтаргъан кьыйынды. Аны ким да биледи. Ол кюнден башлап, Арабий кеси жангыз уугъа баргъанны кьойгъан эди.

Арабий биле эди жюрек мудахлыкьда эм кьайгъылыкьда жашарыгъын, алай кишиге жукъ айтмай эди.

Кеп бармагъанлай, Арабийни атасына ауруу тийип, кеп да жашамай ёлюп кетген эди.

Атасы ёлгенден сора Арабийни боюнуна патчахлыкь тюшюп, бары кьайгъысын унутуп, акъылын кьырал ишине бургъан эди.

Кеп заман жашагъан эдиле. Халкъ хазна кюнню кезюн кермеген эди эм халкъда сабий туугъан жокъ эди. Арабий бек сую эди сабий болурун, алай кеп заманны сабийи болмай жашагъан эди.

– Бу не сейир, не аламат: бюгюн халкъ уллу кьууанчдады, кекде, кьара булутла чачылып, кюн жарыкь тийип турады! – деп, Арабий, кюбюрден жюзюкню алып, жюзюкге кьарагъан эди.



Жюзюкге къарагъанында, жюзюкню тоту кетип, ариу болуп тургъанын кѳрген эди.

Уллу къууанч болуп, олтуруп тургъанлай, адамла, чабып келип:

– Арабий, санга жаш туугъанды! – деп, сюйюнчюлюк айтдыла.

Арабий, къыралын жыйып, уллу къууанч этген эди. Ол къууанчда минг асыралгъан ёгюз, минг асыралгъан гембеш* союлуп, жюз къазан асылып, жылны ичинде уллу къууанч болгъан эди.

Арабий, къууанч бошалгъандан сора, халкъны жыйып:

– Жашыма ат атагъыз, – деген эди.

Халкъ кѳп сагъыш этди, не атаргъа билалмай эдиле. Ол заманда бир къарт киши, къобуп:

– Арабийни жашы туугъан бла халкъгъа жарыкълыкъ келгенди, аны себепли мен жашха Жарыкъбий атайым, – деген эди.

Арабий, секирип къобуп:

– Тюз атагъанса! – деп, къарт кишини къучакълагъан эди.

Арабий, халкъына айланып:

– Халкъым, мени сабийим бла бир кюн туугъан сабийлени жыйыгъыз, ала бирге ёсерге керекдиле! – деп, халкъны чачхан эди.

Халкъ, жайылып, алты сабий алып келген эди.

Ол кюнден башлап, Жарыкъбий бла алты жашчыкъ бирге ёсюп башладыла. Ёсген къалай эте эдиле десегиз – айла, жылла бла угъай, кюнге бла, сагъатла бла ёсе эдиле. Халкъ Жарыкъбийни ёсгенине эм къарыууна, жигитлигине сейирге бара эдиле.

Жарыкъбийни сегиз жылы толгъанда, къыралыны гѳжефчилерин жыгъып башлагъан эди.

Жарыкъбийни сынар ючюн, атасы, къыралны мараучуларын жыйып, кѳкге кюзгю тагъып, садакъ атдырып башлагъан эди. Хар атханны огъу, кюзгюню къатына жанламай, жерге тюше эди. Жарыкъбийни жѳнгерлерини окълары къаршыгъа бара эдиле, алай кюзгюге тиймей эдиле. Жарыкъбий, атасыны атына минип, чабып, ат юсюнден атып, кюзгюню уруп, жерге тюшюрген эди.

Ол кюнден башлап, атасы Жарыкъбийни жѳнгерлери бла бирге уугъа эм жортууулгъа жиберип башлагъан эди.

Мен бюгюн да сейир этеме: Жарыкъбий жѳнгерлери бла уугъа кетсе, атасы уа, халкъны алып, башха жанына уугъа барып болгъан эди.

Ненча кере барды Жарыкъбий уугъа, хар баргъанындан бир буу аллындан чыгъып болгъан эди. Атаргъа башласа:

– Эй, Жарыкъбий, атма, мен да жашаргъа сюеме, – деп тилленип, къачып болгъан эди.

Жарыкъбий, бууну тилленгенин кѳрсе, атмай къоюп, юйюне къайтып болгъан эди.

Жарыкъбийге онбеш жыл толгъанда, атасы Арабий, халкъны жыйып, къууанч этип:

– Энди къаллай бирге жортууулгъа барабыз десегиз да, эркин этеме! – деген эди.

Къууанч бошалгъандан сора, Жарыкъбий жѳнгерлери бла бир жанына уугъа, атасы халкъ бла бир жанына кетген эдиле.

* Гаммеш.

Ол кюннге дери Жарыкъбийни атасы бир кюннге ийиучю эди.

Бара эдиле уллу ёзенде жети атлы, сауутдан, сабадан юслери толу, башчылары уа Жарыкъбий эди. Жетиси да ант этген эдиле, алларында тюбегенни сау иймезге.

Азмы, кёпмю жюрюдюле жашла, алларына жукъ тюбемей эди. Жашлагъа ол кыйын тийип, бир кюн кюн батаргъа бир уллу тенгизни жагъасына келген эдиле. Жашла, атларын тохтатып, тегерекге къарай тургъанлай, алларындан бир буу къачхан эди.

Жарыкъбий алларында, жашла бууну къуууп башладыла.

Уллу ёзенде бууну кёп къуууп арытхан эдиле. Арыгъан буу, артына къарап:

– Эй, Жарыкъбий, не хата этгенме мен сизге? Нек къууасыз мени? – деп тилленген эди.

Ол заманда Жарыкъбий:

– Ант этгенбиз тюбегенни сау иймезге, сени да иерик туююлбюз! – деп селешген эди.

– Эй, Жарыкъбий, кёкге булут чабып башлагъанды. Атанг, бир санымы ууатып, тауладан ёзенлеге къыстагъанды, сен а ёзенден тенгизге къыстайса! – деп тилленген эди буу.

Жарыкъбий, бууну тилленгенине да къарамай, бууну къуууп башлагъан эди.

Арыгъан буу, ёнге мадарын тауусуп, жауладан къутулур ючюн уллу тенгизге секирген эди.

Жашла, бууну ызындан кёп къарап туруп, къайсы чабакъчыны къайыгъы болур эди, бир къайыкъ табып, къуууп башлагъан эдиле.

Таулада-ёзенледе жюрюрге туугъан жаныуар сууда жюреги айтханча жюзала болмаз эди, жашла, къайыкъ (бла – Ф.Г.) жетип, бууну, тутуп, къайыкъ ичинде кесген эдиле.

Жашла бууну кесип эм союп бошаргъа, кеч, къарангы болгъан эди. Жашла умут этген эдиле, ол кече тенгизде къалып, эрттенбла артларына къайтыргъа. Алай ала мурат этгенча болмагъан эди: кече уллу жел келип, тенгиз, чайпалып, толкъун болуп, жашланы къайыкъларын алып кетген эди.

Жашла, кечени узуну къайдагъыларын билмей, къайыкъ тюбю башына бурулады деп къоркъуп, тангларын атдыргъан эдиле.

Танг атып, къарагъанларында, суудан башха жер кёрюнмей эди. Ненча жыл жюрюдюле тенгизни ичинде, ашлары – буу эт, аны да чийлей ашаргъа юреше эдиле.

Жарыкъбий, халны тап кёрмей, къайдагъыларын билир ючюн тегерекге къарай эди, алай не бек къараса да, билалмагъан эди. Жашла, асыры кёп жюрюгенден арып, ашлары да тауусулуп: «Къайры элтсе да, элтсин», – деп, къайыкъны бошлап къойгъан эдиле.

Суу, жашланы элтип барып, суу ортасында бир жерге чыгъаргъан эди.

Жарыкъбийден сора, аягъы юсюне сюелип, къайыкъдан чыкъгъан адам болмады къарыусуздан эм ачдан.

Жарыкъбий, сауутун, сабасын алып: «Бир зат тапсам», – деп кетген эди.

Айлана-журюй кетип, ууакъ къанатлыланы ёлтюрюп, къайтып келе, бир уллу къуш уягъа тюбеген эди.



Къушну уясындан учуруп, уягъа къарагъанында – ичи жумуртхадан толу. Жарыкъбий, жумуртхаланы да, ёлтюрген къанатлыланы да алып, жёнгерлерине келген эди.

Бары да, олтуруп, къанатлыланы тюклерин жулкзуп, чийлей этлерин ашап, суусап орунуна чий жумуртхаланы ичген эдиле.

Кёп заманны солудула ол жерде, ашлары-суулары – къанатлыла эм къуш жумуртхала, кеслери да, биширип ашаргъа от болмай, чийлей ашап болгъан эдиле.

Бир кюн Жарыкъбий, тегерекге айлана, къанатлыла да ёлтюрюп, къайтып келе, сагъыш этген эди: «Энди бу сууну ортасында суу болгъан, халкъ жашагъан жер узакъ болмаз», – деп.

Къайтып келип, жёнгерлерине айтып, бары да, къайыкъгъа минип, жолгъа чыкъгъан эдиле.

Кёпмю-азмы жюрюдюле, болсада чыкъгъан эдиле тенгизни жагъасына. Жарыкъбий, таш юсюне минип, узакъда бир уллу къалаланы къарап кёрген эди.

Ол къалалагъа жашла, кюн бата, жетип, ичине кирип, киши да тапмай, ол кече анда къалгъан эдиле.

Танг атып, эшикке чыгып къарагъанларында, тегереклерин аскер къуршалап тура эди.

Жарыкъбий, аскерге иги къарап:

– Багъалы жёнгерлерим, бу аскерге къарайма да, адам сыфатлы туююдюле. Атам айтыгъу эди, Маймул къырал барды деп. Эштада, биз ары тюшген болурбуз, – деген эди.

Жарыкъбийге жашла:

– Энди не этерикбиз? – деп соргъан эдиле.

Жарыкъбий, кёп сагъыш этип:

– Энди была кёпдюле. Биз былагъа не этерикбиз? Кюрешген этмейик да, айтханларын этейик, – деди.

Жарыкъбий, жашланы алып, къаладан чыкъгъан заманда, маймулла:

– Адам улу! Адам улу! – деп, чабып, тегереклеринден алгъан эдиле.

Жашланы тутуп, патчахларына элтген эдиле.

Патчах, жашланы олтуртуп:

– Кимди таматагъыз? – деп соргъан эди.

Жарыкъбий, секирип къобуп:

– Менме тамата. Патчахладан патчах, жигитледен жигит Арабийни жашыма. Была да жарма патчахланы жашлары. Артыкълыкъ этсегиз, унамам! – деп сюелди.

Патчах жашлагъа:

– Сиз адам улуласыз. Къайдан чыкъдыгъыз бери? Мен жашагъан дуньяда адам улуну аягъы басмагъанды бизни жерлеге, – деп соргъан эди.

Ол заманда Жарыкъбий патчахха хапарын эм кёрген къыйынлыкъларын хапарлагъан эди. Патчах, жашланы жигитликлерин билип, кесине къуллукъ этдирирге мурат этген эди.

– Жарыкъбий, мени къыралым Асланла бла урушханлы сегиз жыл болады, бир бирни хорлаялмайбыз. Сени аскер тамата, жёнгерлеринги сени кичилеринг этеме, – деген эди.

Ол заманда жашла, ыразы болуп, патчахха сёз берген эдиле, жанларын-къанларын аямай кюреширге.

Да, багъалы тынгылаучула, жашланы хапарларын тыяйыкъ да (аланы аскер таматала этдик), Жарыкъбийни атасы Арабий не ишлей болур, анга къайтайыкъ.

Арабий, халкъын алып, кюн батхан жанына уугъа кетген эди. Кёп жерлеге айланып, ызына къайтып келе, кёкге къара булутланы чапханын кёрген эди.

– Эй, жамауатым, бизге мудахлыкъ эм къайгъылыкъ келгенди: кёкню къара булут алып башлагъанды. Женгил юйлерибизге жетерге керекбиз! – деген эди.

Халкъ, бек уллу мудах болуп, не этерге билмей къалгъан эдиле.

Арабий, юйге келип, Ариугъа:

– Жюзюкню бир чыгъарчы. Кёкню къара булут алгъанды, жюзюкге бир къарайыкъ, – деген эди.

Ариу жюзюкню алып къарагъанда, жюзюкню тот басып тура эди. Жилиау-сыйыт болдула.

Экинчи кюн патчах Арабий, халкъны жыйып:

– Бизни жашларыбыз къыйынлыкъгъа тюшгендиле, биз аланы излерге керекбиз. Аны себепли уа он атлы, бюкюнден башлап, излерге чыгъаргъа керекди, – деп, халкъгъа сёлешген эди.

Халкъ, Арабийни айтханын къабыл кёрюп, он атлы «бу-ол» деген жашладан къурап, жолгъа хазыр этген эдиле.

Он атлы жолгъа чыгып башлагъанда, халкъ:

– Жашланы тапмай къайтмагъыз! – деп, къаты айтхан эдиле.

Халкъ чачылгъандан сора, Арабий, юйге келип, жюзюкню къолуна алып, къарап, кёп тургъан эди. Сора, жюзюкню кюбюрге салып, Ариугъа:

– Мен кесим излерге бармай амалым жокъду. Не жашланы табарма, неда бууну табарма. Бууну тапсам, ол манга бир зат билдирир, – деп, атына минип кетген эди.

Жер чачды, жер бузду, алай ёзенледе бууну тапмады.

– Эштада, буу таулагъа кетген болур, – деп, уугъа барыучу тауларына кетген эди.

Кёп айланып, кёп жүрюп, ол бууну атхан жерине келген эди. Атдан тюшюп, тегерекге къарап, жукъ да кёрмей, таш юсюне олтуруп тургъанлай, бир таууш келген эди:

– Эй, Арабий! Баласындан айырылгъан игимиди? Аны сен да бир сына! – деп.

Арабий тегерекге къарады, болсада, жукъ кёрмедиди. Сора Арабий, ол таууш чыкъгъан жанына айланып:

– Ким эсенг да, тилейме, жангыз жашымдан хапар айт! – деп къычыргъан эди.

Бир кесекден биягъы ауаз келди:

– Къайт юйюнге! Санга не хапар? Баламы къабып, энтта да хапар сураед менден... Бар юйюнге, чыкъма излей балангы! – деп.

Не этерик эди Арабий? Атына минип, юйюне къайтхан эди.

Арабий не бек излесе да, къайгъы этсе да, къалай тапсын жашланы?

Тынгылагъыз! Жашланы хапарларын мен сизге айтайым.



Жарыкъбий, аскер тамата болуп, кѣп заманны маймул аскерни урушха хазырлап тургъан эди. Урушуп башлагъанда, жѣнгерлери бла урушха кирип, хорлаула алып чыгып болгъан эдиле.

Уруш, тохтамагъанлай, бир бѣлек жылланы баргъан эди. Эки жаныны патчахлары, жарашып, юч жылгъа дери урушну тыяргъа деп оноу этген эдиле.

Жарыкъбий, уруш тохтагъандан сора, жашланы алып, эрикгенин кетерирге жортуулгъа чыгып болгъан эди.

Бир кюн, кетип бара тургъанлай, жол жанында бир сын таш кѣрген эдиле.

Жарыкъбий, сын ташны къатына барып, жазуларын окъугъанда, алай чыкъгъан эди: «Адам улу бу жерлеге келсе, кюн батхан жанына къачаргъа кюрешсин», – деп.

Жарыкъбий, жѣнгерлерине къайтып, хапарны айтхан эди. Жашла, ариу кырдыкда олтуруп, къалай къачарларыны юсюнден оноу этген эдиле.

Жарыкъбий жашлагъа:

– Энди къайтайыкъ да, урушну башлайыкъ, не кече, не кюн демей, урушну бардырайыкъ. Аскерле арырла. Ол заманда кече бла къачып кетербиз, – деп (айтды – *Ф.Г.*).

Быллай оноу этип, жашла артларына къайтхан эдиле.

Къачхан къалайны этерге тюшерикди десегиз, асланланы юсю бла къачаргъа керек эдиле. Аны себепли, жоллары бек къыйын боллукъ эди.

Артха къайтхандан сора Жарыкъбий, патчахха барып:

– Асланла билмей тургъанлай, урушну башлап, хорлап къояргъа керекбиз, – деп сѣлешген эди.

Патчах, Жарыкъбийни айтханын къабыл кѣрюп, урушну башларгъа эркинлик берген эди. Олсагъатдан окъуна урушну башлап, не кече, не кюн деп къарамай, урушну он кюнню ичинде бардыргъан эдиле. Эки жаныны аскери, арып, ырмах болуп, олтургъан жерлеринден къобалмай башлагъан эдиле. Жарыкъбий урушну тыяргъа буйрукъ берген эди.

Кече, эки жаныны да аскери жукълап тургъанлай, жашла къачып кетген эдиле.

Асланланы юслери бла къачып ѳтгенлеринден сора, аскер жашланы къачханларын билип, ызларындан къуууп башлагъан эдиле.

Бир бирге жау аскерле бир болуп, жашла къачып, ала къуууп, кѣп заманны баргъан эдиле.

Маймулла, жашланы тутсала, ѳлтюрюрге, асланла, тутсала, – таматагъа салыргъа деп къууа эдиле.

Жашла, уруш эте да, къача, уруш эте да, къача, кѣп жерледен ѳтген эдиле, алай ачдан эм суусапдан баралмай, онгсуз болуп, эки жаш ѳлген эди. Дагъыда иги кесек баргъанлай, экиси ѳлген эди. Биркюнлюк жолну къачхандан сора, дагъыда бир жаш ѳлген эди.

Жарыкъбий, жангыз жѣнгери бла уруш эте да, къача, уруш эте да, къача, бир уллу суугъа жетген эди. Сууну кенлиги, бир жанындан къарасанг, бир жаны кѣрюнмей, баргъанын кѣз тутмагъан, аллай бир суу эди. Эки жаны къая эди.

Жарыкъбий, ишни тап болмагъанын кѣргенде:

– Жауланы къолуна тюшюп ѳлгенден эсе, суу ичинде ѳлсек игиди. Ызымдан кир, артынга-аллынга къарамай! – деп, суугъа секирген эди.

Суу, асыры огъурсуздан, жашлагъа бир да онг бермей, алып кетип бара эди. Жарыкъбий: «Жёнгерим къалай бола болур?» – деп къарагъанында, жёнгерини, суу хорлап, юсюнде быстырлары жибип, суу тюбюне батып баргъанын кёрген эди.

Жарыкъбий терк окъуна, суу ичинде быстырларын тешип, суугъа алдыргъан эди. Тулпар эм жюзгюч Жарыкъбий, суу бла жагъалаша, кёп баргъан эди, алай чыгъаргъа жер тапмай эди, сууну жагъалары къаядан.

Жарыкъбий, узакъдан къарап, сууну жаула жанында болмай, бирси жанында къаядан юч терек салынып, бутакълары суугъа жете тургъанларын кёрген эди.

Жарыкъбий, не къарыуун да салып: «Энди ол тереклеге жеталсам», – деп, жюзюп башлагъан эди.

Суу асыры женгил баргъандан, бир да онг бермей, Жарыкъбийни алып, экинчи терекден ётдюрген эди.

Жарыкъбий: «Энди бу терекге жеталмасам, суу элтирикди», – деп, бары къарыуун салып, кесин терек таба атхан эди.

Адам къоркъса, иш секире болур: Жарыкъбий, ючюнчю терекни бутакъларына къолу аз жетгенлей, секирип, бутакъларындан къаты тутхан эди. Кюреше-кюреше кетип, жыгъылыргъа да аздан къалып, сууну жагъасына чыкыгъан эди.

Суудан чыгып къарагъанында, сууну ол жанында маймулла эм асланла, суугъа кирирге къоркъуп, сууну боюну бла чабып келгенлерин кёрген эди.

Жарыкъбий, асыры арыгъандан къобалгъан да эталмай, баууру бла сюркелип, терек тюбюне баргъан эди. Тёгерегине къарап, жёнгерлерин кёрмей: «Мени хатамдан жёнгерлерим ёлдюле, энди мен кесим жангыз танымагъан жерледе къайры барайым?» – деп, жилягъан эди сабий кибик.

Жарыкъбий, мудах болуп, башын сагъыш алып, терек тюбюнде жукълап къалгъан эди.

Багъалы тынгылачула! Жарыкъбийни эндиге дери кёрген къыйынлыкъы бош эди, къыйынлыкъ кёрген эсе, жёнгерлери бла бирге кёргенди. Энди уа жангыз кесиди, болушургъа эм сёз жёнгерге адамы жокъ, кёрлюк къыйынлыкълары уа аллындады.

Жарыкъбий, тюшонде не кёрген болур эди, сескенип уянган эди. Алгъын замандача, жёнгерлери бла оноу этерик болур эди, быстырларын киерик болур, алай жёнгерлери ёлюп, быстырларын суу элтген эди.

Жарыкъбий, бир бёлек кюнню аш ашамай, къайры барырын билмей, бек ач болуп, къарыусузгъа таяннган эди.

Ач болуп, къарыусузгъа кетип башлагъанда, къанатлыланы уяларын табып, жумуртхаларын иче, учалмагъан къанатлы балаланы ашай, бир бёлек заманны айланнган эди.

Бир кюн, къарыусузлугъу хорлап, олтуруп: «Энди мен къайсы жанына барайым? Эштада, суу баргъан жанына барсам, адам жашагъан жерге тюберме», – деп акъыл этген эди.

Терек тюбюнде кёп солуп, ол акъыл бла жолгъа чыкыгъан эди. Кеч болса, жауун жауса, терек тюбю – юйю, ач болса, къанатлыла – ашы, жумуртхала суу болуп, кёп жүрюген эди.

«Дунюяны башында эр аягъы, ат туягъы жетмеген жер болмаз, Аллах буюрса, бу къыйынлыкълардан да къутулурма», – деп, кеси-кесине таукел этдире эди.



Кёп заманны жюрюю, кёрген кыйынлыклары – башында, кёрлюклери уа – кезюне кёрюне жюрюю эди.

Азмы-кёпмю жюрюю, бир кюн бир уллу кьюм ёзеннге чыкыгъан эди.

«Энди бу ёзеннге чыкысам, аш тапмай (кыалырма – *Ф.Г.*), андан эсе артыма, агъач ичине кыайтайым, ким биледи, кыаршыда адам жашай эсе, агъачха бирле келирле», – деп, артха кыайтыргъа акыыл этген эди.

Кыалай этерге билмей тургъанлай, узакъда бир кыарелдиле кёрюндюле. Жарыкбий: «Ол кыарелдиле не зат эселе да, алайгъа барайым», – деп, кыычыра да, бара, кыычыра да, бара, кыарелдилеге жетген эди.

Ол кыарелди уа саудюгерчи эди. Кеси бир тюеге минип, сегиз тюени хапчукдан жюклеп бара болгъан эди.

– Жол болсун! – деп, Жарыкбий саламлашхан эди.

– Сау бол. Жол Аллах берсин! Аллах-Аллах, кюн батханны адамы, кюн чыкыгъаннга кыайдан чыкыгъанса? – деп, сейир этип саламлашхан эди.

Жарыкбий, асыры кыарыусуз болгъандан, жууап эталмай, жыгылып, эси аугъан эди.

Саудюгерчи, Жарыкбийге эс жыйдырып, ач болгъанын билип, азыгъындан аллына салгъан эди. Жарыкбийни ашагъан ашы ичине жарашмай, ашагъанын кыусуп бара эди.

Саудюгерчи Жарыкбийни, тюеге миндирип, юйюне келтирген эди. Кеси, шахарыны ичинде болгъан усталаны келтирип, Жарыкбийни, багып, сау этген эди.

Жарыкбий иги болгъандан сора, саудюгерчи, кесине баш этип:

– Жарыкбий, ма эгечлерим, бюгюнден арысында эгеч бла кыарындаш боласыз, бизде адет былайды, – деген эди.

Сора бир кюн, халкыны жыйып, Жарыкбийге кёрген кыйынлыкларын айтдыргъан эди. Жарыкбий бары хапарын айтып бошагъанда, халкыны асламы тёзалмай жилягъан эдиле.

Кесини юйюнде жашагъанча, ол юйде кёп заманны жашагъан эди. Саудюгерчи Жарыкбийни не базаргъа, не шахаргъа жибермей эди. Алай бир кюн Жарыкбий, тилеп, базаргъа барыргъа эркинлик алгъан эди.

– Да, Жарыкбий, бизде тышыннан келген адамланы алдагъан бек этиучююле, биргенге кызым да барсын, – деген эди.

Жарыкбий базаргъа тебирегенде, саудюгерчи:

– Кыайдан да кеси жангыз кыойма Жарыкбийни! – деп, кызына айтхан эди.

Жарыкбий кыыз бла базарда кёп айланган эдиле. Алай Жарыкбий кыайры барса да, бир адам, атха да минип:

– Манга юч кюннге жалчыгъа ким келсе, кеси кётюрген бир алтын берликме эм кыызларымы сюйгенин! – деп кыычырып айлана эди.

Саудюгерчини кызы Жарыкбийни, кёп айлангандан сора, юйге алып кетген эди.

Юйге кыайтып келгенде, кыыз атасына бары хапарны айтхан эди. Ол заманда саудюгерчи Жарыкбийге:

– Кыайдан да алдатма, ол, сени хапарынгы эшитип, андан айланады, – деген эди. – Анга жалчыгъа баргъан сау кыайтмайды.

Ненча баргъан эсе да Жарыкбий базаргъа, ол адам кыуру ызындан айланганлай (тура – *Ф.Г.*) эди. Саудюгерчини кызы, Жарыкбийни кыатындан кетмегенлей, сакылап жюрюучю эди.

Бир кюн биягы базаргъа чыгыш айлана тургъанлай, Жарыкъбийни аллындан ол атлы чыкъгъан эди.

– Манга юч кюннге жалчыгъа ким келсе, анга кеси кётюрген бир алтын берликме! – деп кычыра эди.

Жарыкъбий, кызыны сылтау бла бир жанына жиберип: «Мен мынга жалчыгъа барсам, кёрген кыйынлыкълардан бекми кыйналлыкъма?» – деп:

– Мен барама! – деп, сёз берген эди.

Саудюгерчини кызына ким айтхан болур эди? Къыз чабып келгенде, Жарыкъбий ол адам бла жараша тура эди хакъны юсюнден. Къыз жилиды, чачын, башын жыртды, алай не этерикди, иш битгенден сора.

Жарыкъбийге:

– Тамбла, хазыр болуп, былайгъа келирсе, – деп, ол адам атха минип кетген эди.

Юйге келип, къыз хапарны айтханда, къалмай, бары да бушуу-сыйыт болдула эм: «Барма!» – деп, кёп кюрешген эдиле. Алай Жарыкъбий:

– Мени бир айтхан сёзюмю артха алмазгъа антым барды, – деп, кесин хазырлап башлагъан эди. – Къоркъмагъыз, жукъ да болмаз, кёп алтынла алып къайтырма хакъыма, сиз хайт деп туругъуз! – деп, саламлашып кетген эди.

Саудюгерчи, ол кече жукъламай, тангын атдыргъан эди. Алай бишген ишге не этерик эди? Этерик эсе да, Жарыкъбий къалыргъа унамагъан эди.

Эрттенликде Жарыкъбий, бары бла да саламлашып, кетип башлагъанда, саудюгерчи, къучакълап:

– Мен сени кеси балам этген эдим, кетесе, Аллах жол берсин. Сакъ бол, аман адамды, биргесине баргъан сау къайтмайды, – деп юйретип, жолгъа атландыргъан эди.

Жарыкъбий, айтылгъан жерге келип, сакълап тургъанлай, ол адам, атха минип, бир атны да башындан тутуп келген эди.

Жарыкъбийни, атха миндирип, ол адам юйюне алып кетген эди. Юйге келип, атдан тюшюп, юйге киргенде, юйде жюз ариу къыз олтуруп тура эдиле. Къызланы аталары Жарыкъбийге:

– Хайда, сен сайлагъан къыз сениди, а тамбла уа мен эртте къобуп келирме, – деп, юйден чыгып кетген эди.

Жарыкъбий барындан да ариу кичи къызын сайлагъан эди. Ол аны сайлагъанлай, къалгъан къызла чыгып кетген эдиле.

Жарыкъбий къыз бла кёп олтургъан эди, болсада, тёзалмай:

– Сен биле болурса, муну (атангы) юч кюннге этиллик не иши барды? – деп соргъан эди.

– Ай, ахшы жаш, мен кесим да билмейме, не иш эсе да. Алай аны бла кетгенле сау къайтмайдыла, атам а алтындан тюелени жюклеп къайтады, – деген эди. – Сен мени атам бла барма, кече бла къачайыкъ да, кетейик. Мен жолланы уста таныйма, – деп, жашны къысхан эди.

Алай Жарыкъбий боюн салмагъан эди.

Танг атар ууахтыда:

– Эй, къонакъ, тур, кеч болабыз! – деп, таууш чыкъгъан эди.

Жарыкъбий, секирип къобуп, кийинип башлагъанда, къыз:

– Мен да сизни бла барама, – деп, секирип къобуп, боюнундан къучакълагъан эди.



Къызны да бир жанына тюртюп, эшикге чыкыгъанда, ол адам, атха минип, хазыр болуп тура эди. Жарыкъбий, секирип, атха минип тебиреген эди.

Ючюнчю кюнлерине бир уллу къаяны тюрбюне келген эдиле. Атладан тюшгенден сора, Жарыкъбийге:

– Ма, бу бичакъны ал да, атынгы кес да, терисин союп, терини ичине кир. Сора бир уллу къуш, келип, сени кетюрюп, къаяны башына чыгъарыр. Къаяны башында алтынла барды. Мен санга байракъны бир кере булгъасам, алтынланы ат, экинчи кере, кепдю деп, эки кере булгъарма. Ол заманда биягъы териге кир, къуш сени жерге тюрюрюп, – деп, бичакъны берген эди.

Жарыкъбий, бичакъны алып, атыны боюнун кесип, терисини ичине кирген эди. Ол териге киргенлей, киши, терини тигип, бир жанына кетген эди.

Бир заманда бир уллу къуш, келип, тырнакъларын териге бегитип, кетюрюп кетген эди. Къуш, Жарыкъбийни тегерекге айландырып, къаяны башына чыгъарып, жерге салгъан эди.

Жарыкъбий, терини бичакъ бла жырып, териден чыкыгъанда, бир уллу къуш учуп кетип бара эди. Къуш, къанатларын жайса, кюнню кезюн жаба эди.

Жарыкъбий къаяны башындан къарагъанда, къаяны тюрбюндегиле гумулжукла кибик гитчеле керюннген эдиле.

Къызыл быстырны ол адам булгъагъандан сора, Жарыкъбий алтынланы атып башлагъан эди.

Жарыкъбий: «Бола болмазмы?» – деп къарагъанында, ол адам кетип бара тургъанын керген эди.

Жарыкъбий, чабып, терини ичине кирип, къуш къачан келип тюрюрюп деп сакълап тургъанлай, къуш, келип, териге къоннган эди. Жарыкъбий не къадар сакълагъан эсе да, къушну мураты жокъ эди жашны тюрюрюрге, тырнакъларын къаты бегите баргъан болмаса.

Къуш, тырнакълары бла къаты тутуп, жуху бла терини жыргып башлады, ол заманда Жарыкъбий, бичакъ бла терини жырып, къушну ичине бичакъны сугъуп елтюрген эди.

Жарыкъбий кеп айланды, кеп жюрюдю, алай адам сюекледен башха жукъ кермеген эди.

– Бу къуш, кереме да, адамланы сау къайтармагъан, – деп, къушну этин терисинден башха этип, кесине азыкыгъа алгъан эди.

– Къыйынлыкыгъа туууп, къыйынлыкыда ёсгенме эм къыйынлыкыгъа тюрбедим, энтта да къутулурма, – деп, Жарыкъбий, биягъы чий ашланы эм хансланы ашап, кече таш тюрлеринде къалып башлагъан эди.

Ненча жыл жашады, къайры барырын билмей эм жол тапмай къаядан тюршерге, юсю-башы жыргылып, къарынын тойдуруп ашаргъа аш тапмагъанлайын.

Бир кюн, тегерекге къарай жюрюй келгенлей, бир ийинчге* жолчукыгъа тюрбеген эди.

– Менде насып бар эсе, бу жол мени къаядан тюрюрюп, жокъ эсе уа – сюеклерим ташла ортасында къалырла, – деп, Аллахдан болушлукъ излеп, жолчукну тебиреген эди.

* Иничке.

Бичагъы бла жолну кенгерте, кюреше-кюреше кетип, къаядан тышген эди. Къаяны туюбу – уллу, терен эм къалын агъач, ичи – огъурсуз жаныуарладан толу, чапханын къорууларгъа – саууту жокъ бичакъдан сора.

Жарыкъбий, кюндюз тегерекге айлана, кесине аш мадар эте, кече болса уа, терекле башларына минип, тангын атдырып жашагъан эди.

Жарыкъбий агъач ичинде къаллай бир жашагъан эсе да, тюбеген жаныуарны сау иймегенди, ненча жаныуар ёлтюрген болур, аны саны жокъду. Кеси жангыз танымагъан жерледе эм къалын агъачлада тулпар кибики жюрюген эди.

Бир кюн, кетип бара тургъанлай, бир жолчукъгъа тюбеген эди. Ол жолчукъ бла бара-бара кетип, уллу ёзеннге чыкъгъан эди. Жарыкъбий, ёзеннге чыгып къарагъанында, узакъда бир къалала кёрген эди.

– Энди ол къалалада адам жашай болур, – деп, Жарыкъбий къалалагъа келген эди.

Къалаланы къатына келип къарагъанда, бир къарт киши олтуруп тура эди. Жарыкъбий, къарт кишини къатына барып:

– Салам алейкум, – деп саламлашхан эди.

Къарт киши, ёрге къобуп:

– Алейкум салам! Адам улу, къайдан чыкъдынг? Мен жюз жыл жашайма былайда, адам улуну аягъы басып кёрмегенме, – деп, бек сейир этип, къатына олтуртхан эди.

Къарт киши, сейирсинип, Жарыкъбийге кеп хапар соргъан эди. Жарыкъбий кёрген къыйынлыкъларын барын да къарт кишиге санагъан эди.

Къарт киши, Жарыкъбийни юйге элтип, аллына аш салгъан эди, алай ашагъанын къусхан болмаса, ичинде къалгъаны жокъ эди. Къарт киши, Жарыкъбийни неден ауругъанын билип, бир бёлек заманны багып, сау этген эди.

Жарыкъбийни кесини баласыча кёрюп, къайдагъы ырысхысын да кёргюзтүп, кесине жашаргъа башха къала да берген эди.

Жарыкъбий, суйген жерине бара, суйген терек бахчадан кегет ашай, бары кёрген къыйынлыкъларын да унутхан эди. Алай эркинликде, ахшы жашауда жашагъанлыкъгъа, башында сагъышы эм къайгъысы кетмей эди.

Бир кюн къарт киши, Жарыкъбийни чакъырып:

– Балам, мен битеу дунюяны башында къанатлыланы таматасыма. Къанатлыланы жыйылыулары боллукъду, мен ары бармай, амалым жокъду. Сен а хайт деп тур, мен келгинчи. Къанатлыладан, сиз жашагъан жерледен хапар билген болса, сурарма, – деп кетген эди.

Жарыкъбий, кеси жангыз терек бахчалагъа барып, эрикгенин кетерирге айлана тургъанлай, кекде юч къушну учуп келгенин кёрген эди.

«Энди бу къушла биз жашагъан жерледен болуп, къарт киши манга жибергенди», – деп къууанган эди.

Алай, башына башха зат кирип: «Эштада, къартны мында болмагъанын билип, шаудандан суу ичерге келе болурла. Бугъуп, быланы бир сынаим», – деп, терен букъгъан эди.

Къушла, келип, шаудан кёлню жагъасында къоннган эдиле. Жарыкъбий эслеп къарагъанында, къуш къапландан юч ариу къызны чыкъгъанларын кёрген эди. Къызладан бири барындан да ариу эди.



– Адам улуну жыйысы барды! Келигиз, кѳуш кѳапла­рыбызгѳа кирейик! – деп сѳюелген эди.

– Кет, сен аман ѳлгюн! Сени ючюн ѳле болур адам улу! Кѳарт киши мында жокѳду, сора кѳайдан чыгѳарыкѳды адам улу бери? Тешин да, жууун! – деп, суугѳа секирген эдиле.

Ол заманда Жарыкѳбий: «Адам улун сѳюймей эсенг», – деп, кичи кѳызны кѳуш кѳабын сермеп алып кѳолтукѳгѳа, болгѳан эди.

Тамата кѳыз Жарыкѳбийден:

– Кѳуш кѳабын бер, – деп, кѳеп тилеген эди, Жарыкѳбий кѳуш кѳапны берирге унамады.

Ол заманда кѳыз:

– Кѳуш кѳапны бермей эсенг, кет, кийинме кѳой, – деп тиледи.

Жарыкѳбий, кѳуш кѳапны да алып, бир жанына кетип, кѳызланы кийинме кѳойгѳан эди. Кѳызла, жууунуп бошاپ, кийинип, Жарыкѳбийни кѳатына келген эдиле.

Жарыкѳбий бла кѳеп айландыла:

– Адам улу киеучюгюбюз, – деп кѳубултханлай. – Кел, киеу, олтуруп солугѳан да бир ѳтейик, – деп, Жарыкѳбийни кѳалалагѳа келтирип олтургѳан эдиле.

Кѳалалада олтуруп, хапар айта келип, Жарыкѳбийни жукѳлатып, кѳуш кѳапны алып, кѳызла кѳачып кетген эдиле.

Жарыкѳбий уянып кѳарагѳанда, кѳуш кѳап да жокѳ, кѳызла да жокѳ.

– Мен кесими кѳызлагѳа хорлатдыргѳанма! – деп, кесин тѳююп, ырмах ѳтип жатхан эди.

Жарыкѳбийни, кеси-кесине асыры чамланнгандан, бий сѳфаты кѳалмай, кеси да аманнга кетип тургѳанлай, кѳарт келген эди.

– Аллах-Аллах, не болгѳанды санга мен кетгенли? Ашмы жокѳ эди ашаргѳа? – деп кѳутургѳан эди.

– Бары да бар эди, алай кесими осаллыгѳымдан кѳызлагѳа хорлатханма, – деп, болгѳан затланы хапарларын айтхан эди.

– Кѳоркѳма, балам, бары да иги болур. Мен кѳанатлылагѳа соргѳанма да, сен жашагѳан жерледен хапар билген жокѳду. «Энди жыйылыугѳа билип келигиз», – деп, боюнларына салып жибергенме, – деген эди кѳарт.

Кѳарт киши Жарыкѳбийни, багѳып, сау ѳтип, ѳкиси да хар керекли затлагѳа кѳарай, ата-бала болуп жашап тургѳан эдиле.

Биягѳы заман жетгенде, кѳарт киши, жыйылыугѳа кетерге хазыр болуп:

– Хайт де, балам, кесинги кѳыйнама, – деп кетген эди.

Жарыкѳбий кеси жангыз терекле ичинде айлана тургѳанлай, биягѳы юч кѳушну учуп келгенлерин кѳрген эди. Жарыкѳбий: «Биягѳы кѳушла болурла», – деп, тереннге букѳгѳан эди.

Кѳушла, келип, шауданны кѳатында кѳоннган эдиле. Кѳуш кѳападан юч ариу кѳыз чыгѳып, тешинип башлагѳан эдиле. Ол заманда биягѳы кѳыз, тѳгерекге кѳарап:

– Адам улуну жыйысы барды, – деп тохтагѳан эди.

Абадан кѳыз, кичи кѳызгѳа кѳутуруп:

– Ариу жанса да, адам улу сени сакѳлап турмаса уа! Тешин да, кир суугѳа! – деп, кеси тешинип, шауданнга секирген эдиле.

Не ѳтерик эди кичи кѳыз? Сѳюсе-сѳюмесе да, тешинип, суугѳа кирген эди.

Жарыкъбий, аланы суугъа кирме къююп, чартлап чыгъып, къуш къапларын алып, къолтукъгъа салгъан эди.

Къызла кѣп тиледиле:

– Къуш къапланы бер, ашыкъгъан этебиз, – деп, болсада, жаш тилегенлерин къулагъына да алмагъан эди.

– Да, ахшы жаш, биз сууда ёсген жаныуарла туююлбюз, арлакъгъа кет да, бизни кийинме къой, – деп, тилеген эдиле.

Жарыкъбий, бир жанына кетип, къызланы кийинме къойгъан эди.

Жарыкъбийни къызла, тегерегинден алып:

– Киеуюбюз, – деп къубултуп, кѣп айланган эдиле.

Кѣп айланып, арыгъан да этип, теректюбюне олтурдула. Олтургъанлайын окъуна, жашны жукълатып кетген эдиле.

Жарыкъбий иги кесек да жукълап уяннганында, биягъы къызла жокъ.

– Не осалыма къалгъанма мен, къызлагъа хорлатып! Энди ала мени экинчи кере алдайла! – деп, уллу мудахха къалгъан эди.

Асыры жюреги къыйналгъандан, аш да ашамай, къарт киши келгинчиннге тургъан эди.

Къарт киши, келип, Жарыкъбийге къарагъанында, таныялмай къалгъан эди.

– Аллах-Аллах, не болгъанды санга, быллай бир аман болурча? Огъесе биягъы къызла келип, алдапмы кетгендиле? – деп, Жарыкъбийни, багъып, сау этген эди.

– Балам, энди мен болмай, ала келселе, къуш къапларын ал да, къайдан да мен келгинчи олтурма, олтурсанг, жукълатмай амаллары жокъду, – деп, жашха юйретген эди.

– Атам, бу къызла сен болгъан заманда нек келмейдиле жууунургъа? Къуруда сен кетсенг, келедиле, – деп соргъан эди.

– Ала мен болуп келирге къоркъгъан этедиле, аны себепли уа мен кетерни марап келедиле. Бу шауданны сууу дарман сууду. Ол къызла эгечледиле. Абадан къыз ауруучу къызды да, сууда жууунса, иги болады, аны себепли келип жууунадыла, – деген эди.

Биягъы заман жетип, къарт киши, кетерге башлагъанда:

– Балам, хайт де, хорлатма! – деп кетген эди.

Жарыкъбий: «Энди уа бир келге эдиле!» – деп айлана тургъанлай, къызланы, къуш къаплагъа кирип, учуп келгенлерин кѣрген эди. Жаш: «Биягъы къыз билир», – деп, бютюнда тереннге букъгъан эди.

Къызла, келип, къуш къапладан чыкъгъанда, биягъы къыз, тегерекге къарап:

– Къайда эсе да адам улу барды, – деген эди.

Тамата къыз, ачыуланган да этип:

– Сен аман ёлгюн! Тешин, жууунурукъ эсенг! – деп, тешинип, суугъа кирген эди.

Къызла суугъа киргенлей, Жарыкъбий, чартлап чыгъып, къуш къапланы алгъан эди.

Не этерик эдиле къызла? Тилеген эдиле жашдан:

– Къуш къапланы бер, – деп, алай жаш къатына да къоймагъан эди.

– Къуш къапланы бермей эсенг, кет, бизни кийинме къой, – деп тилегенлеринде, Жарыкъбий, бир жанына кетип, кийинме къойгъан эди.



Къызла, суудан чыгып, кийимлерин кийип, жашны къатына келип, алдар ючюн кѣп ариу сѣзле айтып кюрешген эдиле. Къаллай (бир – Ф.Г.) кюрешген эселе да, жаш, уллу эс бурмай, орталарында жюрюген эди.

Къызла бир да аямай кюрешдиле:

– Олтурайыкъ, арыгъанбыз, – деп, алай Жарыкъбий боюн салмай эди.

Кичи къыз, жашны хорлаялмазлыкъларын билип, эгечлерине:

– Барыгъыз сиз юйге, мен мында къалайым. Сен а, адам улу, къуш къапны бер, бюклеп жерине салайым, – деген эди.

Жарыкъбий, къызгъа къарап:

– Адам улун бир алда, эки алда, ючюнчю кере уа алдамазса. Сен къал мында, эгечлеринг кетсинле. Сени уа, къарт киши келгинчи, къуш къабынгы берлик туюолме. Арыгъан эсегиз, олтуругъуз, мен а олтурмайма, – деген эди.

Къызла, жашны алдаялмазларын билип, боюн салып тохтагъан эдиле.

Жарыкъбий, къызла бла терек бахчада айлана тургъанлай, къарт кишини келе тургъанын кѣрген эди.

Къарт киши, къатларына келип:

– А-а-а, энди билдим, мени къонагъым нек аман болгъанын. Адам улу сизни къатыгъызгъа келирге кюсей эсе, сиз а эриннгенми этесиз! – деп къутургъан эди.

Олсагъатдан къарт киши, олтуруп, къагъыт жазып:

– Элтигиз къагъытны, атагъызгъа беригиз. Кичи эгечигиз а мында къалады, – деп, къагъытны къызлагъа берген эди.

Къызла, къуш къапларына кирип, учуп кетген эдиле. Юйлерине келип, къагъытны аталарына берген эдиле. Ол заманда аталары, къагъытны окъуп, къызлагъа къутуруп:

– Бусагъатдан барып, къарт кишиге айтыгъыз: къызымы оноуун этсин суйгенича! – деп, къызланы артха жиберген эди.

Къызла, артларына къайтып, кичи эгечлерин, Жарыкъбийге неках этип, адамгъа берген эдиле. Адам кѣп болмаса да, ол къарт киши Жарыкъбийни къууанчында этген къурманлыкъ анда болгъанланы эслеринден энтта да кетген болмаз.

Жарыкъбий кѣп заманны жашагъан эди ариу къатынчыгъы бла, кеси юйюча болуп, алай, къалай жашаса да, жүреги мудахлыкъда эди.

Бир кюн къатынчыгъы бла олтуруп тургъанлай, Жарыкъбийни кѣзюнден жилямукъла акъгъан эди. Ол заманда къатынчыгъы:

– Жаным, Жарыкъбий, не болгъанды санга? Кѣзлерингден жилямукъла тѣгюледиле, эр кишини кѣзюнден жилямукъ чыгып, мен кѣрмегенме! – деп соргъан эди.

Жарыкъбий, ол затын къатынына билдиргенине кюе, башын да энишге бошлап:

– Да эр кишини жүреги темирденмиди? Этденди. Темир да эрийди да! Темир эриген жерде эт а эримеймиди? Жилямукъ жүрек эригенден чыгады. Мен юйюмден айырылып кетгенли, къаллай бир заман болады? Алты жѣнгерим бар эди, къайдадыла ала? Къырылгъандыла... Ол затла эсима тюшгенден чыгады жилямукъ кѣзюмден, – деген эди.

– Жанымы къыйыры, ол затланы айтып, жүрегинги къыйнама, буйрукъ алай болур эди. Юйюнге барыргъа сую эсенг, мен жолну таныйма. Къарт киши эркин этсе, кетербиз, – деген эди.

Жарыкъбий, бек къууанып, къатынчыгъын къучакълагъан эди.

Жарыкъбийни къатынчыгъы, барып, къарт кишиге айтханды.

– Да мен анга не этейим? Адам улу кеси суйюп турмаса, мен: «Тур», – деп айталмам. Аны да барды атасы-анасы, эсине тюше болурла... Барыгъыз, мен сизни эркин этеме. Алай мени унутуп къоймазыгъызны тилейме. Эрттенбла жолгъа чыгъаргъа кесигизни хазыр этигиз, – деген эди къарт.

Экинчи кюн эрттенликде Жарыкъбийни къатынчыгъы къуш къапха кирип, Жарыкъбий юсюне минип, къарт киши бла саламлашып, жолгъа чыкъгъан эдиле.

Учуп кетип баргъанлай, къатынчыгъы Жарыкъбийге:

– Кёзлеринги къыс, ауругъан иш этерле, – деген эди.

Жарыкъбий, къатынчыгъыны боюнундан къучакълап, кёзлерин къысхан эди.

Кёпмю учдула, азмы учдула, Жарыкъбий кёзлерин ачхан заманда, эсигизде тура эсе, жашла бек алгъа суудан чыкъгъан жерге жетип тура эдиле. Алайда олтуруп, солугъан да этип, азыкъ ашагъан эдиле.

Жарыкъбийни къатынчыгъы:

– Унутханмыса, былайда уугъа жүрюп, азыкъ мадарлап айланнганынгы? – деп соргъан эди.

Жарыкъбий, сейир этип:

– Сен къайдан билесе ол затланы? – деп соргъан эди.

– Сиз тенгизден чыкъгъан заманда, мен, ол къаяны башында терек бахчабыз барды, сизге бахчаны ичинден къарап тура эдим. Ма, кёремисе ол жолчукъну? Ол бизни терек бахчагъа элтеди, – деген эди.

Солуп бошагъандан сора, къатыны къуш къапха кирип, кеси уа юсюне минип, учхан эдиле.

Бийикге чыкъгъандан сора:

– Жарыкъбий, кёзлеринги къыс, ауругъан этерле, – деп, къатынчыгъы кёзлерин къысдыргъан эди.

Жарыкъбий, кёзлерин къаты къысып, къатынчыгъын къучакълагъан эди.

Кёпмю учдула, азмы учдула, Жарыкъбий кёзлерин ачып къарагъанда, кеси таныгъан жерлеге келип тура эдиле.

– Жарыкъбий, унутханмыса, былайда жёнгерлеринг бла бууну къуууп башлагъаныгъызны? – деп соргъан эди.

Жарыкъбий, сейир этип:

– Сен къайдан билесе ол затланы? – деп соргъан эди.

– Мен ол заманда терек бахчада олтуруп тура эдим. Бууну санга сёлешген таушун эшитип, къарап, сизни кёрген эдим. Ма, кёремисе къая башында терек бахчаны, ол бизникиди, – деген эди.

Жарыкъбий кесини туугъан эм ёсген жерлерин тансыкълап, къарап къайтхан эди.

Жарыкъбий къайтхынчы, къатынчыгъы, чатыр къуруп, аш хазыр этип тура эди. Ол кече алайда къалгъан эдиле.

Эрттенликде, ашап бошап тургъанлай, агъачдан, сакъалы да женгип, бир атлы чыкъгъан эди. Ол атлыны атдан тюшюрюп, чатыр ичине кийирип, азыкъ ашатхан эдиле.

Атлы ашап бошагъандан сора:



– Не айланаса, не жюриюйсе? – деп соргъан эдиле.

– Мен атдан тюшмей эм атымы иерин сыртындан алмай айланнганлы кёп заман болады. Мени аллымда да эки къауум айланнганды. Ма, бюгюн эки жыйырма жыл болады, Арабийни жашы Жарыкъбий алты жёнгери бла уугъа кетип къайтмай къалгъанлы. Андан бери излейбиз, тапмайбыз. Мен бюгюн юйге къайтама, тамбла башхала чыгъарыкъдыла излерге, – деп, хапар айтхан эди.

Жарыкъбийни къатынчыгъы атлыгъа:

– Сен бусагъатдан бар да, Арабийге айт: энди жашланы излерге адам жибермесин, Жарыкъбийден биз хапар айтырбыз. Биз былайда турлукъбуз, халкъын да жыйып, бери келсин, – деп атландыргъан эди.

Атлы:

– Жарыкъбийни тапдым! – деп къууанып, къарап-къарагъынчы элге жетген эди.

Элге кирип башлагъанда:

– Жарыкъбийни тапханма! Жарыкъбийни тапханма! – деп къычырып, Арабийни юйюне келген эди.

Ол тауушланы эшитип, къалмай халкъ Арабийлагъа жыйылгъан эдиле. Арабий, къалмай, патчахлыгъында болгъан, гитче, уллу деп къарамай, жыйып, къурманлыкъла алып, чатыр къатына келген эди. Халкъ, чатырны тегерегине басынып:

– Ким барды муну ичинде? Теркирек, чыгъып, бизни жашладан хапар айтыгъыз! – деп излеген эдиле.

Халкъдан алгъа чыгъып, Арабий:

– Багъалы къонакъла, мени элиме келмей, уллу ёзенде чатыр салып, нек тохтагъансыз? – деп соргъан эди.

Жарыкъбий, халкъгъа къарап, жүрегини къууаннганын кючден тыя:

– Биз, гитчеликден окъуна къыйынлыкъгъа юйреннгенден, ёзенледе чатырла къурап жашаргъа сюебиз. Алай сени халкъынга къарайма да, къалмай къара кийип турадыла, кюнню таягъы да кёрюнмейди. Ол не хыйсапданды? – деп соргъан эди.

– Да, багъалы къонакъла, халкъым къара кийгенли кёп заман болады. Кюнню кёзюн къачан кёргенибизни унутхан окъуна этгенбиз. Да, келгенбиз сизге бизни жашладан хапар сорургъа, хапар биле эсегиз, айтыгъыз, – деген эди (Арабий – *Ф.Г.*).

Жарыкъбийни таныгъан киши болмагъан эди.

Жарыкъбий:

– Не жашладан хапар сурайсыз? – деп соргъан эди.

– Багъалы къонакъла! Мени жашым бар эди, аты – Жарыкъбий. Аны гитчеликден алты жёнгери болгъан эди. Мен халкъ бла уугъа кетгенде, ала, башха жанына кетип, къайтмай къалгъан эдиле. Андан бери излейбиз да, тапмайбыз, неда хапарларын эшитмейбиз. Сиз биле эсегиз, тилейбиз хапар айтырыгъызны, – деген эди.

Жарыкъбийни къатынчыгъы:

– Айып этмегиз, мен тиширыу башым бла, халкъны аллына чыгъып, хапар айта тургъаныма. Алай айт деп тилегенигиз себепли, айтмай болалмайма, – деген эди. – Мен хапарны айтырдан алгъа, халкъ олтурсун.

Халкъ бары да, ариу кыртишге олтуруп, кычан башлайды хапарны деп, Жарыкбийни кыатынына кыарап тохтаган эдиле.

– Да, багъалы халкъ, Арабийни жамауаты! – деп башлады хапарны. – Сиз, эки бѐлюнюп, уугъа чыкыганда, Жарыкбий жѐнгерлери бла, ма бу жерден, буту жаралы болуп, тауладан, жюрюялмай, ѐзенлеге кычып, ѐзенледе жашаган, кишиге хатасы тиймеген бууну кыуууп, тенгизге ургъан эдиле. Излей кетип, бир кыайык табып, бууну суу ичинде тутуп, кыайыкыга алып кесген эдиле. Ол замандан тебиреп, кыыйынлык жоллары башланган эди, сени, Арабий, кыарангы дунюянг бууну ургъан кюн башланганча, – деп, кыыйырдан тутуп, ол кюннге жетгинчи хапарны айтхан эди.

Жарыкбийни кыатыны хапарны айта туруп, халкыны кѐзлеринден акыган жилимукъла, ѐшюнлерин жибитип, жерге агъа эдиле.

Багъалы тынгылаучула, жашланы хапарларын мен кыыйырдан тутуп айтмайма, мен алда айтып келеме. Ахыры кыалайгъа жетгенин, тынгыласагъыз, бек сюйюп айтайым.

Жарыкбийни кыатыны хапарны айтып бошагъандан сора:

– Ма энди, алты жашыгъыз кыыйынлыкда жигитле болуп ѐлген эселе, сау кыалган жашыгъыз Жарыкбийни сизге алып келгенме, – деп, Жарыкбийни алларында сюеген эди.

Ол заманда Арабийни, аягындан башлап, башына дери сууук кыалтырауук алып, эси ауаргъа жетген эди. Кыатыны Ариуну уа, эси аууп, халкъ, кюрешип, эс кыйдыргъан эдиле.

Халкъ ийнанмай эди, ол Жарыкбийди деп. Ол заманда Жарыкбийни кыатыны:

– Ийнанмай эсегиз, Жарыкбийни жуууклары, олтуругъуз халкыны ичинде! – деп, Жарыкбийни чатыр ичине кийирген эди.

Жууукла халкъ ичине олтургъандан сора, Жарыкбий, барын да танып, анасыны кыатына барып, баш уруп, кыучаклап, асыры жилигъандан, халкыны да жилигъан эди.

Жарыкбийни кыатыны Арабийге:

– Кѐкге да бир кыарасанг а, – деген эди.

Ол заманда Арабий кѐкге кыарагъан эди. Кѐк ариу чууак аязып, кызыгу кюн тийип (тура эди – *Ф.Г.*).

Жарыкбийни кыатыны, Ариуну кыатына келип:

– Жюзюкге бир кыарасанг а, – деген эди.

Ариу кыоюнундан жюзюкню алып кыарагъанда, жюзюк ариу жылтырап тура эди. Олсагъатдан халкъ уллу кыууанчха кирген эди. Ол кюн алайда союлган малла, кыойла былайда болсала, кѐкден таш тюшсе, жерге тиймез эди.

Халкъ, чатырны кыуруп ѐзенде, тойла, оюнла этип, кѐп заман тургъан эдиле. Кыурманлыкыла бошалгъандан сора, халкъ, жыйылып, Жарыкбийге уллу кыалала ишлеген эдиле.

Кыалаланы ишлеп башлагъан заманда, Жарыкбий кыуш кыапны кыаланы мурдоруну тюбюне салып, букыдуруп кыойган эди, кыатыны кычып кетмез ючюн.

Кѐп жылланы жашаган эдиле Жарыкбий кыатыны бла. Хар эшикге кыалауурла салып, кыатынны кече эшикге жибермей болган эдиле.



Алай бир кече, кыалауурланы алдап, эшикге чыгып, кыуш кыабын алып, кыуш кыапха кирип, юй башына кыоннган эди. Кыанжалны кыагып, кыалауурланы чыгырып:

– Жарыкыбийге бери чыкы дегиз! – деген эди.

Жарыкыбий, чартлап, эшикге чыкыгында, кыатыны, кыуш кыапха кирип, юй башында тура эди.

– Багыалы Жарыкыбий, сен, мени кыуш кыабымы букыдуруп, аллыма кыалауурла салып тутаргыа умут этгенсе. Мен кетеме. Мени излесенг, ол мен кыргюзтген жолчукыну чыгып, терек бахчагыа келирсе. Ары келсенг а, бизни юй кырюне турады, – деп, кыатын учуп кетген эди.

Жарыкыбий, тюп эринин кыабып, тегерекге чапхан эди, алай не этерик эди, терслик кесинде эди.

Жарыкыбий бир бйлек заман жашады кеси аллына.

Бир кюн атасына, Арабийге:

– Кыатынымы излерге барама, – деп кетген эди.

Кйп айланды, жюрюдю эсе да, ол жолчукы терек бахчагыа элтген эди. Терек бахчадан кыарап, юйлени кырюп, Жарыкыбий юйлеге баргыан эди. Юйлеге баргыанда, кыатынчыгы анда олтуруп тура эди.

Жарыкыбийни кыргенде, кыатынчыгы, чабып, кыучакылап, юйге кийирип, юй бла шагырей этген эди.

Жарыкыбий кйп заман тургыан эди кыатыныны юйюнде. Арта уа, кыатынчыгы анда алып, элине кыайтып келген эди.

Элге келгенден сора, кыатынчыгы, кыуш кыапны Жарыкыбийге берип:

– Ма, кюйдюр отха, бу кюймей, бизге тынчылык жокыду! – деген эди.

Жарыкыбий, кыуш кыапны кюйдюрюп, кыатыны бла ырахат, мамырлы жашайдыла. Алай кыаллай бир жашай эселе да, сабийлери жокыду.

Мени кысюме неге кыарайсыз? Мен, тюнене кече алада кыалып, ахшы сыра да ичип, кыой баш да ашап келеме. Ётюрюк айта эсем а, жукыугыуз келгенден, хар ким юйлерибизге кетейик.

Аны кыременибиз кибик, ауруу-талау кыремейик.

КыМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 20 папка, 1 паспорт. КыМАССР-ны Тйбен Чегем элинде жашагыан 1916 жылда туугыан Бепайланы Ахияны жашы Назирден 2.04.1958 жылда жазылгыанды (автозапись).

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгыанды эм орус тилге кычюргенди.

Тюрюлю-тюрюлю сюжетледен кыуралгыан сейир-тамаша жомакы.

Чыгырмананы энчилигин кыарачай-малкыар жомакылада артыкы кйп тюбемеген, бола тургыан ишлени бла табийгыатны, кюнню халлерини байламлыкылары кыурайды.

Тексте тамашалыкы зат (Арабийни кыатыныны, бушуулу зат болса, тот болуучу алтын жюзюгю); сейирлик жаныуар (адам тилде сйлеше билген буу, аны жаралы этгенни эм ёлтюргенлени, аланы жууукыларыны, ахлуларыны жашауларына кыарангылыкы эмда кйп кыыйынлыкы тюшгенди); эрттеден бери асланла бла уруш этген, ол кюрешге патчахны жашын эм аны нёгерлерин кыатышдыргыан, адам сёзюн таныгыан маймулланы кыыраллары; кыанатлыланы таматалары



болгъан эм аланы тиллерин ангылагъан къарт киши (бир-бир мифледе, жомакълада, дин бла байламлы айтыулада ол шартла Сюлемен фэйгъамбаргъа бериледиле); Жарыкъбийни къатыны болгъан эм анга туугъан жерине къайтыргъа болушхан, къуш къапха кириучю къыз да (орус фольклордагъы Царевна-Лебедь бла тенглейдирирге боллукъду) сагъыныладыла.

Чыгъармада низамны бузууну, сейирлик жаныуарны (бууну), тамаша сабийни, тас этиуню, сынауну эм табыуну, бирси къыраллагъа (дуниялагъа) тюшюуню (жолоучулукъну), сейирлик къатынны эм башха затланы юслеринден мотивле тюбейдиле.

Жомакъчыны сыфаты ачыкъ белгиленеди. Ол хапарлаугъа тынгылагъан адамлагъа айланыулары, ишлени, болумланы юсюнден кесини оюмларын къатышдырады.

Жомакъда энчи халли киришиу барды. Ишни башы Арабий селеше билген бууну жаралы этгени болады. Аны бла тюбешюден баиланадыла патчахны, андан арасында уа аны жашыны эм нёгерлерини да жашауларында къыйынлыкъла. Былайда къарачайлылада бла малкъарлылада буу сыйлы (тотем) жаныуаргъа саналгъанын чертирге тийишлиди. Апсаты бла аны къызы Фатимат (Байдымат) ючаякълы бууну сыфатына кириучюлерин, акъ маралны сютю уа бек къыйын аурууладан дарманнга саналгъанын эсибизге тюшюрюрге боллукъбуз.

Чыгъарманы композициясын хапарлауну жигитлени бир къаууму бла байламлы халлени санаудан ол заманда бирси жигитле бла байламлы ишлени суратлаугъа кёчгени ауурландырады.

Текст адетде жюрюген «Аны кёрмегенибиз кибик, ауруу-талау кёрмейик» деген алгъыш бла бошалады.

ЖАРЫКЪБИЙ

Те времена прошли. С тех пор сколько воды утекло, посчитать это очень сложно. Хотя я и был в то время молод, увиденное не забывая, среди людей рассказывая, изо дня в день вспоминая, произошедшие события держу перед глазами.

Теперь вы слушайте, я историю о том начну вам рассказывать.

Давным-давно, в одну пору жил царь царей, храбрец из храбрецов Арабий.

Когда Арабий, повзрослев, стал приобщаться к людям, его отец, выбрав в своей стране девушку по имени Ариу*, женил Арабия. На свадьбе, празднике Арабия весь мир собравшись, праздновали около года.

Когда народ покончил с торжеством Арабия, каждый отправился по своим делам.

Утром Арабий, оседлав своего белого коня, попрощавшись с отцом, отправился в поход.

Уезжал некто, мощью, храбростью превзошедший даже своего отца.

Сколько он бродил, кто это знает, однако в один день, когда, забравшись на вершину горы, озирался вокруг, перед ним выскочил один олень. Арабий,

* Досл.: «Красавица».



взяв свой лук, с коня выстрелил в оленя. Олень, даже оставив бегство, со злостью посмотрел на Арабия.

– Эй, храбрый Арабий! – заговорил олень. – От меня никому вреда не было. Каждое животное на свете хочет жить. Выстрелив из лука, мне бедро подрезал, теперь я (стал таким, что) не смогу по горам ходить. А если спущусь в долину, собаки не дадут мне житья, – сказал.

Арабий, много размышляя: «Почему, интересно, (я) выстрелил?» – вокруг осмотрелся.

– Эй, горное животное, у меня клятва есть, стрелять в того (зверя), кто встречается. Пожалел, что выстрелил... Что мне сделать для тебя?

– Эй, Арабий. Что мог мне сделать, ты уже сделал. У меня тоже была клятва: враждебному мне противостоять как врагу, – сказал олень, заговорив (по-человечьи).

Арабий начал прилаживать к луку вторую стрелу. Тогда олень, заговорив:

– Эй, Арабий, не стреляй в меня, не поглядев на небо, – сказал.

Когда Арабий посмотрел на небо, красиво ясно распогодившееся небо было полно черных туч.

– Что за чудо, что за диво! Только что солнце светило, а теперь небо заполнилось черными тучами! – говоря, когда посмотрел в сторону оленя, олень уже убежал.

Когда, разозлившись из-за бегства оленя, озирался вокруг, камни о камни, горы о горы ударяясь, земля затряслась.

В то время, как Арабий стоял, не зная, что делать, его уха достиг некий голос, говорящий:

– Эй, Арабий! Светлый мир омрачил, ясное небо тучами затянул, пусть твой собственный век пройдет в темноте и скорби!

Арабий, посмотрев вокруг, никого не увидев, повесив голову, отправился домой.

В то время, когда Арабий вошел в село, народ, выйдя ему навстречу, видя его печальность:

– Что случилось с тобой? – спросили.

Арабий, ничего не говоря, спустившись с лошади, сел на камень. Люди, столпившись вокруг Арабия:

– Почему печален, Арабий? Для тебя печаль – для нас печаль, для тебя радость – для нас радость, – говоря, встали.

– Эй, народ мой, община моя!.. Не спрашивайте вестей у неудачника. Видите, что небо наполнилось черными тучами? – сказав, опустил голову.

Услышав вести об Арабии, его отец прибежал.

– Эй, дитя мое, что случилось с тобой? Видишь, что твой народ вокруг тебя столпился? – спросил.

– Отец мой, видишь на небе черные тучи? Моя жизнь стала темной: безобидного оленя, против себя настроив, заставил говорить, – ответив, заплакал как дитя.

Мы видим, что из глаз Арабия льются слезы, теперь, его женушка Ариу как поживает, об этом расскажу.

У Ариу с детства подаренное отцом золотое кольцо на пальце.

Отец Ариу, выдавая (дочь – *Ф.Г.*) за Арабия, сказал:

– Дочь моя! Если Арабий, уехав далеко, долго не будет возвращаться, глядя на свое кольцо, возноси молитву Аллаху.

Когда Арабий долго не возвращался, Ариу у Аллаха, глядя на кольцо:

– Верни Арабия живым, – просила (все время).

В один день, ближе к обеду: «Как долго задержался Арабий!» – думая, переживая, подойдя к окну, долго смотрела из окна. Не идет Арабий... Сердце Ариу беспокоясь, ноги не держа, падая-вставая, подойдя к кровати, легла.

– Эй, сотворивший меня Аллах, как же сильно бьется сердце! Мой светлый мир не омрачай! – говоря, посмотрела на кольцо.

Когда посмотрела на кольцо, глаза Ариу застило кровавой пеленой.

– Что случилось со мной? Ноги не держат, глаза ничего не видят! – сказав, протерев глаза, когда посмотрела в зеркало, кольцо оказалось почерневшим.

Мало ли, долго ли Арабий не возвращался, пока не услышала весть о его возвращении, Ариу, не вставая с места, лежала.

Когда услышала весть о приходе Арабия, Ариу, вскочив, подойдя к окну, посмотрев, среди народа Арабия увидела.

В тот момент сердце Ариу так обрадовалось, что стало размером с гору: «Неужели кольцо обмануло меня?» – подумав, посмотрела на кольцо. Однако кольцо все еще оставалось почерневшим.

«Что случилось с моим любимым больше жизни Арабием? Почернение кольца не сходит», – подумав, опечалилась.

Однако, что ей делать? Кольцо, потеряв, пусть очистит, беспокойство сердца куда деть, черные тучи на небе как разогнать?

Если бы посмотрели на всю свою жизнь любившую свет, красотой на весь мир славившуюся Ариу, (она) изменилась до неузнаваемости (стала такой, что люди не узнали бы). Бегом пошла бы она к Арабию, но стеснялась людей.

Ариу кольцо, сняв с руки:

– Аллах, прошу тебя не зачернять это кольцо еще сильнее! – сказав, положила в сундук (ларец).

Как бы сильно ни ждала Ариу Арабия, однако с головой, заполненной мыслями и беспокойством, Арабий сидел посреди народа.

Отец Арабия, посмотрев на небо:

– Эй, дитя мое, такова, наверное, была судьба: я этого оленя много выслеживал, но пущенная стрела (никогда) не попадала. Теперь, раздумывая, себя не мучай, а, пойдя домой, отдохни, – сказав, отправил домой.

Когда Арабий вошел в дом, слезы, капавшие из глаз Ариу, уже намочили ей грудь (переднюю часть платья).

Арабий, увидев это, подбежав, обняв Ариу:

– Моя любимая больше жизни Ариу, что случилось с тобой? Кто тебе что сказал? – говоря, прижал (ее) к груди.

– С тех пор, как ты ушел, ни ночи, ни дня мне нет, так сильно за тебя переживала. Почему так сильно задержался? – сказав, Ариу вытерла с глаз слезы.

– Далеко уйдя, быстро не смог вернуться, больше не буду задерживаться надолго, – ответив, Арабий сел на кровать.



Ариу, обняв Арабия за шею:

– С тех пор, как ты ушел, постоянно глядя на кольцо, все время возносила молитвы, – сказав, посмотрела на кольцо, но на пальце кольца не было.

Арабий, заметив это, спросил:

– Где твое кольцо?

Ариу, и плача, и рассказывая историю, кольцо, достав из сундука, отдала Арабию.

Арабий после того, как увидел кольцо, рассказал всю историю.

Трудно вернуть то, что прошло. Это всякий знает. Начиная с того дня, Арабий перестал в одиночку выезжать на охоту.

Арабий знал, что будет жить с печалью в сердце и в тревоге, но никому ничего не говорил.

Вскоре, отец Арабия, заболев, недолго прожив, скончался.

После смерти отца на долю Арабия выпало царствовать, забыв все тревоги, все свое внимание обратил на государственное дело.

Долго (они) прожили. Народ почти не видел лика солнца и у людей не было (случаев) рождения детей. Арабий очень хотел, чтобы появился ребенок, однако долгое время жил бездетным.

– Что это за чудо, что за диво: сегодня народ в большой радости (пребывает), на небе, черные тучи рассеявшись, солнце ярко светит! – говоря, Арабий, достав кольцо из сундука, посмотрел на кольцо.

Когда посмотрел на кольцо, увидел, что с кольца сошла ржавчина и оно очистилось.

Когда он сидел, сильно обрадовавшись, люди, прибежав:

– Арабий, у тебя сын родился! – сказав, сообщили радостную весть.

Арабий, собрав свою страну (жителей своей страны), устроил большой праздник. На том празднике тысячу откормленных волов, тысячу откормленных буйволов зарезав, сто казанов (котлов) повесив, в течение года большое пиршество было.

Арабий после того, как закончилось празднование, собрав народ:

– Дайте имя моему сыну, – сказал.

Народ долго думал, как назвать, не знали. Тогда один старик, поднявшись, сказал:

– С рождением сына Арабия к народу пришла радость (жарыкълыкъ), поэтому я назову мальчика Жарыкбием.

Арабий, вскочив:

– Правильно назвал! – воскликнув, обнял старика.

Арабий, обратившись к своему народу:

– Народ мой, соберите родившихся в один день с моим ребенком детей, они должны расти вместе! – сказав, распустил людей.

Народ, разойдясь, привел шестерых детей.

Начиная с того дня, Жарыкбий и шесть мальчиков стали расти вместе. Если спросите, как (они) росли – не по месяцам, годам, по дням, по часам росли. Люди дивились росту и силе, храбрости Жарыкбия.

Когда Жарыкбию исполнилось восемь лет, начал побеждать (главных) силачей страны.

Чтобы испытать Жарыкбия, его отец, собрав охотников (следопытов) страны, подвесив на небо зеркало, заставил стрелять из лука. Стрела

каждого из стрелявших, не приблизившись к зеркалу, падала на землю. Стрелы сверстников Жарыкбия подбирались близко, но в зеркало не попадали. Жарыкбий, сев на лошадь своего отца, поскакав, выстрелив с коня, попав в зеркало, сбил (его) на землю.

Начиная с того дня, отец начал отпускать Жарыкбия вместе с друзьями на охоту и в набеги.

Я и сегодня удивляюсь: когда Жарыкбий с друзьями уезжал на охоту, его отец, взяв людей, в другую сторону на охоту уезжал.

Сколько раз ездил Жарыкбий на охоту, каждый раз один олень попадался ему на пути. Когда собирался стрелять:

– Эй, Жарыкбий, не стреляй, я тоже хочу жить, – говоря человеческим языком, убежал.

Жарыкбий, когда видел, что олень заговорил, не стреляя, домой возвращался.

Когда Жарыкбию исполнилось пятнадцать лет, его отец Арабий, собрав народ, устроив праздник:

– Теперь на сколько бы вы ни собрались в поход, разрешаю! – сказал.

После окончания праздника, Жарыкбий со сверстниками на охоту в одну сторону, его отец с людьми в одну сторону уехали.

До этого дня Жарыкбия отец на один день отпускал.

Ехали по большой равнине семь всадников, обвешанных оружием, доспехами, а предводителем их был Жарыкбий. Все семеро дали клятву, ту (дичь), что им встретится, живой не отпускать.

Мало ли, много ли бродили юноши, навстречу им ничего не попадалось. Парням это было обидно, и в один день к заходу солнца (они) пришли к берегу большого моря. Когда юноши, остановив коней, осматривались вокруг, перед ними ускакал один олень.

Жарыкбий – впереди, парни стали гнаться за оленем.

На большой равнине оленя, долго гоняя, утомили. Уставший олень, оглянувшись назад:

– Эй, Жарыкбий, что плохого я вам сделал? Почему преследуете меня? – заговорил.

Тогда Жарыкбий:

– Мы поклялись встреченного живым не отпускать и тебя не отпустим! – молвил.

– Эй, Жарыкбий, на небо туча набегать начала. Отец твой, одну мою конечность раздробив, с гор на равнину согнал, а ты с равнины в море гонишь! – заговорил человеческим языком олень.

Жарыкбий, несмотря даже на то, что олень заговорил, стал преследовать оленя.

Уставший олень, исчерпав другие средства, чтобы спастись от врагов, прыгнул в большое море.

Парни, долго смотрев вслед за оленем, которого рыбака лодка была, одну лодку найдя, начали преследовать.

Рожденное ходить по горам, по долам животное, наверное, не могло в воде, как сердце хотело, плыть, юноши, в лодке нагнав, оленя, поймав, в лодке зарезали.



К тому времени, когда парни оленя, зарезав, закончили разделявать, припозднилось, стемнело. Юноши хотели в ту ночь в море оставшись, утром назад воротиться. Однако получилось не по их замыслу: ночью сильный ветер налетев, море, плескаясь, заволновавшись, лодку парней унесло.

Юноши, всю ночь не зная, где находятся, боясь, что лодка перевернется вверх дном, встретили зарю.

Когда с наступлением утра (они) посмотрели, за водой земли не видно было. Сколько лет они плавали по морю, еда – оленья мясо, и его сырым есть пытались.

Жарыкбий, будучи недоволен ситуацией, чтобы узнать свое местоположение, смотрел вокруг, однако как бы ни всматривался, не смог узнать. Парни, из-за долгого плавания устав, и еда закончившись: «Куда бы ни несла, пусть несет», – решив, пустили лодку (в свободное плавание).

Течение, неся парней, посреди воды в одно место вынесло.

Кроме Жарыкбия, встав на ноги, из лодки вышедшего человека не было от усталости и голода.

Жарыкбий, взяв свое оружие, снаряжение: «Может что найду», – подумав, ушел.

Ходя-бродя, убив мелких пернатых, возвращаясь, наткнулся на большое орлиное гнездо.

Когда, согнав орла с гнезда, посмотрел в гнездо – полно яиц. Жарыкбий, взяв и яйца, и подстреленных птиц, пришел к своим сверстникам.

Все, сев, выщипав перья птиц, съев их мясо сырым, вместо жидкости сырые яйца выпили.

Долгое время отдыхали в том месте, еда-питье – птицы и орлиные яйца, и сами, не имея огня, чтобы сварив есть, сырым ели.

Один день Жарыкбий, бродя по окрестностям (вокруг), и птиц настреляв, когда возвращался, подумал: «Если посреди этой воды есть река, то место, где люди живут, наверное, недалеко».

Вернувшись, сказав друзьям, все, сев в лодку, вышли в путь.

Много ли, мало ли плавали, как бы то ни было, выбрались на берег моря. Жарыкбий, забравшись на камень, посмотрев, вдалеке увидел большие башни.

К тем башням юноши добрались к заходу солнца, войдя внутрь, никого не найдя, той ночью там остались.

Когда рассвело, и (они) выйдя на улицу, посмотрели, их окружило (вокруг них стояло) войско.

Жарыкбий, хорошенько присмотревшись к войску, сказал:

– Дорогие мои соратники, смотрю на это войско и они нечеловекоподобные. Отец рассказывал, что есть Обезьянья страна. Наверняка, мы туда попали.

Парни спросили Жарыкбия:

– Что теперь будем делать?

Жарыкбий, долго думав, сказал:

– Теперь их много. Что мы с ними сделаем? Давайте не будем драться, а поступим, как скажут.

В то время, как Жарыкбий, взяв парней, вышел из башни, обезьяны:

– Человечий сын! Человечий сын! – закричав, подбежав, окружили их. Схватив парней, отвели (их) к своему царю.

Царь, усадив юношей:

– Кто из вас старший? – спросил.

Жарыкбий, вскочив:

– Я – старший. Я – сын царя из царей, храбреца из храбрецов Арабия. А они – сыновья князей (полуцарей). Издеваться (над нами) не позволю! – говоря, встал (на своем).

Царь спросил парней:

– Вы – человечьи сыны. Откуда сюда явились? На моем веку (В прожитое мной время) нога человека не ступала на наши земли.

Тогда Жарыкбий царю описал и свою историю и перенесенные ими трудности. Царь, осознав храбрость парней, задумал заставить их служить себе.

– Жарыкбий, вот уже семь лет, как моя страна воюет со Львами, не можем победить друг друга. Назначаю тебя предводителем войска, а соратников – твоими подчиненными, – сказал (царь – *Ф.Г.*).

Тогда юноши с радостью дали слово царю биться, не жалея ни жизни, ни крови.

Да, дорогие слушатели, остановим рассказ о парнях (их сделали военачальниками), что там делает отец Жарыкбия Арабий, к тому вернемся.

Арабий, взяв своих людей, отправился на охоту на запад. Во многих местах побывав, возвращаясь назад, увидел, что на небо набежали черные тучи.

– Эй, община моя, к нам пришли печаль и беспокойство: небо стали закрывать черные тучи. Мы должны быстро добраться домой! – сказал.

Люди, очень сильно опечалившись, остались, не зная, что делать.

Арабий, приехав домой, Ариу:

– Достань-ка кольцо. Небо затянуло черными тучами, посмотрим на кольцо, – сказал.

Когда Ариу, взяв кольцо, посмотрела, кольцо было покрыто ржавчиной. (Они) ударились в слезы.

На второй день царь Арабий, собрав народ:

– Наши сыновья попали в беду, мы должны (отправиться – *Ф.Г.*) их искать. А потому десять всадников, начиная с сегодняшнего дня, должны отправиться на поиски, – сказав, обратился к народу.

Люди, одоббив сказанное Арабием, из «этих-тех» (добротных) парней собрав десять всадников, подготовили к дороге.

Когда десять всадников выходили в путь, люди:

– Парней не найдя, не возвращайтесь! – крепко наказали.

Когда народ разошелся, Арабий, придя домой, взяв кольцо в руки, долго на него смотрел. Затем, положив кольцо в сундук, сказав Ариу:

– Я не могу сам не отправиться на поиски. Либо найду парней, либо найду оленя. Если найду оленя, он мне что-нибудь сообщит, – сев на своего коня, уехал.

Землю рыл, землю громил, но в степях оленя не нашел.

– Наверное, олень ушел в горы, – решив, отправился в горы, куда ходил охотиться.



Много ходив, много бродив, пришел на то место, где выстрелил в оленя. Сойдя с коня, осмотревшись вокруг, ничего не увидев, когда сидел на камне, слышался один звук (голос):

– Эй, Арабий! Хорошо ли быть разлученным со своим ребенком? Это и ты испытай! – говорящий.

Арабий посмотрел вокруг, однако, ничего не увидел. Тогда Арабий, обернувшись в ту сторону, откуда шел звук:

– Кто бы ты ни был, прошу, Расскажи вести о моем единственном сыне! – крикнул.

Через немного слышался тот же голос, говоривший:

– Возвращайся домой! Какие тебе вести? Погубив мое дитя, еще новости у меня спрашивает... Иди домой, не выходи искать своего ребенка!

Что было делать Арабию? Сев на коня, вернулся домой.

Как бы тщательно ни искал, ни переживал Арабий, как найти парней?

Слушайте! Историю парней я вам расскажу.

Жарыкбий, став военачальником, долгое время готовил обезьяны войска к войне. Когда начали воевать, вступая с друзьями в битву, выходили победителями.

Война безостановочно шла несколько лет. Цари обеих сторон, договорившись, постановили на три года прекратить войну.

Жарыкбий, после того, как прекратилась война, взяв парней, выходил в поход, чтобы развеять скуку.

В один день, уезжая, на обочине дороги увидели стеллу.

Когда Жарыкбий, подойдя к стелле, прочитал надписи, так вышло: «Если сын человеческий придет в эти места, пусть старается бежать на запад».

Жарыкбий, вернувшись к своим товарищам, рассказал новость. Парни, усевшись на красивой траве, решили, как будут бежать.

Жарыкбий сказал юношам:

– Теперь давайте вернемся и начнем войну, не разбирая ни ночи, ни дня, будем сражаться. Войска устанут. Тогда ночью сбежим.

Приняв такое решение, парни вернулись назад.

Если спросите, где придется бежать, через асланов (львов) должны были бежать. Поэтому, их дорога была очень трудной.

После того, как вернулись назад, Жарыкбий, пойдя к царю:

– Мы должны, пока львы не знают, развязав войну, победить, – обратился.

Царь, одобрив сказанное Жарыкбием, дал разрешение начать войну. Тотчас же развязав войну, не смотря ни на ночь, ни на день, вели сражение в течении десяти дней. Обои сторон войска, устав, утомившись, с тех мест, куда сели, уже не могли подняться. Жарыкбий приказал приостановить битву.

Ночью, когда обеих сторон войска спали, парни сбежали.

Когда они, убегая, уже прошли через львов, войско, узнав о бегстве парней, начало их преследовать.

Враждебные друг другу войска объединившись, юноши убегая, они догоняя, долгое время бежали.

Обезьяны, если поймают парней, убить, а львы, если поймают, – поставить во главе решив, гнались.

Парни, отбиваясь и убегая, отбиваясь и убегая, многие земли прошли, но от голода и жажды не сумев идти, ослабев, два парня погибли. Когда еще довольно много прошли, двое погибли. Когда пробежали однодневный путь, еще один юноша скончался.

Жарыкбий, с единственным товарищем отбиваясь и убегая, отбиваясь и убегая, до одной большой реки добрался. Ширина реки, если с одной стороны посмотришь, другой стороны не видно, с необозримым течением, такая река была. С двух сторон скалы были.

Жарыкбий, когда увидел, что дело плохо (дело обстоит не лучшим образом):

– Чем погибнуть, попав в руки врагов, лучше умереть в воде. Ступай за мной, не оглядываясь ни назад, ни вперед! – сказав, прыгнул в воду.

Река была настолько быстрой (свирепой), что не давая парням ни единого шанса, уносила (их по течению).

Когда Жарыкбий, подумав: «Как там, интересно, справляется мой товарищ?» – посмотрел, увидел, как его товарищ, побежденный рекой, с намокшей одеждой, уходил под воду.

Жарыкбий, быстро в воде сняв одежду, дал унести реке. Сильный и умелый пловец Жарыкбий, борясь с течением, долго плыл, но из-за скалистости берегов реки не мог найти места, чтобы выбраться.

Жарыкбий, издали поглядев, увидел, что не на вражеской стороне реки, а на другой стороне со скалы три дерева свисают, их ветви до воды доходят.

Жарыкбий, приложив все свои силы, решив: «Если теперь сумею добраться до тех деревьев», – начал плыть.

Река так быстро текла, что не давая ни шанса, захватив Жарыкбия, пронесла мимо второго дерева.

Жарыкбий, подумав: «Если теперь до этого дерева не достану, река унесет», – собрав все имеющиеся силы, бросил себя в сторону дерева.

Если человек испугается, то дело, наверное, прыгает (спорится / сдвигается с мертвой точки): Жарыкбий, едва ветви третьего дерева слегка коснулись его руки, прыгнув, крепко схватился за ветки. Стараясь, стараясь, едва не сорвавшись, выбрался на берег реки.

Когда, выйдя из воды, посмотрел, увидел, что на той стороне реки обезьяны и львы, боясь войти в воду, бежали по берегу реки.

Жарыкбий, от сильной усталости даже не сумев подняться, ползя на брюхе (досл.: на печени), добрался под дерево. Посмотрев вокруг, не увидев своих друзей: «По моей вине погибли мои товарищи, теперь я сам одинешенек в незнакомых местах куда пойду?» – подумав, заплакал как дитя.

Жарыкбий, опечалившись, с головой, занятой думами, заснул под деревом.

Дорогие слушатели! Виденные Жарыкбием до сих пор трудности были пустяками, если и испытывал трудности, испытывал вместе со своими друзьями. А теперь он сам по себе, чтобы помочь и в качестве собеседника человека нет, а трудности, которые (он) испытает, впереди.

Жарыкбий, что, интересно, увидел во сне, вздрогнув, проснулся. Как в прежние времена, наверное, посоветовался бы с друзьями, надел бы свою одежду, однако товарищи мертвы, а вещи унесла река.



Жарыкбий, несколько дней не употребляя пищу, не зная, куда идти, очень сильно проголодавшись, обессилел.

Когда, проголодавшись, начал ослабевать, находя птичьи гнезда, выпивая их яйца, поедая неспособных летать птенцов, некоторое время бродил.

В один день, побежденный слабостью, сев: «Теперь мне в какую сторону пойти? Наверняка, если пойду по течению реки, встречу места, где живут люди», – так подумал.

Под деревом длительное время отдохнув, с такой мыслью вышел в путь. Если припозднится, пойдет дождь, под деревом – его дом, если проголодается, птицы – пищей, яйца ему питьем служат, долго ходил.

«На свете, наверное, нет места, куда бы не добрались нога мужчины, копыто коня, если повелит Аллах, и из этой беды выберусь», – думая, сам себя подбадривал.

Много времени бродил, виденные трудности – в голове, а предстоящие – перед глазами стоя, ходил.

Мало ли, много ли ходил, в один день вышел к большой песчаной степи.

«Если теперь выйду в эту степь, не найдя пищи, останусь, лучше вернусь назад в лес, кто знает, может, если поблизости живут люди, кто-то из них в лес придет», – решив, надумал вернуться назад.

Пока (он) стоял, не зная, как поступить, вдалеке показались какие-то силуэты. Жарыкбий, решив: «Чем бы те силуэты ни были, пойду туда», – крича и идя, крича и идя, добрался до силуэтов.

А тем силуэтом был купец (торговец). Сам сев на одного верблюда, а восьмерых верблюдов нагрузив товарами, ехал.

– Пусть будет (удачной – *Ф.Г.*) дорога! – сказав, поздоровался Жарыкбий.

– Спасибо. Пусть Аллах даст (удачную – *Ф.Г.*) дорогу! Аллах-Аллах, человек запада, на востоке откуда взялся? – удивившись, приветствовал.

Жарыкбий настолько ослабел, что, не сумев ответить, упав, потерял сознание.

Купец, приведя Жарыкбия в сознание, узнав, что он голоден, поставил часть своей пищи перед ним. Съеденная Жарыкбием пища не усваиваясь, съеденное изрыгал (обратно).

Купец Жарыкбия, посадив на верблюда, привез к себе домой. Сам, всех имевшихся в черте города врачей приведя, Жарыкбия, лечя, довел до выздоровления.

Когда Жарыкбий выздоровел, купец, поставив его во главе себя:

– Жарыкбий, вот мои сестры, с сегодняшнего дня сестрами и братом становитесь, таков у нас обычай, – сказал.

Затем в один день, собрав народ, уговорил Жарыкбия рассказать об испытанных им трудностях. Когда Жарыкбий закончил рассказывать всю свою историю, большая часть людей, не удержавшись, заплакала.

Как будто в своем собственном доме живя, в том доме долгое время прожил. Купец Жарыкбия ни на базар, ни в город не отпускал. Но однажды Жарыкбий, попросив, получил разрешение сходить на рынок.

– Да, Жарыкбий, у нас пришедших издалека (пришлых) людей очень сильно обманывают, пусть с тобой и моя дочь пойдет, – сказал (купец – *Ф.Г.*).

Когда Жарыкбий собрался на базар, купец сказал своей дочери:

– Ни в коем случае не оставляй Жарыкбия одного!

Жарыкбий с девушкой долго ходили по рынку. Но куда бы ни шел Жарыкбий, один человек, сидя на лошади:

– Кто ко мне в услужение на три дня пойдет, сколько сам поднимет, столько золота дам и из дочерей, какую выберет! – крича, разъезжал.

Дочь купца Жарыкбия после долгой прогулки увела домой.

Когда вернулись домой, девушка рассказала своему отцу всю историю. Тогда купец Жарыкбию:

– Ни в коем случае не дай себя обмануть, он, услышав твою историю, поэтому ходит, – сказал. – Пошедший к нему в работники живым не возвращается.

Сколько бы ни ходил Жарыкбий на рынок, тот человек постоянно ходил следом за ним. Дочь купца, не отходя от Жарыкбия, (постоянно) оберегая, ходила.

Однажды, когда снова, выйдя на базар, прогуливались, перед Жарыкбием опять явился тот всадник.

– Кто ко мне на три дня в услужение пойдет, тому столько, сколько сам поднимет, золота дам! – кричал.

Жарыкбий, отправив под предлогом девушку в одну сторону, решив: «Если я к нему в работники пойду, неужто испытаю большие трудности, чем уже испытал?»:

– Я иду! – сказав, дал слово.

Кто, интересно, сообщил дочери купца? Когда девушка прибежала, Жарыкбий с тем человеком договаривался о плате. Девушка заплакала, волосы, лицо себе разодрала, но что сможет сделать, когда дело завершено.

Жарыкбию:

– Завтра, подготовившись, сюда придешь, – сказав, тот человек, сев на коня, уехал.

Когда, придя домой, девушка рассказала историю, все без исключения ударились в горе, плач и: «Не иди!» – говоря, долго уговаривали. Однако Жарыкбий:

– У меня однажды сказанное слово назад не забирать клятва есть, – сказав, начал себя готовить. – Не бойтесь, ничего не случится, много золота получив за плату, вернусь, вы держитесь молодцом! – попрощавшись ушел.

Купец, в ту ночь не спав / сомкнув глаз, встретил зарю. Но с решенным делом что бы сделал? Если бы и сделал, Жарыкбий остаться не захотел.

Утром, когда Жарыкбий, попрощавшись со всеми, собрался уходить, купец, обняв:

– Я тебя сделал собственным ребенком, уходишь, пусть Аллах даст (удачную) дорогу. Будь осторожен, он – плохой человек, с ним уходящий назад не возвращается, – научив, отправил в путь.

Когда Жарыкбий, придя на условленное место, ждал, тот человек, сидя на лошади, другого коня ведя в поводу (держа за голову), приехал.

Жарыкбия, посадив на коня, тот человек увез к себе домой. Когда, приехав домой, сойдя с коня, вошли в дом, в помещении сидела сотня красавиц. Отец девушек Жарыкбию:

– Давай, девушка, которую ты выберешь, – твоя, а завтра я, рано встав, приду, – сказав, выйдя из дома, ушел.



Жарыкбий самую красивую из всех младшую дочь выбрал. Как только он ее выбрал, остальные девушки вышли и ушли.

Жарыкбий с девушкой долго сидел, однако, не выдержав:

– Ты, наверное, знаешь, у него (твоего отца) что за дело, которое за три дня будет сделано, есть? – спросил.

– Ай, добрый молодец, я и сама не знаю, что это за дело. Но уехавшие с ним живыми не возвращаются, а отец, золотом верблюдов нагрузив, возвращается, – ответила. – Ты с моим отцом не иди, (давай) ночью убежим, я дороги хорошо знаю, – говоря, убеждала юношу.

Однако Жарыкбий не подчинился.

Перед рассветом (Когда должна была заняться заря):

– Эй, гость, вставай, опоздаем! – говорящий голос послышался.

Когда Жарыкбий, вскочив, начал одеваться, девушка:

– И я с вами еду, – сказав, вскочив, обняла его за шею.

И девушку оттолкнув в сторону, когда вышел на улицу, тот человек, сидя на коне, был готов. Жарыкбий, вскочив, сев на коня, отправился.

На третий день (своего путешествия – *Ф.Г.*) добрались до подножия одной большой горы. После того, как сошли с коней, (тот человек – *Ф.Г.*) Жарыкбию:

– На, возьми этот нож, зарежь своего коня и, содрав его шкуру, заберись внутрь шкуры. Тогда, большой орел, прилетев, тебя, подняв, вознесет на вершину горы. На вершине скалы есть золото. Когда я махну тебе флагом один раз, сбрасывай золото, второй раз, говоря, что много, два раза помашу. Тогда опять заберись в шкуру, орел тебя на землю спустит, – сказав, дал ему нож.

Жарыкбий, взяв нож, перерезав своему коню горло, забрался в его шкуру. Едва он залез в шкуру, мужчина, зашив шкуру, отошел в сторону.

В какой-то момент большой орел, прилетев, запустив когти в шкуру, подняв, унес. Орел, Жарыкбия нося по кругу, подняв на вершину горы, опустил на землю.

Когда Жарыкбий, распоров шкуру ножом, выбрался из шкуры, один большой орел улетал оттуда. Орел, когда раскрывал крылья, закрывал лик солнца.

Когда Жарыкбий посмотрел с вершины горы, то, находящиеся у подножия горы показались маленькими как муравьи.

После того, как тот человек помахал красной тканью, Жарыкбий начал сбрасывать золото.

Когда Жарыкбий, подумав: «Не хватит ли?» – посмотрел, увидел, что тот человек уезжает.

В то время, как Жарыкбий, побеговав, забравшись внутрь шкуры, ждал, когда орел, прилетев, спустит (вниз – *Ф.Г.*), орел, прилетев, приземлился на шкуру. Сколько бы ни ждал Жарыкбий, у орла не было желанья спускаться парня, разве только сильнее впиваться когтями.

Орел, крепко держа когтями, начал клювом разрывать шкуру, тогда Жарыкбий, ножом распоров шкуру, орла, ударив ножом (вонзив в него нож), убил.

Жарыкбий много ходил, много бродил, но кроме человеческих костей ничего другого не увидел.

– Это орел, как вижу, людей живыми не возвращал, – сказав, мясо орла отделив от шкуры, забрал в качестве пищи для себя.

– Для трудностей родившись, в трудностях вырос и с трудностью столкнулся, и снова спасусь, – решив, Жарыкбий, опять питаюсь сырой пищей и травами, ночью под камнями стал ночевать.

Сколько лет прожил, не зная, куда идти, и не находя пути, чтобы спуститься с горы, в изодранной одежде, чтобы насытив свой желудок поесть, еды не находя.

В один день, когда бродил, осматриваясь вокруг, на одну узкую тропинку наткнулся.

– Если мне суждено счастье (Если у меня есть счастье), эта дорога спустит меня с горы, а если нет – мои кости останутся среди камней, – решив, попросив помощи у Аллаха, пустился по дорожке.

Ножом расширяя дорогу, возясь-возясь, спустился с горы. Подножие горы – большой, глубокий и густой лес, внутри – полно хищных зверей, чтобы обороняться от напавших – оружия нет, кроме ножа.

Жарыкбий, днем по округе ходя, себе пищу добывая, а когда наступала ночь, забираясь на вершины деревьев, встречая рассвет, жил.

Сколько Жарыкбий прожил в лесу, встреченное животное живым не упустил, сколько зверей убил, наверное, тому счету нет. Сам по себе в незнакомых местах и в густых лесах как богатырь ходил.

Однажды, когда шел, встретил одну тропинку. По той тропинке идя, выбрался на большую равнину. Когда Жарыкбий, выйдя на равнину, посмотрел, вдалеке увидел башни.

– В этих башнях теперь, наверное, человек живет, – сказав, Жарыкбий пришел к башням.

Когда, подойдя к башням, посмотрел, сидел один старик. Жарыкбий, подойдя к старику:

– Салам алейкум, – сказав, поздоровался.

Старик, встав:

– Алейкум салам! Человечий сын, откуда появился? Я сто лет живу здесь, не видел, чтобы нога человека ступала (сюда), – говоря, очень изумившись, посадил рядом с собой.

Старик, удивившись, Жарыкбия о многих вещах спросил. Жарыкбий все перенесенные им беды старику перечислил.

Старик, отведя Жарыкбия домой, поставил перед ним еду, но съеденное исторгая обратно, внутри оставшегося не было. Старик, поняв, чем болен Жарыкбий, некоторое время ухаживая, вылечил.

Относясь к Жарыкбию как к собственному ребенку, все свое имущество показав, и (ему) самому, чтобы жить, отдельную башню выделил.

Жарыкбий, куда захочет, идя, из понравившегося сада фрукты вкушая, все виденные им беды позабыл. Однако, хотя и жил на свободе, вольготно (хорошей жизнью), из головы мысли и переживания не уходили (не шли).

В один день старик, позвав Жарыкбия:

– Дитя мое, я – предводитель всех пернатых на этом свете. У птиц будет собрание, у меня нет возможности не пойти туда. А ты держись молодцом, пока я не вернусь. У птиц, если будет знающая новости из мест, где вы живете, спрашиваю, – сказав, ушел.



Когда Жарыкбий, сам в одиночку пойдя в сады, прогуливался, чтобы развеять скуку, увидел, что по небу летят три орла.

«Теперь, наверное, эти орлы из мест, где мы живем, оказавшись, старик ко мне направил», – решив, обрадовался.

Однако, в голову нечто другое придя: «Наверняка, узнав, что старика здесь нет, летят выпить родниковой воды. Спрятавшись, испытаю-ка их», – надумав, спрятался глубоко.

Орлы, прилетев, приземлились на берегу родникового озера. Когда Жарыкбий пригляделся, увидел, что из орлиных личин (шкур) вышли три красивые девушки. Одна из девушек была красивее всех.

– Человеческий запах есть! Давайте, примем орлиный облик! – заупрямилась.

– Отстань (Да ну тебя), чтоб ты трагически погибла! Из-за тебя, наверное, умирает сын человека! Старика здесь нет, тогда откуда здесь взяться человеку? Раздевайся и купайся! – сказав, прыгнули в воду.

Тогда Жарыкбий: «Коли людей не любишь», – подумав, младшей девушки орлиную личину схватив под мышку, был таков.

Старшая девушка у Жарыкбия:

– Отдай ее орлиную личину, – говоря, много просила, Жарыкбий орлиную личину отдать не захотел.

Тогда девушка:

– Если не отдаешь орлиную личину, уйди, дай одеться, – попросила.

Жарыкбий, и орлиную личину забрав, отойдя в сторону, дал девушкам (возможность) одеться. Девушки, закончив купаться, одевшись, подошли к Жарыкбию.

С Жарыкбием долго гуляли:

– Наш человеческий зятек, – ласково говоря. – Давай, зять, присев, отдохнем-ка, – сказав, Жарыкбия, приведя в башню, усадили.

Сидя в башне, беседуя, усыпив Жарыкбия, забрав орлиную личину, девушки убежали.

Когда Жарыкбий, проснувшись, посмотрел, и орлиной личины нет, и девушек нет.

– Я позволил девушкам себя победить! – говоря, себя избив, доведя до изнеможения, лег.

В то время, как у Жарыкбия от того, что он слишком сильно сам на себя разозлился, не осталось благородного облика, да и сам он исхудал, старик пришел.

– Аллах-Аллах, что приключилось с тобой, как я ушел? Еды что ли не было, чтобы поесть? – говоря, взбеленился.

– Все было, но из-за своей никчемности девушкам проиграл, – сказав, поведал историю о произошедших событиях.

– Не бойся, дитя мое, все будет хорошо. Я пернатых спросил, но знающего новости из мест, где ты жил, нет. «На следующее собрание, разузнав, прилетайте», – велел, обязав (их) (досл.: «положив на шею»), распустил, – сказал старик.

Старец Жарыкбия, заботясь, вылечив, вдвоем присматривая за всем, что нужно, отцом-дитем став, жили.

Когда опять пришло время, старик, приготовившись уходить на собрание:

– Держись, дитя мое, себя не мучь, – сказав, ушел.

Когда Жарыкбий в одиночестве гулял среди деревьев, увидел, как вновь летят три орла. Жарыкбий: «Наверное, это прежние три орлицы», – подумав, спрятался в гуще.

Орлы, прилетев, приземлились возле родника. Из орлиных личин три красивые девушки выйдя, начали раздеваться. Тогда прежняя девушка, посмотрев вокруг:

– Человеческий дух есть, – сказав, остановилась.

Старшая девушка, на младшую взбеленившись:

– (Такое ты) красивое создание, чтобы тебя человек не подждал! Раздевайся и входи в воду! – крикнув, сама раздевшись, прыгнули в родник.

Что было делать младшей девушке? Хочет, не хочет, раздевшись, вошла в воду.

Жарыкбий, дав им войти в воду, выскочив, забрав их орлиные личины, сунул под мышку.

Девушки много просили:

– Отдай орлиные личины, торопимся, – говоря, как бы то ни было, парень к их просьбам даже не прислушался.

– Да, добрый молодец, мы не выросшие в воде животные, отойди подальше и дай нам одеться, – говоря, попросили.

Жарыкбий, отойдя в сторону, позволил девушкам одеться.

Жарыкбия девушки, окружив:

– Наш зять, – говоря, приласкав, много ходили.

Долго гуляя, притомившись, под дерево присели. Как только сели, парня усыпив, ушли.

Когда Жарыкбий, хорошенько поспав, проснулся, опять девушек нет.

– В какую же негодность я пришел, девушкам проиграв! Теперь они меня (уже) второй раз обманывают! – говоря, сильно загрустил (в большую печаль погрузился).

Так обиделся (Его сердце так терзалось), что даже пищи не вкушал до прихода старика.

Когда старик, придя, посмотрел на Жарыкбия, не смог узнать.

– Аллах-Аллах, что с тобой приключилось, чтобы так поплохел (исхудал)? Или опять девушки, придя, обманув, убежали? – говоря, Жарыкбия, ухаживая, вылечил.

– Дитя мое, теперь, когда меня не будет, если они прилетят, возьми их орлиные личины и ни в коем случае, пока я не приду, не садись, если сядешь, если не усыпят, другого выхода (у них) нет, – сказав, парня научил.

– Отец, почему эти девушки в то время, когда ты здесь, не приходят купаться? Всегда, когда ты уходишь, приходят, – говоря, спросил.

– Они при мне приходят бояться, а потому, выжидая мой уход, приходят. Этого родника вода – лечебная вода. Эти девушки – сестры. Старшая девушка – болезненная девушка и, если в воде искупается, выздоравливает, поэтому прилетая, купаются, – сказал.

Когда опять настало время и старик, собравшись уходить:



– Дитя мое, держись, не сдавайся (не дай себя победить)! – сказав, ушел. В то время, как Жарыкбий: «А теперь бы только пришли!» – думая, прогуливался, увидел, что девушки, облачившись в орлиные личины, летят. Парень: «Опять девушка узнает», – подумав, еще глубже спрятался.

Когда девушки, прилетев, вышли из орлиных личин, та же девушка, посмотрев вокруг:

– Где-то человеческий сын есть, – сказала.

Старшая девушка, еще и разозлившись:

– Чтобы ты трагически погибла! Раздевайся, если собираешься купаться! – крикнув, раздевшись, вошла в воду.

Как только девушки вошли в воду, Жарыкбий, выскочив, забрал орлиные личины.

Что было делать девушкам? Попросили парня:

– Отдай орлиные личины, – говоря, однако парень нивкакую не соглашался (досл.: «даже близко к себе не допускал»).

– Если орлиные личины не отдаешь, уйди, дай нам одеться, – так сказав, когда попросили, Жарыкбий, отойдя в сторонку, позволил им одеться.

Девушки, выйдя из воды, надев одежду, подойдя к парню, чтобы обмануть, много красивых слов произнесли. Сколько бы ни старались, парень, много внимания не обращая, прогуливался вместе с ними.

Девушки всю старались:

– Сядем, (мы) устали, – говоря, но Жарыкбий не подчинился.

Младшая девушка, поняв, что парня не смогут победить, сестрам:

– Идите вы домой, я здесь останусь. А ты, человеческий сын, отдай орлиную личину, сложив, на место положу, – сказала.

Жарыкбий, на девушку посмотрев:

– Сына человека один раз обмани, второй раз обмани, а в третий раз не обманешь. Ты оставайся здесь, сестры пускай уходят. А твою, пока старик не вернется, орлиную личину не отдам. Если (вы) устали, садитесь, а я не сяду, – ответил.

Девушки, поняв, что не смогут обхитрить парня, подчинились.

Жарыкбий, прогуливаясь с девушками в саду, увидел, что старик идет.

Старик, подойдя к ним:

– А-а-а, теперь понял, почему так худел мой гость. Если сын человека желает приблизиться к вам, а вы что ленитесь! – взбеленился.

Тотчас же старик, сев, написав письмо:

– Отнесите письмо, отдайте своему отцу. А ваша младшая сестра здесь остается, – сказав, передал письмо девушкам.

Девушки, приняв орлиный облик (войдя в орлиные личины), улетели. Прилетев домой, письмо отцу передали. Тогда их отец, прочитав письмо, разъярившись на девушек:

– Сейчас же пойдя, скажите старику: пусть распоряжается судьбой моей дочери, как хочет! – сказав, девушек обратно отправил.

Девушки, вернувшись назад, свою младшую сестру, с Жарыкбием заключив неких*, за человека отдали. Хоть людей и было немного, тот курманлык**, устроенный стариком на празднике Жарыкбия, у присутствовавших там до сих пор, наверное, из памяти не ушел (не забылся).

* Неких – бракосочетание по мусульманскому обряду [5, 992].

** Курманлык – пир, торжество, угощение [5, 709].

Жарыкбий много времени прожил с красивой женошкой, как в своем доме, однако, как бы ни жил, сердце его было в печали.

В один день, в то время, как сидел вместе с женошкой, из глаз Жарыкбия потекли слезы. Тогда его женошка:

– Душа моя, Жарыкбий, что случилось с тобой? Из глаз твоих слезы льются, чтобы из мужских глаз слезы текли, я не видела! – говоря, спросила.

Жарыкбий, сильно переживая из-за того, что это дал понять своей жене, и голову вниз опустив:

– Да разве сердце мужчины из железа? Из мяса. Да и железо ведь плавится! Там, где железо плавится, разве мясо не тает? Слеза выходит из-за того, что сердце тает. С тех пор, как я, оторвавшись от дома, ушел, сколько времени прошло? Шесть друзей было у меня, где они? Погибли... Из-за того, что эти вещи вспоминаются, выходит слеза из моего глаза, – сказал.

– Краешек моей души, говоря эти вещи, не мучай свое сердце (не травми свою душу), такова, видно, была судьба. Если хочешь поехать домой, я дорогу знаю. Если старец позволит, уедем, – ответила.

Жарыкбий, очень обрадовавшись, обнял свою женошку.

Женошка Жарыкбия, пойдя, рассказала старику.

– Да что мне с ним делать? Если сын человека по собственному желанию не останется, я: «Оставайся», – не смогу сказать. И у него есть отец-мать, наверное, вспоминаются... Отправляйтесь, я вам разрешаю. Однако прошу меня не забывать. Подготовьте себя, чтобы утром выйти в путь, – сказал старик.

На второй день утром, женошка Жарыкбия приняв орлиный облик, Жарыкбий сев на нее, попрощавшись со стариком, отправились в дорогу.

Когда полетели, женошка Жарыкбию:

– Зажмурь глаза, вдруг заболят, – сказала.

Жарыкбий, обняв женошку за шею, зажурился.

Много ли летели, мало ли летели, в то время, когда Жарыкбий открыл глаза, если (вы) помните, достигли места, где юноши в самом начале вышли из воды. Там сев и отдохнув, вкусили пищу.

Женошка Жарыкбия:

– Забыл ли, как здесь, ходя на охоту, бродил, добывая пищу? – спросила.

Жарыкбий, удивившись:

– Ты откуда знаешь эти вещи? – спросил.

– В то время, когда вы вышли из моря, я, на вершине той горы (у нас) есть сад, на вас из сада смотрела. Вон, видишь ту дорожку? Она ведет к нашему саду, – ответила.

После того, как закончили отдыхать, жена приняв орлиный облик, а сам на нее сев, полетели.

Когда набрали высоту:

– Жарыкбий, закрой глаза, заболят, – сказав, женошка заставила его закрыть глаза.

Жарыкбий, крепко зажмурившись, обнял свою женошку.

Много ли пролетели, мало ли пролетели, когда Жарыкбий, открыв глаза, посмотрел, (они) прибыли в знакомые ему самому места.



– Жарыкбий, забыл ли, как с друзьями начали здесь гнаться за оленем? – спросила.

Жарыкбий, удивившись:

– Ты откуда знаешь эти вещи? – спросил.

– Я в то время в саду сидела. Услышав звук того, как олень заговорил с тобой, посмотрев, вас увидела. Вон, видишь на вершине горы сад, он наш, – сказала.

Жарыкбий места, где сам родился и вырос, истосковавшись (соскучившись), оглядев, вернулся.

Пока Жарыкбий вернулся, его женушка, воздвигнув шатер, приготовила пищу. Той ночью там остались.

Утром, когда, закончив трапезничать, встали, из леса с отросшей бородой один всадник выехал. Того всадника, спустив с коня, заведя в шатер, накормили едой.

После того, как всадник закончил есть:

– Чего едешь, чего бродишь? – спросили.

– С тех пор, как я, с коня не слезая и со спины своего коня седло не снимая, едешь, много времени прошло. До меня тоже две группы ездил. Вот сегодня исполняется сорок лет, как сын Арабия Жарыкбий, с шестью друзьями отправившись на охоту, не вернулся. С тех пор ищем, не находим. Я сегодня домой возвращаюсь, завтра другие отправятся искать, – сказав, поведал историю.

Женушка Жарыкбия всаднику:

– Ты сейчас же пойдешь и скажи Арабию: теперь искать юношей пусть людей не отправляет, про Жарыкбия мы вести расскажем. Мы здесь будем находиться, и народ собрав, пусть сюда придет, – сказав, отправила.

Всадник:

– Жарыкбия нашел! – обрадовавшись, в мгновение ока добрался до села.

Когда стал въезжать в село:

– Жарыкбия нашел! Жарыкбия нашел! – крича, в дом Арабия приехал.

Эти звуки услышав, весь народ до единого (во двор) к Арабию собрался. Арабий, всех до единого в его царстве имеющих, не разбирая, малых и старых собрав, прихватив угощения, прибыл к шатру. Народ, столпившись у шатра:

– Кто есть внутри него? Поскорее выйдя, про наших парней новости поведайте! – говоря, потребовали.

Выступив вперед людей, Арабий:

– Дорогие гости, почему (вы), не придя в мое поселение, на большой равнине разбив шатер, остановились? – спросил.

Жарыкбий, глядя на народ, едва сдерживая радость сердца:

– Мы, от того, что с детства привыкли к трудностям, предпочитаем жить, разбивая на равнинах шатры. Однако смотрю на твой народ, все до единого одеты в черное, даже луча солнца не видать. Отчего это? – спросил.

– Да, дорогие гости, с тех пор, как мой народ носит траур, много времени прошло. Когда мы видели лик (букв.: «глаз») солнца, уже и позабыли. Да пришли к вам о наших парнях новости испросить, если знаете новости, расскажите, – сказал (Арабий).

Узнавшего Жарыкбия никого не оказалось.

Жарыкбий:

– О каких парнях новости спрашиваете? – спросил.

– Дорогие гости! У меня был сын, его имя – Жарыкбий. У него с детства было шесть друзей. Когда я с людьми отправился на охоту, они, отправившись в другую сторону, не вернулись. С тех пор ищем, но не находим, даже новостей о них не слышим. Если вы знаете, просим вас рассказать, – ответил.

Женушка Жарыкбия:

– Не упрекайте, что я, будучи женщиной, выйдя перед народом, разговариваю. Но поскольку вы попросили рассказать, не могу не рассказать, – молвила. – Прежде, чем я начну рассказывать, пусть люди сядут.

Весь народ, рассевшись на красивой поляне, ожидая, когда начнет рассказ, стали смотреть на жену Жарыкбия.

– Да, дорогой народ, община Арабия! – начала рассказ. – Когда вы, разделившись надвое, вышли на охоту, Жарыкбий с друзьями, вот с этого места, будучи раненным в ногу, с гор, не сумев бродить, сбегавшего на равнину, никому из живущих на равнине не причинившего вреда оленя преследуя, загнали в море. Поискав, найдя какую-то лодку, поймав оленя в воде, подняв в лодку, зарезали. С этого времени началась их дорога трудностей, так же, как у тебя, Арабий мрачная (печальная) жизнь началась в тот день, когда ты ранил оленя, – сказав, начав с начала, до того дня рассказ повела.

В то время, как жена Жарыкбия рассказывала историю, вытекавшие из людских глаз слезы, замочив их грудь, капали на землю.

Дорогие слушатели, историю парней я не рассказываю, начиная с начала (с края), я в начале говорил. К чему пришел конец, если послушаете, с большим удовольствием расскажу.

После того, как жена Жарыкбия закончила рассказывать историю:

– Вот теперь, если шестеро ваших парней в трудности, явив себя героями, погибли, оставшегося в живых вашего сына Жарыкбия к вам привезла, – сказав, поставила Жарыкбия перед ними.

В это время Арабия, начиная с ног, до головы холодный озноб пробив, чуть не лишился чувств. А жену его Ариу, упавшую в обморок, народ с трудом привел в сознание.

Народ не верил, что это Жарыкбий. Тогда жена Жарыкбия:

– Коли не верите, родственники Жарыкбия, садитесь среди людей! – сказав, Жарыкбия завела в шатер.

После того, как родня расселась среди народа, Жарыкбий всех узнав, подойдя к матери, поклонившись, обняв, так сильно плакал, что даже людей растрогал (заставил рыдать).

Жена Жарыкбия Арабию:

– Поглядел бы ты и на небо, – сказала.

Тогда Арабий посмотрел на небо. Небо красиво, ясно распогодившись, жаркое солнце светило.

Жена Жарыкбия, подойдя к Ариу:

– Взглянула бы на кольцо, – сказала.



Когда Ариу, достав из-за пазухи кольцо, посмотрела, кольцо ярко блестело. Тотчас же народ устроил большое веселье. Если бы зарезанный там в тот день скот, бараны оказались здесь, если бы с неба упал камень, до земли бы не долетел.

Народ, разбив на равнине шатры, устраивая праздники, игрища, много времени провел. После того, как угощения закончились, народ собравшись, для Жарыкбия большие башни выстроили.

В то время, когда начали строить башни, Жарыкбий, положив орлиную личину под основание (фундамент) крепости (башни), спрятал, чтобы жена не убежала.

Много лет прожили Жарыкбий с женой. К каждой двери приставив стражников, жену ночью на улицу не выпускали.

Однако, как-то ночью, обманув стражников, выйдя на улицу, забрав свою орлиную личину, приняв орлиный облик, приземлилась на крышу. Постучав по жести, вызвав охранников:

– Скажите Жарыкбию, чтобы вышел сюда! – велела.

Когда Жарыкбий выскочил на улицу, его жена, приняв орлиный облик, находилась на крыше дома.

– Дорогой Жарыкбий, ты, мою орлиную личину спрятав, поставив передо мной стражников, надумал меня держать. Я улетаю. Коли будешь меня искать, поднявшись по той, указанной мною тропинке, придешь в сад. А если придешь туда, наш дом виднеется, – сказав, женщина улетела.

Жарыкбий, прикусив нижнюю губу, забегал вокруг, однако, что бы поделал, вина была на нем самом.

Жарыкбий некоторое время прожил сам по себе.

В один день своему отцу Арабию:

– Иду искать свою жену, – сказав, ушел.

Хоть и много ходил, бродил, та дорожка привела в сад. Посмотрев из сада, увидев дома, Жарыкбий пошел к домам. Когда пошел к домам, его женушка там сидела.

Когда увидела Жарыкбия, его женушка, подбежав, обняв, заведя в дом, ознакомила со строением.

Жарыкбий много времени провел в доме своей жены. А потом, забрав свою женушку, вернулся в свое село.

После того, как прибыли в село, его женушка, отдав орлиную личину Жарыкбию:

– На, сожги в огне, пока она не сгорит, нам покоя нет! – сказала.

Жарыкбий, спалив орлиную личину, вместе с женой спокойно, мирно живут. Однако, сколько они ни живут, детей (у них) нет.

Чего смотрите мне в глаза? Я, вчера ночью у них оставшись, хорошенько сыры* выпив и баранью голову отведав, пришел. А если говорю неправду, оттого что спать хотите, давайте разоидемся каждый по своим домам.

Как мы этого не видели, да не увидим (не познаем) болезни-немочи.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 1. Записано 2.04.1958 г. в с. Нижний Чегем КБАССР от Бенпаева Назира Ахияевича (1916 г.р.) (автозапись).

* Сыра – традиционный карачаево-балкарский хмельной напиток; домашнее пиво.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Многосюжетная волшебная сказка.

Особенностью произведения является проведение психологической параллели между происходящими событиями и состоянием природы, что не особенно характерно для карачаево-балкарских сказок.

В тексте упоминаются волшебный предмет (золотое кольцо жены Арабия, которое покрывается ржавчиной, когда случается беда); чудесное животное (говорящий олень, чье ранение и убийство повлекли за собой трагические события в жизни его обидчиков и их приближенных); страна обладающих речью обезьян, издавна воюющих со львами и вовлекших в эту борьбу царевича и его друзей; необычный старец, оказавшийся повелителем птиц и понимавший их язык (в некоторых мифах, сказках, религиозных сказаниях данные черты приписываются пророку Сулемену, т.е. царю Соломону); девушка-оборотень, превращающаяся в орлицу (ср. с Царевной-Лебедью в русском фольклоре), которая стала женой Жарыкбия и помогла ему вернуться на родину.

В произведении встречается множество различных мотивов (о нарушении запрета, о чудесном животном (олене), чудесном ребенке, мотив потери, испытания и обретения, путешествия в другие страны (миры), о чудесной жене и др.)

Ярко выражена фигура сказочника, который вплетает в повествование реплики в зал, обращения к слушательской аудитории, авторские оценки событий, явлений.

В сказке имеется своеобразное вступление. Завязкой служит ранение Арабием говорящего оленя, после встречи с которым начинаются злоключения царя, а впоследствии и его сына Жарыкбия с друзьями. Здесь уместно отметить, что олень у карачаевцев и балкарцев являлся тотемным животным. Достаточно вспомнить, что Апсаты и его дочь Фатимат (Байдымат) могли принимать облик трехногого оленя, а молоко белой маралихи считалось лекарством от самых тяжелых недугов.

Композиция произведения осложнена переходами повествования от изложения обстоятельств, связанных с одной группой героев, к описанию событий, происходивших в это время с другими персонажами.

Текст заканчивается традиционным пожеланием «Аны кёрмегенибиз кибик, ауруу-талау кёрмейик» – «Как мы этого не видели, да не увидим (не познаем) болезни-немочи».



СЮТ КЁЛ

Эртте-эртте бир жерде бир хан жашагъанды. Ол ханланы ичинде бек залим, бек кючлю, кьолундан келген бай хан болгъанды. Ханны жер жапхан мюлкю, саны болмагъан жылкысы, кьой, тууар кьошлары болуп, жалчылагъа малын бакъдырып жашагъанды.

Ханны жашагъан дуньясында да жангыз бир жашындан башха сабийи болмагъанды. Ол жангыз жашы да, атасына ушаш, ол хан жашагъан, оноу этген жерде аллына бир тенги да ётмеген, жигит, ётгюр, мадарлы жаш болгъанды. Тенг жашларыны барына да таматалыкъл ол этип тургъанды.

Ары-бери барыргъа неда уугъа чыгъаргъа эсине тюшсе, ханны жашы, нёгерлерин жыйып, барып, келип жашагъанды. Ол заманда нёгерлерини кишиликлерин, адамлыкъларын сынаиды да, кьалгъан нёгерлеринден айырып, юч жарлы кишини жашын кесине нёгер этеди. Ол айырып алгъан юч жарлы жаш, адамлыкългъа, кишилике, батырлыкългъа жетгенде, ханны жашындан артха кьалмагъан жашла болгъандыла.

Ханны жашы ол юч жаш бла, кеси тёртюнчю болуп, кьайры барсала да, кьайдан келселе да, бирге антлы тенгле болуп жюрюгендиле.

Кюнлени бир кюннде жашланы жолгъа чыгъаргъа эслерине тюшеди да:

– Жюрюгюз, жашла, эрикгенден да ёлебиз, жолгъа чыгып, тегерекге кьарап кьайтайыкъл, – деп, атларына да минип, сауутларын, сабаларын да тагып, эл бла да саламлашып: – Хайда, энди сизге – эсенлик, бизге уа – саулукъл, – деп, атланып, чыгып кетедиле.

Тёрт жаш, ханны жашы таматалары болуп, аллары айланган жанына кетедиле. Кече-кюн тохтамай бара кетедиле да, ала баргъан жолну ызы тауусулуп, кьайры барырларын билмей, тохтап, оноулашадыла. Тегерекге кьарай кетип, адам жюрюгеннге да ушамай, жаныуар ызгъа ушаш хансла ичинде бир ингичге* жол ызчыкълны эслейдиле. Ханны жашы:

– Жюрюгюз, жашла, бу ызы ахырына бир чыгъайыкъл, – дейди.

Жангыдан атланып, ол ызы бара кетедиле. Алай болгъанлыкългъа, ол жангыдан тапхан жол ызлары узакългъа бармай, бир уллу суугъа тирелип, жокъл болуп кьалады. Суу, уллу, залим суу, ташны-тауну да тентиретип кетеди дерча, адам кирирге базынмазча, кьоркьуулу суу болады. Жашла сууну боюну бла ёрге-энишге барып да кьарайдыла, алай кирирге базынмайдыла. Сууну ары жаны бийик, кьалын агъачлы тау болгъанын да эслейдиле.

Сора жашла алайда, атладан тюшюп, атларыны айылларын да бошлап, ауузлукъларын да алып, биченликге отларгъа бошлайдыла. Кеслери да, олтуруп, бир кесек аш да ашап: «Таплыкългъа оноулашайыкъл да, анга кёре оноубузну этербиз», – деген оюмда тохташдыла. Ашап, ичип да бошайдыла, таугъа да, суугъа да кёп кьарап, кенгешгенден сора, ахырында жашладан бири айтады:

– Эл бла саламлашып, кетгенибизни халкългъа билдирип, кишилеча жолгъа чыкългъанбыз. Суугъа кирип, ол жанында таугъа-агъачха кьутулсакъл, ол мен кёрген тау кийикден кьуру болургъа амалы жокълду. Бир уугъа да айланып, бирер кийик да ёлтюрюп, ат кьанжыгълаларыбызгъа

* Иничке.

байлап кьайтмасакъ, жарамаз. Къурлай, элибизге кёзлерибизни жандырып кьайтмакълыкъ кишилик болмаз, – деп, кесини оюмун айтып бошайды.

Кьалгъан жашла да:

– Керги айтаса, тюздю айтханынг, – деп, олтургъан жерлеринден туруп: – Энди суудан кьаллайла ётебиз? – деп, кенгешедиле.

Ахырында жашла атларыны иерлерин аладыла да, аякъларына кишен салып, бу жанында кьоюп, суугъа-суугъа секиришедиле.

Ханны жашы бир нёгери бла сууну ол жанына ётеди. Бирси эки нёгерлерин, сууда ёлгенлерин-сауларын да кёрмей, тас этедиле. Ёрге бла энишге кёп бардыла, изледиле. Алай болгъанлыкъгъа, аланы табалмай, тюнгюлюп кьалдыла.

Алайда жашла, кёп кенгешип, былай айтдыла:

– Энди биз не кёп излесек да, тегерегибизге кьарасакъ да, эки нёгерибизден бошадькъ. Энди кесибибизни оноубузну этейик, – деп, ахырында жашла уугъа атланыргъа таукел болуп тохтадыла.

Ханны жашы бла бир нёгери, ол уллу агъач тауну тюрюнден ёрге айланып, кийик кёрсек деп, тегереклерине да кьарай, кийик да кёрмей, бара-бара кетип, тауну башына чыгып кьалдыла.

Тауну башындан, туурадан тегерекге кьарай кетип, бир агъач талада кийик сюрююню отлай тургъанын эседиле. Жашла: «Энди аладан ёлтюрейик», – деп, тауушсуз кийикле болгъан жерге жууукълашдыла. Алайда экиси эки уллу кийикни атып ёлтюредиле, кьалгъан кийик сюрюю да, ушкок тауушдан юркюп, таугъа ташайып, кьачып кетедиле.

Жашла энди, барып, ёлтюрген кийиклерин жарашдырып, кётюрюп ызларына кьайтыр мурат бла кюреше тургъанлай, артларындан кимле эселе да, тауушсуз келип, эки жашны да тюплерине салып, кьолларына-аякъларына да байлап:

– Ким эркин этгенди сизге, келип, бизни кийик сюрюубюзден кийик ёлтюрюрге? – деп, юслерине сюелген алты адамны кёрдюле.

Болсада, кийик сюрююню иелери, эки жашны да алып, таугъа чыгырып, элтип барып, тутмакъ юйлерине салып, аны эшигин, терезесин да бегитип, ол кече аны бла тынчайып кьалдыла.

Эрттенликде уа ол аллында кюн аланы байлагъан жашла, келип, тутмакъ юйню эшигин ачып:

– Жюрюгюз, – деп, кьайры элтгенлерин жашлагъа билдирмей, бир ариу жасалгъан юйге алып бардыла.

Босагъадан кирип башлагъан жерден тебиреп, кьатапа кийизлени юсю бла бир бири ичи бла кирип, эки да, юч да отоудан ётдюрюп, аланы бир отоугъа келтирдиле. Анда уа эки мыйыгъы да эки кьулакъ артына жете, омакъ кийинип, бир адам кьолунда да алтын саплы кьынгырбаш таягъы бла олтуруп тургъанын кёрдюле.

Тутмакъ жашла эшикден киргенлей, ол адам секирип орунундан туруп:

– Тюнене сиз ёлтюрген кийикле мени сюрююмдендиле. Сизни байлап келтирген алтысы уа мени жашларымдыла, – деди. – Кьайдан чыкъгъан адамласыз? Не айланасыз, не жюрююсюз? Кийиклерими нек ёлтюргенсиз, бетсизле? Эки кийигим ючюн, экигизге ёлюм буюрама! – деп, чамланды.

Ханны жашы:

– Тауну кийиги сени нек болады? Биз, уугъа айлана келип, ёлтюргенбиз кийиклени, – деп, узун мыйыкълыкъгъа жууап этди.



Болсада, узунмыйыкъ, жашланы сѐлеширге кѳоймай:

– Ол сиз ѓтген суудан тартып, бу кѳз тутхан агъач-тау, аны ичинде жашагъан жаныуарла да меникиледиле! – деп, сѳзюн бошады.

Жашлагъа уа:

– Сизге кечгинлик жокъду. Эки сайлау берирме да, сайлагъаныгъызны алырсыз, – деп, биягъы тутмакъ юйге элтирге жашларына буюрду.

Ханны жашын а нѳгери бла, биягъы тутмакъ юйге салып, эшиклерин бегитип, кѳоюп кетдиле. Жашла да:

– Бу жолгъу жолубуз жол болмады. Ишибиз ѓлюмдю, – дей, кѳзлерине жукъу кирмей тургъанлай, кече арасында тутмакъ юйню эшиги ачылды.

Къарангыда ол адам ким болгъанын жашла таныялмадыла. Болса да, эшикни ачхан жаш айтды:

– Мени атамы кѳолуна тюшген адам сау кѳутулмагъанды. Ол хар тутханын ѓлтюрюрге юйренген кишиди. Мен алты къарындашны кичилериме. Бюгече сизни бери келтиргенден сора, атам экигизни да ѓлтюрюрге буйрукъ бергенди. Мен сизни ѓлюрюгюзню суймейме. Кѳолларыгъызны бошлайым да, чыгъыгъыз да, къачыгъыз, – деп, эшикни ачып, жашланы тутмакъ юйден бошлады.

Ала кетгенден сора, тутмакъ юйюню эшигин сындырып кетгендиле дерча, эшикни бузду да, тауушсуз кирип, жатып къалды.

Къачхан жашла къарангыда, танымагъан жерлеринде къалай барырларын билмей, тангнга дери жолгъа тюзелалмай, айланып кечикдиле. Танг жарыгъанда уа, аллары айланган жанына къарап кетдиле.

Жашла къачхан жерден а, эрттенликде тутмакъ юйню эшиги бузулуп тургъанын кѳрюп, тутмакъланы да къачханларын билип, аталары жашларына чамланып:

– Не саулай, не ѓлтюрюп къайтарыгъыз ол жашланы, ансы алагъа этерими мен сизге этерме! – деп, алты жашыны хар бирин бирер жанына жиберди.

Тауну иесини бир жашы къысха жолну билип жашланы ызларындан болду. Къачхынчылагъа кѳутулуп кетерге аз къалгъанлай, атып, ханны жашыны нѳгерин ѓлтюрдю. Ханны жашы, жангыз кеси къалып, саулай кѳутулду.

Ханны жашы, юч нѳгеринден да бошап, жангыз кеси бир жолну бара кетеди да, ач да, амалсыз да болуп, бир элге жетеди. Ол элни къыйырындан кире баргъанлай, сурат кирик бир ариу къыз эки челеги бла суу алып келгенлей, жаш юсюне чыгъып къалады. Таныгъан адам чыкъмазын да билип, жаш кеси да, къатыны болмай, жалан жаш болгъаны себепли, ол къызны ариулугъуна сукъланып, кѳзю къарап, не бла сѳз башларгъа билмей:

– Эй, къыз, бир суу ичир, – деп тилейди.

Къыз, сѳз да айтмай, челегин жашха берип:

– Къаллай бир суйсенг да ич, ыразыма, – дейди.

Жаш, суу ичип бошагъынчы, кѳзюню къыйыры бла къызгъа кѳзюню къакъмай къарап турду. Къызны да жашха кѳзю къарагъанын сезип:

– Эгечим, бюгече манга бир къалыр жер юйрет, таныгъаным жокъду, – деп тилегенди.

Жаш алай айтханда, къыз:

– Былай сабыр эт. Юйде соруп чыгъайым да: «Охо», – деселе, кишини да излемей, бизде къалырса, – деп, юйге кирип, соруп чыгъады да: – Кел, бизде къал, – деп, юйге чакъырады.

Къыз, жашны юйге элтип, къолун-бетин жуудуруп, ашатып, ичирип, жер этип:

– Эркинсе къаллай бир суйсенг да, солургъа, – деп, тынчайтып, жашха хапар соруп, хапар айтышадыла.

Къыз да, жаш да, бир бирге оздурмагъан ариу санлы, ариу сыфатлыла болуп, экиси да бир бирлерин суюдиле.

Къыз да эрсиз, жаш да къатынсыз болуп, бир бирлерине суюмекликлерин ачып, бир бирлерин билип тохтайдыла да, къыз да жашны кетмезине ыразы, жаш да кетмезге ыразы болуп, бир къауум заманны жашап турадыла.

Бир кюн орамда бир адам, хар юй сайын къайта, кеси ат бла, бир тюени да алтындан жюклеп:

– Жарым сагъатха ким манга жалчы болса, анга бу тое жюгю алтынны береме, – деп къычырып айланнганын эшитеди.

Аны эшитгенде, ханны жашы, тѣзалмай:

– Жарым сагъатха не иш болса да, этерме, – деп туруп: – Мен болама, – деп, тое жюгю алтынны алып, къызны юйюне тюшюреди.

Кеси да атлыгъа:

– Жюр, не ишинг бар эсе да, этейим, – деп тебирейди.

Ол жалчы этген адам жашны туюге миндирип, кеси уа, аты бла элден чыгъып, бир къаяланы ичи бла тебирейдиле. Ол адам да, жаш да, бара кетип, бир бийик къаяны тюбюне жетип тохтагъандыла. Ол адам, атдан тюшюп, жашны да туюден тюшюрюп:

– Бу атны кес, – деди.

Кесип бошагъанлай:

– Атны терисин зат соймай, къарынын жарып, ичин-мичин тѣк, – деди.

Жаш, кѣзню къагъып ачхынчы, киши айтханлай, атны жарашдырып бошады.

Сора киши жашха, къаяны ортасында бир дорбунну кѣргюзтюп:

– Ма ол дорбунну кѣремисе? – деди.

Жаш да:

– Кѣреме, – деди.

Ол адам айтды жашха:

– Сен бусагъатда атны ичине киресе да, мен а, сен ат мыллыкны ичине киргенлей, къарынын тигерме да, кесим бир жанына кетип бугъарма. Олсагъат, ол дорбунну ичинде жашагъан бир къара къуш барды да, келип, сени ат мыллык бла кѣтюрюп, ол дорбуннга чыгъарлыкъды. Сора ат этден бираз ашап, учуп кетерикди. Ол заманда уа сен, бичагъынг бла атны къарынын жарып, тышына чыкъ да, дорбунну ичи алтындан толупду, аяусуз алтынладан бери тѣк, – деди ол киши.

Ол адам алай айтханда, жаш сорду:

– Андан бери уа къалай тюшаллыкъма? – деп.

Жаш алай айтханда, киши:

– Андан тюшген иш туююдю. Мен бек тынч тюшюрюрге сени, – деди киши.

Болсада, жаш, кѣп даулашмай, атны ичине кирди. Ол адам терк окъуна атны къарынын жаш тюшмезча тигип, туюсин да алып, бир жанына кетип,



бугъар-букъмаз, бир къуш, келип, атны да, ичинде жашны да кѣтюрюп, дорбуннга чыгъарып, атны ашап башлады. Бир кесек ашап, учуп кетди. Жаш чыгъып къарады да, ол киши айтханлай, дорбун алтындан толуп болгъанын кѣрдю. Ичи адам сюекден да толу болгъанын ангылады. Сора жаш сагъыш этди да: «Бу адам сюекле, менича, бери чыкыгъан адамланы сюеклери болурла. Ол адам мени мындан тюшюрлюгю да жокъду. Андан эсе ол адамгъа алтынладан атмай къояйым», – деп, алтынладан жерге зат атмады.

Ол адам да, тюбюнде кечге дери сакълап, жашны алтынланы атмазлыгъын ангылап, кетеди.

Ол кюн ханны жашы дорбунда, къуш къайтхынчы тѣгерекге къарай, кѣп зат кѣреди. Къуш къайтыр заманнга уа, дорбунну бир къарангы мюйюшюне кирип бугъады. Ингирде кеч къуш, къайтып, уясына кирип жатады. Эрттенликде уа, ат этден да ашап, тоюп, учуп кетеди. Жаш а, кече узуну жукъламай, былайдан не амал этип къутулургъа боллугъун сагъышын этеди.

Эрттенликде жаш, тешикден тышына къарай кетип: «Энди манга мындан чыгъар онг жокъду. Мында кълсам, этими къуш ашар, сюеклерим а бу сюеклеге къошулурла. Андан эсе, сюркелип, къаядан чыгъаргъа кюрешейим. Бир къл тутар жер табалсам, насыбым болса, чыгъарма. Чыгълмасам а, кѣзюм жана, термилип, ачдан ѳлгенден эсе, сюркеле барып, къаядан тюбюне ычхынсам, теркирек ѳлюрме. Ансы кеси кесими уа къаядан къалай атайым? – деп, къарап, жаш тургъан дорбундан бир атлам арлакъда, бир жютюаркъа къая сыртлыкъны кѣрюп, ары сюркелди.

Къаягъа ышыла барып, ол аркъа сыртлыкъны тюбюнден ѳрге айланып, тырнакълап, кълу-аягъы бла да тутаргъа кюреше, амалсызгъа кълып, кълуну, бутуну да эти тауусу(лу)п, къуру сингирлери кълып, къая башына жыгълмай къутулду. Къаядан чыкыгъанын билгенлей, жаш жыгълып, эси аууп кълды.

Алайда кѣп туруп, бир заманда эсин орунуна жыйгъанлай, башын кѣтюрюп къарагъанда, бир ариу ѳзенде жап-жашил къыртишни юсюнде тургъанын билди. Алай жашны къарыуу кълмай, сюркелип, кълбаргъа кюрешеди. Болсада, жангыдан эси аууп, жыгълып, жугъун да билмей, жатып къллады.

Экинчи кере эси орунуна келирге:

– Не затса, къайдан чыкыгъан жанса? Огъесе шайтанмыса, жинмисе? – деген бир адам таууш келди жашны кълугъына.

Ол заманда жаш айтды:

– Мен шайтан да, жин да туюлме. Мен адамма. Ол жерде, ол жерде ол ханны жашыма. Былай-былай, амалсыз кълынлыкъгъа башым кълып, аман кюн башыма келгенди, – деп, хапарын айтады.

Жаш хапарын бошагъынчы, ол адам, аны кѣзюне къарап туруп, ышарып:

– Да, харип, кимни жашы эсенг да, не адам эсенг да, сенден кългъан жокъду. Сен адам болуудан да чыкыгъанса. Жюр мени юйюме, юсюнде кийиминг да кълмагъанды, – деп, жашны атына миндирип, юйюне алып барды да, атдан тюшюрюп, юйюне кълнакъ этди.

Кълун, бетин жууду, ашатды, ичирди. Сора ол айтды:

– Мен да кесим жангыз жашайма. Барды жашар жерим, ашым, кийимим, жараларынга дарманым. Менме ма бу сен кѣрген жерге ие, – деп, бек

жарыкъ къарап, киерге кийим берип, дарман этип, жараларын байлап: – Энди уа жат да, солу, – деп, айланыргъа чыгып кетди.

Жаш ахшы солугъан да этди. Жараларына салгъан дарманы къарап-къарагъынчы сюегине эт ёсдюрдю. Къысха заманда анасындан туугъанча сау болуп, бетине да къан кирип, жаш къайгъысыз сау болду.

Жаш сау болгъандан сора, ол адам бир кюн жолгъа атланып тебирейди.

– Мен бир-эки кюнден алгъа келмем. Сен а эрикмей тур. Керекли затынгы, кеси юйюнгдеча, жюрют. Ма бу ачхычланы ал да, отоуланы барына да къара. Бу ачхыч бла ачылгъан юйню, къайда да эшигин иш ачма, – деп, кёп ачхычны да къоюп кетди.

Эки кюнден ол адам къайтып келди.

Жаш кёп сагъыш этди да, кеси кесине айтды: «Мен къайгъысыз болдум деп, атамы-анамы, юйюмю унутургъа жарамаз. Андан эсе бу адамдан бир тилейим: «Дунияда мени юйюме элтирча бир амал эт», – деп. Сора айтды ол адамгъа:

– Дунияда манга этген ахшылыгъынг ахшылыкъды, алай юйюме барыргъа сюеме. Бир мадар табып, мени юйюме тапдырсанг эди, – дейди.

Жаш алай къадалып тилегенде, ол адам айтды:

– Да ол иш мени къолумдан келлик иш тюйюлдю. Алай къаяны сакълагъан бир къара къуш барды да, андан бир тилеп кёрейим. Ол унаса элтирге, ансы башха мадар билмейме, – деп, къушха тилерге кетеди.

Ол къушха кетгенлей, жаш ол ачхычла бла отоуланы ачып, къарай келеди да: «Ол ачма деген юйню да бир къарайым, жугъуна тиймем», – дейди. «Жугъуна тиймесем а, ол аны къайдан билликди», – дейди да, ачып къарайды. Къараса: отоуну башы жабылмай, тюз ортасында – ариу ишленген сют кёлю. Бир мюйюшюнде – уллу алтын тереги, олтурургъа – алтындан ишленип тапчаны. Отоуну тегереги – къатапа кийиз бла къатапа кюйюз, дагъыда анда болмагъан ариу зат болмай. Муну былай кёргенде, жаш, жунчуп, сейирсинип, артха къайтып чыгъалмай, эшик артында мюйюшге таянып, къарап къалады.

Ол да алай тургъанлай, къанат таууш этип, учуп келип, ол алтын терекни башына юч кёгюрчюн къонадыла. Терекден секирип-секирип, алтын тапчанны юсюне тюшюп, кёгюрчюн къапларындан чыгып, мёлекле кибик, юч ариу къыз, сют кёлге секирип, кёмюлюп, жууунуп чыгып, кийинип, кёгюрчюн къапларына кирип, жашны да эслемей, къанат таууш этип, учуп, къайтып кетедиле.

Аланы алай кёргенде, ханны жашы иги кесек заманны эсин жыйып, артха чыгып, эшикни эталмай турду. Бир заманда эсин жыйып, чыгып, кишини келлигин ашыгъып сакълайды.

Бир заманда ол адам келип, жашха:

– Андан бери къушдан тилеп, сени юйюнге элтирге кюнден айтдырып келеме, – дейди.

Ол алай айтып, бошар-бошамаз, жаш, ол адамны тобукъларына жыгъылып:

– Юйню-мюйню да къой да, мен бюгюн кёрген юч къыздан бирин мен алырча этеринги сени жаратхан Аллах бла сенден тилейме! – деп тилегенди.

Жаш алай тилегенинде, бу адам да:



– Мен санга ачма деп, андан тилеген эдим отоуну эшигин. Нек къарагъанса? – деди. Сора: – Ала санга келирге унамазла: ол сен кѳрген юч къыз жин патчакхны юч къызыдыла, – деди. Дагъыда бираз сагъыш этип: – Тоба-тоба, нек алай айтдым? Сен бу къадар къыйынлыкълагъа да тюбеп, жазыуунг иш болуп келген эсенг да, ким биледи? – дейди да, жашха айтады. – Ол юч къыз, хар юч кюнден бир келип, сют кѳлде жууунуп кетедиле. Ол сют кѳлде сен сакъла да, ючюнчю кюн биягъыча юйге кирип, кесинги эслетмей букъ. Къызла келип биягъы терекге къонарла, андан секирип тапчаннга тюшерле. Андан кѳлге-кѳлге секириширле жууунургъа. Сен а ол кезиуде, къайсына бек кѳзюнг къараса да, аны кийимин алып букъдур. Къызла жууунуп чыгъарла. Экиси, кийинип, учуп кетерле. Сен кийимин букъдургъан а, тилеп башлар. Кѳп зат бла ийнандырыргъа кюрешир. Алай, Аллах бла къаргъаннгынчы, ийнанма. Аллахны аты бла къаргъанып: «Бер энди кийимлерими, санга къатын болурма», – десе уа, ийнан, кийимлерин да бер. Андан сора кетмез, – дегенди.

Жаш, сют кѳл болгъан отоугъа кирип, кѳгюрчюнле кѳрмезча бугъуп, ючюнчю кюнню жукъламай, сакълап башлайды. Бир заманда къанат таууш этип, юч кѳгюрчюн, келип, алтын терекге къонадыла. Андан секирип, алтын тапчаннга тюшедиле. Кѳгюрчюн къапларын тешип, юч ариу къыз кѳлге-кѳлге секиредиле. Ол заманда жаш, гитчелерини кѳгюрчюн къабын алып, къоюнуна сугъуп, букъдуруп, сакълайды. Къызла жууунуп бошاپ чыгъадыла да, эки таматасы, кийинип, учуп кетедиле. Гитчелери уа, кийимин тапмай, мюйюшге бугъуп, къарап тургъан жашны кѳрюп, андан аямай тилеп башлайды.

Къыз айтып къаргъанмагъан зат къалмайды. Бермегенинден сора, Аллах бла къаргъанып:

– Сен айтхандан чыкъмам, – дейди да, жаш къызны кийимлерин берип, къызны да къолундан тутуп, алып, чыгъып, ол адамны аллына келип, баш урадыла.

Ол адам, ол къызгъа кесинден ахшы кийимле да берип, кийиндирип, экисине да неях этип, ишлерин тамам этип:

– Энди, хайда, сюйгенигизча жашагъыз, – деп, кеси жашагъан жерде жашарларын тилейди.

Ала да:

– Ахшы, – деп, экиси да бир-бирлерин кѳрмей тѳзалмай турадыла.

Жашны алгъан къызы аны сыфатыча иги, алапат болады. Ойнай-кюле, жашай туруп, бир кюн жаш не эсе да мудах болады. Жашны мудах болгъанын кѳрюп, къыз:

– Нек мудах болдунг? Мени алгъанынгамы сокъуранаса? Менми кѳлюнге жетмедим? Башха къайгъынгмы барды? – деп сорады.

Жаш айтады:

– Башха къайгъым жокъду. Сени ючюн да сокъураннган жерим жокъду. Алай мени хан атамы жау ханлары бардыла. Ала хар жылдан, чабып, атамы ханлыгъын сыйырыргъа деп келиучюдюле. Энди аланы чабар заманлары бола турады. Мен да болмай, атамы ханлыгъын да сыйырып, кесин да тутуп кетерле деп мудахма, – дейди.

Жаш алай айтханда, къыз да:

– Аны ючюн мудах нек боласа, барыргъа сюе эсенг, юйюнге барайыкъ, – дейди.

Алай жаш айтады кыызгъа:

– Къалай бла барайыкъ? Мен атамы ханлыгъындан узакъ кетгенме, барыр амал жокъду, – дейди.

Жаш алай айтханда, кыыз:

– Нек баралмайбыз? Мен, сени да алып, кёзню къагъып ачхынчы жетейим, – деп, кёгюрчюн къабына кирип, жашны да, учуруп келип, атасы жашагъан элни тюз башындан энишге къаратып тохтайды.

Жаш, кыызгъа бютюнда къууанып, элини ичине алып, салып юйюне келеди.

Жолда юйге келе, бир ийнек кютген жашчыкъгъа жетеди. Ол жашчыкъ бир жилий, бир жырлай тургъанын кёрюп:

– Нек жилийса, бирде уа – жырлагъан этесе? – деп сорады.

Жашчыкъ айтады:

– Бюгюн ханны жашына аш этедиле да, мени анам да анда шапалыкъ этеди. Бирде жырлайма, анам манга да ашдан келтирир деп. Бирде уа жилийма, унутуп къояр, мен да мында къалып, ашдан юлюшсюз къалырма деп.

Ол заманда жаш айтады:

– Сен жилияма. Мен да ары барама. Мен унутмай, ашдан юлюшюнго алырма, – деп, жашчыкъны жилигъанын тыйып, салып, юйюне кирип келеди.

Ханны жашыны келгенин кёрюп, халкъ, чабып, ханнга бла анасына суююнчюлюк айтадыла. Олсагъатдан къайгъы ашха жарашдыргъан затларын, къурманлыкъгъа айландырып, юч кюн бла юч кечени, къайдагъысын билген киши болмай, той-оюн этип, къурманлыкъ этедиле.

Жаш ёлген негерлерини хапарларын да юйлерине айтып билдиреди.

Алай бла ашап, жашап тургъанлай, бир кюн ханнга:

– Жау ханларынг жерни жапхан аскерлери бла жетдиле, – деп къуугъун келеди.

Аны эшитип, хан жашына айтады. Ол заманда ханны келини:

– Атам, къайгъы этмей, барып, жерингде олтур. Алагъа жууап мен берирме, – дейди.

Ол алай дегенликге, хан да, жашы да аскерлерин хазыр этер къайгъыда болгъанларын кёрюп, кыыз кеси, аскерни аллына чыгып, кылычны кётюрюп, орталарына кирип кычырады да, жауну аскери, бири къалмай, сын ташла болуп къалады. Кыыз, жау ханланы аллына чакъырып:

– Кёрдюгюзмю, сизни боллугъугъуз да ма алайды. Бусагъатдан аскеригизни алып, къайтып кетип, мындан арысында ол къайгъы болмай тохтарыкъ эсегиз, аскерге жан салама, алай туююл эсе уа, сизни да сын ташлагъа айландырып къояма, – деп, сайлау береди.

Ханла:

– Бу жолдан сора чегигизге айланмазбыз, – деп сёз береди.

Кыыз ол заманда аскерге жан салады. Ханла да, аскерлерин алып, артха къайтып кетедиле.

Хан, аны кёрюп, келинине бютюнда жаны киреди. Жангыдан дунияны жыйып, той-къурманлыкъ этеди. Башха къоркъуу, къайгъы да болмай, тынчайып, жашап башлайдыла.

Алай жашай келедиле да, бир кече барысы да жыйылып, олтуруп тургъанлай, кыыз эрине сорады:



– Къаллай юйюбюз болса сюерик эдинг? – деп.

Жаш, аны ойнап соргъан сунуп, бир сейирлик затланы ушатып айтады. Ол кече жатып, эрттенликге чыгып къарасала уа, тюз жаш айтханлай, тамашалыкъ юйле ариу битип, эл сейирге айтхан, кеслери да ичине кечюп тургъанлай уянадыла.

«Да бу ахшылыкъланы этерге къолундан келген къыз мени бла жашамаз. Кёгюрчюн къабын букьдурайым, ол тапмаз жер ишлетип», – дейди да жаш, ол юйню башында бир къюрню ишлетип, ичине къызны кёгюрчюн къабын салып, ачылмазча битеу бегитдирип къояды.

Ол аны букьдургъан кюн къыз, жашны ышанмагъанлай этгенин билип:

– Некахым бла сени болгъан эдим, ёлгюнчю сени бла жашарыкъ эдим. Алай сен манга ышанмагъанлыкь этгенсе. Бир къарачы, къабымы алалмасам, – деп, жаш бла хапар айта тургъанлай, къызны кёгюрчюн къабы къызны къолуна келип къалады да, сора жашха да: – Хайда, жаша энди, – деп, кёгюрчюн къабын да кийип, къанат таууш этип, учуп кетип, кёзден думп болуп къалады.

Жаш да, эки кёзюне къан чабып, кесини терслигине кюе, ызындан къарап къалады. Къызны кетип къалгъанына, жаш угъай, хан да бек мудах болады.

Болсада, жаш, жолгъа атланып:

– Не къызны табарма, тапмасам да, аны излей ёлюрме, – деп тебирейди.

Къыз учуп кетген жанына айланып, жыл жюрюп, кече демей, кюн демей бара кетеди да жаш, бир къарт кишичиге жолугъады. Ол къарт кишичиге жашха сорады:

– Къайры ахшы жолгъаса, жаным? – деп.

Жаш хапарны болгъанынлай, не къошмай, не къоратмай айтады. Сора къартчыкъ анга юйретеди:

– Ма ол жерде, ол таудан ауарыкъса. Кёп келгенсе, энди аз къалгъанды, – деп, жол кёргюзтүп, думп болуп къалады.

Жаш да ол кёргюзтген жанына къарап кетеди.

Ол кезиуде уа, къызыны къачып келгенин билип, къызны атасы – жин патчах кёкде къанатлы, жерде къумурсха жибермеген жин аскерге, жашны къызын излей келлигин билип:

– Бюгюнден арысында кёрген адамыгъызны, кёрген затыгъызны ёлтюрмей, саулай мени аллыма алып келигиз, – деп буйрукь береди.

Жаш да, айлана барып, жин патчахны чегине жетеди, жинле да жашны, тутуп, патчахха алып барадыла. Патчах, киеую келгенин билип, къызына урушады:

– Къачып кетип, бу адамны быллай бир къыйнагъанынг ючюн, – деп. Болсада айтады: – Къача-кече, некахыгъыз да къалмагъанды, – деп, экисине да неках этип: – Сюйсенг, мында жаша, сюйсенг – атанг болгъан жерге элтип жаша, – деп, патчах жашха сайлау береди.

Жаш да, юйюне барып жашаргъа ыразы болуп, къызны да алып келип, ол кюнден артхасында ол экисинден насыплы эр бла къатын жашамагъанча, дуня алагъа сукъланырча насыплы жашап башлайды. Кёп жашлары да, къызлары да болуп, ёмюрлери бир бирни сюйгенлей, бир бири кёллерин сакълагъанлай жашап къалгъандыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 20 паспорт. КъМАССР-ны Нальчик шахарында 1913 жылда туугъан Этезланы Мимболатны жашы Омардан 1956 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Жомакъны Омар къартладан эшитгенича къагъытха тюшюргенди.

«Сют кѣл» деген сейир-тамаша жомакъда адет-къылыкъ тѣрелеге уллу магъана бериледи. Аны кибик, юйюр башчы бла юй бийчени бир бирге кертиликлери, суймекликлери, аланы бир бирге аяулу болуу дегенча шартларына да къаралады. Жомакъны айырмалы этген, аны ислам динде жюрютюлген адетге кѣре «некахны» сагъынылгъаныды. Ол а бурун заманда къуралгъан жомакъны жибине, жангы оюмну къошулгъанына шагъатлыкъ этеди.

МОЛОЧНОЕ ОЗЕРО

Давным-давно в одном краю жил хан. Он среди ханов был самым сильным, мощным, он был богатым ханом с большими возможностями. У этого хана было хозяйство, что всю землю в округе покрывало, бесчисленные табуны, кошары, полные овец, коров, и его холопы откармливали всю скотину.

У хана, за всю свою жизнь кроме одного сына, никого не было. И этот единственный сын стал похожим на своего отца. Там, где жил и правил хан, никто из его друзей его не опережал, он был храбрым, гордым, предприимчивым юношей. Над всеми своими ровесниками он верховодил.

Если предстояли какие-нибудь поездки, либо охота, он собирал своих ровесников, вместе с ними путешествовал и возвращался обратно. Пока сын хана был с ними в пути, он испытывал их мужество, человечность, и после этого из всех окружающих он выделил троих ребят, детей трех бедных мужчин, и сделал себе самыми близкими друзьями. Трое бедных юношей, которых он выбрал, когда дело доходило до человечности, мужества, героизма, нисколько не отставали от сына хана.

Сын хана вместе с тремя ребятами, сам став четвертым, всюду ходили вместе, как настоящие друзья.

В один из дней ребятам в голову пришло пойти погулять:

– Давайте, ребята, от скуки умираем, отправимся в дорогу, мир повидаем и вернемся обратно, – сказали, сели на лошадей, навесили на себя оружие, военное снаряжение, попрощались с сельчанами: – Давайте, теперь вам – мир, а нам – здоровье, – сказали и вышли в дорогу.

Четверо молодых людей, сын хана был у них старшим, куда глаза глядели, в том направлении и ушли. Ребята, не останавливаясь ни днем, ни ночью, двигались вперед, и та дорога, по которой они шли, закончилась, дальше, не зная, куда двигаться, они остановились, начали совещаться. Постепенно оглядываясь по сторонам, заметили не человеческую тропинку, а больше похожую на звериный след, внутри трав они обратили внимание на нитевидную тоненькую тропинку. Сын хана говорит:

– Пойдемте, ребята, дойдем до конца этого следа, – сказал он.



Отправились по этому следу, след долго не растягивался, вскоре уперся в большую реку и тут же исчез из виду. Река большая, сильная, сотрясала камни и горы, готова была все унести с собой, человеку туда зайти было рискованно, страшной была река. Ребята ходили по берегу реки вверх-вниз, осматривая окрестности, однако, они не осмелились войти туда. И тут же они увидели на той стороне реки высокую гору с густым лесом.

После этого молодые ребята слезли с коней, расслабили подпруги, сняли удила с коней и пустили их пастись на сенокосное угодье. Сами сели отдохнуть, немного поели: «Будем решать, как лучше, подумаем и примем решение», – сказали они, остановились и стали думать. После того, как они закончили кушать, пить, долго глядели на гору, реку, посоветовались и в конце один из ребят говорит:

– Мы, попросившись с односельчанами, рассказали им о своих намерениях, как настоящие мужчины, отправились в путь. Если мы перейдем реку и окажемся в лесу, на той горе, которую я вижу, там должно быть очень много диких зверей, там поохотимся. Ведь, не можем мы вернуться домой с вытаращенными глазами, что-нибудь не привязав к тороку, это будет не по-мужски, – высказал он свое мнение.

Остальные ребята:

– Правду говоришь, истину глаголешь, – сказали и встали с мест: – Ну, а как же теперь будем переходить реку?, – стали они решать.

В итоге ребята сняли с лошадей седла, надели на их ноги путы, и, оставив на этой стороне, попрыгали в воду. Сын хана с одним другом перешли на другую сторону реки. Двоих друзей не увидели: они погибли в воде, или остались живы не знали, так как они были потеряны из виду. Много раз поднимались вверх, спускались вниз, разыскивали их, однако, так и не найдя, отчаялись, успокоились.

На том месте юноши вдвоем долго думали, и в конце решили:

– Теперь, сколько бы не оглядывались по сторонам, тех двух друзей мы уже не найдем. Надо решать свою судьбу, – сказали они, и решили пойти поохотиться.

Сын хана с одним другом начали подниматься вверх на ту большую лесистую гору, желая встретить тура, они оглядывались по сторонам, но никакой дичи не было, они продолжали идти, и вскоре оказались прямо на вершине горы.

Наверху горы, оглядывая окрестности, на лесной поляне они заметили пасущееся стадо туров. Ребята: «Теперь будем их отстреливать», – решили, бесшумно приблизились туда, где находились животные, выстрелили, убили двух больших животных, остальные туры убежали прочь, вглубь гор.

Как только охотники засобирались пойти притащить дичь обратно к себе, к ним сзади бесшумно подошли, повалили обоих ребят под себя, завязав им руки и ноги:

– Кто вам разрешил подходить к нашему стаду диких животных и убивать их? – спросили они, стоя над их головами. Их было шестеро человек.

В любом случае хозяева стада диких животных забрали с собой обоих ребят, подняли на гору, потащили и бросили в свой тюремный дом, крепко заперли окна, двери. В ту ночь на этом успокоились.



На рассвете явились те же люди, что им связали руки-ноги, открыли двери темницы:

– Пойдемте, – сказали они и, не давая знать ребятам, куда их ведут, привели их в красиво убранный дом.

Начиная прямо с порога, они прошли через множество бархатных ковров, переходили из одной комнаты в другую, пока не попали в одно помещение. Здесь был мужчина с длинными усами, заправленными за уши, красиво одетый, он держал в руке палку с золотой изогнутой ручкой.

Когда только пленники вошли, этот человек тут же вскочил с места:

– Дикие животные, которых вы вчера убили, были из моего стада. А те шестеро, которые вас связали и привели сюда, являются моими сыновьями, – сказал он.

– Что вы за люди, откуда вы взялись? Чем вы занимаетесь? Куда держите путь? Почему убили моих диких животных, бессовестные? Из-за двух моих диких животных, я вам назначаю – смерть, – сказал он со злостью.

Сын хана:

– Дикие животные живут в горах, почему они должны быть твоими? Мы находились на охоте, убили животных, – ответил он, длинноусому.

Вместе с тем длинноусый не давал ребятам говорить:

– Начиная от той реки, которую вы перешли, и весь лес на обозрении, гора, и там внутри обитающие животные все мои! – сказал он и завершил свою речь.

А ребятам:

– Вам пощады не будет. Я вам дам два варианта, а там сами выберите, – сказал он и повелел своим сыновьям вернуть их в темницу.

Сына хана с его спутником бросили в прежний тюремный дом, заперли двери и оставили их там. И ребята сказали:

– Нынешнее путешествие у нас не получилось. Наше дело – гиблое, – говорили они и лежали, не в силах сомкнуть глаз, вдруг среди ночи открылись двери тюремного дома.

В темноте ребята не могли узнать, кто явился. И тут молодой человек, который открыл двери, сказал:

– Кто попался в руки к моему отцу, живым еще не уходил. Каждого пойманного человека мой отец привык убивать. Я самый младший из шести братьев. Ночью после вашего ухода, мой отец дал приказ вас убить. Я не хочу, чтобы вы умерли. Я освобожу ваши руки, выходите и убегайте, – сказал он, открыв двери, освободил ребят из тюремного дома.

Когда они ушли для того, чтобы все подумали, что пленники ушли, взломав двери, он раскучорчил двери и бесшумно вернулся к себе обратно и тихонько лег спать.

Сбежавшие ребята в темноте, в незнакомых местах, не зная, куда идти, до утра не в силах найти дорогу, кружась, потеряли много времени. А когда начало светать, они пошли в том направлении, куда глаза глядели.

С того места, откуда сбежали ребята, утром, отец, увидев поломанную дверь в тюремном доме, и узнав, что пленники сбежали, рассердился на своих сыновей:

– Живыми или мертвыми, но вы должны вернуть их обратно. Иначе я поступлю с вами так, как поступил бы с ними, – сказал он, и каждого из своих шестерых сыновей он отправил в отдельном направлении.



Один из сыновей хозяина горы по кратчайшей дороге пошел вслед за ребятами. И когда беглецы почти спасались, выстрелом был убит друг сына хана. А сын хана спасся, один остался в живых.

Сын хана, потеряв трех своих друзей, в одиночестве отправился в дорогу, и вскоре голодный, изнуренный, приходит в одно селение. У входа в село, он увидел красивую, как картинка, девушку, которая с двумя ведрами несла воду, и парень прямо наткнулся на нее. Зная, что здесь у него нет знакомых людей, а сам, будучи не женатым, а, значит, свободным, он умилялся ее красотой, восхищался, но не знал, с чего начать:

– Эй, девушка, дай воды напиться, – начал он просить.

Девушка, ни говоря ни слова, вручила юноше ведро:

– Сколько хочешь, пей, я согласна, – сказала она.

Пока он не кончил пить, краем глаза парень, не моргая, глядел на девушку. И почувствовав, что девушке он тоже понравился:

– Сестра, научи меня, где можно сегодня переночевать, я здесь никого не знаю, – стал он у нее просить.

Когда парень так сказал, девушка:

– Ты не торопись, стой здесь. Я сейчас схожу и дома спрошу, если они разрешат, никого не будем искать, у нас останешься, – сказала она, зашла к себе домой и вышла обратно: – Заходи, у нас останешься, – пригласила его к себе домой.

Девушка, сопроводив парня к себе домой, дала воду помыть руки, лицо. После этого она его накормила, напоила и приготовила ему постель:

– Ты имеешь право отдыхать, сколько хочешь, – сказала она, уложила его и начала расспрашивать у парня всякое, так они повели разговор.

И девушка, и парень, не уступали друг другу в стройной осанке, красивые лица, они полюбили друг друга.

Девушка была не замужняя, и парень был не женатым, они признались друг другу в любви. Девушка согласна была, чтобы он не уходил, и парень согласен был остаться, и так, они вместе пожил некоторое время.

В один из дней одинокий человек шел по улице, заходя в каждый дом, и предлагая одного коня и одного верблюда, навьюченных золотом: – Кто согласится стать на полчаса моим слугой, тому я дам все золото на верблюде, – ходил он и громко кричал.

Когда это услышал сын хана, он не выдержал:

– За полчаса я смогу выполнить любую работу, – сказал он и встал: – Я буду» – сказал и забрал весь груз золота на верблюде, и выгрузил в дом девушки. А сам всаднику:

– Пойдем, посмотрим, какая у тебя там работа, – сказал и направился.

Тот человек, который нанял себе слугу, посадил парня на верблюда, а сам на коне вышел на край села, и они двинулись посреди скал. Мужчина и парень шли долго, дошли до высокой скалы и остановились внизу. Этот человек слез с коня, и парня снял с верблюда:

– Зарежь этого коня, – сказал он.

После того, как он зарезал коня:

– Не надо снимать шкуру с коня. Разрежь живот, и выкинь внутренности, – сказал.

Парень в мгновение ока, все сделал, как повелел тот мужчина.

После этого мужчина парню посредине скалы показал одну пещеру:

– Вон там видишь ту пещеру? – спросил.

И парень:

– Вижу, – ответил.

Тогда тот человек сказал парню:

– Вот сейчас ты залезешь внутрь лошади. А я, как ты зайдешь вовнутрь туши лошади, зашью живот, и сам отойду в сторону и спрячусь. И тут же, один черный орел, который живет внутри той пещеры, спустится и заберет тебя вместе с тушей лошади, и поднимет в ту пещеру. После этого он немного покушает лошадиного мяса и улетит от того места. В это время ты выйди наружу, своим ножом распорю живот лошади, а пещера внутри полна золотом, и не жалея сил, выкидывай сюда то золото, – сказал он.

Когда тот человек закончил свою речь, парень:

– А я потом как оттуда вниз спущусь? – спросил.

Когда парень так спросил, мужчина:

– Оттуда спуститься вниз – не проблема. Я тебя легко спущу вниз, – сказал.

В таком случае юноша, много не споря, залез внутрь лошади. И этот человек быстро зашил живот лошади, чтобы юноша оттуда не выпал, забрал его верблюда, отошел в сторону, только успел укрыться, тут же прилетел орел, и поднял и лошадь, и юношу, доставил в пещеру и начал есть конину. Немного поев, он улетел. Юноша вышел оттуда, осмотрелся по сторонам, как говорил тот мужчина, он увидел, что пещера полна золота. А также он увидел множество человеческих костей. После этого он призадумался: «Эти человеческие кости, наверное, таких же людей, как я, которые поднялись сюда, он меня вниз вряд ли спустит. Лучше всего, я этому человеку не буду бросать отсюда золота», – решил он и не стал на землю кидать ему золота. А тот человек внизу ждал его допоздна, поняв, что он ничего не бросит, ушел.

В тот день сын хана в пещере осматривался по сторонам, видел вокруг много всего, а к тому времени, когда орел должен был вернуться, он зашел в пещеру и спрятался там в темном углу. Поздно вечером орел вернулся в свое гнездо и приготовился ко сну. Утром он поел мясо лошади досыта и улетел оттуда. Юноша на протяжении ночи совсем не спал, думал, каким способом можно было бы отсюда выбраться.

На рассвете, оглядывая всю округу из дыры: «Теперь мне отсюда не выбраться. Если останусь здесь запертым, мое мясо съест орел, а мои кости будут рядом с этими костями. Поэтому я должен постараться выползти из этой западни. Если найду за что-нибудь ухватиться руками, и если посчастливится, выйду. А если не смогу выйти, со зрячими глазами чем мучиться, чем умереть с голоду, лучше двигаться, выползая, если с горы вниз брошусь, быстрее умру. Иначе, как я сам себя с горы брошу?! – сказал он, осмотрелся, в шаге от пещеры юноша увидел какой-то острый выступ скалы, и начал ползти в том направлении. Прижимаясь к скале, и от этой скалы потащился снизу вверх, цепляясь, стараясь удержаться и руками, и ногами, в безвыходном положении, и на руках, и на ногах плоть стерлась, остались лишь сухожилия. Со скалы, не падая, он поднялся на ее вершину, как только он понял, что вылез из скалы, юноша упал и тут же потерял сознание.



Там он находился долго, и через некоторое время, когда он обрел сознание, он снова, подняв голову, огляделся вокруг, и понял, что находится в красивом ущелье, на зеленой-зеленой траве. Однако, из-за большого бессилия, он не мог встать, и постарался выкарабкаться. Но все равно, он снова потерял сознание, упал, забыл про все, и остался лежать.

Вскоре во второй раз пришел в сознание:

– Кто ты такой, откуда ты взялся? Ты черт или дьявол? – до его слуха дошел человеческий крик.

Юноша говорит:

– Я не дьявол. Я человек. В таких-то краях такого-то хана сын. Вот в такой горестной ситуации оказалась моя голова, такой день выпал на мою голову, – закончил он свой рассказ.

Пока юноша еще не закончил свой рассказ, этот человек глядел ему в глаза и с улыбкой ответил:

– Да, бедняга, чьим бы ты сыном не был, каким бы ты человеком не был, от тебя ничего не осталось. Из тебя и человека-то не получится. Пошли ко мне домой, на тебе и одежды-то не осталось, – сказал он, посадил на своего коня, отвел юношу к себе домой, снял с лошади, и сделал своим гостем.

Умыл его руки, лицо, накормил, напоил. И сказал:

– Я живу один. У меня есть, где жить, что поесть, одежда, на твои раны снадобье. Я хозяин земли, которую ты видишь, – сказал он, посмотрел на него радостным взглядом, дал ему одежду, приготовил лекарство, чтобы залечить его раны. – А теперь, ложись и отдохни, – сказал он и вышел прогуляться.

Юноша хорошо отдохнул. Лекарство, которое он наложил на свои раны, очень быстро на кости ему нарастили мясо. За короткое время он стал таким, как будто заново родился у матери, и лицо его стало румяным, юноша полностью выздоровел.

После того, как юноша выздоровел, этот человек в один из дней засобирался в дорогу.

– Я не смогу вернуться раньше одного, двух дней. А ты не скучай. Все, что тебе нужно есть, пользуйся как у себя дома. Вот, эти ключи тоже возьми, осмотри все дома. Только двери дома, который открывается вот этим ключом, ни в коем случае не открывай, – сказал он, и, оставив множество ключей, ушел.

Через два дня он вернулся.

Юноша долго думал и сам себе сказал: «Решив, что у меня исчезли все проблемы, отца-мать, свой дом нельзя забывать. Поэтому, попрошу-ка я у этого человека, пусть придумает что-то такое на свете, чтобы смог меня домой отвести», – решил он. И этому человеку:

– Ты в этом мире сделал много доброго, однако, я хочу идти домой, придумай что-нибудь, чтобы я оказался у себя дома, – сказал он.

Когда юноша начал настоятельно просить, этот человек сказал:

– Да, совершить такое не в моих силах. Однако, есть один черный орел, который сторожит эту скалу, я постараюсь у него попросить, если он захочет отвести. Кроме этого, я другого выхода не вижу, – сказал он и ушел просить у орла.

Когда он ушел к орлу, этот юноша теми ключами отворял дома, ходил, осматривал, и тот дом, который не советовали открывать, он решил открыть

и проверить, ничего внутри не трогая. «Если ничего не буду трогать, откуда он узнает», – когда посмотрел, дом был без крыши. Прямо посередине располагалось красивое молочное озеро. В одном углу большое золотое дерево, в другом – топчан из золота. Вокруг дома войлочные и бархатные ковры, из красивых вещей не было такого, чтобы здесь не находилось. Когда юноша это все увидел, то немного оторопел, удивился, вернулся обратно, но не смог выйти из-за двери, и остался смотреть, прислонившись в углу.

Пока он находился в таком положении три голубя размахивая крыльями, прилетели, сели на вершину того золотого дерева. Дальше они спрыгнули вниз, оказались на золотом топчане, скинули свои голубиные одеяния, как три ангела, три красивых девушки, прыгнули в молочное озеро, ныряли, искупавшись, вышли, оделись, вернулись в свои голубиные одеяния, не замечая юношу, размахивая крыльями, улетели и вернулись к себе обратно.

Когда сын хана их увидел, его душа оцепенела, он долгое время старался не потерять сознание, вышел обратно, был не в силах закрыть двери, и через некоторое время, собравшись с мыслями, начал ждать прихода мужчины.

В это время тот мужчина подошел к юноше:

– С тех пор орла просил, с трудом договорился, чтобы он согласился тебя доставить домой, – сказал он.

Как только он успел произнести эти слова, юноша, упав на колени перед этим мужчиной:

– Оставь дом, я сейчас увидел трех девушек, сделай так, чтобы на одной из них я женился, умоляю тебя и Аллаха, который создал тебя, – начал он просить.

Когда юноша так просил, то мужчина:

– Я тебя просил, чтобы ты не открывал двери. Почему ты на них посмотрел? – спросил. После этого: – Они за тебя не захотят выйти замуж. – Эти три девушки, которых ты видел, они дочери царя джиннов, – ответил он. И, еще немного поразмыслив: – Тоба-тоба*, зачем я так сказал? Ты на своем пути встречал столько горя, может, судьба тебя привела сюда, кто его знает? – говорит он юноше.

– Эти три девушки через каждые три дня по разу приходили и купались в этом молочном озере. Возле того молочного озера ты постой, и на третий день, как раньше, войди в дом, и спрячься, себя не показывая. Девушки придут и, как раньше, сядут на дерево, оттуда спрыгнув, попадут на топчан. А оттуда будут прыгать в озеро, чтобы искупаться. А ты в это время, какая тебе больше понравится, заведи ее одежду и спрячь. Девушки выйдут, искупавшись. Две из них оденутся и улетят. А та, у которой ты спрятал одежду, начнет тебя просить. Многими доводами будет стараться тебя уговорить, чтобы ты ей поверил. Однако, пока она Аллахом не поклянется, не верь. Если она, поклявшись именем Аллаха: «Верни теперь мою одежду, буду тебе женой», – тебе скажет, поверь. Верни тогда одежду. После этого она от тебя не уйдет, – сказал он.

Юноша зашел в дом, где было молочное озеро, спрятался там, чтобы его голуби не заметили. И три дня без сна начал дожидаться их прихода. В это время, шумно размахивая крыльями, прилетели три голубя и сели на золотое дерево. Оттуда спрыгнув, попали на золотой топчан. Сняв с себя голубиную

* *Тоба-тоба* – междометие, выражающее удивление, недоумение: «ой-ой», «ах!», «о боже!» [3, 639].



форму, три красивых девушки прыгнули в озеро. В это время, юноша забрал у младшей голубиную форму, засунув в грудь, спрятал, начал ждать. Девушки, закончив купаться, вышли из воды, и две старшие, одевшись, улетели. А младшая, не найдя свою одежду, спряталась в угол, и заметив юношу, который на нее глядел, начала сильно просить у юноши вернуть.

Не осталось ничего, чем бы она не клялась. Когда он не возвращал:

«Клянусь Аллахом, буду тебя слушаться во всем», – сказала она, тогда юноша вернул девушке одежду, и, они вышли взявшись за руки, подошли к тому человеку и поклонились.

Этот человек девушке из своего имущества дал хорошую одежду, приедет, совершил между молодыми людьми неких*, все церемонии, сказал:

–Теперь в дальнейшем, живите, как вам заблагорассудится, – и попросил, чтобы они жили на том месте, где он сам жил.

И они:

– Хорошо, – сказали они, уже жить не могли, не видя друг друга.

И та девушка, на которой женился юноша, была прекрасной, хорошей, как и ее облик. Они, играясь, смеясь, начали жить, и в один из дней юноша почему-то стал печальным. То, что юноша опечален, заметила девушка:

– Чем ты опечален? Ты сожалеешь, что на меня женился? Я ли тебя не устраиваю? Или что-то другое тебя тревожит? – спросила она.

Юноша отвечает:

– Другой тревоги у меня нет. И из-за тебя я тоже не жалею. Однако, у моего отца-хана, есть другие ханы – враги. Они каждый год устраивают набеги, хотят отобрать ханство у моего отца, и приходят. Теперь наступает то время, когда они должны напасть. И в мое отсутствие они смогут отобрать ханство, и моего отца могут увезти, поэтому я опечален, – сказал он.

Когда юноша так сказал, то девушка:

– Почему ты из-за этого печалишься, если хочешь идти, сходим, – сказала она.

Однако юноша говорит девушке:

– Как мы пойдем? Я от ханства своего отца далеко ушел, нет возможности туда попасть, – сказал он.

Когда юноша сказал так, девушка:

– Почему не можем пойти туда? Я заберу тебя с собой, и в мгновение ока мы прибудем туда, – сказала она и, надев голубиную форму, с юношей вместе полетела, и оказались там, в том селении, где жил его отец, прямо сверху вниз начали глядеть, на всю округу.

Юноша еще больше обрадовался своей девушке, повел ее в селение, к себе домой.

По дороге, когда они шли домой, они встретили мальчика, который пас корову. Этот мальчик то плакал, то пел, они, увидев его таким:

– Что ты то плачешь, то начинаешь петь? – спросил он.

Мальчик ответил:

– Сегодня сыну хана готовят поминки, а моя мать помогает готовить. Пою из-за того, что моя мама с поминок еды мне принесет, а плачу, из-за того, что она про меня забудет, и я, останусь без своей доли, – сказал он.

В это время юноша говорит:

* *Неках* – бракосочетание (по мусульманскому обряду) [3, 483].

– Ты не плачь. Я тоже иду туда. Я не забуду, я возьму от тамошней пищи твою долю, – сказал он, и, утешив мальчика, пошел к себе домой.

Когда люди увидели, что сын хана идет, все побежали к хану и к его матери с хорошей вестью. Еду, приготовленную для поминок, превратили в пиршество, и три дня, и три ночи, забыв обо всем, устроили большой праздник и жертвоприношения в честь возвращения ханского сына.

Про своих умерших друзей он сообщил их родственникам.

Так они жили да поживали, пока в один из дней на хана: Многочисленные вражеские войска напали, – говоря, донесли тревожное известие.

Хан сообщил об этом сыну. В это время невестка хана:

– Отец, ни за что не переживайте, сидите у себя спокойно. Я им отвечу, – говорит.

Хотя она старалась их успокоить, хан, и его сын начали готовить свою армию, и это увидела девушка, встала перед армией, подняла вверх меч, встала посредине и закричала, и солдаты вражеской армии, все без исключения стали надмогильными камнями. После этого девушка позвала к себе молодых ханов:

– Увидели, и с вами случится такое. Сейчас же заберите свои войска, и возвращайтесь обратно, и если в будущем прекратите такие нападки, я оживлю ваших армейцев, а если не так, и вас тоже превращу в надгробные изваяния, – сказала и дала им выбор.

А ханы:

– После этого случая мы не будем ходить в направлении вашей границы, – сказали и дали слово.

И тогда девушка оживила армейцев. И ханы, забрав свои войска, вернулись обратно.

Хан, увидев это, с особой силой полюбил свою невестку. По-новому собрав народ, устроил огромный праздник, произвел жертвоприношение. И они начали спокойно жить, без опасностей и тревог.

Они начали так жить, и в один из ночей, когда все собрались вместе, девушка говорит мужу:

– Какой дом ты хотел бы, чтобы у нас был? – спросила.

Юноша, подумав, что она шутит, играет с ним, стал рассказывать удивительные вещи. В ту ночь они легли спать, а утром, выйдя на улицу, увидели все, о чем говорил юноша: новые красивые дома, о которых все в селении с восторгом рассказывали, и внутри которых они проснулись после сна.

«Да, такая девушка, которая может совершать столько добрых дел, вряд ли станет со мной жить. Спрячу ее голубиную форму, чтобы она не нашла, тайник какой-нибудь построю», – подумал юноша, и на крыше дома соорудил сундук, внутри спрятал голубиную форму девушки, и крепко запер, чтобы никто никогда не смог открыть.

В день, когда он форму спрятал, девушка узнала, что юноша ей до конца не доверяет, и сделала так:

– Своим некаям я была обручена с тобой и до смерти, жила бы с тобой. Однако, ты проявил свое недоверие. Посмотри-ка теперь, как я верну свою форму, – сказала она, и пока вела разговор с юношей, голубиная форма



оказалась на руках девушки. И она говорит юноше: – Давай, теперь живи сам, – сказала она и, размахивая крылами, надела на себя форму, улетела и исчезла из виду. Глаза юноши облились кровью, горюя из-за своей неправоты, он печально глядел вслед за ней. Не только юноша, даже хан стал печальным, из-за того, что девушка их покинула.

В любом случае юноша собравшись:

– Я все равно найду девушку, а если не найду, умру в поисках ее, – сказал и отправился в путь.

Он двинулся в ту сторону, куда улетела девушка. Так он проходил один год. Не взирая ни на день, ни на ночь, он шел-шел и повстречался с одним старичком. Он спрашивает у юноши:

– Куда добрый путь держишь, сын мой?

Юноша старику рассказал все, как было, не прибавляя, не убавляя. Тогда этот старик научил его, что делать:

– В таких-то краях, тебе придется преодолеть такую-то гору. Ты долго шел, теперь осталось немного, – сказал он и указал ему дорогу, и тут же исчез.

И юноша отправился в том направлении, куда указал старик.

В это время, отец девушки – царь-джиннов, узнав, что его дочь сбежала, дает армию джинов, от которой на небе птицы, на земле муравьи не ускользали, дает такой приказ:

– С сегодняшнего дня, любого человека, которого вы встретите, кто бы это не был, не убивая, живым доставьте ко мне, – сказал.

Юноша, странствуя, дошел до границы царя джиннов, и джинны, схватив юношу, привели его к царю. Царь узнав, что прибыл его зять, отругал свою дочь:

– Из-за того, что ты сбежала, и этого человека заставила столько страдать, – сказал и продолжил свою речь: – Из-за того, что вы сбежали, отдаляясь друг от друга, у вас не сохранился неких, – сказал он и заново им совершил неких. – Если хочешь, живи здесь, если хочешь, отведи ее туда, где живет твой отец, – сказал царь, давая выбор юноше.

Юноша изъявил желание жить, вернувшись домой, и девушку забрал с собой. С того дня, счастливее их мужа и жены не было на свете, весь мир завидовал им, они жили счастливо. И было у них много сыновей, и много дочерей, и жили они, любя друг друга, оберегая души друг друга.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 20. СЗаписано в 1955 г. в г. Нальчик КБАССР от Этезова Омара Мимболатовича (1913 г.р.) (автозапись).

Вытисал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Омар зафиксировал на бумаге так, как слышал от стариков.

В данной волшебной сказке поэтизируются такие морально-нравственные ценности, как супружеская верность, любовь, взаимоуважение. Отличительной чертой сказки является упоминание об исламской обрядовой традиции «неках», свидетельствующей о новых наслоениях на архаичный сюжет.

КЪОЛАН АТЛА

Мындан нелляй бир заманны алда озгъан заманда болгъан эртте-эрттеледе бир уллу суу ауузунда юч къарындаш жашап болгъандыла. Ол къарындашла ючюсю да айтхылыкъ уучула болгъандыла.

Жашай кетген заманланы ичинде юч да уучу къарындашдан бек таматалары кесине жыйын жыйгъанды да, уугъа айланыр муратда, аулакълада, не жерде кийик жаныуарла болуучу эсе да, ол жерлеге чыккыгъанды.

Эрттенликден ингирге деричин айланнганды-айланнганды да, сууну кюнлюм жанында кийик жаныуарны аягъы басхан туура ыз да тапмагъанды.

Кюн да кечирек бола, кюнлюм жанында абери тапмагъандан сора, жыйыны бла сууну чегет жанына ётгенди.

Сууну чегет жанына ётген жерде кюн кеч бола башлагъанды. Ол жерден кёп узакъ да бармагъанлай, не эсе да, адамла къалып кетгеннге мушашлы* бир от этилген жерчиклеге тюбегендиле. От орунчукъланы кёргенде:

– Жашла, биз узакъ барып да, не затха айланабыз, былайда биз келгинчин да адамла къалгъанча кёрюнедиле, биз да былайда къалайыкъ, – деп, ол от орунчукъла болгъан жерде тохтагъандыла.

Отуннга, суугъа къармашхандыла, кече алайда къалырча, ол жерге жарашдырылгъандыла.

Ала да от этип тохташханлай, тёбен жанлары тюзден бир къара туман кёрюннгенди. Ол заманда аланы неда ол юч къарындашны таматасы:

– Жашла, туманчыкъ келе ушайды, жаугъан дамы этерлик болур, юсюгюзню-башыгъызны, хапчюк-хабурну да жибип халек болмазча этигиз, – деп сёлешгенди.

Ала да алай тургъанлай, ол кёрюннген туман, жете келип, кюн узуну айланып, ол, арып-талып, отну төгерегине жыйылып тургъан адамланы ургъанды да, ариу кюл-кёмюр этгенди да, бошагъанды. Аладан бир жангыз да сау къалмагъанды. Юйлерине бир киши да къайтмагъанды.

Ол иш алай болгъандан сора бир талай заман озгъанды. Аланы алайда къырылгъанларын киши да билмейди. «Къайда бошалдыла эсе да, бошалдыла», – деп къойгъандыла.

Бир ненча кюнле, заманла оздула, ол юч да уучу къарындашны органчылары: «Эрикгеним да кетер, чыгъайым да, бир уугъа айланайым», – деп, ол да жыйын жыйгъанды кесине да, аулакыгъа чыккыгъанды.

Айланнганды-айланнганды, жюрюгенди, туурада, ол огъейсе, бир жубуран ыз да кёрмегенди. Кюнню узунуна айландыла, кече да агъачда къалдыла, бир затчыкъ да кёргенлери болмады.

Эрттенликде турдула да, сууну кюнлюм жанында айлана кетип, жукъ кёрмегенде, ала да суудан чегет жанына атладыла.

Кёп-аз заманны айландылар эсе да, айлана кетдиле да, кюн да кечирек бола, ол аллыннгы тамата къарындашлары тохтагъан жерге тюбедиле.

– Ах-а-а, жашла, хазыр от орун, хазыр къош, биз да былайда тохтаргъа керекбиз, – деп, ол жерде тохтадыла.

Төгереклери агъач отну да уллу этип, ол айлана кетип арыгъан адамла от төгерегине жыйылып олтургъанлай, биягъы тёбентин бир къара туман кёрюннгенди.

* Ушашлы.



– Кюнде бир да хата жокъ эди. Олсагъатха туман къайдан чыкъды? Жауарыкъмы болур? – дейдиле.

Отха уа олтуруп, кеслерин хаман къыздырадыла, жылына, бири-бирине алкъырда* сёзле (айта – *Ф.Г.*) олтуруп тура болгъандыла.

Ала да алай тургъанлай, биягъы ол туманчыкъ, жете келип, ол отну тегерегине жыйылып тургъан адамланы ургъанды да, барын да бирден жокъ этгенди да бошагъанды.

– Э-ы-хы. Энди уа кёбюгюз къалмагъанды, артыгъызны этемен, – дегенди да, артха къайтханды да, кетгенди.

Ол туман да артына кетди, андан сора да бир ненча заман озду. Эки тамата къарындашы жыйынлары бла къайда жоюлгъанын кичилери билмей турады. «Не болдулар эсе да», – дегенден башха хапары жокъду. Хапары болмагъанлыкъгъа, аланы ачыуларын а унутуп къояргъа, жүрегинден кетерирге къолундан келмей эди.

Унутмай ёмюрюнде ким тураллыкъ эди? Болсада, ол юч да къарындашны бек кичилери да бир кюн кесине бирми, экими нёгер алгъанды да, уугъа айлана чыкъгъанды.

Сууну кюнлюм жанында бир да жаны болгъан бир кийик жаныуаргъа тюбегенди. Ол да, кюнлюмде арбери тапмагъанында, сууну чегет жанына ётерге тюшдю. Суудан атладыла. Бара-барып, тюз да ол аллынгъланы от орунларына тюбедиле. Ала да алайда:

– Мындан тап жер биз кече къалыргъа тапмабыз, – деп, алайда тохташдыла.

Ол жерде от тамыздыла, олтурадыла. Кюн кеч бола башлагъанлай, къарасала – тёбентин бир къара туман тебирегенди. Жашны нёгерлеринде бир да хапар жокъду, отха олтурадыла, жылынадыла. Жаш кеси уа: «Ол туман былай терк къайдан чыгъып къалды? Кёкде туурада бир булут да жокъ эди. Мен аны бир марламай къойман. Кеси да нечик терк келеди», – (деп), адамла, нёгерлери олтургъан жерден бираз кенгирек кетгенди да, кесин жашындырып олтургъанды.

Туман келе-келгенди да, ол отну тегерегине олтуруп тургъан адамланы ургъанды да, бир затлары да билинмезча, урходук этгенди. Ол заманда жаш, бугъуп, жашыртын къарап болгъанды.

– Артыгъыз бла да къурутдум, – деген таууш э(ши)тгенди, туман да ызына айланганды да, кетгенди.

Ол заманда жаш бек уллу аламатха, сейирге къалгъанды. Кесинден башха нёгер да жокъ, ат да, башха не ит сау зат кёрмегенди.

«Энди бу не аламат? Бу тынакыда мен къайры барайым?» – деп, кёлю тюрленеди. Алай болгъанлыкъгъа, ол кече алайда къалгъанды да, эрттен болгъанда, кеси аллына жангызлай жол алып кетип тебирегенди. Кете-кетгенди. Кёпмю баргъан болур, огъейсе уа азмы баргъан болур, кесинлей барады. Бара кетгенди да, бир заманда къаяны жарылгъанындан кёзюне бир тютюн чыкъгъан кёрюннгенди.

Ол къая жарылгъандан от тютюню чыкъгъанын кёрген бла ол, нёгерлеринден да айырылып, шашхын болуп тургъан салгъанды да, тюзюнлей тютюнню юсюне баргъанды. Барып, къая жарылгъаннга къараса,

* Лакъырда.

бир уллу эмеген къатын, эки эмчегин да артына байлап, гыржын этерге тылы малтай тургъанын кѳргенди. Аны кѳргенлей, чапханды да, эмегенни эмчегин ауузуна салып, тартып, эме башлагъанды.

Эмеген къатын: «Бюрчеми, битми къапды», – деп, артха къарагъан этмей узалгъанды. Артына узалып, бери алса, ол а адам.

– Ай, балам болдунг ансын, нечик иги, татлы къабын боллукъ эдинг! – деп, эмеген алай айтханды.

Ол алай айтханда, жаш да:

– Айхай да, анам болдунг ансын, уллу бичагъымы тотун а нечик ариу сыйпарыкъ эдинг! – дегенди.

Жаш да, эмеген да шагъырей болушдула, ашатхан, ичирген да этгенди.

Бир ненча кесек заман озуп, кюн кеч болургъа башлагъан(да), эмеген:

– Мени жашларым агъачда уугъа ашланыргъа кетгендиле. Аланы келир заманлары болады. Ач болуп келген сускулары бла санга бир палах этерле, мени да тыяргъа къолумдан келмез. Кел, андан эсе, сени ала кѳрмез кибик жерге букъдурайым, – дегенди.

Ол айтханнга жаш да бой салгъанды да, эмеген къатын жашны букъдургъанды.

Бир заман болгъанда, эмегенни бир жашы бууну, тѳрт аягъын да бирча къысып, терек бла таякъ башы этип, алып келгенди да, жюгюн эшик аллында атханды. Жюгюн къоюп, юйге, ол къая жарылгъанны ичине киргенди. Ичине киргенлей:

– Уф-уф, анам, ас ийис, бус ийис, адам ийис! – дегенди.

Анасы уа:

– Сен телими болгъанса? Мен а бери адамла сугъуп тура болуман! – дегенди.

Эмегенни экинчи жашы келгенди да, ол да ол формада айтханды. Ючюнчю жашы келгенди да, алай айтханды. Эмеген къатын, не аз да чий бермей:

– Мени жашларым, сиз былай нек этесиз? Мен а сизден мында адам улу букъдурупму тураман? (– дегенди – *Ф.Г.*).

– Да, анабыз, сен, къалай суйсенг да, айт, биз адам ийисден тѳзалмайбыз, – деп къатлагъандыла.

Ол заманда эмеген жашланы аналары:

– Сиз мени юч балам боласыз. Тиймезге айтыгъыз, тѳртюнчю да бир балам барды. Сиз анга тийсегиз, мен сизге ана болман, – дегенди.

Эмеген жашла ол аналары букъдуруп тургъан жашха тиймезге, къаргъанып, ант этгендиле. Ол заманда аналары жашны чыгъаргъанды.

– Да бизге Аллах къарындаш берди. Биз юч къарындаш бола эдик да, сен бизге тѳртюнчю къарындаш болдунг, – деп, ол юч да эмеген къарындаш жашла ол жашны бек сыйлы кѳргендиле.

Бир юйдеги кибик, бирча олтуруп, ашап, ичип, тынч олтуруп солугъандыла. Ала бир бирлери бла тамам танышыулу шагъырей болгъандан сора:

– Къарындашыбыз, айт, не айланасан, не жюройсен, къайдан чыкъдынг, не иш бла жюройсен? – деп, эмеген жашла жашха соргъандыла.

Ала жашха алай айтып соргъанда, жаш:



– Биз да юч къарындаш бола эдик. Таматабыз уугъа айлана кетди да, артха къайтмай къалды. Органчым да алай тас болду. Мен а ма былай да былай болгъанман, – деп, жаш хапарны барысын да толусунлай айтханды.

Жаш ол хапарланы айтханлай, эмегенле жашха:

– Ол туман тьююлдю, ол ишни этген бир къызды. Аны юч аякълы бир къолан аты барды. Ол къыз атны бизден къутхаргъанды. Нечик десенг, бизни бир къолан байталыбыз барды да, аны тайын бёрю алып кете болгъанды. Ол къозлар кече тайны алып кетерге бёрю да сакълагъанды, къыз да сакълай болгъанды. Тайчыкъ туугъанлай, бёрю сермегенди да, бир жапхагъындан тутханды, ол жапхакъ бёрюню ауузунда кетгенди, тайны уа къыз къутхаргъанды. Аны ёсдюргенди да, уллу ат этгенди. Ол туман кёрюннген юч аякълы къолан атны бурунундан чыкъгъан тылпыууду, ургъан да ат бла этеди, (– дедиле – *Ф.Г.*).

– Бусагъатда байтал а къайдады?

– Байталны, къозлап, тай табар кезиюу болуп турады. Аны тапхан тайын бёрюге алдырмай къутхаралсанг, ол санга атлыкъ этерикди.

– Не заман тай табады?

– Бек кысха, ма бюгюнню, тамбланы.

Жаш къолан байталгъа къарагъанды, кёргенди. Энди жашны муратында, ол байтал къозласа, тайны бёрюге бермей сыйырыргъады.

Байталгъа тай тууду.

Бёрю тайны тийресине келгенни кьой да, бар, жогъун да кёрмеди. Жаш байталдан тайны, тёрт аягъы да саулай, къолуна алды. Тай хатасыз жашны къолуна тюшгенде, эмегенле да къууанч болдула.

– Энди сен ат къоллу болгъансан, санга да, бизге да Аллах ырысхы берди, – деп, къууанч болгъандыла.

Сакълай, багъа кетгендиле да, тай да, тёрт аягъы да юсюнде, айтхылыкъ ат болгъанды.

Жашны эсинде ол къызны излерге болгъанды. Ол муратын жаш эмегенлеге айтмайды.

Бир кюнде жаш:

– Мен бир атланмай болман, – дегенди.

– Сен атлансанг, атынг атлыкъ этерине сёз болма(з). Ол къыз бир жатса, бир суткагъа, айгъамы жукълайды. Кёз кёргенде не зат эсленсе, ат кишнеп уятады. Ат кишнесе, ол тышына чыгъып къарайды, кёрген затын, уруп, къалай этгенин кесинг кёргенсен, ышаныргъа бир да жарамаз.

Барасан, бир жерде бир уру къазаса, ючаякъ ат байланып тура болур. Бугъуп тургъанлай, ол урудан башынгы къаратырсан. Ол заманда ат кишнер, ол а чыгъып къараса, сени кёрмейди. Экинчи да алай эт, ючюнчо да алай этерсен, не айтханын эшитирсен, – деп, эмеген къарындашлары жашха алай юйретгендиле.

Жаш атланып кетип тебирегенди.

– Да биз сени саулугъунгу къайдан билирге болурбуз?

Ол заманда жаш чыгъарады да, бир окъ береди.

– Муну отха атсагъыз, мен сау болсам, сют агъар, сау болмасам а – къан агъар, – деп айтады.

Эмегенле жашха:

– Биз айтханлай этип, юйню ичине киралсанг, кызыны чачын ундурукъну кыулакъларына кыаты байла. Ол кыаргъанмагъан зат кыалмаз, аны ючюн ийнанма, жиберме. Жиберсенг да, сау кыоймаз. «Жанымда хамайбылымы хакына, сен айтхан(дан) чыкъман», – дегинчин, жиберме, – дегендиле.

Жаш атланды, кетди. Кече бла кызыны болгъан жерине барды. Танг атхынчы, терен уру кыазып, ары кирип букъгъанды. Эрттенлик болуп, танг атып, кюн тийгенде, жаш урудан башын кыаратханды. Ол заманда кызыны аты ташны, агъачны зынгырдатып кишнегенди. Жаш артха букъду, кыыз а эшикге чыкъды да, тегерекге кыарады, бир да зат кёргени болмады. Тегерекге кыарап, жукъ кёрмегенде, юйге кирип кетгенди.

Бир кесек замандан дагыда башын урудан ёрге кыаратханды. Чачырагъанды да, кыыз биягъы, тышына чыгып, тегерекге кыарагъанды. Жаш уруну тюбуне бугъупду, кёрмедиди.

– Кыартмы болгъансан, кыолан? Алдай башлагъанса да, гяуур, ётюрюк айтаса да! – (деп,) атха ачыуланып, жаягъына да кыагып, биягъы юйге киргенди.

Ол юйге кирип, бир кесек заманчыкъ озар-озмаз, биягъы жаш башын урудан ёрге кыаратады.

Жаш башын алай ёрге кыаратхан заманда, юч аякылы кыолан ат, ташны, тауну зангырдатып, огъурсуз, ачы таууш бла кишнегенди. Жаш а артха жерине букъду.

Ат ачы-ачы кишнегенде, биягъыча кыыз, чартлап, эшикге чыгып, тегерекге не кыадар кыараса да, жашны кёрюрге кыолундан келмедиди. Жаш кыазылгъан уручукъга букъгъан эди.

Тегерекге кыарап, жукъ да кёрмегенде, кыыз, аман чамланып, атны юсюн сыйпаучу сибиртгини алып, атны аяусуз тюйгенди да:

– Энди сени бёрюле ашай турса(ла) да, мен эшикге чыкъман, не кыадар ётюрюкге алдадың! – деп, ызына кыайтып, юйге киргенди.

Жаш бираз заманны озмагъа кыойгъанды да, ачыкъ, ол кыазылгъан урудан ёрге туура чыкъгъанды. Ат биягъыча не кыадар кишнеген эсе да, кыыз эшикге чыкмагъанды.

Жаш энди кыыздан кыоркымайды, ачыкылап, тюзюнлей барады. Энди ат кишнегенин тохтатды.

Элтгенди да, кесини атын кызыны аты болгъан жерге тагъаргъа муратланганды. Атла, бири бирин, таныгъан адамла бирге жолукъгъанча, тансыкылаша башлайдыла.

Ючаякъ кыолан гузаба этгенин, кишнегенин кыойгъанда, жашны кёлю батыр болгъанды, кыоркымай, кесини атын да байлап, кыыз болгъан юйге киргенди. Юйню ичине кирип барса, кыыз орундукъда, чачы да жан-жанына сойланып, тынч жатып, ырахат жукылайды.

Кыыз алай жукылап тургъанда, жаш кызыны чачын орундукъну кыулакъларына тешилмезча кыаты байлап, кызыны кыобузун алып, тартып, согъа башлагъанды. Жукылап тургъан кыыз, секирип, ёрге кыобаргъа не кыадар кыочу бла итинсе да, ычхыныргъа кыолундан, не азчыкъ да кыарыуундан келип болалмагъанды, жаш а, аямагъанлай, кыобузну зырылдатып согъады.

Тартып-тартып, кыыз, чачын орундукъ кыулакъдан ычхындыралмай, тешерге уа кыолу жетмегенде, жашха жалынады:



– Теш мени, эркин эт, не айта, излей эсенг да, аллай харекет, быллай мал, хазна берирмен, – десе да, жаш кызыны, чачын тешип, эркин этмегенди, кьобузну согъады.

Кызы, жашха жалына кетип, болмагъанда, жашха ол эмегенле юйретгенча:

– Теш чачымы, жанымда жюрютген хамайылымы хакына, сен не айтсанг, этермен, сен айтхандан чыкъман, – деп, къаты кьаргъанганды.

Алай кьаргъангандан сора, жаш кызыны, чачын орундукъ кьулакъландан тешип, эркин этгенди.

Жашны болуму да кызыгъа жарагъан болур эди: экисине да суймеклик ортагъа тюшюп болгъанды. Кызыны юйюнде экисинден башха киши жокъду, зауукълу жашайдыла.

Жаш, тышына чыкъса, кызыны кёрмей, не азчыкъ да тёзюп болмай, юйге терк-терк кьайтып келе болгъанды. Ол, юйден кеталмай, терк окъуна кьайтханда, кызы:

– Эрикген да эте болурса, тюзге, аулакъгъа да чыкъ! Кёзюнгю да кенгнге бир кьарат, – дегенди.

– Сенден айырылып, эшикге, кенгнге, неда аулакъгъа, юйден узакъ кеталмайман.

Жаш аны алай татлы, кезиусюз суйгенин билгенде, кызы чыгъаргъанды да, кесини суратын жашха бергенди да:

– Эсинге тюшсем, бу суратха кьарарсан, – (деп,) атына минерине да кьарап, юйден бир кесек арлакъгъа ашыргъанды.

Кьолан ючаякъгъа да минип, кесини атын да башындан тарта, жаш, сууму, огъесе тенгиз жагъамы болгъанды да, эрикгенин кетере, гулят эте чыкъгъанды.

Кёп заман да озмай, артыкъ узакъ да кетгинчин, кызы жашны эсине тюшгенди.

– Андан беричин суратха кьарамай, мен кьалай бара тураман? – деп, кьолун хуржундан чыгъаргъанды да, кьарай болгъанды.

Жаш суратха кьарар-кьарамаз, адеж тутуп баргъан аты жашны кьолу тутхан жюгенни артха тартханды, неда желми юфгюргенди, ким билсин? Сурат жашны кьолундан ычхыннганды, секирип, атдан тюшюп тутаргъа кюрешгенди, алай болгъанлыкъгъа туталмагъанды. Жел суратны суугъа тюшюргенди.

Сурат тас болгъандан сора, жаш, артыкъ кёп айланыргъа да болмай, женгил окъуна ызына кьайтып, мудахыракъ юйге кьайтып келгенди. Ат аякъ тауушну эшитип, кызы жашны аллына чыкъгъанды.

Жашны мудахлыгъын кёргенде:

– Нек мудахсан, санга не болгъанды? – деп соргъанды.

– Болгъаны жокъду, – дегенди да, атдан тюшюп, атланы да орунларына тохташдырып, экиси да юйню ичине киргендиле.

Юйге киргенде да, тынгысыз болуп, кызы дагъыда кьайтарып жашха:

– Сен, былай мудах болуп, нек келгенсен, не ючюн айтмайсан? – деп сора болгъанды.

– Нек мудахман? Сен суратны манга берген эдинг, кьолума чыгъарып кьарайман дегенлей, жел юфгюрдю да, суугъа атды, мен а аны ючюн мудахланаман, – дегенди.

– Къой, тас болгъаны аман болду, (алай) сурат энтта да табарбыз, – деп, жашны кълюн иги этгенди.

Жашны къолундан тюшюп, суугъа кетген суратны бир балыкъ аузуна къабып айлана болгъанды. Ол кезиуню ичинде, бир ханмы, бийми, огесе уа не тукъум уллулугъу болгъан адам эсе да, аны чабакъ тута айланган адамлары ол суратны аузуна къабып айланган чабакъны тутхандыла.

Чабакъны тутуп юйге элтип барып жарсала, сурат чабакъны ичинден, ауузундан чыкъгъанды.

Ол суратны кърген адамла бары бир кибик тангкърдюге къалгъандыла. Ол заманда хан айтады:

– Бу суратны адамын табып, манга келтирген адамгъа мени къолумда болгъан ырысхымы ол адамгъа берирмен, – деп.

Аны табаргъа киши да базмайды.

Алай хапар болуп тургъанлай, бир къуртха къатынчыкъ келгенди.

– Мюлкюнг, малынг да кесинге хайыр болсун, хар заманда ашап бошагъанынгдан сора къанга тюбюнгю манга бере тур ансын, аны уа мен табарман, – дегенди.

– Къанганы башы окъуна сени болуруна ийнандыраман, тапхан эт ансын!

– Мен аны табарман, манга ахшы нѐгерле бер.

Жарашдырылгъан ахшы нѐгерле алгъанды, суратны адамын излей чыкъгъандыла.

Бара-бара кетгендиле да, къуртха:

– Энди сиз былай туругъуз. Къалайда къалын, уллу от тютюн чыкъса, мычымай, алайгъа терк жетигиз, – деп, нѐгерлерин алайда къойгъанды да, кесинлей кетгенди.

Бара кетгенди да, ол жаш бла къыз жашагъан жерге жетгенди. Алайда, ат орунну жанында кесин мугурайтып, жашха кърюнюп, кесин жолукъдургъанды. Ол ат орунну жанында алай кесин буюкъдуруп тургъан адамны къргенде, жаш:

– Не адамсан? Къайдан чыкъгъанса? – деп соргъанды.

– Не этейим? Къайдан чыгъыб'а, атам, анам болмай къалгъан бир факъырман. Къайда ишлер, гыржын ашар жер тапсам деп айланаман.

– Алай болса, кел, харип, кел, сени биз ач юлюшден къутхарырбыз, – дегенди да, юйге, къыз болгъан жерге элтип баргъанды.

Ол садакъачыгъа мушаш* адамны жаш, къолундан тутуп, юйге элтип баргъанда, къыз:

– Бу келтиргенинг а не затды? Къайда тапхансан? (– деп соргъанды. – Ф.Г.)

– Ат орунну жанында къабыша тургъанлай тапханма да, бир жукъгъа жарар, жарамаса да, ёлюмден къутхарайым деп алып келемен.

– Не жугъунга, не затынга жаратыргъа муратлайса? Аны бизге не кереклиси барды? Тойдур да, ашыр да, бармагъа къой, къайдан келген эсе да!

– Да бир да ёзге болмаса, суу алыр, от тамызыр. Муну ашагъанын несин къызгъанаса? Турсун!

* Ушаш.

– Мен аны ашагъанын, ичгенин кыызгъанып, ар-бери* да айтмайма, алай ол бизге керек болмагъанын айтама.

Не тукъум болса да, ол жаш алып келгенден сора, не этерге билмеди ансы, кыыз ол кыуртханы келгенине бир да ыразылыгы болмагъанды.

Ол кюн да, кече да ала бла бирча кыала болгъанды. Жарыкъ кёргюзтеди, не зат бла да алдардан бир да аямайды.

– Мен сизде иги жашаугъа жолукъгъаныма насыбым барды! – деп, кыызгъа жойкыуланган сёзле айта болгъанды.

Бир кюн:

– Кел, суу боюнуна да бир чыгъайыкъ, эрикгенибиз да кетер,– деп, гулятха чыкыгъандыла.

Сора:

– Сен кишинг бла иги жашагъанча кёрюнмейсе, – дегенди.

– Мени уа кишим бла не хатам барды?

– Да былай халигиз артыкъ тап кёрюнмейди.

– Не затдан?

– Санга несин да айтмагъанча.

– Не айтырыкъды?

– Санга жаны кыайда болгъанын айтханмыды?

– Огъай, аны уа айтмагъанды, билмейме.

Кюлген да этип:

– Эр киши бла тургъан адам кишини жаны кыайда болгъанын билмей а, кыалай турургъа болады? (– деди. – *Ф.Г.*)

– Мен анга аны бир сормай кыойман!

Жаш ол заманда уугъа айланыргъа кетип, юйге келмей тура болгъанды.

Ингир бола, жаш юйге келди. Бары да, десе да, ючюсю да жыйылып олтурдула. Ол заман бираз, бир кесек азаракъ болгъанлай, кыыз жашха:

– Мен санга бир зат сорлукъман, – дегенди.

– Сор, не зат эсе да.

– Сени жанынг кыайдады?

– Эшик артында сибиртгидеди.

Кыуртха аны эшитди. Бир да аларгъа не аз да эслетмей, сибиртгини отда кюйдюргенди, жашда бир зат да билинмейди.

Дагъыда кыайтарады да:

– Сени бош алдагъан этеди ансын, жаныны кыайда болгъанын тюзюн айтмайды. Тюз болумун айтдырмайсан, – деп, кёп тюрлю хыйла сёзле айтханды.

Экинчи, ючюнчю кюнмюдю:

– Жанын кыайда жюрютгенин айтдырмайсан, – (деп,) дагъыда кыуртха бедиш кибик сёзле айтханды.

Ингирлик болуп, юйге жыйыладыла. Кыызны жашха не соргъанын, ол да анга не жууап этгенин кыуртха, кесини кыулакъларын ары тургъузуп, эшитип турады.

– Да не этесе муну?

– Айтсанг, билирге сюеме.

– Арт желкемде чач тюгюмде бир минчагъым барды да, мени жаным олду.

* Абери.

Жашны жаны кьайда болгъанын кьуртха бек тамам билди.

– Сиз ичги ичип да жарыкъланмайсыз, хар не затыгъыз да барды. Мен сизни ол ишигизни да кьызгъанганнга санайман, жарыкь ойнаргъа, кюльорге керекди, – дегенди.

– Этсенг а ичер зат да, зауукълукъну не хатасы барды? – деп оноуну кьуртхагъа бердиле.

Ахшы ичги этгенди, жашха ичиргенди да, жаш жукълагъанды.

– Кел, энди биз а суу боюнуна чыгъайыкь, – дегенди да, тышына чыкыгъандыла.

Жаш а, жукълап, юйде кьалгъанды.

Экиси да суу боюнуна бара тургъанлай:

– Сен бара тур, керек болур, мен а кьумгъанны алып келейин, – дегенди да, артха юйге кьайтханды.

Ол жукълап тургъанлай, жашны арт желкесин кьармагъанды да, минчакъны тапханды, алгъанды да, ары, юйню кьарангы мюйюшюне быргъагъанды.

Аны быргъагъандан сора, ат бокъланы отха кьуйгъанды да, кьалын тютюн этерча этгенди, кьумгъанны да алып, кьызны ызындан жетгенди.

Кьызны юйден бир зат да хапары жокъду. Ала экиси да, суу боюнунда олтура, лахор этедиле, юйню аллында ат бокъла да, кьабынып, кьалын тютюн этедиле.

Ол тегерекге кьарап, кьайда тютюн керебиз деп кьарап, сакълап тургъан адамла уа олсагъатда алайгъа жетгендиле. Юйде тапхан затларын да алгъандыла, кьызны да, эки кьолан атны да алып, ханнга баргъандыла.

Хан, асыры кьууаннгандан, не затны кьалай этерин бир да эсгермей учады, болгъан оюн-той болгъанды.

Кьуртха уа:

– Барын этген да менмен! – деп, оюнланы ичинде махтанады, ойнайды.

Барын да алай этер мурат кьуртхада болгъанын кьыз билди, этерге не мадар...

Атла кьыздан башха кьатларына аз да башха адам кьоймайдыла.

Ишле бары да алай болуп тургъанлай, кьыз:

– Мен бир жылдан алгъа эр кишиге кьошулургъа боллукъ (туйюлдю), жараргъа амал жокъду, бу атла окъуна болгъанны муру-чуру этерликдиле, – деп, сёзню былай кьаты салып тохтагъанды.

Хан да:

– Хо да, жыл алай кеп заман туйюлдю! – деп кьууанады, тезеди.

Ол заманда, неда ол кюнледе жашны эмеген кьарындашлары ол кьоюп кетген окъну отха атадыла. Окъну отха атханлай, олсагъатдан кьан болуп башлайды.

Окъдан кьан алай агъып башлагъанда:

– Аха-а, бизни кьарындашыбыз ёлюп, бизге былай тургъан а бетлик туйюлдю, – дегендиле да, жашны кьайда табар жанына, ол кьыз жашагъан жерге тебиреп баргъандыла.

Жаш ёлгенлей жата, кьуру андан башха бир зат – не кьыз, ат, башха харекет – кермегендиле.

Не этерге билмей олтурадыла. Тегереклерине кьарай болгъандыла. Кьайры болса, кьарай кетгенлеринде, юйню бир кьарангы мюйюшюнде



бир кючлю жылтырагъан кѳргендиле. Барып, аны кѳолларына алсала, ол а бир ариу минчакъ. Кѳолгъа алып, келтирип: «Ким биледи, мындан бир себеп зат келмезми?» – деп, жашны башына салгъандыла. Олсагъатдан жаш секиргенди да, кѳопханды. Кѳобуп, тѳегерегине къараса – эмеген къарындашлары олтуруп тура, юйде андан башха зат да жокъ.

– Аллах, не татлы жукълай эдим, нек уятдыгъыз?

– Бек да татлы жукълайса! Ма иш былай болгъанды: сен кѳойгъан окъну отха атханбыз да, къан саркъып башлагъанды. Ол заманда бизге сени излерге тюшгенди да, салып келсек, бу формада болуп тургъанлай тапханбыз. Не зат болгъанын да билмей, ма бу жылтырагъан минчакъны сени башынга салгъаныбызлай, секирип кѳопдунг, – деп, хапарны барын да айтхандыла.

– Ахшы, алай болгъан эсе, мен, ёлмесем, сизни табарма. Алай алгъынча ёлюп къалыргъа, не жукъларгъа жарарыкъ болмаз, – дегенди да, эмегенлени юйлерине, къая жарылгъаннга ашыргъанды, кеси уа, – къызны тапмай кѳойман, – деп, алайда аладан айырылып, жолоучу болуп тебирегенди.

Эмегенле, юйлерине барып, хар болумну аналарына айтхандыла.

Жаш а, къызны излей кетип, бара-бара кетгенди да, кѳпмю, азмы баргъанды, ким билсин, бир элге жете баргъан жерде, жырлай-жырлай, ойнай, бир жаш сюрюуню кюте тургъанлай, юсюне баргъанды.

– Мал кѳп болсун, иги жаш!

– Сау бол, сау кел, кѳонакъ!

– Нечик ахшы жырлайса, не кѳууанчынг барды?

– Не кѳууанчым болсун? Бизни элибизде бир хан бар эди да, ангар, былай бир кѳп заманланы айланып, къатын келтиргендиле. Ол болуш юйде кѳонакъда тура эди да, аны келтиргенли бир жыл да болады, энди ханны юйюне бу ингирде элтирикдиле да, анда бир иги тоярма деп, аны ючюн кѳууанаман, – дегенди.

– Узакъдамыды юйлери, къалай барыпды?

– Ма былай тюз бар, – деп, ол, жашдан, ким болгъанындан хапары жокъду, жолну юйретип жибергенди.

Ол сюрюучю юйретгенлей, бираз баргъанында, бир къызчыкъ гѳген бла суу алып бара тюбегенди.

– Сууну къайры элтесен, ариу къыз?

– Ханны къатынын болушдан чыгъарадыла да, аны башын жууаргъа элтемен, – дегенди.

– Ай, сен ахшы къыз, суусап болуп келемен, сууунгдан бир ичерге берсенг а!

– Ма ич, не кѳп ичсенг да, къалгъаны да боллукъду, – деп, сууну жашны кѳолуна бергенди.

Жаш керти да суусап болуп жарсыйды деп, къызчыкъ алай мурат этгенди, ол а суу ичген сылтау бла, къызгъа эслетмей гѳгенни ичине кѳолунда мухур жюзюгюн атханды. Къызчыкъ, зат да билгени болмагъанлай, болуш юйде тургъан ханны къатынлыгъыны кѳолуна бергенди. Сууну алып, керти да башын жууаргъа сууну тазгъа къуйгъанында, мухур суу бла бирча тазгъа тюшгенди. Олсагъат кѳргенлей таныгъанды.

Сууну алып келген къызчыкъгъа:

– Сени аллынга адам зат жолукъгъанмыды? – деп сорду.

– Бир киши жолуккъгъан эди да, суу да ичгенди.

– Ол къайры кетди?

– Бери таба келе къалгъан эди.

Къызчыкъны жиберип, чакъыртып, кёзю эследи. Адамгъа не аз да эслетмей, къыз да, жаш да бир бирлерин билдиле.

Халкъ жыйылып той-оюн барады. Эрттенлик болуп, ханны юйюне тебирерге башха атланы арбагъа жегедиле, къолан атла къатларына адам къоймайдыла.

Жашны киши танымайды, ол огъесе, асыры къууанчха аралгъандан, къуртха да танымайды.

Адамла танымагъанлыкъгъа жашны къолан атла, танып, иер салыргъа, минерге, тюшерге да къоядыла. Халкъ кёп жыйылгъан жерде жашны да ол элден адам сунадыла, къыз а бек тамам биледи. Ол жаш атлагъа алай шагъырей болгъаннга, атланы оноун жашха бердиле. Ол заманда тёрт аякълы къоланнга кеси минеди. Ол анга минген заманда:

– Жыкъдырмай элтсенг эди, жаш нёгерни ючаякъгъа миндир, – дейдиле.

– Ким биледи, чочугъан зат этер, – дейди да, улан нёгерни ючаякъны сыртына, тепмезча, къаты байлайды.

Жолгъа чыкъдыла. Къызны биргесине нёгерге къуртха олтурады.

Ол жолгъа чыгып бара, жаш тёрт аякълы къоланны суйгенича ойнатады, аны биргесине ючаякъ да ойнайды. Элден кенгирек, эркин жерге чыкъгъанлай, жаш бичакъны сууургъанды да, къуртханы тюз тёппесинден энишге уруп, тюз эки этгенди, сермегенди да, къызны ат боюнуна алгъанды да:

– Ура-а-а, ючаякъ! – деп, халкъны ичинден чыгъарып, алып къача бергенди.

Ким аны къуууп жетерге къолундан келлик эди? Къутулгъанды да, кетгенди. Хан да, халкъы да къарап къалгъандыла. Жаш а тюзюнлей эмеген къарындашларына ханны улан нёгерин да элтгенди да, баргъанды.

Баргъанлай:

– Анам, келдим, – деп, эмеген анасын къучакълагъанды да, – ма, санга да бир къабын да ала келгенмен, ауузунгу бир татлы эт, тамагъынг да къургъакъсыгъан болур, – деп, ханны улан нёгерин эмеген анасыны къолуна бергенди.

Эмеген къарындашлары бла бирча ол айтылгъан къая жарылгъанда, ёлмеген эселе, жашап тура болурла.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 19 папка, 2 паспорт. КъМАССР-ны Хасания элинде жашагъан Гадийланы Матгерийден 27.12.1959 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Сейир-тамаша жомакъ. Чыгъарманы баш жигитине эмегенле болушадыла. Жашны жаны, кесини ичинде болмай, чач тюзюндеги минчакъдады, ол а мажюсю заманладан къалгъан ызды. Андан сора да жомакъда юйюр-турмуш жашауда тиширыу таматалыкъ этген заманны ызлары да тюбейдиле: пелуан къызны сыфаты, бир юйдегили болгъандан сора, жаш къатыныны юйюнде жашагъаны эм б.



Жомакъда кечиракъ къошулгъан элементле тубейдиле: арап тилден ислам дин бла байламлы кирген сёзле (Аллах, гяуур), орус тилден алынганла да (форма, сутка, гулят эте, гулятха чыкъгъандыла) бардыла. Аны бла бирге, сёзлени эрттегили формалары да хайырланыладыла (айландылар, этемен, деричин, дегинчин эм б.).

ПЕГИЕ КОНИ

В давние-давние времена, прошедшие неизвестно за сколько времен до нынешних, в долине одной большой реки жили три брата. Эти братья все трое были прославленными охотниками.

В то время, когда они жили, самый старший из трех братьев-охотников собрал себе дружину и, желая поохотиться, отправился в те земли в степях, в местах которых водились дикие животные.

Бродил-бродил с утра до вечера и на южной стороне реки даже отчетливого следа дичи не нашел.

Когда день стал приближаться к концу, после того, как не нашел ничего на южной стороне, вместе с дружиной переправился на северную сторону реки.

В месте переправы на северный берег день стал клониться к закату. Недалеко от того места повстречали какие-то оставшиеся, похоже, после стоянок людей очажки, где разводились костры. Увидев очажки:

– Парни, зачем нам далеко ходить, здесь и до нашего прихода, кажется, люди останавливались, и мы здесь останемся, – сказав, остановились в том месте, где были следы от костров.

Живо взялись за заготовку дров, воды, чтобы остаться там на ночь, устроились на том месте.

Едва они успокоились, разведя огонь, с равнины, располагавшейся в нижней от них стороне, показался какой-то черный туман. В это время старший из них и из трех братьев сказал:

– Парни, кажется приближается туманчик, неужели пойдет дождь, прикройте себя и вещи, чтобы не промокнуть и не пострадать.

Пока они так пребывали, тот показавшийся туман, приблизившись, тех бродивших весь день, тех, устав, собравшихся вокруг костра людей ударил и обратил в пепел-уголья. Ни одного из них в живых не осталось. Домой ни один человек не вернулся.

После того, как так случилось, прошло некоторое время. Того, что они там погибли, никто не знает. «Где бы ни скончались, скончались», – подумали.

Сколько-то дней, времени прошло, из тех троих братьев-охотников средний: «И скука моя уйдет, выйду и схожу на охоту», – решив, и он собрал себе дружину, отправился на равнину.

Ходил-ходил, бродил, на обозримом пространстве даже одного следа суслика не увидел. Весь день напролет ходили и ночью в лесу остались, ничего не увидели.

Утром встали и, побродив на южной стороне реки, ничего не увидев, и они через реку перешли на северную сторону.



Много ли, мало ли ходили, побродили и, ближе к концу дня, вышли к тому месту, где ранее останавливался их старший брат.

– Ах-а-а, парни, готовые кострища, готовое пристанище, и мы должны здесь остановиться, – сказав, устроились на том месте.

Разведя вокруг себя большой костер из дров, как только те уставшие от путешествия люди, собравшись вокруг огня, расселись, снова снизу показался какой-то черный туман.

– В погоде ничего опасного не было. За это время откуда туман появился? Дождь пойдет что ли? – сказали.

Однако, подсев к огню, себя непрерывно обогревают, греясь, говоря друг-другу шуточные слова, продолжали сидеть.

В то время, пока они так сидели, снова тот туманчик, настигнув, собравшихся вокруг того костра людей ударил и всех вместе уничтожил.

– Ага. А теперь вас немного осталось, покончу с вами, – сказал и убрался обратно.

И тот туман вернулся назад, и после того сколько-то времени прошло. Где его два старших брата с дружинами погибли, младший не знает. «Что-то случилось», – кроме этого других новостей у него нет. Хоть вестей и нет, скорбь по ним забыть, выбросить из сердца был не в силах.

Не забывая, кто бы смог всю жизнь прожить? Как бы то ни было, самый младший из тех троих братьев тоже в один день взял одного ли, двух ли напарников и отправился на охоту.

На южном берегу реки не встретил ни единого живого дикого зверя. И ему, когда на юге ничего не нашел, пришлось перейти на северную сторону реки. Перебрались через реку. Бродя, наткнулись прямо на кострища тех предшественников. И они тоже, сказав:

– Более подходящего места, чтобы заночевать, мы не найдем, – там остановились.

На том месте развели огонь, садятся. Едва начало смеркаться, смотрят – снизу двинулся какой-то черный туман. У напарников парня нет никакой тревоги, сидят у костра, греются. А сам парень: «Откуда этот туман так быстро появился? На обозримом пространстве неба не было ни облака. Послежу-ка я за ним. И сам как быстро приближается», – подумав, от места, где сидели люди, его спутники, отошел подальше и затаился.

Туман приблизился и в тех сидевших у костра людей ударил и так, что ничего не различить, обратил их в пепел. В это время парень, спрятавшись, тайком подсматривал.

– С концами вас уничтожил, – говорящий голос услышал, и туман повернулся назад и ушел.

Тогда парень очень удивился, поразился. Кроме себя самого нет ни товарища, ни коня, ни другой собаки, ничего живого не увидел.

«Это теперь что за чудеса? В этой темноте куда мне пойти?» – подумав, расстроился. Тем не менее, той ночью остался там и, когда наступило утро, сам по себе, один, выбрав направление, двинулся в путь. Ходил-ходил. Много ли прошел или же мало прошел, одинешенек идет. Шел-шел и в один момент на глаза ему попался выходящий из трещины в скале какой-то дым.

Завидев дым, выходящий из трещины в скале, он, разлучившись с товарищами, будучи слегка не в себе, взял и напрямик пошел на тот дым.



Пойдя, когда заглянул в скальную трещину, увидел, что одна большая женщина-эмегенша, завязав обе свои груди назад, месит тесто на хлеб. Завидев ее, подбежал и, взяв грудь эмегенши в рот, стал тянуть, сосать.

Женщина-эмегенша, решив: «То ли блоха, то ли вошь укусила», – не оглянувшись, потянулась. Потянувшись, сюда взяла – а это человек.

– Ай, дитем моим стал, а то каким бы хорошим, сладким кусочком был бы, – сказала эмегенша.

Когда она так сказала, и парень:

– Жаль, матерью моей стала, а то ржавчину с моего большого ножа как бы хорошо стерла, – ответил.

И юноша, и эмегенша познакомились, (она его) накормила и напоила.

Спустя сколько-то времени, когда начало смеркаться, эмегенша сказала:

– Мои сыновья ушли в лес на охоту добыть пищу. Приближается время их возвращения. Они, придя голодными, сгоряча с тобой какую-нибудь беду сотворят, и я не смогу удержать. Давай, лучше спрячу тебя в такое место, где они тебя не увидят.

Тому, что она сказала, и юноша подчинился, и женщина-эмегенша спрятала парня.

Когда настало время, один сын эмегенши оленя, связав воедино все его четыре ноги, нанизав на дерево как рукоятку палки, принес и сбросил свой груз у двери. Оставив свою поклажу, вошел в дом, в ту скальную трещину. Едва зайдя внутрь:

– Уф-уф, мама, ас запах, бус запах*, человека запах! – сказал.

А его мать:

– Ты с ума сошел что ли? А я сюда людей наверное насовала! – ответила.

Пришел второй сын эмегенши, и он в той же форме высказался. Третий ее сын пришел и так сказал. Женщина-эмегенша, ничуть себя не выдавая, сказала:

– Сыновья мои, почему вы так поступаете? А я что, здесь от вас человеческого сына прячу?

– Да, мать наша, ты говори как хочешь, мы изнемогаем от человеческого духа, – повторили.

Тогда мать парней-эмегенов сказала:

– Вы являетесь моими тремя детьми. Пообещайте не трогать, и четвертое дитя у меня есть. Если вы его тронете, я вам матерью не буду.

Парни-эмегены, побожившись, дали клятву не трогать того спрятанного их матерью юношу. Тогда их мать вывела парня.

– Да нам Аллах брата дал. Нас было три брата, ты нам стал четвертым братом, – сказав, те три брата-эмегена к тому парню отнеслись очень уважительно.

Как одна семья, все вместе сев, поев, попив, спокойно посидели, отдохнули. После того, как они друг с другом хорошенько, близко познакомились:

– Брат наш, скажи, чего ходишь, чего бродишь, откуда появился, по какому делу странствуешь? – спросили ребята-эмегены у юноши.

* В современном карачаево-балкарском языке слова «ас» и «бус / мус» не функционируют по-отдельности и их значения непонятны, но бытует объединенная форма «ас-мус» в значении «человеческий, свойственный, присущий человеку (запах)» [4, 205] (Ф.Г.).

Когда они так спросили парня, парень ответил:

– Мы тоже были тремя братьями. Старший из нас ходил на охоту и (однажды) не вернулся назад. И средний так потерялся. А со мной так-то и так случилось, – рассказал юноша всю свою историю целиком.

Как только парень рассказал те истории, эмегены парню сказали:

– Это – не туман, все это делает одна девушка. У нее есть один трехногий пегий конь. Та девушка украла коня у нас. Спросишь как: у нас есть одна пегая кобылица и ее жеребят обычно утаскивал волк. В ночь, когда она должна была ожеребиться, чтобы забрать жеребенка, и волк ждал, и девушка поджидала. Едва жеребенок родился, волк хватил и поймал его за одну из лопаток, та лопатка ушла в зубах волка, а жеребенка девушка спасла. Вырастила его и сделала большим конем. То, что кажется туманом, – это пар, выходящий из ноздрей трехногого пегого коня, и бьет она тоже конем.

– А сейчас кобылица где?

– Кобылице приближается время жеребиться, родить жеребенка. Если сможешь рожденного ею жеребенка спасти, не дав украсть волку, он станет тебе конем.

– Когда (она) родит жеребенка?

– Очень скоро, вот сегодня или завтра.

Парень осмотрел пегую кобылицу, увидел. Теперь в мыслях у парня, когда кобылица родит, жеребенка, волку не отдав, отобрать.

У кобылицы родился жеребенок.

Волк не то, что приблизился к жеребенку, есть ли, нет ли его, не увидел. Юноша забрал жеребенка у кобылицы со всеми четырьмя целыми ногами. Когда жеребенок без увечий (без проблем) попал в руки парня, и эмегены обрадовались.

– Теперь ты приобрел коня, и тебе, и нам Аллах даровал богатство, – говоря, веселились.

Оберегая, откармливали, и жеребенок со всеми четырьмя ногами, находящимися на месте, превратился в выдающегося коня.

У юноши на уме было поискать ту девушку. Об этой своей цели парень эмегенам не говорит.

В один день юноша:

– Я не могу не отправиться (в путь), – сказал.

– Если ты выйдешь в путь, не сомневайся, что твой конь выполнит свой лошадиный долг. Та девушка, если ляжет, день ли, месяц ли спит. Если на обозримом пространстве что-то покажется, жеребец, заржав, будит (ее). Если жеребец заржет, она, выйдя во двор, осматривается, то, что увидит, ударив, во что превращает, сам видел, полагаться на удачу никак нельзя.

Идешь, в одном месте выкапываешь яму, трехногий конь скорее всего находится на привязи. Прячься, из той ямы покажешь голову. Тогда жеребец заржет. А она, когда выйдя, посмотрит, тебя не видит. И второй (раз) так сделай. И в третий раз так поступишь, что (она) скажет, услышишь, – сказав, братья-эмегены парня так научили.

Парень, собравшись, стал уходить.

– А откуда мы сможем узнавать о твоём здоровье?



Тогда юноша достает и дает им одну пулю (стрелу)*.

– Когда бросите ее в огонь, если я пребуду в здравии, молоко закапает, а если цел не буду – кровь закапает, – говорит.

Эмегены сказали парню:

– Если, поступив, как мы сказали, сумеешь войти в дом, накрепко привяжи волосы девушки к столбикам кровати. Не останется ничего, чем бы она не поклялась, несмотря на это, не верь, не отпускай. Если ипустишь, в живых не оставит. Пока не скажет: «Ради моего молитвенника, не выйду из твоего распоряжения», – не отпускай.

Парень отправился, ушел. Ночью поехал в то место, где обитала девушка. До восхода солнца выкопав глубокую яму, забравшись туда, спрятался. Когда наступило утро, занялась заря и засветило солнце, юноша показал голову из ямы. В это время жеребец девушки заржал, заставив звенеть камень и дерево. Парень спрятался обратно, а девушка вышла во двор и посмотрела вокруг. Ничего не увидела. Когда, осмотревшись вокруг, ничего не увидела, зашла в дом.

Через немного снова голову поверх ямы показал. Зазвенело (от ржания жеребца – Ф.Г.), и девушка вновь, выйдя, посмотрела вокруг. Парень прячется на дне ямы, не увидела.

– Ты постарел, пегий, да начал обманывать, гяур**, да ложь говоришь! – сказав, разозлившись на коня, хлопнув его по морде, опять зашла в дом.

После ее входа в дом прошло ли, не прошло ли немного времечка, вновь парень голову из ямы показывает.

В то время, когда юноша голову так наверх показал, трехногий пегий жеребец, сотрясая камни и горы, злобным, пронзительным звуком заржал. А парень спрятался назад на свое место.

Когда конь пронзительно-пронзительно заржал, как и прежде, девушка, выскочив во двор, сколько бы вокруг ни смотрела, увидеть парня не сумела. Юноша спрятался в выкопанную ямку.

Когда, посмотрев вокруг, ничего не увидела, девушка, сильно разозлившись, взяв веник, которым обметала коня, нещадно побила жеребца и, сказав:

– Теперь даже если тебя будут грызть волки, я наружу не выйду, сколько ты меня понапрасну обманывал! – вернувшись назад, вошла в дом.

Парень выждал некоторое время (дал немного времени пройти) и открыто из той выкопанной ямы прямо наверх вылез. Жеребец сколько бы ни ржал, как прежде, девушка наружу не вышла.

Юноша теперь девушки не боится, в открытую, напрямую идет. Теперь конь перестал ржать.

Отвел и своего коня задумал привязать там, где находился девушкин жеребец. Кони друг друга, будто знакомые люди повстречались, начали ласкать.

Когда трехногий пегий (жеребец) перестал бесноваться, ржать, дух парня укрепился. Не боясь, привязав и своего коня, вошел в дом, где находилась

* В карачаево-балкарском языке слово «о^къ» в зависимости от контекста переводится на русский язык и как «стрела», и как «пуля», но в данном случае остается непонятным, о чем именно идет речь (Ф.Г.).

** Гяур – неверный, плохой (Ф.Г.).

девушка. Когда вошел внутрь дома, девушка на кровати с рассыпанными по сторонам волосами тихо лежит и спокойно спит.

Пока девушка так спала, парень, накрепко, чтобы не развязались, примотав волосы девушки к столбикам кровати, взяв гармошку девушки, потянув, начал наигрывать. Спавшая девушка, как бы изо всех сил ни стремилась, вскочив, встать, подняться вверх, высвободиться ни в малейшей степени не было в ее силах, руках, а парень всю на гармошке, разливаясь, играет.

Когда, потянув-потянув, девушка, не сумев отцепить свои волосы от кроватных столбиков, а развязать – не дотянулась рука, парня умоляет:

– Развяжи меня, освободи, что скажешь, что ищешь, такое добро, разэтакий скот, богатство дам, – хоть так и сказала, парень девушку, отвязав волосы, не освободил, играет на гармошке.

Девушка, когда умолить парня не получилось, как парня эмегены научили:

– Отвяжи мои волосы, ради носимого с собой моего молитвенника, что ты скажешь, сделаю, из твоей воли не выйду, – сказав, крепко побожилась.

После того, как так поклялась, юноша, отвязав волосы от кроватных столбиков, освободил девушку.

Деятельность парня девушке, видимо, подошла: между обоими любовь зародилась. В доме девушки кроме них двоих никого нет, очень счастливо живут.

Если юноша выходил за пределы (дома), не выдерживая даже чуточку, не видя девушки, часто-часто возвращался домой. Когда он, не сумев уйти из дому, быстро возвратился, девушка сказала:

– Наверное, скучаешь, на равнину, в степь выйди-ка! Дай глазу поглядеть вдаль.

– С тобой расставшись, на улицу, вдаль, или в степь, от дома далеко уйти не могу.

Когда узнала, что парень ее так сладко, беззаветно любит, девушка достала и свое изображение юноше дала и, сказав:

– Если вспомнюсь, на это изображение посмотришь, – проследив, как он сядет на своего коня, проводила чуть подальше от дома.

Сев на трехногого пегого (жеребца) и своего коня тяня за голову (ведя в узде), парень, реки, или же моря берег был, развеивая скуку, отправился на прогулку.

Спустя немного времени и не так уж далеко уехав, девушка вспомнилась парню.

– С тех пор на изображение не посмотрев, как я еду? – сказав, руку из кармана вынул и разглядывал.

Парень на изображение посмотрел, не посмотрел (едва глянул), ведомый в поводу конь потянул назад узду, которую держала рука парня, то ли ветер подул, кто знает? Изображение выскользнуло из рук парня, соскочив, с коня слезши, попытался поймать, однако не смог поймать. Ветер швырнул изображение в воду.

После того, как изображение потерялось, парень, не решившись особо долго странствовать, быстренько назад повернув, немного грустный домой вернулся. Услышав топот коня, девушка вышла навстречу юноше.



Увидев угрюмость парня:

– Отчего печален, что с тобой случилось? – спросила.

– Ничего не случилось, – сказал и, сойдя с жеребца, и поместив коней в стойла, оба вошли внутрь дома.

И когда вошли в дом, беспокоясь, девушка снова, повторив, парня спрашивала:

– Почему ты, так опечалившись, приехал, из-за чего не рассказываешь?

– Почему печален? Ты мне свое изображение дала, когда вынул на (взял в) руки, чтобы посмотреть, ветер подул и бросил в воду, и я потому печалюсь, – ответил.

– Брось (Оставь), что потерялось, плохо, но изображение и еще найдем, – сказав, улучшила парню настроение.

Выпавшее из руки парня и ушедшее в воду изображение одна рыба, заглотив в рот, плавала. В течение этого времени, одного то ли хана, то ли бия, или же другого какого высокопоставленного человека, его люди, удивившие рыбу, поймали ту рыбку, плававшую, заглотив в рот то изображение.

Когда, поймав рыбу, отнеся домой, распотрошили, изображение изнутри, из рта вышло.

Видевшие то изображение люди все как один были поражены. Тогда хан говорит:

– Человеку, который, найдя девушку (человека) с этого изображения, приведет ко мне, все богатство, находящееся у меня в руках, тому человеку отдам.

Найти ее никто не решается.

В то время, как шли эти разговоры, одна хитрая женщина пришла.

– Имущество и скот твой пусть самому (тебе) принесут пользу, только всегда после того, как закончишь трапезничать, остатки со стола мне отдавай, а ее я найду, – сказала.

– Уверю, что даже начало стола (нетронутый накрытый стол) будет твоим, только найди!

– Я ее найду, дай мне хороших товарищей.

Подготовленных добрых спутников взяла, девушку (человека) с изображения вышли искать.

Брели-брели, и ведьма:

– Теперь вы здесь оставайтесь. Где густой дым от большого костра покажется, без промедления туда быстро примчитесь, – сказав, своих товарищей там оставила и сама одна ушла.

Шла-шла и добралась до места, где жили парень и девушка. Там, сбоку от конюшни, понурившись, показавшись юноше, встретила на его пути. Увидев человека, который рядом с конюшней так себя неловко чувствовал, парень спросил:

– Что ты за человек? Откуда появилась?

– Что мне делать? А откуда бы появилась, оставшаяся без отца, матери одна несчастная (я). Брожу, может где найду место поработать, поесть хлеба.

– Коли так, идем, горемычная, идем, тебя мы от голодной доли спасем, – сказал и домой, туда, где находилась девушка, повел.



Когда юноша того, похожего на попрошайку человека, держа за руку, повел в дом, девушка спросила:

– Это что такое ты привел, где нашел?

– Возле конюшни нашел замерзающей и, подумав, может на что согдится, а и не согдится, от смерти спасу, забрал и привел.

– На что, к какому делу (вещи) приспособить думаешь? Для чего она нам нужна? Накорми, проводи и пусть идет, откуда пришла!

– Да если ничего больше не сможет, воду наберет, огонь разведет. Чего ты жалеешь, что она поест? Пусть остается!

– Я что-то говорю не потому, что пожалела ей пищу и питье, но говорю, что она нам не нужна.

Какого роду-племени ни была бы, после того, как тот парень привел, не знала, что делать, а то девушка вовсе не была довольна приходом этой ведьмы.

Она и днем, и ночью, наравне с ними оставалась. Доброжелательность выказывает, чтобы любым способом пробудить симпатию, не жалеет сил.

– Мое счастье, что я у вас приобщилась к хорошей жизни, – говаривала она девушке лицемерные слова.

В один день, сказав:

– Пойдем, выйдем-ка на берег реки, и скука развеется, – вышли на прогулку.

Тогда:

– Не похоже, что ты с мужем хорошо живешь, – сказала (ведьма).

– А у меня с мужем что не так?

– Да как-то ваши отношения особо удачными не кажутся.

– Отчего?

– Будто (он) тебе не все рассказывает.

– Что расскажет?

– Тебе, где его душа находится, говорил?

– Нет, а про это не говорил, не знаю.

Еще и посмеявшись:

– С мужчиной живущая женщина как может жить, не зная, где находится душа мужа? – сказала (ведьма).

– Я у него это не спросив, не оставлю!

Парень в это время, отправившись на охоту, еще не возвращался домой.

Ближе к вечеру парень пришел домой. Все, то есть, все трое, собравшись, сели. Тогда через немного, спустя некоторое время, девушка парню:

– Я у тебя одну вещь спрошу, – сказала.

– Спрашивай, что бы то ни было.

– Твоя душа где?

– В венике за дверью.

Ведьма это услышала. Им ни в малейшей степени не дав заметить, веник сожгла в огне, на парне ничего не сказывается.

Еще раз повторяет и:

– Тебя попросту обманывает, но не говорит правду о том, где находится его душа. Правильное положение не заставляешь выдать, – сказав, много разных хитрых слов произнесла.

На второй или на третий день:



– Где носит свою душу не заставляешь сказать, – произнесла вновь ведьма насмешливые слова.

Вечером собираются домой. Что девушка спросила у парня, и что он ей ответил, ведьма, наострив свои уши туда, слушает.

– Да зачем тебе это?

– Хочу знать, если скажешь.

– Сзади на затылке на волосинке у меня есть одна бусина, это и есть моя душа.

Где находится душа парня, ведьма очень точно узнала.

– Вы, и спиртного выпив, не веселитесь, все, что угодно, (у вас) есть. Я это ваше дело за жадность считаю, весело играть, смеяться надо, – сказала.

– А и приготовь что выпить, что плохого в веселии? – сказав, отдали власть ведьме.

Крепкое (доброе) питье приготовила, парня напоила, и парень уснул.

– Пойдем, а мы теперь выйдем на берег реки, – сказала (ведьма), и вышли на улицу.

А парень, заснув, остался в доме.

Когда они обе шли к берегу:

– Ты иди, наверное нужно, а я пойду, принесу кумган*, – сказала (ведьма) и вернулась домой.

Пока он спал, ощупала затылок парня и нашла бусину, сняла и туда, в темный угол дома зашвырнула.

После того, как ее выбросила, лошадиный навоз в огонь высыпала и сделала так, чтобы валил густой дым, и, захватив кумган, догнала девушку.

У девушки из дома никаких вестей нет. Они обе, сидя на берегу реки, беседуют, а перед домом лошадиный навоз, разгоревшись, густо дымит.

А те люди, которые, глядя вокруг, высматривая, где увидим дым, ожидали, тотчас туда добрались. И вещи, которые нашли в доме, забрали, и девушку, и обоих пегих коней взяв, к хану поехали.

Хан настолько обрадовался, что, даже не думая о том, что и как должен делать, летает, все игрой, праздником обернулось.

А ведьма:

– Все это сделала я! – говоря, на празднествах хвастается, играет.

То, что у ведьмы была цель все так и сделать, девушка узнала, но что поделать...

Кони кроме девушки никого другого даже близко к себе не подпускают.

В то время, как положение всех дел оказалось таковым, девушка, сказав:

– Мне раньше, чем через год, с мужчиной воссоединиться не получится, нет никакой возможности, даже эти кони все вокруг разнесут, – твердо настояла на своем слове.

И хан:

– Ну ладно, год – это не так много времени, – говоря, радуется, терпит.

В это время или в те дни братья-эмегены парня оставленную им стрелу / пулю бросают в огонь. Едва бросили стрелу / пулю в огонь, тотчас стала сочиться кровь.

Когда из стрелы / пули начала так капать кровь:

* *Кумган* – металлический кувшин с узким горлышком и длинным носиком [5, 698].

– Аха-а, когда наш брат умер, нам так сидеть не пристало (не достойно нашей чести), – сказали и в ту сторону, где нашли бы парня, в то место, где жила девушка, двинулись.

Парень мертвый лежит, пусто, кроме этого ничего – ни девушки, коня, другого добра – не увидели.

Не зная, что делать, сидят. Осматривались вокруг. Когда смотрели куда ни попади, в одном темном углу дома увидели что-то сильно блестящее. Когда, подойдя, взяли его в руки, а это – красивая бусина. Взяв в руки, принеся: «Кто знает, не будет ли от нее какой пользы?» – подумав, приложили к голове парня. Тотчас же парень вскочил и встал. Встав, когда посмотрел вокруг – его братья-эмегены сидят, в доме кроме них ничего нет.

– Аллах, как сладко я спал, зачем разбудили?

– Очень даже сладко спишь! Вот дело так было: бросили оставленную тобой стрелу / пулю в огонь, и кровь сочиться стала. Тогда нам выпало тебя искать и, напрямик пришли (сюда), в таком виде находящимся нашли. Не зная, что это, как только эту блестящую бусину приладили к твоей голове, вскочив, встал, – молвив, всю историю рассказали.

– Хорошо, коли так случилось, я, если не погибну, вас найду. Однако, как прежде, умереть или заснуть, наверное, будет нельзя, – ответил и эмегенов домой, к трещине в скале проводил, а сам, – девушку не найдя, не успокоюсь, – решив, там от них отделившись, став путником, отправился.

Эмегены, пойдя к себе домой, все дела рассказали своей матери.

А парень, разыскивая девушку, шел-шел и, много ли, мало ли прошел, кто знает, в месте, что находилось на подходах к одному селу, набрел на юношу, который, напевая, играясь, пас стадо (отару).

– Пусть будет много скота, добрый молодец!

– Спасибо, добро пожаловать, гость!

– Как хорошо поешь, что у тебя за радость есть?

– Какой у меня радости быть? В нашем селе был один хан, ему, так много времени странствуя, жену привезли. Она во вспомогательном доме гостевала, как ее привезли и один год исполнился, теперь в дом хана этим вечером отвезут, думая, что там хорошенько наемся, поэтому радуюсь, – сказал.

– Далеко ли их дом, как пройти?

– Вот так прямо иди, – сказав, кем является этот парень, не знает, дорогу указав, отпустил.

Когда немного прошел, как показал пастух, повстречалась одна девочка, которая несла гоген*, набрав воду.

– Куда несешь воду, красавица (красивая девушка / красна девица)?

– Жену хана выводят из вспомогательного дома, и ее голову помыть несу, – ответила.

– Ай, ты хорошая девушка, испытывая жажду, иду, дай сделать один глоток от твоей воды!

– На, пей, как бы много ни выпил, и оставшегося хватит, – сказав, воду передала в руки парню.

Девочка подумала, что юноша действительно, испытывая жажду, томится, а он под предлогом питья воды, незаметно для девушки внутрь

* Гоген (гёген) – кувшин с длинным горлышком [4, 590].



гогена бросил свой перстень-печатку с руки. Девочка, ничего не подозревая, находящейся во вспомогательном доме невесте хана отдала в руки. Когда, взяв воду, чтобы и вправду помыть голову, воду в таз налила, печатка одновременно с водой в таз попала. Сразу же, едва увидев, узнала.

У принесшей воду девочки спросила:

– Тебе какой-нибудь человек повстречался?

– Один мужчина встретился и воды выпил.

– Он куда ушел?

– По направлению сюда шел.

Послав девочку, попросив позвать, заметила глазом. Людям ни в малейшей степени не дав заметить, и девушка, и парень друг друга поняли (узнали).

Народ собравшись, праздник идет. Когда настало утро, чтобы отправиться в дом хана, других лошадей в арбу запрягают, пегие кони никого к себе не подпускают.

Парня никто не знает, более того, из-за того, что слишком увлеклась праздником, даже и ведьма не узнает.

Хоть люди и не узнали, парня пегие кони, узнав, оседлать, сесть и слезть с себя позволяют. В месте, где много народу собралось, парня посчитали человеком из этого села, а девушка очень точно знает.

Из-за того, что парень так сладил с жеребцами, управление конями доверили парню. Тогда на четырехногого пегого (жеребца) сам садится. Когда он на него сел, говорят:

– Если бы, не дав скинуть, отвез, дружку жениха на трехногого посади.

– Кто знает, может взбрыкнет, – отвечает и дружку жениха к спине трехногого, чтобы не двинулся, накрепко привязывает.

Вышли в путь. Вместе с девушкой за компанию сидит ведьма.

Отправляясь в путь, парень четырехногому пегому (жеребцу), как хочет, дает гарцевать, вместе с ним гарцует и трехногий.

Как выбрались на свободное пространство подальше от села, парень выхватил кинжал и ведьму, ударив прямо от макушки вниз, ровно пополам рассек, схватив, девушку посадил на шею коня (впереди себя) и:

– Ура-а-а, трехногий! – крикнув, выведя из толпы, ударился в бегство.

Кто бы сумел его, преследуя, догнать? Спасся и ушел. И хан, и его люди только и видали (их). А парень напрямик к своим братьям-эмегенам, и дружку жениха-хана прихватив, поехал.

Приехав:

– Мама, я пришел, – сказав, обнял свою мать-эмегеншу и, – вот и тебе закуску привез, рот свой подсласти, и горло, наверное, пересохло, – сказав, дружку хана отдал в руки своей матери-эмегенши.

Нравне со своими братьями-эмегенами в той упомянутой скальной трещине, если не умерли, наверное, (и сейчас) живут.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 2. Записано 27.12.1959 г. в с. Хасанья КБАССР от Гадиева Матгерия (автозатись).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебная сказка. Главному герою произведения помогают эмегены.

Душа парня находится, не внутри него, а в бусинке, висящей на его волосинке, а это след древних языческих воззрений, в частности анимизма. Кроме того, в сказке имеются следы матриархата: образ девушки-богатыриши, то, что после женитьбы парень остается жить в доме жены и др.

В тексте встречаются привнесенные позднее элементы: вошедшие из арабского языка после принятия ислама слова (Аллах, гяуур, мухур) и заимствованные из русского (форма, сутка, гулят эте, гулятха чыкьгъандыла). Вместе с тем, употребляются и архаичные формы слов (айландылар, этемен, деричин, дегинчин и др.).



ЭКИ СЮЙГЕН (I)

Жыл дегенинг, бир кюн кибик, кезге керюнмей кетеди. Кеп жыл мындан алгъа бир уллу шахарда Даулетхан деген бек бай эм огъурсуз хан жашай эди. Аны уа бир жашы бла кызындан башха сабийи болмагъанды. Жашыны аты Хасан, кызыны аты уа Къубулхан болгъанды. Ханны кызына оналты жыл болгъанда, акъылбалыкъ болгъанда, кызыны эрге берирге атасы оноу этеди.

Даулетхандан ючжыллыкъ жолда уа бир уллу тенгизни къатында, уллу агъачны артында да Мырзахан деген хан жашай эди. Мырзаханны да Хусей деп жашы, Саняйт деб'а кызы бар эди. Хусейге жыйырма жылы бара эди.

Даулетхан бир кенг, уллу уру къаздырып, андан аты бла ким секирип ётсе, кызын анга берирге оноу этген эди. Къубулхан а бир да болмагъанча ариу эм акъыллы кыз эди. Ол себепден, аны эрге берилир хапары жетмеген жер жокъ эди. Да ол хапар Хусейни атасына да эшитилди. Аны уа бир сейирлик аты бар эди. Ол чакъдан бир учхан да этиучю эди.

Бир кюн Даулетхан, битеу да халкъны жыйып, кызын эрге берир халин айтхан эди. Аны эшитип, кеп байны, бийни эм ханланы жашлары эрттеден окъуна хазыр болуп тура эдиле. Ма ол жыйылгъанланы ичинде Хусей да бар эди. Хусей, аманыракъ да кийинип, адамланы артында оюн, къауал башланады деп, ашыгып тура эди. Бир заманда хан, жёнгерлери бла келип, бийик тахтагъа да чыгып, олтуруп, башларгъа белги берген эди.

Эришиу башланды, алай уруну бир жанындан бирси жанына бир да адам ёталмады. Хар бирини саны кыяулу болуп, неда ёлюп, алай къала эди. Хан, эриширге адам къалмай къалгъанда, тегерегине да къарап, мудах эди. Сора бир заманда Хусей, акътуякъ атны кызыуландыра келип, уруну юсю бла бошлады. Ат, учуп барып, бир жюз атлам тенгли бирде тохтап, кишней-кишней, ёрге-ёрге секирди. Хан да, жыйылгъан халкъ да асыры сейирден ауузларын ачып къалдыла. Сора Хусей, кызыны да ат боюнуна алгъанлай, учуп, туманланы башларына чыгып, кезден ташайды. Алай аны къайры кетгенин, ким болгъанын киши да билмеди.

Хан да тегерекге-башха адамла жиберди, алай кызыны къайда болгъанын билалмады.

Бир кюн хан, жашы Хасанны кесине чакъырып:

– Жашым, мен да къарт болуп барама, сени къатын алыр заманынг болгъанды, ал, сайла да бир кызыны, – деген эди.

Алай жаш алыргъа унамай эди. Хан не бек кюрешди эсе да, жашына айтханын этдиралмады. Хан бек къадалгъанда, жаш:

– Атам, не бек кюрешсенг да, мен къатын аллыкъ туююлме, – деп, кыйгъан эди.

Атасы, ачыуланып, жашны тюрге атыргъан эди.

Жаш а бир кече тюшонде бир ариу кызыны керген эди. Да аны тапхынчы деп, алыргъа унамай эди. Ол керген кызы уа Хусейни эгечи Саняйт эди, алай Хасан аны къайдан биллик эди? Алай бла Хасан къатын алыргъа унамагъанлыгыны кезиюю тюргеде толу бир жыл турду. Сора дагыда бир кюн хан, Хасанны чакъыртып:

– Ал къатын, эт мени айтханымы, – деп, кысхан эди.

Алай Хасан:

– Ишинг жокъду, аллыкъ туююлме, – деп, атасыны кѣлюне тийген эди. Атасыны аузу ачылып, Хасанны юйюнден кыстап кьойган эди. Хасан, бара-бара кетип, бир уллу кьарангы агъачны ичинде кече кьалыргъа тюшгенди. Ол да жукълай башлагъанлай, эки кѣгюрчюн терек башында сѣлеше эдиле. Бири бирине:

– Билемисе сен бу ким болгъанын? – деп сорду.

Экинчиси уа:

– Билмей а, билеме, Даулетханны жашыды, Хасанды аты да. Хасан тюшюнде бир ариу кызыны, дуниягъа айтхылыкъ Саниятны, кѣргенди да, атасы не кюрешген эсе да, башха кызыны алыргъа унамай кьойгъанды. Сора атасы ачыуланып, Хасанны юйден кыстагъанды.

Саниятны кьайсы шахарда болгъанын иш да айтхан эди.

Аны эшитген Хасанны арыгъаны, ач болгъаны да эсинден кетип, ол кече окъуна жолгъа тебирерге кѣлленген эди. Алай бла Хасан ол кече, танг атхынчы окъуна, жолгъа чыкьды. Экинчи кюн Хасан бир уллу элге кирди да, жол азыкъ да кьурап, дагъыда алгъа атланды. Кѣп айланды, кѣп жюрюдю Хасан. Кече аулакьда, агъачда, дорбун тешикледе кьала эди. Алай эте, Хасан бир уллу шахаргъа жетди.

Ол алай турсун да, мен а Саниятдан хапар айтайым.

Саният да, бир кече тюшюнде тюш кѣрюп, мудахланып уянган эди. Саният тюшюнде Хасанны кѣрген эди. Андан сора ол да, анга болмаса, башхагъа бармазгъа ант этип, кечеси, кюню да кѣзюне кѣрюнмей, ич ауруулу болгъан эди. Саниятны атасы Саниятха этдирмеген дарман кьалмагъан эди, алай кызы амандан аман бола баргъан болмаса, игиге бир да айланмай эди.

Излей-излей кетип, Хасан да Саниятны тургъан юйюн тапды, алай кьалай кирирге уа амал тапмай эди. Саниятны ауругъанын а эшитген эди. Сора Хасан:

– Дохтурлугъум барды, сау этерме Саниятны, – деп ханнга, Саниятны тургъан юйюне кирип барды.

Хан да:

– Сау этсенг, кызы сеникиди, сау эталмасанг а башынгы кетертirme, – деди.

Хасан:

– Хо, – деди.

Саният Хасанны кѣргенлей таныды, кѣзю-башы жарыды да, башдан-аякь хапар сорду. Хасан битеу формасын айтды, нек келгенин да айтды. Сора Саният кюнден-кюннге игиге айлана башлады. Хан Хасаннга:

– Къачан сау эталлыкьса? Теркиракь, – деп ашыгъа эди.

Сора бир айдан Саният алгъыннгы халине келди. Хасан да, ханнга кирип барып:

– Кызынг саппа-сау болду, – деп, аллына бел ийди.

Хан асыры кьуаннгандан не этерге билмей эди. Сора хан экинчи кюн, битеу жамаутны жыйып:

– Хасанны уллу дохтурлугъу барды, кызымы, ол болмаса, киши сау эталмады. Аны сѣзю мени сѣзюме ие болуп, кертичи болуп, Саниятны анга береме, – деп, билдиреди.

Сора ююнчю кюн хан, битеу тѣгерекде ханланы, бийлени эм бош халкьны да жыйып, кьыркь кюннге созулгъан аламат, уллу, сейир той, оюн этдирди.



Алай бла Саният бла Хасан бир бирлерин энди уа тышлеринде угъай, тынлеринде тапдыла. Айла ётнуп, жылла да жетдиле. Хасан бла Саният да жарашыулу юйдеги болуп жашайдыла.

Алай бир кюн Хасан, ханнга баш ийип:

– Багъалы къайын атам, эркин эт мени, юйюме барып, атамы, анамы кёрюп келирге, – деп тиледи.

Ол заманда ханны жашы Хусей а, Саниятны да эшитип, бир узакъ жерде юй болуп жашай эди. Атасыны, анасыны не болуп жашагъанларын а билмей эди.

Хан, не болса да, Хасанны юйюне барып келирге эркин этди. Ала экинчи кюн жолгъа атландыла. Бара-бара кетип, уллу агъачда солургъа тышген эди. Сора Хасан, бир тёрт-беш жёнгерин да алып (аланы ашыра келген), уугъа чыкъды, алай бош, эрикгенден. Ала да таугъа жете баргъан жерде бир уллу аслан Хасанны юсюне атылды. Хасан да атыш-тутушка киришди. Сора бир къауум замандан сора, Хасан онглу болуп, аслан къачып башлады. Хасан, асланны къууа-къууа кетип, жёнгерлеринден да, Саният болгъан жерден да узакъгъа ташайды. Не этерин билмей, излей-излей кетип, тапмай къалгъандан сора, Хасан тынгулюп къалды.

Саниятлары уа, аны кеч къалгъанына жарсып, излерге атланган эдиле. Ала жетмеген жер къалмады, алай Хасан – жокъ. Сора Саният, тапмай къоймазгъа ант этип, къуру кесинлей, юсюне да бир эр киши кийим кийип, бирси жёнгерлерин а артха юйлерине ашыргъанда, Хасанны излерге жолгъа тышдю.

Саният кёп айланды, кёп жюрюдю, алай Хасандан хапар эшитмеди. Сора ол, айлана-жюрюй кетип, Хасанны атасыны юйюне жетди. Алай аланы уа къайдан танырыкъ эди! Сора Саният хандан:

– Мени кесинге къуллукъ этдирирге ал, – деп тилеп, анда ишлеп къалды.

Кёп жашады Саният эр кишини кийими бла. Хан Саниятны жигитлиги, акъыллыгъы эм тыз адамлыгъы ючюн бек сюе эди. Сора хан Саниятны, ёргеден-ёрге миндире кетип, кесини бир уллу адамларыны бири этди.

Ол да алай жашай турсун да, мен а Хасанны хапарын унутуп къоймай айтайым.

Хасан, нёгерлеринден ажашхандан сора, бара-бара кетип, бир уллу терек бурууну ичинде бир юйге тыбеген эди. Ол юй а терекледен юй эди. Ол юйню иеси жарлы киши эди. Терек бурууну сакълай эди. Сора Хасан, ким болгъанын да жашырып:

– Кесинге болушлукъгъа ишге ал, – деп, тиледи.

Киши, ыразы болуп, ишге алды. Хасан, ол кюнден башлап, терек бурууну сакълай эди, тереклени тыплерин жумушата эди, бутакъларын ариулай эди. Кюнлени биринде Хасан да, къолунда да кюреги бла тереклени тыплерин жумушата, айлана тургъанлай, кюреги бир къаты затха тийди, ийилип къараса, ол а уллу къошун, башы да бёкем жабылып. Хасан, сейирсинип, къазып чыгъарса, анда уа дагъыда бири, алай-алай таба, ол алайдан эки жыйырма бла сегиз къошун чыгъарды. Ичлерин ачып къараса уа – чий алтын! Сейирден не этерге билмей къалды. Сора ол юйню иесин чакъырып келди. Ол а, харип, асыры къууаннгандан эси азгъан эди. Ол кюн окъуна юйге элтип, терен асырадыла. Сора, жаш кишиден:

– Юйюме кетейим, – деп, тиледи.

Киши уа, Хасанны кьаты кьучакълап:

– Сен мени ёмюрюме болурча байлыкь бердинг. Ёмюрде сенден кьаргъанып турлукьма, алай жартысын а ала бар, – деп тиледи.

Хасан унамады, алай киши да кьоймады алдырмай.

Сора экиси да элтип, Хасанны элине-жерине тебиреп тургъан кемеге салдыла. Хасан: «Кесимде турса, жолда урлатхан иш этерме», – деп, Саният берген алтын жюзюкню да бир кьошуннга салып, кьаты асырап, бирси алтын кьошунла бла бирге салгъан эди.

Алай Хасан кемени кетер заманында анда болмай кьалып, кеме ансыз кетген эди. Экинчи уа кеме бир жылдан сора кьайтырыкь эди. Не этерик эди Хасан? Кьалды экинчи келирине. Кеме уа Даулетханны кемеси болгъанды. Келип, кемени жюгюн кьотара башласала, анда уа аманатха берилген кьошунланы ичлери алтындан толтурулуп! Айтдыла олсагъатдан Даулетханнга. Хан да, уллу сейир этип:

– Бу кьошунланы уа ким жюклеген эди? – деп сорду.

– Аны уа Хасан деп бир жаш жюклеген эди: «Юйюм да бу тийредеди», – дей эди, – деди.

Хан, жашыны атын эшитгенлей окьуна, асыры кьууаннгандан не этерге билмей эди. Сора бир кьошунда уа, Саниятны аты жазылып, жюзюк тапдыла. Алай Саният ханда уа башха (тасха) атда жюрюй эди. Саният, жюзюкню кьргенлей окьуна, асыры сейирсингенден, аякь тюбюнде чёп сынмай эди. Саният, Хасанны саулугьун толу биле, энди келирин ашыгып сакълай эди. Алай алыкьа ханнга уа кесини юсюнден бир зат да айтмагъанды.

Ма бир жыл да ётдю, биягьы кемени кьайтыр заманы да болду. Саният да суу боюнунда кемени кече, кюн да сакълай эди. Сора бир кюн кеме да жетди. Кеме бла Хасан да келди. Хасанны кьргенлей окьуна, Саният таныгъан эди, алай Хасан а танымагъан эди. Да, кьайдан танырыкь эди, эр киши кийим кийип тургъанлай, бир талай жыл да кьрмей туруп? Ол угъай, Хасанны хан кеси да танымагъан эди.

Сора Хасан, олтуруп, битеу хапарны башдан-аягьына башлап айтды. Саният да кийген эр киши кийимин тешди да, узун чачы да тобугьуна жете, Хасанны аллында сюелди. Хасанны эси азаргъа жетишген эди. Болсада, кесин кьолгъа алды да, бир бирни тансыкьлап, кьучакълашдыла. Бир бирге хапар айтышдыла. Хан а сейирден кьарап кьалгъан эди. Сора экинчи кюн окьуна битеу жамауатны жыйып, хан бир айгъа созулгъан уллу той этгенди. Алай бла эки суюген бир бирлерин табып, сау-саламат ашап-жашап кьалдыла. Муну эшитген да, алача насыплы болсун!

КьМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 11 паспорт. КьМАСССР-ны Совет районну Огъары Жемтала элинде 70-жыллыкь Занкишиланы Окьупдан 29.08.1960 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кьчюргенди.

Жомакьны Окьуп кьартладан эшитгенди.

«Эки суюген» деген жомакьда жаш адамланы жолочучулукьда кьп тюрлю чырмаулагъа тюбегенлери кьргюзтюлюнеди. Аланы юйюр жашау кьууаргъа талпыныулары бек теренди.

Тамаша-сейир, хыйлалыкь халда жазылгъан романланы илишанлары, бир кийимни тешип, башхасын хайырланнганы жомакьны сейир этеди,

жигитлерини сыфатларын терен ачыкъялды эмда суратлау онларын кючлендиреди.

ДВОЕ ВЛЮБЛЕННЫХ (I)

Один год, как один день, незаметно для глаз быстро проходит. Много лет тому назад в большом городе жил один очень богатый и злой хан по имени Даулетхан. У него кроме одного сына и одной дочери других детей не было. Сына звали Хасан, а дочь – Кубулхан. И когда дочери хана исполнилось шестнадцать лет, и она стала взрослой, отец решил выдать ее замуж.

От Даулетхана на расстоянии в три года, рядом с большим морем, за большим лесом жил хан Мырзахан. У Мырзахана были сын Хусей и дочь Саняят. Хусею исполнялось двадцать лет.

Даулетхан вырыл одну широкою, большую яму и объявил, что за того, кто эту яму перескочит на коне, он выдаст свою дочь замуж. А Кубулхан была девушкой необычайной красоты и ума. Поэтому, не было места, где бы не говорили о ее замужестве. Эта весть дошла и до отца Хусея. А у него был один чудесный конь. И он, бывало, временами летал.

В один из дней Даулетхан, собрав весь народ, объявил о намерении выдать свою дочь замуж. Узнав об этом, сыновья многих баев, биев, ханов заранее подготовились. Среди них был и Хусей. Он, одевшись в старую одежду: «Сейчас среди людей начнется игра, тяжба», – думал и ждал с нетерпением. Вскоре хан пришел со своими друзьями, поднялся на высокий трон, сел и дал знак, чтобы начали.

Соревнование началось, однако ров никто не смог преодолеть. Каждый из них калечился или умирал. Хан опечалился, когда увидел, что соревнующихся уже нет. В это время Хусей стартовал на своем белоногом коне, разогнался, одолел яму. Конь пролетев, на расстоянии ста шагов остановился, заржал несколько раз и взлетел вверх. И хан, и весь собравшийся народ от большого удивления, смотрели на все с раскрытыми ртами.

После этого Хусей, забрав девушку с собой, на коне полетел, поднялся поверх туманов и исчез из поля зрения. Куда он ушел, кто он такой, никто не знал.

И хан отправил на все четыре стороны людей, однако, так и не узнал, где находится его дочь.

В один из дней хан позвал к себе сына Хасана:

– Сын мой, я тоже начинаю стареть, наступает пора тебе жениться, выбери девушку и женись, – сказал он.

Однако сын не хотел жениться. Как бы ни старался хан, не смог заставить сына. Когда хан начал сильно настаивать:

– Отец мой, как бы ты ни старался, я не буду жениться, – ответил просто. Отец от злости приказал, чтобы его посадили в тюрьму.

А сыну в одну из ночей приснилась одна красивая девушка.

– Вот, пока ее не найду, – говорил он и не хотел жениться. А девушка, которую он видел, была сестра Хусея Саняят, однако, откуда бы Хасан знал об этом. Итак, пока Хасан с нежеланием жениться находился в тюрьме, прошел ровно год. В один из дней хан приказал, чтобы к нему привели Хасана:

– Возьми жену, выполни то, что я тебе говорю, – настойчиво сказал он.

Однако Хасан:

– Не твое дело, не буду жениться, – ответил он, обидел отца.

Отец, не в силах разговаривать, прогнал сына из дому. Хасан шел-шел, и в большом лесу ему пришлось заночевать. Когда он начал засыпать, два голубя на вершине дерева разговаривали между собой. И один другому:

– Ты знаешь, кто он такой? – спросил.

А второй:

– Как не знать. Конечно, знаю, он сын Даулетхана и его зовут Хасан. Хасан во сне увидел одну красивую девушку – известную на всем свете Саният. Сколько бы отец ни настаивал, он не захотел на другой девушке жениться. После этого отец, разозлившись, прогнал Хасана из дому.

Он сказал даже, в каком городе живет Саният.

И Хасан, который все это услышал, забыв, что устал, голоден, в ту же ночь отправился в дорогу. Таким образом, еще до рассвета вышел в путь. На второй день Хасан вошел в большое село, запаса дорожным питанием и отправился дальше. Много бродил, много ходил Хасан. Ночью оставался то на равнине, то в лесу, то в пещерных укрытиях. Таким образом Хасан добрался до одного большого города.

Пока он там находится, а я расскажу про Саният.

И Саният в одну из ночей увидела сон и проснулась с печалью. Она во сне увидела Хасана. После этого и она поклялась, что кроме него за другого замуж не выйдет, и ночью, и днем ничего вокруг не замечая, она заболела. Не было лечения, которое отец Саният не применил для ее выздоровления, однако, девушке становилось все хуже и хуже, и никак она не поправлялась.

В результате долгих поисков Хасан нашел дом, где жила Саният, однако он не знал, как туда войти. А то, что Саният заболела, он слышал. После этого Хасан:

– У меня есть врачебные силы, я Саният вылечу, – сказал хану и зашел в дом, где находилась Саният.

И хан:

– Если ты ее вылечишь, девушка – твоя, а если не сможешь вылечить, прикажу снести тебе голову, – сказал он.

Хасан:

– Хорошо, – сказал.

Как только Саният увидела Хасана, она сразу же узнала его, глаза и взгляд у нее посветлели, и она стала расспрашивать. Хасан раскрыл полностью свое состояние, и почему пришел, объяснил ей. После этого Саният с каждым днем становилось все лучше и лучше. Хан Хасану:

– Когда ты ее полностью вылечишь, давай побыстрее, – говорил и торопил его.

Только через месяц Саният обрела прежнее состояние. И Хасан зашел к хану:

– Ваша дочь полностью выздоровела, – сказал он и поклонился ему.

Хан от радости не знал, что делать. Хан на второй день, собрав все общество:

– У Хасана есть большие целительские способности, кроме него мою дочь никто не смог вылечить. Его слова с моими словами сошлись, он выполнил свое обещание, я Саният выдаю за него замуж, – объявил он.



После этого на третий день хан собрал в округе других ханов, князей и остальной народ, на сорок дней закатил прекрасный, большой, чудесный свадебный пир, проводил игрища.

Таким образом Саният и Хасан нашли друг друга не только во сне, но и наяву. Прошло много месяцев, и годы пришли. Хасан и Саният жили счастливой и спокойной семьей.

В один день Хасан, перед ханом уважительно склонив голову:

– Дорогой мой тесть, разрешите мне сходить к себе домой, увидеть отца и мать и вернуться обратно, – попросил.

А сын хана Хусей в далеком месте жил своей семьей и слышал про Саният. А про жизнь своего отца и матери он ничего не знал.

Как бы то ни было, хан разрешил Хасану сходить к себе домой и вернуться. С небольшим отрядом и с Саният на второй день он отправился в дорогу. В пути пришлось остановиться на отдых в большом лесу.

После этого Хасан взяв с собой четверых, пятерых друзей (которые сопровождали их) отправился на охоту, скоротать время. В том месте, куда они добирались, у горы один большой лев набросился на Хасана. И Хасан начал с ним по-настоящему бороться. Через некоторое время Хасан оказался сильнее и лев начал убегать. Хасан погнавшись за львом, удалился от того места, где находились его друзья и Саният, и исчез вдалеке. Не зная, что делать, Хасан сильно отчаялся.

Близкие Саният, переживая, что он припозднился, отправились на его поиски. Где только они не смотрели, но Хасана нигде не было. После этого Саният дала слово, что обязательно найдет его сама в одиночку, надела на себя мужскую одежду (а остальных она отправила обратно), вышла на дорогу в поиске Хасана.

Саният много дорог, тропинок исходила, однако никакой вести от Хасана не было. В результате долгих странствий она пришла в отцовский дом Хасана. Но, откуда она их узнала бы! Потом Саният у хана:

– Возьмите меня к себе в работники, – попросила и осталась там работать.

Много времени жила Саният в мужской одежде. Хан сильно любил Саният за ее героизм, ум и честность. Из-за этого хан поднимал нового работника все выше и выше по службе, и в итоге назначил одним из главных для себя людей.

Пусть она тоже там поживет, а я пока не забыл, расскажу про Хасана.

После того, как Хасан заблудился, отстал от друзей, он все шел-шел и увидел дом внутри одного большого ограждения из деревьев. Этот дом был домом, построенным из деревьев. Его хозяином был один бедный мужчина. Он охранял забор из деревьев. Хасан скрыв, кто он на самом деле:

– Возьми к себе на работу, – попросил.

Мужчина, согласился, взял его на работу. Хасан начиная с того дня, охранял забор из деревьев, разрыхлял почву под деревьями, проводил очистку веток. В один из дней Хасан с лопатой в руке разрыхлял почву, под деревьями ходил, вдруг его лопата наткнулась на что-то твердое, когда он нагнулся и посмотрел, это был большой кувшин, он был крепко закрыт. Хасан удивившись, выкопал его, а там еще находились другие, один за другим выкапывая, он оттуда вытащил сорок восемь кувшинов. А когда он, раскрыв, посмотрел внутрь – чистое золото! От удивления он не знал,

что делать. Потом пошел и позвал хозяина этого дома. А он, от радости, бедный, даже потерял сознание. В тот же день они золото принесли домой и глубоко спрятали.

Потом юноша у мужчины:

– Пойду я домой, – начал просить.

А мужчина, крепко обняв Хасана:

– Ты дал мне богатство, которого хватит на всю мою жизнь. Век я буду тебя благодарить, но забери половину себе, – начал просить.

Хасан отказался, но мужчина заставил его взять.

После этого они вдвоем отнесли и погрузили сокровища на корабль, который собирался отплыть на родину Хасана. Хасан: «Если при себе буду держать, по дороге могут украсть», – подумал и золотое кольцо, которое подарила Саняйт, положил в один из кувшинов, крепко спрятал, оставил вместе с другими золотыми кувшинами.

В момент, когда корабль отплывал, Хасана там не оказалось, и корабль отправился без него. А во второй раз корабль должен был вернуться через год. Что бы сделал Хасан? Остался ждать, когда он вернется во второй раз. А корабль принадлежал Даулетхану. Когда люди пришли и начали разгружать корабль, там все доверенные кувшины были полны золота! Тут же донесли до Даулетхана. Хан сильно удивился:

– Кто эти кувшины погрузил? – спросил он.

– А их погрузил какой-то юноша Хасан, говорил, что его дом находится в этих краях, – объяснили ему.

Хан, услышав имя сына, от радости не знал, что делать. А в одном кувшине нашли кольцо, где было написано имя Саняйт. Но имя Саняйт хану ни о чем не говорило. Когда Саняйт увидела кольцо, она сильно удивилась. Она поняла, что Хасан жив, теперь с нетерпением дожидалась его. А хану она еще про себя ничего не рассказала.

Вот еще один год прошел, наступило время возвращения того же корабля. Саняйт дожидалась прибытия корабля на берегу днем и ночью. В один из дней корабль приплыл. На этом корабле был и Хасан. Как только Саняйт увидела Хасана, тут же узнала его, но Хасан ее не узнал. Да, и откуда он мог ее узнать, если она в мужской одежде столько времени находилась, и столько лет они не виделись? Хан тоже не узнал Хасана.

После этого Хасан не спеша рассказал всю свою историю от начала до конца. В один момент Саняйт сняла с себя мужскую одежду и предстала перед Хасаном с длинными волосами, доходящими ее колен. Хасан чуть не потерял рассудок. Вскоре он взял себя в руки, и молодые, тоскуя друг по другу, обнялись. Они рассказывали друг другу свои истории. Хан от удивления просто глядел и молчал. На второй день он собрал весь народ, и закатили праздник, длиною на целый месяц. Таким образом, двое влюбленных нашли друг друга, живые, здоровые, они стали жить да поживать. Те, кто слышали эту сказку, пусть так же будут счастливы!

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 1. Записал И.И. Гузеев 29.08.1960 г. в с. Верхняя Жемтала Советского района КБАССР от 70-летнего Занкишиева Окуба.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.



Сказку Окуб слышал от стариков.

В сказке «Двое влюбленных» рассказывается о многотрудных странствиях молодых людей, устремленных к семейному счастью. Элементы приключенческого, плутовского романа, перевертыши, переодевания придают сказке увлекательный, живой характер и особый художественный эффект.



ЭКИ СЮЙГЕН (II)

Эртте бир бай саудюгерчи жашап болгъанды. Аны байлыгыны кыйыры-чеги жокъ эди. Саудюгерчини жаланда бир кызы бар эди. Кызы десенг да, дуняда андан ариу жан болмаз дер эдинг, аллай бир ариу жан эди. Саудюгерчини юй кьуллугъун этиб'а бир жарлы киши жашагъанды. Аны уа Хажу-Мурат деп бир жашы бар эди. Хажу-Мурат, ёсюп, окъургъа жараулу болгъанда, аны атасы-анасы саудюгерчини кызын окъутхан адамланы бирине берген эдиле. Жаш жаланда саудюгерчиликге окъуй эди, кызы а – тюрлю-тюрлю билимлеге.

Айла ётдюле, жылла кетдиле. Кызы бла жаш да бир бирлерин терк-терк кёре тура эдиле. Экиси да бир бирлерин суйген эдиле. Аланы аталары-аналары ол ишни эслерине да келтирмей эдиле. Алай жашап тургъанлай, кызыны устазларындан бири, аны атасына барып:

– Ма былай да, былай, кызыгызы ол жарлы кишини жашын сюеди, – деп, хапар билдирген эди.

Кызыны анасы кызына аямай урушду. Жашны атасын да кеслеринден кыстап ийдиле.

Кызы а анасына:

– Анам, сен айтханны этейим, алай сен да мен айтханны эт: сагышлы кюнюмде тура турурча, манга бир отоу ишлет, – деди.

Анасы анга ыразы болду. Юч кюнню ичинде кызына жангы отоу ишлетди.

Кызы а аман акъыл бла юйдегисин алдагъан эди: юйдегиле жукълагъанлай, ол отоууна барып, анда Хажу-Мурат бла жолугъа эди. Аны уа киши да билмегенди.

Бир кюн саудюгерчини кызы жашха:

– Энди сен бизден кетдинг. «Кёзден кетген кёлден да кетеди», – дейдиле, ол кертиди. Алай сен а мени унутмазгъа ант эт, – деди.

Жаш кызыны унутмазгъа ант этди. Кызы да:

– Мен да сени ёмюрге унутмам, – деп къаргъанган эди.

Ма ол кюнден башлап, кызыны кёлю кётюрюлюп, алгындан эсе жарыкъ болду. Юйдегилери да аны алай тюрленнгенине бек сейир эте эдиле.

Бираздан, кызыны тилей, келечиле жюрюп башладыла. Кюн сайын тогъузусу-онусу келе эди. Алай кызы барына да бирча:

– Манга эрге барыргъа алыкъа эрттеди, – деп жууап бере эди.

Кызыны атасы-анасы да:

– Кеси суйгеннге барыр, – деп къоя эдиле.

Алай бла кёп кюнле ётдюле. Бир жол а, кызыны тилей, бир ариу жаш келди. Кызыны анасы:

– Кызым, хар келгенни жаратмай турдунг. Биз да, къадар жетсе, суйгенине барыр деп, сени кысмай турдукъ. Къарачы ол ариу жашха, къалай жаратмайса аны? – деп, кызыны сагышландырды.

Сора:

– Керти айтады анам, – деп, ол ариу жашха барыргъа сёз берди.

Ол кюнден башлап, кызы Хажу-Муратны унутду. Жаш а, тюкенде тюкенчи болуп ишлей, бу затладан хапары болмагъанды. Бир ингирде, ол китап окъуй тургъанлай, чыракъ ёчюлюп къалды. Жаш бек сейирсинди.



Экинчи ингирде да алай болду. Ючюнчю ингирде да чыракъ ёчюлдю. Юй ичинде бир ауаз: «Хажы-Мурат, нек тынчайып тураса? Сени суйген кызынг юч кюнден эрге барады. Ашыкъ. Сен анга ол санга белгиге берген жюзюкню кёргюзтсенг, кыыз ёлюп къаллыкды, сора, барып, къашларына къолунг бла тийсенг а – сау болуп къаллыкды», – деди.

Той этиллик кюн Хажы-Мурат, эртте туруп, кызыны юйюне барды да, кызыны чыгъарып келе тургъанларында, анга кыыз кеси белгиге берген жюзюкню кёргюзтдю. Жюзюкню кёргенлей, кыыз ёлюп къалды. Тойгъа жыйылгъан халкъ бушуу-бушман болду. Кыызгъа этмеген амаллары къалмады, алай ол сау болмады. Кызыны гуллагъа салып, асыраргъа оноу этдиле. Ингирде уа кызыны ёлюгюн ол бек суйген отоуна кийирип, сакъларгъа эки адам салдыла. Кечегиде уа Хажы-Мурат, къалауурлагъа ахча берип, кыыз болгъан отоугъа кирип, гулланы ачып, кызыны къашларын къолу бла сылады. Алайлай кыызгъа жан кирди. Сескенип къобуп:

– Мен къайдама? – деп сорду.

Кесини гуллада тургъанын кёрюп, кыыз, къоркъуп, жанын жашха атды. Хажы-Мурат аны кеси юйюне элтди. Жашны атасы-анасы, къоркъуп, не этерге билмей къалдыла.

Экинчи кюн кызыны асыраргъа деселе – гулла ичинде кыыз жокъ! Сора кызыны анасы эрине:

– Кёремисе Аллахны бизге ачыуланнганын, кызыны, келип, мёлекле алып кетгендиле, – деди.

Кызыны ашына Хажы-Муратны да чакъырдыла. Хажы-Мурат, ашагъан-ичген да этмей, кыйырда олтура эди. Жыйылгъанла анга:

– Нек мудахса, нек ашамайса? – деп, къайтарып-къайтарып сорадыла.

Сора жаш, туруп:

– Багъалы къонакъла, бир кюн мен бу юйде бир гюл тапхан эдим, ол бек ариу гюл эди. Сора ол, хууерилип, энди уа жангыдан чакъгъанды, – деди.

Халкъ:

– Бу не айтады, хууерилген гюл экинчи къалай чагъады? – деп, жашны хыликкя этип кюлдю.

Алайдан жаш, туруп, юйюне барып, кызыны келтирип:

– Ма, къарагъыз. Ийнанмай эдигиз да, – деп, ортагъа чыкъды.

Халкъ, асыры сейирсингенден, жукъ айталмай къалды. Кызыны атасы бла анасы уа:

– Биз кызыбызны бу жаш алса тийишлиге санайбыз, – дедиле.

Адамла да ол оноуну къабыл кёрдюле. Сора кыызгъа бла Хажы-Муратха кёп кюнлеге созулгъан уллу той этдиле. Алай бла Хажы-Мурат, суйгенин табып, ашап-жашап къалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 325–327 бб.) Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кёчюргенди.

«Эки суйген» деген жомакъда суймекликни айланч-гуланч жолларыны юслеринден айтылады. Жомакъны суратлау онгларын алып къарагъанда, анда жаз тил бла билдирилген белгиле да тюбейдиле – «ариу гюл», «хууерилген гюл». Ала бары да жаш тиширйуну халын ачыкъларгъа себеплик этедиле.



Баш жигитни аты (Хаджи-Мурат) бурунгу жомакъны ёзегине муслиман динден къошулгъанын кёргюзтеди.

ДВОЕ ВЛЮБЛЕННЫХ (II)

В давние времена жил один купец. Его богатству не было ни начала, ни конца. У купца была единственная дочь. А девушка была такая, что можно было сказать – на всем белом свете не было души красивее ее. Она была такой красавицей. А в доме у этого купца жил бедный мужчина, который выполнял различную работу. У него был сын по имени Хаджи-Мурат. Когда Хаджи-Мурат вырос и ему надо было пойти учиться, родители отдали его одному из тех людей, которые обучали дочь купца. Юноша учился лишь торговому делу, а девушка – различным наукам.

Прошли месяцы, умчались годы. Юноша с девушкой начали видеть друг друга все чаще. И они полюбили друг друга. Их родители о таких вещах и думать не могли. Пока они жили так, один из учителей девушки сходил к ее отцу:

– Вот так то, так, ваша дочь полюбила сына того бедного мужчины, – рассказал все, как есть.

Мать девушки сильно отругала свою дочь. И отца юноши прогнали из своего дома.

Девушка матери:

– Мама, я сделаю все, что ты скажешь, но ты тоже сделай, то, о чем я попрошу: чтобы в задумчивые дни мне находиться наедине, постройте мне комнату, – сказала она.

Мать девушки с этим согласилась. В течении трех дней они построили дочери новую комнату.

А девушка своими хитрыми мыслями обманула сородичей: когда в доме все засыпали, она уходила в свою комнату и там встречалась с Хаджи-Муратом. Об этом никто ничего не знал.

Однажды дочь купца юноше:

– Теперь ты от нас ушел. «Кто уходит с поля зрения, тот уходит и с души», – говорят. Это правда. Однако, ты поклянись, что меня не забудешь, – сказала она.

Юноша поклялся, что ее не забудет. И девушка:

– И я тебя всю жизнь не забуду, – сказала она и поклялась.

Начиная с того дня, девушка была воодушевленная, стала приветливой, чем раньше. И домочадцы сильно удивлялись такому ее поведению.

Через некоторое время начали за девушкой приходиться сваты. Каждый день приходило по девять-десять человек. Но девушка всем одинаково отвечала:

– Мне выходить замуж еще рано.

И отец, и мать девушки говорили:

– Сама за кого захочет, за того и выйдет.

Так прошло много дней. Однажды к девушке пришел красавец-парень свататься. Мать девушки:



– Дочь моя, каждый, кто приходил, тебе не нравился. И мы тоже, полагаясь на судьбу, думая, выйдешь за любимого, тебя сильно не беспокоили. Посмотри на этого красивого парня, он тебе не нравится? – спросила она, и девушка тут задумалась.

Потом:

– Правильно говорит мама, – сказала она и дала слово выйти замуж за этого красивого парня.

Начиная с того дня, девушка забыла про Хаджи-Мурата. А юноша, работая в магазине продавцом, ничего не знал об этом. Однажды вечером, когда он читал книгу, погас свет. Юноша этому сильно удивился. На второй день вечером так же произошло. И на третий день вечером опять потух свет. В доме послышался один голос: «Хаджи-Мурат, что ты ничего не предпринимашь? Твоя любимая девушка через три дня выходит замуж. Торопись. Если ты девушке покажешь кольцо, которое она тебе как знак дала, тогда она умрет. После этого, подойдешь к ней, дотронешься до ее бровей, она тут же оживет», – сказал он ему.

В день свадьбы Хаджи-Мурат встал рано, сходил в дом к девушке, и в то время, когда выводили девушку из дому, показал ей кольцо, которая она сама вручила ему в качестве подарка. Как только девушка увидела кольцо, она тут же умерла. Народ, который собрался на свадьбу, впал в горестное состояние. Что только ни делали, чтобы спасти девушку, но все равно она не ожила. Решили девушку, положив в деревянный гроб, похоронить. Вечером труп девушки занесли в ее любимую комнату и поставили двух человек, чтобы ее посторожили. А ночью Хаджи-Мурат охранникам дал деньги, а сам зашел в комнату девушки, открыл деревянный гроб и погладил рукой брови девушки. И тут же девушка ожила. Она в испуге, поднимаясь:

– Где я? – спросила.

Когда девушка увидела, что находится в гробу, испугавшись, бросилась к юноше. Хаджи-Мурат отвел ее к себе домой. Родители парня испугавшись, не знали, что делать.

На второй день, когда решили похоронить девушку, в деревянном гробу ее не оказалось. Тогда мать девушки говорит мужу:

– Видишь, как мы разгневали Аллаха, нашу дочь ангелы прилетели и забрали с собой, – сказала она.

На поминки девушки позвали и Хаджи-Мурата. Хаджи-Мурат не ел, не пил и сидел в сторонке. Все собравшиеся ему:

– Чем ты так опечален, почему не ешь? – спрашивали они у него снова и снова.

После этого парень встал:

– Дорогие гости, как-то в этом доме я нашел один цветок, это был очень красивый цветок. Потом он увял, а теперь он заново зацвел, – сказал он.

Собравшиеся люди:

– Что он говорит, увядший цветок как может заново зацвести? – спросили и с издевкой насмеялись над парнем.

Оттуда парень встал, пошел к себе домой и привел девушку:

– Вот смотрите. Вы же не верили, – сказал он и вышел на середину.

Народ от сильного удивления не знал, что сказать.

А отец и мать девушки:

– Мы этого парня считаем достойным, пусть он женится на нашей дочери, – сказали они.

И люди посчитали такое решение правильным. После этого они провели огромную свадьбу девушки и Хаджи-Мурата, которая растянулась на много дней.

Таким образом, Хаджи-Мурат обрета свою любимую, остался жить и поживать.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 325–327) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В сказке «Двое влюбленных» повествуется о превратностях, перипетиях любви. Язык сказки отмечен иносказаниями – «увядший цветок», «цветок зацвел», – характеризующими состояние молодой женщины.

Имя главного героя (Хаджи-Мурат) свидетельствует о мусульманских напластованиях на древний сюжет сказки.



КЪАРА-ГЕБЕНЕК

Эртте-эртте, бек эртте, нартланы заманында бир бий болганды. Ол бийни аты Махмут бий эди. Махмут бийни мюлкю бек сыйыннгысыз, саны болмагъан, кёп эди.

Махмут бийни, жыллык жалчыларын айтмай, бешжыллык жалчыларыны саны беш болганды. Ол бешжыллык жалчыларыны эм артда келгенини аты Къара-Гебенек эди. Ол кеси да жалчыланы бек кичиси эди.

Кюнлени бир кюнюнде Махмут бий, жалчыларын саулай да жыйып, артыгыракъ да бешжыллык жалчыларына айланып, былай айтады:

– Бир жерде бир бий кыз барды. Аны аты Шамшиятды. Ол кызны алырем деп, эсеме келгенди. Сиз мени мюлкюмю журютесиз, мал ахшысын билесиз. Ол Шамшиятны табып, анга менден келечилик айтып, жууабын бурмай, келип, толусунлай манга айтхан жалчыгъа, жалчылыгъындан тышында, сайлап, бир жюз акъ къарабаш кьой берликме, айыпсыз минип чыгъарча, жарашдырылгъан кереги бла бир ат, андан сора да сауаргъа ийнек бла толу кьош керек берликме. Бу мен айтхан келечиликни айтып, кызгъа жолугъуп, жууабын бурмай, келип, манга айтыргъа кьайсыгъыз базынасыз? – деп сорады.

Жалчыла, бийге жууап бермей, бары да арсар болуп тохтайдыла. Ол заманда бешжыллык жалчыланы бек кичилери Къара-Гебенек, бир кесек сагъыш эте келип:

– Да: «Келечиге ёлюм жокъду», – дейдиле. Была бары да арсардыла, тейри, мен барайым, – дейди.

Бий, Къара-Гебенекге кесини атын да берип, келечиликге жибереди.

Къара-Гебенек келечилигин айтыргъа Шамшиятха барды. Къара-Гебенек ары баргъанда, кызны кьатында эки бий жаш кеслеринден келечиликни айта олтурупдула. Болсада, бу кыз аланы айтхан сёзлерин алмай, олтурушуп тургъанда, Къара-Гебенек киргенлей, кыз секирип кьобады да, ол заманда бий жашла, ёпкелеп, кетип кьаладыла. Кетип бара, бий жашла Къара-Гебенекни да, Шамшиятны да сёгедиле.

– Биз бийлебиз. Шамшият кеси да хан-бийни кызыды. Бу кыз кесин сындырады. Къара-Гебенек бир башха бийни жалчысы, эки чабырын сюйрей айланган кьара жашды. Бу кыз анга, секирип кьобуп, намыс бергени, анга тийишли тьююл эди, – дейдиле.

Кыз а, шапасына кьарап:

– Къара-Гебенек ач болур, мынга аш сал, ашат, – дейди.

Ашны Къара-Гебенекге келтиредиле, ол ашап бошайды да, кызгъа кьарап:

– Да мени санга жумушум барды. Алай: «Ахшыла хапар сормайдыла, аманла хапар айтмайдыла», – деучю эселе да, мен келечиге келгенме, – деп, келечилигин айтама дегенлей, Шамшият, секирип кьобуп, онг жанын Къара-Гебенекге айландырып тохтайды.

Ол заманда Къара-Гебенек бийден келечиге келгенинден хапарлайды. Къара-Гебенек хапарын айтып бошагъанда, бу кыз, анга аллын айландырып:



– Мени бийге бармазгъа антым барды. Алай аллыкъ болсанг, сени кесинге барлыкъма, – дейди.

Къызы бу сёзлерин Къара-Гебенек масхара этгеннге санап, бек ачыу тийип, былай айтады:

– Да сен мени аллай бир масхара не ючюн этесе? Мен да кесиме ушагъан бир тиширыу табарма, алай мени келечилигиме жууап бер, – деп тилейди.

– Мени атамы, – дейди къыз, – «Бийге барма» деген осуяты барды. Аны ючюн мен бийге бармайма, къайтарып да айтама: алама десенг, санга барама. «Угъай, алмайма», – десенг, иш кесингдеди, – дейди.

Сора Къара-Гебенек къызы айтханына ийнанады да, къызы алады. Неяхлы да болуп, бёлек кюнню бирге жашайдыла.

– Энди, – дейди къыз Къара-Гебенекге, – бар жалчы иенге, сен кесинг айтхан келечиликни да, мен берген жууапны да, бурмай, толусунлай айтып, артынга айланып, къайтып, манга кел.

Къара-Гебенек, бийине барып, болумну, бурмай, букъдурмай айтып, ангылатады. Ол заманда бий, жеринден секирип къобуп, Къара-Гебенекни къучакълады.

Сора Къара-Гебенек, бийге къарап:

– Энди сау къал, мен ызыма къайтама. Юйдегиме барама. Бюгюнден ары мен сени жалчынг туююлме, – деди.

Махмут бий Къара-Гебенекни кёзюне къарап:

– Энди сен мени жалчым туююлсе, алай бир анадан туугъан къарындашымса, болсада, бийни сёзю кертиликде кёрюнсюн. Бу келечиликни этип, болумну керти айтып келгенинге берирге айтхан затымы мен толу этеме. Ма, – деп, жюз акъ къарабаш ишекни да, ол бирси айтхан затларын да къолуна этеди.

Алай къыз, Къара-Гебенекни жалчы иесине ашыра туруп: «Бийден бир зат да алма, жалчылыгъынгы да алмай, къайтып кел», – дегени эсине тюшюп:

– Угъай, сау бол. Муну къыллы сен да, мен да къалмайыкъ, – деп, берген затларын бийни кесине къайтарып кетди.

Андан сора Къара-Гебенек ызына, Шамшиятха къайтып, бёлек заманны жашайды.

Кюнлени биринде Къара-Гебенекге бийледен:

– Бийле жыл жортууулгъа тебирегендиле да, сен да энди бийледенсе, бий тахтасында олтурупса, бизни бла жортууулгъа кел, – деп, келечи келди.

Ол заманда Шамшият, Къара-Гебенекни аузуна чабып:

– Къара-Гебенек алыкъа ишге, жортууулгъа да шагъырей туююлдю. Экинчи жортууулугъузгъа къошулур, бу жол аны къоюгъуз, – деди.

Келечи бий ёпкелеп кетди. Сора Къара-Гебенек Шамшиятха:

– Ай, мени намысыма да, сени кесинге да бу сен айтхан зат ушамайды. Мени бу жортууулдан тыймай, барма къойсанг а иги болурму эди? – деди.

– Ай, – дейди Шамшият, – ала сени нёгерликге излемейдиле. Аланы излегенлери сени ёлтюрюгеди.

– Да не болса да, эркин этсенг, барыр эдим, – дейди биягъы Къара-Гебенек.

– Огъесе, сен бийлеге бар да: «Къара тау жанынамы барлыкъбыз, Акъ тау жанынамы барлыкъбыз?» – деп сор, – деди къыз.



Къара-Гебенек бийлеге барып, алай соргъанда, бийле:

– Алыкъа кесибиз да билмейбиз, – деп жууапладыла.

Къара-Гебенек, къайтып, Шамшиятха бийлени жууапларын айтды.

– Энди алай эсе, сен бийле бла жортууулгъа бараса. Аланы муратлары сени жояргъады. Алчы бол деселе да унама, артчы бол деселе да, унама. Орталарында онг жанынгы бирине да берме. Берсенг да, онг къолунг сауут ойнатыргъа чырмаллыкъды. Ышанмай жюрю, – деди Шамшият.

Дагъыда Шамшият айтады:

– Бара-баргъан жерде ат солутургъа да тюшерсиз, алай сен атынгы иерин алып солутма да, атынгы айылларын аз бошлап, ауузлугъун алып, билеклигин къолунгда тутханлай, отлатырса-солутурса, – дейди.

Сора бийле бла Къара-Гебенек жортууулгъа атландыла да, толу бир айгъа жюрюдюле. Ай кюнлеринде ат солутургъа тохтадыла. Бийле ат иерлерин алдыла, атларын кишенледиле да, отларгъа бошладыла, кеслери да, Къара-Гебенекден къалгъанлары, азыкъгъа олтурдула.

Къара-Гебенек, атыны иерин алмай, кишен да салмай, ауузлугъун алып, билеклигин билегине тагъып, азыгъын къолуна алып, сюелип, ашай, атны да отлатады. Бийле бары да Къара-Гебенекге кюледиле:

– Ай, харип, Къара-Гебенек къой кютерге юйренгенди да, къарачы, къалай тынгысызды, – деп масхарайдыла.

Къара-Гебенекни къатыны Шамшиятны атасындан къалгъан тулпар аты бар эди да, бу къыз Къара-Гебенекни ызындан анга билдирмей, марлап жюрюй эди.

Шамшият, атына да минип, бийлени ат солутхан жерлеринде халны кёрдю, къалай десенг – бийле, айтханыбызча, атларыны иерлерин алып, кишенлеп, иерлерин жастыкъ этип, жамычыларын узун жиберип, тынчайып тургъанларын эмда Къара-Гебенекни болушун да эслеп, ёрню тюбюнден атыны тылпыуу туманча кёрюне, атыны туякъларындан чачырагъан кылдыла чаукалача, келеди. Аны алгъын Къара-Гебенек эслейди да, бийлеге айтады:

– Эй, бийле, артыбыздан, тау тюбюнден бир кючлю жау келгеннге ушайды. Къарачыгъыз, ат тылпыуну туманлыгъын, туякъланы чачырагъан чаукалача зылдыларын.

Къара-Гебенекни ол айтыууна бийле, жерлеринден къопмай:

– Ай, харип, Къара-Гебенекни, артында къалгъан бийчесине кёзю къарай, кёргени чарс болады, – деп кюледиле.

Алай аланы кюлгенлерине да эс бурмай, Къара-Гебенек, олсагъатдан атыны, кесини да тизгинин жыйып, атына минди да, бийлени атларын жаудан сакълай, алларын алды. Алай жау атланы, артларындан уруп, къамишге бурду. Болсада, Къара-Гебенек атланы бийлеге жууукъ келтирди.

Энди былайда ол «жау» Шамшият атланы ызындан бийлени къатына жетип, къамичиси бла ала къобаргъа кюреше тургъан жерлеринде, кеси атындан да тюшмей, бийлени бирер урады да, артына айланып кетип бара, эрин кёрсе да, ол болгъанына къамчисин ёре тутуп, къатындан жаны бла озуп кетеди.

Алайда ол бий къауумну таматарлары, чабып барып, Къара-Гебенекни къучакълады. Энди былайдан да была атланып кетдиле.

Была, беш кюн бла беш кече жюрюп, бир жерге жетдиле. Сора бийле:

– Биз таныгъан жерибизге жетдик, энди былайдан ары жол танымайбыз, былайда тохташабыз, – дедиле.

Къара-Гебенек былагъа кюлдю да:

– Ай юйюнге, биз былайда тохтасакъ, бизни бузоула къууалай келген къатынла кёрюп, бизге кюлмезлеми? Болмаса да, арлакъгъа барайыкъ, – деди.

Былайда тамата бий:

– Да мен тебирегенде да айтхан эдим, биз алчы болалмайбыз. Энди сен алчы бол, биз сени ызынгдан барайыкъ, – деди.

Ол заманда Къара-Гебенек:

– Хайдагъыз, огъесе, келигиз, – деп тебиреди.

Алайдан тебиреп, Къара-Гебенекни ызындан солуусуз бир ай жюрюдюле.

Была атлана, жюрюй кетип, бир уллу агъач талагъа жетдиле. Къара-Гебенек бийлеге айланып:

– Энди былайда тохтайбыз, – деди.

Тёгерекге къарап, агъач талада юйлени кёргенде, бийле:

– Ай, бу юйле къалай тап ишленген эдиле. Болсада, быланы аллары былай ары айланып болса, къалай иги эди, – дегенлеринде, Къара-Гебенек ала айтханча айландырып, юйлени орнатды.

– Энди, – дейди Къара-Гебенек, – бюгече былайда къалабыз. Бир ушхуурлукъ мадарайыкъ, – деп, адамланы ары-бери чачып, шапалыкъ этер ючюн от, суу хазырларгъа биреуге, тёгерекни сакъларгъа биреуге буюруп, кеси да бир башха жары кетеди.

Кеч болгъанда, Къара-Гебенек бир кийик ёлтюрюп келди да, аны шапагъа берди.

– Къазан ас, – деди.

Бек кеч болады, уугъа кетгенле келмейдиле. Къара-Гебенек къайгъы этеди. Болсада, тёгерекге къарап, къычырып, уучуланы жыйды. Была жыйылсала да, бир зат да келтирмей, къурулай келдиле.

– Энди сиз, – дейди Къара-Гебенек, – ашагъыз, ичигиз, солугъуз. Эрттенликде уа не иш болурну кёрюбюз.

Ашап-ичип бошагъанлай, Къара-Гебенек бийлени бир къауумун атланы кютерге, къалауурлукъ этерге жиберди. Къалгъанларына:

– Солугъуз, – деп къойду.

Танг болгъанда, Къара-Гебенек былагъа юч жолну кёргюзтдю. Эки къауум этип, эки жолгъа буюрду. Кеси жангыз къыйыныракъ, таугъа чыкыгъан жолну алып, тебиредиле да, анда Къара-Гебенек жолоучулагъа:

– Къайры баргъаныгъызны кёрлюкме, – деп билдирген эди.

Кюнню бир ууахтысында тауну башына чыкъды. Тауну башындан тёгерекге кезюлдюреуюк бла къарады да, кюнбатышда бир темир къала кёрдю. Къаланы аллында алтаулан, къымыжалай тагъылып, керилип, жанлары уа сау халда, къымылдай кёрюндюле.

Къара-Гебенек бу ишге бек сейирсинди да, туура къалагъа айланып барады. Бара кетип, къалагъа жетип къарагъанда, кеси жибергенледен алтауланни къымыжалай тагъылып, керилип кёрдю. Аланы таныгъанда:

– Эй, не болду сизге? – деп сорду.



– Ай, – дедиле была, – бизге болгъанны сурама да, кесинг былайдан къутулуп, элге барып, бизни хапарыбызны айтсанг боллукъ эди.

Былайда бу сёзлени эшитип, къаладан тогъузбаш эмеген чыкъды. Къара-Гебенек эмегеннге айланып:

– Бусагъатдан быланы бошла, сауутларын, сабаларын, атларын да къолларына бер! – деп, ачы къычырыкъ этип, юсюне чапды.

Къара-Гебенекни ачы къычырыгъындан тогъуз башлы эмеген, элгенип, чабып барып, бу керилип тургъанланы аякъларын, къолларын да, къалтырай-къалтырай, тешип башлады. Сауут-сабаны, атларын да къолларына берди.

Сора биягъы Къара-Гебенек тогъуз башлы эмегеннге:

– Аллымда тебуре. Бу къаланы ненча эшиги бар эсе да, хар бирин ачып, манга кёрюзт, – деди.

Сора эмеген, къоркъуп, муну аллында къалагъа кирип, эшиклени барын да ачып барады, ызындан а Къара-Гебенек да барады.

Эмеген алай бла тогъуз эшикни ачды, Къара-Гебенек да аны ызындан барды. Онунчу эшикге жетгенде, эмеген:

– Муну ачмайма, – деп тохтады.

– Дуньяда жашаргъа сую эсенг, ачарса, ачмасанг а, кёрейим, – деп, къылычын чыгъарды Къара-Гебенек.

Эмеген къоркъуду да, онунчу эшикни ачды. Къара-Гебенек аны ичине къарагъанда, мёлекле кибик эки ариу къызны кёрдю. Бу къызла, эшик ачылгъанда, Къара-Гебенекге жылап* чапдыла. Къара-Гебенег'а бу ишге сейирсинип, бираз къарап, артына эс бургъанда, ол тогъуз башлы эмеген, артына айланып, хар аллын** ачхан эшиклени этип, бегитип бара эди. Энди эмеген, ол къызланы да, бу Къара-Гебенекни да онунчу отоуда бегитип, тышына чыгып, биягъы бошланганланы байлап, керип, тагып къойду.

Энди Къара-Гебенек, къызла бла бирге бегинип къалгъанда, къызлагъа:

– Сиз не адамласыз, къайдан келгенсиз, бу тутмакъгъа къалай тюшген эдигиз? – деп сорады.

Къызла, кёз жашларын шауданлача тёге, жылап:

– Да биз бир жарлылыкъда турабыз, сен къайдан тюшдюнг? – дейдиле.

Жаш айтады:

– Сиз манга жарсымагъыз, жыламагъыз да, къайдан, къалай тюшгенигизни, кимлени къызлары болгъаныгъызны айтыгъыз, – дейди.

Къызладан таматасы:

– Биз экибиз да ханны къызларыбыз, туугъан эгечлебиз. Бизни атабыз бизни эрикдирмейме деп, жюз атлыны да нёгер этип, тышына чыкъгъан эди.

Бизни атабызны да, анабызны да, аланы жюз санлы аскерин да, бизни да, бу эмеген бери келтирген эди. Бизни бери беклеп турады, къалгъанладан а хапарыбыз жокъду, – дедиле.

– Алай эсе, тебирегиз, – деп, Къара-Гебенек, къызланы аллында хар эшикни да уруп, ууатып, он эшикден да къутулуп, къаладан тышына чыгъады.

Ол заманда ол кеси эмегеннге къычырып бошлатхан алты нёгерин да биягъыча болуп кёреди. Анда биягъы ачы къычырыкъ этип, эмеген келип, аланы бошлайды.

* Жылап.

** Алгъын.

Къара-Гебенек кыылычны чыгъарып, тогъуз башлы эмегенни ёлтюрюрге тебирегенде, эмеген:

– Жаланда бир сёз айтма къой, – деп тиледи.

– Айт, – деди.

Эмеген:

– Биринчи юйде къара кюбюр барды, аны ичинде къара бычакъ* барды, аны сен ал да, кеси кёзюмден жюрют, – дейди.

Болсада, бу Къара-Гебенек, кеси бычагына базынып, кынындан чыгъарып, уруп, эмегенни тогъуз башын да кетереди.

Энди Къара-Гебенек, ол эмеген айтхан къара кюбюрге келип, бир жанына туруп, кюбюрню ачды. Анда бычакъ чартлап, тюз ёрге чыгып, юйню тёрт мюйюшюне тие, кьонгуроу таууш бла жерге тюшеди. Сора кюбюрню ичине къарагъанда, бычакъны накъут-налмас кыны анда табылады.

Къара-Гебенек, бычакъны, кыынны да алып, бычакъны кынына салып, белине такъды да, айтды нёгерлерине:

– Сиз бусагъатдан бу къланы он отоуу барды да, аланы ичинде болгъан хазнаны, накъут-налмасны эмда кългъан затларын бери тышына чыгъарыгъыз, – деп буюрду.

Кеси уа ол къланы тюбюнде уллу уругъа кирди. Ол уллу уруну ичинде жюз ат, жюз адамны сауутун, сабасын да тапды.

Бу уруда табылгъан затланы тышына чыгъарып, уруну экинчи бёлюмюне кирди. Анда уа толу жюкленип, тогъуз туюе табылды. Аланы да тышына чыгъардыла.

Къара-Гебенек бу жюз атха, тогъуз да туюе табылгъанны жюклеп, бу эки кызын да алып, ол бошлангъан нёгерлери бла таладагъы агъач юйлеге келдиле. Сора ол бирси жолла бла кетгенле да, алайгъа жыйылдыла.

Былайда бёлек заманны кечинип, туугъан эллерине келдиле.

Энди бу бийле да, Къара-Гебенек да Шамшиятны юйюне ол эмегенден сыйыргъан эки кызын да алып келдиле да, анда оноу-кенгеш болдула.

Былай, оноу эте келип, Къара-Гебенек ол эки кызыны кесине туугъан эгечлерича кёрюп жашаргъа ант этеди. Табылгъан ырысхыны нёгерлерине тенг юлешеди, кеси уа бир тюрлю да юлюш алмайды.

Энди ол жерде бурундан да бийлик этип келген, бу жортууулну уа башчысы болуп, Къара-Гебенекни жоар мураты бла айлангъан бий, Къара-Гебенекке айланып:

– Энди бюгюнден артха бу жерлени ырысхысына, адамына да оноучу сенсе, – деп, Къара-Гебенекке боюн салып кълалды.

Къара-Гебенек бла аны къатыны Шамшият бу жерде хар неге да ие болуп, ашап-жашап кълалдыла деп, хапарда айтылады.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 9 паспорт. КъМАСССР-ны Кёнденел элинде 68-жыллыкъ Жашууланы Махайны жашы Идрисден 14.02.1965 жылда Насталаны С.Б. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Къара-Гебенек» деген сейир-тамаша-жигитлик жомакъны сейирлик этген аны жигитини деменгили сыфатыды. Ол халкъны жакъчысыды, тюзлюк ючюн жашауну кюрешчисиди.

* Бичакъ.



Мында дагыда окъуучуну эсин бёлген къара кюнню сыфатыды (эмегенле эмда баихала). Аланы халларында халкъгъа азаплыкъ сынатхан кючлени сыфатлары ангылашынадыла.

КАРА-ГЕБЕНЕК*

Давным-давно, очень давно, во времена нартов жил один бий. Его звали Махмут-бий. У него было много имущества, большое безмерное состояние.

Не говоря про батраков, которых нанимали на один год, у Махмут-бия было пятеро батраков, которых наняли на пять лет. Среди тех, которых наняли на пять лет, самого последнего, кто пришел, звали Кара-Гебенек. Он также был среди батраков самым младшим.

В один из дней Махмут-бий собрал всех своих батраков, и, в особенности, обращаясь к тем, кто на пять лет пришел батрачить, говорит:

– Где-то живет дочь бия, ее зовут Шамшият. И я решил жениться на ней. Вы ведете мое хозяйство, знаете повадки моих животных. Кто найдет Шамшият, и от моего имени ей скажет про мое сватовство, и принесет ее ответ в точности, тому дам: кроме батрацкой доли, сто белых черноголовых баранов, чтобы без смущения можно было сесть и выйти с прекрасным снаряжением одного коня, одну дойную корову и кошару с полным обеспечением. Итак, кто может сообщить про сватовство девушке, кто ответ принесет, не обманывая, кто из вас надеется на себя? – спросил он.

Не в силах что-либо ответить бию, все батраки оказались в недоумении и сникли. В это время один из батраков, из числа нанявшихся на пять лет, самый младший из них Кара-Гебенек призадумался:

– Да: «Посланцу – нет смерти», – говорят. Они все в смятении, наверное, я пойду, – сказал.

Тогда бий Кара-Гебенеку дал своего коня и отправил свататься.

Кара-Гебенек, чтобы засватать Шамшият, пришел к ней. Когда он появился там, рядом стояли двое парней-биев, также прибывшие ее засватать. Однако, девушка, не воспринимая их слова, спокойно сидела, а когда зашел Кара-Гебенек, она вскочила с места, и обиженные парни-бии покинули двор. Уходя, парни-бии сердились на Кара-Гебенек и Шамшият.

– Мы – князья. И Шамшият – дочь бия, хана. Эта девушка сама себя позорит. Кара-Гебенек батрачит на другого бия, и таскает свои старые чабыры, он – из простого сословия. То, что эта девушка, вскочив, оказала ему почет, не подходит ее статусу, – они сказали.

Девушка, взглянув на своего шапу**:

– Кара-Гебенек, наверное, голоден, дайте ему еду, пусть покушает, – говорит.

Еду он приносит Кара-Гебенеку. После того, как закончил кушать, он посмотрел на девушку:

– Да у меня есть поручение к вам. Хоть и говорят: «Воспитанные люди не спрашивают, плохие – не рассказывают», – я пришел сватать.

* Досл.: «Черная-Накидка».

** *Шана* – повар, кашевар [3, 748].

И тут, не давая ему сказать, Шамшият быстро поднялась и встала к нему правой стороной.

В это время Кара-Гебенек рассказал, что пришел от имени бия ее сватать. Когда он закончил свою речь, тут уже девушка повернулась к нему лицом.

– Я дала клятву не выходить замуж за бия. Однако, если ты на мне женишься, я выйду за тебя замуж, – сказала.

Слова девушки показались Кара-Гебенеку чудачеством и он, разозлившись, говорит девушке:

– Почему ты надо мной насмехаешься? Я себе найду подходящую мне девушку. Дай мне ответ, я пришел тебя сватать, – он попросил.

– У моего отца, – говорит девушка, – есть завещание не выходить замуж за бия. Поэтому я не буду выходить замуж за бия, еще раз повторяя, говорю, если ты на мне женишься, я выйду за тебя, если скажешь: «Не беру», – твое дело, – она говорит.

После всего этого Кара-Гебенек поверил словам девушки, женился на ней, провел с ней неких*, и живут они вместе несколько дней.

– Теперь, – говорит девушка Кара-Гебенеку, – сходи к своему хозяину, передай ему слова, которые ты мне говорил при сватовстве, и мой ответ, ничего не меняя, и вернись обратно ко мне.

Кара-Гебенек, вернувшись к своему бию, рассказал ситуацию, ничего в ней не скрывая, разъяснил ему. В это время бий быстро вскочил с места и начал обнимать Кара-Гебенека.

После этого Кара-Гебенек, взглянув на бия:

– Теперь, оставайся в здравии, я возвращаюсь обратно. Иду к своей семье. С сегодняшнего дня я тебе не батрак, – сказал он.

Махмут-бий, посмотрев в глаза Кара-Гебенека:

– Теперь ты мне не батрак, а как бы родившиеся от одной матери братья, хотя бы так, слово бия пусть будет истинным. За то, что ты совершил это сватовство, и рассказал мне всю правду, я хочу тебе вручить обещанное мной сполна. Вот, – сказал он и подарил ему сто белых и черноголовых годовалых барашков, и все другое полностью, что он обещал.

Однако, девушка, отправляя Кара-Гебенека к хозяину, велела, чтобы он ничего не брал у бия, и за свою работу чтобы он не брал жалованье, вернулся. Он вдруг об этом вспомнил:

– Нет, спасибо. Из-за этого мы не будем церемониться, – сказал он, и то, что ему вручили, он вернул бию обратно и ушел.

После этого Кара-Гебенек возвратился обратно к Шамшият и жил некоторое время.

В один из дней к Кара-Гебенеку пришел посланник, представитель из князей:

– Князья собрались в дорогу на год, теперь ты тоже из князей, сидишь на княжеском престоле, пойдем с нами в набег, – сказал он ему.

В это время Шамшият, опережая ответные слова Кара-Гебенека:

– Да Кара-Гебенек еще не освоился ни в делах, ни в набеггах. Ко второму набегу присоединится, на этот раз оставьте его, – говорит.

Посланник бия ушел обиженным. После этого Кара-Гебенек говорит Шамшият:

* *Неках* – бракосочетание (по мусульманскому обряду) [3, 483].



– Ай, ни моей чести, ни твоему статусу не идут слова, что ты сейчас произнесла. Может, было бы лучше не ограждать меня от этого набега, отпустила бы лучше.

– Ай, – сказала Шамшият, – они тебя не из-за дружбы зовут. Их желание – тебя убить.

– Пусть, но если ты меня отпускаешь, я бы пошел, – сказал все тот же Кара-Гебенек.

– Тогда иди к биям: «В сторону Черных гор отправимся или же в сторону Белых гор отправимся?» – спроси у них, сказала девушка.

Когда Кара-Гебенек сходил к биям и спросил так, князя:

– Мы сами еще не знаем, – ответили.

Кара-Гебенек, возвратившись, передал ей ответ князей.

– Теперь, если так, ты отправляешься с князьями в путешествие. В их планах уничтожить тебя. Если они скажут: «Будь первым», – не соглашайся. «Будь последним», – если скажут, тоже не соглашайся. Посередине правую сторону никому не доверяй. А если и позволишь, правая рука не сможет свободно действовать с оружием. Ходи, не доверяя, – сказала Шамшият.

И еще Шамшият сказала:

– В дороге придется дать отдых коням, но ты своему коню давай отдых, не снимая седла, подпругу чуть расслабь, сними удила и, паси, дай отдохнуть, держась рукой за уздечку, – сказала.

После всего этого и князя, и Кара-Гебенек отправились в путь и ходили целый месяц. Через месяц они остановились, чтобы коням дать отдых. Князя сняли с лошадей седла, надели путы на лошадей, отпустили их пасться, и все, кроме Кара-Гебенека, сели трапезничать.

Кара-Гебенек, не снимая седла со своей лошади и не надевая путы на нее, снял удила, уздечку привязал к плечу, и, держа еду в руке, стоя, кушал и пас свою лошадь. Все князья надсмехались над Кара-Гебенеком:

– Ай, бедный Кара-Гебенек, он привык пасти овец, смотри на него, как он суетлив, – издевались над ним.

У жены Кара-Гебенека Шамшият был богатырский конь, который достался ей от отца, эта девушка тайком ездила за мужем.

Шамшият увидела, как князья дают отдых своим коням, как было сказано – они сняли со своих лошадей седла, надели на ноги путы, седла использовали вместо подушек, бурки свои расстелили в длину, и в удовольствие отдыхали, также она обратила внимание на Кара-Гебенека. И тут снизу кто-то скачет, дыхание его лошади казалось туманом и от его копыт комья земли разлетались, как галки. В первую очередь это заметил Кара-Гебенек и сообщает биям:

– Эй, князья, за нами вслед, из-за подножия горы, похоже, надвигается грозный враг. Посмотрите, дыхание коней, как туман разносится, из-под копыт комья как галки разлетаются.

На эти слова Кара-Гебенека князья не обратили внимания и продолжали сидеть:

– Ай, бедный Кара-Гебенек, скучает по оставшейся жене, глаза его окутало марево, – сказали они и засмеялись.

Однако, не обращая внимания на их смех, Кара-Гебенек тут же привел в порядок себя и своего коня, сел на коня, и, ограждая коней князей от врагов,

выскочил навстречу им. И вражеских коней подгоняя сзади, повернул к камышам. Итак, Кара-Гебенек коней пригнал близко к князьям.

Теперь здесь «враг»-Шамшият вслед за конями дошла до местонахождения князей и своим кнутом, на том месте, где они старались встать, сама не слезая с лошади, по разу ударяет князей и, когда замечает своего мужа, узнает его, подняв свой кнут наверх, проходит рядом, мимо него.

Здесь глава княжеского сообщества, быстро подбежав, обнял Кара-Гебенек. Отсюда они снова отправились в путь.

Они, пять дней и пять ночей передвигаясь, пришли в одно место. Здесь князья:

– Мы пришли к знакомой территории, дальше дороги не знаем, останавливаемся здесь, – говорят.

Кара-Гебенек посмеялся над ними:

– Ай, что вы говорите, если мы здесь остановимся, женщины, которые придут за телятами, когда увидят нас, не будут ли над нами насмехаться? Хотя бы отойдем подальше, – сказал он.

Здесь старший князь:

– Да, я же говорил, когда отправлялись, что мы не можем быть впереди. Теперь ты встань впереди, а мы будем двигаться за тобой, – сказал.

В это время Кара-Гебенек:

– Давайте, если так, собирайтесь, – сказал и двинулся вперед.

Отправившись с того места вслед за Кара-Гебенек, без отдыха они ходили один месяц.

В конце-концов, они пришли на большую лесную поляну. Кара-Гебенек, обращаясь к князьям:

– Теперь останавливаемся здесь, – сказал.

Оглянувшись по сторонам, князья увидели на лесной поляне дома:

– Ай, эти дома как красиво построены. Однако было бы лучше, если бы они смотрели в другую сторону, – сказали они. Кара-Гебенек тут же повернул их в другую сторону и установил так, как они хотели.

– Теперь, – говорит Кара-Гебенек, – будем здесь ночевать. Надо раздобыть что-нибудь поесть, – сказал он и поручил людям различные дела: быть шапой, заготовить огонь, воду, охранять территорию. Отдав эти поручения, он сам уходит в другую сторону.

Когда стало темно, Кара-Гебенек убил одного оленя, притащил его и вручил шапе.

– Поставь котел на огонь, – сказал он.

Стало уже очень поздно, но ушедшие на охоту, не возвращаются. Кара-Гебенек начинает переживать. И в это время, он, оглянувшись по сторонам, криком, вернул охотников. Хотя они и собрались, но ничего не принесли, возвратились ни с чем.

– Теперь вы, – говорит Кара-Гебенек, – ешьте, пейте, отдыхайте. А утром, какие дела появятся, посмотрим.

Когда они закончили есть, пить, Кара-Гебенек часть князей отправил пасти коней, сторожить территорию. Остальным:

– Отдыхайте, – сказал.

Когда наступило утро, Кара-Гебенек показал им три дороги. Поделив отряд на две группы, он направил их по двум направлениям. А для себя он



избрал дорогу посложнее, ту, что вела в гору, так они отправились, и там Кара-Гебенек путникам сказал:

– Куда вы пойдете, я буду видеть, – дал им знать.

В течение дня он поднялся на гору. И с вершины горы он оглядел через подзорную трубу всю округу, на закате увидел железную крепость. Впереди крепости шестеро человек, нагими были привязаны, распяты, сами еще живые, он увидел как они шевелились.

Кара-Гебенек этому всему сильно удивился и направился прямо к этой крепости. Когда он дошел до крепости и посмотрел, то узнал, что все шестеро нагих, распятых людей были из тех, кого он сам отправил. После того, как он их узнал:

– Эй, что с вами случилось? – спросил он.

– Ай, – ответили они. – Лучше не спрашивай, что с нами случилось, лучше сам спасайся, сходи в село и расскажи, что с нами произошло.

Тут, услышав эти слова, из крепости вышел девятиглавый эмеген*. Кара-Гебенек, повернувшись к эмегену:

– Сейчас же освободи их, оружие, снаряжение и коней вручи им в руки, – сказал он и с большим криком набросился на него.

Из-за страшного крика Кара-Гебенека девятиглавый эмеген испугался и быстро побежав, распятых людей ноги, руки с дрожью начал развязывать. И вернул им все оружие, снаряжение и коней.

Опять тот же Кара-Гебенек девятиглавому эмегену:

– Иди впереди меня. В этой крепости сколько дверей есть, отвори каждую и покажи мне, – сказал.

Эмеген еще больше испугался и впереди него зашел в крепость, шел, отворяя все двери, а следом двигался Кара-Гебенек.

Эмеген отворил девять дверей и Кара-Гебенек продолжал идти за ним. Когда дошли до десятой двери, эмеген:

– Эту не буду отворять, – начал отказываться.

– Если хочешь жить на свете, откроешь, а если не откроешь, посмотрим, – сказал Кара-Гебенек и вытащил свой меч.

Эмеген сильно испугался и отворил десятую дверь. Когда Кара-Гебенек посмотрел туда вовнутрь, то увидел двух красивых, как ангелы, девушек. Эти девушки, когда открылась дверь, с плачем подбежали к Кара-Гебенеку. Кара-Гебенек удивился всему этому. Оглянувшись назад, он увидел, что девятиглавый эмеген пятился назад, закрывая, заколачивая двери, которые он ранее отворил. Так эмеген и девушек, и Кара-Гебенека заключив в десятом помещении, вышел наружу и тех, которые освободились, снова связал и, распяв, прицепил.

Теперь, когда Кара-Гебенек вместе с девушками остался запертым:

– Что вы за люди, откуда вы пришли, в эту неволю как попали? – начал он у них спрашивать.

Девушки, рыдая, у них слезы текли ручьем:

– Да, мы оказались в беде, ты сам как сюда попал? – спросили они.

Юноша отвечает:

* Эмеген – чудовище, циклоп, великан [6, 1070]. Встречается также в карачаево-балкарском нартском эпосе.

– Вы за меня не переживайте, не плачьте, откуда, как сюда попали, чьи дочери будете, расскажите, – говорит.

Старшая из девушек:

– Мы обе дочери хана, мы родные сестры. Наш отец, чтобы мы не скучали, взяв с собой в друзья сто всадников, отправился в путь.

Нашего отца и нашу мать, их войско в сто человек, и нас этот эмеген привел сюда. Нас наглухо запер здесь, а про остальных у нас нет никаких вестей, – сказали они.

– Если так, собирайтесь, – сказал Кара-Гебенек и пошел впереди девушек, ударом отворяя, разрушая каждую дверь, так, прорвавшись через десять дверей, он вышел из дворца.

В это время он шестерых друзей, которых освободил от эмегена своим криком, видит в прежнем состоянии. Он снова громко закричал, пришел эмеген и освободил их.

Когда Кара-Гебенек вытащив меч, собрался убить девятиглавого эмегена. Эмеген:

– Разрешите мне произнести лишь одно слово, – начал просить.

– Говори, – сказал он.

Эмеген:

– В первом доме есть черный сундук, там внутри есть черный нож, ты его возьми и пользуйся от моего имени, – сказал он.

И все-таки Кара-Гебенек, надеясь только на свой кинжал, вытащив его из ножен, и ударом снес с эмегена девять голов.

Теперь Кара-Гебенек пришел к тому черному сундуку, о котором говорил эмеген, и немного отойдя в сторону, открыл его. Оттуда выскочил нож, прямо поднялся вверх, и, ударяясь во все четыре угла дома, со звоном колокола, упал на землю. Когда он заглянул внутрь сундука, ножны, изготовленные из бриллиантов, изумрудов оказались там.

Кара-Гебенек нож и ножны забрал, вложив нож в ножны, привязал их к поясу и сказал друзьям:

– В этом дворце имеется десять комнат, и все, что находится там – богатство, бриллианты, изумруды, и все остальное вытащите наружу, – приказал он.

А сам спустился в большой погреб под этим замком. В этом большом погребе он нашел сто лошадей, оружие и снаряжение на сто человек.

Все, что нашел в этом погребе, он вынес наружу и вошел во вторую половину погреба. А там нашлись загруженные полностью девять верблюдов. Их тоже вытащили наружу.

Кара-Гебенек на эти сто коней и девять верблюдов погрузил все, что нашел, и, забрав этих двух девушек, и вместе с освобожденными друзьями, явились к деревянным домам, которые находились на поляне. Здесь же собрались те, которые ушли другой дорогой.

Побыв здесь некоторое время, они прибыли в родное село.

Теперь эти князья и Кара-Гебенек пришли в дом к Шамшият с двумя девушками, которых отобрали у эмегена, и начали думать, решать, что делать дальше.

После всех размышлений они пришли к мнению, что Кара-Гебенек этих двух девушек будет воспринимать как родных сестер – он дал клятву.



Добытое все богатство он поделил между друзьями поровну, а себе не взял никакой доли.

Теперь князь, который издревле в этом краю княжил и главенствовал, и в свое время собирался уничтожить Кара-Гебенека, пришел к нему:

– Отныне и впредь всеми богатствами этих земель и всеми людьми ты будешь распоряжаться, – сказал он и подчинился Кара-Гебенеку.

Кара-Гебенец и его жена Шамшият в этих землях стали хозяевами и остались жить да поживать, говорится в сказаниях.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 9. Записал С.Б. Настаев 14.02.1965 г. в с. Гунделен КБАССР от 68-летнего Жашуева Идриса Махаевича.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Примечательной особенностью данной волшебной-героической сказки является колоритный образ Кара-Гебенека – народного заступника, борца за социальную справедливость. Обращает на себя внимание иносказательный характер демонических сил (эмегены и т.д.), за которыми скрываются образы угнетателей народа.



ЖАШЫ БЛА АТАСЫ

Эртте-эртте къарт киши бла къарт къатын бир уллу тенгизни къатында жашай эдиле. Алагъа къартлыкъларына жаш туууп, анга Къаракёз атагъан эдиле. Атасы хар кюн сайын, аны да алып, тенгизге чабакъ тутаргъа кете эди. Къатыны уа юй жумушланы этерге юйюнде къала эди.

Бир кюн атасы да, жашы да, чабакъ тутаргъа тенгизге иги да терен кирип, ишлерин эте тургъанлай, суудан бир ариу къыз чыгып, жашны атасына кёрюнмей, жашха кёрюнюп, дагъыда жокъ болуп къалгъан эди. Жашны уа онсегизинчи жылы бара эди. Жаш, сейирсинип, атасына да айтмай, ол кюн юйюне къайтды.

Экинчи кюн да биягъы къыз, жашха кёрюнюп, суугъа кирип кетген эди. Алай бла жашны жүрегин суймеклик оту бийледи.

Ючюнчю кюн жаш атасы бла биягъы тенгизге чыкъды. Ючюнчю кюн да жаш къызны кёрдю да, тёзалмай, атасына:

– Атам, ма бюгюн бла ючюнчю кере кёреме бир ариу къызны, хар кюн сайын суудан чыгъады да, суугъа кирип, жокъ болады. Ол не затды? – деди.

Атасы уа:

– Ай, жашым, ол, кёплени кёзюне кёрюнюп, кёплени алдай, эшиклерин жапханды. Кеси да, бу тенгизни ары жанында бир уллу тенгиз барды, андан да ётүп, биркюнлюк жол барсанг, кюнчыгъыш жанында бир сууну къатында жар ичинде уллу дорбун барды, ма ол къыз анда жашайды. Анга кёпле баргъандыла, алай баргъанланы бири да артха къайтмагъанды – барысы да ол дорбунда къабырларын тапхандыла. Къой, сен ол акъылны башынгдан кетер, – деп юйретди.

Алай жашны жүрегин суймеклик алгъан эди, атасы айтханнга да тынгыламай, жаш жолгъа чыкъды. Атасы бла анасы: «Энди кёрмейбиз да кёрмейбиз жангыз жашыбызны», – деп, аны къучакълап:

– Аллах санга болушсун, сау къайт, – деп, жолгъа ашыргъан эдиле.

Жаш, атасыны эски къайыгъына минип, кёк тенгизге чыкъды. Жюзе барып, Къаракёз тенгизни къыйырына жетди. Суудан чыгып, бир уллу таугъа ёрледи да: «Атам бу тенгизни ары жанында тенгиз барды деген эди», – деп къарады. Къараса, узакъда, адамны кёзю кючден жетген жерде, кюнча жылтырагъан кёк зат кёрюндю. «Ма энди ол тенгиз болур», – деп, жаш аны таба тебиреди. Барады, барады, алай тенгизге уа жеталмайды. Сора жаш бир уллу, къалын агъачха жетди. Агъачны ортасында бир ариу ёзенчикде бир къарт киши атла кюте тура эди. Жаш аны къошуна барды. Киши жашны, бек сыйлы къонакъ этип, не айланганын сорду. Жаш да битеу хапарны къалдырмай айтды да, кишиден ма быллай жууап алды:

– Ай балам, сен бек къоркъуулу жолгъа чыкъгъанса, ары кёпле барып къайтмай къалгъандыла. Ол къызны атасы суу патчахды. Баргъанны сау къайтармайды, алай сен, бармай боллукъ туююл эсенг, ма бу къаманы ал да, къыйынлыкъгъа тюшсенг, къаманы бурунун бек алгъа жерге тийдир, суудан ётеме десенг, отун жаркъаны суугъа ат.

Къаракёз, къарт берген къаманы да алып, жолгъа тюшдю. Ол, бара-бара кетип, бир уллу тенгизге тюбеди да, къарт берген отун жаркъалыкъны суугъа атды. Олсагъат ол, уллу кеме болуп, суу жагъада хазыр болду. Жаш,



анга минип, эки жыйырма кюн жюзюп, тенгизни ары кыйырына чыккыды. Кемени да сууга кыюп, атасы айтхан жарны излеп, жолга чыккыды.

Барады жаш, барады кюнчыгышха, алай жар а кермейди. Сора ингир алагга сууну боюнунда бир сейир жарга тюбеди. Жар турушунлай желмаууз башха ушай эди. Аны аузу болган жер а аны эшиги эди. Аллында уа: «Бери кирген излегенин мында табар, алай алалмаз», – деп жазылып эди.

Жаш арсарсыз дорбунга кирип барды. Бара кетип, ол бир сейир кердю: уллу сууну ортасында бир уллу, жым-жым жылтырай, ариу юй, юйге барыр ючюн а дагыда алтын кыйыкга минерге керек эди. Кыйыкны уа жети башлы, онтөрт аякылы, уллу, тюкю эмеген саклай эди. Эмеген, жашны кергенлей:

– Кыйдан чыккыдын сен, итни баласы! Иги болду да ингир азыкга сенлай татлы кыбын, – деп, жашны юсюне атылды.

Сууруп чыгарды жаш кыаманы – башланды тутуш, уллу тутуш. Жаш да аллай илячин эди, эмеген бла жети кюн сермешген! Сора жетинчи кюн эмеген онглу бола башлады. Жаш да: «Керти айта кере эдим адамла, бери келген кыйтмайды деп, мен да кыйтмадым», – деп, ёлрюн билди. Сора жаш кыарт жылкычыны айтханын эсине тюшюрдю да, эски кыаманы бурунун жерге тийдирди. Олсагытта кыама, уллу болуп, женгил болду. Жаш, бир ургылай, эмегени алты башын кетерди, алай жетинчи баш кеп сермешди. Сора жашха кюч-кыары кирди – жаш, битеу кючюн жыйып, уруп, эмегени жетинчи багыр башын жерге тюшюрдю. Андан сора жаш юч кюн бла, юч кечени, бир да уянай, татлы жуклады. Төртюнчю кюн жаш уянды. Сора кыйыкга минди да, юйге барды. Юйню уа эки жыйырма белюмю бар эди. Эки жыйырмамын да эшик аллында бирер жети башлы эмеген, адам кыймай, саклай эди.

Биринчи эшикни аллында жети башлы эмеген, жашха кыарап:

– Кыалай жиберди сени бери жети башлы эмеген, бизни ичибизде бек кыарулубуз? Итни баласы, нек келгенсе сен бери? – деп, жашха ачылуу кыарады.

Жаш а:

– Айхай, жибермез эди ол а, ол айтхан болса. Бар, бар да, кер аны жети башы да аллыма тенгереп, теммеги да суу жагыда турады; сизни бек кыарулуугуз ол эсе уа, сора кыалганларыгыз манга кеп кюч эталмазсыз, барыгызны да башларыгызны аныча этерем, жибер мени андан эсе! Жибер! – деди.

Аны эшитген эмеген, ачыуланып, Кыаракёзю юсюне мыллыгын атды. Кыоркымай кирди кыазауатха Кыаракёз. Сора башлайды, уллу ачды тутуш. Тогуз кюн тутушду Кыаракёз, солумай. Сора эмеген жашха:

– Тохта, солуюк юч кюн, сора алай башларбыз тутушну, – деди.

Кыаракёзю да онгу кетген эди, ыразы болду солургга. Ала экиси да солудула юч кюн, юч кече. Сора башланады биягы тутушуу. Жыйырма бла онбиринчи кюн жаш кетерди эмегени жетинчи башын да. Кыаракёз солуду юч кюнню. Сора, андан сора экинчи отоуга кирип барды. Барса, анда да эшик аллында уллу, жети башлы эмеген кезлерин да жандырып тура эди. Киришди биягы жаш тутушургга. Эки жыйырма кюн тутушду эмеген бла Кыаракёз. Сора эки жыйырманчы кюн жашны эсине жылкычыны айтханы



тюшдю. Жаш къаманы бурунун жерге тийдирди да, эмегенни жети башын да уруп кетерди. Эки жыйырманчы отоугъа жетгинчи, Къаракёз, хар бир эмеген бла эки жыйырма кюн тутуша, жыл жарымы чакълы бир заман кетген эди. Эки жыйырманчы отоугъа жетгенде, жашны къарыуу да кетип, асыры арыгъандан, жашауну жартысын жашагъанча болгъан эди. Онсегизжыллыкъ жашха къарасанг, эки жыйырмагъа жанлагъан болур дер эдинг.

Аллай къыйынлыкълардан да къутулуп, эки жыйырманчы отоугъа кирип барса: уллу, ариу, жумушакъ ундурукъда бир ариу къыз татлы жукълап тура эди. Жаш, кёргенлей окъуна, ол тенгизде, сууда кёрген къыз болгъанын таныды да, аны алайлай ариулугъуна къарап туралмай, барып эринлерин аямай уппа этди. Къыз, сескенип уянып, эки жанына къарагъанында, сюелип тургъан жашны кёрюп, асыры сейирсингенден эси азаргъа жетген эди.

Сора къыз эмегенлерине къычырды, алай аладан бири да келмеди. Ачыуланып, чыгъып къараса, бири да къалмай, башлары алларына тюшюп, жанлары да жаханымге кетип тура эдиле. Сора къыз жашха:

– Ким этгенди бу аламат ишни? – деп сорду.

– Мен, – деди жаш арсарсыз, къоркъмай.

Сора жаш аны да айтып бошагъанлай, асыры арыгъандан, аууп, жукъугъа хорлатды. Кёп сакълады къыз уянады деп, алай жаш уянмады. Тогъуз кюн бла тогъуз кече жукълады жаш, уянмай. Онунчу кюн тюш заманда жаш кёзюн ачды: аллында къыз сюелип тура эди. Сора жаш, олтуруп, къызгъа битеу хапарын башдан аякъ айтды. Аны эшитип, къыз асыры сейирсингенден, жашны асыры бек сүйюп къалгъандан, къучакълап:

– Кёп адам келген эди бери, алай бири да къайтмагъан эди сау юйюне. Мынча эмегенни хорлап, бери кирген, сенден башхагъа ёмюрде бармам, – деп, кесини сүймеклигин айтды.

Жаш а асыры къууангандан, тюшюнде эсе да, тюнюнде эсе да билмей, танг кесек тургъан эди. Сора къыз мудах болуп, жашха:

– Мени атам узакъ жолгъа кетгенди. Ол кетгенли эки жыл болады, келир кюнюне уа жети кюн къалгъанды, ол келгинчи мындан кетмесек, экибизни бирге кёрсе, экибизни да саулай къоймаз, – деди.

Жаш:

– Сен бир да къоркъма, жети кюнню ичинде биз узакъ жолда болурбуз, сени атангдан къыйналмай къутулурбуз, – деди.

Сора къыз:

– Атам юйге келир ашыгъып, ол мени юйде тапмаса, жетер бирайлыкъ жолгъа бир кюннге, андан эсе, терк къармашып, жолгъа чыкъсакъ иги болур, – деди.

Сора къыз, атасыны ат орунуна элтип жашны:

– Акътуякъ атны ал, – деди, – сүйген атымды ол мени. Анга бир жан жеталмаз. Киши къачып къутулмаз, аныча ат ёмюрде, излеп чыкъсанг, табылмаз.

Салды жаш атха жер, юсюне къонду эр. Атландыла ала жолгъа, сүймекликни алып къолгъа. Бир кюнню ичинде жетдиле ала жашны юйюне.

Барсала, атасы да ёлюп, анасы уа, жашны эсгерип:

– Къайда ёлген болур? – деп, жылай* тура эди.

* Жилйай.



Кирип барды жаш юйюне. Анасын кьучакълады. Анасына айтды битеу ишни болушун болушунлай. Сора кьыз, экинчи кюн окьуна барып, тенгизден алтын чабагъын чакъырып:

– Манга бир машок алтын керекди, – деди.

Чабакъ олсагъатда окьуна, тенгизни тьубюнден машок бла бир алтынны кетюрюп, жюзюп чыкъды. Кьыз алтынны юйге келтирди, экинчи кюн а жаш, битеу халкъны жыйып, тогъуз кюннге уллу той этди да, кьызны алып, ашап-жашап кьалдыла.

Суу патчакхны кьызы тапмагъан зат дуня башында жокъ эди. Сора ол тийреде аладан бай бир хан да болмай, зауукълу жашадыла. Жылла ётдюле, айла кетдиле. Къаракёзю да эки ариу эгиз сабийи болду. Ала да, аталары-аналарыча, акъыллы, ариу сабийле болуп ёсдюле.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 11 паспорт. КъМАСССР-ны Совет районуну Огъары Жемтала элинде 70-жыллыкъ Занкишиланы Окъупдан 29.08.1960 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Окъуп къартладан эшитгенди.

«Жашы бла атасы» деген жомакъ «квест» деген жанрда жазылгъанды. Мында жигитни жер-суу аулап айланнганы кесини ёз къадарын излегенини белгисиди.

СЫН И ОТЕЦ

Давным-давно старик со старухой жили на берегу большого моря. На старости лет у них родился сын, и они его называли Каракёз. Отец каждый день брал его с собой в море, чтобы ловить рыбу. А мать мальчика оставалась дома, выполняя домашние хлопоты.

В один из дней отец и сын заплывли далеко в море, стали рыбачить, вдруг из воды появилась красивая девушка, не заметно отцу, она показалась юноше, и тут же исчезла. Юноше шел восемнадцатый год. Юноша удивившись, отцу ничего не рассказывая, в тот день вернулся домой.

И на второй день та же девушка показалась парню и опять ушла в воду. Таким образом, в сердце юноши проникла любовь.

И на третий день юноша с отцом вышел в море. Снова юноша увидел девушку и, уже не выдерживая:

– Отец мой, сегодня в третий раз вижу одну красивую девушку, каждый день она из воды выходит и обратно в воду заходит и исчезает. Что это может быть? – спросил он.

А отец:

– Ай, сын мой, она многим в глаза показывалась, многих обманывала и устраняла их. На той стороне этого моря находится еще одно большое море, она переходит и через него, и если идти дорогой в один день, на стороне восхода, рядом с одной рекой, внутри оврага есть большая пещера, вот эта девушка живет там. К ней многие ходили, однако, из тех, кто к ней ходил, ни один обратно не вернулся, все они в той пещере нашли себе могилу. Оставь ты эти свои задумки, выкинь из головы, – подсказал отец.

Однако в сердце юноши поселилась любовь, он не послушался отца, отправился в дорогу. Отец с матерью: «Теперь мы своего единственного сына вряд ли увидим», – сказали и, обняв его:

– Пусть Аллах тебе поможет, вернись здоровым, – сказали и отправили в дорогу.

Юноша, сев на старую лодку своего отца, вышел в синее море. Постоянно проплывая, Каракёз достиг края моря. Он вышел из воды и залез на высокую гору: «Мой отец говорил, что за этим морем находится еще другое море», – сказал он и начал оглядываться. Когда пристально посмотрел, вдалеке, куда глаз человека с трудом достигал, как солнце, сверкая, показалось что-то синее. «Вот это, наверное, море», – подумал юноша и отправился туда. Идет, идет, но до моря не может дойти. После этого юноша дошел до густого леса. Посреди леса, в красивом небольшом ущелье один старик пас лошадей. Юноша пошел к нему в кошару. Старик принял молодого человека, как почетного гостя, и спросил, что он ищет. И юноша рассказал ему все, как есть, ничего не упуская, и от мужчины получил такой ответ:

– Ай, мой ребенок, ты отправился в очень опасный путь, туда отправлялись многие, но ни один из них не возвратился. У девушки отец – царь воды. Кто туда придет, того живым не отпускает, но если, ты безудержно хочешь сходить, возьми вот этот меч, и если попадешь в беду, в первую очередь кончиком меча дотронься до земли, а если захочешь перейти воду, кусок бревна брось в воду.

Каракёз взял меч, который дал ему старик и отправился в дорогу. Он долго шел, и, когда вышел в огромное море, кинул в воду кусок бревна, который дал ему старик. И тут же бревно стало большим кораблем у берега. Юноша сел в него, плыл сорок дней и переплыл на другую сторону моря. Оставив корабль на воде, он начал искать овраг, о котором говорил ему отец и отправился дальше в путь.

Идет юноша, идет на восход, но не видит того оврага. После этого к вечеру на берегу реки он нашел этот удивительный овраг. Овраг в целом был похож на голову желмауза*. А где находилась его пасть, там была дверь. А у входа: «Кто сюда войдет, то, что ищет, здесь найдет, но взять не сможет», – была такая надпись.

Юноша, долго не раздумывая, вошел в пещеру. Там он увидел удивительную вещь: посередине большой реки находился один большой, сверкающий, красивый дом, а чтобы дойти до дома, еще надо было сесть на золотую лодку. А лодку сторожил семиглавый, сильно волосатый эмеген с четырнадцатью ногами. Эмеген увидев юношу:

– Откуда ты взялся, собачий детеныш? Как хорошо, что ты появился на ужин, на вечернюю трапезу, какое ты будешь вкусное лакомство, – сказал он и накинулся на юношу.

Тут юноша аккуратно вытащил свой меч, после этого начался бой, большой бой. Юноша был похож на сокола, который с эмегеном бился семь дней! И тут на седьмой день эмеген начал его одолевать. А юноша:

«Оказывается, правду говорили люди, кто сюда приходит, не возвращается, и я не вернусь», – и он решил, что здесь умрет. После этого

* Желмаууз – мифический людоед, чудище, чудовище, дракон [3, 241].



юноша, вспомнив то, что говорил старый табунщик, кончиком старого меча дотронулся до земли. В это время меч стал большим и легким. И тут юноша одним ударом снес шесть голов эмегена, однако, седьмая голова еще долго боролась. И тут у юноши появилась большая сила, мощь – и юноша, собрав все свои силы, снес эмегену его седьмую медную голову, повалил ее на землю. Потом молодой человек спал три дня и три ночи, не просыпаясь, сладким сном. На четвертый день юноша проснулся. Он сел на лодку и пришел в дом. А в доме том было сорок отсеков. И сорок дверей сторожили семиглавые эмегены, которые не пропускали людей.

Перед первой дверью семиглавый эмеген, посмотрев на парня:

– Как пропустил тебя сюда семиглавый эмеген, самый сильный среди нас, собачий детеныш, почему ты пришел сюда? – спросил он и посмотрел на юношу со злостью.

А юноша:

– Конечно, он бы не пропустил меня сюда, если бы все было, как он пожелает. Иди, сходи, посмотри, его семь голов, покотившись, оказались передо мной, а тело находится на берегу реки: если среди вас он самый сильный, тогда все остальные вряд ли меня одолеете, и всех остальных головы снесу, пропусти меня лучше! Пропусти! – крикнул.

Эмеген, который это слышал, разгневавшись, накинулся на Каракёза. Каракёз без боязни вступил в бой. И начал сильно бороться. Девять дней боролся Каракёз без отдыха. После этого эмеген юноше:

– Подожди, передохнем три дня, после этого продолжим бой, – сказал.

Каракёз немного подустал и согласился на отдых. Они вдвоем отдохнули три дня и три ночи. После этого опять начинается бой. На тридцать первый день юноша снес с эмегена седьмую голову. Каракёз опять отдохнул три дня. После этого, он вошел во вторую комнату. Когда он туда пришел, и там перед дверью огромный семиглавый эмеген стоит со сверкающими глазами. Опять юноша вступил в бой. Сорок дней боролся Каракёз с эмегеном. После этого юноше в голову пришла мысль, которую ему подсказал табунщик. Юноша дотронулся до земли кончиком меча, и ударом снес все семь голов эмегена. Пока он дошел до сороковой комнаты, Каракёз с каждым эмегеном боролся по сорок дней, и поэтому прошло времени почти полгода. Когда он дошел до сороковой комнаты, у юноши иссякли силы, от большой усталости, ему показалось, что он прожил половину своей жизни. Если посмотреть на восемнадцатилетнего, можно было сказать, что он дожил до сорокалетия.

Избавившись от таких тревог, он вошел в сороковую комнату: на большой, красивой, мягкой кровати красивая девушка спала сладким сном. Как только юноша ее увидел, он сразу узнал, что эта та, которая была на море, на воде, и не в силах ее долго разглядывать, подошел и поцеловал ее в губы. Девушка проснулась, испуганно оглянулась по сторонам, увидела стоявшего рядом юношу, от сильного удивления чуть было сознание не потеряла.

Девушка начала звать своих эмегенов, но ни один из них не пришел. Она, рассердившись, вышла и посмотрела, без исключения, все головы были скинуты перед ними, а души их были отправлены в ад. После этого девушка юноше:

– Кто совершил такой благородный поступок? – спросила.

– Я, – ответил юноша уверенно, без страха.

После того, как юноша закончил говорить, от сильной усталости упал и его одолел сон. Долго ждала девушка, когда он проснется, однако он не просыпался. Девять дней и девять ночей спал юноша, не просыпаясь. На десятый день в полуденное время юноша раскрыл глаза: перед ним стояла девушка. После этого парень сел и рассказал девушке всю свою историю с самого начала до конца. Когда она это все услышала, от изумления и из-за сильной любви, она обняла юношу:

– Многие приходили сюда, однако, ни один из них не вернулся домой живым. Один ты смог столько эмегенов уничтожить, только ты смог войти сюда, в своей жизни кроме тебя, я ни за кого не выйду замуж, – сказала она и призналась ему в своей любви.

Юноша от большой радости не понимал, что происходит, во сне это или наяву. Тут девушка опечаленная говорит юноше:

– Мой отец отправился в далекий путь. Как он ушел, уже прошло два года, а ко времени его возвращения остается семь дней. Пока он не вернулся, мы должны уйти отсюда, увидев нас вместе, он в живых нас не оставит.

Юноша:

– Ты ничего не бойся, через семь дней мы будем далеко отсюда, от твоего отца мы спасемся без труда, – сказал он.

После этого девушка:

– Отец будет спешно возвращаться домой, когда он меня в доме не найдет, он быстро одолеет дорогу, один месяц за один день, будет лучше, если мы быстро соберемся и покинем это место, – сказала.

После этого девушка отвела юношу в конюшню отца:

– Выбери коня с белыми копытами, – сказала, – это мой любимый конь. Никакая душа его не догонит. Никто от него не убежит, такого коня всю жизнь будешь искать, но не найдешь.

Оседлал юноша коня, сел на него мужчина. И они отправились в дорогу, взяв в руки любовь. За один день они добрались до дома юноши. Когда они туда пришли, то узнали, что его отец уже умер, а мать, вспоминая сына:

– Где же он мог умереть? – говорила и плакала.

Зашел в свой дом юноша. Обнял мать. И рассказал ей все, как было, ничего не пропуская. Девушка на второй день сходила к морю, и, вызвав свою золотую рыбу:

– Мне нужен один мешок золота, – сказала.

И рыба, тут же со дна моря подняла полный мешок золота, вытащила наверх. Девушка принесла золото домой, а на второй день юноша собрал весь народ и на девять дней совершили той*, молодые поженились, остались жить да поживать.

Не было на свете ничего, чтобы не смогла достать дочь царя воды. И в этой округе не было ханов богаче их. Они зажили счастливо. Прошло много лет, много месяцев ушло. И у Каракёза родились двое красивых детей. И они так же, как их родители, выросли умными и красивыми людьми.

* Той – свадьба, свадебный пир; танцы, пир, веселье; торжество, праздник [3, 641].



*Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 1.
Записал И.И. Гузеев 29.08.1960 г. в с. Верхняя Жемтала Советского района
КБАССР от 70-летнего Занкишиева Окуба.*

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Окуб слышал от стариков.

«Сын и отец» – типичная сказка, написанная в жанре «квест», где географические странствия героя оборачиваются поиском самого себя. В конкретно-событийном плане речь идет о разумном выборе спутницы жизни.



КЪАРАКЕЗ

Эмегенле кѐп болгъандыла. Адам улу бла демлеше, аланы артлары болгъанды. Сора бек артда бир сокъур эмеген къалгъанды.

– Энди не этейим, къайры барайым? Къайда жашайым? Нѐгерлерим да кырылдыла, жокъ болдула. Ым-м-м, – дегенди да, жылагъанды* эмеген.

Аны жылагъанын къарт аппа эшитгенди да, анга келгенди:

– Нек жылайса, эмеген? – дегенди аппа.

– Да мен жыламасам, ким жыласын? Дуниялыкъда биз кѐп болуучу эдик. Иги жашаучу эдик. Энди уа эмегенлени бири да къалмады. Харип-мугур болуп къалдыкъ. Энди мен да ѐлюр кюнюме жетгенме. Жашымдан туугъан бир кызы барды да, аны да, адам улундан къоркъуп, агъачда букъдургъанма. Энди мен ѐлсем, ол да агъачда къалса, бизни бютюнда артыбыз болуп къалмазмы деп, анга да жылайма. Ы-ы-ы, – дегенди биягъы эмеген.

Эмегеннге асыры жүреги эригенден, къарт аппа да жылагъанды.

– Огъесе, харип, бар да, жашынгы кызын бери ал да, кел. Мен тутарма аны. Кызыны аманатлыгъы мени болсун, сизни тукъумугъузну ѐчюрмем, – дегенди аппа.

Ахсай-ахсай кетгенди эмеген. Сора жашындан туугъан кызыны алып келгенди. Келтирсе уа – ариулугъу кѐз къамата, акъылы бла сѐз байлата, жолукъгъаннга балча, жауча жагъыла, бир ариу. Юсюнде жокъ, башында жокъ, халкъ аны кѐргенде, бек эригенди, инжилгенди. Барысы да эмегенни кызын ариу кѐрюрге айтхандыла. Сора къарт аппа юйюне элтгенди да, кызыгъа хапар соргъанды.

– Мени атым Къаракѐз,

Айтырыгъым ма бу сѐз, – деп, жыргъа салып башлагъанды

Къаракѐз. –

Мени атам эмеген,

Юйге къуру кирмеген.

Бир жол уугъа баргъанды,

Ууда ол бек арыгъанды.

Кенгден къарап,

Адам улун таныгъанды.

Кенгден аны Адам улу кѐргенди,

Ушкогун да аны таба бургъанды.

Жууукъ келип эмегенден соргъанды:

– Сен бери нек келгенсе?

Бу жерни къалай таныгъанса?

Бу жерде адам улу жашайды.

Эмегеннге бери келирге жарамайды.

Сенсе, – деди, – эмеген,

Отдан кесеу сермеген,

Адам улун тюгюнге да кѐрмеген!

Сени бла сермеширге келдим мен.

Аллах арада болсун ансы,

Сенден ахшылыкъ кѐрмем мен.

* Жиягъанды.



– Угъай, – деди эмеген,
Отдан кесеу сермеген,
Ёмюрде кьоркьуу кёрмеген. –
Сенсе, – деди, – Адам улу,
Тау аллында журт салгъан,
Ёмюрледе эмегеннге жау болгъан!
Кёп заманны сермешиуден арыдыкъ,
Бюгюн мында бир бирибизни таныдыкъ.
Сен манга энди аллай сёзле айтмагъын,
Жауду, – деп, манга огъунгу да атмагъын! –
Андан ала жарашдыла,
Эллерине барышдыла,
Бир бирден къыз алышдыла.
Мен туугъанма Адам улуну эгечинден,
Хорлукъ кёрюп, ёлеме мен жүрегимден.
Атам да ёлдю тюзледе,
Анам да ёлдю таулада.
Башым кьалды бу дуньяда кьаугъагъа.
Кёп кюнлени агъачлада букъгъанма,
Жалан бюгюн мен агъачдан чыкъгъанма.
Ийнанама, сиз мени энди
Ёлюрюмю суймезсиз,
Мени даугъа керексизине бермезсиз.
Мен да алай, адам улундан туугъанма,
Атымы да эмегенден Къаракёзге бургъанма.

Аны эшитген кьарт аппаны эки кёзюнден кёз жашлары тёгюле башладыла.

– Тохта, – дегенди кьарт аппа, жыламукъларын да сыгъа. – Сен Адам улуну эгечинден туугъан болсанг, Адам улу мени жашым болгъанды. Адам улуну онбеш жылы жетгенде, жауларыбыз мени урлап кетгендиле. Жыйырма жыл тутмакъ юйюн сынадым. Кёп кюнлени мен да ачы жыладым. Ахырында андан кьайтып кьутулдум. Келгенимде Адам улун тапмадым. Мен келирге ол а ит ауруудан ёлгенди. Андан жангыз Салим-батыр кьалгъанды. Аны быйыл жыйырма бла беш жылыды. Ол да уудан бир эки кюнден келликди, – деп, аппа хапарын бошады.

Къаракёзню жыламукълары женгил-женгил саркьа башладыла. Экиси да кьучакълашып, айырылалмай кёп турдула. Аланы кёрген халкъ да эрип инжилди.

– Ой, кьарт атабыз кызындан туугъанны тапханды! Ой, кьууанч! Ичги кьайда, той кьайда?!

Салим-батыр да келгенди. Эгеч бла кьарындаш, тап эки айланып туугъанла, бир бирлерин женгил окъуна таныдыла. Аланы тюбешиулерине ай да, кюн да тохтап кьарай эдиле, дейдиле.

Сокьур эмеген да бек кьууаннганды. Жашындан туугъанны насыплы болгъанын бек суйгенди. Эмеген андан кёп жашамай ёлгенди. Салим бла Къаракёз да, эгеч бла кьарындаш болуп, жашап кьалгъандыла. Экиси, бир бирден айырылмай, алай барып болгъандыла уугъа да. Ала жашагъан элге уллу мамырлыкъ келгенди. Аланы халкъ да бек суйгенди.

Салим-батыр туугъан элин жауларындан кьаты сакълап болгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 18 паспорт. КъМАССР-ны Хасания элинде Мокъаланы Кучукну жашы Къурманбийден Таумырзаланы Д.М. 1960 жылда жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Къаракёз» деген жомакъда болгъан магъана, халкъны кёлден чыгъармачылыкъ хазнасында бек аз тюбейди. Анда адамла бла эмегенле, узакъ ёмюрлени бир бирлери бла къажасулукъда жашап, артда шуёх болгъанлары кёргюзтюлюнеди.

Былайда окъуучуну акъылын кесине бёлдюрген Къаракёзню сыфатыды – ол адам улудан бла эмегенден жаратылгъан жанды. Ол, бир бирге къажасу турууну ахырыны белгиси болуп, жашауну жангы чагъыны баиланганын чертеди.

КАРАКЁЗ

Эмегенов* было много. Они сражались с людьми, и им пришел конец. После всего, в самом конце остался один слепой эмеген.

– Что мне теперь делать, куда мне идти? Где мне жить? И друзья мои истреблены, исчезли. Ымм-м, – сказал эмеген и заплакал.

Как он плачет, услышал один старик. И этот старик пришел:

– Чего ты плачешь, эмеген? – спросил дед.

– Да, если не я буду плакать, то кто будет плакать? Когда-то на свете нас было много. Мы жили хорошо. А теперь из эмегенов ни одного не осталось. Мы бедные, совсем осиротели. Теперь и я дошел до смертного дня. Есть девушка, которая родилась от моего сына, но из-за боязни людей я ее тоже спрятал в лесу. Если я умру, и она останется в лесу, неужели нам на самом деле придет конец, вот из-за этого я плачу.

– Ы-ы-ы, – плакал все тот же эмеген.

Из-за большой жалости к эмегену старик тоже расплакался.

– Иди же, бедный, приведи сюда свою дочь. Я присмотрю за ней. За девушку я буду нести ответственность, вашему роду, конечно, я не дам угаснуть, – сказал дед.

Прихрамывая, ушел эмеген. После этого он привел девушку. Своей красотой она слепила глаза, умом поддерживала беседу, ее слова для встречного были как мед, как масло, просто красавица. На ней не было ничего, голова не покрытая, когда народ ее видел, сильно сожалел, страдал. И все они решили, что будут хорошо относиться к дочери эмегена. Дедушка привел ее к себе домой и попросил девушку рассказать о себе.

– Меня зовут Каракёз.

А хочу сказать вот эти слова, – сказала она и начала в песенной манере излагать свою жизнь: –

Мой отец – эмеген,

Который домой не возвращался пустым.

Однажды пошел на охоту,

И на охоте он сильно устал.

* Эмеген – чудовище, циклоп, великан [6, 1070]. Встречается также в карачаево-балкарском нартском эпосе.

Издалика посмотрев,
Он узнал Адам улу.
Издалика его увидел Адам улу
И ружье свое направил в его сторону.
Подходя близко, он спросил у эмегена:
– Зачем ты сюда пришел?
Эту землю, откуда ты узнал?
На этой земле живут люди.
Эмегенам нельзя сюда приходиться.
Это ты, – сказал, – эмеген,
Из огня вытаскивающий головешку,
Людей ни во что не ставящий!
Я пришел повоевать с тобой.
Аллах пусть будет между нами, от тебя я добра не жду.
– Нет, – сказал эмеген,
Вытаскивающий головешку из огня,
В жизни не испытанный страха. –
Это ты, – сказал, – Адам улу,
В горах построивший дом, жилище,
Веками враждующий с эмегенами.
Давно мы устали от войны,
Сегодня мы здесь узнали друг друга.
Теперь ты мне такие слова не говори,
Говоря: «Враг», – в меня свои пули не пускай! –
После этого они помирились,
Вернулись в свои селения,
Посватались к девушкам друг у друга.
Я родилась от женщины человеческого племени,
Насилие мое сердце не выдерживает.
И мой отец погиб в степях,
И моя мать умерла в горах.
Моя голова в этой жизни в тревоге.
Много дней я пряталась в лесу,
Лишь сегодня я вышла из леса.
Я верю, что вы теперь
Не захотите моей смерти,
Меня вы не отдадите тяжбе.
Я тоже родилась от человеческого племени,
И свое имя от эмегена я поменяла на Каракёз.

У старика, который слышал эти слова, из глаз полились слезы.

– Подожди, – сказал старик, вытирая свои слезы. Если ты родом из людей, то Адам улу был моим сыном. Когда Адам улу исполнилось пятнадцать лет, наши враги меня украли и увезли. Двадцать лет я терпел тюремное заключение. Много дней я тоже горько плакал. В конце я вернулся оттуда, освободившись. Когда пришел, я не нашел Адам улу. К моему приходу он умер от собачьей болезни. От него остался лишь Салим-батыр. Ему в этом году исполняется двадцать пять лет. Он тоже с охоты вернется через пару дней, – сказал старик и закончил свой рассказ.



Из глаз Каракёз тут же полились слезы. Они вдвоем, обнявшись, не в силах расстаться, долго стояли. Народ, который их видел, тоже сострадал, смотрел жалостливо.

– Ой, наш дедушка нашел свою внучку, родившуюся от дочери! Ой, какая радость! Давайте пировать, радоваться!

Салим-батыр тоже вернулся. Сестра и брат, прямо двоюродные, друг друга сразу же узнали. На их встречу и луна, и солнце глядели, остановившись, говорят.

Слепой эмеген тоже сильно обрадовался. Был в восторге от счастья внучки, родившейся от сына. Эмеген, после этого долго не прожив, умер. Салим и Каракёз, став братом и сестрой, стали жить. Они друг с другом никогда не расставались, и на охоту отправлялись вместе. В то селение, где они жили, пришло большое благоденствие. Народ их тоже сильно любил.

Салим-батыр родное селение охранял от врагов всегда надежно.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 18. Записал Д.М. Таумурзаев в 1960 г. в с. Хасанья КБАССР от Мокаева Курманбия Кучуковича.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказка записана на цокающем диалекте.

Редкостная по содержанию сказка, где речь идет о примирении извечных врагов – человека и эмегена. Большой интерес вызывает образ транссущества (Каракёз), ставшего символом окончания междоусобной войны и начала нового витка межкультурной коммуникации.



ЫНДЫРБАЙ УЛУ МАХАМЕТ

– Бир жол уугъа баргъанем да, бир кийикни ёлтюрюп, мен да шишлик этип ашаргъа тебирегенлей, кийик сау болуп, секирип, къачып кетген эди. Мени ёмюрюмде мен андан сейир затха да тубемегенме, – дегенди (бир уучу – Ф.Г.).

– Ай, ол а алай сейир туююлдо, сейирликни уа Ындырбай улу Махаметге сорсанг, ол айтыр, – деп, бир нёгери айтханды.

– Къайдады ол? Мен аны къайда табайым? – дегенди.

Аны къайда жашагъанын билип келсе, ол а ындыр эте болгъанды. Ол да кийик бла кёрген хапарын айтып, Ындырбай улу андан сейирлик кёргенмиди дегенде, ол кёргенме деп, былай айтып башлады:

– Бир элде бир ариу къатын бар эди да, ол эки кере эрге баргъан эди, алай ал кечесинде окъуна эки кишиси да ёлюп чыкыгъан эдиле. Мен ол къатынны суююп алдым да, ал кечесинде, мен отоугъа кирип тешинирге тебирегенлей, эшик къагъылды. Мен да эшикни ачханлай, къамичи бла биреу: «Яллах, сен муну ат эт!» – деп урду да, мен ат болдум да, нохтаны башыма салып, чалманнга такъды да, танг атаргъа дери турдум.

Эрттенликде биягъы киши, чыгъып, биягъы къамичи бла урду да, биягъы адам этди да, кетди. Мен да, келип, къатыныма: «Сен мени нек излемеген эдинг?!» – деп урушдум, ол да: «Къоймагъанды!» – деп, ачыу-чочуугъа къалды.

Экинчи кече да, биягъы жатаргъа тебирегенлей, эшик къагъылды. Мен ачмазгъа умут этдим, алай къатын айып этди да, мен да, къамамы да къолума алып, эшикни ачханлай: «Яллах, сен муну ит эт!» – деп, къамичи бла урду да, ит болуп, эл тубюнде айлана къалдым.

Мени киши танымай, иесиз болгъаным себепли, хар ким «ыр» дей да, къыстай, ач да болуп, элден чыгъып бара кетеме да, бир къошха жетип баргъанлай, эки ит чапдыла да, талап, халек этдиле. Алай иелери, кёрюп, чабып, итлени да къыстады, манга да жарсып: «Бу иги ит ач кёреме», – деп, ит тегенеге аш къуйду, алай мен а ашамадым.

«Бу не аламатды!» – деп, аякъ бла аш келтирди да, ашадым. Андан сора, мени эсим болгъанны сезип, кесине къойду.

Бёрю, келип, кече сайын къойладан ашап кете эди. Ол эки ит бир да тийип болмайдыла. Къойланы иеси: «Энди бу къонакъ ит туталмаса, бу бёрю уллу халеклик этеди», – деди да, сакълап туруп, бёрюню тутуп, юйню аллына элтип кесдим да, сора мени бек суююп, иги багъып башлады.

Мен ол бёрюню тутхандан сора, бир бёлек жыл ыстауат тынч болду.

Бир жол а ол мени иеми бир жууугъу, мени хапарымы эшитип: «Манга бир эки-юч кечеге бу сени адам акъыллы итинги бер», – деп тиледи да, бек ауурсунуп берди.

Мени элтди юйюне.

Ол кишини уа жангыз бир къызы бар эди да, аны уа хар кечеден обур бууа эди да, манга сакъла дедиле да, мен да сакълап тургъанлай, ожакъ бла бир кече бир обур келди да, сермеп тутдум да, обур айтды: «Мен сен Ындырбай улу болгъанынги билеме. Къызгъа энди келмен, санга да бир кюнде жарарма, мени жибер», – деди да, жибердим.

Кезиуом жетип, ол киши, мени иеме деп боюнума да алтынла тагъып, элтип барганлай, къачып, юйюме келсем, къатыным мени танып: «Сен кесинг семирп айланаса, бери уа келликсе!» – деп, жанлай келип, боюнумда алтынланы да алып, манга уа къарамай къойду.

Юйге кирип, къамичи бла чыгъып: «Яллах, сен муну уку эт!» – деп урду да, уку болуп, сабийле туюе, айландым. Бутуму да сындырдыла. Бир къатын, аны кёрюп, сабийлеге аш берип, мени алды. Юйюне элтди да, бутуму да сау этди.

«Сени урган къамичи юйде турады. Сен къатынынг болмагъан заманда юйге кир да, ол къамичиге кесинги ышы», – деди да, бардым да, алай этдим да, биягъы адам болдум. Къамичини алып, экисин да урдум да, эки эшек болдула.

Энди андан бери не ёгюз этеме, не эшек этеме, ишлетип турама, – деди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 19 папка, 4 паспорт. КъМАССР-ны Булунгу элинде жашагъан 72-жыллыкъ Сарбаиланы Къаншауну жашы Измайдан 1958 жылны май айында Улбаиланы А.М. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Сейир-тамаша жомакъ. Бу сюжетге къуралгъан бирси чыгъармаладан эсе («Бай улу Бат», «Бай улу Махамет») къысхаракъ бериледи. Жомакъда мажюсю, ислам динлени да ызлары эслендиле.

ЫНДЫРБАЕВ МАХАМЕТ

– Как-то раз я пошел на охоту и когда, убив одного оленя, приготовив шашлык, собрался съесть, олень, ожив, вскочив, убежал. На своем веку я более удивительной вещи не встречал, – сказал один охотник.

– Ай, а это не так удивительно, а про диво, если у Ындырбаева Махамета спросишь, он расскажет, – ответил один из его спутников.

– Где он? Где мне его найти? – сказал.

Когда, узнав, где живет, пришел, а он зерно молотил. Когда он, рассказав историю, виденную (произошедшую) с оленем, спросил, видел ли Ындырбаев более удивительное, он, сказав, что видел, так начал говорить:

– В одном селе была одна красивая женщина, и она дважды выходила замуж, однако в первую же ночь оба ее мужа умерли. Я эту женщину, полюбив, взял (женился), и в первую ночь, едва я, войдя в комнату, начал раздеваться, в дверь постучали. Как только я открыл дверь, кто-то плетью: «Я Аллах, ты его конем сделай», – сказав, ударил, и я превратился в коня, и, надев на мою голову уздечку, к плетню привязал, и до утра я простоял.

Утром тот же мужчина, выйдя, опять плетью ударил и снова превратил в человека и ушел. И я, придя, жену: «Ты меня почему не искала?!» – сказав, обругал, а она: «Не позволил!» – ответив, стала злиться-обижаться.

И на вторую ночь, когда снова собрались ложиться спать, в дверь постучались. Я задумал не открывать, но жена пристыдила, и когда я, взяв в руки свой кинжал, открыл дверь: «Я Аллах, ты его собакой сделай!» – сказав, ударил плетью, и, став собакой, по селу стал бродить.



Меня никто не узнавал, из-за того, что бесхозный, каждый, говоря «ыр», отгоняя, проголодавшись, выйдя из села, брел, и на подходе к одной кошаре две собаки набросились и, искусав, изуродовали. Однако их хозяин, увидев, подбежав, и собак отогнал, и меня пожалев: «Эта хорошая псина, видать, голодна», – сказав, в собачью миску налил еду, но я не съел.

«Это что за чудеса!» – сказав, в чаше еду принес, и я поел. После этого, почувствовав, что у меня есть разум, оставил себе.

Волк, приходя, каждую ночь из баранов съедая, уходил. Эти два пса никак (его) не трогали. Хозяин овец: «Теперь если и этот пес-гость не сможет поймать, этот волк большой урон наносит», – сказал, и, подождав, волка, поймав, к дому отведя, зарезал (задушил), и после этого меня, очень полюбив, хорошо стал кормить.

После того, как я того волка поймал, несколько лет стадо пребывало в покое.

А однажды один родственник моего хозяина, услышав мою историю: «Мне на две-три ночи этого своего по-человечески разумного пса дай», – сказав, попросил, и (хозяин) очень нехотя отдал.

Меня отвел к себе домой.

А у этого мужчины была одна единственная дочь, а ее каждую ночь душила ведьма, и мне повелели стеречь, и, когда я стерег, через дымоход одной ночью ведьма пришла, и (я ее), схватив, поймал, а ведьма сказала: «Я знаю, что ты сын Ындырбаев. К девушке больше не приду, и тебе в один день пригожусь, отпусти меня», – проговорила, и (я) отпустил.

Когда настал мой срок, этот мужчина меня, и на мою шею повесив золото для моего хозяина, повел, убежав, когда к себе домой пришел, жена, меня узнав: «Ты сам, растолстев, бродишь, а сюда придешь!» – сказав, подобравшись, забрав и золото с моей шеи, на меня и не посмотрела.

Зайдя домой, выйдя с плетью: «Я Аллах, ты его совой сделай», – сказав, ударила, и, став совой, избиваемый детьми летал. И лапку мне сломали. Одна женщина, увидев это, дав детям еды, меня забрала. Отнесла к себе домой и ногу мою вылечила.

«Ударившая тебя плеть находится дома. Ты, когда твоей жены не будет, войди в дом и о ту плеть потрись», – сказала, и (я) полетел и сделал так, и снова стал человеком. Взяв плеть, их обоих ударил, и (они) превратились в двух ослов.

Теперь с тех пор либо в волов превращаю, либо в ослов превращаю, заставляю работать, – сказал.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 4. Записал А.М. Ульбашев в мае 1958 г. в с. Булунгу Чегемского района КБАССР от 72-летнего Сарбашева Измая Канишауовича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебная сказка. Дается более сокращенно, чем другие произведения, основанные на данном сюжете («Баев Бат», «Баев Махамет»). В сказке прослеживаются следы языческой и исламской религий.

БАЙ УЛУ БАТ

Къарашауайны айтхылыкъ къамичиси, айлана-жюрюй кетгенде, Бай улу Батны къолуна тюшгенди. Аны агъачда бир аман эчкиси болгъанды. Бир мараучу, бара-барып, ол эчкини ёлтюргенди. Этин терек башына такъгъанды. Ичин шишлик этерге отха салгъанлай, быкъыдан эт жерге тюшюп, жан кирип, сау болуп, къачып тебирегенди. Мараучу аны алай болгъанына бек сейирсингенди. Сора эчки анга:

– Мени алай нек болгъанымы Бай улу Батха сорсанг, ол айтыр, – дегенди.

Мараучу, Бай улу Батны излеп, жолгъа чыкъгъанды. Излей кетип, аны тапханды. Бай улу Бат эки эшек бла ындыр баса болгъанды.

Мараучу, аны бла саламлашып:

– Бай улу Бат сенмисе? – деп соргъанды. – Эчкини ёлтюргенме да, ол сау болуп къалгъанды. Сени не сейирлигинг барды? – деп соргъанды.

Бай улу Бат айтханды:

– Ма бу жатып тургъан эшекледен бирлери къатынымды, бирлери уа тос тургъан кишисиди. Бу къамичи бла урсам, бири мегежин, бири къабан болуп къаллыкъдыла, – деди.

Аланы урду, ала агъачха къачдыла.

– Ол къамичи манга жетдирмеген зат къалмагъанды, – дегенди. – Бир кюн ожакъ бла тюшюп, барып, сыртымы къамичиге ышыдым, адам болдум, аланы уа къамичи бла урдум, тонгузла этип, агъачха къыстагъанма, – деди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 10 паспорт. КъЧАО-ну «Теберда» курортунда 78-жыллыкъ Къанаматланы Лолокайны жашы Омардан 29.07.1968 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Омар атасы Къанаматланы Лолокайдан эшитгенди.

Сейир-тамаша жомакъ. «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Махамет» деген чыгъармалада ачыкъланган сюжетни къысхартылгъан, кемлиги болгъан версиясы. Мында баш жигит кёрген къыйынлыкъланы суратланыуу берилмейди. Бу чыгъарманы айырмалагъан шарт – сейирлик къамичини биринчи иеси нарт жигит Къарашауай болгъанды. Бу жомакъда да баш жигит, аны излеп тапханда, ындыр баса турады.

БАЕВ БАТ

Знаменитая плеть Карашауая, путешествуя, попала в руки Баева Бата. У него в лесу была одна плохая коза. Один охотник, придя, ту козу убил. Ее мясо на верх дерева повесил. Когда внутренности, чтобы шашлык сделать, на огонь поставил, с быкы* мясо на землю упав, ожив, выздоровев, начала убежать (коза). Охотник очень удивился тому, что так произошло. Тогда коза ему:

* *Быкы (быкы)* – ствол с коротко обрезанными и заостренными ветками для подшивания мяса, посуды, бурдюка и т.п. [4, 543].

– Почему со мной так случилось, если спросишь у Баева Бата, он ответит, – сказала.

Охотник, ища Баева Бата, вышел в путь. Разыскивая, нашел его. Баев Бат с двумя ослами молотил зерно.

Охотник, поздоровавшись с ним:

– Баев Бат ты? – спросил. – Я убил козу, а она ожила. Что в тебе удивительного есть? – спросил.

Баев Бат сказал:

– Вот из этих лежащих ослов один – моя жена, а один – бывший ее любовником мужчина. Если этой плетью ударю, один свиньей, а один кабаном станут, – ответил.

Их ударил, они в лес убежали.

– Нет ничего, чего бы эта плеть не заставила меня испытать, – сказал. – В один день, спустившись через дымоход, подойдя, спиной потерся о плеть, стал человеком, а их ударил плетью, превратив в свиней, прогнал в лес, – ответил.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 10. Записал А.З. Холаев 29.07.1968 г. на курорте «Теберда» в КЧАО от 78-летнего Канаматова Умара Лолокаевича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Сказку Омар слышал от своего отца Канаматова Лолокая.

Волшебная сказка. Сокращенная, неполная версия сюжета, раскрываемого в произведениях «Бндырбаев Махамет», «Баев Махамет». Здесь отсутствует описание превращений и страданий, пережитых главным героем. Отличительная черта данного произведения – первым владельцем чудесной плети выступает нартский герой Карашауай. В этой сказке герой, когда его находят после поисков, также занимается молотьбой зерна.



БАЙ УЛУ МАХАМЕТ

Эртте-эртте бир жаш уучу кьошха баргъанды. Сора, чыгып, бир кийик ёлтюргенди. Сойгъанды, жарашдыргъанды. Эт бишерден алгъа шишлик этгенди. Андан ашаргъа башлагъанлай, (кийик, – *Ф.Г.*) сау болуп, къачаргъа башлагъанды.

Сора жаш:

– Аллах-аллах, бу не сейир, аламат ишди?! – дегенди.

– Сейир-аламатны билирге сую эсенг, Бай улу Махаметге барып сура, – дегенди кийик.

Сора мараучу жаш:

– Мен адам туююлме, бу иш не зат эсе да, сормай кьойсам! – деп, жолгъа чыккыгъанды.

Былай бла уучу, юч кюн, юч кече айлана, жолгъа чыккыгъанды.

Бара-барып, бир элге жетгенди. Элни кыйырында бир тиширугъа:

– Бай улу Махаметни юю кьайдады? – деп соргъанды.

Къатын айтханды:

– Ма алайда, ма юч эшек бла ындыр эте тургъан Бай улу Махаметди, – дегенди.

Сора, бара-барып, салам бергенди. Ол да, саламын алып:

– Кел, жууукъ бол, – дегенди.

Сора айтханды:

– Юйге да барырбыз, мени бир сорлугъум барды, – деп тилегенди.

– Айт, не зат эсе да, – дегенинде, айтханды:

– Уугъа чыккыгъан эдим. Бир кийик ёлтюрюп, шишлик этип, «бисмилляхий» деп, къабаргъа башлагъанлай, сау болуп, къачаргъа башлагъанында: «Бу не сейирди, не аламатды?» – деген эдим. Ол заманда кийик: «Сейир-аламатны Бай улу Махамет айтыр», – дегенди.

– Да алай эсе, сейир-аламатны мен айтайым, – деп башлагъанды. – Мени бек ариу къатыным бар эди.

Кесим ишден келген эдим. Юй аллымда бир ат тагылып тура эди. Юйге киргенимде, бир киши къатыным бла жатып тура эди. Алай жатып тургъанын кёргенимлей, мен ачыуландым. Къатыным, туруп, мени къамичи бла уруп, ит этип кьойду. Кеси да тосу бла къалды.

Акылым жеринде, алай бла орамгъа чыккыдым. Чыккысам, малла бла кьошну кёчюрюп баргъанларын кёрдюм, ызларындан тагылып тебиредим. Итле чапсала, арба, этек тюплерине кире эдим. Мени алай кёргенлеринде: «Бу адам акылы затды», – деп, манга эс берип башладыла.

Сора бир элде бай болгъанды. Аны уа сабийлерин обурла ашап болгъанды. Сора ол байны ююнде той болгъанды. Ол бай, итни хапарын эшитип, итни иесин чакъырып: «Бюгече итни мени ююню сакъларгъа бер», – деп тилегенди. Ол да, тилегенде, итни бергенди.

Ит сакълай туруп, бир заманда обур, хулом-мулом болуп, юйге сабийни ашаргъа киргенди. Ит, сермеп, къолгъа алгъанды. Ол заманда обур айтханды: «Къой, энди келмем, мен санга болушурма, санга энтта бир кыйынылыкъ тюшерикди, андан къутхарырма», – дегенди.

(Ит обурну жибергенди. – *Ф.Г.*)



Сора бай тилегенди: «Бу итни сатыгъыз», – деп. Сюрюучюле айтхандыла: «Угъай, баш сатмабыз, алай хакъын берсенг, юч айгъа дери къоярбыз», – деп, юч айгъа уллу багъасы бла жарашдыргъандыла. Сора, оноу эте келип, кийиз хуржун бла келтирип, алтынланы боюнуна такъдыла.

Бай: «Бу ит эриге да болур, сынжырдан ийип да, ары-бери иерге да керекди», – дей эди. Аш этип, тегенеге къуйсала да, ашамай эди.

(Бай итни сынжырдан ийди. – *Ф.Г.*) Сора ит, боюнунда алтын хуржуну бла, къатыны болгъан жерге баргъанды. Юйге киргенинде, къатыны орундукъ юсюнде олтуруп, тигиу эте, тос эри да артында жатып тургъанын кѳргенди.

Ит аллына барып сюелгенде, къатын: «Бойнакъ, харип», – деп боюнунда хуржунну къыпты бла кесип алгъанды. Экинчи, къамичи бла уруп, уку этип къойгъанды.

Уку, уча барып, бир гебен башына къоннганды. Сабийчикле тутабыз деп, къанатын да сындырып кюреше тургъанлай, ол обур къатын, къайдан эсе да келе, танып, укуну сабийлени къолларындан алып, юйюне келтирип, багып, сау этгенди.

Сора, уку сау болгъанлай, обур айтханды: «Энди мен сени азат этеме. Ма бу дарманны ал да, уку болгъанлай бар да, ожакъдан тюш. Ала жукълап болурла. Бу дармандан кесинге сюрт да, юч кере кесинги ундурукъгъа ышы. Акъырын орундукъ тюбюнден къамичини чыгъарып, эшек, ат, не суйсенг да: «Ол бол!» – деп уурса, – деп юйретип ийгенди.

Уку барып, ол айтханча этип, къамичи бла ургъанды. Экиси да эки къара эшек болгъандыла.

– Ма кѳресе, суйсем эшек, суйсем да ат, ѳгюз этеме, кече болса, балчыкъ орунга жыяма. Ма бу къатыным, ма бу да аны тос эриди, – деп, тамаша хапарны айтды. – Ма бу затны билир ючюн, кийик сени манга ийгенди, – деп хапарны бошагъанды.

КѳМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 11 паспорт. КѳМАССР-ны Быллым элинде 55-жыллыкъ Кѳулийланы Сапий Оччай кызындан 6.08.1959 жылда Шахмырзаланы С.О. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

Сейир-тамаша жомакъ. «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат» деген чыгъармалада айтылгъан сюжетни бир тюрлюсю. Алай мында баш жигитге укудан биягъы адам болурча, сейир къамичиге тийип къоймай, обур берген дарманны да юйюне жагъып, кесин ол къамичи тюбюнде тургъан ундурукъгъа юч кере ышыргъа керек болады.

Текстни кемчиликлери барды: болгъан ишлени суратланыу тынгылы, бир бири ызындан берилмейди, къатышдырылынды, баш жигитни хапары алгъа аны кесини атындан бардырылады, артдан ючюнчю бетден, ахырында уа биягъы Бай улу Махамет айтады.

БАЕВ МАХАМЕТ

Давным-давно один парень на охотничью кошару отправился. Затем, выйдя, одного оленя убил. Зарезал, разделал. До того, как мясо сварилось,

шашлык приготовил. Когда собрался его отведать, (олень,) ожив, начал убегать.

Тогда парень:

– Аллах-аллах, это что за удивительное, поразительное дело?! – сказал.

– Если диво-дивное узнать хочешь, к Баеву Махамету, сходяв, спроси, – ответил олень.

Тогда парень-охотник:

– Я не человек, если, не спросив, оставлю, что это за дело! – воскликнув, отправился в путь.

Таким образом, охотник, бродя три дня, три ночи, вышел на дорогу.

Бредя-бредя, до одного села добрался. На краю села одну женщину:

– Где дом Баева Махамета? – спросил.

Женщина ответила:

– Вон там, вот с тремя ослами молотящий зерно – Баев Махамет, – сказала.

Тогда, подойдя, поприветствовал. И он, его приветствие приняв:

– Иди, добро пожаловать, – ответил.

Тогда молвил:

– И домой зайдем, у меня один вопрос есть, – сказав, попросил.

– Говори, что бы то ни было, – когда ответил, произнес:

– Я как-то вышел на охоту. Одного оленя убив, приготовив шашлык, сказав «бисмилляхий», когда собрался откусить, ожив, когда начал убегать (олень): «Это что за диво, что за чудо?» – сказал. Тогда олень: «Про чудо-чудное Баев Махамет расскажет», – сказал.

– Ну коли так, про чудо-чудное я расскажу, – сказав, начал. – У меня была очень красивая жена.

Сам (как-то) пришел с работы. Перед домом одна лошадь была привязана. Когда вошел в дом, один мужчина с моей женой лежал. Когда увидел, что так лежит, я рассердился. Моя жена, встав, ударив меня плетью, превратила в собаку. И сама с любовником осталась.

Разум на месте, так на улицу вышел. Когда вышел, увидел, что со скотом кошару переселяют, за ними следом увязавшись, двинулся. Если собаки набегут, под арбы, под их подола прятался. Когда меня так увидели: «Это по-человечески разумное существо», – сказав, начали уделять мне внимание.

Еще в одном селе бай был. А его детей ведьма поедала. Затем в доме того бая случилось празднество. Тот бай, услышав историю той собаки, позвав хозяина собаки: «Сегодня ночью собаку мой дом сторожить дай», – сказав, попросил. И он, когда попросил, собаку отдал.

Когда собака стерегла, в один момент ведьма, став хулом-мулом*, домой, чтобы ребенка съесть, вошла. Собака, схватив, поймала. Тогда ведьма сказала: «Оставь, больше не приду, я тебе помогу, тебе еще одна трудность выпадет, от нее спасу», – промолвила.

(Собака ведьму отпустила.)

Тогда бай попросил: «Продайте эту собаку». Пастухи ответили: «Нет, голову не продадим, но, если цену дашь, до трех месяцев оставим», – сказав,

* *Хулом-мулом* – значение слова малопонятно. Возможно, подразумевается некое существо, чей облик могла принимать ведьма, которым пугали детей (Ф.Г.).



на три месяца по высокой стоимости договорились. Затем, посоветовавшись, в войлочной сумке принеся, золото на его шею повесили.

Бай: «Этот пес, наверное, скучает, спустив с цепи, надо и туда-сюда отпускать», – говорил. Когда, приготовив пищу, хоть и наливали ее в корыто, он не ел.

(Бай отпустил собаку с цепи.) Тогда пес, с золотой сумкой на шее, пошел в то место, где находилась его жена. Когда вошел в дом, увидел, что жена шила, сидя на кровати, а ее любовник позади лежал.

Когда пес, подойдя к ней, встал, женщина: «Бойнак, бедолага», – сказав, сумку с его шеи ножницами срезав, забрала.

Второй раз плетью ударив, превратила в сову.

Сова, летая, приземлилась на верхушку одного стога. Когда детишки, стараясь поймать, и крыло ей сломав, возились, та женщина-ведьма, откуда-то идя, узнав, сову из рук детей забрав, принеся к себе домой, ухаживая, вылечила.

Затем, когда сова вылечилась, ведьма сказала: «Теперь я тебя освобождаю. Вот это лекарство возьми и, будучи совой, отправляйся и спустись по дымоходу. Они будут спать. Этого лекарства на себя намажь и три раза потрись о кровать. Осторожно из-под постели плеть вытащив, осел, конь, что захочешь: «Тем будь», – сказав, ударишь, – говоря, научив, отправила.

Сова, полетев, как она сказала, поступив, ударила плетью. Оба двумя черными ослами стали.

– Вот, видишь, захочу ослом, а захочу конем, волом делаю, когда наступает ночь, в грязный хлев загоняю. Вот это – моя жена, а вот это – ее любовник, – говоря, удивительную историю рассказал. – Вот, чтобы эту вещь узнал, олень тебя ко мне направил, – сказав, закончил повествование.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 11. Записал С.О. Шахмурзаев 6.08.1959 г. в с. Былым КБАССР от 55-летней Кулиевой Сагий Очаевны.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебная сказка. Один из видов сюжета, о котором повествуется в произведениях «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат». Однако здесь главному герою для того, чтобы превратиться из совы обратно в человека, недостаточно просто коснуться чудесной плети, а необходимо, обмазавшись подаренным ведьмой снадобьем, трижды потереться о кровать, под которой хранилась эта плеть.

В тексте имеются недостатки: описание происходящих событий не излагается нормально, последовательно, смешанно, история главного героя повествуется сперва от его имени, затем от третьего лица, а в конце опять рассказывается Баевым Махаметом.



ЁКСЮЗ КЪЫЗЧЫКЪНЫ ЮСЮНДЕН ЖОМАКЪ

Эртте-эртте анасы, не атасы болмай, Кулидам деп бир ёксюз къызчыкъ, эл бергенни ашай, аман бла жашай тургъанды.

Да ол жашагъан элде бир бай къатын, кесини къызын аяп, ийнегин кютдюре, жюнюн ийирте айланыр ючюннге:

– Кулидамчыкъны къыз этеме, – деп, юйюне элтгенди.

Ёге анасы болса да, отдан чыкъ да, жалыннга деп, къызчыкъны жашауу жарымагъанды. Хар кюн сайын кюл гюттю – азыгъы, танг атханлай, ийнекни алып кетип, ингирге дери, аны да отлата, кеси да урчукъ ийире жюрюгенди.

Бир кюн а, къызчыкъ ийнекни кюте баргъанлай, жел, юзюп, юзмелтин элте кетип, аллында бир терен тешикке ташайтханды. Кулидамчыкъ, этер къарыуун тауусханды да, ёге анасындан къоркъуп, тешикни эринине барып, жиляп сёлешгенди:

– Жел Анасы Кибитки, эшик арты сибиртги, юзмелтими бер, – деп.

Олсагъатда къызчыкъ:

– Тюш бери, – деп, ичинден бир ауаз эшитгенди.

Да салып энип барса – жер тюбюнде уллу дорбун, аны ичинде – омакъ юй, юй аллында уа бир къарт къатын олтуруп. Кулидамчыкъ чапханды да, къучакълагъанды къарт къатынны:

– Анам-анам, юзмелтими бер, – деп.

Къатын а къызчыкъгъа:

– Балам, юзмелтинги да берирме, кесим къарт болгъанма, чардакъгъа чыгъып, будайымы къатышдырыгъа энди эринме да, чардакъгъа ёрлеп, аны бир къатышдырып, эн, – дегенди.

Къызчыкъ эрлай окъуна чардакъгъа ёрлегенди. Ёрлесе, сени суйген аллай чардакъгъа ёрлесин: алтын ахчала киреле болуп. Кулидамчыкъ ол алтын ахчаланы ариу къатышдыргъанды, кеси да, бир затына хыянат этмей, энишге чардакъдан тюшгенди. Сора къызчыкъ къатыннга айтханды:

– Анам, къатышдырып бошадым айтханынги, – деп.

Къатын а:

– Игиди, къызым, энди юсюнню кирин, букъусун бери къакъ, – дегенди да, къызчыкъны тюбюне кийиз жайгъанды.

Къызчыкъ къатынны не хыйсапдан айтханын ангыламагъанды да, жыйрыгъыны белин да бошлап, кийизни юсюне кесин ахшы къакъгъанды. Сохан ашамагъанны, ийиси чыкъмайды. Алтын урланмагъанлай, къатын къызчыкъдан не алтын табарыкъ эди? Къатын къызчыкъны ургъанды да, бир жаягъын кюн этгенди, экинчи жаягъын ургъанды да – ай этгенди. Дагъыда кеси чардагъына чыкъгъанды да, къызчыкъны къоюнун алтын ахчадан толтургъанды. Къолуна да юзмелтин бергенди да, юйюне ариу айтып ашыргъанды.

Ой, Кулидамчыкъ, ийнекни сюрюп, юйге жууукълаша башлагъанлай, ёге анасыны къыттайы къычыргъанды:

– Ку-ку-ре-ку! Ай жаякълы, кюн жаякълы къызыбыз келеди! – деп.

Кулидамчыкъны ёге анасы, сейирге къалып, чартлап эшикке чыкъса, керти да, ингирлик къарангысын жарытып, ёге къызыны келгенин кёргенди. Ачыуланнганды, къызчыкъны тюйгенди:



– Къайда тутдунг ийнекни былай кечге дери?! – деп.

Да къызчыкъ, алтын ахчаларын да къатыннга берип, кеси да болушлусуча болгъан ишин къыйырдан санагъанды.

Ахчала къолгъа тийгенден сора, къатын жарыкъ болгъанды.

– Тамбла, сен кѐп да къыйналгъанса, солурса, – дегенди.

Эрттенликде уа къызына:

– Бар, сен да ариу болуп кел, ийнекни да кюте, – деп, Кулидамчыкъ ийнек кютюучю жерге жибергенди.

Къатынны къызы, ийнек кюте, урчукъ ийире баргъанлай, ахырзаман уллу жел жетгенди да, юзмелтин халыгъа къошулгъан жеринден юзюп, биягъы тешике атханды. Да къыз, къууанып: «Энди манга да ол къызгъа туугъан кюн тууады», – деп, тешикни къатына барып къычыргъанды:

– Жел Анасы Кибитки, эшик арты сибиртги, юзмелтими бер! – деп.

Олсагъатда къыз:

– Тюш бери, – деп, тешикни ичинден бир ауаз эшитгенди.

Да салып, энип барса – жер тюбюнде уллу дорбун, аны ичинде – омакъ юй, юй аллында уа бир къарт къатын олтуруп. Къатынны къызы:

– Анам-анам, – дегенди да, къарт къатынны чабып къучакълагъанды, – юзмелтими кѐргенми эдинг? – деп.

Къарт къатын айтханды:

– Балам, айхай, кѐргенме юзмелтинги да. Кесим, ауруп, чардагъыма чыгъалмайма, чыкъ да, будайымы бир къатышдыр, андан энсенг, юзмелтинги берирме, – дегенди.

Къыз чардакъгъа ёрлесе, алтын киреледен башха, будай кѐрмегенди. Жаулугъун тешгенди да, ахшы белин къаты къысханды. Чѐгелегенди да кирелени бирине, къуйгъанды алтын ахчаладан къоюнуна киргенни. Анда да бир кесек олтуруп тургъанды да, кесин иш ишлеген сундурургъа, бир заманда эннгенди да, келгенди:

– Анам, будайынгы къатышдырдым, – деп.

– Ахшыды, къызым, къатышдырдынг эсе. Юсюнг кир болгъанча кѐрюнеди, теш да, жыйрыгъынгы букъусун бу кийизге къакъ, – деп, къызны кийизни юсюне миндиреди.

Къыз белин бошласа, ол къадар алтын ахча урлагъаны, ауурлукъ этип, «зыр» деп, кийизге къуюладыла. Къарт къатын, аны кѐрюп, чамланады да, уруп къызны, бир жаягъына да эшек губус битдиреди, экинчи жаягъына уруп, ит губус битдиреди да, юзмелтин да бермей жибереди. Къыз не этерик эди?

Ингирикде, ийнекни да сюрюп, эки губусу эки жаягъына да ауурлукъ этип келгенлей, къыттайлары кѐргенди да, къычыргъанды:

– Ку-ку-ре-ку! Эшек губус жаякълы, ит губус жаякълы къызыбыз келеди! – деп.

Къызны анасы чартлап чыкъгъанды, къыттайгъа да чамланып. Ой, бир заманда кѐргенди къызыны эки жаягъындан гебен ташла кибик губуслары салынып келгенин.

Къатын не этерик эди? Къызы да, кеси да сарнау-жиляу болгъандыла.

Да халкъгъа жайылгъанды:

– Ол жерде, ол элде бир къыз барды, бир жаягъы – кюн, бир жаягъы – ай, – деп.

Хан, аны эшитгенлей, аскерин да алгъанды да, келгенди ол элге, кызыны излей.

Кулидамны ёге анасы букъдургъанды, аны кьоюп, ханнга кесини кызын берирге. Хан адамларына кызыны, излетдирип, жыйгъыч тюбюнден чыгъартханды.

Сора къатын, энди болмайды да, болмайды деп, ханнга айтханды:

– Сиз сакълап туругъуз эшикте, мен а кызыны кийиндирейим да, чыгъарырма, – дегенде, хан къатын бла даулашмагъанды, аскери бла сакълап тургъанды.

Бир заманда къатын, кесини кызын жасандырып, башына да баш ау жайып чыгъаргъанды да, ханнга бергенди.

Хан алып кетип, кызыны жолда кёреме деп, баш ауун кётюрюп къараса, къатынны эшек губус жаякълы, ит губус жаякълы кызы болгъанын кёргенди. Ол заманда аскерлерин да кеси бла артха къайтарып келгенди да, къатынны төрт санындан төрт эмилик атха тагъып ийгенди. Ол эсирик атла уа къатынны, бири ары тартып, бири бери тартып, дуккул-дуккул этгендиле.

Аны бла хан, ол ёксюз кызыны да кесине къатыннга алып, ашап-жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 19 папка, 5 паспорт. КъМАССР-ны Эльбрус районуну Лаикута элинде жашагъан 1883-чю жылда туугъан Гулийланы Джандан (къабартылы) 2.06.1957 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны ангылашынмайды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кётюргенди.

Ёксюз кызычыкъны бла ёге ананы юсюнден сюжетге къралгъан сейир-тамаша жомакъ. Чыгъармада мажюсю тейриледен бири – Жел Анасы Кибитки (Химикки) – сагъынылады. Ол ёксюз кызычыкъны кертилиги, адеплилиги ючюн саугъалайды, анга болушады, ёге эгечин а жутлугъу, зарлыгъы ючюн бетине губуслу битдиреди. Ёге анасы да, аман акъылыны хатасындан, жоюлады. Алай бла чыгъармада тюзлюк хорлайды, аны даражасы кётюрюледди.

СКАЗКА О ДЕВОЧКЕ-СИРОТКЕ

Давным-давно, не имея матери или отца, девочка-сирота по имени Кулидам, что жители села дадут, тем питаюсь, плохо жила.

Да в селе, где она жила, одна богатая женщина, свою дочь щадя, чтобы (Кулидам) заставить ходить, ее корову пася, ее шерсть прядя:

– Кулидамку удочеряю, – сказав, к себе домой отвела.

Хоть и появилась у нее приемная мать, как из огня выйти, да в полымя (попасть), жизнь девочки не повеселела. Каждый день испеченная в золе лепешка ей пища, как рассветет, забрав корову и уйдя, до вечера ее пася и сама прядя, бродила.

А в один день, когда девочка, пася корову, шла, ветер, оторвав, ее ровницу* унеся, в одну глубокую дыру впереди забросил. Кулидамка,

* Ровница (юзмелт) – шерсть, готовая для прядения [6, 1130].



закончив все силы (способы) и, боясь мачехи, подойдя к краю дыры, заплавав, проговорила:

– Мать Ветра Кибитки, задверная метла, отдай мою ровницу.

Тотчас девочка:

– Спускайся вниз, – сказавший изнутри некий голос услышала.

Да когда взяла и спустилась – под землей большая пещера, внутри нее – красивый дом, а перед домом одна старуха сидит. Кулидамка побежала и обняла старуху, говоря:

– Матушка-матушка, отдай мою ровницу.

А женщина девочке:

– Дитя мое, и ровницу твою отдам, сама я состарилась, теперь не поленись, поднявшись на крышу, перемешать мою пшеницу, и, забравшись на крышу, ее перемешав, спустись, – сказала.

Девочка живо забралась на крышу. Забралась, пусть кто тебя любит на такую крышу заберется: золотые монеты кучами лежат. Кулидамка те золотые монеты аккуратно перемешала, и сама, ничему не причинив ущерба, вниз с крыши спустилась. Затем девочка сказала женщине:

– Матушка, закончила перемешивать, что ты наказала.

А женщина:

– Хорошо, доченька, теперь грязь, пыль с себя сюда стряхни, – сказала и постелила под девочку кийиз*.

Девочка не поняла, из какого побуждения женщина сказала, и, ослабив пояс своего платья, на кийиз всю себя отряхнула. От того, кто лук не ел, запах не исходит. Золото, не будучи украденным, какое золото женщина могла найти у девочки? Женщина ударила девочку и одну щеку превратила в солнце, ударила по второй щеке и сделала луной. Еще сама поднялась на свою крышу и наполнила пазуху девочки золотыми монетами. И в руки дала ее ровницу и проводила домой с ласковой речью.

Ой, едва Кулидамка, гоня корову, стала приближаться к дому, петух мачехи закричал:

– Ку-ку-ре-ку! Лунощекая, солнцещекая девушка наша идет!

Мачеха Кулидамки, удивившись, выскочив, когда на улицу вышла, и вправду, увидела, что идет ее падчерица, освещая вечернюю темноту. Рассердилась, побила девочку:

– Где продержала корову так допоздна?! – говоря.

Да девочка, и свои золотые монеты женщине отдав, и сама, как было, все произошедшее дело от начала рассказала.

После того, как деньги оказались в ее руках, женщина стала ласковой.

– Завтра, ты много помучилась, отдохнешь, – сказала.

А утром своей дочери:

– Иди, и ты, став красивой, возвращайся, и корову попаси, – сказав, отправила в то место, где Кулидамка (обычно) пасла корову.

В то время, как дочка женщины шла, пася корову, прядя нитку, налетел небывало сильный ветер и, оторвав ровницу в месте, где она соединялась с нитью, в ту же дыру сбросил. А девушка, обрадовавшись: «Теперь и для меня родится день, который родился для той девушки», – думая, подойдя к дыре, крикнула:

* *Кийиз* – войлочный ковер.

– Мать Ветра Кибитки, задверная метла, отдай мою ровницу!

Тотчас же девушка:

– Спускайся сюда, – говорящий из дыры некий голос услышала.

А когда взяла и спустилась – под землей большая пещера, внутри нее – красивый дом, а перед домом одна старуха сидит. Дочь женщины:

– Матушка-матушка, – сказала и, подбежав, обняла старуху, говоря, – видела ли мою ровницу?

Старуха сказала:

– Дитя мое, конечно, видела и твою ровницу. Сама, заболев, не могу подняться на крышу, поднимись и перемешай-ка мою пшеницу, когда оттуда спустишься, отдам твою ровницу, – вымолвила.

Когда девушка забралась на крышу, кроме куч золота, пшеницы не увидела. Сняла свой платок и хорошенько завязала свой пояс. Присела на одну из куч и насыпала за пазуху золотых монет, сколько влезло. И там немного посидела, чтобы подумали, что работала, в какое-то время спустилась и пришла, говоря:

– Матушка, перемешала твою пшеницу.

– Хорошо, дочь моя, коли перемешала. Твоя одежда кажется испачканной, сними и пыль со своего платья на этот кийиз отряхни, – сказав, девушку на кийиз подняла.

Когда девушка ослабила пояс, та уйма украденных золотых монет под своей тяжестью со звоном посыпалась на кийиз. Старуха, увидев это, гневается и, ударив девушку, на одной ее щеке выращивает ослиную бородавку, по второй щеке ударив, собачью бородавку выращивает и, не отдав ровницу, отпускает. Что бы девушка сделала?

Когда вечером, и корову погоняя, две бородавки обе щеки отягощая, шла, их петух увидел и закричал:

– Ку-ку-ре-ку! С щекой с ослиной бородавкой, с щекой с собачьей бородавкой наша девушка идет!

Мать девушки, выскочила, на петуха разозлившись. Ой, тут увидела, как идет ее дочь, с обеих щек, как камни-противовесы, бородавки свисают.

Что бы сделала женщина? И ее дочь, и сама в рыдания-плач ударились.

А в народе распространилось:

– В том месте, в том селе есть одна девушка, одна ее щека – солнце, одна щека – луна.

Хан, как это услышал, и войско свое взял и прибыл в то село, разыскивая девушку.

Мачеха спрятала Кулидам, чтобы, оставив ее, за хана свою дочь отдать. Хан, заставив своих людей искать, девушку из-под жыйгыча* вытащили.

Тогда женщина, решив, раз теперь не получается и не получается, сказала хану:

– Вы ждите на улице, а я девушку одену и выведу, – когда промолвила, хан не стал спорить с женщиной, вместе с войском ожидал.

В какое-то время женщина, свою дочь нарядив, и на голову фату набросив, вывела и хану отдала.

* *Жыйгыч (жыйгычы)* – широкая полка вдоль задней стены дома для складывания постелей [4, 973].



Хан, забрав и уехав, в пути решив девушку увидеть, когда, подняв фату, посмотрел, увидел, что это женщины дочь с щекой с ослиной бородавкой, с щекой с собачьей бородавкой. Тогда и войско с собой назад вернув, приехал и, женщину за четыре ее части тела к четырем необъезженным коням привязав, отпустил. А эти ретивые кони женщину, один туда тяня, один сюда тяня, разорвали в клочья.

С тем хан, и ту девушку-сироту взяв себе в жены, стал жить-поживать (остался едя-живя).

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 5. Записано 2.06.1957 г. в с. Лаикута Эльбрусского района КБАССР от кабардинки Гулиевой Джан (1883 г.р.). Кем осуществлена запись, непонятно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебная сказка, основанная на сюжете о девочке-сиротке и мачехе. В произведении упоминается одно из языческих божеств – Мать Ветра Кибитки (Химикки). Она вознаграждает девочку-сиротку за честность, порядочность, помогает ей, а на лице ее сводной сестры за жадность, завистливость отрацивает бородавки. И ее мачеха из-за своей злонамеренности погибает. Таким образом, в произведение торжествует добро, возвеличивается его значение.



ЁКСЮЗ ФАТИМАТЧЫКЪ

Сабий Фатиматчыкыны анасы ёледи да, кёп да мычымай, атасы бир сабийли кьатын алады. Ол кюнден башлаб'а, жазыкь Фатиматчыкыны халы ёксюзлюкден да аман болады. Ёге анасы, кеси кьызын ийнакьлап, эркеле(ти)п, анга дарий, чилле, кьатапа кийимле кийдире эди. Ол а, махтанып: «Сени быллай кийимлеринг да жокьду!» – деп, Фатиматчыкыны табалай эди. «Ёксюзню кюнню кьарангы» дегенлей, Фатиматны жилимагьан, тьойюлмеген кюнню озмай эди. Кир да, зыккыл да болгьан жьыйрыкьчыгьын бла кёлекчигин жууаргьа сапын тапмай, юсюн-башын кьашый, эрттенден ингирге дери юй жумушланы тындырып келсе, дагьыда ашны игисин кеси кьызына берип, Фатиматны аллына уа, кьагьын-согьун этип, сууукь хантны тюртюочю эди. Эрттенбла эртте туруп, суу алгьан, от этген, юй тьобюн сьыйпагьан, тёшеклени жьыйгьан, урчугьун кьолуна алып, бузоуланы, ийнеклени кютген Фатимат болуп турса да, ёге анасы аны бир затына да бюсюремей эди.

Фатиматчыкь, мугурайып, бурунчугьун тарта, кьолундан келмезлик жумушланы да этерге кьорешгенде, ёге анасыны кьызы, кундушча кийинип, кюнюн гинжиле бла ойнай ашыра эди.

Бир жол Фатимат, урчугьун да ийире, бир уллу дорбун аллында ийнек кюте тургьанлай, жашау кьыйынлыгьына тёзалмай, аяусуз жилиады. Алайынлай, жел уруп, юзмелтин учурду. Юзмелт дорбун таба учханда, ол да аны ызындан чапды.

Дорбунда уа бир эмеген кьатын жашай эди. Эмеген кьатын, Фатиматны эслеп, дорбун теренинден:

– Ий маржа, кьызчыгьым, ол кюнюшлени бирге жьый да, бери манга бир бер! – деп сёлешди.

Фатимат, дорбуннга киргенде, анда-мында жайылып тургьан кюнюш кесеклени кёрдю. Сора, аланы да жьыйып, бир уллу тешик бла энишге тьюшдю. Кьараса, анда уа бир эмеген кьатын кеси жангызлай олтуруп тура. Эмеген анга:

– Кьызчыгьым, бел бауунгу бир тешчи, хуржунунгу да ичин тышына бир айландырчы! – деп буюрду.

Фатимат ол айтханлай этгенде, эмеген кьатын кюнюшлери урланмагьанын билди. Ызы бла уа:

– Кьызым, энди мен бусагьат жукьлагьан этерикме. Юйню тьобю бла акь суу саркьа башласа, мени уятырса, – деди.

Эмеген иги да кьалкьыгьанлай, юйню тьобю бла акь суу саркьа тебиреди.

– Анай, тур, тур! – деп, кьызчыкь эмегенни уятды.

Эмеген, туруп, ол акь суудан ууучу бла алып, Фатиматны бетин жууду. Сора:

– Кьызчыгьым, энди кюзгюге бир кьарачы! – деди.

Фатимат, кюзгю аллына баргьанда, кесин таниялмады: кюзгюден анга бир жаягьы кюнча, бир жаягьы айча жылтырагьан бир ариу кьызчыкь кьарай эди. Кийимине уа не айтырса! Алтын халыла бла тигилген, сьыйлы кьумачладан этилген бир омакь быстырла!..



Ёксюз Фатиматчыкъ, кёлю да жарып, асыры къууаннгандан, юсюне-башына къарай, ариулугъу кёзюне кёрюне да, жүрекчиги жарый, ийнеклени сюрюп, юйлерине тебиреди.

Жолда аны кёрген адамла, таныялмай, туракълай да, туурадан къарай, ариулугъуна, омакълыгъына сейирсине, хапаргъа алдыла. Ёге анасы уа, аны кёргенде, кёз къакъмай, къынгыр къарап, бир талай турду. Къаралды, кёгерди, кёрюкча кёпдю, айтыргъа сёз тапмады. Ачыуу чёкгенден сора, ийнакълагъан кибик этип:

– Фатиматчыкъ, сен былай ариучукъ да, омакъчыкъ да къалай болгъанса? – деп, тынгысыз сорду.

Фатимат ишни къалай болгъанын къалдырмай айтды. Энди экинчи кюн ёге ана ийнеклени кютерге кесини къызын жиберди.

Ёге ананы къызы да, Фатиматчыкъча, дорбун аллында олтуруп, урчукъ ийире тургъанлай, аны юзмелтин да жел дорбун таба сюрдю. Ол да аны ызындан чабып жетерге, дорбундан:

– Къызчыгъым, ол кюмюшлени бирге жый да, бери манга бир узат! – деп, бир таууш эшитди.

Къызчыкъ, бир бёлегин къоюнуна, хуржунуна да салып, къалгъанын ол биягъы тешик бла элтип барды.

– Къызым, бел бауунгу бир тешчи, хуржунунгу да чюйресине бир айландырчы! – деди.

Къызчыкъ алай этгенде, кюмюшле зынгырдап тёгюлдюле.

– Къызым, мен бир кесекчик жукълайым. Сен а, юйню тюбю бла къара суу саркъса, мени уятырса! – деди эмеген.

Ол къалкъыгъанлай, къара суу чыкъды. Къызчыкъ да эмегенни уятды. Ол заманда эмеген ол къара суудан ууучу бла алып, къызны бетин жууду. Къыз, ариу болдумму деп, кюзгюге къарагъанда, кеси кесинден къоркъду: бир жаягъы ит, бир жаягъы уа маймул болуп кёрдю. Ингирде къыз юйюне сытыла, жилий келди.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 275–277 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Ёксюз Фатиматчыкъ» деген жомакъ битеудуния кёлден чыгъармачылыкъ бла байламлыды. Кюйсюз ёге ана бла жарлы ёге къызны юслеринден айтылыр ючюн къалмагъанды. Былайда кёргюзтюлген эрттеден келген жомакъ ызны къарачай-малкъар тюрлюсюдю.

Мында Фатимат бла кюйсюз ёге ананы къызы бир бирге къажасу тубейдиле. Бийик ниет-къылыкъны эмеген тиширыуну сыфаты тутады. Ол Фатиматны ариу этип, анга байлыкъ береди. Халисиз ёге ананы къызына уа, баиша тюрлю къарап, терслигине жетдиреди.

МАЛЕНЬКАЯ СИРОТА ФАТИМАТ

Когда у маленькой Фатимат умерла мать, ее отец, надолго не откладывая, женился на женщине с ребенком. Начиная с того дня, у бедной Фатимат положение стало хуже сироты. Мачеха, свою родную дочь оберегая,

развлекая, одевала в шелка, в бархатную одежду. А она хвасталась: «А у тебя такой одежды нет!» – говорила, усмехаясь над Фатимат. Как говорят: «День сироты черен», и у маленькой Фатимат не было и дня, чтобы она не плакала, не избивалась. Чтобы постирать грязную, оборванную рубашонку, она не находила мыло, чесалась в голове, по телу, с утра до вечера выполняя домашние работы, когда придет домой, и тогда, еду получше отдавала своей дочери, а к Фатимат, ругая-побивая, подталкивала холодную пищу. Она вставала рано утром, приносила воду, разводила огонь, подметала помещение в доме, убирала матрасы, и в руке держа веретено, пасла телят, коров – хотя это все выполняла Фатимат, ее мачехе, все равно ничего не нравилось.

Маленькая Фатимат, опечаленная, шмыгая носом, старалась делать работу, которая ей была не под силу, в это время дочка ее мачехи как чемерица нарядная, проводила свой день, играясь с куклами.

Однажды, когда Фатимат, с веретеном в руках, перед огромной пещерой пасла корову, не выдержав жизненные тяготы, навзрыд заплакала. И тут подул ветер и из ее рук вырвал кусок шерсти. Когда шерсть полетела в сторону пещеры, и она пошла следом за ней.

А в пещере жила одна женщина-эмегенша*. Она заметив Фатимат, из глубины пещеры:

– Ий, маржа**, доченька, собери серебро вместе, принеси-ка мне! – сказала.

Фатимат, когда зашла в пещеру, то увидела разбросанные в разных местах куски серебра. Потом она, собрав их, через огромную дыру спустилась вниз. Смотрит, там сидит женщина-эмегенша одна. Эмегенша ей:

– Доченька, сними-ка свой пояс и карманы выверни-ка, – приказала.

Когда Фатимат выполнила все, как она сказала, эмегенша узнала, что ее серебро она не украла.

А следом она:

– Доченька, сейчас я буду спать. Когда по полу дома станет течь белая вода, разбуди меня, – сказала.

Когда эмегенша крепко заснула, по полу дома начала течь белая вода.

– Анай***, вставай, вставай! – говоря девочка, разбудила эмегеншу.

Эмегенша встала, набрала ладонью белую воду и помыла лицо Фатимат. После:

– Доченька, теперь посмотри-ка в зеркало! – сказала она.

Фатимат, когда подошла к зеркалу, себя не узнала: из зеркала на нее, одна щека как солнце, другая щека как луна сверкая, одна красивая девочка смотрела. А про одежду ее, что скажешь! Золотыми нитками вышитая, из драгоценных тканей сотканная, очень красивая одежда!..

Сирота Фатиматка в душе повеселела, от большой радости, осматривая себя с ног до головы, свою красоту представляя себе, с радостным сердцем, погоняя коров, отправилась к себе домой.

По дороге люди ее не узнавали, останавливаясь, глядя со стороны на ее красоту, удивляясь ее одеянию, начали интересоваться. А мачеха, когда

* Эмегенша – чудовище.

** Маржа – обращение.

*** Анай – матушка.



ее увидела, не моргнув глазом, некоторое время смотрела на нее криво, то почернела, то посинела, то вздулась как кузнечные меха, не находила слов, что сказать. Когда злость немного спала, как бы подбадривая:

– Фатимочка, как ты стала такой красивой, такой нарядной? – спросила она, беспокоившись.

Фатимат, ничего не утаивая, рассказала все, как было. Теперь, на второй день, мачеха отправляет свою дочь пасти коров.

Дочка мачехи, как Фатиматка, села перед пещерой, пряла пряжу, из ее рук также кусок шерсти ветер унес в сторону пещеры. Пока она побежала за ней и догнала, из пещеры:

– Доченька, собери все серебро и подай мне сюда! – донеслись до нее звуки.

Девочка, одну часть за пазуху, в карманы положив, оставшееся понесла через ту же дыру.

– Доченька, сними-ка свой пояс, и карманы выверни-ка наружу! – сказала она.

Когда девочка все это выполнила, серебро со звоном рассыпалось.

– Дочка, я немножко посплю. А ты, когда по полу дома потечет черная вода, разбуди меня! – сказала эмегенша.

Когда она заснула, потекла черная вода. И девочка разбудила эмегеншу. В это время эмегенша набрала ладонью черную воду, помыла лицо девочки. Когда девочка посмотрела, стала ли красавицей, в зеркало, сама себя испугалась: что одна щека – в собачью, другая щека – в обезьянью превратились увидела. Вечером девушка плача, рыдая, вернулась домой.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 275–277) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Мировой фольклор изобилует сюжетами о злой мачехе и бедной падчерице. Приведенный вариант представляет собой карачаево-балкарскую версию этой архифабулы. Здесь антиподами являются Фатимат и дочь злобной мачехи. Роль высшей нравственной инстанции здесь играет эмегенша, которая наградила Фатимат красотой и сокровищами, а безнравственную мачехину дочь, наоборот, наказала.

ЁКСЮЗ КЪЫЗ

Эртте-эртте бир элде малчы киши жашагъанды. Аны къатыны ёлгенди. Къатынындан жангыз къыз къалгъанды. Малчы, къатыны ёлгенден сора, башха къатын алгъанды. Артда къатыныны да алгъын эринден къызы бар эди да, къызын биргесине алып келгенди. Къатын ёге къызына не тюрлю къыйын иш болса юйде, анга этдиргенди. Ол, ёге къызына бек артыкълыкъ эте, иги ашарыкъ бермей, ариу кийим да кийдирмей болгъанды. Хар не тапханын кесини къызына берип, энчи этип, иги къарай, эм бир тюрлю иш ишлетмегенди.

Къызыны ёлген анасындан бир къашха къолан ийнек къалгъан эди. Ёге ана къызыны хар кюнден, ийнекни да кютюп, урчугъун да ийирип келирге жибере эди. Къызыны къолуна бир къатхан гыржынны берип къоя эди. Ол а, гыржынны суугъа сугъуп, ашап тургъанды. Эрттенликде эртте туруп кетсе, ингирликде кеч келгенди. Ёге анасы берген жюнню жартысын ийирип бошайлап, къыз кечге къалыучу эди. Кечигип келгенден сора:

– Нек ийирип бошамагъанса жюнню? – деп, уруп, туюп, чачындан тарта, къолу жетген жеринден чимдип, ёге ана къызыны этин къара кесеу этиучю эди.

Атасы ол затланы кёре эди, алай болса да, къатынындан къоркъуп, кесини къызын къоруулап, этме алай деп айталмай эди.

Бек кёп заманны ийнекни да кюте, урчугъун да ийире тургъанды къыз. Бир жол къыз биягъыча урчукъ ийире, ийнекни да кюте тургъанлай, уллу жел жетгенди. Жюнню жел къолундан алып кетгенди. Къыз, жюнню ызындан чаба барып, бир уллу къолгъа тюшгенди. Къараса, ол жерде, бир гитче дорбунда бир акъ чачлы къарт къатын олтуруп тургъанын кёргенди. Аны бети жарып, кюле тургъаннга ушай эди. Къыз ёшонюне къолун салып айтханды:

– Анам, кюн ахшы болсун!

– Сау бол, сау кел, къызым! – дегенди акъчач къарт къатын. – Сени башынга не къыйынлыкъ тюшгенди? – деп сорду.

Къыз кесини битеу хапарын айтды. Къарт къатын:

– Алай эсе, къызым, къайгъы этме. Къашха къолан ийнекни башына жюнню сал да, андан ийирип башла, – дегенди. Къызы башын сыйпап-сылап, ариу айтып: – Бир башха тюрлю къыйынлыкъ чыкъса, манга кел, – деп жибергенди.

Къыз, жюнню алып, аякъ тюрлюнде чёп сынмай, чабып ийнекге келип, къарт къатын юйретгенча этгенди. Халысы созулуп, узун, бир кибик ингичке халы болгъанды. Къыз ол кюн ёге анасы берген жюнню саулай ийирип бошагъанды.

– Нек кеч болуп келгенсе? – деп, ёге анасы аны мал орунну тазаларгъа, арбазны сыйпаргъа ийгенди.

Къыз хар кюн сайын, анга буюрулгъан ишни толтуруп, юйге алай къайтып башлагъанды. Ёге анасы, анга бек сейирсинип, тюрерге сылтау тапмагъанды. Не этерге билмей, бир да ийнаналмай, бир кюн къызыны ызындан жашыртын барып къарагъанды. Бугъуп къарай, къызыны, къашха къолан ийнекни башына жюнню салып, андан алып ийиргенин кёргенди.



«Мен ойлагъанча, ийнек бла битдиреди хар ишни, кетерейим ийнекни», – деп, юйге къайтып келгенди. Юйге келгенден сора эрине:

– Мен тууар мая этни ашаргъа сюеме, ийнекни сой, – дегенди.

Эри ыразы болгъанды. Ийнекни сойгъанды. Къыз, аны кёрюп, жылап*, къарт къатыннга баргъанды.

– Не болгъанды, къызым? – дегенди ол.

Къыз, хапарын айтып бошагъандан сора, къарт къатын айтханды:

– Жылама, къызым!

Сора аны башын сылап-сыйпап:

– Бар бусагъат юйге. Ийнекни сюеклеринден, терисинден, къанындан ал да, бир жерде басдырып къой. Бир кюнде ала санга жарарла, – дегенди.

Къыз ол айтханча этгенди.

Бир кюн ёге анасы, кесини къызын ариу, бек сыйлы кийимлеге кийиндирип:

– Бир жерге барып келейик, – деп, къызгъа кетерден алгъа ишлени берип: – Юйню сюртюп турусса, таза этерсе, биз келирге, – деп, уруп, эшиклени этип, экиси да кетедиле.

Ала кетгенлей, къыз, къарт къатыннга барып, болгъан ишни айтханды. Муну башын сыйпап:

– Бир кесек тур, мени юч къызым да келликдиле, ала бла барып, юйню сюртюрсюз. Сора ол ийнекни сюеклерин салгъан уругъа да къарагъыз, – дегенди.

Къарап-къарагъынчы юч къыз да келдиле. Келгенлей, къарт къатын бла саламлашдыла. Къыз бла барып, юйню сюртдюле. Юч къыз да къызгъа:

– Жюр сен да бизни бла, тойгъа къараргъа барайыкъ, – дедиле.

Сора ол къашха ийнекни сюеклерин салгъан уруну ачып къарадыла. Къарагъанда – анда тюрлю-тюрлю кийимле. Аланы алып кийгенден сора, ёксюз къыз бек ариу болгъанды. Толгъан айгъа къарагъанча. Аллай бир ариу болду, не жомакъда айтып, не хапарда айтылып эшитилмеген. Сора ол юч къызны биргесине тойгъа барды. Адамла къызны тойда кёрюп:

– Ханны къызы къайдан келген болур? – деп сейирсингендиле.

Аланы, бек ёрге – тёрге чыгъарып, сыйлы жерде олтуртхандыла. Къызны ёге анасы да кесини къызы бла анда болгъанды. Аланы олтурургъа жерлери болмай, эшик артында сюелип тура эдиле. Къызланы алларына бек иги, сыйлы ашарыкъланы салгъандыла.

Къызла той бошалырдан алгъа чыкъгъандыла. Ёксюз къыз, ёге анасына ахшы ашарыкъладан алып келип, берип, эшикге чыгып кетгенди. Къыз: «Ызымдан ёге анам жетип, кёрмесин», – деп, бек ашыгып, терк юйге келгенди. Юйге келип къарагъанда, бир чуругъу тюшюп къалгъанын кёргенди. Ёге анасы бла къызы келгенде, жукъ кёрмегенча, билмегенча этип, олтуруп тургъанды. Ёге анасы махтанып сёлешгенди:

– Биз бугъуп, къаллай сейирлик кёрдюк! Къаллай тюрлю-тюрлю ашарыкъла ашадыкъ! Ханны къызын кёрдюк. Аны къалай айтып ангылатсын адам? Аны ариулугъу – айгъа къарагъан кибик, сёлешген сёзю бал кибик эшитиле эди. Аны аллына бек татлы, сыйлы эм татыулу ашарыкъланы салгъан эдиле. Кесинден къалгъанларын бизге берди, биз, ашап, бек зауукъ этдик, сен а бир затха жарамай олтураса!

* Жилип.

Сора:

– Сен бюгюн не зат этдинг? – деп сорду.

– Мен не зат этерик эдим? Юйню сюртдюм эм тазаладым, – дегенди кыыз.

Ёге анасы не айтыргъа билмей къалгъанды.

Экинчи кюн кыыз тас этген чарыкъны бир къатын тапханды. «Мен жаратылгъанлы бери быллай ариу, тап, гитче чарыкъчыкъ кёрмегенме», – дегенди. Не этерге билмей, ханнга алып баргъанды. Хан чарыкъны кёрюп:

– Муну иеси бек ариу сыфатлы кыыз болур, къайда эсе да, табаргъа керекди, – дегенди.

Эки къартыракъ къатын, чарыкъны алып, битеу юйлеге, элlege барып, кызыланы аякъларына ёнчелеп айлангандыла. Алай ол жарагъан кыыз табылмагъанды. Кызыны ёге анасы ол къатынланы кёргенди. Алагъа:

– Не айланасыз? – дегенди.

Ала хапарны айтхандыла.

– Алай эсе, сиз былай туругъуз, мени кызымы аякъларына жарарыкъды, – деп, къатын кызын алып келгенди.

Аны аякъларына ёнчелеп кёргендиле, алай чарыкъ жарамагъанды. Ол заманда къарт къатынладан бири ёксюз кызыны кёргенди.

– Эй кыыз, бери кел, – дегенде, ёге анасы:

– Угъай, анга жарарыкъ туююлдо, – деп, унамагъанды.

Алай болса да, ёнчелеп кёргендиле да, чарыкъ аны аягъына тамам жарагъанды.

– Тапчыкъ. Не ариу кыызды, энди ханнга барып айтайыкъ, – деп, кетгендиле.

Ханнга барып айтхандыла:

– Кызыны тапдыкъ, суйюнчюлюк бер, бек ариу, иги, ашхы* кыызды. Сыфаты – ариу, тюз ниетли, жаякълары – кызыл алмагъа къарагъан кибик. Ауuzu – оймакъ кибик, кёзлери – къарангы кече жулдузлагъа къарагъанча, аллай бир сейирлик ариуду, битеу жер юсюнде андан ариу жан болмаз.

Суйюнчюге эки къарт къатыннга да хан башдан аякъ кийимле этдирип бергенди. Кесине кызыны алыргъа хазырланып башлагъанды.

Къатынла кетгенлей:

– Сен, тыйылмагъан-жыйылмагъан, неге чыгъып кёрюндюнг къатынлагъа?! – деп, бек урушханды кыызгъа ёге анасы.

Кесини кызын ханнга берирге деп жарашдыргъанды. Ёге кызыны уа элтип, бир терен къаяда, агъач ичинде, эки кёзюн чыгъарып, къоюп кетгенди.

Бир киши отуннга ол къаягъа баргъанды. Бир заманда киши бир жылагъан таууш эшитгенди. Къараса: ол жерде бауур тебен тюшюп, кыыз жылай болгъанды.

– Кызым, нек жылайса? – дегенди.

Кыыз анга битеу хапарын айтханды. Андан сора киши:

– Мени жашым эм кызым жокъду. Къарт къатын бла манга кыыз бол, – деп, юйюне элтгенди.

Къарт къатын, кызыны кёрюп, бек къууанганды. Кыыз къолундан келгенича хар затны этерге кюрешип башлагъанды.

* Ахшы.



Ёге анасы кесини кызын ханнга бергенди. Хан аны жаратмагъанды, суймегенди:

– Не эришиди, аманды, – деп тургъанды.

Дорбунда жашагъан къарт къатын, соруп, излеп, кызыны тапханды. Кызыдан хапар соргъанды, кызы барын да къалай болгъанын айтханды.

Андан сора къарт къатын кишиге:

– Ма бу алмаланы элтип бар ханны юйюню аллына: «Алмала сатама», – деп кычыр. Ханны къатыны эшитсе: «Неден сатаса?» – дер. Сен а: «Эки кёзге сатама», – де. Эки кёзю чыгъарып берсе, алмаланы бер да, бери алып кел, – дегенди.

Киши къатын айтханча этгенди. Ханны къатыны чыгъып:

– Неден бересе? – деп соргъанды.

– Эки кёзге береме, – деп, жууап этгенди киши.

Ханны къатыны, юйге къайтып, кюбюрню ачып, анда(н) эки кёзю алып, чыгъарып, къартха берип, алмаланы алып кетди. Киши, эки кёзю алып, юйге къайтып келди. Ол кече къарт къатын, эки кёзю да салып кызыгъа, аны жашырып кетди. Эрттенликде кызы кюпханды, аны эки кёзю кеслери ачылгъандыла.

Кызы асыры бек кюуаннгандан жылагъанды. Жылагъанда, кёз жыламукълары жерге тёнгереп тюшюп, алтынла болгъандыла. Жерге тюшген алтынланы къарт къатын бла киши алып, бек кюуаннгандыла. Аланы чыгъарып сатып, юйле ишлетгендиле, терек бахча салгъандыла, малла алып, бек бай болуп, жашап башлагъандыла.

Хан бир жол ол жерни нёгерлери бла ётюп бара болгъанды. Ол жерде кызыны кёрюп, атдан кетгенди. Нёгерлери:

– Не болду? – деп, аны ёрге кюбаргъандыла.

– Ол жерде бир ариу кызыны кёргенме, анга къарайма деп кетдим. Жюрюгюз, кимни кызы болгъанын билейик, – дегенди.

Барсала, кызы бла къартла жашагъан юйге баргъандыла. Ханны биргесине баргъанлада кызыны атасы да болгъанды. Хан нёгерлери бла, кюнакъ болуп, анда тохтагъанды. Кюнакълагъа кюй союп, иги ашарыкъла этгендиле. Ала олтуруп, кими кёргенин, кими эшитгенин, кёп хапар айтхандыла. Бек артда кызы тилегенди:

– Эркин этсегиз, мен да бир гитче хапар айтыр эдим, – деп.

Ол кесини юсюнден битеу хапарын, къалай, не халда болгъанын, башындан башлап, аягына дери айтханды. Ол заманда кызыны атасы, ёрге туруп, кёз жыламукълары жерге агъа, барып, кызын кючакълагъанды эм кызындан тилегенди:

– Кесинг билесе, мен малчы болуп тургъан адамма, жукъ билмегенме, сокъурма, кеч, – дегенди.

Битеу олтургъан адамла бек сейир этгендиле. Хан къатынын эм къайын анасын ёлтюр(юр)ге дегенди. Кызы хандан тилегенди:

– Угъай, кюй аланы, ёлтюрме, кыстап кюй, – дегенди.

Хан, кызы айтханнга ыразы болуп, экисин да ол элден-жерден кыстап жибергенди. Алай бла ёксюз кызы, муратына эм насыбына жетип, ашап-жашап къалгъанды.



КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 2 паспорт. КъМАССР-ны Чегем районуну Тёбен Чегем элинде Аппаланы Солтанны жашы Мустафадан 22.03.1959 жылда жазылганды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъны мурдорун къурагъан битеудуния фольклорда эрттеден окъуна эркин хайырланылгъан, белгили «Золушканы» эм «Крошечка-Хаврошечканы» сюжет ызларыдыла. Былайда кёржюзтюлюннген жомакъ – бурунгу чыгъармачылыкъ онгуну къарачай-малкъар тюрлюсюдю.

ДЕВУШКА-СИРОТА

Давным-давно в одном селе жил пастух. У него умерла жена. От жены у него осталась единственная дочь. Пастух, как только жена умерла, женился на другой женщине. У второй жены от прежнего мужа была дочь. Итак, она привела с собой свою дочь. Эта женщина по дому всю тяжелую работу заставляла делать падчерицу. Она с падчерицей обращалась грубо, не давала нормальную пищу, не одевала в красивые одежды. Все, что находила, отдавала своей дочери, к ней относилась предельно хорошо, не давала что-либо делать.

У девушки от умершей матери оставалась одна пестрая корова. Мачеха заставляла девушку каждый день пасти корову и прясть шерсть. А в руки девушке совала лишь ломтик черствого хлеба. Она хлеб смачивала водой и потом уже ела. Сирота вставала утром рано и уходила на пастбище, а возвращалась домой поздно вечером. Шерсть, которую давала мачеха, она не успевала спрясть, половина шерсти оставалась, из-за этого девушке приходилось оставаться допоздна. Когда она возвращалась поздно:

– Почему ты до конца не спряла шерсть? – спрашивала она, била, ругала, таскала за волосы, щипала ее везде, куда только могла достать рукой, и так мачеха превращала ее в черную головешку.

Отец все это видел, однако из-за страха он не мог оградить свою дочь, не мог сказать жене: «Не делай так!».

Очень много времени девушка пасла корову и пряла шерсть. Однажды, как всегда, девушка пряла шерсть и пасла корову, вдруг откуда-то набежал большой ветер и вырвал из ее рук шерсть. Девушка побежала вслед за шерстью, и оказалась в глубоком ущелье. Когда оглянулась, на том месте, в маленькой пещере она увидела, как сидит старая женщина с седыми волосами. Она посветлела лицом, и казалось, она смеется. Девушка приложила к ее груди руку и сказала:

– Мама. Добрый день!

– Спасибо, добро пожаловать, моя дочь! – ответила старая женщина с седыми волосами. – Какое горе постигло твою голову? – спросила она.

Девушка рассказала ей всю свою историю. Старая женщина:

– Если так, дочь моя, сильно не переживай. На голову рябой коровы с пятном привяжи шерсть, и начинай оттуда прясть, – сказала она. И приласкав девушку, погладив ее голову, сказала добрые слова: Если, когда-нибудь еще возникнет несчастье, приходи ко мне, – сказала она и отправила ее.



Девушка, схватила шерсть, от радости под ногами травинку не ломая, бегом прибежала к корове и сделала все так, как ее научила старая женщина. И ее нить, протянувшись, стала длинной, и однородно тонко спряженной нитью. В тот же день девушка спряла шерсть полностью, которую ей дала мачеха.

– Почему ты пришла так поздно? – спросила мачеха и отправила ее вычищать коровник и подмести двор.

Теперь девушка каждый день возвращалась домой, полностью выполнив задание мачехи. Женщина этому сильно удивлялась и не находила повода ее побить. Не зная, что делать, не в силах поверить, в один из дней она пошла тайком вслед за девушкой и посмотрела. Она увидела, как девушка положила клок шерсти на голову рябой коровы с пятном и таким образом пряла пряжу.

«Как я и подумала, корова выполняет всю работу, надо убрать корову», – сказала она и вернулась к себе домой. Как только пришла домой, она мужу говорит.

– Я хочу поесть сычуг, зарежь корову, – сказала она.

Муж с удовольствием согласился, зарезал корову. Девушка, увидев все это, со слезами на глазах пришла к той старой женщине.

– Что случилось, дочь моя? – спросила она.

Когда девушка рассказала про все, старая женщина сказала:

– Не плачь, дочь моя.

Она ее успокоила, погладив по голове.

– Прямо сейчас иди домой. У коровы забери что-то из костей, из кожи, из крови, закопай в каком-нибудь месте. В будущем они тебе пригодятся, – сказала она.

Девушка сделала все, как было велено.

А в один из дней мачеха, одев свою дочь в красивую, дорогостоящую одежду:

– Сходим в одно место, – сказала она, и пока не ушли, она поручила девушке много дел. – Побелишь весь дом, полностью вычистишь, пока мы вернемся, – сказала она, и, хлопнув дверьми, они ушли вдвоем.

Когда они ушли, девушка пришла к старой женщине, и рассказала все, как есть. Она, погладив ее по голове:

– Подожди немного, мои три дочери должны сейчас вернуться, с ними сходишь, и побелите дом. После этого загляните в яму, куда закопали кости коровы, – сказала она.

Тут как тут, возвратились три ее дочери. Как только пришли, поздоровались со старой женщиной. С девушкой вместе сходили и побелили дом. И эти трое девушек говорят сироте:

– Иди ты тоже с нами, поглядим на той*! – сказали они.

После этого они раскрыли яму, где были захоронены кости рябой коровы с пятном. Когда они посмотрели, то увидели там много-много одежды. Когда девушка-сирота взяла их и надела на себя, она стала выглядеть очень красивой. Как будто полная луна. Она стала настолько красивой, что ни в сказках, ни в преданиях о таких не было сказано. После этого она вместе с тремя девушками сходила на праздник. Люди, когда ее увидели на свадьбе:

* Той – свадьба, свадебный пир; танцы, пир, веселье; торжество, праздник [3, 641].

– Как здесь оказалась ханская дочь? – говорили все с удивлением.

Их повели и усадили на самом почетном месте. И мачеха девушки-сироты со своей дочерью находилась там. Им негде было сесть, и они стояли у двери. Перед девушками поставили очень вкусные, почетные блюда.

Девушки ушли пораньше до окончания праздника. Девушка-сирота своей мачехе преподнесла хорошую еду, а сама вышла из помещения и ушла. Девушка: «Чтобы следом за мной меня мачеха не догнала и не узнала», – подумала, и торопливо, быстро пришла домой. Когда мачеха со своей дочерью домой вернулась, она сидела, как будто ничего не ведала, не знала. В это время ее мачеха начала хвастаться:

– Мы, спрятавшись, такое чудо увидели! Какие разные-разные блюда ели! Увидели ханскую дочь. Человек разве в силе это все объяснить? Ее красота – словно на полную луну глядишь, а слова, которые она произносила, были словно мед. Пред ней поставили самые вкусные, самые изысканные полезные блюда. А то, что от нее осталось, она дала нам, а мы с большим удовольствием поели, а ты сидишь здесь, бездельничаешь!

После этого:

– А что ты сделала за сегодняшний день? – спросила она.

– А что я должна была сделать? Побелила весь дом и все вычистила, – сказала девушка.

А ее мачеха оцепенела, не зная, что сказать.

На второй день, обувь, которую потеряла девушка, нашла какая-то женщина. «Сколько я на свете живу, но такой красивой, аккуратной, маленькой обуви я не видела», – сказала она. Не зная что делать, она понесла эту обувь к хану. Хан, увидев эту обувь:

– Хозяйка этой обуви, наверное, настоящая красавица, где бы она не была, ее надо найти, – сказал он.

Две пожилые женщины, взяв в руки эту обувь, начали ходить по домам, по селам, и стали мерить на ноги всем девушкам. Однако, подходящую девушку так и не находили. Мачеха этой девушки увидела этих женщин. И она им:

– Что вы ходите? – спросила.

Они ей рассказали всю историю.

– Если так, вы стойте здесь, она будет впору ногам моей дочери, – сказала она и привела свою дочь.

Они начали примерять на ее ноги, однако, эта обувь так и не подошла. В это время одна из старушек заметила девушку-сироту.

– Эй, девушка, подойди сюда, – позвала она.

– Нет, ей никак не подойдет, – начала мачеха отговаривать старушку.

Но все равно они померяли и увидели, что обувь ей подошла как раз.

– То, что надо. Какая красивая девушка, теперь пойдем и расскажем все хану, – сказали они и пошли.

Пришли к хану и начали рассказывать:

– Мы нашли эту девушку, теперь давай вознаграждение, очень красивая, хорошая, добрая девушка. Выглядит красавицей, с чистой душой, щеки, словно на красные яблоки глядишь. Рот похож на наперсток, глаза, как будто смотришь темной ночью на звезды, такая вот она удивительная красавица, на всей земле, наверное, нет такой красивой души.



В качестве вознаграждения обеим старушкам хан с ног до головы приказал им сшить одежду. И сам он начал готовиться к сватовству с этой девушкой.

Когда эти женщины ушли:

– Ты, которую невозможно остановить, неумная, зачем ты вышла и показала этим женщинам?! – спросила мачеха и сильно отругала девушку.

И она вознамерилась выдать свою дочь за хана. А падчерицу отвела и оставила глубоко в скалах, посреди леса, выколол ей глаза. Оставила там, сама ушла.

Один мужчина, чтобы заготовить дрова, пришел к этой горе. И в это время мужчина услышал плачущий голос. Когда оглянулся, на том месте, лежа навзничь, плакала девушка.

– Дочь моя, почему ты плачешь? – спросил он.

И девушка рассказала ему все, как было. После этого мужчина:

– У меня нет ни сына, ни дочери. Моей старушке и мне будь дочерью, – сказал он и привел ее к себе домой.

Старушка, увидев девушку, сильно обрадовалась. И девушка начала выполнять посильную работу.

Мачеха выдала свою дочь замуж за хана. Хану она не понравилась, он ее не полюбил.

– Какая некрасивая, плохая, – говорил он про нее.

Женщина, которая жила в пещере, расспрашивая, нашла девушку. И она у нее спросила как все случилось. Девушка рассказала ей, все как было.

После этого, старушка мужчине говорит:

– Возьми вот эти яблоки и перед домом хана кричи: «Продаю яблоки». Когда услышит жена хана: «По какой цене?» – спросит. А ты скажи: «За два глаза продаю». Когда она вынесет и даст тебе два глаза, отдай ей яблоки, и принеси сюда, – сказала она.

Этот мужчина поступил так, как велела эта старушка. Когда вышла жена хана и спросила:

– Почем продаешь?

– За два глаза отдаю, – ответил этот мужчина.

Жена хана, возвратившись в дом, раскрыв сундук, вытащив оттуда два глаза, принесла и вручила их старику. Она взяла яблоки ушла. Старик, забрав два глаза, вернулся домой. В ту ночь старушка, установив девушке два глаза, и спрятав ее, ушла. Утром девушка встала и у нее оба глаза сами раскрылись.

От радости, девушка заплакала. Когда она плакала, ее слезы скатываясь, падали на землю и превращались в золото. Упавшее на землю золото, старик со старухой подобрали, сильно обрадовались. Они, продавая золото, построили себе дом, посадили сад, закупили скот, сильно разбогатели и начали жить по-новому.

Однажды хан со своей свитой проходил через эту территорию. И на том месте увидев девушку, упал с лошади. Друзья:

– Что с тобой случилось? – спросили и подняли его на ноги.

– На этом месте я увидел очень красивую девушку, засмотревшись на нее, упал. Пойдемте, узнаем, чья она дочь, – сказал он.

Когда они направились в ту сторону, то пришли в дом, где жили девушка и старик со старухой. Среди сопровождающих хана был и отец девушки. И

хан со своими друзьями, будучи гостем, остановился в их доме. Они гостям зарезали барана и приготовили различные блюда. Усевшись, начали много рассказывать, кто, что видел, кто, что услышал. И в самом конце девушка попросила:

– Если вы мне разрешите, я бы тоже рассказала одну маленькую историю.

И она начала рассказывать о себе все, как было, при каких обстоятельствах с самого начала и до конца. В это время отец девушки, поднялся с места, из глаз его капали слезы на землю, он обнял свою дочь и начал просить:

– Ты сама знаешь. Я всю жизнь был пастухом, я ничего не знал, я ослеп, прости, – сказал он.

Все люди, которые там сидели, сильно удивились. Хан решил убить свою жену и тещу. Девушка попросила хана:

– Нет, оставь их, не убивай, лучше прогони, – сказала она.

Хан, довольный словами девушки, обеих из того села тут же прогнал. После этого девушка-сирота достигла своей мечты и стала счастливо жить и поживать.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 2. Записано 22.03.1959 г. в с. Нижний Чегем Чегемского района КБАССР от Аппаева Мустафы Солтановича (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

В основу сказки положен архетипический сюжет «Золушки» и «Крошечки-Хаврошечки», имеющий широкое распространение в мировом фольклоре. Приведенный текст является карачаево-балкарским преломлением известной архифабулы.



ФАТИМАТ

Эртте, бурун заманлада, бир ханны къатыны болгъанды. Ол къатын бир жол, кюзгюге къарай келип:

– Дуния башында менден ариу болурму?! – деп махтанганды.

Алайынлай кюзгю артындан бир ауаз анга:

– Да сенден ариу а Фатимат деп ёксюз къыз барды; аны бир жаягъы айча, бир жаягъы уа кюнча жарытады, кеси да бу элде жашайды, – дегенди.

Ол ханны уа бир айтхылыкъ къуртхасы болгъанды. Къатын, аны чакъыртып:

– Бу элде бир къыз барды да, ол къызны дуниядан къалай бла да къоратыргъа керекбиз. Бир амал тап, – деп къысханды.

Къуртха, кёп сагъыш эте да турмай, къатыннга:

– Да энди сен: «Къыйын ауруйма», – деп жат. Дарман дерле, сен а къуртхагъа айтыгъыз дерсе, ала манга келселе, мен а: «Бу элде Фатимат деп бир жаягъы айча, бир жаягъы кюнча жылтырагъан бир ёксюз къыз барды да, аны къанындан бир тамычы келтирип ичирсегиз, сау боллукъду», – десем, ала аны къоратырла, – деп юйретип кетеди.

Экинчи кюн ханны къатыны къыйын ауруйду, ёледи деп хапар чыкъды. Дарман деп излегенлеринде, дарман устагъа къуртханы чакъырдыла.

Ол а, тюз да кире келгенлей:

– Бу элде бир жаягъы айча, бир жаягъы кюнча жана, Фатимат деп ёксюз къыз барды да, ол къызны кесип, къанындан бир тамычыны келтирип ичирсегиз, сау боллукъду, – деди.

Хан, къарауашларына айтып, элде ит тутуучулары чакъыртып, алагъа:

– Бусагъатдан ол Фатимат деген къызны, кесип, къанындан бир тамычы алып келигиз! – деп буюрду.

Ит тутуучула, терк окъуна элге жайылып, Фатиматны табып, элден бир жанына чыгъардыла. Фатимат алыкъа жукъ да билмей эди. Аны бетини нюрю асыры ариу тёгюлгенден, асыры ариу жарытхандан, ёлтюрюрге кёзлери кыймай, ит тутуучула:

– Биз сени ёлтюрюрге керек эдик, алай – ёлтюрмейбиз, къоябыз. Къайтып, бу элге, бу журтха келсенг а, сенден да жокъ бизге хайыр, бизден да санга хайыр болмаз, узагъыракъ кет, – дегендиле.

Фатимат:

– Да сау болугъуз, сиз манга аллай бир жазыкъсындыгъыз эсегиз, бир да къоркъмагъыз, мен бу журтха аягъымы басдырмам, – деп, жол кёл алып кетди.

Ол да иги арлакъ озгъанлай, ит тутуучула, бир итни уруп ёлтюрюп, ханны къатынына аны къаныны тамычысын алып келдиле. Къатын, ол къан тамычыны къызны къаны сунуп жалай:

– Ох-ох, – деп ахсынды.

«Ёледи» деп ауругъан къатын олсагъат окъуна сау болду.

Фатимат, айлана-жюрюй кетип, бир уллу агъачны ичинде бир ариу ёзенде жети да къарындашны башы кийик териле бла жабылгъан къошларына тюшген эди. Аны кёргенде, къарындашла бары бирден:

– Ма, Аллах бизге эгеч да берди! – деп, Фатиматны сыйлы эгеч этип, къучакъладыла.



Жети да къарындашны уа, кеслери бла итлеринден сора, затлары жокъ эди. Алтысы, алты итни да алып, уугъа кетиучю эдиле, кичи къарындашлары уа, Фатиматха къарай, юйде къалыучу эди.

Бир кюн, ала да алай уугъа кетгенлей, Фатимат, кичи къарындашын да алып, жети тюкеннге да кирип айланып, излеп, бир ариу къумач табып, андан жетисине да башдан-аякъ кийим этгенди. Ингирликде, кийимлерин алып, кеси да омакъ кийинип, къарындашларыны алларына баргъанда, асыры ариудан, къарындашлары Фатиматны кыйналып таныгъан эдиле. Кийимле жашланы барысына да, ёнчелеп этгенча, тап болгъандыла. Фатиматны асыры бек суйгенден, къарындашла, ингирде уудан келселе:

– Фатиматха ким алгъа?! – деп, чабып къучакълаучу эдиле.

Ол быстырланы алай ариу этгенли уа, бютюнда бек суйюп, бютюн уллу тансыкълай эдиле.

Алай кюнлени бир кюнюнде биягъы ханны къатыны, кюзгюге къарап:

– Ах кюнюм, дуняда менден ариу болурму?! – деп керилгенинде, биягъы кюзгюню артындан бир ауаз:

– Да сенден ариу бир барды, сабийликден окъуна бир жаягъы кюнча, бир жаягъы айча жарытхан ёксюз къызчыкъ Фатимат! Кеси уа уллу агъачны уллу ёзенинде жети да къарындашха эгеч болуп турады, – деп жууаплагъанды.

Сора ханны къатыны, къуртханы чакъыртып, ачыуланып:

– Алыкъа да биягъы къыз ёлмегенди. Ма ол жерде жети да къарындашха эгеч болуп турады, – дегенинде, къуртха, ол Фатиматны дунядан къоратмай, экинчи бери къайтып келмезге айтып, чыгъып кетди.

Къуртха, къарт къатын сыфатлы болуп, бара-бара кетгенди да, ол къыз жашагъан жерлеге жете болурма дегенде, отунчукъла жыйгъан кибик эте, энишге ийилгенлей, уугъа бара тургъан къарындашла муну юсюне чыкъгъандыла. Ортанчыларыны ити, чабып, къуртханы таларгъа башлагъанды. Ортанчы къарындаш:

– Таламагъа кююгъуз, мени итим хатасызгъа тиймеучюдо, – дегенди.

Алай бирси къарындашлары, итни айырып, таларгъа кюймагъандыла. Къалгъанлары айтханнга ол да боюн салгъанды.

– Ма, Аллах бизге энди ана да берди! – деп, къуртханы, аягъын жерге жетдирмей, юйлерине элтгендиле.

Бир жол къарындашла барысы да уугъа кетгенлей, къуртха къатын Фатиматха бир аман зат къапдыргъанды. Сора, Фатимат артына аугъан бла, энди ёлдо деп, къууанып, ханны къатынына барып, хапарын айтханды.

Ханны къатыны да, къууанч этип, ишин алай тап мажаргъаны ючюн, къуртханы да жарагъанча ашатып, ичирип жиберген эди. Бир ауукъ замандан а, ханны къатыны, биягъы кюзгюге къарап:

– Дуня башында менден ариу жан болурму?! – дегенде, кюзгю артындан чыгъыучу ол ауаз:

– Да сенден ариу а бир барды: сабийликден окъуна бир жаягъы айча, бир жаягъы да кюнча жылтырагъан ёксюз къызчыкъ, уллу агъачны ичинде ариу талада жети да къарындашха да эгечлик этип турады, – деп жууаплагъанды.

Ханны къатыны, ачыуланып, жүреги атылыргъа жетип, къуртхасын чакъырып:



– Сен ол кызыны энтта да ёлтюрмегенсе, аны ёлтюрмей, жашау жокъду! – деп кычырыргъа кьалгъанды.

Ол заманда кьуртха:

– Не ёлюрме, не аны ахырын этерме! – деп, биягъы жары тебирегенди.

Эрттенликде кьуртха, кьарт киши сыфатха да кирип, кьарындашланы уугъа барыр жолларына жетип, жоннгурчха жыйгъан кибик эте, алайда тохтагъанды. Кьарындашла, бек кичилерин да юйде кьоюп, уугъа бара тургъанлай, анга тюбегендиле. Ити, биягъы тыйдырмай, мыллыгын ол кьартха атханда, ортанчылары:

– Эй, таламагъа кьоюгъуз, мени итим хатасыз адамгъа тиймеучюдю! – деп кычыргъанды.

Бирсиле уа, чабып, итни кыыстап:

– Ма, Аллах берди да, ата да тапдыкь! – деп, кьууанып, кьартны юйлерине элтгендиле.

Кьошну тебен жанында бир оюлгъан жерчиги бар эди да, экинчи кюн эрттенликде кьарт аны ишлеп чыкыгъан эди. Андан сора жашла бютюнда уллу кьууаннган эдиле.

Бир кюн жашла бу кьартха:

– Фатиматха иги кьарай тур, – деп, бары да уугъа кетдиле.

Ала да арлакь озгъанлай, кьуртха, кесин ол Фатиматланы кьатларында жашаучу кьарт сундуруп:

– Сен мени танымаймыса, кызым? Мен ол сизни кьатыгъызда жашаучу акьсакъал кишиме да! Кел, юйге кетейик, мында нек тураса? – деп, кызыны алдап башлайды.

Ол кюннге дери уа кичи жашны, жаратылгъанлы, аллындан кийик атламагъан эди. Ол кюн а тюз да муну аллындан, шырт деп, бир кийик кьачып чыгъады. Кийик да кьача, кичи кьарындаш да кьууа, уллу сыртладан ауа, кьолладан ёте, терен агъачха киредиле. Алай кичи кьарындаш, ушкок бла да атмай, кьууа кетип, агъач ичинде жетип, сермеп, ол кийикни арт аягъындан тутады. Аны да сыртына кётюрюп, агъач ичинде бир жаяу жолчукь бла келе тургъанлай, аякь тауушла эшитеди да, кийикни да алай жатдырып, ушкогуна да окь салып, хазыр болуп тохтайды. Бир заманда жаяу жолчукьда Фатиматчыкь бла «кьарт аталары» кёрюнедиле. Алайгъа дери алда келген кьуртха: «Энди урайым да, ёлтюрейим», – деп, Фатиматны алгъа ётдюреди.

Аланы кёргенде, кичи кьарындаш уллу сейирге кьалады. Иш тап болмагъанын жүреги ангылап, илишаннга кьуртханы мангылайын тутдурады. Кьуртха, бетин да алгъасындырып*, Фатиматны ёлтюрейим деп, кьолуна бир уллу кьазыкь алады. Сора, урайым деп, кьазыкьны ёрге кётюргенлей, кичи кьарындаш, сампалдан басып, кьуртханы кьаплайды. Билмей тургъанлай, ушкок атылгъаннга Фатиматчыкьны кюнча жаннган бетчиги акь кьагъытча агъарады. Кичи кьарындаш, эрлай кийигин да алып, жолгъа тюшюп, кьатына баргъанда, Фатимат, аны танып, кьаты кьучакълайды. Сора:

– Ким ёлтюрдю, нек ёлтюрдю? – деп, кьайгъылы сорады.

Жаш анга хапарны айтып ангылатады. Харамжюрек кьарт кьуртханы да ёлюгюн жол тюбюне атып, сау кийикни да алып, экиси да юйге баргъанларында, кьарындашла, уудан келип, быланы кьайдагъыларын

* Алышындырып.

билмей, кьайгы эте тура эдиле. Кичи кьарындашны бла Фатиматны хапарларын эшитгенде уа, бек уллу сейирге кьалдыла.

Андан арысында бу кьарындашла, Фатиматчыкьны кишиге да ышанмай, кюн сайын кичилерин юйде кьоюп, уугьа жюрюп, ашап-жашап турадыла.

Ханны кьатыны уа кьуртханы не кьадар сакьласа да, ол артха кьайтып келмеди. Ёлген кьуртха кьайры кьайтып келлик эди?!

Бир кюн ханыша: «Ол кьыз а ёлген болмазмы?» – деп, биягы кюзгюге кьарап:

– Ох, дуняда менден ариу жан болурму?! – дегенде, кюзгю артыны ауазы анга:

– Да сенден ариу а бир барды, сабийликден окьуна бир жаягы айча, бир жаягы кюнча жарытхан Фатимат, ёксюз кьызчыкь! Ма ол бюгюн да агьачны ичинде ариу ёзенни ортасында жети да кьарындашха эгечлик этип турады, – дегенди.

Ханны кьатыны ачыудан ёлюп кьала эди! Асыры адыргы этгенден, олтуруп, жеринде чыдаямал тохтагьан эди. Бар амалы тауусулуп, аскер жыйып, кьурап, сауутландырып, ол уллу агьач ичинде ариу талада жашагьан кьарындашла бла уруш этерге, Фатиматны да ёлтюртюрге атландырады.

Бир эрттенликде кьарындашла уугьа барыргьа хазырлана тургьанлай, бир кьызыл чыпчыкь, учуп келип, аланы алларында кьонуп: «Чу-уйт!» – деп жырлап башлайды.

Аны эслеп: «Не эсе да бир палах барды», – деп, кьарындашла, уугьа да бармай, кьошда кьаладыла. Кичи жашны уа кьарауулгьа жибередиле. Ол, барып, уллу бутакьлы дыф терекге минип кьараса, бир уллу аскер ала таба келе. Жаш, эрлай тюшюп, артха кьууулуп барып, аскерни келген хапарын кьарындашларына айтады. Олсагьат уруш кереклерин, ушкок от, окь тапханларын бир да кьоймай, кьарауул жерлерине элтип, хазырланып, жашла аскерни жетерин сакьлап башладыла. Аскер аллында ханны жашы келе эди. Кьарындашла жетиси да бетжан салып тохтадыла. Фатиматчыгь 'а алагьа керек затны тапдырыргьа хазыр эди. Аскерни, халкьны кьырмаз ючюн, кьан тёмкюз ючюн, ёлтюрмез ючюн: «Тохтагьыз, келмегиз, келсегиз да, урлукьбуз», – деген магьанада, тамата кьарындаш ушкогун кёкге буруп атдыргьан эди. Аны атылгьаны бла, асыры кьоркьгьандан, ханны жашыны кьолундан ушкогуну тюшгени тенг болгьан эди, аскер да тохтагьан эди. Ол заманда ханны жашы, аскерини арт жанына барып:

– Уо хахай, алгьа, алгьа! – деп кьычырыкь этди да, аскер алгьа тебинди, кьарындашла да жибермезден болдула. Уруш башланды.

Ханны жашы, алгьаракь секирип:

– Ой аманла, кьан берип, кьан алыу! – деп, халкьны алгьа кьозутуп, кеси артха кьачар умут этгенлей, кичи кьарындаш, садакьгьа узалып:

– Да халкьны энтта да бир алда, – деп, атып, тюз да мангылайындан уруп, атдан чюелтди.

Аскер не аямай кюрешсе да, бетжан салып илишанлагьан жигитле аны иги кесегин кьыргьан эдиле...

Аскерни кьайтып келгенин кёрген хан бла аны кьатыны: «Кьарындашланы да хорлап, Фатиматны да ёлтюрюп келедиле!» – деп кьууанадыла. Алай, седиреген аскерлери жууукьлашханда, жашларыны да жоюлгьанын билгенлеринде, кьууанчлары жилиугьа бурулду.



Къарындашла уа, бир жаягъы айча, бир жаягъы кюнча жарытхан Фатиматчыкъны да сыйлы эгеч этип, ол уллу агъач ичинде ариу талада ашап-жашап къаладыла.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 294–298 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кӛчюргенди.

«Фатимат» деген къарачай-малкъар жомакъны мурдоруна битеудуния кӛлден чыгъармачылыкъда бола келген «биреуню ариулугъуна сукъланыуну» белгиси салыннганды. «Белоснежка», «Сказка о мертвой царевне» деген чыгъармалагъа ушайды. Ханны къатыны, дуня башында андан эсе кӛп кереге бир ариу къыз (Фатимат) болгъанын эшитип, аны обур къатынны кючу бла жашаудан думп этерге итинеди.

Фатиматны жакъчылары болуп, жети къарындаш чыгъадыла. Жомакъны ахырында ала аманлыкъчыланы онглайдыла.

ФАТИМАТ

Давным-давно, в древние времена у одного хана была жена. Однажды эта женщина, всматриваясь в зеркало:

– Есть ли на свете красивее меня?! – говоря, похвасталась.

И тут же за зеркалом послышался голос:

– Да, красивее тебя есть девочка-сирота Фатимат; у нее одна щека – как луна, другая щека как солнце светит, и сама живет в этом селе, – сказала.

А у этого хана была одна известная ведьма. Женщина вызвал ее:

– В этом селе живет одна девушка, и эту девушку мы должны любым путем изжить со свету. Придумай что-нибудь, – потребовала она.

Ведьма, много не думая, женщине:

– Да, теперь ты лежи и говори, что тяжело болеешь. Все начнут искать лекарства, а ты скажи: «Спросите у ведьмы», а когда они ко мне придут, я им скажу: «В этом селе живет девушка-сирота Фатимат, у которой одна щека как луна, другая щека – как солнце светит, возьмите у нее каплю крови и напоите ее, тогда она выздоровеет», – скажу, тогда они ее уберут, – сказала она, подсказывая, что надо делать.

На второй день жена хана сильно заболевает и пошел слух, что она умирает. Когда заговорили о лекарствах, как лекаря вызвали ведьму.

А она, как только появилась:

– В этом селе есть девушка: одна щека как луна, другая щека как солнце сверкают, ее зовут Фатимат, она сирота, если вы эту девушку зарежете и каплей ее крови напоите, то она выздоровеет, – сказала она.

Хан, тут же вызвал своих слуг, а также и тех, кто содержит в селе собак, сказал им:

– Сейчас же пойдите и зарежьте девушку по имени Фатимат, и от ее крови принесите каплю! – сказал он приказным тоном.

Люди, которые держат собак, сразу же разошлись по селу, нашли Фатимат и вытащили ее на окраину села. Фатимат еще ни о чем не догадывалась. От



ее лица такой красивый свет излучался, так красиво освещал, что люди с собаками, пожалели ее:

– Мы должны были тебя убить, но, не будем убивать, оставляем. А если вернешься обратно в это село, в эти края, и от тебя нам не будет никакого толку, и от нас тебе не будет никакого толку, уходи подальше, – сказали.

Фатимат:

– Да, спасибо вам, раз вы меня так пожалели, вы совсем не переживайте, в этих краях моей ноги не будет, – сказала она и отправилась в дальний путь.

Когда она уже отошла подальше от того места, собаководы ударом убили одну собаку и жене хана принесли ее каплю крови. Эта женщина, подумав, что эта капля крови той девушки, начала лизать:

– Ох-ох, – она вздыхала.

Та, которая лежала больной, умирала, тут же выздоровела.

Фатимат, странствуя, передвигаясь, среди большого леса в красивом ущелье попала в кош^{*} семи братьев, крыша которого была покрыта шкурами диких зверей. Когда братья ее увидели, они все вместе:

– Как хорошо, Бог дал нам и сестру! – сказали они и приняли у себя, обняли Фатимат с большим почетом.

А у этих семерых братьев, кроме самих и собак ничего не было. Когда шестеро, взяв с собой шесть собак, уходили на охоту, младший брат, остался дома, чтобы присмотреть за Фатимат.

Однажды, когда они ушли на охоту, Фатимат, взяв с собой младшего брата, начала ходить по семи магазинам, искать материю, нашла одну красивую ткань и из нее скроила всем семерым братьям с ног до головы одежду. Вечером, она понесла им одежду, и сама, принарядившись, была такой красивой, что братья с трудом ее узнали. Одежда всем братьям подошла как раз, как будто она с них брала мерку. Братья так сильно полюбили Фатимат, что вечером вернувшись с охоты:

– Кто к Фатимат первым добежит?! – говорили они, и бегом все ее обнимали.

А после того, как она им сшила красивую одежду, они ее особенно полюбили и сильно скучали по ней.

Однако в один из дней опять жена хана, посмотрев в зеркало:

– Ах, мое солнце, есть ли в мире красивее меня?! – сказала и потянулась, опять с обратной стороны зеркала послышался голос:

– Да, есть красивее тебя одна, еще с детства у нее одна щека – как солнце, другая щека – как луна светит, есть девочка-сирота – Фатимат! А сама она в большом лесу, в большом ущелье живет, будучи сестрой семерым братьям, – ответило зеркало.

После этого жена хана, вызвала опять ту же ведьму, рассердившись:

– До сих пор та девушка не умерла. Она живет в каких-то краях, будучи сестрой семерым братьям, – произнесла она. Ведьма, пообещав, что пока Фатимат со света не выживет, второй раз сюда больше не вернется, вышла и ушла.

Ведьма, превратившись в старушку, шла-шла, и когда пришла к тому месту, где жила девушка, начала подбирать дровишки, и как только нагнулась,

^{*} Кош – стойбище.



братья, которые шли на охоту, наткнулись на нее. Собака, среднего брата тут же побежала и накинулась на ведьму, чтобы растерзать ее. Средний брат:

– Пускай растерзает, моя собака безвредного не трогает, – сказал.

Однако другие братья, остановив собаку, не дали ее растерзать. Здесь он тоже подчинился тому, что другие говорят.

– Как хорошо теперь, Бог дал нам и мать! – сказали они, и, не давая ведьме ногою коснуться земли, понесли домой.

Однажды, когда все братья ушли на охоту, ведьма дала Фатимат поест отраву. После этого, когда Фатимат упала на спину, ведьма подумала, что она умерла, и от радости, побежала к жене хана и рассказала ей все как было.

И жена хана, от счастья, что она все дело хорошо завершила, хорошо накормила, напоила ведьму и отпустила. Через некоторое время жена хана взглянула опять в зеркало:

– На всем белом свете, есть ли красивее меня?! – когда она спросила, голос, который всегда доносился из-за зеркала:

– Да, есть красивее тебя одна: прямо с детства одна щека словно луна, другая щека словно солнце, сияющая девочка-сирота, в большом лесу на красивой поляне является сестрой семерым братьям, – ответило.

Жена хана, рассердившись, чуть ли сердце у нее не выскочило, вызвала свою ведьму:

– Ты еще эту девушку не убила, не убив ее, жизни не будет! – раскричалась она.

В это время ведьма:

– Или умру, или я ее прикончу! – сказала и направилась туда же.

На рассвете ведьма, приняв образ старика, вышла на дорогу, где братья шли на охоту, и, подбирая щепки, остановилась на том месте. Братья, оставив дома самого младшего, когда шли на охоту, встретили ее. Собака, опять, не успокаиваясь, накинулась на этого старика, тогда средний:

– Эй, оставьте, пускай растерзает, моя собака невинного человека не трогает! – закричал он.

А другие побежали и, отгоняя собаку:

– Как хорошо, Бог нам дал и мы нашли отца! – сказали и, обрадовавшись, старика отвели к себе домой.

На коше, одно место было разрушено, и на следующее утро старик это все заново выстроил. После этого ребята, еще больше обрадовались.

Однажды эти ребята, говорят старику:

– Будь внимательней к Фатимат, – и ушли на охоту.

Когда они прошли немного, ведьма, выдав себя за старика, который живет по соседству с Фатимат:

– Ты меня не узнаешь, доченька моя? Я же тот аксакал*, который живет рядом с вами! Давай, пойдем домой, зачем ты здесь находишься? – сказала она и начала обманывать девушку.

А до этого дня перед младшим братом, с тех пор как он родился, никогда не пробегал кийик**. А в этот день именно перед ним, стремительно, один марал, убегая, проскочил. Марал, убежал, младший брат догонял, и так они перешли большие сопки, ущелья и зашли в глубокий лес. Но младший брат,

* Аксакал – седобородый.

** Кийик – дичь, дикое животное.

не выстреливая из ружья, все догоняя, застигнув в лесу, быстро схватил это животное за заднюю ногу. И подняв его на спину, когда он шел в лесу по тропинке, он услышал чьи-то шаги, уложив животное там, зарядив свое оружие, он приготовился. Через некоторое время на тропинке маленькая Фатимат и их «дедушка» показались. До этого места, которая шла впереди ведьма: «Вот сейчас ударю и прикончу», – подумала она и Фатимат пропустила вперед.

Когда это увидел младший брат, он сильно удивился. Когда он сердцем почувствовал, он нацелился на лоб ведьмы. Ведьма, сморщив свое лицо, собралась убить Фатимат и взяла в руки большую дубинку. После этого, она, решив ее ударить, подняла дубину, младший брат нажал на крючок и сваливает ведьму. Не понимая в чем дело, когда произошел выстрел у маленькой Фатимат, как солнце яркое личико тут же стало белым как бумага. Младший брат, сразу схватив свою дичь, вышел на дорогу и подошел к ней, Фатимат его, узнав, сильно обняла. После этого:

– Кто убил, зачем убил? – спросила она, встревоженная.

Брат объяснил ей полностью все, как было. Бессердечной старой ведьмы труп выбросив вдоль дороги, и, забрав целиком животное, когда они вдвоем пришли домой, братья, вернулись с охоты и не зная, где они находятся, были в состоянии тревоги. А когда услышали историю про младшего брата и Фатимат, они сильно удивились.

В дальнейшем эти братья маленькую Фатимат никому, не доверяя, каждый день при ней оставляли младшего брата, ходили на охоту, так они жили-поживали.

А жена хана, сколько не ждала ведьму, она обратно не вернулась. Умершая ведьма как бы вернулась?!

В один день жена хана: «Эта девушка не умерла ли?» – подумав, посмотрев в зеркало.

– Ох, есть ли на свете души красивее меня?! – когда сказала, голос из-за зеркала ей:

– Да, есть одна красивее тебя, еще с детства одна щека – как луна, другая щека – как солнце светит у Фатимат, у девочки-сироты! Вот она сегодня в лесу посреди красивого ущелья семи братьям стала сестрой, – сказала.

От злости жена хана чуть не умерла. Не зная, что делать, она присела, но не могла никак успокоиться. Истратив все возможности, она собрала армию, снарядила, вооружила их и отправила в поход, чтобы в том большом лесу на красивой поляне, где живут семеро братьев, повоевать с ними и убить Фатимат.

В одно утро, когда братья готовились на охоту, одна красная птица прилетела, села перед ними: «Чу-уйт!» – чирикает и начинает петь песенку.

Заметив это: «Происходит что-то неладное», – сказали братья и не пошли на охоту, остались в коше*. А младшего брата отправили сторожить. Он, приходя на то место, когда поднялся на большое смотровое дерево т посмотрел, то увидел, что огромное войско движется в их сторону. Юноша, быстро слез, бегом вернулся обратно и рассказал братьям, что в их сторону движется войско. Они тут же приготовили военное снаряжение, ружья, пули, сколько у них было, ничего не оставляя, пошли на сторожевое место,

* Кош – стойбище.



приготовились и братья начали ждать, когда появятся войска. Впереди армии шел сын хана. Все семеро братьев укрепили свою оборону. А маленькая Фатимат была готова доставлять все, что им нужно было. Чтобы не уничтожить армию, чтобы не пролить крови, не убивать людей: «Остановитесь, не подходите, если подойдете, будем стрелять», – в этом смысле, старший из братьев, направив ружье вверх, сделал выстрел. От этого выстрела, так испугались, что одновременно у сына хана ружье из руки выпало, и армия остановилась. Тогда сын хана встал в конце армии:

– Эй, давайте вперед, вперед! – закричал он, и тогда армия двинулась вперед, и братья начали обороняться, чтобы их не пускать. Началась война.

Сын хана, прыгнув вперед:

– Ой, вы, дрянные, отдавать кровь, брать кровь! – сказал и позвал народ вперед, а когда сам хотел обратно убежать, младший брат, взял стрелу:

– Да, еще раз обмани народ, – сказал он и, пустив стрелу, попал прямо в лоб, что тот упал с коня.

Как бы не старалась армия, джигиты*, которые укрепили оборону, стреляли, уничтожили многих...

Хан и его жена, увидев обратно идущую армию, подумав, что они возвращаются, победив братьев и убив Фатимат, сильно обрадовались. Однако, когда приблизилась поредевшая армия, и когда они узнали, что их сыновья уничтожены, их радость превратилась в плач.

А братья, с маленькой Фатимат, у которой одна щека – как луна, другая щека – как солнце сияющей, почитая как сестру, в том большом лесу на красивой поляне остались жить да поживать.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 294–298) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В основу сказки положен широко известный в мировом фольклоре архетипический мотив «зависти к чужой красоте». Напоминает произведения «Белоснежка» и «Сказка о мертвой царевне». Жена хана, прослышав, что на свете есть девушка, превосходящая ее красотой (Фатимат), задалась целью уничтожить ее с помощью злой ведьмы. Защитниками Фатимат выступают семеро братьев-джигитов, которые в итоге наказывают злодеев.

* Джигиты – герои, храбрецы.

ТЮЗ ЁТМЕГИ ТЮЗГЕ ЖЕТЕДИ

Бир эсирик, махтанчакъ патчах болгъанды. Не зат этсе да, алай киши эталмаз, не зат болса да, аны менден башха киши эталмаз деп жашагъанды.

Бир жол а бир да дуньяда болмагъанча бир тауушлукъ, омакъ къала ишлетгенди. Къаланы этип:

– Энди мунуча алапат дуньяда болурму? Мен ант этеме: «Бу къаланы бир шарайыбы, кереклиси барды», – деп, киши айтса, алай а ким айтса да, мен аны ёлтюрмейин къоймам! – деп ант этгенди.

Сунмай тургъанлай, бир къонакъ келгенди. Патчах, махтанып, къаланы кёргюзтгенди.

– Къала игиди, тауушлукъду, алай муну ичинде кеси Къуран окъуй, зикир айта тургъан, аллай зат болса, бютюнда алапат болур эди, – дегенди.

Къалагъа шарайып тапханы бек ачыу тийгенди, болсада, къонакъны ёлтюрюрге айыпды. Ёлтюрмесе уа, антына ёледи. Ол себепден юч жашны да:

– Ол кеси Къуран окъуй, зикир айта тургъанны келтиригиз! – деп жибергенди.

Ала, бара кетип, юч жол айырылгъаннга тюбегендиле. «Бу жолну барсанг, сау къайтырса, бу жолну баргъан къайтыргъа, къайтмазгъа да болур, былайтын баргъан а къайтмаз», – деп, тизилип болгъанды.

Тамата къайтыр жолгъа, органчы арсар жолгъа, кичи къарындаш а, суйсе-суймесе да, къайтмаз жолгъа кетгенди.

Кичи, бара кетип, юч эмегеннге бир-бир жолугъуп, ючюсюн да ёлтюрюп, юч ариу къыз да алып, ол кеси окъуй, жырлай тургъанны да алып, къайтып, биягъы юч жол айырылгъан жерде къарындашларын сакълап, юч къызны да юч къарындаш алып бара, эки къарындаш, тамата бла органчы, кенгешип:

– Биз былай барсакъ, ол махтаныр да, хапарын айтыр. Ансыз да патчах бизден аны сюеди, аны орунуна салыр. Андан эсе, биз муну жояйыкъ, элте барып, жол жанында бир тешикке атып кетерге керекди(, – оноу этедиле – *Ф.Г.*)

Къызлагъа да:

– «Биз аны кёрмегенбиз», – деп айтыгъыз, айтмасагъыз, ёлтюрюбюз! – дейдиле.

Келип, хан да къууанып, ашап-жашап турадыла.

Ол кичи къарындашларын а, тешикден къычыргъан тауушун жолоучула эшитип, ёрге чыгъарадыла. Бу да, атасы жашагъан шахаргъа келип, къазла кюте тургъан бир чыгыр жашчыкъгъа тюбеп:

– Не хапар? – деп соргъанды.

– Хапар манга уллу къууанчды. Тамбла, ханны эки жашы эки къыз келтиргендиле да, аланы къууанчын этедиле. Бу къазланы да жартысын да бюгече соярыкъдыла. Аз болсала, манга кютерге да тынч боллукъ эди, – дегенди.

– Алай эсе, ол ханны жашлары келтирген юч эгечден бирлерине, кичилерине бу кюзгюню да бер, кече, къарангы болуп, къазланы юйге сюрюр заманнга ол санга ат, сауутла, кийимле берир, аланы да алып кел, – деп жиберип, чыгырчыкъ да келтиргенди.



Халкъ да, жыйылып, иче тургъанлай, ол кичи эгечлери, муну кѣрюп, ханнга:

– Мени эки эгечими эки жашынг алады, мени эрим (жокъ), кесиме жаш сайларгъа (къой), – деп, барып, халкъны ичинден бу жашны чыгъарады.

Хан, жашны танып:

– Къайдан чыкъдынг? – деп сорады.

Хапарны кичи эгечлери айтып, эки къарындашны тѣрт эмиликини къуйрукъларына тагъып, эки эгечни мынга къарауашла этип, кичи жашын кеси орунуна патчах этгенди.

Мен да ол къууанчда болгъанма, боза-сыра шауданча агъа эдиле, мени уа тилиме да тиймедиле...

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 19 папка, 13 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазылгъаны да белгисизди.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Гитче къарындашны юсюнден сюжетге къуралгъан сейир-тамаша жомакъ. Чыгъарма толу туююлдо, бек магъаналы жери жокъду: баш жигит сейирлик кеси Къуран окъугъан, зикир айтхан затны къалай бла къолгъа этгени ачыкъланмай къалады. Ол шарты уа аны жашау-турмуш жомакълагъа жууукълашдырады.

ПРАВЕДНЫЙ ХЛЕБ ПРАВЕДНОМУ ДОСТАЕТСЯ

Один надменный, хвастливый царь был. Что бы ни сделал, так никто не сможет, чтобы то ни было, это кроме меня никто не сумеет сделать, думая, жил.

А как-то раз такую, что во всем мире не сыскать, одну замечательную башню заставил построить. Выстроив крепость:

– Теперь такая же замечательная на свете есть ли? Я клянусь, если кто-то скажет: «У этой башни есть дефект, недостаток», – кто так скажет, я его не убив, не оставлю! – сказав, дал клятву.

Неожиданно один гость приехал. Царь, похваставшись, показал башню.

– Башня хорошая, превосходная, однако если бы внутри нее было нечто такое, само читающее Коран, поющее зикиры*, еще более замечательной была бы, – сказал.

То, что в башне недостаток нашел, очень обидно было, тем не менее, стыдно убивать гостя. А если не убьет, от клятвы отступается. По этой причине он всех троих сыновей:

– То, что само Коран читает, зикиры поет, привезите, – сказав, послал.

Они шли-шли и встретили развилку трех дорог. «По этой дороге пойдешь, живым вернешься, тот, кто по этой дороге пойдет, может вернуться или не вернуться, а сюда идущий не воротится», – было расписано.

Старший по дороге с возвращением, средний по сомнительной дороге, а младший, хочет, не хочет, по невозвратной дороге ушел.

* *Зикир* – зикр, радение, молитва [5, 39].

Младший, бредя, с тремя эмегенами по-очереди встретившись, всех троих убив и трех красивых девушек забрав, и то, что само читало, пело взяв, вернувшись, на той же развилке братьев подождав, трех девушек три брата забрав, когда ехали, два брата, старший и средний, посовещавшись:

– Если мы так поедem, он похвастается и свою историю расскажет. И без того царь больше нас его любит, вместо себя оставит. Лучше мы его погубим, отвeдя, рядом с дорогой в одну дыру сбросив, уйти надо, – решают.

И девушкам:

– «Мы его не видели», – скажите, если не скажете, убьем! – сказали.

Вернувшись, и хан обрадовавшись, живут-поживают.

А их младшего брата, услышав его крики, путники вытащили наверх. И он, придя в город, где жил его отец, повстречав одного пасущего гусей лысого мальчика:

– Какие новости? – спросил.

– Новости – для меня большая радость. Завтра, два сына хана двух девушек привезли, их торжество будут справлять. И половину этих гусей сегодня ночью зарежут. Если меньше станет, и мне пасти легче было бы, – ответил.

– Коли так, одной из трех привезенных сыновьями хана сестер, младшей, это зеркало отдай, и ночью, когда стемнеет, к тому времени, когда пора будет гнать гусей домой, она тебе коня, оружие, одежду даст, и их, забрав, принеси, – сказав, отправил, и лысенький принес.

В то время, как народ, собравшись, пил, та младшая из сестер, увидев его, хану:

– На двух моих сестрах два твоих сына женятся, у меня мужа нет, позволь самой выбрать парня, – сказав, пойдя, из толпы народа этого парня вывела.

Хан, парня узнав:

– Откуда появился? – спрашивает.

Младшая сестра историю рассказав, двоих братьев привязав к хвостам четырех необъезженных (лошадей), двух сестер ему прислужницами сделал, младшего сына вместо себя царем сделал.

И я на том пиршестве был, мед-пиво рекой текли, а в рот не попали (буза-сыра, как из родника текли, а мне даже на язык не попали)...

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 13. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукова) Ф.Х.

Волшебная сказка, основанная на сюжете о младшем брате.

Произведение неполное, в ней отсутствует самое важное место: не раскрывается, каким образом главный герой завладел чудесным, читающим Коран, поющим зикиры предметом. А эта черта приближает его к социально-бытовым сказкам.



ЮЧ КЪАРЫНДАШ (I)

Эртте-эртте бир белгили кишини юч жашы бар эди. Жашлары, ёсюп, акъыл-балыкъ болурдан алгъын окъуна, аталарыны ауузундан эшитген сёзлери: «Хурма, ай, хурма!» – деп эди.

Бу сёзню жашла аталарындан гитчеликден эшите туруп, уллулукъларында да эшите болгъанлары себепли, сейирсинип, хар бири аталарына тюрлю-тюрлю хурмаланы келтирип болгъандыла. Болсада, къайсы келтирген хурмагъа да бюсюремей эди. «Мен излеген хурманы табалмайсыз», – деп къоюучу эди.

«Бу бизни атабыз къаллай хурма излей болур?» – деп, жашла ючюсю да: «Дуньяда бар эсе, бу бюсюрер хурманы тапмай къоймабыз!» – деп, излерге бютюн болдула да, ючюсю да атландыла.

Была ючюсю да, бирге бара кетип, юч жол айырылгъан жерге жетдиле да, юч жол айырылгъан жерде юч тюрлю жазуу окъудула. Биринчисинде: «Былай баргъан ач болур», – деп эди, экинчисинде: «Былай баргъан жалангачлыкъгъа къоркъуулуду», – деп эди, ючюнчюсюнде: «Былай баргъан ёлюмге къоркъуулу болур», – деп эди.

Былайда юч къарындаш да, оноу этип, айырыуну таматагъа бердиле. Тамата къарындаш:

– Не болса да, былайтын мен барайым, – деп, ач болмаз жерни сайлады.

Органчы ёлюм болмаз жерни сайлады. Кичиге ёлюмге къоркъуулу жол туюшдю.

Бу юч да къарындаш, жолларын алып, саламлашып, айырылып кетдиле.

Кичилери, бара-бара кетип, бир эмеген къатынны кёрдю. Эмеген къатындан къоркъуп, сагъыш этип, эмегенлени адетлери эсинде болгъанлай, андан бугъа барып, эмеген къатынны умбашы* бла артына атылгъан эмчегин аузуна салды. Ол заманда эмеген къатын, эмчегин аллына тартып, къарап:

– Татлы къабын боллугъенг, алай татлы бала болдунг ансы! – деди.

Сора ол кюн, кеч болгъунчу, жаш эмеген къатын бла турду, кеч болгъанда:

– Энди мени эрим келир заман болады. Ол сени кёрсе, бир огъурсузлукъ этер. Букъ! – деди да, жашны букъдурду.

Эмеген къатынны эри бир бууну да кётюрюп келди да, къатыннга айланьп:

– Аллах-аллах, бу не ийисди? Ас ийис, бус ийис, адам ийис, тас ийис – бу къайдан чыкъды? – деп сорады.

Да эмеген ашап-ичип тойгъандан сора, къатын:

– Сен кетип тургъанлы, мен бир бала тапханма. Мен сюйгенлей, сюйсенг, ийис аны ийисиди, – деди.

Сора эмеген:

– Да олай** эсе, игиди да! Баланы уа мен бек сюер эдим, алай болгъай*** эди ансы! – деди.

Къатын жашны букъдургъан жеринден чыгъарып кёргюзтдю.

Эмеген жашны ийнакълады, бек сюйдю да:

– Не айланаса, не жюрюйсе, балам? – деп сорду.

* Инбаш.

** Алай.

*** Болгъа.

– Мени бир атам барды. Мен гитче заманымдан бери аны ауузунда сёзю «хурма» депди. Къаллай тюрлю хурма алып келсем да, бирин да жаратмай тургъанды да, энди бир башха тюрлю хурма излей айланама, – деди.

Сора эмеген:

– Ай, сен ары барма, барсанг да, сау къайтмазса! – деди.

– Ёллюк эсем да, барлыкъма, – деди жаш.

– Алай эсе, сен былай ары барлыкъса. Бара кетип, эки къая бир бирине тие тургъан жерге жолугъурса, къыйын болса да, къутулурса. Дагъыда бара кетип, бир уллу суугъа жолугъурса. Андан ётерге кёчюу излемегенлей, уруп, кирип ётерсе. Андан къутулгъанлай, сен излеген хурмангы табарса, – деди эмеген.

Энди жаш, былайдан атлана туруп, эмегеннге уллу алгъышла этип кетди. Ол эмеген айтхан къаядан да къутулду да, ол айтхан уллу суугъа жетди. Эмеген айтханча, кёчюу излемезден кирип, суудан ётдю.

Ол уллу суу къып-къызыл Къызыл-Къан-Черек эди. Андан, ары жанына ётюп, бара кетип, бир хурма терекге жетди.

Хурма терекни тубюнде бир бек ариу къатын олтуруп, аны тобукъларына башын салып, жукълап тургъан бир эмегенни кёрдю.

Ол заманда бу жаш, къатынны ариулугъуна бек сейирсинип, алайда хурма терекден хурмаланы алып, къолундагъы артмакъларын толтурду да, эмегенни, къатынны да къайгъы(сы)з алай къоюп, ала бла да сёлешмезден, къайтып, артына кетди.

Сора ол алгъын жолукъгъан эмегеннге барды. Жаш къутулуп келгенине ол да уллу къууанч этди. Ол кече жаш эмегенде къалып, эрттенликде жолуна атланды да, къарындашлары бла айырылгъан жерге жетип, алайда къарындашларын тапды да, бек ариу саламлашдыла.

Болсада, тамата эм ортанчы къарындашла бу кичилерин жояр оноу этдиле да, бири:

– Ёлтюрейик! – деди.

Бири уа:

– Ёлтюрмей, суугъа атайыкъ да, кеси ёлюр, – деди.

Къалай-алай болса да, жашны суугъа атдыла. Сора ол келтирген хурмаланы алып, аталарына келдиле.

– Ма мен излеген хурма буду! Муну келтирдигиз, алай бу хурма болгъан жерде не кёрдюгюз? – деп, аталары сурады.

– Анда, – дедиле жашла, – бир зат да жокъ эди.

– Алай эсе, – деди аталары, – муну сиз тапмагъансыз. Муну тапхан баламы не этгенсиз? – деп, ала да:

– Айырылып кетгенбиз да, аны биз кёрмегенбиз, – деп, аталары бла даулаша тургъанлай, кичи жаш юйге кирип келди.

Ол заманда атасы кичи жашына:

– Ай, балам, бу хурманы сенми тапханса? – деп сорду.

Жаш:

– Хурманы мен тапханма, – деди.

Сора аталары:

– Анда не кёргенсе? – деп сорду.

– Атам, – дейди кичи жашы, – мен алайда бир къатын кёрдюм да, аныча ариулугъу болгъан жан кёрмегенме, эшитген да этмегенме! Аны тобугъуна



башын салып, жукълап тургъан бир эмегенни да кёрдюм. Андан уллу да жаныуар кёрмегенме, эшитген да этмегенме. Алай бу хурмаланы тапханда, была биз кёрген хурмалагъа ушамагъанлары себепли, хурмаладан артмакъланы толтуруп, сен излеген хурма болурламы деп умут этип, бюсюрер эсенг деп, ала бла да сёлешмей кетип къалгъанма.

Ол заманда аталарыны эки кёзюнден да кёз жаш чыкъды да:

– Ма ол къатын сизни анагъызды. Аны ол эмеген менден хор бла сыйырып кетген эди. «Мен излеген хурма» дегеним ол эди. Сен аны тапханса. Ол сауду – анга мен бек къууандым. Энди ол сау болгъанын мен билдим, сиз а, къалай суйсегиз да, этигиз. Аны балаларысыз да, аны сиз кесигиз излегиз, мени уа излерге да, табаргъа да къолумдан келлик туююлдо. Не ючюн десегиз, энди мен къартма, къарыусузма, – деди аталары.

Энди бу биягъы юч къарындаш да: «Анабызны табарбыз!» – деп, атланып, чыгып кетдиле да, биягъы юч жол айырылгъаннга жетип, ючюсю да, ол кичи жаш алгъын баргъан жол бла бара кетип, ол кичи жаш алгъын жолукъгъан эмеген къатыннга тубедиле.

Сора ол эмеген къатын ол экисин да, кичилеринча, балала этди. Биягъы кеч болду да, энди эри келир заманнга бу энди келген эки къарындашны да букъдурду.

Эмегенни эри, биягъыча бир бууну алып келип, къатынына алгъынча сорду. Сора къатыны:

– Да ма бу сен билген балабыз келгенди, андан башха бир зат да жокъду, – деди.

Эмегенни къатыны, эрин ашатып, ичирип тойдургъандан сора, биягъы:

– Да энтта да сени келиринге мен эки бала да тапханма, – деди да, эки жашны да чыгъарды, эмегеннге кёргюзтдо, ол да аланы бала этди.

– Да сиз бизни балаларыбызсыз, не айланасыз, не бюрюйсюз? – деп сорду эмеген.

– Да, – дейди кичи жаш, – ол мен, келтирип, санга кёргюзтюп, атама элтген хурмаланы атам жаратхан эди. «Анда не кёрдюнг?» – деп соргъанда, мен кёргеними айтдым да, ол мен кёрген ариу къатын бизни анабыз болгъанын атабыз бизге айтды. Энди биз анабызны излей чыкъгъанбыз да, сени бла оноулашыргъа келгенбиз. Анабызны табалырча акъыл юйретирсе деп ышанып келгенбиз да, энди эт оноу!

– Энди сиз анагъызны излеп айланасыз. Ол бек къолдады. Ол эмеген эмегенлени бек къарыулусуду, кючлюсюдо. Ол эмеген къалгъан эмегенлени да жунчутуп жашайды. Эмегенлени кёбюсю да аны суймейдиле. Сиз мени балаларым болгъансыз. Анагъызны табаргъа къаст этип: «Бу жолда ёлсек да», – деп тебирегенигизге мен да ыспас этеме, бек бюсюрейме, сау къайтсагъыз, бек къууанырыкъма. Энди сиз барасыз, кичи къарындашыгъыз жол таныйды, къыйынлыгъын да биледи, сизни насыбыгъыз болса, ол эмеген биягъы жукълап болур. Алай жукълап болмай, сизни эслесе, ючюгюзню да бир жолгъа къабып бошарыкъды. Кесигизни эслетмей, бир жанлы озуп, бир жаргъа жетерсиз. Ол жарны бир уллу тешиги болур. Эмегенни жашауу ол тешикеди. Ол хурма терекни къатында, не аны тубюнде болмаса, ол мен айтхан тешике боллукъду. Ол эмегенни бир бичагъы барды да, аны сиз кеси къолугъызгъа этмесегиз, дуньяда болгъан не тюрюлю амал бла да аны хорлаяллыкъ туююлсюз. Аны хорлар ючюн, бичакъны къолгъа этигиз.

Ол бичакъ бла болмаса, сиз анга этеригигиз жокъду, – деп, хар не билгенин да айтды, юйретди.

Ол юйретиуню жашла ангыладыла да, атланып кетдиле. Алайдан белгили жолланы кырккып, биягы хурма терекни тубюнде биягы кыатын олтуруп, эмеген да биягыча жукълап тургъанын кёрдюле.

Алайда кыатын жашланы эследи, эки тамата жашын да таныды да, жилиды. Жашла аны жилигъанын кёрдюле, алай кичи жашын аналары танылмады.

Болсада, аналары жашлагъа, кьолу бла башына тийип, чачын ачып, иша бла: «Быллай бир болсагъыз да, манга жукъ эталлыкъ туююлсюз, – деп билдирип, – мен ёлгеннге кесими санайма, сиз мени ючюн кесигизни ёлтюртмегиз да, былайдан кетигиз», – деп ангылатды.

Аналарыны ишарасын* ангылап, эки тамата жаш да кыайтып кетерге деп болдула. Кичилери уа, аналарына кыарап, кьолу бла ишара этип: «Бичакъ кыайдады?» – деп ангылатды.

Аналары, кьолу бла хурма терекни кёргюзте: «Терекни башында тагъылыпды», – деп ангылатды. Кичи жаш, аны ангылап, эрлай терекни башында тагъылып тургъан бичакъны кьолгъа этди.

Былайда, муну кёрюп, эки тамата жаш да кичилерине:

– Урма! Урсанг да, ёлтюраллыкъ туююлсе. Ычхынып, ючюбюзню да бир кыапханы бла жутарыкыды! – дедиле.

Аланы айтханларына кыарамай, кичи жаш аналарына:

– Мен бу бичакъ бла муну урама, тюз силдегенимлей, сен, кыобуп, артха кыач, – деди да, бичакъ силденди, шел такъыйкыада окъуна кыатын секирип кыопду, артына кыачды.

Бичакъны жаш силдегенде, эмегенни башы кесилди. Аны башы, чархындан айырылып, хурма терекни тёп-тёгерегине бир ненча кере да айланды да, сора башха жары тёнгереп тебиреди.

Энди кичи жашны кьолунда бичагъы, ол башны ызындан барады, аны ызындан а ол эки кыарындашы да, аналары да барадыла.

Болсада, эмегенни башыны ызындан кичи кыарындаш артха кыалмай барады, эки кыарындашы бла аналары уа артха кыалгъан эдиле.

Эмегенни башы, ол айтылынган жарны тешигине барама деп, жар тешикде юйюне кыутулду.

Ол жар тешикни – эсе да, эмегенни юйюню – аллына кичи жаш жетип, олтуруп, бичакъны да кьолунда тутуп тургъанда, эки кыарындашы да, аналары да алайгъа жетдиле.

Энди аналары, жашлагъа кыарап:

– Бу эмегенни болгъан хазнасы бу тешикдеди, анда аны юйю барды. Ол юйде юч кызыны кесине кыатынга деп ёсдюре эди. Бу эмеген ма бу аркыан бла туююучю эди, андан да ма муну бла чыгыгучю эди. Энди аны башы санындан айырылды – ёлдю. Хазнасы, башы да тас болсун! Энди биз кетейик, – деди.

Эки тамата жаш да алайгъа ыразы болдула.

Болсада, кичи жаш эки кыарындашына да:

– Киригиз тешикге, энди эмеген кишиге хата эталлыкъ туююлдю, – деп кюрешсе да, унамадыла, аналары да унамады.

* *Иша / ишара* – ышара «белги» [6, 1035].



Кичи жаш:

– Ол кесине кьатыннга деп асырагъан юч сабий кьызла мында ачдан ёллюкдюле, аланы чыгъармай кетмейме, – деп тохтады.

Аналары жилиялды:

– Къайсыгъызгъа да, тюшеме дегенигизге ыразы туююлме! – деди.

Болсада, аркъанны кыйырын кьатыракъ да бегитип, кичи жаш эмегенни тешигине аркъан бла тюшдю. Юйюне барып кьараса, эмегенни башы ол юч да кьызны аллында тёнгереп, ол юч кьыз да, анга сейир болуп: «Бу ёлдю, энди биз къалай кьутулайыкъ?» – деген сагъышда болгъанлай, жаш кёрдю. Ол юч кьыз да, жашны кёрюп, чабышып кьучакъладыла да, къайдан, къалай келгенлерин, къалай бла муну кьолуна тюшгенлерин жашха толу хапарладыла.

Сора жаш:

– Бу эмегенни неси барды? – деп сорду.

Кьызла мында болгъан не затланы да кёргюзтдюле. Сора кьочхар мюйюзлери тенгли юч кюмюшно кёргюзтдюле да:

– Была бизни ючюбюзге неках белгиледиле деп айтхан эди. Алай неках кюн жегинчи, бизни насыбыбызгъа, бу ёлдю. Бу налат бизге кьошулмагъанды, – деди.

Дагъыда бир кьап-къара жаныуарны да кёргюзтдюле.

– Бу жаныуаргъа бу налат эмеген, не затны суйсе да: «Келтир!» – деп буюрса, бу жаныуар келтирип келиучю эди.

Бу затланы хар бирине шагъырей болуп битгенден сора, бу жаш айтды:

– Таматагъыз къайсыгъыз, кичигиз, ортанчыгъыз къайсыгъызсыз? – деп, аны да билди да: – Биз юч кьарындаш болабыз. Таматагъызны татматабыз, ортанчыны ортанчыбыз, кичигизни кичибиз алырбыз, алайгъа ыразы болсагъыз. Болмасагъыз да, сизни мен былай, онгузлукъда кьоймайма, чыгъарама да, къайры да барыргъа эркин этерме, – дейди.

Сора ол эркинликни кьызлагъа берип, жууап да алгъынчы, болгъан хазнаны аркъан бла жаш тышына чыгъарды да, къайтып, тешикке келди да, сора таматама деген кьызны тамата кьарындашына чыгъарды, ортанчыма дегенни ортанчыгъа жиберди.

Энди кичи кьыз бла бу жаш тешикке: «Сен алгъа чыкъ», – деп жаш: «Угъай, сен алгъа чыкъ», – деп кьыз, даулашдыла. Болсада, жаш хорлап, кьыз аркъан бла ёрге чыгъардан болдула.

Былайда кьыз:

– Да мен алгъа чыкъсам, экибиз бир бирден айырылыргъа тюшерикбиз. Болсада, сен айтханны мен этейим, алгъа окъуна башына чыгъайым. Алай, ма, сен бу жюзюкню тас этме, бир заманда жолугъургъа болурбуз, анда эслербиз, – деп, кьыз аркъан бла чыкъды.

Бу эки кьарындаш да, кьызгъа кьарап, аны кюнча жылтырауукъ акъ бетине сукъланып, экисини да эслерине аман эс тюшюп:

– Бу, бек ариуун сайлап, кесине деп жибереди. Муну жояйыкъ, ёрге чыгъармайыкъ, анда неда ачдан ёлсюн, неда аркъан бла ёрге чыгъарабыз деп, ёрге тарта келип, жардан атып ёлтюрейик, – деген акъылгъа келдиле.

Энди аркъанны эки кьарындаш да энишге жиберип, ёрге тарта келип, сора аркъанны кесип, жаш артха тюшдю. Энди аркъан жокъ, жаш тюбюнде кьалды.

Аналары, аны билип, оууй-шаууй этди.

– Мен ансыз ёлмей кетмейме! – десе да, болалмаздан эки жаш да, юч кыыз да, жашланы аналары да былайдан, къайтып, алгъыннгы кьонакьбай эмегенлерине бардыла.

Бу кьонакьбайларына болумну хапарладыла, ол да бек уллу бушуу этди. Энди была бары да юйлерине кетдиле, кьонакьбай эмеген да жеринде кьалды.

Была юйде аталарына жетгенде, аталары кичи жашын сурады.

– Ол ёлгенди, аны сурама, – деп, бёлек заман жашайдыла.

Болсада, бу кичи жаш, кёп кюреше, жарда аякь орун эте келип, жардагъы тешикден, жардан да, ол эмегенни юч кыызгъа да этилген неях белгилени да алып, башына чыкьды.

Ол халда айлана келип, биягъы кьонакьбай эмегеннге тубейди. Ол аны бала этген эмеген, уллу кьууанч этип, ол кече да юйюнде кьалдырып, эрттенликде ашырып жиберди.

Бу кичи жаш, юйюне тюзюнлей бармай, хоншу* элде бир кюмюшчюде тохтады.

Энди юч кыыз да, аналары да жашланы атасы бла юйдедиле. Алай ол эки кыыз, эки жашха кьошулмазгъа тохтап:

– Бизни неях белгилерибиз тешикде кьалгъандыла, ала кюмюшден кьочхар мюйюзлеча ишленипдиле. Аланы, барып, алып келмесегиз, бизге кьошулургъа жарамайды, аны себепли, бери келтиригиз, – дейдиле.

Ол эки жаш да, хоншу элде кюмюшчюлеге барып, форманы айтып:

– Ишлегиз, алай болмаса, сизни ёлтюрлюкбюз! – деп тохтайдыла.

Кюмюшчюле, амалсыз болуп:

– Ишлербиз, – деп сёз айтдыла да, жашла ийнанып кетдиле.

Бир кюн, кюмюшчюле бек мудах болуп тургъанларын кёрюп, бу кичи кьарындаш:

– Не мудахсыз? – деп сорду.

Бу кюмюшчюле болумну да, бу жашланы аталарыны халын да, аны кирик эки кьарындаш юч кыызны келтиргенлерин да, энди аланы жашлагъа кьошулмагъан сылтауларын да айтдыла. Анда жаш тюзюндю. Сора кюмюшчюлеге:

– Сиз манга бир аякь кьоз келтиригиз, бир чёгюч да келтиригиз, бюгече кюреширме да, ала айтхан белгиледен бирин ишлеп берирме, – деди.

Ол кече бу кичи жаш кьозланы да ашап, танг атды, сора кюмюш белгиледен бирин да, ол кичи кыызны жюзюгюн да кюмюшчюледен бирине берип:

– Белгини тамата кыызгъа берирсе, бу жюзюкню уа кесингден башха киши кёрмезден кичилерине берирсе, – деп жиберди.

Бу кюмюшчю тамата кыызгъа белгини бергенин кёрюп:

– Энди органчы кыызгъа да тюз муну кирик ишлеп келтир! – деп кьысыдыла.

Алай ол кичи кыыз, жюзюк кеси кьолуна тюзгенлей, жюзюкню танып, арсарсыз:

– Бу жюзюкню иеси къайда эсе да, айт! – деп, кюмюшчюню этегинден тутуп тохтайды.

* Кьоншу.



Бу кюмюшчю, кёп сагъыш эте келип, бу кызыны кыатылыгы бла керти да амалсыз болуп:

– Муну манга берген киши мени юйюмдеди. Жюзюкню манга аманат эте: «Дуньяда кесинг бла кыыздан башха жюзюкню адам кёрмесин, билмесин. Элтип, кыызга тапдыргъандан сора, бир кишиге бир зат айтма», – деп, бек тилегенди. Мен да сенден Аллах бла тилейме: бир кишиге бир зат айтма, – деп, кюмюшчю да кыыздан тилейди.

Энди кюмюшчю, кыайтып, юйюне келип, бу кюмюш мюйюзню ол тамата кыыз бек жаратханын эмда тамата кыарындаш да керти да жаратханыны хапарын айта келип, жюзюкню алгъан кыыз кесин сурагъанын да тынгылы айтып, сора:

– Экинчи да ол ишлегенингча энтга да бир кюмюш мюйюз ишлемесенг, мени дуньяда кыоярыкъ туююлдуле. Сен мени кыонагъымса, экибиз бир анадан, бир атадан туугъан кыарындашлага болгъанбыз. Манга жазыкъсын да, жоюлуруму суюмесенг, тюз алгъынча бир кюмюш мюйюз ишлеп бер, – деп кысыды.

– Тейри, – дейди биягы кыонакъ, – экинчисин ишлеген кыыйныракъды. Болсада, экибиз кыарындашла болдукъ деп, сен манга таза жүрекли болгъанынг себепли эмда, биринчи мюйюзню да мен айтхан кыызга берип, жюзюкню да, мен айтханча, кишиге кёргюзтмей, ол кичи кыызга тапдыргъанынг бла бирге, ол айтханны, келип, манга тюз айтханынг себепли, мен санга бюгече окъуна экинчи мюйюзню да кюмюшден таплап берирме. Алай сен эринме да, биягыча бир уллу табакъ бла кыозланы бла биягы чёгючню манга келтир.

Биягы кюмюшчю, бу жаш айтханча, кыозланы да, чёгючню да келтирип, берип, артына айланып, кесини отоуна кетди.

«Ярабий, ишлеялгъан болурму?» – деп, кюмюшчю, танг атханлай, кыонагына келди. Бу кыонакъ, кюмюшчюге жарыкъ бет бла, ышарып, чыгып:

– Ма, кыарындашым, артыкъ да кыыйналмагъанма, – деп, кюмюш мюйюзню кыолуна тутдуруп, – энди муну, элтип, ол ортанчы кызыны кыолуна, ортанчы, эсе да, ол экинчи жаш кёре тургъанлай, берирсе, – деди да, – алай бере туруп, ол юч кыыз да, ол эки жаш да, аланы аталары, аналары да бирге болуп кёрюрча болсала, иги боллукъ эди. Алай эталсанг, этерсе да, не айтханларын эшитип, келип, манга айтсанг, бек ыразы боллукъма. Сен кесинг а абери да айтма. Айт деген затларына жууабынг, жашлагъа айланып: «Да сиз айтхан затны мен эталгъанымча этгенме», – деп кыой.

Кюмюшчю экинчи мюйюзню, элтип, ол кыонакъ жаш айтханча, бары да бирге жыйылып тургъанлай берди. Былайда юч кыыз да, ол эки кыарындаш да, бир бирге кыарап, кыызла мудах халда, жашла сагъышлы, алай суюсюнмейирек ышардыла, аталары бла аналары да, жерге кыарап, бир кесекге мычыдыла.

Сора юч кыыз да бирге олтуруп тургъанлай, ючюсю да бир ауузданча, ол кюмюшчюге кыарап:

– Ахшы улан! Быланы ишлеген сен туююлсе, быланы санга берген адам барды. Ол адамны сен бери келтир, келтирмесенг да, дуньянгдан тюнгюлорсе, аны бил, – деп, ачыкъ айтдыла да, сора жашлагъа кыарап: – Быланы бу кюмюшчюге бергенни, бу кюмюшчю бла барып, келтирип

келмесегиз, биз сизге кьошулмабыз. Аны кёзюбюз бла кёрсек, ол заманда кьошулурбуз, – дедиле.

Жашла да, кюмюшчю да бир кесекге тынгылашдыла да, сора жашла:

– Да ким берлик эди кюмюшчюге кюмюш мюйюзлени ишлеп? Аллай адамы бар эсе, кюмюшчю кеси айтсын, – дедиле.

Энди жашланы кьоркьганларын кьызла сездиле да:

– Кюмюшчю кеси, барып, бу бизни неках белгилерибизни бергенни алып келсин, ары деричи кьошулмазыбызны билигиз! – деп тохтадыла.

Сора, бир зат да айтмай, кюмюшчю туруп тебиреди. Биягьы кьызла ючюсю да иги да жарыкь ышарыу бла кюмюшчюге:

– Къалай-алай болса да, быланы санга берген адамны бери алып кел. Ол сени кьонагьынгы. Ол келмей, бу юйге татыулукь кирмез, – деселе да, кюмюшчю жууап этмезден чыгьып кетди.

Бу кьарындашла экиси да:

– Бизни кичи кьарындашыбыз келип, бугьуп туруп, бу белгилени кюмюшчюге ол бере болурму? Биз ол ёлгенди деп тургьанлыкьгьа, аны кьадамы башхача бичилип, кьайтып келип, бу ишлени ол бизни сынар ючюн этип айлана болурму? Алай эсе, сора биз атабызгьа, анабызгьа, бу кьызлагьа эмда халкьгьа бетибизни къалай кёргюзтюрлюкьбюз? Кел, бу кюмюшчюню ызындан, кёрюнмей, юйюне дери барайыкь да, бизни кичи кьарындашыбыз анда эсе, не амал бла да кюмюшчюню да, жашны да жойыкь, ансы аман айыплы боллукьбуз, – деп келишдиле.

Сора кюмюшчюню ызындан элге дери бугьуп бара тургьанларында, кюмюшчю, артына кьарап, быланы эследи. Ол заманда тохтап къалды да: «Была мени ызымдан нек келе болурла? Жетме кьояйым да, сорайым», – деп сагьыш этгенин жашла да сездиле да, арсарсыз кюмюшчюню жетип:

– Айт, сени юйюнде ким барды? Бар эсе, кимди, не айланады? – деп сордула да: – Тюзюн айтсанг, айтырса, айтмай, сизде башха биреулен тапсакь, дуньянгдан сен кесинг да, сени кьонагьынг да тюнгюлюгюз! – дейдиле.

– Да мени кьонагьым барды. Сизге аны хатасы жокьду. Ол мени бла кьарындаш болгьанды. Айтдырмай кьоймай эсегиз, сизге жашау бичерлик ол болур, мени да, аны да жойгьандан сиз не табарыкьсыз? Тейри, жоябыз десегиз да, жангылырсыз. Ол, мен билгенден, бир керти да огьурлу адамды. Кертисин айтсам, ол бусагьатда юйде жокьду. «Бир уллу жумушум барды, бюгюн келалмам, тамбла, не бирси кюн ингирилгим мында болур», – деп кетгенди. Ол сизге бек керек эсе, тамбла, не бирси кюн ингирде келигиз, суйсегиз а, мен аны кесим окьуна, алып, сизге барырма, – дейди.

– Эй, – дейдиле бу жашла, – ол керти да бизни кичи кьарындашыбыз эсе, биз болмагьанлай, юйге барып, кьызлагьа, атабызгьа, анабызгьа жолугьуп, биз анга этгенлени айтса, ол хапар болса, бизни дуньяда жашагьаныбыздан не магьана барды? Биз юйге кьайтайыкь да, келсе, жолукьгьунчу, ташатын абери эталсакь, кёрюрбюз. Эталмаса кь да, айтырлыгьы болса, биз болгьанлай айтыр, кьоркьмаса. Айтып тебиресе уа, биз экибиз биреуню къалай женгмебиз? Ол болумну айтып тебиресе: «Кьылыч сени кьолунгда эди, биз кьылычсыз эмегеннге не эталлыкь эдик?» – десек, анга анабыз шагьатлыкь этер. Экинчиси – бизни эмегенни



башыны ызындан тешикге тюшмегенибизни юсюнден айтса, аны сылтауун мен айтырма, – деп, тамата жаш айтды.

– Да ол сылтау сылтау болурму? Андан эсе башха сылтаула эте турмай: «Къоркъуп тюшмегенбиз», – деп къойсакъ, тюз болур, – деп, ортанчы айта, даулашып, бир тюрлю сылтаугъа да тюзелалмай, юйге жетдиле.

Бу кичи къарындашлары уа, айхай да, бир жары да кетмей, къонакъбайны юйюнде олтуруп тургъанда, къонакъбай кюмюшчю келип, хар не эшитгенин, кёргенин кибик, ызындан келген эм артха къайтып кетген жашла бла сёлешгенлерин да толусунлай айтып ангылатды.

Была, эсе да, къонакъбай да, къонакъ да, сагъыш этдиле да, сора къонакъбай кюмюшчю къонагъына:

– Была манга, артыкълыкъ этип, кеслерине боюн салдырып турадыла, бу кюмюшчюлени таматасы уа менме. Былагъа бизни боюн салмазгъа эркинлигибиз жокъду, сени уа была танымайдыла. Къызла да: «Сенде къонакъ барды, аны бери келтир», – деп къаты болгъандыла. Бу мени ызымдан келе кетип къайтханла къызланы эрлери болгъаннга ушайдыла. Бу не алапат, не сейирди? Кертисин айтханда, мен Аллахдан букъдурмагъанымы сенден да букъдурмам. Мен санга (сорайым – *Ф.Г.*) да, сиз биригиз биригизни биле болурсуз, манга аманлыкъ излемей эсенг, тюз айт, – деп къысады.

Сора бу жаш, кюмюшчюге айланып, хар болумну кюмюшчюге башдан аякъгъа айтып ангылатады да:

– Бар, – дейди кюмюшчюге, – биягъы была жыйылгъанларында, къызлагъа къарап, атабыз, анабыз да эшите тургъанлай: «Жаш мени къонагъымды, юйде олтуруп турады. Алай ол: “Мени эки къарындашым юйде болуп, мен юйге бармам. Ала кетселе, атам бла анамы кёрюрге уа барырма, ол кичи къыз бла да жолугъурма”, – дегенди», – деп билдир, – дейди.

Бу кюмюшчю, къонагъы айтханнга бек сейир этип, бираз мычып, къонагъыны келечилигин толу этеди.

Сёз энди аталарыны бла аналарыны болады. Ата, ана да, бу юч къыз да, олтуруп, сагъыш эте келип, эки къарындашны да къатларына чакъырып:

– Барыгъыз да, кичи къарындашыгъызны табыгъыз. Аны толу жүрекден ант бла тобагъа къайтханыгъызгъа, анга этген терсликлеригизге сокъураннганыгъызгъа эмда мындан ары аллай иш этмезигизге ийнандырып, кечгинлик излеп, аякъларына ийилип, аны да, бу кюмюшчюню да алып келигиз. Алай туююл эсе, атадан, анадан кибик, бу къызладан да, халкъдан да айырыласыз! – деп, аталары, ол халда аналары эмда къызла ючюсю да алай айтып тохтагъанда, къарындашла, была айтханча этип, кичи къарындашларын да, кюмюшчюню да алып келип, бир бирлери бла керти халда жарашып, юч къарындаш да, ата-аналары бла да, къызла бла да, парахат болуп мамырлыкъда, ол кюмюшчюню да юйюне эркин этип, кичи жашха уа халкъ батыры атап, алай бла ашап-жашап къалдыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 11 паспорт. Холамханланы Х.-Исмаилдан 23.02.1965 жылда жазылгъанды. Ким, къайда жазгъаны белгисизди.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Аталарыны буйругъун (мында – алгъа ол кюсеген айырмалы хурманы табаргъа, ызындан а – эмегенни ёлтюрюп, аналарын тузакъдан къутхарыргъа) толтуруп айланган юч къарындашны юсюнден сюжетге къуралгъан сейир-тамаша жомакъ. Адетдеча, жумушну жигитиракъ, халалыракъ, тюз акъыллыракъча берилген кичи жаш тамамлайды. Мында анасыны къутхарыууну юсюнден мотив ариу къызланы азатлау бла экинчи кере келин табыуну мотивине кёчеди. Битеу чырмауладан ётюп, баш жигит кесини жауларын хорлайды эм, асыллыгъын кёргюзтюп, анга эришип, тюрлю-тюрлю хаталагъа къалдыргъан къарындашларын кечеди.

ТРИ БРАТА (I)

Давным-давно у одного известного мужчины было три сына. Еще до того, как его сыновья, подростки, стали совершеннолетними, слышанными из уст их отца словами были: «Хурма, ай, хурма!».

Поскольку эту фразу юноши от своего отца с детства слыша, и в сознательном возрасте слышали, удивившись, каждый отцу разнообразные плоды хурмы привозил. Однако, которым бы ни была привезена хурма, (ему) не нравилась. «Желаемую мной хурму не можете найти», – говаривал.

«Этот наш отец какую хурму ищет?» – думая, сыновья, все втроем: «Коли есть на свете, хурму, что ему понравится, не найдя не успокоимся!» – решив, еще больше настроившись искать, все трое отправились.

Они все трое вместе идя, достигли развилки трех дорог, и на развилке трех дорог три разные надписи прочли. В первой: «Так идущий проголодается», – говорилось, во второй: «Кто так пойдет, рискует поизноситься (остаться в лохмотьях)», – говорилось, в третьей: «Кто так пойдет, окажется в смертельной опасности», – говорилось.

Здесь все три брата, посоветовавшись, отдали выбор старшему. Старший брат:

– Что бы ни случилось, по этой стороне я пойду, – сказав, выбрал место, где не проголодается.

Средний выбрал место, чтобы не было смерти. Младшему выпала грозная гибелью дорога.

Эти три брата, выбрав свои пути, попрощавшись, разошлись.

Младший из них, идя-идя, одну эмегеншу увидел. Эмегенши испугавшись, поразмыслив, держа в памяти обычаи эмегенов, таясь от нее, перекинутый через плечо сосок эмегенши положил в рот. Тогда эмегенша, потянув свой сосок вперед, посмотрев:

– Был бы сладким кусочком, но только сладким дитем стал! – сказала.

Затем в тот день, пока не припозднилось, юноша с эмегеншей пробыл, когда стало поздно:

– Теперь приближается время моему супругу вернуться. Если он тебя увидит, какую-нибудь жестокость учинит. Прячься! – сказала и юношу спрятала.

Муж эмегенши, одного оленя взвалив, пришел и, обратившись к жене:



– Аллах-аллах, это что за запах? Запах ас, запах бус*, человеческий запах, пропавший запах – он откуда взялся? – спрашивает.

И после того, как эмеген, наевшись-напившись, насытился, жена:

– С тех пор, как ты ушел, я одного ребенка нашла (родила). Если полюбишь его, как я люблю, запах – его запах, – сказала.

Тогда эмеген:

– Да коли так, это же хорошо! А ребенка я бы очень любил, так было бы только! – молвил.

Женщина юношу, выведя из того места, где спрятала, показала. Эмеген парня обласкал (радостно принял), очень полюбил и:

– Чего ходишь, чего бродишь, дитя мое? – спросил.

– У меня есть отец. С моего детства у него на устах (бытующее) слово «хурма». Какого вида хурму бы я ни принес, ни одна не нравилась, теперь хожу, разыскивая какого-нибудь другого сорта хурму, – ответил.

Тогда эмеген:

– Ай, ты туда не ходи, если и пойдешь, живым не вернешься! – сказал.

– Даже если и умру, пойду, – молвил юноша.

– Коли так, ты вот так туда пойдешь. Идя-идя, встретишь место, где две скалы друг друга касаются, хоть и будет сложно, прорвешься. Еще идя-идя, встретишь большую реку. Чтобы перейти через нее, переправу не ища, сразу войдя, переберешься. Оттуда выбравшись, ты свою искомую хурму найдешь, – сказал эмеген.

Теперь юноша, отсюда отправляясь в путь, эмегену много добра пожелав (благопожеланий произнеся) ушел. Через ту, упомянутую эмегеном, скалу пробрался и добрался до названной им большой реки. Как и сказал эмеген, чтобы не искать переправу, войдя, через воду прошел.

Та большая река была красным-прекрасным Кызыл-Кан-Череком**. Оттуда на другую сторону перебравшись, идя-идя, до одного хурмового дерева дошел.

Под хурмовым деревом одна очень красивая женщина сидя, положив голову на ее колени, спавшего эмегена увидел.

Тогда этот парень, очень удивившись красоте женщины, там с хурмового дерева сорвав плоды хурмы, наполнил свои сумки, которые держал в руках, и эмегена, и женщину без тревоги там оставив, и не поговорив с ними, вернувшись, ушел обратно.

Затем он к ранее встреченному эмегену пошел. И он в честь того, что парень, спасшись, пришел (успешно вернулся), большое празднество устроил. Той ночью парень у эмегена оставшись, утром отправился в путь и, добравшись до места, где расстался со своими братьями, там своих братьев нашел и очень красиво (душевно) поздоровались.

Тем не менее, старший и средний братья этого младшего погубить решили, и один:

* В настоящее время слова «ас», «бус» не функционируют в карачаево-балкарском языке как отдельные единицы, они используются в форме «ас-бус» в значении «тосе» [4, 202]. Тем не менее, можно вспомнить что, одними из своих предков карачаево-балкарцы числят асов (аланов), в связи с чем, некоторые исследователи полагают, что фразу «ас ийис» следует переводить, как «асский дух» (как в русских сказках: «Русским духом пахнет!») [1, 162]. Но что тогда означает слово «бус», остается непонятным (Ф.Г.).

** Досл.: «Кроваво-Красная-Река».

– Убьем! – сказал.

А один (другой):

– Не убивая, в воду / реку бросим, и сам умрет, – сказал.

Как бы то ни было, юношу в реку бросили. Затем, принесенную им хурму забрав, к своему отцу пришли.

– Вот это – искомая мной хурма! Ее принесли, но в месте, где была / росла эта хурма, что увидели? – спросил их отец.

– Там, – ответили парни, – ничего не было.

– Раз так, – сказал их отец, – ее (хурму – *Ф.Г.*) не вы нашли. Нашедшего ее моего ребенка куда девали? – говоря, и они:

– Разделившись, ушли и его мы (потом) не видели, – отвечая, когда со своим отцом спорили, младший сын в дом вошел.

Тогда отец своего младшего сына:

– Ай, дитя мое, эту хурму ты нашел? – спросил.

Юноша:

– Хурму я нашел, – ответил.

Тогда их отец:

– Там что видел? – спросил.

– Отец, – отвечает младший сын, – я там одну женщину видел, как у нее красотой обладающей души не видел, да и не слышал (о такой – *Ф.Г.*)! И на ее колени голову положив спящего эмегена увидел. И больше / крупнее его животного / зверя / существа не видел и не слышал (о таком – *Ф.Г.*). Но когда нашел эти плоды хурмы, поскольку они не походили на виденные нами плоды хурмы, наполнив хурмой сумы / мешки, надеясь, что может это – искомая тобой хурма, может понравится, с ними даже не поговорив, ушел.

Тогда на обоих глазах их отца выступили слезы и:

– Вот та женщина – ваша мать. Ее тот эмеген у меня силой отобрав, уехал. «Искомая мной хурма», – поэтому говорил (То, что говорил: «Искомая мной хурма», – это было / из-за этого было). Она жива – этому я очень обрадовался. Теперь я узнал, что она жива, а вы поступайте, как захотите. Вы – ее дети, ее сами ищите, а у меня ни искать, ни найти сил не хватит (не по силам / не по плечу). Спросите почему, теперь я стар, слаб, – сказал их отец.

Теперь все эти три брата: «Свою мать найдем!» – решив, собравшись, уехали и, опять достигнув развилки трех дорог, все трое, идя по дороге, которой прежде прошел младший сын, встретили эмегеншу, с которой ранее познакомился младший юноша.

Затем та эмегенша и тех двоих (братьев – *Ф.Г.*), как их младшего, усыновила. Опять припозднилось и теперь ко времени возвращения мужа этих новопришедших обоих братьев спрятала.

Муж эмегенши, как и прежде, одного оленя принеся, у жены как и раньше спросил. Тогда жена:

– Да вот этот знакомый тебе наш ребенок пришел, кроме этого ничего нет, – сказала.

Жена эмегена после того, как мужа накормив, напоив, насытила, снова:

– Да еще к твоему приходу я двоих деток нашла / родила, – сказала и обоих парней вывела, показала эмегену, и тот их в дети принял.



– Да вы – наши дети, чего ходите, чего бродите? – спросил эмеген.

– Да, – говорит младший брат, – те плоды хурмы, которые я, принеся, тебе показав, отцу отнес, отцу понравились. «Там что видел?» – когда спросил, я рассказал, что увидел, и наш отец нам сказал, что та виденная мной красивая женщина является нашей матерью. Теперь мы вышли на поиски своей матери и с тобой посоветоваться пришли. Веря в то, что ты вразумишь, как найти нашу мать, пришли, и теперь руководи!

– Теперь вы, свою мать разыскивая, ходите. Она в крепких руках. Тот эмеген из эмегенов самый сильный, мощный. Тот эмеген, и остальных эмегенов держа в страхе, живет. И большинство эмегенов его не любит. Вы стали моими детьми. И я выражаю свое уважение, мне очень нравится, что вы, поклявшись найти вашу мать: «Даже если погибнем на этом пути», – решив, отправились, если живыми вернетесь, буду очень рад. Теперь вы идете, ваш младший брат знает дорогу, знает и ее сложность, если вам повезет / выпадет счастье, тот эмеген снова окажется спящим. Но если, не будучи спящим, вас заметит, всех вас троих за один раз проглотит (со всеми тремя за раз покончит). Не дав себя заметить, стороной обойдя, до одного яра дойдете. В том яру одна большая нора будет. Житье эмегена (проходит) в той норе. Если его не будет рядом с хурмовым деревом или под ним, он будет в норе, про которую я сказал. У того эмегена есть один нож, и если вы не приберете его к рукам, никаким из имеющихся на свете способов его победить не сможете. Чтобы его победить, приберите нож к рукам. Кроме как тем ножом вы ему ничего не сделаете, – сказав, все, что знал, поведал, научил.

Это поучение парни усвоили и вышли в путь. Оттуда известные дороги пересекши, увидели, что под тем же хурмовым деревом прежняя женщина сидит и эмеген, как и прежде, спит.

Там женщина заметила юношей, обоих старших сыновей узнала и заплакала. Парни увидели, что она плачет, но младшего своего сына их мать не смогла признать.

Как бы то ни было, их мать сыновьям, рукой дотронувшись до головы, открыв / показав волосы, знаками: «Хоть вас и столько (будет – *Ф.Г.*), для меня ничего сделать не сможете, – дав знать, – я считаю себя умершей, вы из-за меня себя не губите и уходите отсюда», – объяснила.

Поняв знаки матери, оба старших сына решились уйти обратно. А младший, посмотрев на мать, жестикулируя руками: «Где нож?» – объяснил.

Их мать, показывая рукой на хурмовое дерево: «На верхушке дерева повешен», – объяснила. Младший сын, ее поняв, мигом прибрал к рукам висевший на верхушке дерева нож.

Тут, увидев это, оба старших парня младшему:

– Не бей! Если ударишь, убить не сможешь. Высвободившись, всех троих за один раз (укус) проглотит! – сказали.

Несмотря на сказанное ими, младший юноша своей матери:

– Я этим ножом его ударю, сразу, как взмахну, ты, встав, назад отбеги, – сказал, и нож взлетел, в ту же секунду женщина, вскочив, поднялась, отбежала назад.

Когда парень взмахнул ножом, голова эмегена отрезалась. Его голова, отделившись от туловища, несколько раз прокрутилась вокруг хурмового дерева, а затем стала катиться в другую сторону.



Теперь нож в руках младшего парня, за той головой следует, а вслед за ним те оба его брата и их мать идут.

Как бы то ни было, за головой эмегена младший брат, не отставая, идет, а два его брата и мать отстали.

Голова эмегена, пытаясь уйти в нору в упомянутом яру, пробрался в свой дом (находившийся) в норе в яре.

Когда младший парень, добравшись до той норы в яре – то есть, дома эмегена, – сев, держал в руках нож, и два его брата, и мать туда дошли.

Теперь их мать, глядя на парней:

– Все имеющееся у этого эмегена имущество в этой норе, там у него дом есть. В том доме трех девушек себе в жены растил. Этот эмеген вот по этому аркану спускался и оттуда вот по нему взбирался. Теперь его голова от туловища отделилась – умер. Пусть пропадут пропадом и его богатство, и его голова! Давайте мы теперь уйдем, – сказала.

Оба старших сына удовлетворились этим.

Тем не менее, хоть младший сын обоим своим братьям:

– Спускайтесь в нору, теперь эмеген никому не сможет причинить вреда, – уговаривал, не согласились, и их мать не захотела.

Младший сын:

– Три юные девушки, которых он себе в жены берет, здесь от голода умрут, их не выгасив, не уйду, – заупрямился.

Мать плачет:

– Любым, кто захочет спуститься, недовольна! – сказала.

Как бы то ни было, закрепив понадежнее конец аркана, младший сын спустился по аркану в нору эмегена. Когда, пойдя к нему домой, посмотрел, юноша увидел, что голова эмегена перед теми тремя девушками валяется, и все те три девушки, дивясь тому: «Он умер, как нам теперь спастись?» – так размышляли. Все те три девушки, завидев парня, подбежав, обняли и подробно рассказали юноше, откуда, как прибыли, каким образом к нему в руки попали.

Тогда парень:

– У этого эмегена что есть? – спросил.

Девушки имеющиеся здесь всякие вещи показали. Затем размером с бараньи рога три серебра (серебряных изделия) показали и:

– (Он) говорил, что это – нам троим свадебные белги*. Однако до того, как настал день свадьбы, на наше счастье, он умер. Этот подлец с нами не воссоединился, – сказали.

Еще и какого-то черного-пречерного зверя показали.

– Этому зверю этот проклятый эмеген, что бы ни захотел: «Принеси!» – если приказывал, этот зверь приносил.

После того, как со всеми этими вещами ознакомившись, закончил, этот парень сказал:

– Кто из вас старшая, младшая, средняя которые? – сказав, это узнал и: – Нас три брата. Старшую старший, среднюю – средний, младшую младший возьмем (в жены), если будете согласны на это. Если и не будете, вас я так,

* *Белги* – вещь, даримая парнем или девушкой друг другу в знак согласия вступить в брак [4, 392].



в бессилии (затруднительном положении) не оставляю, поднимаю и куда угодно идти дам свободу, – говорит.

Затем, предоставив девушкам эту свободу, еще до того, как получил ответ, все имущество по аркану парень вытащил / поднял наружу и, вернувшись, пришел в нору и затем назвавшуюся старшей для старшего брата поднял, назвавшуюся средней к среднему отправил.

Теперь младшая девушка и этот парень в норе: «Ты сперва выберись», – говоря парень: «Нет, ты сперва выберись», – говоря девушка, поспорили. Как бы то ни было, парень победив, решили, что девушка должна подняться вверх по аркану.

Тут девушка:

– Да если я сперва выйду, придется нам двоим друг с другом расстаться. Тем не менее, то, что ты говоришь, я сделаю, даже первой наверх поднимусь. Однако, на, ты это кольцо не теряй, когда-нибудь можем встретиться, тогда заметим, – сказав, девушка по аркану поднялась.

Оба эти брата, посмотрев на девушку, позавидовав ее светящемуся как солнце белому лицу, обоим в голову дурная мысль попав:

– Он, самую красивую выбрав, для себя посылает. (Давай) его погубим, наверх не поднимем, либо пусть там от голода умрет, либо, сказав, что на аркане поднимем вверх, вытягивая наверх, сбросив с обрыва, уьем, – к такому решению пришли.

Теперь оба брата аркан, вниз спустив, вытягивая наверх, затем аркан обрезав, юноша обратно упал. Теперь аркана нет, парень внизу остался.

Их мать, узнав об этом, запричитала.

– Я без него, не умерев, не уйду! – хоть и говорила, от безысходности и оба сына, и три девушки, и мать парней отсюда, вернувшись, к прежнему своему конакбаю* -эмегену пошли.

Этому своему конакбаю обстоятельства изложили, и он тоже очень сильно горевал. Теперь они все отправились домой, а эмеген-конакбай остался на месте.

Когда они добрались до отца (, находившегося) дома, отец справился о младшем сыне.

– Он умер, его не спрашивай, – сказав, некоторое время живут.

Как бы то ни было, этот младший сын, много провозившись, на обрыве делая ниши для ног, из норы в обрыве и с обрыва, прихватив и те для всех трех девушек изготовленные серебряные белги эмегена, поднялся наверх.

Таким образом, странствуя, опять встретил своего эмегена-конакбая. Тот его усыновивший эмеген, устроив большое празднество, и той ночью у себя дома оставив, утром проводив, отпустил.

Этот младший сын, не пойдя напрямиком домой, остановился в соседнем селе у одного ювелира-серебряника / серебряных дел мастера.

Теперь и три девушки, и мать находятся дома вместе с отцом парней. Но те две девушки, с двумя юношами решив не воссоединиться:

– Наши свадебные белги остались в норе, они сделаны из серебра в форме бараньих рогов. Их, пойдя, если не принесете, с нами соединиться нельзя, поэтому, принесите сюда, – говорят.

* *Къонакъбай* – хозяин дома, куда пришел гость [5, 658].

Оба этих парня, отправившись к серебряникам в соседнем селе, объяснив форму:

– Сделайте, иначе убьем вас! – угрожают.

Серебряники, оказавшись в безвыходном положении:

– Изготовим, – обещают, и парни, поверив, уехали.

Один день, увидев, что серебряники очень грустны, этот младший брат:

– Чего печальны? – спросил.

Эти серебряники и ситуацию, и характер отца этих парней, точно так же и то, что два брата трех девушек привезли, и причины, почему они теперь с парнями не соединятся, рассказали. Тогда юноша разобрался (во всем). Затем серебряникам:

– Вы мне одну чашу орехов принесите и один молоток принесите, сегодня ночью повожусь и один из упомянутых ими белги, изготовив, отдам, – сказал.

Той ночью этот младший парень и орехи съев, занялась заря, затем отдал и один из серебряных белги, и кольцо той младшей девушки одному из серебряников:

– Белги отдашь старшей девушке, а это кольцо так, чтобы кроме тебя никто не видел, младшей из них отдашь, – сказав, отправил.

Увидев, что этот серебряник отдал старшей девушке белги:

– Теперь и для средней девушки точно такой же, как этот, изготовив, принеси! – стали принуждать / настаивать.

Но та младшая девушка, как только кольцо попало ей в руки, узнав кольцо, решительно:

– Где бы ни находился владелец этого кольца, говори! – сказав, ухватила за подол серебряника.

Этот серебряник, долго размышляя, из-за упорства этой девушки действительно оказавшись в безвыходном положении:

– Давший мне это человек (находится) в моем доме. Препоручая мне кольцо: «Пусть на свете кроме (тебя) самого и девушки ни один человек кольца не увидит, не узнает (о нем). После того, как, отнеся, девушке передашь, ни одному человеку ничего не говори», – сказав, очень просил. И я тебя именем Аллаха / Аллахом прошу: никому ничего не говори, – сказав, и серебряник девушку просит.

Теперь серебряник, вернувшись, придя к себе домой, рассказывая о том, что этот серебряный рог той старшей девушке очень понравился и старшему брату тоже действительно понравился, и то, что получившая кольцо девушка про него самого спрашивала, подробно рассказав, затем:

– Если и второй раз как тот, что изготовил, еще один серебряный рог не изготовишь, меня на свете (в живых) не оставят. Ты – мой гость, мы оба стали как братья, родившиеся от одной матери, от одного отца. Пожалей меня и, если не захочешь моей гибели, прямо как прежний один серебряный рог изготовив, дай, – стал уговаривать.

– Тейри*, – говорит опять гость, – второй изготовить сложнее. Тем не менее, поскольку, сказав, что мы двое стали братьями, ты (по отношению)

* *Тейри* – честное слово, ей богу, клянусь [6, 428]. По всей видимости, значение данного модального слова уходит своими корнями в древние времена, когда было принято подтверждать истинность своих слов упоминанием имени верховного божества языческого пантеона карачаевцев и балкарцев Тейри (Ф.Г.).



ко мне чистосердечен и, первый рог названной мною девушке отдав, и вместе с тем, что кольцо, как я сказал, никому не показав, той младшей девушке передал, то, что она сказала, придя, мне правдиво изложил, я тебе прямо сегодня ночью и второй рог, из серебра справив, отдам. Но ты не поленись, как и прежде одну большую тарелку орехов и прежний молоток мне принеси.

Опять серебряник, как сказал этот парень, и орехи, и молоток принеся, отдав, повернувшись назад, ушел в свою комнату.

«Ярабий^{*}, сумел ли изготовить?» – думая, серебряник, едва рассвело, пришел к своему гостю. Этот гость, к этому серебрянику со светлым лицом, улыбаясь, выйдя:

– На, брат мой, особо и не мучился / утруждался / напрягался, – молвив, серебряный рог вручив ему в руки, – теперь его, отнеся, той средней девушке в руки так, чтобы средний, то есть, второй парень видел, передашь, – сказал и, – но было бы хорошо, чтобы в момент передачи и те три девушки, и те два парня, их отец и мать, вместе собравшись, могли увидеть. Если сумеешь так устроить, устроишь, и буду очень доволен / благодарен, если, услышав, что они скажут, придя, мне расскажешь. А ты сам ничего не говори. На требование что-то сказать твой ответ – обратившись к парням: «Да то, что вы сказали, я, как смог, сделал», – только скажи.

Серебряник второй рог, отнеся, как тот гость сказал, когда все вместе собралось, отдал. Тут и все три девушки, и те два брата, посмотрев друг на друга (переглянувшись), девушки грустно, юноши задумчиво, но слегка недовольно улыбнулись, и их отец с матерью, глядя в землю, немного помедлили.

Затем все три девушки как вместе сидели, так же втроем, как будто из одних уст, на того серебряника посмотрев:

– Добрый молодец! Изготовивший их – не ты, есть человек, который дал их тебе. Того человека ты сюда приведи, а если и не приведешь, от своей жизни придешь в отчаяние, знай это, – открыто сказали и затем, посмотрев на парней: – Если давшего их серебрянику, вместе с этим серебряником пойдя, не приведете, мы с вами не воссоединимся. Когда его своими глазами увидим, тогда соединимся (узами брака), – сказали.

И парни, и серебряник некоторое время помолчали, и затем парни:

– Да кто бы, серебряные рога изготовив, дал серебрянику? Коли есть у него такой человек, пусть серебряник сам скажет, – промолвили.

Теперь девушки почувствовали страх парней и:

– Пусть серебряник сам, пойдя, давшего эти наши свадебные белги приведет, до тех пор знайте, что не соединимся! – настояли.

Затем, ничего не говоря, серебряник начал вставать. Опять девушки втроем с очень доброй улыбкой серебрянику:

– Как бы то ни было, давшего их тебе человека сюда приведи. Он – твой гость. Без его прихода, в этот дом довольство (вкус жизни) не войдет, – хоть и говорили, серебряник, чтобы не отвечать, выйдя, ушел.

Эти братья оба:

^{*} *Ярабий* – восклицание, выражающее любопытство, интерес, желание узнать, сомнение [6, 1156].

– Наш младший брат, придя, скрываясь, эти белги серебрянику он, может быть, дает? Хотя мы сочли, что он умер, его судьба по-другому будучи определена, вернувшись, эти дела он, чтобы нас испытать, может творит ходит? Коли так, тогда мы своему отцу, матери, этим девушкам, а также народу свои лица как покажем? Давай, за этим серебряником, не показываясь, до его дома пойдём и, если наш младший брат там, любым способом и серебряника, и парня погубим, а то очень сильно опозоримся, – договорились.

Затем, когда вслед за серебряником до села, прячась, шли, серебряник, оглянувшись назад, их заметил. Тогда остановился и: «Они за мной почему идут? Дам догнать и спрошу», – то, что он подумал, и парни почувствовали и, решительно нагнав серебряника:

– Говори, кто есть в твоём доме? Если есть, кто (он), чего ходит? – спросили и: – Если скажешь правду, скажешь, если, не сказав, у вас другого кого-то найдём, со своей жизнью (с этим светом) и ты сам, и твой гость попрощайтесь! – говорят.

– Да у меня есть гость. Вам от него вреда нет. Он со мной побратался. Если не даёте не сказать, вашу жизнь, наверное, он будет определять (решать), что вам (что вы найдёте) с того, что погубите и меня, и его? Тейри, если и решите погубить, ошибётесь. Он, насколько я знаю, и вправду очень добрый человек. По правде говоря, его сейчас дома нет. «У меня есть одно большое дело, сегодня не смогу прийти, завтрашний или послезавтрашний (мой) вечер здесь будет», – сказав, ушёл. Если он вам очень нужен, завтра или послезавтра вечером приходите, а захотите, я его даже сам, взяв (с собой), к вам пойду, – говорит.

– Эй, – говорят эти парни, если это и вправду наш младший брат, пока нас нет, домой пойдя, девушек, нашего отца, мать повстречав, если расскажет, что мы с ним сделали, если это станет известно (станет новостью), какой смысл от того, что мы живём на свете? (Давай,) мы вернёмся домой и, если придёт, пока не встретится, если тайком что-нибудь сможем сделать, посмотрим. Если и не сможем сделать, если (у него) будет что сказать, при нас скажет, коли не испугается. А если начнёт говорить, мы вдвоем одного как не переспорим? Если он начнёт рассказывать как было: «Сабля была в твоих руках, мы без сабли что смогли бы с эмегеном сделать?» – если скажем, это наша мать подтвердит. Во-вторых – если поведаёт о том, что мы вслед за головой эмегена в нору не спустились, причину этого я скажу, – молвил старший брат.

– Да та причина будет ли (воспринята) причиной? Может других причин не выдумывая: «Испугавшись, не спустились», – если скажем, правильно будет, – средний говоря, поспорив, не сумев выбрать какую-то причину, домой дошли.

А этот их младший брат, конечно же, никуда не уходя, в доме конакбая когда сидел, серебряник-конакбай придя, равно как все слышанное, виденное, так же и разговор с преследовавшими его, а затем ушедшими назад парнями целиком передав, разъяснил.

Они, то есть, и конакбай, и гость, поразмышляли и затем серебряник-конакбай своему гостю:



– Они меня, притесняя, заставляют себе подчиняться, а глава этих серебряников – я. Не подчиняться им у нас нет права (свободы), а тебя они не знают. И девушки: «У тебя гость есть, его сюда приведи», – настаивали. Похоже на то, что те, кто, следуя за мной, вернулись, являются мужьями девушек. Это что за чудо, что за диво? По правде говоря, я то, что от Аллаха не скрываю, и от тебя не скрою. Я тебя (спрошу – Ф.Г.) и, вы наверное друг друга знаете, если мне зла не ищешь / желаешь, правдиво скажи, – говоря, настоял.

Тогда этот парень, обратившись к серебрянику, все события от начала до конца (с головы до ног) серебрянику рассказав, объясняет и:

– Иди, – говорит серебрянику, – снова, когда они соберутся, посмотрев на девушек, так, чтобы наши отец и мать слышали: «Юноша – мой гость, сидит дома. Но он: «Пока мои два брата дома находятся, я домой не пойду. Если они уйдут, то своих отца и мать повидать пойду, и с той младшей девушкой тоже повстречаюсь», – сказал», – дай знать, – молвит.

Этот серебряник, очень удивившись сказанному его гостем, немного помедлив, поручение своего гостя полностью выполняет.

Слово теперь переходит к их отцу и матери. Отец и мать и эти три девушки, сев, поразмышляв, обоих братьев подзвал к себе:

– Пойдите и своего младшего брата найдите. Его, уверив, что от всего сердца, клятвенно раскаялись, что пожалели о причиненных ему вами несправедливостях и впредь такого поступка не совершите, ища прощения, поклонившись ему в ноги, и его, и этого серебряника приведите. А коли нет, так же, как от отца, матери, и от этих девушек, и от народа отделяетесь (с отцом, матерью, и с этими девушками, и с народом распрощаетесь)! – когда их отец, в той же манере мать и девушки все втроем так высказались, братья, как они сказали, поступив, и своего младшего брата, и серебряника приведя, друг с другом и вправду помирившись, все три брата и с родителями, и с девушками, успокоившись в мире, и того серебряника домой отпустив, а младшего сына назвав народным героем, с тем остались жить-поживать*.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 11. Записано 23.02.1965 г. от Хуламханова Х.-Исмаила. Кем и где осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Волшебная сказка на сюжет о трех братьях, выполняющих поручение отца (в данном случае – сперва разыскать определенный сорт фиников, а затем вызволить мать из неволи, убив эмегена). Как традиционно принято, с задачей справляется младший сын, предстающий более храбрым, добрым и справедливым. Мотив вызволения матери переходит в мотивы спасения красавиц и вторичного добывания невесты. Преодолев все преграды, герой выходит благородным победителем, прощающим своих обидчиков-братьев, учинивших ему множество бед и проблем.

* Фраза *ашар-жаашар кьалдыла* дословно переводится «стали есть-поживать». По всей видимости, это связано с древними представлениями карачаевцев и балкарцев, согласно которым каждому человеку суждено съесть и выпить определенное количество пищи и жидкости, когда же он употребит все отмеренное, жизнь его закончится. Свидетельством тому могут служить устойчивые выражения типа *аны ичер сууу / ашар ашы тауусулду* «закончилась вода / пища, которую ему (суждено было) пить / есть», т.е. настал срок ему умирать (Ф.Г.).

ЮЧ КЪАРЫНДАШ (II)

Эртте-эртте бир жерлени жеринде, бир кыралны элинде бир сюрюучю жашап болганды. Ол бек жарлы болганды. Ол жарлылыгыны юсюне да аны юч жашы – Асадуллах, Солтан-Хамид эм Магомет-Али – болганды. Магомет-Али кыарындашланы бек гитчелери эди. Ол кеси да акыылдан камил* болмаганы себепли, анга элде жашагъанла «тели Магомет-Али» деп атагъандыла. Аталары, эл сюрюучю болуп, сюрюучюлюкден тышген хайырчыкъ бла аманны кебинден юйдегисин багъып болганды.

Юйюр таматасы Асадуллах иги абадан жаш болгандан сора, атасы: «Энди бу да, ишлеп, юйге хайыр бере башласа, мен бираз солурма», – деп кыуана эди.

Бир кюн атасы Асадуллахха:

– Асадуллах, бизни жашау болушубузну энди кесинг кѳресе, барыбыз да былай, юйге жыйылып турмайыкъ да, сен бир хайыр келтирир жанына бар, – дейди.

Анасы, жол азыкъ этип, жашны жолгъа ашырады. Атасы, анасы эм кыарындашлары бла саламлашып, Асадуллах жолгъа чыгъады.

Бара-бара кетип, ол бир кыалын, кыаппа-кыарангы агъачха киреди. Агъачны ичи бла бираз баргъанлай, ач болуп, жаш, тохтап, жол азыгъын ашап башлайды. Аны кѳзю ашда болса да, акыылы уа кыайры барлыгыны эм кече кыалайда кыаллыгыны кыайгысындады. Ол да алай ашай тургъанлай, кыайдан эсе да бир киши аны жанына келип:

– Жол болсун, жигит, кыайры ахшы жолгъаса? – дейди.

Асадуллах иш излей баргъанын билдиреди эм кеси уа, хапарын да айта, татыуун чыгъарып, кыуру гыржынны чайнайды. Ол биягъы киши, жашны ашагъанына кыарай кетип, кеси да ач болганы себепли:

– Манга да гыржынынгдан бир бурху берсенг а, ачма, элге уа алыкъа узакъды, – дейди.

– Бек ыразы болуп берирем, айхай, кесиме жетерик туююлдо ансы: мен, иш табып тохташынчы уа, не ашап жашарма? – деп, жаш кесинден жукъ ычынмазын билдирди.

– Токъ кыарын ач кыарынны билмейди, да (не – *Ф.Г.*) этерикме?! – деп, киши жолуна тышеди.

Жаш да, ашагъан гыржыны тамагына кыаланып туруп, излей кетип, суучукъ табып ичеди. Сора, туруп, биягъы жолуна тышеди.

Кюн кеч болуп, жер кѳрюнмей башлайды, алай агъачны кыыйыры, бар эсе, жокъ эсе да, алыкъа билинмейди. Тѳгерекде бѳрюлени улугъанлары, дагыда кѳп тюрлю агъач жаныуарланы кыычыргъан тауушлары эшитиледиле. Алай Асадуллах абызырамайды: терк окъунча чырпыладан кесине кыош ишлеп, кеси киралырча бир тешикчикден кыалгъан жерин бегитип, ичине киреди. Сора: «Ким биледи, тешикден бѳрю иш башын сугъар», – деп, эки жараулу кызыкъны да жанына салады. Мычымай кыошну тѳгерегине тюрлю-тюрлю жаныуарла келип, кыычырып, гузаба этип башлайдыла. Жашны кѳзюне быллай кыайгыда, жюреги кыоркъа, не жукъу кирлик эди? Ол атасыны, анасыны юсюнден ойлап башлайды.

* Толу (*Ф.Г.*).

Болсада, кѣп мычмай танг атып, жаныуарла жан-жанына кетедиле. Жаш да, азыгыдан ашап, биягы жолуна атланады.

Кюн узуну бара кетип, ингирге агъачдан чыгъады. Бир ариу ѳзенде, кесине да чыкъ тюшюп, жым-жым жылтырай, Асадуллах, иги кесек баргъандан сора, кенгден бир уллу юйню эслейди. Ол а байны юйю болады.

Асадуллах, сехлеге жетип: «Энди къалай кирейим?» – деп тургъанлай, эшик ачылып, бай, чыгъа келип, жашны эслейди:

– Не зат керекди? – деп сорады.

– Иш излейме, – деп жууаплайды жаш. – Мен сюрюучюню жашыма.

– Да не иште ишлеяллыкъса да?

– Мал кюталлыкъма.

– Жер а сюраллыкъмыса?

– Да кѳрген ишим туююлдю, алай юйренирме анга да, – дейди Асадуллах.

– Да хо, сени иште алайым. Алай тауусумубуз былай болсун: сен менде бир жыл бла бир кюн ишле, ол заманны ичинде экибизден ким алгъа ачыуланса, аны бурунун кетерирге. Унай эсенг, ма санга жатар жер, ашар аш, эки ѳгюз – ала бла жер сюрлюксе, – деди бай.

Жаш таукелленди. Эрттенликде эртте туруп, ашап-ичип, ѳгюзлени да башындан тутуп, сюрлюк жерине тебиреди. Кюреше-кюре(ше) кетип, ахырда болалмагъандан сора, ѳгюзлени туююп башлады. Бай, халны кѳрүп, сынжырдан ычхыннган итча, чабып келип:

– Итден туугъан, бу не ишингди? Ишлей билмей эсенг, ышандырма!

Бираздан сора бай, жууашха тартып, жашха адамгъача сѳлеше башлады.

Арадан ыйыкъ, эки, юч да ѳтдю. Асадуллах эринеден-эринен башлады: да къалай кѳлю барсын хакъсыз жыл бла кюн ишлерге?

Ариу сѳзле бла алдап, бай жашны ишлетирге кюрешеди. Жаш а не амал бла да кесин ишден къыстатыргъа кюрешеди. Алай бла жашны жалчыда тургъанына юч ай болду.

Бир кюн а бай, жашны чакъырып:

– Мени юйюмде битеу чычханланы артын этсенг, тамата къызымы эм сизге жашаргъа бир юйюмю берликме, – дейди.

– Ол бек къыйын ишди, ойлап кѳрейим, – дейди жаш.

Бай жашха ойларгъа эки кюн береди, аны ишден эки кюннге бош этеди.

Тѳшегине да таянып, ойлай кетип, Асадуллах къалкъып къалады. Тюшюнде ол юйню ичи чычхандан толуп кѳредди. Ала, полну тешип, эниште тюшюп, ѳрге минип айланадыла. Ёлтюрген мынча чычханны бек къыйын кѳрюнеди жашха. Сора, юйню ичин саламдан толтуруп, от тирейди, кеси уа, жаннган отну тюз ортасында сюелип, бир жары тебалмайды. Асадуллах, сескенип уянып, тюшюн эсине тюшюрюп, кеси кесине: «Да нек сюелеме? Секирме да, кетерме, отдан къутулурма», – деди. Сора жаш байны жукъларына ашыгып башлады.

– Хурметли бай, ол сиз айтханны этерге кѳлленгенме мен. Юйюгюзден чычханланы гунч этип, сизни тынч жашарча этерикме, – дейди Асадуллах байгъа.

– Да сен алай къалай бла эталлыкъса да? – деп соргъанда бай, жаш:

– Ол а мени ишимди. Бошасам, айтырма, – деп къояды.

– Охо, кѳрюрбюз, – деп, бай да таукелленеди, сора ичинден: «Бу бир тели зат кѳрюнеди, бир тапсыз иш этмеге эди», – деп ойлайды, жашха жашыртын къараргъа тохташдырады акъылын.



Ол зат, бу зат деп болмай, Асадуллах, кече белинде кьобуп, юйге салам эм эшик аллында тапхан агъачын, дагыда кюерча кёп затны юйге кийиреди да, сирнек уруп, кьабындырады. Юй терк окьунча жанып, ичи жалдандан* топпа-толу болады. Бай, уянып, ич кийиминде, чартлап, эшикге чыгъады да, Асадулахха чолпанларын жилтиретип, ачыуланып:

– Бу не этиуонгдю?! – дейди.

– Бай, энди чычханланы жангызы да кьачып кьутулаллыкь тюйюлдю, – дейди жаш.

Жатып, жукьлап тургъанла, уянышып, не этерге билмей, тегерекге чабадыла. Бай жашха ачыуланып башлайды, алай, ол этген тауусумларын эсине тюшюрюп, бурунсуз кьалыудан кьоркьуп, жашха жукь айталмайды. Амалсыздан бай, мюлкюн от ичинде кьоюп, башха юйге кечеди.

Ол тауусумда айтылгъан жыл бла кюн жетип, бай жашха:

– Сен хайырсыз, хомух затса, бермейме жукь да хакьынга! – дейди.

Не этерик эди? Кетеди жаш:

– Сау болугъуз, сау кьалыгъыз, бай, – деп.

«Да энди не этерикме? Юйге кьайтайым», – деп ойлап, жаш ол келген жолу бла ызына тебирейди.

Кёпмю барды, азмы барды, бир заманда эшик аллына жетип, юйлерини эшигин кьагъады.

– А-а-а, сенмисе? Келдингми? Не зат келтирдинг? – деп соруп башлайдыла жашха.

Жаш хапарын башдан аякъ айтып ангылатады. Атасы ачыуланады, урушады. Сора атасы жашларына:

– Энди барыгъызны да турлугъугъуз былаймыды? Бар, Солтан-Хамид, энди сен, бир жукь келтираллыкь эсенг, кёр. Бу хайырсызча, сен да кьурлай кьайтып иш келме! – дейди.

Жол азыкь да этдирип, Солтан-Хамид тебирейди. Жолда ол кеси аллына жырлай барады. Бара кетип, элден узайгъандан сора, олтуруп солуйду, азыкь ашайды. Биягъы кьайдан эсе да бир кьарт киши чыгъып:

– Ой, ахшы жаш, кьайры ахшы жолгъа чыкьгъанса кечгиде? – дейди. – Манга бир кьалач берсенг а?

– Да, кьарт, алгъаракь келсенг эди уа, бусагъатда бек арт кьалачымы чайнап жутдум, – дейди жаш.

– Охо, бер, сени, бир ахшы адамгъа кьызгъанмай узатырча, энтта да болур бир бурхунг, – дегенде кьарт, Солтан-Хамид:

– Кьалгъан-кьалмагъаны мени ишимди. Андан эсе элге барыгъыз, анда бир жукь табарсыз, – деп жууаплайды.

Кьарт, жашдан жукь чыкьмазын сезип, жолуна тюшеди.

Бираздан сора жаш да, туруп, жол кёл алды. Кьайры барыргъа билмейди. Агъачны ичи бла бара кетип, ит юрген тауушланы эшитеди.

Кече ортасы болгъанды. Терк-терк атлап барады. Кенгден чыракь жарыкьны эслеп, Солтан-Хамид кьууанады. Жетсе, ол а (жарыкь) юйню терезесинден чыгъа кёреем. Ит, жашны эслеп, кьыстау юреди.

Юйню иеси, тауушланы эшитип, чыгъады да:

– Кимди бу кече ортасында бош кьалып айланнган? – деп, кесини ачыуланнганын билдиреди.

* Жалындан.

– Ачыуланмагъыз, былай да, былай айланама, – деп, жаш хапарын-халын айтып ангылатады, сора ишге алса эди деп тилейди.

– Не ишни билесе? – деп соргъанда юйню иеси, жаш:

– Хар не ишни да: сургюде, малда да ишлеяллыкъма, – дейди.

– Кел, юй башда жат саламда, танг атса, чакъырырма, – деп, юйню иеси Солтан-Хамидни юй башха миндиреди. – Мен чакъыргъынчы, тюшме, – дейди.

Эрттенликде юйню иеси жашха не ишлеригин – мал орунну тазаларыгъын, отун келтирлигин, суу аллыгъын – айтады.

– Алай аш юйге кирме, тишируу (къатыны), ары кирли адам кирип, не аз да тѳзмейди, – дейди.

– Да не этерикме да мен, ары кирип, кирмем, – деп, жаш кишини кѳлюн тынч этеди.

Солтан-Хамид ишге эмина эди, анга бек бюсюрей эдиле. Алай бла жаш эки-юч ыйыкъны турду.

Бир жол а ишден, ауруп, эти-женин тер басып, къалтырап келеди да: «Бир жукъ тилеп, юсюме кече жапмасам, ауруп къалырма», – деп, аш юйню ачса, анда киши да жокъ. Жаш, кровать тюбюне кирип, жылы юйде жатып къалады.

Олсагъат эшик ачылып, къатын, къолунда да чырагъы бла, киреди. Къатын, чыракъны да столгъа салып, эт, жау, гыржын, бишлакъ болгъан ашыкга* узала тургъанын кѳрюп, Солтан-Хамидни аууз шытылары келеди. Тѳзалмай, орундукъну жабыуун игирек кѳтюрюп къарайма дегенлей, къатын эслеп къояды аны. Къаугъа этип, эрин чакъырады. Ала, урушуп, жашны эшикге къыстап къоядыла.

Жаш, биягъы къалын агъачны ичи бла къайтып келе, къарындашыны да юйге къуппа-къурлай къайтханы эсине тюшюп, кѳлю толуп жиялды. Кеч ингирде юйге жетеди. Эшикни ачып, юйге кирсе, юйдегиле, сейирсинип аны былай сакълаусуз келип къалгъанына, не зат айтыргъа билалмайдыла.

– Кѳп турмагъанса да! Не зат келтиралдынг? – деп сорады атасы.

Аркъасында таякъ тийип къызартхан ызланы кѳрюп, жукъ келтирмегенин да билип, атасы жашына ачыуланып башлайды.

Кезиу эм гитче къарындашха жетди.

– Энди мен барайым, ким биледи, Аллах бир ырысхы берлик эсе уа, – дейди Магомет-Али.

Жол азыкъ да алып, жолгъа тюшеди. Бара кетип ол бирси къарындашларыны жолу бла, солургъа чѳгеди. Кеси уа бек ашашлы болады. Бир къалачны эки къабып ашап башлайды.

Олсагъат ол биягъы жарлы киши, чыгъып келип, жашны къатына олтуруп, ашатса эди деп тилейди. Жаш жарыкъ болады, кеси ашагъандан анга да береди. Ашап-ичип тойгъандан сора, туруп, кетип тебирейдиле. Къарт кеси бла тенг келалмазлыгъын кѳрюп, саламлашып, жаш алгъа озуп кетеди.

Кеч болады. Бир уллу терекни тюбюне келип, Магомет-Али жукъларгъа жагады.

* Орус тилден алыннган «ящик» деген сѳзню халкъ къарачай-малкъар тилге келишди-рип жюрютген алгъыннгы формасы (Ф.Г.).

(Эрттенликде – Ф.Г.) биягъы азыгъындан ашап: «Суу ичейим», – деп, суучукъгъа барып, уртлап башлагъанлай, тѣп-тѣгеречи къумурсхадан* толуп къалады. Къумурсхала аны къолунда гыржыннга жыйыладыла. Жаш, гыржынын уууп, къумурсхалагъа береди. Сора аладан бири адам тил бла:

– Магомет-Али, не кереклинг бар эсе да, айт, биз болушурбуз, – дейди.

– Къара, сѣлеше да билесе да! Манга иш керекди, къайры барыргъа билмейме, – дейди Магомет-Али.

Къумурсха жашха:

– Былайны тюзюнлей барсанг, агъачны къыйырында бир хан жашайды. Анга барсанг, ол сѣзсюз ишге аллыкъды сени, – дейди.

Жаш, къууанып, жолгъа тюшеди. Бара кетип, ханны арбазына жетеди. Эшик аллын сакълаучу анга:

– Къайры келесе! Сенлай жаланаякъ жаланбашха жукъ жокъду мында! – деп урушады.

Алай Магомет-Али ол сѣзледен юркмейди – ол аллай кѣп сѣзге тѣзгенди.

– Мен иш излеп келгенме, ханны кесине тюбемей, кетерик туюолме, – дейди.

Ол биягъы уа бютюнда бек ачыуланып:

– Сенича жалангачха бизде жокъду иш, къора былайдан! – дейди.

Магомет-Али, таягъын кѣтюрюп:

– Ийсенг, иерсе, иймесенг а, башынга жетдирликме! – дейди.

Ол бек мазаллы жаш болады. Эшик сакълаучу, къоркъуп, жашны иеди юйге.

Жашны кѣрюп, хан:

– Сен не адамса? Не зат излейсе? – дейди.

– Мен сюрюучюню жашыма, иш излеп айланама, – деп, жаш ангылатды ханнга халны.

– Да не затха жарайса да? – деп соргъанда хан, жаш:

– Сѣз ючюн, къой кюталлыкъма, – дейди.

– Къойларым кѣпдюле, къойчум къартды да, иги кюталмайды, манга жаш къойчу керекди, – деп, хан жашны жалчыгъа алады.

Сора анга азыкъ саладыла. Жаш хар не салгъанларын да ашап, бошап барады. Анга уллу сейирсинеди хан.

Хан, аскерин чакъырып, ат, ушкок берип, жашны да аскерине къошады. Къылыч оюнда, илишан атыуда да жаш ханны аскериндегилени барын да хорлайды. Хан, аны аллай пелиуанлыгъына, ѳтгюр(люгюне) эм жигитлигине кѣзю жетип, жашны аскер таматагъа айырады.

Тѣгерекде бир хан кесини битеу дуниягъа белгили ариу къызын, Мияла таугъа ким чыкъса да ат бла, анга берликди деген хапар жайылады.

Кѣп жерледен адамла, келип, ол таугъа ѳрлерге кюрешедиле, болсада, ѳрлеялмай, айыплы болуп къайтадыла.

Бу хапарны эшитип, Магомет-Али:

– Сизни намысыгъызыны сындырмам, хурметли хан, бир да къоркъмагъыз, мен ѳрлерге базынама, – дейди. – Манга кесим миниучю ат бла жетерча ашарыкъ беригиз.

Хан аскери бла Мияла таугъа атланадыла. Эки кюн жол жюрюп, кючден жетеди аскер Мияла таугъа. Ханны аскеринден беш-алты кесине

* Къумурчхадан.



базыннганы ёрлеп кёредиле, алай, тауну ортасына да жетмей, учхалап кьайтадыла. Эм ахырында кезиу Магомет-Алиге жетеди. Жаш ёрлеп башлагъанлай, ол ханны кызы, «сау кьал» деген адамча, жашха кьарап, кьолун булгъайды. Жолну ортасында аты тохтайды. Магомет-Али, ийилип, атыны кьулагъына шыбырдагъанлай, ат, мияладан ёргеракъ кётюрюлюп, тик ёрге учуп тебирейди. Тауну башына барып тохтайды. Тюбюнде кьарагъан халкъ уллу сейирсинеди, кьарс кьагъады.

– Аперим, аперим! – деген тауушла эшитиледиле.

Жаш Мияла тауну энишге тюшеди. Халкъ сейир этеди бу жарлыны таугъа ёрлеялгъанына.

Омакъ кийиннген, алтын, кюмюш ат кереклери бла да, кёзню кьаматырча жылтырагъан бай жаш чыгъаллыкъ сунуп тургъан кызы, тауну башына ол чыгъалмай, аты учуп, жаш да, ат да жайылып тюшюп, бу жарлы, хылымылы кийиннген Магомет-Алини таугъа ёрлегенин кёргенде, кызы жашха ачыуланады, жашха барыргъа суймегенин билдиреди. Алай тауусумгъа кёре, аны бармазгъа онгу жокъ эди.

Магомет-Али, тюшюп, адамланы кьатына келеди.

– Ханны кызын а алдын, ала, – деп, аны кёпле масхара эте эдиле, кеслерине жетмей, кызы быллай зыккылгъа жетгенине зарлана эдиле.

Ол сёзлени эшитгенде, жаш:

– Неге керекди манга хан кызы? Мен элибизге, юйюбюзге барлыкъма, – дейди.

– Огъесе, эркинсе, бар, – деп, хан, кёп ачха да берип, жашны ыразы этеди.

Жаш кетеди. Биягъы кьалын агъачны ичи бла кёп жол жюрюйдю, арыйды. Ол, тохтап, азыкъ да ашап жатады. Кече белинде бир даурла уятадыла аны. Туруп кьараса – арлакъда бир кьауум адам, орталарында уа – ачха кире. Ма аны бёле кюрешедиле ала. Ала даулашадыла, урушадыла. Магомет-Али, орунундан туруп, акъырын барып, алагъа кёрюнемей, ала тюбюнде олтуруп тургъан уллу терекге ёрлейди. Сора бираздан сора терекни кымылдатады. Уручулагъа терекден тамычыла тамадыла.

– Ма, чыкъ тюше башлагъанды, – дейди аладан бири.

Бирсилери уа, аны сёзюн да эшитмей, биягъы даулашадыла. Магомет-Али, бир кьуру бутакъны алып, аланы тюз ачха кирелерини юсюне атады. Уручула, секирип туруп, жан-жанына кьачадыла. Магомет-Али а, тюшюп, ахчаны машогуна жүклейди да, кётюрюп, жолуна тюшеди.

Анга ол биягъы жарлы кьарт жолугъуп:

– Къалайса, Магомет-Али? – деп сорады.

– Сау бол, кьарт. Мен жалчылыкъда бек кёп айландым, болсада, хакъымы алдым, – деп жууаплайды, сора кьартха да ахчасындан бир кесегин береди.

Машогун да кётюрюп, жаш юйге келеди. Жетип, эшикни кьакъса, атасы, чыгъып, жашын танымайды. Жаш, атасыны кёзюне кьарап, атын айтып кычыргъанда, атасы жашын таныйды. Атасы, жашыны машок ахчасын кёрюп, уллу сейирсинеди, кьууанады. Сора жаш атасын, анасын, кьарындашларын кезиу-кезиу кьучакълайды. Тели жашлары быллай байлыкъны келтирив деп атасы бла анасыны эслеринде да жокъ эди. Ол байлыкъгъа юй, жер сатып алып, юйдеги ашап-жашап кьалады. Асадуллах бла Солтан-Хамид Магомет-Алиге «тели Магомет-Али» дегенлерин кьоядыла андан артхасында.



КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 18 паспорт. 65-жылылыкъ Дугъоланы Б-дан 28.08.1960 жылда жазылганды. Ким, къайда жазгъаны белгисизди.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алганды эм орус тилге кѣчюргенди.

Кичи жашны юсюнден сюжетге къралгъан сейир-тамаша жомакъ. Бу тюрлю чыгъармалагъа ушамай, мында кърарындашлары анга аманлыкъ этмейдиле, зарланмайдыла, ала ючюн дерт жетдирирге да кереклиси болмайды. Баш жигит, телиге саналса да, адеплилиги, кесинден кърарыусузгъа жан аурута билгени ючюн, анга болушлукъчула да табыладыла: кърумурчхала анга ишни къайда излерге керегин билдиредиле.

Жомакъда, иш излеуден сора да, башха мотивле тубейдиле: гудучулары урлагъан хазналары кългъа этиу эм ханны кързын алыр ючюн эришиуге къратышыу. Алай мында баш жигит ёчню кърйтса да, кързыны алыргъа унамай кърояды.

Чыгъармада текстге кечирек киргизтилген орус сѣзле (кровать, стол) бардыла.

ТРИ БРАТА (II)

Давным-давно, в одной земле из земель, в селении одного государства один пастух жил. Он очень бедным был. И сверх этой бедности у него три сына – Асадуллах, Солтан-Хамид и Магомет-Али – было. Магомет-Али из братьев самым младшим был. И поскольку он сам по уму не был хорош / полноценен, его жители села прозвали «дураком / глупым Магомет-Алием». Их отец, будучи сельским пастухом, приносимым пастушеством маленьким доходом с большим трудом кормил свою семью.

После того, как старший в семье Асадуллах довольно взрослым парнем стал, его отец: «Теперь и он, работая, если начнет приносить дому доход, я немного отдохну», – думая, радовался.

В один день отец Асадуллаху:

– Асадуллах, нашу жизненную ситуацию теперь сам видишь, не будем все так, домой собравшись, жить, а ты в какой-нибудь доход приносящую сторону (на работу) иди, – говорит.

Его мать, приготовив в дорогу пищу, парня провожает в путь. С отцом, матерью и братьями попрощавшись, Асадуллах отправляется в путь.

Идя-идя, он в один густой, темный-претемный лес входит. Немного пройдя по лесу, проголодавшись, парень, остановившись, принимает есть свою дорожную пищу. Хоть глаза и на еде, а разум в тревоге о том, куда пойдет и ночью где останется. В то время, как он так ел, откуда-то один мужчина подойдя к нему:

– Да будет дорога (удачной – Ф.Г.), храбрец, куда в добрый путь (идешь)? – говорит.

Асадуллах дает знать, что идет искать работу, а сам и свою историю рассказывая, с аппетитом пустой хлеб жует. Тот же мужчина, поглядев, как парень ест, поскольку и сам был голоден:

– И мне от твоего хлеба крошку дал бы, (я) голоден, а до села пока далеко, – говорит.



– С большим удовольствием дал бы, увы, только самому не хватит: а пока я, работу найдя, устроюсь, чем питаюсь, жить буду? – сказав, парень дал знать, что от него ничего не перепадет.

– Сытый желудок голодный желудок не разумеет, да что поделаю?! – ответив, мужчина выходит в путь.

И парень, съеденный хлеб в горле нагромоздившись, поискав, найдя водичку, пьет. Затем, встав, опять в свой путь отправляется.

День припозднившись (клонясь к закату), земля перестает виднеться, но край леса, есть ли, нет ли, пока не заметен. Кругом вой волков, звуки криков еще многих разных лесных зверей слышатся. Но Асадуллах не робеет: быстренько из ветвей себе стан построив, кроме отверстия, чтобы сам смог пролезть, остальные места укрепив, внутрь входит. Затем: «Кто знает, вдруг в отверстие волк голову сунет», – подумав, и две подходящие дубины рядом с собой кладет. Тотчас же к стану различные звери придя, крича, суетиться начинают. В глаза парню в такой суете, когда и сердце боится, какой сон бы шел? Он об отце, матери начинает размышлять. Как бы то ни было, вскоре настав рассвет, звери в разные стороны разбредаются. И парень, поев пищи, снова в свой путь отправляется.

Весь день проходив, к вечеру из леса выходит. На одной красивой поляне, (на которую) и на саму роса выпав, ярко-ярко блестела, Асадуллах, после того, как довольно долго прошел, издали один большой дом приметил. А тот оказывается домом бая (богача).

Когда Асадуллах, дойдя до запертых ворот (засова): «Теперь как мне войти?» – размышлял, дверь отворившись, бай, выходя, парня замечает:

– Что надо? – спрашивает.

– Работу ищу, – отвечает парень. – Я – сын пастуха.

– А на какой работе сможешь трудиться?

– Скот смогу пасти.

– А землю сможешь пахать?

– Да это работа мной не опробованная, однако научусь и ей, – говорит Асадуллах.

– Ну ладно, тебя на работу возьму. Но наш договор таков пусть будет: ты у меня поработай год и один день, в течении этого времени из нас двоих кто первым рассердится, тому нос отрезать. Если согласен, вот тебе место, чтобы лежать, еда, чтобы есть, два вола – с ними будешь землю пахать, – сказал бай.

Парень решил. Утром рано встав, поев-попив, и волов за голову держа, двинулся на пашню (на место для пахоты). Возясь-возясь, после того, как совсем не смог (справиться), начал бить волов. Бай, увидев обстановку, как сорвавшийся с цепи пес, прибежав:

– От собаки рожденный, это что за дело? Если не умеешь работать, не обнадеживай!

Через немного бай, смягчившись, с парнем как с человеком начал разговаривать.

В промежутке неделя, две, даже три прошло. Асадуллах все ленивее и ленивее начал становиться / все больше и больше стал лениться: да как его душе лежать без платы год и день работать?

Красивым словом прельщая, бай парня пытается заставить работать. А парень любым способом себя с работы выгнать вынудить старается. Таким образом пребыванию парня в услужении исполнилось три месяца.

А в один день бай, позвав парня:

– Если в моем доме всех мышей изведешь, свою старшую дочь и вам жить один свой дом отдам, – говорит.

– Это очень трудное дело, попробую подумать, – отвечает парень.

Бай парню на размышление два дня дает, его от работы на два дня освобождает.

И на своей постели прилегли, поразмышляв, Асадуллах задремывает. Во сне тот дом полным мышей видит. Они, продырявив пол, спускаясь вниз, поднимаясь вверх, шастают. Убить стольких мышей очень трудным кажется парню. Тогда, заполнив дом соломой, поджигает, а сам, стоя прямо в центре горящего огня, никуда не может двинуться. Асадуллах, встрепенувшись, проснувшись, вспомнив свой сон, сам себе: «А почему буду стоять? Выпрыгну и уйду, от огня спасусь», – решил. Затем парень начинает торопить / с нетерпением ждать отхода ко сну / засыпание бая.

– Почтенный бай, то, что вы сказали, я решился выполнить. Из вашего дома всех мышей заставив исчезнуть, сделаю так, чтобы вы могли спокойно жить, – говорит Асадуллах баю.

– Да ты так каким образом сумеешь сделать-то? – когда спросил бай, парень:

– А это моя забота. Когда закончу, скажу, – только и молвит.

– Ладно, посмотрим, – сказав, и бай решился, затем про себя: «Он каким-то дураком кажется, как бы какого дурного дела не сотворил», – размышляет, за парнем тайком проследить определяет свое решение.

Та вещь, эта вещь, не разбирая, Асадуллах, посреди ночи встав, в дом солому и все найденные перед дверью дрова, еще много способных гореть предметов домой заносит и, чиркнув спичкой, поджигает. Дом быстренько загоревшись, внутри копотью заполняется. Бай, проснувшись, в исподнем / нательном белье, выскакивает во двор и, сверкая на Асадуллаха вытаращенными / огромными глазами, рассердившись:

– Это что ты делаешь?! – говорит.

– Бай, теперь ни единая мышь, сбежав, не сможет спастись, – отвечает парень.

Те, кто легли и спали, попросывавшись, не зная, что делать, вокруг бегают. Бай начинает злиться на парня, но, вспомнив заключенный договор, испугавшись остаться без носа, парню ничего сказать не может. От безысходности бай, свое имущество в огне оставив, в другой дом переселяется.

В том договоре установленные год и день пройдя, бай парню:

– Ты бестолковое, ленивое существо, не даю ничего в качестве заработка! – говорит.

Что бы сделал? Уходит парень:

– Спасибо, до свидания, бай, – молвит.

«Да теперь что подделаю? Вернусь-ка домой», – прикинув, парень по той дороге, по которой пришел, двигается обратно.



Много ли прошел, мало ли прошел, в какое-то время дойдя до двери, стучит в дверь их дома.

– А-а-а, это ты? Пришел? Что принес? – начинают расспрашивать парня.

Парень свою историю, от начала до конца (с головы до ног) рассказав, разъясняет. Отец сердится, ругает. Затем отец своим сыновьям:

– Теперь вы все так будете сидеть? Иди, Солтан-Хамид, теперь ты, если сможешь чего принести, попробуй. Как этот бестолковый, и ты пустым / порожним / без ничего не приди! – говорит.

И дорожную еду велев приготовить, Солтан-Хамид отправляется. По дороге он, сам по себе напевая, идет. Идя, когда удалился от села, присев, отдыхает, ест пищу. Опять откуда-то один старик выйдя:

– Ой, добрый молодец, куда в добрый путь вышел в позднее время? – говорит. – Мне один калач дал бы?

– Да, старик, пораньше пришел бы, только что самый последний свой калач, прожевав, проглотил, – говорит парень.

– Ладно, дай, у тебя, чтобы одному хорошему человеку, не жалея, протянуть, еще наверное есть одна крошка, – когда сказал старик, Солтан-Хамид:

– Осталось, не осталось – это мое дело. Лучше пойдите в село, там что-нибудь найдете, – отвечает.

Старик, почуяв, что от парня ничего не перепадет, пускается в свой путь.

Вскоре и парень, встав, собрался в дорогу / настроился в путь. Куда идти, не знает. Бредя по лесу, слышит звуки собачьего лая.

Наступила полночь. Быстро-быстро шагая, идет. Издали свет лампы заметив, Солтан-Хамид обрадовался. Дошел, а он (свет) оказывается из окна дома исходил. Пес, парня заметив, усиленно лает.

Хозяин дома, услышав звуки, выходит и:

– Кто это посреди ночи, бесхозным оставшись, шатается? – говоря, дает знать, что зол.

– Не сердитесь, так-то и так хожу, – говоря, парень свою историю-ситуацию рассказав, разъясняет, затем просит взять на работу.

– Какое дело знаешь / С какой работой знаком? – когда спросил хозяин дома, парень:

– Любое дело: на пашне и со скотом работать смогу, – говорит.

– Идем, на чердаке ложись на соломе, когда рассветет, позову, – сказав, хозяин дома Солтан-Хамида на чердак поднимает. – Пока я не позову, не спускайся, – говорит.

Утром хозяин дома парню, что (он) будет делать – что хлев будет чистить, дрова приносить, воду набирать – сообщает.

– Но в кухню не входи, женщина (его жена), чтобы туда неопрятный человек входил, ни в малейшей мере не терпит, – говорит.

– Да что же я буду делать, туда входя, не зайду, – сказав, парень мужчину успокаивает.

Солтан-Хамид был в работе неуютим*, это (в нем) очень нравилось. Таким образом парень две-три недели провел.

* Досл.: «был чумой / холерой работы» – имеется в виду, что герой был очень трудолюбив и быстро справлялся с работой (Ф.Г.).

А однажды с работы, приболев, весь покрывшись потом, дрожа, приходит и: «Что-нибудь попросив, если ночью на себя не накрою, заболею», – решив, когда дверь кухни открывает, там никого нет. Парень, забравшись под кровать, в теплом доме укладывается.

Тотчас, дверь отворившись, женщина, и с лампой в руках, входит. Увидев, что женщина, лампу поставив на стол, тянется к ящику, где находились мясо, масло, хлеб, сыр, у Солтан-Хамида слюнки потекли. Не вытерпев, когда захотел, подняв получше покрывало кровати, посмотреть, женщина его замечает. Переполошившись, мужа зовет. Они, отругав, парня на улицу выгоняют.

Парень, через прежний густой лес возвращаясь, вспомнив, как и его брат домой пуст-пустешенок вернулся, расстроившись, заплакал. Поздно вечером до дома добирается. Когда, открыв дверь, в дом вошел, домашние, удивившись, что он так неожиданно пришел, не знают, что сказать.

– Недолго же ты пробыл! Что смог принести? – спрашивает его отец.

Увидев на его спине от удара палки покрасневшие следы и узнав, что ничего не принес, отец на своего сына начинает злиться.

Очередь до самого младшего брата дошла / Настал черед самого младшего брата.

– Теперь я пойду, кто знает, может Аллах какое-то состояние / богатство пошлет / даст, – говорит Магомет-Али.

И дорожную пищу взяв, пускается в путь. Идя по дороге тех других братьев, присаживается отдохнуть. А сам очень хорошим аппетитом обладает. Один калач, дважды откусив, начинает есть.

Тотчас же тот прежний бедняк, выйдя, присев рядом с парнем, просит (его) покормить. Парень радушно встречает, из того, что сам ест, и ему дает. После того, как поев-попив, насытились, встав, начинают уходить. Увидев, что старик наравне с ним не сможет идти, попрощавшись, парень уходит вперед.

Становится поздно. Придя под одно большое дерево, Магомет-Али ложится спать.

(Утром – *Ф.Г.*) снова из своей еды поев: «Выпью воды», – подумав, пойдя к ручейку, едва начал глотать, все кругом заполняется муравьями. Муравьи собираются на хлеб в его руке. Парень, свой хлеб, раскрошив, отдает муравьям. Тогда один из них человеческим языком:

– Магомет-Али, в чем у тебя необходимость есть, скажи, мы поможем, – говорит.

– Гляди-ка, (ты) и разговаривать умеешь! Мне работа нужна, куда пойти, не знаю, – молвит Магомет-Али.

Муравей парню:

– Если прямо так пойдешь, на краю леса один хан живет. Если к нему пойдешь, он, безусловно, тебя на работу возьмет, – говорит.

Парень, обрадовавшись, пускается в путь. Идя-идя, добирается до ханского двора. Привратник ему:

– Куда идешь / прешь! Для такого, как ты, босоногого голодранца ничего нет здесь! – ругается.

Однако Магомет-Али тех слов не пугается – он много таких слов перетерпел.



– Я в поисках работы пришел, не встретившись с самим ханом, не уйду, – говорит.

А тот прежний, еще больше злясь:

– Такому, как ты, голодранцу у нас работы нет, вали отсюда! – говорит.

Магомет-Али, подняв свою палку:

– Еслипустишь,пустишь, а если непустишь, по голове стукну! – отвечает.

Он был очень здоровенным парнем. Привратник, испугавшись, парня запускает в дом.

Увидев парня, хан:

– Что ты за человек? Чего ищешь? – молвит.

– Я – сын пастуха, в поисках работы хожу, – говоря, парень разъясняет хану ситуацию.

– Да на что же ты годен? – когда спросил хан, парень:

– Например, баранов смогу пасти, – говорит.

– Баранов у меня много, пастух стар и хорошо пасти не может, мне молодой пастух нужен, – сказав, хан парня в работники нанимает.

Затем ему подают пищу. Парень все, что они подают, съедает до конца (до крошки). Этому хан очень дивится.

Хан, призвав свое войско, коня, ружье дав, и парня к войску добавляет. В фехтовании (бое на мечах / кинжалах) и в стрельбе по мишени парень побеждает всех, кто был в ханском войске. Хан, заприметив его такое богатырство, доблесть и храбрость, избрал парня предводителем войска.

В той округе распространяется весть, что один хан свою всемирно известную красавицу-дочь, кто на коне поднимется на Мияла-тау*, тому отдаст.

Из многих земель люди, прибывая, на ту гору взобраться пытаются, однако, не сумев забраться, опозорившись, возвращаются.

Эту новость услышав, Магомет-Али:

– Вашу честь не посрамлю, уважаемый / почтенный хан, совсем не бойтесь, я уверен в том, что взберусь, – говорит. – Дайте мне моего верхового коня и достаточно еды.

Хан с войском к Мияла-тау выдвигаются. Два дня проведя в пути, с трудом добирается войско до Мияла-тау. Из ханского войска пять-шесть уверенных в себе пробуют взобраться, но, не достигнув даже середины горы, соскользнув, возвращаются. В самом конце доходит очередь до Магомет-Алия. Едва парень начал подниматься, та ханская дочь, как человек, говорящий «прощай», посмотрев на парня, машет рукой. На полдороги его конь останавливается. Едва Магомет-Али, нагнувшись, шепнул в ухо коню, конь, поднявшись повыше льда, круто вверх лететь начинает. Поднявшись на вершину горы останавливается. Внизу смотревший люд сильно удивляется, хлопает в ладоши.

– Аперим**, аперим! – звуки слышатся.

Парень с Мияла-тау спускается вниз. Народ дивится тому, что этот бедняк сумел вскарабкаться на гору.

* Мияла-тау (Мияла тау) – досл.: «Стеклянная / Ледяная гора», подразумевается, что ее поверхность очень скользкая, покрытая льдом (Ф.Г.).

** Аперим – междометие, употребляющееся при выражении похвалы, одобрения в значении «молодец», «хвала» [4, 168], «браво».



Девушка, думавшая, что сможет подняться красиво одетый, с золотыми, серебряными конскими принадлежностями, ослепительно блестящий богатый юноша, когда увидела, что на гору он, не сумев подняться, и парень, и конь, расшибившись, упав, а этот бедный, неопрятно одетый Магомет-Али забрался на гору, девушка злится на парня, дает знать, что не хочет выходить за парня. Но, согласно уговору, у нее не выйти возможности не было.

Магомет-Али, спустившись, подходит к людям.

– А ханскую дочь получил, слушай! – говоря, его многие высмеивали, завидовали, что им самим не доставшись, девушка такому оборванцу досталась.

Когда услышал те слова, парень:

– Зачем мне нужна ханская дочь? Я пойду в наше село, в наш дом, – говорит.

– Коли так, (ты) свободен, иди, – сказав, хан, и много денег дав, парня удовлетворяет.

Парень уходит. Опять через густой лес много троп / дорог проходит, устает. Он, остановившись, и еды поев, ложится (спать). Посреди ночи какие-то шумы будят его. Встав, смотрит – чуть дальше группа людей, а между ними – куча денег. Вот ее разделить стараются они. Они спорят, ругаются. Магомет-Али, встав со своего места, тихонько пойдя, не показываясь им, забирается на большое дерево, внизу которого они сидят. Затем через немного дерево шевелит. На воров с дерева капли капаят.

– Вот, роса начала выпадать, – говорит один из них.

А другие, даже не слыша его слов, опять спорят. Магомет-Али, одну сухую ветку взяв, прямо на их кучу денег бросает. Воры, повскакивав, в разные стороны разбегаются. А Магомет-Али, спустившись, деньги в свой мешок грузит и, подняв, пускается в свой путь.

Ему тот прежний бедный старик встретившись:

– Как ты, Магомет-Али? – спрашивает.

– Спасибо, старик. Я в услужении очень много проходил, тем не менее, заработок получил, – отвечает, затем и старику из своих денег часть отдает.

Поднявши свой мешок, парень приходит домой. Добравшись, когда в дверь постучал, отец, выйдя, своего сына не узнает. Когда сын, посмотрев отцу в глаза, назвав его имя, крикнул, отец своего сына узнает. Отец, увидев мешок денег сына, очень удивляется, радуется. Затем парень своих отца, мать, братьев по очереди обнимает. У его отца и матери и в мыслях не было, что их глупый сын такое богатство принесет. На это богатство дом, землю купив, домашние остаются жить-поживать. Асадуллах и Солтан-Хамид перестают после этого называть Магомет-Алия «дураком / глупым Магомет-Алием».

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 18. Записано 28.08.1960 г. от 65-летнего Дугоева Б. Где и кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебная сказка на сюжет о младшем сыне. В отличие от подобного рода произведений, здесь братья ему не вредят, не завидуют, мстить за



них также нет необходимости. Хоть младшего брата и считали дураком, благодаря его воспитанности, умению сочувствовать более слабым у него находятся и помощники: муравьи подсказывают ему, где лучше искать работу.

В сказке, помимо поиска работы, встречаются и другие мотивы: добывание украденного грабителями добра и участие в соревновании за руку дочери хана. Однако здесь главный герой, хоть и выполняет условие, отказывается жениться на девушке.

В произведении имеются вошедшие в текст позднее русские слова (кровать, стол).



СОКЪУР АЛИЮКЪ

Бир жерде бир иги жигит мараучу болганды. Ол уугъа барып, бир бууну ёлтюрюп, терисин да сыдырып, этин ёрге тагып, энди шишлик этейим деп тебирегенлей, кийик сау болуп, къачып тебирегенди.

– Астофирулла! Ол не алааматды? – деп, сейир-тамаша болганда, кийик, артха айланып:

– Ай, мен а сейир тюйюлме, сейирликни уа санга сокъур Алиюкъ айтыр эди, – деп, къачып кетгенди.

Мараучу да:

– Мен аны тапмай къоймам! – деп, излей кетгенди.

Кёпмю айланады, азмы айланады, аны ким билсин? Алайына жюрюй кетип, бир уллу къаяны аллында суу боюнунда бир элге келгенди эм элни тёбен кыйырында бир уллу юйге:

– Ой, юйге да ахшылыкъ! – деп киргенди.

Биреу да мынга «сау кел» деп да айтмаганды. Къараса: бир мазаллы киши ундурукъда жатып, эки айрылы шиш инбашындан сугъулуп, табанындан чыгып, ынычхай, ундурукъну аллында эки тиширыу жилий. Мараучу къатларына барып:

– Мен кишилигим, къолумда тутхан ушкогум бла да ант этеме: мени къолумдан келлик зат эсе сизни бушууугъуз, мен сизге болушмай къоймам! Кимсиз? Не къайгыгыз барды? – деп сорганда, ундурукъдагы киши:

– Къой, ахшы улан, сен бош кесинги жойдурма. Сен бизге болушалмазса. Алай хапарыбызны уа, олтур да, тынгыла, мен санга айтайым, – деп башлайды. – Сокъур Алиюкъ деген менме, бу жилий турган эки тиширыула – бири къатыным, бири къызымды. Дагыда мени бири-биринден алаамат тогъуз жашым бар эди. Биз жортууулгъа чыкъсакъ, бизни хапарыбызны эшитгенлей, шахарла, элле къачыучу эдиле. Уугъа барсагъ’а, асламында къапланны ортагъа алып, бузоуну тутханлай тутуучу эдик.

Бир жол тогъуз жашым да тогъуз тору атха, кесим да къолан атха минип, кетип барганлай, бир залим эмеген, сюрюу кюте турганлай тюбеп: «Кёп болсун!» – дегенде, бек жарыкъ болуп: «Ой, сау болугъуз, сау келигиз, жууукъ болугъуз, къонакъбай болайым!» – деп, дорбуннга жууукъ этди.

Бир бёлек малын да къурманлыкъ этип, бек жараулу сыйлады. Алай дорбунну аллына уа бир уллу къаяны сюеди да, тышына чыгъаргъа къоймады.

Эрттенликде ол сюрюуге кетгенде, онубуз да аямай кюрешдик, къаяны жеринден да тепдиралмадыкъ.

Алай бла эмеген атларыбызны барын да ашады. Тогъуз жашымы да ашады. Эм артда кесими ашаргъа деп, кесинг кёресе, бу эки айрылы шишни инбашларыма сугъуп, табанымдан чыгъарып, шишлик этерге хазыр этип, дорбунну эшигинден къаяны да кетерип, отжагъада таяна къалгъанда, мен да, ол кезиуню хайырланып: «Бир да болмаса да, ёлюмю юйге элтип, хапарыбызны айтайым», – деп, тёнгереп, уллу жолгъа чыкъганем. Андан жолоучула юйюме келтиргендиле.

Энди кёресе, ёлалмай, аман кюн башыма келип турама. Къызым бла къатыным, бизге жилий, сокъур болгандыла. Ма хапарыбыз олду, – деп, Алиюкъ сёзюн тауусду.



Мараучу да:

– Мен не сени жашларыңча болурма, не да аланы кяанын алырма! Сизге эсенлик, манга – саулукъ! – деп, ол Алиюкъ айтхан дорбун таба жолгъа чыкъды.

Бара-жюрюй, кёп тюрлю жаныуарлагъа жолугъа, бир кяая кёрюп, анга айланып тебиреди. Бара кетип, уллу кяалын агъачдан чыкъса – жер жапхан мал сюрюу. Бираз барып кьараса – тёбени юсюнде бир уллу, залим эмеген, мангылайында жангыз кёзюн мынга буруп, сарыуек ауузуча ауузун да ачып турады.

Жанлай барып:

– Ой, аман уллубыдыр, кёп болсун! – дегенде, кьолун узатып:

– Сау бол, сау кел! – деп, жарыкъ болду.

Мараучу да, кьолун иги кысып, эки бармакъ сюегин сындырды. Эмеген, билмеген кибик этип, тёзюп, жукъ бол(гъанын билдирмеди – *Ф.Г.*).

– Мен малланы тыя барырма, сен да кьош кьатында бир кяауум акъсакъ малладан шишлик эте тур, мен да келирме, – деп, уучуну дорбуннга жиберди.

Бу да, келип, ол эшикге салгъан кяая ташны кётюрюп, кючюню жетеригин сынады. Дорбунну эм артына кьараса – он атны да, тогъуз жашны да сюеклери, терилери бла жыйылып, ёрге тагъылып.

Бу да, отну да уллу этип, бир бёлек мал да кесип, шишлик эте тургъанлай, эмеген, сюрюуюн сюрюп, жыйып, дорбуннга келди.

Экиси да шишликден да тоюп таяндыла, алай бир бирге ышанмайдыла, кьалкъымайдыла. Уучу, аны сезип:

– Ай, аман хомух, сен менден кьоркзупму жукъламайса? Мен кишиме, сермешсем, ачыкъ сермеширме, ансы жукълагъаннга жилин да тиймейди, – дейди. – Мен а адамма да, кяалай тиерме? – деп жукълады.

Эрттенликде уянса – эмеген жокъ, эшикге кяая сюелип. Терк окъуна кяаяны кётюрюп, бир жанына салып: «Эрттенлик азыкъгъа малла тутайым», – деп кьараса, эмеген алайда олтуруп.

– Адам, сен энди маллагъа тийме. Тюнене сен кьонакъ эдинг да, мен сыйлагъанма, бюгюн а кесинг тап кесер мал, – дегенди.

Уучу, ачыуланып:

– Сени малларың тауусулгъунчу ашайыкъ, артда мен табарма! – деп, сёз болуп тнойюшдюле.

Эмеген кётюрюп урса, жашны белине дери жерге батдыра эди, жаш кётюрюп урса, эмегенни инбашларына дери батдырып, бичагъын чыгъарып:

– Алиюкъну жашларын, атларын кяалай сау этерге боллугъун айтмасанг, башыңгы кесеме! – деп тохтагъанды.

Ол заманда эмеген:

– От жагъа ташын кётюр да, о тюбюнде кийиз кьамичими ал да, суугъа ур, бар да тулукъларына ур, дорбун артында жашла, атла да сау болурла. Аллахдан аман тап! Мени ёлтюрмей кьоймасанг, дорбунда кьара кюбюрде бичагъымы чыгъар да, аны бла башымы кес. Алиюкъну уа, мени кызыл кьочхарым барды да сюрюуде, аны союп, этинден ашаса, жартысын ичсе, жауун, эритип, шиш чыкъгъан жерлеге куйса, сау болур. Энди, Аллахдан аман тап, мени ёлтюрсенг, жаулу чегими ал да, белинге кыс: дуньяда сенден кьарыулу жан болмаз, – деп юйретгенди.



Уучу да, барып, кийиз кьамичини алып, жашланы, атланы да сау этип, кьара кюбюрге келип, аллына базыкь темир шишни жерге чанчып, кеси уа артында туруп, башын ачханды. «Зынгыр-зынгар» деп, бир бичакь, чыгып, ол темир шишни, балдыргьанны юзгенча, эки юздю. Ол бичакьны келтирип:

– Ха, уллубыдыр, мени алдаргьа умутунг болмады! – деп, уруп, башын кетерди.

Кьарынын жарып, жаулу чегини терекге чулгьагьанда, базыкь терекни, гусукну юзгенча, «хырт» деп юздюрюп жиберди. Кьызыл кьочхарны кесип, этин да итге атханда, олсагьат кьапханлай ёлдю. Ол хыйласын да билдиле.

Эмегени жер жапхан ырысхысын да жыйып келип, шишни чыгьарып, Сокьур Алиюкьну да сау этип, кьатыныны, кьызыны кёзлерин да сау этедиле. Жангыз эгечлерин да уучугьа берип:

– Не саугьа берейик? – дегенде:

– Мушт ящикни беригиз, ёнге зат керек тьойюлдю, – деп, ящикни да алып, жолгьа чыкьгьандыла.

(Бир кьауум замандан, жылдан: – *Ф.Г.*)

– Бу ящик (кюбюрчек) неге жарарыкь болур? – деп, кийиз кьамичини жетдиргенде, секирип, бир сары ажир чыкьды, аны ызындан жер жапхан жылкьы чыкьды, артында уа тыялмадыла.

Была да не этерге билмей тургьанлай, бир бёрю келип, анга хапарларын айтханды (жаш – *Ф.Г.*). Бёрю:

– Бек ахшы, малланы мен ящикге (кюбюрчекге) тыяйым, сьойсенг, жартысын манга бер, аланы кёзюнг кьыймаса уа, юйде жангыз жашынгы бер, – дегенди.

Уучу да:

– Бир жылдан келсенг, жашны берирме, – деп, жарашхандыла.

Бёрю, кийиз кьамичини ала барып, сары ажирни тобугьуна кьакьгьанды. Ол, чабып келип, ызына жыйылгьанды.

Алай бла уучу, юйюне келип, жер жапхан малы болуп жашай болгьанды. Жыл болжал жетип, бёрю жашны алыргьа келгенди. Уучу да:

– Не айтсанг, берейим, жашны кьой, – дегенди.

Ол заманда бёрю:

– Бек ахшы, кьыз бермезни эрге бармаз кьызын манга кьатынга келтирсегиз, жашны кьояма, бир жыл болжал да береме, – деп, бёрю кетгенди.

Жаш да:

– Кьызын тапмасанг да, кесими берирге тапдырмам, – деген мурат бла жолгьа чыкьгьанды.

Бара кетип, бир тюлкюге жолукьгьанды. Тюлкю жашха кесин:

– Нёгер эт, – деп, экиси да бир нёгер болгьандыла.

Жаш хапарын айтханда, тюлкю:

– Биз ол кьызын табарбыз, алай сени атынг осалды, санга иги ат керекди, – дегенди. – Бусагьатда кёп адам Маккадан хажи кьылып келедиле, аланы мардасыз бир кёп атларындан ёнге маллары жокьду. Мен семиз ирик болайым да, сен мени атха алыш. Ол кёк ат санга атлыкь этерикди, – дегенди.



Жаш да, тюлкю айтханча этип, кёк атха минип, кетип бара, биягъы тюлкю, ызындан жетип:

– Энди бу агъачда тохтайыкъ. Мен кбыл къобуз ишлейим, ала музыканы бек сюедиле. Мен согъа башласам, бары да мени тегерегиме жыйылырла. Ол заманда сен кызыны ал да, къач. Алада кёк атны жетер ат жокъду, – деп, тамам тюлкю айтханлай этгендиле.

Жаш да, кызыны къутхарып, тюлкюню ызындан жетгенди.

Энди жаш:

– Бу кызыны бёрюге бермейим(, – дейди – *Ф.Г.*).

– Ол сени къатынынг болсун. Мен андан да ариу кыыз болайым да, сен бёрюге сайлама кбой. Ол мени алып, сен а кызыны ал да, юйюнге бар, – дегенди.

Жаш да, ол айтханча этип, къутулуп бара, тюлкю, ызындан жетип:

– Энди, жаш, бёрю мени къуууп келеди. Ол жетер. Мен мюфтю болайым да, жолда сизге жолугъурма. Сен бёрюге: «Кимни терс, кимни тюз болгъанын мюфтю айтыр, анга сорайыкъ», – деп айт, – деп юйретгенди.

Бёрю жетгенде, мынга даулашып баргъандыла. Ол заманда мюфтю:

– Кимни терслигин мени таягъым билир, мен таякъ бла урайым, кимни башы сынса, ол терсди! – деп, жашны башын аз-аз къашып, бёрюню уа, уруп, башын эки жарып ёлтюргендиле.

Жаш да, юйюне келип жангы къатыны бла, байлыгъын алып, жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 13 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Сейир-тамаша-жигитлик жомакъ. Чыгъарманы башланганы «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат», «Бай улу Махамет» деген жомакъладады, алай хатарны андан арысында уа аман къатынны юсюнден жашау-турмуш сюжетни орунуна мараучуну эмегенге дерт жетдириуюню юсюнден жигитлик сюжет бериледи. Уучу эмегенни ёлтюренини суратланыуу нарт эпосда Сосурукъ эмегенге оюнла кёрюзте келип жойгъанына ушайды. Ахыр жаны уа темир бёрюню юсюнден жомакъгъа келишеди.

Бу чыгъармада да кийиз къамичи сагъынылады, алай мында ол адамны жаныуаргъа айландырмайды, ёлгенлени сау этеди эм сейир къюбюрчекни ачаргъа, жабаргъа да себеп болады.

Текстде арап (астофирулла, Аллах, Макка, хажи кылып, мюфтю), орус (ящик, музыка) тилледен кирген сёзле да тюбейдиле.

СЛЕПОЙ АЛИЮК

В одном месте один хороший храбрый охотник был. Он, отправившись на охоту, одного оленя убив и с него шкуру содрав, мясо подвесив наверх, когда собрался делать шашлык, а олень, ожив, начал убежать:

– Астофирулла! Это что за чудо? – воскликнув, когда стал дивиться, олень, повернувшись назад:

– Ай, я-то не диво, про удивительное тебе Слепой Алиюк рассказал бы, – ответив, убежал.

И охотник:

– Я, его не найдя, не оставлю! – сказав, отправился искать.

Много ли ходил, мало ли ходил, кто это знает? Так, странствуя, пришел в одно село на берегу реки(, текущей) перед одной большой скалой и в нижнем краю села в один большой дом:

– Ой, дому добро, – сказав, вошел.

Никто ему даже «добро пожаловать» не сказал. Смотрит: один могучий мужчина на постели лежит с разветвленным надвое вертелом, через плечо воткнутым, через пятку вынутым, стонет, перед кроватью две женщины плачут. Когда охотник, подойдя к ним:

– Я своим мужеством и находящимся в моей руке ружьем клянусь: если ваше горе таково, что мне по плечу, я вам обязательно помогу! Кто вы? Что у вас за беда? – спросил, мужчина на кровати:

– Оставь, добрый молодец, ты себя понапрасну не губи, ты нам не сможешь помочь. Но историю нашу, садись и слушай, я тебе расскажу, – ответив, начинает. – Называемый Слепым Алиюком – я. Эти две плачущие женщины, одна – моя жена, одна – моя дочь. Еще у меня один лучше другого девять сыновей было. Когда мы отправлялись в набег, заслышав вести о нас, города и села бежали. А если выходили на охоту, в основном, тигра, окружив, как ловят теленка, ловили.

Как-то раз, когда мои девять сыновей на девятирех гнедых коней и я сам на пегого коня сев, отправившись, ехали, одного огромного эмегена, пасущего стадо, повстречав: «Пусть много будет!» – сказали, очень обрадовавшись: «Ой, спасибо, добро пожаловать, заходите (в дом), стану вашим гостеприимным хозяином, – сказав, пригласил в пещеру.

Некоторое количество скота зарезав, очень хорошо угостил. Однако перед пещерой одну большую скалу поставил и выйти наружу не позволил.

Утром, когда он ушел к стаду, вдесятером вовсю старались, скалу и с места не смогли сдвинуть.

Так эмеген съел всех наших лошадей. И девятирех моих сыновей съел. Когда под конец, решив съесть меня, сам видишь, этот разветвленный надвое вертел в мои плечи воткнув, через пятку вынув, подготовив, чтобы сделать шашлык, и от входа в пещеру скалу убрав, у очага прилег, я, воспользовавшись тем моментом: «Как бы то ни было, хотя бы свое тело (труп) домой доставив, нашу историю расскажу», – решив, катясь, на большую дорогу выбрался. Оттуда путники домой привезли.

Теперь видишь, не имея возможности умереть, дурной день на мою голову свалившись, живу. Дочь и жена мои, нас оплакивая, ослепли. Вот это наша история, – сказав, закончил свою речь.

И охотник:

– Я либо разделю судьбу твоих сыновей (как твои сыновья буду), либо за их кровь отомщу! Вам – благополучия, мне – здоровья! – сказав, в сторону упомянутой Алиюком пещеры двинулся в путь.



Ходя-бродя, много разных животных встречая, одну гору увидев, к ней повернув, двинулся. Идя-идя, когда вышел из большого, густого леса – покрывающее землю стадо скота. Немного пройдя, смотрит – на возвышенности один большой, могучий эмеген, единственный на лбу свой глаз на него обратив, похожий на рот дракона свой рот разинув, стоит.

Когда приблизившись:

– Ой, плохой большепузый, пусть много будет! – сказал, протянув руку:

– Спасибо, добро пожаловать! – сказав, обрадовался.

И охотник, его руку хорошенько сжав, две косточки на пальцах сломал.

Эмеген, притворившись, что не заметил, вытерпев, не показал, что бы что-то случилось.

– Я, скот придерживая, пойду, а ты рядом с кошарой из нескольких хромых животных шашлык готовь. И я подойду, – сказав, охотника в пещеру отправил.

А этот, придя, тот устанавливаемый на входе скальный обломок (камень) подняв, испытал, хватит ли у него силы. Когда заглянул в самый конец пещеры – и десяти лошадей, и девяти парней кости, в шкуры собранные, наверх подвешены.

В то время, как он, разведя большой костер и несколько животных зарезав, готовил шашлык, эмеген, пригнав свое стадо, собрав, пришел в пещеру.

Оба, наевшись шашлыка, прилегли, но друг другу не доверяют, не дремлют. Охотник, почувствовав это:

– Ай, плохой лентяй, ты, меня боясь, не спишь что ли? Я – мужчина, если буду сражаться, открыто буду сражаться, а спящего даже змея не трогает, – говорит. – А я ведь человек, как трону? – сказав, заснул.

Когда утром проснулся – эмегена нет, на входе скала стоит. Быстренько скалу подняв, в сторону отложив, когда, решив: «К утренней трапезе живность поймаю», – посмотрел, эмеген там сидит.

– Человек, ты теперь скот не трогай. Вчера ты был гостем, и я угощал, а сегодня сам найди животное, чтобы зарезать, – сказал.

Охотник, разозлившись:

– Пока твой скот не закончится, поедим, потом я найду! – заявив, поссорившись, подрались.

Когда эмеген, подняв, ударял, парня по пояс в землю вгонял, когда парень, подняв, бил, эмегена по плечи вогнав, вынув свой кинжал (нож):

– Если не скажешь, как сыновей Алиюка, их коней оживить, голову твою отрежу! – заявил.

Тогда эмеген:

– Подними очажный камень и из-под него мою войлочную плеть возьми и по воде ударь, пойдя и по их бурдюкам ударь, позади пещеры парни и кони оживут. От Аллаха зло обрети! Если меня не убив, не оставишь, в пещере из черного сундука мой кинжал (нож) достань и им мою голову отрежь. А Алиюк, у меня есть рыжий баран в стаде, его зарезав, его мяса если поест, половину (бульона – *Ф.Г.*) выпьет, жир, растопив, в места, откуда вышел вертел, зальет, выздоровеет. Теперь, от Аллаха зло обрети, коли меня убьешь, возьми мою толстую кишку и повяжи на пояс: в мире сильнее тебя души не будет, – сказав, научил.

И охотник, пойдя, войлочную плетъ взяв, парней и коней оживив, придя к черному сундуку, перед ним толстый железный вертел в землю воткнув, а сам позади встав, крышку открыл. Со звоном один кинжал (нож), выскочив, тот железный вертел, словно анис срезав, пополам разрезал. Тот кинжал (нож) принесся:

– Ха, большепузый, твой замысел меня обмануть не удался! – сказав, ударив, голову его снес.

Когда, разрубив живот, толстую кишку к дереву привязал, толстое дерево, словно анзур срезав, с хрустом разрезало. Когда, рыжего барана зарезав, мясо собаке бросил, тотчас же, как откусила, умерла. И эту его хитрость разгадали.

Собрав покрывающее землю добро эмегена и придя, вынув вертел и слепого Алиюка вылечив, и глаза его жены и дочери тоже излечили. И свою единственную сестру за охотника выдал:

– Какой подарок дать? – когда спросили:

– Дайте ящик Мушт, другой вещи не надо, – сказав и ящик забрав, отправились в путь.

(Через несколько времени, лет: – *Ф.Г.*)

– На что этот ящик (ларец) годится? – сказав, когда войлочной плетью ударил, прыгнув, один желтый жеребец выскочил, за ним покрывающий землю табун выскочил, в результате не смогли удержать.

В то время, как они стояли, не зная, что делать, один волк пришел, ему свою историю рассказал (парень – *Ф.Г.*). Волк:

– Очень хорошо, скот я в ящик (ларец) загоню, хочешь половину мне отдай, однако, если жалко, дома (находящегося) единственного своего сына отдай, – сказал.

И охотник:

– Когда через год придешь, отдам сына, – ответив, договорились.

Волк, взяв войлочную плетъ, подобравшись, желтого жеребца по колену стукнул. Он, прибежав, назад убрался.

Таким образом, охотник, домой вернувшись, имея покрывающий землю скот, поживал.

Когда прошел срок в год, волк пришел забрать парня. И охотник:

– Что скажешь, дам, оставь сына, – сказал.

Тогда волк:

– Очень хорошо, дочь не отдающего, замуж не выйдущую девушку мне в жены если привезете, сына оставлю, и сроку даю год, – ответив, волк ушел.

И парень:

– Если девушку и не найдешь, себя, чтобы отдать, не дам найти, – с такой целью отправился в путь.

Странствуя, с одной лисой встретился. Лиса парня попросив:

– Возьми в напарники, – оба спутниками стали.

Когда парень свою историю рассказал, лиса:

– Мы эту девушку найдем, но твой конь плох, тебе нужен хороший конь, – сказала. – Сейчас много народу из Мекки, совершив паломничество, возвращается, у них, кроме как безграничного множества лошадей, другого



скота нет. Я превращусь в жирного валуха, а ты меня на коня поменяй, тот серый конь тебе конем послужит, – промолвила.

Когда парень, сделав, как лиса сказала, на серого коня сев, уезжал, та же лиса, его догнав:

– Теперь в этом лесу остановимся. Я скрипку изготовлю, они музыку очень любят. Когда я начну играть, все вокруг меня соберутся. Тогда ты девушку забирай и беги, у них лошади, способной догнать серого коня, нет, – сказав, поступили именно так, как лиса советовала.

И парень, девушку спасая (укравав), догнал лису.

Теперь парень:

– Девушку волку не отдам, – говорит.

– Пусть она твоей женой будет. А я превращусь в девушку еще красивее нее, а ты дай волку выбрать. Он меня возьмет, а ты девушку забирай и езжай домой, – сказала.

И когда парень, поступив, как она сказала, спасался, лиса, сзади нагнав:

– Теперь, парень, волк меня преследует. Он догонит. Я муфтием стану и на дороге вам встречусь. Ты волку: «Кто виноват, кто прав, муфтий скажет, его спросим», – скажи, – научила.

Когда волк догнал, к ней, споря, пошли. Тогда муфтий:

– Кто виновен, моя палка узнает. Я палкой ударю, чья голова проломится, тот виноват, – сказав, голову парня слегка почесав, а волка, ударив, голову надвое расколов, убили.

И парень, домой приехав с новой женой, богатство свое получив (забрав), стал жить.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 13. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Волшебно-героическая сказка. Завязка произведения такая же, как в сказках «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет», но в продолжении рассказа вместо бытового сюжета о неверной жене дается героический сюжет о мести следопыта эмегену. Описание убийства эмегена охотником похоже на то, как в нартском эпосе Сосурук, показывая свои игры, в итоге погубил эмегена. А последняя часть схожа со сказкой о железном волке.

В этом произведении также упоминается войлочная плетель, но здесь она не превращает людей в животных, а оживляет мертвых и помогает открыть и закрыть чудесный ларец.

В тексте встречаются заимствования из арабского (астофирулла, Аллах, Мекка, совершить хадж, муфтий) и русского языков (ящик, музыка).

ХУДУЙЧУКЪ

Бир джарлы киши болганды. Аны джети джашы болганды. Сора ол патчахха барганды.

– Манга бир иш бер, инджилеме, кыйналама, – дегенд да, патчах а, аны ёлтюрюр джанындан болмаса: «Джарлыд да, иш берейим, джашасын», – демегенди да:

– Бар да, беш башлы эмегенни джеринден манга арба агъашчыкъла ал да, кел, – дегенди.

Барганды Худуйчукъ, беш башлы эмегенни джеринден дженгил-дженгил кесгенд да, къачханды, алганды да.

Худуйчукъ да тышына чыкъгъанлай, ызындан кычыргъанды эмеген:

– Нек кесиб бараса агъачларымы? Боюнунгу кесерме! Кесинг да кимсе? – дегенди.

– Мен Худуйчукъма, – деб, къачыб кетгенди.

Агъачланы алыб барыб, патчахха:

– Ма, келтирдим, энди хакъымы бер, – дегенди.

Патчах, хакъын бермейин:

– Энтда боюнсхалыкъла келтирсенг, берирме, – дегенди.

Дагъыда барганды Худуйчукъ.

Барыб, Худуйчукъ, дагъыда агъачла кесиб, алыб, тышына чыкъгъанды. Биягъы эмеген кычыргъанды:

– Хахай! Нек кесиб бараса? Боюнунгу юздюрюрем, былайдан чыгъаргъа мадарым джокъду ансы! Кесинг да кимсе? – дегенди.

Биягъы:

– Худуйчукъма мен, – дегенди да, кетгенди.

Агъачланы биягъы патчахха алыб барганды. Патчах: «Болмады бу», – деб:

– Энди эмегенни кесин алыб келсенг, тахтадан тюшюб, орунуму санга берирме, – дегенди.

Барганды Худуйчукъ, балтасын да алыб. Биягъы джерге кириб, «таркъ, таркъ, таркъ» деб тебирегенди. Беш башлы эмеген джетгенди:

– Не этесе мени джеримде? Нек кесесе тереклерими? – деб.

– Кесиб а, нек кесеме? Худуйчукъ деб бир антсыз барды да, чырт тынчлыкъ бермейди. Аны кюбюрге салыб, киритлеб кюйсакъ деб келгенме! – дейди.

– Ый, кюрманынг болайым, мени кюймайды джашаргъа, мен да болушайым! – деб, барыб, мычхы да, сюрме да, чёгюч да, чюйле да алыб келгенди.

Экиси да къадалыб ишлегендиле кюбюр. Ишлеб бошагъанлай, Худуйчукъ айтханды:

– Энди, Худуйчукъ сенден къарыулу болмаз, сен ичине кир да, мен чюйлеб бир кёрейим. Сен чыгъалмасанг, Худуйчукъ да чыгъалмаз, – дегенди.

Эмеген кюбюрге киргенди. Худуйчукъ чюйлегенди ашхы, иги бегитгенди да:

– Энди бир кёр, чыгъаллыкъ эсенг! – дегенди.

Тёрт джанына айланыб, керилиб, уруб кюрешгенди эмеген, чыгъалмагъанды.



– Чыгълмайма, кючлюдю! – дегенди эмеген.
– Чыгълмай эсенг, Худуйчукъ деген менме, не эталлыкъ эсенг да! – дегенди Худуйчукъ да.

Кюбюрню тёнгеретиб, эмеген да кычырыкъ этиб, патчахны аллына алыб баргъанды.

Патчах, тахтасындан тюшюб: «Алдаймыды, тюзмю айтады?» – деб, кюбюрню башын ача тебирегенлей, Худуйчукъ, джети джашын да алыб, тахтагъа ёрлеб кетгенди, бачхычлары ичинден болгъанды.

Патчах башын ачханлай, эмеген аны ёлтюргенди, дагъыда талай адамын да ёлтюргенди, талайы да къачхандыла.

Худуйчукъну тахтаны башында кёргенинде:

– Мени да ары миндирсенг а! – дегенди эмеген.

– Кел, миндирейим, – деб, башындан джыджым атыб, тартыб барыб, башына джете кетгенлей, джыджымны ийиб, джыгъыб, бир башын тюшюргенди.

– Нек этдинг алай? Миндир! – деб, дагъыда тилегенди.

– Ауур эдинг да, кётюралмай, ийиб кьойдум, – деб, дагъыда джыджымны атханды.

Чыгъара барыб, дагъыда ийиб кьойгъанды. Дагъыда бир башы тюшгенди.

Алай бла эмегенни тёрт башын да тюшюргенди. Бир башы къалгъанында:

– Энди дженгилчик болгъанса, кёлтюрлюкме! – деб алдагъанды.

Эмегенни да ёлтюрюб, кеси патчахны орунуна тахтагъа миниб къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 17 паспорт. КъЧАО-ну Къарачай районуну Каменномост ауулунда 69-жыллыкъ Алакаланы Зайнеб Саралыбны кызындан 16.04.1965 жылда Сюйюнчланы Х.И. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Къушжетерланы Аубекирни жашы Зауурбекден эшитгенди.

Огъурсуз патчахны, акъыллы жарлы кишини эм акъылсыз эмегенни юсюнден сейир-тамаша жомакъ.

ХУДУЙЧИК

Был один бедный мужчина. У него было семь сыновей. Тогда он пошел к царю.

– Дай мне какую-нибудь работу, мучаюсь, страдаю, – сказал.

А царь только за то, чтобы его убить, а: «Он беден, дам-ка ему работу, пусть живет», – не говорил и:

– Пойди и с земли пятиглавого эмегена мне деревяшки для арбы возьми и приходи, – сказал.

Пошел Худуйчик, с земли пятиглавого эмегена быстро-быстро нарубил (деревьев – Ф.Г.) и убежал, забрав.

Едва Худуйчик за пределы (земли эмегена – *Ф.Г.*) вышел, вслед за ним крикнул эмеген:

– Почему рубишь мои леса? Шею твою перережу! И сам кто таков? – спросил.

– Я Худуйчик, – сказав, убежал.

Забрав дерево, пойдя к царю:

– Вот, привез, теперь отдай мою плату, – сказал.

Царь, не отдавая плату:

– Когда еще материалы на ярмо привезешь, отдам, – ответил.

Снова пошел Худуйчик.

Пойдя, Худуйчик, еще деревьев срубив, забрав, выбрался наружу (из леса – *Ф.Г.*). Опять эмеген крикнул:

– Хахай! Почему рубишь? Шею бы твою отрезал, вот только отсюда выйти возможности у меня нет. И сам ты кто? – сказал.

Снова:

– Худуйчик я, – ответил и ушел.

Дерево опять царю отвез. Царь: «Не получилось это», – подумав:

– Теперь если самого эмегена привезешь, сойдя с трона, свое место тебе отдам, – сказал.

Отправился Худуйчик, и топор свой взяв. В прежнее место придя, начал стучать. Пятиглавый эмеген примчался:

– Что делаешь на моей земле? Почему рубишь мои деревья? – говоря.

– А режу, почему режу? По имени Худуйчик один нечестивец есть, совсем покоя не дает. Его в сундук засунув, может запрем, думая, пришел, – отвечает.

– Ий, жертвой тебе стану, мне жить не дает, давай, и я помогу! – сказав, пойдя, и пилу, и фуганок, и молоток, и гвозди взяв, пришел.

Оба, усердствуя, построили сундук. Как закончили строить, Худуйчик сказал:

– Теперь, Худуйчик, наверное, не сильнее тебя, ты залезь внутрь, а я попробую забить гвоздями. Если ты не сможешь выбраться, и Худуйчик не сможет выйти, – заявил.

Эмеген забрался в сундук. Худуйчик хорошенько забил гвоздями, основательно запер и:

– Теперь попробуй-ка, если сможешь выйти! – сказал.

На четыре стороны повернувшись, замахнувшись, бить пробовал эмеген, не смог выбраться.

– Не могу выйти, крепкий, – сказал эмеген.

– Коли не можешь выйти, Худуйчик – это я, если сможешь что-то сделать! – сказал и Худуйчик.

Сундук переворачивая, и эмеген вопя, к царю доставил.

Царь, спустившись со своего трона: «Обманывает или правду говорит?» – думая, как только начал открывать крышку сундука, Худуйчик, взяв своих семерых сыновей, забрался на трон, лесенки его изнутри были.

Едва царь открыл крышку, эмеген его убил, еще и нескольких его людей убил, а еще несколько убежали.

Когда увидел Худуйчика наверху трона:

– Меня тоже туда поднял бы! – попросил эмеген.



– Давай, подниму, – сказав, сверху веревку скинув, вытягивая, когда почти добрался до верха, отпустив веревку, свалив, одну его голову отбил.
– Почему так сделал? Подними! – говоря, еще раз попросил.
– Тяжелым был и, будучи не в силах поднять, отпустил, – ответив, снова сбросил веревку.

Поднимая, снова отпустил. Еще одна голова отпала.

Таким образом, четыре головы эмегена отбил. Когда осталась одна голова:

– Теперь легоньким стал, подниму! – сказав, обманул.

И эмегена убив, сам вместо царя занял престол.

*Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 17.
Записал Х.И. Суюнчев 16.04.1965 г. в а. Каменноост Карачаевского
района КЧАО от 69-летней Алакаевой Зайнеб Саралыбовны.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Сказку слышала от Куижетерова Заурбека Аубекировича.

Волшебная сказка о злом царе, умном бедняке и глупом эмегене.

ИШ КЁЛЛЮ ЖАШ

Жюже бий жашына кьатын алыргъа эрттеден кьаст эте эди. Жашын кьыз кёре жиберир ючюн а, бир иги нёгер керек болгъанды. Аллай нёгер жаш излей, Жюже эл сайын барып айланнганды. Алай айлана келип, бир уллу базаргъа киреди. Ол базарда Жюжени кёзю бир жаш адамгъа илинеди.

– Ай, ахшы улан, сен манга жалчыгъа келмезми эдинг?

– Ол а кьаллай иш берлигинге кёре болур, – деди жаш адам.

– Артыкъ кьыйын иш берлик тьююлме, – деди Жюже.

– Хакъы уа кьалай боллукъду?

– Бек ыразы этерикме.

– Жарашайыкъ: этдирлик ишинги да белгили эт, берлик хакъынгы да туура эт, – деп тохтады жаш.

– Мени бир жангыз жашым барды, – деп башлады хапарын Жюже. – Ол артыкъ ариу ишленнген жаш тьююлдю. Хар нени да хазырын таба юйреннгенди да, кеси акъылы бла жукъ мажаралмайды. Энди мен аны юйдегили этсем сюерик эдим. Алай аны бир кьыз бла танышдырыр ючюн, жашыма бир ахшы нёгер керекди. Мен сени, ахшы улан, ма ол мурат бла жалчы этеме. Хакъынга – бир кьунажин берирме, ишни тынгылы этип, кёлюме жеталсанг а, юсюне бир зат кьошаргъа да болурма.

– Келишдик! Мен хазырма, – деп, жаш да, бий да кьол тутушдула.

Бий, базардан бир харбыз бла бир сау ётмек алып, артмакъларына салды да, экиси да аны юйюне тебиредиле.

Жете келгенлей, бий жалчыны бар тамамлар иши бла да шагъырей этди. Минер атларын, аланы иер-жюгенлерин кёргюзтдю. Жол азыкъларын кьолуна тутурду. Ол базардан алгъан ётмегин, харбызын да жалчыгъа берди.

– Энди тамбла сиз жолгъа атланырыкъсыз. Элден танг кьарангысы бла чыгъаргъа керексиз. Аны ючюн а, атыгъызны, кесигизни да иги тынгылы хазырлагъыз! – деп, Жюже бий кетип кьалды.

Бий алайдан ташайгъанлай, жалчы бла жаш, олтуруп, ётмекни, харбызны да ашадыла. Сора жумушакъ тёшекледе хурулдап жукъладыла.

Тынгысыз бий, жашланы не эте тургъанларын сынчылай, бир-эки кере да келеди, алай жашланы, кьатыдан-кьаты жукълай баргъан болмаса, уяныр халларын эслемеди.

Кюн кьушлукъгъа келгенде, жашла кериле-созула башладыла. Кёзлерин ууа, эсней келип, жашла жолоучу боллукъларын сагъына тебиредиле. Ол кезиуде бий быланы юслерине кирип келди да, жалчыгъа:

– Ахшы улан, жолгъа кьачан чыгъар умутунг барды? – деп сорду.

– Да алыкъа кечми болгъанды? Бусагъат кетебиз.

– Сен бир жары да бараллыкъ тьююлсе, хакъынгы ал да, арбазымдан думп бол, – деди.

Экинчи жалчысы да ол халлы этди да, бий аны да кьыстады.

Ахшы жалчы излей, Жюже, андан ары да айлана кетип, бир уллу элге келди. Кьышны бек сууукъ кезиую. Тёгерекни бузкъаудан, туман басып, орамла учхалауукъ, кьымылдап кьарыу жокъду. Элде уа уллу той барады, халкъ тёгерекден басынып кьарайды. Бюгюн бери келмеген хазна адам кьалгъан болмаз.



Тюз ол той этилген жерден узакъ болмай а, бир бахча ичинде, эки ёгюзню сакълап, бир жаш сюеле эди.

– Салам алейкум! – деп, Жюже анга салам берди.

– Алейкум салам! – деди жаш да.

– Алан, сен бу уллу тойгъа нек бармайса?

– Мен тойгъа кетсем, бу бузкъаудан кюн ёгюзлерим учуп жыгъылсала, манга тойдан не хайыр келликди?

– Сен манга жалчы болмазмы эдинг? – деп сорду бий.

– Хакъын жаратсам, жалчы болургъа угъайым жокъду, – деди жаш.

Этер ишин да айтып, хакъына да жарашып, бий бу жашны, биргесине алып, юйюне келтирди. Сора, этиучюсюча, харбызны бла ётмекни хант къангагъа салып кетди.

Жалчы, эки женгин да жингирикге дери артха къайырып, шапалыкъ этип башлады. Харбызны, кесип, ич жумушагъын башха табакъгъа салды. Ётмекни да кесип, ич жумушагъын айырып, харбызны ич жумушагъы болгъан табакъгъа салды. Сора ол табакъны, кётюрюп барып, бийни аллына салды.

– Биз, жашла, къыйыр къатыларын ашасакъ да, жетер. Уллу адам тишден да хазна болмайды, сен жумушагъын аша, – деди.

Эрттенликде бий: «Жашла не эте тура эселе да, бир къарайым», – деп келгенинде, жалчы, эки атны да ариу жуууп, иерлерине жау сюртюп, жым-жым жылтыратып тура эди.

Танг тюрюнден жарыгъынчы, жалчы хар затны да хазыр этди. Жашла, атланып, жолгъа чыкъгъанда, бий:

– Не да болсун, уллу агъачда кече къалмагъыз, – деп юйретди.

– Бек ахшы, – деди жашла.

Алай бла узакъ жолоучулукъ башланды. Эки атлы, баралгъанлары къадар бара кетип, бир уллу агъачха жетдиле. Агъачдан чыкъгъынчы, бек кеч болду. Бийни жашы артха къала башлады, жалчы нёгерин, не кюрешди эсе да, артыкъ атлаталмады. Жолоучула бир кенг талагъа жетгенлей, бий улу:

– Былайда жатабыз, – деди.

– Жюже бийни уллу агъачда кече къалмагъыз дегени уа? – деди жалчы.

– Ол анда жаншай турады, мен мындан ары бараллыкъ тюрюлме, – деп тохтады бий улу.

Бий жаш айтханны этмей, жалчы не этерик эди? Талада атланы кишенледи, кырдык жыртып, мулжар этди. Бийни жатдырып, кеси уа отунчукъла жыйды. Къургъакъ отунладан отчукъ тиргизип, анга чоюнчукъну асды. Сора шауданнга суу алыргъа кетди. Къайтып келсе, бир уллу эмеген, чоюнчукъну да бир жанына сызып, отчукъну да аякълары бла малтап, кете тебирегенин кёрдю. Жалчы, эмегеннге ачыуланып, аны ызындан болады. Эмеген, бара кетип, бир уллу журтха жетеди. Ол журтну жашау юйлерини арбазлары тёртгюл буруу бла бегитилип эдиле. Ол тёртгюл арбазны тёрт мюйюшонде тёрт чыракъ жана эди.

Эмеген, къабакъ эшикден ары киргенлей, хахай этип, арбазгъа битеу эмегенлени жыйды. Сора:

– Бизни жерибизни жийиргенчли адамла малтап, кир-кипчик эте турадыла. Ала, от салып, жерибизни кюдюрюрге боллукъдула. Жюрюгюз, аланы жерибизден къурутуп келейик! – деп къычырды.



Эмегенле, тишлерин кыжыратып, «душманланы» жокъ этерге кыураладыла, бир бири ызындан тизиледиле.

Бек алгъа жангызбаш эмеген сюеледи, аны ызындан экибаш, юч-баш, тёртбаш, эм ахырында уа тогъуз башлы эмеген сюеледи.

Эмегенле тизиле тургунчу, бийни жалчысы эмегенлени кыбакъ эшиклерини аллында терен уру кызады. Жалчы жаш уруну асыры терен кыазгандан, кеси аллына андан чыгъалмайды. Ол да кылай этерге билмей тургъанлай, эмегенлени алларында келгени уругъа ташайды. Жалчы, секирип, аны инбашына минди, ол да алай тургъанлай, уругъа экинчи эмеген жыгъылды. Жалчы, секирип, экинчи эмегенни инбашына минди. Алай эте, ол урудан чартлап чыкъды. Сора эмегенлени урудан башын кыаратханын ёлтюре барады. Кюреше кетип, эмегенлени барын да кырып, кыошчугъуна кыайтып келгенде, бий хурулдап жукълай эди. Ол, эмеген да кёрмей, хата-хайыр да сезмей, хар затны да тургъаныча тургъан суна эди.

Жалчы от да тиргизди, аш да этди, бийни да уятып, аллына ушхууур салды.

Энди жолоучула, жатып, ырахат тынчайдыла. Танг атханлай, жалчы секирип кыопду да, аш жылытып, атланы жерлерин салып, жолгъа хазырлады. Бий улу уа хазыргъа кесин кыошду.

Ашап-ичип, атланып кете бардыла да, бир элге жетдиле. Былайда бир ариу кызыны кёрюп, бек жаратдыла. Ол кызы бир бай кишини кызы эди. Ол бай юйге жолоучула кыонакъ болуп тыошдюле. Кыонакъбай бек жарыкъ болуп кыонакъ алды. Ол, элни жашын-кызын жыйып, уллу той этди. Кыонакъла келген жумушларын айтханда, кыонакъбай:

– Киеулюкге биз, кесибиз сыйгенча, тёше-мёше жатар жер этип жатдырайыкъ. Ол иги татлы жукълагъан кезиуде тилеген кызыгызы жаш жатхан отоугъа кирип, жашыгызы олсагъатда уянса, кызы – сизниди; уяналмаса уа – жашны башын кесербиз, – деди.

Жалчы ол оноугъа:

– Бир жолгъа сынау бла иш битерге жарамаз. Юч кере сынамай, жарарыкъ тыююлдю, – деп кыошду.

Кыонакъбай анга угъай демеди.

Алай бла юч кечени сынау бардырыгъа тохташдырдыла.

Биринчи кече жашны жумушакъ кыуу тёшекке жатдырдыла. Ол кыаты тёшекде да уяналмаучу эди, жумушакъ тёшекде уа кыайдан уяналлыкъ эди. Жаш энди татлы жукълагъан болур деген заманда отоугъа байны кызы кирип келди. Отоуда ары-бери да айланды, жаш уянмады. Сора кызы чыгып кетди да, терек бахчадан эки чий алма юзюп келип, жашны хуржунуна салып: «Сен, харип, ма была кибик, чий адамса», – деп кетди.

Экинчи кюн жалчы бийге урушду:

– Сен не тукъум адамса, алай жукълап турсанг, сени башынгы кесериклерин нек унутаса?

– Ант этеме, кёз кысмагъанма. Мен жатхан отоугъа чибин да кирмегенди, – деди бий улу.

– Была уа недиле? – деп, жалчы аны хуржунундан чий алмаланы чыгъарып кёргюзтдю.

Экинчи кече да жетди. Биягыча, жумушакъ жер этип, бий улуну жатдырдыла. Ол татлы жукъуда болгъан кезиуде байны кызы отоугъа



кирип келди. Алгъын кечесиндеча, тегерек айланды, алай жаш уянмады. Чыгып кетип, терек бахчадан эки чий алманы алып келди да, жашны жан хуржунларындан бирине салып: «Сен, харип, ма былача, чий адамса», – деп, чыгып кетди.

Жалчы, биягъыча, бийине къаты урушду. Ол а, ант этип, кёкге чыкъды, жерге тюшдю:

– Бюгече, – деди, – арталлыда кёз къысмагъанма.

– Да алай эсе, была уа не затладыла? – деп, жалчы бий улуну жан хуржунларындан чий алмаланы чыгъарды.

– Энди бир келсин, мен аны чийин кёзюне кёргюзтюрме! – деди бийни жашы.

Жалчыны башын къайгъы басды. «Энди муну ёлтюртюр, элге не айтып къайтайым?» Болсада жалчы амал тапды. Ол, жашны тырнаклары кесген сылтау бла, бир бармагъын бичакъ бла иги кесди да, аны жарасын а туз бла байлады, жаш, жияй-улуй кетип, кече ортасына кючден къалкъыды. Ол къалкъыгъанлай, жалчы ол кесилген бармакъны узун чарх халы бла къаты къысды. Халыны къыйырын а, терезе бла чыгъарып, юйден тышында кеси тутуп тохтады. Кёп да бармай, байны къызы отоугъа кирип келди. Олсагъатдан жалчы жаш халыны хыны тартды, жарасы ачып, бий улу да секирип къопду. Алай бла къонакъла къыз къоллу болдула.

Эрттенликде байны жууукълары, жыйылып:

– Келтир, жашны башын кесебиз, – деп сюелдиле.

Жалчы уа, жашны келтирер орунуна, къызны жаулугъун чыгъарып келди.

– Энди къыз сизниди, – деп, бай той-оюн этип башлады.

Адетде болгъаныча, той этип бошагъанлай, къонакъла ызларына къайтыргъа тебиредиле. Бай арбалагъа хапчук-харекет да жүклек, нёгерле да къурап, къызын ашыртады. Жалчы уа дагъыда бир төрт-беш къуру арба тиледи.

– Мени жолда ырысхым къалгъанды, аны жүклей кетерик эдим, – деди.

Бай беш арба да, аланы жүрютюрге адамла да берди.

Жолда жалчы ол эмегенле жашагъан журтха къайтды, ол уллу арбазда харекет-хабур дегенинг толу эди. Ма ол ырысхыны беш ёгюз арбагъа жүклек, жалчы жол нёгерлерини ызларындан жетди.

Келинни, ырысхыны да жалчы бийни юйюне алып келди. Бий, анга асыры ыразыдан:

– Алгъын бир жашым бар эди эсе, энди эки жашым болду, – деп къууана эди.

Сора, жалчысыны хакъын да толу берип, келген ырысхыны да эки тенг этди. Ол кюнден башлап, бий жалчыны кеси жашынча кёрюп жүрюдю.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 341–345 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Иш кёллю жаш» деген юйюр-жашау-турмуш жомакъда адамны адет-къылыгъында иш кёллюлюгюн бла чынтты шүёхлукъ жүрютте билиуну сыйы кётюрюледи. Аланы хайырындан байны жашы юйдегили болургъа

жол табады. Ол ишде байны жумушчусу да болушады. Андан сора, ала мюлк кьоллу да боладыла.

Битеу ол шартла чыгьарманы жашау-турмуш жомакълагъа ушатсалада, анда бир кьауум болумла, эмегенлени кьатышханлары да аны сейир-тамаша жомакъланы санына кьошдурадыла.

ТРУДОЛЮБИВЫЙ ПАРЕНЬ

Бий Жюже давно и по-настоящему хотел женить сына. Чтобы сына отправить на смотрины к девушке, ему нужен был хороший напарник. Разыскивая такого человека, Жюже побывал в каждом селе. В результате странствий он пришел на большой базар. На том базаре взгляд Жюже привлек один молодой человек.

– Эй, добрый молодец, ты не пошел бы ко мне в батраки?

– А это будет зависеть от того, какую работу ты мне предложишь, – ответил молодой человек.

– Сильно тяжелую работу я тебе не предложу, – сказал Жюже.

– А оплата какая будет?

– Будешь очень доволен.

– Договоримся: что я должен делать, разъясни, и сколько будешь платить, раскрой, – начал молодой человек.

– У меня есть единственный сын, – начал свой рассказ Жюже. – Он, парень, не совсем правильно воспитан. Он привык пользоваться всем готовым, поэтому своим умом ничего не может делать. Теперь я его очень хочу женить. Однако, чтобы его знакомить с какой-нибудь девушкой, моему сыну нужен очень хороший приятель. Я тебя, добрый молодец, по этому поводу беру к себе в батраки. Вместо оплаты – дам одну кунажин*, если дело доведешь до конца, и я буду доволен, сверху добавлю еще что-нибудь.

– Договорились! Я готов, – сказал молодой человек и они ударили по рукам с бием**.

Бий купил на базаре один арбуз и буханку хлеба, положил их в переметную суму и они вдвоем направились к нему домой.

Когда они приближались, бий ознакомил батрака со всеми делами, которые он должен выполнять. Показал коней, на которых они должны садиться, их седла, уздечки. Дорожную еду вручил им в руки. То, что он купил на базаре хлеб, арбуз дал батраку.

– Теперь вы завтра отправитесь в дорогу. Из села вы должны выехать засветло. Поэтому коней и себя подготовьте основательно! – сказал Жюже бий и ушел в сторону.

Когда бий скрылся из виду, батрак и молодой человек сели и поели хлеб с арбузом. После этого они уснули на мягких матрасах.

Беспокойный бий, выслеживая, чем занимаются юноши, приходил туда раза-два, однако, эти молодые люди засыпали все крепче и крепче. Не было видно, что они в скором времени проснутся.

* Кунажин – трехгодовалая нетель.

** Бий – князь.



Когда солнце поднялось высоко, молодые люди начали шевелиться, потягиваться. Протирая глаза, иногда зевая, ребята заговорили о том, что они должны отправиться в дорогу. В это время бий пришел прямо туда, где они находились:

– Добрый молодец, когда ты собираешься отправляться в дорогу? – спросил он слугу.

– Да, разве мы припозднились? Сейчас отправляемся.

– Ты не в состоянии куда-либо отправиться, возьми свою плату и убирайся из моего двора, – сказал он.

Второй слуга поступил также, поэтому бий его тоже прогнал.

Разыскивая порядочного слугу, Жюже и дальше продолжил свой путь и пришел в большое село. Была очень холодная пора зимы. Все вокруг схвачено гололедицей, окутано туманом, улицы были скользкие, поэтому невозможно было двигаться нормально. А в селе идет большой той*, и народ, собравшись кругом, толпой смотрит на это. Не было, наверное, сегодня человека, который бы сюда не пришел.

Прямо от того места, где проводился той, внутри какого-то огорода, охраняя двух быков, стоял один молодой человек.

– Салам алейкум**! – сказал Жюже и поздоровался с ним.

– Алейкум салам***! – ответил и молодой человек.

– Алан****, почему ты не сходишь на этот большой той?

– Если в такой день гололедицы я пойду на той и мои быки поскользнувшись, упадут, какой толк мне будет от такого тоя.

– Ты бы не хотел быть у меня слугой? – спросил у него бий.

– Если оплата меня устроит, то я не против быть слугой, – сказал молодой человек.

Объяснив ему, какую работу он должен выполнять, договорившись об оплате, бий, взяв с собой этого юношу, привел его к себе домой. После этого, как обычно, он положил на стол арбуз с хлебом и ушел.

Слуга, засучив рукава до локтей, начал выполнять работу шапы*****. Разрезав арбуз, он мякоть положил на отдельную посуду. Потом, подняв эту чашу, понес и поставил перед бием.

– Нам, молодым ребятам, достаточно, если будем есть твердые корочки хлеба. У взрослых людей с зубами не всегда ладно, вы ешьте мякоть, – сказал он.

На рассвете, когда бий, решив: «Погляжу, чем занимаются молодые люди», – пришел к ним, то увидел, как слуга уже чисто искупал обоих коней, седла обмазал маслом так, что они сильно блестели.

Еще утро не осветило всю округу, а слуга все дела уже привел в порядок. Молодые ребята, собравшись, когда вышли на дорогу, бий:

– Что бы не было, в большом лесу не оставайтесь на ночлег, – научил он их напоследок.

* Той – свадьба, празднество.

** Салам алейкум – здравствуйте.

*** Алейкум салам – ответ на приветствие.

**** Алан – обращение, означает «соплеменник».

***** Шапа – повар; кашевар; прислужник.

– Очень хорошо, – ответили ему ребята.

Таким образом, началась длинная дорога. Двое всадников шли столько, сколько могли и добрались до большого леса. Пока они вышли из леса, стало очень поздно. Сын бия стал от него отставать, слуга, сколько бы не старался, не смог сильно вперед продвинуть приятеля. Когда путники дошли до широкой поляны, сын бия:

– Вот здесь приляжем, – сказал.

– А то, что Жюже бий говорил, что ночью в большом лесу не надо ночевать? – спросил слуга.

– Он там болтает, я дальше не могу продвигаться, – настаивал сын бия.

Как мог бы слуга не подчиниться воле сына бия? На поляне он стреножил лошадей, собрав траву, сделал подстилку. Уложив бия, сам начал собирать дровишки. Из сухих дров зажег костер и над ним повесил котелок. После этого пошел к реке за водой. Когда он вернулся, то увидел, как один огромный эмеген*, выбросив в сторону котелок, растоптав дровишки ногами, быстро начал уходить. Слуга, разозлившись на эмегена, отправился за ним. Странствуя, эмеген приходит в огромное селение. В том селе, где люди жили в домах, дворы были огорожены квадратными заборами. В том дворе в четырех углах горели четыре светильника.

Эмеген, издавая крики, вошел через ворота внутрь и созвал туда всех эмегенов. После:

– Наши земли топчут паршивые люди и разводят много грязи. Они, разжигая костер, могут сжечь нашу землю. Пойдемте, уничтожим их из нашей земли! – прокричал он.

Эмегены, скрежеща зубами, подготовились уничтожить своих «врагов», и встали в ряд друг за другом.

Самым первым встает одноголовый эмеген, за ним двуглавый, трехглавый, четырехглавый, а в самом конце становится девятиглавый эмеген.

Пока эмегены выстраивались, слуга бия выкапывает перед воротами эмегенов глубокую яму. Он такую глубокую яму выкопал, что сам уже не мог оттуда выкарабкаться. Находясь там, он не знал, что делать и тот, который шел впереди эмегенов, провалился в эту же яму. Слуга, прыгнув, залез на его плечо, пока он находился в таком положении, в яму упал второй эмеген. Слуга, прыгнув, залез на плечо второго эмегена. Прodelывая так, он из ямы выбрался. После этого, кто из эмегенов из ямы показывал голову, он тут же их убивал. В такой борьбе он, истребив всех эмегенов, когда вернулся в свой маленький кош**, бий спал, прихрапывая. Он, не видел ни эмегенов, не чувствовал ни горя, ни страха, думал, что все стоит на месте, как было.

Слуга развел огонь, приготовил еду, разбудил бия, положил перед ним еду.

Теперь путники легли и начали спокойно засыпать. Когда наступило утро, слуга резко встал, подогрел пищу, оседлал коней, подготовил их в дорогу. А сын бия присоединился ко всему готовому.

Когда они поели-попили, отправившись в дорогу, вскоре пришли в одно селение. Здесь они увидели одну красивую девушку, и она им

* Эмеген – чудовище, циклоп, великан [6, 1070]. Встречается также в карачаево-балкарском нартском эпосе.

** Кош – стойбище.



сильно понравилась. Эта девушка приходилась дочерью одному богатому мужчине. В этом богатом доме хозяин путников принял с радостью, и они стали дорогими гостями. В селе он собрал всех парней и девушек и устроил большой той. Когда гости рассказали, зачем прибыли, хозяин дома:

– Мы будущему зятю, по-нашему желанию, постелем мягкую постель и уложим. В то время, когда он будет сладко, крепко спать, девушка, которую вы сватаете, зайдет в его комнату. Если тогда ваш молодой человек проснется, то девушка – ваша, а если не проснется – мы отрубим молодому человеку голову, – сказал он.

Слуга на это решение:

– Одним испытанием нельзя, наверное, завершить дело. Обязательно надо три раза испытать, – добавил он.

Хозяин дома не стал перечить этому.

Таким образом, решили, что три ночи будут проводить с ним испытания.

В первую ночь юношу уложили на мягкую, пушистую постель. Он и в жесткой постели не мог просыпаться, а в мягкой постели как бы он проснулся! В то время, когда решили, что теперь молодой человек сладко спит, в гостевую комнату вошла дочь богача. Она походила в комнате туда-сюда, но юноша не проснулся. Тогда девушка вышла оттуда, и в саду сорвав два неспелых яблока, вернулась, засунула в карман юноше: «Ты, бедняжка, вот как они, не созревший человек», – сказала она и ушла.

На второй день слуга отругал бия:

– Что ты за человек, если так будешь спать, твою голову отрубят, почему ты об этом забываешь?

– Я даю клятву, что не спал. В комнату, где я лежал, даже муха не залетела, – ответил сын бия.

– А это что? – сказал слуга и, вытащив из его кармана неспелые яблоки, показал ему.

Наступила вторая ночь. По-прежнему, постелили мягкую постель и уложили сына бия. В то время, когда он спал сладким сном, дочь богача вошла в его комнату как в прошлую ночь, покружилась кругом, но юноша не проснулся. Она оттуда вышла, и в саду взяв два неспелых яблока, пришла обратно и вложила их в один из внутренних карманов: «Ты, бедняжка, вот как они, не созревший человек», – сказала она и ушла оттуда.

Слуга, как и прежде, сильно отругал своего бия. А он, так сильно клялся, что своими клятвами поднялся на небо, опустился на землю:

– Сегодня ночью, – сказал он, – я ни разу глаз не сомкнул.

– Да, если все так, а это что? – спросил слуга, и вытащил из карманов сына бия неспелые яблоки.

– Пусть еще раз попробует прийти, я ей покажу, что такое неспелое! – сказал сын бия.

Голову слуги одолели тревожные мысли. «Дав возможность его убить, как я после этого смогу вернуться в село?» Однако слуга нашел выход. Он под предлогом, что хочет постричь его ногти, один палец ножом сильно порезал, а его рану обмотал солью, а юноша, издавая крики, вопли, посредине ночи с трудом заснул. Как только он заснул, слуга к его порезанному пальцу привязал длинную нитку. А конец нитки вытащил через окно, и снаружи дома крепко держал сам. Вскоре дочь богача вошла

в гостевую комнату. И тут же молодой человек – слуга резко потянул нитку, и тут из-за раны ему стало так больно, что он быстро вскочил. Таким способом гости заполучили девушку.

Утром родственники богача, собравшись:

– Веди, парню сейчас голову отрубим, – стали они настаивать.

А слуга, вместо того, чтобы привести парня, оттуда вынес платок девушки.

– Теперь девушка ваша, – сказал богач и начал проводить веселье, игры.

Как традиционно принято, когда завершился той, гости засобирались ехать обратно. Богач погрузил на брички много богатства, имущества, подготовил сопровождающих и отправил свою дочь. А слуга попросил еще четыре-пять пустых бричек.

– У меня по дороге осталось много имущества, я должен их тоже погрузить, – сказал он.

Богач ему выделил пять бричек, и чтобы их вести, дал людей.

По дороге слуга вернулся в селение, где жили эмегены, в том большом дворе полно было дорогих вещей. Вот это имущество погрузив на пять бричек, слуга догнал своих дорожных попутчиков.

И невесту, и богатство слуга привез в дом к бию. Бий настолько был им доволен:

– Если раньше был у меня один сын, теперь их стало двое, – сказал он с радостью.

После этого он оплатил работу своего слуги сполна, и все привезенное богатство поделили поровну на две части. Начиная с того дня, бий своего слугу воспринимал как своего сына.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 341–345) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В сказке «Трудолюбивый парень» среди наиболее важных морально-этических ценностей выделяются трудолюбие и способность дружить по-настоящему. Именно благодаря этим двум качествам сыну богача и его слуге удалось завоевать желанную невесту, а также добыть сокровища. Все это сближает произведение с бытовыми сказками, однако некоторые обстоятельства и участие в событиях эмегенов позволяют причислить его к волшебным сказкам.



ЭТГЕН АХШЫЛЫГЪЫНГ КЪАЙТЫР

Эртте-эртте бир элде бир къарт киши жангыз жашы бла жашап болгъанды. Ол къарт киши кеси ёмюрюнде кёп къыйынлыкъ кёргенди, алай кёрген къыйынлыкъларын унутурча къыйынлыгъ'а, къатыны ёлюп, бу кюнлеге жетгенде сынагъанды. Бир жанындан жарлылыкъ басып, экинчи жанындан къатыны болмай, юй къыйынлыкъ да анга къарагъаны себепли, башын суугъа атарыкъ болгъан эди.

Сора ол, олтуруп, кёп сагъыш этип, жашына къатын алыргъа оноу этди. Алай олтуруп, мудах болуп тургъанлай, жашы юйге кирип келди. Жашы, атасыны мудахлыгъын кёрюп:

– Атам, нек мудахса? – деп сорду.

– Жашым, мен мудах тюйюлме. Мени акъылыма санга къатын алыргъа туюшуп, аны сагъышын этеме, – деди атасы.

– Да, атам, биз жарлыбыз. Манга ким келликди? Жарлыны киши кёрюп болмайды. Бусагъатда тели да бол, бай эсенг, биринчисе. Бизни къызларыбыз эсирикдиле, ала манга сёлеширге да унамайдыла. Сёлешселе да: «Жыртыкъ», – деп къоядыла, – деди.

– Къоркъма, жашым, жарлы эсек да: «Кимни – аллы, кимни – арты», – дейдиле. Келир заманда санга адамла сукъланырла. Сен, мени айтханымы эт да, барып бир жёнгер алып кел, – деп, жашны элге жибергенди.

Жаш, атасына ыразы болуп, кёп айланды, кёп жүрюдю. Алай анга жёнгерге барыргъа киши унамады. Мудах болуп, къайтып келе тургъанлай, кесича элде жарлылыкъдан къутулмагъан Харун чыкъгъан эди аллына.

– Жол болсун, Харун. Не айланаса? – деп, жаш аны аллын тыйды.

– Сау бол, жол Аллах берсин! Юйге кетип барама! – деди Харун.

– Кел, Харун бизге, бир кесек олтурайыкъ, эрикгенибиз да кетер, – деп, жаш Харунну юйюне келтирди.

Къарт киши, Харунну кёргенде, бек жарыкъ болуп, юйге кийирип, от башына олтуртду. Кёп ушакъ этдиле, жарлылыкъларын да санадыла бир бирге. Жашны атасы ушакъ этип бошагъандан сора, келтирип, тепсиге бир харбузну эм ётмек салып:

– Кел, Харун, туура харбузну, ётмекни, ашайыкъ, – деди.

Харун кёп сагъыш этмей, бичакъны алып, харбузны эм ётмекни туурап столгъа жайды.

Бары да олтурдула, ашап бошадыла. Сора къарт киши, жашын бир жанына чакъырып:

– Жашым, бу санга жёнгер туююлдю. Бар башха адам тап, – деп жиберди.

«Энди мен кимни табайым?» – деп, сагъыш этип, айлана тургъанлай, Хамит деген тенги чыкъды аллына.

– Жол болсун, Хамит! Кел бизге, бир кесек олтурайыкъ, эрикгенибиз да кетер, – деди.

– Сау бол. Жол Аллах берсин! Барайыкъ, бек ыразыма, – деп тебиреди.

Жаш, Хамитни да алып, юйюне келди. Къарт киши Хамитни кёргенде, жарыкъ болуп, от башына олтуртхан эди. Кёп ушакъ этип, жарлылыкъланы айтып бошагъандан сора, къарт киши туруп, столгъа харбуз бла ётмек салгъан эди. Ол заманда Хамитге къарт:

– Ма бичакъны, жаш тьююлмюсе, туура харбузны эм ётмекни, бир иги ашайыкъ, – деп, бичакъны анга берди.

Хамит, секирип къобуп, бичакъны алып, къарап къарагъынчы харбузны столгъа жайды. Бары да олтуруп, ашадыла.

Ашап бошгъандан сора, къарт киши жашын бир жанына алып:

– Жашым, бу санга жёнгерлик эталлыкъ тьююлдю, бир башха адам табып кел, – деп жиберген эди.

Жаш атасына уллу ыразы болмады, алай не этерик эди. Жёнгер табаргъа керек болгъаны себепли: «Кимни табайым», – деп, излерге кетди.

Кёп жюрюдю, кёп айланды, алай уллу элде адам тапмады. Сора къайры барыргъа билмей, башы сагъышха кетип, бара-барып уллу къабырлагъа жетди. Къабырлагъа къарагъанында, эки адам бир къабырны къаза тургъанларын кёрген эди. Жаш ол эки адамны къатына барып:

– Аланла, неди сизни бу этгенигиз, – деп соргъан эди.

– Сау заманында бизге онбеш сом берлик эди, бермей, ёлюп кетгенди да, энди уа къабырын къазып, кебинлигин аллыкъбыз, – деп, бири жууап берген эди.

Къартны жашы алагъа къутургъан да этип, жыйырма сом да берип эм къабырны топурагъын ызына къуюп, кетген эди. Кюнлюм деген элчикде кёп айланып, адам тапмай, къайтып келе, суу боюнунда акъ кийими бла юсюнде бир жашха тюбеди.

– Салам алейкум, ахшы улан, – деп саламлашды.

– Алейкум салам! Не айланаса, не жюрюйсе, башынгы энгишге* бошлап? – деп сорду акъ кийимли жаш.

– Да не этейим, сагъыш этмей? Манга жортууулгъа чыгъаргъа жёнгер керек эди, излейме да, тапмайма. Сен келмезмисе мени бла? – деп сорду жаш.

– Айхай барырма, – деп, акъ кийимли жаш аны бла тебиреди.

Экиси да юйге келдиле. Къарт киши акъ кийимлини, къолун тутуп, ариу кёрюп, от башына ётдюрюп, олтуртду.

Къарт киши кёп хапарында жортууулгъа чыгъарыкълары да, къалай жюрюрюклерин да айтып, ангылатхан эди. Ол заманда акъ кийимли секирип, къобуп:

– Атам, Акъды мени атым, сизге жалчыгъа берилгенди жаным. Мен хазырма, – деп тохтады.

– Да, алай эсе, багъалы Акъ, олтуругъуз тепси жанына. Туурагъыз харбузны бла ётмекни, ашайыкъ да, сора жортууулгъа чыгъыгъыз, – деп, къарт барысын да олтуртду.

Акъ, секирип къобуп, бичакъны да алып, харбузны туурады.

– Атам, сен къартса, жумушагъын аша, – деп, харбузны ичин эм ётмекни ич жумушагъын къартны аллына салгъан эди.

Ала ашап бошагъандан сора, къарт киши жашланы жортууулгъа хазырлай башлады. Жашла атлагъа минерге башлагъан заманда, къарт жашлагъа къаты айтхан эди:

– Не да болсун, кеч болуп, уллу ёзенде къалырсыз, – деп.

Жашла жортууулгъа чыгып, кёп жюрюдюле, кёп айландыла. Кеч бола башлагъанда бир уллу ёзеннге чыкъдыла.

* Энишге.

Къартны жашы, атдан секирип тюшюп:

– Бюгече бу ариу ёзенде къалмай амалыбыз жокъду, – деп тохтады.

Акъ ыразы болмады.

– Эй, ахшы улан, сени атанг не айтхан эди, эсинге тюшюрчю. Ол бир зат билмей айтмагъанды, мин атха, – деп, тохтагъан эди.

Алай болса да, жашны женгалмады. Атланы да бошлап, от этип, ашларын жылытып, ашап бошагъанлай окъуна, къартны жашы терен жукъугъа кирген эди. Акъ, къарт кишини айтханын эсине тюшюрюп, садагъын да алып, от жанында олтуруп тургъанлай, къычырыгъы бла дуняны къалтыратып, къаяланы зынгырдатып, бир зат жетди. Акъ секирип къобуп къарагъанында, мангылайында жангыз кёзю бла, ол да дуняны жарытып, бир эмегенни келгенин кёрген эди.

Эмеген, атын тыйып:

– Ой, итден-эшекден туугъанла, ким бергенди сизге эркинлик мени жеримде от этип, ат бошлап турургъа, – деп къычырды.

Акъ, эмегенни къызып келгенин кёрюп:

– Эй эмеген, къанынгы сууут, суууталмай эсенг а, атышайыкъ уллу ёзенде, – деди.

Эмеген атдан да тюшмей:

– Мен сизни анагъыз танымазлыкъ этейим, бирем къабын боллукъсуз да. Атышханмы, тутушханмы этебиз? – деп сорду.

– Ай хомух, быллай уллу ёзенде тутушхан къатынла этедиле. Андан эсе атышайыкъ, къызып да келгенсе, сен биринчи болуп ат, – деп тохтады Акъ.

Эмеген садагъын алып атды, болсада окъ Акъны къулакъ жаны бла озду. Акъ садагъын алып:

– Сени бюгече былайгъа ажалынг къутуртуп келтиргенди, энди мен да бир атайым, – деп, садагъын атды.

Дуня къарангы болду. Эмеген, ачы къычырыкъ этип, келген жолу бла артха къачхан эди. Акъ, кёп мычмай, атына минип, эмегенни ызындан болду. Бир заманда Акъ бир уллу дорбуннга келип къарагъанда, эмеген ёлюп тура эди. Акъ, эмегенни жанындан жети ачхычны чыгъарып, дорбунну эшиклерин ачып башлады. Дорбунну ичинде жети отоу бар эди да, жетиси да ырысхыдан, алтындан топпа толу, алагъа барына да Акъ ие болуп, артына къайтды.

Артха къайтып келгенинде, къартны жашы жукълап тура эди. Акъ, от жанында чёгюп, жукъламай, тангын атдыргъан эди. Танг атып, кюн тийгенлей, къартны жашы да уянды.

– Мени атам не биледи, харбузны ичин, ётмекни жумушагъын ашагъандан сора? Не болду бизге? Мен бюгечеден бек бир заманда да жукъламагъанма, – деп, жанына олтурду.

Акъ, жукъ айтмай, жашны аллына жылыннган аш салып, экиси да ашадыла. Ашап бошагъанлай, атларына минип, жолларына кетген эдиле.

Азмы-кёпмю жюрюдюле, бир уллу элге келдиле, кюн батып, кеч болуп.

Ол кече элни къыйырында бир жарлы юйде къонакъда къалдыла.

Эрттенбла Акъ юйню иеси къарт къатыннга:

– Элигизде не хапар барды? – деп сорду.

– Да, балам, элибизде байны бир къызы барды, аны алама деп келген болса, юч кере бугъаргъа къояды, ючюсюнде тапса, боюнун тайдырады.

Ма бюгюннге токъсан тогъуз адамны башын тайдыргъандыла, – деп, хапар айтды.

Къартны жашы:

– Анам, бар айт, мен аны алыргъа келгенме. Мен да букъгъан этерикме, – деп, ундурукъ тюбюне кирип башлагъанды.

Ол заманда Акъ, жашны ундурукъ тюбюнден чыгъарып, кыызгъа алып барды.

Къыз – ариуладан да ариу, халкъ да юсюне басынып турады. Акъ, кыызны аллына барып:

– Мен сени къарындашыма алыргъа деп келгенме, бугъаргъа эркин эт, – деди.

Къыз эркин этди. Ол заманда Акъ, жашны алып, элден чыгып, бир уллу агъачха жетди. Ала да агъачха жетерге, агъачдан бир тюлкю къачып чыкъды. Акъ, тюлкюню аллын тыйып:

– Сен манга къуллукъ этмей, амалынг жокъду, – деп сюелген эди.

Ол заманда тюлкю:

– Мен сени айтханынгы этерге деп чыкъгъанма, айт, не жумушунг барды? – деп, тилленип селешген эди.

Акъ, тюлкюню башын да сылап:

– Сен бу жашны букъдур, ханны кызы тапмазча, – деп тиледи.

Тюлкю:

– Тутсун къуйругъумдан. Келсин мен баргъан жерге, – деп тебиреди.

Тюлкю, жашны къуйругъундан тутдуруп, элте-элте барып, бир уллу ёзенде, бир ташха элтди. Ташны бир жанына аудуруп, тешикке кирип тебиреген эди. Къартны жашы да кепмю, азмы барды, аллына ийилип, тюлкюню ызындан тешикке кирип, узакъ баргъан эди. Жетер жерлерине баргъандан сора, тюлкю жашха:

– Энди олтур былайда, къайда да ёрге къобарса. Къыз бир кере излеп, сени тапмаз, ол заманда санга кычырыр: «Чыкъ», – деп, чыкъма. Экинчи кере кычырыр, чыкъма. Ючюнчю кере кычырыр: «Чыкъ, Аллахдан аман табарыкъ! Бюгюнден ары сеникиме, чыкъ, тапмайма», – деп. Ол заманда ёрге къобуп къал, – деп, тюлкю артына айланып кетгенди.

Къыз жашны излейди, жер бузады, жер чачады, тапмайды.

– Чыкъ, тапмайма мен сени! – деп кычырды.

Болсада, жаш чыгъаргъа унамады. Къыз экинчи кере изледи, тапмады. Тапмазлыгъын билгенде, къыз жашха:

– Чыкъ! – деп кычырды.

Жаш чыгъаргъа унамады. Къыз ючюнчю кере излеп башлады. Кёкге минди, жерге тюшдю, жаш думп болгъанды. Табалмады, не этерин билмегенден къыз: «Чачымы ичинде букъгъан болур», – деп, чачын да къозгъады. Керти да табалмазлыгъын билгенде:

– Чыкъ, Аллахдан аман тап, тапмайма сени, бюгюнден арысында мен сени адамынг болама! – деп кычырды.

Ол заманда къартны жашы, секирип къобуп, кыызны аллында сюелип къалгъан эди.

Андан сора, ёлюп тургъан адамла да сау болуп, халкъ уллу къууанч этип башлагъан эди. Къызны атасы, ол къууанчха жүз асыралгъан ёгюз союп,



баргъанны-келгенни сыйлап, он кюн тургъан эди. Онбиринчи кюнюнде юч ат жегилген фаэтоннга миндирип, аланы жолгъа атландыргъан эди.

Къартны жашын ариу къатынчыгъы бла фаэтонну артына миндирип, Акъ кеси фаэтон башчы болуп, юйге къайтып келе, ол дорбуннга жетдиле.

Дорбуннга жетгенлей, атланы тыйып:

– Келигиз, дорбуннга къайта барайыкъ, – деп, Акъ аланы дорбуннга элтди.

Барып къарагъанда, бир эмеген ёлюп тура эди. Аны уругъа атдыла. Сора отоуланы эшиклерин ачып, Акъ жашха сейирлик ырысхыны кёргюзтдю.

– Ма ол кече, сен жукълап тургъанлай, бу эмегенни ёлтюрюп, бу ырысхыны тапхан эдим. Ма ачхычланы, бу мюлкню, ырысхыны да санга береме, – деп, жашха ачхычланы узатды.

Жаш, къууанып алып, ачхычланы хуржунуна сугъуп, фаэтоннга минген эди.

Кёп да турмагъанлай, женгил атла фаэтонну элге жетдирдиле. Суу боюнунда къабырланы къатларына жетгенлей, Акъ, фаэтондан секирип тюшюп:

– Тюшюгюз фаэтондан, – деп тохтады.

Жаш къатынчыгъы бла фаэтондан тюшгенлей окъуна, Акъ:

– Къызны экибиз да бирча тапханбыз, аны себепли къызны эки этип, жартысы – сени, жартысы – мени, – деп тохтагъанды.

Жаш да, къатыны да асыры къоркъгъандан бетлери тюрлендиле. Болсада, Акъ жашха:

– Тут онг къолундан, – деп тутдуруп, кеси да сол къолундан тутуп, бичакъ бла сермеди.

Ол заманда, къыз къычырыкъ этерге ауузун ачханлай, ауузундан бир кюзгю бла жилиан тюшген эдиле. Акъ, сермеп, кюзгюню, жилианны алып:

– Ма, энди къатынынгы эки юлешдик, – деп, аланы хуржунуна сукъду. – Къыз а жерни башында болгъанны кюзгю бла, жерни тюбюнде букъгъанны жилиан бла табып болгъанды. Сен а бир кере букъгъанса, тапмагъанды. Энди уа, сен ары-бери кетсенг, бу жилиан излеп тапса, сени ёлтюрюрге боллукъду. Хайдагъыз, Аллах сизге жашау берсин. Мен а былайдан ары ётерге эркинлигим жокъду. Ол кюн ол эки адам мени къабырымы къаза эдиле. Мен, алагъа онбеш сом берлик болуп, бералмай ёлген эдим. Сен манга болушханынг себепли, манга буйрукъ болгъанды санга болушургъа. Энди мен кетейим, – деп, саламлашып, къабырла таба кетди.

Къабырыны къатына жетерге, къабыр эки ачылды, Акъ ичине киргенлей, къабыр жабылып къалгъан эди.

Жаш, къатынчыгъын да алып, юйюне келип, халкъ да юслерине жыйылып, уллу къууанч этген эдиле. Дорбунда мюлкню бюгюн-бюгече да ташыйдыла, алай тауусалмайдыла. Не кёп жашай эселе да, не иги ашай эселе да, энтта да сабийлери жокъду. Озгъан базар кюн мен алагъа барып, кёп олтуруп, бек иги сыйланып кетген эдим.

Мени хапарыма ийнанмагъан а, ол элге барып, сурап, сыйланып манга хапарын айтсанг а.

*КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 4 паспорт.
КъМАССР-ны Чегем районуну Тёбен Чегем элинде 1916 жылда туугъан*

Бепайланы Ахъяны жашы Назирден 1958 жылда жазылганды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кечюргенди.

Ажайып халда болдурулган ишлеге, сёлешиген жаньуарлагъа, тамашалыкъ жанлагъа (эмегенле) кёре «этген ахшылыгъынг къайтыр» деген чыгъарма, сейир-тамаша жомакъгъа саналады. Алай бла аны баи магъана ёзеге адамны жюрегинде халаллыкъны жоругъун тохташдырыду.

СОТВОРЕННОЕ ТОБОЙ ДОБРО ВОЗВРАТИТСЯ

Давным-давно в одном селении жил-был старик с единственным сыном. Этот старик в своей жизни перенес много испытаний. Однако, чтобы забыть пережитое, ему пришлось выдержать горе, связанное со смертью жены, когда на его голову пали новые напасти. С одной стороны его одолевала нищета, с другой, без жены в доме горе глядело на него. Он готов был броситься в реку.

После долгих раздумий он решил женить сына. Когда он сидел опечаленный, его сын зашел к нему. Сын, увидев опечаленного отца:

– Отец мой, почему ты опечален? – спросил он.

– Сынок, я не опечален, просто мне в голову пришло женить тебя, и я вот об этом размышляю, – сказал он.

– Да, отец мой, мы бедные. Кто за меня замуж выйдет? Бедняка все ненавидят. В наше время будь хоть дураком, но если ты богатый, ты – первый. Наши девушки избалованные, они со мной даже разговаривать не хотят, а если и разговаривают, то говорят «оборванец», – сказал он.

– Не бойся, сын мой, хоть мы и бедные, но «у кого начало, у кого конец», – говорят. В будущем люди тебе будут завидовать. Ты исполни мою просьбу, сходи и приведи ко мне своего друга, – сказал он и отправил сына в село.

Юноша, довольный своим отцом, много ходил и много странствовал. Однако идти к нему в друзья никто не согласился. Когда опечаленный, он возвращался обратно, в селе ему навстречу попался Харун, который как и он не мог избавиться от нищеты.

– Чтобы твой путь был счастливым, Харун. Куда идешь? – спросил он, и остановил юношу.

– Благодарю, хороший путь Аллах пусть даст. Я иду домой, – сказал Харун.

– Пойдем, Харун, к нам, немного посидим у нас, там и скука наша пройдет, – сказал он, и привел Харуна к себе домой.

Когда старик увидел Харуна, стал веселым, провел его в дом, и посадил на почетное место. Они долго беседовали, и рассказали о своих жизненных неурядицах друг другу. После того, как старик окончил свою беседу, он сходил и принес арбуз с хлебом и поставил на стол:

– Иди сюда, Харун, раздели арбуз, хлеб, покушаем, – сказал он.

Харун долго не раздумывая, взял в руки нож, разрезал арбуз, хлеб и поставил на стол.



Все они сели за стол, поели, завершили трапезу. После этого старик, отозвав своего сына в сторону:

– Сын мой, он не сможет стать твоим другом, найди другого человека, – сказал он и отправил.

– Теперь я кого смогу найти, – сказал он, крепко задумавшись, пока бродил, навстречу вышел его друг Хамит.

– Чтобы твой путь был счастливым, Хамит!

– Пойдем к нам, у нас немного посиди, там и скука наша пройдет, – сказал он.

– Благодарю, хороший путь Аллах пусть даст! Пойдем, я согласен, – сказал он и двинулся в путь.

Юноша вместе с Хамитом пришли к нему домой. Старик, увидев Хамита, повеселел и посадил его на почетное место. После долгой беседы, когда закончили говорить о своих жизненных проблемах, старик встал, и поставил на стол арбуз с хлебом. В это время Хамиту старик:

– Вот, возьми нож, ты не мужчина что ли, раздели арбуз и хлеб, хорошенько покушаем, – сказал он и отдал нож Хамиту.

Хамит резко вскочил, встал, взял нож, и тут же накрыл на стол. Все сели и стали кушать.

После того, как они поели, старик отвел в сторону своего сына:

– Сын мой, он тебе не сможет быть другом, найди другого человека и приведи его сюда, – сказал он и отправил его.

Юноша не совсем доволен был отцом, но что оставалось делать. Надо было найти себе друга: «Кого бы найти», – подумав, он отправился искать.

Юноша много бродил, странствовал. Однако в большом селе никого не нашел. Он не знал, куда идти, голова была забита думами, двигаясь-двигаясь, дошел до большого кладбища. Когда он посмотрел на кладбище, то увидел, как два человека копают одну могилу. Юноша подошел к этим людям:

– Аланы*, чем вы тут занимаетесь? – спросил он.

– Когда он был жив, должен был нам пятнадцать рублей, он не успел их вернуть нам и умер, а теперь мы его выкопаем и снимем с него саван, – ответил один из них.

Сын старика сильно поругав их, вручил им двадцать рублей, и почву насыпал обратно в могилу, так и ушел. В маленьком селе Кюнлюм он много бродил, не находя ни одного человека. Когда он шел обратно, на берегу реки, он встретил одного молодого человека в белом одеянии.

– Салам алейкум**, добрый молодец! – он поздоровался.

– Алейкум салам***. Чего ты бродишь, чего ты ходишь с поникшей головой? – спросил человек в белом одеянии.

– Да, что мне делать, остается только раздумье. Чтобы мне отправиться в набег, нужен друг, сколько ищу, не могу найти. Не сможешь ли ты пойти со мной? – спросил он у него.

– Конечно, смогу пойти, – ответил человек в белом одеянии и они двинулись в путь.

* Алан – обращение. «Эй!», «Слушай!», «Друг!», «Товарищ» [3, 48].

** Салам алейкум – «здравствуйте», «приветствую вас» [3, 535].

*** Алейкум салам – «здравствуйте (ответ на приветствие)» [3, 535].

Они вдвоем пришли к нему домой. Старик, поздоровавшись с человеком в белом одеянии, отнесся к нему приветливо, провел к очагу, посадил на почетное место.

Старик рассказывал им разные истории, говорил о том, что они должны отправиться в поход и как надо будет себя там вести. В это время мужчина в белой одежде резко встал с места:

– Отец мой, меня зовут Ак*, садитесь за стол, моя душа дана вам в услужение. Я готов, – настоял он.

– Да, если так, дорогой Ак, садитесь за стол. Разрежьте арбуз и хлеб, покушаем, после этого отправляйтесь в поход, – сказал он и усадил за стол.

Ак быстро встал, взял нож и разрезал арбуз.

– Отец, вы – старец, ешьте, что помягче, – сказал он, и, вынув из середины арбуза мякоть, и из хлеба внутреннюю мякоть, поставил перед стариком.

После того, как они поели, старик начал готовить молодых людей в дорогу. В момент, когда юноши садились на коней, старик дал им строгий наказ:

– Что бы ни случилось, в поздний час в большом ущелье не оставайтесь на ночлег, – предупредил он.

Молодые ребята отправились в поход, много странствовали, много ходили. К заходу солнца они оказались в большом ущелье.

Сын старика, спрыгнув, слез с лошади:

– Этой ночью мы обязательно должны здесь переночевать, – стал он настаивать.

Ак был недоволен им:

– Эй, прекрасный молодец, что тебе говорил твой отец, вспомни-ка сейчас, он не сказал бы, если не знал суть дела, залезай на коня, – начал он настаивать.

Но все равно он не смог юношу уговорить. Они отпустили лошадей, разожгли костер, подогрели пищу, и только успели поесть, как сын старика заснул крепким сном. Ак вспомнил слова старика, и взяв лук когда сидел у костра, заметил существо, которое с криком приближалось к ним, сотрясая скалы и весь мир. Когда Ак, резко поднявшись, посмотрел, он увидел эмегена с одним глазом на лбу и этот глаз освещал всю округу.

Эмеген остановив коня:

– Ой, вы, собачье-ослиное отродье, кто дал вам право на моей территории разводить костер, распускать своих коней? – закричал он.

Ак, увидев приближение разъяренного эмегена:

– Эй, эмеген, остуди свою кровь, если сам не можешь остудить, мы будем стреляться в этом большом ущелье, – сказал он.

Эмеген, даже не слезая с коня:

– Я вам такое сделаю, что вас ваша родная мать не узнает, мне вами по одному разу закусить. Будем стреляться или бороться? – спросил он.

– Ай, ты слабак, в таком большом ущелье бабы борются. Будем стреляться, я и так разгоряченным прибыл, стреляй, – настаивал Ак.

Эмеген, взяв свой лук, выстрелил, однако, стрела пролетела мимо уха Ака. Ак, взяв свой лук:

* Ак – белый, светлый [3, 253].



– Тебя этой ночью взбесившимся привела сюда твоя смерть, теперь и я выстрелю, – сказал он, и выпустил свою стрелу.

Весь мир потемнел. Эмеген сильно закричал, и обратно, по какой дороге он сюда пришел, туда и побежал. Ак долго не раздумывая, сел на своего коня, и погнался за эмегеном. Через некоторое время, когда Ак пришел в большую пещеру и посмотрел, там эмеген лежал уже мертвым. Ак вытащил имевшиеся при нем семь ключей, и начал отворять двери. В глубине пещеры было семь домов, и все семь были полны имуществом, золотом, и всему этому Ак став хозяином, вернулся обратно.

Когда он возвратился обратно, сын старика еще спал. Ак присел у костра, и без сна пробыл до утра. Когда наступил рассвет, и солнце выглянуло, проснулся сын старика.

– Что мой отец знает, кроме того, что есть сердцевину арбуза, мякоть хлеба? Ничего с нами не случилось. Я лучше, чем этой ночью, никогда не спал, – сказал он и сел рядом с ним.

Ак молча поставил перед юношей разогретую пищу, и они вдвоем хорошенько поели. После завтрака они сели на коней, и продолжили свой путь.

Много ли, мало ли они шли, но вскоре дошли до большого селения при заходе солнца.

Той ночью на краю села, они остановились, в доме бедняка стали гостями.

Утром Ак хозяйке дома, старушке:

– Что нового в вашем селе? – спросил.

– Да, сын мой, в нашем селе живет дочь богача, и кто придет к ней свататься, ему дают право три раза спрятаться, а в третий раз, если она его найдет, то сносит голову. Девяносто девять человек она обезглавила, – рассказала она.

Сын старика:

– Мать, сходи, скажи им. Я прибыл свататься к ней, я буду скрываться, – сказал он, и начал лезть под кровать.

В это время Ак юношу вытащил из-под кровати и повел к этой девушке.

А девушка – краше всех красавиц, и весь народ собрался вокруг нее. Ак подошел к этой девушке:

– Я пришел тебя взять в жены за своего брата, разреши спрятаться, – сказал он.

Девушка дала разрешение. В это время Ак взял юношу, вывел его за село, и они дошли до большого леса. Как только они добрались до леса, из леса выскочила одна лиса. Ак остановил лису:

– У тебя нет другого выхода, кроме того, как мне служить, – сказал он ей.

В это время лиса:

– Я из-за этого и вышла, чтобы выполнять твои пожелания, говори, какие у тебя проблемы? – спросила она, обретя человеческий язык.

Ак, погладив по голове лису:

– Ты спрячь этого юношу так, чтобы его не нашла эта девушка, – попросил он ее.

Лиса:

– Пусть ухватится за мой хвост. Пусть следует за мной в то место, куда я иду, – сказала она и отправилась в дорогу.

Лиса, заставив юношу схватить за свой хвост, вела-вела и привела в большом ущелье к камню. Перевалив камень в одну сторону, она начала лезть в дыру. Сын старика долго ли шел, мало ли шел, наклонившись вперед, следом за лисой вошел в дыру и уже там продолжил свой путь. Когда дошли, куда надо было, лиса юноше:

– Теперь сиди здесь, ни в коем случае не вставай. Девушка, в первый раз тебя не найдет. Она будет тебя звать: «Выходи же», – говоря, а ты не выходи. Во второй раз будет громко звать, не выходи. В третий раз, когда позовет: «Чтобы Аллах тебя наказал! С сегодняшнего дня я твоя, выходи, я тебя не могу найти», – говоря. В это время ты встань прямо, – сказала лиса и, повернувшись, пошла своей дорогой.

Девушка его разыскивает, трясет-разрушает землю, не находит.

– Выходи, не могу я тебя найти, – закричала она. Юноша не согласился выйти. Девушка во второй раз начала искать, и тоже не нашла. Когда она поняла, что не может найти, юноше: Выходи! – прокричала. Юноша не согласился выйти. Девушка начала в третий раз искать. Залезла в небо, спустилась на землю, юноша исчез полностью. Так и не нашла, и девушка, не зная что делать: «Наверное, он спрятался в моих волосах», – подумала она и перебрала свои волосы. Когда она по-настоящему поняла, что не сможет найти:

– Выходи, пусть Аллах тебя накажет, не могу найти тебя, с сегодняшнего дня я буду твоим человеком! – закричала она.

В это время сын старика, вскочил и тут же предстал перед девушкой. После этого умершие люди ожили, и народ начал проводить огромный праздник. Отец девушки на этот праздник зарезал сто откормленных быков, встречал-проводил гостей, угощая их, они находились десять дней. На одиннадцатый день он посадил их в фаэтон, запряженный тройкой лошадей, и отправил в дорогу.

Сына старика с красавицей женой он посадил в конец фаэтона, а сам Ак был главой фаэтона, когда возвращались домой, они дошли до той пещеры.

Когда дошли до пещеры, он остановил коней:

– Пойдемте, заглянем в пещеру, – сказал он и повел их в пещеру.

Когда они пришли и посмотрели, то увидели одного умершего эмегена. Они его закинули в яму. Отворив все двери домов, Ак показал юноше несметные богатства.

– Вот, в тот вечер, когда ты спал, убив этого эмегена, я нашел все эти сокровища. Вот возьми ключи, все это имущество я вручаю тебе, – сказал он и протянул ключи юноше. Юноша, с большой радостью приняв ключи, засунул их в карман и сел в фаэтон.

Через короткое время быстрые кони доставили фаэтон до села. Когда они оказались на берегу реки у могил, Ак спрыгнул из фаэтона:

– Вылезайте из фаэтона, – приказал он.

Как только юноша с девушкой слезли с фаэтона Ак:

Девушку мы нашли вместе, поэтому мы должны ее поделить пополам, одна половина тебе, другая половина мне, – стал он настаивать.

Юноша с женой так сильно испугались, что лица у них изменились. После этого Ак юноше:



– Держи ее за правую руку, – сказал, и он ухватился за нее, а сам взял за левую и замахнулся ножом.

В то время, когда женщина раскрыла рот, чтобы закричать, из ее рта выпали зеркало и змея. Ак тут же забрал зеркало и змею:

– Вот, теперь мы эту женщину поделим пополам, – сказал и засунул их к себе в карман. То, что происходит на поверхности земли, девушка узнавала с помощью зеркала, а что под землей – с помощью змеи. Ты один раз спрятался, она не смогла тебя найти. А теперь, если ты куда-либо уйдешь, эта змея может тебя разыскать и убить. Давайте, пусть Аллах вам даст счастливую жизнь. А я дальше идти не имею права. В тот день, те двое копали мою могилу. Потому что я им должен был пятнадцать рублей, но не успев вернуть, умер. Так как ты тогда меня выручил, мне пришло указание, чтобы я помог тебе. Теперь я пойду, – сказал он и, попрощавшись, направился в сторону кладбища.

Когда он дошел до своей могилы, она раскололась на две части. А когда Ак вошел вовнутрь, могила тут же закрылась.

Юноша вместе со своей женой вернулись домой и весь народ собравшись вокруг них, устроили большое празднество. Все богатство, которое было в пещере, они днем и ночью вытаскивают, однако не могут закончить. Как бы они долго не жили, как бы они хорошо не питались, до сих пор у них нет детей. В прошлый, базарный день я к ним ходил, посидел у них, и очень большие почести оказали они мне.

Кто не верит тому, что я рассказал, сходите в то село, спросите. Погостив у них, расскажите мне, как они поживают.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 4. Записано в 1958 г. в с. Нижний Чегем Чегемского района КБАССР от Беппаева Назира Ахьяевича (1916 г.р.) (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Судя по магическим предметам, говорящим зверям, присутствию в тексте фантастических существ (эмегены), произведение «Сотворенное тобой добро возвратится» причисляется к жанру волшебных сказок.

Основная философская идея текста сводится к утверждению альтруистического начала в человеке.

САУДЮГЕРЧИНИ ЖАШЫ

Нартланы заманында бир бай саудюгерчи жашап болгъанды. Аны аты Нарт Къарабатыр болгъанды. Аны бир уланы бар эди. Ол, ёле туруп, анга осуят этгенди.

– Мен ёлсем, мени юйюм, мюлкюм санга аманатды. Жолоучулукъгъа чыкъсанг, кесинге тенглик этмезликни нёгерге алма. Тенгликни аны бла билликсе: базаргъа бар да, юч алманы алып, юч да нёгер изле. Юч алманы ючюсюне бер. Алманы санга къайсы бёлюп берсе да, аны кесинге нёгерге ал, – дегенди.

Жаш, атасы айтханча, излеп, юч жашны кесине нёгерге айыргъанды. Алгъа аланы экисине бирер алма бергенди. Ала алмаланы, тенг этмей, ашап къойгъандыла. Къалгъан жангыз алманы ючюнчюсюне бергенди да, ол алманы тенг этгенди. Сора ол аны нёгерге алгъанды. Саудюгерчини жашыны аты уа Жашаркъул болгъанды.

Экиси да, къыйын кюнледе бир бирни атмазгъа ант этип, татлы тенгле болгъандыла. Алай бла жолоучулукъгъа атланадыла. Бара-баргъанда, алагъа жолда бир къарт киши жолугъады да, бир жан кезлик береди.

– Бу бичакъ, – дейди къарт, – тенгизден ётсегиз – кёпюр, жаугъа тюбесегиз – нёгер болур, – дегенди. – Мен муну сизни антлы тенгле болуп жюрюгенигиз ючюн береме, – дегенди.

Ала, андан да бичакъны алып, къарт бла саламлашып, жолларына кетгендиле. Ол эки нёгер, бара-барып, бир элге жетгендиле. Алтынларын сатып, ызларына къайтып келе болгъандыла. Жолда келе-келе, бир ёксюз жашчыкъны тапхандыла. Жашчыкъны кийик териледен кийимлери болгъанды. Жашчыкъгъа:

– Не айланаса, не жюрюйсе, кимни жашыса? – деп соргъандыла.

Жашчыкъ:

– Атамы танымайма, анам къыйынлыкъда турады.

– Не къыйынлыкъда? – деп соргъанда:

– Бир эмеген аскер келип, алып кетгендиле, – деди. – Ол аскерни кючю уллуду, къарыулуду. Тёрт патчахны аскери келгенде да, эмегенни аскерине не аз да къарыу эталмагъанды.

Жашчыкъны хапарына тынгылагъандан сора:

– Иги жаш, биз, къарыу эталлыкъ эсек, бир кёрейик, – дегендиле.

Былайдан эмегенни аскери болгъан жерге баргъандыла. Сора Нарт Жашаркъул нёгери бла бирге эмеген аскерге жолукъгъандыла:

– Жашаргъа сую эсегиз, бизни адамыбызны, бу жашчыкъны анасын азат этигиз, – дегендиле.

Эмеген аскерине айтханды:

– Бу аллымда «быз-быз» этген эки чибинни, уруп, жокъ этигиз, – дегенди.

Ол заманда Нарт Жашаркъул эмеген бла, даулашха кирип, сермешгендиле. Сермеше келип, эмегенни бир ургъанлай, жерге боюнуна дери батдыргъанды да, уруп, башын тайдыргъанды. Алайда ол эки тенг, эмеген аскерни къырып, жашчыкъны анасын азат этгендиле. Эмегенни мюлкюн, малын алып, жаш бла бирге анасына бергендиле.



Сора жолда кьайтып келе, бир жолоучугъа тюбеп:
– Жол болсун, – деп, саламлашхандан сора, жолоучу былагъа:
– Не айланасыз, не жюрюйсюз? – деп соргъанды.
– Да, биз былайда эмегенле бла бироз ойнап келебиз, – дегендиле тенгле.
– Да сиз эмегенле бла аллай бир ойнар кибик не къарыуугъуз барды? Не оюн ойнагъансыз? – деп сорду жолоучу.

– Былайда жолланы кесип, жерде адамны, кёкде къанатлыны оздурмагъан эмегенни, тёрт патчах аскер хорламагъан эмегенни аскерин, кесин да хорлап, къырып келебиз. Ма оюнубуз а ол болгъанды, – дедиле жашла.

– Да, уланла, ол этилген жигитликлени уа хатасы жокъду. Кесигиз а кимлесиз? – деп сорду жолоучу.

– Мен а Нарт Къарабатыр улу Жашаркъулма. Бу уа дуняда сайлап алгъан антлы тенгимди. Экибиз антлы болгъан кюнден бери, бир къабынны эки этмей къапмагъанбыз, зауукълукъда, кыйынлыкъда да биргебиз, – деди Жашаркъул.

– Да алай эсе, былайда да адамны терисин саулай сойгъан бир эмеген барды. Анга уа кючюгюз къарырыкъмыды? – деп сорду ол адам. – Эмегенни этгенине ийнанмай эсегиз а, сыртыма къарагъыз, – деп, тешинип, сыртыны териси алыннганын кёргюзтдю.

– Да биз, барып, бир кёрейик, – дедиле да жашла, эмеген болгъан жерге атландыла.

Быланы келгенлерин кёрюп, бурун тешиклери къая жарылгъанча, бурунундан ургъан солуу тереклени, агъачланы адура, кычыргъан тауушу кёк кюкюрегенча, дуняны зынгырдата, ачыуланып, эмеген:

– Адам улулары, не айланасыз? Не жюрюйсюз? Не керекди? – деп соргъанды. Дагъыда: – Алай мен сизни сормасам да билеме, нек келгенигизни. Тохтамасагъыз, теригизни сойгъаным бла къоймам. Бир тартханымлай, экигизни да жутарма! – деди.

Нарт Жашаркъул, эмегенден гитчерек болса да:

– Сенден кючлю къарындашынгы этгенча, сени да этерме! – деп, атыш бла тутушха киришди.

Сора сермеп, эмеген Нарт Жашаркъулну кьолгъа алып, бир ургъанлай, тобукъгъа дери жерге батдырды. Экинчи кезиу Жашаркъулгъа жетгенлей, ачыулу бет алып, «мах» деп, эмегенни боюнуна дери жерге батдырып, боюнундан бууду. Къылычы бла башын кесди. Аны акъгъан къаны, ырхы болуп, сууланы, кёк тенгизни да кызыртды.

Эмегенни да ёлтюрюп, алай тургъанлай, бир жанында, улуу тауну ичинде дорбундан бир ачы тиширыу кычыргъан таууш эшитилди. Ол дорбун жашла ёлтюрген эмегенни жашагъан жери болгъанды.

Сейирсинип:

– Бу таууш, бу сыйыт неди? – деп, барып къарасала, дорбунну ичин ай, кюн кибик жарытхан бир кызыны кёрдюле.

Аягъына, кьолуна бугъоула, сынжырла салынып, ашы, суу болмай тура эди. Къыз, аланы кёргенде:

– Мен адам улун кёрмегенли онсегиз жыл болады. Къайдан келдигиз? – деп сорады.

– Биз узакъ жерледен, нартла элинден жолоучулукъгъа чыкыгъан эдик. Келе-келип, бу зулмучу эмегенлеге тюбеп, ала бла селеше, ойнай-кюле айланабыз. Алай былайда бир эмеген бла сермешип, аны башын тайдыргъанлай: «Бу дорбундан келген тиширыу таууш неди?» – деп, бери бурула келебиз, – деп хапар айтдыла.

Къыз да:

– Мен да Къылычбатырны къызы эдим. Мени атам саудюгерчи болгъанды. Кеси да нарт таулада кеп малла тутханды. Бир жолда атам мени жетижыллыгъымда кеси бла бирге саудюгерчиликге жолоучу этеди. Келе-келгенибизлей, эмеген атамы, тутуп, сырт терисин алып жибереди, мени уа жетижыллыгъымда бери келтиреди. Андан бери мен мында жашайма. Ма былайды иш, – деди. – Сиз былай, бу кюнледе келмесеги, мени къатынга алыргъа деп тура эди, – деп, хапарын башдан аякъ айтды. – Мени бу къыйынлыкдан къутхаргъансыз, кесигизге туугъан эгеч этеригизни тилейме, – деди къыз.

– Биз сени туугъан эгеч да этербиз, атанга, ананга да тапдырырбыз, – деп, аманатха алып, антлы тенгле къызны элтип, атасыны, анасыны къолуна бердиле да, жангы жигитликле этерге кетдиле.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 7 паспорт. КъМАССР-ны Огъары Чегем (Элтюбю) элинде 1928 жылда туугъан Агаланы Махаралны жашы Ахматдан 26.01.1965 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кечюргенди.

«Саудюгерчини жашы» деген чыгъарма нарт эпосну бла сейир-тамаша-жигитлик жомакъланы илишанларындан къуралгъаны ангылашынады.

Жомакъда жигитлени чынтты шуёхлукълары бла бирге, тиширыугъа айбат кезден къараргъа тийишлиси насийхат халда белгиленеди.

СЫН ТОРГОВЦА

Во времена нартов жил один богатый торговец. Его звали Нарт-Карабатыр. У него был один сын. Умирая, он сделал ему завещание.

– Когда я умру, мой дом, мое имущество я поручаю тебе. Когда отправишься в путь, не бери с собой никого, который не сможет быть тебе равным. Равенство узнаешь так: сходи на базар, купи три яблока, и начинай искать троих друзей. Три яблока отдай троим. Того, кто яблоко вернет, поделив пополам, того и бери с собой в друзья, – сказал он.

Сын, послушавшись отца, разыскивая, выбрал троих ребят к себе в друзья. В первую очередь он двоим дал по одному яблоку. Они, поровну не поделившись с ним, яблоки съели сами. Оставшееся одно яблоко отдал третьему, а он яблоко поделил поровну. И он тогда его выбрал в друзья. Сына торговца звали Жашаркул.

Они вдвоем дали клятву чтобы в тяжелые дни не бросать друг друга, и стали настоящими друзьями. И после этого они отправляются в дорогу. Когда они шли, им по дороге встречается один старик и дает им кезлик*.

* Кезлик – режущее оружие, которое человек носит с собой [5, 179].

Вот этот нож, – сказал старик, – когда будете переходить море – станет мостом, с врагом встретитесь – другом станет, – сказал он. – Вот этот нож я вам даю, из-за того, что вы держитесь настоящими друзьями, – сказал он.

Забрав нож, попрощавшись со стариком, они отправились в дорогу. Эти двое друзей шли-шли и дошли до одного селения. Продав золото, уже возвращались обратно. По дороге встретили одного мальчика сироту. У мальчика одежда была из шкуры диких животных. У мальчика:

– Чего ты ходишь, чего гуляешь, чей ты сын? – спросили они.

Мальчик:

– Отца я не помню, а мама сейчас попала в несчастье.

– Какое несчастье? – спросили они.

– Одно войско эмегенов прибыло и забрало ее, – сказал он. – У этого войска силы огромные, могучие. Когда войска четырех ханов прибыли, они не смогли одолеть войско эмегенов.

Когда они закончили слушать рассказ мальчика:

– Добрый юноша, мы сейчас попытаемся, если сможем их одолеть, – сказали они.

Отсюда они пошли в сторону, где находилось войско эмегена. Нарт-Жашаркул после этого с другом пришли к войску эмегена:

– Если вы хотите жить, нашему человеку, этого мальчика матери дайте свободу, – сказали.

Эмеген своему войску:

– Этих двух мух передо мной, которые жужжат «быз-быз» ударьте и уничтожьте, – сказал.

После этого Нарт-Жашаркул с эмегеном поссорились и начали бороться. Когда они боролись, он одним ударом эмегена вогнал в землю до шеи, и ударом отсек ему голову. На том месте эти двое друзей, истребив войско эмегенов, освободили мать мальчика. Отобрали у эмегена имущество, животных и все это вместе с сыном вернули матери.

На обратной дороге они встретили одного путника, поздоровались, пожелали ему доброго пути:

– Куда путь держите, чего ходите? – спросил он у них.

– Да, мы здесь с эмегенами немного поигрались, – ответили они ему.

– Чтобы так играть с эмегенами, какие силы могут быть у вас? В какую игру играли? – спросил он.

– В этих краях был эмеген, который перекрывал земные пути людям, на небе не пропускал птиц. Четыре царских войска не могли одолеть этого эмегена, а мы его победили, уничтожили. Такая была наша игра, – сказали ребята.

– Да ребята, в этих героических поступках ничего плохого нет. А сами кто будете? – спросил у них путник.

– Я – Жашаркул, сын Нарт-Карабатыра. А он – в жизни мной избранный, надежный друг. Мы вдвоем, после того дня, как стали клятвенными друзьями, одного куска не поделив на две части, не ели, и в радости, и в горе мы вместе, – сказал Жашаркул.

– Да, если все так, здесь также находится один эмеген, который с человека кожу снимает живьем. А на него у вас хватит силы? – спросил тот



человек. – Вот, что совершил эмеген, присмотритесь. Если вы не верите, – сказал он и, раздевшись, показал свою спину с содранной кожей.

– Да, мы пойдем туда и посмотрим, – сказали они и отправились туда, где находился эмеген.

При виде ребят из ноздрей эмегена повалило дыхание, которое крушило скалы, деревья, леса, а крик, который он издавал, походил на небесный гром, так он был разъярен:

– Человечье отродье, что вы тут ходите? Что вам надо? – спросил он. И после этого:

– Хотя даже не спрашивая вас, я знаю, зачем вы пришли. Если вы не успокоитесь, я не остановлюсь на том, что кожи ваши сдираю. Одним притяжением обоих проглочу, – сказал он.

Нарт-Жашаркул хоть был меньше эмегена:

– Я сильнее тебя с твоим братом круто я обошелся, так и с тобой поступлю, – сказал он и вступил в бой.

После этого эмеген быстро схватил Нарт-Жашаркула, взял его в руки и одним ударом вкопал его в землю до колен. Во второй раз, когда очередь дошла до Жашаркула, он с рассерженным лицом «мах» сказал и эмегена до шеи вкопал в землю, затем ухватился за шею. Мечом отсек ему голову. Его кровь, которая стекала рекой, обагрила воды и синее море.

После того, как он убил эмегена и стоял там, вдруг из глубины большой горы, из одной пещеры послышался горький женский крик. Эта пещера находилась, там, где жил эмеген, которого убили ребята.

С удивлением:

– Что за шум, что за рыдание? – спросили они и когда пришли и осмотрели пещеру, то увидели девушку, которая освещала округу словно луна или солнце. У нее на ногах, на руках были кандалы и цепями была она связанная, она находилась без еды, без воды. Девушка, их увидев:

– С тех пор, как я не видела человека, прошло восемнадцать лет. Откуда вы пришли? – спросила она.

– Мы из дальних земель, из селения нартов отправились в путь. По дороге мы встретили эмегенов-тиранов, разговаривали с ними, игрались, смеялись, так и ходим. Однако здесь мы поборолись с одним эмегеном, и когда отсекли его голову: «Что за женский крик доносится из пещеры?» – подумали и завернули сюда, – рассказали они.

Девушка:

– Да, я была дочерью Кылычбатыра. Мой отец он был торговцем. Сам он в горах нартов держал много животных. Один раз, когда мне было семь лет, он взял меня с собой по делам торговли. Когда мы были в пути, моего отца схватил эмеген и с его спины содрал кожу, а меня семилетнюю привели сюда. И с тех пор я живу здесь. Вот так обстоят дела, – сказала она. – Если бы вы в эти дни не пришли, он собирался на мне жениться, – она рассказала свою историю от начала до конца. – Вы меня спасли от этого горя, теперь я вас прошу, чтобы вы меня посчитали своей родной сестрой, – сказала девушка.

– Мы тебя принимаем как родную сестру, и доставим тебя к твоему отцу, матери – сказали они, и, взяв ее на поруки, отвели к отцу и матери, а сами отправились на новые подвиги.



Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 7. Записано 26.01.1965 г. в с. Верхний Чегем (Эл-Тюбю) КБАССР от Агаева Ахмата Махараловича (1928 г.р.). Кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Произведение представляет собой органичное соединение элементов нартского эпоса и волшебной-героической сказки. Поучительный слой сказки посвящен теме настоящей мужской дружбы и рыцарского отношения к женщине.



ЖОМАКЪ (АЛТЫН ЧАБАКЪ)

Бир ханны бир жашы, бир жалчысы болгъандыла.

Ханнга ёлур ауруу тийгенди. Кесини ханлыгъын кимге къояргъа эм кесин къалай бла сау этерге дарман излегенди. Сау этер дарманны къуртхадан тилейди. Къуртха ханнга:

– Къайда эсе да, бир узакъ тенгизде бир алтын чабакъ барды да, аны тутуп берселе, ол сени сау этерикди, – дейди.

Алтын чабакъны тутаргъа жалчысын бла жашын жибереди.

Ала кёп заманны айлана, жюрюй кетдиле, алтын чабакъ болгъан кёлге жетдиле. Чабакъны тутдула. Ауруп тургъан ханны жашы чабакъны ариулугъуна къарады:

– Бу да бир жанды. Мени атамы сау этип, муну жанын алгъанны не хайыры барды? – деп, чабакъны суугъа жиберип къояды.

Аны жибергенин:

– Атама айтмайыкъ, – деп, жалчыгъа бек къаты айтды.

Жаш да, жалчы да юйлерине къайтдыла. Ханнга:

– Аллай чабакъ тапмагъанбыз, – деп айтдыла.

Хан жалчыны сорду, чакъырып:

– Керти да тапмагъанмысыз? – деп.

Жалчы ала тапханларын болушунлай айтды, чабакъны ханны жашы суугъа жибергенин айтды. Хан ачыуланды:

– Жашны элден къыстаргъа керекди! – деди.

Жаш элден къысталды.

Жолда бара, бир башха жашха тубеди. Тубеген жашы:

– Къайры бараса? – деди.

– Кесим да билмейме, къайры баргъанымы, мени атам элден къыстагъанды, – деди.

– Алай эсе, биз нёгер болайыкъ, мындан ары жолгъа бирге барайыкъ, тапхан затыбызны теп-тенг этейик.

Ала, барып, жетип, башха ханнга къонакыгъа тюшдюле. Юч кюнню ичинде къонакыча кёрюнюп турдула. Андан сора уа хан:

– Мени къызым баргъан адам хар кече сайын ёлюп чыгъады, – деди. – Аны биригизге береме, къызым бла киеуюмю сау хапарларын айтып келгенге уа алтын, накъут-налмас береме! – дейди.

Къызыны къысталгъан жаш алады, нёгери уа ундурукъ тубюнде аланы сакълайды. Къарап турады. Къызыны ауузундан жилин чыгып, ол жашны аузуна кирирге башлайды. Сермеп тутуп, аны бууады. Юч кечеге дери ол формалы барады.

Сора хан айтады:

– Саугъагыз(ны) алыгыз, къызыны да бирегизге элтигиз! – дейди.

Ала бир бирден айырылгъан жерде хазнаны юлешедиле, къыз а юлешинмей къалады. Къызыны къалай юлеширге билмейдиле. Къызыны, уруп, эки тенг этип, юлеширге дейдиле. Ургъанларында, дагыда бир жилин чыгъады. Нёгери айтады:

– Хазна да, къыз да сени. Сени атанг ёлгенди. Сен тутуп, экинчи тенгизге жиберген алтын чабакъ мен эдим, – дейди эм тенгизге секиреди.



КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 20 паспорт. КъМАССР-ны Таишы-Тала элинде жашагъан 82-жыллыкъ Узикланы Биймурзаны жашы Харундан 13.01.1965 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Жомакъны атасы Биймурзадан эм аны къарындашы Кушудан эшитгенди.

Сейир-тамаша жомакъ. Бу чыгъарманы айырмалыгъы – ханны жашы, ауругъан атасына дарманнга алтын чабакъны излей барып, аны табады, алай келтирмей, суугъа бошлап къояды. Ол а артдан, адам сыфатха кирип, жашха жашауун къуурагъа болушады.

СКАЗКА (ЗОЛОТАЯ РЫБА)

У одного хана были один сын и один слуга.

Хан заболел смертельной болезнью. Стал искать, кому оставить свое ханство и каким образом себя вылечить, лекарство. Целебное средство попросил у ведьмы. Ведьма хану:

– Где-то в одном далеком море есть одна золотая рыба, и, если ее поймав, дадут, она тебя вылечит, – сказала.

Ловить золотую рыбу отправил своего слугу и сына.

Они много времени ходили-бродили, добрались до озера, где обитала рыба. Рыбу поймали. Сын заболевшего хана посмотрел на красоту рыбы:

– Это тоже одна душа. Какой толк, моего отца вылечив, ее жизнь отобрать? – сказав, рыбу в воду отпускает.

О том, что отпустил ее:

– Моему отцу не расскажем, – говоря, крепко-накрепко наказал слуге.

И сын, и слуга вернулись к себе домой. Хану:

– Такую рыбу не нашли, – сказали.

Хан слугу спросил, призвав:

– И вправду не нашли?

Слуга, что они нашли, рассказал как было, то, что рыбу сын хана в воду отпустил, рассказал. Хан рассердился:

– Парня надо выгнать из села! – сказал.

Юношу изгнали из села.

Идя по дороге, встретил другого парня. Встреченный им парень:

– Куда идешь? – спросил.

– И сам не знаю, куда иду, меня отец из села выгнал, – ответил.

– Коли так, будем мы напарниками, дальше по дороге вместе пойдем, добытые вещи ровно пополам будем делить.

Они, пойдя, дойдя, попали в гости к другому хану. В течении трех дней как гостей привечали. А после этого хан:

– Человек, за которого выходит (замуж) моя дочь, каждую ночь умирает, – сказал. – Ее за одного из вас отдаю, а принесшему весть, что мои дочь и зять живы, золото, драгоценные камни даю! – сказал.

На девушке женится изгнанный парень, а его друг под кроватью их стережет. Наблюдает. Из рта девушки змея, выйдя, начинает заползать в рот к парню. Схватив, ее душит. До трех ночей в такой форме продолжилось.



Тогда хан говорит:

– Забирайте свой дар и девушку с собой увозите! – молвит.

Они в месте, где друг с другом расставались, поделили добро, а девушка неподделенной остается. Как поделить девушку, не знают. Решают девушку, ударив, ровно пополам разрезав, поделить.

Когда ударили, еще одна змея вылезла. Друг говорит:

– И добро, и девушка – твои. Отец твой скончался. Той пойманной и снова в море отпущенной рыбой был я! – молвил и в море прыгнул.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 20. Записал А.З. Холаев 13.01.1965 г. в с. Таилы-Тала КБАССР от 82-летнего Уазикова Харуна Биймурзаевича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Сказку слышал от отца Биймурзы и его брата Кушу.

Волшебная сказка. Особенность данной сказки – сын хана, отправившись искать золотую рыбу для лечения заболевшего отца, находит, но не привезя, отпускает ее в воду. А она потом, приняв человеческий облик, помогает парню устроить свою жизнь.



ЭЛЪЯС БЛА ЗОЛОУЦУ

Эртте-эртте бир зарлы кишиге заш туугъанды. Заш гитцелигинден окъуна дуньяда болмагъанца бир акъыллы зат эди. Алай зашха юц зыл болгъанлай, анасы ёлюп, ёксюзлей къалады. Киши, кёп заман ётмей, башха къатын алады. Ол а ол зашщыкъны, Эльясны, бир да суймей эди.

Зашха онюц зыл толгъанда, зашны атасы окъургъа берген эди беш зылгъа. Алай Эльяс, бешзыллыкъ окъууну бир зылгъа тауусуп, билимли болуп цыкъгъанды. Андан башха окъур зер а зокъ эди.

Бир кюн Эльясны атасы, къайын анасы ёлтюрюрге уу бере тургъанлай, билип: «Энди болмайды да, болмайды», – деп, зашны къарт анасына береди.

Заш, анда да бир юц зыл зашагъандан сора, дунья кёрюрге, зашау билирге юйюнден цыгъып тебирейди.

Заш кёп зерлеге, кёп элlege, шахарлагъа барады. Сора бир кюн агъац ици бла кетип бара тургъанлай, Эльяс бир золоуцугъа золугъады. Эльяс золоуцу бла, салам берип, салам алып саламлашады. Сорaды киши:

– Къайры бараса, не айланаса? – деп.

Эльяс да болушун айтып ангылатады. Сора Эльяс сорады:

– Сен а не адамса? – деп, алай тюз зууап алалмайды.

Алай киши зашха:

– Огъесе сен мени бла кел да, мени бла бирца заша, – дейди.

Эльяс да, ыразы болуп, киши бла аны юйюне барады.

Барадыла-барадыла, алай юйюне уа зеталмайдыла.

Юцюнцю кюн заш да, киши да, бир уллу тенгизден ётхенден сора, кишини юйюне зетедиле. Кёл, заланда уллу терек буруу, аны ицинде уа – бир ариу юй.

Киши, зашны элтип, юйюню хар бёлюмлерин да кёргюзтеди. Тогъуз-он бёлюмге киредиле. Алай киши ортада бир уллу бёлюмге зетхенде:

– Сен бу юйню къалайында да зашаргъа, айланыргъа эркинсе, алай бу бёлюмге уа кирме, – деп тилейди.

Заш да:

– Кирмем. Кирирге зарамай эсе, нек киреме? Сен айтханлай этерме, – дейди.

Ол кишини уа бир ариу, ариу десенг да, бек ариу къызы бар эди. Андан сора да бир зашы бар эди. Киши уа аны айтып, кеси да, къайры баргъанын да айтмай, юйюнден цыгъып:

– Мен кёпкюнлюк золгъа барама, мен келгинци, юйге иги къарагъыз, – деп цыгъыф кетеди.

Алай бла ётедиле кюнле, ётедиле зылла. Эльяс да ол юйге бир да кирмей эди, алай бла ол зыйырма бла он зыл зашады. Алай асыры иги зашагъандан, ол анга юц кюн кибик кёрюне эди.

Ма бир кюн Эльяс:

– Не болса да, мен бери бир кирмей къоймам, – деп, киши кирме деген юйге киреди.

Кирсе – болгъан алтын суратла, юйню (отоуну) тегереги да алтын суу ицирилип, зым-зым зылтырай эди. Отоуну ортасында уа – алтын тахта, тахтаны аллында уа – бир уллу кюзгю.



Заш сейирсингенден кьайры киргенин да унутхан эди. Сора ол тахтагъа минди да, кюзгюню кьолуна алып, кёп кьарады. Кюзгюде уа ол, кесини сурагын кёрмей, башха затла кёре эди.

Эльяс кюзгюде кёп затла кёрдю: бир кьарады да, башха кьыралда адамланы кёрдю, экинци кьарагъанында уа, кесини туугъан юйюн кёрдю. Юйюнде уа атасы, кьарт да болуп, ундурухта зукълаф тура эди.

Юйде уа кеце келе, ол зукълаф тургъанлай, бир уруцу, кюбюрню харекети бла кётюрюп, юйден цыгъып бара эди. Эльяс атасына:

– Уян, атам, юйде уруцула харекетлеринги алып барадыла! – деди да, атасы уа, уянып, уруцуну кьама бла уруп ёлтюрдю.

Дагъыда кьараса: эде эфендини зашы, кьатыныны тёшегинден туруп, тос кьатынына бара тура эди. Эльяс дагъыда:

– Эй, уян, кишинг, туруп, башха аман ишхе барады! – деф кьыщырды.

Олсагъат ол кишини кьатыны, уянып, кишисине да урушуп, ол барлыкь кьатыннга да барып, аны да цацын-башын зыртхан эди.

Сора Эльяс да алай этип бошагъанлай, юйню иеси, кирип келип, зашха:

– Мен санга не айтханем? Не ишингди бу? Айт, не кёрюп, не этхен эсенг да бу кюзгюде! – деп урушду.

Эльяс битеу кёргенин, этхенин анга айтды. Сора киши:

– Бек аман иш этхенсе сен, кёп гюняхла алгъанса. Алай сен ол гюняхланы телемей, бу юйде зашаргъа боллук туююлдю, – деди.

Заш:

– Да кьалай этип телерикме да мен ол гюнахланы? – деп сорду.

Киши уа:

– Юйден кет да, юц зылыны ичинде кёрген зарлынга эталгъан ахшылыгъынгы аяма, – деди. – Сора ол гюняхланы телеф келсенг а, бек ариу кьызымы санга берирме, – деп, сёз берди.

Эльяс юйден цыгъыф, кёп айланды, кёп зюрюдю. Ол юц зылыны ичинде, кьолундан келгенни аямай, хар зарлы адамгъа ишлеф, тафхан ахцасын да бериф, кёп ахшылыкьла этди.

Юц зылдан сора Эльяс кьайтыф келди. Киши уа, экинци атасы:

– Ма энди сен этхен гюняхларынгы телединг, – деди. – Ансы сен уруцуну атанга айтып ёлтюртхенде, атанг кёп гюняхлы болгъан эди. Эфендини зашы да, кьатыны бла туююшоф, кьатынын да, ууакь сабийлерин да кьойуф кетип, ол бирси, тос кьатыны бла зашай эди. Аны гюняхы да, атангы гюняхлары да – барысы да сени боюнунга тюшхен эдиле. Аны юцю уа сен энди бу отоугъа кирмезге ант бер, мен а кици кьызымы санга берирге сёз бергенем да – ал, – деди да, Эльясха бек ариу кьызын берди.

Эльяс экинци ол отоугъа ёмюрде да кирмезге ант этди. Сора эки кюн кьалып, юцюню кюн кишини кьызын алып, дуньяда болмагъанца уллу той-оюн этдирди. Тогъуз кюн бла тогъуз кецеге, тохтамай, той этдиле.

Бир бёлек зылдан сора Эльясны кьайын атасы да, зюзден артыкь зыл зашаф, кьарт болуп ёлдю. Аны байлыгъыны зартысы да Эльясха берилди.

Эльясны акъыллылыгъы, билимлиги ол тийреде битеу зерлеге белгили болду. Эльясны ол тийреледе ханланы барысыны да таматасы этип айырдыла. Ма ол да кёп зылланы алай зашады.

Бир кюн а Эльяс кесини юйюнден, атасындан, кьарт анасындан хапар эшитди. Ёге анасы уа Эльясны атасын уу берип ёлтюрген эди. Кьарт анасы



уа, Эльяс андан кетиф кѣп болмай, Эльясны ёге анасыны этхен аман ишлери юцю ащыудан ёлген эди.

Эльяс, ёге анасын да цакъыртыф, кѣп элни да зыйып, битеу тѣгерехте акъыллы кишилени да цакъырыф, той этиф сыйлагъан эди.

Сора Эльяс халкъны аллында кесини хапарын башдан-аякъ айтхан эди. Анда зыйылгъан халкъ аны ёге анасын аман ишлери юцю ёлтюрюрге деп буюргъан эдиле. Эльяс да, халкъ зыйылыф тургъанлай, ёге анасын этхен аманлыгъы юцю ахырда адам зашамагъан айрыкамгъа къыстап къойгъан эди, ёлтюргенден эсе да, ол аман болур деф.

Сора Эльяс къатыны, сабийлери бла зашаф къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 19 папка, 23 паспорт. КъМАСССР-ны Огъары Жемтала элинде жашагъан 70-жыллыкъ Занкишиланы Керимни жашы Якъупдан 24.06.1960 жылда Гузеланы Ж.М. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Жомакъны Якъуп къарт атасындан эшитгенди.

Хатасыз къыйналгъанны, ёге ана бла ёксюз жашыны юслеринден мотивлеге къуралгъан сейир-тамаша жомакъ.

Чыгъармада сейирлик зат – дуньяда бола тургъанны кѣргюзтген кюзю – сагъынылады.

Жомакъ насийхат халлыды: адам этген ишлери ючюн жууаплы болгъаны, тюзлюк аманлыкъны хорларыгъы чертиледи.

ЭЛЬЯС И ПУТНИК

Давным-давно у одного бедняка сын родился. Мальчик даже с малолетства был таким, что и на всем свете не бывало, умницей. Но когда мальчику исполнилось три года, его мать умерла, и он остался сиротой. Мужчина немного времени спустя взял другую жену. А она того мальчика, Эльяса, совсем не любила.

Когда мальчику исполнилось тринадцать лет, отец сына отдал на пять лет в учение. Однако Эльяс, пятилетнее учение освоив за один год, став ученым, вышел. А кроме этого, другого места учебы не было.

В один день отец Эльяса, узнав, что его свекровь, чтобы убить (Эльяса – Ф.Г.), собиралась дать яд: «Теперь не получается и не получается», – решив, отдает юношу бабушке.

Парень после того, как и там прожил около трех лет, чтобы повидать мир, узнать жизнь, выйдя из дома, отправился в путь.

Юноша побывал во многих местах, многих селах, городах. Затем в один день, когда шел по лесу, Эльяс повстречал одного путника. Эльяс с путником, произнеся приветствие, приняв приветствие, поздоровался. Спрашивает мужчину:

– Куда идешь? Чего странствуешь?

И Эльяс, рассказав, свою ситуацию разъясняет. Затем Эльяс спрашивает:

– А ты что за человек? – однако прямого ответа не сумел получить.

Однако мужчина юноше:

– А то ты иди со мной и со мной наравне живи, – говорит.

И Эльяс, обрадовавшись, с женщиной к нему домой идет.

Идут-идут, но до его дома дойти не могут.

На третий день и юноша, и мужчина после того, как пересекли одно большое море, добрались до дома мужчины. Озеро, лишь большой деревянный забор, а внутри него – очень красивый дом.

Мужчина, отведя юношу, показывает каждый отсек дома. В девять-десять отделов входят. Однако, когда добрались до одного большого отсека в середине, мужчина:

– Ты волен где угодно в этом доме жить, ходить, однако в этот отсек не входи, – сказав, просит.

И юноша:

– Не войду. Раз нельзя входить, зачем стану входить? Сделаю, как ты говоришь, – отвечает.

А у этого мужчины была одна красивая, и говоря «красивая», очень красивая дочь. И кроме нее еще один сын был. А мужчина, это сказав, и сам куда отправляется, не сообщив, выйдя из дома:

– Я отправляюсь в многодневный путь, пока я не приду, хорошо смотрите за домом, – сказав, выйдя, ушел.

Таким образом проходят дни, проходят годы. И Эльяс в тот дом вовсе не заходил. Так он тридцать лет прожил. Но из-за того, что слишком хорошо жил, они ему тремя днями казались.

Вот в один день Эльяс:

– Что бы ни случилось, я сюда разок не зайдя, не оставлю, – сказав, входит в дом, куда мужчина велел не входить.

Когда вошел – везде золотые статуи, и окружность дома (комнаты), будучи позолоченной, ярко-ярко блестела. А в центре комнаты – золотой трон, а перед тронem – одно большое зеркало.

Парень от удивления позабыл, и куда вошел. Затем он забрался на трон и, взяв в руки зеркало, долго смотрел. А в зеркале он, не видя своего отражения, видел другие вещи.

Эльяс в зеркале многие вещи увидел: раз посмотрел и в другой стране людей увидел, а когда второй раз посмотрел, свой родной дом увидел. А в доме его отец, постаревши, спал на кровати.

А дома ближе к ночи, пока он спал, один вор, подняв сундук с добром, выходил из дома. Эльяс отцу:

– Проснись, отец, дома воры уносят твоё добро! – сказал, а его отец, проснувшись, ударив кинжалом, убил вора.

Когда еще посмотрел: в селе сын эфенди, встав с ложа жены, шел к своей любовнице. Эльяс еще раз:

– Эй, проснись, твой муж, встав, на другое, дурное дело идет! – крикнул.

Тотчас же того мужчины жена, проснувшись, и мужа отругав, и пойдя к той женщине, к которой он собирался, выдрала ей волосы, (расцарапала) лицо.

Тогда, едва Эльяс, так поступив, закончил, хозяин дома, войдя, парню:

– Я тебе что говорил? Что это за дело твоё? Говори, что увидев, что сделал в этом зеркале! – сказав, отругал.



Эльяс все, что видел, что сделал, ему рассказал. Тогда мужчина:
– Очень дурное дело ты совершил, много грехов взял (на себя). Но тебе, не искупив те грехи, в этом доме жить нельзя будет, – сказал.

Парень:

– А как же поступив, буду искупать я те грехи? – спросил.

А мужчина:

– Уйди из дома и в течении трех лет для (каждого) увиденного бедняка не жалея добра, которое сможешь сделать, – сказал. – Затем, когда, искупив те грехи, придешь, свою самую красивую дочь тебе отдам, – сказав, дал слово.

Эльяс, покинув дом, много ходил, много бродил. Он в течении трех лет, не жалея того, что было в его силах (не покладая рук), каждому бедному человеку, работая и добытые деньги отдавая, много добра сделал.

Через три года Эльяс вернулся. А мужчина, его второй отец:

– Вот, теперь ты искупил сотворенные тобой грехи, – сказал. – А то, когда ты, сказав отцу, вынудил убить преступника, отец твой стал многогрешным. И сын эфенди, поссорившись со своей женой, и жену, и малых детей своих оставив, уйдя, с той своей другой (женщиной), любовницей жил. И его грех, и грехи твоего отца – все на твою шею (голову) пали. А потому ты теперь поклянись в эту комнату не входить. Я же давал слово свою младшую дочь за тебя выдать – бери, – сказал и Эльясу свою очень красивую дочь отдал.

Эльяс поклялся второй раз в ту комнату никогда не входить. Затем, подождав два дня, на третий день на дочери мужчины женившись, устроил большой праздник, какого не бывало на свете. Девять дней и девять ночей, не останавливаясь, праздновали.

Через несколько лет свекр Эльяса, прожив более ста лет, состарившись, умер. Половина его богатства была отдана Эльясу.

Мудрость, образованность Эльяса стали известны во всех местах в той окрестности. Эльяса в той округе над всеми ханами главным избрали. Вот и он многие годы так прожил.

А в один день Эльяс из своего родного дома, о своем отце, бабушке, новость услышал. А мачеха отца Эльяса, дав яд, убила. А бабушка, вскоре после ухода от нее Эльяса, из-за совершенных мачехой Эльяса злодеяний, умерла от горя.

Эльяс, и свою мачеху вызвав, и многие села собрав, и в округе всех мудрых мужей позвав, устроив пир, угостил.

Затем Эльяс перед народом рассказал свою историю от начала до конца. Собравшийся там люд его мачеху за ее злодеяния повелел убить. И Эльяс, когда народ был в сборе, свою мачеху за причиненное зло изгнал на остров, где совсем не жили люди, решив, что это будет хуже, чем убить.

Затем Эльяс со своей женой и детьми остался жить.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 23. Записал Ж.М. Гузеев 24.06.1960 г. в с. Верхняя Жемтала КБАССР от 70-летнего Занкишиева Якуба Керимовича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Сказку Якуб слышал от деда.

Волшебная сказка, основанная на мотивах о невинно гонимом, о мачехе и пасынке.

В произведении упоминается чудесный предмет – зеркало, показывающее происходящее на свете.

Сказка имеет поучительный характер: в ней утверждаются идеи об ответственности человека за свои поступки, о торжестве правды над злом.



КЪОЗУЧУКЪ

Болганмыды, болмаганмыды дуняны бир кезиунде бир адам къатыны бла жашап болганды да, аланы сабийлери болмаганды. Сабийге термилип болгандыла.

Къалай болган эсе да, къартлы(гъы)нда къатын бууаз болганды. Анга къарт киши бек къууанып болганды. Сора къозлар кезиую болганды къатынны. Киши адамла чакъырганды, сора къатын къозлаганды. Къарт киши, не тапханын билирге суююп, ары-бери жюрюй, къатынлагъа сорады:

– Не тапханды? Къызмы, жашмы?

Къатынла, айтыргъа арсарлы да болуп, айтадыла:

– Адам улу туумаганды, къатынынга бир къозу тууганды, – дегендиле.

Киши бек бушуу-бушман болады, алай этер амалы болмайды. Да не этерик эдиле, къозуну къозуча асырап болгандыла. Къозу мырка къозу болганды. Топча чартлап, эшикге бла юйге чабып ойнап, анасы бла атасы да анга къарап болгандыла.

Сора бир кюн, экиси да олтуруп, къозу да эшикге жайылып кетип турганлай, киши бла къатын уллу жилиу болгандыла:

– Бу халкъгъа болмаган зат бизге нек болду? Къартлыгъыбызда энди къозу ёмюрге бизни бла былаймы жашарыкъды? Андан эсе, ёлюп кетгiedi, – деп, бир бирине алай айта турганлай, къозу, чабып, эшикден киреди.

Аланы алай мудах болганларын къозу эслейди, къозу да бек мудах болады. Сора къозу да атасына адам тил бла айтады:

– Атам, мени ючюн сен мудах болма. Мен сизни мудах этмем. Мен сени жумушха жиберейим. Ол жерде бир элде бир шыйых барды. Аны аты Хажимырзады. Анга бар да, айт: «Сени бир къозу жууугъунг: «Манга къатын мадар», – деп айтханды», – дерсе. Сора, атам, не айтханын манга айтып келирсе, – дейди къозу.

Атасы, къууанып:

– Бек ахшы, айтырма барып, – дегенди.

Сора къозуну атасы кетеди. Барады Хажимырзагъа:

– Салам алейкум! Мен санга бир жумушум болуп келгенме. Мени сени къозу жууугъунг жибергенди: «Манга, не да болсун, бир къатын мадарсын», – деп, – дейди.

– Аллах, Аллах! Къозугъа мадармасакъ, кимге мадарлыкъбыз? Мадарырма! Кеси уа къалай турады къозу?

– Жокъду бир хатасы, бек иги турады.

– Ахшыды, бир айдан, киеу нёгер да къурап, къозуму жиберсенг, къатын берип иерем, – дейди.

Къозуну атасы къууанып кетеди. Келип хапарны къозугъа айтады. Къозу да къууанады.

Сора, бир ай жетгенден сора, къозугъа киеу нёгер да къурап, къозуну да, файтоннга миндирип, атасы ашырды.

Бир заманда киеу нёгер Хажимырзагъа келеди. Ол, бек къууанып, къонакъланы юйге элтеди. Къозуну да, файтондан тюшюрюп, юйге кийиреди. Сора Хажимырза да, барып, къызны хазырлайды, эм киеу нёгер, барып, къызны алып келедиле да, сау элге хапар болады къозуну къатын



алгъаны эм кыызгъа да селешедиле: «Къозугъа къалай барды?» – деп. Алай кызыны хапары болмайды. Шыйых бир шуехума деп келтиреди кызыны.

Хажимырза шыйых, битеу элге хапар эсе да, белгили болурча, ахыр заман ай этеди эм шерият бла кыызгъа неках этеди. Некахдан сора, кызыны да алып, къозу да жанына жатып, шыйых да олтуруп жанларында, файтонда келтиредиле. Юлеринде уллу той ахырзамандан сора келин уллу жилиугъа къалады:

– Къозугъа, алдап мени, алдыла, – деп.

Сора шыйыхны оноуу бла къозуну кыыз болгъан юйге атадыла. Къатыны жилигъанын кёрюп, къозу адам тил бла айтады:

– Не затха жилийса? Менден сени не кёлюнг къалгъанды? Сен Аллахны жазууу бла манга тюбегенсе, – деп, къатыныны кёлюн алып, сыдырып, къозу къапны тешип, кюн таякъча бир ахырзаман жаш кызыны аллында ёрге сюеледи.

Кыыз аны кёргенде, жаны жашха кетеди. Сора жаш айтады:

– Энди мени санга бир аманатым барды. Ол да мени къозу къабымды. Къозу къабыма жукъ болса, сора экибизни жашауубуз бир боллукъ туююлдю. Не да болсун, анга сакъ бол, – деп тилейди.

Къатынчыкъ къозу терини, алай айтханлай, алып, аркъасына жыйрыгыны ичинден тигип къояды эм кийгенлей турады. Хар жыйрыкъ жууардан сёгюп, кюбюрге бир салады.

Бир жол да, къозу бир тойгъа кетгенлей, къатыны быстыр жууама деп башлап тургъанлай, бир обур къатын келеди.

– Келинчик, сени бла бираз олтурайым деп келеме, – дейди.

– Олтур, – деп, келин ыразы болады.

Сора келин да быстыр жууа, обур да хапар айта, кёп олтурадыла. Келин, быстыр жуууп бошап, къозу тери да агъырыкъда, обур къатынны жанына олтурады. Келинни башын сылай, ариу айта жукълатады. Келин къалкъыгъанлай, обур, секирип къобуп, агъырыкъдан терини, сермеп алып, чулгъап, отха атады. Келинчик, уянып, отха чабады, алай тери, жыйырылып, жумдурукъча болады. Олсагъатда къозу, билип, чапханын бузмай, юйге жетеди, алай болгъанлыкыгъа, кеч болады иш.

Обур къатынны, тутуп, тюз алайда ёлтюреди жаш. Аны да ёлтюрюп, юйюне кирип, айтады къатынына:

– Мени буйругъум алайды: энди мындан ары не кёп жашасакъ да, экибизни жашауубуз бир боллукъ туююлдю. Аллах бизни жазууубузну бир этген болмаз эди. Болсада, санга – саулукъ, манга – эсенлик. Сау-эсен къал, – деп, айтып бошар-бошамаз, бир алтын къанатлы кёгюрчюн болуп, къозу кёкге учуп кетеди.

Къатыны да жилий-сарнай къалады, халкъ да алагъа сейир эте.

Энди къатынны кече, кюн да, кёгюрчюнню тапмай, жашауу болмай тебирейди. Кёгюрчюнню сурап, излей-излей, хар жолоучугъа сурай:

– Быллай кёгюрчюн кёрген бармыды? – дей, бир узакъ жерде бир жолоучулагъа тюбейди.

Сора ол жолоучула айтадыла ол кёгюрчюнню хапарын:

– Ол жерде жол жанында бир жангыз терек барды. Ол терекни юсюнде, жукъусу келе, бир алтын къанатлы кёгюрчюн кёрген эдик, – дейдиле.



Ол хапарны эшитгенлей, къатын къууанып тебирейди. Эки кюн да жюрюп, ол терекге жетеди. Къараса: ол кёгюрчюн, терекни тёппесине къонуп, къалкъыуу келе тургъанлай кёреди.

«Энди Аллах берди», – деп, къатын, терекге илинип, ёрлей-ёрлей барып, кёгюрчюннге жетеди. Къатын, узалып, кёгюрчюнню тутайым дегенлей, кёгюрчюн кёзлерин ачып айтады:

– Ай харип, мынча заманны кесинги нек къыйнагъанса? Мен санга айтханма: мени жашауум энди сени бла боллукъ туююлдо. Аллахны буйругъу алайды. Къыйнама кесинги! – деп, кёгюрчюн кёкге кётюрюлюп кетеди.

Къатын кёзлеринден ташайгъынчы къарайды, кёгюрчюн кёзлеринден тас болургъа, кёзлери къарангы этип, терекден кетеди.

Къатынны къабыры терекни тюбюнде болады. Терек къатыннга аны сын ташы болуп къалады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 12 паспорт. КъМАССР-ны Търныаууз шахарында жашагъан 1919 жылда туугъан Будайланы Хызирден 27.12.1959 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Чыгъармада жомакъ, таурух элементле да тюбейдиле. Анда сейирлик сабийни – къозуну – туугъаны (миф кёз къарамны, тотемизмни ызы), аны юйдегили болууу, сыфатыны тюрлениую, къатынына аманаты, аны бузулууу, баш жигитни чыпчыкъ сыфатха кирип, учуп кетгени да оруслананы «Царевна-лягушка» деген жомакъларына ушатады. Алай ахыры насийхат халлы болгъаны, аманатны бузаргъа жарамангъанны чертилгени чыгъарманы таурухха жууукълашдырады. Алай бла, ол жанр формаланы къатышыуларыны туура юлгюсюдю дерге боллукъду.

Текстде арап (шыыйх, салам алейкум, Аллах) эм орус (файтон) тилден кирген сёзле тюбейдиле.

ЯГНЕНОК

Было ли, не было ли, в какой-то период мира один человек (мужчина) жил со своей женой, и у них не было детей. Очень хотели ребенка.

Как-то получилось, что в старости женщина забеременела. Этому старик очень радовался. Затем настала женщине пора разродиться. Муж позвал людей, и жена родила. Старик, желая узнать, кого родила, туда-сюда слоняясь, спрашивает женщин:

– Кого родила? Дочь ли, сына ли?

Женщины, и сказать не решаясь, говорят:

– Не человеческий ребенок родился, у жены твоей ягненок родился, – сказали.

Мужчина очень опечалился, но делать нечего. Да что бы сделали, ягненка как ягненка растили. Ягненок был позднерожденным ягненком. Выскакивая как мячик, во двор и домой бегая, играл, а мать с отцом за ним наблюдали.

Затем в один день, когда оба сидели, а ягненок ушел бродить на улице, муж с женой сильно расплакались:

– Почему то, что с народом не случилось, с нами произошло? В старости нашей теперь ягненок навеки с нами так жить что ли будет? Лучше бы умер, – в то время, как друг другу так говорили, ягненок забежал в дверь.

Ягненок замечает, что они так печальны, и ягненок тоже очень опечалился. Тогда и ягненок отцу человеческим языком молвит:

– Отец, не грусти из-за меня. Я вас не опечалю. Давай, я пошлю тебя с делом. В той земле в одном селе есть один шейх. Его имя Хажимурза. Иди к нему и скажи: «Один твой родич-ягненок: «Раздобудь мне жену», – сказал», – молвишь. Затем, отец, что ответит, мне придешь и скажешь, – говорит ягненок.

Его отец, обрадовавшись:

– Очень хорошо, пойду, скажу, – ответил.

Затем отец ягненка уходит. Идет к Хажимурзе:

– Салам алейкум! Я к тебе, одно дело имею, пришел. Меня твой родич-ягненок послал, сказав: «Мне, какую бы то ни было, пусть жену раздобудет», – говорит.

– Аллах, Аллах! Если ягненку не добудем, кому добудем? Раздобуду! А сам-то как поживает ягненок?

– Нет никаких проблем, очень хорошо живет.

– Хорошо, если через месяц, собрав дружок жениха (свадебный поезд / дружину), отправишь моего ягненка, жену отдав, отправил бы, – говорит.

Отец ягненка, обрадовавшись, уходит. Придя, сообщает новость ягненку. И ягненок радуется.

Затем, когда месяц прошел, ягненку собрав свадебную дружину, отец проводил, и ягненка посадив в фаэтон.

В какое-то время свадебный поезд приезжает к Хажимурзе. Он, очень обрадовавшись, ведет гостей в дом. И ягненка, спустив с фаэтона, в дом вводит. Тогда и Хажимурза, пойдя, девушку подготавливает, и дружки жениха, пойдя, девушку забирают и привозят, и по всему селу распространяется весть о женитьбе ягненка, и в адрес девушки тоже болтают: «Как она за ягненка вышла?» – говоря. Но девушка (об этом) не знает. Шейх, сказав, что для одного своего друга, привозит девушку.

Шейх Хажимурза, хоть и новость для всего села, чтобы было известно, назначает крайним сроком один месяц и по шариату совершает неких* для девушки. После неких, и девушку забрав, и ягненок лежа рядом с ней, и шейх, сев рядом с ними, на фаэтоне привозят. Дома после большой свадьбы, сноха ударяется в сильный плач.

– За ягненка, меня обманув, взяли, – говоря.

Затем по указанию шейха ягненка забрасывают в дом (комнату), где находилась девушка. Увидев, что его жена плачет, ягненок человеческим языком молвит:

– Из-за чего плачешь? Чем я тебя обидел? Ты по воле Аллаха со мной повстречалась, – сказав, жену утешив, содрав, сняв овечью шкуру, как солнечный луч небывалый парень предстал перед девушкой.

* *Неких* – бракосочетание по мусульманскому обряду [5, 992].



Когда девушка его увидела, душа ее прикипела к парню. Тогда юноша говорит:

– Теперь у меня к тебе один наказ есть. И это – моя овечья шкура. Если с моей овечьей шкурой что-то случится, тогда у нас двоих жизнь (судьба) общей не будет. Что бы ни произошло, береги ее, – просит.

Едва так сказал, женошка овечью шкуру, взяв, к спине, к изнанке платья пришивает и носит (постоянно). Каждый раз перед стиркой платья, распоров, в сундук кладет.

И как-то раз, когда ягненок ушел на свадьбу, а его жена собралась постирать вещи, приходит одна ведьма.

– Невестушка, решив с тобой немного посидеть, иду, – говорит.

– Садись, – отвечая, сноха радуется.

Тогда, сноха стирая одежду, а ведьма болтая, долго сидят. Сноха, закончив стирать одежду, и овечья шкура – на бельевой веревке, садится рядом с ведьмой. Глядя невестку по голове, успокаивая, усыпляет. Едва сноха задремала, ведьма, вскочив, схватив с веревки шкуру, свернув, бросает в огонь. Невестка, проснувшись, бросается к огню, но шкура, съжившись, становится размером с кулак. Тотчас ягненок, узнав, не сбиваясь с бега, добирается домой, однако, поздно оказывается исправлять ситуацию.

Парень, схватив, прямо там же убивает ведьму. И ее убив, войдя в дом, говорит жене:

– Моя судьба такова: теперь в дальнейшем как бы долго ни прожили, у нас двоих жизнь общей не будет. Наверное, Аллах наши судьбы не соединил. Тем не менее, тебе – здоровье, мне – благополучие. Счастливо оставаться, – сказав, едва закончил, превратившись в златокрылого голубя, ягненок улетает в небо.

И жена его, плача-стена, остается, и народ – им дивясь.

Теперь женщине ни ночью, ни днем, не найдя голубя, жизни нет. Спрашивая о голубе, ища-ища (разыскивая), у каждого путника справляясь:

– Такого голубя видевший есть? – говоря, в одной далекой земле (стране) встречает неких путников.

Тогда те путники рассказывают новость о том голубе:

– В том месте возле дороги есть одно одинокое дерево. На том дереве видели одного сонного, златокрылого голубя, – говорят.

Едва услышав этот рассказ, женщина, обрадовавшись, отправляется (в путь). Бродя два дня, добирается до того дерева. Смотрит: видит, как тот голубь, приземлившись на верхушку дерева, дремлет.

«Теперь, Аллах дал», – решив, женщина, ухватившись за дерево, карабкаясь вверх, добирается до голубя. Едва женщина, потянувшись, хотела голубя поймать, голубь, открыв глаза, говорит:

– Ай, несчастная, зачем себя столько времени мучила? Я тебе сказал: моя жизнь теперь с тобой не будет. Такова воля Аллаха. Не мучай себя, – сказав, голубь, поднявшись в небо, улетает.

Женщина, пока не исчезает с глаз, смотрит, к тому времени, когда голубь пропадает из поля зрения, в ее глазах темнеет и (она) падает с дерева.

Могилу женщины устраивают под деревом. Дерево становится для женщины ее надгробием.



Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 10, паспорт 12. Записано 27.12.1959 г. в г. Тырныауз КБАССР от Будаева Хызира (1919 г.р.) (автозапись).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

В произведении встречаются сказочные и легендарные элементы. Рождение в нем чудесного ребенка – ягненка (след мифологических воззрений, в частности, тотемизма), его женитьба, оборотничество (изменение внешности), наказ жене, его нарушение, то, что главный герой, превратившись в птицу, улетает, напоминает русскую сказку «Царевна-лягушка». Однако поучительность концовки, подчеркивание того, что нельзя нарушать наказ, сближает произведение с легендой. Таким образом, можно утверждать, что оно является наглядным примером смешения жанровых форм.

В тексте встречаются слова, вошедшие из арабского (шейх, салам алейкум, Аллах) и русского (фаэтон) языков.



КЪОШУНЧУКЪ

Эртте-эртте бир къатын жашап болгъанды. Аны сабийи жокъ эди. Алай кюнлени бир кюнюнде ол къатын сабий орунуна бир къошунчукъ тапханды. Бушуу-бушман болгъанды: «Аллах къурамады, сабий тапмай, къошун табып къойдум да», – деп ачыу этгенди.

– Охо, энди сен бу къошунчукъну да не этериксе, андан эсе манга бер да къой, – деп, къошунчукъну аначылыкъ этген къатын тилегенди.

– Да, керти да, мен аны башымамы урлукъма, сени болсун, – дегенди да, къатын къошунчукъну аначысына бергенди.

Ол а элтгенди да, къызына кѣргюзтгенди. Къыз анга бек къууанганды. Сора ала жау къайнатхандыла да, къошунчукъгъа къуйгъандыла. Къошунчукъда жау бузлагъанды.

Бир эрттенликде къошунчукъ бузлагъан жауу бла дингил-дингил дегенди да, кетгенди. Баргъанды да, анасыны юйюню аллында тохтап:

– Ой ынна, эшикни ашчы! – дегенди.

Анасы эшикни ачханды, къараса – ол а къошунчукъ жау келтирип тура эди. Къууанганды да, къошунчукъну юйюне элтгенди. Жауун эритгенди да, чоюннга къуйгъанды. Биягъы къошунчукъ дингил-дингил этип кетгенди. Бара баргъанды да, бир юйню эшик аллында тохтагъанды. Ол юйню къызы чыкыгъанды да, къошунчукъну кѣргенди. Баргъанды да юйге:

– Ой анам, къошунчукъ тапханма, – дегенди.

– Охо, аурунг, иги эди да ол а, жаубузну къуяргъа орун тапмай тура эдик да, – дегенди анасы.

Эритгендиле да, жау къуйгъандыла. Жау бузлагъандан сора, биягъы къошунчукъ дингил-дингил этип кетгенди. Юйюню аллына келип:

– Ой ынна, эшикни ашчы! – деп къычыргъанды.

Анасы эшикни ачып къараса, биягъы къошунчукъ толу жауу бла келип тура эди. Анасы элтгенди да, къошунчукъну жауун эритгенди. Сора жауу биягъы чоюннга къуйгъанды.

Биягъы къошунчукъ дингил-дингил этип кетгенди. Тѣнгереј кетгенди да, суу боюнунда къызла быстыр жууа тургъанларын кѣргенди. Жашыртын баргъанды да, ол быстырланы игилерин-игилерин жыйгъанды. Сора ызына атланганды да, дингил-дингил этип, юйюне келгенди.

– Ой ынна, эшикни ашчы! – дегенди. Анасы эшикни ачханда:

– Ой ынна, жегенни тутчу, – дегенди.

Анасы жегенни тутханды. Къошунчукъдан ариу дарий быстырла жегеннге къуюлгъандыла.

– Былай этсе, сабий да къосетирик тнойюлдо, ай Аллах ыразы боллукъ! – дегенди къатын.

Быстырлары тас болгъан къызла уа аланы излейдиле да, тапмайдыла.

Сора бир заманда къошунчукъ тѣнгерегенди да жетгенди, биягъы быстырланы къалгъанларын да къошуннга басып башлагъанды. Къызла аны кѣргендиле да, чапхандыла. Быстырларын сыйыргъандыла да:

– Оу-у, ол бирси быстырларыбызны да бу урлагъан болур, – дегендиле да, къошунчукъдан кѣргендиле.



Къошунчугъ'а санга айтханмы этерик эди? Сора кызла, тутхандыла да, анга балчыкъ къуйгъандыла да, жибергендиле. Къошунчукъ, дингилдингил эте, биягъы юйюне келгенди.

– Ой ынна, эшиклени ашчы, – дегенди.

Анасы эшиклени ачханды.

– Ой, ынна, чоюнну тутчу, – дегенди.

Анасы чоюнну тутханды. Къошунчукъ ичиндеги балчыкъны жауу болгъан чоюннга къуйгъанды да, ол а жау бла къатыш болгъанды да къалгъанды.

– Ой, кюнюнг къурусун, хайырынг, хатанг да тенг болду да! – дегенди да, анасы къошунчукъну ургъанды да, ууатханды.

Аны кезюбюз бла кёрмегенибиз кибик, ауруу-талау да кёрмей турайыкъ!

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 331–332 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кечюргенди.

«Къошунчукъ» деген жомакъны сейир-тамаша жомакъдан илишанлары барды. Мында жомакъны баш жигити къошунчукъду. Аны магия кючю болгъан хунери барды. Алай бла жомакъда адамда болгъан гудучулукъгъа айып салынады.

Анда айтылгъаннга кёре, тири, хатачы къошунчукъ кесини иесине кеп тюрлю багъалы затла келтирип турады. Ахырында уа, аны къадары анга заран жетдиреди: гудучу келтирген топуракъны жауу бла къатышдырадыла. Алай бла хантны бузадыла.

Жомакъны ахырында белги болуп кёргюзтюлгенича, аны иеси, тиширыу, ачуланып, къошунчукъну ууатады. Ол а, халкъны жашаугъа кез къарамы бла гудучулукъ сыйсыз ишге саналгъанын кёргюзтеди.

КУВШИНЧИК

Давным-давно жила одна женщина. У нее не было детей. Однако в один из дней эта женщина вместо ребенка родила кувшинчик. Она сильно заперезживала: «Аллах не допустил, не ребенка родила, а одного маленького кувшинчика родила», – сказала она и сильно загоревала.

– Ага, что ты будешь с этим кувшинчиком делать, лучше отдай мне, – сказала повитуха и попросила у нее кувшинчик.

– Да, на самом деле, зачем он мне сдался, пусть будет твоим, – сказала женщина и отдала повитухе. А она понесла и показала своей дочери. Дочь ему сильно обрадовалась. После этого они растопили масло и залили в кувшинчик. И в кувшинчике масло затвердело.

Однажды утром кувшинчик с затвердевшим маслом, крутятся-крутятся, покатился. Пришел и, остановившись перед домом матери:

– Ой, мама, открой-ка двери! – сказала.

Мать, отворив двери, когда посмотрела, – а это оказывается кувшинчик принес масло. Она обрадовалась и понесла кувшинчика домой. Растопила масло и залила в чугунок. Опять кувшинчик, крутятся-вертятся, укатил. Шел-



шел и остановился у дверей одного дома. Оттуда вышла девушка и увидела кувшинчика. Пришла домой:

– Ой, мама, я нашла кувшинчик, – сказала.

– Хорошо, молодчина, это же очень хорошо, мы же не знали, куда наше масло залить, – сказала мать.

Они растопили масло и залили туда. Когда масло затвердело, опять тот же кувшинчик, крутясь-крутясь, укатил. Остановиваясь перед своим домом:

– Ой, мама, открой-ка двери! – прокричал.

Когда мать открыла двери и посмотрела, то увидела, что тот же кувшинчик, полный масла, пришел к ней. Мать понесла и растопила в кувшинчике масло. После этого она опять залила масло в тот же чугунок.

Тот же кувшинчик опять крутясь-крутясь, ушел. Он, покотившись, некоторое время, увидел на берегу реки, как девушки занимаются стиркой. Он сходил тайком и из их вещей выбрал все хорошее. После этого он отправился обратно, крутясь-крутясь, вернулся к себе домой.

– Ой, мама, открой-ка двери! – сказал.

Когда мать открыла двери:

– Ой, мама, принеси мне циновку, – сказал.

Мать принесла циновку. Из кувшинчика посыпались красивые, шелковые вещи на циновку.

– Если всегда будет так, даже по ребенку не даст скучать, ай, Аллах, чтоб тебя вознаградил! – сказала женщина.

А девушки, которые потеряли свои вещи, ищут их и не находят.

Через некоторое время кувшинчик покотился и достигнув того места, начал остатки вещей заталкивать в кувшинчик. Девушки, увидев это, прибежали. Они, отобрав у него свои вещи:

– Ой-й, наверное, прежние вещи кто украл, это он, – сказали и пристали к кувшинчику. А кувшинчик разве признался бы? После этого девушки его поймали и засыпали туда вязкую грязь и отпустили. Кувшинчик, опять крутясь-крутясь, вернулся к себе домой.

– Ой, мама, открой-ка двери.

Мать открыла двери.

– Ой, мама, поставь котел, – сказал он.

Мать поставила котел. Кувшинчик, всю вязкую грязь, которая была у него внутри, высыпал в чугунок с маслом, где она полностью смешалась с ним.

– Ой, чтобы день твой погас, и польза, и вред от тебя сравнялись, – сказала мать и, ударив кувшинчика, разбила его.

Как мы это не видели своими глазами, чтобы так же вы не видели горя и болезней!

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 331–332) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка с элементами волшебства, где главным героем выступает предмет (кувшинчик), наделенный магическими антропоморфными свойствами.



В сказке осуждается такой человеческий порок, как воровство. По сюжету, юркий, шаловливый кувшинчик повадился приносить своей матери разного рода ценности. В конце концов судьба наказала воришку: принесенную кувшинчиком грязь нечаянно смешали с маслом, тем самым испортив хороший продукт. Символика финала сказки (мать рассердилась и разбила кувшинчик вдребезги) связана с народным осуждением воровства как антиценности.



КИШИ БЛА САРЫУЕК

Эртте заманлада бир киши бла бир къатын болгъандыла. Киши хар кюн сайын отуннга барыучу эди. Отун келтирсе, къатын, анга бюсюремей, къургъакъ отун келтирсе: «Мен муну не этерикме? Къаура отун кибик!» – деп, кишини аллына бир тургъан гыржынчыкъны кёк тузлукъ бла салып, чыгып кетип болгъанды. Киши суу отун келтирсе уа: «Мен муну къалай жандырлыкъма, бу суу отунланы?!» (– дегенди. – *Ф.Г.*). Анга да алай этип, бир тургъан гыржынчыкъ бла кёк тузлукъ салып, эшикге чыгып кетип къалгъанды.

Алай эте тургъанды да, киши бир жол отуннга баргъанды. Ол бир къая тешикни ичинде бир кём-кёк кёлню кёргенди да, киши акъылына келгенди: «Ёмюрюм къатынсыз къаллыкъ эсе да, къатынымы бу кёлге атып къурутмасам, жашауум амандан кетерикди», – деп сагъыш этгенди.

Отун этип, киши юйюне келгенди да, ингирликде къатынына айтханды:

– Къатын, мен бюгече бир къая тешикни ичинде бир къадар хазна кёргенме да, ой, алтынмы дерсе, накъут-налмасмы дерсе, аны ичинде болмагъан зат жокъду. Сен келип этеригинг да болмаз, кесим жыярма, – деген кибик этгенди.

– Айхай, кесинги уа жиберип къоймам! Тап биле эдинг, хазнаны кесинг жыяргъа! Мен да сени бла барлыкъма! – деп, къатын тагъылып тохтагъанды.

Сора киши айтханды:

– Мен эрттенбла эртте кетерикме, сен келлик эсенг, – дегенди.

Ала, адам тургъунчу, эрттенбла эртте кетгендиле. Киши къатыннга дорбунну кёргюзтгенди. Экиси да дорбуннга баргъандыла да, киши, ичине къарагъан кибик этип:

– Ой, муну ичинде болмагъан хазна жокъду! – дегенди.

Къатын:

– Кетчи, мен да бир къарайым, – деп, ары къарагъанлай, киши къатынны, артындан табаны бла уруп, кёлге атады.

Алайда къатын кёл тюбюне кетеди. Киши, отун да этип, юйюне келеди. Сора къоншулары къатынны кишиден сурай башлайдыла. Киши айтады:

– Билмейме, къайры кетген эсе да. Бир узакъ жерде жууукъларым барды деучю эди, ары кетген болур ансы. Ол мени айтханыма къараймыды? – деп къойгъанды.

Къайдагъысын кишиге да айтмагъанды да, къойгъанды.

Сора бир кюн кишини эсине тюшгенди да: «Арабин, ол къатынны суу башынамы чыгъаргъан болур, огъесе сууну тюбюнде къалыпмы къалгъан болур?» – деп, дорбуннга къараргъа баргъанды. Къараса, дорбунну ичинде белинден огъарысы суудан чыгып тургъан бир сарыуекни кёргенди. Сарыуекни белинден огъарысы суудан чыгып, белинден төбенгиси суугъа батып тура эди.

Сарыуек кишини кёргенде:

– Эй, адам улу, сен менден къачма, мени санга бир хатам тиймез, къоркъма! Бери кел, – дегенди.

Киши аны къатына келип тохтагъанды. Сора сарыуек айтханды:

– Ай, манга мындан чыгъаргъа бир болуш. Бери бир къатын келгенди да, манга тынчылыкъ бермейди. Манга мындан чыгъаргъа болушсанг, мен санга этмезлик игилик болмаз эди, – дегенди.



– Да къалай чыгъарайым? Ключом жетерик туююлдю, – дегенди киши.

– Сен жипни эшекге байла да, бир кыйырын манга бер. Бир кыйырын белиме байларма да, сен а дагыда бир жипни манга бер, алай бла чыгъарма, – дегенди.

Алай бла сарыуекни дорбунда суудан тышына чыгъарады. Сарыуек анга:

– Мен санга юч ахшылыкъ этерикме, – дейди. – Бир ахшылыгъым: бир элни бир жеринден суу чыгъады: ол сууну мен барып тыйым, сен халкъга айт: «Сууну мен чыгъарырма, манга бир(ер) ёгюз, не ёгюзге тенг ахча берсегиз», – дейди.

Дагыда башха элlege да алай этерге дегенди.

Андан сора сарыуек, барып, бир элни башында тохтап, сууну тыйганды. Киши алайда халкъга айтады:

– Манга бир(ер) ёгюз, не бир ёгюзге тенг ахча беригиз. Мен суу бошларга барама, – дейди.

Халкъны игилерин, ахшыларын жыйып, къарап-къарагъынчы бир ёгюз, не бир ёгюзге тенг ахча жыйып береди. Киши, сарыуекге барып:

– Энди сууну бошла, – дейди.

Сарыуек, сууну бошлап, алайдан башха элге барлыгъын кишиге айтып билдиреди да, кетеди. Биягъы башха элге барып, аланы сууларын тыяды да, ала уа сийдиклери бла ашарыкъ этерге жетеди.

Сора киши ол элге барып айтады:

– Мен сизге суу жиберейим, манга бир(ер) ёгюз, не да бир ёгюзге тенг ахча беригиз, – дейди.

Элни ахшы, игилери жыйылып, терк окъуна бирер ёгюз, не да бир ёгюзге тенг ахча жыйып береди. Алайдан, алгъан малын да, жыйгъан ахчасын да алып, юйюне элтип кетеди. Сарыуекге айтып, сууну бошлатады.

Адамла, чабышып, суудан, кирине жетген – киринден, ариуундан жетген – ариуундан аладыла.

Ючюнчю жол да сарыуек бир башха элни суун тыяды. Биягъы, халкъ жыйылып, ол киши сууну бошлатхан хапарын эшитип:

– Ол бизге суу жиберсе эди, не айтса да, берир эдик, – дейдиле.

Киши суу жиберирге сёз береди. Ол элни адамлары да бирер ёгюз, не да бир ёгюзге тенг ахча береди. Андан киши биягъы, сарыуекге барып, айтып, сууну бошлатады. Халкъ, уллу, гитче да, суугъа чабадыла. Киши аны бла бай болады.

Энди сарыуек, башха жерге барып, сууну тыйып тохтайды. Бу тёртюнчю кере тыяды. Халкъ биягъы кишини чакъырып айтады:

– Сен не айта эсенг да, берейик. Бизге суу бошла, – дейдиле.

Ала да бирер ёгюз бла не анга тенг ахча береди. Киши сарыуекге тёртюнчю кере барады. Жолда бара, сагъыш этеди: «Энди сарыуекге былай айтайым: «Ол сени сууда, дорбун ичинде кыймагъан къатын келе турады», – десем, ол къачар», – деп, сагъыш этип, акъылына алай келгенди.

Сарыуекге барды. Сарыуек анга:

– Аха, энди уа нек келдинг? Юч тилегинги толтурургъа айтхан эдим да, аны толтурдум, – дегенди.

– Келип а, нек келеме? Ол сени дорбун ичинде сууда кыймагъан къатын келе турады, – дейди.



Киши алай айтханлай окъуна, сарыуек солууун ичине бир тартып, жаны, кьоркыгъандан, чыгып кетеди.

Алайдан, сарыуек ёлгенден сора, суу да бошланып, халкъ суудан кыйнамай жашап кьалгъандыла.

Киши уа, бай болуп, башха кьатын алып кьалады.

КьМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 13 паспорт. КьМАССР-ны Чегем элинде жашагъан Гочаланы Ахмадиядан 25.09.1958 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Амалчы жарлы кишини юсюнден сюжетге кьуралгъан сейир-тамаша жомакъ. Чыгъармада ажайып жаныуар – сарыуек – алгъа баи жигитге юч кере болушады, ахырында уа, аны жауу болуп, киши аны хыйлалыгъы бла хорлайды, алдап ёлтюреди.

МУЖЧИНА И ДРАКОН

В давние времена были (жили) один мужчина и одна женщина. Муж каждый день ходил за дровами. Когда привозил дрова, жена, не будучи им довольна, если сухие дрова привозил: «Что я буду с этим делать? Как хворост!» – говоря, перед мужем старый хлебушек с рассолом поставив, выйдя, уходила. А если мужчина сырые дрова привозил: «Я их как буду разжигать, эти сырые дрова?!» – говорила. И с ним так поступив, черствый хлебушек и рассол поставив, выйдя во двор, ушла.

(Она постоянно) так делала, и муж однажды пошел по дрова. Он в одной скальной дыре увидел одно синее-пресинее озеро, и мужчине пришло на ум: «Даже если на всю жизнь останусь без женщины, если свою жену, в это озеро бросив, не уничтожу, моя жизнь в горе пройдет», – подумал.

Нарубив дрова, мужчина пришел домой и вечером сказал жене:

– Жена, я этой ночью в одной скальной дыре так много добра видел, ой, золото ли скажешь, драгоценные ли камни скажешь, нет вещи, которой бы внутри не было. Тебе, наверное, и ходить незачем, сам соберу, – сказал как бы между прочим.

– Разумеется, тебя самого не пушу! Хорошо придумал, добро самому собрать! Я тоже с тобой пойду! – сказав, пристала жена.

Тогда муж сказал:

– Я утром рано уйду, если ты пойдешь, – молвил.

Они, пока люди не встали, утром рано ушли. Муж показал жене пещеру. Оба пошли к пещере, и муж, сделав вид, что смотрит внутрь:

– Ой, нет добра, которого не было бы внутри нее! – воскликнул.

Жена:

– Уйди-ка, и я гляну, – сказав, едва туда заглянула, муж жену, сзади пнув, сбросил в озеро.

Тут жена уходит на дно озера. Муж, и дрова заготовив, домой приходит. Затем соседи начинают спрашивать мужчину о жене. Муж отвечает:



– Не знаю, куда ушла. Говаривала, что где-то в дальнем краю родственники есть, наверное, туда уехала. Разве она смотрит на то, что я говорю? – только и сказал.

Ее местонахождение никому нераскрытым оставил.

Затем в один день мужчине пришло на ум и, подумав: «Арабин, эту женщину на поверхность воды вынесло или под водой осталась?» – отправился посмотреть на пещеру. Когда посмотрел – внутри пещеры высунувшегося выше половины из воды одного дракона увидел. Верхняя половина дракона поверх воды, нижняя половина в воде находилась.

Дракон увидев мужчину:

– Эй, сын человека, ты от меня не убегай, от меня тебе никакого вреда не будет, не бойся! Иди сюда, – сказал.

Мужчина остановился, подойдя к нему. Тогда дракон сказал:

– Ай, помоги-ка мне отсюда выбраться. Сюда одна женщина пришла и мне покоя не дает. Если сможешь мне отсюда выбраться, нет такого добра, которого я бы для тебя не сделал, – промолвил.

– Да как же мне вытащить? У меня сил не хватит, – сказал мужчина.

– Ты привяжи веревку к ослу и один конец дай мне. Один конец привяжу к себе на пояс, а ты еще одну веревку мне дай, так и вылезу, – ответил.

Таким образом дракона из воды в пещере вытаскивает. Дракон ему:

– Я тебе три добрых дела сделаю, – говорит. – Одно доброе дело: в одном селе в одном месте вода (река) выходит, ту воду я, пойдя, перекрою, ты скажи людям: «Воду я освобожу, если вы мне дадите по одному волу, или деньги, равные стоимости вола», – говорит.

И с другими селами так поступить сулит.

После этого дракон, отправившись, остановившись в начале одного села, перекрыл реку. Мужчина народу там говорит:

– Дайте мне по одному волу, или деньги, равные стоимости одного вола. Я отправляюсь освободить воду, – молвит.

Собрав хороших, лучших людей народа (общины), в мгновение ока собрав по одному волу или деньги, равные стоимости одного вола, отдают. Мужчина, пойдя к дракону, говорит:

– Теперь освобождай воду.

Дракон, высвободив воду, дает знать мужчине, что пойдет оттуда в другое село, и уходит. Снова, в другое село пойдя, их воду перекрывает и они доходят до того, чтобы готовить пищу на своей моче.

Тогда мужчина, пойдя в то село, говорит:

– Я вам воду пушу, дайте мне по одному волу или деньги, равные стоимости одного вола, – молвит.

Сильные, лучшие села, собравшись, быстренько по одному волу, либо деньги, равные стоимости одного вола, собрав, отдали. Оттуда, забрав и полученный скот, и собранные деньги, домой увозит. Сказав дракону, воду освобождает.

Люди, набежав, воду, кому грязная досталось – грязную, кому чистая досталась – чистую набирают.

И в третий раз дракон перекрывает реку одного другого села. Опять народ, собравшись, услышав рассказ о том, что тот мужчина освобождает воду, говорят:



– Если бы он нам пустил воду, что бы ни сказал, дали бы.

Мужчина обещает пустить воду. И жители того села по одному волю или деньги, равные одному волю, дают. Оттуда мужчина опять, пойдя к дракону, сказав, освобождает воду. Народ, стар и млад, бегут к воде. Мужчина через это становится богатым.

Теперь дракон, отправившись в другое место, перекрывает реку. Это в четвертый раз останавливает.

Народ, опять мужчину позвав, говорит:

– Что ты скажешь, дадим. Нам реку освободи, – просят.

И они по одному волю или деньги, ему равные, дают.

Мужчина в четвертый раз идет к дракону. Идя по дороге, думает: «Теперь дракону так скажу: “Та, не оставлявшая тебя (в покое) в воде внутри пещеры женщина идет”, – если скажу, он убежит», – поразмышляв, так надумал.

Пошел к дракону. Дракон ему:

– Аха, а теперь почему пришел? Я обещал три твои просьбы исполнить, это выполнил, – сказал.

– А прийти, чего пришел? Та не оставлявшая тебя в покое в пещере в воде женщина идет, – говорит.

Едва мужчина так сказал, дракон, сделав один вдох, от страха умирает (душа отлетает).

Оттуда, после смерти дракона и река освободившись, люди, не страдая без воды, остались жить.

А мужчина, разбогатев, взяв другую жену, остался.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 10, паспорт 13. Записано 25.09.1958 г. в с. Чегем КБАССР от Гочаева Ахмадии (автозапись).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Волшебная сказка, основанная на сюжете о находчивом бедняке. В произведении чудесное животное – дракон – сперва трижды помогает главному герою, а в конце, выступая в качестве его врага, противника, оказывается побежденным хитростью мужчины, умирает из-за его обмана.



ОГЪУРСУЗ КЪАТЫН

Эртте бир къатын бла бир киши жашай эдиле. Къатын отуннга бар деп буюрганды. Эшек, ат элтирге къоймаганды. Эшек жауурлукъну сыртына кысып кетгенди. Экинчи, ючюнчю кюнюнде да барганды.

– Суу отунла келтиргенсе, – деп, туюп турганды.

Тёртюнчю кюн къургъакъ отунла излей баргъанлай, бир терен чунгур кёргенди. Чунгургъа барып къараса, аны аягында – бир тешик. Тешикден а бир сарыуекни башы къарап.

Сора сарыуек айтханды:

– Сен бюгюн къайтсанг: «Мени ургъан да, туюген да этме. Мен бир тешикде алтынла кёргенме да, экибизни ёмюрюбюзге болур!» – де да, бери чакъыр, – дегенди.

Киши барганды, хапарны къатынына айтханды, къатын да туюмегенди.

– Барайыкъ, – деп, экиси да тебирегендиле.

Келип къараганды. Къарагъанда:

– Мен жукъ кёрмейме, – дегенди.

– Иги ийилип къара, – дегенди.

Иги ийилип къараганды. Алайлай табаны бла уруп, тешикни энишге ийгенди.

Бир эки кюнден: «Энди сарыуек ашагъан болур», – деп, къарай барганды. Барса, тешикден сарыуек тышына чыгып.

– Не болганды, сарыуек? – деп сорганды.

– Да мени туюп, тышына кыстап турады, – дегенди. – Мени бу жерледен тышына элтсенг эди, сен суюген затдан юч ахшылыкъ этер эдим, – дегенди.

Сора киши, элге кетип, узун аркъан алып келип, аркъанны атханды. Сарыуек аркъаннга чёргелип, киши тартып, ёрге чыгъарганды. Къатын тешикде къалганды.

Сора киши:

– Энди этер ахшылыгынгы эт, – дегенди.

Сарыуек айтханды:

– Энди мен барайым да, элни сууун кесейим. Эл къоркъуугъа къалыр. Сен а кел да, мени туюген кибик эт да, мен сууну иерме. Ол заманда сени кёрюп, элде сен айтханны этерле, – дегенди.

Эмеген* барып, малны, адамны да ашап, сууну да тыйганды. Халкъ къоркъганды. Сора бир заманда бу киши, барып:

– Нек кыстамайсыз бу эмегенни? – деп сорганды.

Эл айтханды:

– Сен суюген затны берирбиз, ма, бирер къой берейик, – деп бергендиле.

Ол да кыстаганды. Бу биринчи ахшылыгы.

Экинчиси – экинчи элге барганды. Мында да биягыча болганды. Мында да бирер тууар бергендиле. Андан да ючюнчю элге барганды. Мында да иш биягыча болгъанда, бек сайлама юй бергендиле.

Сора эмеген (сарыуек) айтханды:

* Былайдан ары «сарыуек» дегенни орунуна, къатышдырып, жомакъчы эсе да, жазгъан адам эсе да, бир ненча кере «эмегенни» сагынады (Б.Б.).



– Юч ахшылыкъ этерге айтхан эдим. Ючюсюн да этдим. Энди ызымдан келсенг, ашарма, – дегенди.

Сора киши ызындан тёртюнчю элге баргъанды. Сарыуек:

– Нек келдинг, не айтхан эдим? – деп сорду.

– Да биягъы къатын тешикден чыкыгъанды, сени сурайды, – дегенде, тёртюнчю ахшылыкъны этдирип, ханны къызын алып, жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 9 паспорт. КъМАССР-ны Кёнденден элинде 68-жыллыкъ Жашууланы Махайны жашы Идрисден 14.02.1965 жылда Насталаны С.Б. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Огъурсуз къатын» деген жомакъ насийхат, юйретюу халда, эринчек, огъурсуз тиширыуну сыфатын ачыкълайды. Бек сейири: эр кишиге болушлукъгъа сарыуек келеди.

ЗЛОБНАЯ ЖЕНА

Давным-давно жили муж с женой. Однажды жена велела мужу пойти за дровами. Она не разрешила ему воспользоваться ослом или лошастью. Тогда он отправился, привязав к себе на спину ослиный подседельник. Так он шел и на второй, и на третий день.

– Ты принес влажные дрова, – говорила она и била его.

На четвертый день, он, отправившись искать сухие дрова, наткнулся на глубокую яму. Он посмотрел вниз, на дне была дыра. А из дыры выглядывала голова дракона.

– Когда ты сегодня возвратишься, скажи жене, меня не бей, не избивай. Я в одной пещере увидел золото, нам обоим на всю жизнь хватит, скажи и зови сюда, – сказал дракон.

Мужчина вернулся и все рассказал жене, и она не стала его избивать.

– Сходим, – сказали они и вдвоем отправились в путь.

Она пришла и взглянула туда.

Когда посмотрела:

– Я ничего не вижу, – сказала.

– Хорошенько нагнись и посмотри, – сказал.

Она хорошенько нагнулась и посмотрела. И тут он, толкнув ногой, отправил ее вниз в пещеру.

Через пару дней, думая, что дракон ее съел, он пошел проверять. Когда он туда пришел, дракон, выйдя из пещеры, находился снаружи.

– Что случилось, дракон? – спросил он.

– Да, избив меня, она выгнала наружу, – сказал он. – Если ты меня уведешь от этих земель далеко, я бы выполнил три твои добрые просьбы, – сказал.

После этого мужчина отправился в село, взял с собой длинный аркан и бросил в яму. Дракон, ухватился за аркан, мужчина тянул и вытащил сарыуека наверх. Женщина осталась в пещере.

После этого мужчина:

– Теперь выполни доброе дело, – сказал.



Дракон сказал:

– Теперь я схожу и перегороджу воду в селе. Село тут же взбудоражится. А ты приди и сделай вид, что меня избиваешь, тогда я пущу воду. Тогда все тебя увидят, и в селе будут подчиняться тебе, – сказал.

Дракон ходил, поел животных, людей, и перегородил воду. Народ сильно испугался. После этого подошел к нему один мужчина:

– Почему вы не изгоните это чудище? – спросил он.

Жители села сказали:

– Мы отдадим все, что ты захочешь, вот даем по одному барашку, – сказали ему. И он его прогнал. Это было первое доброе дело.

Второе – он ходил во второе село. И здесь то же самое повторилось. И здесь ему дали по одной скотине. После этого он ходил в третье село. И здесь все произошло так же, ему дали дом на выбор.

А после этого дракон сказал:

– Я тебе обещал сделать три добрых дел. Я все три выполнил. А если в дальнейшем будешь за мной идти, я тебя съем, – сказал он.

После этого мужчина за ним пошел в четвертое село. Дракон:

– Почему ты пришел, что я тебе говорил? – спросил у него.

– Да все та же женщина вылезла из пещеры, тебя спрашивает, – когда он это сказал, дракон совершил четвертое доброе дело: мужчина, женившись на дочери хана, остался жить да поживать.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 9. Записал С.Б. Настаев 14.02.1965 г. в с. Гунделен КБАССР от 68-летнего Жаишева Идриса Махаевича.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Нравоучительная сказка, обличающая нерадивых, злых жен. Характерно, что на помощь мужчине приходит дракон.



АЛТЫН ТЮКЛЮ КЪУШ*

Эртте заманда Бийбо деген бир къарт киши къатыны бла жашап болгъанды. Аланы агъач къыйырында, бир тауну тюбюнде уллу болмагъан бир гюл бахчалары болгъанды. Ол бахчаны къарт Бийбо кюн сайын да сакълай эди, болсада, гюл бахчаны къанатлыгъа ашатмай тыялмагъанды. Къарт Бийбону къатыны:

– Гюл бахчаны ашатханса! – деп, къартны таякъ бла туююп, азыкъ да бермей, ызына ашыра эди.

Бир кече къарт, нартох терекни тюбюне чёгюп, танг кесек сакълады да, кечени жарытып келген бир алтын тюклю къанатлыны эследи. Ол къанатлы, ёхчеге этгенлей, тюз да келип, ол къарт олтургъан нартох терекни юсюне къонду.

«Аллах берди энди, къатынны бир ыразы этейим!» – деп, къартны кёлюне келди да, сермеп, къанатлыны аягъындан тутуп алды.

– Аха, жилтин къуш, сени ючюн манга кёп таякъ тийгенди! – деди.

Бир заманда къанатлы, тилленип:

– Ой, жаным, Бийбо, сен къанатымдан бир тюк чыгъар да, мени жибер. Сен бир затдан къыйнала башласанг, ол тюкню хауагъа жибер да, кесинг ызындан кел. Ол сени манга келтирив, мен а сени кёп жеринге жарарма, – деди.

Къарт, уллу сейир болуп, арсар болду, болсада, бир къанат тюкню чыгъарып, къанатлыны жиберди.

Ол, юйге келип, къатыннга махтанды:

– Бу кече бир ариу, алтын тюклю къанатлы тутдум, алай тилерге къалды да, жиберип къойдум ансы.

Къатын анымы эшитди? Бир таякъны алып, къартны кючлю туюдю да:

– Барып, къанатлыны табып келтир! – деп, кёп аман сёз айтып къыстады.

Къартны жүреги бек къыйналып, эшикге чыгып, къанат тюкню хауагъа бошлады. Ол, учуп, тау жанына кетип башлады. Къарт, таякъны да белге салып, аны ызындан тебиреди.

Къанат тюк къартны бийик тауну башына келтирди. Эки уллу таш эки жанына ачылып, алагъа къаланы ичине жол бош болду. Кирип барса, анда ол къанатлы кесини бий тефтерине къонуп тура эди. Къартха тынгылап, ол жасирлеге:

– Бир хант къанганы келтиригиз, – деп буюрду.

Юч аякълы хант къанганы мычымай жетдирдиле.

– Бу хант къангагъа, – деди ол, – юсюне къарап: «Хант къанга», – десенг, юсю суюген ашарыкъладан толады. Юйге жетгинчи, «хант канга» деп къайда да айтма, – деди.

Къарт Бийбо, къууанып къайтып келе, жылкыы къошда къалды да, къонакъбайларына хант къанганы берип:

– «Хант къанга» деп иш айтмагъыз, – деди.

Ала, башха юйге элтип, бир кёрейик деп: «Хант къанга», – дедиле. Олсагъат къанганы юсю тюрлю-тюрлю ашарыкъладан толду. Ала, аны алып, башха къанганы орунуна салдыла.

* Алгъын тюрк халкълада «къуш» деп битеу къанатлылагъа айтхандыла. Чыгъарманы болумуна сёзню бу магъанасы табыракъ келишгени себепли, орус тилге «птица» деп кёчюрюлгенди (Ф.Г.).

Къарт, эртте туруп, къуру къанганы алып, юйге келди.

– А маржа, къатын, юй тубюне бир жабыула жайчы, сени ыразы эталлыкь эсем, бир кёрейим, – деди.

Къатын, мычымай, жабыула жайды. Къарт хант къанганы жабыула юсюне салып, къанганы ортагъа алдыла. Сора къарт:

– Хант къанга, хант къанга, – деп къайтарып-къайтарып айтды.

Болсада, къуру къангагъа жукь да чыкъмады. Сора къатын:

– Бу хант къанга болгъанын мен да билеме, Аллахдан аман табарыкъ! – деп, къартны таякъ бла тую(ю)п къыстады.

Ол биягъы жерге къайтып келип, къанатлы бийге хапарын айтды. Ол анга, дагъыда бир къара туюкю токълуну келтирип, алай айтды:

– Бу токълугъа: «Чыч, токълу», – десенг, алтын къатыш будай тегерикди, алай юйге жетгинчи, «чыч токълу» деп айтма, – деди.

Ол, жолда келе, къойчу къошха къайтып, къонакъда къалды да:

– А, маржала, «чыч, токълу» деп иш айтмагъыз, – деди.

Ала: «Бир кёрейик», – деп, алай айтханлай, ол алтын къатыш будай тедю. Ала, терк окъуна кесине мушаш* бир токълу келтирип, аны букьдурдула.

Къарт, эртте туруп, туюкю токълуну да алып, юйюне жетди.

– А маржа, къатын, бир ариу куююзле жай, – деди.

Къатын куююзле жайды. Къарт суююден келген къоркъакь токълуну, кетюрюп, куююзле юсюне салды.

Токълу, къоркъгъандан кир да этип, суу да ийди. Дагъыда къарт:

– Чыч, токълу! – деп къайтарып-къайтарып айтды.

Къатын, шайтанлы болуп:

– Ол аланы, сен айтмасанг да, этеди, къансыз къарт! – деп, уллу чамланып къыстады.

Къарт, къайтып, биягъы жерге келди. Къанатлы бий къартха бир токъмакъ берди да:

– Юйге жетгинчи, «ур токъмакъ» деп айтма, – деди.

Ол, жолда келе, алгъын къалгъан жылкъычы къошха келип къалды да:

– «Ур, токъмакъ» деп айтмагъыз, маржа! – деп, токъмакъны алагъа берди.

Ала:

– Муну биягъы бир заты барды, – деп, – ур, токъмакъ! – дедиле.

Олсагъат окъуна токъмакъ, чартлап, ол хант къанганы алгъан кишини туююп башлады. Ала, гузаба болуп, Бийбогъа келип:

– Бу затны айыр, маржа, хант къангангы да кесинге берейик! – деп тиледиле.

Ол токъмакъны да айырып, хант къангасын да алып, ол алгъын къалгъан къойчу къошха келди да:

– А маржа, «ур, токъмакъ» деп иш айтмагъыз, – деп, токъмакъны алагъа берип, хант къанганы къатына чедю.

– Биягъы муну бир заты барды, – деп, ала, – ур, токъмакъ, – дедиле.

Олсагъат окъуна токъмакъ, чартлап, ол токълуну алышындыргъан кишини сопакълап башлады. Ала, гузаба болуп, ол кишиге келип:

* Ушаш.

– А маржа, бу затны бизден айыр да, кесинги токълунгу да ал! – дедиле.
 Ол, кьанганы да, токълуну да, токъмакьны да алып, юйюне келди.
 – А маржа, кьатын, бир кюйюзле жай, – деди.
 Ол, мычымай, кюйюзле жайды. Къарт Бийбо токълуну кюйюзге салып:
 – Чыч, токълу! – деди.
 Токълу алтын кьатыш будай тѣкдю. Сора, хант кьангагъа къарап:
 – Хант кьанга! – деди.
 Ол да сыйлы ашарыкъладан толду.
 Бу, кьатыннга къарап:
 – Ыразы болдунгму энди? – деп сорду.
 – Аллай бир айланып, андан да иги этерге керегенг сен, кьуу къарт!
 Неге махтанаса? – деди.
 Къарт, токъмакьгъа къарап:
 – Ур, токъмакь, – деп, – ол сени ыразы этсин, – деди.
 Алайлай токъмакь, чартлап, кьатынны букъусун бардырып тебиреди.
 Кьатын, кьычырыкъдан алып, къартха жалынды:
 – Айыр, ауруунгу алсам (алайым – Ф.Г.), муну менден, аркъам бла
 эшикге жюрютюп турурма!
 Къарт, бираз сопакълама да кьоюп, токъмакьны айырды. Сора кьатын
 къартны аркъасы бла жюрютюп тургъанды.

*КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 20 папка, 2 паспорт.
 КъМАССР-ны Тѣбен Чегем элинде Яникойда жашагъан 1933 жылда
 туугъан Акаланы Мырзакълуну жашы Солтандан 28.01.1965 жылда
 жазылгъанды (автозапись).*

*Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге
 кѣчюргенди.*

*Сынжыр маталлы кьуралыуу болгъан сейир-тамаша жомакь.
 Чыгъарма сейирлик гудучуну (алтын тюрлю кьушуну), аман кьатынны эм
 хыйлачы кьонакъбайланы юслеринден сюжетледе кьуралгъанды.*

*Бу жомакьны орус халкъда жюрюген чыгъармалагъа ушатхан
 шартлары барды: адам тилде сѣлешген алтын тюрлю кьуш – Жар-птица;
 юсю тюрлю-тюрлю ашарыкъладан толуучу хант кьанга – скатерть-
 самобранка; хыйлачы, аман адамланы туююучу токъмакь – палка /
 дубинка-самобойка. Алай алагъа келишимеген илишанлары да бардыла:
 терек бахчаны орунуна гюл бахча сагъынылады, аны да бахчаны иесини юч
 жашы угъай, къарт киши сакълайды. Ахырында къарт аман кьатыннын
 кесине бойсундургъаны уа, алимлени оюмларына кѣре, матриархатны
 патриархат бла алышыныуун белгилейди.*

ПТИЦА С ЗОЛОТЫМИ ПЕРЬЯМИ

В давние времена один старик по имени Бийбо жил со своей женой. У них на окраине леса под одной горой небольшой цветочный сад был. Тот сад старый Бийбо каждый день охранял, тем не менее, не мог сохранить цветочный сад от поедания птицами. Жена старого Бийбо:

– Цветочный сад позволил съесть! – говоря, побив старика палкой, даже не дав еды, отправляла назад.

Однажды ночью старик, присев под кукурузное дерево (кукурузный стебель), довольно долго прождал и заметил летящую, освещая ночь, некую птицу с золотым оперением. Та птица, как будто специально, напрямиком, прилетев, приземлилась на кукурузное дерево, где сидел старик.

«Теперь дал Аллах, обрадую жену!» – пришло на ум старику и, схватив, поймав птицу за ногу, снял.

– Аха, искрящаяся птица, из-за тебя меня много палкой били! – сказал.

В какой-то миг пернатое, обретя дар речи:

– Ой, душа моя, Бийбо, ты из моего крыла одно перо вырви, а меня отпусти. Если ты от чего-то начнешь страдать (если тебе что-то понадобится / если тебе чего-то начнет не хватать), то перо отпусти по воздуху, а сам иди следом. Оно тебя ко мне приведет, а я тебе во многих делах / вещах пригожусь, – сказало.

Старик, очень удивившись, засомневался, тем не менее, вынув одно перо из крыла, отпустил птицу.

Он, придя домой, похвастался жене:

– Этой ночью такую красивую, с золотым оперением птицу поймал, но только стала просить, и я отпустил.

Это жена услышала? Взяв какую-то палку, старика сильно побил и:

– Пойдя, птицу найди, принеси! – сказав, много дурных слов произнеся, выгнала.

Старик, очень сильно обидевшись, выйдя на улицу, пустил перо из крыла по ветру. Оно, летя, стало удаляться в сторону гор. Старик, положив палку на поясницу, двинулся следом за ним.

Перо из крыла привело старика на вершину большой скалы (горы). Два больших камня разверзлись в две стороны, им внутрь дворца путь освободился. Когда вошел, там та птица сидела на своем богатом тефтере*. Выслушав старика, она рабам (пленникам):

– Принесите обеденный стол, – велела.

Незамедлительно доставили трехногий обеденный стол.

– Этому обеденному столу, – сказала она, – на него глядя: «Обеденный стол», – если скажешь, поверхность наполняется излюбленными блюдами. Пока до дома не доберешься, ни в коем случае не говори «обеденный стол», – сказала.

Старый Бийбо, когда радостный возвращался, остановился на коневодческом стане и, отдав хозяевам стол:

– Не скажите ненароком «обеденный стол», – наказал.

Они, отнеся в другое помещение, решив проверить: «Обеденный стол», – сказали. Тотчас поверхность стола разнообразными кушаньями наполнилась. Они, взяв его, другой стол взамен поставили.

Старик, рано встав, простой стол забрав, домой пришел.

– А маржа**, жена, постели-ка на пол какие-нибудь покрывала, посмотрю, смогу ли вызвать твое довольство, – сказал.

* *Тефтер* – значение данного слова неизвестно, но, по всей видимости, в данном контексте оно обозначает трон или насест, на котором сидела чудесная птица.

** *Маржа* – междометие, выражающее обращение-просьбу [5, 861].



Жена быстренько постелила покрывала. Старик поставив обеденный стол на покрывала, (оба) сели вокруг стола. Тогда старик:

– Обеденный стол, обеденный стол, – повторив-повторив, произнес.

Тем не менее, на простом столе ничего не появилось. Тогда жена:

– То, что это обеденный стол, и я знаю, чтоб ты от Аллаха зло обрел! – сказав, старика палкой побив, выгнала.

На то же место снова придя, пернатому бию рассказал свою историю. Он ему, еще одного черного барашка приведя, так сказал:

– Этому барашку: «Испражняйся, барашек», – если скажешь, золото вперемешку с пшеницей рассыпет, однако пока до дому не доберешься, «испражняйся, барашек» не произноси, – сказал.

Он, идя по дороге, завернув на овечью кошару, в гостях остался и:

– А, маржала, ненароком «испражняйся, барашек» не скажите, – сказал.

Они, решив проверить, как только так сказали, он золото вперемешку с пшеницей высыпал. Они, быстренько приведя похожего на него самого барашка, того спрятали.

Старик, рано встав, мохнатого барашка забрав, добрался до дому.

– А маржа, жена, красивые ковры постели, – сказал.

Жена расстелила ковры. Старик пришедшего из стада пугливого барашка, подняв, поставил на ковер.

Барашек с перепугу и испражнился, и обмочился. Еще старик:

– Испражняйся, барашек! – повторив-повторив, сказал.

Жена, осатанев:

– Он это, даже если ты не скажешь, делает, бескровный старик! – сказав, сильно разгневавшись, выгнала.

Старик, вернувшись, на прежнее место пришел. Пернатый бий старику одну дубину дал и:

– Пока до дому не доберешься, не произноси «бей, дубинка», – сказал.

Он, идя по дороге, на тот коневодческий стан, где в прошлый раз останавливался, пришел и:

– «Бей, дубинка» не говорите, маржа! – сказав, дубинку им отдал.

Они:

– У этого опять что-то есть, – решив, – бей, дубинка! – сказали.

Тотчас же дубинка, выскочив, начала избивать мужчину, который присвоил обеденный стол. Они, запаниковав, придя к Бийбо:

– Эту штуку отзови, маржа, и твой обеденный стол тебе самому вернем! – попросили.

И ту дубинку отозвав, и свой обеденный стол забрав, пришел на овечью кошару, где ранее останавливался, и:

– А маржа, «бей, дубинка» ненароком не произнесите, – сказав, дубинку им отдав, рядом с обеденным столом присел.

– Опять у него какая-то штуковина есть, – решив, они, – бей, дубинка, – сказали.

Тотчас же дубинка, выскочив, начала охаживать подменившего того барашка мужчину. Они, ударившись в панику, к тому мужчине придя:

– А маржа, эту штуку от нас отзови и своего барашка заberi! – сказали.

Он, и стол, и барашка, и дубинку забрав, пришел домой.

– А маржа, жена, постели ковры, – сказал.



Она незамедлительно ковры расстелила. Старый Бийбо барашка на ковер поставив:

– Испражняйся, барашек! – сказал.

Барашек золото вперемешку с пшеницей излил. Затем, посмотрев на обеденный стол:

– Обеденный стол! – произнес.

И он изысканными кушаньями наполнился.

Он, на жену посмотрев:

– Довольна ли теперь? – спросил.

– Столько прохотив, еще лучше ты должен был сделать, иссохший старик! Чему хвастаешься? – сказала.

Старик, посмотрев на дубинку:

– Бей, дубинка, – произнеся, – пусть она тебя сделает довольной, – сказал.

Тут дубинка, выскочив, стала из жены пыль выбивать. Женщина, заголосив, пожалилась старику:

– Отзови, да забери твои болезни, ее от меня, на спине буду (тебя) на лицу выносить!

Старик, позволив немного отходить, отозвал дубинку. После этого жена старика на спине стала носить.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 2. Записано 28.01.1965 г. в с. Нижний Чегем Чегемского района КБАССР от жителя с. Яникой Акаева Солтана Мырзакуловича, 1933 г.р. (автозапись).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукова) Ф.Х.

Вошебная сказка с цепевидной структурой. Произведение построено на основе сюжетов о чудесном воре (птице с золотым оперением), о плохой жене и о хитрых хозяевах, у которых остается ночевать старик.

У данной сказки имеются элементы, уподобляющие ее бытующим среди русского народа сказкам: говорящая на человеческом языке птица с золотым оперением – Жар-птица; заполняющийся разнообразными кушаньями обеденный стол – скатерть-самобранка; бьющая хитрых, плохих людей дубинка – палка / дубинка-самобойка. Но есть и несоответствующие им черты: вместо плодового сада упоминается цветочный сад, и его сторожат не три хозяйских сына, а старик. Тот же факт, что в конце старик подчиняет себе свою злую жену, по мнению ученых, знаменует смену матриархата патриархатом.



АЛТЫН КЪУШ

Эртте-эртте бир элде бир мараучу жашагъанды. Ол мараучу ёмюрюнде да уугъа айланып тургъандан башха иш ишлемегенди. Дуниясында не малы, не мюлкю, ол угъай эсенг, арбазында тауугъу да болмагъанды. Кесини уа бир эски саламбаш юйчюгю болгъанды. Юйю да элни къыйырына чыгъып, жууугъуракъ хоншусу да болмай, бир къарт къатыны бла бир жангыз гитче жашчыгъы бла жашагъанды.

Кюнлени бир кюнюнде кишиге ёлюр ауруу тийип, ауруп тешекге тюшгенди. Сора ёлюп башлагъанда къатынын бла жашчыгъын чакъырып, осуят этгенди, жашчыгъын къатынына кёргюзтюп:

– Эй, къатын, энди мен ёлеме да, ёлеме, мен ёлсем, мени садагъымы, уугъа жюрюр заманы жетгинчи, жашчыгъыма асыра, манга ушаса, бек терк къармашыр сауутха-сабагъа, уучу да болур. Жашчыкъ, жетип, уугъа барып башласа, сени ачдан ёлтюрмез. Тилейме, замансыз уугъа уа жиберме, бираз ёсюп, уллу болгъунчу, – дегенди.

Аны ызындан жашчыгъын къатына чакъырып, башчыгъындан да сылай, жилигъан да эте, айтханды:

– Балам, ёлюрюмю аллында санга осуят этеме, тилейме: «Серине жаншайды», – деп, ыспассыз этип, унутуп къойма. Этген осуятымы эсингде тутарынгы тилейме, осуятым сангады. Мен ёмюрюмде уугъа айланнгандан башха мадарым болмай жашагъанма. Анга сен да юйренирсе. Уугъа жюрюме деп айтмайма, алай къайры да бар, къайры да жюрю, ол жерде, ол жерде бир къара агъач кёрюрсе. Ол къара агъачха уугъа барма. Ким биледи, билмей барып къалсанг да, бир от жаннган кёрюрсе. Ол от жарыкъгъа жууукъ барма. Ма мен сенден ахыр тилеригим олду. Хайда, сау къалыгъыз, – деп, атасы ёлюп къалады.

Атасы ёлгенден сора, жашчыкъ, жангыз кеси узакъ айланып келир къарыуу да болмай, анасы, жарлылыкъ къысып, амалсыздан, анга атасындан къалгъан садагъын берип, ол гитчелей окъуна садакъ атаргъа юйретеди.

Жашчыкъ, гитчелей садакъ атаргъа терк тюзелип, кёз тутхан жерде, садакъ жетгенча бирде, чыпчыкъ, къаргъа болса да, атханын жибермей, ёлтюрюп тургъанды. Аланы алып келтирип, къарт анасына кёргюзтюп башлагъанды. Анасы да, жашчыкъны жукъгъа къармашханын кёрюп: «Аллахха шукур, энди алай къармаша башласа, ачдан ёлтюрмез», – деп, къууанады.

Жашчыкъ, уллучукъ да болуп, башха уучуланы ызларындан кете да, не тюлкю, не къоян ёлтюрюп келип, анасына жарай башлайды. Ахырында уа, кеси жангыз кетип, кийик ёлтюрюп, кётюрюп, юйге келтире башлагъанды. Сора анасы жашына къалайгъа дери баргъанын соруп, жаш а баргъан жерини атын айтханлай окъуна, жаш атасы уугъа барыучу, узакъ жерге баргъанын билип: «Алайлагъа жете башлагъан эсе, киши болгъанды», – деп, къайгъысыз олтуруп, жашы келтирген кийик этледен ашагъан да, сатхан да эте, жаныуар терилерин да хайырлана, аталары сау замандан эсе, онглу жашап башлагъандыла.

Бир кюн эрттенликде эртте туруп, жашчыкъ уугъа кетеди. Кёп айланып, арып, бир тау кийикни да ёлтюрюп, келиучю заманындан эсе кечге къалып келеди. Анасы ол кюн къайгъы этип, сакълап, анга хапар сорады.



Жаш:

– Анам, бюгюн кѐп жангы жерле да кѐрдюм, бюгюннге дери бармаучу жерлериме да бардым. Бир къара агъач болгъан жер да кѐрдюм. Атам манга осуят этгенде айтханыча, бир от жарыкъ да кѐрдюм, баям, атамы ол от жарыкъ дегени ол болур эди, – деп, анасына хапар айтады.

Бу хапарны эшитгенде, анасы арсарсыз: «Жаш ол атасы айтыучу къара агъачны кѐрюп келеди, ол ары да бармагъа эди», – деп къоркъады. Алай жашха уа барма зат демей:

– Балам, къарт атангы ѐле туруп этген осуятын эсингден кетерме, атанг хатагъа туберинги суйген болмаз, бир зат билип айтхан болур, – деп, жашны эсине салып къояды.

Жашчыкъ бир кюн уугъа чыгып кетип, айлана, жюрюй, ол атасы барма деп осуят этген къара агъачха барып къалады. Жууукъ келип къараса, къарангыда, къара агъачны тюз ортасы, эм къалын жери былайы болур деген жеринде бир от жаннган кѐрюп: «Бу от кече да, кюн да тохтамай жанады. Не агъач кюймайди, не ѐчюлмайди, мен муну не болгъанын бир билмей къоймам», – деп, акъыртын кысыла барып, тюз жаннганны илишаннга салып атады. Ол жаннган зынгырдап, жерге тюшюп, жукъланып къалады. Жаш тюзюнлей салып, юсюне барып къарайды. Къараса: бир алтын къуш, терек башында уясындан тюшюп, жаралы болуп, учалмай тургъанын кѐрюп, тутуп, алып, юйге анасына келтирип береди. Анасы, алтын къушну алып келгенин кѐрюп, бек мудах болады. Жаш анасыны мудахлыгъын эслеп:

– У, анам, нек мудах болдунг, къууаныр орунуна? – деп сорады.

Жашы соргъанда, анасы да:

– Нек мудах болуб’а? Сен, алтын къуш ѐлтюрюп келип, юйде тутханынги билсе, патчах сени элден къурутур, – деп, анасы нек мудах болгъанын билдиреди.

Анасы алай айтханда, жашы туруп:

– Анам, алай болса, мен бу къушну: «Саугъагъа келтиргенме», – деп, патчахха элтейим да, патчах да мени къуру къоймаз, бир зат берир, – деп, жаш, къушну алып, патчахны юйюне элтип барады.

– Бу къушну уугъа баргъанлай ѐлтюргенме да, патчахыбызгъа тийишли болур муну тутаргъа деп, санга алып келгенме, – деп, жаш, чыгъарып, къушну патчахха береди.

Патчах, жашчыкъны этген саугъасына бек ыразы болуп, къушну да алып, юч алтын да берип жибереди. Сора кесини къулуна:

– Барчы, ол ѐксюз сабий ыразы болуп кетди эсе, бир бил, – деп, ызындан къараргъа жибереди.

Патчахны къулу, жашха тубеп да, жукъ сормай, артха, патчахха къайтып:

– Ёксюз, мудах болгъан угъай: «Ой, тели патчах, бир чыпчыкъ ѐлтюрюп келдим да, юч алтын берди. Тауда юч алтын мюйюзлю кийик барды да, аланы тутуп келсем а, мюлкюню жартысын берлик кѐреме», – деп, хыликкя этип барады, – деп, къайтып, патчахха алай айтады.

Патчах, къулуну алай айтханын эшитгенде:

– Барчы, ол итден туугъан итни бери къайтарып кел, – деп, къулун жашчыкъны ызындан жибереди.



Къулу, чыгып, кычырып, кыайтарып, жашчыкыны патчахха элтип барады. Патчах жашчыкыгъа айланып:

– Тауда юч алтын мюйюзлю кийик барды. Ол юч кийикни да тутуп, манга келтирип бермесенг, башынгы кетерирме. Хайда, барып сагышы эт да, керекли затынгы манга айт. Аланы тутаргъа теркирек бар, – деп, жашчыкыны юйюне жибереди.

Жашчык, мудах да болуп, ызына кыайтып, юйюне келип, анасына:

– Анам, алтын къуш ючюн патчах бу юч алтынны берди. Артда ызымдан кычырып, патчахны къулу чакырып, патчахха элти да, патчах а: «Тауда юч алтын мюйюзлю кийик барды, аланы тутуп, манга келтирип бермесенг, башынгы кетерирме», – деп жибергенди. Энди не амал этейим? – дейди.

Жашчык хапарны бошагъанлай, анасы:

– Сен мудах болма, балам, бар да, патчахха: «Ол юч кийикни мен ёлтюрмей, жаралы этмей, тутуп санга келтирейим. Аны этер ючюн, кесинги кыыйынындан кыатышдырмай, къулунгу кыыйынындан манга жюз арба, жюз арбагъа жюз бёчке аракы, жюз арбачы, жюз арбачыгъа жюз челек хазыр эт эрттенликге», – деп кел да, къалай этеринги мен айтырма, – деди ол.

Жаш, патчахха келип, анасы юйретген затланы айтды.

Эрттенликде патчах, кесини кыыйынындан кыатышдырмай, къулуну кыыйынындан дегенине ыразы болуп, жюз арба, жюз бёчке аракы, жюз челек, жюз арба башчы берип, жашчыкыны алтын мюйюзлю кийиклеге жиберди.

Жашчыкыгъа анасы кийикле болгъан жерни да, къалай этерин да юйретип иеди. Ол, аланы да алып, кийикле тургъан таугъа жууукъ барып, арбаланы кенге тохтатып, аланы букъдурургъа жер табып, адамланы да жюзюсюне жюз челекни берип, тауда кийикле тюшде келип суу ичиучю кёлню ала бла тышына тёкдюрюп, сууну орнуна кёлге жюз бёчке аракыны къуйдурду да, адамын, арбасын да кенгнге-кенгнге кетерди. Кеси уа бир ненча адам бла сыйыныргъа уру къазып, кёлню жанында аркъанла алып, бугъуп, кийикле суугъа келир заманны сакълайды.

Бир заманда мюйюзлерини жылтырагъанлары кёз къамата, юч алтын мюйюзлю кийик таудан суугъа энип башлайдыла. Энип келип кёлге, суу сунуп, ичип башлайдыла. Алай аракыны суу болмагъанын билип, ийисгеп, артха кетедиле. Ичерге башха суу болмагъаны себепли, кыайтып аракыдан тойгъунчу ичип, артха айланадыла. Алай болгъанлыкыгъа, борбайлары тутмай, ёрге-ёрге секирип, кеф болуп, жыгылып, тёнгереп къаладыла. Кийиклени жыгылгъанларын кёрюп, жаш нёгерлери бла чабып, аланы аркъанла бла байлап, арбагъа салып, юйге, патчахха алып келтиредди.

Патчах бу юч кийикни саугъасына жашчыкыгъа, жюз арбаны арбачылары бла берип:

– Кесинг ёлгюнчю ишлет да, аша, бюгюнден арысында санга бердим, – деп жибереди.

Жашчык, аланы алып келип, бирлерин таматагъа салып, ишлетип, жашап башлайды.

Экинчи кюн патчах къулуна:

– Барчы, ол ёксюз ыразы болуп къалды эсе, билип кел, – деп жибереди. Къулу жашха да тюбемей, биягыча ётюрюкге:

– Ыразы болгъан угъай эсенг: «Ой, тели патчах, таудан юч кичиу улакъ

келтирип бергенликге, бу кьадар затны берген, бютюнда ол жерде, ол жерде, тенгизде бир кьыз жашайды да, сурат кибик, аны алып келип, патчахха кьатыннга берсем, патчахлыгын берлик кёре эдим», – деп, хыликкя этип турады, – деп кьайтды.

Муну эшитип, патчах:

– Барчы, ол итден туугъан итни бир чакъырып кел, – деп жибереди.

Кьулу барып, жашха:

– Патчах чакъырады, – деп, алып келеди.

Патчах жашха айтады:

– Ол жерде, ол жерде бир ариу кьыз жашайды. Барып, ол кьызы манга алып келип бермесенг, санга ёлюм буюрурма, – деп жашха, буйрукъ береди. – Хайда, сагъыш эт да, аны этер ючюн не керек эсе да, эрттенликде манга билдир, – деп жибереди.

Жаш, юйге келип, анасына айтады. Анасы:

– Аллахдан аман тапсын, сени кьабар ючюн этиледиле бу затла барысы да. Патчахны кьулу этген палахладыла ала. Сен бар да, патчахха айт: «Кесинги кьыйынынгдан кьатышдырмай, кьулунгу кьыйынындан бир алтын кьайыкъ ишлет да, андан сора барырма», – деп, жашны патчахха жибереди.

Жаш да, келип, ол халда патчахха айтады.

Эрттенликге патчах, кьулуну кьыйынындан алтын кьайыкъ ишлетип, жашха береди. Жаш да, алтын кьайыкъгъа минип, тенгизге кирип, кьызы келтирирге деп кетеди.

Жаш да, кьайыкъгъа минип, тенгизде бара, бир уллу чабакъ бир гитче алтын чабакъчыкьны кьуууп, ашаргъа башлагъанлай, жаш сермеп, чабакъчыкьны кемеге алып, элтип барып, узакъда тенгизге бошлайды. Алтын чабакъчыкъ адамча тилленип:

– Амалсыз кюнюнде мен санга жарарма, ёлюмден кьалдырдынг, – деп, кьуйругъун да булгъап, тенгизге ташайып кетеди.

Андан да ёте баргъанлай, бир илячин, бир кёк кёгюрчюнню кьуууп келип, кьагъып алыргъа башлагъанлай, жаш илячинни садакъ бла атып ёлтюреди. Кёгюрчюнчюк ёлюмден кьутулгъанын билип, жашха, адамча тилленип:

– Мен керекли бир кюн да чыгъар, жетип келип, болушурма мен санга, ёлюмден кьутултдунг, – деп, кьанат таууш этип, учуп кетеди.

Жаш, бара кетип, тенгизде кьызгъа жетеди да, кьараса, чыракъ жаннганлай, тенгизни жарытып, бир ариу кьыз бир агъач кьайыкъгъа да минип, жюзюп айланганын кёрюп, барады да:

– Эй, кьыз, бу алтын кьайыкьны санга атанг ишлетип ийгенди: «Ол агъач кьайыкьдан тюшсюн да, бу алтын кьайыкьгъа минип жюзсюн мени кьызым», – деп, – деди жаш кьызгъа.

Кьыз, кесини кьайыгъындан тюшюп, бу жаш келтирген алтын кьайыкьгъа минеди. Олсагъат жаш, кьызы да алып, артха айланып тебирегенди. Кьыз, жаш муну алып кетип баргъанын билип, тюшюп кьачаргъа умут этеди. Алай жаш кьачаргъа кьоймай, кьызы алып келе-келеди. Сора жукъусу келип, кёзю кьалкьыргъа баргъанлай, кьыз, кьачып, чабакъ болуп, тенгизге кирип кетеди. Жаш уянып кьараса, кьыз жокъ.



«Аха, эшик жабылды», – деп, не этерге билмей тургъанлай, къызны ол жаш къутултхан чабакъчыкъ тутуп, алып келип:

– Сакъ бол энди къачырмазгъа, – деп, жашха берип кетеди.

Андан сора жаш да сакъ болургъа кюрешеди. Алай биягъы жаш, жукъусу келип, кече, кюн да жукъламай тургъаны ючюн болур эди, биягъы кёзю къалкъуугъа барып, къызны къачырады. Бу жол къыз, тенгизде букъса, биягъы чабакъчыкъ табарын билип, къанатлы болуп, кёкге учуп кетеди. Жаш уянып къараса, къыз жокъ. «Энди уа не амал?» – деп тургъанлай, ол жаш къутултхан кёгюрчюн:

– Къызны, кёгюрчюн болуп, учуп баргъанлай, жетип тутханма, – деп, алып келип, жашха береди да: – Энди къачырмазгъа сакъ бол, – деп, учуп кетеди.

Энди жаш да, жолуну аз къалгъанын да билип, энди къачса, киши болушмазын да ангылап, сакъ болуп, къачырмай, къызны алып келип, патчахха береди. Патчах къызны саугъасына жашха бу алтын къайыкъны береди. Жаш да ыразы болуп кетеди.

Биягъы хан къулуна:

– Чыкъчы, ол ёксюз ыразы болуп кетдими? – деп, ызындан къарата жибереди.

Къулу чыгъып, биягъы ётюрюгюн айтып, патчахха къайтады да:

– Ыразы болгъан угъай: «Ой, тели патчах. Кесим къатыннга алып тургъан къызгъа алтын къайыкъ бергенди», – деп, хиликкя этип барады, – деп къайтып, патчахха айтады.

Аны эшитгенде патчах:

– Чап да, бери къайтар ол итден туугъан итни, – деп, къулун жибереди.

Жашны къайтарып, патчах аны ёлтюрюрге деп буйрукъ бере башлагъанлай, къыз, чыгъып, жашны терслиги болмай, ёлтюрюрге буйрукъ этгени ючюн былай айтады:

– «Игиликге – аманлыкъ» деп керти айтадыла. Сен санга этген игилиги ючюнмю жашны ёлтюрлюк эдинг? Мен санга келмегенме, анга келгенме, – деп, къыз, кеси уруп, патчахны ёлтюреди.

Сора, къулуна айланып:

– Жашха уа бу къадар къыйынлыкъны сени тилинг бергенди, – деп, аны да ёлтюрюп къояды.

Жаш, ол элге патчах болуп, ол келтирген къызны да кесине къатыннга алып, къарт анасын да келтирип, кеслери жашагъан жерде суйгенин ашатып, суйгенин кийдирип, къолун сууукъ суугъа тийдирмей, ашап-жашап, бюгюн-бюгече да турадыла деп эшитгенме.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 5 паспорт. КъМАСССР-ны Нальчик шахарында 1913 жылда туугъан Этезланы Мимболатны жашы Омардан 1955 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Омар къартладан эшитгенича къагъытха тюшюргенди.

«Алтын къуш» деген жомакъ магия кючлени илишанлары бла байламлы болуп, кесини жанр энчилиги бла сейир-тамаша жомакълагъа тартышады. Жар-птица бла байламлы орус жомакълагъа ушайды. Жомакъны терен

магъанасы окъуучулары эмда анга тынгылагъан адамлары жюрек халаллыкъгъа бойсунургъа юйретюудеди.

Жомакъны баихаладан айырмагы этген анда аракъыны юсюнден сёз баргъаныды.

ЗОЛОТОЙ ОРЕЛ

Давным-давно в одном селении жил охотник. За всю свою жизнь, кроме того, как ходить на охоту, он никакую работу не делал. Сколько он себя помнит, ни скотины, ни имущества у него не было, кроме всего прочего, во дворе у него даже курицы не было. Был у него маленький домик с соломенной крышей на окраине села, поблизости и соседей не было, жил он со своей старой женой и с одним маленьким сыном.

В один из дней мужчину настигла смертельная болезнь, и он слег, и когда он начал умирать, то позвал к себе жену, сына и сделал завещание, показывая жене своего маленького сыночка:

– Эй, жена моя, теперь-то я умираю, так умираю, когда я умру милостыню, предназначенную мне, побереги до той поры, пока у нашего сына не наступит пора ходить на охоту. Если будет на меня похожим, он быстро научится владеть оружием и станет охотником. Когда сынок вырастет, и начнет ходить на охоту, тебе не даст с голоду помереть, я очень прошу, раньше времени не пускай его на охоту, пока он немного не подрастет, и не станет взрослым, – сказал он.

Следом за ней он позвал и сыночка поближе к себе, и, поглаживая его голову, со слезами сказал:

– Дитя мое, перед смертью я тебе делаю завещание, я прошу, не посчитай, что я несу бред и, относясь серьезно, не забудь никогда, завещание, которое я делаю, я всю жизнь жил, не зная другого промысла, кроме охоты. Поначалу ты тоже будешь учиться, я не говорю, чтобы ты не ходил на охоту, хоть куда отправляйся, хоть где ходи, в каких краях – в каких-то землях ты увидишь черный лес, в тот черный лес на охоту не ходи, кто его знает, может быть, ты случайно окажешься там, ты там увидишь горящий костер, ты не подходи к этому огненному свету близко, вот это и есть моя последняя просьба, ну, прощайте, живите в здравии, – сказал отец и помер.

После смерти отца мальчик в одиночестве ходил на дальние расстояния, израсходовав силы, возвращался, его мать из-за безысходной бедности дала ему стрелу, который остался от отца, и с детства начала обучать его стрелять из лука.

Мальчик, с детства научившись стрелять из лука, на обозримом расстоянии, на расстоянии полета лука ни птиц, ни ворон не оставлял, убивал, забирал с собой, приносил и показывал матери. И мать, видя, что ее сын к чему-то стремится, благодарила Аллаха. Если и в дальнейшем так поведет себя, не даст помереть с голоду, радовалась она. Мальчик, немного повзрослев, уходил с другими охотниками, убивал лису или зайца, приносил дичь домой, стал матери подмогой. Однажды отправился один, убил тура, подняв, захотел притащить домой. Мать спрашивала сына, до каких земель он дошел, и как только он озвучил название земли, она



поняла, что это те далекие места, куда его отец ходил на охоту, и если он начал туда доходить, он стал настоящим мужчиной, подумала она. Без всякой тревоги она жила, и мясо диких зверей, что он приносил, она ела, и продавала, и звериные шкуры продавала, они стали жить даже более в достатке, чем при жизни отца.

В один из дней мальчик встал рано утром и отправился на охоту. Он бродил немного и, уставши, застрелив горного козла, вернулся домой позже обычного.

В тот день встревоженная мать, дождавшись сына, спросила. Сын рассказывает:

– Мама, я сегодня увидел много новых земель, я побывал в таких краях, где раньше не бывал, я увидел, землю, где был темный лес, про который мне рассказывал отец, когда делал завещание, так же я увидел свет огня, наверное, про него рассказывал отец, – так поведал он матери.

Когда мать услышала его рассказ, она, без сомнения, поняла сразу, что он видел тот черный лес, про который ему отец рассказывал, хоть бы он туда не ходил, – побоялась она. Но сыну она не сказала, не ходи:

– Сын мой, не забывай про завещание отца перед смертью, он тебе зла не желал, – сказала она, напоминая сыну еще раз.

В один из дней мальчик отправился на охоту, много бродил и подошел к тому месту, о котором отец в своем завещании говорил, к черному лесу, к тому самому черному лесу. Когда он близко подошел в темноте прямо к центру черного леса, в самое густое место, он заметил свет костра, этот огонь, который и ночью, и днем беспрестанно горит, из-за него и лес не сгорает, и сам огонь не гаснет, что это такое, я обязательно узнаю, – решил он, и, потихоньку пробираясь, прицелился и выстрелил прямо в горящий огонь. То, что горело, со звоном упало на землю, и тут же погасло. Юноша направился к тому месту, и стал осматриваться. Увидел, что один «золотой орел» выпал из гнезда на верхушке дерева, и лежит раненый, он увидел, что птица не в силах взлететь, тогда он его поймал и принес домой и вручил свой матери. Мать увидев, что сын принес золотого орла, сильно опечалилась. Он, увидев грустный вид матери:

– Ой, мама, почему ты опечалилась вместо того, чтобы радоваться? – спросил у нее.

На вопрос сына мать ответила:

– Как не печалиться! То, что ты принес убитого золотого орла, и держишь в доме, если узнает царь, то он изживет нас из села, – объяснила мать.

Услышав слова матери, сын встал:

– Я принес это ему в подарок, отнесу ему, и царь не оставит меня без вознаграждения, что-нибудь подарит, – сказал юноша, и, взяв орла, отправился в дом царя.

– Этого орла я убил на охоте, и я думаю, вам, нашему царю, он больше подходит, поэтому я принес его вам, – сказал он и вручил царю птицу.

Царь, довольный подарком мальчика, подарил ему три золотые монеты, и отправил его домой. После этого он своему слуге:

– Пойди, узнай, довольным ли от нас ушел этот мальчик-сирота, – сказал он и отправил слугу вслед за ним.



Слуга, не встретившись с мальчиком, и ничего у него не спросив, обратно вернулся к царю, и сообщил, что сирота ничем не опечален:

– «Ой, царь-дурачок, я одну птицу застрелил и принес ему, и он мне дал три золотых, в горах есть три тура с золотыми рогами, если я их словлю и приведу, он даст мне полцарства», – сказал он, и, ухмыльнувшись, ушел, – соврал слуга, вернувшись к царю.

Царь, услышав такие слова из уст своего слуги:

– Сходи-ка, приведи обратно ко мне это собачье отродье, – сказал он и слугу послал за ним. Слуга вышел, криком позвал, вернул мальчика, отвел его к царю.

Царь, повернувшись к мальчику:

– В горах, обитают три тура с золотыми рогами, если ты, схватив этих трех туров, не приведешь их ко мне, я тебе снесу голову. Давай, иди, хорошенько подумай, что тебе нужно, чтобы их поймать и скажи мне, – сказал он и отправил мальчика домой.

Мальчик, опечаленный, вернулся к себе домой, и говорит своей матери:

– Мама, из-за золотого орла царь мне дал три золота. После этого, прокричав мне вслед, слуга царя позвал, отвел меня к царю, а царь: «В горах есть три тура с золотыми рогами, если ты их не поймаешь и не приведешь ко мне, снесу тебе голову», говорит. Что мне делать теперь? – спросил он.

Как только мальчик закончил свой рассказ, его мать:

– Ты не огорчайся, мое дитя, сходи к царю: «Для того, чтобы этих трех туров я не убивал, не ранил, а поймал и притащил к тебе, дай мне, не касаясь своего имущества, от средств твоего слуги сто телег, на сто телег сто бочек водки, сто возчиков, сто ведер подготовь к утру», – сказав, приходи сюда, а дальше как поступить, я тебе подскажу, – сказала его мать.

Юноша, сходил, доложил царю наказ своей матери и вернулся обратно.

Утром царь, не касаясь своего имущества, довольный тем, что ему велено было взять от имущества его слуги сто телег, сто бочек водки, сто ведер, сто возчиков телег, вручил это все мальчику и отправил его к золоторогим турам.

Мальчику мать подсказала местонахождение туров, и что он должен сделать там. Мальчик, взяв с собой то, что ему дали, подошел близко к горе, где находились туры, телеги приостановил чуть подальше, нашел место, где их можно было спрятать, и людям раздал эти сто ведер, на горе туры в обед спускались на водопой к озеру, он заставил людей ведрами вычерпать озерную воду и вместо воды залить водоем сотней бочек водки, и после этого увел и людей, и телег подальше от этого места. Сам же, с несколькими людьми выкопал яму рядом с озером, взяли в руки арканы, спрятались в яме и стали дожидаться, когда придут туры на водопой.

Через некоторое время со сверкающими рогами, ослепляя глаза, три золоторогих тура с гор начали спускаться вниз к воде. Спустившись полностью, приняв озеро за воду, животные начали пить водку. После того, как узнали, что это не вода, понюхав, они стали возвращаться обратно. И еще раз, так как не было воды поблизости, они вернулись и напились водки досыта, и тронулись обратно. Однако, не владея собой, они начали прыгать вверх, опьянели, свалились и остались лежать на земле.



Увидев упавших туров, молодые люди подбежали, связали их арканами, положили на телегу и во дворец царя повезли. Царь в подарок за трех туров отдал мальчику сто телег с возчиками, сказав:

– Пока ты сам не умер, заставляй их работать, с сегодняшнего дня я их вручаю тебе, – сказал, вручил и отправил.

Мальчик взял их, привел к себе, одного из них назначил главой, заставлял работать, и начал по-новому жить.

На второй день царь говорит своему слуге:

– Сходи-ка, этот сирота остался довольным, узнай и вернись, – сказал и отправил его.

Слуга, даже не посоветовавшись с юношей, как прежде, обманул:

– Не то, что остался довольным: «Ой, царь-дурачок, из-за того, что я ему с гор доставил трех паршивых козлят, он дал мне столько богатства, а в такой-то местности на море живет одна девушка – писаная красавица. Если я ее приведу и отдам царю в жены, он бы отдал мне все свое царство», – сказав, издевается все время, – ответил он, вернувшись.

Царь, услышав такое:

– Сходи-ка, приведи это собачье отродье сюда, – сказал и отправил слугу.

Слуга пошел и, сказав юноше, что его зовет царь, привел его во дворец. Царь говорит юноше:

– В таких-то, таких-то землях живет одна красивая девушка. Если ты не сходишь туда, и не приведешь эту девушку ко мне, я тебе назначу смерть, – сказал юноше и отдал свое распоряжение. – Давай-ка, хорошенько подумай, чтобы выполнить это задание, что нужно, к утру доложи мне, – сказал он и отправил его.

Юноша пришел домой и обо всем рассказал матери. Мать:

– Чтобы его божья, небесная кара настигла, это все делается, чтобы тебя прикончить, слуга царя готовит все эти несчастья. Ты сходи к царю и скажи: «Чтобы это задание выполнить, дай мне, не касаясь своего имущества, из средств слуги столько денег, чтобы их хватило на постройку одной золотой лодки», – так ответь ему, – сказала она и юношу отправила к царю.

И юноша о своем пожелании доложил царю.

На рассвете царь из имущества своего слуги построил золотую лодку и отдал юноше. Молодой человек, сев в золотую лодку, вышел в море, чтобы привести девушку.

В то время, когда юноша плыл по морю, одна большая рыба, гонясь за маленькой золотой рыбкой, только начала ее есть, юноша резко схватил ее, забрал рыбку в лодку, и, подержав у себя, позже отпустил ее в далеком море. Золотая рыбка, заговорив человеческим языком:

– В тяжелый день я тебе пригожусь, ты спас меня от смерти, – сказала она и, вильнув хвостом, ушла в морские глубины.

Когда он начал отходить от нее, один сокол, погнавшись за сизым голубем, только начал ее хватать, юноша выстрелил из лука и убил сокола. Голубка, когда поняла, что спаслась, с юношей заговорила человеческим языком:

– Наступит такой день, когда я тебе понадобится, тогда я к тебе примчусь и помогу тебе, ты меня спас от смерти, – сказала она, и, шумно размахивая крыльями, улетела с этого места.



Юноша долго плыл по морю, и, наконец, добрался до места, где находилась девушка. Когда посмотрел, то увидел, как будто фонарь светит, освещая море. Это была красивая девушка в деревянной лодке, он к ней подплыл:

– Эй, девушка, эту золотую лодку изготовив для тебя, прислал твой отец. Пускай моя дочь вылезет из деревянной лодки и переседет на эту золотую лодку и плавает на ней, – сказал он и девушка пересела из своей лодки в золотую лодку, в лодку юноши.

И тут же юноша забрал девушку, отправился с ней в обратном направлении. Девушка, поняв, что юноша хочет увезти ее, вознамерилась слезть отсюда и бежать. Однако юноша не дал ей сбежать, задерживая девушку, плыл-плыл, и захотел заснуть. Когда глаза начали смыкаться, девушка сбежала, превратилась в рыбу, и ушла в море. Юноша проснулся, оглянулся по сторонам, девушки нет.

«А, теперь двери захлопнулись», – размышлял он, не зная, что делать, но вдруг рыбка, которую он спас, схватила девушку и вернула обратно юноше.

– Теперь будь осторожен, чтобы она опять не сбежала, – сказала она, и, вручив юноше, уплыла обратно.

После этого юноше опять захотелось поспать, он ночью и днем был без сна, после долгих поисков. Опять его глаза начали смыкаться, и девушке снова удалась сбежать. На этот раз, девушка смекнула, что если она спрячется в море, ее опять найдет та же рыбка, она превратилась в птицу, и улетела в небо. Когда юноша, проснувшись, огляделся по сторонам, девушки в лодке не оказалось. Что бы теперь придумать, размышлял он, как вдруг голубка, которую он спас:

– Когда девушка улетела, превратившись в птицу, я ее догнал и схватил, – сказала голубка, и, вернув ее, вручила юноше: – В дальнейшем будь осторожен, чтобы снова не сбежала, – сказала она и улетела.

Теперь юноша догадывался, что пути осталось немного, и если она еще раз сбежит, ему никто не поможет. Он зорко охранял ее. В итоге привел девушку во дворец и вручил царю. А царь в подарок из-за девушки юноше вручил золотую лодку. И юноша, довольный уходит:

Опять этот царь слуге:

– Сходи-ка, этот сирота, ушел ли довольным? – сказал и отправил его вслед за ним. Слуга вышел, опять-таки придумав свою ложь, возвращается к царю:

– Не то, что доволен, говорит: «Ой, этот дурачок-царь. За девушку, с которой я, женившись, находился, он дал золотую лодку!» – издевался над тобой, уходя, – снова соврал слуга.

Царь:

– Беги, срочно верни его обратно, это собачье отродье, – сказал он, и послал своего слугу за ним.

Когда вернув юношу, царь стал отдавать приказ казнить его, девушка, выйдя так говорит:

– «За добро – зло», правду говорят. Ты за добро, которое тебе сделал, парня хотел убить? Я не к тебе пришла, к нему пришла, – сказав девушка, сама ударив, убила царя.

После того, обратившись к слуге:



– Юноше все эти горести достались из-за твоего языка, – сказала она и его тоже убила.

А юноша, в том селе став царем, и девушку, которую он привел, взяв себе в жены, и старую мать привезя, в том месте, где сами жили, угощая ее тем, что она хотела, одевая в то, что она хотела, не давая ее рукам дотронуться до холодной воды, стали жить-поживать и по сегодняшний день живут, я слышал.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 5. Записано в 1955 г. в г. Нальчик КБАССР от Этезова Омара Мимболатовича (1913 г.р.) (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Омар зафиксировал на бумаге так, как слышал от стариков.

Сказка «Золотой орел» по своим жанровым характеристикам относится к волшебным сказкам с элементами магического реализма. Напоминает русские сказки, связанные с образом Жар-птицы. В подтексте сказки содержится моральное назидание слушателям-читателям придерживаться альтруистической философии.

Обращает на себя внимание специфика предметного мира сказки, где присутствует «алкоголь».



МЫРЗА УЛУ КЪАНМЫРЗА

Эртде-эртде заманда, бурун заманда бир элде къаратон хан болгъанды. Аны къатыны, ауруб, джаш табханды. Къартла, халкъ а тоюн, оюнун битдириб, джашны асырар оноуун этгендиле. Мырза улу Къанмырзагъа бер(ир)ге дегендиле.

Къанмырза къатын алыб, джангы заманы болгъанды. Ол сабийни асырагъанды, ёсдюргенди.

Мырза улу Къанмырза уучу, джи(зи)т адам болгъанды.

– Къанмырза, кюн сайын сен уугъа чыгъа(са). Манга да бир сауут бла саба берсенг эди, неда бир эгер берсенг эди, мен да барыр эдим(, – деди джашчыкъ – *Ф.Г.*).

Сора джашчыкъ садакъ, эгер алыб, уугъа чыкъды.

Кырпакъда залыкъылды* тюрюнден бир къоян чыгъа къачды. Эгери, кеси да сюрдюле – джеталмагъанлай къайытыб келди(ле).

– Сен манга иги садакъ, иги ит бермегенсе! – деди.

Сора экинчи иги садакъ, ахшы ит да берди.

Экинчи кюн биягъы джаш ол алгъын залыкъыдыгъа барды. Биягъы къоян алайдан чыгъыб къачды.

– Алай бу джол къоян алайдан чыгъыб къачса, ол джерде, ол джерде аллай бир къулакъ (къол) барды, къайда да ары кирирсе, – деб юйретген эди (Къанмырза – *Ф.Г.*).

Сюре барыб, къоянны джетиб, атайым дегенлей, ол къоян ол джаман къолгъа ташайды.

Ол айтхан къулагъына кирмей, барыб ол къолгъа кирди. Киргенде, бир ариу сын таш кёрдю. Сын ташны юсюнде бир ариу (сылыу) къызны суратын кёрюб, анга джабышыб къалды.

Ол кечесинде келмей, эгери да, кеси да алайда къалды(ла).

Сора Мырза улу Къанмырза джаш не ючюн келмей къалгъанын билди. Сора Къанмырза джашны болгъан джерине барды. Атасы джашын ол сынны къатында табды.

Ол джашы айтды:

– Атам, бу ариу къызны, саулугъунгу менден къызгъанмай, табыб, манга ал, – деб тиледи.

– Сени Тейрибиз урмасын, Тейриден аман таб!

– Табмай, амал джокъду, – дегенде, сауут-сабаларын да алыб, атланыб кетдиле.

Кёб заманны сылыу къызны табмай, кёб айландыла. Ахырда бир къалын къамишни къатына барыб тюрдюле. Къамишни арасындан, бурулуб-бурулуб, къалын, ахырзаман тюрюн чыкъгъанын кёрдю. Джашны алай къоюб, аны таба кетди. Барса – бир уллу къала. Къалагъа:

– Хей! – деб къычырды.

Сора ичинден субай бир улан чартлаб чыкъды. Салам берди. Салам алышхандан сора:

– Къанмырза, юйге кел, – деди.

Къанмырза къыздан уланнга хапар сорду. Улан айтды:

– Ичгери кел, къыз узакъ тюрюлдю, – деди.

* Рододендрон.



Сора Къанмырза джашын, къайытыб, алыб келди, къалагъа кирди. Киргенде, джаш хапар айтды:

– Къыз джети къаты темир къаланы ичиндеди. Аны тышындан да джети къаты аскер сакълайды, – деди.

«Къанмырза, сен ары киралырса», – демейди.

Эртден бла Къанмырза, бир бийик дуппургъа чыгъыб, къараучу заты бла (мюйюзю) бла къарады. Къарагъанда: ол джаш айтханча, алай. Кёб хийсаб* этсе да, бир да кирир мадар джокъ. Сора Къанмырза джерни тубюн къазыб бар(ыр)гъа бичим этди.

Алай бла джерни тубю бла, къазыб, джол этди. Уруб, къалагъа кирди.

Къаланы башында отоула кёб болгъанды(ла).

Айлана кетиб, кёб излеб, къызны табды. Къызны кёрюб, Къанмырза кюн ахшы берди.

– Сау бол, Къанмырза, – деди, шинтик салыб олтуртду, къолун а тутмады. – Не айлана, не джюрюйсе? – деб сорду.

– Бир джангыз уланым барды, анга сени алыргъа келгенме, – деди.

– А-а-а, мени атам: «Бу джети бегим ётерлик киши джокъду. Джангыз Къанмырза ётерге болур. Аны джашына берликме», – деучан эди. Къанмырза болмаса, киши кирлик туююдю, – деди. – Сен ол эсе(нг) да, билмейме, – деди. – Сен Къанмырзаса, сен(лай) джигит кишини джашына мен барырма. Сен энди келген джолунг бла, ма тенгизни бойнуна, ма, чомача, джюген ал да, бар, – дегенди. – Мени атамы тенгиз джагъасында джети гаммеш барды. Аланы сой да, атынгы юсюне, къум джелим эт да, джабышдыр, – дегенди. – Сора бу джюгенни зынгырдат. Ол заманда мени атамы аты, чабыб джетиб, сени атынг бла талашырыкъды. Сени атынгдан ол къу(м) джелимни къобарыр, сени атынг да андан эт кесекле къобарыр. Сора ала талаша келиб, сени атынгы тобукъландырса, баш, джан амалынгы эт. Сени атынг мени атамы аджирин тобукъландырса, секириб, юсюне мин да, ол чомача бла башын(а) туюй, – деди. – Сора, сен алай туюген заманда, аджир адам тил бла: «Сен айтханны этерме», – дер. Сен (ол – Ф.Г.) заманда тюш да, атынгы иерин аны юсюне сал да, мин. Къоркъмай, джети къаланы, аскерни юсюне кириб кел, – деди. – Ол заманда аскерле, джарылыб, джол къоярла, джети да къаланы эшиклери санга ачылырла. Ол заманда экибиз да, чыгъыб, джолубузгъа кетербиз, – деди.

Ол айтханча, къум джелим этиб, гаммеш терилени атына джабышдырды. Джюгенни зынгырдатханында, аджир кишнеб джетди. Талашдыла. Къанмырзаны аты аджирни тобукъландырды. Аджир къум (къабды – Ф.Г.), ат да аджирни хорлады.

Секириб, Къанмырза, юсюне миниб, темир чомача бла башына туюдю. Ат кёкге-джерге чыкъды-тюшдю. Ат (аджир) ант этди:

– Мен сен айтханны этерме, – деди.

Ол заманда атыны джелимин**, иерин алыб, аджирге салды, минди. Тюзюнлей ол аджир бла, уруб, къалагъа кирди. Аджирни бары да таныдыла. Аскер чачылды, хар зат бош болду.

Къызны аджирни бойнуна алыб, къамишни къатында, джашы къалгъан къалагъа келди. Ол кече джаш(х)а:

* Хыйсап.

** Былайда халат болгъаннга ушайды. Текстни магъанасына кёре, «джелим» деген сёзюну орунуна «джюген» болургъа керекди (Ф.Г.).

– Аш(н)ы, джаш(ау)ну бирге тохтатыгъыз, – деб, неках этди.

Эртденбласында сора къаладан алгъа чыкыгъан джаш айтды:

– Мен да бу къызны тилеб келген эдим. Энди, Къанмырза, мен ач болгъанма, манга бираз кийикле ёлтюрюб кел, – деб тиледи.

Сора Къанмырза, ол джашны да алыб, уугъа кетди. Кесини джашына уа:

– Мен келгинчи, джукъламай тур, – деди.

Сора кийикле ёлтюрюб келгенде – джашы джукълаб, къатыны джокъ.

Сора Къанмырза:

– Тейри, мен муну къатынын табмай къоймам, – деб, излерге кетди.

Джаш къалды.

Айланыб дуньяланы башын, табмады. Бир тешикке кирди. Ол джер тешик бла бир айны джюрюб, бир мырды талагъа чыкыды. Ол талада нарат терекле бек кёб болгъанды. Бара-барыб, агъачны ичинде бир тёбеге башын салыб джукълады.

Бираздан джукъу арасында бир шууулдагъан таууш эшитди. Секириб туруб къарагъанда, нарат терекге чулгъаныб, чыгъыб баргъан бир сарыбекни кёрдю. Терекни башында да гебен кибик бир уллу къуш уа кёрюндю.

Сора, бирден чабыб, сарыбекни дуггул-дуггул этиб атды. Ол терекни башында кёрюнген къуш уядан эки къуш бала чыгъыб, экиси да Къанмырзаны уягъа алыб чыкыдыла. Къуш балала айтдыла:

– Дуньяда бизни анабыздан уллу къуш джокъду. Ол келсе, сени ашар, – деб, къанатлары тюблерине салыб джашырдыла. – Бизни анабыз хар джылда эки бала табады, а(ла)ны да ол сарыбек, бизге ашарыкъ излей кетгенлей, келиб ашайды, – деди(ле). – Бираздан бизни анабыз келликди, аны джылагъан джыламугъу аны ырхы болуб элтирикди. Аны къанат джели бу тереклени башларын бюгерикди.

Къанат джели тереклени бюкдю, джыламугъу ол сарыбекни джауун болуб, ырхы келиб элтди.

Бирден келиб, къуш терекге къонду.

– Ас-мус, адам ийис, – деб айтды.

– Анабыз, ас-мусну къой да, тюбюнде сарыбек томуроулагъа къарачы, – деди балалары.

Дагъыда айландырыб, аналары:

– Сизге бу игиликни ким этди? – деб сорду.

Алай соргъанда:

– Ма, бизге бу игиликни этген буду, – деб, балалары адам улун кёргюздюле.

Сора къуш:

– Хей, адам улу, сен не айланаса, не джюрюйсе? – деб сорду.

– Не этейим, былай-былай, келиним тас болгъанды, – деб, хапарын башдан-аякъ айтды.

Къуш:

– Менден уллу къуш болмагъанды. Мени къоркъутханзат болмагъанды, – деди. – Тюнене Джансыз-Мыджыкъ деген бир киши, бир къызны алыб, кюн орта заманда бара эди. Ол болмаса, мени киши къоркъутмагъанды, – деди. – Алай болса да, сен мени сыртыма мин, – деб, кесине миндирди.

Тангны буруну бла, аны алыб, баш энишге джумулду.

Ашхам да болду, бир чыгъанакъны къыйырына тюшюрдю.



– Да, Къанмырза, ма бу джолчукъну бар. Бу джол сени Джансыз-Мыджыкъны къаласына элтир. Къалада Джансыз-Мыджыкъ джукълай болур, келининг а джылай болур, – деди. – Алай келининги алыб къачама деме, алай этсенг, экибизни да ёлтюрюр, – деди. – Сора келинги джылай тургъанлай табсанг, былай айт: «Ой, Джансыз улу Мыджыкъ уянса, санга сорур: “Нек джылайса?” – деб. “Да не этейим, адам, джан болмагъан джерде къалай тураим?” – де», – дерсе, – деди.

Сора Джансыз-Мыджыкъ уяныб соргъанда, ол Къанмырза айтханча айтды. Ол заманда Джансыз-Мыджыкъ:

– Мени джаным ол эшик артында тургъан сибиртгиди, – деди.

Ол экинчи уяныргъа къыз (келин) сибиртгини къызча кийиндирди. Биягъы Джансыз-Мыджыкъ, уяныб, келинге, къызгъа:

– Муну былай нек кийиндиргенсе? – деб сорду.

– Да не этейим? «Мени джаным сибиртгиди», – деген эдинг да, аны ючюн эркелетиб джасандыргъанма, – деди.

– Сора сен аны нек джасандыргъанса? Аны санга юйретгенни, сени да! – деб, аманла айтды.

– Ол дунья уллусу къуш, ол юйретгенди. Ол Къанмырзаны джууугъуду, – деди.

– Ол къуш да, Къанмырза да, мени темирчиме садакъ ишлетиб...*

Къанмырза садакъны къолуна алыб келди. Ол кезиуде къуш да, чыгъанакъгъа кириб, бир залим бууну сюрюб чыгъарыб, Къанмырзаны аллына урду. Ол да бирден атыб ёлтюреди. Сора бууну ичин джарады. Ичинден юч кёгюрчюн чыгъыб учадыла. Ол къуш, аланы ызындан учуб, джибермей тутады. Къанмырзагъа элтиб бериб, джардырады ичлерин. Алай джаргъанлай, юч чибин чыгъыб учадыла. Биягъы къуш, ызларындан учуб, тутуб, Къанмырзагъа келтиреди.

Эки сокъур чибинни бармакълары бла эзеди. Ючюнчю чибинни уа, къанатындан тутуб, Джансыз-Мыджыкъгъа алыб барады. Ол заманда Джансыз-Мыджыкъ джарты ёлю болуб тургъанлай барады. Барса, къычырыкъ эте тура эди.

Сора Джансыз-Мыджыкъ айтды Къанмырзагъа:

– Мени энди кесек джаным бла къой! – деб тиледи. – Хазнамы юйретейим, – деди.

Хазнасын юйретди. Чибинни Къанмырза эзди.

Сора къуш:

– Терисин бууну, гыбыт этиб, суудан толтур, этин чийлей сыртыма джюкле, келининг да, кесинг да, ол хазнаны да алыб, сыртыма минигиз, – деб юйретди.

Барын да къуш айтханча, Къанмырза этди. «Къакъ» десе, эт къабдырыб, «къукъ» десе, суу урлатыб, учуб тебиредиле.

Алай эте, сууу, эти да бошалды. «Къакъ» деди, эт, «къукъ» деди, суу джокъ. Эм ахырында кесини бут шаугютюнден къабдырды, алай бла дуньяны башына чыгъартды.

Сора Къанмырза:

– Манга игилик этдинг, бар джолунга, – дейди.

* Былайда, жомакъчы унутупму, огъесе жазгъан адам жетишмейми, чыгъарманы бир юзюгю жазылмай къалгъанды (Ф.Г.).

Къуш:

– Мен санга игилик этген болурма, аллынга юч атла, – дейди.

Къанмырза атлаялмайды. Ол заманда къуш Къанмырзаны ичине джутады. Бираздан, сау этиб, ызына чыгъарады.

– Мен сени этинги ашагъынчы, суймегенле бир бирлерин ашасын(ла)! Мен сен этинги ашатханынгы билген эдим, – деди. – Сен манга эки игилик этгенсе, (эки баламы) къалдыргъанса, мен а сени бир джанынгы къалдыргъанма, – деди. – Хайда, бар ахшы джол(гъа), – деб, бир бирлеринден айырылгъандыла.

Къанмырза, хазнаны да алыб, келинин да алыб, джашына келтиргенди. Келинин, джашын да алыб кетгенди. «Юч кечеден элибизге джетербиз», – деб мурат этгендиле.

Джолда, джукълаб тургъанлай, Къанмырзаны къулагъына эки таууш келгенди: «Къанмырза элге кирген джерде бир хан кёпюр ишлетгенди. Кёпюр лагъым кёпюр болгъанды». Алай, ол тауушха кёре, Къанмырза, кёпюрге кирмей, эски джолну элге киргенди.

Экинчи кече да биягъы эки таууш келди. Ол эки ауаз, даулаша: «Къанмырза эмчек уланына келин алыб келеди, хан а анга не дерт тутады?» – «Джашына алыб келген келинни кесине ал(ыр)гъа сюеди», – деб эшитдиле.

Болсада, юйге джетиб, джашны бла келинни бирге къоюб, кеси да джаш къатыны бла джатханлай, чардакъда бугъуб туруб, беш адам, атыб, джашны ёлтюр(юрге кюреш)едиле*. Болсада, Къанмырза, алгъаракъ джетиб, бешисин да ёлтюреди. Алай, ол беш адамны ёлтюргенлей, Къанмырза сын болуб къалады. Энди анга не дарман дегенде, ол бир кече тауушла: «Джашны къатыны бууазды, ол джаш табарыкъды. Алай аны сау этерик, ол келини табарлыкъ джашны союб, аны къаны бла джууса, олду», – деб эшитгендиле.

Сабий табды. Эрине айтды. Эри унамады. Эри джукълады. Къатын сабийин сойду, къанын алды, элтиб, тазгъа салыб, къан бла джууду. Алай этиб, келин отоууна кетди. Сабий бла Къанмырза алай къалдыла.

– Келин, мен сау болдум, джашчыкъ джылай турад, ары ал! – деб кычырды.

Эртден бла болгъанда, къылычы бла барын да кырыб, келини, джашы бла, сабийи бла ашаб-джашаб къалдыла.

Муну кёрмегенибиз кибик, ауруу-талау кёрмейик.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 3 паспорт. КъЧАО-ну Къарачай районуну Мара элинде 77-жыллыкъ Баучулары Махмутну жашы Ильядан 2.08.1967 жылда Шахмырзаланы С.О. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Сейир-тамаша-жигитлик жомакъ.

Чыгъармада тамашалыкъ жанууар болушлукъчула (адам тилин билген ажир, сёлеше билген, Къанмырзаны, келини, хазнасы бла бирге, жер башына чыгъаргъан улуу къуш) эм ажайып жаула (сарыуек, Джансыз-

* Былайда текст тюрлендирилген этгенди: «джашны ёлтюредиле» дегенни орунуна, контекстге кёре, «джашны ёлтюрюрге кюрешедиле» дегенбиз (Ф.Г.).

Мыджыкъ), баш жигитни хаталадан къалдыргъан жашырын ауазла да сагъыныладыла.

Текстде унутулгъан, айтылмай къалгъан, къатыш жерле бардыла. Баш жигитни аты бирде Къанмырза, бирде уа Къарамырза деп бериледи. Бир-бир жерледе, жомакъны юзюклери болмай, хапар бир жерден бирси жерине кёчюп къалады. Олхалатла, амал болгъан жерде, тюзетилгендиле.

МЫРЗАЕВ КАНМЫРЗА

В давнее-давнее время, древнее время в одном селе был бездетный хан. Его жена, занемогши, родила мальчика. А старики, народ, празднество, игрища завершив, приняли решение о сохранении (воспитании) мальчика. Постановили отдать Мырзаеву Канмырзе.

У Канмырзы был новобрачный период. Он ребенка укрыв, воспитал.

Мырзаев Канмырза был охотником, храбрым человеком.

– Канмырза, каждый день ты на охоту выходишь. Если бы и мне какое-нибудь оружие, снаряжение дал или охотничьего пса дал, и я бы пошел, – сказал мальчик.

Затем мальчик, взяв лук и охотничьего пса, отправился на охоту.

При заморозках из-под рододендрона один заяц, выскочив, убежал. И его пес, и сам погнались – не сумев догнать, вернулись.

– Ты мне хороший лук, хорошего пса не дал! – сказал.

Тогда вторично хороший лук и хорошего охотничьего пса дал.

На второй день опять юноша к тому прежнему рододендрону пошел. Опять заяц, оттуда выскочив, убежал.

– Но если в этот раз заяц, оттуда выскочив, побежит, в таком-то месте, таком-то месте есть одна такая лощина, не дай бог, туда войдешь (ни в коем случае туда не заходи), – говоря, научил (Канмырза – Ф.Г.).

Когда, загоняя, надумал стрелять, тот заяц в ту плохую (дурную / зловещую) лощину углубился (убежал). В описанную им лощину не войдя, в тот овраг вошел. Когда вошел, увидел красивую стеллу. На стелле увидев картину одной красивой (статной) девушки, прикипел к ней.

Той ночью, не придя, и охотничий пес, и сам там остались.

Тогда Мырзаев Канмырза понял из-за чего не пришел юноша. Затем Канмырза пошел в то место, где находился парень. Отец своего сына нашел возле той стеллы.

Тот парень сказал:

– Отец, эту красивую девушку, здоровья ради меня не жалея, найдя, мне (в жены – Ф.Г.) возьми, – попросил.

– Да не покарает тебя наш Тейри, обрети от Тейри зло!

– Не найти возможности нет, – когда сказал, и оружие-снаряжение взяв, вышли в путь.

Долгое время статную девушку не находя, много странствовали. В конце, подъехав к густым камышам, спустились (с коней – Ф.Г.). Увидел (Канмырза – Ф.Г.), что из середины камышовых зарослей, завиваясь-завиваясь, густой, очень сильный дым валит. Парня там оставив, в его сторону ушел. Когда пошел – большая крепость. В крепость:



– Хей! – крикнул.

Тогда изнутри один стройный юноша выскочил. Поздоровался. После того, как обменялись приветствиями:

– Канмырза, заходи домой, – сказал.

Канмырза юношу расспросил про девушку. Парень сказал:

– Проходи внутрь, девушка недалеко, – ответил.

Тогда Канмырза, своего сына, вернувшись, забрав, пришел, вошел в крепость. Когда вошли, парень рассказал:

– Девушка находится внутри семи железных крепостей. Кроме того еще и семь войск стерегут, – сказал.

«Канмырза, ты туда сможешь войти», – не говорит.

Утром Канмырза, поднявшись на высокий холм, поглядел в свой смотровой инструмент (рог)*. Поглядел: все так, как сказал тот парень. Хоть и долго размышлял, никакой возможности войти нет. Тогда Канмырза принял решение идти, роя землю (устроив подкоп).

Таким образом, копая, под землей дорогу построил. Прямым в крепость вошел.

Наверху крепости комнат много было.

Блуждая, долго проискав, девушку нашел. Увидев девушку, Канмырза пожелал доброго дня (поприветствовал).

– Спасибо, Канмырза, – сказала, стул поставив, усадила, но руку не пожала. – Чего странствуешь, чего ходишь? – спросила.

– У меня есть единственный сын, тебя ему в жены взять приехал, – сказал.

– А-а-а, мой отец: «Чтобы эти семь укреплений прошел, никого нет. Единственно Канмырза, возможно, сумеет пройти. За его сына отдам», – говаривал. Если не Канмырза, никто не войдет, – сказала. – Даже если это ты, не знаю, – сказала. – Ты – Канмырза, за сына такого храброго мужчины, как ты, я пойду. Ты теперь по дороге, которой пришел, вот на берег моря, вот, штырь, уздечку возьми и иди, – сказала. – У моего отца на берегу моря семь буйволов есть. Их освежуй и на своего коня, изготовив клей с песком, приклей, – сказала. – Затем этой уздечкой позвени. В это время конь моего отца, примчавшись, с твоим конем подерется. С твоего коня он клей с песком отдерет, а твой конь с него куски мяса оторвет. Затем, когда они сражаясь, (он) твоего коня поставит на колени, спасай свою голову, жизнь. Если твой конь жеребца моего отца поставит на колени, прыгнув, сядь на него и тем штырем бей по голове, – сказала. – Тогда, когда ты так побьешь, жеребец человеческим языком: «Что ты скажешь, сделаю», – скажет. Ты тогда слезь и седло своего коня на него надень и садись. Не боясь, в семь крепостей, на войско иди, – сказала. – Тогда войска, расступившись, дадут путь, всех семи крепостей ворота тебе откроются. Тогда мы оба, выйдя, уедем своей дорогой, – сказала.

Как она сказала, клей с песком приготовив, буйволиные шкуры приклеил на своего коня. Когда позвенел уздечкой, жеребец, заржав, подоспел. Подрались. Конь Канмырзы жеребца поставил на колени. Жеребец песок откусил, и конь жеребца победил.

* По всей видимости, здесь речь идет о некоем подобии подзорной трубы (Ф.Г.).



Прыгнув, Канмырза, сев на него, железным штырем побил его по голове. Конь на небо-землю поднялся-спустился. Конь (жеребец) поклялся:
– Я, что ты скажешь, сделаю, – сказал.

Тогда со своего коня уздечку, седло сняв, на жеребца надел, сел. Прямоком на том жеребце в крепость заехал. Жеребца все узнали. Войско разошлось, все освободилось.

Девушку посадив на шею жеребца (на жеребца впереди себя), приехал в крепость возле камышей, где остался его сын. Той ночью с парнем:

– Пищу, жизнь вместе установите, – сказав, заключил неких (поженил).

На утро тогда вышедший ранее из крепости юноша сказал:

– И я тоже, эту девушку прося, приехал. Теперь, Канмырза, я проголодался, мне немного оленей подстрелив, приди, – попросил.

Тогда Канмырза, и того парня прихватив, ушел на охоту. А своему сыну:

– Пока я не приду, не спи, – наказал.

Затем, когда настреляв оленей, пришли, сын спал, жены не было.

Тогда Канмырза:

– (Клянусь – *Ф.Г.*) Тейри, я его жену не найдя, не оставлю, – сказав, отправился искать.

Сын остался.

Пройдя всю поверхность миров, не нашел. В одну дыру вошел. По тому отверстию в земле пространствовал месяц, к заболоченной (поросшей осокой) поляне вышел. На той поляне сосен очень много было. Идя-идя, в лесу на один бугорок голову положив, заснул.

Вскочив, посмотрел, увидел дракона, который, обвившись вокруг сосны, полз вверх. И на вершине дерева показалось словно стог, очень большое орлиное гнездо.

Тогда, сразу побежав, дракона, изрубив на мелкие куски, бросил. Из того видневшегося орлиного гнезда два орленка выбравшись, оба Канмырзу, взяв, подняли в гнездо. Орлята сказали:

– В мире нашей матери крупнее орла нет. Когда она прилетит, съест тебя, – сказав, под крылья засунув, спрятали. – Наша мать каждый год двух птенцов высиживает, а их тот дракон, как только (она – *Ф.Г.*), нам пищу ища, улетает, приползая, съедает, – сказали. – Через немного наша мать прилетит, ею выплаканые слезы, в сель обернувшись, снесут его. Ветер от ее крыльев этих деревьев вершины согнет.

Ветер от ее крыльев деревья согнул, ее слезы того дракона, став дождем, превратившись в сель, смыли.

Сразу прилетев, орлица приземлилась на дерево.

– Ас-мус, человеческий запах, – произнесла.

– Матушка наша, оставь ас-мус и внизу на обрубке дракона посмотри-ка, – сказали ее птенцы.

Еще раз повторив, их мать:

– Вам это добро кто сделал? – спросила.

Когда так спросила:

– Вот, нам это добро сделавший – он, – ответив, птенцы человеческого сына показали.

Тогда орлица:

– Хей, сын человека, ты чего ходишь, чего бродишь? – спросила.



– Что поделаться, так и так, невестка моя пропала, – сказав, свою историю от начала до конца рассказал.

Орлица:

– Крупнее меня орла не бывало. Меня напугавшей вещи не было, – сказала. – Вчера один мужчина по имени Джансыз-Мыджык*, одну девушку взяв, в полуденное время ехал. Кроме него, меня никто не пугал, – сказала. – Но хоть и так, ты садись на мою спину, – сказав, на себя подняла.

С началом рассвета, его взяв, вниз бросилась.

Вечер наступил и на краю какого-то колючего кустарника спустила.

– Да, Канмырза, вот по этой тропинке иди. Эта дорога тебя в крепость Джансыз-Мыджыка приведет. В крепости Джансыз-Мыджык, наверное, спит, а твоя сноха, наверное, плачет, – сказала. – Однако не вздумай, забрав невестку, сбежать, если так сделаешь, нас обоих убьет, – сказала. – Тогда, когда найдешь свою невестку плачущей, так скажи: «Ой, когда сын Джансыза Мыджык проснется, тебя спросит: “Почему плачешь?” – “Да что мне делать, в месте, где ни человека, ни души нет, как мне жить?” – скажи», – скажешь, – наказала.

Затем, когда Джансыз-Мыджык, проснувшись, спросил, она, как Канмырза сказал, ответила. Тогда Джансыз-Мыджык:

– Моя душа – тот стоящий за дверью веник, – сказал.

К его второму пробуждению девушка (невестка) веник как девушку одела. Опять Джансыз-Мыджык, проснувшись, невестку, девушку:

– Почему его так одела? – спросил.

– А что мне делать? «Моя душа – веник», – сказал, поэтому, обласкав, нарядила, – сказала.

– Тогда почему ты его нарядила? И того, кто тебя этому научил, и тебя! – воскликнув, выругался.

– Та самая большая во вселенной орлица, она научила. Она – родственница Канмырзы, – сказала.

– И та орлица, и Канмырза, моему кузнецу лук заказав изготовить...**

Канмырза, взяв в руки лук, пришел. В этот момент и орлица, войдя в колючий кустарник, одного здорового оленя, выгнав, вывела на Канмырзу. И он, разом выстрелив, убил. Затем распарывает олень нутро. Изнутри три голубя, выскочив, улетают. Та орлица, полетев за ними, не упустив, ловит. Отнеся Канмырзе, заставила их разделать. Когда так разделали, три мухи, выскочив, улетают. Опять орлица, полетев вслед, поймав, Канмырзе приносит.

Двух слепней пальцами раздавил. А третью муху держа за крылышко, к Джансыз-Мыджыку идет. В то время, когда Джансыз-Мыджык был полумертвым, приходит. Когда пошел, криком исходился (Джансыз-Мыджык – Ф.Г.)

Тогда Джансыз-Мыджык сказал Канмырзе:

– Меня теперь с частичной душой (жизнью) оставь! – попросил. – Свои богатства раскрою, – сказал.

* Судя по контексту, Джансыз-Мыджык (досл.: Бездушный / Безжизненный / Мертвый-Мужик) является карачаево-балкарским аналогом Кошея Бессмертного русских сказок (Ф.Г.).

** Здесь, по всей видимости, опущен значительный фрагмент текста (Ф.Г.).



Богатства раскрыл. Муху Канмырза раздавил.

Затем орлица:

– Шкуру оленя, изготовив бурдюк, водой наполни, мясо сырым на мою спину нагрузи, и твоя невестка, и ты сам, и те сокровища прихватив, забирайтесь мне на спину, – научила.

Все, как орлица сказала, Канмырза сделал. Если «как» скажет, мясом кормя, скажет «кук», водой поя, полетели.

Так делая, вода и мясо закончились. «Как» сказала, мяса, «кук» сказала, воды нет. В самом конце от своих икр дал вкусить, таким образом наверх мира (на поверхность земли) дал вынести.

Тогда Канмырза:

– Мне добро сделала, отправляйся в свой путь, – говорит.

Орлица:

– Я тебе сделала добро, наверное, вперед три раза шагни, – говорит.

Канмырза не может шагнуть. Тогда орлица заглатывает Канмырзу внутрь. Через немного, вылечив, вытаскивает обратно.

– Прежде, чем я съем твое мясо, пусть нелюбящие (тебя) друг друга съедят! Я поняла, что ты скормил мне свое мясо, – сказала. – Ты мне два добрых дела сделал, (двух моих птенцов) спас, а я только одну твою жизнь спасла, – сказала. – Ну, пока, иди в добрый путь, – сказав, друг от друга отделились.

Канмырза, и богатство взяв, и невестку свою забрав, к своему сыну привез. И свою сноху, и своего сына забрав, ушел. «Через три ночи до нашего села доберемся», – задумали.

По пути, когда спали, Канмырзе два голоса послышались: «В том месте, где Канмырза въезжает в село, один хан мост велел построить. Мост с хитростью мостом оказался». Однако, согласно тому голосу, Канмырза не вступая на мост, по старой дороге в село вошел.

И во вторую ночь снова два голоса послышались. Эти два голоса споря: «Канмырза своему молочному сыну (воспитаннику) невесту везет, а хан на него за что злится?» – «Невесту, которую, за своего сына взяв, везет, (хан – Ф.Г.) себе (в жены) взять хочет», – услышал.

Как бы то ни было, когда, добравшись домой, парня со снохой вместе оставив, и сам с молодой женой лег, прятавшись на чердаке, пять человек, выстрелив, парня пытаются убить. Однако, Канмырза, успев раньше, всех пятерых убивает. Но, едва тех пятерых человек убивает, Канмырза обращается в камень. Теперь если спросить, какое лекарство от этого, той ночью голоса: «Жена юноши беременна, она родит сына. Но его оживит, если того мальчика, которого родит его сноха, зарезав, его кровью обмыть, это», – услышали.

Ребенка родила. Мужу сказала. Муж не захотел. Муж заснул. Жена своего ребенка зарезала, его кровь взяла, отнеся, поставив в таз кровью обмыла. Так поступив, сноха в свою комнату ушла. Ребенок и Канмырза так остались.

– Невестка, я выздоровел, мальчик плачет, забери туда! – крикнул.

Когда настало утро, своей саблей всех истребив, с невесткой, сыном, ребенком стали жить-поживать.

Как (мы) того не видели, не увидим (испытаем) болезни-хвори.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 3. Записал С.О. Шахмурзаев 2.08.1967 г. в с. Мара Карачаевского района КЧАО от 77-летнего Баучуева Ильяса Махмутовича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Волшебно-героическая сказка.

В произведении упоминаются чудесные животные-помощники (знающий человеческий язык жеребец, умеющая разговаривать, поднявшая Канмырзу вместе с его невесткой и сокровищами на поверхность земли большая орлица) и сверхъестественные враги (дракон, Джансыз-Мыджык – аналог Кощея Бессмертного русских сказок), остерегавшие главного героя от бед таинственные голоса.

В тексте имеются забытые, недосказанные, запутанные места. Имя главного героя в одних местах дается, как «Канмырза», в других – «Карамырза». В некоторых местах отсутствуют фрагменты сказки, вследствие чего повествование перескакивает с одних событий на другие. Подобные ошибки, там, где это было возможно, исправлены.



ОРУСЛАН

Эртте бир патчах болгъанды. Ол хар (къатынын – *Ф.Г.*), эки жыйырма кюнден кѣп тутмай, кесип тургъанды. Бек артда алгъан къатынын да кесер заман жетгенде:

– Бар да, ахлуларынгы бир кѣрюп кел, – дегенди.

Къатынынны къарыны болгъанлай, фаэтон бла юйюне ийгенди.

Кесер заманы жетгенде:

– Кел! – деп айтдыргъанды.

– Да эки адамны кесерге закон тапсанг, барырма, – деп айтдыргъанды.

Патчах, излеп, закон тапмагъанды.

Къатын къозлайды, жаш табады.

Патчах, (адамла – *Ф.Г.*) ийип, юйюне келтиреди.

Къатын юйюнде бек мудах болгъанда, жаш анасына:

– Анам, нек мудахса, не болгъанды? – деп сорады.

– Да сени атанг мени кесген этерикди, – дейди анасы жашына.

Жаш, темирчилеге барып, кесини бууунларын байларгъа темир жипле ишлетеди. Дагъыда барып, бир уллу бичакъ ишлетеди. Ёсюп, ат белинде айланырча жаш болады. Сора, барып, атладан бирин тутуп, анасын да алып, къачып кетеди.

Бир жерде азыкъ ашаргъа тохтагъандыла. Ашап бошاپ:

– Анам, мен былай бир барып келейим, – дейди.

Жаш, тюбюне эннгенде, (бешбашлы – *Ф.Г.*) эмегеннге тюбеп къалады. Аны бла сермешеди. Бир ненча кере уруп, жерге батдырады. Бешисинден, уруп, тѣртюсюн кесди. Сора жаш, бир уллу гыйы ташны алып, эмегенни юсюне къаплады. Анасын алып келип, къалагъа салды.

Кеси уугъа жюрюп болгъанды. Анасына уа:

– Анам, сен юйню ол жанына къарама, солургъа, айланыргъа сюйсенг, ары бар, – дегенди.

Анасы, жашыны айтханына тынгыламай, эмеген аууп тургъан жерге баргъанды. Ынчхай тургъан эмегенни кѣргенди.

– Баланг, къарындашынг болурма, – деп, кѣп зат айтханда да, унамагъанды. – Эринг болурма, – дегенде, унагъанды.

– Алай сени мындан къалай чыгъарайым ансы? – дегенди.

Эмеген айтханды:

– Къаланы башында къара кюбюр барды, анда бир жип болур. Аны келитирип, къыйырын къолума тутдурсанг, кесим чыгъарма, – дегенди.

Къатын барды, аркъанны келтирип, къыйырын къолуна тутдургъанды.

Эмеген бла къатын эр бла къатын болгъандыла.

Жаш уугъа бара, андан къайта тургъанды. (Анасы – *Ф.Г.*) эмегенден бууаз болгъанды. Жаш эмегенни билмегенди.

Эмеген:

– Бу жашны ѳлтюрейик, – деп къысханды къатынын.

Къатын ыразы болгъанды.

Эмеген къатыннга айтханды:

– «Мен ауругъан этеме», – де да, «ауруп» жат, жашны уа мени къарындашыма иейик. «Аны сют кѣлю бла нашасы барды, андан ашасам, иги боллукъма», – де – *Ф.Г.*), – дегенди.



Жаш анасына дарманланы келтирирге баргъанды. Къаланы башында бир къызны кѳргенди.

– Келме, ѳлтюрюрле! Атынгы юч ургъандан артха къалсанг, ѳлтюрюрле! – дегенди.

Жаш къаланы ичине ычхыннганды. Сют да, нашала да алып айланнга(нда), артха чыгъалмагъанды.

Бир заманда эмеген шууулдап жетгенди.

– Къалай ашайым? – дегенди.

– Кѳкге ат да, андан тюшюп келгенлей къабарса, – дегенди.

Жашны кѳкге атханды. Ол андан келе тургъанлай, къама, эмегенни аузуна тирелип, эки жарып жибергенди.

Ол эмегенни ѳлтюргенден сора, къаланы башындан ариу къыз тюшюп келеди. Жашха:

– Адам улу, сен къайдан келгенсе? – дегенди. – Мени гитче заманымда урлап келип, багъып турады, ашагъан, къатын этерик (э)се да, билмей, – дегенди.

Жаш бла къыз жюзюклерин бир бирге бергендиле. Ол алагъа неках (болгъанды – *Ф.Г.*).

Сютню да, нашаланы да анасына келтиргенди. Къызны да хыянатсыз жин патчах(ха) элтгенди*.

– Да, – дегенди анасы, – ол сабийди, андан аллай бир нек къоркъа(са)? Уудан келе келгенлей, сауутун, сабасын алай ары тагъады. Ол заманда мен, ойнагъан кибик этип, тюбюме салып, санга къычырырма, – дейди.

Айтханларыча этедиле. Жашны, кѳзлерин чыгъарып, таракъ орунларына салдыла. Аны термитип ѳлтюрюрге кюрешдиле. Сора машокга сугъуп, аны башын къаты къысып, эки жол айырылгъанда атдыла.

Агъачдан кѳп арбала келе тургъанлай, толу машокну чабып алдыла. Ачып къарагъанда – ичинде бир сокъур жаш. Жашны жин патчахха элтип бардыла эм бердиле.

Жангы сокъурну аллына баста салдыла. Аны келтирген къыз жашха:

– Бармагъынгы сугъуп, эки кере къап, – дегенди.

Алай этген заманда къыз жюзюгюн таныгъанды.

– Барыгъыз да, аны бери алып келигиз, – дегенди.

Жашны, элтип, къызгъа берди(ле).

Къыз, атасына, анасына да билдирмей, жашны да ат боюнуна алып, чыгъып кетгенди.

Бек узакъгъа барып, ач да (болуп – *Ф.Г.*), арыгъан да этип, бир тал терекни тюбюнде бир ариу суу чыгъа тургъанын кѳрдюле. Алайда ашадыла, суудан ичдиле.

Алайда бир чыпчыкъчыкъ келип жырлады. Аны тилин къыз билгенди. Чыпчыкъ айтханды: «Мени бир къанатчыгъым тюшер. Аны алып, суу бла жуууп, ол къанат бла сыйпасагъыз, кѳзлери сау боллукъду», – дегенди чыпчыкъ.

Жашны кѳзлери сау болгъандыла.

Ала ызларына къайтдыла. Бир жерде тохтап, кесине бакъды. Къарыу жыйып, анасына барыргъа хазырланнганды. Ууакъ затчыкъла сата баргъанча этип, кесини анасына баргъанды.

* Былайда текстни бир кесеги тас болгъаннга ушайды. Хапар айтхан адаммы унутханды, огъесе жазгъан адаммы жетишмегенди, белгисизди (*Ф.Г.*).



Баргъанда, сауутлары тагъылып тургъанларын кёрдю. Анасы да кьозлап, эмеген сабийле да кёп болгъандыла. Анасы аланы (сауутланы – Ф.Г.) сатды.

Къайтып кетгенди. Иги хазырланып, къайтып, эмеген бла сермеширге келгенди. Эмегенле бла сермешгенде, аланы барын да къыргъанды. Андан сора уа анасын да ёлтюрюп, патеген* къуюп жандыргъанды.

Эки къала(да) табылгъан битеу хазнаны жыйып, жин патчахны къызын да алып жашагъанды. Аны бла ашап-жашап къалгъандыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 4 паспорт. КъМАССР-ны Лаикута элинде 1880 жылда туугъан Сабанчыланы Бекирни жашы Муратдан 3.02.1965 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жашын жангы эрине (бу чыгъармада эмегенге) алышхан сатхыч ананы юсюнден сюжетге къуралгъан сейир-тамаша жомакъ.

Текстни кем жерлери кёпдю. Бир-бир магъаналы ишлени, затланы юсюнден учхара айтылып къалады. Тюрлю-тюрлю халатла терк-терк тубейдиле. Амал болгъан жерде ала тюзетилгендиле.

Чыгъарманы атына «Оруслан» деп не ючюн аталгъаны ангылашынмайды.

ОРУСЛАН

Давно был один царь. Он каждую свою жену, дольше сорока дней не держа, резал (убивал). Когда настало время зарезать взятую самой последней жену:

– Иди и, проведав свою родню, возвращайся, – сказал.

Жену, оказавшуюся беременной, на фаэтоне домой отправил.

Когда пришло время зарезать:

– Приезжай! – передал.

– Да если найдешь закон, чтобы зарезать двух человек, поеду, – передала.

Царь, поискав, не нашел закона.

Женщина разрешается от бремени, сына рождает.

Царь, послав (людей), привозит домой.

Когда дома женщина очень сильно опечалилась, сын у матери:

– Матушка, почему (ты) печальна, что случилось? – спрашивает.

– Да твой отец меня зарежет, – отвечает мать своему сыну.

Мальчик, отправившись к кузнецам, чтобы свои запястья обмотать, железные веревки (прутья) заказывает изготовить. Еще пойдя, большой нож (меч) заказывает изготовить. Подросши, становится юношей, способным ездить на коне (на крупе коня, в седле). Затем, пойдя, поймав одного из коней и забрав свою мать, убегает.

В одном месте остановились поесть. Закончив трапезничать:

* Фатеген.

– Матушка, я так пройдусь, вернусь, – говорит.

Когда юноша спустился вниз, на (пятиглавого – *Ф.Г.*) эмегена наткнулся. С ним сражается. Несколько раз ударив, вгоняет в землю. Из пяти, ударив, четыре (головы – *Ф.Г.*) срезал. Затем парень, одну большую каменную глыбу взяв, накрыл эмегена. Забрав свою мать, придя, в замке поселил.

Сам ходил на охоту. А матери:

– Матушка, ты на ту сторону дома не заглядывай, если захочешь отдохнуть, прогуляться, туда иди, – сказал.

Мать, не послушавшись сына, пошла к месту, где упал эмеген. Увидела стонущего эмегена.

– Дитем, братом твоим буду, – говоря, даже когда много чего сказал, не захотела. – Мужем твоим стану, – когда сказал, согласилась.

– Но только как (мне) тебя отсюда вытащить? – сказала.

Эмеген молвил:

– На верху замка черный сундук есть, в нем одна веревка будет. Ее принеси, если конец в мою руку вложишь, сам выберусь, – сказал.

Женщина пошла, принесла аркан, конец в руку вложила.

Эмеген и женщина стали мужем и женой.

Юноша уходя на охоту, оттуда возвращаясь, бытовал. (Его мать – *Ф.Г.*) от эмегена забеременела. Парень об эмегене не знал.

Эмеген:

– Этого парня убьем, – стал принуждать жену.

Женщина согласилась.

Эмеген сказал женщине:

– «Я болею», – скажи и, «приболев», ляг, а парня к моему брату пошлем. «У него есть молочное озеро и огурец, если их отведаю, поправлюсь» (, – скажи – *Ф.Г.*), – молвил.

Юноша пошел принести своей матери лекарства. На верху крепости одну девушку увидел.

– Не иди, убьют! Если отстанешь больше, чем трижды (успеешь – *Ф.Г.*) ударить своего коня, убьют! – сказала.

Юноша внутрь крепости прорвался. Когда же и молока, и огурцов набрав, обернулся, назад выйти не смог.

В какое-то время эмеген примчался.

– Как (мне) (тебя – *Ф.Г.*) съест? – сказал.

– Подбрось в небо и, когда оттуда буду падать, закусишь, – сказал.

Юношу в небо подкинул. Когда он оттуда падал, меч, застряв во рту эмегена, надвое разрубил.

После того, как он убил эмегена, красавица, спустившись с вершины крепости, идет. Юноше:

– Сын человеческий, ты откуда пришел? – сказала (спросила). – Меня в детском возрасте похитив, откармливает, не зная, то ли съест, то ли возьмет в жены, – сказала.

Парень и девушка свои кольца друг другу отдали. Это им некая (бракосочетанием) (послужило – *Ф.Г.*).



И молоко, и огурцы матери принес. И девушку без вреда / ущерба к царю джиннов отвел*.

– Да, – сказала его мать, – он ребенок, его так сильно почему (ты) боишься? Как только приходит с охоты, свое оружие, снаряжение вон туда вешает. В это время я, притворившись, что играю, подмяв под себя, тебе крикну, – говорит.

Как сказали, (так и) сделали. Выколол парню глаза, поместили их в свой мешочек для расчески. Его, замучив, убить постарались. Затем, засунув в мешок, его верх крепко завязав, бросили на развилке двух дорог.

Когда из лесу ехало много арб, полный мешок с охотой (бегом) взяли. Когда, раскрыв, посмотрели – внутри один слепой юноша. Парня к царю джиннов отвезли и отдали.

Перед недавно ослепшим поставили пасту. Девушка, которая принесла ее, парню:

– Обмакнув палец, два раза вкуси, – сказала.

Когда так сделал, девушка кольцо узнала.

– Идите и его сюда приведите, – сказала.

Парня, отведя, девушке передали.

Девушка, втайне от отца и матери (не дав знать отцу и матери), и парня посадив на коня впереди себя, выехала.

Очень далеко отправившись, проголодавшись и устав, увидели, что под одной ивой чистый родник бьет (чистая вода выходит). Там поели, воды испили.

Там одна птичка, прилетев, запела. Ее язык девушка знала. Птичка сказала: «У меня одно крылышко (перышко) упадет. Если его взяв, водой промыв, тем крылом (пером) протрете, глаза выздоровеют (прозреют)», – молвила птичка.

Глаза парня выздоровели (прозрели).

Они вернулись назад. В одном месте остановившись, привел себя в порядок (поправил свое здоровье). Набравшись сил, собрался идти к матери. Притворившись, будто продает всякие мелкие безделушки, к своей матери пошел.

Когда пошел, увидел, что его оружие висит. И мать разродившись, и эмегенских детей много стало. Мать их (оружие – Ф.Г.) продала.

Снова ушел. Хорошо подготовившись, вернувшись, с эмегеном сразиться пришел. Когда с эмегенами сразился, их всех истребил. А после этого и свою мать убив, облив керосином, поджег.

Собрав все имущество, которое нашлось в обеих крепостях, и дочь царя джиннов забрав, зажил. С тем (они) стали жить-поживать.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 4. Записал А.З. Холаев 3.02.1965 г. в с. Лашкута КБАССР от Сабанчиева Мурата Бекировича (1880 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

* Здесь, по всей видимости, отсутствует фрагмент текста. Непонятно, является ли это следствием забывчивости повествователя или упущение фиксатора (Ф.Г.).

Волшебная сказка, основанная на сюжете о вероломной матери, предавшей своего сына ради нового возлюбленного (в данном случае эмегена).

Текст неполноценный, в нем пропускаются целые эпизоды, о важных событиях упоминается вскользь. Много орфографических и пунктуационных ошибок. Там, где это было возможно, они исправлены.

Остается непонятным, почему текст назван «Оруслан».



КЪАРАТОН ХАН

Эртте-эртте бир къаратон хан болгъанды. Къаратон ханны къатыныны хандан сабийи болмагъанына жүреги къыйналып тургъанды.

Жашай келип, къатыны ханнга:

– Бир башха къатын ал, сабийинг болмай къалып, сен ёлюп кетсенг, тюп болуп къаллыкъса, атынг айтылмай, мюлкюнг бош адамлагъа къаллыкъды. Ал къатын, – деп къысады.

Хан:

– Эй, сен, жангысын алсам, аны бла жарашмазса, сени бла мени арамда къайгы тышер. Къой, къысма! Кюндеш бла жарашыу болмаса, мен эки отну ортасында къалай жашарма? – деп, къатыны да:

– Ал къатын! – деп, къаты болады. – Тапхан ол этсе, ёсдюрген кесим этерме, – дейди.

Сора хан къатын алады. Бёлек замандан къатыны бууаз болады. Кюндешини бууазлыгъын ханны алгъын къатыны билди. Сабий тууаргъа жууукъда алгъын къатыны, айтханына эмда экинчи къатын алдыргъанына сокъуранып, ханнга:

– Биз жашаяллыкъ туююлбюз. Не муну кетер, не мени кетер, – деп, эрин къысды.

– Мен айтмагъанмы эдим, жарашмазсыз деп? Энди муну къарыны барды, мен муну къайры къыстайым? Къыстасам, гюнях болмазмы? – дейди хан.

– Биз экибиз бирге жашаялмайбыз, бирибиз кетмей болмайбыз, – дейди алгъын къатыны.

Амалсыз болгъанда, хан алгъын къатынына:

– Энди мени ырысхым барды. Ырысхымдан кёп азыкъ эт да, мен муну ата юйюне элтип келейим, – дейди хан.

Алгъын къатыны, хан айтханча, азыкъны кёп этип, эри бла кюндешин жолгъа ашырды.

Хан, артда къатынын алып, жолгъа чыгып, бёлек заманны жүрюп, бир уллу агъач ичинде талагъа жетип, ол талада ёгюзлени да тууарып:

– Бираз солуюкъ, – деди.

Бир кесек солуп, ауузланган да этип бошагъанлай, къатын къалкъыйды. Ол кезиуде хан хапчукну, хабурну да, азыкъны да алайда арбадан къотарып, артына къайтып кетеди.

Къатын уянып къарагъанда – арба, ёгюз да жокъ, кишиси да жокъ. Къатын, жарсыугъа кирип, къайгы этип, къалай алай болса да, хапчугун, азыгъын да бир уллу терекни тубюне жыйып, кечине туруп, кёп бармай, сабий тууду. Сабийи жаш болады. Ол жашха анасы Аллахберди атады.

Бир бёлек заманны жашы бла къатын жашайдыла. Аллахбердини чагып ёсгенине анасы бек сейир этеди, жашны къарыуу да жылдан угъай да, кюнден кюннге да белгиленеди.

Бёлек замандан жаш – Аллахберди – ёсюп, анасы да, кеси да кечинирча къош ишлейди. Жаш, иги да аякъланып, садакъ къурап, иги мараучу болуп, кийик ёлтюрюп кечинедиле.

Кюнлени бир кюнюнде Аллахберди, анасындан эркинлик алып, уугъа барады. Кете туруп, анасына:



– Бери адам улу айланмайды. Мен терк, неда бюгюн келалмасам, сен жарсыма. Бу тийреде журт, эл, адам табалсам – төгерекеге бир кьарайым, – деп, бөлек заман жүрюп, бир уллу агъачда гитче мырыгъа сыртдан кьарагъанда, бирер уллу чынар терекни чачы-башы бла кётюрюп келе, тогъуз эмегенни кенгден кьарап кьереди.

Бу эмегенлени ызларындан кьарап туруп, бир уллу акъ кьаланы аллында тереклени атып, кеслери уа кьалагъа киргенлерин кьереди.

Ол ингирде, кеч болгъандан сора, эмегенле кьаланы ичинде жукълайдыла. Аллахберди ол кече акъ кьаланы аллында бек уллу бир уру кьазады.

Танг иги да жарыгъынчы уруну битдирип:

– Хей! – деп, кьаланы аллындан кьалагъа сөлешеди.

Эмегенлени адетлери уа «хей» деген тауушха бирлери чыгъыу эди. Ол «хей» дегенде, бир эмеген чыгъады. Аллахберди, эмеген босагъагъа чыкыгъанлай, уруп, башын кетерип, уругъа ташлайды. Алай эте, сегиз эмегенни уругъа атады. Дагъыда тогъузунчу кере «хей» деп тауушуна киши чыкымагъанда, дагъыда бир ненча кере «хей» деп айтса да, киши чыкымайды.

«Да была бери тогъузоулан кирген эдиле да, бири уа не болду?» – деп, бираз да мычып, Аллахберди кьалагъа кеси кирип излейди, төгерекеге, башха да кьарайды, киши тапмайды.

«Энди мында киши жокъду», – деп, бютюн болуп, артына кьайтып, анасын да алып, кьалагъа келип, ие болуп жашап башлайды.

Биягъы Аллахберди уугъа айлана, кийик ёлтюре, анасы да, кеси да бу эмегенлени уллу акъ кьаласында жашайдыла.

Болуучусуча, кюнлени биринде Аллахберди уугъа жайылгъанда, анасы, кьалада кеси кьалып, сагъыш эте тургъанда, тынгылап, кьаланы ичинде, бийик жеринде бир шыбыр-шыбыр эшитеди да, кьулакъ салып, иги да тынгылагъанда, бир зат барча ангылайды. Сора бу тиширыу:

– Хей, не затса? Тиширыугъа жарагъан затмыса? – деп сорады.

– Ай, – дейди ол шыбырдагъан, – тиширыугъа уа жарарыкъ эдим, алай не этейим ансы?..

Ол сёзню эшитгенде:

– Алай эсе, тюш бери, – дейди Аллахбердини анасы.

– Ай, тюшген а этерем, алай сени жашынгдан кьоркъама, – дейди.

Аллахбердини анасы:

– Тюш бери, не зат эсенг да, жаш мында жокъду, – дегенде, ол, иги да ийнанмай, төгерегине сакъ кьарай, чардакъдан энишге тюшеди.

Аллахбердини анасы бла ол, бири бирине кьарап, бираз турадыла да, сора эр бла тишича кьошуладыла.

Айхай да, бу сау кьалгъан эмеген, бек кьарыулу болса да, жанына уа кьоркъады – ол Аллахбердини этгенлерин кёзю бла кьргенди да, кьатыннга да артыкъ ышанмай, айырылып кетерге да болалмай:

– Мени жашынгдан букъдуруп тураллыкъ эсенг, сени бла жашарма, – деп тилейди, кьатын да анга сёз береди.

Алай бла Аллахберди бир кюннге угъай да, бөлек кюннге да уугъа кетип айланады. Ол кьайтып келгенде, эмеген бугъады, кетгенде, кьатын бла эр-кьатын халда жашайды.



Бёлек замандан сора, анасыны къарыны болгъаннга ушатып, Аллахберди сорады:

– Ай, анам! Сени къарынынг баргъа ушайды. Бу не алапат, не сейирди?

– Угъай, балам, – дейди анасы, – мени семиргенден башха хатам жокъду. Аллахны буйругъу бла сен, кетип, уугъа айланып, кийиклени кёп келтиресе да, мен а аланы ашап семиреме, – деп къояды.

Алай бла да бёлек заман озгъандан сора, Аллахберди анасына иги да ишекли болуп сорады. Энди анасы, амалсыз болуп, былай жууап этеди:

– Ай, балам, сен билмейсе: мен сени да Аллахны къадары бла эрсиз, хаудан бууаз болуп тапханма, бу жол да эрсиз бууазма.

Къысха заманда Аллахбердини анасы жаш табады. Ол да, Аллахбердича, кюнден кюннге да ёсюп, бек къарыулу, сыфатлы, ариу жаш болады да, Аллахберди бла уугъа бара, уучу халда уллу болушмаса да, анга сёз нёгерлик эте жюрюйдю.

Эки жаш да уугъа кетип айлана болгъан кюнлени биринде Аллахбердини анасы бла анга (эр – Ф.Г.) болгъан эмеген кеслери алларына кенгеш этедиле. Сора эмеген:

– Да энди биз, былай аман кюнлю болуп, бугъуп, къаллай бирге жашарыкъбыз? Андан эсе мен да бир жары, башым къалгъан жерге кетейим, сен да кесинг жашларынг бла жаша, ансы башха мадар билмейме, – дейди.

– Да, – дейди къатын, – мени акъылыма келгеннге кёре, Аллахбердини да манга Аллах бергенди, сени да манга Аллах бергенди, сенден жашны да манга Аллах бергенди. Кел, энди сен да бугъуп турма да, Аллахбердиге да, кеси жашынга да ачыкъ бол да, экибиз да, жашланы аталары, аналары болуп, жашау этейик, ансы ёмюрде, бугъуп, сен да туралмазса, мен да, жашла кетген заманда болмаса, сени бла жашау этмегеним себепли, бек эригеме. Жашларыбыз бла ачыкъ болуп жашасакъ, биз бир тюрлю да сагъышсыз, хар не керегибизни да табып, тынч жашар эдик. Да сен ол затха не айтаса ансы, мени эсима келгени алайды.

– Угъай, – дейди эмеген. – Мен сени жашынга ачыкъ болуп, кёрюнюп, бирге жашау этер къарыуум жокъду, мен андан къоркъгъан этеме. Сен кесинг билгенликден, ол мени къанлы жауумду. Кёрмеймисе, бизде ол менден башхаланы кыргъанды, мен да бугъуп къалмасам, мени да ёлтюрлюк эди. Кеси жашым болуп къалса да, бир иш эди ансы, айтама да, мен Аллахберди бла жашаялмам. Алайды да, мен кетмей болмайма. Хайда, сау къал, санга – саулукъ, манга – эсенлик, – деп, кьолун узатады.

Ол заманда къатын, жилямсырап, кьол бермезден, эрине айланып:

– Угъай, башха амал этейик. Мен сенден айырылгъан(дан) эсе, дуньядан айырылыргъа окъуна, тап эки жашымдан да айырылыргъа ыразыма.

Былайда биягъы эмеген:

– Энди алай эсе, сени жанынга тиймесин ансы, биз, эмегенле, сабийни бек сюебиз, асыры суйгенден ашап окъуна къоябыз. «Ат айланса – къазыкъгъа» дегенча, къачан болса да, жаш бла мен бир бирни табарбыз, алай бюгюн а Аллахбердиге ачыкъ болалмайма – къоркъама, аны себепли кетеме, – дейди.

Къатын, бираз сагъышланып:

– Ала, эки жашны бизге не кереги барды? Быладан бири бизге тамамлыкъ этерикди, – дегенде, эмеген:



– Угъай, сен Аллахберди бла жашарса, мен а, къачан болса да, жашымы табарма, ансы башха амалгъа тюзелалмайма, – дей келип, экиси да Аллахбердини къоратыр мадар этерге келишедиле.

– Энди, – дейди эмеген къатынына, – сен эки хычин этесе, аладан бирин эмеген жау бла, бирин а кийик жау бла биширесе да, кийик жаулу хычинни артдагъы жашынга, эмеген жаулу хычинни уа Аллахбердиге башха-башха салып ашатаса. Аллахберди ол хычинни ашаса, къарыны кёбюп ёллюкдю.

Къатын, эмегенден айырылмаз ючюн, эмеген айтханлай этеди да, хычинлени бирем-бирем жашлагъа башха салады. Болсада, эмегенни жашы Аллахбердини жаны кибик суйгени бла бирге анасыны не умут этгенин биледи – ол билдиргичди*. Аны себепли, Аллахбердини хычинин эмегенни жашы, алып, бир жанына салып, кийик жаулу хычинни экиси да ашап тоядыла.

Сора эмегенни жашы, анасын сынар ючюн, ол эмеген жаулу хычинни:

– Ашайыкъ, – деп тебирейди.

«Энди экиси да ашап, ёлюп къаладыла», – деп къоркъуп, аналары хычинни, сермеп алып, бирси жанына салады.

Бу халны эмеген бугъуп тургъан жеринден къарап ангылайды. Да бу эмегенни жашы тышындан абери айтмаса да, ичинден а: «Да манга этеригинг да алайды», – деп, анасына ыразысыз къарайды.

Сора эмегенни жашы анасындан суусап тилейди, аналары бир уллу гоппан бла бозаны Аллахбердиге тутдурады. Аллахберди, гоппанны къолуна алып, кесин иги жарашдырып, ичерге тебирегенде, эмегенни бугъуп тургъан жерин жашы билип болгъаны себепли, Аллахбердиге:

– Ёрге, чардакъгъа къарап тарт, – дейди.

Аллахберди, къарындашы айтханча, чардакъгъа къарап тартыргъа тебирегенде, чардакъда эмегенни эслеп, секирип, жеринден туруп, къолгъа алып, ёлтюрюп къояды.

Анасыны тюз жүреги болмагъанын билип, Аллахберди анасындан айырылып кетерден болады. Ол халны кичи къарындашы ангылап, кетмезин тилейди. Аналарын жангыз къояргъа суймегенден Аллахбердиден къайтарып-къайтарып, «кетме» деп тилесе да, кетерин ангылап:

– Алай эсе, мен да сенден айырылмайма, – деп, тебиреп кетдиле.

Бу эки къарындаш да, жүрюй кетип, юч жол айырылгъаннга жетедиле. Былайда тохтап, Аллахберди кичи къарындашына:

– Энди былайдан ары бирге бармайбыз. Жигитликде бирем-бирем белги(ле)нейик. Сен, – дейди Аллахберди, – къайсы жолну суйсенг да, айыр да, бар, мен да бири бла барырма.

Аллахбердиден айырылыргъа суймесе да, кёлкъалды этсе да, кичи къарындашы, аны айтханын этип, боюн салгъандан сора, Аллахбердиге былай дейди:

– Энди биз бирге бармайбыз. Ким биледи, ёлюм керти затды, сен мени ёлгеними билирге суйсенг, хар эрттенде бет жуугъанда, эки къолунг бла кёзлеринги сыйпагъанда, къолунг къаннга боялып болса, анда билирсе. Сени ёлгенинги уа билирге амалым мени да барды, – деп, айырылышып кетдиле.

* Билгичди.



Бара-бара кетип, Аллахберди бир уллу шахаргъа тюбейди. Ол шахарда хар кёрген Аллахбердини ариулугъуна бла къарыулулугъуна сукъланмагъан адам кълмайды. Бёлек заманны жюрюй тургъанда, ол шахарны ханыны кёзю Аллахбердиге илинеди да: «Анга жангыз кызымы берирем», – деп, эсине келеди да, Аллахбердини, кесине чакъырып, киеу этеди.

Къыз бла жаш кьошулгъан кечеде къызгъа:

– Бу шахарда жигит деп не зат ючюн айтылыргъа боллукъду? – деп сорады.

Къыз жууап орунуна:

– Да мен аны къайдан билейим? Юйден тышына чыкъмайма, суаргъа да кюрешмегенме, билмейме, – дейди.

Экинчи кече да биягъы жаш сорууун кълтлайды. Анда да башха тюрюлю жууабы къызны болмайды.

Ючюнчю да биягъы жаш – Аллахберди – сорууун кълтлайды. Ол заманда ханны къызы – Аллахбердини кълтыны – кючюннген да этип, билгенин айтмай амал тапмайды.

– Бизни шахарда жигитлик айтылыр иш былайды: о жерде, о жерде Аман къл деген бир жер барды. Ары баргъан бек уллу жигитликге саналады. Ары баргъанла кёл да болгъандыла, алай андан сау кълйтхан болмагъанды.

Былайда Аллахберди, кесине базынып, ушкогун да жарашдырып, эгерлерин да ызындан тизип, Аман кългъа жолоучу болуп тебиреди.

Бара-бара кетип, Аман кългъа жетип, сыртдан энишге кълрайды да, кийиклени кёреди. Марап, атып, бирлерин ёлтюреди. Анга тигелеп, санлап, башын, аягъын да терисине жыйып элтейим дегенча, кълну теренине кълрайды. Анда бир кийикчи кьош кёреди. Тигелеп, кийикчи кьошха дери барады. Кийикчи кьошда кийикни этин шишлик эте, башын, аягъын юте башлайды. Былайда биреуню эслейди.

Эслегенине иги тюрслеп къларагъанда, кеси бир кълрыш, сакълалы минг кълрыш адам болады, кеси да арлакъда тауукъ адакъагъа минипди.

Аллахберди кийикчи кьошда турады. Ол тауукъ адакъагъа минип тургъан, сакълалы минг кълрыш болса да, кеси бир кълрыш болгъан, кьошда адам барны билип:

– Хей! – деп сёлешеди.

Аны эшитип, кьошдагъы Аллахберди:

– Хей, кел, жууукъ бол! – дейди.

Ол заманда сакълалы минг кълрыш, кеси бир кълрыш киши, тауукъ адакъадан да тюшмей:

– Да кълры жууукъ болама? Итлерингден кюркъама, – дейди.

– Да анга не амал? – дейди Аллахберди.

– Ма, – дейди сакълалы минг кълрыш, кеси бир кълрыш киши, – сакълалымы бир тюгюн берейим, ол итлеге сынжыр болур, – деп, сакълал тюгюн береди да, ол тюк итлеге сынжыр болады.

– Кел, энди итле байланыпдыла, – дейди Аллахберди.

– Барырем, алай ушкогунгдан кюркъама, – дегенде, биягъы Аллахберди:

– Анга уа не амал? – деп сурайды.

– Да мен биягъы сакълалдан тюк берейим да, аны ушкокну бурунуна буштукъ эт, – дейди.



Аллахберди ол айтханлай этгенде, ушкокну быргъысы тот болуп, атаргъа жарамай къалады.

Сора сакъалы минг къарыш, кеси бир къарыш киши, къошха кирип, къарап, отну бир жанындагъы шишликни ашап, къалгъанларын да ашаргъа узалгъанда: «Битеуюн да ашапмы къояды?» – деп къоркъгъандан, Аллахберди:

– Энди къой, – дейди.

Алайда экиси да сермешдиле да, сакъалы минг къарыш, кеси бир къарыш киши, Аллахбердини хорлап, турушунлай тамагъына жутуп къойду.

Аллахбердини жокълугъун аны кичи къарындашы билген эди да, излей барып, ол Аллахберди къоюп кетген шахаргъа келди.

Ол бла Аллахберди бирге асыры ушагъандан, бирин биринден айырып амал жокъ эди. Аллахбердини кичи къарындашын кёргенде, халкъ, аны Аллахберди сунуп, уллу къууанч болуп:

– Ханны киеую Аман къолгъа барып къайтханды! – деп, кёп къурманлыкъла этип сыйладыла. – Уллу жигит! – дедиле.

Сора Аллахбердини къатыны да, аны Аллахберди сунуп, ол кече биргесине къалдырды.

Алай бир тешекге киргенде, Аллахбердини къарындашы, къамасын къынындан чыгъарып, экисини да арасына чанчып:

– Сен мындан бери ётсенг, бу къама, тёппенгден кирип, табанынгдан чыкъсын! Мен ётсем да, алай болсун! – деп, ол кече тынч къалдыла.

Эрттен болгъанда Аллахбердини къатыны бу болумгъа сейирсинип къалды. Аллахбердини къарындашы уа, хар затны кирик, Аллахбердиге не болгъанын да, къайдагъысын да билгени себепли, туруп, итлерин да, ушкогун да алып, Аман къолгъа тебиреп кетди да, ары жетип, ол Аллахберди этгенча этип, кийикчи къошха жетди. Туура Аллахбердича кийикни шишлик этип, отну эки жанына салып тургъанлай, башын, аягъын да юте тургъанда, биягъы сакъалы минг къарыш, кеси бир къарыш киши:

– Эй! – деп, эшикден сёлешеди.

Бу жаш:

– Кел, жууукъ бол! – дегенде, бу Аллахбердигеча айтады.

Аллахбердича бу да сакъаллы кишини сакъал тюклерин ол айтханча этмей, отха атып кюйдюреди да, алайда сакъаллы, базынып, къошха киреди. Госмак* ийис ангылап:

– Мени тюклеримими отха атдынг, госмак ийис къайданды? – деп сорады.

Аллахбердини къарындашы:

– Госмак ийис а мен кийикни башын, аягъын ютгенимден чыгъады, – деп къояды.

Сора сакъаллы киши, къарап, бир шишликни жутуп, экинчисине узалыргъа тебирейди да, ала бир бири бла сермешедиле. Ол сермешде Аллахбердини кичи къарындашы, сакъаллыны хорлап, тюрбуне салып, боюнун кесерге башлайды.

Былайда сакъаллы киши:

– Кесме! Мен сени къарындашынгы табып, сау халда кесинге берирме, – десе да, бу сакъаллыны кеседи, къарынын жарып, къарындашын анда излейди.

* Хорусмак.



Сакъаллыны къарынында къарындашын тапмайды да, бушуу-бушман болады.

Ол кезиуде чыпчыкъ келип жырлайды, жырында: «Чик-чик, чыначыкъ, чыначыкъда балачыкъ», – деп ангылашынады.

Аллахбердини къарындашы, алайны ангылап, сакъаллыны чыначыгъын жарып, андан къарындашын чыгъарады. Аллахберди, андан чыкъгъанлай уянып:

– Аллах-Аллах, не татлы жукълап тураем, – дейди.

Ал жанында сакъаллы: «Мени кесме», – деп тилеген эди да, болсада, кесип башлагъанда, Аллахбердини кезюнде шарайыпчыгъын айтып, аны кетер дарманы табанында жаучугъу болгъанын билдирген эди да, аны да этген эди.

Эки къарындаш да биягъы шахаргъа къайтып кетдиле.

Аллахберди юйге къайтханда, къатыны мудах болгъанын кёрюп:

– Нек мудахса? – дегенде, къатыны уа:

– Сен тюнене нек алай этип кетгенсе? – деди.

– Не этгенме да? – дегенде, къатын болумну айтады.

Сора Аллахберди, къарындашына ишекли болуп:

– Танг атханлай, кичи къарындашымы ёлтюрмей къоймам! – деп ант этди.

Танг атханда, Аллахберди къарындашыны ызындан болду, тапды, антын айтды.

– Жарайды, – деп, экиси да, элден чыгъып, садакъларын кёкге тартханда, кичи къарындашы Аллахбердиге:

– Атмайыкъ, атсакъ, сени садагъынг терк келликди, – дегенде, Аллахберди атмады да, къарындашы уа, – мени ёлтюрмей къоймай эсенг, отоуну башына чыгъайыкъ да, анда мени кезлерими байла да, эринине элт. Мен андан секирсем, ёлюрме, – дейди.

Айтханларыча этип, кичи къарындаш секирирге тебирегенде, къаллай эсе да бир таууш болуп:

– Атма! Къарындашынгы атсанг, ассы боллукъса! – дегенде, Аллахберди сокъуранды.

Сора экиси да бир бирге къарап, кичи къарындашы ишни болушун ангылатханда, Аллахберди бла къучакълашып, шахаргъа къайтып, Аллахберди къатынына барып, кичи къарындашына да къатын алып, ол халда ашап-жашап къалдыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 6 паспорт. КъМАССР-ны Урваньны ишлеп чыгъарыучу управлениясыны Ташлы-Тала элинде 1879 жылда туугъан Эристаланы Таусолтанны жашы Муталибден 13.01.1965 жылда Насталаны С.Б. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Эмеген эри ючюн кеси сабийине къажасу баргъан ананы юсюнден мотивге къралгъан сейир-тамаша-жигитлик жомакъ. Бу къауумгъа кирген бирси жомакъладан айыргъан энчиликлери бардыла. Эмеген, жашдан асыры къркыгъандан, аны бла сермеширге унамай, къатынындан, кеси сабийинден айырылыргъа ыразы болуп, алай къатыны унамай, хыйла



къурайды. Алай кичи жашы, аны билип, Аллахбердини жояргъа къоймайды, атасын ёлтюрюрге себеплик этеди. Алай аны бла жомакъ бошалмайды, анга къатын алыу бла, сакъалы минг къарыш, кеси бир къарыш киши бла демлешиуню юсюнден мотивле да къошуладыла. Баш жигит Аллахберди жомакъны аллында бек кючлю, къарыулу, акъыллы адамча кёргюзтюлсе да, андан арысында кичи къарындашыны жигитликлери ал сатыргъа чыгъарыладыла.

БЕЗДЕТНЫЙ ХАН

Давным-давно был один бездетный хан. У жены бездетного хана от того, что (у нее) от хана детей нет, сердце терзалось (кровью обливалось).

Проживя некоторое время, жена хана:

– Возьми другую жену, если без ребенка оставшись, ты умрешь, исчезнешь (род твой прервется / вымрет), имя твое не упоминаясь / не прославляясь, имущество чужим людям достанется. Женись (Возьми жену), – стала принуждать.

Хан:

– Эй, если (я) новую возьму, ты с ней не поладишь, между тобой и мной ссора зародится. Оставь, не настаивай! Если с соперницей лада не будет, я среди двух огней как буду жить? – сказав, и жена:

– Женись! – говоря, настаивает. – Если она родит, сама выращу, – говорит.

Тогда хан женится. Через некоторое время его жена оказывается в положении. О беременности своей соперницы узнала прежняя жена хана. Ближе к сроку рождения ребенка давняя жена, пожалев о том, что говорила и заставила взять вторую жену, хану:

– Мы не сможем ужиться. Либо ее убери, либо меня убери, – говоря, стала принуждать мужа.

– Разве я не говорил, что не поладите? Теперь она в положении, я ее куда выгоню? Если выгоню, разве не будет грешно? – говорит хан.

– Мы вдвоем вместе жить не можем, одна должна уйти (одна не уйдя, не сможем), – говорит давняя жена.

Исчерпав все средства (Оказавшись бессильным), хан своей давней жене:

– Ныне у меня есть достаток. Из моего имущества / богатства (взяв – Ф.Г.) много еды приготовь, и я, ее в отцовский дом отвезя, приеду, – говорит хан.

Прежняя жена, как хан сказал, пищи много приготовив, мужа с соперницей проводила в дорогу.

Хан, взяв последнюю жену, выйдя в путь, некоторое время проехав, добравшись до поляны в одном большом лесу, на той поляне и быков распрягши:

– Немного отдохнем, – сказал.

Когда, слегка отдохнув, закончили перекусывать, женщина задремала. В это время хан и вещи, барахло, и еду там из арбы сгрузив, обратно уезжает.

Когда женщина, проснувшись, посмотрела – арбы и быка нет, и мужа ее нет. Женщина, погрузившись в печаль, переживая, как бы то ни было,



свое имущество и пищу собрав под одно большое дерево, так живя, вскоре родился ребенок. Ее ребенок оказался мальчиком. Того мальчика мать назвала Аллахберди*.

Некоторое время с сыном женщина живет. Мать очень удивляется тому, что Аллахберди растет-расцветает, и сила мальчика не то, что по годам, а даже изо дня в день делается хорошо заметной.

Через какое-то время мальчик – Аллахберди – подросши, чтобы и его мать, и сам могли жить, кошару построил. Юноша, хорошенько окрепнув, соорудив лук, став хорошим охотником, убивая оленей, питаются / живут.

В один из дней Аллахберди, получив разрешение у матери, идет на охоту. Уходя, матери:

– Сюда человеческий сын не ходит. Если я быстро, или сегодня не смогу прийти, не огорчайся. В этой округе если жилище, село, человека смогу найти – осмотрюсь-ка кругом, – сказав, некоторое время прохаживая, в одном большом лесу на маленькую лужайку с возвышенности / холма когда посмотрел, по одной большой чинаре с ветвями-корнями подняв, идя, девятерых эмегенов, издали посмотрев, увидел.

Наблюдая за этими эмегенами, увидел, как, побросав деревья перед одной большой белой башней, сами в башню вошли.

Тем вечером, когда стемнело, эмегены внутри башни засыпают. Аллахберди той ночью перед белой башней очень большую яму выкапывает.

Еще до того, как заря хорошо занялась, закончив (копать) яму:

– Хей! – говоря, от входа в башню внутрь башни обращается.

А у эмегенов был обычай на оклик «хей» по одному (одному) выходить. Когда он сказал «хей», один эмеген выходит. Аллахберди, как только эмеген вышел на порог, ударив, снеся голову, сбрасывает в яму. Таким образом, восьмерых эмегенов в яму сбрасывает. Еще, когда в девятый раз на его оклик «хей» никто не вышел, еще сколько-то раз хоть и говорил «хей», никто не выходит.

«Да они ведь сюда вдвятиером входили, а один куда делся?» – подумав, немного помедлив, Аллахберди, сам войдя в башню, ищет, смотрит вокруг и около, никого не находит.

«Теперь здесь никого нет», – решив, убедившись, вернувшись назад, и мать забрав, придя к башне, став хозяином, стал жить.

Снова Аллахберди на охоту ходя, оленей убивая, и мать, и сам живут в большой белой башне эмегенов.

Как обычно, в один из дней, когда Аллахберди отправился на охоту, его мать, оставшись в башне одна, когда размышляя, молчала, внутри башни, в ее высоком месте какой-то шорох слышит и, наострив уши, когда хорошо прислушалась, различила, что что-то есть. Тогда эта женщина:

– Хей, ты что такое? Подходящая женщине вещь ли? – спрашивает.

– Ай, – говорит тот шептавший, – женщине бы подошел, но что (мне) поделывать?..

Когда эти слова услышала:

– Коли так, слезай сюда, – говорит мать Аллахберди.

– Ай, спустился бы (я), но твоего сына боюсь, – молвит.

Когда мать Аллахберди:

* Досл.: «Дал Аллах», т.е. «дарованный Аллахом» (Ф.Г.).

– Слезай сюда, что ты там есть, парня здесь нет, – сказала, тот, до конца не поверив, с опаской озираясь кругом, спускается вниз с чердака.

Мать Аллахберди и он, посмотрев друг на друга, немного постояли, и затем воссоединились как мужчина и женщина.

Конечно, хоть этот оставшийся в живых эмеген был очень сильным, а за свою жизнь боится – он своими глазами видел, что творил Аллахберди, и (потому) и на женщину не особо полагаясь, и расставшись, уйти не решаясь:

– Если сможешь меня от своего сына прятать, с тобой буду жить, – просит, и женщина ему слово дает.

Таким образом, Аллахберди не только на один день, а и на несколько дней на охоту уходя, бродит. Когда он возвращается, эмеген прячется, когда уходит – с женщиной как муж с женой живет.

Через некоторое время, заподозрив, что мать в положении, Аллахберди спрашивает:

– Ай, матушка! Похоже ты беременна. Это что за чудо, что за диво?

– Нет, дитяtko, – говорит его мать, – у меня, кроме того, что поправилась, другого вреда нет. По воле Аллаха ты, уходя, поохотившись, оленей много приносишь, а я, ими (мясом) питаюсь, поправляюсь, – сказав, отмахнулась.

И после того, как таким образом некоторое время прошло, Аллахберди мать основательно подозревая, спрашивает. Теперь, его мать, будучи в безвыходном положении, такой ответ дает:

– Ай, дитя мое, ты не знаешь: я и тебя по воле Аллаха без мужа, от воздуха забеременев, родила, и в этот раз тоже без мужа беременна.

В короткие сроки мать Аллахберди родила сына. И он, как Аллахберди, изо дня в день подрастая, очень сильным, видным, красивым парнем становится и, с Аллахберди на охоту ходя, если в охотничьем плане особо и не помогал, ему собеседником служа, ходит.

В один из дней, когда оба парня, уйдя на охоту, бродили, мать Аллахберди и ставший ей мужем эмеген между собой совет держат. Тогда эмеген:

– Да теперь мы, так мучаясь, прячась, до каких пор жить будем? Лучше и я куда-нибудь, в место, где (сумею) голову прислонить, уйду, и ты сама со своими сыновьями живи, а то другого пути / способа не знаю, – говорит.

– Да, – молвит женщина, – как мне приходит на ум, и Аллахберди мне Аллах дал, и тебя мне Аллах дал, и от тебя сына мне Аллах дал. Давай, теперь и ты не прячься, и Аллахберди, и своему сыну откройся, и мы оба, став отцом, матерью парней, жизнь устроим, а то всю жизнь, прячась, и ты не сможешь, и я, разве только когда парни уходят, поскольку с тобой живу, очень скучаю. Если с парнями, открывшись, будем жить, мы без каких-либо сомнений, все необходимое находя, спокойно жили бы. Да только что ты на это скажешь, а мне в голову, что пришло таково.

– Нет, – говорит эмеген. – У меня нет сил, открывшись твоему сыну, показавшись, вместе жить, я его боюсь. Как ты сама знаешь, он – мой кровный враг. Разве не видишь, у нас он кроме меня (всех) остальных истребил, и я если бы не спрятался, и меня бы убил. Если бы он оказался моим сыном, это одно дело, а так, говорю же, я с Аллахберди жить не сумею. Итак, я не уйти не могу. Давай, оставайся в здравии (прощай), тебе – здоровья, мне – благополучия, – произнеся, протягивает руку.



Тогда женщина, всплакнув, чтобы не протянуть руку (в ответ), обратившись к своему мужу:

– Нет, другой выход найдем. Я, чем с тобой расстаться, даже с миром (жизнью) расстаться, даже с двумя своими сыновьями распрощаться согласна.

Здесь опять эмеген:

– Теперь, коли так, ты не обижайся, а так мы, эмегены, очень любим детей, так сильно любим, что даже съедаем. Как говорится: «Если конь повернется – к колу», когда бы ни было, юноша и я друг друга найдем, но сегодня я Аллахберди раскрыться не могу – боюсь, поэтому ухожу, – говорит.

Женщина, немного призадумавшись:

– Слушай, (а) какая у нас необходимость в двух сыновьях? Одно из них нам будет достаточно, – когда сказала, эмеген:

– Нет, ты с Аллахберди будешь жить, а я, когда бы то ни было, своего сына найду, а то другого выхода не могу найти, – говоря, (в итоге) оба договариваются найти способ (убить) избавиться от Аллахберди.

– Теперь, – говорит эмеген жене, – ты готовишь два хычина, один из них на эмегеньем жире, а один на оленьем жире жаришь и хычин на оленьем жиру последнему сыну, а на эмегеньем жире хычин Аллахберди, раздельно положив, дашь съесть. Если Аллахберди съест тот хычин, живот раздувшись, умрет.

Женщина, чтобы не расставаться с эмегеном, делает, как сказал эмеген и хычины по-одному сыновьям раздельно подает. Однако, вместе с тем, что сын эмегена любил Аллахберди как свою душу (самого себя), знает, что задумала их мать – он ясновидящий. Поэтому сын эмегена, хычин Аллахберди взяв, отложив в сторону, оба, съев хычин на оленьем жиру, наедаются.

Затем сын эмегена, чтобы испытать свою мать, тот на эмегеньем жиру хычин:

– Давай съедим, – настаивает.

«Теперь оба, съев, умрут», – испугавшись, их мать хычин, выхватив, на другую сторону перекладывает.

Эту ситуацию эмеген, глядя из своего укрытия (из места, где прятался), понимает. Да этот сын эмегена, хоть вслух ничего и не говорит, а про себя: «Да и мне сделаешь то же самое», – думая, на мать недовольно смотрит.

Затем сын эмегена просит у матери питья, мать большой гоппан бузы вручает Аллахберди. Когда Аллахберди, взяв в руки гоппан, хорошенько подготовившись, собрался выпить, поскольку место, где прятался эмеген, его сын знал, Аллахберди:

– Глядя вверх, на чердак, пей, – говорит.

Когда Аллахберди собрался, как посоветовал брат, глотнуть, глядя на чердак, заметив на чердаке эмегена, вскочив, поднявшись с места, схватив в руки, убил.

Узнав, что у матери сердце (душа) нечестивое, Аллахберди решил уйти, расставшись с матерью. Такое (его) состояние младший брат поняв, просит не уходить. Не желая оставлять их мать одну, хоть и

повторив-повторив, попросил Аллахберди «не уходи», поняв, что (все равно) уйдет:

– Коли так, и я с тобой не расстанусь, – сказав, собравшись, ушли.

Эти два брата, странствуя, добираются до развилки трех дорог. Остановившись здесь, Аллахберди своему младшему брату:

– Теперь, начиная отсюда, вместе не идем. В храбрости по-одному отличимся. Ты, – говорит Аллахберди, – какую дорогу захочешь, выбери и иди, и я по одной пойду.

После того, как его младший брат, несмотря на то, что не хотел расставаться с Аллахберди, несмотря на то, что обиделся, сделал, как он сказал, подчинился, Аллахберди так говорит:

– Теперь мы вместе не идем. Кто знает, смерть – реальная (реально существующая) вещь, если ты захочешь узнать о моей смерти, когда каждым утром будешь умывать лицо, когда двумя руками будешь протирать глаза, если твоя рука будет окрашена кровью, тогда узнаешь. А о твоей смерти узнать и у меня возможность есть, – сказав, разделившись, ушли.

Шел-шел Аллахберди, встретил (на пути) один большой город. В том городе из каждого видевшего красоте и силе Аллахберди не позавидовавшего человека не осталось. Когда он некоторое время ходил, хан того города замечает (у хана того города глаз цепляется за) Аллахберди и: «Отдать бы за него свою единственную дочь», – приходит ему на ум и Аллахберди, к себе позвав, делает его (своим) зятем.

В ночь, когда девушка и юноша воссоединились, у девушки:

– В этом городе храбрецом за что можно прослыть? – спрашивает.

Девушка вместо ответа:

– Да мне это откуда знать? Из дому на улицу не выхожу, да и выспрашивать не старалась, не знаю, – говорит.

И во вторую ночь снова юноша свой вопрос повторяет. И тогда у девушки другого ответа не находится.

И в третий раз снова парень – Аллахберди – свой вопрос повторяет. Тогда дочь хана – жена Аллахберди – вздохнув, не находит способа не рассказать то, что знает.

– В нашем городе считающееся подвигом дело таково: в том-то месте, в том-то месте есть местность, называемая Аман-кол*. Сходить туда считается очень большим подвигом. Ушедших туда было много, но вернувшихся оттуда живыми не было.

Здесь Аллахберди, будучи уверен в себе, снарядив ружье и своих охотничьих псов построив за собой, в Аман-кол, став путником, отправляется.

Идя-идя, добравшись до Аман-кола, с возвышенности вниз смотрит и видит оленей. Прицелившись, выстрелив, одного убивает. Спустившись к нему, расчленив, голову и ноги в шкуру собрав, отнести думая, смотрит вглубь ущелья. Там видит охотничий стан. Спустившись, идет до охотничьего стана. На охотничьем стане из оленьего мяса шашлык делая, голову, ноги смолить начинает. Тут замечает кого-то.

* Топоним «Аман кьол» дословно переводится как «Плохое (пользующееся дурной славой) ущелье» (Ф.Г.).



Когда, к замеченному хорошенько приглядевшись, посмотрел, сам с карыш*, с бородой в тысячу карышей человеком оказывается, и сам чуть подальше на петухе верхом сидит.

Аллахберди в охотничьем стане находится. Тот, кто на петухе верхом был, хоть и имел бороду в тысячу карышей, сам с один карыш был, зная, что в стане есть человек:

– Хей! – обратился.

Услышав его, (находящийся) в стане Аллахберди:

– Хей, заходи, добро пожаловать! – говорит.

Тогда с бородой в тысячу карышей, сам с один карыш мужчина, даже не слезая с петуха:

– Да куда там (мне) приблизиться**? Твоих собак боюсь, – говорит.

– Да из этого какой выход? – молвит Аллахберди.

– На, – говорит с бородой в тысячу карышей, сам с один карыш мужчина, – дам один волосок из своей бороды, он послужит собакам цепью, – сказав, волос из бороды дает, и тот становится псам цепью.

– Идем, теперь собаки привязаны, – говорит Аллахберди.

– Пошел бы, но твоего ружья боюсь, – когда сказал, опять Аллахберди:

– А из этого какой выход? – спрашивает.

– Да я опять из бороды волос дам, а (ты) его в дуло ружья заткни, – говорит.

Когда Аллахберди сделал, как он сказал, ствол ружья, покрывшись ржавчиной, становится непригодным для стрельбы.

Затем с бородой в тысячу карышей, сам с один карыш мужчина в стан войдя, оглядевшись, съев весь шашлык с одной стороны костра, когда потянулся съесть и оставшиеся: «Неужели все съест?» – испугавшись (из страха), Аллахберди:

– Теперь оставь, – сказал.

Там оба дерутся и с бородой в тысячу карышей, сам с один карыш мужчина, победив Аллахберди, целиком / живьем проглотил.

О пропаже (гибели) Аллахберди его младший брат узнал и, разыскивая (его), в тот покинутый Аллахберди город прибыл.

Он и Аллахберди так сильно были схожи, что отличить одного от другого было невозможно. Когда увидели младшего брата Аллахберди, народ, приняв его за Аллахберди, сильно обрадовавшись:

– Зять хана, пойдя в Аман-кол, вернулся! – говоря, много жертвенных животных зарезав, уважили. – Большой храбрец! – сказали.

Затем и жена Аллахберди, приняв его за Аллахберди, той ночью заставила остаться вместе с ней.

Однако, когда легли на одну кровать, брат Аллахберди, вынув из ножен свой кинжал, воткнув между ними обоими:

– Если ты перейдешь отсюда сюда, пусть этот кинжал, войдя через макушку, выйдет через твою пятку! Если я перейду, пусть так же будет! – сказав, ту ночь тихо провели.

* *Къарыш* – карачаево-балкарская мера длины, расстояние между концами вытянутого большого пальца и мизинца руки [5, 600].

** Выражение «*жууукъ бол*» обычно переводимое как «добро пожаловать», дословно означает «будь близок» (Ф.Г.).

Когда настало утро, жена Аллахберди этому обстоятельству только подивилась. А брат Аллахберди, поскольку, так же, как и все, знал, и что случилось с Аллахберди, и где (он) находится, встав, и собак, и ружье взяв, отправившись в Аман-кол, ушел и, добравшись туда, как Аллахберди сделал, поступив, достиг охотничьего стана. Когда прямо как Аллахберди из оленьего мяса сделав шашлык, положив по двум сторонам костра, голову и ноги смолил, опять с бородой в тысячу карышей, сам с один карыш мужчина:

– Эй! – от двери окликнул.

Когда этот юноша:

– Заходи, добро пожаловать! – сказал, он как Аллахберди говорит.

Как Аллахберди, он бородатого мужчины с волосами из его бороды, как тот сказал, не поступив, бросив в огонь, сжигает и там бородач, став смелым, входит в стан. Разобрав запах паленой шерсти:

– Мои волосы в огонь бросил, откуда запах паленой шерсти? – спрашивает.

Брат Аллахберди:

– А запах паленой шерсти от того, что я оленьи голову, ноги смолю, распространяется, – отговаривается.

Тогда бородатый мужчина, посмотрев, один шашлык проглотив, собирается потянуться за вторым, и они друг с другом схватываются. В той схватке младший брат Аллахберди, бородача победив, подмяв под себя, собирается перерезать ему шею.

Тут бородатый мужчина:

– Не режь! Я, твоего брата найдя, в живом виде тебе отдам, – хоть и говорит, он бородача режет, живот вспоров, своего брата там ищет.

В желудке у бородача не находит и сильно опечаливается.

В это время птичка, прилетев, поет, в ее песне: «Чик-чик, мизинчик, в мизинчике ребеночек», – различается.

Брат Аллахберди, это поняв, разрезав мизинец бородача, оттуда своего брата достает. Аллахберди, как только оттуда выбрался, проснувшись:

– Аллах-Аллах, как же сладко (я) спал, – говорит.

В начале бородач: «Меня не режь / не убивай», – попросил, однако, когда начал резать, упомянув о небольшом дефекте глаза у Аллахберди, дал знать, что лекарством, чтобы его убрать, является жирок на его пятке, и (младший брат) его применил.

Оба брата опять в город вернулись.

Когда Аллахберди вернулся домой, увидев, что жена его печальна:

– Почему грустна? – спросил, а жена:

– Ты почему вчера, так поступив, ушел? – говорит.

– А что я сделал? – когда спросил, жена обстоятельства изложила.

Тогда Аллахберди, заподозрив брата (усомнившись в брате):

– Как только рассветет, своего младшего брата не убив, не отступлю / не успокоюсь! – воскликнул, поклялся.

Когда рассвело, Аллахберди стал преследовать своего брата, нашел, рассказал про клятву.

– Пойдет, – сказав, оба, выйдя из села, когда свои луки натянули (направив) в небо, младший брат Аллахберди:



– Давай не будем стрелять, если выстрелим, твоя стрела быстро вернется, – когда сказал, Аллахберди не выстрелил, а брат, – если меня не убив, не оставишь (успокоишься), давай поднимемся наверх комнаты и там мне глаза завяжи и подведи к краю. Если я оттуда спрыгну, умру, – говорит.

Когда, сделав, как сказали, младший брат собрался прыгать, какой-то голос, возникнув:

– Не сбрасывай! Если своего брата сбросишь, станешь грешником! – когда сказал, Аллахберди раскаялся.

Затем оба друг на друга посмотрев, когда младший брат разъяснил обстоятельства дела, с Аллахберди обнявшись, вернувшись в город, Аллахберди вернувшись к жене, и младшему брату взяв жену, – в таком роде остались жить-поживать.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 6. Записал С.Б. Настаев 13.01.1965 г. в с. Таилы-Тала Урванского производственного управления КБАССР от Эристаова Муталиба Таусолтановича (1879 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.

Образованная на мотив о предательстве матерью сына ради нового мужа-эмегена волшебной-героическая сказка. Имеются черты, выделяющие это произведение среди других, входящих в данную группу сказок. Эмеген, настолько сильно боится парня, что, не желая с ним сражаться, готов расстаться и с женой, и с собственным сыном. Однако его жена, не соглашаясь с этим решением мужа, идет на хитрость. Но ее младший сын, зная об этом, мешает расправе над Аллахберди и способствует убийству своего отца. Тем не менее, сказка на этом не заканчивается, к ней примешиваются мотивы женитьбы и схватки с чудищем – мужчиной с бородой в тысячу карышей, ростом с карыш. Если в начале сказки главный персонаж Аллахберди рисуется как очень мощный, сильный, умный человек, в дальнейшем на первый план выходят подвиги его младшего брата.



АЛМАЖАШ

Эртте заманда элледен биринде айтхылыкь ариу къатыны болгъан бир киши жашагъанды. Эри бла къатыны бир бирлерин бек жаратып, урушсуз, туююшсюз эм къаугъасыз тынч жашау бардыргъандыла. Кёп да турмай, къатын къыз тапханды. Къыз алай ариу эди: «Арабий, ариулукь бла анасын да хорлай ушайды», – дерча.

Кеси да анасына алай бек ушагъанды, суйсенг а, союп къаплагъан кибик. Къызны кёргенле да:

– Бу туууп, анасы хазна жашагъан да этге эди, – дегендиле.

Халкъ аузуна тюшген да иги туююлдю. Кертиси бла да къатын кёп турмай ёлгенди. Къыз да терк ёсгенди, уллу болгъанды. Къызны атасы къатын алыу къайгъыгъа киргенди. Кёп айланганды, излегенди, алай болгъанлыкьгъа кесини къатынына ушагъан къатын тапмагъанды. Кесини къатынына ушамагъанны алмазгъа уа ант этгенди. Кёп айланып къатын тапмагъанын эм аны къатынына жангыз да кесини къызы ушагъанын, аны себепли уа, кесини къызын къатыннга алыргъа таукелленнгенин къызына айтханды. Къыз атасыны халын кёреди да, кесин унагъанча кёргюзтюп къояды.

Алай кеч, къарангы болгъанлай, адам тынчайгъандан сора, къыз, юйден къача барып, бир алма терек башына минип тохтайды. Кече ол терекни башында къалады. Ол кече терек башында алма ашагъандан сора, къызны къарынына сабий тюшгенди. Кёп турмай, сабий заманы жетип туугъанды. Къызны алма ашап тапхан жашы бир да аламат, къарыулу, жигит жаш болуп, терк ёседи.

Жаш, темирчиге барып, кесине жараулу сауут-саба ишлетгенди. Аны сауутларын кесинден башха адам жюрютюрге къыйын эди. Алай жашха уа, ол сауутла бош затлача кёрюнюп болгъандыла. Сора, айлана барып, эмегенлени къыстап, анасы бла аланы юйлеринде жашап тебирейди. Алай жашай тургъан заманда, жашха бир буу тюбегенди. Жаш бууну ёлтюрюрден алгъа, буу жашха:

– Сен мени сой да, теримден юй ишле, буйреклерими уа жерге басдырсанг, ала санга эгер итле болурла, къуйругъум да керекли жерде санга кёпюрлюк этер, – дегенди.

Жаш тюз ол айтханлай этгенди.

Бир кюн жаш уугъа кетгенде, жашны анасы, къайдан эсе да бир къычыргъан ауаз эшитип, эшикге чыгъады. Ол къычыргъан:

– Мени суудан ётдюр, санга жаш болурма, – дейди.

Къатын:

– Жаш кереклим жокъду, – дейди да, унамайды.

Эмеген дагъыда:

– Суудан ётдюрсенг эди, эр болур эдим, – дегенди.

Эмегенни: «Санга эр болур эдим», – дегенин эшитгенде, къатын, жашы асырап тургъан буу къуйрукъну суугъа салып, кёпюр этеди. Эмеген да къатын болгъан жанына ётгенди. Алай бла жашны анасы, ол жашы къыстагъан эмеген къауум бла саякъ жюрюп башлагъанды.

Къатын бла эмегенле жашны жояр акъылгъа киредиле. Эмегенле, жашны туура сюелип ёлтюралмазлыкъларын сезип, къатыннга тюрлю-



тюрлю хыйлала юйретип башлагъандыла. Жаш юйге къайтыр заманнга эмегенле кетгендиле. Жашны анасы, эмегенле юйретгенча, ауругъан кибик этип тургъанды. Жаш келгенлей окъуна, анасы:

– Ол жерде, тауну бек бийигинде къочхар мюйюзлю кийикле бардыла да, аланы этин манга тапмасанг, мен ёллюкме, – деп тохтагъанды.

Алай къатын бла эмегенле умут этгенча болмай, жаш къочхарланы болушлукълары бла жумушун да этип, кеси да сау-саламат къайтады, кеслери да:

– Бизни унутма, биз керек болурбуз, – дегендиле.

Къатын жашны дагыда, эмегенле юйретгенча, ачыла, жабыла тургъан къая ичинде шаудан суудан келтирирге жибергенди. Жаш, анда да бир къызны болушлугъу бла суудан алып, юйюне къайтады.

Къыз да, къыйынлыкъгъа тюшген кюнюнде жашха болушургъа айтып, жиберген эди.

Ючюнчю кере, эмегенле юйретгенча, эмегенле жарашдырып сакълагъан къазаннга жибергенди жашны. Ол деменгили къазанда юч кере жууунуп, дарманны алай излерге керек эди. Эмегенле уа, эки къазанны къапханча жарашдырып сакълагъандыла да, жаш ары кирип, жууунуп башлагъанлай, экинчи къазанны башына къаплап, тюбюнден уллу эмеген от этип кетгендиле.

Жаш, къазанны башы жабылгъанлай окъуна, къочхар мюйюзлю кийиклени бла къая ичинде къызны эсине тюшюргени себепли, ала болушургъа жетгендиле.

Къочхар мюйюзлю кийик, уруп, къазанны чартлатханды, къыз да бише тургъан жашны терк окъуна сау этгенди.

Жаш, анасы, аны ёлтюрюр ючюн, аллай къыйын жерлеге жиберип тургъанын ангылагъандан сора, ол хыйлаланы юйретген эмегенлени эм анасын да алагъа къошуп, барын да бирден къыргъанды. Жаш кеси да ол анга болушлукъгъа келген къыз бла насыплы жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 2 паспорт. КъМАССР-ны Чегем районуну Тёбен Чегем элинде Аппаланы Солтанны жашы Мустафадан 22.03.1959 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Алмажаш» деген жомакъны баихаладан айырмалы этген – анда жомакълада бек аз тюбеген аналыкъны сыфатыды. Ол, кесини ич дуниясын къурутуп, ёз жашын, жарасуз, кюйсюз кючлеге хорлатып, алагъа алышханы, буюргъаны бла ишин тамамлайды.

АЛМАЖАШ*

В давние времена в одном из селений жил мужчина с очень красивой женой. Муж с женой сильно нравились друг другу, жили размеренной жизнью, без ругани, без интриг, без шума. Через определенное время эта женщина родила дочь. И девочка стала такой красавицей, наверное, можно было подумать, своей красотой она и мать опережала.

* Алмажаш – Яблоко-мальчик.

Настолько она была похожа на свою мать «как будто с нее слепили». И кто видел эту девушку:

– После ее рождения, вряд ли ее мать долго будет жить, – говорили.

Попасть на язык народа – тоже нехорошо. И вправду, женщина долго не прожила и умерла. А девочка быстро выросла, стала взрослой. После этого отец девочки засобирался жениться во второй раз. Он много ездил, искал, но похожую на свою первую жену он не нашел. А на не похожей, он поклялся, что никогда не женится. После долгих странствий он не нашел себе жену, понял, что на его первую жену похожа только собственная дочь, и поэтому он засобирался жениться на ней, и об этом он рассказал своей дочери. Когда его дочь полностью поняла его намерение, сделала вид, что согласилась.

После этого, поздно, когда все кругом стемнело, и люди все отошли ко сну, девушка сбежала из дому и залезла на яблоневое дерево и осталась там. Ночью она переночевала на верхушке дерева. В ту ночь, когда она на верхушке дерева съела яблоко, в животе у нее зародилось семя. В срок она родила ребенка. У девушки сын, который родился от съедения яблока, явился чудесным, сильным, героическим юношей, стал быстро расти.

Юноша пошел к кузнецу и заготовил подходящее воинское снаряжение. Его доспехи, кроме самого, мало кому удавалось носить. Однако юноше все эти доспехи казались обыденными вещами. После этого, он, странствуя, набрел на жилище эмегенов*, прогнав их оттуда, начал жить со своей матерью на том месте. Когда они жили в таком положении, юноше встретился один олень. Перед тем как он убил оленя, олень сказал юноше:

– Ты зарежь меня и из моей шкуры построй дом, а если закопаешь мои почки в землю, они тебе станут борзыми собаками, а мой хвост, когда тебе понадобится, послужит тебе мостом, – сказал олень.

Юноша поступил так, как велел олень.

В один из дней, когда юноша отправился на охоту, мать юноши, откуда-то услышав пронзительный голос, вышла во двор. Тот, который кричал:

– Переведи меня через реку, я тебе буду сыном, – сказал.

Женщина:

– Мне нет надобности в сыне, – ответила и отказалась.

Эмеген еще раз:

– Если переведешь через реку, я тебе буду мужем, – сказал.

Когда она услышала слова: «Я бы тебе стал мужем», она взяла хвост, припрятанный сыном и, положив на воду, соорудила мост. И эмеген перешел на сторону, где находилась женщина. Таким способом мать юноши завела близкие отношения с группой эмегенов, которых прогнал в свое время ее сын.

Теперь женщина и эмегены задумали уничтожить юношу. Эмегены, зная, что стоя не смогут его уничтожить, начали женщину учить различным хитростям. К тому времени, когда юноша должен был вернуться домой, эмегены покинули это место. Мать юноши, как учили ее эмегены, притворилась больной и лежала.

* Эмегены – чудовище, циклоп, великан [6, 1070]. Встречается также в карачаево-балкарском нартском эпосе.



Как только сын вернулся домой, его мать:

– В таком-то месте на самой макушке горы пасутся бараньерогие туры, если ты не достанешь мне их мяса, то я умру, – настояла она.

Однако все получилось не так как хотели женщина и эмегены, и юноша, с помощью этих животных выполнив свое дело и сам вернулся обратно живым-здоровым, и они ему:

– Не забывай нас, мы еще тебе пригодимся, – сказали.

После этого женщина, поступила так же, как ее учили эмегены, и отправила сына на скалу, которая открывалась и закрывалась, и где находился источник, велела принести оттуда воду. И оттуда юноша, благодаря помощи одной девушки, набрал воды и вернулся к себе домой.

Девушка, так же пообещав помочь ему в трудный день, проводила его.

В третий раз, как ее учили эмегены она оправила сына к казану, который заготовили эмегены и ждали его. В этом крепком казане надо было три раза искупаться и только после этого начинать искать лекарство. А эмегены, приготовили два казана вместо капкана, и когда юноша залез туда и начал купаться, они поставили сверху второй казан, и внизу разожгли огромный чудовищный огонь и ушли.

Юноша, как только его накрыли сверху вторым казаном, вспомнил бараньерогих туров и девушку, которая жила среди скал и они тут же оказались рядом, чтобы оказать ему помощь.

Бараньерогий тур ударом скинул сверху казан и девушка спасла юношу, который уже варился там.

Юноша, когда понял, что его мать, чтобы избавиться от него, в такие опасные места его отправляла, и ее, и эмегенов, которые ее учили хитростям, всех вместе истребил. И он сам, с девушкой, которая приходила к нему на помощь, прожил счастливую жизнь.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 2. Записано 22.03.1959 г. в с. Нижний Чегем Чегемского района КБАССР от Аппаева Мустафы Солтановича (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Отличительной чертой сказки является присутствие в ней редкого образа – десаκραлизованной матери, променявшей своего сына на сомнительные ценности злых, низших сил.

АСХАТ БЛА АНЫ ЭГЕЧИ

Алгъын заманда бир жерде бир бай хан жашай эди. Аны уа бир ариу кызы болганды. Кызыгъа уа кеплени кезлери къарай эди. Кызы а аланы бирине да бюсюремей эди. Ма ол да алай жашап тургъанлай, бир кече къайдан эсе да бир узакъ жерден келип, уручу башкесле ханны кызын урлап, алып къачадыла. Сора экинчи кюн ингирликде кызыны бир уллу агъачны ичине элтип, жер тюбюнде уллу, ариу, бай бир юйге кийиредиле. Уручула уа бек кеп боладыла. Кызыны уа юйде кьоюп, хар кюнден бирер жары урларгъа кете эдиле. Кызы а юйде не этерге да билмей, башын ауур сагъыш басып тура эди.

Хан а кече-кюн да аямай излетеди кызын, алай болгъанлыкъгъа, не амал, излеучюле:

– Тапмайбыз, биз жетмеген жер башында жер кългъан болмаз, – деп келе эдиле.

Андан бир узакъ жерде уа, бир ёксюз жаш жашай эди. Жашны атасы, анасы, не къарындашы болмагъанды, жаланда бир эгечинден башха. Эгечи уа жашны суймегенди. Жаш а, дуньяда болмагъанча бир айтхылыкъ уучу болгъанды. Уугъа уа хар заманда жаш эгечи бла бирге баргъанды. Бир кюн экиси да алай айлана кетип, бир терен агъачха киредиле. Анда, уугъа айлана, жар тюбюнде бир уллу юйге тюбейдиле. Кирип барсала, айтмай кьой, юйню ичи асыры ариудан, адамны кезюн къаматады. Юйде уа бир ариу кызы байланып тура эди. Кызы бери кълалай бла тюшген хапарны башдан-аякъ айтды да:

– Энди уручуланы келир заманлары болады, сизни уа мында тапсала, сиз да, мен да ёлдюк. Андан эсе кетигиз, – деп ахтынды.

Уручуланы келир заманлары жете баргъаны сайын, кызы да бек кьоркъа башлады. Алай жаш бир да кьоркъмай эди:

– Келмеге кьой, мен аланы барын да хорларгъа боллукъма, – деди ол.

Сора ханны кызы жашха да, эгечине да ашарыкъ берип, сыйлады.

Сора кызы:

– Уручула юйге сегиз-сегиз келедиле, – деп ангылатды.

Жаш а:

– Энди мен ала бла къазауатха кирликме, сегизишер келгенлери уа иги болду урушургъа, – деди да, кеси-кес къамасын да хазыр этип, сакъ болду.

Бир заманда адам тауушла эшитилдиле.

Кызы:

– Келедиле! Ала биринчи сегизидиле, – деди.

Жаш эшик аллына турду да, къамасына къарап:

– Сегизисини да башлары кесилип, алларына тюшсюн! – деп кычырды.

Олсагъатда сегиз уручуну да башлары тёнгереп алларына тюшдюле. Кызы а асыры сейирсингенден, ахы кетип, не этерге билмей, абызырап турады. Дагъыда бираздан сора сегиз уручу кирип келдиле. Жаш да:

– Энтта да сегиз баш кетсин, – деп, къамасын ёрге кётюрдю.

Ол алай айтып кьутулгъанлай, сегизисини да башлары кесилип, жашны аякъларына тёнгередиле. Сора кызы:

– Энди бир сагъатдан ахыр сегизи келликди. Таматарлары да ала бла боллукъду. Алай анга не окъ тиймейди, не да бичакъ кесмейди, – деп, ангылатды. – Алай сен белинден энишгесине уругъа кюреш, – деди.



Бираздан сора, тауушдан да кыра, сегиз башкес кирип келди. Биягъы эшик аллына туруп, жаш:

– Сегиз баш кесилип кьалсын, – деп, ачы кыгчырды.

Алай жети башы кетген мыллык жашны аллына адула. Сегизинчиси уа – таматары – саулай кьалып, жаш бла кьама урушха киришди. Тамата бек кьаты уруша, жашны хорлай башлады. Сора жашны эсине кьызны айтханы тюшдю да, жаш белинден тьбенине кьама бла урду да, тамата уручуну жыкьды, сора башын кесип, эшикге атды.

Ханны кьызы уа кьутулгьанына кьууаннгандан, барып жашны – Асхатны – кьучакьлап жылады* да:

– Энди мен юйге барайым, сен да алтындан, кюмюшден кереги чакьлы ал да, мени бла кел, – деди.

Алай Асхат унамады:

– Бир жары да бармайма мен. Мында кьалайым биразгьа. Эгечим хауледи да, адамлагьа кьрюнюрге окьуна уялама, – деди да, кьызны ашырып, кеси уа башкес уручуланы жар тьбюнде юйлеринде кьалды.

Экинчи кюн жаш уугьа чыкьды, эгечи уа юйде кьалды. Тюш табада жашны эгечи, суу алыргьа чыгьып баргьанлай:

– Суу бер, – деген таууш эшитди.

– Ярабий, не затды бу? – деп, тьгерегине кьарады, алай бир зат да кьрмеди.

Кьайтып келе туруп да:

– Суу, суу, – деген таууш эшитди.

Тьгерегине кьараса, ол уручуланы таматасыны башы, тепси тьбюнде суу тилеп, кыгчыра эди. Кьыз, кьоркьгьан да этип, жууукь барып, юсюне суу чачьп кетди. Баш олсагьатда тьнгереп барып, тьммегине жалгьашды да, сау болуп, кьызгьа келди.

– Менден кьоркьма, мен ёлген жьнгерлерими таматарыма. Сау бол суу бергенинге, алай энди кьарындашынгы ёлтюрюрге манга болуш, – деп, аллына сюелди.

Ол кьарындашын кьрюп болмагьан эгеч а угьаймы дерик эди? Болушургьа сьз берди. Сора тамата уручу:

– Ауругьанча эт да: «Бьрю эт ашарыкьма», – де. Сора ол, бьрю излеп, агьачха барса, бьрю ашар да, ёлюр, – деди.

Кьыз алай этерге сьз берди. Жаш келгенде, кьыз тьшекге жатып тура эди.

– Ёлеме, бьрю эт ашасам, сау боллугьуму тьшюмде кьргенме, – деди кьарындашына.

Кьарындашы олсагьатлай окьуна агьачха кетди. Бара-барса, бир бьрю баласына сют эмизе тура эди. Сора Асхат бьрюню марагьанлай, бьрю:

– Атма, тийдираллыкь тьююлсе, андан эсе не керек эсе да айт, берейим, – деди.

Асхат:

– Балангы бер, эгечиме дарманнга сояргьа, – деди.

Бьрю, баласын да берип, бир сыбызгьы да берип:

– Ма бу сыбызгьы бла сызгьырсанг, кьыйынлыкьда бьрю жетип болушур, – деди.

* Жияды.

Асхат, бөрү баланы кётюрюп, юйге тебиреди. Уручу уа кыызгъа:

– Ёлмей келсе, айыу баланы эти жарашырыкъды де, – деди.

Асхат, бөрү баланы алып, кирип келгенлей, кыыз:

– Асхат, сен кетгенли уа тышюмде айыу баланы эти дарман боллукъду деп, тыш кёргенме, – деди.

Асхат а:

– Ол да кыйын тыйюлдю, табарма, – деп, агъачха кетди.

Айлана кетип, Асхат айыугъа тубеди. Айыу, баласын да кьоюнуна кысып, жукълап тура эди. Асхат мараргъа тебирегенлей, айыу, уянып:

– Атма, тиерик тыйюлдю. Андан эсе, не керек эсе да айт, берейим, – деди.

Асхат:

– Эгечим кыйын ауруйду да, айыу баланы эти дарман боллукъду, балангы бер, – деди.

Ол да, баласын берип, сыбызгъы да берип:

– Ма бу сыбызгъы бла сызгырсанг, айыу, жетип, не кыйынлыкъдан да кьутхарыр, – деди.

Асхат, айыу баланы алып, юйге келди. Биягъы уручу башкес а:

– Энди ёлмей келсе уа, аслан баланы эти жарарыкъды дерсе, – деди кыызгъа.

Асхат жетгенлей окъуна, кыыз:

– Асхат, сен мени ючюн бек кыйналып кюрешесе, алай сен кетгенлей, тышюмде аслан эт жарарыкъды деп кёргенме, – деди.

Асхат не этерик эди, энгта агъачха тебиреди. Бара кетип, бир асланнга жолукъду. Ол да баласын ойната тура эди. Асхат да къауалны сермеп алып, марап тебирегенлей, асланнга тил кирип:

– Ой, атма, тиерик тыйюлдю. Керегинги айт да, мен берейим, – деп тиледи.

Асхат нек айланнганын айтды. Аслан, арсар да болмай, баласын берип:

– Ма, бу сыбызгъыны ал да, кыйынлыкъгъа тышсенг, юч кере сызгырып кьой, олсагъатдан аслан жетер болушургъа, – деди жашха.

Асхат, аслан баланы да кётюрюп, юйге тебиреди. Ол келирни аллында уа уручу кыызгъа:

– Энди сау келсе уа: «Сау болгъанма, кёп кыйналдынг, тешин да, бир жууунчу, къарыу-бер сууда, ансы адамла, жаныуарла бла да урушуп, ёлюк болгъан болурса», – дерсе. Ол тешиннгенлей, мен а кеси-кес къамасын алып къачарма, – деди, кызны кьучакълап.

Асхат да, аслан баланы кётюрюп, юйге жетди. Олсагъат кыыз, аллына чыгып:

– Ой Асхат, нечик кёп кыйналдынг, нечик кёп кыйналдынг! Мен а энди сау болгъанма, жарсыма. Алай кесинг, уручу башкесле бла, жаныуарла бла да кёп сермеше, къарыуунгу тас этдинг, кюч бериучю суугъа кир да, бир жууунчу, – деп, жарсыгъанча этди.

Асхат аны айтханын этип, тешинип, суугъа киргенлей, башкес уручу Асхатны къамасын алып къачды. Асхат, терк окъуна кийинип, бир уллу терекни да тамырлары бла чыгъарып, башкес таматаны ызындан кьуууп тебиреди.



Къаты уруш башланды. Башкес тамата къама бла силдесе, Асхат а терек бла къоруулана эди. Сора Асхат, бир къолу бла аны бла сермеше, башха къолу бла уа, юч сыбызгысын да алып, юч кере сызгырды. Олсагъат окъуна айыу, бёрю, аслан чабып жетдиле. Ала да башкесге атылдыла. Алай башкесни хорлаялмай эдиле. Башкес, къачып, бир терен жерге кирип, татлы жукъугъа киргенде, Асхат, жаныуар жёнгерлерин да алып, аямай излей кетип, табып, ол жукълап тургъанлай, къамасын урлады. Башкес уянса – къама жокъ. Сора уллу тутуш башланды. Асхат тутуша кетип, къама бла белинден энишгесине урду. Башкес жыгъылгъанлай, бёрю, айыу, аслан, аны жыртып, ёлюкню тюк-тюк этдиле. Сора Асхат, юйге барып, эгечине:

– Сен мени кёп кере ёлюмге жибергенсе. Жер башында манга сенден жау адам чыкъмады. Алай санга жанны мен бермегенме, алгъан да этмейме. Мен бусагъат окъуна мындан кетеме, сен а бу къуру таулада къал, – деп, къызы элттип, тауда терекге байлап, атын да союп, терисин да сыдырып, къыз ашай турурча этип кетди.

Кеси уа жёнгерлерин – айыуну, бёрюню, асланны да – биргесине алып, узакъ жолгъа тюшдю.

Ол кёп айлана-жюрюй кетип, бир уллу шахаргъа келди. Кирип барса, халкъ бушуу-бушман. Сора жаш:

– Не болгъанды, неди бу къайгы? – деп сорду.

– Шахардан арлакъ барып, бир уллу дорбунда бир уллу сарыуек барды да, ол хар кюнден бир къыз ашамаса, халкъны жутуп къоярыкъды. Шахарда бир да къыз къалмагъанды. Бюгюн а кезиу ханны къызына жетгенди да, бу къайгы аны ючюндю, – деп ангылатдыла жашха. – Хан а, къызын бу иште ким къутултса, анга къызын, ханлыгъын да берирге айтады, – дедиле.

Сора бизни Асхат, аны эшитгенлей, ханнга:

– Бир уллу ёгюзню союгуз да, биширип манга келтиригиз, – деди.

Ол айтханлай этдиле. Асхат да аны жаныуар жёнгерлерине ашатып тойдурду. Сора Асхат сарыуекни болгъан жерине элтирлерин тиледи. Асхатны ары элтдиле. Барса, сарыуек ханны къызын жутаргъа хазыр болуп тура эди. Олсагъат Асхат къама бла урушха атылды. Уруша-уруша кетип, сарыуекни башын кетерди. Алай кесилген башны орунуна жети баш чыкъды. Асхат, къоркъмай, жангы тутушха киришди. Кюреше кетип, Асхат сарыуекни жети башын да кетерди. Сора бёрю, айыу, аслан жетип, тёммегин да жокъ этдиле.

Асхат жети башын да тайдырып бошагъандан сора, ол сегиз башны да тиллерин алып, хуржуннга асырады. Къыз, ёлюмден къутулуп, барып жашха:

– Энди солу, бу къыртишге жатып, – деди.

Асхат да, аслан да, бёрю да, айыу да терен жукъугъа кирдиле.

Къыз а жашны бармагына алтын жүзюгюн, бирсилени боюнларына уа алтын сынжырла такъды, кеслерине билдирмей. Сора къыз:

– Мынга болмаса, бир адамгъа бармам ёмюрюмде, – деп, кеси кесине ант этди.

Аны шыбырдагъанына айыу, бёрю, аслан, Асхат да уяндыла. Къызы саугаларын кёрдюле. Алай бек арыгъандан, дагъыда татлы жукъугъа кирдиле. Сора къыз кеси да жукълады.

Хан ол заманда кызыны сюеклерин басдырыргъа адам жиберген эди. Ол а келип, кызыны саулугъун кёрюп, жашны да ёлтюрюп, сарыуекни сегиз башын да алып, ханнга барып:

– Сарыуекни ёлтюрюп, кызыны кьутхарып келеме, – деди.

Кёп болмай, айыу уянды да, иесини ёлюп тургъанын кёрюп, жёнгерлерин да уятып, дарман кырдыкла келтирирге ючюсю да таугъа кетдиле. Ала кетгенлей, кызы да уянды. Жашны ёлюп тургъанын кёрюп, не этерин билмей, аямай жияп, юйюне кетди. Кызы жетгенде уа, ханны кызын бастырыргъа жиберген адамы, ханнга ол сегиз башны да элтип:

– Мен, сарыуекни ёлтюрюп, кызыны кьутхаргъанма, – деп алдагъан эди.

Кызы, жетип барып, хапарны болушун айтды. Алай хан бирси кишини кьолунда башланы кёргенде, ийнаналмай эди кызыгъа. Ала да алай тургъанлай, жашны жёнгерлери дарман кырдыкла келтирип, жашны сау этген эдиле.

Жаш да алагъа:

– Иги сакъламай, жукълап кьалгъансыз, – деп урушду.

Ма тамам бир жыл ётгенде, Асхат биягъы шахаргъа барады. Барса, битеу шахар ариу кьуралып. Сора жаш кьонакьбайына:

– Бу неди? – деп сорду.

Кьонакьбайы, ханны кызыны болумун да айтып:

– Аны ёлюмден кьутхаргъан киши уа энди кызыны бюгече алады да, анга кьуралгъандыла, – деп ангылатды.

Ханны кызы уа:

– Мени ёлюмден кьутхаргъан башхады, бу тьойюлдю, – деп, барыргъа унамаса да, алай атасы кьоймай бере эди.

Андан сора жаш кьонакьбайына:

– Ёчешемисе, мен, ханнга хазырлагъан ашарыкьладан келтирип, санга ашатмасам, – дейди.

Сора жаш бёрюню боюнуна кызыгъа кьагъыт жазып:

– Шорпадан алып кел, – деп жиберди.

Бёрю, жыйылгъан адамланы да кьоркьутуп, халкьны кёзюнде барып, кызыны тобугъуна башын салды. Кызы кьагъытны да окьуп, жашны сау болгъанын билип, анга бёрюню боюнуна байлап, ханны тойгъа хазырлагъан шорпасындан жиберди. Жаш андан сора айыудан, асландан да кьагъытла жиберип, ичги эм башха ашарыкьла келтиртди. Кызы уллу кьууанды. Атасы уа чыдаялмай:

– Кызым, неди сени бу этиуюнг, не жаныуарладыла была? – деп, сейирсинип сорду.

Кызы хапарны айтханда, хан жашха адам жиберди. Алай жаш, кьуру адамгъа келмей, ачыуланып жиберди. Сора хан, фазтоннга алты ат да жегип, башха адамла жиберди.

Жаш, фазтоннга да минип, сакъалы да ёсюп, агъач кишиге ушаш болуп, алай жетди. Хан жашны сакъалын жюлютдю, ариу кийимле кийдирди. Жаш да анга хапарын башдан-аякь айтды. Хан, ийнанмай:

– Сен мени кызымы ёлюмден сакълагъан эсенг, шагъатынг а кьайда? – деп соргъанында, жаш сегиз тилни да хуржунундан чыгъарып:

– Ма, – деп берди.



Жашны жёнгерлери уа – бёрю, айыу, аслан – иелерини кьатында олтура эдиле. Хан бирси кишини шагъатлыгъын да – сегиз башны – кёрюп, Асхатны кьолунда сегиз тилни да кёрюп, сора кьызыны хапарын да эшитип, не этерге билмей кьалды. Болсада, кьызыны айтханы бла Асхатны айтханына ийнанып, ол бирси киеуню ёлтюрюрге буюрду. Аны олсагъатдан окъуна башын кетердиле. Хазырланган тойну да Асхат бла ханны кьызына этдиле. Алай бла Асхат кьызыны алды.

Ол кюн окъуна кьыз Асхатны эгечинден хапар сорду. Асхат аны этген ишин, кесини этген ишин да кьызгъа айтды. Сора кьыз Асхатны эгечин келтирирге адамла жиберди. Барсала, кьыз ёлюрге жетип тура эди. Алып келип, багъып, сау этдиле. Алай ол Асхатны бютюнда бек аман кёре эди. Бир кюн барып, ол гюрбежиде усталагъа кьапхан ишлетип келип, Асхатны жатхан ундуругъуну жабыу тьобюне тап букьдурду.

Асхат, ингирде жатханлай, кьапханнга тьошюп ёлдю. Аны кёрюп, айыу, бёрю, аслан, биягъы дарман кырдыкла келтирип, Асхатны сау этдиле. Сора Асхат эгечин, кеси кёре тургъанлай, асмакьгъа асдырды.

Жыйылгъанла да:

– Этген ишине кёре саугъасын тапханды, – деп, жарсымай кьойдула.

Дуньяда кёрмеген зауукълукъ кьалмай, Асхат бла кьатыны, ойнай-кюле, ашап, жашап кьалдыла.

– Мен да аны бла узун жомагъымы бошадым, – деп, кьарт тьютюнюн кьабындырды.

КьМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 3 паспорт. КьМАССР-ны Совет районуну Огъары Жемтала элинде Занкишиланы Окъупдан 27.08.1960 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакьны Окъуп кьартладан эшитгенди.

«Асхат бла аны эгечи» деген сейир-тамаша жомакьда жигитлик эмда юйюр-жашау-турмуш жомакьланы илишанлары хайырланылгъандыла. Чыгъарманы ара магъанасын къарындаш бла эгечни бир бирлерине къажалулукъ тутады. Ол а матриархат кезиуню тауусулгъанын кёргюзтген шартладан бириди.

АСХАТ И ЕГО СЕСТРА

В давние времена в одной местности жил богатый хан. У него была красивая дочь. На девушку многие заглядывались. Но ей никто не нравился. Однажды ночью откуда-то издалека пришли воры, головорезы, выкрали ханскую дочь, забрали с собой, умчались. После этого, на второй день, вечером девушку отвели в густой лес и завели в большой, красивый, богатый дом под землей. Воров было очень много. Они, оставляя девушку одну дома, каждый день уходили воровать на все четыре стороны. А девушка, не зная, что делать, сидела дома, с тяжелыми мыслями в голове.

А хан днем и ночью, не жалея сил, заставлял искать свою дочь везде, однако, что поделаешь, сыщики:

– Не находим, на всей земле, наверное, нет места, где бы мы не были, – с такими словами возвращались они.

А вдалеке от того места жил парень – ни матери, ни брата, лишь была одна сестра у него. Сестра не любила своего брата. А парень был знаменитым охотником, подобного охотника не было на свете. И на охоту этот парень ходил всегда вместе с сестрой. В один из дней, они, охотясь вдвоем, зашли в глубокий лес. И там они, продолжая охотиться под пропастью, наткнулись на огромный дом. Когда они вошли туда, что там говорить, внутри дома так все было красиво, что даже глаза человека эта красота ослепляла. А в доме одна красивая девушка находилась привязанной. Девушка рассказала с самого начала до конца, как она сюда попала:

– Теперь подходит время, когда должны вернуться вору, а если они вас здесь застанут, то и вы, и я будем уничтожены, лучше уходите, – сказала она и вздохнула.

Подходило время прихода бандитов, девушка начала сильно переживать. Однако юноша ничего не боялся:

– Пускай приходят, я их всех смогу победить, – сказал он.

После этого дочь хана угостила юношу и его сестру.

Потом девушка:

– Воры возвращаются по восемь человек, – объяснила.

А парень:

– Теперь я с ними буду воевать, а то, что они идут восьмером, хорошо для битвы, – сказал, и, приготовив свой «меч-самосек», насторожился всерьез.

И через некоторое время послышались человеческие голоса.

Девушка:

– Идут! Они – первые восемь, – сказала.

Юноша встал перед дверью, поглядев на свой меч:

– Чтобы у этих восьмерых человек головы отрубались и упали перед ними! – прокричал он.

В тот же момент у восьмерых воров головы, кувыркаясь, упали перед ними. Девушка от удивления чуть сознание не потеряла, не зная, что делать, она остолбенела в неведении. Через некоторое время опять восемь воров вошли туда. И парень:

– Пусть еще восемь голов упадут, – сказал и, вытащив свой меч, поднял его вверх.

Как только он произнес эти слова, у этих восьмерых отрубленные головы оказались у ног юноши. После этого девушка:

– Теперь через час последние восемь человек придут. И главный с ними придёт. Однако его не берет ни пуля, ни ножом его нельзя резать, – пояснила она. – Но ты постарайся ниже пояса его ударить, – сказала она.

Спустя некоторое время, со сногшибательными криками, вошли восемь голов. Опять этот юноша, встав перед дверью:

– Чтобы эти восемь голов отрезались, – сказал и громко закричал.

И в это время перед юношей упали тела семерых мертвецов, а восьмой – глава остался живым, и вступил с юношей в бой на мечах. Глава бился очень крепко, и начал одолевать парня. В это время юноша вспомнил слова



девушки и ударил своим мечом врага ниже пояса, и, свалив главу воров, отрезал голову и выкинул во двор.

Дочь хана от радости, что спаслась, подошла к юноше – Асхату и, обняв его, заплакала:

– Теперь я пойду домой, ты тоже возьми с собой золото, серебро, сколько тебе надо и пойдем со мной, – сказала.

Однако Асхат не захотел:

– Никуда я не пойду, еще некоторое время побуду здесь: моя сестра ведет себя аморально, я даже стесняюсь показаться людям на глаза, – сказал он, и проводил девушку, а сам остался ночевать в доме головорезов над пропастью.

На второй день юноша отправился на охоту, а его сестра осталась дома. После полудня сестра юноши, когда выходила за водой:

– Дай воды, – услышала звук.

– Ярабий*, что же это такое, – сказала она и оглянулась по сторонам, однако ничего она не увидела.

Когда она уже возвращалась обратно:

– Воды, воды, – она услышала голос.

Она опять оглянулась по сторонам, голова главаря воров под столом, прося воды, кричала. Девушка, побаиваясь, подошла поближе, и брызнула на нее водой. В это время голова, покатываясь, соединилась со своим телом, и мужчина, ожив, подошел к девушке:

– Меня не бойся, я старший среди своих умерших друзей. Спасибо за то, что ты мне подала воду, однако, теперь помоги убить твоего брата, – сказал он и встал перед ней.

Она ненавидела своего брата, потому не отказалась, обещала ему помочь. Тогда старший вор:

– Притворись больной и скажи, что хочешь поесть волчьего мяса, – сказал он. – Когда он пойдет в лес, его там съест волк, и он там умрет, – сказал он.

Девушка дала слово, что поступит именно так. Когда юноша вернулся домой, девушка лежала в постели.

– Я умираю, но видела сон, что выздоровею после того, как съем мясо волка, – сказала она брату.

Брат тут же отправился в лес. Когда он ходил, набрел на волчицу, которая кормила волчонка своим молоком. Когда Асхат прицелился, то волчица:

– Не стреляй, все равно не попадешь, лучше скажи, что тебе нужно, я тебе дам, – сказал волк.

Асхат:

– Дай своего волчонка, чтобы его зарезать и на лекарство сестре его использовать, – сказал он.

Волк вручил ему своего волчонка и одну свирель:

– Если в горе заиграешь на этой свирели, тут же появится волк и тебе поможет, – сказал он.

Асхат поднял волчонка и направился к себе домой. А вор девушке говорит:

* *Ярабий* (арабин) – частица, выражающая любопытство, интерес, желание узнать, сомнение [3, 70].

– Если он вернется живым, ты ему скажи, что мясо медвежонка тебе поможет, – сказал он ей.

Когда Асхат вернулся домой, держа на руках волчонка, сестра ему говорит:

– Асхат, после того, как ты ушел, мне приснился сон, что мне поможет только мясо медвежонка, – сказала она.

Асхат:

– Это тоже несложное дело, я достану, – сказал он и ушел в лес.

Скитаясь в лесу, Асхат встретил медведя. Медведь, прижав к своей груди своего медвежонка, спал. Как только Асхат прицелился, медведь проснувшись:

– Не стреляй, все равно не попадешь, лучше скажи, что тебе нужно, я тебе дам, – сказал он.

Асхат:

– У меня сестра тяжело заболела, мясо медвежонка ей будет лекарством, отдай своего детеныша, – сказал он.

И он тоже отдал своего детеныша и вручил ему свирель:

– Если ты заиграешь на этой свирели, тут же появится медведь и спасет от всякой опасности, – сказал он.

Асхат взял у него медвежонка и вернулся домой. А все тот же вор, головорез:

– Если опять вернется живым, то скажешь ему, что поможет мясо львенка, – сказал он девушке.

Как только Асхат вернулся домой, девушка:

– Асхат, ради меня ты сильно себя утруждаешь, но как только ты ушел, мне приснился сон, что меня вылечит мясо львенка, – сказала она.

Что оставалось делать Асхату, опять он отправился в лес. Он долго бродил по лесу, и встретил там одного льва. Он тоже игрался со своим малышом. Асхат резко схватил свое ружье, начал прицеливаться и тут лев приобрел речь:

– Ой, не стреляй, все равно не попадешь, что тебе нужно скажи, и я тебе дам, – сказал он с мольбой.

Асхат рассказал, ради чего он бродит. Лев тут же, не раздумывая, отдал своего малыша:

– Вот еще возьми эту свирель, если вдруг попадешь в трудное положение, посвисти три раза, и тут же рядом с тобой появится лев и окажет тебе помощь, – сказал он юноше.

Асхат забрал с собой львенка и направился к себе домой. А перед тем как он вернулся, вор говорит девушке:

– В случае, если он и теперь вернется обратно живым, скажи ему, что ты уже выздоровела, а он сильно устал, предложи раздеться и искупаться в воде «дай-силу», скажи, мол, с людьми, и со зверями дерясь, ты словно мертвец выглядишь, и как только он разденется, я в это время украду его меч-самосек, – сказал он, обнимая ее.

В это время Асхат дошел до дома, держа в руках львенка. И тут ему навстречу вышла девушка и говорит:

– Ой, Асхат, ты так настрадался, так настрадался. Я-то уже выздоровела, не переживай. Однако ты сам среди воров-головорезов, и среди зверей,



борясь, истратил все свои силы, искупайся же в воде, которая дает силу, – сказала она, словно за него переживая.

Асхат, послушавшись ее, разделся и как только он вошел в воду, головорез-вор у Асхата украл меч и убежал. Асхат быстро оделся, вырвал с корнем одно большое дерево и погнался за главарем головорезов.

Началась большая битва. Главарь головорезов размахивал мечом, а Асхат оборонялся деревом. После того Асхат, одной рукой сражаясь с ним, другой рукой сумел взять три свирели, и просвистел три раза. Тут же сюда прибежали медведь, волк и лев. И они тоже кинулись на головореза. Однако, они не смогли одолеть головореза. Тот убегая, проник в глубокое ущелье, и когда он был в сладком сне, Асхат взял с собой друзей из зверей, разыскал его и украл у него меч. Когда головорез проснулся, меча не оказалось. После этого началась настоящая борьба. Асхат, борясь с ним, ударил его мечом ниже пояса. Когда головорез упал, волк, медведь, лев, разорвав труп, разнесли в клочья. После этого Асхат пришел домой и говорит сестре:

– Ты меня много раз посылала на смерть. На всей земле у меня нет большего врага, чем ты. Но, не я тебе даровал жизнь, и забирать ее я не стану. Я сейчас же уйду отсюда, а ты оставайся среди пустынных гор, – сказал он, отвел девушку в горы, и там привязал ее к дереву, зарезал свою лошадь, повесил так, чтобы сестра с трудом доставала до туши и питалась мясом.

А сам, забрав с собой своих друзей – медведя, волка, льва, и отправился в далекий путь.

Он, долгое время странствуя, скитаясь, оказался в большом городе. Когда он вошел туда, народ испытывал горе. Юноша:

– Что случилось, что вас тревожит? – спросил у них.

– Неподалеку от города, в большой пещере живет один большой дракон. Если он каждый день не съест по одной девушке, то проглотит весь город. Сейчас в городе не осталось ни одной девушки. Сегодня очередь дошла до дочери хана, и все мы скорбим по этому поводу, – объяснили ему.

А хан решил так: тому, кто спасет ее, он отдаст за него свою дочь и все царство.

Когда наш Асхат это услышал, говорит хану:

– Зарежьте огромного быка, сварите и все принесите мне, – сказал.

Все сделали, как он хотел. Тут и Асхат, и его друзья – звери досыта наелись. После этого Асхат попросил, чтобы его отвели на то место, где находится дракон. Асхата привели туда. Когда он пришел туда, дракон был готов проглотить ханскую дочь. Юноша с мечом бросился в бой. Он бился-бился, и снес голову дракона, однако, вместо снесенной головы, выросли семь новых голов. Но, Асхат не испугавшись, бросился снова в бой. Опять борясь с ним, Асхат еще раз снес семь голов дракона. К этому времени к нему подоспели волк, медведь, лев и уничтожили его останки.

После этого Асхат снес все семь голов, вырвал из восьми голов все языки, и спрятал в суме. Девушка, спасшись от смерти, подошла к юноше:

– Теперь отдохни, полежи, на этой лужайке, – сказала.

И Асхат, и лев, и волк, и медведь заснули крепким сном, а девушка тихонько, чтобы они не знали, надела на палец юноше свое золотое кольцо, а остальным на шеи повесила золотые цепи. Потом девушка:



– Кроме него в своей жизни я ни за кого не выйду замуж, – сказала она и поклялась сама себе.

От ее шепота проснулись и медведь, и волк, и лев, и Асхат и увидели подарки девушки. Но из-за большой усталости они снова провалились в сладкий сон. Тут девушка и сама заснула.

Хан в это время, чтобы предать земле кости своей дочери, послал человека. И он, прибывши туда, увидев девушку в живых, убив юношу, забрав с собой восемь голов дракона, он пришел к хану:

– Убив дракона, я спас девушку, – сказал он.

В это время проснулся медведь, увидев, что его хозяин мертв, тут же разбудил своих друзей, и они все втроем отправились в горы, чтобы принести лечебные травы. Когда они ушли, проснулась и девушка. Увидев, что юноша мертв, не зная, что делать, она сильно разрыдалась и пошла домой. А когда девушка добралась, человек, посланный ханом, чтобы похоронить дочь, отнеся хану эти восемь голов:

– Я, убив дракона, спас девушку, – говоря, обманул.

Девушка, добравшись, рассказала все, как было. Однако хан, видя у другого мужчины в руках головы, не мог поверить дочери. Пока они разбирались в таком духе, друзья юноши принесли лечебные травы и оживили его.

И юноша:

– Вы плохо сторожили меня и заснули, – поругал их.

Когда прошел ровно год, Асхат вновь явился в город. Когда пришел, город был красиво украшен. После этого юноша спросил у хозяина дома:

– Что это?

Хозяин рассказал про состояние дочери хана:

А тот мужчина, который спас его от смерти, теперь, этой ночью женится на ней, и все готовятся к этому событию, – разъяснил он.

А дочь хана:

– Человек, который спас меня от смерти, был другим, не этот, – сказала и никак не соглашалась выходить замуж, однако, ее отец насильно ее заставлял.

После этого юноша хозяину дома:

– Давай поспорим, сейчас мне принесут еду, приготовленную для хана и ты её отведаешь, – сказал он.

После этого он написал записку девушке, повесил на шею волку и повелел, чтобы ему принесли бульон.

Волк, напугав всех собравшихся людей, предстал перед взором народа и прислонил свою голову к коленям девушки. Девушка прочитала записку, узнала, что юноша жив-здоров, и через волка, привязав на его шею, отправила юноше бульон, приготовленный ханом для тоя*. После этого юноша через медведя и льва послал записки, чтобы они принесли напитки и другие угощения. Девушка сильно обрадовалась. А отец, больше не выдерживая:

– Дочь моя, что ты делаешь, что за звери ходят тут, – спросил с удивлением.

* Той – свадьба, свадебный пир; танцы, пир, веселье; торжество, праздник [3, 641].



Когда дочь рассказала отцу все, хан послал к юноше гонца. Однако он не захотел пойти с простым человеком и прогнал его, рассердившись. После этого хан велел запрячь шесть лошадей в фаэтон и послал гонцов.

Юноша сел в фаэтон, обросший щетиной, похожий на лесного человека, прибыл к нему. Хан приказал, чтобы ему сбрили бороду, переделали в красивую одежду. Юноша рассказал все, как было с самого начала до конца. Хан не поверил:

– Если ты спас мою дочь от смерти, где свидетели? – спросил, и тогда юноша вытащил из кармана восемь языков:

– Вот, – сказал и вручил их ему.

А друзья юноши – волк, медведь, лев – сидели рядом со своим хозяином.

Хан видя мужчину с восемью головами, а также восемь языков в руках Асхата, слушая рассказ своей дочери не знал как поступить. После всего поверил доводам своей дочери и Асхата и приказал убить предыдущего жениха. Ему тут же снесли голову. И готовую свадьбу уже посвятили Асхату и дочери хана. Таким образом, Асхат женился на этой девушке.

В тот же день девушка спросила новости о сестре Асхата. Юноша рассказал, что она совершила, и как он с ней поступил. Тогда девушка послала людей, чтобы привели сестру Асхата. Когда они туда прибыли, девушка была при смерти. Они привели ее, вылечили, и поставили на ноги. Но все равно, после этого она еще больше возненавидела Асхата. В один из дней она пошла в кузницу к мастерам и заказала капкан, принесла и положила аккуратно его под одеяло в кровати, где спал Асхат.

Вечером, когда Асхат лег спать, он попал в капкан и умер. Увидев это, медведь, волк, лев снова собрали лечебные травы и оживили Асхата. После этого Асхат приказал, чтобы при нем повесили сестру.

И собравшиеся:

– По делам своим нашла себе вознаграждение, – сказали и не стали переживать.

И не было радости в мире, которую они не испытали. Асхат и его жена, играючи, весело стали жить да поживать.

– И я этим заканчиваю свою длинную сказку, – сказал старик и закурил трубку.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 3. Записал И.И. Гузеев 27.08.1960 г. в с. Верхняя Жемтала Советского района КБАССР от Занкишиева Окуба.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Окуб слышал от стариков.

Волибную сказку «Асхат и его сестра» влетают элементы героической и семейно-бытовой сказок. Основной сюжет, в котором повествуется о вражде между братом и сестрой, может означать окончание эры матриархата.

БАШ СЮЕК

Эртте-эртте бир элде бир белгили адам жашаганды. Ол адам эл сюрюуюн кьууалаучу жерге чыгып бара болганды. Бара кетип, элден чыккыган жерде бир баш сюек чанчылып турган кьязыкны эслейди. Ол баш сюек адам баш сюек эди.

Бу баш сюекни кьязыкыгъа чанчылып кьрген киши окьуулу киши эди да, кьатына барып, баш сюекге кьараса, баш сюекде жазыу кьреди. Жазыуну окьуйду да, тюз айтылганы былайды: «Бу баш сюекни хатасындан он адам ёлгенди. Энтта да тогъуз адам ёллокдю».

Бу баш сюекни, аны юсюнде жазыуну кьрген да, окьугъан да этген окьуулу киши кьарап, сагъышланып айтады: «Муну хатасындан он адам ёлген эсе, энтта да тогъуз адам ёллок эсе...» – деп, анга ыразы болмай, баш сюекни, кьязык башындан алып, элтип, кенгнге ташлайды.

Андан артха кьайтып келе, ол киши жолда бир быстыр тьуюмчек табады. Ол тьуюмчекни келтирип, ююнде жангыз кьызына берди.

Бу тьуюмчекни тапхан киши, тьуюмчекде не болганын да билмей, бир аламат зат сунуп, кесини жангыз кьызына аманат этип, мураты уа хаж кьылыргъа* атланыргъа эди. Аны себепли, жангыз кьызын хоншусуна** аманат этип, хаж кьылыргъа тебиреп, жолоучу болуп кетеди.

Бу киши хажгъа кетгенди, алай кьызын ама(на)тха ийнанып кьойгъан хоншусуну ниети кирди, ол а аны билмей кетгенди.

Кюнлени бир кюнюнде хоншусу, келип кьызгъа осал ниети бла, аманатха хыянат болургъа кьуреше, кьызын жанындан тойдургъанды.

Кьыз, бу ишден жалкыгъаны себепли, сагъыш эте кетип, атасы берген быстыр тьуюмчек эсине тьушеди. «Ол не болур эди?» – деп, ойлай кетип: «Ол ёлор от болур эди, алай болмаса, адам башы кьязыкыгъа чанчылып турган тийреде быстыр тьуюмчекни башха не магъанасы боллукьду?» – деп ойлау бла: «Мындан эсе, ёлген да игиди», – деп, ол тьуюмчекни тешип, ёлор эсем деп, ичинде ун кибик бир акъ затны табып ашайды.

Ол кюнден башлап: «Къачан ёллокме мен?» – деп ойлай, бёлек заман озады, ёлген а этмейди, алай кеси кесине, эрлик-тишиликден жукъ жокъ эсе да, тюрленип, ишекли болады.

Бёлек замандан кьызын хоншулары кьызын кьарыны болур деп ишеклик бла:

– Сен былай нек болдунг? Бу ишни атанг хаждан кьайтханда айтырлыкъбыз! – деп кьоркьутадыла.

Болсада, кьыз кьоркьмайды, нек десенг, кесине не аз да ишексизди.

Атасы хаждан кьайтып келеди, кьызын болумундан да эшитеди. Болсада, ачылу халда жарсымай: «Кеси тюз айтыр», – деп, кьызына ачыкъ сурайды.

Болумну, кьошмай, кьоратмай, кьыз атасына ачыкълайды. Сора кьызын атасы:

– Да не этейик да? Аллах этди, биз кьрдюк, – деп, кьызгъа ишеклик да этмей, чамланмай кьояды.

* Хажы кьылыргъа.

** Кьоншусуна.



Бара баргъан заманда, къызны заманы жетип, сабий тууады. Сабий эр кишиди. Бара-баргъанда сабийни халиси адам ийнанмазчады: башха сабийлеге ушамайды. Не бла десенг, сабий болса да, адети, кылыгы, сёзю да уллу, акылы, белгили, хурметли адамдачады.

Сабийге жети жыл болгъанда, бу элдеги бир окъуулу, кючлю алимге:

– Окъут муну, – деп, аманат этедиле.

Муну окъутхан устаз мынга бек бюсюрейди эм:

– Мунуча закий, фахмулу сабий окъутмагъанма, – деп, аны махтайды.

Бу устаз кеси белгили, кючлю устаз болса да, юч жылны ичинде бу сабий бу устазны жетеди. Устаз мынга дерс бералмайды. Китапла болгъан жерни юйретип:

– Энди кесинг окъу, – деп кьояды.

Жергели бир уллу ханны чабакъчылары болады да, ол чабакъчыла, чабакъ тутта келип, бир кызыл чабакъчыкъ туттадыла. Ол чабакъны, бирси чабакълагъа ушамай, кып-кызыллыгына сейирсинип, муну ханны кесине да, юйдегисине да кёргюзторге алып келе, ханны арбазына киредиле. Ханны къатыны, терезеден къарап, чабакъны кёрюп:

– Эркек эсе, келтирмегиз! – деп, эки кере къатлайды.

Шо ол кезиуде бу сейирлик чабакъчыкъ адамланы аллында, тюз эки жарылып, ёлюп къалады.

Аны алай болгъанын хан, кеси да кёрюп, битеу халкъны жыйып, былай деп билдиреди:

– Бу чабакъны бу халда эки жарылып ёлгенини себебин билип, манга айтмасагъыз, сизни битеу кырлыкъма! Болжал (бюгюн – байрым кюн) экинчи байрым кюндю! – дейди.

Бу затны хандан эшитгенде, халкъ саулай къайгылы болады, мудах да.

Ол ууахтыда ол белгисиз туугъан жаш келеди. Халкъны мудахлыгъын кёреди. Башха бир тюрлю къайгысыз устазына барады да:

– Эл мудахды, сени да мудахлыгъынгы кёреме. Не болгъанды сизге, нек мудахсыз? – дейди.

Бу жашха жууап эте, устаз чабакъны жарылгъанын бла аны юсюнден ханны айтханын жашха ангылатады эм аны ючюн мудахлыкъларын айтады.

– Ол, – дейди жаш, – аллай бир санга да, жамауатха да мудахлыкъ келтирив иш туююлду. Аны жууабын ханнга мен берирме. Алай сенден тилейме: байрым кюн халкъ жууапха ханны аллына жыйылгъанда, кесинг чыгып, жамауатны аллында: «Жууапчы олду, кеси да мени сохтамды», – деп, мени кёргюзторсе да, ол хан менден жууабы бла къанып, халкъ да, сен да зарансыз къалырсыз, – деп жарашдыла.

Болжал байрым кюн жетди. Ханны аллына халкъ жыйылды. Жаш да, устазы да келдиле. Ол жаш айтханча устазы этди.

Бу жаш, чыгып, жууап айта, былай дейди:

– Эй, жамауат! Ханны къатыныны эки къарауашы барды. Аланы тешиндирив, бери сюрюгюз, – дейди.

Ол халда этип, сюрюп келтиредиле. Халкъ къарайды да, аланы эр кишиле болгъанларын кёрюп сейирсинедиле. Жаш айтады:

– Сейирсинмегиз, была, тиширыу кийимле бла кеслерин жашырып, ханны къатыныны къарауашларыча кёргюзтюр, тосларыдыла. Энтта да ханны къатыныны юйюню тюрюнде киши билмей тургъан жетеулен



бардыла, аланы да, чыгъарып, бери сюрюгюз да, алагъа да къарайыкъ да, кёрейик, – дейди.

Ол жаш айтханча, жетеуленни табып, халкъны аллына келтирип, хан тахтадан, халкъ турушунлай, ол келтирген жетеуленнге да, алгъыннгы экеуленнге да къарап, сейир-тамаша болдула.

Ол заманда ол жаш, ханнга айланып:

– Чабакъчыкъны жарылгъаныны себепин кёрдюнгмю? Ма алайды да: бу чабакъчыкъ биле эди. Сени къатынынга да, санга да кёгюзтюрге алып келе эдиле да, сени къатынынг: «Эркек эсе, келтирмегиз!» – деп, эки да къатлагъанын эшитип: «Да хан кеси, къатыныны эки «къарауашы», жети да белгисиз «нёгери» – ол онусу да этмегенни, эр, тиши болсам да, менми этерлигем?!» – деп, ачыудан жарылгъанды.

Энди билинеди: башны юсюнде жазылгъан оноуланни ёлюмю белгисиз болса да, энди бюгюн былайда хан тогъуз адамны жояды.

– Ма, багъалы хан, санга чабакъны жарылгъаныны жууабы олду.

Да ол баш сюекде белгиленген он ёлю да, бу тогъузусуча, болур эдиле.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 20 папка, 5 паспорт. КъМАССР-ны Совет районуну Герпегеж элинде 1926 жылда туугъан Къадырланы Хажу-Османни жашы Сафардан 22.01.1965 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Сафар уллу атасыны атасындан эшитгенди.

Къадарны кертилигини юсюнден хапарлагъан сейир-тамаша жомакъ. Чыгъармада баш жигитни ун маталлы бир белгисиз затны ашагъан къыз анасындан сейирлик халда туугъаныны, аны сейир закийлигини эм жазыуну толтурууда ойнагъан магъанасыны юсюнден айтылады.

ЧЕРЕП

Давным-давно в одном селе жил один известный человек. Тот человек поднимался / шел (как-то) в место, куда жители села выгоняли стадо. По пути, при выходе из села замечает кол, на который был насажен череп. Этот череп был человеческим черепом.

Увидевший насаженный на кол череп мужчина был образованным человеком и, (поэтому) подойдя к нему, когда посмотрел на череп, увидел надпись на черепе. Надпись читает и прямо так говорится: «Из-за этого черепа умерло десять человек. Еще девять человек погибнет».

Череп, надпись на нем и увидевший, и прочитавший образованный мужчина, посмотрев, задумавшись, говорит: «Если из-за него десять человек умерло, еще девять человек погибнет...» – произнеся, будучи несогласным с этим, череп, сняв с кола, отнеся, выкинул подальше (далеко).

Возвращаясь оттуда назад, тот мужчина на дороге один матерчатый узелок находит. Тот узелок принеся, дома своей единственной дочери отдал.

Нашедший этот узелок мужчина, даже не зная, что в том узелке находится, подумав, что (это) что-то замечательное, препоручил своей единственной



дочери, а сам имел целью отправиться совершить хадж*. Поэтому, свою единственную дочь соседу препоручив, собравшись совершить хадж, став путником, уходит.

Этот мужчина ушел в хадж, однако у соседа, которому, доверившись, оставил свою дочь, умысел грязный, а он, этого не зная, ушел.

В один из дней сосед, придя к девушке с дурным намерением, доверенному ущерб причинить стараясь, девушке надоел (пресытил жизнью).

Девушка, поскольку устала от этого дела, поразмыслив, вспомнила данный отцом матерчатый узелок. «Что это было?» – размышляя: «Это, наверное, был яд, если бы было не так, какое другое значение будет у матерчатого узелка в окрестностях насаженного на кол человеческого черепа?» – с такой мыслью: «Чем так, даже лучше умереть», – решив, тот узелок развязав, надеясь умереть, найдя внутри похожее на муку какое-то белое вещество, съедает.

Начиная с того дня: «Когда я умру?» – размышляя, проходит некоторое время, но не умирает, но сама в себе, хоть из мужского-женского ничего (отношений между мужчиной и женщиной) нет, изменившись, сомневается.

Через некоторое время соседи девушки, заподозрив, что девушка в положении:

– Почему ты такая стала? Это дело, когда твой отец из хаджа вернется, расскажем! – говоря, пугают.

Тем не менее, девушка не пугается, потому что в себе нимало не сомневается.

Ее отец возвращается из хаджа и о состоянии девушки слышит. Тем не менее, не переживая в гневном характере: «Сама правду скажет», – решив, у дочери в открытую спрашивает.

Дело, не прибавляя, не убавляя, девушка своему отцу раскрывает. Тогда отец девушки:

– Да что подделаем-то? Аллах сотворил, мы увидели, – сказав, в девушке даже не сомневаясь, не гневается.

С течением времени, девушке пора настав, ребенок рождается. Ребенок мужского пола. Со временем поведение мальчика становится таковым, чтобы человек не поверил: на других детей не похож. Спросишь чем, хоть и ребенок, привычки, характер и слово как у взрослого, умного, известного, уважаемого человека.

Когда ребенку исполнилось семь лет, в этом селе одному образованному, сильному ученому:

– Учи его, – сказав, препоручают.

Обучающему его учителю он очень нравится и:

– Такого, как он, мудрого, талантливого ребенка не учил, – говоря, его хвалит.

Хотя этот преподаватель сам был известным, сильным учителем, в течении трех лет этот ребенок догоняет этого преподавателя. Учитель не может преподавать ему урок. Направив его в место, где имелись книги:

– Теперь сам учишь, – говорит.

У одного местного великого хана были рыбаки, и те рыбаки, ловя рыбу, поймали одну красную рыбку. Удивившись тому, что та рыбка, не будучи

* Совершить паломничество в Мекку, священное для мусульман место [6, 766].

похожей на других рыб, красная-прекрасная, когда несли, чтобы показать и самому хану, и его жене, входят в ханский двор. Жена хана, выглянув из окна, увидев рыбу:

– Если самец, не несите! – говоря, два раза повторяет.

Именно в этот момент эта удивительная рыбка перед людьми, прямо пополам треснув, умирает.

Что так с ней приключилось, хан, и сам увидев, собрав весь народ, так сказав, сообщил:

– Если узнав причину, почему эта рыба таким образом, треснув пополам, умерла, мне не скажете, вас всех истреблю! Срок (сегодня – пятница) – вторая пятница! – сказал.

Когда это от хана услышал, весь народ обеспокоился и опечалился.

В тот момент прибывает тот безвестно родившийся парень. Видит печальность народа. Без какой-либо другой заботы идет к своему учителю и:

– Село печально, и твою грусть вижу. Что с вами случилось, почему печальны? – говорит.

Отвечая этому парню, учитель объясняет юноше, что рыба треснула и что сказал об этом хан, и что поэтому печальны, сообщает.

– Это, – говорит юноша, – не такое, чтобы настолько и тебе, и народу, печаль принести, дело. На это ответ хану я дам. Но прошу у тебя: когда в пятницу народ соберется перед ханом для ответа, сам, выйдя перед общиной: «Ответчик – он, и сам он – мой ученик», – сказав, меня покажешь, и тот хан ответом от меня удовлетворившись, и народ, и ты невредимыми останетесь, – так договорились.

Установленная пятница настала. Собрался перед ханом народ. И юноша, и его учитель пришли. Как тот юноша сказал, (так) учитель сделал.

Этот парень, выйдя, держа ответ, так говорит:

– Эй, община! У жены хана есть две прислужницы. Их раздев, пригоните сюда, – молвит.

Таким образом поступив, пригнали. Народ смотрит и, увидев, что это мужчины, удивляется. Юноша говорит:

– Не удивляйтесь, они, женскими одеждами себя укрыв, притворяясь прислужницами жены хана, – ее любовники. Еще под домом ханской жены, будучи никому неизвестными, семеро есть, и их, вытащив, сюда пригоните и на них тоже поглядим и увидим, – молвит.

Как парень сказал, семерых найдя, перед народ приведя, хан с трона, народ как есть, и на тех приведенных семерых, и на двух прежних глядя, поразились.

Тогда тот юноша, обратившись к хану:

– Увидел причину, почему рыбка треснула? Итак: эта рыбка знала. И твоей жене, и тебе показать несли, и что твоя жена: «Если самец, не несите!» – говоря, дважды повторила, услышав: «Да сам хан, две «прислужницы» его жены и семь неизвестных ее «друзей» – эти десятеро что не сделали, самцом, самкой ли я был бы, я что ли сделал бы?!» – решив, от злости треснула.

Теперь становится понятным: хотя гибель десятерых, о которых было написано на черепе, была неизвестной, теперь сегодня здесь хан девять человек губит.



– Вот, дорогой хан, таков тебе ответ, почему рыба треснула.
Да и те обозначенные на черепае десять умерших, наверное, были такими же, как эти девятеро.

*Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 5.
Записано 22.01.1965 г. в с. Герпегеж Советского района КБАССР от
Кадырова Сафара Хажу-Османовича (1926 г.р.).*

*Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х.
Сказку Сафар слышал от деда по отцу.*

*Вошебная сказка, повествующая о неотвратимости судьбы.
В произведении говорится о чудесном рождении главного героя от непорочной матери, проглотившей неизвестное вещество, его необычайной мудрости и роли в исполнении предначертанного.*



АЛЛАДИН

Бир элде падчах болганды. Къайры эсе да къайтыб келгенде, къатыны биреулен бла джатыб тургъанлай, кѳредиди. «Мынга къалай этерими къарындашыма сораим», – деб кетеди.

Къарындашы-падчах бир элге кетиб тургъанлай, барады. Къарындашы келеди, саламлашады. Сора:

– Сен нек мудахса? Биз бир бирни кѳрмегенли кѳб бола эди(, – дейди – *Ф.Г.*).

– Да, – дейди, – мени къатыным бир адам бла джатыб тургъанды. Бери келгенде, сени къатының да алай, бир адам бла джатыб тургъанлай, келгенме, – дегенди.

– Да мени къатыным алай этмез! – дегенди, инанмагъанды.

– Да сора сен: «Энди бизге бир азыкъ эт, биз бир кесек айланыб къайтайыкъ», – (де, – *Ф.Г.*) дегенди.

Айланыб келгенлеринде, къатыны биягъы киши бла джатыб тургъанын кѳредиле. Кириб кѳргенлей, урады да, экисин да ѳлтюреди. Аны къарындашы да, алыб келиб, къатынын ѳлтюргенди. Андан сора уа: «Быланы тукъумлары бары да былай болурла», – деб, хар кечеден бир къызны келтириб, башларын кетериб турады.

Бир кишини эки къызына кезиу джетгенде, кичиси таматасына:

– Бир кече джашагъан да игиди, бюгюн сен къал, мен барайым, – дейди.

Барыб, тангнга дери таурух айтыб турады, хан да, аны таурухуна тынгылаб, ѳлтюрмей къояды.

Хандан къыз бууаз болады, къозлайды, къыз табады.

Элде быстыр тикген бир уста болганды. Аны уа Алладин деб бир джашы болганды. Атасы джашын бир затха да юреталмагъанды. Къуру ашыкъ ойнаб тургъанды.

Аны атасы ѳледи.

Эки тенгизни арасында бир хыйнычы араб болганды да, ол келеди.

Хыйнычы Алладинни сураб келеди. Джашла бла ашыкъ ойнай тургъанлай кѳредиди.

– Кимни джашыды? – деб сорады.

– Партной Хасанны джашыды, – дейдиле.

– Джашны аты неди? – деб соргъанда:

– Алладинди, – дейдиле.

– Партной Хасан саумуду? – деб соргъанда:

– Угъай, ол ѳлгенди, – дейдиле.

Джашны къучакълайды, джиляйды:

– Ол мени къарындашым эди, – дейди.

Джашны тюкеннге алыб барыб, башдан аягъына кийиндиреди. Бир кюнден бир кюннге узакъдан узакъгъа элтиб айланады.

Бир кюн тауну тюбюне джетгенде:

– Энди кеч болганды, къайры барлыкъбыз? Къайтайыкъ, – дейди джашчыкъ.

– Ачмы болганса? Ач болган эсенг, артмакъда тауукъ этни да ал, гырджын да ал да, аша, – дейди.

Джаш аладан алыб ашайды.



– Энди кеч болгъанбыз, былайда къалайыкъ, – деди.

Алайда уллу от этиб къаладыла.

Эртден бла къобуб къарагъандыла. Алайда тогъайы бла бир уллу таш болады.

– Алладин, тогъайындан тутуб, бери бир аудурчу, – дейди.

Джаш ташны аудурады. Ташны аудургъанда, энишге бир бахчыч джол тюшеди.

– Бу джолну тюш да, анда бир аслан тагъылыб тура болур, аны ур да, ёлтюр, – дейди. – Андан озсанг а, бир итге тюберсе, андан да къоркъма, ёлтюр, – дейди. – Алайдан озсанг а, табка-табка да ариу затла болурла, аланы хурджуннга салырса, бир къалагъа барырса. Эшигин бери ачсанг, анда бир къатын олтуруб тура болур. Ол къатын: «Сен къайдан келдинг, балам?» – деб, аллынга чабханда, сен къачыб букъ, – дейди. – Дагъыда къайтыб келиб, эшикни ач, биринчи кере этгенча эт, – дейди. – Ючюнчю кере да къачыб букъгъанда, къатынны юй ичинде кёрсенг, кирме, – дейди. – Юй ичинде къатынны кёрмесенг, отоуда чабыб, бир тот чыракъ болур, аны (алыб – *Ф.Г.*) къачыб чыгъарса, – деди.

Джаш, тот чыракъны алыб, къачыб чыгъады. Бахчыч джолну эшигине джетеди.

– Алладин, энди чыракъны бери бер, – дейди араблы.

– Угъай, чыракъны, ары чыкъсам, алай берирме, – дейди.

Джаш чыракъны бермегенде, араблы, ташны тешике салыб, бегитиб къойгъанды. Джаш джер тешике бегитилиб къалгъанды.

...

Джаш, тешикден чыгъыб, чыракъны алыб, юйге баргъанды. Аны не зат болгъанын да билмегенди.

Падчахны къызы Алладин бла тенг ёсюб баргъанды.

Джаш чыракъны келтириб салгъанда, беш уллу алтын табакъ, ичлеринде да алтынлары бла, болгъандыла.

Алладин (анасына – *Ф.Г.*) айтханды:

– Бу табакъладан бирин да элт да, падчахны къызын манга тиле, – дейди.

– Падчахны къызын тилерге кишини къолундан келмегенди! Мен кесими ёксюз жашыма аны тилей барсам, уруб, башымы кетерир! – дегенди.

Джаш айтады:

– Бармасанг, мен сени ёлтюрюрме! – дейди джаш анасына.

Анасы, табакъладан бирин да ботасына чулгъаб, падчахха барады.

Тарыгъыу болгъанла шинтикледе олтуруб, падчах а табкадан тюбюне къараб олтурады.

Къатын алгъа келиб, падчах соргъанда, къатын, къоркъуб, джукъ да айталмай, къайтыб кетеди.

Джаш:

– Не болдунг, анам? – деб сорады.

Аны болгъаныча айтады.

Джаш:

– Энтда да барырса, – дейди.

Дагъыда экинчи кюн да барады. Ары бек алгъа келеди.

* Былайда жомакъны бир кесеги берилмей къалгъаннга ушайды (*Ф.Г.*).



– Хар кюн сайын бир къатын, келиб, джукъ да айтмай, кетиб къалады. Барыгъыз да, бери чакъырыгъыз, – дейди.

Падчах, аны къатында олтуртуб:

– Не джумушунг барды? – деб сорады.

Къатын падчахны къызын тилей келгенин айтады. Алтын табакъны кѳргенлей, анга джаны киреди. Табакъны къайтарыгъа падчахны кѳзю къыймайды.

– Да аны юсюнден бир оноу этербиз, – деб иеди къатынны.

Джаш сорады:

– Не болдунг? – деб.

– Табакъны алгъандыла, жууабын артда айтырыкъдыла дейдиле.

Падчах ѳзюрлерин чакъырады. Аны къызын тилегенин айтады.

– Сизни бла кенгешмей, табакъны къайтаралмайма, – дейди.

гзюрлеринден бирлери, къызын кесине тилерге умут этиб, айтыргъа уа къоркъуб тургъанды. Сора алыб кетедиле деб къоркъуб:

– Къызын тилерге он алтын табакъ бла он киши керекди, – деб, алай айтады.

Къатыннга айтадыла:

– Он алтын табакъ бла он ахшы киши джибер, – дейдиле.

Къатын, къайтыб келиб, айтханларын билдиреди. Джаш, барыб, чыракъны тырнайды.

Бир уллу джин киши чыгъады. Барыб, он алтын табакъ алыб келеди. Аланы он кишиге бериб, падчахха джибереди. Ол да къызын анга берирге таукелленеди.

Джаш къызын алады. Аны эшитиб, араблы:

– Энтда да бир хыйля этейим, – деб келеди.

Джаш а къуру уугъа джюрюб турады.

Падчах: «Кюеуюме кесими къатымда юй ишлетирикме», – деб, юй тюб джарашдыртады.

Алладин чыракъны неге джарагъанын биледи.

Джин киши чыгъыб, алайда тѳрт отоулу юй ишлетеди, ариу джарашдыртады.

Эртденликде къарагъанда, юйню кѳреди. Бир джерчигин ишлетмей къояды (Алладин – *Ф.Г.*). Эсеблеб къарагъанда, алайны ишлетирге падчахны къарыуу джетишмейди.

Джаш юйюм битдиртеди. Юйге келеди. Уугъа джюрюб турады.

Араблы: «Алагъа бир хата этейим», – деб салыб келеди.

Ариу чыракъла ишлеб, келиб, адамланы алдайды. Алладинни чырагъын да алады.

Чыракъ къолгъа тийгенлей, джинлени таматарын чакъырыб:

– Бу юй(ню) да, бу хапчукле(ни) да, тиширыу(ну) да тенгиз ортасында мени джериме кѳчюр! – дейди.

Пад(чах) эртденликде къобуб къарагъанда, юй да, къыз да, зат да болмагъанды.

Алладин ууда болгъанды, къатыны уа чыракъны билмей бериб джибергенди.

– Бир айдан алгъа сен мени къатыма келме, – дейди (къыз араблыгъа – *Ф.Г.*).



Падчах ёзюрлени джыяды, джаш кеси да болмагъанлай, ёлтюрюрге деб сюдюн этедиле.

Джаш уудан къайтады, къатыны болгъан джерге къайыкъ бла ётеди.

Аны къатыны былай айтады:

– Сен букъ, мен а араблыны чакъыр(ыр)ма да, ичириб эсиртирме. Сен а аны, уруб, башын кетер, – деди.

– Бизни къошулур кечебиз(ди), биз ичерге керекбиз, – дейди.

Араблы чагъыр ичине салады, Алладин аны, уруб, башын кетереди. Хар затын да ызына къайтартады.

Падчах:

– Мен энди къарт болгъанма, падчахлыкъны кюеуюме береме, – дегенди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 20 папка, 12 паспорт. КъЧАО-ну «Теберда» курортунда 78-жыллыкъ Къанаматланы Лолокайны жашы Омардан 29.07.1968 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Гулийланы (Зануколаны) Ф.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Омар атасындан эшитгенди.

Араплыланы «Минг бла бир кечени жомакъларыны» къарачай-малкъар халкъны жашау болумларына, миллет эслерине кёре тюрлендирилген бир сюжетине къуралгъан сейир-тамаша жомакъ. Чыгъарманы хапарлау жаны бла кемчиликлери кёпдю, бир-бир жерлери къысхартылып, бир-бирде уа берилмей да къаладыла (сёз ючюн, Алладинни жер тешикден къалай бла къутулгъаны, тот чыракъны сейир кючюн къалай ачыкълагъаны, ханны хыйнычы араплы урлагъан къызын къалай табалгъаны эм б.).

АЛЛАДИН

В одном поселении был царь / властитель. Когда он, завернув куда-то, вернулся, увидел свою жену, лежащей с кем-то. «Как с ней поступить, спрошу у своего брата», – решив, уходит.

Прибывает, когда его брат-царь / властитель уехал в какое-то село. Брат возвращается, здороваётся. Затем:

– Почему ты печален? Давно уже мы друг друга не видели, – говорит.

– Да, – молвит, – моя жена с каким-то человеком (мужиной) лежала. Когда сюда прибыл, в то время, как и твоя жена так же, с неким человеком возлежала, пришел, – сказал.

– Да моя жена так не поступит! – ответил, не поверил.

– А тогда ты: «Теперь нам какую-нибудь еду приготовь, мы, немного прогулявшись, вернемся», – скажи, – предложил.

Когда, пройдясь, вернулись, видят, что его жена опять с мужчиной лежит. Как только зайдя увидел, бьет и обоих убивает. И его брат, привезя, свою жену убил. А после этого: «Весь их род / пол, наверное, таков», – решив, каждую ночь приводя одну девушку / женясь на одной девушке, отрубает (им) головы.

Когда дошла очередь до двух дочерей одного мужчины, младшая старшей:



– И одну ночь прожить хорошо, сегодня ты останься, я пойду, – говорит. Пойдя, (время) до утра предание рассказывая проводит, и хан, слушая ее предание, оставляет, не умертвив.

От хана девушка понесла, разрешается от бремени, дочь рождает.

В селе был один умелец, шивший одежду. А у него был один сын по имени Алладин. Отец своего сына ничему не смог научить. Только (постоянно) в альчики играл.

Его отец умирает.

Между двумя морями был один араб-колдун и он приезжает.

Колдун Алладина разыскивая идет. Видит (его), когда с мальчишками в альчики играет.

– Чей он сын? – спрашивает.

– Портного Хасана сын, – говорят.

– Как парня зовут? – когда спросил:

– Алладин, – отвечают.

– Портной Хасан жив ли? – когда спросил:

– Нет, он умер, – говорят.

Парня обнимает, плачет:

– Он был моим братом, – говорит.

Парня в магазин отведя, с головы до ног одевает. Изю дня в день все дальше и дальше увозит.

Один день, когда добрались до подножия горы:

– Теперь поздно, куда пойдем? Вернемся, – говорит мальчик.

– Проголодался? Если голоден, возьми из сумы и куриное мясо, и хлеб и поешь, – говорит.

Парень, взяв (часть) из них, ест.

– Теперь (мы) припозднились, здесь останемся, – сказал.

Там, большой костер разведя, остались.

Утром, поднявшись, посмотрели. Там с кольцом один камень оказывается.

– Алладин, взявшись за кольцо, сюда отвали-ка, – говорит.

Парень камень отваливает. Когда камень отвалил – вниз одна дорога со ступеньками (лестница) спускается.

– По этой дороге спустись и, там, наверное, один лев прицеплен, его ударь и убей, – говорит. – А когда минуешь его, одну собаку встретишь, и ее не бойся, убей, – говорит. – А оттуда когда пройдешь, полками-полками красивые вещи будут, их в карман положишь, в одну башню пойдешь. Когда дверь сюда откроешь, там, наверное, одна женщина сидит. Когда та женщина: «Ты откуда пришел, дитя мое?» – говоря, побежит к тебе, ты, убежав, прячься, – говорит. – Снова вернувшись, отвори дверь, поступи так же, как поступил в первый раз, – говорит. – Когда и в третий раз убежав, спрячешься, если женщину в доме увидишь, не входи, – говорит. – Если внутри дома женщину не увидишь, по комнате пробежавшись, одна ржавая лампа будет, ее забрав, убежав, выйдешь, – сказал.

Парень, ржавую лампу взяв, выбегает. Добирается до двери ступенчатой дороги.

– Алладин, теперь лампу сюда давай, – говорит араб.

– Нет, лампу, когда туда выйду, так отдам, – отвечает.



Когда парень лампу не отдал, араб, камень на дыру взгромоздив, запер. Парень в земляной норе запертым остался.

...*

Парень, выбравшись из норы, забрав лампу, домой пошел. Чем она является, и не знал.

Дочь царя ровень с Алладином росла.

Когда парень лампу, принесся, положил, пять больших золотых блюд, с золотом внутри, появилось.

Алладин сказал (своей матери – *Ф.Г.*):

– Одно из этих блюд отнеси и дочь царя за меня попроси (отдать замуж), – говорит.

– Дочь царя просить (в жены) никто не сумел (никому не было с руки / по плечу)! Если я, за своего сына-сироту ее прося, пойду, ударив, голову мою снесет! – сказала.

Парень говорит:

– Не пойдешь, я тебя убью! – молвит парень своей матери.

Его мать, и одно из блюд завернув в свой передник, идет к царю.

Жалобщики сидя на стульях, а царь, с возвышения вниз глядя, сидит.

Когда женщина выйдя вперед, царь спросил, женщина, испугавшись, ничего не сумев сказать, уходит.

Сын:

– Ну что (у тебя получилось), матушка? – спрашивает.

Как было, рассказывает все.

Парень:

– И еще сходишь, – говорит.

Еще и на второй день идет. Туда самой первой приходит.

– Каждый день одна женщина, придя, ничего не говоря, уходит. Пойдите и сюда позовите, – говорит (царь).

Царь, ее подле себя посадив:

– Какое у тебя дело? – спрашивает.

Женщина рассказывает, что пришла просить цареву дочь. Едва увидел золотое блюдо, его душа входит в него / влюбляется в него. Вернуть тарелку царю становится жалко.

– Да об этом решим что-нибудь, – сказав, отсылает женщину.

Парень спрашивает:

– Ну что?

– Блюдо приняли, ответ, говорят, потом скажут.

Царь своих визирей созывает. Сообщает, что сватают его дочь.

– С вами не посоветавшись, блюдо не могу вернуть, – говорит.

Один из его визирей, желая посватать девушку за себя, боялся сказать. Затем, испугавшись, что увезут:

– Чтобы сватать девушку, нужны десять золотых блюд и десять мужчин, – так молвит.

Женщине сообщают:

– Десять золотых блюд и десять хороших мужчин пришли, – говорят.

Женщина, вернувшись, передает сказанное ими. Парень, пойдя, царапает лампу.

* По всей видимости, здесь пропущен значительный отрывок сказки (*Ф.Г.*).

Один большой мужчина-джинн выходит. Пойдя, десять золотых блюд приносит. Их десятерым мужчинам вручив, к царю отправляет. И тот решается отдать свою дочь за него.

Парень женится на девушке. Услышав это, араб:

– Еще одну хитрость применю, – решив, прибывает.

А парень постоянно ходит на охоту.

Царь: «Зятю рядом с собой дом велю построить», – надумав, заставляет подготовить основание для дома.

Алладин знает, на что годится лампа.

Мужчина-джинн выйдя, там четырехкомнатный дом заставляет построить, красиво обустроить.

Когда утром посмотрел, дом видит. Одно место недостроенным оставляет (Алладин – *Ф.Г.*). Когда посчитав, прикинул, его достроить у царя сил / средств не хватает.

Парень дом велит достроить. В дом переезжает. На охоту ходит (постоянно).

Араб: «Им какой-нибудь вред причиню», – решив, приходит.

Изготовив красивые лампы, придя, людей обманывает. И лампу Алладина забирает.

Едва лампа попала в руки, вызвав предводителя джиннов:

– И этот дом, и это добро, и женщину в мои владения посреди моря перенеси! – велит.

Когда утром царь, встав, посмотрел, ни дома, ни девушки, ничего не было.

Алладин был на охоте, а его жена лампу, не зная, отдала.

– Раньше, чем через месяц, ты ко мне не приближайся, – говорит (девушка арабу – *Ф.Г.*).

Царь созывает визирей, в отсутствие самого парня, постановляют его убить.

Парень возвращается с охоты, в место, где находилась его жена, переправляется на лодке.

Его жена так говорит:

– Ты спрячься, а я араба позову и напою. А ты, ударив, голову ему снеси, – сказала.

– Это ночь нашего воссоединения, мы должны выпить, – говорит.

Араб выпивает / кладет внутрь вино, Алладин ему, ударив, голову сносит. Все вещи назад (на свои места) заставляет вернуть.

Царь:

– Я теперь состарился, царствование передаю своему зятю, – сказал.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 12. Записал А.З. Холаев 29.07.1968 г. на курорте «Теберда» в КЧАО от 78-летнего Канаматова Умара Лолокаевича.

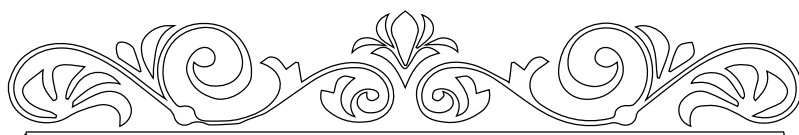
Выписала из архива и перевела на русский язык Гулиева (Занукоева) Ф.Х. Сказку Умар слышал от своего отца.

Волшебная сказка на один из сюжетов «Сказок тысячи и одной ночи» арабов, трансформированный в соответствии с жизненным укладом



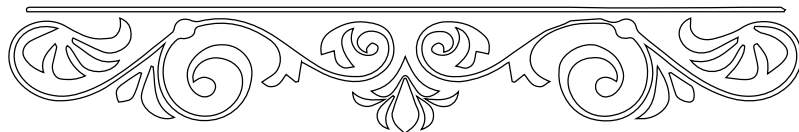
и менталитетом карачаево-балкарцев. Произведение в сюжетно-повествовательном плане неполноценно, некоторые эпизоды даются крайне сокращенно, а некоторые вообще опускаются (например, каким образом Алладин выбрался из подземной пещеры, как раскрыл чудесную силу ржавой лампы, как ему удалось найти похищенную колдуном-арабом дочь хана и т.д.).



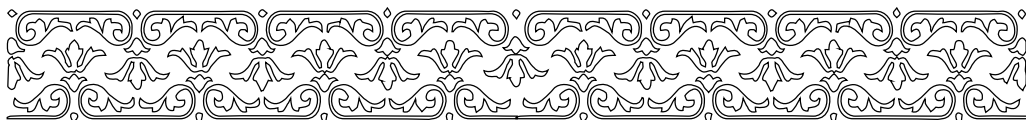


III. ЖИГИТЛИК ЖОМАКЪЛА

III. ГЕРОИЧЕСКИЕ СКАЗКИ







ТАЗРЕТ

Эртте бир элде Тазрет деп бир жаш улан жа(ша)й эди. Ол элни ашларын, кийимлерин, башха не керекли затларын ол жаш тапдырып жа(ша)та болганды. Тазрет, элден кетип, къайры да барып, айланып келтирген заты элни, ол экинчи барып келтиргинчин, жашата болганды.

Ол эл Тазретни мажарлагъан, аны, табып, алагъа келтирген заты бла жашау эте эдиле.

Алай жашай тургъанлай, Тазретге юйдегили болур заманы бола, киши мардасына жетишди. Барыучу формасында Тазрет биягъынлай айланьргъа кетгенди. Ол айланьргъа кетген заманда, элде жашагъан адамладан къарт, неда башха эсге алгъан адам болгъан эсе да:

– Бу бизни былай жашатып турады, Тазретни кесине да жашау керекди, мынгар къатын алыргъа заман жетишгенди, Тазретге къатын алыргъа керекди, – деп сёзге, оноугъа алгъандыла.

Ол оноу, бир къауум адам бир жерге жыйылгъан жерде чыкъса да, элни барына да эшитилди.

Бары да эшитгенликге, билгенликге, ол сёзню Тазретге айтыргъа киши да базынып болалмайды. Къаллай сёз бла башларгъа билмедиле.

Алыкъынчы ол оноудан Тазретни бир да хапары жокъду. «Биз ойлагъан, оноулагъан ишни Тазретге ким айтыр?» – (деп) сагъышланадыла, къалай, не сёзню юсюнден айтырларын билмейдиле.

Ол заманда ол элде жашагъан бир адам ортагъа чыкъгъанды да:

– Бу сиз жарсыгъан сёзню Тазретге айтыргъа мен былай ойлайман: Тазретни келир заманы болады. Ол келген заманда, биригиз да башыгъызны ёрге кётюрмей, башларыгъызны энишге бошлап туругъуз. Барыгъыз бирча мудахсынып тургъанны кёрсе, ол заманда Тазрет: «Мени элиме не болганды?» – деп сорур. Ол соргъанда: «Эл санга жарсып, юйдегили болургъа керексен», – деп, тап, мен окъуна айтырман, – дегенди.

Сёзню алайда тохтатдыла. Энди ала Тазретни келирин сакълайдыла.

Кёп заман да озгъунчу, Тазрет келди. Ол келген заманда, элни ичинде бир жангыз адам да башын ёрге кётюрген болмай, ол оноулашхан формаларында жерге къарашханлай турадыла.

Элни алай мудах, жерге къарашып тургъанларын кёргенде, Тазрет: «Мени элиме мен кетгенли не болганды, была мудахлыкъгъа нек къалгъандыла, менденми жанлары ауругъан болур?» – (деп,) сагъышха къалып, арсарлы бола соргъанды:

– Эй, мени элим, нек мудахсыз, сизге мен кетгенли не болганды? – деп соргъанды.



Ол мудах тургъан адамлагъа айланып, Тазрет алай соргъанда:
– Сен кетип келгинчин, элде бир хата жокъду.
– Да сора уа не ючюн мудахсыз?
– Бизни мудахланнганыбыз сени юдегили болмай тургъанынг(дан)ды...
Санга къатын алыргъа керекди.
– Аллах-Аллах, сиз айтханнга мен а не айтыргъа ишим барды? Тап кёргенигизлей, оноун этигиз...

Тазрет жашагъан элде къартла, жыйылып, «ол жарар, бу тап болур» оноу бла Тазретге къатын алдыла, юдегили болду. Аны ючюн деп, башхалыгъы болмай, Тазрет, биягъы барычусуча барып, айланып, жүрюп, тапханын келтирип, элин алгъын формасында жашатады.

Тазрет кеси айланыргъа кетгенликге, къатыны юде къалады. Алай тура-тургъанлай, бир талай заман озгъан эди. Тазрет да юде болгъан заманда, къайдан келген эсе да, аны юйюне бир жаланнгач садакъачы келип, къонакгъа тюшгенди. Тазрет аны къонакъ этди, бираз заманны жашадыла.

Тазрет атланып кетерге тюшдю. Ол садакъа жыя, айлана келген Тазретни къатыны бла юде къалды. Ол заманда садакъачы къатыннга:

– Юйню мюйюшлерине къарап, не затха турабыз? Кел, суу боюнуна, тенгиз боюнуна барайыкъ, эрикгенибиз кетер, – дегенди да, Тазретни къатынын алдагъанды да, элден чыгып, тенгиз жагъасына баргъандыла.

Алайда ары-бери айлана кетгендиле да, заманны оздура кетгенден сора, ол садакъачы:

– Къара, была нечик ариу юйледиле, бери кир да, аланы ариулукъларына къарачын, – деп, къатынны кемеге миндиргенди.

Алар экиси да кемеге миннгенлей, кеме атланды, суудан ары жанына атландыла да, ётдюле да, кетдиле.

Тазретни ол ишден бир зат хапары жокъду. Къатын къайры кетгенин, не болгъанын элде киши да билмейди. Къатынны не болгъанын адам билмегенликге, тас болгъаны битеулей элде хапар болду.

– Тазретге къатын ал дедик да, алдырдыкъ, кеси мында болмагъанлай, къатынын тас болгъанды деб'а къалай айтырбыз? – деп, эл бары бирден уяладыла, къалай этерге, не айтып жолугъургъа билмейдиле, уяладыла.

– Тазрет келир заманда, ол къатын алмай амал жокъду дегенибизча, мудахланып турсакъ, ол кеси сорур, ол заманда айтырбыз, – деп, алайгъа тюзелгендиле.

– Ахшы, ким ол сёзню Тазретге айтыр? – дегенде:

– Мен айтырман, – деди да, биреулен чыкъды.

Заман кёп, аз озгъан эсе да, Тазрет келди. Тазретни келгенине эл ангар жолугъургъа аллына чыкъгъандыла, алай бары да бир кибик мудахдыла. Элни мудахлыгъын кёргенде, Тазрет: «Не болгъан эсе да, мени элиме бир палах болгъанды», – деп, адамлагъа:

– Сизге не болгъанды, не зат ючюн былай мудахсыз? – деп соргъанды.

– Да нек мудах болайыкъ? Санга къатын ал дегенбиз да, алдыргъанбыз, сен элден кетгенлей, киши да билмейин, къатынын тас болгъанды да, биз а ма аны ючюн мудах болабыз, – деп айтхандыла.

– Къайгъырмаз. Тазрет сау болса, ол аны табар, – дегенден башха уллу гузаба болмай, Тазрет, элни ырахат тохташдырып, кеси уа къатынны излеуге жайылгъанды.

Барады, жюрюйдю, айланады, жукъ да табып къолундан келмегенди. Айлана баргъанды, тенгиз боюнунда кемеле, къайыкъла ишлей тургъан бир устагъа жолукъгъанды.

– Эй-и, иш къолай болсун! – деп селешгенди.

– А-аха-а, сау бол, сау да кел, жууукъ да, Тазрет! – деп, жарыкъ болуп, Тазретни аллына барып, къолун тутуп саламлашды. – Не айланасан, не жюрюйсен, Тазрет, къайдан чыкъдынг?

– Къайдан чыгъайын? Ма, ишими болуму ма былайды, – деп, Тазрет айланнганындан да хапар айт(хан)ды, «кёрген, къалгъан» деп хапар соргъанды.

– Бу тийреде, биз жашагъан жерледе аллай хапар бир да болмагъанды. Бу мен тургъан тенгизни бу жанында хапар болса, эшитирем, бир да не эшитген, неда билген, кёрген затым туююдю...

– Да сора тенгизден ётюп, ары жанында излерге керекмен, манга бир къайыкъ(ны) жарашдырып, ишлеп бер!

– Айхай, ишлермен!

Тазретни кёлуне жарагъан къайыкъны, бир да мычытмай, уста, ишлеп, къолуна бергенди.

Тазрет, къайыкъгъа да олтуруп, тенгизге кирип, жюзюп кетип барады. Сууну ичинде бара тургъанлай, тенгизни ары жанында(н) къайыкъ бла ётюп келген бир адам Тазретге жолукъду.

– Жол болсун!..

– Сау бол, Тазрет, къалай ахшы жолгъа барасан, хапар айтсанг а! Не айланасан, не жюрюйсен?

– Да мен да, айлана-жюрюй, суудан ёте бараман. Сен а къайдан ахшы жолдан келесен?

– Ишим болуп, сууну бу жанына ётгеном да, энди уа ызыма къайтып бараман. Тазрет, сен а къайрысан?..

– Мен а къайры болайым? Былай да, былай, къатыным тас болгъанды да, муну не болгъанын билмей къойман деп, излеп болгъанман да, тенгизни биз жашагъан жанында не аз да кёрюнген хапары жокъду да, энди уа, тенгизден ётюп, ары жанында аны излерге бараман.

– Алай болса, ахшы, излерге болушайыкъ, къайтайын!

– Кесинг суйген.

Тазретге жолда тюбеген адам да биргесине ызына айланды, экиси да тенгизни кемеле тохтар жерине келип тохтадыла.

Тазретни къатынын излер къайгъыгъа кирип, аны излеп тебирерге жол кёл аладыла.

– Тазрет! Сен бу иш бла жолгъа чыкъгъансан, сени бу жерледе танышынг ким барды?!

– Жокъду.

– Да алай болса, сени къатынынг ол жерде бир бай чюйютлю жаш(да)ды да, аны ол урлап келтиргенди, тегерегин бир ненча къат аскер сакълайды. Сюе болсанг, аскерни тый! Сюе болсанг а, Тазрет, къаланы ичинден къатынынгы чыгъар, сайлау сеникиди.

– Манга къайсы да башха туююдю, алай болса да, не къыйын жерде эсе да, мен къатынны чыгъарырман.



– Жюр, алай болса! – дегенди да, Тазретни кьатыны болгъан кьалагъа элтгенди.

Барсала: беш-алты башлы бийик юй, аны тегерегин аскерле сакълайдыла, андан адам арберини чыгъарыргъа мадар кёрюнмейди, кишилик этерге керекди.

Жолда суу ичинде Тазретге жолукъгъан аскерни тыяргъа, Тазрет кеси уа, кьатыны болгъан жерге кирип, кьатынны андан чыгъарыргъа, сермешиу(ге) тебиредиле.

Тазрет кьатынын алып чыгъаргъа, негери да аскерни да кенг кыстап турады да, кьатынны алып, экиси да тенгиз жагъасында ол кьайыкъларын кьойгъан жерге келдиле.

Кьатынны да кьайыкыгъа олтуртуп, тенгиз ичине кирип, жюзюп келедиле. Ол заманда Тазретни негери:

– Тазрет!

– Не этесен?

– Кьатындан мени да юлюшюмю бер!

– Къалай юлешейик? Эки болса, бирин берирем, бу уа жаланда бирди, нечик юлюш чыгъарайым?

– Сен муну юлеше билмеймисен?

– Огъай, юлешалыргъа кьолумдан келмейди.

– «Тазрет!» – деп, сени атынг айтылады, сен а чюйютлюден кьалгъанны алып айланмасанг а, санга кьатын табылмаз! Бусагъат тур ёрге! – деп, Тазретни кьатынын ёрге тургъузгъанды да, бичагъын чыгъарып ургъанды да, тюз экиге жаргъанды. – Ма, энди кьайсын сую болсанг да, ал! Мен а быллай жаман затны санга кьатынга тийишли кёрмеймен, – деп, тенгизге атып жибергенди. – Тазрет! Санга, ма ол жерде, ол элде юч кьарындаш бардыла, ала бусагъатда ындыр баса тура болурла, аланы бир жангыз эгечлери барды да, аны алсанг, ол санга кьатынга жарар ансын, сен а быллай магъанасыз адамлагъа кесинги къалай алдатып жорюйсен, излесенг, аны табарсан, – деп, Тазретден айырылып, жолуна кетгенди.

Ол биргесинден айырылып кетгенлей, Тазрет ол айтхан кызыны излеп тебирегенди. Аны тапхан Тазретге алай кьыйын иш туююл эди, адريسин бек толу айтхан эди.

Тазрет, ол юч да кьарындашны, излеп, тюз да негери айтхан формада барды да, тапды, ындыр баса тура болгъандыла.

– О-ой, ишигиз кьолай болсун! Ындыр да толу болсун!

– А-а, сау бол, сау да кел, жууукъ бол, кьонакъ! Жол жорюген адам, атынг да арыгъан болур, кесинг да ач, сууукъ болурсан, кел юйге, – деп, бек да сыйлы кьонакъ(ча) кёргендиле.

Тынчайып, солугъан да этгенден сора, ол кюнмю, экинчи кюнмю, жашла бла шагъырей, таныш болду.

– Да, кьонакъ, сени жумушунг болуп келген болурсан? Айт, не ишинг бар эсе да!

– Мени ишим-жумушум: сизни хапарыгъызны эшитгенмен, эгечигизни тилей келгенмен.

– Биз ангар аз да зат айтыргъа болалмабыз, бизге да ол оноу этеди. Болсада, кызы а шендю мында жокъду, келсе, кеси бла оноулашмай, биз санга сёз айтыргъа кьолубуздан келмейди.

Сакълады, къыз да келди, иш оноугъа тюшдю, ол юч къарындаш эгечлерини кесини ыразылыгъы блан Тазретге бердиле. Къарындашланы эгечин къатынга алып, Тазрет юйюне келтирди. Тазретни юйюнде жашайдыла.

Бир кече Тазрет жатханды, къатын а не эсе да бир затлагъа кюреше олтурады, мычыйды. Жукълагъан формалы этип, жашыртын къарайды, къатыны уа, жукълагъан сунуп, Тазрет уянмасын деп, шыбырт этдирмей къопханды да, къайдан чыгъаргъанды, эркегырыу кийим кийгенди да, бир атха иер салып, атланып тебирегенди. Аны кёргенлей, Тазрет да, анга кёрюнмей, жашыртын ызындан бара болгъанды. Къатыны Тазретни кёрмейди, ол аны кёрюп, ызындан марлап барады.

Бара кетгенде, бир жерде кёп адам жыйылып тургъанлай, юслерине барды. Ол алайгъа барыргъа, Тазрет а, ангар эслетмей, къарангыда барып, ол адамлагъа къошулду. Жыйылып тургъан адамлагъа къатын:

– Биз бюгече ол жерге барлыкъбыз, ма ол къаланы ууатырыкъбыз. Быллай бир адам аскерни тыяргъа, быллай бир адам а – къаланы тонаргъа! – деп, команда берип тебирегенди, юлешди адамланы.

Хапчукну, харекетни чачаргъа, аскерни тыялмай, ычхындырып башладыла. Ол заманда Тазрет, чабып, аскерни артха тыйып болгъанды. Алайдан къутулдула.

Харекет юлеширге башлагъанда, Тазрет иги кишилик этгени ючюн, анга къатын эки юлюш бергенди.

– Сен, кетмей, былай тур бираз, – деген(ди).

Ол алай айтханмы эди Тазрет къайгъысы? Къачханды да, кетгенди.

Юлешир затланы да бошап:

– Ол бюгече аскерни тыйгъан не болду? – деп сураса, тапмады.

Тазрет а, къатынны не ишин да бек таман билип, юлюшюн да алып, юйде хурулдап жукълагъанча (этип) турады. Къатын а аны билмейди, Тазрет жукълап тургъан сунуп, тёшекге кирди да, жатды.

Алай тургъанлай, биягъы бир кече къатын, Тазрет жатхандан сора, жатмай, кесин артхаракъ созады. Тазрет, кесин жукълагъан сундуруп, жашыртын къарайды.

Къатынны мураты Тазрет тынч жукълагъанды деп эди, ол а жашыртын къарагъанлай турады. «Тазретни жукълатдым», – деп, биягъыча, къатын, эр киши кийимле кийип, атны иерин салып, атланып тебирейди. Ол алай тебиреген заманда, Тазрет да жашыртын ызындан бара кетгенде, бир кёп адамла бирге жыйылгъан бир уллу тёбени юсюне баргъандыла. Къатын адамла бла саламлаша болгъанды, Тазрет а сансыз ол жыйылып тургъан адамлагъа къошулгъанды да, къалгъанды.

Къатын къарайды, адамланы тергеп, юлешип:

– Биз бюгече ол къаланы урлукъбуз, ууатып чачарыкъбыз, быллай бир адам – аскерни тыяргъа, быллай бир адам а – къаланы харекетин чачаргъа! – деп, къатын буйрукъ салды.

Ол заманда Тазрет а къаланы чачарыкъ къауумгъа тюшдю.

Ала къаланы чачып башлагъанда, аскерни тыялмай, хорлатып, ычхындырып башладыла. Тазрет, чабып барып, хорлап келген аскерни артха буруп, харекет алгъанла эркин болуп, кеслери мурат этген жерге келдиле. Къатын харекетни юлешип башлады.



Къарангыда Тазретни таныгъан этмейди, алай болгъанлыкъгъа, ангар эки юлюш артыкъ берип:

– Сен былай, кетмей, мычы бир кесекге, – деди.

Тазрет анымы сакълап турады? Къачды да, юйге кетди.

Барына да харекетни юлешип бошагъандан сора:

– Ол бюгече аскерни артха тыйгъан жаш не болду? – деп, Тазрет болгъанын билмеди, сурагъан а этди, тамамлады.

Салып, юйге келгенде, Тазрет а жукъ да билмегенча, жукълагъанча турады.

Къатын а: «Бу уа жукълайды», – деп кирди да, жатды. Тазрет, анда болуп, къатындан алгъа юйге келгенин а билмейди.

Алайлай къалдыла. Бир талай заман озду.

Бир кече, Тазрет жатхандан сора, биягъы къатын тигиу зат эте кюрешгенча олтура къалды. Тазрет, биягъы уа аны бир мураты болгъанын биллип, жашыртын къарайды.

Къатын олтура кетгенди да: «Тазрет тынч жукълады», – деп, къопханды да, атны иерин салып, эр киши кийимле кийип, атланып тебирегенди.

Ол тебирегенлей, Тазрет да, секирип къобуп, кийинип, жашыртын къатынны ызындан тебирегенди. Бара кетгендиле да, бир талада кёп адам жыйылып тургъанлай, къатын саламлашып баргъанды. Тазрет а къарангыда сансыз, киши да сезмей, къошулгъанды.

Къатын:

– Бюгече биз ол жерде къаланы бузарыкъбыз, аскер бек кючлю сакълайды. Аскерни тыяргъа – мынча адам, къаланы чачаргъа уа – мынча адам! – деп юлешип, ол бузарыкъ къалаларына барыргъа къалай этериклерин тохташдырып, ол жыйылгъан адамла бузуп тонар жерлерине баргъандыла.

Тазретни анда болгъанын къатыны билмейди.

Бирлери аскерни тыйып, къаланы чача башлагъанда, аскер чапханланы хорлап башлайды. Тазрет: «Аскер хорлап къоя ушайды», – деп, чабып, аскерни артха тыйгъанды. Алай тыйгъан заманда кеси да жаралы болгъан эди. Тазретни жаралы болгъанына ачыу этип, къатын, ким болгъанын да билмей, кесини къол жаулугъу бла жараны байлагъанды.

Къалауур аскерлени хорладыла, алыр затларын алып, кенг жерге чыкъдыла да, харекетни юлеше башлады. Тазретни танымайды, кишилик иги этгени ючюн, анга эки юлюш артыкъ берип:

– Сен, кетмей, былай тур, – деген эди, алай болгъанлыкъгъа, Тазрет, юйге айланып, жортуп кетди, къатындан алгъа келип жатды.

Барын да юлешип, тамам этгенден сора:

– Жаралы болгъан къайдады? – (деп) сурады, Тазретни къайдан тапсын?

Къайтып, юйге келгенди. Къатын келгенде, Тазрет къаты жукълагъанча жатып турады. Къатын: «Тынч жукълай кёремен», – деп киреди да, жатады.

Тёшекге кирип жатса, тёшек суу болуп тургъанча кёрюнеди. «Бу не сууду?» – деп къараса, Тазретни жарасын байлагъан жаулугъун кёрдю, таныды, жаралы болгъан Тазрет болгъанын, ол бирси халкъдан артыкъ кишилик этген ол болгъанын билди.

Ол болумланы билгенлей, турады да, Тазретни жарасын жууады да, таза байлаула бла байлайды да, Тазретден кечгинлик тилейди да къатын, хапар айтыргъа эркинлик алады.

– Бюгечеден ары, сен билмей, туруп, бир жары чыкъман, алай ол тенгиз ичинде санга жолукъгъан да мен, сени къатынынгы урлатхан да мен болгъанма, эки юлюш этип, тенгизге атхан да мен болгъанма, ма ол юч да къарындаш да меникиледиле. Сени оноусуз мени айланыуум болмазына толу ийнандыраман, – (деп,) барысын да хапарланы айтды.

Тазрет да кечгинлик берди.

Бюгюн да, ёлмеген эселе, экиси да, бир бирден жигитле, жашап тура болурла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 6 папка, 7.3 (15) паспорт. КъМАССР-ны Хасанья элинде Гадиыланы Матгерийден 06.02.1959 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

ТАЗРЕТ

В далекие времена в одном селении жил молодой парень по имени Тазрет. Тому селу пищу, одежду, другие любые нужные вещи тот парень доставлял, обеспечивал. Вещи, которые Тазрет, уйдя из села, повсюду бывая, странствуя привозил, селу, пока он второй раз съездив, привезет, позволяли жить.

То село существовало добытыми, найденными и привезенными Тазретом вещами.

В то время, как так жили, Тазрету наставая пора обзавестись семьей, достигает возраста зрелости. В обычной форме Тазрет снова отправился в поход. Когда он отправился в поход, из живущих в селе людей старик, либо другой взявший на заметку человек был:

– Он нам так позволяет жить (содержит нас), Тазрету и самому нужна жизнь, наступило время ему жениться, следует женить Тазрета, – сказав, стали обсуждать.

То решение, хоть и было принято в месте, где несколько человек вместе собрались, всему селу стало слышно (известно).

Хотя все слышали, знали, то слово Тазрету сказать никто не решается. Каким словом начать, не знали.

Пока об этой затее у Тазрета никаких новостей нет. «Нами обдуманное, решенное дело Тазрету кто объявит?» – задумываются, как, о каком слове скажут, не знают.

В это время один из живущих в селе людей вышел в середину и:

– Эти, о которых вы переживаете, слова Тазрету (надо) сказать я думаю так: настает время возвращения Тазрета. Когда он появится, ни один головы вверх не поднимая, головы свои вниз опустите. Если увидит, что все разом печалитесь, тогда Тазрет: «С моим селом что случилось?» – спросит. Когда он спросит: «Село о тебе переживает, (ты) должен обзавестись семьей», – говоря, даже и я скажу, – молвил.

Обсуждение на этом остановили. Теперь ждут возвращения Тазрета.



Еще до того, как прошло много времени, Тазрет прибыл. Когда он вернулся, внутри села ни единого человека, который бы голову вверх поднял, не будучи, в той решенной форме глядят в землю.

Когда увидел, что жители села так печальны, в землю смотрят, Тазрет: «С моим селом с тех пор, как я ушел, что произошло, почему они погрузились в печаль, я ли их чем обидел?» – думая, погрузившись в размышления, сомневаясь, спросил:

– Эй, мое село, почему печальны, с вами, как я ушел, что случилось? – так спросил.

Когда, обратившись к тем опечаленным людям, Тазрет так спросил:

– С тех пор, как ты уехал и вернулся, в селе никакой беды нет.

– Ну тогда почему грустите?

– Мы печалимся из-за того, что ты (до сих пор) не обзавелся семьей... Тебе надо взять жену (жениться).

– Аллах-Аллах, на ваше решение что-то говорить (возражать), какое мне дело? Как правильным видите, так и решайте...

В селе, где жил Тазрет, старики, собравшись, «та подойдет, эта будет лучше» решив, взяли Тазрету жену, стал семейным. Из-за этого, без изменений, Тазрет опять, как (и раньше) ездил, поехав, ходя, бродя, что находит, привозя, своему селению в прежней форме жизнь обеспечивал.

Хотя сам Тазрет уходит в поход, жена остается дома. Пока так жили-были, некоторое время прошло. В то время, когда Тазрет был дома, откуда пришла, в его дом одна оборванная нищенка придя, попала в гости. Тазрет ее в гости принял, немного времени прожили.

Тазрету выпало отправиться в путь. Та, милостыню собирая, приблудившаяся с женой Тазрета дома осталась. Тогда нищенка женщине:

– Глядя на углы дома, для чего сидим? Давай на берег реки, на берег моря пойдем, скука развеется, – сказала и жену Тазрета обманула и, выйдя из села, на берег моря пошли.

Там туда-сюда ходили и после того, как время потратили, та нищенка:

– Взгляни, это какие красивые дома, зайди сюда и посмотри на их красоту, – сказав, женщину на корабль посадила.

Едва они обе сели на корабль, корабль отплыл, на ту сторону моря двинулись, переплыли и ушли.

У Тазрета о том деле никаких сведений нет. Куда женщина ушла, что (с ней) случилось в селе никто не знает. Хотя (ни один) человек и не знает, что случилось с женщиной, то, что пропала для всего села стало новостью.

– Тазрету сказали женись и женили, когда самого здесь не было, твоя жена пропала, как скажем? – говоря, село все разом стыдится, как поступить, что сказав, встретиться, не знают, смущаются.

– В то время, когда прибудет Тазрет, как (тогда) сказали, что не жениться возможности нет, если будем печальны, он сам спросит, тогда скажем, – решив, так определились.

– Хорошо, кто это слово Тазрету скажет? – когда спросили:

– Я скажу! – молвил и один (из собравшихся) вышел.

Много ли, мало ли времени прошло, Тазрет прибыл. По поводу приезда Тазрета село, чтобы его встретить, вышло навстречу, но все как один

печальны. Когда увидел печальность селения, Тазрет: «Что бы то ни было, с моим селом какая-то беда приключилась», – решив, людей:

– Что с вами случилось, из-за чего так печальны? – спросил.

– Да почему нам печалиться? Тебе женись сказали и женили, как ты из села уехал, никто не зная, твоя жена пропала и мы вот поэтому печалимся, – ответили.

– Не беда. Коли будет жив Тазрет, он ее найдет! – только сказав, больше особо не паникуя, Тазрет, успокоив село, сам отправился на поиски жены.

Идет, ходит, бродит, ничего найти не сумел. Шел-шел, на берегу моря корабли, лодки строящего одного мастера повстречал.

– Эй-и, доброй работы! – заговорил.

– А-аха-а, спасибо, со здоровым прибытием, добро пожаловать, Тазрет! – говоря, просветлев, подойдя к Тазрету, пожав руку, поздоровался. – Чего ходишь, чего бродишь, Тазрет, откуда появился?

– Откуда мне появиться? Вот, обстоятельство моего дела таково, – молвив, Тазрет о своих хождениях историю поведал, о виденном, остальном новости спросил.

– В этом краю, в местности, где мы живем, такого разговора ни разу не было. Если бы на этой, где я обитаю, стороне моря был бы (какой-либо) слух, услышал бы, это что-то, о чем (ничего) не слышал, не знаю, не видел...

– Ну тогда (я), перебравшись через море, на той стороне должен искать, мне одну лодку, приспособив, построй!

– А как же, построю!

Пришедшуюся Тазрету по душе лодку, без какого-либо промедления, умелец, построив, отдал в руки.

Тазрет, и в лодку сев, войдя в море, плывет по морю. Когда плыл по воде, Тазрету повстречался некий человек, который с той стороны моря на лодке плыл.

– Доброго пути!..

– Спасибо, Тазрет, куда добрый путь держишь, рассказал бы! Чего ходишь, чего бродишь?

– Да и я, ходя-бродя, переправляюсь через воду. А ты откуда из доброго пути появился?

– Имея дело, на эту сторону воды (моря) переправлялся, а теперь назад возвращаюсь. Тазрет, а ты куда?..

– А мне куда плыть? Так-то так, моя жена пропала, решив, не успокоюсь, не узнав, что с ней случилось, стал искать и на той стороне, где мы живем, ни малейшего слуха, что ее видели, нет, а теперь, переправившись через море, на той стороне ее искать плыву.

– Коли так, хорошо, поможем искать, я вернусь!

– Как пожелаешь.

Человек, который встретился в пути Тазрету, вместе с ним повернул назад, и оба, прибыв к месту, где останавливались корабли, причалили.

Обеспокоившись поисками жены Тазрета, чтобы начать ее искать, настраиваются на дорогу.

– Тазрет! Ты по этому делу вышел в путь, у тебя в этих местах из знакомых кто есть?!



– Нет (таковых).

– Да коли так, твоя жена в таком-то месте находится у одного парня-еврея, ее он, похитив, привез, периметр (дома еврея – *Х.М.*) несколько групп войска охраняет. Если хочешь, войско удерживай! А если хочешь, Тазрет, из крепости свою жену выведи, выбор за тобой.

– Мне любое (дело – *Х.М.*) без разницы, но хоть и так, в каком бы трудном месте ни находилась, я выведу женщину.

– Двигай, коли так! – сказал и повел Тазрета в крепость, где находилась его жена

Когда пошли: пяти-шестиэтажный высокий дом, его периметр войска охраняют, чтобы человек оттуда что-либо вытащил, возможности не видно, нужно совершить подвиг.

Встретившийся Тазрету по дороге в море, чтобы войска удерживать, а сам Тазрет, чтобы, войдя в помещение, где находится его жена, женщину оттуда вытащить, на схватку отправляются.

К тому времени, когда Тазрет, забрав жену, вышел, и напарник его войско далеко отогнал и, взяв женщину, оба прибыли на место на берегу моря, где оставили свои лодки.

Посадив женщину в лодку, выйдя в моря, плывут. Тогда сподвижник Тазрета:

– Тазрет!

– Чего хочешь?

– От женщины и мою долю дай!

– Как поделим? Если были бы две, отдал бы одну, а она только одна, как долю выделю?

– Ты разве не умеешь ее делить?

– Нет, я не в силах ее поделить.

– «Тазрет!» – говоря, твое имя восхваляют, а если ты, от еврея оставшуюся взяв, не будешь ходить, тебе жены не найдется! Сейчас же встань! – воскликнув, жену Тазрета заставил подняться и, вынув меч, ударил и прямо надвое разрубил. – На, теперь, какая больше нравится, возьми! А я такую дурную вещь (женщину) тебе в жены достойной не считаю, – сказав, выбросил в море. – Тазрет! Тебе, вот в той земле, в том селе три брата есть они сейчас наверное молотят зерно, у них есть одна-единственная сестра и, если ее возьмешь, она тебе в жены сгодится, а то ты таким никчемным людям себя как позволяешь обмануть, если поищешь, ее найдешь, – сказав, расставшись с Тазретом, ушел своей дорогой.

Как только они разошлись, Тазрет начал искать описанную им девушку. Найти ее для Тазрета было делом не таким сложным, адрес ее очень точно указал.

Тазрет, этих троих братьев, разыскивая, прямо в той форме, как сказал его товарищ, пошел и нашел, зерно молотили.

– О-ой, пусть труд ваш добрым будет! И гумно пусть полным будет!

– А-а, спасибо, здорового прибытия, добро пожаловать, гость! Прощедший путь человек, и конь твой, очевидно, устал, и сам, наверное, голоден, замерз, пойдем домой, – сказав, как очень почетного гостя приветили.

После того, как, успокоившись, отдохнул, в тот же день или на второй день с парнями познакомился.

– Да гость, наверное, у тебя дело (к нам) имеясь, приехал? Скажи, какое дело есть!

– Мое дело-забота: вашу историю услышал, пришел свататься к вашей сестре.

– Мы на это ни в малейшей степени ничего сказать не сможем, и нами она руководит. Как бы то ни было, а девушки сейчас здесь нет, когда приедет, с самой не посоветовавшись, мы тебе слова сказать не сумеем.

Подождал, и девушка вернулась, дело попало в обсуждение, те три брата свою сестру с ее согласия отдали Тазрету. Сестру братьев, взяв в жены, Тазрет привез в свой дом. В доме Тазрета живут.

Одной ночью Тазрет лег, а женщина, с какими-то вещами возясь, сидит, медлит. Притворяясь спящим, исподтишка наблюдает, а жена, думая, что уснул, чтобы Тазрет не проснулся, не издавая ни шороха, встала, откуда взяла, мужскую одежду надела и одного коня оседлав, двинулась в путь. Увидев это, и Тазрет, ей не показываясь, тайком вслед за ней ехал. Жена Тазрета не видит, он ее видя, за ней выслеживая, едет.

Когда ехали (какое-то время), в одном месте много людей собравшись, к ним выехала. К тому времени, когда она туда подъехала, Тазрет, не дав ей заметить, в темноте пойдя, к тем людям присоединился. Собравшимся людям женщина:

– Мы сегодня ночью в то место отправимся, вот ту крепость разобьем. Столько-то человек – войско сдерживать, а столько-то человек – крепость грабить! – сказав, начала давать команды, распределила людей.

Когда настало время растаскивать имущество, добро, войско не сумев удержать, стали пропускать. Тогда Тазрет, подбежав, стал оттеснять войско. Оттуда спаслись.

Когда начали делить добро, за то, что Тазрет совершил значительный подвиг, ему женщина две доли дала.

– Ты, не уходя, здесь побудь немного! – сказала.

То, что она так сказала, было что ли переживанием Тазрета? Убежал и ушел.

Закончив делимое добро:

– Куда делся сегодня ночью войско сдержавший? – когда спросила, не нашла.

А Тазрет, досконально узнав все дела жены, и долю свою забрав, дома делает вид, что спит, храпит. А женщина об этом не знает, думая, что Тазрет спит, нырнула в постель и легла.

Так живя, опять одной ночью женщина после того, как Тазрет лег спать, не ложась, себя приподняет. Тазрет, позволив думать, что спит, тайком наблюдает.

Надеждой женщины было, что Тазрет спокойно заснул, а он тайно наблюдает. «Усыпила Тазрета», – решив, как в прошлый раз, женщина, одевшись в мужские одежды, оседлав коня, двигается в путь. В то время, как она двинулась, и когда Тазрет тайком ехал за ней, набрали на большой холм, где собралось множество людей. Женщина здоровалась с людьми, а Тазрет, как ни в чем не бывало, присоединился к тем людям.



Женщина смотрит, подсчитав людей, поделив:

– Мы сегодня ночью по той крепости ударим, разрушив, разграбим, столько-то человек – войско сдерживать, а столько-то человек – имущество крепости растаскивать! – распорядилась женщина.

Тогда Тазрет попал в группу, которая должна была разграбить крепость.

Когда они начали грабить крепость, не сумев сдержать войско, проигрывая, стали пропускать. Тазрет, побежав, побеждающее войско назад развернув, те, кто забирали имущество, освободившись, прибыли в запланированное самими место. Женщина начала делить добро.

В темноте Тазрета не узнает, хоть и так, дав ему на две доли больше:

– Ты здесь, не уходя, повремени немного, – говорит.

Тазрет ее что ли ждет? Убежал и домой ушел.

После того, как на всех добро делить закончила:

– Куда делся тот парень, который этой ночью оттеснил войско? – говоря, что это был Тазрет не узнала, но спросила, уточнила.

Когда напрямик домой пришла, а Тазрет будто ничего не знает, будто бы спит.

А жена: «А этот спит», – подумав, вошла и легла. А того, что Тазрет, побывав там, раньше жены домой приехал, не знает.

Так остались. Прошло некоторое время.

Однажды ночью, после того, как Тазрет лег, опять жена, делая вид, что что-то шьет, засиделась. Тазрет, догадавшись, что у нее опять какая-то цель есть, украдкой подсматривает.

Жена посидела (какое-то время) и: «Тазрет спокойно заснул», – решив, встала и, оседлав коня, надев мужскую одежду, двинулась в путь.

Как она отправилась, и Тазрет, вскочив, одевшись, тайком двинулся вслед за женщиной. Ехали-ехали и, на одной поляне много людей собравшись, женщина (со всеми) здороваясь, ехала. А Тазрет в темноте, как ни в чем не бывало, никто не поняв, присоединился (к ним).

Женщина:

– Этой ночью мы в той местности крепость разрушим, войско очень надежно охраняет. Удерживать войско – столько человек, а грабить крепость – столько человек! – сказав, поделив, определив, как подойдут к крепости, которую разрушат, те собравшиеся люди отправились в то место, которое собирались разрушать и грабить.

То, что Тазрет находится там, его жена не ведает.

Когда одни удерживая войско, начали грабить крепость, войско стало одолевать напавших. Тазрет: «Похоже, войско победит», – подумав, бросившись, оттеснил войско. Но в то время, как удерживал, и сам был ранен. Переживая, что Тазрет был ранен, женщина, не зная даже кто он, своим платком перевязала рану.

Сторожевые войска победили, забрав то, что собирались, вышли на широкое место и начали делить добро. Тазрета не узнает, за хорошо проявленное мужество, ему выдав две доли сверху:

– Ты, не уходя, здесь побудь, – сказала, тем не менее, Тазрет, повернув домой, отправился в путь, раньше женщины придя, лег (в постель).

После того, как все разделив, покончила:

– Где раненый? – спросила, Тазрета откуда бы нашла?

Вернувшись, домой приехала. Когда жена пришла, Тазрет, будто крепко спит, лежит. Женщина, подумав: «Сладко спит, как вижу», – входит и ложится.

Когда, нырнув в постель, легла, показалось, что постель мокрая. «Это что за вода?» – подумав, когда посмотрела, увидела свой платок, которым перевязала рану Тазрета, узнала, догадалась, что тем раненым был Тазрет, что тем, кто совершил больший, чем остальной народ, подвиг, был он.

Как только узнала об этих обстоятельствах, встает и обмывает рану Тазрета и чистыми повязками перевязывает и у Тазрета прощения просит жена и получает разрешение рассказать (обо всем).

– С сегодняшней ночи без твоего ведома, встав, никуда не выйду, но и тем, кто повстречался тебе в море, я, и организатором похищения твоей жены тоже была я, на две части разрубив, бросившей в море тоже я была, вот те три брата – тоже мои. Полностью уверяю, что без твоей воли у меня походов не будет, – все истории ему рассказала.

И Тазрет простил (ее).

И сегодня, если не умерли, оба, один другого храбрее, наверное, живут.

*Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 6, паспорт 7.3.(15).
Записано в пос. Хасанья КБАССР 06.02.1959 г. от Гадиева Матгерия
(автозапись).*

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.



КЪАРАКЪУНДЕТ УЛУ КЪУНДЕТ

Бир элде Къаракъундет улу Къундет деп бир адам болгъанды.

Бир къауум болуп, жортууулгъа чыгъадыла. Бир уллу тюзде бир акъ атлыны кѳредиле. Нѳгерлери:

– Тутуп сатайыкъ, – деп айтадыла.

Къундет а:

– Тиймегиз, – дейди.

Анга да тынгыламай, чабып, атны жан-жанындан тутдула. Акъ атлы:

– Къоюгъуз, мен да бир жумуш бла айланама, – дейди.

Къоймазларын кѳргенде, ары-бери айландырып, атларындан атады. Андан сора, бир бирине байлап, сюрюп тебирейди, аллына этип, атларын да алай.

Къундет, жетип:

– Не этесе? – деп сорады.

– Элтип сатарма, кѳнчек-кѳлекге жарарла.

– Къой, – дейди Къундет.

Акъ атлы бош этеди барысын, сорады:

– Къундетни таный болурмуса?

– Менме.

– Сен мени бир айгъа къонакъча аламыса?

– Айып этме, жангыз анама соруп, айтырма.

Къундет, юйюне барып, анасына сорады, ол а:

– Санга игиликке келе болмаз. Алай намысы тасдан эсе, башы тас игиди.

Къонакъ алмай къойсанг, намысынг кетер, – дейди.

Бир ай къонакълыкъда туруп:

– Манга нѳгерликке кел, – дейди акъ атлы.

Экиси жортууулгъа чыгъадыла.

Узакъ-жууукъму, бир ауузда бир жылкы кѳредиле. Акъ атлы:

– Бу жылкы меникиди, кел, сюрейик, – дейди.

Сюрюп барадыла, бир тар эшикден чыгъаргъа тюшеди. Акъ атлы:

– Былайда жылкыны ажири къачарыкъды, аркъан бла тутайыкъ, – дейди.

Къундет, аркъан бла тутуп, ажирни тюшюреди. Ол а аркъанны юзюп къутулады.

– Энди сен, сойсенг, жылкы сюр, сойсенг – былайда сакъла. Иш аман болду, – дейди акъ атлы.

– Мен сакъларма, ансы къоркъакъ сунарса, – дейди Къундет.

Акъ атлы унамайды. Сора Къундет жылкыны сюреди.

Биреулен ажирге минип жетеди да, Къундет аны бла тутушады. Акъ атлы ол жетгенни жыгъады да, боюнун кеседи. Сора ууучу бла къанын алып уртлайды.

Ажир, къачып кетип, башханы алып келеди да, аны да экиси ол халда этедиле.

Ажир ючюнчюсюн алып келеди. Акъ атлы:

– Энди келлик кюшлюдю, – дейди. – Сен узакъ кетме. Хорлап башлагъынчы, сен къатышма.



Ол келген онглап башлайды. Акъ атлы Къундетни чакъырады. Ючюнчю киши, аны эшитип, жыгъылып, ёлюп къалады. Акъ атлы аны да, кесип, къанындан уртлайды. Ажир жылкъыгъа къайтады.

Жылкъыны экиси бир элге, уллу жайлыкъгъа сюредиле. Акъ атлы Къаракъундетни алып кетеди да, жашагъан юйюне элтип ашатады, сора:

– Тынчай, – деп кетеди.

Къарангы кече болады. Къундет жашыртын ызындан барады. Акъ атлы бир адамла жыйылгъан юйге барады. Аны къучакълайдыла, къууанадыла. Тёрге олтуртадыла, хапар сорадыла:

– Къундетни тапдынгмы?

– Тапдым.

– Нёгерлик эталдымы?

– Бек ахшы нёгерлик этди.

– Жылкъыны уа къайтардыгъызмы?

– Хоу, – деп, акъ атлы, бёркюн алып, чачы тёгюлюп, бир ариу къыз болуп чыгъады.

– Юч къарнашымы да ёлтюрдюм, къанларындан да ичдим, – дейди.

Ол жылкъы аныкъы болгъанды.

Къызгъа:

– Къундетге бюсюредингми? – деп сорадыла.

– Мен бюсюредим, ол а – билмейме.

– Къыйналгъанса, бар, тынчай, къурманлыкъ тамбла этербиз, – деп, къызны ашырадыла.

Къундет да, барып, жерине жатады.

Къыз, келип:

– Тынчайдынгмы? – деп сорады. – Мен да жатайым, – деп тынчайыргъа тебирейди.

Къундет а:

– Къой, башха орун этме, тиширыу бла эркегырыугъа бир тёшек да боллукъду.

Къыз, сейирсинип:

– Да сен къайдан билгенсе? – деп сорады.

– Да аны билмесем, сора башыма бёрк нек кийип айланама!

Къыз:

– Сен манга бюсюресенг, къатынынг болургъа боллукъма, намыссыз иш а этмем, – дейди.

Эрттенбла, экисин да чакъырып, сорадыла, бирге жашарыкъмыдыла деп. Къундет, бек ыразы болуп, анасыны ыразылыгъын да алып, къызны кесине алады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 23 папка, 14 паспорт. КъМАССР-ны Гернегеж элинде 1892 жылда туугъан Биттирланы Османны жашы Шакъмандан 23.06.1972 жылда Орусбийланы Ф.А. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

КАРАКУНДЕТОВ КУНДЕТ

В одном селе был некий человек по имени Каракундетов Кундет.

Собравшись в группу, отправляются в поход. На одной большой равнине видят одного белого всадника. Товарищи:

– Поймав, продадим, – говорят.

А Кундет:

– Не трогайте, – отвечает.

И его не послушав, поскакав, коня с разных сторон схватили. Белый всадник:

– Оставьте, я тоже по делу еду, – говорит.

Когда увидел, что не оставят, туда-сюда повернув, (их) с коней сбрасывает. После этого, одного к другому привязав, начинает гнать впереди себя, и их коней так же.

Кундет, нагнав:

– Что делаешь? – спрашивает.

– Отвезу, продам, на штаны-рубашку хватит.

– Оставь, – говорит Кундет.

Белый всадник освобождает всех, спрашивает:

– Может Кундета знаешь?

– Это я.

– Ты меня на месяц как гостя принимаешь?

– Не обессудь, только спросив у матери, отвечу.

Кундет, пойдя домой, у матери спрашивает, а она:

– Тебе к добру, наверное, не едет. Однако лучше потерять голову, чем потерять честь. Если гостя не примешь, твоя честь будет утрачена, – говорит.

Проведя один месяц в гостях:

– Мне в товарищи иди, – говорит белый всадник.

Оба отправляются в поход.

Далеко ли, близко ли, в одном ущелье один табун видят. Белый всадник:

– Этот табун – мой, давай, угоним, – говорит.

Угоняют, через одну узкую дверь приходится выходить. Белый всадник:

– Здесь табунский жеребец сбежит, поймаем арканом, – говорит.

Кундет, заарканив, жеребца спускает. А тот, сорвав аркан, сбегает.

– Теперь ты, хочешь, табун гони, хочешь – здесь жди. Дело плохо обернулось, – говорит белый всадник.

– Я постерегу, а то за труса посчитаешь, – говорит Кундет.

Белый всадник не соглашается. Тогда Кундет гонит табун.

Некто верхом на жеребце настигает и Кундет с ним борется. Белый всадник того догнавшего сваливает и перерезает горло. Затем, набрав в пригоршню его крови, отпивает.

Жеребец, убежав, другого привозит и с ним вдвоем в такой же манере поступают.

Жеребец третьего привозит. Белый всадник:

– Теперь приедущий силен, – говорит. – Ты далеко не уходи. Пока не начнет побеждать, ты не вмешивайся.

Тот прибывший начинает одолевать. Белый всадник Кундета зовет. Третий мужчина, услышав это, упав, умирает. Белый всадник и его, зарезав, крови отпивает. Жеребец возвращается в табун.



Табун вдвоем в одно село, на большее пастбище пригоняют. Белый всадник Каракундета забирает и, отвезя в дом, в котором жил, кормит, затем:

– Отдыхай, – сказав, уходит.

Ночь темной выдается. Кундет тайком идет следом. Белый всадник отправляется в дом, где собрались некие люди. Его обнимают, радуются. Усаживают на почетное место, спрашивают новости:

– Кундета нашел?

– Нашел.

– Проявить товарищество / поддержку сумел?

– Очень хорошо поддержал.

– А табун вернули?

– Да, – ответив, белый всадник, сняв шапку, волосы рассыпавшись, оказался очень красивой девушкой.

– И троих братьев своих убила, и их крови выпила, – говорит.

Тот табун принадлежал ей.

Девушку:

– Кундет понравился? – спрашивают.

– Мне понравился, а (я) ему – не знаю.

– Замучилась, иди, отдохни, курманлык* завтра сделаем, – сказав, девушку провожают.

И Кундет, пойдя, лег на свое место.

Девушка, придя:

– Отдохнул? – спрашивает. – И я лягу, – сказав, собирается отдохнуть.

А Кундет:

– Оставь, другое (спальное) место не готовь, женщине и мужчине и одной постели хватит.

Девушка, удивившись:

– Да ты откуда узнал? – спросила.

– Да если это не узнаю, тогда зачем на голову шапку одев, хожу!

Девушка:

– Если я тебе понравлюсь, тебе женой стану, а аморального поступка не совершу, – говорит.

Утром, обоих позвав, спрашивают, будут ли жить вместе. Кундет, будучи очень доволен, и согласие (благословение) матери получив, девушку берет себе в жены.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 23, паспорт 14. Записала Ф.А. Урусбиева 23.06.1972 г. в с. Герпегеж КБАССР от Биттирова Шакмана Османовича (1892 г.р.).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

* *Курманлык* – скотина, которая приносится в жертву в честь какого-либо торжества [5, 708].

ТАУРУХ

Бурун Иран деген шахарда бир патчах болгъанды. Аны онтогуз къатыны болгъанды. Бек алгъа алгъан къатынындан бир къызы, юч жашы болгъанды, башха онсегиз къатындан сабийи болмагъанды. Ол патчах юч жашын школгъа салып, окъутуп болгъанды. Хар жашына жыйырма устаз салып окъутханды.

Бек артда алгъан къатыныны ётюрюк сёзлерине ийнанып, жашларын асмакъгъа асдырыгъа буйрукъ этгенди халкъгъа жаны аурумагъан патчах. Ол къатыны падчахха алай айтып баргъанды:

– Сени юч жашынг да, келип, арбазымда къазларымы ушкок бла атып, бир къазымы уруп: «Алай нек этесиз?» – деп айтханымда уа: «Сени къазынгы ёлтюргенни къой да, кесинги да алай этербиз!» – деп, чабып, мени тутуп, бичакъларын чыгъарып, ма, къолларымы да кесип бичакъ бла, быстырларымы да жыртып, – кеси бичакъ бла кесип ётюрюкге, кесини кёнчегин да жыртып, – ма мен сени къатынынг болгъанымы биле тургъанлай, сени намысынги сындырып ючюн, ма былай этгендиле! – деп, патчахха айтады.

Не ючюн айтады десенг а: «Мени жашым, къызым жокъ, ол къатынны жашы, къызы барды», – деп къызгъанып айтады.

Ол къатынны айтхан сёзлерине ийнанып, патчах жашларын асмакъгъа асаргъа деп буйрукъ этеди. Патчахны биринчи ёзюрю:

– Алай къалай болур? Ол ётюрюк болур, – деп айтады.

Патчах:

– Къалай ётюрюк болады? – дейди. – Керти, ма бу бичакъ мени жашларымы бичакъларыды, – дейди. – Ма, бичакъ бла къолларын да кесип, кёнчегин да жыртып, намыссыз ишле этгендиле, мен ол жашларымы ёлтюрмей къоймам! – деп, жашлагъа жандармаланы жибереди.

Ол жандармала, школгъа жашлагъа барып, жашланы тутуп, къолларын байлап, алып тебирейдиле. Ол жашла:

– Бу не ишди? Бизни атабыз сау болмаз ансы, бизге бу иш жетмез эди! – дейдиле.

Жандармала:

– Сизге ёлтюрюрге буйрукъ этген атагъыз патчахды, – дейдиле да:

– Атабыз айтхан эсе, биз не этейик, – деп тебирейдиле.

– Жашланы алып келдик, – деп, жандармала падчахха барадыла.

Патчах:

– Жашланы асмакъгъа асыгъыз! – деп, буйрукъ этеди.

Патчахны экинчи ёзюрю:

– Эркин этсенг, бир зат айтырыгъем, – дейди.

Патчах:

– Айт, – дейди.

Ол ёзюр патчахха:

– Сен, кесинги жашларынгы асмакъгъа асып, ёлтюре башласанг, халкъны сизге ийнанмакълыгъы аз болур, – дейди. – Сен бу юч да жашны эркинликлерин манга бер, – дейди. – Мен, бир узакъ жерге алып кетип, ёлтюрюп, къанларын алып келейим. Сора киши билмей къалыр, – дейди ёзюр.



– Тюз айтасан, элт, ёлтюр! – дейди патчах.

Жюрегинде халкыгъа жумушакълыгы болмагъанын билдиреди.

Жашланы ёзюр чакъырып, бирер ат берип, ушкокла да берип, ашаргъа аш да берип, ёзюр узакъгъа алып кетеди.

– Хайда, ашхы жолгъа барыгъыз, къайтып, энди бу сахаргъа келмегиз!

Ёзюр, артына къайтып, бир къоянны кесип, къанын шешагъа къуюп, патчахха алып келеди.

– Ма, жашларынгы ёлтюрюп, къанларын алып келдим, – дейди.

– Ахшы этдинг, – деп, патчах къууанып къояды.

Жашла, узакъ жол жюрюп, ол сахардан башха жанына кетип къаладыла.

Бир аман жерге жетип, кече къалыргъа кеч болуп:

– Бюгече бирибиз къалауур болуп сакъламасакъ, къоркъуулуду.

Жашланы таматасы:

– Бюгече мен сакълайым, – деди.

Ол сакълап тургъанлай, къамишден бир аслан чыгып келе кёрдю, ушкогу бла атып ёлтюрдю. «Мен аны ёлтюрдюм», – деп, къарындашларына жукъ айтмады.

Дагъыда жол жюрюп кетдиле, кеч болуп, бир юзmezли таулагъа жетдиле.

Биягъы жашланы таматасы ортанчы къарындашларына:

– Бюгече сен сакъла, – деди.

Сакълап тургъанлай, сыртны юсюнде бир таууш эшитди. «Бу не зат болур?» – деп, аллына барып, бир ташны жанына къысылып тургъанлай, бир уллу жилин жетди. Ушкогу бла атып, ол жилинны урду. Ол жилин, ташны тегерегине чулгъанып, жашны да къысды. Ташдан жаш, сypдырылып, тышына чыкъды. Уллу бичакъ бла уруп, жилинны ёлтюрдю. «Мен жилинны ёлтюргенме», – деп, къарындашларына айтмады.

Эрттен жол жюрюп кетдиле. Кеч болуп, бир агъач болгъан жерге жетдиле.

Кезиу сакъларгъа гитчеге жетип, сакълап тургъанлай, бир жерде бир от жарыкъ кёрюп, атына минип, къарындашларын да къуюп, ол от жарыкъгъа чабып кетди. От жарыкъ болгъан жерге жетди. Къараса, ол жерде тегереги бегитилген бир сарайгъа кирди, аны ичинде бир от жарыкъ болгъан юйге барды. Терезеден къараса, ичинде юч жыйырма адам, олтуруп, сабрания эте тургъанлай кёрдю.

– Бизни бу жерде жашагъаныбызны бир киши билмейди, – деди ол докылад этген адам. – Биз аманлыкъчылабыз барыбыз да. Битеу барыбыз да барсакъ, билген этедиле, кеп адам жюрюсе, дауур кеп болады. Бизни ичибизде, барып, къалайда жукъ болгъанны билип, ишпионлукъну жюрютюрге адам жокъду.

Ол сёз бла сабрания бошалды. Ол жаш терк кирип барды.

– Дуньяда бир адам да жюрюмеген жерге бу къайдан келди? – деп, ол адамла бек къоркъдула. – Сен не адамса? – деп сордула.

– Мен а, – деди, – ёмюрюмде аманлыкъчы болуп, къуру урлап, атамдан, анамдан ёксюз къалып, ишпионлукъну жюрютюп, ма былай тургъанма, – деп айтды.

– Аха, биз негер тапдыкъ! Сен, барып, къайда жукъ болса да, билип, аны бизге айтып жюрюрсен, сора барыбыз да, барып, урлап, алып келирбиз, бек зауукъ этип жашарбыз! – дедиле. – Ма былайдан онсегиз километир барып,



бир патчах жашайды. Аны ачхасы кьалайда болгъанны билип келсенг, барыбыз да барып, алып келирбиз, сора бизни ёмюрюбюзге боллукъду ол ачха.

– Келигиз, барайыкъ, – деди.

Атларына минип, патчахны жашагъан жерине жетдиле.

– Ма энди бу крепостну ичинде жашайды, – деди. – Барып, ачха кьалайда болгъанын билип кел, – деди.

Жипни атып, крепостну ичине тюшдю, ичинде айланып, ачханы болгъан жерин тапды*. Бары да адамланы тынчайып тургъан заманды. Тюшген жерине кьайтып келди, жипге ол ачхаладан тагъып:

– Муну тартыгъыз, ма, тапдым! – деди. – Бек кёп ачхады, барыгъыз да бери тюшюгюз ансы, кётюраллыкъ тюйюлбюз, жипден тутуп, бир-бир келигиз.

«Ачханы алгъандан сора, мени ёлтюрюп кьоярла, – деп кьоркъду. – Быллай аманлыкъчыланы ёлтюргенликге айып болмаз», – деп, башлады хар бир-бир тюшгенни бичакъ бла уруп, башларын кетерип турду, бек артдагъы, кёрюп, тюшмегенлей, артха айланып, кьачып тебиреди.

– Кьачма, мен сени ёлтюрлюк тюлмен. Мынча адамгъа ачханы юлешген кьыйын эди да, андан ёлтюргенмен. Экибиз тынч юлеширкибиз. Кьачсанг, ёлтюрюкмен, кьайт бери! – деди.

Ол да тюшгенлей, аны да башын кесди. «Быллай аманлыкъчы, халкьгъа бузукълу адамланы ёлтюргенликге айып болмаз», – деп ёлтюрдю. Сора: «Шахарны ичине бир кьарайым», – деп тебиреди.

Ол сахарны тёп-тёгереди бегитилип, крепост эди. Айлана келип, ичинде, эшиги болгъан жерде кьалауур жукълап тургъанлай кёрюп, аны аллында ачхышланы алды, ол ачхышла бла, барып, бир эшикни ачып, кьарады. Ол эшикни ичинде бир кьызла жатып, жукълап тургъанлай кёрдю. Аны арт жанында дагъыда бир эшикни ачып кьараса, патчахны юч да кьызы жукълап тургъанлай кёрдю. Бир зат да этгени болмай, чыгъып кетди. Келтирип, ачхышланы кьалауурну аллына салып кетди. Биягъы тюшген жери бла кьайтып, артына чыкьды, чабып, жортуп, кьарындашлары болгъан жерге барды.

– Кёп сакълап кьыйналдынг! – деп, тамата кьарындашы айтды.

Ол этген затларыны бирин да айтмады. Сора жол жюрюп тебиреди.

Ол сахаргъа жетип, бир юйге кьонакьгъа тюшдюле. Ала да анда тургъанлай, патчах, аскерин жиберип, сахардан тышына адам жибермей тыйдыла.

– Бу не затды? – деп кьарагъанда, адамла да ёлюп, патчахны бир затына да бир хата болмай:

– Муну этген кимди? – деп, хар кимни чакъырып, соруп башлады.

Бир адам да: «Мен этгенме», – деп чыкьмады.

Шахарны ичинде болгъан адамлагъа соруп бошады.

– Муну ким этди? – деп, сейир болуп тохтадыла.

Бир адам айтды:

– Бир юйде юч кьонакь барды, ала соруугъа келмегендиле, – деди.

* Архивден алынган текстде былайдан башлап, хапар кичи кьарындашны атындан айтылады, алай контекстге кёре ол болум жомакъны бирси кесеклерине тап келишмегени ююн, хапар ююнчю бетден айтылырча тюзетилгенди (Х.М.).

– Терк барып, чакъырып келигиз! – деп, патчах пирказ этди.

Ючюсюн да чакъырып келдиле*.

– Сен этгенмисе бу ишни? – деп, жашланы таматаларына сордула.

– Мен билмейме, – деди.

Органчыларына сордула, ол да:

– Мен билмейме, – деди.

Гитче жашха сордула:

– Бу затланы сенми этгенсе? – деп.

– Мен этгенме, – деп айтды.

– Аманлыкъчыланы тапдым, – деди патчах. – Элтигиз ары, – деди.

Ашаргъа аш бердиле ол юч адамгъа.

– Не зат адамласыз, не зат айланасыз? – деди патчах.

– Да биз да бир жолоучулабыз, – деди.

Патчах, ол жашланы акъылларын жаратып:

– Ючюгюз да мени юч къызымы алып тохтагъыз, мени жашым жокъду, манга жашла болуп тохтагъыз, – деди.

Юч къызын ючюсюне берди, ол адамланы ёлтюрген гичи жашны ачха хазнасына тамата этди.

Ол жаш бир кюн, бир адам дарманла сага тургъанлай кёрюп, юч дарман сатып алды, бирин патчахха, бирин да патчахны къатынына берди, бири кесинде къалды. Патчах, къууанып, ёзюрюне айтды:

– Мени киеуюм нечик иги дарманла алгъанды! – деди.

Ёзюр: «Мени кетерип, аны мени орунума салып къояды», – деп кёркьуп, ол дарманланы алып, аланы орунуна ёлтюрюр дарманла салды.

– Патчах, адамланы айтхан(лар)ына къарап этерге жарамаз, эшта, бир ёлюр дарманны алып келген эсе, къайдан билесе? Бир затха ашатып кёрюрге керекди, – деди ёзюр.

– Керти айтаса, – деди патчах.

Бир итге къапдырып кёрдюле – ит ёлдю. Патчахны бек ачыуу чыгъып, терек бачхасына кетди, барып, терекни тюбюнде жатып жукълады. Ол гичи киеу барып, сакълап тургъанлай, терекни башындан бир жилиян салынып келгенлей кёрюп, уллу бичакъ бла уруп жилияны, баш жанын жерге тюшюрдю, къуйрукъ жаны терекге чулгъанып къалды. Уллу бичагъын жерге сюртуп, жилияны къанларын кетере тургъанлай, патчах уянып кёрдю.

«А, керти айта кёреем ёзюр, мени ёлтюрюрге бичагъын билей турады! – деп, терк туруп, ачыуу чыгъып, патчах къайтып кетди. – Бу къонакъла манга огъурлу болмадыла», – деп, быланы ёлтюрюрге деп пирказ этди.

Жашланы чакъырып, пирказны окъуду. Жашланы таматасы:

– Оллахи, бу иште бир хыйла барды ансы, биз аллай адамла туююлбюз!

Жашланы гичиси айтады:

– Угъай, патчах, ол алай туююлдю. Мен санга берген эки дарманла юч эдиле да, бири менде къалгъанды. Ол менде дарманны бла сенде дарманны бирге тутуп къарайыкъ да, белгили болур.

Къарагъанда, ёзюрю башха дарман салып табылды.

– Мен а, патчах, – деди жаш, – санга кёркьуп, барып, сени сакълап тургъанымлай, сен да терекни тюбюнде жукълап тургъанлай, бир жилиян

* Былайдан башлап, хапар биягъы ючюнчю бетден айтылады башлайды (Х.М.).



терекде салынып келе тургъанлай, бир хата этеди деп кьоркьуп, уруп, бичакъ бла башын кесдим. Сен кёрюп кьоркьурса деп кьоркьуп, жерге басдыра тургъанлай кёрдюнг. Ётюрюк айта эсем, барып кьарайыкъ.

Барып кьарагъанда, жилинны башын кёрдюле. Сора патчах, ёзюрю этгенин билип, ёзюрню ёлтюрюрге пирказ этди. Ёзюрню ёлтюрдюле.

Жашланы таматасы:

– Бурундан сёз барды: «Жолда кьошулгъан нёгер нёгер болмаз», – деп. Биз кетейик, – деди.

Патчах:

– Ёлсем да, сизни жибермейме! – деди, тегерекге кьалауурла салды.

Жашла, кетерге жол тапмай, бир бёлек жыл турдула.

Бир кюн ычхынып, кьачып кетдиле. Узакъ жол жюрюп кетдиле, бир сахаргъа жетип, ол сахарны кьыйырында, адам болмагъан жерде бир шатыр кьурадыла. Аланы ол шатыр кьурагъанларын кёрюп, барып, патчахха айтдыла. Патчах пирказ этди:

– Барып, тутуп келигиз! – деп буюрду.

Аскер келип, шатырны тегерегин алдыла.

Эрттен да болуп, жашланы таматасы туруп кьарагъанда, шатырны тегерегин аскер алып тургъанлай кёрдю.

Ол аскерден бир адам, келип, патчахны этген буйругъун айтды. Ол кьагъытха кьараса, кеслерини аталары патчах болгъанын билдиле. Жашланы таматасы патчахха кьагъыт жазып жибереди. «Биз хаталы адамла туююлбюз, сени хапарынгы эшитип, сени таныргъа суююп келгенбиз, сени кёрюрге келгенбиз, айып этмесенг», – деп жазып ийди.

Патчах:

– Келсинле! – деп пирказ этди.

Жашла бардыла.

Патчах, барып жашлагъа, саламлашды, кесини жашлары болгъанны билмеди, кёп жылла арада кетген эдиле.

Жашлагъа патчах хапар сорду. Жашлагъа патчахны жаны кирди, асыры ариу халлери болгъандан.

Жашла, патчах бла кёп сёлешип, ушакъ нёгер болмадыла. «Жашла кетип кьаладыла», – деп кьоркьуп, тёзалмай:

– Энтта да барып, бир сёлешейим, – деп тебиреди патчах.

– Мен да барама, – деп, жашланы анасы тебиреди.

– Мен да барама, – деп, кьызы да тебиреди.

– Мен да барама, – деп, патчахны ёзюрю да тебиреди.

Бек артда алгъан кьатыны да тебиреди.

Барып жашлагъа, саламлашдыла, аналары да танымады жашланы. Патчахны ёзюрю жашланы таныды.

Патчах жашлагъа:

– Бир хапар айтыгъыз, – деди.

Жашланы таматасы:

– Мен бир хапар айтайым, – деди. – Патчах, эшитген этгенме ансы, кёрген этмегенме, – деди.

– Айт, – деп, патчах бек ыразы болду.

Жашланы таматасы айтады:

– Бир сахарда бир патчах болгъанды деп эшитгенмен. Ол патчахны юч жашы болгъанды бек алгъа алгъан кьатынындан, бир кьызы да

болгъанды. Андан артда алгъан онсегиз къатындан да сабийи болмагъанды. Онтогъузунчу къатыны, ётюрюк айтып, ол жашлагъа кёп къыйынлыкъла жетдиргенди.

Олсагъатдан ол къатын, билип, къачып кетерге тебиреди. Ёзюр жиберирге унамады.

Битеу да ол жашланы хар кёрген затларын айтып:

– Былай да, былай эшитгенме, – деди. – Болсада, – дейди жашланы таматасы, – кертисин айтайым. Жашланы ол къыйынлыкъдан къутхаргъан – ма бу ёзюр, ол къыйынлыкъны жашлагъа бердирген – ма бу къатын, сен, патчах, – атабыз, бу – анабыз, бу да – эгечибиз, ол жашла – ма биз, – деди.

Бек къууандыла. Жашлагъа ётюрюк айтхан къатынны ёлтюрюрге пирказ этди. Жашларына къууанчлы той башладыла. Ёзюр айтады:

– Эй, патчах, кёрдюнгю, нечик уллу жангылычлыкъ болгъан эди? Сен а, мен болмасам, жашланы ёлтюрлюк эдинг.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 20 папка, 7 паспорт. КъМАСССР-ны Эльбрус районуну Лаикута элинде Сотталаны Жаухардан (Абдул къызындан) 21.04.1958 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

ЛЕГЕНДА

В древности в городе Иран жил один падишах. У него было девятнадцать жен. От взятой самой первой жены (у него) были одна дочь и трое сыновей, а от других восемнадцати жен не было детей. Тот падишах троих своих сыновей, определив в школу, обучал. Каждому сыну назначив двадцать учителей, обучал.

Поверив лживым словам своей взятой самой последней жены, безжалостный к людям падишах повелел повесить своих сыновей на виселице. Та жена, так говоря, пошла к падишаху:

– Твои все трое сыновей, придя, у меня во дворе стреляя по моим гусям из ружья, одного моего гуся подстрелив, а когда я спросила: «Почему так поступаете?» – сказав: «Не то что твоего гуся уьем, но и с тобой так поступим!» – подбежав, схватив меня, вынув свои ножи, вот, и руки мне порезав ножом, и мою одежду порвав, – сама ножом порезав нарочно, и свои штаны порвав, – вот зная, что я являюсь твоей женой, чтобы принизить твою честь, вот так поступили! – говорит падишаху.

А если спросишь, почему так говорит: «У меня ни сына, ни дочери нет, у той женщины есть и сын, и дочь» – ревнуя, говорит.

Поверив сказанным той женщиной словам, падишах повелевает повесить своих сыновей. Первый визирь падишаха:

– Как так может быть? Очевидно, это ложь, – говорит.

Падишах:

– Как может быть ложью? – говорит. – Правда, вот этот нож – это нож моих сыновей, – говорит. – Вот, ножом и ей руки порезав, и ее штаны порвав,



совершили аморальный поступок, я этих своих сыновей обязательно прикончу! – сказав, отправляет к сыновьям жандармов.

Те жандармы, пойдя к парням в школу, схватив парней, связав им руки, начинают забирать. Те парни:

– Это что за дело? Наш отец не жив, наверное, нас это дело не постигло бы! – говорят.

Жандармы:

– Тот, кто вынес вам смертный приговор, – ваш отец-падишах, – говорят и:

– Коли отец сказал, что мы поделаем, – молвив, отправились.

– Привели (мы) ребят, – докладывая, жандармы идут к падишаху.

Падишах:

– Парней повесьте на виселице! – приказывает.

Второй визирь падишаха:

– Если позволишь, кое-что сказал бы, – молвит.

Падишах:

– Говори, – отвечает.

Тот визирь падишаху:

– Если ты своих сыновей, вешая на виселице, начнешь убивать, у народа к вам доверия мало будет, – говорит. – Ты всех этих троих парней в мое распоряжение отдай, – говорит. – Я, увезя их в одно дальнейшее место, убив, их кровь принесу. Тогда никто не узнает, – молвит визирь.

– Правильно говоришь, увози, убей! – говорит падишах.

Дает понять, что у него в сердце нет мягкости (жалости) к народу.

Визирь, призвав ребят, дав им по коню, и ружья дав, и еды, чтобы есть, дав, визирь увозит их далеко.

– Давайте, отправляйтесь в добрый путь, теперь не возвращайтесь в этот город!

Визирь, вернувшись назад, зарезав одного зайца, его кровь перелив в бутылку, приносит падишаху.

– Вот, убив твоих сыновей, их кровь доставил, – говорит.

– Правильно сделал, – сказав, падишах только порадовался.

Парни, пройдя долгий путь, уходят в другую от того города сторону. Добравшись до одной недоброй местности, припозднившись для поиска ночлега:

– Если сегодня ночью один из нас, встав на страже, не будем охранять, опасно.

Старший из братьев:

– Сегодня ночью я посторожу, – говорит.

Когда он караулил, увидел, как из камыша выходит лев, и выстрелом из ружья убил его. «Я его убил», – ничего такого братьям не сказал.

Снова отправились в путь, припозднившись, добрались до каких-то песчаных гор.

Вновь старший из братьев среднему брату:

– Сегодня ночью ты сторожи, – поручил.

Когда он сторожил, на возвышенности услышал какой-то звук. «Что это может быть?» – подумав, пойдя вперед, когда прижимался к одному камню, одна большая змея приползла. Выстрелив из ружья, ту змею ранил. Та змея, обвинившись вокруг камня, и парня прижала. От камня парень,

протиснувшись, выбрался наружу. Ударив большим ножом, убил змею. «Я убил змею», – своим братьям не сказал.

Утром отправились в путь. Припозднившись, добрались до некой лесистой местности.

Когда, настав черед сторожить младшему (из братьев), охранял, в одном месте увидев свет костра, сев на коня, и братьев своих оставив, на тот свет огня помчался. Добрался до места, где был свет костра. Смотрит, в том месте в огороженный со всех сторон сарай входит, внутри него пошел к дому, в котором был свет. Когда посмотрел через окно, внутри него увидел, как шестьдесят человек, сидя, проводили собрание.

– Никто не знает, что мы живем в этой местности, – сказал человек, который делал доклад. – Мы все – злодеи. Если мы все вместе идем, догадываются, если много людей ходит, шума много бывает. Среди нас нет человека, который бы пойдя, разузнав, где что есть, вел шпионскую деятельность.

Этим словом собрание завершилось. Тот парень быстро вошел (туда).

– Откуда он пришел в место, где ни один человек в мире не ходил? – говоря, те люди очень испугались. – Что ты за человек? – спросили.

– А я, – сказал, – всю свою жизнь будучи злодеем, постоянно воруя, без отца, матери сиротой оставшись, шпиона, вот так жил, – ответил.

– Аха, мы нашли сподвижника! Ты, пойдя, где что-то есть, разузнавая, это нам сообщая, будешь ходить, тогда мы все, пойдя, украв, принесем, очень вольготно заживем! – сказали. – Вот отсюда восемнадцать километров пройдя, живет один падишах. Если узнав, где находятся его деньги, придешь, все пойдя, привезем, тогда на наш век хватит тех денег.

– Давайте пойдём, – сказал.

Сев на своих коней, доехали до того места, где жил падишах.

– Вот теперь внутри этой крепости живет, – сказали. – Пойдя, узнав, где находятся деньги, вернись, – поручили.

Скинув веревку, спустился внутрь крепости, внутри побродив, нашел место, где находились деньги*. Это время, когда все люди отдыхают. Вернулся на место, где спустился, привязав к веревке часть тех денег:

– Тяните ее, вот, нашел! – сказал. – Очень много денег, все спускайтесь сюда, а то не сумеем поднять, держась за веревку, спускайтесь по одному.

«После получения денег меня могут убить, – испугался. – Не стыдно будет убить таких злодеев», – решив, начал каждого по одному спускавшегося ударом ножа (меча) обезглавливать, самый последний, увидев, не спустившись, повернув назад, стал убегать.

– Не убегай, я тебя не убью. На стольких людей деньги поделить было сложно, потому я их прикончил. Вдвоем легко поделим. Если побежишь, убью, вернись сюда! – сказал.

Как только он спустился, отрубил и ему голову. «За убийство таких злодеев, вредных для народа людей, наверное, стыдно не будет», – подумав, истребил. Затем: «Осмотрюсь-ка внутри города», – решив, отправился.

* В оригинальном архивном тексте, начиная с этого места, повествование ведется от имени младшего брата, но поскольку это обстоятельство не соответствует контексту и другим частям сказки, внесены исправления, чтобы рассказ шел от третьего лица (Х.М.).



Вся окружность того города будучи огороженной, был крепостью. Прогуливаясь, внутри, в месте, где была дверь, увидев спящего стражника, взял перед ним ключи, теми ключами, пойдя, одну дверь отворив, посмотрел. За той дверью неких девушек лежащими, спящими увидел. Когда в задней части (помещения) еще одну дверь открыв, посмотрел, увидел трех дочерей падишаха спящими. Ничего не предприняв, вышел. Принеся, ключи положив перед стражником, ушел. Опять по тому месту, где спускался, вернувшись, обратно выбрался, бегом вернулся в местность, где находились его братья.

– Долго охраняя, замучился! – молвил старший брат.

Он из сделанных им вещей ни про одно не сказал. Тогда отправились в путь.

Доехав до того города, остановились в гостях в одном доме. В то время, как они там находились, падишах послал свое войско, не выпуская никого за пределы города, задержали.

– Что это? – говоря, когда посмотрели, люди погибнув, и ни одной вещи падишаха никакого убытка не случившись:

– Кто это сделал? – говоря, всех вызывая, начал допрашивать.

Ни одного человека: «Я сделал», – сказавшего не нашлось.

Всех находившихся в черте города людей допрашивать закончил.

– Это кто совершил? – говоря, в удивлении пребывали.

Один человек промолвил:

– В одном доме есть три гостя, они на допрос не приходили, – сказал.

– Быстро пойдите, призовите (их сюда)! – дал приказ падишах.

Всех троих призвали*.

– Ты совершил этот поступок? – спросили у старшего из парней.

– Я не в курсе, – ответил.

Среднего спросили, и он:

– Я не знаю, – ответил.

У младшего парня спросили:

– Эти вещи ты совершил?

– Я совершил, – сказал.

– Нашел злодеев, – сказал падишах. – Отведите их туда.

Пищи, чтобы поесть, дали этим трем людям.

– Что вы за люди, чего вы бродите? – спросил падишах.

– Да мы путники, – ответили они.

Оценив образ мышления тех ребят, падишах:

– Вы все трое осядьте (остепенитесь), женившись на моих трех дочерях, у меня нет сына, осядьте, став мне сыновьями, – сказал.

Своих троих дочерей выдал за них, убившего тех людей младшего парня назначил распорядителем своей денежной казны.

Тот парень в один день, увидев, как один человек продает снадобья, купил три лекарства, одно отдал падишаху, еще одно отдал жене падишаха, одно осталось у самого. Падишах, обрадовавшись, сказал своему визирю:

– Какие хорошие лекарства купил мой зять! – молвил.

Визирь: «Меня убрав, его на мое место назначит», – испугавшись, забрав те лекарства, вместо них положил яд.

* Начиная с этого места, повествование вновь ведется от третьего лица (Х.М.).

– Падишах, нельзя, доверившись словам людей, совершать поступок, вдруг яд принес, откуда знаешь? Надо испытать, дав съесть кому-либо, – сказал визирь.

– Верно говоришь, – ответил падишах.

Испытали, дав съесть собаке, – собака сдохла. Очень сильно разгневавшись падишах ушел в свой сад, пойдя, легши под деревом, заснул. В то время, как тот младший зять, пойдя, охранял (падишаха – Х.М.), увидев сползавшую с верхушки дерева змею, ударив змею большим ножом, верхнюю часть сбросил на землю, а хвостовая часть осталась намотанной на дерево. Как свой большой нож протерев об землю, счищал змеиную кровь, падишах, проснувшись, увидел.

«А, оказывается правду говорил визирь, чтобы убить меня, точит свой нож! – подумав, быстро встав, разгневавшись, падишах вернулся назад. – Эти гости мне оказались не к добру», – решив, приказал их убить.

Призвав ребят, зачитал приказ. Старший из братьев:

– Оллахи (Ей-богу), в этом деле есть что-то нечистое, ибо мы не такие люди!

Младший из парней говорит:

– Нет, падишах, это не так. Данных мной тебе двух лекарств было три, и одно осталось у меня. То лекарство, что у меня, и то лекарство, что у тебя, вместе взяв, посмотрим и станет понятно.

Когда сверили, выяснилось, что визирь подложил другое лекарство.

– Я же, падишах, – сказал парень, – беспокоясь за тебя, пойдя, когда тебя охранял, в то время, как и ты спал под деревом, когда змея сползала, свешиваясь с дерева, испугавшись, что она причинит вред, ударив, отрубил ей голову ножом. В то время, как, обеспокоившись, что ты, увидев, испугаешься, закапывал (ее) в землю, увидел. Если я говорю неправду, пойдете, посмотрим.

Когда пошли, посмотрели, увидели голову змеи. Тогда падишах, догадавшись, что это проделки визиря, издал приказ убить визиря. Визиря казнили.

Старший из братьев:

– Издревле существует выражение: «Случайный попутчик товарищем не станет». Мы уйдем, – сказал.

Падишах:

– Даже если погибну, вас не отпущу! – ответил, вокруг стражу выставил.

Парни, не находя пути уйти, несколько лет провели.

Один день, вырвавшись, убежали. Отправились в дальний путь, добравшись до одного города, на окраине того города, в месте, где не было людей, установили шатер. Увидев, что они установили шатер, пойдя, доложили падишаху. Падишах приказал:

– Пойдя, схватите и приведите! – велел.

Войско, придя, окружило шатер.

Когда, утро наступив, старший из братьев, встав, посмотрел, увидел, что их шатер окружен войском.

Из того войска один человек, подойдя, ознакомил со сделанным падишахом приказом. Посмотрев на эту бумагу, (они) узнали, что это их собственный отец-падишах. Старший из братьев, написав падишаху



письмо, отправляет. «Мы – люди не опасные, услышав твою историю, пожелав с тобой познакомиться, прибыли, тебя увидеть приехали, если простишь (позволишь)», – написав, послал.

Падишах:

– Пусть явятся! – приказал.

Ребята явились.

Падишах, пойдя к ребятам, поздоровался, но не догадался, что (они) его собственные сыновья, много лет прошло в промежутке.

Падишах спросил у ребят обо всем. Падишах прикипел к парням душой, настолько хорошо воспитаны были.

Парни, много разговаривая с падишахом, ему собеседниками не стали. «Как бы ребята не ушли», – испугавшись, не удержавшись:

– Еще раз пойдя, поговорю, – собрался падишах.

– И я иду, – собралась мать ребят.

– И я иду, – сказав, и его дочь собралась.

– И я иду, – молвив, и визирь падишаха собрался.

И взятая самой последней его жена собралась.

Пойдя к ребятам, поздоровались, и их мать не узнала парней. Визирь падишаха признал ребят.

Падишах попросил ребят:

– Расскажите что-нибудь.

Старший из братьев:

– Я расскажу одну историю, – сказал. – Падишах, я только слышал (ее), но не видел (своими глазами).

– Рассказывай, – сказав, падишах очень обрадовался.

Старший из ребят говорит:

– В одном городе, слышал я, жил один падишах. У него было трое сыновей от взятой самой первой жены, и одна дочь была. От взятых позднее восемнадцати жен (у него) не было детей. Девятнадцатая жена, солгав, доставила много бед тем ребятам.

Тотчас та женщина, догадавшись, собралась убежать. Но визирь не захотел отпускать.

Поведав о всех испытанных ребятами вещах:

– Так-то и так слышал, – сказал. – Как бы ни было, – говорит старший из братьев, – расскажу правду. Ребят от той беды спасший – вот этот визирь, ту беду на парней наведшая – вот эта женщина, ты, падишах, – наш отец, это – наша мать, а она – наша сестра, а те ребята – вот мы, – сказал.

Очень обрадовались. (Падишах) приказал казнить оклеветавшую парней женщину. Начали радостное празднество в честь ребят. Визирь говорит:

– Эй, падишах, видишь, какая большая ошибка произошла? А ты, если бы не я, прикончил бы ребят.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 20, паспорт 7. Записано 21.04.1958 г. в с. Лаикута Эльбрусского района КБАССР от Соттаевой Жаухар Абдуловны (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

НОГЪАЙ УЛУ СОКЪУР НОГЪАЙ-НЕФ

Къабартыда бир батыр жаш болганды. Ол, ёсюп, уллу болганды, къатын алганды. Кесинден батыргъа адам болмагъан суннганды.

Бир кюн, къатын суу алып келгенден сора, садакъ бла, ойнап, атып, башында чукуюн кетергенди. Алай этгени къатынны кёлуне тийгенди. Юйдегилеге сёлешмей турганды.

Обур къатын, келип, жашны къатынына былай юйретгенди:

– «Сен бар да, сокъур Ногъай-Неф бла кюрешип кёр!» – деп айт эринге, – деди.

Жаш Ногъай-Нефни излеп табаргъа кетди.

Бара кетип, жылкъыгъа тюбеди. Жылкъычы жашла анга къалай барырын юйретдиле. Жаш, барып, къаланы сакълап тургъан эки къалауургъа тюбеди. Аладан бирлери, барып, Ногъай-Нефге ол жашны келгенин айтды. Ногъай къалагъа кирирге эркин этди. Ол калагъа кирди. Ногъай сорду:

– Сен къайдан эм нек келгенсе? – деди.

– Мен сени оюнларынгы билирге келгенме, – деди жаш.

– Да алай эсе, хар кюн сайын бир оюн этербиз, – деди. – Тамбла тутушурбуз, – деди.

Тутушдула. Ногъай жашны кётюрюп ургъанда, инчиклерине дери жерге батдырды.

Экинчи кюн таш атып ойнадыла. Ногъай атды ташны, барып, алып атаргъа, жаш ташны кётюралмады.

Ючюнчю кюн кёкге садакъ атдыла. Жашны садакъ огъу бир сагъатдан жерге тюшдю. Ногъайны огъу тюшге тюшдю жерге.

Тёртюнчю кюн чариш этдиле. Ногъай кесини аты (бла) жашны узакъгъа озуп кетгенди.

Бешинчи кюн жылкъы сюрюрге баргъандыла. Бир жылкъыгъа тюбегенде, къара ажир жибермей турганды. Жаш къара ажирни атып ёлтюреди. Ногъай-Неф анга айып этди, болсада:

– Сен къонакъса, бу жолдан сора алай этме, – деди.

Жылкъыны сюрюп тебирегенде, ызларындан, желча таууш этип, бир атлы келеди. Жаш:

– Ол бизни онгартмаз, – дейди.

– Хомух, сен андан къоркъгъанмы этесе? – дейди Ногъай-Неф.

Ол атлы ызларындан жетеди. Ногъай-Неф, атып, тузакъ бла тутады. Бёркю тюшгенде, ариу сары чачы тёгюледи. Жаш да, Ногъай-Неф да къызны да алып келедиле. Андан сора жаш:

– Мен санга бери нек келгеними айтмагъан эдим. Аны айтайым, – дейди. – Мен кесимден жигит адам болмагъан суннган эдим. Сен менден не зат бла да батыр болдунг, – дейди.

Ногъай-Неф:

– Сен: «Менден батыр адам болмаз», – деп, бир заманда да айтма, – дейди. – Биз жети къарындаш болгъанбыз, – дейди Ногъай-Неф. – Жети жол айырылгъанда жашагъанбыз, озгъан адамны къой аякълай ашагъанбыз, – дейди. – Аладан мен бек осаллары болгъанма. Биз (тургъан) жети жол айырылгъан жерде бир адам тачанка бла, эки тиширыуну да алып, келе болганды. Алты къарындашымы ёлтюргенди, мен а сабий эдим да, кёзюмю



бармагъы бла уруп чыгъарып, жиберип къойгъанды, – деп, Ногай-Неф хапар айтды.

Жаш, къызны экинчи къатыннга алып, юйюне къайтады. Алгъыннгы къатынын да, акъыл юйретгени ючюн, бек ариу кѳредди. Андан арысында жаш кесин махтап журюмейди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 23 папка, 10 паспорт. КъМАССР-ны Теркни ишлеп чыгъарыучу (производственный) управлениясыны Жангы Малкъар элинде 69-жыллыкъ Хочуланы Жужаны жашы Пашадан 15.01.1965 жылда Холаланы А.З. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

Жомакъны Паша Беккаланы Байрымукъдан эшитгенди.

НОГАЕВ СЛЕПОЙ НОГАЙ-НЕФ

В Кабарде был один отважный парень. Он, выросши, стал взрослым, женился. Думал, что не найдется человека отважнее его.

В один день, после того, как жена принесла воды, в шутку выстрелив из лука, снес островеверхую шапочку на ее голове. То, что так поступил, очень обидело женщину. Не разговаривала с домашними.

Ведьма, придя, так научила жену парня:

– «Ты пойдя и попробуй потягаться со слепым Ногай-Нефом!» – скажи мужу, – посоветовала.

Парень отправился искать и найти Ногай-Нефа.

Идя-идя, встретил табун. Ребята-табунщики научили его, как пройти. Парень, пойдя, встретил двух охранявших замок стражников. Один из них, пойдя, сообщил Ногай-Нефу о приходе того парня. Ногай разрешил войти в замок. Он вошел в замок. Ногай спросил:

– Ты откуда и почему прибыл? – сказал.

– Я приехал, чтобы узнать твои игры, – ответил парень.

– Ну коли так, каждый день будем проводить одну игру, – сказал. – Завтра поборемся, – сказал.

Поборолись. Когда Ногай парня, подняв, ударил, по щиколотки в землю вогнал.

На второй день, бросая камень, играли. Ногай метнул камень, пойдя, чтобы бросить, парень камень не сумел поднять.

На третий день в небо из лука выстрелили. Стрела парня через час на землю упала. Стрела Ногай к обеду упала на землю.

На четвертый день устроили скачки. Ногай со своим конем парня намного опередили.

На пятый день отправились угонять табун. Когда один табун повстречали, черный жеребец не отпускал. Парень, выстрелив, черного жеребца убивает. Ногай-Неф его пристыдил, тем не менее:

– Ты – гость, больше так не делай, – сказал.

Когда начали угонять табун, следом, свистя как ветер, некий всадник едет. Парень:



– Он не даст нам преуспеть, – молвит.

– Лентяй, ты что, его боишься? – говорит Ногай-Неф.

Тот всадник их догоняет. Ногай-Неф, бросив, ловит его тенетами. Когда его шапка упала, красивые светлые (желтые) волосы рассыпаются. И парень, и Ногай-Неф, прихватив и девушку, приезжают. После этого парень:

– Я тебе не сказал, почему сюда приехал. Это расскажу, – говорит. – Я подумал, что храбрее меня человека нет. Ты меня во всех отношениях мужественнее оказался, – говорит.

Ногай-Неф:

– Ты: «Меня храбрее человека нет», – никогда не говори, – молвит. – Нас было семеро братьев, – говорит Ногай-Неф. – Жили на перекрестке семи дорог, проезжающего мимо человека как баранью ногу пожирали, – говорит. – Из них я самым худшим был. На перекрестке семи дорог, где мы находились, некий человек на тачанке, и двух женщин везя, ехал. Шестерых моих братьев убил, а я был ребенком и поэтому мой глаз, пальцем ткнув, выбив, отпустил, – рассказал Ногай-Неф.

Парень, взяв девушку второй женой, возвращается к себе домой. И к прежней своей жене за то, что уму-разуму научила, очень хорошо относится. С тех пор парень, себя хваля, не ходит.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 23, паспорт 10. Записал А.З. Холаев 15.01.1965 г. в с. Новая Балкария Терского производственного управления КБАССР от 69-летнего Хочуева Паши Жужаевича. Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.



АХШЫ-УЛАНЫ ХАПАРЫ

Эртте-эртте Баксан тарында Ахшы-улан деп бир жигит жаш болганды. Не тюрлю жигитлик бла аны киши хорламаганды. Ат чапдырып да, кьол таш атып да, садакь атып да эм тутушуп да, эл жыйылгъан жерде сёз бла да Ахшы-уланни аллына адам ётмегенди. Алай Ахшы-улан а кеси бир жарлы адамны жашы болгъаны себепли, аны схотда сёлешгенине да эм жигитлик бла хар оюнда, тойда да хорлап жүрюгенине бийле, байла да ыразы болмай эдиле. Ахшы-улан, аладан да кьоркьмай, оюнда, тойда да кишилик юлюшюн байгъа да, бийге да бермей, тюрлю-тюрлю оюнла бла хорлап турганды.

Ахшы-улан, кьатын алгъандан сора, элде хар тюрлю оюн бла хорлап келсе, юйюнде кьатыны тургъан отоугъа кирип, тапкада жаш кьатыныны окъа бёркюн, садагъы бла атып, жерге тюшюрюп:

– Оллахий, кьатын, бу суу ауузда менден жигит а жокьду! – деп айтыгучу эди.

Сора бир кюн, Ахшы-уланни кьатыны мудах болуп тургъанлай, бир кьуртха кьатын келип олтурду. Ол кьуртха кьатын:

– Келинчик, сен бюгюн нек мудахса? – деп сорду.

Ахшы-уланни кьатыны:

– Мен мудах болмай не этейим? Ахшы-улан хар кюнден оюн бла, кишилик бла да хорлап келед да, юйге киргенлей, мени окъа бёркюмю, садагъы бла атад да, тапкадан жерге тюшюред. Манга кьарайд да: «Оллахий, кьатын, менден жигит жокьду», – дейд да, мен а андан мудах болама, – деди Ахшы-уланни кьатыны кьуртха кьатынга.

Кьуртха кьатын айтад:

– Ахшы-улан энди, ингирде келип, сени тапкада окъа бёркюнгю садагъы бла атып тюшюрюп: «Оллахий, кьатын, менден жигит жокьду», – десе, сен а анга алай айт: «Иги жаш, сени жигитлигинги битеу бу сууну боюнунда жашагъанла да биледиле. Алай болса да, сен жигитлигинги мени эски окъа бёркюм бла сынама да, ол жерде, бир уллу сууну боюнунда бир сокьур кьартчыкь бард да, аны бла сына», – деп айт, – деди.

Ол кюн ингирде биягъы Ахшы-улан, отоуна кирип, тапкада тургъан окъа бёркню садагъы бла атып тюшюрдю. Сора, кьатынына кьарап:

– Оллахий, кьатын, менден жигит жокьду! – деди.

Ахшы-уланни кьатыны:

– Да, иги жаш, сени жигитлигинги бу сууну боюнунда эм бу таулан ичинде жашагъан халкьны бары да биледиле. Ол да бек игиди. Алай сен а жигитлигинги, мени окъа бёркюм бла сынамай, ол жерде, бир уллу сууну боюнунда бир сокьур кьарт кишичик бард да, аны бла сына, – деди.

Ахшы-улан экинчи кюн эрттенликде, кесин да иги жарашдырып, кьарт кишичикни излей кетди.

Бир бёлек сууладан да ётюп, таулан ичи бла, тюрлю-тюрлю жерлени да кёрюп, юч кюнден сора бир уллу таулан ичинден акьгъан сууну тапды. Сора, сюрюучю жашла ингирликде сюрюулерин элге сюрюп бара тургъанлай, Ахшы-улан жашлагъа жолукьду. Ахшы-улан да жашла бла бирча элни кьыйырына кирдиле.

Сора Ахшы-улан бир жербаш юйню аллында бир къара таш да, адамны бийиклигинден аз ёргерек болур дерча, кёрдю. Жашлагъа:

– Жашла, бу кимни юйюдю? – деп сорду.

Жашланы бири:

– Ол юй а бир сокъур къартчыкъны юйюдю, – деди.

Ахшы-улан, ол юйге къайтып, арбазына кирди. Сора ат юсюнден:

– Хей, ким барды? – деп сёлешди.

Ол заманда бир гитче бойлу къарт кишичик, юйден чыгъып:

– Кел, иги жаш, тюш атдан, – деп, Ахшы-уланна, ат тизгининден тутуп, атдан тюшюрдю.

Экиси да, бир бирлери бла иги саламлашып, атны да тынчайырча этип, юйге кирдиле.

Юч кюнню ичинде сокъур къартчыкъ Ахшы-уланна тюрлю-тюрлю ашла бла иги сыйлап турду. Сора сокъур къартчыкъ Ахшы-уланнга:

– Иги жаш, къайдан келесе? Къайры бараса? Не адамса? – деп сорду.

Ахшы-улан:

– Мен санга келгенме. Сени жигитлигинги эшитип, къаллай кишилигинг бар эсе да, бир кёрейим сени да деп келгенме, – деди.

Сокъур къартчыкъ Ахшы-уланнга:

– Ол да игиди. Мени юч оюлум барды. Бир оюлум – бу сен кёрген къара ташха, садакъларыбызны бурунларын ёрге, кёкге буруп, кеслерин а ташха салып атарыкъбыз. Экинчи оюлум – кьол таш атарыкъбыз. Ючюнчю оюлум а – мен жаяулай, сен а атынг бла чабышырыкъбыз, – деди.

Эрттенликде, Ахшы-улан да, къартчыкъ да ашап бошагъанлай, экиси да, садакъларын къара ташны къабыргъасына бирча салып, кёкге бирча атдыла. Ахшы-уланна огъу, онбеш такъыйкъадан къайтып, къатларында жерге бир къарышха дери батды. Сокъур къартчыкъны огъу уа, отуз такъыйкъадан къайтып, жерге эки къарышха дери батды. Къартчыкъ, Ахшы-уланнга къарап:

– Ыразымыса? – деп сорду.

Ол да:

– Ыразыма, – деди.

Экинчи кюн эрттенликде экиси да къартчыкъны кьол таш атыучу жерине бардыла. Къартчыкъ Ахшы-уланнга:

– Ма, онг аягъынгы бу жерде тёртгюл ташха сал да, бу тегерек ташны ат, – деди.

Ахшы-улан, алып ташны кьолуна, не кючюн да аямай атды да, элли арышыннга дери жетдирди. Сокъур къартчыкъ атды да, бир жюз арышыннга жетдирди.

Къартчыкъ Ахшы-уланнга:

– Ыразымыса? – деди.

Ахшы-улан да:

– Ыразыма, – деди.

Ташны ауурлугъу эки пут бла жарым бар эди.

Ючюнчю кюн эрттенликде, ашап бошагъанлай, сокъур къартчыкъ, бир гитче багъыр къазанчыкъны да, туючюкню да, этчикни да аркъасына кётюрюп, кеси Ахшы-уланнга узакъда бир тѳбени кѳргюзтдю:

– Сен, тюзюнлей ол тѳбеге къарап, атынгы аямай чабалгъаныча чапдыр да, тѳбени бизге къарагъан жаныны тюз тѳбюне бар. Мен а жаяулай



алайгъа узакъ жол бла, тегерек айланып, барлыкъма, – деди да, экиси да чабыуулгъа бирча кетдиле.

Ахшы-улан не къадар чабадан-чаба барса, тебе да жууукъдан-жууукъ кёрюне эди, алай тебе уа бек уллудан-уллу Ахшы-уланны кёзлерине кёрюне эди.

Ахшы-улан жетгенинде, сокъур къартчыкъ, элтген туююн да баста этип, этни да, чыбыкъны шиш этип, ариу къып-къызыл биширип, бичагъы бла бастаны юсюне туурай тургъанлай, жетди. Ахшы-улан уллу сейир-тамаша болду. Болсада, экиси да, хазыр ашдан да ашап, бираз да солуп алайда, Ахшы-улан аты бла, къартчыкъ да жаяулай артха къайтдыла. Къартчыкъ, атдан артха къалмай, кесини тынч атлашы бла атны аллында келгенлей турду.

Экиси да сокъур къартчыкъны юйюне келдиле. Сора къартчыкъ, Ахшы-уланнга къарап:

– Къарындашым, мен санга кесими кёзюм кёрген жигитни хапарын айтайым, сен а манга иги тынгыла! – деди. – Эй, Ахшы-улан, биз бир атадан, бир анадан туугъан тогъуз къарындаш барек да, бир уллу жерни кесибизге бийлеп тура эдик. Ичи бла не адам, не да мал жибермей, эр кишилерин, не кёп болуп келселе да, хорлап, жипле бла байлап, тиширыуларына артыкълыкъ этип, малларын сыйырып, дуньяда, кёкде учуп айланган къанатлыдан сора, жерибизни ичи бла адам жибермей тура эдик.

Жетген жерибизде адамлагъа уллу артыкълыкъ этип, бир да ол адамла экинчи биз болгъан жерге айланып келмезча этиучю эдик.

Ахшы-улан, бир кюн тогъузубуз да, олтуруп, бир бирибиз бла ушакъ эте тургъаныбызлай, бир адам да, атха минип, бир тиширыу да эки ат жегилген арбагъа минип, жерибизни ичи бла келе тургъанын кёрдюк. Сора бизни таматабыз, манга къарап: «Барчы, Таукъуш, сен ол адамла не затла болгъанларын бир билип кел», – деди.

Мен барып саламлашдым. Ол атха минип келген – бир бек арыкъ, къатангы жаш адамчыкъ, къатыны уа иги семиз, кеси да токъ, иги сюекли адам эди. Мен ол жашны садагъын аман акъыл бла къолума алдым да, хуржунумдан жюлгючюмю алып, атама десе, юзюлюп къалырча, садакъ бауун жюлгючюм бла аз кесдим да: «Ма, иги жаш, садагъынг а бек иги садакъды», – деп, бердим да, къарындашларыма келдим да, айтдым: «Да кеси ол атлы бир арыкъ къарыусуз жашды. Къатыны уа бек ариу, семиз, токъ адамды. Ол жашны садакъ бауун да, атама десе, юзюлюп къалырча, жюлгючюм бла аз кесгенме», – дедим. Сора, тогъузубуз да бирча барып, жашны арбагъа байлап, къатынына сюйгенибизча этербиз деп, барып, алларын тыйып тохтадыкъ.

Сора ол жаш: «Кёюгъуз бизни бармагъа», – деп, ариу айтып, тилеп башлады.

Биз а, къатыдан къаты болуп, атларын арбадан жиберирге башладыкъ. Ол заманда ол жаш, минген атын къамичи бла уруп, арбаны юсю бла ары-бери секиртип, садагъын къолуна алгъанлай: «Къатын, садакъ бауум юзюлдю!» – деди. Къатыны уа жашха: «Кёнчек хуржунунга узал!» – деди. Жаш, кёнчек хуржунундан садакъ бауну алып, кёз къаматхынчын, мени сегиз къарындашымы да садагъы бла атып ёлтюрдю. Мен а къачып бара тургъанымлай, ызымдан жетип, къамичиси бла уруп, бир кёзюмю ол чыгъаргъанды.

Ол манга алай айтды: «Сени да мен ёлтюрген этеригем да, сау кьояма, сен жашагъан дуньяда мени хапарымы айта турурса деп. “Кёзюню ким чыгъаргъанд?” – деп, санга адам сорса: “Кёзюню Таубек чыгъаргъанды”, – дей тур!» – деп, кьатыны да, кеси да кетдиле.

Ол кюнден бери, Ахшы-улан, отуз жети жыл болады. Сегиз кьарындашымы да ёлтюрюп, кесими да кёзюню чыгъаргъанлы.

Ахшы-улан, сен: «Менден жигит, батыр жокъду!» – деп, бир адамгъа да айта турма. Менден да, сенден да жигитле эм батырла дуньяда бек кёпдюле. Ол Таубек да бу биз жашагъан таулада жашайды, – деп, сокъур кьартчыкъ хапарын бошады.

Ол кюнден сора Ахшы-улан не кёп тюрлю оюн, той бла хорласа да: «Менден жигит жокъду», – деп, бир да айтмады, кьатынны окъа бёркюн садакъ бла бир да атмады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 23 папка, 12 паспорт. КъМАССР-ны Барамта (Вольный Аул) элинде Боташланы Шохайыпдан 19.12.1958 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

ИСТОРИЯ АХШЫ-УЛАНА*

Давным-давно в Баксанском ущелье был один храбрый парень по имени Ахшы-улан. В любом испытании, требующем отваги, его никто не побеждал. Ни скача на коне, ни метая камень, ни стреляя из лука и борясь, ни словом в месте, где собиралось село, вперед Ахшы-улана никто не проходил. Но поскольку сам Ахшы-улан одного бедного человека сыном был, тем, как он на сходах разговаривал и по храбрости во всех игрищах и празднествах побеждал, бии и богачи не были довольны. Ахшы-улан, и их не боясь, на игрищах и празднествах свою долю мужества ни богачу, ни бию не отдавая, разными играми побеждал.

Ахшы-улан, после того, как женился, когда в селе во всех видах игр победив, приходил, дома войдя в комнату, где была его жена, находившуюся на полке расшитую галуном шапочку своей молодой жены, выстрелив из лука, сбив на землю:

– Ей-богу, жена, в долине этой реки храбрее меня нет! – говаривал.

Затем, в один день, когда жена Ахшы-улана пребывала в грусти, одна старуха, придя, села. Та старуха:

– Невестушка, ты почему сегодня печальна? – спросила.

Жена Ахшы-улана:

– Да как мне не грустить? Ахшы-улан каждый день, в играх и в мужестве победив, приходит и, как в дом войдет, в мою расшитую золотым галуном шапочку стреляет из лука и с полки на землю сбивает. На меня смотрит и: «Ей-богу, жена, меня храбрее нет», – говорит, и я из-за этого печалюсь, – сказала.

Старуха говорит:

* В интерф.: «Хороший парень; добрый молодец / сын».



– Если теперь Ахшы-улан, придя вечером, в твою лежащую на полке расшитую галуном шапочку выстрелив из лука, уронив: «Ей-богу, жена, меня храбрее нет», – молвит, а ты ему так скажи: «Добрый молодец, твою храбрость и все живущие в долине этой реки знают. Хоть и так, ты свою храбрость не моей старой расшитой галуном шапкой испытывай, а в том месте, на берегу одной большой реки один слепой старец есть, им испытай», – скажи, – посоветовала.

В тот день вечером опять Ахшы-улан, войдя в свою комнату, найдя на полке расшитую шапочку, выстрелив из лука, сбил. Затем, посмотрев на свою жену:

– Ей-богу, жена, меня храбрее нет! – сказал.

Жена Ахшы-улана:

– Да, добрый молодец, твою храбрость в долине этой реки и в этих горах живущий весь народ знает. И это очень хорошо. Однако ты свою храбрость, моей расшитой шапочкой не испытывай, в том месте, на берегу одной большой реки один слепой старичок есть, им испытай, – сказала.

Ахшы-улан на второй день утром, и себя хорошенько подготовив, старичка искать ушел.

И через несколько рек переправившись, через горы, и разные земли повидав, через три дня из одних больших гор вытекающую большую реку нашел. Затем, в то время, как ребята-пастухи вечером свое стадо в село гнали, Ахшы-улан ребят повстречал. Ахшы-улан вместе с парнями одновременно вступил на окраину села.

Тогда Ахшы-улан перед одним домом с глинобитной крышей и один черный камень, такой, что примерно чуть выше человеческого роста будет, увидел. Парней:

– Ребята, это чей дом? – спросил.

Один из парней:

– А тот дом – одного слепого старичка дом, – ответил.

Ахшы-улан, вернувшись в тот дом, вступил в его двор. Затем с лошади:

– Эй, кто есть? – окликнул.

В это время один низкорослый старичок, выйдя из дома:

– Заходи, добрый молодец, слезай с коня, – сказав, взявшись за уздечку, Ахшы-улана с коня спустил.

Оба, друг с другом радушно поздоровавшись, и коня, чтобы отдохнул, устроив, вошли в дом.

В течении трех дней слепой старец Ахшы-улана разнообразными блюдами хорошо потчевал. Затем слепой старец Ахшы-улана:

– Добрый молодец, откуда прибыл? Куда едешь? Что ты за человек? – спросил.

Ахшы-улан:

– Я к тебе приехал. О твоей доблести услышав, какое у тебя мужество есть, испытаю тебя, решив, прибыл, – ответил.

Слепой старец Ахшы-улану:

– Это тоже хорошо. У меня три игры есть. Одна моя игра – на этот черный камень, который ты видишь, повернув острия наших стрел вверх, в небо, а сами (луки) на камень положив, будем стрелять. Моя вторая игра – будем метать камень. А третья моя игра – я пешком, а ты на коне будем состязаться в беге, – сказал.

Утром, когда и Ахшы-улан, и старец закончили трапезничать, оба, одновременно приложив свои луки к боковой части черного камня, одновременно выстрелили в небо. Стрела Ахшы-улана, вернувшись через пятнадцать секунд (минут), рядом с ними погрузилась в землю на карыш*. А стрела слепого старца, вернувшись через тридцать секунд (минут), в землю до двух карышей воткнулась. Старец, на Ахшы-улана посмотрев:

– Доволен? – спросил.

И тот:

– Доволен, – ответил.

На второй день утром оба пошли на место, где старец метал камень. Старец Ахшы-улану:

– Вот, свою правую ногу в этом месте на квадратный камень поставь и этот круглый камень брось, – сказал.

Ахшы-улан, взяв камень в руки, никаких сил не жалея, бросил и добросил до пятидесяти аршинов. Слепой старец бросил и где-то до ста аршинов добросил.

Старец Ахшы-улана:

– Доволен? – спросил.

И Ахшы-улан:

– Доволен, – сказал.

Тяжесть камня составляла около двух с половиной пудов.

На третий день утром, как только закончили трапезничать, слепой старец, закинув на спину и один маленький медный котелок, и пшена, и мяса, сам Ахшы-улану вдалеке один холм показал:

– Ты, напрямик на тот холм глядя, коня, насколько быстро сможет скакать, заставь скакать и езжай прямо к подножию находящейся напротив нас стороны холма. А я пешком туда длинной дорогой, кругом обходя, пойду, – сказал, и оба одновременно отправились в забег.

Чем быстрее и быстрее скакал Ахшы-улан, и холм все ближе и ближе виднелся, и холм все больше и больше казался глазам Ахшы-улана.

Когда Ахшы-улан добрался, в то время, как слепой старец, и из принесенного пшена пасту приготовив, и мясо, сделав из прута шампур, красиво с красной корочкой зажарив, своим ножом на пасту нарезал, доскакал. Ахшы-улан очень подивился. Тем не менее, оба готовой пищи отведав и там немного отдохнув, Ахшы-улан на своем коне, а старец пешком назад вернулись. Старец, не отставая от коня, своей неспешной походкой перед конем все время шел.

Оба пришли домой к слепому старцу. Тогда старец, посмотрев на Ахшы-улана:

– Брат мой, давай я расскажу тебе историю храбреца, которого видел своими глазами, а ты хорошенько слушай меня! – сказал. – Эй, Ахшы-улан, нас от одного отца, одной матери рожденных было девять братьев и мы, одну большую землю себе захватив, жили. Через нее ни человека, ни скот не пропуская, мужчин, в каком бы большом количестве ни пришли, побеждая, веревками связывая, над их женщинами учиняя насилие, отбирая их скот, в мире, кроме летающих в небе птиц, через наши земли никого не пропуская, жили.

* *Карыш* – мера длины, расстояние между концами вытянутого большого пальца и мизинца руки [5, 600].



В местностях, куда добирались, над людьми учиняя большое насилие, делали так, что те люди ни в коем случае второй раз в место, где мы находились, не возвращались.

Ахшы-улан, в один день, когда все девятеро, сидя, друг с другом беседовали, увидели, что некий человек, верхом на коне, и одна женщина, забравшись на арбу, запряженную двумя лошадьми, по нашей земле ехали. Тогда наш старший, посмотрев на меня: «Пойди-ка, Таукуш*, ты разузнай, что из себя представляют те люди», – сказал.

Я, пойдя, поздоровался. Тот, ехавший на коне – ну очень худой, поджарый молодой человек, а жена довольно упитанная, и сама плотная, с хорошей костью человеком была. Я того парня лук с дурным умыслом взял в руки и, достав из кармана складной нож, так, чтобы, если вздумает стрелять, порвалась, его тетиву своим складным ножом слегка порезал и: «На, добрый молодец, а лук твой – очень хороший лук», – сказав, отдал и пришел к своим братьям и сказал: «Да сам тот всадник – один худой, слабый парень. А жена – очень красивый, упитанный, плотный человек. И того парня тетиву на случай, если надумает стрелять, чтобы порвалась, своим складным ножом слегка надрезал», – молвил. Затем, все вдвевтером сразу пойдя, парня к арбе привязав, а с женой, как захотим, поступить думая, пойдя, встали у них на пути.

Тогда тот парень: «Дайте нам проехать», – говоря, вежливо стал просить.

А мы, все наглее и наглее становясь, начали распрягать из арбы их коней. Тогда тот парень, стегнув плетью коня, на котором сидел, заставив прыгать через арбу туда-сюда, едва взял лук в руки: «Жена, тетива оборвалась!» – крикнул. А жена парню: «Достань из кармана брюк!» – ответила. Парень, вынув тетиву из кармана своих брюк, в мгновение ока, всех моих восьмерых братьев, застрелив из лука, убил. А я когда убегал, догнав, ударив плетью, один мой глаз он выбил.

Он мне так сказал: «И тебя бы я убил, живым оставляю, чтобы ты, пока жив на этом свете, мою историю рассказывал. “Кто твой глаз выбил?” – если кто спросит: “Мой глаз выбил Таубек”, – отвечай!» – сказав, и его жена, и сам уехали.

С того дня, Ахшы-улан, тридцать семь лет прошло. (С тех пор,) как, и моих восьмерых братьев убив, и самому глаз выбил.

Ахшы-улан, ты: «Меня храбрее, отважнее нет!» – ни одному человеку не говори. И меня, и тебя более храбрых и отважных в мире очень много. И тот Таубек в этих горах, где мы живем, обитает, – сказав, слепой старец закончил свой рассказ.

После того дня Ахшы-улан в каком бы множестве разнообразных игр, празднеств ни побеждал: «Меня храбрее нет», – ни разу не сказал, в расшитую галуном шапочку жены из лука ни разу не выстрелил.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 23, паспорт 2. Записано 19.12.1958 г. в с. Вольный Аул КБАССР от Боташева Шохайба (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

* В интерф.: «Горный орел» (Х.М.).

ЖАНАҚЪАЙЫТ

Жанакъайыт деп бир таулу жигит болгъанды. Тюзде уа – Жантемир бла Темиржан деп эки къарындаш, ала да жигитдиле. Дуньяны къурутадыла деп эшитип, Жанакъайыт аланы излеп, сурап баргъанды.

Жолгъа тебиресе, асыры ашыкъгъандан, бир керекли затын унутуп, жолда аны излеп жарсыучу кылыгы болуп, бу жол да, бир гёнчарыгъын кийип, бирсин киймей кетгенди.

Сурай кетип, ол эки къарындашны юйюне къонакгъа келгенди. Къонак юйге элтип, кърманлыкъ этип, бек сыйлы къонак этгендиле.

Ол эки къарындашны да жангыз бир эгечлери болгъанды. Къонакгъа аш элтген къарауашладан бири, къонакны бир гёнчарыгы болмагъанын кёрюп, аны кызгъа айтхандыла. Кыз да буйрукъ этип, жаш жукълагъанда, ол жангыз гёнчарыкны келтирип, тюз анга ушаш, бир кепге куйгъанча, экинчи гёнчарык бичип, тигип, экисин да къонакны аллына салгъандыла.

Эрттенликде кьопханда, эки гёнчарыкны да кёрюп, зат да айтмай кийгенди. Жанакъайыт былагъа:

– Мен сизни нёгерге чакъыра келгенме, – деп, – келигиз Бухуну жылкысын сюрейик, – дегенди.

Алай была унамагъандыла:

– Бухуну жылкысын сюрюрге барып, андан адам сау къайтмагъанды, – дегендиле.

Ол заманда, жангыз кеси кетип бара, жол жанында бир къарт жолугъуп:

– Сен Жанакъайытса, мени жылкымы сюрюрге келесе, мен аны жауурунда кёргенме. Аллахдан аман тап! Сюр, алай мени бир жашым барды да, барындан да алгъа ол артынгдан жетер, аны ёлтюрме, – дегенди.

Бу да ёлтюрмезге сёз бергенди.

Жылкыны сюрюп келе, жаш жетгенди. Атына байлап жибергенди. Аны кёрюп, бары да артха къайтхандыла.

Сюрюп келип, жартысын Жантемир бла Темиржаннга берип, эгечлерин да къатыннга алып, таугъа къайтып, ашап-жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 23 папка, 23 паспорт. КъМАССР-ны Бызынги элинде 1897 жылда туугъан Чочайланы Уммолайны жашы Юсюнден 20.06.1959 жылда Шахмырзаланы С.О. жазгъанды.

Архивден Малкъондуланы Х.Х. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

ЖАНАКАИТ

Был один храбрый горец по имени Жанакаит. А на равнине – два брата по имени Жантемир и Темиржан, они тоже отважны. Услышав, что ничего не оставляют, Жанакаит, их разыскивая, выпрашивая, отправился.

Когда отправлялся в путь, настолько торопился, что, какую-нибудь нужную вещь забыв, в пути ее разыскивая, расстраиваться имея привычку, и в этот раз, один свой гёнчарык* надев, а второй не надев, уехал.

* Гёнчарык – обувь из обработанной кожи крупного рогатого скота [4, 593].

Выспрашивая, в дом тех двух братьев в гости приехал. В кунацкую проводив, угощение устроив, очень почетным гостем приняли.

У тех двух братьев и единственная сестра была. Одна из прислужниц, носивших гостю еду, увидев, что у гостя нет одного гёнчарыка, об этом девушке сказали. По поручению девушки, когда парень заснул, тот единственный гёнчарык принесся, прямо на него похожий, будто по одной колодке изготовили, второй гёнчарык скроив, сшив, оба положили перед гостем.

Утром когда встал, увидев оба гёнчарыка, ничего не сказав, одел. Жанакаит им:

– Я вас в товарищи звать приехал, – сказав, – давайте, угоним табун Буху, – предложил.

Но эти не согласились:

– Отправившись угонять табун Буху, оттуда никто живым не вернулся, – сказали.

Тогда, сам по себе уезжая, на обочине один старик, повстречавшись:

– Ты – Жанакаит, мой табун угнать едешь, я это (при гадании) на лопатке видел. От Аллаха обрети зло! Угоняй, но у меня есть один сын, раньше всех он тебя догонит, его не убивай, – сказал.

И этот пообещал не убивать.

Когда гнал стадо, парень догнал. Привязав к коню, отпустил. Увидев это, все вернулись назад.

Пригнав, половину Жантемиру и Темиржану отдав, взяв их сестру в жены, вернувшись в горы, остался жить-поживать.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 23, паспорт 23. Записал С.О. Шахмурзаев 20.06.1959 г. в с. Безенги КБАССР от Чочаева Юсуна Уммолаевича (1897 г.р.).

Выписал из архива и перевел на русский язык Малкондуев Х.Х.

ЖЕТИ ЖАЛАНБЫДЫР

Бир элде бир жарлы кыатынны жети жашы болганды. Ала, орамда ойнай, жагалашып, келекчиклерин жыртхандан сора, киер кийимлери болмай, быдырчыклары ачылып айлана эдиле.

Бир кюн ханны кызы урланганды. Не кыдар адам излеген эсе да, урланган кызыны ызына киши тюшалмаганды. Хан, амалсыздан, садакыа юлешир акыыл этгенди. Ол садакыадан жарлы кыатынны сабийлерине да бирер келеклик ийгенди. Жаланбыдырланы аналары жашлагыа келекле тиге башлаганды. Анасы да келек тиге тургъанлай, жаланбыдырладан бек гитчелери, ач болуп, орамда ойнагъанын кыюуп, гыржынчык алыргыа юйге келгенди. Жашчык, юйге кирип, анасыны келек тиге тургъанын кырюп:

– Анам, бу келекни кимге тигесе? – деп сорганды.

– Ким жигит эсе, анга тигеме, – деп жууаплаганды анасы.

– Анам, мен жигитме, келекни манга тик.

– Да, балам, сен, жигит болуп, не эталлыксыа?

– Эталлыгым а олду, анам: мен бир затны ызын ызлап башласам, аны жыйысы бла тапхынчы, тохтарык туююлме. Тас болгъан затны менден терк табаллык адам жокъду.

– Ахшы, балам, сен жигитсе, сора бу келекни мен санга тигеме, – деди жашланы аналары.

Кичи жаш да, гыржын туурагъанны кыолуна алып, кыурлай чайнай, орамгыа чыкыгъанда, экинчи жаланбыдырны ашарыгы келди.

Ол да, гыржын алама деп, юйге киргенинде, анасы келек тиге тура эди.

– Анам, бу келекни кимге тигесе?

– Ким жигит эсе, анга тигеме.

– Мен жигитме, анам, манга тик келекни. Мени келегим да жокъду.

– Да сен, жигит болуп, не эталлыксыа?

– Мен а, жигит болуп, этеригим олду: кыулагымы салып тынгыласам, жер туюбюнде селешгенни эшитирме.

– Сен жигитсе, санга тигеме бу келекни, – деди анга да аналары.

Ол да, гыржын алып, орамгыа чыкыгъаны аны таматасыны да, кыозуп, ашарыгы келип, юйге чапханы тенг болду.

Кире келгенлей, бу ючюнчыо кыарындаш да, анасыны келек тиге тургъанын кырюп:

– Анам, кимге тигесе бу келекни? – деп сорду.

– Ким жигит эсе да, анга, – деди аналары.

– Анам, келекни манга тик, мен жигитме.

– Да, жигит болуп, сен не эталлыксыа?

– Эталлыгым а олду, анам: мен, жумдурукъ этип урсам, нени да туюбюн башына айландырылыксыа*.

– Ахшы, балам, сен керти да жигитсе, келекни да санга тигеме, – деди аналары.

Гыржынын кыурлай кыаба чыкыгъан ючюнчыо кыарындашыны ызындан юйге тёртюнчыо жаланбыдыр кирди.

* Жомакны барганына кере, былайда айтхан, неда жазгъан адамны халаты барды: ючюнчыо кыарындаш кыарап, жер туюбюнде болгъан ишлени кералганды (Б.Б.).

Ол да анасыны кѣлек тиге тургъанын кѣрдю.

– Анам, бу кѣлекни кимге тигесе?

– Жашым, ким жигит эсе, анга тигеме.

– Мен жигитме, манга тик.

– Сен, жигит болуп, не эталлыкъса?

– Жигит болуп, мени этеригим а олду: жумдурукъ этип урсам, не уллу тѣбени да тѣбюн башына бурурма.

– Сен жигитсе, кѣлекни санга тигеме, – деди аналары бу жашына да.

Ол да, гыржын туурагъанны кѣурлай кѣба, орамгъа чыгып, бешинчи жаланбыдырны кѣозутады.

Ол жаланбыдыр да, чабып, юйге киреди да, анасыны кѣлек тиге тургъанын кѣреди.

– Ой анам, бу кѣлекни кимге тигесе?

– Жашым, ким жигит болса, анга.

– Мен жигитме, манга тик.

– Сен, жигит болуп, не эталлыкъса?

– Мен эталлыкъ жигитлик – экеу эки жанындан тутуп тургъан затны урлап кеталлыкъма.

– Сен жигитсе, санга тигеме сора, – деп, аналары аны да кѣууандырды.

Ол жаш да, гирахын алып, орамгъа чыгъады. Аны ызындан алтынчы жашчыкъ чабып киреди да, гыржын тилейди. Анасыны кѣлек тиге тургъанын кѣрюп, ол да:

– Анам, бу кѣлекни кимге деп тигесе? – деп сорады.

– Ким жигит эсе, анга тигеме.

– Мен жигитме, анам, манга тик.

– Сен, жигит болуп, не эталлыкъса?

– Мен а аллай жигитлиги болгъан жашма, бир затны алып кѣачсам, мени ызымдан кѣуш окѣуна жетмез.

– Сен жигитсе, кѣлекни санга тигеме, – деди анга да аналары.

Эм ахырында жетинчи жаланбыдыр да келеди. Алгъа гыржын сурайды, ызы бла уа, анасы кѣлек тиге тургъанын кѣрюп, анга жанлайды.

– Анам, бу кѣлекни кимге тигесе?

– Ким жигит эсе, анга тигеме.

– Мен жигитме, манга тик.

– Сени не жигитлигинг барды, не зат этерге кѣолунгдан келликди?

– Мен а, жигит болуп, этеригим олду: ийнени, элтип, кѣкге салсала, мен аны, садакъ бла атып, тѣюз кѣзюнден ураллыкъма.

– Алай эсе, жашым, сен чынтты жигитсе, кѣлекни санга тигеме, – деди анасы. Ингирде жашла барысы да юйге жыйылгъанлай, аналары хар бирини кѣлегин юсюне кийдиреди. Энди жашланы быдырлары да жабылады, кеслери да кѣууанышадыла.

– Жашла, – дейди сабийлени аналары, – бу кѣлекликлени сизге хан жибергенди. Ол ханны, кѣп болмай, кѣзы тас болгъанды. Энди сиз аны кѣзын излеп табаргъа керексиз. Сиз аны тапсагъыз, кесигиз айтханча, жигитлесиз. Мен да жигит жашла тапханыма ѣхтемленирикме.

Жашла, олсагъатдан тизилип, ханны юйюне барадыла. Хан жашлагъа кѣзыны кѣалайдан урланнганын кѣргюзтеди. Жыйылаучу жашы алып жыйылап тебирейди. Кѣалгъанла да аны ызындан тизилип барадыла. Жыйылаучу, ызы тутуп, бир тѣбеге дери барады, андан ары не жыйыласа

да, ыз табалмайды. Энди кезиу тынгылаучугъа жетеди. Тынгылаучу тѣбеге къулакъ салып тынгылайды да, эки адам даулаша тургъанларын айтады.

Тѣбени тубюнде адамла неге даулашханларын билир ючюн, ючюнчю жаланбыдырны чакъырадыла. Ол тюрслеп къарайды да, экеулен, ханны къызын ортагъа салып, неле эсе да сѣлеше тургъанларын кѣреди. Ханны къызы табылды. Энди аны къутхарыргъа керекди.

Тѣртюнчю жаш жумдурукъ этип урады да, тѣбени башын тубюне айландырады. Уручуну кезиую жетгенде, ол, барып, экеуню арасындан къызын, эслетмей, урлап чыгъады. Уручула къызын къолдан ычхындыргъанларын терк окъуна сезип, аны ызындан боладыла. Энди къызын алып къачар заман жетеди. Чабыучу жигит къызын къарындашыны къолундан алып къачады да, окъ атылгъанлай, думп болады. Къызын ызындан сюргенле аны къарелдисин да кѣралмайдыла.

Энди кезиу мараучугъа жетгенди. Ол, садакъны тартып, къызын ызындан сюргенлеге атады. Жаздырмай, аланы экисин да къаппайды.

Ол халда жети жаланбыдыр, ханны урланган къызын алып, юйюне келедиле. Хан къызын тапханына уллу къурманлыкъла, тойла да этеди. Ол жети жаланбыдырны уа юйюне, ырысхысына да къалауур этип, аланы ашларын-сууларын, кийимлерин да кеси боюнуна алады. Ол жетиси, жети пелиуан, жети батыр болуп, ханны ышангылы сакълагъандыла. Хан да аланы, энди не ач, не жалангач этмей, иги жашаугъа чыгъаргъанды.

Аланы аналары да, жашларына къууана, къартлыкъгъа дери жашагъанды. Ахшы жашла ёсдюргени ючюн, хан къарт къатыннга хар заманда уллу хурмет этип, анга саугъала да берип тургъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 354–356 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

«Жети жаланбыдыр» деген жомакъ кесини къуралыуу, магъанасы бла да чынтты халкъ жомакъды. Жаланбыдырланы хар бирини бир хунери барды: биринчиси ийисген, хар бир затны къайда болгъанын биледи, баишасы – узакъдан бек иги эшитеди, ючюнчюсю – хар затны кѣреди, тѣртюнчюсю – битену чырмауланы кетереди, бешинчиси – жашырттын нени болса да, алып кетеди, алтынчысы – терк чабады, жетинчиси – садакъдан уста ата биледи. Битену ол хунерлени биригиую уллу жетишимлеге жетдиреди.

СЕМЕРО ГОЛОПУЗЫХ

В одном селе у бедной женщины было семеро сыновей. После игр на улице, подравшись между собой, они порвали свои рубашонки и из-за того, что нечего было одевать, они ходили с открытыми животиками.

В один из дней ханскую дочь похитили. Сколько бы людей ее ни искали, но на след украденной девушки, так никто и не вышел. Хан от безысходности решил раздавать милостыню. От этой милостыни он отправил детям бедной женщины ткани, чтобы она сшила им рубашки. Мать голопузиков начала шить своим мальчикам рубашки. Когда их мать была занята шитьем, младший из голопузиков, проголодавшись, оставил



свои игры на улице и вернулся домой взять кусок хлеба. Мальчик, войдя в дом, увидел, как мать шьет рубашки:

– Мама, эту рубашку кому шьешь? – спросил.

– Кто является жигитом*, для него шью, – ответила ему мать.

– Мама, я – жигит, сшей мне рубашку.

– Да, мой мальчик, ты, будучи жигитом, что сможешь сделать?

– А сделать вот что я смогу, мама: если я начну искать след чего-нибудь, пока его по запаху не найду, я не остановлюсь. Потерянную вещь быстрее меня ни один человек не найдет.

– Хорошо, мой ребенок, ты – жигит, поэтому эту рубашку я шью тебе, – ответила мать мальчиков.

Младший сын, взяв в руки кусок хлеба, съедая его всухомятку, вышел на улицу, тут второму голопузику тоже захотелось есть.

Когда он тоже за хлебом зашел в дом, его мать также шила рубашку.

– Мама, эту рубашку кому шьешь?

– Кто является жигитом, ему шью.

– Мама, я – жигит, сшей мне рубашку. У меня рубашки нет.

– Да, ты, будучи жигитом, что сможешь сделать?

– А я, будучи жигитом, вот что смогу: когда, ух, приложив к земле, прислушаюсь, услышу, кто там разговаривает.

– Если ты жигит, тогда я тебе шью эту рубашку, – ответила и ему мать.

– Он тоже, взяв хлеб, как только вышел на улицу, его старший брат тоже, разыгравшись, захотел есть, и тут же побежал домой.

Когда третий брат зашел домой, он увидел, что его мать шьет рубашку:

– Мама, кому ты шьешь эту рубашку? – спросил он.

– Кто является жигитом, тому, – ответила мать.

– Мама, сшей мне рубашку, я жигит.

– Да, будучи жигитом, что ты сможешь сделать?

– А сделать вот что я смогу, мама: когда я кулаком ударю, все, что есть переверну вверх дном**.

– Хорошо, мой мальчик, ты по-настоящему жигит, и эту рубашку я тебе шью, – ответила ему мать.

Съедая хлеб всухомятку третий брат когда вышел, четвертый голопузик тут же забежал в дом.

Он тоже увидел, как мать шьет рубашку.

– Мама, кому ты эту рубашку шьешь?

– Сын мой, кто является жигитом, тому шью.

– Я – жигит, сшей мне.

– Ты, будучи жигитом, что сможешь сделать?

– Будучи жигитом, вот что я смогу: когда ударю кулаком, любой огромный холм смогу перевернуть верх дном.

– Ты – жигит, рубашку шью тебе, – ответила мать и этому сыну.

И он тоже, съедая кусок хлеба всухомятку, вышел на улицу и навел на мысль пятого голопузика.

* *Жигит* – герой.

** Здесь рассказчиком или фиксатором допущена ошибка: согласно дальнейшим событиям сказки, третий брат, посмотрев, мог увидеть, что происходит даже под землей (Б.Б.).

И этот голопузик, забегает в дом и видит, как его мать шьет рубашку.

– Ой, мама, кому ты эту рубашку шьешь?

– Сын мой, кто является жигитом, тому.

– Я – жигит, сшей мне.

– Ты, будучи жигитом, что сможешь сделать?

– Вот в чем мое геройство – если два человека будут держать что-нибудь с обеих сторон, я смогу украсть и унести.

– Ты – жигит, тогда шью тебе, – ответила ему мать и этим его тоже обрадовала.

И этот мальчик, захватив с собой кусок засохшей горбушки хлеба, вышел на улицу. Вслед за ним забегает шестой мальчик и начинает просить хлеба. Увидев, как его мама шьет рубашку, он тоже:

– Мама, эту рубашку кому ты шьешь? – спросила.

– Кто является жигитом, тому шью.

– Я – жигит, мама, сшей мне.

– Ты, будучи жигитом, что сможешь сделать?

– Я такой геройский парень, если что-нибудь возьму и убегу, меня даже орел не догонит.

– Ты – жигит, рубашку я тебе шью, – ответила ему мать.

В самом конце пришел седьмой голопузик. Вначале спросил про хлеб, а затем, увидев, как его мать шьет рубашку, подходит к ней.

– Мама, кому шьешь эту рубашку.

– Кто является жигитом, тому шью.

– Я – жигит, сшей мне.

– Какое геройство у тебя может быть, что ты можешь делать?

– А я, будучи жигитом, вот что сделаю: если иголку отнесут и оставят на небе, я, выстрелив из лука, попаду прямо в дырочку.

– Если так, мой сын, ты по-настоящему жигит, рубашку шью тебе, сказала ему мать. Вечером, когда ребята все собрались дома, их мать каждому надевает по рубашке. Теперь у сыновей животы прикрыты и они рады.

– Мои сыновья, – говорит мать детей, – эти рубашки вам прислал хан. У этого хана, недавно потерялась дочь. Теперь вы его дочь должны разыскать и вернуть. Если вы ее найдете, как вы сами говорили, вы – настоящие жигиты. И я буду гордиться тем, что родила сыновей-жигитов.

Ребята тут же, выстроившись, идут домой к хану. Хан показывает с какого места украли девушку. Сын, который имеет хороший нюх, начинает обнюхивать. И остальные, выстроившись, следуют за ним. Следопыт, заметив какой-то след, доходит до одного холма, а дальше, сколько бы он не обнюхивал, не смог выйти на след. Теперь очередь доходит до того, который хорошо слышит. Тот, который хорошо слышит, приложив ухо, слушает и говорит, что два человека о чем-то спорят.

Под холмом люди о чем-то спорят, чтобы узнать, вызывают третьего голопузика. Он смотрит внимательно и видит, что двое, окружив ханскую дочь, о чем-то разговаривают. Дочь хана нашлась. Теперь ее надо спасать.

Четвертый юноша ударом своего кулака переворачивает холм. Когда очередь дошла до вора, он сходил и вызволил девушку из компании двух людей, которые ее удерживали, тайком украл и вывел. Воры, сразу узнав,



что девушку упустили из рук, начали гнаться за ним. Теперь пришла пора, забрав девушку, убежать. Жигит-бегун забирает девушку, схватив из рук брата, и как пуля, тут же исчезает. Те, которые гнались за девушкой, не видели даже их тени.

Теперь очередь дошла до того, кто метко стреляет. Он, натянув тетиву, стреляет в тех, кто гнался за девушкой. И не промахиваясь, обоих уничтожает.

Таким образом, семеро голопузиков, высвободив украденную ханскую дочь, вернулись к нему домой. Хан из-за того, что его дочь нашлась, устроил огромный пир, целый праздник. А этих семерых голопузиков у себя во дворце он нанял стражниками, их еду-питье, обеспечение одеждой взял на свои плечи. Эти семеро, семь силачей, став семью богатырями, надежно охраняли хана. И хан, не давая им голодать, нищенствовать, вывел их на достойную жизнь.

Мать юношей, радуясь своим сыновьям, прожила до старости. Из-за того, что она вырастила достойных сыновей, хан к старой женщине относился с большим почтением и передавал ей различные подарки.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 354–356) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка «Семеро голопузых» является народной не только по духу, но и по содержанию. Каждый из голодранцев имеет определенный талант: один из них по запаху определяет местонахождение предмета, другой отменно слышит на далеком расстоянии, третий обладает зорким глазом, четвертый устраняет любые препятствия, пятый незаметно может утащить любую вещь, шестой быстро бежит, седьмой метко стреляет. Объединение всех этих способностей позволяет добиться выдающихся успехов.



АРИУ КОКУЙ

Бурунгу заманлада Малкъарда Геуюргю деп бир жигит мараучу болгъанды. Хапарчылары айтыуларына кёре, ол заманлада малкъарлыла таулада киритли кюбюрдеча жашагъандыла. Тюзледе кимле жашагъанларын окъуна билмегендиле.

Мараучу Геуюргю, уугъа жайыла келип, Сукан сууну боюнунда мараллагъа тюбейди. Маралла къача, ол сюре, Алмалы талагъа жетеди. Мараллагъа жууукъ къысылалмай, ызларындан сюре, Жемтала таба къууа, ахырында келип, Тирмен ташха жетеди.

Геуюргю алайда бууну ёлтюрюп, терисин ала тургъанлай:

– Мыллык кёп болсун! – деп, Жемтала жанындан бир киши юсюне келди.

– Ой, сау бол, къонакъ, отха жууукъ бол! – деп саламлашды жаш.

Эрлай шишлик, жалбауур этип, ашаргъа олтурадыла. Геуюргю башлыгъындан арпа гыржын, къонагъы да тары гыржын чыгъарадыла. Гыржынладан бири бирине тигим этип, ауузланадыла.

Бурун заманлада къонакъны сыйламай, хапар соргъан адет болмагъанды. Была да ашар бошагъандан сора, Геуюргю къонакъгъа:

– Къонакъ, соргъаныма айып этме, кимсе? Къайдан келесе, не айланаса? Атынг къалайды? Хапар айт, тынгылайым! – деп айтды.

– Тейри айып этмесин, мени атым Диммоду. Хапарым кёпдю. Алай хапарладан эшитгеними, огъесе кёргенимими айтайым? – дейди.

– Къулакъ кёпню эшитеди. Кёргенинги айт!

– Да алай эсе, тынгыла! Бизни элибиз Жеркли деген къолдады. Адамларыбыз тынч адамладыла. Кёп заманладан бери, душманны кёрмей, тынч жашай эдик. Бир кюн эр кишиле уудан къайтып келгенибизде, элибизде эм ариу къызыбыз Кокуйну агъач киши алып кетгенин эшитдик. Къарындашлары, жууукълары не къадар излеселе да, тапмадыла.

Сора мен: «Аны тапмай, къайтмазма», – деп, ант этип, жолгъа чыкъгъан эдим. Бек кёп заманны айланып, ахырында бир къан ызгъа тюбедим. Ол къан ызны ызлап, тюзюнлей бир уллу къаяны тюбюнде бир къарангы бир дорбуннга келдим. Арбаздан:

– Ким барды? – деп, таууш этгенимде, бир тиширыу чыгъып:

– Жууукъ бол, – деди.

Тамашагъа сен къара! Ол а – мен кесим излеген ариу Кокуй. Бети саз, кеси арыкъ, мудахлыгъыны уа чеги, къыйыры жокъ.

– Эй, унутулмазлыкъ сейир, аламат! Мен кимни кёреме? Мени аллымда сюелген кимди? Сен ариу Кокуй туюнлюмюсе? Мени таныймыса? Диммома да, – дейме анга.

– Ой, кюнюм къарангы, Диммо! Не этесе? Къайдан чыкъдың? – деп, мени къучакълап, жиляды. Нек келгенсе? Былайы ёлюмню жериди. Не амал этейим? Агъач кишини уудан келир заманы болады. Бир жанына сылжыра ансы, келсе, хурттак-хурттак этип къояр, – деп тиледи.

– Угъай, Кокуй, мени андан къачарым да жокъду. Сени алып бармай, элге къайтырым да жокъду. Хайда, тебире, – дедим.

– Да, Диммо, мени андан сабийим барды. Мен аны къалай къоюп кетейим? Кёремисе, бешикде жукълап турады.



Диммо сабийини юсюне барып кьараса, ол а – мардасыз эриши, мангылайында да жангыз бир кёзю бла. Эмеген баланы кёрюп, тамаша болады.

– Балам деп мынгамы айтаса? Атасы да мунуча жапысызмыды? Сен была бла кьалай жашайса? Санга бу жашаудан эсе, бёрюле ашасала да, иги эди, – деп, сабийни бичакъ бла сермерге тебиреди.

Анасы, чабып, сабийни юсюне кьапланды, уругъа кьоймады.

– Сен муну ёлтюрсенг, атасы сени да, мени да ёлтюрюр. Андан эсе бир башха амал этейик. Аны кьарыу бла хорлаялмазса. Аны кючюню хыйсабы жокъду. Башында уа акъылы жокъду. Не айтсанг да, ийнаады. Сен, ол кёрмезча, бир жанына жанла да, кьалай этеринги сора мен билдирirme, – деди кьатын.

– Мен букъдум. Бир заманда агъач киши бир турукъ бла бир кийикни кётюрюп келди. Ары-бери кьарап:

– Бу адам ийис неди, бери ким келгенди? – деп сорады.

– Да мени ийисим болур. Башха адам ким келликди бери? – деп, ол аны ашатып, жукъларгъа жатдырды.

Агъач киши, жукълап, хурулдай башлагъанда, Кокуй мени чакъырды. Мен жетип, бичагъымы агъач кишини кёзюне чанчып, желкесинден чыгъардым.

– Ай байтамал! Адам улу, манга этерни этдинг! – деп, секирип туруп, дорбунну тегерегине айланды.

Ахырында, элтип, кесин кьаягъа уруп, артына ауду. Андан сора кьымылдамады. Ызы бла баласын да ёлтюрюп, юсюне атдым.

Энди сен, суйсенг, ийнан, суйсенг, кьой. Мен ол кюн ариу Кокуйну ол сылыкъландан кьутхарып, биргеме юйюне алып келдим. Эл, жамауат манга уллу ыспас этди. Кокуй дагъыда эрге барды. Кеси ёлгенди, алай а туудукълары бюгюн да жашайдыла. Бизни таба келгенинг болса, сорурса. Кёз кёрген хапарым ма олду, – деп, Диммо хапарын аны бла бошады.

– Да ол да ишди. Хайыр болсун. Энди мен да кёзюм бла кёрген бир хапар айтайым. Кьонакъ, жукъунг келемиди? – деди мараучу Геуюргю.

– Угъай-угъай, жукъум кьайдан келсин? Айт, маржа, бек талпынып тынгыларыкъма.

– Да алай айтханыма айып этме, мен Геуюргю деп аты айтылгъан бир мараучума. Бир жол уугъа айлана барып, бир уябаш маралны ёлтюрдюм. Аны мыллыгын ёрге тагъып, баурун тишлей тургъанлай, мазаллы бир кьара кьуш, жумулуп келип, кийик мыллыгымы тырнакъларына илиндирип кетди.

«Мен да Геуюргю туююлме, аны санга жетдирмесем», – деп, дагъыда бир марал ёлтюрюп, терисин тулукълукъ этип сойдум. Этин букъдурдум. Ушкогуму жерлеп, кьолума алып, терини ичине кирип сакъладым. Бир заманда кьара кьуш, терс жанындан келип, мен да ичинде тургъанлай, терини кьагъып алып, кёкге кётюрюлдю. Мен уллу кьайгъыгъа кьалдым. Кьушну ушкок бла атып урсам, ол да, мен да жерге тийип жайыллыкъбыз. Алай этмесем, ахырым не болурун билмейме. Мен да буюгъуп, кьуш да, бара-барып, бир чынгыл кьаяны ыранында терен дорбуннга кьонду. Мычымады, дагъыда учуп, узакъ сыртладан ташайды.



Ол кетгенлей, терини ичинден чыкъдым. Тёгерекге жайылдым. Айлана барып, дорбуннга къарасам, бир жанында кийик сюекле, бир жанында адам сюекле. Бир жерде эки мужура, аланы къатында да юч ушкок, дагъыда чепкен хурттакла, эски къатхан чабырла да кёрдюм.

Мен гитче заманымда бизни элден мараучула, уугъа бара да, ызларына къайтмай, тас бола тургъандыла. Дорбунда ол затланы кёргенимде, къара къушну къанатына ала да, менича тагъылып кетип, жоюлгъанларын билдим.

«Мен да алача болуп къалмайым», – деп, ушкогума эки окъ салдым. Юч кюн бла юч кечени не ашамай, не жукъламай сакъладым. Тёртюнчю кюн къуш, уча келип, дорбуннга къонуп, къанатларын жыйып, кёзлерин жандырып, манга тебирегенлей, ушкокну огъары аягъына миндирип туруп, тюз баш токъмагъына уруп ёлтюрдюм. Терисин сыдырып алдым. Дорбунда ушкоклары, сюеклени да тышына тёкдюм. Сора къушну терисине кирдим. Къанат орунларына къолларымы сукъдум. Къолларым бла къушну къанатларын къагъа-къагъа, бийик дорбундан жерге тюшдюм. Ачдан онгсуз болуп, аманны кебинден юйюме келдим, – деп хапарлады Геуюргю.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 44 папка, 7 паспорт. КъМАССР-ны Огъары Чегем (Эл-Тюбю) элинде 1928 жылда туугъан Агаланы Махаралны жашы Ахматдан 26.01.1965 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Ариу Кокуй» деген жомакъны баишхаладан айырмалы этген мында табиёгъатда керти болгъан жер-суу атланы (Малкъар, Жемтала, Сукан суу) кёрюзтюлгенлериди. Андан сора да баиш жигитлеге къажасулукъ агъач киши бла мазаллы къуш этгенлери чыгъарманы керти да болгъан хапарлагъа (бывальщиналагъа) ушатады. Алай чыгъарманы болумлары жигитлик жомакъгъа келишедиле.

КРАСАВИЦА КОКУЙ

Как рассказывают, в древние времена в Балкарии жил отважный охотник по имени Геуюргю. По тем же рассказам, в те годы балкарцы жили в горах, как в сундуке с замком. Они не знали, кто живет на равнинах.

Охотник Геуюргю отправился на охоту, и на берегу реки Сукан-су увидел оленей. Олени начали убежать, он за ними погнался и таким образом они дошли до Алмалы-тала*. Не в состоянии подойти близко к оленям, он гнал их, гнал в сторону Жемталы, и, в конце концов, добрался до Тирмен-таш**.

Геуюргю на том месте убил оленя и, сдирая с него шкуру, услышал:

– Чтобы туш у тебя было много! – со стороны Жемталы подошел к нему мужчина.

– Ай, спасибо тебе, гость, подходи поближе к огню! – сказал он, поздоровавшись.

* Досл.: «Яблонева поляна».

** Досл.: «Мельничный камень / жернов».

Они, быстро пожарив шашлык, жалбаур*, сели покушать. Геуюргю из своего башлыка хлеб из ячменя, а гость – хлеб из проса вытащили. И они, от своих хлебов отломив кусочки, начали кушать, делясь друг с другом.

В древние времена не было случая, чтобы человек, пока гостя не угостит, задавать ему вопросы. Когда они закончили кушать, Геуюргю спрашивает у гостя:

– Гость, не обессудь, что у тебя спрашиваю, кто ты? Откуда ты идешь, чем занимаешься? Как тебя зовут? Расскажи что-нибудь, я послушаю.

– Пусть Тейри меня не обессудит, меня зовут Диммо. У меня много чего есть рассказать. Однако, что тебе рассказать: то, что я слышал, или то, что я видел?

– Уши много чего слышат. Расскажи то, что видел.

– Да, если так, послушай. Наше село Жеркли находится в ущелье. Люди у нас смирные. Народ наш – спокойный. С давних времен мы жили, не видя врагов. Когда мужчины вернулись с охоты они узнали, что в селе самую красавицу – Кокуй лесной человек увел. Ее братья, родственники, сколько не искали, не смогли найти.

А я отправился в дорогу с клятвой, не найдя ее, не вернуться. Я бродил много времени и в конце наткнулся на один кровавый след. Направившись по кровавому следу, прямо у подошвы большой скалы обнаружил темную пещеру. Со двора:

– Есть кто-нибудь? – когда крикнул, вышла одна женщина:

– Милости просим, – сказала она.

– Смотри на это чудо! Это оказалась та девушка, которую я искал, красавица Кокуй! Лицо бледно, сама худая, а печали конца и края нет.

– Эй, какие чудеса! Такое никогда не забудется, незабываемое чудо. Кого я вижу? Кто передо мной стоит? Ты разве не красавица Кокуй? Ты меня узнаешь, я – Диммо?

– Оо-у, чуть свет мой не погас, Диммо! Что ты делаешь? Откуда ты здесь взялся? – сказала она, обняла меня и заплакала. Зачем ты пришел? Это место смерти. Чем мне тебе помочь? Наступает пора, когда лесной человек должен вернуться с охоты. Быстро уйди в сторону, а то, когда он придет, разнесет тебя в клочья, – начала она просить.

– Нет, Кокуй, я не стану от него убегать, не забрав тебя с собой, в село я не вернусь. Давай, собирайся, – сказал он

– Да, Диммо, у меня от него есть ребенок. Как я уйду, оставив его? Видишь, он спит в колыбели.

Диммо, когда сходил и посмотрел на ребенка, а он, какой-то уродливый, с одним глазом во лбу, увидев ребенка от эмегена, он оцепенел от удивления.

– Своим ребенком ты его называешь? И отец у него такой же неприглядный? Как ты можешь с такими жить? Чем такая жизнь, лучше бы тебя волки съели, – сказал он и кинулся на ребенка с ножом.

Мать ребенка быстро заслонила ребенка от него и не дала ударить его.

– Если ты его убьешь, его отец и тебя, и меня уничтожит. Надо что-нибудь другое придумать. Его силой ты не сможешь одолеть. Его сила безмерная.

* Жалбауур – печень, обвернутая тонким слоем внутреннего жира и поджаренная на вертеле [4, 782].

В голове у него ума нет. Что не скажешь, всему верит. Ты отойди в сторону, чтобы он тебя не видел, после я тебя научу, что делать, – сказала женщина.

– Я спрятался. В это время лесной человек на бруске притащил одного оленя. Оглянувшись по сторонам:

– Откуда этот человеческий запах, кто сюда пришел? – спросил он.

– Да, мой запах, наверное, откуда другой человек сюда придет? – сказала она, и, накормив, уложила его спать.

Когда лесной человек заснув, начал храпеть, Кокуй позвала меня. Я тут же, взяв нож проткнул лесному человеку глаз и продырявил ему затылок насквозь.

– Ай, байтамал*! Человечий сын, ты меня угробил, – сказал он, и быстро встав с места, прошелся вокруг пещеры.

В конце, ударив себя об скалу, опрокинулся на спину. После этого он уже не шевелился. Следом за ним, уничтожив и детеныша, бросил в его сторону.

Теперь ты хочешь – верь, хочешь – не верь, в тот день, после того, как я спас красавицу Кокуй от этого чудовища, мы пришли к ней домой. Все село, все люди сильно меня благодарили. Кокуй и после него еще раз вышла замуж. Она сама уже умерла, однако, ее внуки еще живут по сегодняшний день. Когда будешь в наших краях, спросишь. Я рассказал то, что я видел глазами, – сказал Диммо заканчивая свою историю.

– Да, надо же такое событие! Пусть будет во благо. Теперь я тоже расскажу тебе одну историю, то, что видел своими глазами. Гость мой, ты хочешь спать?

– Нет-нет, откуда быть сну? Рассказывай дальше, я буду слушать с большим удовольствием.

– Ты не смейся, но я был знаменитым охотником по имени Геуюргю. Однажды я на охоте убил вожака оленей. Его тушу повесили наверх, и, когда я жарил печенку, тут незаметно прилетел один большой черный орел, и, зацепив когтями, утащил тушу оленя.

«Я не Геуюргю, если я тебе не отомщу», – сказал я и еще раз убив оленя, снял с него тулук**. Мясо я спрятал. Зарядив свое ружье, держа его в руке, залез внутрь шкуры, начал дожидаться. В это время, черный орел появился с обратной стороны и, схватив шкуру со мной внутри, поднялся в небо. Я сильно встревожился. Если я выстрелю в орла из ружья, и он, и я упадем на землю, расплющимся. А если я так не сделаю, не знаю, каков будет мой конец. Я притаился, а орел летел-летел и приземлился на краю обрывистой скалы, у глубокой пещеры. Не колеблясь, тут же взлетел и исчез за далекими холмами.

Когда он улетел, я вышел изнутри шкуры. Оглянулся по сторонам. И прогуливаясь, когда посмотрел в пещеру, на одной стороне оленьи кости, на другой стороне человеческие кости. В другом месте два мужуру***, рядом с ними три ружья, и еще ключья одежды, и старые, затверделые чабыры я увидел.

* *Байтамал* – горемычный, несчастный; отверженный, проклятый [3, 114].

** *Тулук* – мешок (из снятой чулком шкуры) [3, 651].

*** *Мужура* – палка, трость, посох (с железным наконечником) [3, 471].



Когда я был маленьким, из нашего села люди часто уходили на охоту и не возвращались обратно, исчезали. Когда в пещере я все это увидел, я понял, что они тоже, как я, цепляясь за крыло черного орла, улетали и погибали.

И я, чтобы не пропасть, как они, зарядил свое ружье двумя пулями. И три дня, и три ночи находился без пищи, и, не смыкая глаз, дожидался его. А на четвертый день, когда орел прилетел, сел около пещеры, и, сомкнув свои крылья, сверкая глазами, двинулся в мою сторону, я свое ружье держа наготове, прицелился ему прямо в голову, убил его. Содрал с него шкуру. И из пещеры выкинул все ружья, кости наружу. После этого я надел шкуру орла, вместо крыльев высунул руки. И, так, вместо рук махая орлиными крыльями, спустился с высокой пещеры на землю. Истощенный от голода, еле-еле добрался до дому.

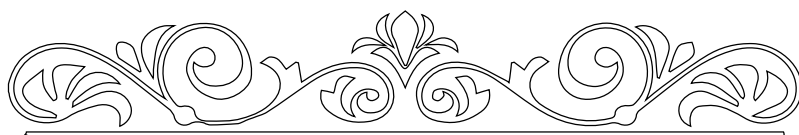
А кто из этих двоих является большим храбрецом, пусть читатель сам рассудит.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 7. Записано 26.01.1965 г. в с. Верхний Чегем (Эл-Тюбю) КБАССР от Агаева Ахмата Махараловича (1928 г.р.). Кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Особенностью данной сказки является наличие в ней исторически достоверных топонимов (Балкария, Жемтала, Сукан-су). Кроме того, здесь главным героям противостоят агач-киши (лесной человек, леший) и огромный орел, что сближает ее с бывальщинами. Однако разворачивающиеся в произведении события, способ разрешения конфликта и т.п. соответствуют героическим сказкам.





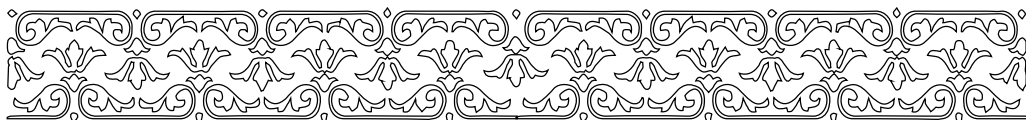
IV. ЖАНЫУАРЛАНЫ ЮСЮНДЕН ЖОМАКЪЛА



IV. СКАЗКИ О ЖИВОТНЫХ







АМАН АҚЫЛЛЫ ТЮЛКЮНЮ АДАМ КЪАЛАЙ АЛДАДЫ

Эртте адамла тюлкюню киши алдаялмазлыкъ суна эдиле. Ол кеси да ёмюрде да алай боллукъ суна эди, алай иш алай къалмады. Биягъы тюлкю, биягъы адетин этерге умут этди. Колхозну къой фермасында къойланы кёрюп, быланы урлап, бир эт хазырлайым къышха, дейди ол.

Ол акъыл бла къойчугъа:

– Бу исси кюн сен харип кесинги чибинлеге ашата нек тураса? Бар юйге, мен къарайым маллагъа. Иги кютюу да табайым, – деди.

– Алайсыз да аланы кютюулеру аман туююлдю. Колхозну правлениясы аланы манга бегитип бергенди кютерге. Мен да кишиге ышанырыкъ туююлме. А сен а, тюлкю, жокъ бол былайдан, кесинге бир хата этдиргинчи, – деп, инбашындагъы ушкогуна узалды. Тюлкюню къоркъуу алды. Аякълары къалтырадыла, терекле ичине ташайды. «Былагъа не болгъанды? Алгъын малкъарлыла былай туююл эдиле да?» – деп, уллу сагъышха къалды тюлкю.

Алай бла тюлкю жолгъа тюшдю. Келе-келип, эсине элни къыйырында бир жангы къатын алыргъа хазырланган жаш тюшдю.

Анга тюлкю:

– Сен къатынмы аласа? – деди.

– Алама! – деди жаш.

– Санга костюм алып келейим? – деди тюлкю.

– Не этеме сени костюмунгу. Кесими тёрт-бешим барды, – деди жаш.

– Чурукъла уа?

– Бардыла.

– Ала бар эселе барыда, санга бир ханны къызын алып берир эдим.

– Ой, сен тюлкюню уа. Нечик артга къалгъанса жашаудан. Бизде ханла жокъ болгъанлы, къаллай бир заман болгъанды. Андан эсе башымы аурутмай, жокъ бол былайдан. Сен адамланы алдаучу заман эртте кетгенди, – деди жаш.

Тюлкю агъачха секирди. Андан бери адамланы алдар акъылын да къойду.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 1 паспорт. КъМАССР-ны Ташлы-Тала элинде 1902 жылда туугъан Цовкаланы Алиден Гузеланы Ж.М. жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъда тюлкю къойчуну алдаргъа кюрешеди, алай ол аны къыстайды. Тюлкю, адамла анга нек ийнанмагъанларын билир ючюн,



жолгъа атланады. Алай кесини хар кимни да алдаргъа кюрешгени ючюн, жаны саулай кючден кетеди.

Ол алай нек болгъанды десек: тюлкю адамланы алдаучу заман эртте ётгени себеплиди.

КАК ЧЕЛОВЕК ОБМАНУЛ ХИТРОУМНУЮ ЛИСУ

Давным-давно люди думали, что лису никто не может обмануть. И она сама думала, что всегда так будет, но все изменилось. Опять лиса хотела вести себя так, как привыкла. Увидев овец в колхозной ферме, решила, украв их, запасти мясо на зиму.

С таким намерением пастуху:

– Зачем ты в такую жару даешь мухам себя кусать? Иди домой, я присмотрю за скотиной. И найду хорошее пастбище, – сказала.

– Их пастбище и так неплохое. Правление колхоза поручило мне их пасти. И я никому (их) не доверю. А ты, лиса, уходи отсюда, пока я не причинил тебе зла, – сказав, потянулся, чтобы снять ружье с плеча. Лиса перепугалась. Ноги задрожали, бросилась в чащу леса. «Что с ними случилось? Раньше ведь горцы не были такими?» – сказав, лиса задумалась. И так лиса отправилась в путь. Шла-шла, пока не вспомнила про парня, который жил на окраине села и только собирался жениться.

– Ты собираешься жениться? – спросила его лиса.

– Собираюсь! – сказал парень.

– Может я тебе куплю костюм? – спросила лиса.

– Зачем мне твой костюм. У меня у самого есть четыре – пять штук, – сказал парень.

– А туфли?

– Тоже есть!

– Если это все у тебя есть, тогда я возьму тебе в жены дочь хана.

– Ой, тебя, лиса! Как ты отстала от жизни. С тех пор как у нас нет ханов, сколько времени прошло. Лучше не морочь мне голову и уходи отсюда. То время, когда ты обманывала людей, давно прошло, – сказал парень.

Лиса убежала в лес. И с тех пор обманывать людей она и не думает.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 1. Записал Ж.М. Гузеев от Цовкаева Алия (1902 г.р.). Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В данной сказке лиса пыталась обхитрить пастуха, но он ее прогнал. Поэтому она, чтобы понять, почему люди не верят ей, отправилась в путь, но чуть, не пострадав от своего любопытства, еле ушла живой. Оказалось, что прошло то время, когда она с легкостью могла обмануть людей.

ТЮЛКЮ БЛА ТИРМЕНЧИ

Бир элни элден тышында бир тирменчилери болгъанды. Ол тирменчи ашагъан, жашагъан да ол тирменде эте эди. Тирменчини беш-алты кьою бар эди. Къатын аллыкъма да, анга къалыннга берликме деп, бирин да не соймай, не бир тюрлю кереклисине къоратмай, хар кюн сайын, орунда санап, къыстап, ингирде да, санап, жыйып туруучу эди. Анга хазна адам къонакъгъа да бармаучу эди. Да ма бир ингирде тюлкю тирменчиге къонакъгъа тюшдю. Къонакълыкъгъа тирменчи тюлкюге токълу кесген эди. Ала токълуну ариу биширип, ашап, ичип жатдыла. Тюлкю тирменчиге экинчи ингирде да келди. Экинчи кече тирменчи токълу кесерге эринерек болду, алай болса да токълуну уа кесип тюлкюге ашатды.

Тюлкю ашап, иги тоюп жатды. Эрттенликде туруп, ашап, ичип кетген эди, алай кёз байланыр заманнга уа биягъы тирменчиге: «Да бюгече уа кьой соймазгъа антмы этгенсе?» Аны мал кесмезлигин ангылап тюлкю анга:

– Кьой кес, – деди.

Тирменчи:

– Угъай, тюлкю! Бир беш-алты малым бар эди да, экисин санга ашатханма. Мен да – къатыным жокъ, къызым жокъ, къошум а бир да жокъ. Бир къатын зат алсам, анга къалыннга берирге асырайма. Кьой, тюлкю, бюгече мал кесалмам, – деп жууаплады.

Тюлкю анга:

– Хы, сен къатынданмы къоркъаса? Аны мен санга алырма, мал кес! – деп, ол кече да кьой кесдирип ашады.

Алай бла хар кюн сайын келип, тирменчини кьойларын тауусхунчу кесип, ашап турдула. Кьойла тауусулгъан бла, терилерин тон кибик этип, тирменчиге кийдирген эдиле.

– Да къатын алыргъа айтханса, тюлкю, энди къалай аллыкъ эсенг да, ал, – деп, тирменчи тюлкюню къысхан эди.

Андан сора, тюлкю барып, бир уллу элни ханыны бир бек ариу къызын тирменчиге тилей эди.

Тюлкю былай айта эди:

– Ай, хан, сени насыбынг сейир уллуду. Эй, сен ол жашны кёрге эдинг, аны игилиги, аны ариулугъу, аны мюлкю, мажарыулугъу. Аны кибик битеу дуняны башында бир да адам болмаз. Ай, сиз аны бир кёрге эдигиз. Тохта, аны кёрюсюз сиз, – деп махтауну айтырдан бир да кьоймай эди.

Хан тюлкюге:

– Да, кеси бери бир келсин да, бир кёрейик да, жаратсакъ берирбиз, – дегенди.

Тюлкю, экинчи кюн да къалып, ючюнчю кюн ханнга келип:

– Ой, багъалы, насыплы хан, жаш: «Алай барыргъа уялгъан этеме: къаллай бир кёлуне келе эсе, кёлуне келген къалынны айтсын, къызын келтирип, не киеу нёгерле баргъан кюн, айтхан къалыныгъызын да алып барырма, деп айтханды», – дейди.

Дагъыда жашны махтай эди.

– Ой, ол бир къалын, бир характер, бир мал къадар жыйып турады. Бу къадарын не этериксе? – деп сорсам. «Ханнга элтирикме», – деп жууаплап къояды, – деп дуняны ётюрюгюн айта эди. Сора къызгъа чабып: – Ой, сен



аны бир кѳрге эдинг, кѳойнунгдан чыгъармаз эдинг, – деп жашны бек уллу махтай эди да, кѳызыны берирге ыразы болдула.

Байрым кечеге болжал этген эдиле. Тирменчи кеси уа анга аллай кѳатын ала тургъанларын бек аз биле эди.

Байрым кюн жетди. Тюлкю тирменчиге хапарын санады. Экиси да тебиредиле. Киеу нѳгер да жокъ, зат да жокъ. Бир уллу суудан кепюр бла ѳтдюле. Сора тирменчиге: «Тешин», – деп, тешиндирди. Тирменчи жууунургъа унамай эди. Тюлкю суу кѳуйгъан, себеген кибик эте, суугъа тюрте, тирменчини ариу жууундурду.

Тюлкю кеп мычымай, кѳпюрге от салып кѳойду. Кѳюгенинден кѳалгъанларын да тирменчини да болушдуруп, суугъа кѳуйгъан эди. Жашха да былайдан кетмей тур деп, тюлкю ханнга кѳууулгъан эди. Солууун да алалмай, тюлкю:

– Ой, хан! Кѳп малыбыз да келе тургъанлай, кѳпюр оюлгъанды да, бир да кѳалмай адамы, малы, киеу нѳгерле да суугъа кетгендиле да, барысын да суу элтгенди. Аллай жигитни уа кѳалайда да жигитлиги чыгъады атын угъай эсенг, юсюнде быстырларын да суу талап юсюнден сыдыргъанды да, суу чабакъ кибик жюзюп, ол уллу суудан киеуюнг бир жанына чыгъып кѳалгъанды. Мен а анга быстырла алыргъа, сора сени сѳзюнгю эшитирге келгенме, – деп, хапарны тѳкдю.

Олсагъатдан хан, ой, не айтырса: дуняда болмагъанча тауушлукъ кѳумачладан тауушлукъ кийимле: ич кѳнчек, ич кѳлек, омакъ дигиналдан тыш кѳлек, тыш кѳнчек, ахшы чепкен, бухар бѳрк жылтырауукъ, башлы чурукъла, кюмюш белбау, кюмюш кѳама, кюмюш хазырла, бир адамны юсюнде болгъан кийимни этип тюлкюге берди.

Тюлкю:

– Ы, ол а былагъа бюсюремез. Аны кийимлерин айтып ангылаталлыкъ тѳююлме, алай элтген а этейим, – деп, кийимлени да кѳолтугъуна сугъуп кетди. Жашха барып, адамча да кийдирип, хапарны айтды. Олсагъат хан а адамла жиберип алгъындан да ариу, бѳкем кѳпюр ишлетген эди.

Тюлкю жашха:

– Сен быстырларынга кѳарама, не уялгъан этме, иги хайт де. Сени быллай осал сунмайдыла, сени дуняда болмагъанча аллай бир алаамат адам сунадыла, – деп, акъыл юйрете эди. Олсагъат жаш да кийинип бошаргъа, алларына хан уллу киеу нѳгер жыйын этген эди. Ала барысы да ушкок атып, жыр жырлап, уллу той бла киеу ханны юйюне кирген эди. Олсагъатдан адетдеча жарашдырып ханны кѳызын жарлы тирменчи жашха бердиле. Ол кече жаш ханны кѳызы бла бир отоуда кѳалгъан эди. Эрттенликде кѳыз тюлкюню чакъырып:

– Бу жаш не тукъум адам эсе билмейме, кѳуру быстыр кѳрмеген адам кибик быстырларына кѳарап тургъан болмаса, абери этмегенди, – деп тарыкъды.

Тюлкю:

– Ай, ахшы келиним, ол быстырла уа бир иги кѳрюнгенди, аны быстырлары кибик дуняда да чыкъгъан болмаз. Ол, быстырларым эришиди да, айып эте болурсуз уялады, – деп, чыгъып кетип, киеу тургъан отоугъа барды.

Анда жашха:

– Эй, сен аман, аман ёлгюн. Быстырларынга къарама деп, мен къадар айтхан эдим. Сен а къуру ёшюнлеринге къарап тургъан болмаса абери этмегенсе деп, ол ханны къызы да эрттенликде тарыкыгъан этгенди, – деп, жашны кеси башха алып бек урушхан эди.

Экинчи кече да биягъы жаш бла къыз бирге къалгъан эдиле. Эрттенликде тюлкю:

– А, къыз, бюгече уа къалай эдигиз, – деп баргъан эди.

Къыз:

– Къой, къой сурама. Бир да кече узуну жукълатмагъанды, ол сен айтханча болуп тура кёре эдим ансы бюгече уа, – деп, тюлкюге ыразы болгъан хапарын хапарлагъанды.

Эрттенбла хан уллу киеу нёгерле да жыйылдырып, юйюнде тургъан кьонакъланы уллу той этип ашыргъан эди. Тюлкю алларында бара эди. Тюлкю аланы тирменчини тирменине элтмей, алларын кёп бай эмегенле жашагъан жерге айландыргъан эди. Тюлкю киеу нёгерлеге:

– Да, кесигиз кёргенликден, бу жаш энди бу къатынны алып баргъан юйде хазна адам болмаз, мен алгъа барып юйню къурайым, сиз а былайгъа дери келгенигизча да болмай, жолну къуру ушкок, окъ тауушха алдырып алай келигиз. Ма бу ёрге айланган уллу жолну келсегиз, тюз жашны юйюне келликсиз.

Аланы келе турургъа кьоюп, кеси эмегенлени жашагъан жерлерине чапханлай жетген эди.

Тюлкю баргъанында эмегенлени кими ындыр баса, кими аш эте, кими будай ариулай, кими да саламын къалай тура эди.

Тюлкю эмегенлеге:

– Ой, юйюгюз къуруду, эшигигиз жабылды, тюбюнден уллу аскер келеди, жетгенлей, сизни къырлыкдыла, кесерикдиле. Къачыгъыз, къачалмасагъыз да, бусагъат кырадыла, юйюгюзге аман къан жаудурадыла, – деп, аланы къайгъы этдиргенлей, керти да ушкок атылгъан тауушла чыкдыла.

Аланы эшитген заманда, эмегенле хар нелерин да кьоюп къачышхан эдиле. Киеу нёгерле да, тюз аскер формада ушкок окъ тауушха алдырып, келдиле. Олсагъат болгъанны тап этдиле, жарашдырдыла.

Келинчикни да кьуут бла жашны юйюне элтдиле, сора киеу нёгерле да ашап-ичип ызларына кетдиле. Тюлкю да, бир бёлек кюн тургъанлай, агъачха кетди. Келинчик, юйде тиширыу болмагъан себепден, кёп турмай юй ишлеге къармашып тебиреген эди. Тюлкючюк да ызына къайытып ала бла жашай эди. Эмегенледен къалгъан уллу ариу юйледе жашап, аланы ырысхыларын ашап, будай жыйып, бек зауукълу жашай эдиле.

Бир жол тюлкючюкню эсине аман акъыл тюшюп, жашха: «Мен сени бла турмайма», – деп агъачха кетип къалгъан эди. Тюлкю ол жерлеринден къачхан эмегенлени табып, аланы ол жашха кьогъузтуп, аланы туююшдюрюп бир-бирлерине, кеси уа кенгден къарап, сыртындан узун тюшюп, кюлюрге умут этген эди.

Да бир къызыу кюн агъачда айлана тургъанлай, алайдан кенгге кетерге деп, тебиреп тургъанлай, тюлкючюк аланы эслеп, кьууулуп барып алагъа:

– Ой, сизни не уа, сизге къарыулуласыз, батырласыз деп бош айта кёре эдим. Сизни жеригизден да кыстап, мюлкюгюзню да ашап тургъан ким болгъанын билемисиз? Ма ол мен кьоркьутуп, кьойчукларын ашап тургъан, аллай бир кьоркьакъ тирменчиди, – деп хапар айтханды.



Эмегенле иги да ийнанмай, тюлкюню биргесине бир бек къарыулуларын жибергендиле. Юйлени туурасына чыгъаргъа, эмеген: «Бу мени алдап бир эшигиме жабар деп», – ийнанмай сюелип тохтады.

Тюлкю:

– Оллахи, керти айтама. Ма а, ётюрюк айта эсем, мен аллынгда барайым, сен а къуйругъумдан тутуп кел, – дегенди.

Эмеген тюлкюню къуйругъундан тутханлай, тюлкю алда эмеген да ызындан келе эдиле. Жаш къарап аланы кёргенлей къатыннга:

– Энди мен санга: «Аха, юйге кир да, ол эшик башында балта бла бичакъны бери чыгъар, тюлкю бирни алып келеди, биз быладан соймай тургъанлы кёп болады», – дерме. Сен а юйге чапханлай кир, – деп юйретди.

Ала да сыртдан бери туурагъа чыкыгъанлай, жаш къатыннга:

– Хайда маржа, балта бла бичакъны чыгъар, – деп, айтханыча кычырды. Къатын юйге чапханлай кирди. Эмеген аны тауушун эшитгенлей, иги окъуна сагъайып, тюлкюню къуйругъундан къатыракъ кысхан эди.

Сора жаш:

– Хайда маржа! Хайда сюйре! Келтир тюлкю. Кёп болады биз быланы этинден къапмай тургъанлы, бир тояйыкъ, – деп кычыргъанда, эмеген тюлкюню къуйругъундан ёрге кетюрюп, къамичи ургъанча уруп, асыры къаты ургъандан, жерге жайып къойгъан эди. Ол кюнден башлап, тирменчини уллу мюлкю болуп, къатыны бла бирге бек тынчлыкълы жашап-ашап квалдыла.

Эмеген а тюлкюню алайда алай ёлтюргенден сора, ызына къайытып, бирси негерлерине толу хапарын айтды. Артда жерлерине барыргъа умут этген угъай, ол жашдан асыры къркыгъандан, андан да узакъ кетерге сюйюп, терк окъуна жолгъа чыкыдыла. Ма бюгюн-бюгече да тохтамай, жолда бара турадыла.

Энтта да ала бир белек жылны барлыкъдыла. Ала ары жетмей турлукъ кибик, сиз да, биз да, шуехларым, дуниядан кетмей турайыкъ.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 1 паспорт. КъМАССР-ны Ташлы-Тала элинде 1902 жылда туугъан Цовкаланы Алиден Гузеланы Ж.М. жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ тюлкю бла тирменчини юсюнден жомакъланы бир вариантыды. Мында тюлкю акъыллы, хыйлачы персонаж, тирменчи уа жарлы эм къркыакъча ачыкъланады.

Жомакъны энчи сюжети былайды: тюлкю тирменчини алдап, къатын аллыкъма, деп, битеу къойларын ашайды. Алай хыйлалыгъыны болушлугъу бла ол антын толтурады. Тюлкю, тирменчини байча кёрюзтюп, ханны алдап, къызын жашха береди. Аны бла да тохтамай, эмегенлени да ётюрюк бла юйлеринден къачырады, тирменчиге къоюп.

Бу жомакъда тюлкюню сыфаты эки тюрюк бериледи. Биринчи кесегинде, бу тирменчиге болушады, алай экинчи кесегинде уа, хыйлалыгъы, харамлыгъы да кёрюнеди. Нек десенг, ол жашха болушуп, тынчайтханына чыдамай, аны жашауун бузаргъа сюе эди. Эмегенлени излеп, табып, тирменчиге элтеме деп, кеси хаталы боланды.

Бу жомакъды мурдору былайды: «Кишиге уру къазма, кесинг ары тюшерсе».



ЛИСА И МЕЛЬНИК

В одном месте за пределами села жил-был один мельник. Этот мельник и жил, и ел на этой мельнице. У мельника было пять-шесть овец. Он думал, что женится и отдаст этими овцами калым за невесту, поэтому он их не забивал и не тратил ни куда, каждый день, посчитав в загоне, выгонял, вечером считал и загонял обратно. К нему никто так часто в гости и не заходил. Так в один вечер лиса пришла в гости к мельнику. Мельник для гостыи лисы зарезал одного ягненка. Они этого ягненка сварили и, съев его мясо, выпив бульон, легли спать. Лиса пришла к мельнику и на следующий вечер. На вторую ночь мельник уже ленился зарезать ягненка, хоть и не хотел, но все-таки разделал ягненка и накормил лису.

Лиса, хорошо поев и наевшись, легла спать. Утром встала, поела, попила и ушла, но к вечеру опять вернулась к мельнику: «А сегодня вечером, что поклялся не резать барашка?» Лиса, поняв, что тот не собирается резать барана, сказала:

– Разделай барашка.

– Нет, лиса! У меня было пять-шесть барашков, и двумя из них тебя угостила. У меня жены нет, дочери нет, коша тоже нет. Я берегу (скотину), чтобы заплатить за калым, когда женюсь. Нет, лиса, сегодня ночью я для тебя не смогу зарезать барашка, – ответил он.

Лиса ему:

– Хы, ты жены боишься? Я тебе ее найду, зарежь барана! – сказав, и в ту ночь, зарезав, съели еще одного барана. И так, приходила каждый день, пока не зарезали и не съели всех барашков мельника. Как только бараны закончились, они сшили из их шкур типа тулупа, и одели на мельника.

– Ты, лиса, обещала привести мне жену, так теперь жени, как-нибудь, – сказав, настаивал мельник.

После лиса пошла в одно большое село, чтобы просить прекрасную дочь хана за мельника.

Лиса так уговаривала:

– Ай, хан, твое счастье очень велико. Эй, если бы ты видел этого парня, его хорошее поведение, его красота, его хозяйство, его предприимчивость. Такого человека как он нет на целом свете. Ай, если бы вы его видели. Подождите, увидите вы, – сказав, не переставала восхвалять.

Хан сказал лисе:

– Пусть сам сюда придет. Мы на него посмотрим, если понравится, тогда отдадим.

Лиса пришла к хану еще через день и сказала:

– Ой, драгоценный счастливый хан, парень сказал: «Мне неудобно идти просто так. Пусть хан скажет, какую он считает нужной цену калыма, и я принесу его в тот день, когда мы с друзьями поедем за невестой».

(Лиса) еще хвалила парня:

– Ой, он, сколько калыма, сколько вещей, сколько скотины собрал. Когда спрашиваем, что ты с этим будешь делать, он говорит, что хану отвезет – так лиса врала всем. Потом, подбежав к девушке. – Ой, если бы ты его видела, не выпускала бы из объятий, – сказав, очень сильно хвалила парня.



После чего согласились выдать девушку. Договорились на пятничную ночь. Мельник почти не знал, как его собираются женить.

Наступила пятница. Лиса рассказала обо всем мельнику. Они собрались в дорогу вдвоем. Ни друзей жениха нет, ничего нет. Перешли по мосту через большую реку. Потом (лиса) мельнику сказала: «Разденься», – и (тот) разделся. Мельник не хотел купаться (в реке). Лиса, то брызгая на него воду, то подталкивая к реке, искупала мельника.

Лиса тут же без, промедления, подожгла мост. И то, что осталось после пожара, с помощью мельника выкинула в воду. Предупредив парня, чтобы тот никуда не ушел, лиса побежала к хану. Запыхавшись, лиса рассказала хану:

– Ой, хан! Когда мы шли к тебе, пригоняя много скота, мост обрушился, и вода унесла всех: и людей, и скотину, и друзей жениха. Но как говорится, храбрец всегда выделяется своими отважными делами, не то что коня, но и его одежду вода унесла, но твой зять, как рыба переплыл эту огромную реку, перешел на другой берег. А я пришел за одеждой для него, и чтобы послушать, что ты скажешь.

Тут же хан, ой, что тут сказать, из самых дорогих тканей, которых больше в мире нет, приказал сшить прекрасную одежду, какой в мире ни у кого нет: нижние брюки, нижнюю рубашку, из красивой ткани верхнюю рубашку, верхние штаны, красивую черкеску, каракулеву блестящую шапку, серебряный пояс, серебряный кинжал, серебряные газыри и отдать лисе:

– Да, ему это наверно не понравится. Я не смогу на словах описать его одежду, но отнести то, отнесу, – сказав (лиса), взяла под мышку одежду и ушла. Пошла к парню, одела как подобает и рассказала всю историю. Тут же хан отправил людей, которые построили мост лучше и красивее чем раньше.

Лиса парню:

– Ты не смотри на свою одежду, не стесняйся и не падай духом. Они не знают, что ты такой неважный, думают, что такого замечательного как ты в мире нет, – сказав, пыталась учить парня.

К тому времени как парень одевался, хан собрал людей, чтобы сопровождать жениха. Они ввели зятя во двор хана, стреляя из ружей и устраивая большой той. Тут же по обычаям, дочь хана отдали за бедного мельника. В эту ночь, парень остался с дочерью хана. Утром девушка, позвав лису, сказала:

– Не пойму, из какого рода этот парень. Кроме того что, как человек, не видевший одежду, смотрел на свою новую одежду, ничего не сделал.

Лиса:

– Ой, добрая невестка, он-то точно видел, а такую одежду, какая у него была, никто еще в мире не видел. Он думал, что у него некрасивая одежда, и стеснялся вас, – сказав, вышла и пошла в комнату жениха.

– Эх, чтобы ты умер! Сколько раз я тебе говорила, чтобы ты не смотрел на свои вещи. И дочь хана утром пожаловалась, что ты все время смотрел на свою грудь и ничего не делал, – сказав, лиса отдельно от всех сильно поругала там парня.

И на вторую ночь парень с девушкой остались вместе.

Утром лиса пошла и спросила:

– Эй, девушка, ну как провели эту ночь.

Девушка:

– Даже не спрашивай. Всю ночь не дал спать, оказывается, ты была права, и с ним было то, что ты сказала, – сказав, выразила свое довольство. Утром хан собрал людей и проводил в дом для гостей с танцами и песнями. Лиса шла впереди них. Лиса не стала вести их к мельнице, где жил мельник, а повернула к дому, где жили много богатых великанов.

Лиса сказала людям, сопровождающим жениха:

– Да, как вы сами видите в доме, куда парень ведет свою жену, почти нет людей. Всю дорогу пока не дойдете до дома, стреляйте в ружья, чтобы громко шумели выстрелы. Если вы будете идти по дороге, которая поворачивает вверх, то сразу же дойдете до дома жениха.

Оставив идти их, сама быстро добежала до места, где жили великаны.

Когда лиса дошла, великаны, кто перемальывал муку, кто готовил, кто чистил пшеницу, кто раскладывал солому.

Лиса сказала великанам:

– Ой, несчастье вошло в ваш дом. Там идет огромная армия, как дойдут, то перебьют вас всех, перережут. Бегите, если не сможете убежать, сейчас перебьют вас, наполнят ваш дом кровью, – сказав, забеспокоила их, и вдруг вправду раздался шум от выстрелов.

Услышав это, великаны, оставив все, разбежались. А сопровождение жениха, словно армия, шла, громко шумя. Придя, тут же привели все в порядок.

Невесту быстро отвели в дом парня, а люди сопровождавшие жениха поели, попили и возвратились обратно по домам. Лиса же, побыв несколько дней, ушла в лес. Невеста, так как в доме не было женщин, немного отдохнув, начала заниматься домашними делами. После лиса, вернувшись обратно, осталась жить с ними.

Они жили очень хорошо в больших белых домах, оставшихся от великанов. Ели их пищу, собирали и мололи пшеницу.

Однажды лисе в голову пришла хитроумная мысль. Она сказала парню: «Я не буду больше с вами жить», – и ушла в лес. Лиса отыскала тех великанов, которые сбежали из того дома, и решила напустить их на парня. Думала рассорить их, а сама лежать и смотреть на это со стороны с усмешкой.

Так однажды в жаркий день, прогуливаясь по лесу, лиса заметила великанов, которые хотели уйти из этих мест подальше, подбежав к ним:

– Ой, да ну вас! Зря говорят, что вы сильные и смелые. Вы знаете, кто тот человек, который вас выгнал из дома и живет на вашем богатстве? Это тот человек, которого я напугала и съела всех его овец, это тот трусливый мельник, – сказав, рассказала все.

Великаны не поверили лисе, но послали с ней самого сильного из них. Как только дошли до домов, великан подумал, что она собирается его погубить и остановился.

– Ей-богу, я говорю правду. Если ты мне не веришь, тогда я пойду вперед. Ты иди за мной и держи меня за хвост, – сказала лиса.

Лиса пошла вперед, а вслед за ней шел великан и держался за ее хвост.



Парень, увидев их, предупредил жену:

– Теперь слушай меня. Я тебе скажу: «Ага, зайди в дом и вытащи топор и нож, которые находятся над дверью, лиса сюда ведет кого-то. Давно мы их не забивали». А ты бегом зайди в дом, – сказав, научила.

Как только лиса и великан показались из-за холма, парень, как и предупреждал, крикнул жене:

– Давай быстро, вытащи топор и нож.

Жена побежала в дом. Великан, услышав его голос, насторожился и сжал хвост лисы еще сильнее.

Парень вновь крикнул:

– Ну, скорее, пожалуйста! Давай! Тащи, веди его сюда, лиса. Давненько мы не пробовали их мясо, хоть наедемся!

Услышав это, великан поднял лису за хвост вверх и словно плетью, так сильно ударил, что размазал ее по земле. С этого дня у мельника стало еще больше имущества, и они с женой спокойно жили-поживали.

А великан, после того как убил лису, вернулся домой и рассказал всем остальным все, что там произошло. Они не то, что думали вернуться обратно, так перепугались этого парня, что решили уйти еще дальше и отправились в путь. Они и сегодня, днем и ночью, идут, не останавливаясь.

Еще несколько лет они будут идти. Пусть и вы, и мы, друзья, не уйдем с этого мира, как эти великаны не дойдут до того места.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 1. Записал Ж.М. Гузеев от Цовкаева Алия (1902 г.р.). Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка является одним из вариантов сказок о лисе и мельнике. Здесь лиса представляется умной, хитрой и расчетливой, а мельник бедным и трусливым.

Главный сюжет сказки таков, что лиса, пообещав женить мельника, съедает всех его овец. Но, благодаря хитрости и смекалке, это ей удается. Лиса обманывает хана и женит его дочь и нищего мельника, выдав его за сказочного богача. Но смекалка проявляется в том, что ей удается обмануть также великанов и забрать их дом для мельника.

В этой сказке образ лисы дается двояко: в первой части как помощница мельника, во второй, как коварная обманщица. Так как она после всего хорошего, что сделала для парня, решила испортить его жизнь. Отыскав великанов, которых прогнала, хотела натравить на мельника, но пострадала сама.

Мораль сказки такова: «Не рой ни кому яму, а то сам туда попадешь».

ТИРМЕНЧИ БЛА ТЮЛКЮЧЮК

Эртте-эртте бир тирменчи кишичик жашап болганды. Бек жарлы болуп, жаланда алты тауугу болмаса, ёзге малы болмаганды. Ким уууч берсе да, аны ашап турганды.

Бир кюн анга кьонакыгъа бир тюлкючюк келгенди.

– А маржа, тирменчи, этсинип келеме бир тауукъчукъ кес, – дегенди.

Тирменчи не этерик эди, кесгенди да, сыйлаганды. Сора ол халда тюлкючюк хар кюнден жюрюп, тирменчини алты тауугуун да кьабып бошаганды. Жетинчи кюнде да келгенди да, тауукъла тауусулгандыла, тюлкючюк а тирменчини кьысханды:

– Энтта бир тауукъ тап, – дегенди.

– Да кьайдан табайым. Битеу тауусулгандыла, – дегенди.

Тюлкючюк сора айтханды:

– Алай эсе, ёпге шишни отха сал да, кьыздыр.

Тирменчи кьоркьаракъ да болуп, салганды да, шишни кьып-кьызыл этгенди.

Сора тюлкючюк айтханды:

– Энди тюз башымдан тебуре да, сыртым бла кьуйругууму кьыйырына дери юйют.

Тирменчи уа кьоркьду.

– Ашап кьояма, бусагъат юйют дейме да, – деп тирменчини кьоркьутду. Алып, ол халда тюлкючюкню юйютдю.

Сора тюлкючюк кьычырыкъ этип кьачып, бир уллу сыртны башына чыкыганды. Кийикле, буула, маралла кьалмай жыйылгандыла.

Андан тюлкю:

– Эй, нек турасыз! Бу дуня таш да, агъач да жанып келеди, мен да кюнден кьутулганма кьачып, – дегенди. – Энди мен жаланда бир жер билеме, от жетмей кьаллыкъ, – деп, тюлкючюк кьачып, ол кьадар кийик ызындан чабып, бир ханны сарайына киргендиле.

Тюлкючюк, чабып, кьабакъны ичинден да кьылычын салганды. Тюлкючюк сора эшикге чыгып, алай олтурганды. Бир заманда ханны ёзюрю келгенди.

– Нек олтураса, тюлкю? – деп сорганды.

– Ханнга жумушум болуп келгенме.

Ханнга баргандыла, ёзюрю айтханды:

– Санга бир тюлкю, жумушу болуп, келгенди.

Хан сейирсинди:

– Тюлкю манга жумушха келгенди, барчыгыз чакъырыгыз да бир кёрейик!

Тюлкючюкню чакъырдыла эм хапар содула:

– Не жумушунг барды, тюлкючюк?

– Мен тамаша кьызынги кьарындашыма тилейме. Мен адамма, тюлкю сыфатха киргенме ансы, кьурулай да келмегенме. Малларыбызны артында кьалган хаскурдуларындан келтиргенме да, келигиз да аланы да кёрюгюз.

– Сакъ кьарагыз, ансы кесибизни тукъумдан болмаганнга юркген этедиле, – дегенди.



Барып къарагъанларында, алай ариу малла, буула, кийикле кибик «Не аламатдыла, артта къалгъан хаскуртлары эселе, бирсилери уа къаллайла болурла», – деп, тамаша болгъандыла. Эм не бай эдиле дедиле, аланы алай кѳргенде, не этерик эдиле. Хан кызына болжал этгенди.

Сора тюлкючюк жортуп кетгенди да, тирменчиге:

– Хайда, мени бла тебире, – дегенди.

– Тирменими уа не этейим да?

– Не этериксе, къой да кет. Терк бол ансы ашап къоярма, – деди. – Тирменчи къоркъуп тебиреди да, экиси да келе-келип, ол элге жетгинчи бир кѳпюрге тюбедиле.

Сора тюлкю айтды:

– Хайда, энди сен бу кѳпюрни буз, – деп, кѳпюрни битеу буздурду. – Энди кымыжа бол, битеу быстырларын теш, – деди да. Тешдирип быстырларын суугъа атды. – Энди, мен келгинчи былайдан ары-бери кетме. Кетсенг ашап къоярма, – деди.

Тюлкючюк чабып келип ханнга:

– Ай, юйюгюзге, сен не тукъум ханса!

– Былайда кѳпюрни иги ишлемей. Жюз фаятон алып, киеу нѳгер бла келе тургъанлай кѳпюр тюшюп, битеу ырысхысын да суу алды да кетди. Сени киеуюнг а асыры жигитден, быстырларын да эрлай сыдырып, кеси уа алай чыкыгъанды, – деди.

Сора хан битеу партнойларын жыйгъанды. Тюрлю-тюрлю кийимле этдиргенди.

Тюлкю уа:

– Энди мен кесим элтмесем, сизден уялгъан этерикди, – дегенди да. Кеси быстырланы алып, тирменчиге келгенди. – Хайда, энди ма бу быстырланы кий, – дегенди.

Тирменчи уа киерге унамагъанды да, тюлкючюк:

– Ашап къоярма, – деп, чабып, тырнакълары бла аркъасын тырнап, къанын бардырып, кийдиргенди.

Ханнга алып баргъанды. Ханны къатында олтуртханды.

Ол жарлы, жукъ кѳрмеген тирменчи, бѳркюн алып, тѳгерегине къарап, быстырларына къарап, ханны сѳлешгенине жууап бермегенди.

Сора хан, тюлкючюкню бир жанына чакъырып, соргъанды:

– Бу не сейирди, ѳмюрюнде жукъ кѳрген болмаз ансы, былай нек этеди?

– Эй, тели хан! Сен билмеймисе, ол сени къатынгда олтурургъа ыйлыкъсынып этеди. Сен аны кийимлерин кѳрсенг, къоркъмай къатына бармаз эдинг, – деди.

Сора хан биягъы партнойланы жыйды да, кюмюшден бла алтындан кийимле этдиргенди.

Сора тюлкючюк:

– Энди киерик кийимлеринге къарасанг, мен сени ашамай къоймам. Хан не зат айтса да, анга жууап берип тур сен, – деди.

Сора ол кийинип, ханны жанында кийимге къарамай, сѳзюне жууап берип турду.

Сора неках этгендиле ханны кызы бла тирменчи.

Тирменчи бир да жарымай тургъанды да алай бир кюнде кызы тюлкючюкню кесине соргъанды.

– Сени къарындашынг былай мудах некди?

– Да, сен аны къалай билмейсе, жунчуп турады. Кёрмеймисе, ёлорге аздан къалып, аркъасын ташла сыдырып, суудан алай чыкъгъанды, – деп, аркъасын ачып кёргюзтдю.

Бир эки ай жашагъандан сора, тюлкючюк ханнга айтханды:

– Тебирерге керекбиз, – дегенди. Жюз файтон да жарашдырып атланганды.

Тюлкючюк сагъыш этгенди, энди адам муну къайры элтсин, тирменнге жарамаз – деп. Сора эсине тюшгенди. Бир жерде, бир уллу къалада тогъуз эмеген жашап болгъандыла да, тюлкючюк сагъышлы болгъанды, энди аланы къалай кыстайым андан деп.

Сора айтханды:

– Энди къонакъ хазырча, къонакъбай хазыр болмаз. Мен алгъа барайым, – деп, чабып кетгенди.

Бир заманда тогъуз эмеген да ындыр баса тургъанлай, келгенди да, кычырыкъ этип, юслерине чапханды. Эмегенле къаугъа болуп:

– Не болгъанды, не кычырыкъды бу? – деп соргъандыла.

– Дуния жанып, кюйюп келеди, кёрмеймисиз мени сыртымы?

– Энди дуния жанып келе эсе, не этейик? – деп, эмегенле къайгъы болгъандыла.

Тюлкючюк айтханды:

– Энди салам тишни тюбюне киригиз да, мен суу къуюп турурма, сиз а жанмай къалырсыз, – деп, эмегенлени тиш тюбюне жыйгъанды да, от салгъанды. Сегизиси кюйюп, бирлери уа жарты кюйген болуп къутулгъанды.

Тюлкючюк киеу нёгерни аллына чабып, барысы да къалагъа келип, уллу той болгъанды.

Эмегенлени алтынларындан бирерин берип, киеу нёгерни алай ашыргъанды.

Сора алай ашай-жашай тургъандыла. Тюлкючюк, ханны кызы, тирменчи. Сора тюлкючюкню ашагъаны, олтургъаны да тирменчиге кёп кёрюне башлагъанды.

Алай эте келип тюлкюню кыстагъанды тирменчи. Сора тюлкючюкге бек ачыу тийип айтханды:

– Мен санга ханны кызын да алып, къала да берип, тирменден да чыгъарып, сен а манга алай этесе, мен бусагъат эмегенни алып келип, сени ашатайым, – деп кетгенди.

Излей барып, эмегенни тапханды, кюйюп ырахын болуп тургъанлай. Сора тюлкючюк айтханды:

– Кел, сени юйюнг кюймей кългъанды. Юйюнгде уа бир адам улу жашайды. Барайыкъ, – дегенди.

Сора тюлкючюк эмегенни алып келгенин, тирменчи кёргенди. Тирменчи бек къркьуп, чабып къатынына айтханды.

Къатыны да:

– Сен, игилик этгеннге, аманлыкъ этесе. Болса да чыкъ да, «Мен сау эмеген келтир деген эдим, сен а жарты алып келесе да!» – де да кычыр, – деди.

Тирменчи чабып, алай айтып кычырды.



Алайлай а эмеген:
– Эй а, сен мени борчха алып келе кёреме да, – деп, тутуп тюлкючюкню кётюрюп, жерге уруп, жакъды да, артха айланып, къачып кетди.
Тирменчи уа ырахат ашап-жашап къалды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 10 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди. Алай жазыу халына кёре, жомакъ Огъары Бахсанда жазылгъаннга ушайды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ тирменчини бла тюлкюню юсюнден жомакъладан бир вариантыды. Насийхат халда жазылгъанды. Игиликге аманлыкъ этерге жарамгъанын билдиреди.

МЕЛЬНИК И ЛИСИЧКА

Давным-давно жил-был один мельник. Он был очень беден, кроме как шести куриц, других животных у него не было, питался тем, кто что даст.

Однажды к нему в гости пришла лиса.

– Ой, мельник, хочу мяса поесть, зарежь одну курицу, – попросила она.

Что мельник мог сделать, зарезал и угостил. Лиса также ходила еще несколько дней, пока не съела всех его куриц.

– Найди еще курицу, – сказала лиса.

– Да откуда я найду, все уже закончились, – ответил он.

Тогда лиса сказала:

– Если так, возьми вертел, поставь на огонь и разогрей докрасна.

Мельник испугался, но поставил вертел на огонь и разогрел докрасна.

Тогда лиса сказала:

– Теперь опали, начиная от головы до кончика хвоста.

Мельник испугался:

– Я тебя сейчас съем, быстро опали, – сказав, напугала мельника.

Мельник взял и в том же порядке опалил лисичку.

Тогда лисичка с криком поднялась на крышу холма. Собрались все олени, туры, оленихи.

Тогда лиса сказала:

– Эй, что вы стоите! В этом мире все горит: камни, леса, и я еле убежала. Я знаю только одно место, где огонь нас не достанет, – сказав, лиса побежала, а за ней последовали все эти животные и забежали в сарай хана.

Лиса побежала и закрыла дверь на ключ. Вдруг это заметил охранник хана.

– Почему ты сидишь, лиса, – спросил.

– Я пришел к хану по делу.

Пошли к хану и охранник сказал:

– К тебе лиса пришла по делу.

Хан удивился:

– Лиса пришла ко мне по делу, идите и позовите, посмотрим!

Позвали лису и спросили:

– Какое у тебя дело ко мне, лиса?

– Я прошу руки твоей прекрасной дочери для моего брата. Я – человек, просто вошел в образ лисы. Кстати, пришел не с пустыми руками. Я привел остатки наших животных, идите и посмотрите. Смотрите осторожно, а то они пугаются незнакомцев, – предупредила лиса.

Когда пошли смотреть, увидели таких красивых животных – как дикие олени. Они удивились, что те такие прекрасные, и подумали, что если эти остатки такие, а остальные у них каковы. И как они богаты. Когда хан увидел их, что бы он мог сделать: засватал свою дочь. Тогда лиса побежала к мельнику и сказала:

– Давай, собирайся со мной пойдешь.

– А что мне сделать с мельницей?

– А что делать, оставь. Быстро собирайся, а то съем, – сказала.

Мельник испугался и собрался с ней, они шли-шли и, не доходя до села, увидели мост.

Тогда лиса сказала:

– Давай, сломай этот мост. Теперь снимай все вещи и разденься догола. – Заставив снять вещи, выкинул все в воду. – Теперь, пока я не приду, никуда не уходи. Если уйдешь, съем – сказала.

Лиса прибежала к хану:

– Ой, да какой же ты хан! Почему вы не починили здесь мост. Мы шли с друзьями жениха и везли сто повозок подарков, но мост обрушился, и река унесла все богатство. А твой зять такой смелый, что сбросил с себя всю одежду и так вышел из воды, – сказала лиса.

Тогда хан собрал всех своих портных, и они сшили много разной одежды.

А лиса говорит:

– Если я сама не понесу одежду, он будет стесняться. – Взяв вещи, пришел к мельнику. – Давай, теперь одевай эту одежду.

Мельник отказался одевать. Тогда лиса подбежала со словами:

– Сейчас я тебя съем, – и расцарапала когтями ему спину так, что кровь потекла.

Потом повела его к хану и посадила рядом. А этот бедный мельник, который никогда раньше такого не видел, снял шапку, смотрел по сторонам, смотрел на свою одежду и не отвечал на вопросы хана.

Тогда хан позвал лису в сторонку и спросил:

– Это удивительно, он наверно в жизни ничего не видел, а то почему себя так ведет?

– Ой, ты глупый хан! Ты не понимаешь, он просто стесняется сидеть рядом с тобой. Если бы ты видел его одежду, просто не смог бы без страха к нему подойти.

Тогда хан опять позвал портных и приказал сшить из серебра и золота ему одежду.

Тогда лиса сказала мельнику:

– Если ты еще будешь смотреть на свою одежду, я тебя съем. Что бы хан ни спросил, отвечай ему.

Мельник оделся, не стал смотреть на свою одежду рядом с ханом и отвечал на все его вопросы.



Тогда поженили дочь хана и мельника. Парень все время ходил хмурый, и однажды девушка спросила лису:

– Почему твой брат такой хмурый?

– Да как ты не понимаешь, он просто смущается. Видишь он еле спасся из реки, камни расцарапали ему спину, – сказала лиса и показала ей спину мельника.

Так прожили два месяца, и лиса сказала хану.

– Нам пора собираться, – говорит.

Тогда они собрали сто повозок и отправились в путь. Лиса подумала о том, куда человек может их повезти, ведь на мельницу нельзя. Тогда она вспомнила, что в одном месте, в огромном замке жили девять великанов. Лиса задумалась о том, как их оттуда выгнать.

Тогда лиса сказала:

– Теперь как говорят, как гость готов, хозяин готов не бывает, – и сбежала.

Лиса прибежала в то время, когда все девять великанов молотили зерно, и с криком набросилась на них. Великаны перепугались:

– Что случилось, что за крики? – спросили.

– Весь мир горит, видите мою спину?

– Если весь мир горит, что нам делать? – забеспокоились великаны.

Лиса сказала:

– Спрячьтесь под копной соломы, а я буду вас поливать водой, и вы не сгорите, – и собрала великанов под копной.

Восемь из них сгорели, а один из них наполовину сгоревший, сбежал.

Лиса побежала навстречу к друзьям жениха, и они все пришли в замок и сыграли большую свадьбу. Провожали гостей, подарив им по одному золоту великанов.

Так они жили-поживали: лиса, дочь хана, мельник. Тогда мельнику стало казаться то, что ест и отдыхает лиса для них обуза.

Так они жили, и мельник прогнал лису. Лиса очень рассердилась и сказала:

– Я тебя женила на дочери хана, отдала замок, вытащила из мельницы, а ты со мной так поступаешь, я сейчас приведу великана, чтобы он тебя съел, – сказав, ушла.

Искала и нашла великана, обгоревшего, немощного. Тогда лиса сказала:

– Идем, твой дом не сгорел. В твоём доме живет один человек. Пойдем, – сказала.

Когда мельник увидел, что лиса ведет великана, то очень перепугался, прибежал к жене и рассказал.

А жена ответила:

– Ты оплачиваешь злом, тому, кто для тебя сделал добро. Но все же выйди и крикни: «Зачем ты ведешь наполовину сгоревшего, а не здорового».

Мельник побежал и крикнул так.

Тут великан:

– Да ты меня ведешь на спор, – сказав, поднял лису, ударил по земле и размазал, а сам убежал.

Мельник же стал спокойно жить-поживать.

*Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 10.
Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно. Но по языковым особенностям текст, похоже, был записан в с. Верхний Баксан.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка является одним из вариантов сказок о лисе и мельнике. Сказка поучительного характера. Учит, что нельзя за добро, отплачивать злом.



ТЮЛКЮНЮ ХЫЙЛАСЫ

Эртте заманлада бир патчах кызы болганды. Бек ариу кызы. «Мен бир зат айтырыкыма. Аны толтурганга барлыкыма», – дей эди. Ол айтханын толтурмагъанланы башларын кетерип турганды. Узакъ жерден бир жаш келгенди анга. Жолда келе турганлай, бир талагъа чыгъады. Талада кийикле, къушла жырлай эдиле. Жаш бир уллу бууну ушкок бла атаргъа тебирегенди.

Ол буу:

– Мени атма. Юсюмден тюкле ал да, керекли заманда атха жетдир да, мен сени ишинге жарарма.

Бууну да кююп, тенгиз жагъасы бла барады. Уллу чабакъны кюреди. Аны да атып башлагъанлай: «Угъай, атма! Къанатымдан бир тюк ал да, керек болсам атха тийир», – дейди.

Агъачны ичи бла барады да, тюлкюню кюреди: «Атма мени! Мени юсюмден тюк ал да, атха салсанг, мен жумуш этерме», – дейди.

Тюлкюню кююп, жаш ол патчах кызы болган жерге барады.

Кызы айтады:

– Кюй, жаным ауруйду сени боюнунгу кесерге.

– Къатын кылыч мени кесалмаз, – дейди жаш.

Кызы:

– Суйген жерингде букъ. Мен сени табарма. Табалмасам, сора сен мени хорлайса. Юч кере бугъарса, ючюсюнде да тапсам, башынгы кетерликле.

Жаш ол буула болган жерге къайытады да, бууну тюгюн атха жетдиреди. Буу келеди.

Буу айтады:

– Аркъама мин!

Буугъа минип, жаш бир дорбунга барып бугъады. Алай патчах кызы, кюзгюсюн кюннге буруп излей кетип, жашны табады. Жаш салып, патчах кызыны аллына барады.

Патчах кызы:

– Кюй, мен сени ёлтюрюрге суймейме, бар.

Биягъы жаш барады да, чабакъны къанатын атха жетдиреди. Чабакъ шырт деп жетеди алайгъа. Чабакъны сыртына минип, жаш терен тенгизге киреди. Биягъы кызы кюзгю бла къарай келип, тенгизни ичинде окъуна жашны табады.

Жаш биягъы кызыгъа барады да, кызы:

– Кюй, ёлтюрюрге суймейме сени, – дейди.

Жаш тюлкюню тюгюн атха жетдиреди. Тюлкю келеди. Битеу болган затланы тюлкюге айтады.

Тюлкю:

– Юч кюн болжал ал. Кызы бир уллу ташны юсюне минип къарайды. Мен а ол юч кюнню ичинде, тышындан къазып, жол этип, ол ташны тюбуне жетерикме. Къазылган топуракъны, ол ташны аллында барган суугъа, атып турлукъма.

Жаш барады да кызыгъа:

– Юч кюн болжал бер, – деп тилейди.

Кызы:

– Тёрт кюннге окъуна берейим.
Къыз къарайды. Излейди, излейди да табалмайды.
Къыз тюнгюлгенден сора, жаш чыгып келеди да, къызны алады.
Тюлкю жашха:
– Энди мен сени патчах этдим, сен а мен айтханны этмесенг, башынгы тюбюне этерме.
Жаш:
– Айт!
Тюлкю:
– Мен ёлгюнчю, мени юйде тутарса, кечиндирирсе. Ёлгенден сора, ариу кебинлеп, къюбюрге салырса.
Тюлкю тура турады да, сора ёледи.
Кюбюрге салмай, тюлкюню багушха атадыла. Тауукъла къатыла башлагъынчы жата келип, тюлкю сау болады. Туруп, келеди да жашха:
– Сёзюбюз не эди? – дейди.
Жаш:
– Жангылдым. Мындан сора алай эттем.
Бираз жашайды да, тюлкю ёледи. Тюлкюню кебинлейдиле да кюбюрге салып, киритлейдиле. Хауа жетмей, тюлкю керти да ёледи.
Бираздан тюлкюню тышына атхандыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 15 паспорт. Этезланы Гугуну жашы Хамидден Отарланы И.М. жазгъанды. Къачан, къайда жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ тюлкюню юсюнден жомакъланы бир вариантыды. Энчилиги патчах къызны алыр ючюн, аны айтханын этерге керек эди. Ол жумушха жашха тюлкю хыйласы бла болушады.

ХИТРОСТЬ ЛИСЫ

Давным-давно жила одна княжна. Она была очень красивая девушка.

«У меня одно условие: я выйду замуж за того, кто сможет его выполнить», – говорила она. А тем, кто не мог пройти эти испытания, она отрубала головы.

Из дальних краев к ней приехал один парень. По дороге туда, он вышел на одну поляну. Там шумели орлы и туры. Парень собрался застрелить из ружья одного тура.

А этот тур говорит ему:

– Не стреляй в меня. Оторви с меня волос, когда понадобится, прикоснись им коня, и я приду и помогу тебе.

Парень, оставив тура, пошел по берегу реки и увидел огромную рыбу. Как только он хотел ее застрелить, рыба сказала:

– Не стреляй! Оторви с моего плавника волос, когда понадобится, дотронься им коня, и я тебе пригожусь.

Потом шел парень по лесу и увидел лису:



– Не стреляй в меня! Оторви с меня волос, когда понадобится, прикоснись им коня, и я приду и помогу тебе.

Оставив и лису, парень дошел до местности, где жила эта девушка.

Девушка сказала:

– Уходи, мне жалко тебе голову отрубить.

– Меч женщины не сможет отрубить мне голову, – сказал парень.

– Спрячься, где хочешь, я тебя найду. Если не смогу тебя найти, тогда ты победишь. Ты спрячешься три раза, если я смогу найти все три раза, тогда отрублю тебе голову.

Тогда парень возвращается на поляну, где встретил туров и дотрагивается коня волосом тура.

Тур прибегает и говорит:

– Садись на меня верхом!

Верхом на туре, парень прячется в одной пещере. Тогда княжна повернула свое зеркало к солнцу и, поискав в нем, нашла парня. Парень опять приходит к княжне.

Княжна говорит:

– Уходи, я не хочу тебя убивать.

Парень опять идет и волосом из плавника рыбы касается коня. Рыба быстро приплывает. Верхом на рыбе, парень спускается в морское дно, но девушка, посмотрев в зеркало, находит парня на глубине.

Парень опять приходит к девушке, а она ему и говорит:

– Уходи, я не хочу тебя убивать.

Теперь парень дотрагивается коня лисьим волосом. Лиса прибегает. Рассказал (он) лисе обо всем что случилось, а она говорит:

– Отсрочь поиски на три дня. Девушка смотрит в свое зеркало, стоя на большом камне, а я в течение трех дней выкопаю туннель отсюда под этот камень. Землю, которую выкопаю, выкину в воду, протекающую перед этим камнем.

Парень пошел к этой девушке и попросил:

– Дай мне отсрочку на три дня.

Девушка:

– Я тебе дам отсрочку хоть на четыре дня.

Через четыре дня девушка смотрит, ищет и не может найти.

После того как девушка совсем отчаялась, парень выходит и женится на ней.

Лиса говорит парню:

– Теперь я сделала тебя князем, а если ты не сделаешь то, что я скажу, переверну все вверх дном.

Парень:

– Говори!

Лиса:

– Пока я не умру, будешь держать меня дома, и ухаживать за мной. После смерти красиво обернешь меня в саван и положишь в сундук.

Лиса, прожив, умерла. Ее не положили в сундук и выкинули в мусор.

Лиса лежала там, пока куры не начали ее клевать. Тогда она ожила и пришла к парню. Лиса спросила:

– Какой у нас был уговор?

Парень сказал:

– Ошибся. Больше так не поступлю.

Немного пожив, лиса умерла. Ее, обернув в саван, положили в сундук и закрыли на ключ. От нехватки воздуха лиса и в правду умерла.

Через некоторое время лису выкинули на улицу.

*Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 15.
Записал И.М. Отаров от Этезова Хамида Гугуевича. Когда и где
осуществлена запись, неизвестно.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

*Эта сказка является одним из вариантов сказок о лисе. Отличается
тем, чтобы жениться на княжне, нужно было исполнить ее поручение.
В этом деле парню помогла хитрость лисы.*



ЖАРЛЫ КИШИ БЛА ТЮЛКЮ

Бир элни кыйырында бир жарлы киши жашап болгъанды. Бай болургъа суююп, бир кюн обургъа:

– Билгич болама, юйрет, – дегенди.

Ол а:

– Сен билгич къайры боласа, андан эсе юйюнгде олтур, – деп кыстап ийгенди.

Сора ол киши жолда кырдыкланы, чапыракъланы жырта баргъанды да, бир арба жюк этип юйюне келтиргенди. Кеси уа «Ауруулану билиучю» деп эшигине жазгъанды. Ол жазыуну кѳргенде бир бай киши: «Мен узакъ айланып нек айланама, мында билгич болгъанда», – деп, анга барып:

– Жашым аягына балта бла ургъанды, аны сау этсенг юч тюмен берирме, – деди.

Сора жашын алып келди. Жарлы киши уа, зат да билмей бир чапыракъланы аягына кысып, юч тюменин да алып:

– Бир айдан сау боллукъду, – деп ийди.

Ол айтханча болгъанда, бай киши билгични хапарын битеу элге жайгъанды. Ол элден узакъ болмай, башха элде бир кѳзю сокъур болуп бир хан жашагъанды.

Ол билгичге келип:

– Кѳзюмю сау этсенг, кереги тенгли ахча берирме, – деди.

Кишичик анга да бир чапыракъ берип:

– Кѳзюнге кыыс, – деди.

Хан да кѳзюне кысып кетди. Бир талай замандан ханны кѳзю иги болгъан угъай, экинчи кѳзю да сокъур болду.

Хан алай болгъанын кергенде:

– Барыгъыз, ол итни бери келтиригиз, – деди.

Къуллары чабып, эшикге бара тургъан итни тутуп келдиле. Хан къуллары не келтиргенин билмей:

– Кесигиз башын, – деди да, итни башын кесдирди.

Бир кюн кызы ханнга:

– Агам, ол харип итни башын нек кесгенсе, – дегенде, хан жашны ѳлтюрмей, итни ѳлтюргенин билип, къулларына:

– Ай, налатла, мен сизге итни ѳлтюрюгюз демеген эдим. Арылакъда элде билгични келтиригиз дегенме, – деди.

Бир кюн киши жолгъа къараса, юч атлы атларын кѳмюк этдирип келгенлерин кѳрюп, нек келгенлерин билип, агъачха къачып кетди.

Агъачда бара ол бир уллу тюлкюге тюбеди.

Тюлкю анга:

– Кимден къачып бараса, – деп сорду.

Кишичик анга битеу хапарын айтды, тюлкю уа:

– Ол кыыйын иш туююдю. Ол аягынгда шаугютюнгден бир къапдырсанг, сау этеме, – деди.

Жарлы киши уа:

– Сау этсенг, къабарса, – деди.

Тюлкю бир къоянны тутуп, кѳзлерин чыгъарып, кишиге берди да:

– Быланы ханны кёзюне салсанг, сау боллукъду, – деп, думп болуп кетди. Кишичик барып кьоян кёзлени ханнга салгъанды да, ханны кёзлери сау болдула.

Сора хан кьууанып, он арбаны харакетден толтуруп, кесине да элталгъаны тенгли бир ахча берип ийди. Агъач бла бара, биягъы тюлкю аллына чыгъып:

– Хайда айтханыннгы эт, – деп тохтагъанды.

Кишичик арбалагъа барып, кьылыч алып келди, сора:

– Сен кёзюнгю кьыс да, мен а кесип ауузунга салайым, – деп, кьылычны аягъына тиреди.

Тюлкю кёзюн кьысханлай, уруп башып аллына тюшюрюп кьойду. Аны да терисин алып, юйюне келди. Сора ахчасына юй да, жер да алып тынч, ырахат жашап кьалды.

Энди мени да заманым жокъду, жомакъ да бошалды.

КьМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 11 паспорт. КьМАССР-ны Герпегеж элинде 98-жыллыкъ Биттирланы Эриуню жашы Хамзатдан Холаланы А.З. жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ тюлкюню юсюнден жомакъланы бир тюрлюсюдю. Мында адам кеси хыйлачы тюлкюню алдагъаныны юсюнденди.

БЕДНЯК И ЛИСА

На окраине одного села жил-был один бедняк. Однажды, желая разбогатеть, сказал знахарке:

– Хочу быть знахарем, научи.

А она:

– Как ты станешь знахарем, лучше сиди дома, – сказав, выгнала.

Тогда этот мужик по дороге домой собирал травы и листья и, загрузив ими целую повозку, привез домой. На входную дверь повесил табличку с надписью «Знахарь всех болезней». Увидев эту надпись, один богач, сказав: «Зачем я должен ехать в дальние места, когда здесь есть знахарь», – пришел к нему.

– Мой сын ударил топором по ноге, если ты его вылечишь, я заплачу тридцать рублей.

Потом привел своего сына. А бедняк, ничего не понимая, приложил к ноге лист какого-то растения, взял за это тридцать рублей и отправил со словами:

– Через месяц выздоровеет.

Когда все произошло именно так, богач рассказал про знахаря всему селу. В другом селе, находящимся недалеко от того села, жил-был хан, у которого один глаз был слепой. Он пришел к знахарю и сказал:

– Если вылечишь мой глаз, отдам сколько нужно денег.

Бедняк отдал ему тоже один лист растения и сказал:

– Приложи на глаз.



Хан ушел, прижав листок к глазу. Через некоторое время у хана не то, чтобы глаз выздоровел, а еще второй ослеп.

Когда хан это понял, сказал:

– Идите и приведите эту собаку сюда.

Слуги побежали, поймали собаку, которая проходила по улице, и привели к нему.

Хан, не зная, кого привели слуги, приказал:

– Отрубите ему голову, – и заставил отрубить собаке голову.

Однажды когда дочь хана спросила его:

– Отец, почему ты отрубил голову этой несчастной собаке? – хан понял, что отрубили голову не парню, а убили пса.

Он накричал на слуг:

– Ой, вы бессовестные, я вам не говорил, чтобы вы убили собаку. Я вам приказал привести знахаря, который живет в другом селе.

Однажды, когда бедняк посмотрел на дорогу, увидел трех всадников скачущих на вспенившихся конях. Он понял, почему они скачут, и убежал в лес.

Проходя по лесу, он встретил одну большую лису.

Лиса его спросила:

– От кого ты убегаешь.

Парень рассказал ей всю свою историю.

А лиса ему:

– Это дело не сложное. Если ты дашь мне откусить от твоей мышцы кусок мяса, я его вылечу, – сказала.

А бедняк ответил:

– Если вылечишь, откусишь.

Лиса поймала одного зайца, вытащила у него глаза и отдала бедняку.

– Когда ты их положишь к глазам хана, он излечится, – сказав, исчезла.

Бедняк положил заячьи глаза хану и тот излечился.

Тогда хан от радости десять повозок наполнил богатством и отпустил бедняка, отдав ему столько денег, сколько он смог унести. Проходя через лес, лиса вышла ему на встречу.

– Давай, исполняй свое обещание, – потребовала она.

Бедняк пошел к повозкам и принес оттуда меч:

– Ты закрой глаза, а я отрублю кусок мяса и положу тебе в рот, – сказав, приставил меч к ноге.

Как только лиса закрыла глаза, отрубил ей голову. Содрав с лисы шкуру, пришел домой. Потом, купив на деньги дом и участок, стал спокойно жить.

Теперь и у меня больше нет времени, и сказка закончилась.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 11. Записал А.З. Холаев в с. Герпегеж КБАССР от 98-летнего Биттирова Хамзата Эриуовича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка является одним из вариантов сказок о лисе. Здесь рассказывается о том, как человек сам обманул хитрую лису.

ТЮЛКЮ БЛА ЖАНДАР

Эртте-эртте бир тюлкю бла Жандар деген киши бирге шуёх болуп жашагъандыла. Жандарны байлыгы отун болгъады. Ол къалайгъа барса да, къургъакъ отун этип кегеди.

Бир кюн алгъа тюлкю:

– Жандар, сен байгъа кёп отуннга жюрюй, онгеуз болгъанса. Ол иги да ашатмайды, хакъ берген угъай да. Кел бюгюн аны къоюн сояйыкъ, – дейди Жандаргъа.

– Да къалай этербиз биз аны, къойчу кёрюр да къояр, – деди Жандар.

Тюлкю:

– Мен къойчугъа кёрюнсем, ол ушкогун алыр да, мени ызымдан тюшер. Мен а узакъдан узакъгъа къачарма. Сен а ол заманда бир къойну сой, – деди.

Къойчу тюлкюню кёргенлей, ушкогун алып, тюлкюню ызындан тюшеди. Тюлкю аны узакъдан-узакъгъа элтеди. Жандар, айтханыча, бир къойну сояды. Бир талай кюннге эки нёгери да этден тоюп айланадыла. Дагъыда тюлкюню Жандаргъа бир ахшылыкъ этериги келеди. Жандаргъа байны къызын алып берирге ант этеди. Кёп тюрлю хыйла бла тюлкю Жандар бла байны къызына неках этдиреди. Жарлы отунчу Жандарны тюлкю махтап неках этдиргенлигине, кийип барыргъа кийими болмайды.

Тюлкю анга ол сойгъан къойларыны терисин кийдирип, ариу-ариу хансладан ёшюнлерин толтурады. Жандарны байгъа келлик жолунда суу болады. Аны келе тургъанын эшитип, кёп халкъ, байны киеую келеди деп, аллына чыгъады.

Тюлкю Жандаргъа:

– Сен суудан ёте туруп. Жыгъылып къалгъанча этип, юсюнде кийгенлеринги суугъа ат, – дейди.

Жандар, ол айтханча этип, юсюнде терк хылы-мылыларын суугъа атып къояды.

Тюлкю уа суугъа секирип, туталмагъан кибик этип, барма къояды.

Къарап тургъан адамлагъа ол ариу хансла алтын, кюмюшча кёрюнюп байгъа:

– Сени киеуюнг алтындан-кюмюшден кийинип келе тургъанлай, кийимлерин суугъа жыгъылып алдыргъанды. Анга кийим табаргъа керекди, – деп билдиредиле.

Ол а анга ариу кийимле берип кийиндиреди. Жандар омакъ кийинип келип, уллу той-оюн бла байны къызын алып кетеди.

Тюлкю, байны къызын ол аман юйге элтсек, ёлтюрюр деп къоркъгъандан, кенг талада бир уллу къала кёрюп, анга айланады. Байны къызыны ызындан келген кёп халкъдан айырылып, тюлкю алгъаракъ къалагъа жетеди. Жетсе, къаланы сакълап тургъан тогъуз эмегенни кёреди.

Эмегенле тюлкюню кёрюп бир-бирине:

– Бу бек иги къабынчыкъ боллукъ эди, – дейдиле.

Тюлкю уа аланы бу сёзюн эшитип, кеси да къоркъгъандан къалтырай:

– Сиз мени ашай-ашай турурсуз. Алай ол келе тургъан халкъны кёремисиз, – дейди эмегенлеге.

– Не этедиле ала? – деп сорадыла эмегенле.



Тюлкю уа:

– Сизни ёлтюрюрге келедиле, – деп кьоркьутады эмегенлени.

– Да биз не этейик сора? – деп, сорадыла дагыда эмегенле.

– Сиз а ол салам тюбюне киригиз, – деп, тюлкю алайда саламны кёргюзтеди.

Эмегенле ары кирип букьганлай, тюлкю саламгъа от салып, эмегенлени кюйдюредди. Бир эмеген бир жаны да кюйюп агъачха къачып кьутулады.

Тюлкю алай эте тургъунчу, Жандар къатыны бла, битеу тойгъа келген халкъ бла къалагъа жетеди.

Тюлкю алларына чыгъып, къабакъны эшигин ачып, кьонакъланы кийиреди.

Келген халкъ, ол байны кызы да ол къала Жандарныкы сунуп, уллу сейир этеди эм байгъа: «Сени киеюнго бир ариу къаласы барды да, сен уллу сейир этер эдинг, бек байды», – деп барадыла. Бай да Жандарны байлыгына бек кьууанады.

Бир кюн тюлкю мен мынга быллай бир ахшылыкь этдим, ол а манга не этерикик болур деп, ауругъан кибик этди. Жандарны къатыны тюлкюню иги багъа башлады.

Алай Жандар къатынына:

– Къой-къой, муну неси бла кюреше тураса, – дейди. Аны алай айтханын тюлкю эшитип, агъачха кетеди.

Агъачдан ол бир жаны кюйюп кьутулгъан эмегенни табып:

– Кел, сизни къалагъыз да бир аман киши бла бир ариу къатын жашайдыла. Ол кишини ёлтюрюп, санга къатынын алайыкь, – дейди. Эмеген тюлкюню кьуйругъундан тутуп, къалагъа атланады.

Аланы алай келгенин кёрюп, Жандар бичагъын алып тюлкюге:

– Эй, тюлкю, сен аны нек алып келесе. Мен санга аллай буйрукь бермеген эдим да. Мен аны аллыкь туйюлме. Мен айтханны келтир, мен а маа бичакъны да билей турама, – деп кычырады.

Эмеген аны эшитип тюлкюге:

– Алгъын да бир жанымы юйютдюрюп, юйсюз-жерсиз этип, энттада ёлтюрюргеми элтесе? – деп ачыуланьп, тюлкюню уруп ёлтюрюп, агъачха къачып кетеди.

Жандар бла къатыны ашап-жашап къаладыла. Тюлкю кьуру аманлыкъны жоралап айлана кетип, кеси да онгмай ёлюп къалады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 2 паспорт. КЪМАССР-ны Огъары Жемтала элинде 96-жыллыкь Казийланы Исхакъны жашы Исмаилден Гузеланы Ж.М. жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакь тюлкю бла тирменчини юсюнден жомакъланы бир вариантыды. Мында тюлкю акъыллы, хыйлачы персонаж, Жандар а бош кьойчуча ачыкъланады.

Тюлкю Жандарны хыйла этерге юйретеди. Кеси уа, ханны алдап, аны кызын жашха береди. Аны бла да тохтамай, эмегенлени да ётюрюк бла юйлеринден къачырады, Жандарны жаш къатыны бла ары элтеди.



Бу жомакъта тюлкюню сыфаты эки тюрлю бериледи. Биринчи кесегинде, бу Жандаргъа болушады, алай экинчи кесегинде уа, хыйлалыгъы, харамлыгъы да керюнеди. Ол жашны сынап, ауругъанча этеди да, иги кермегенин билгенде, эмегенлени келтирип, аланы жоаргъа умут этеди.

Эмегенлени излеп, табып, Жандаргъа элтеме деп, алай тюлкю хыйлалыгъы болгъан жаш эмегенлени да жыйлачы тюлкюню да хорлайды. Бу жомакъ юйретюу халда жазылгъанды.

ЛИСА И ЖАНДАР

Давным-давно лиса и мужчина по имени Жандар жили дружно. Богатством Жандара были дрова. Куда бы он ни ходил, всегда возвращался с сухими дровами.

За день вперед лиса сказала Жандару:

– Жандар, ты так долго ходил по дрова для хозяина, что сам обнищал. Он тебя плохо кормит, не то что платить. Давай сегодня зарежем одного его барана.

– А как мы это сделаем, ведь чабан нас увидит, – ответил Жандар.

Лиса:

– Если чабан меня заметит, он возьмет ружье и последует за мной. Я буду убегать все дальше и дальше. В это время ты зарежь одного барана.

Чабан, как только увидел лису, взял ружье и последовал за ней. Лиса уводила его все дальше и дальше. Жандар же, как и говорил, зарезал одного барана. И несколько дней два друга ходили, наевшись мяса. Лиса хотела еще чем-то угодить Жандару. Она поклялась себе выдать замуж за Жандара дочку богача. Большой хитростью лиса обручила Жандара с дочкой богача.

Хотя лиса обручила бедного Жандара с дочкой богача, но у него не было одежды, чтобы одеть и пойти.

Лиса одела на Жандара одежду из шкур зарезанных ею баранов и набила ему за пазуху душистую траву. На пути Жандара к богачу была река. Услышав о том, что он идет, народ вышел на встречу к зятю богача.

Лиса сказала Жандару:

– Ты, будешь переходить реку, сделай вид, что упал в воду, и выкини все вещи в воду.

Жандар сделал так, как ему посоветовала лиса: быстро выкинул в воду свои вещи. Лиса прыгнула в воду и сделала вид, что не смогла поймать (вещи) и дала им уплыть дальше.

Людям, смотрящим со стороны, эти красивые травы показались серебром и золотом.

– Твой зять был одет в золото и серебро, когда шел сюда, но упал в воду, и вода унесла все вещи. Ему нужны вещи, – сказав, лиса дала понять богачу. И он одел Жандара в красивую одежду.

Жандар приходит, красиво одевшись, и забирает дочь богача шумной свадьбой.

Лиса испугалась, что ее убьют, если поведет дочку богача в бедный дом. Вдруг увидела на широкой поляне большой замок и повернула туда. Отделившись от людей, идущих за дочкой богача, лиса первая добегаёт до замка.



Дойдя до замка, видит девять великанов, охраняющих его:

Великаны, увидев лису, сказали друг другу:

– Она бы стала лакомым кусочком.

Лиса, услышав это, дрожа от страха, сказала великанам:

– Что они хотят? – спросили великаны.

А лиса:

– Идут, чтобы вас убить, – сказав, испугала великанов.

– Что нам теперь? – спросили еще великаны.

– Вы спрячьтесь под этим стогом сена, – сказав, лиса показала стог сена.

Как только великаны спрятались там, лиса подожгла стог и сожгла великанов. Один великан, сгорев с одной стороны, убежал в лес.

Пока лиса этим занималась, Жандар с женой и со всеми, кто шел на свадьбу, подошли к замку. Лиса выбежала им на встречу, открыла ворота и впустила гостей.

Люди, которые пришли, и дочка богача подумали, что этот замок Жандара.

Они очень удивились, и, придя к богачу, рассказали:

– У твоего зятя есть очень красивый замок, ты бы очень удивился. Он очень богат.

Богач тоже очень обрадовался богатству Жандара.

Как-то лиса раздумывала о том, сколько хорошего Жандару она сделала, и о том что он может для нее сделать, и притворилась больной. Жена Жандара начала хорошо ухаживать за лисой.

Но Жандар говорит жене:

– Оставь, что ты с ней возишься?

Лиса, услышав это, ушла в лес.

В лесу она нашла великана, сгоревшего с одной стороны, и сказала:

– Идем. В вашем замке живет один плохой мужик с одной красивой женщиной. Давай убьем этого мужика, а тебя женим на той женщине.

Лиса и великан, взявшись за ее хвост, отправились к замку.

Увидев, как они идут, Жандар взял нож и крикнул лисе:

– Эй, лиса, зачем ты его сюда ведешь. Я тебя об этом не просил. Приведи того, кого я просил, а я поточу нож.

Великан, услышав это:

– Раньше из-за тебя обжегся с одной стороны, остался без дома, а теперь ведешь меня убивать, – сказал, разозлившись, ударил лису об землю и убил, а потом убежал в лес.

Жандар и его жена остались жить-поживать, а лиса все время гонялась за злом, поэтому и сама погибла.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 2. Записал Ж.М. Гузев в с. Верхняя Жемтала КБАССР от 96-летнего Казиева Исмаила Исхаковича. Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка является одним из вариантов сказок о лисе. Здесь лиса представляется умной, хитрой и расчетливой, а Жандар бедным пастухом.

Как и в подобных сказках лиса обманывает хана и женит его дочь и нищего Жандара, выдав его за сказочного богача. Но смекалка проявляется

в том, что ей удастся обмануть также великанов и забрать их дом для Жандара.

В этой сказке образ лисы дается двояко: в первой части как помощница мельника, во второй, как коварная обманщица. Так как она после всего хорошего, что сделала для парня, решила испортить его жизнь. Отыскав великанов, которых прогнала, хотела натравить на Жандара, но тут парень с той же хитростью лисы, избавляет себя от великанов и от уже коварной лисы.

Эта сказка является поучительной.



УЛАКЪ

Бурун заманлада улакъ, бузоу, къозу шуёх болуп татлы жашагъандыла. Жаз башы келгенлей, ючюсю да таулагъа кетгендиле. Анда татымлы кырдыкдан тоюп, алай жашагъандыла. Кеслери да ёсген, семирген да этгендиле. Кюз арты жетди. Таулада къар жауду. Бузоу сууукъдан къалтырап башлады. Сора, не аз да тёзалмай, къарыуун бошап, жиляды.

Жиляй-жиляй былай айтды:

– Тенглерим келигиз энишге тюшейик, тюзде жылыракъ болур. Анда алыкъа къар да жокъду.

Алай улакъ бла къозу унамадыла. Бузоу аладан тилеп кюрешенди, алай айтханын этдиралмады. Сора кеси аллына кетди.

Жол айланчла бла бара, суу боюнуна тюшдю. Сууну ары жанына ётерге деп, кёпюрчюкге барды.

Ол аны арысына жетгинчи, ары жанындан бир уллу бёрю чыгып:

– Жолунг болсун, бузоучугъум! – деди.

Къоркъгъандан бузоуну тили тутулду, бир сёз да айталмады.

– Нек тынгылайса? Бир жукъ не айтмайса? – деп бёрю ачыуланды.

Бузоучукъ къалтырады, къайда болгъанын да унутду, кёзлери уа кюн жарыкны да кёрмейдиле. Болса да, кючден-бутдан саламлашды.

– Сау бол! – деди.

– Аллай бирге саламлашмай нек турдунг? Сен менден ыйлыгырча къачан болгъанса? – деп, бёрю алгъындан да бек ачыуланды.

Сюйсе, сүймесе да, бёрюден саулай къутулалмазлыгъын бузоу ангылады. Амалы алай болур эди, бузоучукъ бираз тынчайды. Бузоучукъну ол халин сезип, бёрю кесини уллу кючю болгъанын билди.

– Артха къарачы! – деп бёрю буюрду.

Олсагъатдан бёрю жетип тутду да, бузоуну ашады.

Таулада уа алгъындан да бек сууукъ болду. Къозу да сууукъгъа тёзалмай башлады.

– Кел энди тауладан тюшейик, анда жылыракъды, – деди къозу улакъгъа.

– Алыкъа эрттеди, ашыкъма. Энтта бир кесек турайыкъ, – деп жууап берди ол.

– Кел, бирге барайыкъ, эрикмебиз, – деп кюрешди къозу.

Алай улакъ тауладан тюшерге унамады.

Къозу кеси кетди.

Жияу жолчукъ бла сууну боюнуна тюшдю. Кёпюрчюкню кёрюп, ары тебиреди. Ол да кёпюрню арасына жетгени болду. Бирси жанындан биягъы бёрю аллына чыкъды.

– Жолунг босун, татлы къозучукъ! – деди.

Къозучукъну жюню ёрге турду, тили тутулду, кёзлери къарангы болдула, сёз да айталмай къалды.

– Не болгъанды санга? Аллай ёхтемли уа къачан болгъанса? Мени бла саламлашыргъа тенгсинмеймисе? – деп бёрю кычырды. Къозуну къатына барып, буюрду: – Артынг бла бери бурул! – деди.

Къозучукъ ары айлангынчы окъуна сермеп алып, бёрю аны да ашады.

Кесинлей къалгъан улакъ эригип башлады. Къыш сууугъу сюеклени окъуна юшюте эди. Ол да, энишге тюшерге деп, жолгъа чыкъды. Жаяу



жолчукъ бла биягыъ суу боюнуна тышдю. Ол кёпюрге миннгенлей, бирси жанындан бёрю чыкъды.

– Жолунг болсун, татымлы улакъчыкъ! – деди мухар бёрю.

«Ай, жарлы манга ёлюм а жетип кьалды кёреме», – деп улакъчыкъ кьоркъду. Алай кьоркъгыанын бёрюге билдирмеди. Тюзюнлей бёрюге кьарап, кьуйрукъчугъун кьымылдатып башлады.

– Ол бутларындагы уа не затды? – деп дагыда сорады бёрю.

– Ала уа кеслери алларына мени жауларымы тьююучю кьязыкъларымдыла.

– Ол башындагы узунларынг а не затларынгдыла? – деп сорду бёрю.

– Ала уа кеси алларына кесичю кьылычларымдыла, – дегенди улакъчыкъ. – Ала бла жолоучулары жолларын тыйгъан бёрюлени кьарынларын жарама.

Бёрю ары дери да кьоркъа тургъан эди, аны эшитгенлей а алай кьачды. Улакъ да аны ызындан кьуугъанча этди да, бир кесекге чапды. Бёрю агъачха ташайды да, кетди. Улакъчыкъ, кьууанып, юйюне атланды.

КьМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 3 паспорт. КьМАССР-ны Хабаз элинде 1927 жылда туугъан Бёзюланы Магомедден Гузейланы Ж.М. Жазгъанды. Кьачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъланы баш жигитлери кьозу, бёрю, улакъдыла, ала тауну башында жашайдыла, алай суукъ болгъанлай энишге тьюшерге сюедиле. Терсликлери уа неди: ала андан бирем-бирем тьюшедиле, тьюбюнде ач бёрюню сакълагъанын билмей. Биринчи кьозу тьюшгенлей, жыртхыч аны ашайды, экинчи, бузоугъа да ол кюн келеди, алай улакъланы уа бёрю хорлялмайды, нек десенг, кьоркъгыанын билдирмей, уллу сёлешип, хорлауну алады.

Кьарачай-малкьар жомакъланда улакъ битен юй жаныуарладан акъыллы, сабырча бериледи. Ол тотем жаныуаргъа саналады. Жомакъланда жыртхыч жаныуарланы хорлайды.

КОЗЛЕНОК

Давным-давно козленок, ягненок и теленок жили дружно, душа в душу. Как только наступила весна, они втроем ушли в горы. Они там жили и ели сытную траву. За это время они выросли и потолстели. Наступила осень, в горах пошел снег. Теленок стал дрожать от холода. Тогда, потеряв все силы и терпение, заплакал.

Плача, он сказал:

– Друзья, пойдёмте, спустимся вниз. Наверное, на равнине потеплее. Там еще нет снега.

Но козленок с ягненком не согласились. Теленок их упрашивал, но не смог уговорить. Тогда он ушел сам. Пройдя по извилистым дорогам, дошел до берега реки. Чтобы перейти реку, пошел к мосту. Когда переходил мост, еще не дошел до той стороны, когда оттуда вышел огромный волк.

– В добрый путь, теленок мой! – сказал.



От страха теленок, словно язык проглотил, не смог произнести ни слова.
– Почему ты молчишь? Почему ничего не говоришь? – сказав, волк разозлился.

Теленок задрожал, забыл, даже где находился, глаза уже солнечный свет не видели, но все же еле-еле поздоровался:

– Спасибо, – сказал.

– Почему до сих пор не здоровался? С каких пор ты меня стыдишься? – сказав, волк рассердился больше прежнего.

Хотел, не хотел, но теленок понял, что от волка живым не уйдет. Наверно так было суждено, от этой мысли теленок немного успокоился. Поняв поведение теленка, волк еще больше поверил в свои силы.

– Оглянись назад! – повелел волк, тут же набросился на теленка и съел.

В горах еще больше похолодало. Ягненок тоже не мог уже терпеть холод.

– Пойдем, спустимся, там теплее, – сказал, ягненок козленку.

– Еще рано, не спеши. Давай еще побудем немного, – ответил тот.

– Идем, вместе скучно не будет, – уговаривал ягненок козленка, но тот не захотел спускаться с гор.

Ягненок ушел сам. Он по тропинке спустился к берегу реки, увидев мост, пошел к нему. Как только ягненок дошел до середины моста, с той стороны тот же волк вышел ему навстречу:

– В добрый путь, вкусный ягненок! – сказал.

У ягненка шерсть встала дыбом, онемел, в глазах потемнело, не смог произнести ни слова.

– Что с тобой случилось? С каких пор ты стал таким гордым? Ты не считаешь нужным со мной здороваться? – закричал волк и, подойдя к ягненку, велел:

– Повернись назад!

Не дождавшись, что ягненок повернется, волк накинулся и съел его.

Козленку, который остался один, стало скучно. Холод зимы замораживал до костей. Козленок, чтобы спуститься в долину, собрался в путь.

По тропинке дошел до той самой реки. Как только он поднялся на мост, с другой стороны вышел волк.

– В добрый путь, вкусный козленочек! – сказал серый волк.

«Ай, я несчастный, оказывается, смерть моя настала», – подумав, испугался козленок, но не стал показывать волку свой испуг. Посмотрев прямо на волка, козленок стал шевелить хвостиком.

– А что у тебя это на ногах, – спросил волк.

– А это, сами по себе избивающие моих врагов, палки.

– А что это у тебя такие на голове длинные штуки? – спросил волк.

– А это сами по себе рассекающие мечи, – сказал козленок. – Ими я рассекаю животы волкам, которые останавливают путников с дороги.

Волк, который уже испугался, услышав это, убежал прочь. Козленок, сделав вид, что гонится за ним, немного бежал следом. Волк исчез в лесу, а козленок, обрадовавшись, ушел домой.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 3. Записал Ж.М. Гузеев в с. Хабаз КБАССР от Бозиева Магомеда (1927 г.р.). Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Главными героями данной сказки являются ягненок, теленок и козленок, которые живут высоко в горах, но с наступлением холодов хотят спуститься в долину. Вся проблема в том, что они это делают по одному, не зная того, что там их дожидается голодный волк. И вот, когда первым спускается ягненок, хищник съедает его. Второго, теленка, тоже ожидает такая же участь. Но вот с козленком волк не может справиться, потому что тот, переборов страх, овладевший им перед волком, находит в себе смелость устоять и уйти победителем.

В карачаево-балкарских сказках козел всегда изображен более умным и смелым, чем остальные домашние животные, так как является одним из тотемных животных, который в народном сознании трактуется с положительной стороны, и в борьбе с дикими животными всегда берет верх.



КЪАРТ БЛА АЙЫУ

Бир къарт, элни бара, бау ичинде сынжыр бла тагъылып тургъан айыуну кѳргенди.

– Ахшы къарт, – деп, тилегенди айыу, – суусапдан ёлеме. Ий маржа, мени суу боюнуна элтип, суусабымы бир къандыр.

– Сизни тукъумугъузну мен эрттеден таныйма, – дегенди къарт, – ахшылыкъны билмейсиз, хатадан тохтамайсыз.

– Атам-анам бла, ийнанмай эсенг а, битеу тукъумунг бла къаргъанама: мен санга бир тюрлю хата этмем, – деп, анга къадалгъанды.

Къарт ийнанып, айыуну тагъылгъан жеринден бошлап, суугъа элтгенди.

– Сау бол, къарт, – дегенди айыу. – Энди мен сени ашарыкъма, токъ къарыннга уа суу да татлы кѳрюнеди.

Арт аякъларына сюелип, айыу къартха тебирегенди.

– Ашыкъма, – дегенди къарт. – Барайыкъ да, бизге бек алгъа тюбегенледен юкюсюне сорайыкъ. Мени ашаргъа эркинлигинг барды деп, ала айтсала, аша. Ашагъанынг халал болсун!

– Анга да ыразыма, – деди айыу.

Элден чыгып, экиси да жолоучу боладыла. Бир базыкъ, уллу эмен терекни кѳрюп, анга барадыла.

– Ахшы эмен терек! – деп, башлайды къарт, – Ма бу анда бауда тагъылып тура эди. Мени суу боюнуна чыгъарып, суусабымы бир къандыр деп, бу айыуну тилегенин эшитсенг эдинг, сен да жазыкъсыныр эдинг. Бир тюрлю хата этмем деп, анты болгъанды. Жаным ауруп, мен муну суу боюнуна элтгенме. Энди ол мени ашаргъа умут этеди. Сен анга къалай къарайса?

– Эслеп манга бир къарачыгъыз, – дейди эмен терек. – Мени бутакъларым сыныпдыла, чапыракъларым жыртылыпдыла, бир жаным кюйгенди, бирси жанымы къабугъу алыннганды. Манга бу къыйынлыкъланы жетдирген ким болур дейсиз? Ол адам къолуну ишиди. Мени ауанамда солургъа тохтагъан адамла этгендиле. Бу къарт да аланы тукъумларынданды, ол себепден айыуну тюзге санайма. Айыу, аша аны!

Айыу кесин къартха атды.

– Угъай, алыкын эрттеди! Кел, энтта экеуленнге тюбейик, – деди къарт. Бара-барып, отлай тургъан къарт алашагъа тюбедиле.

– Ма бу айыу, – деп, башлады биягъы къарт, – бауда тагъылып тура эди. Суусапдан ёлеме, суу боюнуна мени бир чыгъар, деп тилегенди. Жаным ауруп мен аны суу боюнуна элтгенме. Сау бол дер орунуна, энди ол мени ашаргъа умут этеди. Халал ат, айт кесинги муратынгы.

– Мен жаш болгъанымда, иеми миндирип иги чапханымда, къарыууму аямай жюк ташыгъанымда, кѳтюрген ием мени бек ахшы багъа эди, кереклими тапдыра эди, – деди алаша. – Энди уа къарт, къарыусуз болгъанма. Ол мени арбазгъа да къоймайды, къыстап жибергенди. Бу къарт да мени иеми тукъумунданды. Айыу, бир да арсар болмай аша аны!

Къууанып айыу къартха мыллыгын атды.

– Ашыкъма, айыу, ашыкъма! Сѳзюбюзню унутханса, энтта биреуге сорургъа керекбиз, – деп къарт кесин къоруулагъанды.

Бара-барып ала тюлкюге тюбейдиле.

– Тенглерим, бусагъатда мен сизге бир зат да айталлыкъ туююлме. Иш къайда къалай башланнганын кѣргюзтсегиз, ол заманда муратымы айтырма, – дегенди тюлкую.

– Ай юйюнге, мен санга ангылатдым да, айт муратынгы, – деп тилегенди къарт.

– Болмазлыкъ затны тилемегиз. Быллай уллу иште кесими муратымы айтыр ючюн, иш къайда, къалай башланнганын кѣргюзтнюгюз. Ол заманда мен да муратымы айтырма, – дегенди тюлкую.

Айыу, къарт, тюлкую ол алгъа айыу инжилип тургъан баугъа баргъандыла.

– Энди, къарт, кѣргюзтчю: сен къалайны бара тургъанлай, айыуну кѣрген эдинг? – деп сорду тюлкую.

Къарт терезени къатына барып:

– Айыу бла былайдан сѣлешген эдим, – дейди.

– Ахшы, – дейди тюлкую. Сора айыугъа айланып: – Айыу, сен а къалайда, къалай тагъылып эдинг?

Айыу баугъа кирди, къарт да барып, аны сынжыр бла, алгъын болгъаныча, жерине такъды. Сора тюлкую бла къарт, бауну эшигин, айыу чыкъмазча, къаты бегитдиле.

– Ахшылыкъгъа аманлыкъ бла жууап этерге кюрешгеннге, ма алай этерге керекди, – деди тюлкую.

Тюлкуюню тюз сюд этгенине бек ыразы болуп, къарт анга ариу сѣзле бла ыспас этди да, юйюне кетди. Айыу а энттада ол баудан чыгъалмагъанды, дейдиле.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 4 паспорт. КъМАССР-ны Хабаз элинде 1897 жылда туугъан Тетуланы Таубийден 20.06.1959 жылда Гузеланы Ж.М. жазгъанды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Бу жомакъда жанууарла бла бирге адамла да бардыла. Къарт, айыуну сарайда бегитилип тургъанын кѣрюп, жан аурутуп, тышына иеди. Алай айыу аны ашаргъа сюеди. Была агъачда ючеуге сорайыкъ да, ала айтханча этербиз деп барадыла.

Биринчи тюбеген эмен терек бла къарт алаша, адамладан къыйынлыкъ сынагъан, айыугъа ашасын дейдиле. Алай ючюнчю уа тюлкую тюбейди, ол а ангыламагъанча этип, ишни башындан башлатады. Айыу сарайгъа киргенлей, анда бегитип къояды. «Ахшылыкъгъа аманлыкъ бла жууап этерге кюрешгеннге ма алай этерге керекди», – деп.

Бу жомакъ да къалгъанладача насийхат халда жазылгъанды.

СТАРИК И МЕДВЕДЬ

Один старик, проходя по селу, увидел в сарае медведя, закованного в цепь.

– Добрый старик, я умираю от жажды, пожалуйста, отведи меня к реке и дай воды напиться, – попросил медведь.

– Я ваш род знаю давно! – сказал старик. – Добро не понимаете, а от зла не останавливаетесь.



– Не только отцом и матерью, но и всем родом клянусь, если не веришь: я тебе никакого вреда не причиню, – словами, просил старика.

Старик поверил, выпустил медведя с места его заточения и отвел к реке.

– Спасибо старик! – сказал медведь. – Теперь я тебя съем. На сытый желудок и вода слаще кажется.

Встав на задние лапы, медведь подошел к старику.

– Не спеши, – сказал старик. – Пойдем, спросим у тех трех, кто нам встретится по дороге. Если они скажут, что ты можешь меня съесть, тогда ешь на здоровье.

– Я на это согласен, – сказал медведь.

Вышли из села и оба отправились в путь. Увидев огромный дуб, подошли к нему:

– Добрый дуб, – сказав, начал старик. – Вот он был закован в сарае. Если бы ты слышал, как он просил вывести его на берег реки и напоить водой, то ты тоже сжалился бы. Он дал мне клятву, что не причинит мне какого-либо зла. Я сжалился и повел его на берег реки. Теперь он хочет съесть меня. Ты как на это смотришь?

– Внимательно посмотрите на меня, – сказал дуб. – Мои ветки сломаны, листья порваны, одна сторона сгорела, на второй оборвана кора. Как вы думаете, кто мне причинил эти несчастья? Это дело рук человека! Это сделали люди, отдыхающие у меня в тени. Этот старик тоже из их рода, поэтому считаю медведя правым. Медведь, можешь съесть его!

Медведь бросился на старика.

– Нет, еще рано! Идем, спросим еще у двоих встречных, – сказал старик.

Шли–шли и встретили пасущегося старого коня.

– Вот этот медведь, – сказав, опять начал старик, – был прикован в сарае. Сказал, что умирает от жажды и попросил отвести его к реке. Я сжалился и отвел его на берег реки. В место того, чтобы поблагодарить меня, теперь хочет съесть. Добрый конь, скажи, что ты думаешь об этом.

– Когда я был молодым, с хозяином на седле быстро скакал, не жалея сил, таскал ношу, мой хозяин, которого я возил, хорошо меня кормил, находил все, что мне нужно, – сказал конь. – А теперь стал стар и слаб. Он меня и во двор меня не впускает, сразу прогоняет. А этот старик тоже из рода моего хозяина. Медведь, даже не думай, съешь его!

Обрадовавшись, медведь бросился на старика:

– Не спеши, медведь, не спеши! Забыл наш уговор, мы должны спросить еще одного встречного, – сказав, старик обезопасил себя.

Шли–шли и встретили лису.

– Друзья мои, сейчас я ничего не смогу вам сказать. Если вы покажете, где и как все началось, тогда я скажу, что думаю.

– Эх, я же тебе объяснил. Скажи свое мнение! – сказав, попросил старик.

– Не просите меня о невозможном. В таком сложном деле, чтобы выразить свое мнение, покажите мне, что и как все началось. Вот тогда я скажу свое мнение, – сказала лиса.

Медведь, старик и лиса пошли в тот сарай, где раньше томился медведь.

– Теперь, старик, покажи, куда ты шел, когда увидел медведя? – спросила лиса.



Старик подошел к окну:

– Вот отсюда я разговаривал с медведем, – сказал.

– Хорошо, – сказала лиса. А потом, оглянувшись к медведю: – Медведь, а ты где и как был закован?

Медведь зашел в сарай. Старик пошел и заковал его цепью в том же месте, где и раньше был прикован. Потом лиса и старик хорошо закрыли двери сарая, чтобы медведь не вышел.

– С теми, кто на добро пытается ответить злом, надо поступать также, – сказала лиса.

Старик обрадовался тому, как справедливо рассудила их лиса. Он поблагодарил ее добрыми словами и ушел домой. А медведь, говорят, до сих пор не может выйти из этого сарая.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 4. Записал Ж.М. Гузеев 20.06.1959 г. в с. Хабаз КБАССР от Темуева Таубия (1897 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В данной сказке вместе с животными действуют и люди. Старик, увидев медведя заточенного в сарае и молящего о помощи, жалеет его и отпускает на волю, но взамен медведь хочет съесть старика. И тогда они отправляются в лес, чтобы спросить трех встречных, как поступить.

Первые им встречаются дуб и старый конь, которые пострадали от людей и выступают за то, чтобы старика съел медведь. А вот третья, лиса, ведет себя совсем иначе. Она делает вид, что не понимает, как все было, и коварством заставляя медведя пройти весь путь обратно. В конце она оставляет зверя заточенным в сарае, со словами: «Ахиылыкъгъа аманлыкъ бла жууап этерге кюрешгенге ма алай этерге керекди» «Вот, как надо поступать с теми, кто на добро отвечает злом».

Эта сказка носит поучительный характер.



КЪОЙ БЛА ЭЧКИ

Эртте-эртте бир киши къатыны бла жашап эдиле. Аланы жангыз бир къойлары бла бир эчкилери болгъанды. Бир жол къарт къатынына айтханды:

– Къатын, бир къой бла бир эчки багъалмайбыз, алагъа ашатыр затыбыз да жокъду. Кесинг кѳресе ачдан ѳле турадыла. Кесерге да жарарыкъ туйюлдуле: сюекледен башха аладан биз табарыкъ жокъду. Къабакъ эшиклени ачайыкъ да, суйген жерлерине барсынла.

Къатын эрине угъай демегенди. Къарт арбаздан къой бла эчкини тышына къыстап, алагъа: «Энди суйген жеригизде жашагъыз, суйгенигизни ашагъыз», – деп, юйге къайытханды. Харип къой бла эчки не этерик эдиле. Бир къапчыкъны да алып, экиси да жолоучу болгъандыла.

Бара-барып, бир уллу жолгъа чыкъгъандыла. Къарасала жолда бѳрю баш. Къоркъуп, къачаргъа тебирегенлей, бѳрюню томуроуу болмагъанын эследиле. Бѳрю башны къапчыкъгъа салгъандыла да, биягъы тебирегендиле. Бир жерде тохтамай юч кюн бла юч кече баргъандыла. Тѳртюнчю кюн бир ариу кенг талагъа жетип, от кѳргендиле. Алайда адамла болгъан сунуп, къой бла эчки къууангандыла да, салып алайгъа баргъандыла. Барып къарасала уа: отну къатында ач болгъан юч уллу бѳрю жата эдиле, къазан тагъылып, суу да аяусуз къайнай тура эди. Асыры къоркъгъандан къой бла эчки ѳлюрге жетдиле. Ала къачаргъа да бир умут этдиле, алай аланы бѳрюле эслеп, секирип ѳрге тургъан эдиле. «Бизге ашарыкъ кеси келип къалды», – деп, къууанып, къой бла эчкини тутаргъа хазыр болдула.

Эчки эс алып, тюзюнлей бѳрюлеге барды да, саламлашды:

– Ингир ахшы болсун!

– Сау болугъуз, жууукъ болугъуз ахшы къонакъла! – деди къарт бѳрю. – Къоркъмагъыз, жууукълашыгъыз бери. Къайдансыз? Энди бу дуняда жашаудан тюнгулоп айлана болурсуз. Ай, татлы къонакъла, сиз а не тап заманда келдигиз!

Бѳрюню тенглери аны акъыллы сѳзюне ыразы болдула, акъ жютю тишлерин ачып, ышардыла. Энди бир иги тояйыкъ деп, жарлы къой бла эчкини жояргъа бѳрюле хазыр болгъанлай, эчки къойгъа айтды:

– Тутчу бери ол бѳрю башны, была да ач кѳрюнедиле, бирге ашайыкъ.

Бѳрю башны къапчыкъдан чыгъарып, къой эчкиге узатды.

Эчкини хыйла этгенин ангылап, къой бѳрю башны бир ненча кере эсе да чыгъарды.

Сора эчки, бѳрю башны алып, атды.

– Ма, алыгъыз да, биширигиз. Тоймасакъ, бизде энтта кѳпдю, къалгъанларын да биширибиз. Сиз, харипле, алыкъа бѳрю эт ашагъан болмазсыз. Андан татлы эт биз кѳрмегенбиз. Биширигиз, биширигиз, бюгече сизни бѳрю эт бла тойдурургъа бир боюнубузгъа алабыз.

Тели бѳрюле ийнандыла. «Эй, была бир мухар затладыла, бизни да бир жутмагъа эдиле, – деп, бѳрюле сагъышха къалдыла. – Къачмасакъ, эшигибизни жабадыла», – деп:

– Къазаныбыз не эсе да иги къайнамайды, – деди къарт бѳрю. – Барып бир отунла келтирейим.

Алай айтып, къарангыгъа ташайды да кетди. Бир кесекден экинчи бѳрю айтды:

– Бизни тенгибиз былай кеп нек кьалды? Ажашхан болур ансы, кьайытыргъа заман болгъан эди. Мен бусагъат аны чакъырып келейим.

Къайдан кьайытырыкъ эди: ол да кьайры эсе да думп болду.

– Мени тенглериме бир хата болгъанды. Барайым да болушайым, – деп ючюнчю бёрю да ашыгъышлы кетди.

Къой бла эчки кьууанып, кюлдюле. Сора жатып эрттен тюшге дери жукъладыла. Бёрюле уа бирге жыйылып, бир бирлерине тырман эте эдиле:

– Жангылдыкъ, биз бу жол бек жангылдыкъ. Къой бла эчкиден бёрюле кьоркьгъандыла деп а, ким эшитген болур! Энди бирси бёрюле эшитселе, бизге не айтырла! Кьаллай айыплы иш этдик! Кеслери келип: «Бизни ашагъыз», – дегенча болгъанлай, биз кьоркьакъла уа кьачып кетгенбиз. Келигиз, барайыкъ да, аланы ашайыкъ.

Аллай оноу этип, бёрюле артха кьайытдыла.

Бёрюлени кёрюп, къой да, эчки да эски эмен терекге миндиле. Бёрюле терекни кьазып башладыла.

Къой асыры кьоркьакъдан харип, тиши тишине тиймей алай кьалтырай эди. Сора аны эси аууп, терекден жыгъылды. Эчки уа аны кёрюп кьарыуундан келгенича кьычырды:

– Ай, сен жигит! Хайт де, жиберме ол кьоркьакъланы! Мен да бусагъат тюшейим!

Бёрюле, ары-бери чачылып, кьачдыла. Эчки да: «Тут! Тут!» – деп а аяусуз кьычыра эди. Эчки бла кьойгъа керек а ол эди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 5 паспорт. КъМАССР-ны Хабаз элинде 1827 жылда туугъан Бёзюланы Магомедден 1959 ж. Бёзюланы А.Ю. жазгъанды.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъда персонажланы юсюнде тотем ыз кёрюнеди: къой – кьоркьакъ, эчки – жигит дегенча.

Жомакъ энчи магъанасы: жашауда хар заманда да кьарыулу хорламагъанын билдиреди.

БАРАН И КОЗЕЛ

Давным-давно жили-были старик со старухой. У них бил лишь один баран и один козел.

Однажды старик говорит старухе:

– Жена мы не можем прокормить одного барана и одного козла, так как у нас нет ничего, чтобы их кормить. Сама видишь, они с голоду умирают. Даже зарезать нельзя, потому что кроме костей у них ничего мы не найдем. Откроем ворота, и пусть уходят, куда захотят.

Жена не стала возражать мужу. Старик выгнал козла и барана на улицу и, сказав им: «Теперь живите, где хотите, ешьте, что хотите», – вернулся домой. Бедные баран и козел, что могли они сделать, взяв один узелок, отправились в путь.

Шли-шли и вышли на большую дорогу. Видят на дороге волчью голову. Испугавшись, решили сбежать, как вдруг заметили, что у волка



нет тела. Положили волчью голову в узелок, и пошли дальше. Нигде не останавливаясь, шли три дня и три ночи. На четвертый день дошли до красивой, широкой поляны и увидели костер. Подумав, что там люди, баран и козел обрадовались и пошли туда. Когда дошли, увидели, что у костра лежат три голодных волка. Казан висел, и вода в нем неустанно кипела. От страха баран и козел чуть не умерли. Они подумали сбежать оттуда, но их заметили волки и вскочили. Обрадовавшись, что к ним еда сама пришла, приготовились поймать барана и козла.

Козел пришел в себя, напрямик пошел к волкам и поздоровался:

– Добрый вечер!

– Спасибо, добро пожаловать, гости дорогие! – ответил старый волк. – Не бойтесь, подойдите поближе. Откуда вы? Наверно в этой жизни вам жить надоело. Ой, вкусные гости, как вовремя вы пришли!

Друзья волка были довольны его умными словами, улыбнулись, обнажая свои белые, острые зубы.

Только волки надумали хорошо насытиться, убив барана и козла, как козел сказал:

– Достань сюда эту волчью голову, покушаем, кажется, они голодные.

Баран достал волчью голову из узелка и протянул козлу.

Вскоре баран понял, что козел хитрит, и несколько раз положил и доставал голову из узелка. Потом козел взял волчью голову и бросил.

– Вот, возьмите и сварите. Если не наедемся у нас еще много, и остальные сварим. Вы несчастные, наверно, еще не пробовали волчье мясо. Вкуснее мясо еще не ели. Варите, варите, этой ночью мы обещаем вас насытить волчьим мясом.

Тупые волки поверили. «Эй, они какие ненасытные, как бы нас тоже не съели, – сказав, волки разволновались. – Если не сбежим, нас погубят, – сказали.

– Что-то казан наш плохо кипит, – сказал старый волк. – Пойду, принесу еще дров.

Сказав так, исчез в темноте.

Через некоторое время второй волк сказал:

– Почему наш друг так надолго задержался? Видимо заблудился, а то уже время вернуться. Я сейчас пойду и позову его.

Как бы он вернулся: он тоже где-то исчез.

– С моими друзьями что-то случилось, пойду и помогу им, – сказав, третий волк тоже поспешно ушел.

Баран и козел от радости рассмеялись. Потом легли и проспали до полудня. А волки тем временем, собравшись вместе, упрекали друг друга:

– Ошиблись, мы в этот раз очень ошиблись. Кто слышал, что волки испугались барана и козла! Если узнают другие волки, что они нам скажут? Как мы оплошали! Получилось так, что сами пришли с просьбой: «Съешьте нас». А мы, трусы, убежали. Пойдем и съедем их.

Договорившись так, волки вернулись обратно. Увидев волков, баран и козел забрались на дуб. Волки начали выкапывать дуб.

Баран так дрожал от страха, что зуб на зуб не попадал. И вдруг он, потеряв сознание, упал с дерева.

Козел, увидев это, крикнул изо всех сил:

– Ай, да ты смельчак! Не падай духом, не отпускай этих трусов! Я тоже сейчас спущусь!

Волки разбежались в разные стороны. А козел продолжал кричать изо всех сил: «Держи! Держи!». Это и было нужно барану и козлу.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 5. Записал А.Ю. Бозиев в 1959 г. в с. Хабаз КБАССР от Бозиева Магомеда (1827 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В данной сказке отражен своеобразный тотемистический мотив, отражающийся в характерах главных героев: баран – труслив, а козел – смел.

Мораль сказок такова, что не всегда побеждает тот, кто сильнее.



ЮЧ УРУЧУ

Бир кишини бир къарт эшеги болгъанды. Ол эшекни сюрюп, отуннга баргъанды. Эшекни эки жанына эки агъачны салып, бара тургъанлай, къарт эшеги, арып, баралмай тохтагъанында, ол эки агъачны да эки имбашына алып, эшекни къююп кетгенинде, эшек андан эсе алгъа юйге жетгенди. Эшекни иеси, ачыуланьп, ахшы тьююп, эшикге къыстап ийгенди.

Эшек, чыгъа барып, магуш* сыртында эринин салындырып тургъанлай, бир жанындан бир ит, «канк-кунк» эте, чыгъып барып:

– Нек тураса былайда? – деп, эшекге соргъанды.

– Къарт, къарыусуз болгъанма. Жегерге жарамайма да, ием тьююп къыстагъанды. Сен а нек келгенсе?

– Къарт болгъандан сора, мал да, адам да кимге керекди? Мен къарт болгъанма да, ыстауат сакъляялмайма да, ием тьююп къыстагъанды, – деп, экиси да алай тургъанлай, бир киштик, созула-созула келип:

– Нек турасыз былайгъа жыйылып?

– Къарт болгъанбыз да, иелерибиз тьююп къыстагъандыла. Сен а неге келгенсе? – деп соргъанларында:

– Да, къарт, къарыусуз болгъанма да, чычханны туталмай башлагъанма да, ием тьююп къыстагъанды.

Ала ючюсю да алайда тургъанлай, бир жанларындан, къанатларын къагъа, бир эркек тауукъ чыгъып баргъанды.

– Нек турасыз былай?

– Къарт болгъанбыз да, иелерибиз тьююп къыстагъандыла. Сен а нек келгенсе?

– Къарт болгъанма да, эрттенликде къычыралмайма, къычырып адам уяталмагъанымда, ием тьююп къыстагъанды.

– Энди тёртюбюз да бир оноулу болайыкъ. Биз энди иелерибизге къайтып барсакъ да, къыстап иерикдиле. Аман, иги болса да, бир акъыллы болуп, жашау этерге кюреширге керекбиз. Хайдагъыз, былай анда, агъач ичинде бир уручула бардыла да, алагъа бир барайыкъ, – деп тебирегендиле.

Бара кетип, уручуланы кече къошларыны къатына жетип тынгылагъандыла да, экиси эжиу эте, бири уа жыр айта тургъанлай кёргендиле да, оноу этишгендиле:

– Эшек, ал эки аягъын терезеге салып, эшекча окъусун. Ит итча юрсюн. Киштик киштикча макъырсын, тауукъ эркек да эркек тауукъча къычырсын, – деп, оноулашхандыла.

Тюз оноулашханларындача, бир аууздан, бири къычырып, бири юрюп, бири да макъырып, алай этгенлеринде:

– Была не затладыла?! – деп, ахылары** кетип, къоркъуп, абызырап, уручула ючюсю да къачхандыла.

Ала къачып кетгенлей, эшек да, ит да, киштик да, эркек тауукъ да, къошха кирип, этден, гыржындан, ундан, картофдан, дагъыда аллай затладан ашап тойгъандыла. Иги ашап тойгъанларында, киштик кюлге киргенди да жатханды. Эшек эшик артында тохтагъанды. Ит къошну аллында магушну къазып жатханды. Эркек тауугъ'а эшик башына къоннганды. Хар бири

* Багуш.

** Ахлары.

ариу жарашып тохтагъанларында, ол юч уручу къача барып, бир жерде тохтап, сагъыш этишгендиле:

– Къайтып бир кёрюр эдик, не затла эселе да ол къычыргъанла, – деп, биреулен къайтып келип, къошха кирип къараса, киштикни кёзю отда жылтырагъанында: «От ёчюлтмей тура кёреме да», – деп, былай къолу бла къозгъаргъа тебирегенинде, «мяу-мяу» этип, киштик къолундан къапханды.

Ахысы кетип, бери бурулгъанында, эшек табаны бла белине ургъанды. Къачып, эшикге чыгып тебирегенинде, эркек тауукъ, къычырып, инбашларына къоннганды, сора андан да къутулгъанында, ит да, чабып, тутханла этгенди. Аладан къутулуп, талакъ солуу этип, бутлары къалтырай, ахысы къуруп, нёгерлерине жетген эди.

– Не кёрдюнг анда? – деп, нёгерлери соргъанларында:

– Аллах сакъласын энди ары баргъандан. Къошха кирип, от ёчюлтмей тургъан сунуп, отну къозгъап тебирегенлей, «мяу-мяу» этип, бир зат къолумдан къапды. Алайдан бери бурулгъанымлай, къазыкъ бла биреу белиме басды. Сора, алайдан элгенип, къачып тышына чыкъгъанымлай, эшик башындан биреулен: «Ой, жибермегиз!» – деп, узалып, инбашларыма жабышды. Андан да къутулгъанымлай а, бир огъурсуз жаныуар, чабып, этеклериме, бутларыма тагъылып, тарт-соз этип тебирегенлей, кючден къутулдум, – дегенинде, барысы да, къоркъуп, андан къачып кетген эдиле.

КъМГТИ-ну архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 21 паспорт. КъМАСССР-ны Совет районуну Бызынгы элинде 100-жыллыкъ Холаланы Къоналийни жашы Муссадан 1972 жылны август айында Кючмезланы М.Ч. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны Мусса атасындан эшитгенди.

«Юч уручу» деген жомакъ белгили бремен музыкантланы юслеринден жомакъны къарачай-малкъар тюрлюсюдю. Мында юйсюз-кюнсюз болуп къалгъан жаныуарла, къанатлы да, жашауну терс жорукълары амалтын къыйынлыкъ сынап, дуняда жангы жашауну жангы тюрлюсюню жорукъларын къураргъа талпынадыла. Аны мурдоруна бирликни бла бир бирге болушлукъну саладыла.

Жомакъда къартлыкъны (геронтотимияны) юсюнден оюм аны баш ёзегин тутады.

ТРИ ВОРА

У одного мужчины был старый осел. Он запряг своего осла и пошел за дровами. С двумя бревнами по двум бокам старый осел долго шел, устал, вскоре перестал идти, тогда хозяин два этих бревна кинул на свои плечи, и ушел, оставив осла, но осел раньше него прибыл домой.

После этого хозяин разозлился, побил осла хорошенько и прогнал из дому.

Осел, отправившись в дорогу, возле мусорной кучи стоял с опущенной губой, когда собака с лаем «гав-гав», появилась откуда-то:

– Чего ты здесь стоишь? – спросил у осла.



– Я стал старым, слабым. Я не пригоден, чтобы меня запрягали, и мой хозяин, побив, прогнал меня. А ты чего пришел?

– После того, как постареют и животные, и люди, кому они нужны? Я состарилась, не могу охранять хозяйство, и хозяин меня прогнал, побив, – сказала она, и вскоре к ним присоединилась один кот, еле-еле двигаясь, подошел:

– Что вы здесь стоите?

– Мы состарились, и наши хозяева, избив нас, прогнали. А ты чего сюда пришел? – спросили они:

– Да, состарился, ослабел я, когда перестал ловить мышей, мой хозяин прогнал меня, побив.

Когда они втроем там стояли, к ним подошел петух, хлопая крыльями.

– Чего вы здесь стоите?

– Мы состарились, из-за этого наши хозяева нас побили и прогнали. А ты чего сюда пришел?

– Я состарился, и по утрам не могу кричать, не могу будить людей, мой хозяин меня побил и прогнал.

– Теперь, мы вчетвером должны прийти к единому решению. Если мы еще раз вернемся к своим хозяевам, они опять прогонят нас. Хорошо или плохо, мы должны держаться вместе и стараться продолжить нашу жизнь. Давайте, где-то там, внутри леса есть какие-то воры, сходим к ним, – сказали они и отправились туда.

Они шли-шли и дошли до ночного коша* воров и прислушались, как двое из них подпевали, один из них пел, увидев это, они начали решать:

– Осел, передние две ноги поставив на окно, пусть кричит по ослиному, собака, пусть залает как собака. Кошка пусть мяукает как кошка, и петух, пускай покричит по-петушину, – так они решили.

Прямо как договорились, в один голос один кричит, другой гавкает, третий мяукает, когда они так сделали:

– Кто это такие? – чуть было дух не испустили, испугались, оцепенев, трое воров мигом убежали. Как только они убежали, ослик, собака, кошка и петух зашли в их кошару, наелись мяса, хлеба, муки, картошки досыта. Когда они по-настоящему наелись, кошка залезла в золу и легла там. Осел остановился за дверью. Собака во дворе кошары разгребла мусор и залегла там. А петух взлетел и сел поверх двери. Когда все они хорошенько расположились, те трое воров остановились в одном месте и подумали.

– Попробуем вернуться и посмотреть, кто они такие, которые такой крик подняли, – решили они, и один из них, вернувшись обратно, к очагу: «Оказывается огонь не потушен», – сказал он и как только полез рукой туда и захотел разгрести: «Мяу-мяу» закричала кошка и укусила вора за руку. Когда он от страха, повернулся в другую сторону, осел ногой ударил его по спине. Когда он, убегая, хотел выбежать из дому, петух закричал и сел ему на плечи, когда он от всех спасся, собака тоже погналась и несколько раз покусала его. Полностью освободившись от них, он, еле дыша, с трясущимися ногами, теряя сознание добрался до своих друзей.

– Что ты там увидел? – когда спросили его друзья: – Не дай Бог, еще раз появиться там. Когда я зашел в кошару, решил, что огонь не потушен, и

* Кош – стан, становище, стоянка, стойбище [3, 416].

только начал разгребать огонь: «Мяу-мяу», – закричал кто-то, и укусил мою руку. Когда я повернулся в обратную сторону, дубиной кто-то сильно ударил меня по спине. От страха я выбежал оттуда наружу, но наверху дверей кто-то со словами: «Ой, не упускайте» схватил меня за плечи. Я как только от него освободился, какой-то дикий зверь побежал за мной, ухватился за мой подол, впился зубами в мои колени, начал мои ноги туда-сюда тянуть, я еле спасся, – когда такое рассказал вор, все побоялись и от того места быстрее убежали подальше.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 21. Записала М. Ч. Кучмезова в августе 1972 г. в с. Безенги Советского района КБАССР от 100-летнего Холаева Муссы Коналиевича.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Мусса слышал от отца.

Данная сказка представляет собой карачаево-балкарскую интерпретацию архетипического сюжета «Бременских музыкантов», где обездоленные животные, пострадавшие от социальной несправедливости, строят новую модель бытия на основе сплоченности и взаимовыручки. Мотив геронтоимии занимает центральное место в сказке.



ЫШАННГЫСЫЗ ЮЧ НЁГЕР

Айыу, тюлкю, бёрю бирге жашаргъа деп шуёх болдула. Бир бёлек заманны бирге ашай, бирге жашай тургъандыла.

Бир кюн бёрю уугъа кетип, айыу бла тюлкю юйде къалдыла. Экиси да бек ач болгъандыла. Тарда ёзге мадар тапмагъанларында, тюлкюню къыстырыгъы эсине тюшгенди. Бир жол ала бир борсукъну тутхан эдиле. Тюлкю аны юлешген заманында бир жау тупулчукъну букъдуруп къойгъан эди. Айыугъа кёргюзтмей, ол жау тупулчукъну ашай болгъанды. Алай болса да айыу аны сезип:

– Эй, жууугъум, тюлкю! Ол чайгъанагъанынг неди? Манга да къапдырсанг а, – деп тиледи.

– Да, чайнап а, не чайнарыкъма, ачдан кёзюмю чайнай турама. Кёзюнг а сени да барды, – деп къойду.

Айыу:

– Да нечикди, татлымыды?

Тюлкю:

– Ой, аны да несин айтаса, бирда алапат татлыды, – деп махтады.

Ол ач болуп тургъан айыу аны эшитгенде, кёзюн къармап алды да, къапды. Чайнады-чайнады, бир да татыуун ангыламады.

– Да, тюлкю, сен махтанганча мени кёзюмю татыуу жокъду да, – деп сорду.

Тюлкю:

– Къалай жокъду, къайсы кёзюнгю къапханса?

Айыу:

– Да мен а сол кёзюмю къапханма, – деди.

Тюлкю:

– Да сен телими болгъанса? Сол кёзюн къапхан тёре боламыды? Онг кёзюнгю къапчы, татыуну кёрюрге, – деди.

Айыу кибик деп, бошму айтылгъанды. Ол жазыкъ мондай тюлкюге ийнанды. Онг кёзюн да чыгъарып къапды да, энди ажымсыз толу сокъур болду. Болуру болуп бошагъандан сора, айыу тюлкюге алдатханын билди. Мурулдады, къычырды, ёкюрдю, сытылды, жукъ да тапмады. Ачлыкыгъа энди сокъурлукъ да къошулду, палахны азындан кёбю игиди деп болду.

Тюлкюню бууаргъа жаныды. Алай бууалса аямаз эди. Къарап кёраллыкъ туююлдю, излеп табаллыкъ туююлдю, къуууп жеталлыкъ туююлдю. Ахырында энта да тюлкюге жалынчакъ болуп къалыргъа тюшдю.

Энди сокъур айыуну жумуртха тюк болурун хыйлачы тюлкю да бек уста биледи.

Ол себепден айыуну къампайтыргъа хыйла къурайды:

– Ай, зауаллы, айыу нёгерим, сокъур болупму къалдынг? Жюрчю, бёрюню аллына бир къарай барайыкъ! Ач да болгъан болурса. Ол бир жукъ табып келе болур. Мен аллынгда чырпыны жерге къагъа барайым. Сен да аны тауушу бла ызындан келирге кюреш.

Экиси да тебиредиле. Тюлкю барады чырпы бла жерни къагъа, аны тауушу бла айыу да ызындан бара, бир къая киришге жетдиле. Тюлкю кючбюсюреди: «Бу манга ким болады? Мен муну ызымдан тагъып нек айланлыкъма. Бу манга не берликди? Андан эсе къампайтып этинден бир



иги тойсам иги туююлмюдю», – деп чырпыны тыхырдатып киришден энишге атды. Чырпыны шыхырдагъан тауушуну ызындан сокъур айыу да секирди. Ёлюп талагъа чулгъанды.

Тюлкю киришни башындан къарап, къая тюбюнде айыуну ёлюп тургъанын кѳргенинде, суюнюп, киришни бир жаны бла муштухул жетди. Къоркъаракъ болуп тегерекге къарай башлагъанлай, бѳрюню къан жугъу болуп келгенин кѳрдю.

Тюлкю кѳзбауланып жыламсырады:

Бѳрю аны кѳргенде:

– Нек жилийса, тюлкю, не болгъанды? – деп сорду.

Тюлкю:

– Да жилимай не этейим? Экибизда бирге келе тургъанлай, чибинни тутама деп, айыу къаядан секирип, ёлюп къалгъанды, – деди.

– Да ёлген эсе, ёлме къой. Жаханым андан толсун! Мен да жукъ тапмай, ач болуп, ёлюмден кючден башымы алып келеме. Болгъаным да къызыл къаннга боялгъанды, – дегенинде, тюлкю суюнюдю да.

– Энди бу айыуну не этейик? – деп сорду.

– Да этип а, не этерикбиз. Мен эрлай терисин сыдырайым. Сен а экибизге да юлеш да, юлюшлерибизни башха-башха жатыучу тешиклерибизге сал.

Тюлкю суюмеген а олму эди. Этлени семизлерин кесини жерине, арыкълары, сюеклерин бѳрюню жерине жыйды. Бѳрю этге жудайып ашап келгенде:

– Ай маржа, тюлкю, этни семиз жеринден экибизге да бирер иги къабын къапдырсанг а! – деп тиледи.

Тюлкю семиз жау тугулку алып кеси къапды, бѳрюге уа жукъа жау кесегини ичине таш салып берди. Бѳрю аны жутланып къапханда, тишлерин сындырды.

– Ай, сѳзю тутхунчу да болмагъан эки бетли, мен сени кѳрейим, – деп сюрдю.

Тюлкю къачды, ол къууду. Тюлкю къачып тешигине кире баргъанлай, бѳрю ызындан жетип, къуйрукъ къыйырын юзюп алды.

Тюлкю къоркъду, аман къоркъду. Бѳрю бир бѳлек заманнга дери тюлкю тешикни аллын сакълап турду. Тюлкю энди барамтагъа тюшдю. Эт юлюшюн ашап бошагъынчы тешикден чыкъмай турду.

Бѳрю тюлкюню сакълай-сакълай къалкъыды. Неда тешикде ёлюп къалгъанды, неда биягъы хыйлачы бир жанына сылжырагъанды. Алай ёлмей жашай эсе да, табарма, деген мурат бла бѳрю жайылып тебиреди.

Бѳрю алайдан жайгъанлай, тюлкю чартлап чыгып къачады. Къача барып, бир къауум арыкъ тюлкюлеге жолугъады.

– Жол болсун, эй, аман арыкъла! Былай арыкъ нек болгъансыз, сиз тюлкю миллетден туююлмюсюз, ашаргъа жукъ тапмаймысыз? – деп оспар, самаркъау сѳлешди.

– Да биз ашарыкъ табалмайбыз, сен былай нечик семиралгъанса? Бизге да юйретсенг а, – деди.

– Къуйрукъларыгъызны суугъа жиберигиз. Алагъа чабакъла илинип ауур болурла. Ол заманда къуйрукъларыгъыз бла тартып, чабакъланы чыгарыгъыз да ашагъыз. Сора семиргенни кѳрюсюз, – деп къызындырды.



Тюлкюле керти да бир аламат болабыз деп, бузгъа жатып, къуйрукъларын суугъа жибергенлеринде, терк окъуна къуйрукълары бузлайдыла. Ой, энди чабакъланы чыгъарып ашайыкъ деп сыгъынып-сыгъынып тартадыла да, бузлагъан къуйрукълары юзюлюп-юзюлюп чыгъадыла.

– Ай, къуйрукъсуз къуртха, бизни алдагъан этгенди, жюрюгюз, ёлтюрейик, – деп, тюлкюле бары да бирден жанып, ол чубур тюлкюге барадыла.

– Ай, сен чубур къуйрукъ, бетсиз, бизни алдап, къуйрукъларыбызны нек юздюргенсе? – дедиле.

– Ай, харипле, сиз жашсыз, эм алгъа мен да сизнича болгъан эдим. Ма, къуйругъуму кёресиз! Сиз къуйрукъларыгъызны сууда кёп тутхансызда, чабакълагъа ашатып къойгъансыз. Анга мен не этейим, – деди да къойду.

Ол дертленип къалгъан бёрю, излей келип тюлкюлеге жетеди. Тинтип къарайды. Барын да чубур болуп кёргенде, жаныгъан тюлкюсюн таныялмай кетип къалды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 6 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Айыу бу жомакъда, мифледеча сыйы бийик болмай, уллу къарыуу, мондай сыфаты, бираз да акъылы болмагъан персонажды. Бёрюню сыфаты харамлыкъны, жутлукъну, къызгъанчлыкъны, огъурсулукъну ачыкълайды. Ол жомакълада акъылсызча кёргюзтюледди, нек десенг, башиха жаныуарлагъа ышанып, кесин алдатдырады. Тюлкю уа, хар замандача, мында да аман хыйлачыды.

НЕНАДЕЖНЫЕ ТРИ ДРУГА

Медведь, лиса и волк подружились и решили жить вместе. Некоторое время они жили и ели вместе.

Однажды волк ушел на охоту, и лиса с медведем остались вместе. Они оба очень проголодались. Когда в ущелье ничего больше не нашли, лиса вспомнила про заначку. Один раз они поймали одного барсука. Когда лиса его делила, спрятала один кусок жира. Она, спрятав от медведя, ела этот кусок жира. Но медведь все-таки заподозрил это:

– Эй, родственница лиса! Что это ты жуешь? Угости меня тоже, – сказав, попросил.

– Да, жевать, что я могу жевать, от голода жую свой глаз. А глаз и у тебя есть, – сказала.

Медведь:

– И как, сладкий?

Лиса:

– Ой, не спрашивай, очень сладкий, – сказав, похвалила.

Когда голодный медведь это услышал, выковырял свой глаз и откусил. Жевал-жевал, но вкуса так и не понял.

– Да, лиса, мой глаз не такой сладкий, как ты хвалилась, – спросил.

Лиса:

– Как нет, какой глаз съел?

Медведь сказал:

– Да, я съел левый глаз.

Лиса сказала:

– Ты что с ума сошел? Разве есть такая традиция: есть левый глаз? Съешь правый глаз, тогда почувствуешь вкус.

Неспроста (в народе) ходит выражение «как медведь». Этот несчастный тупой поверил лисе. Выковырял, съел и правый глаз, теперь он и вправду полностью ослеп. Когда все уже случилось, он понял, что лиса его обманула. Повозмутился, покричал, повыл, поскулил, ничего не нашел. Теперь к голоду прибавилась и слепота, получилось так, что «беда приходит не одна».

Бросился, чтобы задушить лису. Если бы смог, не пожалел бы. Посмотрев, не увидит, поискав, не найдет, погнавши, не поймают. В конце концов, пришлось остаться зависимым от лисы.

Теперь лиса точно знала, что этот слепой медведь стал для нее обузой. Поэтому придумала хитрость, погубить медведя:

– Ой, несчастный медведь, ты что слепым, что ли стал? Давай, пойдем навстречу волку! Наверное, ты проголодался. Он может что-то нашел. Я пойду вперед тебя, стуча прутиком. И ты по стуку постарайся идти вслед.

И вдвоем отправились в путь. Лиса шла, стуча по земле прутиком, медведь тоже шел вслед по шуму, так дошли до бровка отвесной скалы. Лиса, недовольная: «Кто он для меня? Зачем я должна таскать его за собой. Что он мне может дать? Не лучше ли мне убить и хорошо наесться его мяса? – сказала, постучала прутиком и бросила его вниз. Вслед за шумом прутика упал и слепой медведь. (Медведь) мертвый упал на поляну.

Лиса когда, посмотрев с отвесной скалы, увидела мертвого медведя, обрадовавшись, быстро спустился с другой стороны скалы вниз. С опаской начала оглядываться по сторонам, увидела, как волк идет весь в крови.

Лиса льстиво расплакалась.

Когда волк ее увидел:

– Почему ты плачешь, лиса? Что случилось? – спросил.

Лиса сказала:

– А как мне не плакать? Когда мы шли вместе, медведь хотел поймать муху, упал со скалы и умер.

– Если умер, пускай умирает. Пусть ад им наполнится! И я, ничего не находя, голодный, еле унес голову от смерти. Весь окрасился в алую кровь, – сказал. Слова волка лисе понравились.

– Что теперь будем делать с этим медведем, – спросила.

– Делать-то, что делать. Я быстро сдеру с него шкуру. А ты подели на двоих, а части положи отдельно, по норам, где мы спим.

А ни этого ли хотела лиса. Куски мяса пожирнее положила к себе, а худые и кости отнесла к норе волка. Волк с жадностью съел мясо и вернулся обратно:

– Эй, пожалуйста, лиса, с места, где мясо пожирнее угости нас обоих! – попросил. Лиса взяла жирный кусок мяса и съела сама, а волку дала мясо, где тоньше, положив туда камень. Когда волк с жадностью откусил, сломал зубы.



– Ай, ты двуличная, я тебя поймаю, – сказав, погнался. Лиса побежала, он (волк) погнался за ней. Как только лиса добежала до норки и хотела войти, волк, догнав, оторвал кончик хвоста.

Лиса испугалась, очень испугалась. Волк некоторое время сторожил вход в норку лисы. Лиса теперь оказалась в плену. Пока не съела все мясо, не выходила из норы.

Волк, ожидая лису, задремал. Или умерла в норе, или опять эта хитрая ускользнула с другой стороны, но если еще жива, найду, думая, волк начал собираться.

Как только волк ушел, лиса выскочила и убежала. Убегая, она встретила несколько исхудавших лисиц.

– В добрый путь, вы худые! Почему вы так исхудали, разве вы не из лисьего рода? Разве не находите, что поесть? – сказав, грубо насмехнулась лиса.

– Да мы не находим, что поесть, ты как смогла так потолстеть? Научи нас тоже, – сказали.

– Опустите свои хвосты в воду. Когда к ним прицепятся рыбы, они станут тяжелыми. Тогда потяните хвосты, вытащите рыбу и ешьте. Тогда увидите, как потолстеете, – сказав, заинтересовала.

Лисицы, подумав, что и в правду прекрасно заживут, легли на лед и опустили хвосты в воду. Очень быстро хвосты примерзли. Ой, теперь вытащим и съедим рыб, думая, поднатужившись, потянули, примерзшие хвосты выходили оторванные.

– Ой, бесхвостая ведьма, нас обманула, идемте, убьём, – сказав, лисицы разозлившись, пошли к этой куцей лисице.

– Ой, ты куцехвостая, бессовестная, обманув нас, почему дала оторвать нам хвосты? – спросили.

– Ой, бедняги, вы молоды, сначала я, как и вы стала куцей. Вот видите мой хвост! Вы свои хвосты слишком долго в воде держали, дали съесть их рыбам. Что я с этому могу сделать, – сказала.

Этот волк, жаждущий отмщения, разыскивая ее, пришел к лисицам. Рассмотрел. Когда увидел, что все лисицы куцые, не нашел ту, на которую злился и ушел.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 6. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В этой сказке медведь, принимает аллегорический образ, теряя бывший авторитет, становится, обладающим огромной силой, но неуклюжим и практически лишенным ума и не имеющим жизненного опыта персонажем. Волк воплощает собой коварство, прозорливость, злость и жадность. Его представляют глупым, потому что часто, доверившись другим животным, он остается обманутым. Лиса же, как и во многих сказках, здесь коварная обманщица.

АЙЫУ, БЁРЮ, ТЮЛКЮ

Эртте-эртте бир бёрю, айыу эм тюлкю шуёх болуп жашагъандыла. Ючюсю да не тапсала бирге ашап, бирге жашап тургъандыла.

Бир кюн бёрю уугъа кетеди. Юйде айыу бла тюлкю къаладыла. Тюлкю да, айыу да бек ач боладыла. Тюлкю, борсукъ ёлтюрюп, юлешгенди, букъдургъанды, жаучугъун айыугъа кёргюзтмей ашай болады.

Алай аны айыу сезип:

– «Эй, тюлкю, сен не зат чайнайса? Манга да берсенг а!!! – дейди тюлкюге.

Тюлкюге уа айыугъа:

– Чайнаб а, не чайнайым, кёзюмю чайнай турама ачдан. Кёзюнг а сени да барды, – деп, жууап береди айыугъа.

– Татлымыды? – деп, сорады айыу.

Тюлкю уа:

– Аламат татлыды! – деп махтайды.

Аны эшитгенден сора уа, айыуну аууз суулары келе башлайды. Бирда чыдаялмай, кёзюн чыгъарып къабады.

Чайнай-чайнай кетип:

– Да, ачыдыда, – дейди айыу.

Тюлкю:

– Да сен къайсы кёзюнгю къапхапса, айыу, – дейди.

– Сол кёзюмю къапханма, – дейди айыу.

– Къара анга, сол кёзюн адам къабамыды. Ол ачы болады. Онг кёзюнгю къап! – деп, энттада айыуну алдады тюлкю. Айыу терк окъуна онг кёзюн къабып, ахыры бла сокъур болуп къалады. Ачыуланыргъа да къоркъуп: «Эчкиге аман кюн келсе, бёрю анга къарындаш болур», – дегенча, тюлкюге абери айтмайды.

– Кел, энди бёрю да бир зат ёлтюрген болур. Аллына барайыкъ, – деп тюлкю, айыуну жолгъа салады.

Тюлкю аллында бир мюшкери чыбыкъ сындырып, аны чапыракъларын шыбырдата, алда бара болгъанды. Айыу а аны ызындан, ол шыбырдагъан тауушха тынгылап бара болгъанды.

Бир заманда тюлкюню эсине аман акъыл тюшдю: «Муну энди былай алып айланыргъа, бу мени нем болады. Андан эсе муну ёлтюрюп, бёрюге да кёргюзтмей ашасам, манга ол игиди», – деп, айыуну ёлтюрюп акъылгъа толу кирип, къаягъа жууукъ бара башлайды. Айыу да, ол таууш къайры барса да, ары тюртунеди.

«Энди бёрю да жолугъур, муну алыпмы айланырыкъма мен», – деп, тюлкю мюшкери чыбыкъны къаядан ташлагъа тие барырча атады. Айыу хариб'а ол тауушха барама деп къаядан кетеди.

Тюлкю къаяны тюбюне жолчукъ бла терк окъуна тюшюп барып, тегерегине-башына бёрюден къоркъуп къарайды. Кёп бармай бёрюню къан да болуп, чабып келе тургъанын кёреди.

Бёрюню кёргенлей:

– Мен алда, бу артда келе тургъанлай, мен да кёрмей былай болуп къалгъанды айыу, – деп, тюлкю жүрексинип жилип башлайды.



Абери да ёлтюрмей, кесин да асланнга талатып келе турган бёрю, айыуну ёлгенине кыуанып:

– Ёлген эсе не этейик. Хайда, мен сояйым, сен а экибизни да тешиклерибизге тенг ташы, – деп, айыуну соя башлады.

Тюлкю кесини тешигине жауларын бёрюге сюек хылы-мылыларын жыяды.

Бёрю союп бошاپ:

– Тюлкю, мен киргинчи экибизге да жауундан бирер кыбын хазыр эт, кире барганлай кыбарча, – дейди.

Тюлкю кесине жаудан бёрюге да тышына жау, ичине таш салып бирер кыбын хазырлайды. Тюлкю жауну, бёрю ташны кире барып кыбадыла. Бёрю тишлерин сындырып, ачыуланып тюлкюню ызындан кыуады. Тюлкю тешигине кирип бара туруп, бёрю тюлкюню кыуругун юзюп алады. Бёрю бир аз бир жанына бурулганлай: «Кыутулмай амал жокду», – деп, секирип чыгады да кычып кетеди. Бёрю уа жеталмай, кычан болса да тутарма: кыуругунданмы танымам деп, тынч-тынч тюлкюню ызындан тебирейди.

Тюлкю келе келип бир кыауум тюлкюге жолугады. Ол тюлкюле кыурукъсуз тюлкюню семизлигине сейирсинип, аны кыалай семиргенин сорадыла.

Кыурукъсуз тюлкю: «Сиз семиррге сюе эсегиз, бузга олтуруп, кыурукъларыгызны сууга сугугуз. Анга чабакла жабышырла. Сиз а аланы ашагыз», – дейди.

Тюлкюле олтура-олтура кетип, турабыз деселе, барыны да кыурукълары юзюлюп кыаладыла.

Алай бла тюлкюле бир кибик болуп, излеп келген бёрю танымазча болуп кыаладыла.

КыМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 23 паспорт.

КыМАССР-ны Совет районуну Огъары Жемтала элинде 26-жыллык Кыазийланы Исхакъны жашы Исмаилдан 1959 жылда Гузеланы И.И. жазганды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алганды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ алдагы жомакъны бир тюрлюсюдю. Бу текст жарты бериледи, текстде энчиликлери барды. Магъанасы уа бирди.

МЕДВЕДЬ, ВОЛК, ЛИСА

Давным-давно один волк, медведь и лиса дружили. Все трое, что бы не нашли, ели вместе и жили вместе.

Однажды волк ушел на охоту. Дома остались медведь и лиса. Лиса и медведь очень проголодались. Лиса, убив барсука, раздала, спрятала, нутряной жир, не показывая медведю, ела.

Но медведь, это поняв:

– Эй, лиса, что ты жуешь? Может и мне даш а!!! – сказал лисе.

Лиса же медведю:

– Жевать-то, что жую, глаз свой жую от голода. А глаз и у тебя есть, – сказав, ответила медведю.

– Вкусно? – спросил, медведь.

Лиса же:

– Очень вкусно! – сказав, похвалила лиса.

Услышав это, у медведя потекли слюни. Не стерпев, вытащил глаз и съел.

Жевал-жевал:

– Да, горький же, – сказал медведь.

Лиса:

– А какой глаз ты откусил, медведь? – спросила.

– Левый глаз откусил, – сказал медведь.

– Смотри на него, кто левый глаз ест. Он бывает горьким. Съешь правый, сказав, опять обманула медведя. Медведь быстренько съел правый глаз и совсем ослеп. Побоявшись разозлиться, как говорится: «Когда козе придет беда, волк станет для нее братом», лисе ничего не сказал.

– Идем, теперь и волк кого-нибудь убил. Встретим его, – сказав лиса, вывела медведя в путь.

Лиса впереди отломилла ветвь азалии, ее листьями шурша, шла впереди. А медведь за ней шел на звук шуршания.

Вдруг на ум лисы пришла плохая мысль: «Чтобы его вот так за собой водить, он мне кем приходится. Лучше его убить, не показывая волку съем, так для меня лучше», – подумав, прислушавшись к мысли убить медведя, стала ближе подходить к скале. Медведь же, куда шел этот шум, туда направлялся.

«Теперь и волк может встретиться, что я буду его с собой водить», – сказав, лиса бросила ветку азалии со скалы так, чтобы падала, касаясь камней. А бедный медведь, стараясь идти за звуком, упал со скалы.

Лиса, быстро спускаясь по дорожке под скалой, оглядывается вокруг, боясь волка. Недалеко прошла, как увидела волка окровавленного, возвращающегося бегом.

Увидев волка:

– Я впереди, он сзади шли, я не видела, как это так произошло с медведем, – сказав, лиса стала плакать навзрыд.

Никого не убив, дав себя истерзать льву, возвращающийся волк, обрадовавшись смерти медведя:

– Если умер, что сделаем. Давай я разделаю, а ты таскай в наши норы одинаковое количество, – сказав, начал разделявать медведя.

Лиса в свою нору жир, а в нору волка кости и другие отходы затащила.

Волк, закончив разделявать:

– Лиса, пока я не зашел, приготовь из жира по куску, чтобы, заходя, съели, – сказал.

Лиса для себя из жира, а для волка из жира, а вовнутрь подложив камень, подготовила. Лиса жир, а волк камень откусили, входя. Волк, сломав зубы, разозлившись, погнался за лисой. Лиса, когда входила к себе в нору, волк оторвал ей хвост. Как только волк чуть отошел в сторону: «Невозможно, не скрыться», – сказав, (лиса) выскочила и убежала. А волк, подумав, что



когда-нибудь поймаю, разве не узнаю по хвосту, тихо-тихо отправляется за лисой.

Лиса шла-шла и встретила с несколькими лисицами. Эти лисицы, удивившись упитанности безхвостой лисы, спросили, как она поправилась.

Безхвостая лисица: «Если вы хотите растолстеть, сядьте на лед, опустите хвосты в воду. К нему прицепятся рыбы. А вы их съедите», – сказала.

Лисицы сидели-сидели, хотели встать, у всех оторвались хвосты.

И так все лисицы стали одинаковыми, чтобы ищущий волк не смог узнать.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 23. Записал И.И. Гузеев в 1959 г. в с. Верхняя Жемтала Советского района КБАССР от 26-летнего Казиева Исмаила Исхаковича.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка является одним из вариантов предыдущей сказки. Данный текст не полный, имеются особенности в изложении текста. Содержание схожее.



ЖАРЛЫ КИШИ БЛА БАЙ КИШИ

Эртте-эртте жарлы киши бла бай киши жортуулгъа чыкыгъандыла. Бара-бара кетгендиле да, бир гитче жылкыгъа тюбегендиле.

– Аха, энди муну сюрейик, – дегенди жарлы киши.

– Угъай быллай гитче жылкыны биз не этебиз, энтта барайыкъ, – деди бай киши. Бара-барып бир уллу жылкыгъа тюбедиле.

Бай киши айтды:

– Энди ма бу жылкыны сюрейик, – деди да, сюрюп тебиредиле.

Бир заманда сюре келгенлей, бир туманчыкъ жетди да, жарлы киши айтды:

– Бу жылкыны иесини атыны бурун тешигинден чыкыгъан тылпыууду, – деди.

Дагъыда бираз барып, бир жауун шулпучукъ жетди, анга да:

– Бу жылкыны иесини атыны терлеген суууду, – деди.

– Энди сен жылкыны сюре бар, мен а сакълайым, – деди жарлы киши.

Ол да алай сакълап тургъанлай, бир заманда мангылайында бир кёзю бла бир эмеген келеди.

Эмеген кычырды:

– Эй, мени жылкымы сюрген ким эсенг да, атышмы-тутушму?

– Эй, аман хомух, тутушхан къатынла да этелле, атыш, – деди жарлы киши.

Эмеген атды да, жарлы кишини къолтукъ тюбю бла ётдюрдю садакъ окъну. Жарлы киши атды да, эмегенни жангыз кёзюне урду да, атдан атды.

Алтын кереги бла эмегенни къара ажирине минди да, кеси, атын да адеж тутуп, жылкыны жетди.

Сюре-сюре келип, ингриликде бир уллу къолну бойнуна тюшдюле. Алайда бир къошчукъ кёрдюле да алай тохтадыла.

Жарлы киши: «Энди мен бир отлукъ жыйайым», – деп, суу боюну бла тамыштакъла жыя, энишге кетди. Ол да алай кетгенлей, бай киши битеу жылкыны да сюрюп, алтын кереги бла ажирни да алып, къачып кетди.

Жарлы киши отун кётюрюп келгенде, жукъ да жокъ. Да не этерик эди жарлы киши, ол къош орунга кирип, бир-эки кере да отчукъ тамызып, тегерегине къарагъанда, мюйюшде бир печь кёрдю. Ол печге кирип бир жукълар эдим деп тохтагъанлай, ой, бир заманда айыу, аны ызындан бир бёрю, аны ызындан да бир тюлкю кирдиле. Мыдыхны тегерегине олтурдула да, айыу сорду:

– Энди хар ким ашауун-жашауун айтыгъыз. Айт, бёрю, не ашап жашайса?

– Мен а не ашап жашайма: хар кюнден сюрюучюню сокъур жаны бла барама да, бир семиз иригин ашайма, – деди бёрю.

– Сен а, тюлкючюк, къалай жашайса?

– Да мен бу огъары жанында сары къаяда дорбунда бир талай алтын ахчам барды да, аланы ичинде ары-бери аунап, бек зауукъ жашайма, – деди да. – Сен а, айыу, не ашап жашайса? – деп сорду тюлкючюк айыугъа.

– Да, мен не ашап жашайма: бир сокъур батманчы барды да, аны сокъур жаны бла барама да, кюнден бир бал батманын ашайма, – деди.

Танг аласына ала да кетдиле. Жарлы киши тынгылап турду да, танг атханлай, тюзюнлей бал батманчыгъа барды.



– Сени бал батманынг зат тас боламыды? – деп сорду.
– Болады. Не бек сакъ болсам да, хар кюнден бири тас болады, – деди.
– Мен аны амалын санга юйретсем, не зат берир эдинг? – деди жарлы киши.

– Сен аны амалын юйретсенг, жыйырма бал батман берир эдим санга, – деди бал батманчы.

– Алай эсе, сен сокъур жанынга иги сакъ бол. Бир айыу юйренип, сени хар кюнде бир бал батманынгы ашайды, – деди.

Марап туруп, айыу келгенлей, айыуну ёлтюрюрге аздан кююп кюуудула.

Бал батманчы уа аны ючюн жарлы кишиге жыйырма бал батман берди.

Жарлы киши андан сюрюучюге барды. Анга да ол халда сорду да, айтды:

– Сен сокъур, жанынга сакъ бол. Кюнден бир бёрю юйренип, бир иригинги ашайды.

– Да сен аны манга юйретгенинг ючюн жюз ирик берирме, – деп сюрюучю кюуанды.

Бир заманда сакълап тургъанлай, бёрю келди, алайлай бёрюню ушкок бла атып, жаралы этип, бёрю кючден кутулду ёлмей кълмай. Жюз ирик да алды жарлы киши. Андан барып тюлкючюкню дорбундан кълзыкъл бла туюноп кълстап, алтын ахчаларын жыйды. Аланы барын да алып, жарлы киши эллерине келди.

Эллеринде битеу хапарлады, бай кишини этип кетгенин. Эл а битеу жыйылып, бай кишиден жылкълыны да, ажирни да, алтын кереги бла жарлы кишиге бердиле. Сора жарлы киши бай болду. Бай киши уа жарлы болду. Алай тура туруп, бир кюн орамда экиси да бирге тюбелле. Бай киши сорду жарлы кишиге:

– Алан, сен ол ирикдени эм ол бал батманланы кълайдан тапхан эдинг, алтын ахчаланы да, – деп сорду.

– Да кълайдан табып а, ма ол сен мени кююп кетген кюшда от этдим да, мыдыхын кююп, печге кирип тынгыладым. Ары уа жаныуарла жюрюйле. Ала уа хапар айтып кетедиле. Мен а, ала айтхан жерлеге бардым да, мажардым, – деди.

Сора ол бай киши, мен да бир кёрюр эдим деп барды. Ол от этип, печге кирип тынгылап тургъанлай. Бир заманда айыу кирди, куйругу да энишге салынып, аны ызындан бёрю, ол да кючден ауа-ауа, аны ызындан тюлкючюк, ол да ол халда.

Келип мыдыхны тегерегинде олтурдула мудах болуп ючюсю да.

Айыу сорду:

– Не болгъланды, бёрю, айт хапар.

– Не болуп а: биягълы сюрюучюню сокъур жаны бла бара тургъланымлай, жетгендиле да, ёлтюрюрге аздан кююп, алай кутулгъланма, – деди.

Тюлкючюк да:

– Мен да биягълы ахчаларым бла ойнай тургъланлай, адам улу жетип, кълзыкъл бла туюноп, ахчаларымы да жыйып кетгенди, – деди.

Айыу да:

– Мени да алай этгендиле. Бизге алгълын жол адам иш тынгылагълан болурму эди? Барчы, тюлкючюк, бир кълара печге, – деди.

Тюлкючюк барып къларады.

– Жукъл кёрмейме, – деди.

– Барчы, бөрү, бир къара, – деди айыу.

Бөрү барып къарады да:

– Эки кёз жанады, – деди.

Айыу, къобуп келип, тартып чыгъарды да, ашалла да бошалла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 9 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди. Алай жазыу халына кёре, жомакъ Огъары Бахсанда жазылгъаннга ушайды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бужомакъ эки къарындашыны оюнденди, насийхат халда жазылгъанды. Байлыкъны къуууп, бай къарындаш жарлы къарындаш къоюп, эмегенден алгъан харакетни да алып кетеди. Алай ол байлыкъны къуугъан халы аны жояды.

БЕДНЯК И БОГАЧ

Давным-давно бедняк и богач отправились в поход. Шли-шли, и встретился им небольшой табун.

– Аха, давай погоним этот табун, – сказал бедняк.

– Нет! Зачем нам такой маленький табун, давай пойдём дальше, – сказал богач.

Шли-шли, и встретился большой табун.

Богач сказал:

– Давай погоним этот табун, – и начали гнать.

Погнали табун, и вдруг их догнал небольшой туман, и бедняк сказал:

– Это пар, выходящий из ноздрей, коня хозяина табуна.

Еще немного проехали, и их догнал морозящий дождик.

– Это пот капает от коня хозяина табуна, – сказал бедняк. – Теперь ты гони табун, а я подожду их.

Вдруг, когда он ждал, прискакал великан с одним глазом на лбу.

Великан крикнул:

– Эй, тот, кто угнал мой табун, будем бороться или стреляться!

– Эй ты, лентяй, бороться и женщины могут, давай стреляться, – ответил бедняк.

Великан выстрелил первым, стрела пролетела под мышкой бедняка.

Бедняк выстрелил, попал в единственный глаз великана и сбил его с коня.

Он забрал золотые доспехи, сел на черного коня великана, а своего коня взял за повод и догнал табун.

Погоня табун, они к вечеру дошли до края огромного обрыва, увидели небольшой кош и остановились там.

Бедняк, сказав:

– Пойду, соберу хворост, чтобы развести костер, – пошел, подбирая веточки, по берегу реки.

Как только он ушел, богач убежал, погнав весь табун, золотые доспехи и коня. Когда же бедняк вернулся с хворостом, то увидел, что никого нет. Что он мог поделывать? Бедняк зашел в кош, раза два разжег костер, осмотрелся



по сторонам и увидел в углу печь. В надежде поспать, зашел в эту печь, как вдруг зашел медведь, а за ним волк, а за ним лиса. Расселись вокруг углей и медведь начал:

– Теперь каждый пусть расскажет, как живет, что ест. Говори, волк, что ты ешь, как живешь?

– Что я ем, как живу – каждый день прохожу со слепой стороны пастуха и съедаю одного жирного валуха, – рассказал волк.

– А ты, лисичка, как живешь?

– У меня на верхней стороне желтой скалы, в пещере есть много золотых монет. Валяюсь среди них туда-сюда, очень хорошо живу, – рассказа лисичка. – А ты, медведь, как живешь, чем питаешься? – спросила она медведя.

– Я-то что ем? Есть один слепой пасечник. Прохожу с его слепой стороны и каждый день съедаю по одному улью с медом, – рассказал медведь.

Под утро они все ушли. Бедняк подслушал их, а как только настало утро, напрямик пошел к пасечнику.

– У тебя исчезает улей с медом? – спросил.

– Исчезает. Как бы я не старался уберечь, каждый день пропадает один, – ответил пасечник.

– Если я тебя научу, как уберечь, что ты мне дашь? – спросил бедняк.

– Если ты найдешь способ, отдам тебе двадцать ульев, – сказал пасечник.

– Коли так, будь внимательнее следи со слепой стороны. Один медведь наладился съедать у тебя один улей с медом, – рассказал бедняк.

Тогда они подстерегли медведя, и как только он пришел, прогнали его, чуть ли не подстрелив. Пасечник за это отдал бедняку двадцать ульев.

Бедняк после этого пошел к пастуху и его также спросил и сказал:

– Ты будь на стороже со слепой его стороны. Один волк наладился съедать одного твоего валуха.

– За то, что ты меня этому научил, отдам тебе сто валухов, – обрадовался пастух.

Они начали ждать, как вдруг появился волк, тут они выстрелили в него и ранили, что тот еле живой ушел. Бедняк получил за это сто валухов. После этого пошел и выгнал лисичку из пещеры, избив палкой, и собрал золотые монеты. Забрав все, бедняк вернулся в село.

В селе рассказал про то, как с ним поступил богач. Сельчане собрались и отобрали у богача и табун, и коня с золотым седлом, и отдали бедняку.

Таким образом, бедняк разбогател, а богач обеднел. Так прошло время и в один день на улице они вдвоем встретились. Богач спросил бедняка:

– Эй, откуда ты нашел эти улья, баранов и золотые монеты?

– А откуда я мог найти? В том самом коше, где ты меня оставил, развел огонь, оставив угли, зашел в печь и подслушал. Туда пришли животные и рассказали истории, а я сходил по тем местам, о которых они рассказали, и приобрел, – рассказал бедняк.

Тогда богач в надежде увидеть все это, тоже пошел туда. Он разжег костер, зашел в печь и стал прислушиваться, как вдруг зашел медведь с висящим хвостом, за ним волк, и он шел еле-еле, а за ним и лисичка в том же состоянии.

Зашли и все трое сели опечаленные вокруг углей от костра.

Медведь спросил:

– Что случилось, волк, рассказывай.

– А что могло случиться: когда проходил опять со слепой стороны пастуха, догнали и чуть не убили, еле унес ноги, – рассказал волк.

И лисичка:

– Когда я, как и всегда, играла со своими монетами, пришел человек и, избив палкой, забрал мои деньги, – рассказала.

Медведь:

– И со мной тоже также поступили. Может в тот раз нас подслушал человек? Сходи лисичка, посмотри в печи, – сказал.

Лисичка пошла и посмотрела:

– Ничего не видно, – сказала она.

– Сходи ты, волк, и посмотри, – велел медведь.

Волк пошел и посмотрел.

– Здесь блестят чьи-то два глаза, – сказал.

Медведь встал, подошел и вытащил богача, тут же его и съели.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 10.

Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно. Но по языковым особенностям текст, похоже, был записан в с. Верхний Баксан.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка о двух братьях, носит поучительный характер. Погнавшись за богатством, брат-богач бросил брата-бедняка и скрылся со всем богатством, что они забрали у великанов, но когда бедный брат разбогател, богатый брат от зависти, тоже захотел богатства, что его и сгубило.



ЖИЛЯНЛА БЛА КЪЫЗ

Бийни кызы болганды. Бий кьуртхаланы жыйып, оноу сорганды. Ала уа: «Кьаргъа билликди», – деп кьойгандыла.

– Кьаргъаны тилин ким билсе, кызымы анга берликме, – дегенди бий.

Къыз кеси чыпчыкъланы тилин билгенди. Кьаргъа аны башы бла кьарап айтханды: «Ахшы тиширыу, аман эркегырыуну кьоймаз. Аман эркегырыу иги тиширыуну тутмаз».

Бий сорганды, бир жашха кьаргъаны айтханын. Жаш а, кызы юйретгенни айтханды. Бий, сынап керейим деп, кызыны бир аман тели кишиге бергенди. Киши, кьатыны бла бирге кетгенди, садакъя жыйып. Бара-барып кызы бир жерде, бир эки жилинны ауазын эшитгенди.

Бир жилин бирине:

– Ой, аман ёлгюн, сени дарманынгы билмейдиле, ансы сени чыгъарлыкъ эдиле, – дейди.

Ол а:

– Сени алтынынг болганын билмейдиле адамла, ансы сени жер тубюнден чыгъарлыкъ эдиле.

Сора энтта да биринчи жилин: «Кёрюме, сени ичингде тургъанынгы. Жети жыллыкъ кысыр кьойну туз бла биширип ашаса, сен тышына чыгъарса».

Къыз олсагъат окъуна базаргъа чабып, кысыр кьойну биширип кишисине ашатханды. Жилин суурулуп чыккъанлай, ёлтюрдю да кьойду кызы аны. Киши да саппа-сау, ариу, сыйдам болду.

Къыз, барып, дагъыда ол бир жилинны алтынны юсюнде чулганып кереди да, ёлтюреди.

Сора, бай болуп, ала экиси юй ишлегендиле. Кызыны атасы да, аланы табып, биргелерине жашап кьалды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 14 паспорт. 1882 жылда туугъан Биттирланы Османны жашы Зулкьайдан Орусбийланы Ф.А. жазганды. Къачан, кьайда жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алганды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъяда адам бла табийгъатны жууукълугъу кёрюнеди. Адам жаныуар тилни ангылайды.

Алгын заманда жаныуар адамгъа кёчерге боллугъуна ийнанып болгандыла. Бу жомакъяда да жилин адамны ичине кирип, аны тели этип турады. Дагъыда жилин алтынланы сакълайды деген а битеу кьыралланы жазмаларында айтылады. Адамла жилин аурууланы иги этгенине да ийнанып болгандыла.

ЗМЕИ И ДЕВУШКА

У князя была дочь. Князь собрал ведуний и спросил совета. А они сказали лишь: «Ворона знает».

– Кто будет знать язык вороны, за того отдам свою дочь, – сказал князь.

Девушка сама знала язык птиц.

Ворона, посмотрев сверху, сказала:

– Хорошая женщина, плохого мужчину не оставит. Плохой мужчина хорошую женщину не удержит.

Князь спросил у одного парня о том, что говорила ворона. А парень сказал так, как его научила девушка. Князь, чтобы испытать это, отдал дочь за безумца. Безумец ушел вместе с женой, собирая милостыню. Шли, шли, и девушка в одном месте услышала змеиные голоса.

Одна змея другой:

– Ой, чтобы ты умер, лекарство от твоей болезни не знают, а то тебя вытащили бы, – сказали.

А он:

– Люди не знают, что у тебя есть золото, иначе они достали бы тебя из-под земли.

И опять первая змея:

– Посмотрим, как ты будешь внутри, когда сварит и съест мясо семилетней яловой овцы с солью, тогда ты выйдешь наружу.

Девушка тут же побежала на базар, сварив яловую овцу, и вскормила мужу. Как только змея выползла, девушка убила ее. И муж ее стал здоровым и красивым.

Девушка еще идет и видит, как та змея лежит на золоте, свернувшись в клубок, и убивает ее.

Потом, разбогатев, они вдвоем построили дом. Отец девушки тоже, отыскав их, остался жить с ними.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 14. Записала Ф.А. Урусбиева от Биттирова Зулкая Османовича (1882 г.р.). Когда и где осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В этой сказке сохранены тесные связи человека с природой. Здесь и мотив понимания человеком языка вороны и змеи, и мотив переселения животного в человека с целью порчи, колдовства, что клад всегда охраняет змея.

Кроме того, змея в карачаево-балкарских сказках о животных, как и в мировом сюжете о ней, наделяется свойствами лекаря. Именно она дает знать девушке, в чем причина болезни ее мужа и как от нее излечиться.



АЙЫУ УЛУЧУКЪ

Эртте-эртте бир киши къалай бла эсе да айыу къатын алгъанды. Андан бир жашчыкъ тууады. Ол жашчыкъ ёсюп уллу болады. Атасы хар заманда да юйде турады, айыу анасы уа алагъа аш хазырлайма деп, чабакъ тутуп айланады.

Бир жол жашчыкъ атасына былай айтады:

– Кел, ата, элге адамлагъа къачайыкъ.

Атасы аны айтханына хо дейди. Экиси да къачадыла. Айыу юйюне келеди. Юйюнде не эрин, не жашын тапмайды. Аланы излейди. Аямай аланы ийислерин ийискеп, къуууп башлайды. Бир заманда жашчыкъ, ызланындан бир ауур-ауур солуп келген затны, эслейди. Ол а анасы айыу болады. Атасы бла жашчыкъ аямай къачадыла.

Атасы айтады:

– Элге барсакъ, санга кючюнг бла ойнаргъа жарарыкъ тюйюлдю.

Адамланы кёргенлей къууанадыла. Элге келип, бираз тургъанлай, жашчыкъ, атасыны айтханын унутуп, ойнап башлайды. Тыншчыкъ ургъанлай окъуна, кимни билегин сындырады, кимни аягъын чыгъарады. Бир-эки сабийни уа ёлтюрген окъуна этеди. Аны кючю айыу кюч эди. Жашчыкъ:

– Мында былай бла иш болмайды. Андан эсе бир къарыулуракъ адамла болгъан жерге барайым, – дейди атасына.

Атасы:

– Мындан бара сен алты от кёрюрге, юйге кирирсе, алты аякъгъа аш къуюлуп болур, алай ол ашха бир да тийме, – дейди анга.

Хар иш атасы айтханлай болады. Алай жашчыкъ биягъы атасы айтханнга къарамайды – ол ашдан бир аякъны алып ашайды. Бир заманда алты аскерчи киши ашап башлайды. Бирине аякъ жетмей къалады.

Ол:

– Мени аягъым къайдады? – дейди.

Жашчыкъ:

– Мен ашагъанма, – дейди.

Ол алтау жашчыкъны ёлтюрюрге башлайдыла. Орамгъа чыгъарыгъа умут этедиле, алай къолларындан келмейди. Жашчыкъ аланы, бир бирлерине уруп, барысын да ёлтюреди. Аны бла жолгъа чыгъады. Бара кетип бир жерде от кёреди. Аны къатында бир юй болады. Жашчыкъ ол юйге киреди. Бир жангыз адамгъа аш хазырланып тургъанын кереди. Олтуруп, ол ашны ашайды. Бир заманда юйню иеси кирип келеди эм ашны ашалып тургъанын кёрюп былай айтады.

– Мени ашымы ким ашагъанды?

– Мен ашагъанма, – дейди айыу улчукъ.

– Сау бол, манга келгенинги алапат иги этдинг. Мени нёгерлерими бизни жау аскерибиз къыргъанды. Сен манга бир болуш, – дейди ол киши. Ол а кеси жашчыкъ ёлтюрген аскерчилени бири болады. Алай ёлген кибики этип, сау къалады. Жашчыкъны ёлтюрюк акъылда, аны марап аллында, огъары да айланганда да аллындан чыгъады.

– Къайда урушхандыла, – деп сорады жашчыкъ.

– Тамбла кёргюзтюрме, – дейди ол киши.



Экинчи кюн атланадыла. Бир заманда ол киши бир адамланы кёргюзтютюп:
– Ма, бизни сау аскерибиз келе турадыла. Букъ! – дейди жашчыкыгъа.

Экиси да бугъадыла. Ала мычымай жетип келедиле. Кеслери да бу адамла, ол жашчыкык ёлтюргенлени нёгерлери боладыла. Алай аны жашчыкык сезмейди. Ала жетгенлей, жашчыкык буруп, сермеп-сермеп аланы кырып бошайды. Ол заманда аны нёгер кишиси бир да болушмайды. Жашчыкык аны кёрюп, ачуланан:

– Сен нек болушмадың манга? – деп сорады.

Ол киши уа кесини аман акъылын жабып:

– Да сен менсиз да аланы кыраллыгыңгы билип, сени къарыуунга сейирсинип тура эдим, – дейди.

Жашчыкык нёгерине ишекли болады. Кишиге уа: «Энди не этерик болур, бир сынаим муну, ким болгъанын», – дейди.

– Энди быланы ююу къайдады? – деп сорады.

– Кел элтейим, – дейди ол киши.

Тебирейдиле. Бара кетип, ала бир уллу тёш кёредиле. Ол тёшню тютюу уа терен уру болады.

Ол киши, ары киргенлей, тешикни бегитип, ёлтюрюрге деген муратда айыу улугъа:

– Ма бу тешикди кир, – дейди.

– Угъай, сен кир. Мен жолну билмейме! – дейди жашчыкык, аны ол акъылын сезип.

Киши, кьоркьуп, угъай демей киреди. Жашчыкык тёшню аллына да уллу таш тёнгеретип кетип къалады. Ол кишини жилигъанына бир къарт жолоучу кыйытады.

Хапарын соруп, толу билгенден сора:

– Да мен санга айтырыкы: «Кишиге кёр къазма, кёр къазсанг кесинг тюшерсе!», – деп, кишини да чыгъарып, жолгъа тюшеди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 16 паспорт. Цокаланы Ацийни жашы Алийден Гузеланы И.И. жазгъанды. Къачан, къайда жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Айыу улучукъ» деген жомакъ тотем ызлары болгъан жомакъладан бириди. Мында адам айыу тиширыу алгъаны мифология сюжетледен алыныпды. Аладан туугъан жашчыкык адам сыфатлы эм айыу къарыууу бла болады.

СЫН МЕДВЕДИЦЫ

Давным-давно один мужик случайно женился на медведице. У них родился сын. Этот мальчик вырос и стал большим. Его отец всегда был дома, а мать-медведица, чтобы добыть им еду, ходила и ловила рыбу.

Однажды мальчик говорит отцу:

– Идем, отец, убежим в село к людям.

Отец с ним согласился. Они вдвоем убегают. Когда медведица пришла, она в доме не находит ни мужа, ни сына. Ищет их и начинает преследовать



по запаху. Вдруг мальчик замечает, что за ними бежит кто-то, тяжело дыша. Эта была его мать – медведица. Отец и сын убегают, не жалея сил.

Отец говорит:

– Когда придем в село, ты не должен использовать силу, когда будешь играть.

Они обрадовались, когда увидели людей. Побыв немного в селе, мальчик, забыв о том, что ему говорил отец, начинает играть. Даже когда он ударил тихо, кому-то руку сломал, кому ногу вывернул. А одного-двух детей убивает. Его сила была медвежьей.

Мальчик говорит отцу:

– Здесь так дело не пойдет. Лучше я уйду туда, где живут люди посильнее.

Отец:

– Когда будешь идти отсюда, увидишь шесть костров, там войдешь в дом, а там будет накрыто на шесть человек, но ты не трогай чашки, – сказал. Вдруг шесть воинов начинают есть.

Одному не хватает чашки. Он закричал:

– Где моя чашка.

Мальчик говорит:

– Я съел.

Эти шестеро собрались убить мальчика. Хотели его вывести на улицу, но у них не хватает сил. Мальчик убивает их всех, ударив друг о друга. С этим собирается в путь. Шел, шел и увидел в одном месте костер. Рядом был дом. Мальчик заходит в этот дом и видит, что там приготовлена еда на одного человека. Садится и съедает эту еду. Вдруг заходит хозяин дома и, увидев, что еда съедена, говорит:

– Кто мою еду съел?

– Я съел, – сказал сын.

– Спасибо, ты хорошо сделал, что пришел. Моих друзей перебило вражеское войско. Ты мне поможешь, – сказал этот мужик. А он был одним из воинов, которых перебил мальчик. Он притворился мертвым и выжил. Задумав убить мальчика, он следит за ним. Ходит вокруг и впереди него.

– Где они воевали, – спросил мальчик.

– Завтра покажу, – ответил мужик.

На второй день отправляются в путь. Вдруг мужик, показав каких-то людей, говорит мальчику:

– Вот, идет вся наша армия. Прячься!

Они вдвоем прячутся. Армия быстро приближается. Эти люди были товарищами тех, кого убил мальчик, но он этого не понял. Как только люди дошли, мальчик повернулся и ударами их перебил. В это время его путник ничем мальчику не помог.

Увидев это, мальчик злобно спрашивает:

– Почему ты мне не помог?

Мужик, скрывая свое злое намерение, сказал:

– Я и так понял, что ты и без меня их перебьешь, поэтому просто стоял и удивлялся твоей силе.

Мальчик начал подозревать своего путника. Он подумал: «Испытаю я его и узнаю, кто он и что собирается делать».

– Где находится их дом, – спросил мальчик.

– Пойдем, я тебе покажу, – говорит мужик.

Они направляются туда. Шли, шли и увидели большой холм. А под этим холмом был глубокий ров. Этот мужик, закрыв дверь, как только туда зайдут, задумал убить мальчика.

Сказал сыну медведицы:

– Заходи в эту дыру.

– Нет, заходи так. Я не знаю дорогу, – сказал мальчик, поняв его намерение.

Мужик, испугавшись, не стал отказываться и зашел. Мальчик закатил перед холмом огромный камень и ушел. На плач этого мужика пришел старый путник. После того как спросил и узнал о том, что случилось:

– Что я могу тебе сказать: «Не рой другому яму, а то сам в нее попадешь!» – сказав, выпустил мужика и отправился в путь.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 16. Записал Гузеев И.И. от Цокаева Алия Ациевича. Когда и где осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка «Сын медведицы» является существенным примером сказок с тотемным мотивом. Здесь брак мужчины с медведицей является одним из таких мифологических сюжетов. У них рождается сын-человек с медвежьей силой, превращающийся вскоре в могучего богатыря.



АХШЫЛЫКЪ ЖЕРДЕ КЪАЛМАЗ

Эртде бир жигит жаш халкъыны душманлары бла къазаутха атланып чыкъганды. Ол, бара кетип, бир терен башы – аягы кёрюнмеген агъачха киргенди. Агъач бла бир аз баргъанлай, бир гырылдагъан, бир-бирин сермеген, тиш тауушла эшитеди. Жетип барып къараса, бир уллу кёк бёрю кийик аты тайын тутуп, ашайым деп тургъанлай, кёреди.

Жаш кёп сагъыш этмей, садакъны иги тартып, марап бёрюню къулакъ тюбюне урады. Бёрю олсагъатдан окъуна ёлюп, бир жанына ауады. Тай бёрюню тюбюнден бошайгъанлай окъуна, секирип туруп, жашха тюрслеп-тюрслеп къарайды. Жаш да аны алай къарагъанына, сейирсинип, жолуна тюшеди.

Дагъыда бара кетип, бир уллу суу бойнуна жетеди. Суу бойнунда бир уллу къой тенгли къанкъазны андан да уллу бир къара къуш тутуп тургъанын кёреди. Биягъы садакъны сермеп, къушну ёлтюреди.

Къанкъаз да къууанып тегерегине къарайды да, жашны эслеп, тюрслеп-тюрслеп къарап, жюзюп кетеди. Ол жашны уа суудан, жолдан, таудан къоркъмагъан бир аты боланды.

Жолгъа уа аты бла чыгъады. Кёп сагъыш этмей, жаш суудан ётеди. Суудан ётюп бара тургъанлай, бир уллу эки-юч юйню бирге къошхан кибик ташны кёреди.

Жетип барып къараса, бир уллу ургъуй бла губуну туююше тургъанын кёреди. Бёркю бла уруп ургъуйну ёлтюрюп, губуну бошлатады. Андан ары тюшге дери барып, къазаут этерге келген душманларын кёреди. Батыр атына да къамичи жетдирип, алагъа жетеди. Уллу къазаут башланады. Душманланы саны, къаллай бир къырса да, азаймайды. Кимин садакъ бла, кимин къама бла аудурады.

Терлегенлери да сууча бара, бир къауум жарасы бла да батыр жаш душманланы азайтады. Алай жаш, душманланы жартысы бугъуп тургъанын билмей, битеу кючюн аямай урушуп, бек арыйды, къазаутха чыкъгъанланы тогъуз-он адам къалгъанларын кёрюп, быланы жокъ этейим деп. Бирден кючюн жыйгъанлай, болгъан букъу этдирип, эл бла бир аскер келе тургъанын кёрюп къачып башлайды.

Аты жаралы болса да душманлагъа жетдирмей къачады. Алай аланы жууукъдан жууукъ келгенин эслеп, батыр жаш ол суу жагъада уллу ташха ашыгъады. Къазаутха келе туруп, ол ташны уллу тешигин кёрген эди.

Битеу кючюн салып, жаш ол ташха жетеди эм да аны тешигине аты бла кирип, суугъа тюшген таш къармар дегенча, бугъаргъа акъыл этеди.

Губу анга алай къыйынлыкъ келгенин кёрюп, терк окъуна тешик алына уллу ау этип, кеси да ары-бери барып башлайды. Душманла жетип келип, тегерекге къарайдыла. Ол тешикни да кёредиле, алай ол ауну кёрюп: «Бу ау тургъанлай, къалай кирлик эди», – деп, тегерекге чабадыла. Алай къайры табарыкъ эдиле, кеслери ол ташны тегерегинде жукълап къаладыла. Жаш танг атаргъа, тешикден чыгып, душманланы къырады.

Жукълагъан душманла не болгъанын билмей, эслерин жыялмай, къамагъа аш боладыла. Барын да къырып бошагъанлай, атын суугъа кийирип, кеси уа жаралы ат кётюралмаз деп, къуйругъундан тутуп киреди суугъа. Аны алай амалсыз болгъанын кёрюп, ол къутхаргъан къанкъаз

жетип келип, аркъасына алады жашны. Жаш атыны жүгенинден тутуп, суудан кыйналмай ётүп кетеди. Суудан чыккыганлай, жаш кытхаркыган тай келип, жашны сыртына алып, жолкыа тюшеди.

Жаш а, кесини жаралы болкыган атыны жүгенинден тутуп, кыйналмай юйюне келеди. Юйюне келгенлей, тайны: «Энди сау бол, бар жеринге», – деп жибереди. Алай бла жашны ол жаныуарлагыа этген ахшылыкыгы кесине кыйытып, душманланы да кыырып, юйюне сау-саламат жетеди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 17 паспорт. КъМАССР-ны Таулы-Тала элинде Гузойланы Мухайдан Гузеланы И.И. жазкыганды. Къачан жазылкыганы белгисизди.

Архивден Геркыокыланы Л.С. жазып алкыганды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакы насийхат халда жазылкыганды. Жомакыны баш жигити жолуна бара ахшылыкы эте барады: тайны бёрюден, кыанкыазны кыушдан, губуну ургыуидан кёруулайды.

Мында жаш кёруулагыган жаныуарла барысыда анга ардан болушлукы этедиле. Игилик кыйытмай кыалмайды, дегенни билдиреди.

ДОБРО НА ЗЕМЛЕ НЕ ОСТАНЕТСЯ

Давным-давно один смелый парень вышел на борьбу с врагами своего народа. Он шел-шел и вошел в один дремучий лес, где не было видно ни начала, ни конца. Немного пройдясь по лесу, услышал рычание и стук зубов. Когда он добежал до того места, увидел как большой серый волк схватил жеребенка дикой кобылы и хотел съесть.

Парень, долго не думая, хорошо натянул тетиву лука и, прицелившись, выстрелил под ухо волку. Волк тут же замертво падает в сторону. Жеребенок, освободившись из-под волка, вскочил, встал и пристально посмотрел на парня. Парень удивился, что тот так смотрел и отправился дальше в путь.

Шел дальше и дошел до берега огромной реки. Он видит, что на берегу большую как баран лебедь схватил огромный орел. Парень опять схватил лук и убил орла.

А лебедь от радости смотрит по сторонам и видит парня, внимательно присмотревшись, уплывает. У этого парня был конь, который не боялся ни воды, ни дорог, ни гор. И в дорогу он выходил на коне. Долго не думая, парень переходит реку.

Когда переходил, увидел огромный камень с величиной в два-три дома. Подойдя поближе, увидел, как сражаются огромный комар и паук. Ударив шапкой, убил комара и освободил паука.

Дальше шел до полудня и наконец, увидел врагов, с которыми ему предстояло сразиться. Храбрец, ударив коня плетью, добрался до них. Сражение начинается. Сколько бы парень не уничтожал противника, их число не уменьшалось. Кого луком сбивает, кого мечом рубит.

Пот стекал с него ручьем, сам раненный, богатырь уменьшил число противников. Но он не знал, что половина вражеского войска пряталась, и поэтому не жалел сил и очень устал. Парень, увидев, что на поле битвы вражеских воинов осталось всего девять-десять человек, хотел их всех



уничтожить разом, и как только он собрал все силы, увидел, что, подняв пыль, идет огромная армия противника, и начал отступать.

Хотя его конь был ранен, но бежал так, что враги не могли их догнать. Заметив, что они все больше приближаются, парень поспешил к большому камню на берегу реки. Когда он шел на сражение, то заметил в камне пещеру.

Изо-всех сил парень добрался до камня и вместе с конем забежал в эту пещеру с мыслью спрятаться так, как говорят, кто войдет в воду поковыряет камни.

Паук, увидев, что парня настигла такая беда, быстро натянул паутину при входе в пещеру и сам начал ходить туда-сюда. Враги увидели дыру в камне, но подумали: «Как бы он туда вошел, когда здесь такая паутина», – сказав, бегали вокруг камня. Но как они могли его найти, а сами остались вокруг камня и заснули. Под утро парень вышел из пещеры и убил всех врагов.

Спящие враги не поняли, что случилось, не приходя в себя, стали пищей для меча. Как только всех перебил, пустил коня в реку, а сам держал за хвост, думая, что раненный конь не сможет его понести. Увидев его беспомощность, приплыла та лебедь, которую он спас и посадила парня на спину. Парень, взяв коня за узду, не утруждаясь, перешел реку. Когда парень вышел на берег, прискакал жеребенок, которого он спас, и, посадив на спину, отправился в путь.

Парень, взяв за узду своего раненного коня, спокойно приезжает домой. Как только дошел до дома, отпускает жеребенка со словами: «Спасибо, скачи к себе». Таким образом, та доброта, которую он проявил к тем животным, вернулась, и он, перебив всех врагов, вернулся домой живой и здоровый.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 17. Записал И.И. Гузеев в с. Таилы-Тала КБАССР от Гузоева Мухая. Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка поучительного характера. Здесь главный герой по пути к цели творит добро: спасает жеребенка от волка, лебедя от орла, паука от комара. Здесь все, кого он спас, впоследствии помогают ему. Как говорится, добро не остается безвозвратным.



ЁТЮРЮКНЮ АРТЫ БИР ТУТУМ

Эртте заманлада бир элде эки киши жашап болгъандыла. Бир кишини аты болгъанды, экинчи кишини уа арбасы болгъанды.

Бир кюн эки киши да, байталны да арбагъа жегип, базаргъа тебирегендиле. Жолда экиси да хапар айта келгендиле. Байтал бууаз байтал болуп, тууар заманы жетип тургъанды. Байталны иеси киши арбадан тюшюп, артхаракъ болгъанлай, байтал къозлайды. Арбаны иеси, байтал къозлагъанлай, тайчыкъны арбагъа байлап къояды.

Байталны иеси жетеди да:

– Байталым къозлап турады да, – деп къууанады. Алай арбаны иеси: «Тай меникиди, мени арбама тагъылып турады», – дейди.

Байталны иеси:

– Арба тай къозламазлыгъын билесе, къой андан эсе, – деп кюрешеди.

Арбаны иеси:

– Арба да меникиди, тай да меникиди, – деп женгдирмейди. Алай этип даулаша, экиси да ёкюл тутадыла. Арбаны иеси екюлге тюлкюню тутады. Тюлкю даулаш боллукъ жерге алгъа келип, сакълап турады. Кирпи келмей, сакълатады. Тюлкю иги да сакълайды, алай тюлкю келмейди. Тюлкю ачыулана башлайды. Тюлкю кирпиге ачыуланyp: «Мени былайда саятау санларым бла сакълатып, кёремисе сен ол жюн буштукъну», – дей эди. Алай кирпи келмей, дагъыда кеп сакълатады. Бир заманда кирпи келеди.

Тюлкю:

– Сен, кесинги башынга сый чакъырып, къайда айланаса. Кесинги ким болгъанынги билмеймисе? – дейди. Кирпи:

– Мен башыма сый да чакъырмайма, алай келялмай тургъан себебим барды. Мен да юйден чыгъып тебирегенлей, къар жаууп башлайды. Къар тохтармы деп сакълап тургъанма да, къар а тохтамай, къалын жаугъанды. Аны юсюне да къара сууукъ болгъанды да, андан тургъанма келялмай, – дейди.

Тюлкю:

– Энди мен ариу жазгъы кюн къар жаууп, боран болгъанды, дегеннге къалай ийнанайм, – дейди.

– Алай эсе, бара тургъанлай, арба тай табарыгъына да ийнанма, – дейди.

Алай этип, арбаны иеси женгилип къалады. Аны бла ашап, жашап къаладыла.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 18 паспорт.

КъМАССр-ны Огъары Бахсан элинде 75-жыллыкъ Гулийланы Темударны жашы Габадан жазылгъанды. Къачан, ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ насийхат халда жазылгъанды. Мында кирпи, тынч жаныуарчыкъ, тюлкюню къалай хорлагъаны сейирди.

У ЛЖИ НОГИ КОРОТКИ

Давным-давно в одном селе жили два мужика. У одного мужика была лошадь, а у другого повозка.

Однажды они оба запрягли кобылу в повозку, собрались на базар. По дороге они разговорились. Кобыла была жеребая, уже должна была ожеребиться. Когда хозяин кобылы слез с повозки и немного отстал, она ожеребилась, а хозяин повозки привязал жеребенка к повозке.

Хозяин кобылы догнал повозку и обрадовался:

– А, моя кобыла ожеребилась.

Но хозяин повозки сказал:

– Жеребенок мой, он привязан к моей повозке.

Хозяин кобылы спрашивает:

– Ты же знаешь, что повозка не может родить жеребенка, так что оставь.

Но хозяин повозки переспорил:

– И повозка моя, и жеребенок мой.

Они не смогли разрешить спор и решили обратиться к защитникам.

Хозяин повозки защитником выбрал лису. Лиса, на место где будет спор, приходит раньше и ждет. Ёжик, опаздывая, заставляет ждать. Лиса долго ждет, но ежик не приходит. Лиса тогда начала злиться. Она, разозлившись, сказала:

– Посмотри-ка на этот комок шерсти, который заставляет меня ждать.

Но ежик еще долго заставил ждать. Проходит какое-то время, и ежик приходит.

Лиса:

– Ты где ходишь, набивая себе цену. Ты не понимаешь, кем ты являешься? – сказала.

Ёжик:

– Я не набиваю себе цену, а то, что не мог прийти, имеет причину. Как только я вышел из дома, начал идти снег. Я хотел переждать снег, но он пошел еще сильнее. А к этому еще прибавился трескучий мороз, поэтому я не мог прийти, – сказал.

Лиса говорит:

– Как я теперь поверю, что в этот красивый летний день пошел снег и был буран.

– Если так, не верь тому, что повозка по дороге родила жеребенка, – сказал ёжик.

Таким образом, хозяин повозки проиграл дело. И так они остались жить-поживать.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 11. Записано в с. Верхний Баксан КБАССР от 75-летнего Гулиева Габы Темударовича, проживающего в Верхнем Баксане. Когда и кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка поучительная. Здесь интересно то, как ежик, тихий зверек, смог обмануть лису.

ЭКИ КЪАРЫНДАШ

Эки къарындашдан бири чомарт, бирси уа кыызгъанч болгъанды. Аталары ёлгенден сора, ала мюлкню тенг юлешгендиле. Жангыз юлешинмей бир акъ ат къалгъанды.

Кыызгъанч айтады:

– Кел, жолгъа чыгъайыкъ, кимге тубесек да, ол, атны кимге буюрса, ат аны болсун.

Чомарт къарындаш анга да ыразы болгъанды. Атны да алып, жолоучу болгъандыла. Азмы-кёпмю баргъандыла, бара-барып бир суу бойнуна чыкыгъандыла.

Былайда кыызгъанч айтханды:

– Мен ары жанына ётейим да, атны артха бошларма, сора сен да ётерсе.

Чомарт суу боюнунда къалгъанды. Кыызгъанч суудан ётгенлей, атха къамичи жетдирип, къайры эсе да думп болуп кетеди. Чомарт къарындаш алайда ингирге дери сакълап, къарангы болгъанлай, атылып тургъан бир эски юйге киргенди. Тёгерекге къарагъанды да, жукъ эслемегенди. Сора, жукъларгъа деп, чардакгъа чыкыгъанды.

Кече арасында къошха айыу, бёрю, тюлкю киредиле. Уллу от этип, ючюсю да аны төгерегине чёкгендиле.

Бёрю бла тюлкю:

– Бу арт ыйыкъда кесинг ашарыкъ къалай тапханынгы хапарын айт, – деп айыугъа къадалгъандыла.

– Мен бир хайырлы ишге тюзелгенме, – деп башлагъанды айыу. – Бир элни кыйырында шаудан чыгъады. Адамла, малла да жалан ол шауданнга жорюйдюле. Мен да алайда бугъуп турама да, кюн сайын не бир адамны, не да бир малны ашайма. Ол элни ортасында жер тубюнде шаудан болгъанын а, бир адам билмейди. Аны бир кесек къазгъанлай окъуна, ол элге угъай, дагыда кёп элlege жетерча, аллай бир суу чыгъарыкъ эди, – дегенди.

Андан сора кесини хапарын бёрю айтады.

– Жашауума мен да тарыкъмайма. Бир хайырлы иш тапханма. Былайдан асыры узакъ болмай бир къош турады. Аны кьойчусу сокъурду. Кюн сайын барама да, суйгеним чакълы бир кьойну алып кетеме. Ол тели кьойчу билмейди ансы, кёзлерин сау этерик эди. Сюрюуде бир къаракъулакъ зада къочхар барды. Аны кесип, къаны бла кёзлерин сюртсе, кьойчуну кёзлери сау боллукъ эди, – деди.

Хапар айтыр кезиую тюлкюге жетди:

– Бир дорбун барды да, менден сора аны таныгъан жокъду. Ол дорбунда бир ариу кыыз жашайды. Мен барсам, башхалагъа айтыр деп, къоркъуп, несин да манга береди. Къыйналмайма, ач да болмайма.

Хар бири тынч жашауларына къууанып, лахорну бошагъанлай, жукъларгъа жатдыла.

Чомарт къарындаш аланы хапарларын эшитип тургъанды. Танг атханлай, ол айыу айтхан элге баргъанды да, халкъны жыйгъанды.

– Сизни элни ортасында шаудан тапсам, сауыгъа не берликсиз манга? – деп, ол жамауатха соргъанды.

– Ой, аны ючюн сен къоркъма, биз сени ыразы этербиз, ол ашхылыкъны тап, – деп тилегендиле. Чомарт къарындаш, айыу айтхан жерни табып, шауданны ачханды.



Аладан кѣп ырысхы алып, ызы бла Чомарт сокъур къойчугъа баргъанды да:
– Кѣзлеринги сау этсем, манга не берликсе? – деп къойчугъа соргъанды.
– Не суйсенг мени мюлкъюмден алырса, – деп, къойчу жууаплагъанды.
– Да алай эсе, ол къаракъулакъ акъ къочхарны кес да, аны къанын кѣзреринге сюрт, – дегенди.

Къаракъулакъ акъ къочхарны кесип, аны къанын кѣзлерине сюртгенди да, къойчу сау болгъанды. Къойчу Чомартха кѣп къой бергенди. Чомарт, ол къойланы да сюрюп, тюлкю айтхан къызгъа баргъанды. Дорбунда ол ариу бай къызны да тапханды. аны кѣргенме деген, тилин къапсын, десек гюнахлы боллукъ туююлбюз. Алай хапарда айтылгъаннга кѣре уа, жаш ол къызны мюлкъю, кесин да мысхытып юйюне келгенди, дейдиле.

Жарлы къарындашын алай бай болуп келгенин кѣргенде, къызгъанч кюйгенди, бишгенди, алай къарындашыны юйюне уа бармагъанды.

Бир бѣлек заман озгъандан сора, къызгъанч тѣзалмагъанды да, къарындашына баргъанды. Чомарт къарындаш хапарын минчакъныча тизип айтханды.

Энди къызгъанч да, ол халда бай болургъа умут этип, айыу, бѣрю, тюлкю жашагъан къошха атланады. Чардакъгъа чыгып, бугъады.

Кече арасында бир-бири ызындан айыу, бѣрю, тюлкю келгендиле. От этип, гюрен тохтап олтургъандыла.

– Ай, медет, ким эсе да мени жашырын ишими билип, элге айтханды. Энди эл арасында шаудан чыкыгъанды, – деп, айыу огъурсуз мурулдагъанды.

– Ай, ол а бош эди, къойчуну ким эсе да сау этгенди. Мен тапхан болсам, къан тамырларын жыртыр эдим, – деп бѣрю жаныгъанды.

– Ай, сиз къайнай эдигиз, ма ол ариу къыздан къурулай къалдым, – деп, тюлкю жилигъанды.

– Эшда, бизни хапарыбызгъа ким эсе да бир тынгылап тургъан болгъанды. Чыкычы чардакъгъа бир къара, – деп, айыу бѣрюню жибергенди.

Бѣрю чардакъгъа чыгып, жукъ да кѣрмей, къайытханды.

– Кѣз чырагъым, барчы сен да бир къара, анда адам болургъа болур, – деп, тюлкюню да жиберди.

Чардакъда тюлкю да жукъ тапмай тюшдю.

Айыу, ачыуланып, кеси баргъанды. Ары-бери узала кетгенди да, бир затны сермеп ууучлагъанды. Ары-бери тѣнгеретди. Къызгъанч кесин ѳлгенча этип къымылдамады. Айыу ийисгей кетип, жуммакъ кысып, чардакъдан энишге атды. Кеси да ызындан тюшдю. Къызгъанч саудан ѳлгенча болуп къалды. Анга келген къара кюн келсин, дагъыда аллайлагъа. Ючюсю да аны юсюне басындыла. Эрлай тартып, созуп, жыртып, ашап бошадыла.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 10 папка, 19 паспорт. Бѣзюланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Бу жомакъ эки къарындашыны юсюнденди, юйретиухалда жазылгъанды. Байлыкъны ызындан къуууп, бай къарындаш жарлы къарындашын атып, эмегенледен сыйыргъан хар затны да алып къачханды, алай жарлы къарындаш бай болгъанда, бай къарындаш зарланып, байлыкъ кюсегенди. Ол да аны ѳлюмге элтгенди.

Жомакъны аз баишхалыкълары болгъан вариантлары архивде дагъыда тубейдиле (45 папка, 2 паспорт).

ДВА БРАТА

Жили-были два брата, один из них был щедрым – Чомарт, а другой – скупым – Момарт. После смерти отца, они поровну поделили имущество, единственным не разделенным остался один конь.

Момарт говорит:

– Идем, выйдем на дорогу. Кому первый встречный путник сулит этого коня, пусть тот и заберет.

Чомарт и с этим согласился. Они, взяв коня, отправились в путь. Долго ли – коротко ли они шли и вышли на берег реки.

Тут и говорит скупой:

– Я переберусь на тот берег и отпущу коня обратно, тогда и ты переберешься.

Чомарт остался на берегу реки. Момарт, как только перебрался на тот берег, ударил коня плетью и куда-то исчез. Чомарт прождал там до вечера, а как только стемнело, зашел в заброшенный домик. Огляделся вокруг, но ничего не заметил, и пошел спать на чердак.

Ночью в этот дом пришли медведь, волк и лиса. Развели большой костер и сели вокруг него. Волк и лиса стали спрашивать у медведя:

– В эти последние недели как живешь и чем питаешься, расскажи медведь!

– Я приловчился к одному прибыльному делу, – сказал медведь. – На окраине села есть родник. И люди, и звери ходят к этому роднику. Я в это время там прячусь и съедаю или одного человека, или зверя. А никто не знает, что в центре села под землей есть родник. Если немного выкопать то место, пробьется ручей, который обеспечит не только это село, но и много соседних сел.

После него свою историю рассказал волк:

– На жизнь я тоже не жалею. У меня тоже есть прибыльное дело. Недалеко отсюда расположен один кош. Его пастух слепой. Каждый день иду и забираю столько овец, сколько захочу. Этот глупый пастух не знает, что его глаза можно излечить. В стаде есть один черноухий трехлетний баран, если его зарезать и его кровью помазать глаза пастуха, они начнут видеть.

Настало время рассказывать и лисе:

– Есть пещера, о которой знаю только я. В этой пещере живет прекрасная девушка. Когда я прихожу к ней, она боится, что я расскажу кому-нибудь, и отдает мне все, что у нее есть. Я не голодую и не утруждаюсь.

Каждый из них, радуясь беззаботной жизни, закончили балагур и легли спать. Чомарт слышал весь их разговор. Как только рассвело, он пошел в то село, о котором рассказал медведь и собрал его жителей:

– Если я найду в центре села родник, что вы мне подарите? – спросил он людей.

– Ой, ты не переживай из-за этого, мы тебя отблагодарим, ты только найди, сделай это хорошее дело, – попросили люди. Чомарт нашел то место, о котором рассказывал медведь, и открыл родник. Забрав от них много подарков, следом Чомарт отправился к слепому пастуху и спросил:

– Если я вылечу твои глаза, что ты мне дашь?

– Что захочешь из моего имущества, отдам, – ответил пастух.



– Если так, нарежь этого черноухого белого барана и помажь его кровью глаза, – сказал.

Пастух зарезал черноухого белого барана, его кровью помазал глаза и выздоровел. Пастух отдал Чомарту много овец. Тот, погнав их, пошел к той девушке, о которой рассказывала лиса. В этой пещере он нашел эту красивую богатую девушку. Мы наверно не согрешим, если скажем: «Пусть откусит язык тот, кто скажет, что видел ее». По тем историям, которые рассказывают: парень забрал к себе домой и девушку, и ее богатство, говорят.

Когда скупой брат увидел, что его бедный брат пришел, так разбогатевший, чуть не сгорел от злости, но в дом к брату не пошел.

Прошло немного времени, и скупой брат не выдержал и пошел к брату. Чомарт рассказал всю правду, как будто нанизывал бусы.

Теперь и скупой брат в надежде так же разбогатеть, отправился в тот кош, где жили медведь, волк и лиса. Поднялся на чердак и спрятался.

Глубокой ночью друг за другом пришли медведь, волк и лиса. Развели огонь и уселись вокруг костра.

– Увы, кто-то узнал мою тайну и рассказал всему селу. Теперь посреди села бьет ручей, – сказав, медведь злобно пробурчал.

– Ой, это все ерунда, кто-то вылечил пастуха. Если бы я его нашел, то перегрыз бы ему вены, – сказав, пригрозил волк.

– Ой, вы-то что, а я вот осталась без этой красивой девушки, – сказав, лиса расплакалась.

– Наверно кто-то подслушал наши рассказы. Поднимись, посмотри на чердаке, – сказав, медведь отправил волка.

Волк поднялся на чердак, но вернулся, ни кого не увидев.

– Душа моя, сходи-ка, и ты посмотри, может там прячется человек, – сказав, отправил и лису.

На чердаке и лиса никого не нашла и вернулась.

Медведь тогда разозлился и пошел сам. Начал дотягиваться туда-сюда и схватил что-то. Покатил туда-сюда, но скупой брат, притворившись мертвым, не пошевелился. Медведь понюхал его и, свернув его в ком, сбросил с чердака вниз и сам спустился. Скупой брат и вправду стал как мертвый. Пусть моего врага, а также таких же ожидает такая участь. Все втроем бросились на него. Мгновенно они его растянули, разорвали и съели.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 19. Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка о двух братьях, носит поучительный характер. Погнавшись за богатством, брат-богач бросил брата-бедняка и скрылся со всем, что они забрали у великанов, но когда бедный брат разбогател, богатый брат от зависти, тоже захотел богатства, что его и сгубило.

В архиве имеются также и другие варианты данной сказки с незначительными расхождениями текста (папка 45, паспорт 2).

ЧЫГЫРЧЫКЪ БЛА ТЮЛКЮ

Чыгыр ёксюз жаш бир элде жашап болгъанды. Аны башха ырысхысы болмай, бир осал тирменчиги болуп, не зат эсе да, юйретип ол уннга кьойгъанларын да элте, мынга зат кьоймай, ач болуп тургъанды. Ол тирменде бугъуп сакълагъанды. Къараса бир заманда бир тюлкю келип, ашап башлагъанды. Жаш сермеп тутуп: «Бир керейим манга палах этгенни», – деп ачыуланып, ёлтюрюрге тебирегенди.

Тюлкю адамча сёлешип:

– Сен мени ёлтюрме. Нёгер эт. Мен сени бир кюнюнге жарарма, – дегенди. Чыгыр, ёлтюрмей, юй нёгер этди.

Тюлкю андан аны, мындан муну келтирип, кеси да тоюп, Чыгырчыкьны да иги мазаллы жаш этип, бир кюн:

– Кел санга ханны кызын къатыннга алайыкъ, – дегенди.

Чыгырчыкь кюлюп:

– Хан манга кызын ёлсе да бермез, аны нечик ангыламайса, – дегенди.

Тюлкю:

– Ол мени ишимди, – деп, адамла кийген быстырла кийип, дуня тауушлугъу бир атха да минип, ханны юйюне барады.

– Бар кьолай жашны бары да сени кызынгы болмаса алыргъа унамайды, аны ючюн келгенме. Кел жууукъ болайыкъ. Къалынны не айтсанг, берейим, – дегенди.

Хан акъыллы киши болгъанды да: «Энди бер десем, муну кесиме жау этерме, андан эсе бу табалмаз къалым айтайым да, экинчи келмез», – деп:

– Ол жангыз кызын къалынына керекли жерим да жокъду, болса да, суйген суймегенни арасында, хан жангыз кызын эрге берди эсе, не алды дерле. Агъач жаныуарладан эки жюзюн келтирип, эмиликле тутуучу сарайыма урсагъыз, кызымы берирме сени жанынга, – дегенде, тюлкю ыразы болуп кетгенди.

Юйге да келмей, биягъы тюлкю болуп, ыстауатны кыйырында отну кёрюп, барып, куйругъун анга юйютгенди. Кеси да агъач ичи бла улуп, ол ханны сарайы таба чабып тебирегенди.

– Агъачда жаныуарлагъа ёртен тюшюп, дуняны кюйдюреди. Битеу агъач жанады. Кёремисиз мени куйругъуму. Мен да кючден кьутулгъанма, – дегенди. Бары да аны ызындан тебирегендиле. Беш жюз агъач жаныуарны ханны сарайына тыйып, биягъы адам болуп, ханны чыгъарып, анга бергенди. Хан да сёзюне ётюрюкчю болмай, кызын неках этип, элтир заманларын да болжал этип, тюлкюге хапар айтханды.

Чыгыр кьууанса да, элтир жери болмай, жарлы болгъанына бек мудах болгъанды.

Тюлкю аны сезип:

– Ол мени ишимди, сен жарсыма, – дегенди. Келтирирге болжал жетгенде, ханнга келип.– Эй, ахлум, жууугъум бизге уллу палах болгъанды. От тюшюп юйлерим, хазналарым да кюйюп уллу кыйынлыкъгъа къалгъанма. Киши элтир болжалын энтда артха салыргъа тюшеди, – дегенди.

Хан а:

– Мени жангыз кызымдан аяр не затым барды. Мен адамладан хар керек затны да жиберейим, сен а иги тап жер кёргюзт да, анда мени кызым



турургъа тийишли къалала ишлесинле. Ала битгенлей, менга адам жибер да, аланы ичинде керекли затланы жиберейим. Ала бары да хазыр болсунла.

Киеу нёгерге кимни табарыкъ эдиле. Экиси да тебирегендиле. Ала да бу ханны сахарына жете, бир кёпюрге жетгендиле. Терк окъуна кёпюрню ары жанына ётюп, бузуп, суугъа тюшюрюп биягъы тюлкю адам болуп ханнга келип къутургъанды.

– Сен бизни келлигизни биле эдинг, кёпюрге къаратмагъанса. Кёпюр тюшюп, киеу нёгерлени да элтгенди. Санга келтирген саугъаланы да суу элтгенди. Киеуюнг да анадан туума къымыжа къалгъанды.

Хан аны эшитгенинде, киеуюне аякъдан башына дери кийимле жиберип, ат сауут, не кереклисин да жибергенди. Жаш да аланы кийип, дунягъа тауушлукъ жаш болуп келгенди. Жашны быстырларына къарап, келгенин кёргенинде, къыз хыликкя этип кюлгенди. Тюлкю аны эслеп:

– Ай къыз, сен бош кюлесе. Ол ёмюрюнде аллай осал быстыр киймегенди да, андан ышарады, – деп жашны жулгъанды.

Ханны къызын келтирип, ол тауушлукъ къалада ырахат жашай болгъанды. Болсада, ханны къызы не эсе да ол чыгыр жашны башында чачы болмай, мияла баш болгъаны себепли бир да кёлю суймегенди. Ол себепли: «Мени эшигими бу жапханды, къалай алдагъан эсе да, мени атамы ол алдагъанды», – деп, хар ачыуун андан ала болгъанды.

Бир жол а жаш да юйде болмагъанлай, ол агъач хайыуанланы къайдан хапарын айтып, къыз да ачыуланьп, къошун бла суу алып, башына уруп, тюлкюню ёлтюргенди.

Ол кюнден башлап, жашны хар ырысхысы кетип, биягъы жарлы болуп, къатын да юйюне кетип, къалаларына да от тюшюп кюйюп, биягъы тирменине къарап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 19 паспорт. Бёзюланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергёокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди. Бу жомакъ тюлкю бла темирчини юсюнден жомакъны бир вариантыды, Энцилиги баиша вариантладан: къыз тюлкюню башына уруп ёлтюрюп, юйюне кетгенди, жаш а жарлы болуп къалады.

ЧЫГЫРЧИК И ЛИСА

В одном селе жил-был один парень Чыгыр. У него не было другого богатства кроме ветхой мельницы. Кто-то повадился утаскивать все, что ему оставляли за муку, ничего не оставляя. И он решил подкараулить, спрятавшись в мельнице. Вдруг видит, что какая-то лиса пришла и съела его еду. Парень схватил ее с криком: «Сейчас увижу, кто мне вредит!» и со злостью хотел ее убить.

Лиса ему человеческим голосом:

– Ты меня не убивай. Сделай лучше другом. Я тебе пригожусь когда-нибудь, – говорит. Чыгыр не стал ее убивать и сделал себе другом.

Лиса стала приносить что-то то оттуда, то отсюда, и сама наедалась, и Чыгыра откормила.

Однажды она говорит:

– Давай женим тебя на дочери хана.

Чыгыр с усмешкой ответил:

– Хан за меня свою дочь умрет, не отдаст, как ты не понимаешь.

Лиса:

– Это мое дело, – сказав, оделась в человеческие вещи и, оседлав отменного коня, поскакала к дому хана.

– Каждый из самодостаточных парней хочет жениться на твоей дочери, и я пришла по этому поводу. Давай мы с вами породнимся. Я отдам калым, сколько попросишь, – сказала.

Хан оказался рассудительным человеком: «Если потребую от нее калым, то стану для нее врагом. Лучше потребую столько, что она не сможет найти и сама уйдет», – думал он.

– Я не нуждаюсь в калыме для единственной дочери, но, кто любя, кто не любя, спросят, что хан получил за единственную дочь. Если приведете двести голов диких животных и загоните в загон, где держим необъезженных коней, тогда отдам свою дочь за вашего парня, – сказал хан. Лиса ушла довольная.

Лиса не пошла домой и приняла обратно свой облик. Увидев на краю стойбища костер, пошла и опалила свой хвост. А сама завыла и побежала через лес в сторону сарая хана.

– Дикае звери, вспыхнул пожар, который все сожжет. Видите мой хвост. И я еле спаслась, – сказала.

Все звери последовали за ней. Лиса закрыла в сарае хана пятьсот голов диких животных, а сама, приняв облик человека, позвала хана и отдала ему. Хан тоже сдержал свое слово и соединил браком свою дочь с мельником. Они договорились, когда повезут невесту, и (хан) рассказал лисе.

Как бы Чыгыр не радовался, но поняв, что везти невесту некуда, очень опечалился. Лиса это поняла и сказала: «Ты не печалься, я это решу», – сказала.

Когда настало время привести невесту, лиса пришла к хану и сказала:

– Ой, родные и близкие, к нам пришло огромное несчастье. В пожаре сгорели и дома, и вещи, что навлекло на меня большое несчастье. Парень должен отложить свадьбу еще на немного.

А хан:

– Хей, что я могу пожалеть от единственной дочери. Я отправлю от своих людей все, что нужно, а вы найдите место, и там пусть построят замки, достойные моей дочери. Как только они будут готовы, отправь мне человека, а я пришлю все, что нужно, чтобы обставить их. Пусть все будет готово.

А кого они могли найти, чтобы повести с собой, поэтому пошли вдвоем. Когда они почти дошли до города хана, увидели мост. Быстро перешли через него, сломали и бросили в воду, а лиса переодевшись в человека, пришла к хану и, разозлившись:

– Ты знал, что мы придем, но не починил мост. Мост разрушился и упал в воду, а река унесла всех людей. Твой зять остался голым, как мать родила.

Когда хан услышал это, отправил зятю одежду с ног до головы, доспехи, все что еще нужно было. Парень же, когда одел все это, превратился в



прекрасного принца. Когда девушка увидела, что парень идет и все время смотрит на свою одежду, насмеялась над ним.

Лиса заметила это:

– Ой, девушка, ты зря над ним смеешься. Он просто в жизни не одевал такую ужасную одежду, поэтому и улыбается, – сказав, оправдал парня.

Они привели дочь хана и спокойно начали жить в прекрасном замке. Однако дочь хана не была довольна тем, что у лысого парня на голове, нет ни единого волоса, и (голова) блестит как стекло. Поэтому девушка говорила: «Мою жизнь испортила эта (лиса), как-то она обманула моего отца», – и все время отрывалась на ней.

Однажды, когда парня не было дома, откуда-то начался разговор об этих диких зверях, а девушка, разозлившись, ударила кувшином с водой по голове лисы и убила лису.

С этого дня, у парня все богатство пропало, опять стал бедняком, жена ушла к себе домой, замки сгорели дотла, и остался он рассчитывать только на свою мельницу.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 19. Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно. Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка является одним из вариантов сказок о мельнике и лисе. Отличие от других вариантов в том, что девушка ударила по голове лисы кувшином с водой, убила ее и ушла домой, а парень становится опять бедняком.

ТЮЛКЮ ЭМ АНЫ КЪОНГУРОУУ

Эртде-эртде, мындан алгъа кѣп заман, бир тюлкю жашап болгъанды. Аны бир къонгурочугъу болгъанды. Ол къонгурочугъуна бек къууана эди. Бир жол да къууанып, саламда ойнай кетип, къонгурочугъун тас этеди.

Къонгуроуну, бек кѣп излеп, табалмайды. Андан сора хыйлачы тюлкюнню эсине аман акъыл тюшеди.

Ол, отха барып, от тилейди:

– Хей, шуѣхум, от, манга бир тамызыкъ берсенг а?

От а анга алай айтады:

– Да ма, кѣремисе, кесим да кючден жана турама, адамла келип, мыдыхымы алып, тауусхандыла да.

Дагъыда тюлкюнню эсине энтта да аман акъыл келеди. Андан, ол суугъа, суу тилей, барады: сууну келтирип, къуюп, отну ѣчюлтюрге.

Суугъа барып:

– Эй, шуѣхум, суу! Манга бир аз суу берсенг а?

Суу а тюлкюге былай айтады:

– Кет-кет, кесим да кючден барала турама, башымдан эшекле ичип кетгендиле да.

Дагъыда тюлкюнню эсине башха хыйла келеди: эшеклени къозутуп, сууну ичирип, тауусдурургъа. Андан эшеклеге, отлай тургъан жерлерине барып, тилейди.

– Ай, шуѣхларым, эшекле! Суусап болгъан болурсуз, барып алайда суудан ичсегиз а, – дейди.

Эшекле уа тюлкюге былай айтадыла:

– Кет-кет, кесибиз асыры кѣп суу ичгенден, къарынларыбыз гыбытлача кѣбюп турадыла. Ичаллыкъ тюйюлбюз, кѣп суу ичсек, жашладан къачаллыкъ тюйюлбюз, ала келип, бизге минерге башласала.

Дагъыда тюлкю башха хыйла оюмлайды. Барайым да, жашланы къозутайым да, ала эшеклеге минсинле деп.

Ол андан, жашланы ойнай тургъан жерлерине, барып:

– Эй, аланла, жанчыкъларым, шуѣхларым, не ойнайсыз былайда бошунакъгъа, арып, талып. Андан эсе барып, эшеклеге минип, ала бла чабышып, ойнасагъыз а.

– Угъай-угъай, кесибизни, асыры кѣп мингенден эшеклеге, къуйрукъларыбыз жауур болуп турады, – дейдиле.

Алагъа да:

– Мен а сизге игини айтама ансы, мени ючюн а бирда минмегиз, – деп, бир быллай хыйла этеди. «Барайымда жашланы аталарына-аналарына къозутайым: жашларыгъыз бири-бири бла тюйюшюп, бири-бири башларын тешип, жилий турадыла деп. Андан хыйлачы тюлкю элге тебирейди.

Ары жетип, ол сабийлени аталарына-аналарына былай айтады:

– Эй, аланла! Неге олтуруп турасыз, сизни жашларыгъыз бир-бирлери бла тюйюшюп, бири-бирини башларын тешип, жилий турадыла.

Андан аталары-аналары, жабы-жуба, хахай этип, жашла ойнай тургъан жерге чабып башлайдыла. Жашлары аланы кѣрюп, бизни тюерге келедиле деп, къоркъуп, чабып барып, эшеклеге минип, къачаргъа умут этедиле.



Жашла эшеклеге чабадыла. Эшекле да жашланы кёрюп, бизге минерге келедиле деп, кьоркьуп, чабып барып, суудан ётерге умут этедиле. Эшекле да суу таба чабадыла. Суу да, эшеклени кёрюп, мени ичерге келедиле деп, кьоркьуп, башха жанына бурулуп, эшекле мени табмасала эдиле деп, бир жанына бурулады. Суу барып, жана тургъан отха киреди да, тюлкюню кьолу да тиймей, кьонгуроуун табарча этеди, отну ёчюрюп.

Тюлкю келип, кюлню чачып кьонгуроуун табып, былай деп кьууанады: «Барыда ыспаслары бла этмей, ыспассыз этдиле мени айтханымы. Аталары-аналары жашлагъа чапдыла, эшекле суугъа чапдыла, суу а отха чапды, мени уа нем кьорады, кьонгуроууму тапдым», – деп кьууанып, ашап-жашап кьалады.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 19 папка, 14 паспорт. КъМАССР-ны Огъары Малкъар элинде Бичиланы Хусейден 2.02.1959 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ насийхат халда жазылгъанды. Ахырында тюлкюню хыйлалыгъы тынгылы ачыкъланады. Алай жомакъны баргъанында, тюлкю, баиша жомакъладача харам акъыл этмей, хар тюбегенинден болушлукъ излейди.

Тилегине себеп тапмай, хыйласыз болмазлыгъын ангылайды. Бу жашауда кертилик бла жумуш этилмезлигин айтады. Жомакъда хыйла кертиликни хорлайды.

Ол алай нек болгъанды десек: ким биледи, тюлкю алдачу болгъаны себеден, анга киши ышана болмаз.

ЛИСА И ЕЕ КОЛОКОЛЬЧИК

Давным-давно, много лет назад жила одна лиса. У нее был колокольчик. Она очень радовалась своему колокольчику.

Однажды, радуясь, играла на соломе и потеряла колокольчик. Она долго искала колокольчик, но не нашла. Тогда в голову лисы пришла одна хитрая мысль. Она пошла к огню и попросила у нее уголек.

– Хей, друг огонь, может, дашь мне уголек.

А огонь ей отвечает:

– Вот видишь, я сам еле горю, люди приходят, забирают угольки, уже почти все закончили.

Опять на ум лисы пришла хитрая мысль. Поэтому она пошла к реке, попросить воды, для того чтобы понести воды и потушить огонь.

Пошла к реке и сказала:

– Эй, подруга река! Дай мне немного воды.

А река сказала лисе:

– Да не могу, я и сама еле теку, у истока ослы выпили из меня воду.

Лиса решила еще на одну хитрость.

– Ай, друзья мои, ослы! Наверное, вы хотите пить, идите и выпейте там воду, – сказала.

А ослы лисе говорят:

– Да нет, мы и так слишком много выпили, что наши животы раздулись как бурдюки. Мы не можем больше пить, если слишком много выпьем, то не сможем убежать от мальчиков, когда они захотят на нас покататься. Тогда лиса придумала другую хитрость: «Пойду и натравлю мальчиков на ослов».

Она пошла туда, где мальчики играли:

– Эй, душа моя, друзья мои! Зачем вы здесь просто играете, устали и обессилели. Лучше идите и покатайтесь на ослах, и устраивайте игры-скачки на них.

– Нет, нет, мы сами слишком много катались на ослах, что на заднем месте у нас образовалась мозоль, – ответили.

Лиса им:

– Я хочу предложить вам что лучше, а так ради меня вообще не катайтесь, – сказав, опять решила схитрить: «Пойду и натравлю на мальчиков их отцов и матерей, сказав, что их дети подрались друг с другом и, разбив друг другу головы, плачут».

И так хитрая лиса отправилась в село. Добравшись туда, она рассказала их отцам и матерям:

– Эй, люди! Что вы здесь сидите, ваши сыновья, подравшись друг с другом, разбив друг другу головы, плачут там!

Тогда отцы и матери подсуетились, с криком бросились к тому месту, где играли их сыновья. Мальчики, увидев их, испугались, подумав, что они бегут их побить, и побежали к ослам, чтобы на них убежать.

А ослы, увидев мальчиков, подумали, что те бегут покататься на них. Они испугались и решили перейти реку. Ослы побежали к реке.

Река, увидев ослов, подумала, что они хотят выпить из нее, и, чтобы они ее не нашли, повернула в другую сторону. Река, повернув, вошла в горящий огонь и, потушив огонь, сделала так, что лиса даже рукой не повела и нашла свой колокольчик.

Лиса пришла, раскидала пепел, нашла колокольчик и сказала: «Все, чтобы исполнить мою просьбу за благодарность, не отнеслись с уважением к моим словам. Отцы-матери побежали к своим сыновьям, ослы побежали к реке, а река побежала к огню, и что с меня убыло – нашла свой колокольчик», – сказав, обрадовалась и стала жить-поживать.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 19, паспорт 14.

Записано 2.02.1959 г. в с. Верхняя Балкария КБАССР от Бичиева Хусея (автозапись).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка поучительного характера. В конце сказки полностью раскрывается хитрость характера лисы. Но на протяжении всего текста лиса в отличие от других сказок о лисе, без злого умысла пытается искать помощь.

Но, не находя помощи, понимает, что без хитрости у нее ничего не получится. В конце сказки она отмечает, что в этой жизни без хитрости ничего нельзя добиться.

Кто знает, почему это так происходит: наверное, зная, что лиса обманщица, никто в нее уже не верит.



ТЮЛКЮ ХЫЙЛА

Бизни аталарыбыз кьатын алмагъан, аналарыбыз да эрге бармагъан, бурунгу ёмюрледе бек амалчы бир тюлкю жашай болгъанды. Ол тюлкю жолда кетип бара, бир жез кьонгуроу табады. Уллу кьууанып, аякъчыгъы бла кьонгуроуну ары-бери тёнгеретип, зынгырдатады. Къуйрукъчугъун кьонгуроуну тешигине сугъуп, уясына алып келеди.

Бир кюн салам тишни юсюне минип, кьонгуроуун да ары-бери атып, ойнай тургъанлай, кьонгуроу саламгъа тюшюп, тас болады. Арыгъынчы излейди, тапмады.

Энди тюлкю саламны чачып тауусалмайды. Кьонгуроуун кьуюп да кеталмайды. Кьонгуроуну табар ючюн а, бир амал, мадар болургъа керекди. Тюлкю саламны жандырыгъа деп, от излей тебиреди.

Хыйлачы тюлкю жорта барып, бир отха жетеди.

– Ой, жаным-тиним алтын бетли кьызыл от, мени сенден сюйгеним жокъду. Манга бир мыдыхчыкъ берирми эдинг деп, бек базып келгенме.

– Дуния таныгъан, кука тюлкю! Мени жюрегинг бла сюйгенинг ючюн берекет берсин! Аны ючюн кёп сау бол! Алай мыдых а бералмайма, не ючюн десенг, кесим да кючден-бутдан жана турама. Менден кесеу алмагъан адам кьалмагъанды. Къайсы биригизге от табайым, – деди.

Тюлкюню этген мураты табылмады, от тюлкюню кёлкьалды этди. Тюлкю отну ючюлтюрге къаст этип суугъа барады.

– Эй, жан досум, жылтырауукъ таза суу! Сени кючюнг чексизди. Магъананг да уллуду. Кереклилени тилеклерин тапдыргъан шуёхум, манга кереклими тындырып чакълы бир суучукъ бер, – деп келгенме.

– Эй, жюйюсхан, кука тюлкю! Манга берген бийик даражанг ючюн кёп сау бол. Алай суу берирге уа болалмайма. Не ючюн десенг, эшекле ичип аз этгендиле да, кесим да кючден саркъа барама, – дегенди.

Тюлкю суугъа жаный, эшеклеге жойкъулланып жетеди да:

– Ай, ёмюрюгюз узакъ болсун, эшек шуёхларым! Сизден тынч, сизден бойсунган дунияда жан жокъду, аны ючюн мен сизни бек сюеме. Бу кюн кьызыуда суусап болгъан болурсуз, барып ол суудан да бир ичигиз, – деп кукаланды.

– Ариу сёз айтгаса, муратынга жетиш! Алай биз а суу ичер керекли туюлбюз. Не ючюн десенг, бусагъатда ичип келгенбиз. Андан кёп ичсек, жашладан къачып къутулаллыкъ туюлбюз. Ала бизге минерге марап айланадыла, – деп жууапладыла.

Тюлкю:

– Эй, сиз аман узун кьулакъла! – дей, айланып жашлагъа барады.

– Ой, салам алейкум, жигитле! Шуёхларым! Эшекле чунгургъа жыйылып турадыла, былайда чабышып нек кыйналасыз, барыгъыз да алагъа минигиз! – деди.

– Ой, сен дамырлыкъ айта кёреме. Эшеклеге минип жюрюгенден кесибизни кьуймучларыбыз ауруп турады, – деп кьойдула.

Тюлкю ала бла да онгмазын билип, башха хыйла кьурайды: жашланы аталарына, аналарына барып:

– Хей, жууукъларым, нек турасыз? Жашларыгъыз бир-бирлери бла туююшюп, бир бёлеги да жаралы болуп жатадыла, – дегенде, жашланы



аталары, аналары дауур-дууур этип, жашлары болгъан жерге чабадыла. Жашла аланы кѳргенде, тѳерге келедиле деп, эшекле болгъан жер таба къачадыла. Эшекле аланы кѳрюп суу таба, суу да эшекледен кѳркѳуп от таба барады, от да суудан къачып саламгъа жетеди, салам отдан къутулалмай жанады.

Хыйлачы тѳлкю жолукгъанына ѳтѳорюк айтып, бирин-бирине юскѳрюп, ахырында саламны жандырды. Урходукну тѳбюнден кѳнгуроун чыгъарып:

– Эй, хей тамаша! «Амал билген амал бла, амал билмеген аман бла», – деп, нечик керти айтхандыла. Биз тѳлкю миллети хыйлабыз бла нени сѳйсек да эталып болабыз. Бизни хыйлабыз, амалыбыз хорланмаз, анга женгдирмезлик зат да жокъду. Биз-биз тѳлкюле, – дей, кѳнгуроун да зынгырдата, кѳзден ташайды.

КѳМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 19 паспорт. Бѳзюланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергѳокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчѳргенди.

Бу жомакъ «Тѳлкюню кѳнгуроуу» деген жомакъны бир вариантыды.

Алай хар жомакъны ахыры да баиша, насийхат халда айтылгъан, нарт сѳз бла бошалады: «Амал билген амалы бла, амал билмеген аман бла».

Тѳлкю хыйла акъылы бла барысына да кесини жумушун этдиреди.

ХИТРОСТЬ ЛИСЫ

Во времена, когда наши отцы еще не были женаты, и матери не были еще замужем, в прошлом веке жила-была изворотливая лиса. Эта лиса, когда шла по дороге, нашла бронзовый колокольчик. Очень обрадовалась, покатав ножкой туда-сюда колокольчик, заставила зазвенеть. Прodef хвостик в дырочку на колокольчике, принесла к себе в норку.

Однажды лиса сидела на соломенной скирде и, подкидывая колокольчик туда-сюда, играла, как вдруг колокольчик упал на скирду и пропал. Она поискала, пока не устала, но не нашла.

Теперь лиса без конца раскидывала эту солому. Колокольчик тоже не могла оставить и уйти. Чтобы найти колокольчик должен был быть какой-то способ или метод. Лиса, чтобы поджечь солому, пошла искать огонь.

Хитрая лиса рыскала повсюду и дошла до одного огня.

– Ой, обожаемый мной, златолицый, алый огонь, нет никого, кого я любила бы больше чем тебя. Я пришла к тебе в надежде, что ты дашь мне уголек.

– Всемирно известная, лъстивая лиса! За то, что ты меня любишь всей душой, пусть у тебя всегда будет достаток! За это тебе большое спасибо! Но уголек тебе дать не могу, знаешь почему, я сам еле-еле горю. Наверное, не осталось ни одного человека, кто бы ни брал у меня головешку. Которому из вас я найду огонь, – сказал.

Не сбылась задумка лисы, огонь ее обидел. Лиса, задавшись целью потушить огонь, пошла к реке.

– Эй, сердечный друг, блестящая прозрачная вода! Твоя мощь безгранична. Ты имеешь огромное значение. Ты друг, исполняющий просьбы



нуждающихся, я пришла, чтобы ты дал мне столько воды, чтобы хватило для моей нужды.

– Эй, госпожа, лъстивая лиса! Большое спасибо за высокую честь, что ты мне присудила. Только я не смогу дать тебе воды. Если спросишь зачем, ослы выпили, и моя вода иссякает, сама еле теку, – сказала.

Лиса, пригрозив реке, примчалась к ослам, и:

– Ай, чтобы век ваш был долог, друзья ослы! Спокойнее и покладистее чем вы в мире нет животных, поэтому я вас очень люблю. В этот жаркий день, наверное, жажда вас замучала, идите и выпейте из реки, – сказав, польстила.

– Красиво умеешь говорить, пусть все твои замыслы сбудутся! Только мы не нуждаемся в воде. Спросите почему, а потому что только что вернулись, напившись. Если слишком много его выпьем, не сможем убежать от мальчиков. Они подстерегают нас, чтобы на нас покататься, – сказав, ответили.

Лиса:

– Эй, вы плохие длинноухие! – сказав, развернулась и пошла к мальчикам.

– Ой, салам алейкум*, богатыри! Друзья! Ослы собрались в рытвине, зачем вы себя утруждаете, бегая, идите и покатайтесь на них! – сказала.

– Ой, ты очень интересное предлагаешь. От того что катались на ослах, у нас болят задницы, – сказали.

Лиса, поняв, что и они ее не удовлетворят, придумала другую хитрость: пошла к родителям мальчиков:

– Хей, родственники, почему бездействуете? Ваши сыновья, подрались друг с другом, некоторые из них валяются раненные, – сказала, тут отцы и матери загрохотав, побежали туда, где были их сыновья. Мальчики, увидев их, подумали, что они бегут бить их, побежали туда, где были ослы. Ослы, увидев их, побежали к реке, река, испугавшись ослов, потекла огню, огонь тоже, убегая от реки, дошел до соломы, а солома, не смогла убежать от реки и сгорела.

Хитроумная лиса, обманывая всех, кто встретился ей на пути, натравила их друг на друга, в конце подохла солому. Достав из-под пепла, колокольчик:

– Эй, хей, поразительно! Правду говорят: «Кто знает способ, надо использовать его, а кто не знает способа, тот обманом добивается». Мылисья парода своей хитростью можем сделать все, что захотим. Наша хитрость и возможности не иссякнут, нет ничего, что может их переспорить. Мы, мы – лисы, – продолжая говорить, звеня колокольчиком, исчезла из глаз.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 19. Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка является одним из вариантов сказки «Колокольчик лисы». Каждая сказка заканчивается разными пословицами поучительного характера: «Кто знает способ, надо использовать его, а кто не знает способа, тот обманом».

Лиса, как и в других сказках о лисе, хитростью заставляет всех исполнить то, что она хочет.

* Салам алейкум – приветствие.

АЛАМАТ ТАЙЧЫКЪ

Къачан эсе да бир ёмюрде, бир кишини Мурат, Таулу, Ибрахим, Аслан, Теке, Къочхар, Билгич – деп, жети жашы болады. Ала хар кече сайын кезиу-кезиу жылкыны кютерге барадыла. Жылкыда хар кече бир байтал тай табады. Ол тайчыкны уа бир жаныуар ашайды. Алты тамата баргъан кечелеринде, тайчыкны жаныуаргъа ашатып, жукълап, эринип, къарамай, юйге къайтып тургъандыла.

– Не кёрдюгюз! Тайчыкъ саумуду? – деп, аталары Сафар соргъанды.

– Угъай, жукъ да кёрмедик, тайчыкъ туумагъанды, – деп алдап тургъандыла.

– Билгич, бюгече жылкыгъа сен барлыкъса, – деп, атасы Сафар хыны-хуну этип айтды.

– Жаны сау болса, мен тайчыкны сау къалдырырма, аны ашаучу жаныуарны кесек-кесек этерме, – деп, Билгич ушкок, уллу бичакъ, дагъыда башха керекли затланы алып, бек тап кийинип, кюн бата жылкыгъа атланды.

Билгични кёрген адам, керти аны бек уллу, керекли ишге хазырланнганын сормай биллик эди. Билгич бир кесек замандан жылкыгъа жетип, кюндюз кютген Асланнга салам берди.

– Жылкыны санайыкъмы?

– Санайыкъ.

Санадыла, мал керек болмады. Андан сора, кюн сайын тай табыучу бурул байталгъа, бардыла.

– Желин толтургъанды, – деди Аслан.

– Толтургъанды. Андан не келсин, кечени арасында къозлайды. Биз аны тайчыклары жаныуарлагъа ашатып къоябыз.

– Мен аны билмейме, тейри! Мен бюгече тайчыкны ашаучу жаныуарны бууарыкъма. Ким билсин, тайчыкъ сау къалыргъа да болур.

– Мен къалай этеме? – деди Аслан.

– Бар юйге, солу!

– Сау къал, Билгич! Кёрген затынгдан артда манга хапар айтырса!

– Айтырма, тейри.

Аслан бла Билгич саламлашып айырылгъан заманда, кюн батып, ашхам бола башлагъан эди.

Билгич сыртындан жатды. Кёп сагъыш этди, ол келлик жаныуар бла къалай сермеширин кёзге тутду. Чыдаямал, секирип туруп, ол уллу бичагъын кынындан сууруп, талай кере хауаны сермеди. Бичакъны аузуна къарады, къан ыз кёрюмеди, дагъыда жатды, кёзлерин кысыды, ол сермеширик жау бирмиди, огъесе бир талаймы боллукъдула, не этип да Билгич быланы билялмады. Алай эте тургъанлай къалкыды. Олсагъат уянды, ёрге турду. Жылкыны тынч, ырахат отлагъанын кёрдю. Сермеширге, ол жауну дуккулларгъа Билгич бек ашыгъады, заман а акырын, ашыкъмай барады.

Къачан келлик болур деп, жылкыны ичине кирип, бурул байталны къатына олтурды, талай сакълады, байтал къозлады, олсагъат Билгич бичагъын къолуна алды: кёкден къара булутча бир зат жерге салынып,



тайчыкыгъа жетерге, Билгич кыылыч бла сермеп, эки бёлдюрдю. Байтал кишнеди. Билгич тайчыкыны кыатына барып:

– Маштакъчыкы! – деп, сыртын сылаганлай, экижашар болду. Жюген салганлай ючлю, терилик салганлай – төртлю, жерин салганлай – бешли, юсюне миннгенинде уа алтылы тулпар болду.

Билгич бу тайчыкыгъа кыуаннганын сёз бла айтыргъа кыыйынды. Сора ол узакъ жерде от жаннганын кёреди, кыамичи бла бир урганлай Алапат тайчыкы Билгични от жарыкыгъа жетдиреди.

Тохтайды. Тёгерекге кыарайды. Отда онеки уллу кыазан, ичлеринде эт бише, бир жанына кыараса – мазаллы онеки адам. Кыоркыаракъ болганды, алай болса да кетмегенди. Кёп кере кыычырды.

Ол адамладан бири да уянмады. Болмаганында, отдан бир уллу кесеуню алып, Билгич бирини бурунуна сукыганында, ол кыычырыкы этгенди. Билгич жерге кирип кетерча болганды. Ол кыычырганында, кыалганлары да уяннгандыла, Билгични эслеп, дуккулларгъа башлагандыла. Ол заманда Билгич алагъа:

– Мен сизге жарарма, ёлтюрмегиз мени!

Сорадыла:

– Сен кимсе?

– Жылкычы Билгичме.

– Не керекди, – деп, онеки мазаллы эмеген Билгични кыуршаладыла. Аланы уллу жасы кыулаклары башларындан абадан эдиле. Кыалган сыфатлары бютюнда сылыкы.

– Олтур былай, – деп, бирлери кыолундан тутханында, Билгични билеги чыгъаргъа аздан кыалды.

– Эт бишди, ашайкы, – деп, онеки эмеген онеки кыазанны юсюне сюелдиле, жерге тюшюрдюле, алгъа шорпа ичдиле, тамычы кыоймадыла.

Ызындан этни ашап башладыла. Билгичге да бердиле.

– Энди хапар айтыгъыз, – деп, Билгич акырын-акырын айтды.

– Биз а онеки эмеген болабыз, хар кюнден онеки ёгюзню соябыз, жукы кыоймай ашайбыз, терилерин юсюбюзге кийим этип киебиз, ол кийимле, бир кюнден ары чыдамай, жылтырадыла. Кыатын алган бирибиз да жокыбуз. Узакы болмай бир элде ханны тауушлукы кызы барды. Аны алама деп, хар бирибиз бек даулашабыз, ахыры кыалай боллугун билмейбиз.

– Хар кюнден онеки ёгюз кесип ашайбыз, чырт тоймайбыз.

– Ёгюзлени кыайдан аласыз?

– Кыайда тап тюше!

– Этге туз атып нек ашамайсыз?

– Биз тузну билмейбиз, кыаллай затды туз?

– Ханны кызын кыайсыгъыз аллыкысыз?

– Мен, мен, мен!!! – деп, бары бирден гюрюлдегенлеринде, Билгични тап кыоркыуругу келди.

– Мени бла биригиз келигиз, – деп, Билгич бирин ат бла аллына кыуууп, от жарыкыгъа сюрюп келди. Барсала, ала уа алтын кыаяла, бирси жанында туз кыалаула. – Ма, хайда кётюр, – деп уллу туз ташны эмегенни сыртына аунатды, – элт!

Жолда эмеген жаралы болуп жатхан бууну табып, аны да тузну юсюне салып кётюрдю. Экиси кыайтып келирге, эмегенле жукылап тура эдиле.

Эрлай Билгич бууну союп, этин бир къазаннга салып, биширди. Кереклисича туз атды. Эмегенлени уятып ашатды, бууну жарымын да бошайлмадыла.

– Бу не сейирди? – деп сордула.

– Быллай затха болушхан дейдиле, – деп, Билгич жууап берди.

– Ханны кызын мен, мен аллыкъма! – деп, араларында кёп дауурла чыкъдыла. Алагъа Билгич заран болгъанча, чурум этип, ала аны дуккулларгъа умут этдиле.

– Келигиз, мен ханны кызын къаладан чыгъарып берейим. Къайсыгъыз хорлаялсагъыз, кызы аныкъы болур. Алай этер ючюн, биз ханны къаласына жууукъ барайыкъ. Мен къабакъ эшикге кирirme, мен чакъырсам бирем-бирем, таууш этмей кирип келигиз: эшикни арт жанында сакълап турлукъма, – деп, Билгич хапар айтханында, эмегенле ханны кызын тап кёюнларына кысханча болдула.

– Жюрюгюз! – деп, Билгич айтыр-айтмаз, эмегенле тебиредиле, бек къаты бардыла, ханны къаласына мычымайын жетдиле. Айтханыча, Билгич эшикни артына турду. Бир эмеген кирди. Уруп жыкъды, кымылдамады. Экинчисин да алай, ючюнчюсюн да, тёртюнчюню, бешинчини – барында кырып жатдырды.

«Бизни жарлы тайчыкъны, дагъыда башха халкъны хазналарын быллай харам къарынла ашай болурла», – деп, Билгич бекден бек тиш кысды, барысыны да къулакъларын кесип, арткаъларына жыйды. Эмегенле, къабанла сойланганча, сойланып жатадыла. Алаамат тайчыкъ бек сейирсинип къарайды алагъа, кеси да анасын эммей, жазыкъчыкъ, ач болгъанды.

Анасын да, жылкъыны да, туугъан эркин сыртны да кёрюрге бек ашыгъады. Билгич а ханны кызын алып кетерге Алаамат тайчыкъдан да бек гузабады.

Атны арбазда кёюп, Билгич терезени тюбюнде барып, къалай мадар этейим деп, дыгылас этген заманда, Алаамат тайчыкъ чабып келип:

– Манга мин! Сора жетерсе кыызгъа, – деди.

Билгич олсагъат минеди. Алаамат тайчыкъ жыйырма атлам бийикликге ат болады. Билгич ханны кызын жукълап тургъан тёшеги бла акъырын уятмай алады, кёюнуна кысып, къаладан чыгъып кетеди. Ол кече окъуна Билгич къайытып жылкъыгъа келеди, къарайды, жокълайды, бары сау-эсен.

Ханны кызы танг атаргъа жылкъыны къатында ачыкъ сыртда уянады, бек къаты къоркъады, алай болгъанлыкъгъа, уста сёзлю Билгич ханны кызын мухар, гуду, сылыкъ эмегенлеге аш этмей къуртхаргъанларын тизип айтханында, ханны кызы Байда бек кёууанады, Билгични жаны кибик сюеди.

– Кёремисе, Байда, бу атны, – деп, Билгич Алаамат тайчыкъны боюнун сылай, – бу атчыкъ бюгече туугъанды, алтылы болгъанды бир кечени ичинде!

– Къалай?

– Ол кёп хапарды, артта айтырма, – деп, бир жанына къарагъанында Билгич, Асланны келе тургъанын эследи.

– Кёп болсун, Билгич!



– Ой, сау бол, жууукъ бол!
– Къаллай атды тайчыкъ?
– Бек аламат, сейир!
– Къалай?
– Ма, кёремисе жангы туугъан тайчыкъны? – деп, алтылы атны кёргюзтдю Билгич Асланнга.
– Оллахий, ийнаныргъа бек къыйынды.
– Къалай сюйсенг, алай эт! Алай бюгечени ичинде мен кёрген, мен этген затла адам ийнанмаздады, аланы манга этдирген жангы туугъан тайчыкъны кючно болгъанды.
Билгич Аслан бла сёлешген заманда, Байда бу хапарлагъа бек сейирсинип тынгылай эди. Бир жанына къарап, Аслан Байданы эследи, не айтыргъа билмей, сюелип туруп:
– Бу кимди? – деди.
– Артта билirse, юйге элтирге болуш. Ол да мени нёгеримди.
Билгич бла Аслан Байданы къатына барыргъа, Байда бетин жапды. Ючюсю да алайдан Билгичлагъа келдиле, Байданы да отоугъа кийирдиле. Билгич чардакгъа чыгып жатды.
– Билгич келгенмиди? Келген эсе, бери чакъырыгъыз! – деди аталары.
Билгич келди.
– Не болдунг, Билгич?
– Ма, болгъаным, – деп, артмакъланы атасыны кьолуна берди, алайгъа алты тамата къарындашы да келдиле. Артмакъланы ичинден жыйырма төрт эмеген къулакъ алдыла.
– Къайдан чыкыгъандыла была?
– Ёлтюргенме!
– Къалай, нек?
– Да не ючюн болсада ёлтюргенме.
– Тайчыкъ къайда?
– Ма, къарачыгъыз, – деп, Аламат тайчыкъны кёргюзтдю, не затлагъа жолукыгъанын айтды.
– Юйдеги кимди?
– Ханны кызы Байда!
– Къалай алгъанса?
– Эмегенледен сыйыргъанма.
– Аперим, жигитге, – деп, атасы Сафар Билгични, къучагына къаты кысып, къучакълады. Таматала Билгични орунун толтуралмагъанлары ючюн бек ёкюндюле, не мадар: аны ючюн сакълыкъ керек болгъанын билдиле.
– Жашла, былай келигиз, – деп, аталары жашларын къатына чакъырды. – Билгични этген жигитлиги, батырлыгы битеу барынга дери болургъа керекди. Сиз а манга ётюрюк айтып, тайчыкъны жаугъа азыкъ этип тургъансыз, быллай иш осалны, эринчекни ишиди, – деп, алай айтханында аталары, жашлары, жукъ айталмай, жерге къарадыла.
Андан сора хар гёзетни баргъан, сакъ болуп, туугъан тайчыкъны сау къалдырып, ала бири-биринден сейир атла болгъандыла деп, хапарлада айтылып жүрюйдю.

*КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 21 паспорт.
Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.*

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчургенди.

Бу жомакъны жаньуарланы юсюнден жомакъладан сора да сейир турмуш жомакълагъа къошаргъа болдукъду. Нек дегенде сейир затлары кёпдюле: эмегенле, тулпар ат, батыр жигит, ханны ариу къызы.

ЧУДЕСНЫЙ ЖЕРЕБЕНОК

Когда-то давным-давно, в каком-то веке, у одного старика было семь сыновей по именам: Мурат, Таулу, Ибрахим, Аслан, Теке, Къочхар, Билгич.

Они каждую ночь по очереди ходили пасти табун. В табуне каждую ночь жеребилась одна кобыла. А этого жеребенка съедал какой-то зверь. Первые шесть дней, когда ходили пасти старшие братья, поленившись посмотреть, засыпали, давая съест жеребенка этому зверю, возвращались домой.

– Что вы видели! Жеребенок жив? – спрашивал их отец Сафар.

– Нет, ничего не видели, жеребенок не родился, – сказав, они его обманывали.

– Билгич, сегодня ты пойдешь, пасти табун, – сказал его отец Сафар грубо.

– Если он родится живым, я этого жеребенка спасу, а зверя, который приноровился его съедать, разрублю на части, – сказав, Билгич взял с собой ружье, большой нож, еще нужные вещи, хорошо оделся и на закате ушел на пастбище.

Те, кто видел Билгича, без вопросов догадывались, что он подготовился к действительно важному делу. Через некоторое время Билгич дошел до пастбища, поздоровался с Асланом, который пас утром.

– Может, пересчитаем табун?

– Пересчитаем.

Пересчитали, недостающих животных не было. После этого подошли к чалой кобыле, которая каждый день жеребилась.

– Вымя уже наполнилось молоком, – сказал Аслан. – Наполнилось. И что с этого, она жеребится поздно ночью. Мы ее жеребят не можем спасти и даем съест зверям.

– Я это не знаю, тейри*! Я сегодня ночью задушу зверя, который съедает жеребенка. Кто знает, жеребенок может и уцелеет.

– Что мне сделать? – спросил Аслан.

– Иди домой, отдохни!

– Счастливо оставаться, Билгич! Потом мне расскажи о том, что видел!

– Тейри, расскажу. Когда Аслан и Билгич попрощались и разошлись, солнце уже село и наступил вечер.

Билгич лег на спину. Много думал и представлял себе, как он сразится со зверем, который должен прийти. Не выдержав, вскочил и встал, вытащив свой большой нож из ножен, два-три раза замахнулся в воздух. Посмотрел на лезвие ножа: следа от крови не было видно, он лег обратно, закрыл глаза. Враг, с которым должен сразиться один или их несколько, как бы не

* Тейри – честное слово, клянусь.

пытался, он так и не смог разгадать. Тут он задремал. Тут же проснулся и встал. Увидел, как табун пасся тихо и спокойно. Билгич очень спешил сразиться и разрубить врага, но время шло медленно, не спеша.

Ожидая, когда придет (враг), зашел в табун и сел рядом с чалой кобылой. Немного подождал, кобыла ожеребилась, тут же Билгич взял нож в руки. Как только что-то, словно черное облако потянулось к земле и добралось до жеребенка, Билгич замахнулся мечом и поделил на два. Кобыла заржала. Билгич добрался до жеребенка:

– Маленький! – сказав, погладил по спине, он стал двухгодовалым. Одел уздечку – трехгодовалым, накинуд потник – четырехгодовалым, одел седло – пяти, а как сел на него стал богатырским конем.

Трудно выразить словами, как Билгич радовался этому коню. Тут он видит, там вдалеке горит огонь. Ударил (Билгич) один раз плетью, Чудесный жеребенок домчал Билгича до огня.

Остановился. Посмотрел вокруг. На огне двенадцать огромных котла, в них варится мясо, посмотрел в сторону, а там двенадцать громадных человека. Долго кричал, но никто из этих людей не проснулся. Когда не получилось, взяв большую головешку с огня, Билгич засунул одному из них в ноздрю, тот закричал. Стало так (шумно), что Билгич чуть в землю не провалился. От его крика проснулись и все остальные. Заметив Билгича, собрались его разрубить. Тогда Билгич обратился к ним:

– Не убивайте меня, я вам пригожусь.

Спросили:

– Кто ты?

– Погонщик Билгич я.

– Что нужно? – спросив, двенадцать огромных великанов, окружили Билгича. Их огромные плоские уши были больше чем голова. Остальная внешность еще презреннее.

– Садись сюда, – сказав, когда один из них схватил за руку, чуть не вывихнул Билгичу локоть.

– Мясо сварилось, давайте есть, – сказав, двенадцать великанов встали над двенадцатью котлами, спустили их на землю, сначала выпили весь бульон, ни капли не оставили.

Следом начали, есть мясо. И Билгичу дали.

– Теперь рассказывайте вашу историю, – тихо-тихо сказал Билгич.

– Мы, двенадцать великанов, каждый день закалываем двенадцать буйволов, съедаем все, ничего не оставляем, из шкуры шьем для себя одежду, а эта одежда за день рвется. Никто из нас не женился. Недалеко отсюда у одного падишаха есть прекрасная дочь. Мы спорим из-за того, что каждый хочет на ней жениться, чем это закончится, мы не знаем.

– Каждый день съедаем двенадцать буйволов и не можем наесться.

– А буйволов, откуда берете?

– Где попадется!

– Почему вы не солите мясо?

– Мы не знаем про соль, что такое соль?

– Кто из вас женится на дочери падишаха?

– Я! Я! Я! – прогремели все вместе так, что Билгичу захотелось испугаться.

– Пусть один из вас пойдет со мной, – сказав, Билгич повел вперед себя одного из них на коне, (они шли) к свету костра. Когда дошли: это (оказались) золотые скалы, а с другой стороны холмы соли. – На, давай поднимай, – сказав, (Билгич) закинул на спину великана огромный камень соли, – неси!

По дороге великан нашел раненного тура, закинул его тоже на соль и понес. Когда они вдвоем вернулись, великаны уже спали.

Билгич быстро разделал тура, мясо положил в котел и сварил. Посолил, как следует. Разбудил великанов и покормил, те даже половину тура не съели.

– Что это за чудо? – спросили

– Это называется помощь, – ответил Билгич.

– Я женюсь на дочери падишаха! Нет, я женюсь! – долго спорили (великаны) между собой. Сделав вид, что им Билгич помеха, решили от него избавиться.

– Идемте, я выведу дочь падишаха из замка, а девушка достанется тому, кто из вас победит.

Чтобы это сделать, мы близко подберемся к замку падишаха. Я войду через входную дверь, а когда позову, вы по одному бесшумно заходите: буду ждать за дверью, – сказал (Билгич). Когда Билгич рассказывал, великанам показалось, что они прижали к себе дочь падишаха.

– Идемте! – только успел сказать Билгич, великаны собрались и так быстро шли, что мигом дошли до замка падишаха.

Как и сказал, Билгич встал за дверью. (Как только) первый великан зашел, ударив, сбил с ног так, что тот не двигался. Второго точно так же, и третьего, и четвертого, и пятого – всех перебил.

«Нашего бедного жеребенка, а также другие народные имущества съедают вот такие вот проклятые животы», – сказав, Билгич все сильнее сжимал зубы, отрезал всем уши и собрал в сумки. Великаны валялись там, словно кабаны валяются. Чудесный жеребенок с большим удивлением смотрел на них, сам же не пососав мать, бедненький проголодался.

Он очень спешил увидеть свою мать, табун, родной широкий холм. А Билгич больше чем Чудесный жеребенок хочет забрать дочь падишаха.

В то время, когда Билгич, оставив коня во дворе, стоял под окном и думал, что сделать, Чудесный жеребенок прибежал и сказал:

– Садись на меня! Тогда доберешься до девушки.

Билгич тут же сел. Чудесный жеребенок (прыгнул вверх и) в двадцати шагах высоты превратился в коня. Билгич забрал дочь падишаха, спящую вместе с кроватью, не разбудив, и, прижав к себе, вышел оттуда.

В ту же ночь Билгич вернулся обратно к табуну, присмотрелся, посчитал, все были целы и спокойны.

Дочь падишаха к рассвету проснулась рядом с табунном на открытом холме, очень испугалась. Но все же когда краснословный Билгич рассказал, как он спас дочь падишаха от подлых, презренных воров-великанов, не сделав ее едой для них, дочь падишаха Байда осталась довольной. Полюбила Билгича больше жизни.

– Видишь, Байда, этого коня, – сказав, Билгич погладил Чудесного жеребенка по шее, – этот конек родился сегодня ночью, стал шестигодовалым за одну ночь!



– Как?

– Эта долгая история, потом расскажу, – сказав, повернулся в сторону и заметил, как идет Аслан.

– Пусть будет много, Билгич!

– Ой, спасибо, добро пожаловать!

– Ну, какой жеребенок?

– Очень хороший, чудесный!

– Как?

– Вот видишь новорожденного жеребенка? – сказав, показал шестилетнего коня.

– Оллахий*, очень трудно поверить.

– Делай что хочешь! Но в то, что я видел этой ночью, и в то какие вещи я делал, человек не поверит, а то, что меня заставило это сделать – сила этого новорожденного жеребенка.

Когда Билгич разговаривал с Асланом, Байда с большим удивлением слушала его рассказ. Повернувшись в другую сторону, Аслан заметил Байду, не зная, что сказать, постоял и спросил:

– Кто это?

– Потом узнаешь. Помогите отвести домой. Она тоже моя спутница.

Когда Билгич и Аслан подошли к Байде, Байда закрыла лицо. Втроем они оттуда пришли к Билгичу домой, Байду отвели в комнату. Билгич же поднялся на чердак и там лег.

– Билгич вернулся? Если вернулся, позовите сюда! – сказал отец.

Билгич пришел.

– Как все прошло, Билгич?

– Вот как прошло, – сказав, отдал сумки в руки отца, туда подошли и его шесть старших братьев. Из сумок они вытащили двадцать четыре ушей великанов.

– Откуда они взялись?

– Убил!

– Как, зачем?

– Да, значит, за что-то убил.

– Где жеребенок?

– Вот, посмотрите, – сказав, показал Чудесного жеребенка, рассказал, с чем он встретился.

– А кто это в доме?

– Дочь падишаха Байда!

– Как забрал?

– Отнял у великанов.

– Слава богатырю, – сказав, отец Сафар обнял Билгича, крепко прижав к себе. Старшие очень пожалели о том, что не смогли занять место Билгича. Что делать, но поняли, что для этого нужна осторожность.

– Сыновья, идите сюда, – сказав, отец вызвал своих сыновей к себе. – Смелость и отвага, которую проявил Билгич, должна стать уроком для вас всех. А вы меня обманывали и делали жеребенка едой для врага. Такое дело – дело плохих и ленивых, – когда так отец обратился, сыновья не могли ничего ответить и смотрели на землю.

* *Оллахий* (межд.) – Ей-богу, клянусь богом, честное слово!

После этого каждый, кто шел охранять, был осторожен, давали уцелеть, каждому родившемуся жеребенку, а они становились конями один лучше другого. В рассказах так говорится.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 21. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эту сказку кроме сказок о животных можно отнести к волшебным сказкам, т.к. здесь много чудесных персонажей: великаны, богатырский конь, богатырь, прекрасная принцесса.



БИТ БЛА БЮРЧЕ

Эртте-эртте бир бит бла бюрче бар эдиле. Экиси да нёгер болуп жолгъа атландыла. Бара-бара кетип, бир уллу суугъа жетгендиле. Сора мындан къалай ётейик деп тургъанлай, бюрче битге:

– Мин сыртыма, учуруп, сууну ол жанына ётдюрейим, – дегенди. Бит унамагъанды.

– Мен кесим жюзюп ётерикме, – деп тебирегенди. Сора, ташха жабышып, атлаялмай къалгъанды.

Не бла, къалай болушайым деп, бюрче тонгузгъа барып:

– Тенгими суудан ётдюрюрге бир къыл бер, – деп тилейди.

– Сен а манга алмамы бересе? – дегенди тонгуз.

Сора терекге барады да:

– Манга алма бер, – деп тилейди.

– Сен а манга къуш къондурма, – дейди терек.

Сора къушха барады да:

– Терекге къонма, – дейди.

– Сен а манга тауукъ баламы бересе? – дейди къуш.

Бюрче тауукъгъа барады да бир баласын тилейди.

– Сен а манга тарымы бересе? – дейди тауукъ.

Бюрче гённоге барады:

– Манга бир тары бер, – деп тилейди.

– Сен а манга чычханни тийдирме, – дейди гён.

Сора бюрче чычханнга:

– Гённоге тийме, – дейди.

– Сен а манга киштикни тийдирме.

Бюрче киштикге барады:

– Чычханнга тийме, – деп тилейди.

– Сен а манга сютмю бергенсе? – дейди киштик.

Бюрче ийнекге барады, манга сют бер, деп.

– Сен а манга биченми бересе?

Бюрче биченчилеге барады, бичен тилей. Аладан бичен алып, ийнекге береди.

Ийнек сют бергенди. Сютно киштикге береди. Киштик чычханнга, чычханла гённоге тиймезге айтадыла. Гён тары бергенди. Тарыны тауукъгъа береди. Тауукъ балачыкъ бергенди. Аны бюрче къушха элтеди. Къуш терекге тиймезге айтханды. Терек алма береди. Алманы тонгузгъа ашатханды. Тонгуз къыл бергенди. Бюрче аны бла битни суудан ётдюргенди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 20 паспорт.

КЪМАССР-ны Эльбрус элинде 90-жыллыкъ Гулийланы Имахатдан 12.09.1973жылда Джаболаны Ю.Х. жазгъанды

Архивден Гергёокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ юйретиу халда жазылгъанды. Нёгерлик ариу кёргюзтюледди. Не къыйын заманда да нёгер болушлукъ къутхарыр, дегенча айтылады. «Бюрче бла бит» деген жомакъны дагыда вариантлары барды. Баишха-баишха авторладан жазылгъандыла. Текстледе энчиликле бардыла.

ВОШЬ И БЛОХА

Давным-давно жили вошь и блоха. Они вдвоем, став путниками, отправились путь. Шли-шли и дошли до большой реки. Когда думали, как ее перейти, блоха сказала вошке:

– Взбирайся ко мне на спину, а я полечу и перенесу на ту сторону реки, – сказала. Вошь не согласилась.

– Я сама переплыву и так перейду на ту сторону, – сказала и собралась. И тогда зацепилась за камень и не смогла даже шагнуть.

Подумав чем бы помочь, блоха побежала к кабану и попросила:

– Дай мне волосок, чтобы переправить друга через реку.

– А ты мне что, яблоко дашь? – спросил кабан.

Тогда идет к дереву:

– Дай мне яблоко, – просит.

– А ты не давай на меня садиться орлу, – сказало дерево.

Тогда идет к орлу:

– Не садись на дерево, – сказала.

– А ты мне что, даешь цыпленка? – сказал орел.

Блоха пошла к наседке и попросила ее цыпленка.

– А ты мне что, просо даешь? – сказала наседка.

– Блоха идет к амбару:

– Дай мне немного проса, – попросила.

– А ты сделай так, чтобы меня не трогала мышка, – сказал амбар.

Тогда блоха говорит мышке:

– Не трогай амбар.

– А ты сделай так, чтобы меня кошка не трогала.

Блоха идет к кошке:

– Не трогай мышку, – просит.

– А ты мне молоко дала? – сказала кошка.

Блоха идет к корове, чтобы она дала ей молока.

– А ты мне сено даешь?

Блоха идет к косарям, просить сено. Взяв у них сено, отдает корове.

Корова дает молоко. Молоко отдала кошке. Кошка мышку, мышка амбар обещают не трогать. Амбар дает просо. Просо отдает наседке. Наседка дает цыпленка. Его блоха отдает орлу. Орел обещает не трогать дерево. Дерево дает яблоко. Яблоко скормила кабану. Кабан дал волосок. Блоха им переводит вошь через реку.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 20. Записал Ю.Х. Джабоев 12.09.1973 г. в с. Эльбрус КБАССР от 90-летнего Гулиева Имамата.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка поучительного характера. Здесь четко выражена дружба двоих – блохи и воши. Мораль в том, что в трудный момент, дружеская помощь все решает. У этой сказки «Блоха и вошь» есть разные варианты. Они записаны от разных авторов. Имеются различия в текстах.



БИТЧИК БЛА БЮРЧЕ

Бит бла бюрче экиси да сабан нёгер болгъандыла. Ишден юйге келе, жауун жаууп тебирейди. Бир кёлчюкге жолугъадыла да, секирип ётерге тюшеди. Бит:

– Секир, – дейди.

Бюрче уа:

– Сен алгъа секир, – дейди.

Даулаша кетгендиле да, бит, секирип, сууну ортасына тюшгенди. Бюрче аны чыгъаралмай, кюреше, бир тонгузну кёреди. Анга барып:

– Сен тюгюнгю берсенг, аны суугъа салса эдим, суудан битни алса эдим, бир тап боллукъ эди, – деди.

Тонгуз а:

– Сен а манга терекден кертме алып бере болурса, – дегенди.

Терекге барып, бюрче:

– Эй, терек, сен кертмени берсенг, аны тонгузгъа берсе эдим, тонгуз тюгюн берсе эди, тюкню суугъа салса эдим, суудан битни алса эдим, бир тап боллукъ эди, – дейди.

Терек:

– Сен а манга къуш кьондурмай тура болурса, – дейди.

Къушха келип бюрче:

– Сен терекге кьонмасанг эди, терек кертме берсе эди, кертмени тонгузгъа берсе эдим, тонгуз тюгюн берсе эди, тюкню суугъа салсам, тюк бла битни суудан алсам, бир тап боллукъ эди.

Къуш:

– Сен а манга тауукъдан бала алып бере болурса, – дейди.

Тауукъгъа келип:

– Сен балангы берсе эдинг, аны къушха берсе эдим, къуш терекге кьонмаса эди, терек кертме берсе эди, кертмени тонгузгъа берсе эдим, тонгуз тюгюн берсе эди, тюкню суугъа салсам, тюк бла битни суудан алсам, бир тап боллукъ эди.

Тауукъ:

– Сен а манга тарычыдан тары алып бере болурса, – дейди.

Бюрче тарычыгъа келип:

– Сен манга тары берсе эдинг, тарыны тауукъгъа берсе эдим, ол баласын къушха берсе эди, къуш терекге кьонмаса эди, терек кертме берсе эди, кертмени тонгузгъа берсе эдим, тонгуз тюгюн берсе эди, тюкню суугъа салсам, тюк бла битни суудан алсам, бир тап боллукъ эди.

Тарычы:

– Сен а манга чычханланы кийире болмазса, – дейди.

Чычханлагъа келип:

– Сиз тарыгъа тиймесегиз, тарычы тары берсе эди, – деп, хапар айтады.

Чычханла:

– Сен а бизге киштик тийдирмей тура болурса, – дейдиле.

Келип, киштикге хапарын айтады бюрче.

Киштик а:

– Сен а манга ийнекден сют алып бере болурса, – дейди.



Ийнеке келип, бюрче хапарын айтады.

Ийнек а:

– Сен манга чалгыдан бичен алып бере болурса, – дейди.

Чалгычыгы барып, бюрче хапарын айтады.

Чалгычы уа:

– Сен бирда манга бозачыдан боза алып бере болурса, – дейди

Бозачыгы барып, бюрче хапарын айтады. Бергенди бозачы боза. Бюрче бозаны чалгычыгы элтгенди, ол ийнеке бичен бергенди, ийнек киштикге сют бергенди, киштик да чычханлагы тиймей, чычханла да тарыгы тиймей, тарычы тауукгы тары бергенди, тауук кыушха баласын бергенди, кыуш терекке кыонмагынды, терек тонгузгы кертме бергенди, тонгуз бюрчеге тыгюн бергенди, бюрче аны тыгю бла битчикни чыгыаргынды.

Экиси да, бичик бла бюрче юйге кыайгытып, кыуанчы ашап-жашап тебирегендиле.

КыМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 21 паспорт. КыМАССР-ны Огыары Жемтала элинде 1941 жылда тууган Атабийланы Матгерийни жашы Алийден Орусбийланы Ф.А. жазгынды. Кыачан жазылгыаны белгисизди.

Архивден Гергыокыланы Л.С. жазып алгынды эм орус тилге кычургенди.

Бу жомак кырейти халда жазылгыанды. Бит бла бюрчени сыфатларында, нгерликликни кыатылыгы кыргюзтыледди. Бу жомак «Бюрче бла бит» деген жомакны бир вариантыды. Башха-башха авторладан жазылгыандыла. Текстледе энчиликле бардыла.

ВОШКА И БЛОХА

Вошка и блоха вместе убирали солому. Возвращаясь с работы домой, начался дождь. По дороге встретила лужа, надо было перепрыгнуть, чтобы перейти на другую сторону.

Вошка говорит:

– Прыгай.

А блоха говорит:

– Ты первая прыгай.

Долго спорили, и вошка, перепрыгивая, упала в середину лужи. Блоха пыталась, но не могла ее вытащить, увидела одного кабана. Пошла к нему и говорит:

– Если бы ты отдал мне свой волос, я бы положила его в воду и вытащила бы вошку из воды, было бы очень хорошо.

А кабан говорит:

– А ты что с дерева мне грушу срываешь, и мне что ли даешь.

Блоха пошла к дереву и говорит:

– Эй, дерево, если бы ты мне дало грушу, я бы отдал его кабану, а если кабан дал бы мне волос, вытащил бы из воды вошку, было бы очень хорошо.

Дерево говорит:

– А ты что делаешь так, чтобы на меня орел не садился.

Блоха пришла к орлу:



– Если бы ты не садился на дерево, дерево дало бы грушу, отдал бы грушу кабану, кабан дал бы мне волос, положил бы волос в воду, волосом вытащил бы вошку из воды, было бы очень хорошо.

Орел говорит:

– А ты что у курицы берешь цыпленка и мне даешь что ли.

Пришла к курице и говорит:

– Если бы ты дала мне цыпленка, я бы отдал его орлу, орел бы не стал садиться на дерево, дерево дало бы грушу, отдал бы грушу кабану, кабан дал бы мне волос, положил бы волос в воду, волосом вытащил бы вошку из воды, было бы очень хорошо.

Курица говорит:

– А ты что у амбарщика берешь просо, чтобы мне отдать.

Блоха пришла к амбарщику и говорит:

– Если бы ты мне дал просо, отдал бы просо курице, если бы она отдала своего цыпленка орлу, орел бы не стал садиться на дерево, дерево дало бы грушу, отдал бы грушу кабану, кабан дал бы мне волос, положил бы волос в воду, волосом вытащил бы вошку из воды, было бы очень хорошо.

Амбарщик говорит:

– А ты что не пускаешь ко мне мышей.

Пришла к мышкам:

– Если бы вы не трогали просо, амбарщик дал бы мне просо, – сказав, рассказала все.

Мыши говорят:

– А ты что делаешь так, чтобы кот нас не трогал.

Приходит блоха к коту и рассказывает всю историю.

А кот говорит:

– А ты что берешь у коровы молоко и даешь мне.

Приходит к корове блоха и рассказывает всю историю. Корова говорит:

– А ты что у косаря берешь сено и мне даешь.

Идет блоха к косарю и рассказывает всю историю. Косарь говорит:

– А что берешь у бузовара* для меня бузу** что ли.

Блоха идет к тому бузовару и рассказывает всю историю. Дал бузовар бузу. Блоха понесла бузу косарю, тот отдает корове сено, корова отдает коту молоко, кот не трогает мышей, мыши не трогают просо, амбарщик отдает курице просо, курица отдает орлу цыпленка, орел не садится на дерево, дерево отдает кабану грушу, кабан отдает блохе волос, блоха с помощью его волоса вытащила из воды вошку.

Вернувшись домой, блоха и вошка вдвоем стали очень счастливо жить-поживать.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 10, паспорт 21. Записала Ф.А. Урусбиева в с. Верхняя Жемтала КБАССР от Атабиева Алия Матгериевича (1941 г.р.). Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Данная сказка поучительного характера. В образе блохи и вошки выражаются крепкие узы дружбы. Эта сказка является одним из вариантов сказки «Блоха и вошь». Варианты записаны от разных авторов. Имеются особенности различия в текстах.

* Бузовар – человек, который варит бузу.

** Буза – хмельной напиток из проса, кукурузы, пшеницы.

ЧЫЧХАННЫ ЖОМАГЪЫ

Киштикни эсине келеди – чычханланы кьурутургъа. «Чычханланы жыйыгъыз, ала манга кечгинлик берсинле. Мен аладан кечкинлик алып, хадж кьылыргъа барама», – дейди киштик.

Келген чычханланы юйге жыяды да киштик, тегереклерин цемент бла бегитеди. Бир чычхан келирге унамайды. Бир кёзю жокъ, бууаз. «Киштикни тырнагъы жетгенди да андан сокьурма», – дейди.

Чычханла андан тарыкьгъанда, киштик:

– Тамам болдугъуз андан кьалгъанла? – дейди. – Кьапчыкьны башы ачыкь тургъанлай, тюбюнден нек тешесиз? – дейди. –

Мен хаджиликни ташладым,

Эски кюйню башладым, – деп, башлайды кесип.

Сокьур чычхан а кьалып, чычханлагъа урлукъ болады.

КьМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 10 папка, 22 паспорт.

КьМАССР-ны Бабугент элинде Жекеланы Кузайдан 16.04.72 жылда Орусбийланы Ф.А. жазгъанды.

Архивден Гергьокьланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакь насийхат халда жазылгъанды. Чычханла кеслерин киштикге алдатханларыны юсюнден. Жаугъа толу ийнаныргъа жарамагъанын билдиреди.

СКАЗКА О МЫШОНКЕ

Как-то коту пришла мысль избавиться от всех мышей. «Соберите всех мышей, пусть они мне дадут прощение. Я возьму у них прощение и пойду совершить хадж»*, – сказал кот.

Всех пришедших к нему мышей, кот собрал вместе и замуровал вокруг них цементом. Одна мышь не захотела прийти: одноглазая и беременная. «Это кот зацепил ногтем, поэтому я слепая», – сказала.

Когда мыши пожаловались на нее, кот спросил:

– Остальные все здесь? Почему когда мешок открыт, вы грызете снизу? – сказал. –

Я отказываюсь от совершения хаджа,

Начинаю старую песню, – сказав, начал их резать.

А слепая мышь осталась живой и стала семенем для мышей.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 10, паспорт 22. Записала Ф.А. Урусбиева 16.04.72 г. в с. Бабугент КБАССР от Жекеевой Кузай.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка поучительная. Она о том, как мыши дали коту обмануть себя. Мораль в том, что нельзя полностью доверяться врагу.

* Хадж – совершение религиозного пономничества в Мекку.

АЛБЁРЮ БЛА ТУТБЁРЮ

Албёрю бла Тутбёрю бир элде жашагъандыла. Албёрю адыллы, халал адам болгъанды. Тутбёрю уа, къарандашын кёрюп болмагъан, хыянатчы, зар киши эди.

Кюнлени биринде ала экиси да жолгъа чыкыгъандыла. Албёрюню аты болады. Тутбёрю уа жаяу тебирейди. Барлыкъ жоллары узагыракъ болады. Албёрю Тутбёрюге жазыкысынып, атха кезиу мине баргъандыла. Атха минер кезиу Тутбёрюге жетгенлей, алларында бир уллу черекча, къобаннга тюбейдиле.

Алайда Тутбёрюню эсине бир аман акъыл тюшеди:

– Энди сен атны манга бер, мен алгъа ётейим да, сора атны ызына кыстарма да, сен да алай ётерсе, – деди.

Да, харип, ол халал адам анга угъай демей, атын береди. Тутбёрю, аты бла суудан ётгенлей, бурулуп ызына да къарамай, атха къамичини жетдирип, кёз туурадан ташайды.

– Ыхы, энди атынгы тапсанг, къойма. «Аман адамгъа ахшылыкъ этсенг, юйюнге сау бармазса», – деп, иги кесек сирелип сагъышланды.

Да не этерик эди? Тюп эринин къапды. Ёрге-энишге къарады. Суудан жаяу ёталмазлыкыгын билип, жагъаны энишге айланды. Ташдан ташха абына да чанкъая, иги кесек кыдыра келди да, суу боюнунда къанаты сынып тургъан бир къаргъагъа тюбеди.

Къаргъагъа жазыкысынды: «Ай, мынга да бирле, Тутбёрю манга этгенлей, этип кетген болурла», – деп, кёлегини женгин жыртып, къаргъаны сыннган къанатын байлады да, жаныуар ашамазча, терек бутакыгъа салды.

Ким биледи: болгъанмыды, къалгъанмыды? Албёрю кетип тебирегенде, къаргъа адамча тилленеди:

– Ой, насыплы адам! Сени къаллай адыллы жүрегинг барды. Адамла бары да сенича болсала эдиле, жер юсюнде бир жаннга да бир кыйынлыкъ жетмез эди. Мен бир жаннга да хаталы къанатлы туююлме, алай кёлюме келгенни, ичимде тыялмай, ачыкъ кычырып къояма да, аны ючюн мени киши суймейди. Мен эндиге дери къоркъмай адам къатына бармагъанма. «Мыллыкчы къаргъа», – деп, менден суймегенлери жокъду. Чирип кетерик мыллыкны ашагъанлыкыгъа да, кёрюп болмайдыла. Болсада не этейик? Ким эсе да бир суймейди деп, дуниядан думп болуп къалайыкъмы? Ким да кесине иги кёрюнеди, – деп, гуппуш болду.

Албёрю кетерге туракълай тебирегенде, къаргъа аны ызындан кычырды:

– Эй, сен адыл иеси адам! Сени жолунг, насыбынг хар къайда да болсун! Сен арыгъан да, ач да болурса. Ма ол бийик таудан ары аугъанлай, эки кёзю да сокъур бир къарт киши къойла кютеди. Ол дуния жарыгына термилип жашайды. Аны бир акъ къарабаш ириги барды. Аны кесип, эки бюрегин биширип, къартны эки кёзюне салынсала, аны кёзлери сау боллукъ эдиле. Ол мадарны уа киши билмейди. Сен, барып, бюгече аны къатында къал, тынчайырса, – деди.

Да, харип, ол мубарек адам кесини тюзлюгюне базаына: «Тохта бир, мени тюзлюгюм сени жибермез», – деп, Тутбёрюге ачууланып, таугъа айланып тартады. Кеч бола, бир къойчу къошха жетеди.



- Эй, кьошда ким барды? – деп, таууш берди.
- Эй, мен барма, – деп, сокъур кьарт чыгъады.
- Кёп болсун, ахшы кьарт!
- Сау бол, ахшы кьонакъ!
- Арыгъан жолоучуну кьонакъ этерге болурмусуз?
- Айхай этербиз. Кел, жууукъ бол!

Албёрю кьартны кёргенінде, кьаргъаны айтханы эсине тюшдю. Кьошха кирип олтурду. Бираз хапарлашдыла.

– Аха, кьонакъ, бу жерлеге адам улу келмей эди, сен кьайдан чыкьдынг?

– Да, мени да буюрулгъан кьадар сюре келгенди. Алай сиз а жангызлай бу жерледе кьалай турасыз?

– Да мени да кёресе, дунияны жарыгъына термилген бир кьарт. Жашауну бырнагы болуп турама. Бир эркечим барды, ол мени да жюрютеди, малымы да жюрютеди. Мен да аны болушлугъу бла жашай барама. Къыйынлыкъ соруп келмейди, кесингден кючлюге тюбемей, ол ызына да кьайытмайды. Сен да бир жарсыуунг болуп жюрюй болурса. Кьойладан сайлап, бир семизин кес, ушхууур этейик, – деди.

Албёрю, эрлай тутуп, акъ кьарабаш ирикни тутуп кеседи. Бюреклерин биширип, кьартны эки кёзюне салалды. Бир кесек туруп, алгъышлай, кьартны кёзлери бурунча сау болуп кьаладыла.

Энди кьартны кьууанган тамашасына несин айтаса? Албёрюню кьучакълады, ийнакълады, юсюне башына жагъылады. Албёрю бир бёлек кюн кьартны кьошунда турду.

Кьарт киши кьойларын эки бёлюп, жартысын Албёрюге берип, жолуна ашырды. Албёрю кьойларын сюрюп кетди.

Энди кьарт кесини кьалгъан кьойларын тёшге жайып тургъанлай, бир айыу келип, кьойладан бирин кётюрюп тебирейди. Ол заманда кьарт, ушкок бла атып, айыуну жаралы этеди. Жаралы айыу, мурулдай, жилий, бир уллу агъачха киреди.

Ол да алай болсун. Энди Албёрю, кьартдан алгъан кьойларын сюрюп бара, бир жерде кьойланы да отлата, кеси кьалкып кьалады. Ол кезиуде кьайдан эсе да, айлана келип, алып кьачхан атын да ёлтюрюп, Тутбёрю кьойланы юсюне болады.

– Аха, энди уа ырысхыгъа батдым, – деп, кьойланы кьуууп тебирейди. Кьуууп, сюре барып, бир сыртдан аугъанлай, ол жаралы айыу аны юсюне чыгъады. Кьойла, юркюп, бир жанына кьачадыла, айыу да, жетип, Тутбёрюню кьагъып алып, хурттак-хурттак этип кетеди.

Бир заманда Албёрю уянып кьараса, кьойла жокъ. Жанлы сюрюп кетди деп, ызлары бла тартып талагъа чыкьса, кьойла отлай, Тутбёрю да арлакьда таланып, хурттак-хурттак болуп тургъанын кёреди. Сынчыкьлап бетине кьарайды да: «Аха, жат энди, хыйлачыны эки юлюшю башына», – деп, кьойларын да сюрюп, юйюне кетеди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 1 паспорт. Къачан, кьайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ эки нёгерни юсюнденди, насийхат халда жазылгъанды. Байлыкьны кьуууп, адамлыкьны унутургъа жараматгъанын юйретеди.



Жомакъда нарт сёзле бардыла: «Къыйынлыкъ соруп келмейди, кесингден ключюге тубемей, ол ызына да къайытмайды»; «Аман адамгъа ахшылыкъ этсенг, юйюнге сау бармазса»; «Хыйлачыны эки юлюшю башына».

АЛБЁРЮ И ТУТБЁРЮ

Албёрю и Тутбёрю жили в одном селе. Албёрю был справедливым, добродушным человеком. А Тутбёрю был, ненавидящим своего брата, вредным и завистливым человеком.

Однажды они вдвоем отправились в дорогу. У Албёрю был конь. А Тутбёрю отправился пешком. Дорога у них оказалась дальней. Албёрю пожалел Тутбёрю, и они ехали верхом на коне по очереди. Когда очередь ехать верхом, дошла до Тутбёрю, перед ними открылась огромная река.

Здесь к Тутбёрю приходит хитрая мысль:

– Теперь ты дай мне коня, я поеду вперед, потом погоню коня обратно, потом и ты также проедешь, – сказал.

Да, этот несчастный, добродушный человек не мог ему отказать и отдал коня. Как только Тутбёрю перешел реку, даже не повернувшись обратно, ударил коня плетью и исчез с глаз.

– Ыхы, теперь, если найдешь коня, не оставляй. «Сделав добро плохому человеку, домой живым не вернешься», – сказав, еще долго стоял и думал (Албёрю).

Чтобы он мог сделать? Прикусил нижнюю губу. Посмотрел вверх-вниз. Когда понял, что не сможет перейти реку пешком, то пошел по берегу вниз. Спотыкаясь от камня до камня, падая, долгое время еще проходил и встретил на берегу реки ворону со сломанным крылом.

Пожалел ворону: «Ай, с ним, наверное, кто-то поступил точно так же, как Тутбёрю обошелся со мной», – сказал, порвал рукав своей рубашки, перевязал сломанное крыло, и чтобы звери не съели, посадил на ветку дерева.

Кто знает: правда это или нет? Когда Албёрю собрался уходить, ворона заговорила человеческим голосом.

– Ой, счастливый человек! Какое у тебя беспристрастное сердце. Если бы все люди были такими как ты, на земле не пострадала бы ни одна живая душа. Я птица, которая ни кому не приносит вреда, просто не могу в себе сдерживать и громко кричу, поэтому меня никто не любит. Я до сегодняшнего дня без страха не подходила к людям. Они ненавидят меня, считая вороной-падальщицей. Ненавидят меня даже за то, что я питаюсь гниющей падалью. Но что поделаешь? Что теперь, если кто-то нас не любит, исчезнуть из этого мира что ли? Каждый кажется себе полезным, – сказав, скорчилась.

Албёрю только собрался уйти, ворона крикнула вслед за ним:

– Эй ты, справедливый человек! Пусть в дороге и счастье (тебе) будет удача всегда и везде! Ты наверно устал и проголодался. Вот как только перевалишь за эту высокую гору, один старик пасет стадо овец, слепой на оба глаза. Он живет и жаждет увидеть дневной свет. У него есть один черноголовый холощенный белый баран. Если зарезать и сварить его обе

почки, а потом приложить к обоим глазам старца, его глаза бы вылечились. Этот способ никто не знает. Ты иди и останься сегодня ночью возле него, успокоишься, – сказал.

Да, несчастный, этот праведный человек, понадеявшись на свою правоту: «Подожди, моя правда тебя не отпустит», – сказав, разозлившись на Тутбёрю, пошел в сторону горы. К вечеру дошел до коша* с пастухом.

– Эй, кто есть в коше? – спросил звучно.

– Эй, я есть, – ответив, вышел старец.

– Да прибавится, добрый старец!

– Спасибо, добрый гость!

– Можешь ли ты сделать гостем уставшего путника?

– Конечно, сделаем. Добро пожаловать!

Когда Албёрю увидел старика, вспомнил про слова вороны. Зашел в кош и сел. Немного поговорили.

– Аха, гость, в эти края человеческий сын не приходил, ты откуда взялся?

– Да, меня сюда судьба забросила. А как, вы в этих местах один живете?

– Да, видишь меня, (я) старик жаждущий увидеть дневной свет. Как жизнь протекает, так и я. И меня есть один трехгодовалый холощенный козел, он меня и водит, и стадо мое водит. Я продолжаю жить с его помощью. Несчастье приходит без спроса, пока оно не встретится с врагом более сильным, обратно не возвращается. Ты тоже наверно ходишь с какими-то проблемами. Выбери из баранов самого жирного, приготовим ужин, – сказал.

Албёрю быстро схватил черноголового белого холощенного барана и зарезал. Сварил почки и положил на оба глаза старика. Через некоторое время, как в пожеланиях, глаза старика, как и раньше, стали здоровыми.

Что можно сказать о радости и удивлении старика. Обнял, приласкал Албёрю, от благодарности. Албёрю несколько дней жил в коше у старика.

Старик поделил баранов на два и, половину отдав Албёрю, проводил в путь. Албёрю ушел, погнав баранов.

Теперь, когда старик распустил стадо баранов на холме, пришел один медведь и стал уносить одного из баранов. Тогда старик, выстрелив из ружья, ранил медведя. Раненый медведь, бормоча, плача, ушел в большой лес.

Пусть будет это так. Теперь Албёрю, погнав баранов, которых взял у старика, оставил их пастись, а сам задремал. В это время, загнав до смерти коня, которого угнал, откуда-то шел Тутбёрю и пришел прямо к баранам.

– Аха, теперь я разбогател, – сказав, стал гонять баранов. Погнав их, только перевалил за один холм, и встретился с этим раненым медведем. Бараны, испугавшись, убежали в сторону, а медведь, догнав, схватил Тутбёрю, и, разорвав (его) на части, ушел.

Вдруг, когда Албёрю проснулся и посмотрел, баранов не было. Подумал, что волки их погнали, и пошел за ними, поднялся на холм, а там пасутся бараны. Видит, что Тутбёрю лежит чуть дальше от них растерзанный, разорванный в клочья. Доковыляв, посмотрел в лицо: «Аха, лежи теперь. Хитрый платит дважды», – сказал, и, погнав баранов, пошел домой.

* Кош – шалаш, где живут животноводы, полеводы, косари.



Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 1. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Эта сказка о друзьях, имеет поучительный характер. Она учит тому, что нельзя гоняться за богатством и забывать человеческие качества. В сказке много пословиц: «Несчастье приходит без спроса, пока оно не встретится с врагом более сильным, обратно не возвращается»; «Сделав добро плохому человеку, домой живым не вернешься»; «Хитрый платит дважды».



БЁРЮ БЛА КЪОЙ

Эртте-эртте бир кьозулу кьой бла бёрю шуех болгъандыла. Къой отларгъа кетгенде, кьозусун бёрюге аманат этип болгъанды. Бир кере кьой отларгъа кетгенде, бёрюню эсине аман акъыл келип, кьозусун ашаргъа умут этгенди.

Бёрю кьозуну ашаргъа тебирегенде, хоншусу айтханды:

– Да сен, бёрю, анасы бла шуёх болуп, баласын къалай ашарса? – дегенди.

– Аны, анасы бир кере бир аман къаргъагъан эди да, андан ашайма, – деп, жууап бергенди бёрю.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 3 паспорт. КъЧАО-ну Учкулан ауулунда 1904 жылда туугъан Эркенланы Османны кызы Къазмахандан 02.08.1975 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Жомакъ бёрю бла кьойну шуёхлугъуну юсюнденди. Алай ол шуёхлукъ игилик келтирмейди. Бёрю бёрюлюгюн этеди. Анасыны къаргъышы толтурама деп, баласын ашайды. Текстде ол къаргъыш берилмейди, алай биз аны ангылайбыз. (Аман бёрю ашасын).

ВОЛК И БАРАН

Давным-давно одна овца с ягненком и волк подружились. Когда овца уходила пастись, ягненка она доверяла волку. Однажды, когда овца ушла пастись, в голову волка пришла хитрая мысль: задумал съест ягненка.

Когда волк собрался съест ягненка:

– Ты, волк, дружишь с его матерью, как ты съешь ее детеныша? – спросил сосед.

– Однажды мать очень сильно его прокляла, поэтому и съем, – сказав, ответил волк. (Пусть плохой волк съест).

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 3. Записал И.И. Гужеев 2.08.1975 г. в ауле Учкулан КЧАО от Эркеновой Казмахан Османовны (1904 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка о дружбе волка и овцы. Но эта дружба не приносит ничего хорошего. Волк остается хищником. Ссылаясь на то, что он воплощает проклятия его матери, волк съедает ягненка. В тексте не дается то, как овца прокляла своего детеныша, но нам это и так понятно (Пусть тебя съест ужасный волк).



ТЮЛКЮ БЛА БЁДЕНЕ

Тюлкю бла бёдене шуёх болгъандыла. Алай жашай келгенде, бир кюн тюлкючюк бёденеге айтханды:

– Бёдене, энди экибиз шуёх да шуёхбуз, сен мени бир кюлдюрсенг эди, ансы бир бек эрикгенме, – деди.

– Ахшы, кюлдюрюрме. Сен мени ызымдан кел да, арлакьда олтуруп, къарап тур. Бир кьарт кьатын кюн сайын ийнегин сауады, ингир алада, ол да челегин сютден толтуруп, саугъанлай, мен учуп барып башына кьонарма, – деди бёдене.

Айтханыча этип, бёдене барып, ийнек сауа тургъанлай, кьарт кьатынны башына кьонду.

Ол кьарт кьатынны уа бир телирек жашы болгъанды, ол а отун жара болгъанды бир уллу гида бла.

– Тохта, амма, тепмей тур, башында бёдене барды, мен аны бусагъат уруп ёлтюрейим, – деп, чабып барып, гида бла керилип анасыны башына ургъанды. Бёдене уа, «тыр» деп, учханды да кетгенди. Жаш а анасыны башын эки жаргъанды да ёлтюргенди.

Анасыны тишлери ачылып ёлюп тургъанында, тели жаш, дагъыда: «Къара-къара, амма кюле турады», – дей эди.

Ол кезиуде уа тюлкючюк анга къарап хайда кюл, хайда кюл, кюлкюден аямай кьанды.

– Энди, бёдене, сен мени бек кюлдюрдюнг, энди бир тойдурсанг эди, – деди.

– Тойдуурма. Бир кьатын оракъ орады, изеу жыйып, ол а алагъа ашарыкъ элтирикди тюшде, мен а аны алдарма да, ашын жерге салдырырма, сен а мени ызымдан шош келе кел да, аша да, кет, – деди.

– Ахшы, – деди тюлкючюк.

Бир заманда, кьатын хычинле этип, уллу табакъ бла жолгъа алып келгенлей, бёдене, учуп барып, кьатынны тюз аллына кьоннганды. Алайлай: «Бу ырахын бёдене кёреме. Тутайым», – деп, кьатын, хычинлени жолчукъгъа салып, бёденеге чапханды. Бёдене уа «тыр» дей да арлакъ кьона, алай этип, кьатынны узакъгъа узайтханды. Тюлкючюк а чапханды да, хычинлени битеу ашагъанды, жаучугъун да битеу жалагъанды да, кетгенди. Кьатын а, бёденени да туталмай, кьайытып келгенди.

Не этерик эди: хычинлени ашалгъанлары кьатыннга бек ачыу тийгенди. Изеуюм ач къалмасын, деп кьайытып, терк окъуна как этип элтгенди.

Биягъы тюлкю:

– А маржа, бёдене, энди кюлдюрген да, тойдургъан да этдинг, энди мени бир кьоркьутсанг эди, – деди.

– Бек ахшы, мен кьанат таууш этдире барырма, сен а эки кёзюнгю кьаты кьыс да, мени ызымдан келип тур, – деди.

Тюлкючюк да:

– Ахшы, – деди.

Бёдене да уллу таууш эте, тюлкю да аны ызындан, бир уллу тауукъ оруннга алып барды, анда уа итден топпа-толу. Адамла кьычырдыла: «Эй тут, эй тут, тюлкю», – деп, андан сора тюлкюню ызындан болдула итле.

Жаны кючден кьалып, кьуйрукъчугъун да юзюп, бир таш тюбюне кьутулду тюлкючюк.

Тюлкючюк да алай тургъанлай, бѣдене жетди:
– Къоркъдунгму, къоркъдунг, – деди.
Алайлай тюлкючюк:
– Да мен къоркъут дегенликге, жанымы алып къойму дегенме, – деп,
«хам» деди да, бѣденени ауузуна къапды.
Сора бѣдене:
– Алан, сени атынг не эди? – деп сорду.
Ол а:
– Тюлкю, – дегенлей, бѣдене «тыр» деди да, учду да кетди.
Тюлкю уа: «Ай анасына уа, «тылкъы» деп, тишлерими къаты къысып
айтсам эди уа», – деп сокъуранды.
Тюлкюню бѣдене аман акъыл бла къалай алай этсе да, хорлады.

*КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 6 паспорт.
Бѣзуланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны
белгисизди.*

*Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.
Бу жомакъны энчилиги бѣдене тюлкюню къалай алдагъаныды. Тюлкю
фольклорда бек хыйла жаньуарды. Аны алдагъан хазна чыкъгъан болмаз.
Алай бу жомакъда уа бѣдене аман акъыл бла къалай алай этсе да, хорлайды.*

ЛИСА И ПЕРЕПЕЛКА

Лиса и перепелка были друзьями. Так они жили, и однажды лиса сказала перепелке:

– Перепелка, мы с тобой друзья, могла бы ты меня рассмешить, а то мне так скучно, – сказала.

– Хорошо, рассмешу. Ты иди за мной, садись подальше и смотри. Одна старая женщина каждый день доит свою корову. Под вечер, как только она подоит и наполнит ведро молоком, я полечу и сяду ей на голову, – сказала перепелка.

Перепелка, как и сказала, полетела и села на голову старой женщине, когда она доила корову. А у этой старой женщины был полоумный сын. Он в это время колот дрова огромным топором.

– Подожди, амма*, не двигайся. У тебя на голове перепелка сидит, я ее сейчас ударю и убью, – сказав, побежал, и, размахнувшись топором, ударил свою мать по голове. Перепелка же, зашуршав, улетела. А парень же разрубил голову матери на два и убил.

Когда полоумный сын увидел, как его мать умерла и лежала, оскалив зубы, сказал: «Смотри, смотри, амма смеется».

А в это время лисичка смотрела на них и давай смеяться, и давай смеяться, от души посмеялась.

– Ну, перепелка, ты меня очень рассмешила, теперь накорми меня, – сказала.

– Накормлю. Одна женщина собрала людей помочь серпом убирать траву, она им в обед отнесет еду. Я ее обману, и она поставит еду на землю, ты иди тихо за мной, съешь и уходи, – сказала.

* Амма – мама, бабушка.

– Хорошо, – сказала лиса.

В то время, когда женщина пожарила хычины* и с большой тарелкой вышла в дорогу, перепелка, прилетев, села прямо перед ней. Тут женщина подумала: «Оказывается эта раненная перепелка. Сейчас поймаю», – и, положив тарелку с хычинами на дорожку, побежала за перепелкой. Перепелка же «тыр» и отлетала чуть дальше и садилась так, заставив женщину уйти довольно далеко.

Лисичка же побежала и хычины все съела, и масло все вылизала. А женщина не смогла поймать перепелку и вернулась.

Что она могла сделать, было очень обидно, что все хычины съели. Чтобы помощники не остались голодными, вернулась, быстро сварила кашу и отнесла.

Опять лиса сказала:

– Пожалуйста, перепелка, и повеселила, и накормила, теперь напугай меня.

– Очень хорошо. Я буду идти и шуметь крыльями, а ты хорошо зажмурь глаза и иди за мной, – сказала.

Лиса ответила:

– Хорошо.

Перепелка, сильно хлопая крыльями, повела лису за собой в один большой курятник, который был полон собаками. И люди закричали: «Эй, лови лису, эй, лови лису!». Так за лисой погнались собаки.

Лисичка, еле живая, с оторванным хвостиком спряталась под большим камнем. Лиса была в таком состоянии, когда к ней пришла перепелка.

– Испугалась, так испугалась, – сказала.

Тут же лисичка:

– Я сказала напугать, а не лишить меня жизни, – сказав, «хам» и схватила зубами перепелку.

Тогда перепелка:

– Не помню, как было твое имя? – спросила.

А как только она ответила:

– Лиса, – перепелка «тыр» и улетела.

А лиса:

– Ай, чтоб ее, лучше бы я сказала «лыса» крепко сжав зубы, – пожалела.

Перепелка, так или иначе, перехитрила лису.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 6. Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно. Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Особенность данной сказки в том, что здесь лису обманывает перепелка, хотя в сказочном фольклоре хитрым зверем является лиса. Редко кто ее может обмануть. Но в данной сказке перепелка хитростью обманула лису.

* Хычины – пироги. Национальное блюдо балкарцев.

АЙЫУ, БЁРЮ, КЪЫЗЫЛ ТЮЛКЮ

Айыу, бёрю эм къызыл тюлкю бир къош болуп тургъандыла. Къышланы биринде, бир ахырзаман суукъ, боран келип, была къошларындан тышына чыгъалмагъанлай, бек ач болгъандыла. Бир кюн бёрю къаугъа этип, къуйругъун отха жетдирип, хорусмах ийис этдирди.

Айыу анга:

– Ол аман жюнюнгю кюйдюрюп, бизни тунчукъдураса, – деп къутурду.

Жаныуарла ол халда тура келип, кече жукъладыла. Сора тюлкючюк, шош къобуп, бир эски арба жауну табып, хаман айыуну юсюне жагъды. Бёрюню да эки ал аягъына жакъды. Эрттенликде уянганларында, айыу керилип башлагъанлай, териси тартылып, къычырыкъ этди.

Сора ол арба жау жагъылгъанны кёрюп:

– А, аманлыкъчы тюлкю, сенмисе быллай ишлени этген? Сен тауукъчуну мен керегинги берейим! – деп, аны юсюне айланды.

– Угъай, айыу, сен кёрмей тураса, къарачы бёрюню ол аякларына. Аманлыкъчы олду, аллай ишлени ол этиучюдю, – деп, бёрюню кёргюзтдю. Ай, алайлай, айыу бёрюню, теплеп алып, жулкъду да бошады.

Айыу бла тюлкю, сууукъдан къошдан чыгъаргъа къоркъуп кёп тургъандан, ач да? къарыусуз да болдула. Бир заманда тюлкю бир кёзюм къысып, ауузу бла чам-чам этди. Айыу аны эшитгенлей:

– Эй, тюлкю, не ашайса? – деди.

– Ашаб`а, не ашарыкъма, асыры ачдан, бир кёзюмю чыгъардым да, къапдым.

Сора айыу аны эшитгенлей бир кёзюм тамыры бла чыгъарды да, къапды. Ол халде тура кетип, биягъы ачдан онгсуз болгъанлай, тюлкю экинчи кёзюм къысып, чам-чам деп этди. Аны эшитгенлей, биягъы айыу:

– Тюлкю, энди уа не ашайса, – деп сорду.

– Да не ашарыкъма, къалгъан кёзюмю чыгъардым да къапдым, – деди.

Айыу аны эшитгенлей, кесини экинчи кёзюм да чыгъарды да къапды. Тюлкю уа эки кёзюм да ачды. Айыу а сокъур болду да къалды.

Алай тура-тура кетип, ала ахыр кючлерине таяндыла. Сора тюлкю айыугъа:

– Айыу, хайда, турмайыкъ былай. Мени къуйругъумдан тут да, бир жары кетейик, ансы ачдан ёллюкбюз, – деди.

Ала, къошчукъдан чыгып, бара баргъанларында, бир ат мыллыкга тубедиле. Ала аны, аяусуз кемире келип, ич жауна жетдиле. Сора тюлкю айтды:

– Шуёхум, айыу, биз кёп тапханбыз деп, барын да бир кюнюк этмейик. Былайдан узакъ болмай, кирмиште эки дорбун бардыла, сен жауну тугулла эт да, эки тенг этип, жартысын санга, жартысын манга ташыйым. Сора жаула ичинде зауукъ этип жашарбыз, – деди.

Айыу:

– Ахшы, – деп, жауну тугулла этди. Тюлкю уа битеу жау болгъанны кеси барлыкъ дорбуннга ташыды. Айыуну дорбунуна уа акъ ташланы ташып, къалады.

Сора тюлкю айтды:

– Аха, энди чабайыкъ да, жаулагъа батылайыкъ.



Ала чабышдыла. Тюлкю жау тугуллагъа батылды, айыу а, барып, акъ ташлагъа тишлерин уруп, агъызды да кьойду. Айыу, тишсиз да, сокъур да болуп, тентирей, агъачха кетди. Ол анда айыулагъа болгъан хапарын эм, кьызыл тюлкюню этген артыкълыкъларын, айтды.

Айыула битеу жыйылып тюлкюлени кьалдырмай жыйдыла. Ала тюлкюлени, сууну юсю бла бир узун агъачны салып, аны юсюне тиздиле. Не кеп кьарасала да, ол тюлкюню таныялмадыла. Хыйлачы тюлкю уа, кьып-кьызыл болуп тургъанлай, ёртен тюшген жерге аунагъанды да, кесин кьап-кьара этгенди да, аны ючюн танылмагъанды. Сокъур айыу да аны сыфатын айта тургъанлай, агъач бурулуп кетип, ол тюлкю суугъа кетгенди.

Ай, алайлай, айыула жетип, ол тюлкюню ортагъа алгъандыла.

Ала соргъандыла:

– Сен суугъа нек тюшген эдинг?

– Анамы ийнеси бу сууда тас болгъан эди да, аны излейим деп, – деди тюлкю.

– Кьызыл а нек болгъанса?

– Суу асыры сууукъдан юшютгенди да андан кьызаргъанма, – деди биягъы тюлкю.

Тюлкю хыйласы бла былайда да кьутулду да кетди. Жарлы айыу а сокъур да, тишсиз да болду да кьалды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 6 паспорт. Бёзюланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, кьайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ тюлкю хыйлачылыгъыны юсюнден жомакъладан бириди. Айыу а акъылсызча кёргюзтюледди, нек десенг, тюлкюге ышанып, кесин алдатдырады. Тюлкю уа, хар замандача, хыйлачыды.

МЕДВЕДЬ, ВОЛК И РЫЖАЯ ЛИСА

Медведь, волк и рыжая лиса жили в дружбе. В одну из зим наступили сильные холода, была метель, они не могли выйти из своего коша и очень проголодались. В один день волк засуетился, дотронулся хвостом до огня, что запахло гарью.

Медведь ему:

– Ты поджег свою плохую шерсть, что мы задыхаемся, – сказав, поругался.

Звери в таком состоянии спали ночью. Тогда лисичка встала, нашла старое машинное масло для телеги и хорошо намазала на медведя. Также намазала обе лапы волка. Утром, когда проснулись, медведь начал растягиваться, у него потянулась кожа, и он закричал.

Тогда, увидев машинное масло:

– А, вредительница, лиса, эта ты такие вещи делаешь? Тебя, воровку куриц, я накажу! – сказав, набросился на нее.

– Нет, медведь, ты не видишь, посмотри на лапы волка. Эта он вредитель, такие вещи он делает, – сказав, показала на волка. Тут же медведь схватил волка и разорвал.

Медведь и лиса, боясь из-за холода выйти из коша, еще долго там оставались, проголодались и обессилели. Вдруг лиса, закрыв один глаз, начала чавкать. Медведь, услышав это, спросил:

– Эй, лиса, что кушаешь?

– Что я могу есть: из-за голода, вытащила один глаз и проглотила.

Как только медведь это услышал, вытащил один глаз с корнем и проглотил. Продолжая жить в таком состоянии, опять обессилев от голода, лиса закрыла второй глаз и начала чавкать.

Медведь, как только это услышал, спросил:

– Лиса, а теперь что кушаешь?

– Да, что я могу есть: оставшийся глаз вытащила и проглотила, – ответила.

Медведь, как только это услышал, вытащил свой второй глаз и проглотил.

А лиса открыла оба глаза. Медведь же окончательно ослеп. Так они жили, но уже иссякли последние силы. Тогда лиса говорит медведю:

– Медведь, давай не будем больше так жить. Держись за мой хвост, уйдем куда-нибудь, иначе умрем с голоду.

Они вышли из коша, шли-шли и встретили падаль коня. Они грызли его, не переставая, и дошли до внутреннего жира. Тогда лиса сказала:

– Друг мой, медведь, посчитав, что много нашли, давай не будем делать еду однодневной. Недалеко от входа сюда есть две пещеры, ты скатай из жира шарики, а я, поделив его на два, перетащу половину к тебе, половину ко мне. И тогда заживем в достатке среди жира.

Медведь сказал:

– Хорошо, – и закатал из жира шарики. А лиса весь жир перетащила в ту пещеру, куда сама собралась пойти. В пещеру медведя же отнесла белые камни и собрала в кучу.

Потом лиса сказала:

– Аха, давай теперь побежим и утонем в жире.

Они побежали. Лиса утонула в шариках жира, а медведь побежал и, ударившись зубами о белые камни, выбил все зубы. Медведь стал беззубым и слепым и, покачиваясь, ушел в лес. Он там рассказал всю историю медведям, и про то, как рыжая лиса над ним издевалась.

Медведи объединились все вместе и собрали всех лис до одной. Они поставили длинное бревно через реку и построили на него всех лисиц. Сколько бы они не смотрели, а ту лисицу не узнали. А хитрая лиса, будучи огненно-красной, повалилась на земле, где прошел пожар, и сделала себя угольно-черной, поэтому и не могли ее узнать. В то время, когда слепой медведь описывал ее внешность, бревно перевернулось, и лиса упала в воду.

Тут же медведи побежали и окружили эту лису.

Они спросили:

– Почему ты упала в воду?

– Иголка моей мамы потерялась в этой реке, я ее ищу, – ответила лиса.

– А почему стала красной?

– Вода очень холодная, заморозилась, оттого и покраснела, – ответила опять лиса.

Лиса хитростью и тут увернулась. А бедный медведь остался и слепым, и беззубым.



*Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 6.
Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно.
Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.*

Данная сказка является одной из сказок о хитрой лисе. А медведь здесь предстает перед читателем безумным, т.к. доверился лисе и дал себя обмануть, а лиса – как всегда хитроумная.

ЭКИ КЪОНШУ

Эртте-эртте эки къоншу болгъандыла. Аланы бирини аты, бирсини уа арбасы болгъанды. Ала нёгерле болуп базаргъа баргъандыла. Базарларын этип, къайытып келе, атны иеси атына ашатыргъа бичен керек болуп, бир жанына кетгенди.

Ол кетгенлей, байталы тай тапханды. Ол келгинчин, арбаны иеси тайны арбагъа такъгъанды.

Байталны иеси къайтханда:

– Тайны арбагъа нек такъгъанса? – деп сорду.

– Да не этейим, тайны арбам тапханды да андан, – дейди арбаны иеси. Даулашха къалып, экиси да Тёреге барадыла.

Сора арбаны иеси ёкюлге: «Тюлкую хыйлагъа устады – хорлатмаз», – деп сайлайды. Экинчи кюн Тёреге тюлкую алгъа келди. Кирпи келмейди, тюлкую уа аны келмегенине, ачыуланып, сакълайды. Болсада бир заманда кирпи, тёнгерей-тёнгерей келди.

Сора тюлкую кирпиге хыликкя этип:

– Сен аман кирпи, тёнгерей-тёнгерей, мени ариу санларым бла сакълатып, – деп ачыуланды.

Сора кирпи:

– Эй, ариу тюлкую, мен не этейим? Къаргъа от тюшюп, кюйюп бара эди да, аны къаудан бла ёчюлте къалгъанма, – деди.

– Эй, кирпи, сен неле айтаса? Къаргъа от тюшемиди, аны къаудан бла къалай ёчюлтесе? Аллай сёз боламыды? – дейди.

– Да бууаз байтал тургъанлай, арба тай къалай табады? Бу андан сейир туююлдо, – деп, айтханда кирпи, тюлкую къачды алайдан. Тай байталны иесине къалды.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 7 паспорт. КъМАССР-ны Гирхожан элинде 70-жыллыкъ Беккиланы Хамитбийден 07.02.1959 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ насийхат халда жазылгъанды. Мында кирпи, тынч жаныуарчыкъ тюлкую къалай хорлагъаны сейирди.

ДВА СОСЕДА

Давным-давно жили два соседа. У одного из них была кобыла, а у другого телега. Они вместе дружно поехали на базар. После базара возвращались домой, хозяин кобылы отошел в сторону за сеном для кобылы.

Как только он ушел, кобыла ожеребилась. Пока тот не пришел, хозяин телеги привязал жеребенка к телеге.

Когда вернулся хозяин кобылы, то спросил:

– Почему привязал жеребенка к телеге?

– А что мне было делать, потому что жеребенка родила моя телега, – ответил хозяин телеги. Пospорив, они вдвоем пошли в суд.

Тогда хозяин телеги подумал: «Лиса искусно хитрит – не даст победить». Он взял в защитники лису.

На второй день в суд лиса пришла первая. Ёжик все не приходил, а лиса ждала, разозлившись тому, что тот не шел. Но все же в одно время ежик, кувыркаясь-кувыркаясь, пришел.

– Ты, плохой ежик, кувыркаясь-кувыркаясь, заставил меня с моей красивой фигурой ждать, – сказав, разозлилась (лиса).

Тогда еж:

– Эй, красивая лиса, что я мог сделать? Снег загорелся и стал сгорать, я стал тушить его соломой, – ответил.

– Эй, ежик, ты что рассказываешь? Разве снег загорается, как его соломой тушить? Такое разве бывает? – сказала.

– Да, когда есть беременная кобыла, как телега может родить жеребенка? Это разве не интереснее чем то, – сказал еж, и лиса тут же сбежала оттуда. Жеребенок достался хозяину кобылы.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 7. Записано 07.02.1959 г. в пос. Гирхожан от 70-летнего Беккиева Хамитбия. Кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка поучительного характера. Она интересна тем, что ежик тихий зверек обхитрил лису.

БЁРЮ БЛА ЗОЛОУЦУ

Бир кюн ууцула ууда айлана кетип, бир бёрю кёргендиле. Ууцула атлада болгъан себепли, бёрюню къууп тутаргъа умут этдиле. Аланы иелери – бай’а, ууцунлары уудан занууарны саулай тутуф келтирселе, алагъа уллу сыйлыкъ бере болгъанды.

Сора бёрю къаца барып, золда машогун да кьолтугъуна сугъуп баргъан, бир кишиге золукъгъанды.

Бёрю кишиге:

– Эй, золоуцу, кёремисе ол анда атлыланы, ма ала мени къуууп келелле. Не айтханынгы да этерме, мени машогунга букъдуруп, ёлюмден кьутхарсанг, – деп залынды. Киши бёрюню машогуна сугъуп, машокну да умбашына атып кетип бара, ызындан бёрюню къуууп келген атлыла жетедиле.

Кишиге:

– Алан, былайтын къацып баргъан бёрюню, кёрмедингми, – деп сордула. Киши:

– Кёрмегенме, – деп зуап берди.

Ууцула дагъыда цапханлай, бёрюню излей ташайгъанда, киши бёрюню машохдан цыгъарды. Алай бёрю, машохдан цыкъгъанлай, кишиге ашаргъа секирди.

Киши бёрюге:

– Ай, аман, биягъында этхен ахшылыкъымы унутуп, энди уа ашаргъамы секиресе? – деди.

Бёрю кишиге:

– Аллын этхен ахшылыкъ унутулуф къалады, – деди.

Сора киши:

– Огъесе, кел золда ким тубесе да, сорайыкъ да, сен айтханлайды десе, ашарса, алай болмаса къоярса, – деди. Бёрю да ыразы болду да, экиси да тебирелле. Бара кетип бир итхе тубедиле.

Итхе соргъанларында, ит:

– Мен кёп зылыны бир кьойцугъа кьуллукъ этип тургъанем, алай къарт болгъанлай’а, мени эшикге къыстап кьойгъандыла, – деди. – Сора къайда аланы алгъыннгы ахшылыкъны унутмагъанлары?

Бёрю уа:

– Кёрдюнгмю? – деп, ашаргъа секирди, алай киши:

– Тохта энтда да сорайыхта алай ашарса.

Сордула атха, сордула эшекге. Экиси да, ит айтханца, айтдыла. Сора сордула тюлкюге, тюлкю уа кишиге:

– Кёргюшцю къалай этип бухтургъанынгы бёрюню? – деп сорду.

Бёрю да, киши да айтдыла, киши бёрюню къалай букъдургъанын. Алай тюлкю:

– Мен кесим кёрмесем, ыйнанырыкъ туююлме, – деп унамайды. Сора бёрю машохгъа кирди.

Тюлкю кишиге:

– Къыс энди башын, – деди. Киши къысты.

Тюлкю:

– Энди не суйсенг да эт бёрюню. Ахшылыкъ унутула эсе, аманлыкъ’а унутулмайды, – деди кишиге.



Киши бёрюню, аямай туйюб, ёлтюрдю да, элтип багушха атды. Сора машогун да алып, юйюне кетди. Ма алай болады ахшылыкъгъа аманлыкъ этген.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 10 паспорт. КъМАССР-ны Жангы Малкъар элинде Гузеланы И.И. жазгъанды. Къачан, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъда жаньуарла бла бирге адамла да бардыла. Жолоучу бёрюню ызындан уучула къууун келгенлерин кёрюп, жан аурутуп, букъдурады Алай ол аны ашаргъа сюеди: «Ахшылыкъ жашауда унутулады», – деп.

Жолда тубеген жолоучуладан соруп, ала айтханнга баш урурбуз дегенден, жолгъа чыгъадыла. Алай къарт ит бла эшек берю айтханны тюзге тергейдиле. Ючюнчю уа тюлкю тубейди, ол а ангыламагъанча этип, иши башындан баилатады. Бёрюню, кеси айтханы кесине тапсыз болады. «Ахшылыкъ унутула эсе, аманлыгъа унутулмайды, – деген сёзле бла, тюлкю бёрюню терслигин билдиреди.

Жомакъ 1/3-диалектде жазылгъанды.

ВОЛК И ПУТНИК

Однажды охотники ходили на охоту и увидели одного волка. Так как охотники были верхом на конях, решили догнать и поймать волка. Их хозяин – богач, когда его охотники из охоты приносили живого зверя, давал им большую плату.

Тогда волк, убегая, встретил по дороге одного человека, который шел с мешком подмышкой.

Волк взмолился человеку:

– Эй, путник, видишь там этих всадников, вот они меня преследуют. Я сделаю все, что ты скажешь, если ты меня спрячешь в свой мешок и спасешь.

Мужик запустил волка в свой мешок, поднял мешок на плечо и пошел, когда его догнали всадники, преследующие волка.

Спросили мужика:

– Эй, ты не видел волка, пробегающего здесь?

– Не видел, – ответил.

Когда охотники поскакали дальше, разыскивая волка и исчезли, мужик вытащил волка из мешка. Но как только волк вылез из мешка, накинулся на мужика, чтобы съестъ.

Мужик сказал волку:

– Ай, плохой, ты, забыв про то добро, что я для тебя сделал тогда, набрасываешься, чтобы съестъ меня?

Волк ответил мужику:

– Добро, сделанное раньше, забывается.

Тогда мужик сказал:

– Тогда давай спросим тех, кто встретится по дороге, если скажут все как ты сказал – съестъ, если не будет так – оставишь. Волк согласился, и они вдвоем отправились в путь.

Шли-шли и встретили одного пса. Когда спросили пса, пес сказал:
– Я долгие годы служил одному чабану, но как только состарился, он меня выгнал на улицу. Тогда где то, что они не забыли доброе, что было раньше?

А волк:

– Видишь? – сказав, набросился, но мужик:

– Подожди, давай еще спросим, и так съешь.

Спросили коня, спросили осла, Оба сказали так же, как сказал пес.

Тогда спросили лису.

А лиса спросила:

– Сможешь показать, как ты спрятал волка?

И волк, и мужик рассказали, как мужик спрятал волка.

Но лиса:

– Я пока сама не увижу, не поверю, – сказав, не соглашалась.

Тогда волк полез в мешок.

Лиса сказала мужику:

– Завяжи теперь мешок.

Мужик завязал.

Лиса сказала мужику:

– Теперь как хочешь, так и поступай с волком. Если добро забывается, то зло не забудется.

Мужик сильно побил волка и убил, понес и выкинул в мусор. Забрал свой мешок и ушел домой. Вот так бывает с теми, кто на добро отвечает злом.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 10. Записал И.И. Гузеев в с. Новая Балкария. Когда и от кого осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В данной сказке действующими героями вместе с животными являются и люди. Путник, увидев волка, за которым гнались охотники, пожалев, спрятал в мешок. Но волк хочет его съесть, сказав: «Добро в жизни забывается».

Они отправились в путь с мыслью, что спросят у встречных, и по их словам решат, что дальше делать. Но вот старый пес и волк решили, что волк прав. Третьей, кто встретился, была лиса, но она, притворившись, что ничего не понимает, хитростью заставляет их показать сначала, как все было. И вот слова волка обернулись против него самого. Лиса словами: «Если добро забывается, то зло точно не забудется», – дает понять волку его неправоту.

Сказка записана на цокающем диалекте.



ЁГЮЗ БЛА ИТ

Бир элде, мындан жарлы ким болур дегенча, бир жарлы адам жашагъанды. Бир ёгюзю бла итинден сора мюлкю болмагъанды. Жарлы болса да, ол ёгюзню иги бакъгъанды: заманында анга аш бергенди, суу ичиргенди, жатхан жерин, орунун тазалагъанды. Къарасанг, асыры семизден, жюрюген заманда ары-бери ауа, тюгю жылтырап, ёгюз бир хан кибик жашагъанды. Итге уа аш да бермегенди, тюгю тюшюп, арыкъ болуп, суюклери кёрюне айланганды.

Элде жашагъанланы бир къауумуну ёгюзге кёзлери къарап болгъанды. Ма бир къарангы кече ол жарлыны арбазына урочула киредиле. Адамланы ит эсегенди, аланы аман ниетлерин да билгенди, алай алагъа не чапмагъанды, не юрмегенди. Бир мюйюшчюкге кирип, чулгъанып жатханды да, уллу сагъышха къалгъанды: «Ненча жылны, кече жукъламай, бу ёгюзню сакълайма. Манга уа не хайыры барды? Ием жаланда ёгюзге къайгъырады: аны тойдурады, суусабын къандырады, тазалайды, аны тегерегине айлангандан сора жукъ билмейди. Мен а сууукъ бла ачлыкъдан сора кёргеним жокъ. Угъай, ахшы ием, энди мени инжилгеним боллукъ болур, сюрсюнле бу мулхар ёгюзню. Арбазда кесим къалсам, тоярма, зауукъ этерме», – дегенди ит кеси кесине.

Ит аллай акъыллы оноу этип бошагъынчы окъуна, урочула баудан ёгюзню арбазгъа чыгъаргъандыла.

Итни кёрюп, ёгюз тилегенди:

– Ариу, ахшы итчик! Кёремисе, бу аман адамла мени сояргъа элтедиле, юр да, иебизни къобар.

«Андан хатагъа къалайым», – дегенча, ит бир жанына бурулгъанды да, юрюрге унамагъанды. Ёгюзню уллу мюйюзлерине жипни байлагъынчы, ёгюз дагъыда къадалып тилегенди:

– Эндиге дери сениенге ахшы къуллукъ этгенсе, мени да иги сакълагъанса. Экибиз да, бир къарындашла кибик, алай татлы жашагъанбыз. Иебизни атындан къайтарып тилейме: бу аман адамла мени сюрюп кетмезча эт, иебизни уят. Сен юйюнге, къалай ангыламайса, мени урласала, санга бир жукъ да жетмез, тюерле, улутурла. Мени иебиз кессе уа, ол сени тойдуруп.

Хоу бир да, ит анымы эсине аллыкъ эди. Айтылгъан бир къулагъындан кирип, бирси къулагъындан чыгъып кете эди. Сора ёгюзню эсине хыйла тюшдю:

– Сен мени кёрюп болалмасанг да, – деди ол. – Мен сени бек сюеме. Жанчыгъым, манга бир къысыл, дуниядан кетерден алгъа, санга бир сёзюм барды да, аны къулагъынга айтайым.

Ит да аны къатына келгени болду, къарыуундан келгени чакълы ёгюз да аны мюйюзлери бла урду. Ой, аллай къычырыкъ-хахай болду! Ёгюзню иеси угъай, битеу эл аны юсюне болду.

Ие чартлап арбазгъа чыкыгъанда, урочула узакъда эдиле. Ёгюз да арбазны оргасында, боюнунда жиби бла тура эди, къатында уа, къуйругъун къысып, ит сынсий эди.

Ие бу кече болгъан ишни ангылады. Ёгюзню баугъа уруп, итни къатына барды да, башын сылап, ийнакълап, ариу айтды:

– Аперим! Мындан ары сен ачлыкъны сынамазса!

Эрттен бла ит ёгюзге сорду:

– Сен мени нек ургъан эдинг?

– Мен алай этмесем, мени, алып кетип, кесерик эдиле. Аны ючюн, сен тоярыкъ туююл эдинг. Энди уа, кесим да сау къалдым, сен да ач боллукъ туююлсе, – деди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 12 паспорт. КъМАССР-ны Хабаз элинде 1897 жылда туугъан Жеунланы Таубийден 1959 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ насийхат халда жазылгъанды. Игиликъ хар кимге да, эртте, кеч болса да, къайытханын билдиреди. Ит ёгюзню аманлыкъчыладан сакълап, кесине иги жашаргъа амал билгенди. Ол а ёгюзню хыйлалыгъы бла болгъанды. Бу жаныуарланы сыфатларында адамланы халлери ачыкъланады.

ВОЛ И СОБАКА

В одном селе жил один бедняк, беднее которого, можно сказать, не было. Кроме одного вола и собаки у него не было имущества. Хоть и был беден, но вола хорошо кормил: вовремя давал еду, поил водой, чистил место, где он спал и жил. Посмотришь, настолько (этот вол) был жирным что, когда шел, раскачивался туда-сюда, шерсть блестела – вол жил как хан. А собаку (хозяйин) не кормил, у него выпала шерсть, истощал так, что кости были видны.

Некоторые жители села положили глаз на вола. Однажды темной ночью во двор этого бедняка вошли воры. Собака заметила тех людей, узнала про их злой умысел, но не стала лаять. Забилась в один уголок, свернулась калачиком и думала: «Сколько лет ночами не сплю, охраняю этого вола. А что я с этого имею? Хозяин только о воле и беспокоится: его кормит, поит, чистит, ничего не знает кроме того, что вокруг него и ходит. А я кроме холода и голода ничего не вижу. Нет, дорогой хозяин, теперь наверно хватит моих страданий, пусть уведут этого ненасытного вола. Если во дворе останусь я один, наемся, буду счастлив», – подумала собака про себя.

Пока собака так умно мыслила, воры вывели вола из сарая во двор. Увидев собаку, вол взмолился:

– Красивая, хорошая собачка! Видишь, вот эти плохие люди ведут меня, чтобы зарезать. Полай и разбуди нашего хозяина.

Как будто подумав: «Пусть меня минует это несчастье», – собака повернулась в другую сторону и не захотела лаять. Пока накидывали (воры) веревку на большие рога вола, вол еще настырнее попросил:

– До сегодняшнего дня ты хорошо служила своему хозяину, так же хорошо меня стерегла. Мы жили так сладко, словно родные братья. Прощу от имени нашего хозяина: сделай так, чтобы эти плохие люди меня не уводили, разбуди хозяина. Как ты не понимаешь, если меня украдут, тебе ничего не достанется, побьют, заставят тебя выть. А если меня зарежет наш хозяин, он тебя накормит.



Да нет, а том ли думала собака. Сказанное входило в одно ухо и выходило через другое. Тогда вола пришла хитрая мысль:

– Если даже ты меня ненавидишь, – сказал он. – Я тебя очень люблю. Душа моя, прижмись ко мне, перед тем как я уйду с этого света, хочу сказать тебе кое-что, давай скажу тебе на ушко.

Как только собака подошла к нему, вол, что есть силы, ударил ее рогами. Ой, какой крик и лай поднялся! Не только хозяин вола, но и все село прибежало.

Когда хозяин выскочил во двор, воры были уже далеко. Вол стоял в середине двора, на шею была наброшена веревка, а рядом прижав хвост, скулила собака.

Хозяин понял, что за дело было этой ночью. Загнав вола в сарай, подошел к собаке, погладив по голове, приласкав, сказал ласково:

– Молодец! Дальше ты больше не испытаеть голода!

Утром собака спросила вола:

– Почему ты меня ударил?

– Если бы я так не сделал, меня бы увели и зарезали бы. Из-за этого ты бы не наелся. А теперь я и сам уцелел, и ты больше голод испытывать не будешь, – сказал.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 12. Записано в 1959 г. в с. Хабаз КБАССР от Жеунова Таубия (1897 г.р.). Кто осуществил запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Это сказка носит поучительный характер. Обращает внимание к тому, что добро всегда возвращается обратно. Собака, сохранив от грабителей вола, нашла способ жить в достатке. Вол, благодаря смекалке, смог убедить собаку спасти его. В сказке в образе животных определяются характеры людей.



ЖЁГЕ-ХАН

Алгъын заманда бир киши жангъыз жашы бла жашап болгъанды. Ол элде аладан сора да бир къатын жашы бла жашап болгъанды. Къатын кишини жашын юйюне чакъырып: «Сен мени атанга алдыр», – деп, кёп тюрлю затла бла алдап тургъанды. Жаш да бара да, атасына айта, сен ол къатынны ал деп, атасы да унамай, алай эте тургъандыла. Къатын да жашны чакъырып, кюн сайын алдап тургъанды. Жаш атасына жилияп баргъанды, сен ол къатынны ал деп. Атасы айтханды: «Да, жашым, мен аны алгъанлыкъгъа, экибизни бирге къоймаз», – дегенди.

Жашны къатын чакъыра, жаш да, атасы не айтса, аны айта да бара къатынга. Къатын да алдай жашны: «Сен мени атанга алдырсанг, мен санга алай къарарыкъма, былай къарарыкъма», – деп, алдап турады. Не болсада киши жашыны айтханын этип, къатынны алады. Ала жашай кетип, къатын кишини жашын суймей башлайды.

Бир кюн къатын кишисин чакъырып:

– Жашынгы тас эт, – дейди.

Киши кёз жашлары келип:

– Жашымы къалай тас этейим, – дейди.

– Къалай суйсенг, алай тас эт, суйсенг, кесинг кет, – дейди.

– Киши къалай тас этейим, – дейди.

– Эшегинги жерин сал да, отуннга барабыз деп, агъачха элт да, кесинг башха жол бла къайыт да кел, – дейди.

Киши:

– Огъесе гыржын эт да, ашай-ашай туруп, – дейди.

Къатын бир таба гыржын этеди. Киши жашына гыржынны берип, агъачха элтеди.

– Сен былай тур, – деп, кеси къайытып кетеди. Жаш, гыржынын да ашай, жилияп тургъанлай, бир тюлкю келеди.

– Жашы, нек жилияса, – деп сорады.

Жаш айтады ажашханын.

– Огъесе кел, мен сени юйюме элтейим, – деп, жашны кеси юйюне элтеди.

Тюлкю жашха кийимни жёгени къабугъундан этеди. Жашны атына Жёге-хан атайды. Тюлкю жашны он беш жыл багъады.

Бир кюн тюлкю:

– Жашым, энди мен санга къатын алама, – дейди. – Былайда бир хан барды да аны къызын, – дейди.

Жаш да:

– Ол бери келирми да, – дейди.

Тюлкю:

– О-о, сен аны ючюн бир къоркъма. Мен аны элтир жер табарма, – дейди. Тюлкю: – Ол ханны юй аллында уллу суу барады. Анда ханны юйюню тенгинде кёпюр барды. Сен ол кёпюр тюрбюнде тур да, мен ханны эшик аллы бла озуп тебиресем, ала мени кёрюп, сейирсинирле, мен а: «Сиз манга сейирсингенни къоюп, алайда Жёге-ханнга къызыгъызны берге эдигиз», – дерме.

Ала: «Къайда», – деп чабышырла. Сен а, ала чабышхан заманда, суугъа секирсе. Сора мен а, сени кийимлеринг суу башында къалкъыр заманда,



ёрге-ёрге секирип, жилярма, Жёге-ханны алтын кийимлерин суу элтип барады деп. Ала уа санга, кийим келтирип берирле, – деп, тюлкю бла жаш жолгъа чыкъдыла.

Хар зат да, тюлкю айтханча, болду. Жаш кёпюр тюбюне кирди. Тюлкю ханны эшик аллы бла озуп тебиреди.

Хан, аны кёрюп, сейир этип:

– О-о, тюлкю, тюлкю, – деди.

Тюлкю:

– Манга сейир этгенни кёюп, кёпюр къатында Жёге-ханга кызыгъызыны берсегиз а, – деди.

Ала чабышдыла:

– Къайда-къайда, – деп.

Ала чабышхан заманда, жаш суугъа секирди. Жёге къабукъланы суу къалкъытып элтип башлагъан заманда, тюлкю ёрге-ёрге секирип, жиляп башлады.

Хан:

– Нек жилийса? – деди.

Тюлкю:

– Жёге-ханны алтын кийимлерин суу элтип барады, – деди.

Хан:

– Къой жилима, мен берирме кийим, – деп, жашха кийим келтиртип, кийиндирдиле. Хан кызын берирге айтды. Некях этиучюлени чыккырып, неках этдирип, кызын Жёге-ханнга берди. Хан кызын киеу жёнгерле бла ашырды.

Жолда келе-келе, тюлкю:

– Сиз келе туругъуз, мен кьонакъ юй къурайым, – деп, аладан озуп кетди. Тюлкю, бара кетип, бир къой кьошну жаны бла озуп тебирегенлей, кьойчула кёрюп:

– Тюлкю-тюлкю, – деп чабышдыла.

Тюлкю:

– Сиз манга сейирсингенни кёюп, жаныгъызыны сау къутултугъуз. Артдан ханны аскери кёкде къанатлы, жерде жилян кьоймай, кырып келеди, – деди. Кьойчула битеу ёрге айланып къачдыла. Ала къачхан заманда, тюлкю барып кьошну жарашдырды.

Киеу жёнгерле жетдиле. Тюлкю: «Сиз Жёге-ханнга жарлыды демегиз, бу кьой кьошуду, алыкъа сиз муну байлыкъларыны кыйырын да кёрмегенсиз. Бара-бара, кёре-кёре, барысыз», – деп, кьонакъланы олтуртду. Ол кече кьонакълагъа тюлкю соялгъан кьоюн союп, биширип, кьонакъланы сыйлады.

Эртенинде жолгъа чыкъдыла. Тюлкю: «Сиз келе туругъуз», – деп озуп кетди. Бара кетип тауукъ кьошха жетди.

Тауукъчула тюлкюню кёрюп:

– Э-э-эй, тюлкю, тюлкю! – деп чапдыла.

Тюлкю:

– Сиз манга сейир этмегиз да, кеси жаныгъызыны сау къутултугъуз. Арта ханны аскери кёкде къанатлы, жерде жилян кьоймай кырып келеди, – деди.

Тауукъчула кьойчула да кьошулуп:

– Не этейик, – дедиле.

Тюлкю да:

– Ёлюрге сую эсенг, жат да ёл, – деди.

Адамла:

– Андан эсе кьачып ёлейик, – деп кьачдыла. Тюлкю кьошха барып, бир эки тауукьну боюнун буруп, кьонакьла келир заманга сыйпады.

Кьонакьла жетдиле.

Тюлкю: «Сиз Жёге-ханны жарлыды демегиз, бу тауукь кьошуду», – деп, кьонакьланы олтуртду. Тауукьланы арыгьынчы боюнларын буруп, биширип сыйлады.

Ол кече анда кьалып, эртенинде тюлкю биягьы алгьа кетди. Бара кетип, эшек кьошха жетди. Тюлкюню кёрюп, биягьы чабышдыла.

Тюлкю эки кьолу бла буюрегин тутуп:

– Сизге чабама деп, ёлюрге да жетишдим, – деди.

Кьой, тауукь кьошладан кьачханла да анда.

Тюлкю, алагьа кьарап:

– Сиз былагьа айтмагьанмысыз, мен сизге айтханны. Энди жетип да келе болурла, хайдагьыз, кьачыгьыз! – дейди.

– Нек кьачабыз, – деди эшекчилени бири.

Тюлкю:

– Сен эшек сюргенден башха абери ангылай болмазса. Кьочу – кьойча, тауукьчу – тауукьча кьачхан заманда, эшекчи – эшекча кьачаргьа эринир. Артдан ханны аскери табылынган жаныуарны кьырып келеди, кьачыгьыз, – деди.

– Жуукьдамыдыла? – деди эшекчи.

Тюлкю:

– Жете келедиле.

Эшекчи:

– Огьесе, кьошда бир эшек баш барды да, аны алып кьачайым, – деп кетди.

Кийеу жёнгерле жетдиле.

Тюлкю:

– Жёге-ханны эшек кьошуду бу, – деп, юйге кийирди. Эшеклени семизлерин айырып кесди. Кьонакьла, эшек эт, татлы кёрюнюп, кёп ашадыла. Танг атып, биягьы жолгьа чыкьдыла. Тюлкю, адетича, алгьа озду да кетди. Тюлкю, былай эте, он кьошха элтип сыйлады. Бек артында бир юйге тюбеди. Битеу кьошладан кьачхан адамла ары жыйылып.

Биягьы тюлкюню кёрюп чабышдыла. Тюлкю, эси аууп, жыгьылгьан кибик этди.

Адамла тургьузуп:

– Не болгьанды? – деп сордула.

Тюлкю:

– Ханны аскери адамлагьа айтып айланганымы билип, ёлюр от ашатхандыла. Мен а, ёлюр отха хорлатмай, сизге айтыргьа келдим.

Ала:

– Не зат этейик? – дейдиле.

– Бичен тишлеге киригиз, ала жетселе исси бола келликди, – дейди. Битеу адамла бичен тишлеге киредиле. Тюлкю, от салып, жандырады. От жетген сайын ала, аскер жетеди деп, арыдан-ары кире жандыла.



Киеу жёнгерле:

– Ой-ой! Жёге-ханны бичени жана турады, – деп кьайгы этдиле.
Тюлкю:

– Сиз аны ючюн жарсымагъыз, ма бу юйюдю, – деп, кьонакъланы сыйлап, артха ашырды. Кьонакъла ханнга, Жёге-ханны байлыгъын махтап, бардыла. Хан да кьууанды.

Тюлкю бир кюн сагъыш этип: «Энди мен мынга кьатын алдым, он беш жыл бакъдым, юй табып бердим, энди мен, ауруйма деп, жатайым, не зат этерик эсе да, – деп. «– Жашым, ауруйма», – деп жатады. Тюлкю, ашаса, ашдан тоя болмагъанды. Жатхан жерин кирден толтуруп, аны уа кьатыны жуууп болгъанды жашны.

Тюлкю бир жыл жатады. Жашны, ачыуу чыгып, тюлкюню эшикге атады.

Тюлкю:

– Ы-хы-ы, энди кёрейим сени жашауунгу, – деп, жол бла бара туруп, бир кьарт эмегенге тубейди. – Жол болсун, эмеген!

– Ой, сау бол! Кьайры бараса, тюлкю? – деп сорду эмеген.

– Да, былайда бир жаш барды да, аны ёлтюрюр амал тапмай айланама, – деп айтды тюлкю.

Эмеген:

– Къарыулумуду?

– Угъай, бош хыра кьаты, – деди.

– Да, мен кьалай барайым? – деди.

– Сен мени кьуйругъумдан тут, элтейим, – деди.

– Хайда, – деп, тебиредиле.

Жаш, аланы келе тургъанын кёрюп, юйге кирип кьатынына айтды.

«Сен кьоркъма, ала жетер заманда, хыршыда бичакъны ал да, билей-билей чыкъ: «Ой, тюлкюм, сау кьалгъын! Сау юч эмеген борчунг бар эди да, биринден кьутулгъанса. Бу а кьартда кьартды», – деп чыкъсанг, ол аны тап этер», – деди катыны.

Жаш кьатыны айтханлай этди. Эмеген кьоркъуп, тюлкюню кётюрюп, жерге уруп жайып, кьачды. Жаш ашап-жашап кьалды.

Этгенинги сагъынма да, этгенин сагъын.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 24 папка, 3 дефтер. Къачан, кьайда, кимден, ким жазгъаны белгисизди. Алай дефтерни аллында Отарланы С.А., аны институтха тюшген заманы (25.03.1960 ж.) белгиленипди, паспортун а Холаланы А.З. толтургъанды.

Архивден Гергьокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Жёге-хан» деген жомакъ юйретюу халда жазылгъанды. Бу жомакъны магъанасы не бла кьыйынды десенг, бир ненча кесекден кьуралады. Биринчи кесегинде жомакъны баш жигити жаш анасындан ёксюз кьалады эм атасы аны тилеги бла бир тул кьатынны алады, ол а аны кеслеринден узакъ этеди.

Экинчи кесегинде, атасы жашны агъачда кьойгъан жеринде, аны тюлкю табады. Ол аны кесине жаш этип, ёсдюреди, анга «Жёге-хан» деп ат береди, нек десенг, юс кийимлерин жёге кьабукъдан этеди. Артда тюлкю анга ханны кьызын алады, алай аны бла тюлкюню ахшы ишлери

бошаладыла. Олхалал, иги къарагъан эмчек анадан, Жёге-ханны ёлтюрюрге хазыр, хыйлачы, огъурсуз жанууар болады.

Бу жомакъда тюлюкю эки тюрлю халлы кёргюзтюледи. Билине эди, аны ол халал, иги болушлукъчудан, огъурсуз, зар жанууаргъа алышынырыгъы. Нек дегенде биринчиден окъуна тюлюкюню халында ол затла салынып эдиле. Алай жаши хыйла бла, ётюрюк бла аны хорлаялгъанды.

ЖЁГЕ-ХАН

Давным-давно жил-был один мужик с единственным сыном. В этом селе кроме них жила еще одна женщина тоже с сыном. Эта женщина, позвав сына этого мужика к себе домой, уговаривая женить его отца на ней, по-разному обманывала его.

А парень возвращался к отцу и повторял, чтобы он женился на этой женщине, а отец не соглашался, так они и жили. Эта женщина приглашала парня, и каждый день обманывала его.

Парень, плача, пошел к отцу, прося, чтобы он женился на ней.

Отец говорит:

– Сынок, если даже я на ней женюсь, она нас вместе не оставит.

Женщина приглашала парня, а парень рассказывал все, что говорил отец, этой женщине. Женщина обманывала парня, говоря: «Если ты женишь отца на мне, я за тобой буду так смотреть, так ухаживать».

Как бы то ни было мужик, исполнив просьбу парня, женился на женщине. Прожив некоторое время, женщина невзлюбила сына мужа. Однажды женщина, позвав своего мужа, говорит, чтобы он избавился от сына.

Мужчина со слезами на глазах говорит:

– Как я от него избавлюсь.

– Как хочешь, так и избавляйся. Если хочешь и сам уходи, – говорит.

Мужик говорит:

– Как я от него избавлюсь?

– Оседлай своего осла, скажи, что идете за дровами и поведи в лес, а возвращайся другой дорогой, – говорит.

Мужик:

– Тогда испеки хлеб, хоть есть будет, – говорит.

Жена испекла одну сковороду хлеба. Мужик отдал сыну хлеб и отшел в лес.

– Ты останься здесь, – сказав, сам вернулся обратно.

В то момент, когда парень ел хлеб и плакал, пришла одна лиса.

– Парень, а почему ты плачешь, – спросила.

Парень рассказал, что потерялся.

– Тогда пошли, я отведу тебя в свой дом, – сказав, отвела парня к себе в дом.

Лиса изготовила одежду для парня из коры липы и дала ему имя Жёге-хан.

Лиса растила парня пятнадцать лет. Однажды лиса говорит:

– Сынок, теперь я тебя женю. Здесь есть один правитель, на его дочери, – говорит.



Парень:

– Разве она сюда придет? – говорит.

Лиса:

– О! Ты за это не бойся. Я найду место, куда ее отвести, – говорит лиса.

Лиса:

– У хана перед домом течет большая река. Там вблизи к дому хана есть мост. Ты спрячься под этим мостом. Когда я пройду перед крыльцом хана, они, увидев меня, удивятся. Я им скажу: «Лучше бы вы перестали удивляться мне, а отдали бы за Жёге-хана свою дочь». Они побегут с криками: «Где он!» Ты к тому времени, как они прибегут, прыгнешь в воду. Когда твою одежду вода вынесет наверх, я буду плакать и прыгать вверх, крича, что вода уносит золотую одежду Жёге-хана. Тогда они тебе принесут и отдадут новую одежду, – сказав, лиса и парень отправились в путь.

Все произошло так, как сказала лиса. Парень спрятался под мостом. Лиса прошла перед дверью хана.

Правитель, увидев ее:

– О-о, лиса, – крикнул.

Лиса:

– Перестали бы мне удивляться, а лучше выдали бы дочь замуж за Жёге-хана, который стоит возле моста.

Они побежали с криками:

– Где, где?

К тому времени, когда они подбегали, парень прыгнул в воду. Когда липовую кору вода вынесла и стала нести, лиса стала подпрыгивать и плакать.

Хан спросил:

– Почему ты плачешь?

Лиса ответила:

– Золотую одежду Жёге-хана уносит река.

Хан сказал:

– Оставь, не плачь. Я дам одежду.

Парню принесли одежду и одели. Хан пообещал также отдать свою дочь. Пригласив тех, кто соединит их браком, отдал дочь за Жёге-хана. Хан проводил дочь с людьми, сопровождающими жениха.

(Они) шли-шли по дороге и лиса: «Вы пока идите, а я приготовлю дом для гостей», – сказав, отделилась от них.

Лиса шла-шла и когда проходила мимо одного коша овец, пастухи, увидев ее, забегали, крича:

– Лиса, лиса!

Лиса:

– Вы перестаньте мне удивляться, а лучше сохраните себе жизнь. Позади (меня) идет армия хана, не оставляя на небе птиц, на земле змей, всех перебивает. Пастухи все побежали вверх по дороге. Когда они убежали, лиса подготовила кошару.

Сопровождающие жениха дошли (до этого места).

Лиса:

– Вы не говорите, что Жёге-хан беден. Это его кош, вы даже край его богатств не видели. Идите и (по дороге) будете видеть, – сказав, посадила

гостей, зарезала столько овец, сколько смогла, сварив, угостила. На утро все отправились в путь.

Лиса:

– Вы пока идите, – сказав, побежала вперед.

Шла-шла и дошла до коша куриц.

Птичники, увидев лису:

– Э-э-эй! Лиса, лиса! – крича, побежали.

Лиса:

– Вы перестаньте мне удивляться, а лучше сохраните себе жизнь. Позади (меня) идет армия хана, не оставляя на небе птиц, на земле змей, всех перебивает.

Птичники и пастухи, собравшись вместе:

– Что делать? – говорят.

Лиса:

– Если хотите умереть, ложитесь и умрите, – говорит.

– Лучше умрем, убегая, – сказав, убежали.

Лиса пошла в кош, свернула головы двум курам и к приходу гостей съела.

Гости дошли.

Лиса:

– Вы не говорите, что Жёге-хан беден, вот это его куриный кош, – сказав, посадила гостей. Пока не устала, сворачивала курицам головы. Сварив (их), угостила (гостей).

Эту ночь, переночевав там, утром лиса опять ушла вперед. Шла-шла и дошла до ослиного коша. (Пастухи), увидев лису, опять побежали. Лиса обеими руками держась за сердце:

– Чуть не умерла, пока добежала до вас, – сказала.

Сбежавшие (пастухи) из куриного и овечьего кошев тоже были там. Лиса, посмотрев на них:

– Вы не рассказали им, о чем я вам говорила. Наверное, они уже близко, давайте, убегайте! – сказала.

– Почему убегаем? – сказал один из пастухов ослов.

Лиса:

– Ты, кроме того как пасти ослов, ничего не понимаешь. Когда чабан – как баран, птичник – как птица убегают, пусть пастух ослов – как осел убежать не ленится. Сзади (меня) армия хана идет, убивая всех найденных животных, убегайте, – сказала.

– Они близко? – спросил пастух ослов.

Лиса:

– Приближаются.

Пастух ослов:

– Тогда в коше есть один осел, я заберу его и так убегу, – сказав, ушел.

Сопровождающие жениха дошли.

Лиса:

– Это кош Жёге-хана, – сказав, провел в дом. Выбрав жирных ослов, зарезала. Гостям ослиное мясо показалось вкусным, поэтому много поели. Как только расцвело, отправились в путь. Лиса, как и полагалось, ушла вперед. Лиса вот также провела по десяти кошам и угостила (их). В самом



конце дошла до одного дома. А туда собрались все люди, убежавшие из всех кошев.

Увидев, опять лису прибежали. Лиса сделала вид, что упала, потеряв сознание.

Люди, подняв (ее) спросили:

– Что случилось?

Лиса:

– Армия хана, узнав о том, что я предупреждаю людей, смертельно отравили меня. А я, не дав себя побороть яду, пришла вас предупредить.

Они:

– Что нам делать, – сказали.

– Спрячьтесь в стогах сена, по тому, как они приближаются, будет становиться жарче, – сказала. Все люди спрятались в стогах сена. Лиса, развела огонь и подожгла. По тому, как приближался огонь, они думали, что армия приближается, прятались все глубже и глубже и сгорели. Сопровождающие жениха:

– Ой-ой! У Жёге-хана сено горит, – сказав, засуетились.

Лиса:

– Вы из-за этого не переживайте, вот это его дом, – сказав, угостила гостей и отправила обратно. Гости вернулись, похвалив хану богатство Жёге-хана. Хан очень обрадовался.

Однажды лиса подумала: «Теперь я его женила, пятнадцать лет растила, дом нашла и отдала, теперь лягу, притворившись больной, посмотрю, что будет делать, – сказав. – «Сын мой, я болею», – сказала лежа. Лиса, когда ела, не могла наесться. Она наполняла постель грязью, а это все стирала его (Жёге-хана) жена.

Лиса лежала в постели один год. Парень, разозлившись, выкинул лису на улицу.

Лиса:

– Ы-хы-ы, теперь посмотрю на твою жизнь, – сказав, шла по дороге и встретила старого великана. – В добрый путь, великан!

– Ой, спасибо! Куда идешь, лиса? – спросил великан.

– Да, вот здесь есть один парень, хожу и не могу найти способ его погубить, – сказала лиса.

Великан:

– Он сильный?

– Да нет, просто хило-крепкий, – сказала.

– А как я пойду? – сказал.

– Держи меня за хвост, поведу, – сказала.

– Давай, – сказав, собрались.

Парень, увидев, как они идут, зашел домой и рассказал жене.

– Ты не бойся, к тому времени как они придут, возьми брусок и нож, выйди, точка (нож): «Ой, лиса, дай тебе здоровья! У тебя был долг целых три великана, от одного избавилась. А этот старый-старый», – сказав, выйдешь, а он ему покажет, – сказала жена. Парень сделал, как сказала жена. Великан, испугавшись, поднял лису, ударив о землю, размазал. Парень остался жить-поживать.

Не вспоминай о том, что сам сделал, а вспомни о том, что сделали.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 24, тетрадь 3. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно. Однако на обложке тетради рукой С.А. Отарова отмечена дата приемки в архив института (25.03.1960 г.), а паспорт заполнен А.З. Холаевым.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка «Жёге-хан» поучительного характера. Сюжет данной сказки сложен тем, что состоит из двух частей. В первой части герой сказки, парень, остается сиротой и по его просьбе отец женится второй раз на вдове, которая потом от него избавляется. Вторая часть сказки, когда парня в лесу, где его оставил отец находит лиса. Она его усыновляет, растит, дает ему имя «Жёге-хан (Липовый король)», т.к. изготавливает ему одежду из липовой коры. Потом лиса его женит на дочери короля, и на этом хорошие деяния лисы прекращаются. Она из доброй, заботливой кормилицы предрращается в коварную, злостную хищницу, которая хочет уже погубить Жёге-хана.

В этой сказке лиса изображается с двойным характером. Того, что добрую и радушную помощницу сменяет злая, завистливая хищница, стоило ожидать, т.к. изначально в характере лисы это было заложено. Но парню хитростью и смекалкой удалось ее победить.



ТЕЛИ ЗОНДАР БЛА АМАЛЧЫ ТЮЛКЮ

Зондар деп эл таныгъан бир тели жаш болгъанды. Аны жашагъан эли бир уллу къалын агъачны этегинде эди. Зондар, ол агъачха кетип, азыкь орунуна кырдык, къурт-къумурсха ашап жюрюгенди.

Ол агъачда уа жангызлыкъдан жалкъып тургъан бир тюлкю жашап болгъанды. Кеси да бу тели Зондарны хар этген ишин уста биле эди. Тюлкю, Зондар бла шуёх болургъа суююп, алай а базмай, бир ауукъ заман ашырады. Бир жол а, таукел этип, Зондаргъа келди да:

– Ой Зондар къоншум, кюнюнг ахшы болсун! – деди.

– Да, ким эсенг да, сау бол! – деп мушулдады Зондар.

– Ой, мени багъалы къоншум Зондар! Мен санга къалын агъачны къыдырып келгенме. Бу агъачны иеси экибизбиз. Экибиз да бир къош болуп жашасакъ, табыракъ болмазмы эди? – деди тюлкю.

Зондар, муш-муш эте:

– Да, болайыкъ дей эсенг, болайыкъ, къалайыкъ дей эсенг да, къалайыкъ, – деди.

– Биз экибиз бир болсакъ, тюлкю бла Зондарлай деп, сау дуниягъа айтдырыбыз! – деп кукаланды тюлкю дагъыда.

– Да ким угъай дейди, айтдырыбыз десенг, айтдырайыкъ, айтдырмабыз десенг да, къояйыкъ, – деп, Зондар сылхырына сёлешип турду.

– Зондар! Алай эсе, энди мен, ызыма къайтмай, сени бла къалайым! – деди тюлкю.

– Къалайым десенг, къал! Угъай десенг да, хо, угъай, – деди биягъы сылхыр.

Тюлкю Зондар бла бир къош болду. Хар бири, айланып, тапханын кеси ашап турушдула.

Бир кюн а тюлкю бу телиге:

– Зондар! Экибизни да ашауубуз, жашауубуз бек осалды. Агъач башында бир къой къош барды да, биз ары барыргъа керекбиз, – деп къадалды.

Зондар, асыры эрингенден эсней-эсней:

– Да, барайыкъ дей эсенг, барайыкъ, бармайыкъ десенг да, къояйыкъ, – деди.

– Угъай, барыргъа керекбиз! – деп, тюлкю бютюнда къаты болду. Сора Зондаргъа: – Биз къойлагъа жете тебирегенлей, мен сюрюучюню туурасында жыгъылып тыпырдарма, ол манга чабар, мен тёнгереп къачарма, алай эте, къол боюнуна энербиз. Сен а къойланы бир бёлегин бёлюрсе да, сюрюрсе. Сора мен да туруп къачарма да, сени ызынгдан жетерме, – деп юйретди.

Экиси да тебиредиле. Къойла къатына жете баргъанлай, тюлкю, Зондарны букъдуруп, кеси уа, сюрюучюню туурасына чыгып, ёле тургъан маталлы этип, тыпырдап башлады.

Сюрюучю таягъын сермеп чабады. Тюлкю тёшден тёнгерей, сюрюучю да аны къууа, къол аягъына эндиле.

Ол заманда тели Зондар, кюреше кетип, къойланы бир бёлегин бёлдю да, сюрюп, агъач ичине кирди. Тюлкю да, секирип туруп, къачханлай, Зондарны ызындан жетди.

Экиси да къойланы бир дорбуннга урдула, сора эрлай барын да союп, терилерин алдыла. Тюлкю, къадалып, къойланы этлерин дорбунну



къабыргъаларына жаяды. Жюнлеринден жыртып, халыла этеди. Терилерин ийне орунуна тырнакълары бла тешип, жюнден эшген халылары бла тигип, Зондарны кийиндиреди.

Энди тели Зондар сууукъдан ёлмезча болду. Алай, тели Зондарны несин айтаса, бети къап-къара кир, къоллары, аякълары тыкыр, бурун сууу да тохтамай келгенлей турады.

Ол халда экиси да бир талай заманны кечиндиле. Жашаулары уа алгъа бармады. Этлерин да къабып бошадыла. Тюлкую тели Зондарны акъыллы къайдан эталсын: юйретеди, кюрешеди, – болмайды. Ахырында, кёп ойлаша келип, тюлкую Зондаргъа:

– Багъалы нёгерим! Кел, санга ханны къызын алайыкъ, сиз зауукълу жашарсыз, мен да, къарт болгъунчу, сизни жашауугъузгъа болушурма, – деди.

– Да, алайыкъ дей эсенг, алайыкъ, къояйыкъ десенг да, къояйыкъ, – деп, Зондар биягъы айтычусун айтды.

Экинчи кюн тюлкую, юсюн-башын да сыйпап, сымарланып, ханнга тебиреди. Аллына барып, бир эрттеден шуёхублача жарыкъ саламлашып, ханнга:

– Эй, сыйы, къадары, даражасы да бийик болгъан жюйюсхан! Мен сени къызынг Жансуратха келечиге келгенме. Анга тийишли Зондар деп бир жаш барды, адамлыкъ, жигитлик бла да аллына киши ёталмагъан бир жаш. «Хан айтмаз, айтса къайтмаз» дегенлей, мен сени хурметли сёзюнгю эшיתיим деп келгенме, – деди.

– Да, сени ариу сёзлеринги къуру къайтармаз ючюн окъуна, угъай дерге жарамаз. Келсин, къарайыкъ, кёрейик, адамлыгъын, жигитлигин сынайыкъ, сора ишни анга кёре этербиз, – деди хан.

Тюлкую, къайтып келип, Зондарны юсюне тери кийимлерин къаплатды. Сора бир уллу зылдыны да кётюртюп, экиси да ханнга тебиредиле.

Тели Зондар да ол зылдыны сыртына кётюргенлей, эл къыйырында уллу сууну кёпюрюне жетедиле. Алайда тюлкую Зондаргъа:

– Шуёхум, энди сен зылдыны, ёрге кётюрюп, кючюнг бла суугъа ташла! – деди.

Зондар тюлкую айтханча этгенлей, зылды, сууну, толкъунлатып, жагъасындан чыгъарды. Суу тёгюлюп, элни ичине жайылады. Халкъ аны кёргенде, гузабаланып, къуугъуннга чабадыла. Ол кезиуде тюлкую Зондарны къымыжа этип, кёпюр тюбюнде букъдуруп, кеси уа ханнга къууулду.

– Эй, къудурети уллу болгъан хан! Сыртында адам чыдамагъан, Зондарны аллай бир огъурсуз аты бар эди. Келе тургъанлай, юркюп, кёпюрден суугъа секиргенди да, сууну тюбюне бата, башына къалкъый, экиси да бир чакъырым баргъандыла. Ахырында атны суу элтип, Зондар да кийимсиз къалгъанды. Энди анга бир кийимле беригиз деп келгенме, – деди.

Зондар, тели болгъанлыкъгъа, ариу кийинсе уа, чагъыдий санлы жаш эди.

Тюлкую, хандан кийимле келтирип, Зондарны кийиндиреди да, экиси да ханны къаласына киредиле.

Хан, туруп, Зондар бла саламлашады. Аны чий тели болгъанын хан къайдан биллик эди?!



Тюлкю уа, энди бу сылхыр бир тапсыз зат этеди да, кьан жаудурады деп, кьара дьгаласдады.

Хан, тамаша сый этип, халкьны жыйды. Зондарны да кьызла, жашла олтургьан мияла юйге элтдиле. Тюрлю-тюрлю ашарыкьла, ичерикле келдиле. Ауузланып, ичип башладыла. Тюлкю уа башха юйде хан бла олтурады. Алай шуёхуна асыры тынгысыздан, сагьайыпды.

Энди тели Зондарны юйюне ёлю кирди. Кьызланы, жашланы да алларында кьангадан жан сюекни алып, кьолтукь тюбюне сукьду. Ол заманда жаш-кьуш жыйындан чыкьгьан кьуш-мушла тюлкюню кьулагьына чалындыла. Олсагьатдан тюлкю, Зондар олтургьан жыйыннга ашыгьышлы кирип:

– Эй, сыйлы кьанганы сыйлылары! Сиз айып-гурушха этмегиз, Зондар, мени юлюшюмю асырамай, аш ашаргьа не аз да амалы жокьду, – деп, Зондарны кьолтугьундан жан сюекни алып ашады да, тели шуёхуну айыбын жулду.

Жыйын да анга ийнанды. Ызы бла амалчы тюлкю кьайтып келди да, ханны аллында жойкьулланып, кукаланып:

– Энди кьурманынг болайым, жюйюсхан! Мени келечилигими сени сыйлы сёзюнг кьууанч бла кийиндирди. Биз энди, ызыбызгьа кьайта, дагьыда бери келе айланмайыкь. Мен бу элде киеу нёгерле жыйым да, Жансурат бийчени ала кетейик, – дегенде, хан угьай демеди.

Тюлкю, эрлай киеу нёгерле жыйып, келинни алып кетдиле.

Жолну эки тенг этгенлеринде, тюлкю, киеу нёгерлени тохтатып:

– Аха, жигитле! Кьонакь хазыр болса да, кьонакьбай хазыр болмаз, сиз келе келигиз, мен, алгьа барып, юйню жарашдырайым, – деп, кетди.

Тюлкю, кьууула, жорта барып, эмегенлени мияла кьалаларына жетди.

– Ы-ый, аман эмегенле! Тауну, ташны жандырып, кёп аскер келеди, кьачыгьыз да, ол салам тишни тюбюнде бугьугьуз! – деди.

Эмегенле, кьачып, тау тюбюнде салам тишни тюбюне кьысылдыла. Ала да алай букьгьанлай, тюлкю, сирнек тартып, ол салам тишни кьабындырды. Салам тиш а жанмаймы кьаллыкь эди?! Болгьанны от алады. Эмегенле, ол тюлкю айтхан аскер жетген сунуп, ахлары кетип, кьайтмаз жары кьачдыла.

Киеу нёгерле да, келинни алып, эмегенлени мияла кьалаларына тюшдюле. Той-оюн бошалгьандан сора уа, танг ата, юйлерине жайылдыла.

«Обур кетди да, орун кьалды» дегенлей, Зондар, Жансурат, тюлкю да эмеген кьалалада жашай турадыла. Жансурат да тели Зондарны ишге, сёзге, акьылгьа да бир кесек юйретеди. Аны энди алгьыннгы Зондарды деп танырыкь да туююлсе. Алай а «Аман адамны айнытсанг, эрининги-бурунунгу кьан этер» деген сёз тели Зондарны юсюнде да кёрюндю.

Тюлкю кьартайды. Ариулугьу, тирилиги да тюрленди. Ишге асыусуз болду, жылтырауукь туюю юйюкдю, жабагьыланды, кёзлери хымил эте башладыла. Сууукьгьа, жылыгьа да тёзюмсюз болду.

Жай чиллени бир кьызыу кюнюнде тюлкю босагьа юсюнде сериуюнде жатып, ачылгьан ауузчугьундан тилчиги да салынып, шытылары агьа тургьанлай, Зондар, юсюне келип:

– Иррр, аман ёллюк, эриши зат, болгьанны жийиргенчли эте!.. Думп бол мындан! Кьуру! – деп кьыстады.

Ол сѣз тюлкюге бек кыйын тийди, ёпкеледи. «Ай, маржама, мен да санга аны жетдирмесем!» – деп, эмегенлеге тебиреди.

Эмегенлени биринден кьалгъанлары кырылып, ол да ашаргъа жукъ тапмай тургъанлай, юсюне барып:

– Ай, зауаллы дуня тулпары, санга бу аман кюн нек келгенди? Андан эсе уа ёлген да иги эди. Сизни кьалагъызда Зондар деп бир тели жашайды, аны ёлтюр да, кьалангда кесинг жаша! – деди.

Эмеген барыргъа кьоркъду. Ол заманда тюлкю аны кёллендирип, бир узун гырмыкны боюнуна чулгъап, алып келди. Аланы кёргенде, Зондарны ахы кетди. Алай а гула эмеген ол затны сезалмады.

Зондар, гузабагъа кьалып:

– Ай, аман тюлкю уа, ол манга айтычу эмегенинг буму эди? – деп, кьоркъуп кычырды.

Эмеген: «Тюлкю мени Зондаргъа ёлтюртюрге алып келеди!» – деп, олсагъатдан тюлкюню буууп, жуммакъ этип, кьачып кетди.

Тели Зондар а Жансурат бла жашап кьалды, алай ахырларыны не болгъаны бюгюн да белгили тьойюлдо.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 290–293 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Тели Зондар бла амалчы тюлкю» деген жомакъда бир тели адамны юсюнден айтылады. Алай аны устазы, бир юйретир адамы болса, ол тюзелип кетерик эди. Бу жомакъда анга устазлыкъ тюлкю этеди – хыйлачы, акъыллы, эсли жанууар.

Мында нарт эпосдан алынган эмегенлени сыфатлары да бардыла.

ТУПОЙ ЗОНДАР И НАХОДЧИВАЯ ЛИСА

В одном селе жил один тупой парень по имени Зондар. Он жил в селе, находившемся на краю большого, густого леса. Зондар ушел в тот лес и вместо пищи ел траву, червей, насекомых.

А в том лесу жила лиса, которая от одиночества изнывала. И она очень хорошо знала про все проделки тупого Зондара. Лиса, сильно хотела потрудиться с Зондаром, однако, не надеясь на дружбу, она проводила некоторое время. А однажды, она пришла к Зондару уверенно:

– Ой, Зондар, сосед мой, пусть день ваш будет добрым! – сказала она.

– Да, кто бы ты ни был, будь здоров! – пробурчал Зондар.

– Ой, дорогой мой сосед Зондар! Я пришла к тебе, пробираясь через густой лес, хозяевами этого густого леса будем мы вдвоем. Если мы будем жить вдвоем, создав один кош*, было бы лучше, наверное? – сказала лиса.

Зондар бормоча:

– Да, если будем, говоришь, будем, если говоришь вместе, давай вместе, – сказал он.

– Если мы будем вместе, как лиса с Зондаром, будут говорить на весь мир! – сказала лиса, ухмылялась, играясь.

* Кош – стойбище.



– Да кто говорит нет, если будут говорить, если не будем, говоришь, то оставим, – сказал Зондар разговаривая тупо и невпопад.

– Зондар! Если так, я теперь не буду возвращаться обратно, останусь с тобой! – сказала лиса.

– Оставаться говоришь, оставайся! Если и нет скажешь, да, нет, – сказал тот же тупица.

Лиса с Зондаром создали единый кош. Каждый из них отправляясь куда-нибудь, если что находил, ел сам.

В один день лиса этой тупице:

– Зондар! У нас жизнь и питание у обоих хуже некуда. На вершине леса находится одна кошара, мы обязательно должны туда сходить, – настаивала она.

Зондар от большой лени, несколько раз зевая:

– Да, если надо идти, говоришь, пойдем, если не надо идти, скажешь, оставим, – произнес он.

– Нет, мы должны сходить! – сказала лиса с еще большим упорством. Потом Зондару: – Когда мы начнем приближаться к овцам, я упаду перед взором чабана и буду дергаться, он прибежит ко мне, я же, кувыркнувшись, убегу, делая так, мы спустимся к ложине. А ты из отары часть отделишь и погонишь. Потом я тоже встану и убегу, и догоню следом тебя, – научил он.

Они вдвоем отправились в дорогу. Когда начали приближаться к овцам, лиса спрятала Зондара, а сама, встала на виду у чабана, и притворилась, словно умирает и начала дергаться.

Чабан, взяв палку, побежал. Лиса скатываясь с горки, и чабан, гоняясь за ней, спустились и оказались на краю ложины.

В это время тупой Зондар, сильно стараясь, отделив часть овец из отары, погнался и зашел в лес. И лиса, вспрыгнув, встала, и убежала и догнала следом Зондара.

Они вдвоем загнали овец в одну пещеру, и тут же всех зарезали и сняли с них шкуры. Лиса, с большим усердием, мясо овец стелет на стены пещеры. Сорвав их шерсть, делает нити. Продырявливая шкуры когтями, вместо иглы, зашив их нитками, которые он изготовил из шерсти, одел Зондара.

Теперь тупица Зондар стал таким, что от холода не умрет. Но, что можно говорить о тупице Зондаре, лицо из-за грязи, черное, руки, ноги облезлые и из носа, не переставая, текут сопля.

В таком положении они прожили вдвоем некоторое время. А жизнь вперед не двигается. И мясо уже полностью съели. Лиса, как может тупицу Зондара образумить: учит, старается, – но никак. В конце, много раз обдумывая, лиса Зондару:

– Дорогой друг! Давай, тебе возьмем в жены дочь хана*, вы заживете счастливо, и я, пока не стала старой, буду помогать вашей жизни, – сказала.

– Да, если говоришь, возьмем, возьмем, если оставим, скажешь, оставим, – сказал Зондар, что-то бормоча, как раньше.

На второй день лиса, с ног до головы принарядилась, приукрасилась, отправилась к хану. Встала перед ним и, как с давнишним другом, весело поздоровавшись, хану:

– Эй, господин, у кого и честь, и судьба, и почет высокий! Я пришел сватать твою дочь Жансурат. Есть молодой человек Зондар достойный ее

* Хан – владыка, глава.

руки, по смелости, по человечности никто его еще не опередил. «Хан не скажет, если скажет, обратно не передумает» – говорят, поэтому я пришла, чтобы услышать твое благословенное слово, – сказала она.

– Да, твои красивые слова, чтобы обратно не отправлять пустыми, нельзя сказать нет. Пускай придет, посмотрим, поглядим, воспитание, силу испытаем, потом дело сделаем, исходя из этого, – сказал хан.

Лиса, вернувшись обратно, заставила на себя накинуть одежду из кожи. После этого дала ему нести огромный дерн, они вдвоем отправились в хану.

Тупица Зондар, неся на спине огромный дерн, на окраине села дошли до моста у большой реки. Там лиса Зондару:

– Друг мой, теперь ты дерн, подними наверх, и с силой опусти на воду! – сказала она.

Когда Зондар сделал, как сказала лиса, дерн, поднял волны в реке и она вышла из берегов. Вода, поднимаясь, распространилась по всему селу. Народ, увидев такое, испугался и начал звать на помощь. В это время лиса раздела Зондара догола, спрятала его под мостом, а сама поторопилась к хану.

– Эй, в своем благодушии великий хан! У Зондара был конь с тяжелым характером, что на его спине никто не мог удержаться. Когда мы сюда шли, он фыркнув, спрыгнул с моста, то утопая на дно, то появляясь наверху, они вдвоем плыли на расстоянии в один зов. В конце вода унесла коня, и Зондар остался без одежды. Теперь я сюда пришел, чтобы вы мне дали одежду, – сказала она.

Зондар, хотя был тупицей, когда одевался красиво, оказывался статным юношей.

Лиса, заставила принести от хана одежду, одела Зондара и они вдвоем заходят во дворец хану.

Хан, встал и поздоровался с Зондаром. Откуда мог догадаться хан, что он настоящий тупица?!

А лиса, переживая, что эта тупица что-нибудь натворит и на голову обрушит горе, сильно переживает.

Хан, оказал им удивительные почести, собрал много народа. И Зондара отвели в стеклянный дом, где сидели девушки, юноши. Туда им принесли различные яства. Они все начали есть, пить. А лиса сидела с ханом в другом доме. Однако, она так переживала из-за друга, что не находила себе места.

Теперь тупице Зондару несчастье упало на голову. На столе перед девушками и юношами лежала лопатка, он взял ее, засунул себе подмышку. В это время различные разговоры, шепоты, исходящие из молодежной среды дошли до слуха лисы. И лиса тут же поторопилась, в компанию, где сидел Зондар:

– Эй, благочестивые этого чудесного стола! Вы не браните, не осуждайте Зондара, он всегда, пока мою долю не припрячет, ни за что не станет угощаться, – сказала и вытащила из подмышки Зондара баранью лопатку и откусила, этим она тупицу друга от позора спасла.

И вся толпа этому поверила. Потом всемогущая лиса, вернувшись обратно, начала перед ханом вилять хвостом и играть:

– Да, буду твоей я жертвой, дорогой мой господин! Мой приход к вам как свата, твои светлые слова облачили радостью. Теперь мы, возвращаясь



обратно, не станем опять к вам заглядывать. Я в этом селе соберу дружков для зятя и мы заберем княжну Жансурат с собой, – когда она сказала, хан не сказал нет.

Лиса, быстро собрала дружков для зятя и они сразу забрали невесту с собой.

Когда они проехали ровно половину дороги, лиса остановила дружков зятя:

– А-а, герои! «Когда гость готов, гостеприимец не готов», говорят, вы продолжайте ехать, а я, пойду вперед, и дома все приготовлю, – сказала она и поторопилась вперед.

Лиса, бегом, торопясь, шла и дошла до стеклянного дворца эмегенов*.

– Ы-ый, негодные эмегены! Сжигая горы, камни, движется большое войско, убегайте, и спрячьтесь под копном соломы! – сказала она.

Эмегены, убегая, спрятались под копну из соломы под горой. Как только они туда спрятались лиса, чиркнув спичкой, поджег копну из соломы. А копна из соломы разве могла не загореться?! Кругом все было охвачено огнем. Эмегены, подумав, что войско, о котором говорила лиса приблизилась, чуть не потеряв сознание, убежали туда, откуда не возвращаются.

И дружки зятя, сопровождая невесту, попали в стеклянный дворец эмегенов. После свадьбы, веселья, под утро, они начали расходиться по домам.

Как говорят, «обур** ушел, место осталось», Зондар, Жансурат, лиса начали жить во дворцах у эмегенов. И Жансурат тупицу Зондар начинает понемногу учить труду, речи, уму. Теперь в нем и не узнаешь прежнего Зондара. Однако, «Если плохого человека накормишь, губу-нос окровавит» есть изречение, нашло подтверждение и на тупице Зондаре.

Лиса постарела. Ее красота, деловитость тоже изменились. За работу бралась с неохотой, блестящие волосинки шкуры свернулись, скомкались, глаза начали покрываться жидкостью. И к холоду, и к жаре он стал не терпеливой.

В знойный летний день лиса лежала в тени, у порога дома, и с раскрытого маленького ротика свисал язычок, истекая слюнями, Зондар застал ее в таком состоянии:

– Ирр-р, чтобы ты пропала пропадом, некрасивое создание, от тебя кругом веет мерзостью!.. Исчезни отсюда! Сгинь! – сказал и прогнал.

Эти слова сильно оскорбили и она обиделась. «Ага, я так постараюсь, чтобы тебе отомстить!» – сказала она, и направилась в сторону эмегенов.

Кроме одного эмегена все были мертвые, и тот не знал, что поесть, она подошла к нему:

– Ай, многострадальный великан мира, из-за чего тебя настиг такой несчастный день? Чем находиться в таком состоянии, лучше было бы умереть. В вашем дворце живет один тупица по имени Зондар, убей его, и живи в своем дворце сам! – сказала она.

Эмеген побоялся идти. Тогда, лиса его взбудрила, и набросив на его шею гырмык***, она его привела туда. Когда их увидел Зондар, чуть было не испустил дух. Однако недалекий эмеген этого не заметил.

* Эмегены – чудовища.

** Обур – ведьма.

*** Гырмык – перевязло.

Зондар, поторапливаясь:

– Ай, хитрая лиса, то, что мне рассказывала про эмегена, это он? – сказал и от испугу закричал.

Эмеген подумав, что Лиса его привела к Зондару, чтобы убить его, тут же задушил лису, превратив в лепешку и сбежал.

Тупица Зондар с Жансурат остались жить, но, чем все это закончилось, по сей день не известно.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 290–293) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка представляет собой историю про дурака, который при наличии достойного учителя или поводыря может достичь выдающихся результатов. Учителем в данной сказке выступает лиса – хитрое, умное, мудрое животное. В сказке фигурируют и перешедшие из нартского эпоса образы эмегенов.



БУГЪА ТАНАЧЫКЪ

Эртте-эртте бугъа таначыкъ, къочхарчыкъ, текечик къош болгъандыла.

Бёрю, айыу, тюлкю да бир къош болгъандыла. Ала бир бирлеринден узакъ болмай жашагъандыла.

Бир кюн айыулары азыклары тауусулуп, амалсыз болгъанлай, айыу тюлкючюкню: «Бугъалагъа бар да, ушхуурлукъ тилей кел», – деп жибергенди. Бир заманда тюлкючюк, бугъалагъа келип:

– Айыу жибергенди, бир ушхуурлукъ беригиз, – дегенди. Бугъа таначыкъ къочхаргъа:

– Бер мынга бир ушхуурлукъ, – дейди.

– Не берейим? – деп сорады къочхар.

– Бериб’а не берликсе, ол мен ёлтюрген тюлкюню башын бер, сен ёлтюрген тюлкюню бир бутун, текечик ёлтюрген тюлкюню да бир къабыргъасын бер да барма къой, – дегенди.

Сора тюлкю соргъанды:

– Сиз тюлкю этдамы ашайсыз?

– Аллах берги эди сени кирик семиз тюлкюню, айхай ашайбыз, – деди.

Ай, алайлай, тюлкючюк эшикге мыллыгын атды да, къачды да кетди.

Тюлкю келип, болгъан ишни айыугъа хапарлады. Айыу бёрюге:

– Ай, маржа, бёрю, сен барчы, бу аман къоркъакъ жукъ келтирмегенди, – деди.

Бёрю, барып:

– Ушхуурлукъ деп келгенме, – дегенди.

Биягъы къочхарчыкъгъа:

– Бер мынга бир жукъ, – деди бугъа.

– Не берликме?

– Бериб а, не берликсе, ол мен ёлтюрген бёрюден бир жапхагъын, сен ёлтюрген бёрюден да аркъа узун, текечик ёлтюрген бёрюден да ичин-мичин бер да, барма къой, – деди.

Бёрю къоркъуп:

– Тобасто, бёрю этдамы ашайсыз?

– Аллах берге эди сенлай семиз бёрюню. Ашайбыз!

Бёрю да тюлкючюкча къачды да кетди. Сора болмагъанында, айыу кеси келип:

– Маржа, бугъа, сабийни жумушха жибер да, ызындан къара, деп болдукъ. Бир ушхуурлукъ беригиз, – деп тиледи.

Биягъы къочхарчыкъ:

– Не берейик, – деп сорду.

– Бериб а, не берликсе. Ол мен ёлтюрген айыуну башын-аягъын бер, сен ёлтюрген айыуну да бир узунун, текечик ёлтюргенден да бир хант бер да барма къой, – деди бугъа.

– Асто, сиз айыу этдамы ашайсыз?

– Аллах берге эди сенлай семизни, ашайбыз. Айыу да нёгерлерича къачды да кетди.

Алайда бугъа таначыкъ:

– Энди былайдан кетмесек, была бизни ашарыкъдыла, – дейди.

Ючюсю да къача барып бир таш башында къош болдула.

Айыулары да аладан кьача барып, билмей бугъачыкълары болгъан ташны тубюнде кьош болуп тохтадыла. Бугъалары аланы кёрюп, не этерге билмей тургъанлай, кьочхарчыкь:

– Сиеригим келеди, – дейди

– Къарнынгы ёрге бур да, жюнюнге сий, – деди бугъа.

Алай этеме деп, кьочхарчыкь, ташдан жыгъылып кетип, барып айыулары тюз орталарына тюшдю.

Олсагъат бугъа кычырды:

– Эй, маржа! Таматаны тут, таматаны тут! – деп.

Андан кьоркьуп жаныуарла кьачдыла. Бугъалары уа отларгъа Жангёрюш деген жайлыкьгъа кетдиле.

Кюз артында сууукъ болуп башлагъанлай, бугъалары, семирп, юйлерине тебиредиле. Текечик алгъа тебиреди.

Ол секирип келе-келгенлей, аллына бёрю тубеп:

– Къайдан келесе, текечик, – деп сорду.

– Жангёрюшден келеме.

– Нек баргъаненг?

– Ашаргъа, ичерге, семиррге.

– Нек келесе да?

– Семиргенден этим териме сыйынмай.

– Ол башындагъы уа не затларындагыла?

– Мюйюзчюклерим.

– Алай а нек къалтырайса?

– Сенден асыры кьоркьгъандан.

Сора бёрю аны «хам» деди да, къапды да кьойду.

Аны ызындан кьочхарчыкь тебиреди. Аны аллына да уллу бёрю тубеди.

– Къайдан келесе, кьочхарчыкь, – деп сорду.

– Жангёрюшден келеме.

– Нек баргъаненг?

– Ашаргъа, ичерге, семиррге.

– Нек келесе да?

– Семиргенден этим териме сыйынмай.

– Ол башындагъы уа не затларындагыла?

– Мюйюзчюклерим.

– Алай а нек къалтырайса

– Сенден асыры кьоркьгъандан.

Сора бёрю аны «хам» деди да, къапды да кьойду.

Аны ызы бла бугъа, мюйюзлери бла жер къаздыра, гюрюлдеп келе эди.

Ол бёрюню кёрюп:

– Жол болсун, бёрю!

– Сау бол! Жууукъ бол, – деп, бёрю кьоркьаракъ селешди.

– Къайдан келесе, бугъа?

– Жангёрюшден.

– Нек баргъаненг?

– Ашаргъа, ичерге, семиррге! – деп кычырды.

– Нек келесе?

– Этим териме сыйынмай.

– Ол башындагыла уа недиле?

– Темир ылытхынларым, сени ичинге уругъа.



- Тюбюндегиле уа недиле?
- Темир токъмакъла. Сени башынга уруп тешерге.
- Къалтырагъан а нек этесе?
- Сени ичинги уруп жаяргъа асыры тартылгъандан. Сора бёрю къачып, бугъа къуууп, бёрюню тогъуз таудан аудурду. Кёзлеринден къан жилиямукъла жаудурду.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 45 папка, 7 паспорт. Бёзюланы А.Ю. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъланы баи жигитлери бугъачыкъ, къочхарчыкъ эм текечикдиле, аллай бирге дери ала бир бирлери бла шуёх эдиле, быланы бир киши да хорлаялмагъанды. Битеу хар ким да быладан къоркъгъан эте эдиле. Бу юч шуёх Жангёрюш сыртда кютюп болгъандыла, хар тойгъан, бирем тюшгенди. Эки шуёхну бёрю ашайды, ючюнчю бугъачыкъ а жыртхыч жаныуарны къокъутуп хорлайды.

Бу жомакъ шуёхлукъну, къарындашлыкъны юсюнденди. Айтылгъан жомакъны баиша вариантлары да бардыла. Аланы баи жигитлери баиша юй жаныуарладыла, магъанасы бирге келишеди.

БЫЧОК

Давным-давно бычок, барашек, козлик жили вместе. Волк, медведь и лиса тоже жили вместе. Они все жили недалеко друг от друга.

Однажды у медведя с друзьями закончилась еда, настолько обиссилели, что вынужденно, медведь отправил лисичку, сказав:

– Сходи к бычку, попроси что-нибудь на ужин.

Через некоторое время лисичка, придя к бычку, сказала:

– Медведь послал, дайте что-нибудь на ужин.

Бычок сказал барану:

– Дай ей что-нибудь на ужин.

– Что дать? – спросил баран.

– Отдать да, что отдадим: отдай голову той лисы, которую я убил, ногу той лисы, которую ты убил, и одно ребро той лисы, которую убил козлик, отдай и пусть идет, – сказал.

Тогда лиса спросила:

– Вы что и лисье мясо едите?

– Дай Аллах нам такую жирную лису как ты, еще как едим, – сказал.

Тут же лиса бросилась на улицу и убежала прочь.

Лиса пришла и рассказа все, как было медведю.

Медведь говорит волку:

– Ай, пожалуйста, волк, иди ты, эта плохая трусиха ничего не принесла.

Волк пошел и говорит:

– Пришел, чтобы взять что-нибудь на ужин.

Опять барашку:

– Отдай ему что-нибудь, – сказал бычок.

– Что отдать?

– Отдать-да, что отдашь: лопатку того волка, которого я убил, от того волка, которого ты убил полосу ребер, а от волка, которого убил козленок потроха, и пусть идет, – сказал бык.

Волк, испугавшись:

– О боже, вы что мясо волка едите?

– Дал бы Аллах такого жирного волка как ты. Едим.

Волк также как и лисичка сбежал прочь.

Тогда, когда ничего не получилось, медведь пришел сам и попросил:

– Пожалуйста, бык, как говорится, пошли ребенка по делу и смотри за ним, так и получилось. Дайте что-нибудь на ужин.

Опять барашек спросил:

– Что дать?

– Отдать-то, что отдашь. Отдай голову и лапы того медведя, которого я убил, от того медведя, которого ты убил одну полосу ребер, и от медведя, которого убил козленок, чтобы хватило один раз поесть, отдай, и пусть идет, – сказал бык.

– Неужели, вы и медвежье мясо едите?

– Пусть даст Аллах такого жирного медведя как ты, едим.

Медведь тоже, как и его друзья, сбежал прочь.

Тут бычок сказал:

– Если теперь мы отсюда не уйдем, они нас съедят. Все трое, убегая, остановились на вершине одного камня.

Медведь с друзьями тоже, убегая, не зная об этом, остановились под тем камнем, где были бычок с друзьями.

Бычок и друзья, увидев их, не знали что делать, и барашек говорит:

– Мне надо по нужде.

– Поверни живот вверх и сделай себе на шерсть, – сказал бык.

Барашек хотел сделать так, но упал с камня, и свалился прямо в круг между друзьями медведя.

Тут же бык крикнул:

– Эй, маржа! Лови старшего, лови старшего! – сказав. Тут, испугавшись, звери разбежались. А бык с друзьями ушли пастись на поляну Жангёрюш.

Осенью, когда похолодало, бык с друзьями собрались домой. Козлик пошел вперед.

Он, прыгая, шел-шел, когда впереди встретился волк:

– Откуда идешь, козлик? – спросил.

– Из Жангерюша иду.

– Зачем туда ходил?

– Поесть, попить, потолстеть.

– Зачем тогда возвращаешься?

– Потолстел так, что мясо не помещается в шкуру.

– А это что у тебя на голове?

– Рожки.

– А почему так дрожишь?

– От того, что очень тебя боюсь.

Тогда волк «хам» и съел его.

За ним следом отправился барашек. Он тоже встретился с большим волком.



- Откуда идешь, барашек? – спросил.
- Из Жангёрюша иду.
- Зачем туда ходил?
- Поесть, попить, потолстеть.
- Зачем тогда возвращаешься?
- Потолстел так, что мясо не помещается в шкуру.
- А это что у тебя на голове?
- Рожки.
- А почему так дрожишь?
- От того, что очень тебя боюсь.

Тогда волк «хам» и съел его.

За ним шел бык, шумя, рыл рогами землю.

Он, увидев волка:

- В добрый путь, волк!
- Спасибо! Добро пожаловать, – сказал волк, испугавшись.
- Откуда идешь, бык?
- Из Жангёрюша.
- Зачем ходил?
- Поесть, попить, потолстеть! – крикнул.
- Зачем тогда возвращаешься?
- Потолстел, что мясо не помещается в шкуру.
- А это что у тебя на голове?
- Железные ломы, чтобы вонзить в тебя.
- А что у тебя внизу?
- Железные шары. Чтобы ударить и разбить тебе голову.
- А почему дрожишь?
- От того, что спешу ударить и выбить тебе внутренности.

Потом волк убежал, а бык вдогонку погнал его за девять холмов. Из глаз кровавые слезы пролил.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 7. Записал А.Ю. Бозиев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Главными персонажами данной сказки являются бычок, барашек и козленок, которые дружны между собой настолько, что ни кто не мог их победить. Враги их боятся. Три друга пасутся на поляне Жангёрюш и каждый, кто насытился, спускаются по одному. Двух друзей съедает волк, а вот третий бычок нагоняет страх и побеждает хищника.

Это сказка о дружбе и товариществе. Есть и другие варианты этой сказки, где главные герои другие домашние животные, а сюжет почти одинаковый.

КЪАРТЦЫКЪ БЛА ТЮЛКЮ

Бир къартны малы болуп, беш-алты кьою бла бир аты болады. Къарт къатынын да биргесине алып заз узуну, ол кьойцукъларын кютюп, айналады. Бир кюн къартны эсине, кьошу бла эски зерни кьоюп, зангы кырдыгы болгъан зерге кёцере акъыл этеди. Ол акъылын къатынына айтып, ол да: «Хо!», – дегенлей, терк окъуна кьошун бузуп, атына зюклейти. Кьойцукъларын да аллына сюрюп, золгъа цыгъады. Терен агъацны ици бла баргъа тюшеди. Къартны аты да акъсап, кеси да арып, кьойланы да тохтатып, кеце кьалыр акъылгъа кирди.

Къартны къатыны уа къартха:

– Бу терен агъацны ицинде биз къалай кьаллыкъбыз? Бёрюле келип ашап кетселе уа, къалай болур? Бёрюден сора уа бу терен агъацда занлы болмазмы ансы уа? – деди.

Алай кёпню кёрген къарт къатынына:

– Занлы ашарыкъ болса, бара тургъанлай да ашар. Андан эсе былайда кьош кирик кьурап, кесибизни заращдырып, кеце кьалыргъа керекбиз, – деп, атны зюгюн тешеди.

Алай бла ала агъац ицинде кьош этип, кеце кьалалла. Кеце кьалгъанлыкъгъа, маллагъа занлы келликди деп, къарт зукъламай, кьошну тегерегинде айналып турады. Аланы ызындан а бир тюлкю, кюн узуну бир зат урлайым деп, къартладан ташала бла келип тургъанды. Къартны кеце кьалыргъа дегенин эшитип, кьууанып, хансла ицине бугъады. Къартла кьош кьурап, тынцайгъанлай, тюлкю аланы зукълагъан сунуп, атха тагъылып келген иц зауна урлайым деп, кьошха кьысылады. Аны алай келгенин, къарт сезип, кьолуна бир уллу кьазыкъ алып сакълаб турады. Тюлкю иги зууукъ келип, кьойну ийисхей тургъанлай, къарт тюлкюню кьазыкъ бла сермейди. Тюлкю ханлагъа секиреди, алай кьазыкъ тийген зери эркин атларгъа кьоймайды.

Алай бла, тюлкю бир занын да сюрей, кетеди агъацха. Алай тюлкю къартха аны ургъанын унутмайды. Анга ёцюн къалай бла зетдирге билмейди. Сагъыш эте кетип, бир заманда кьууанады. Аны эсине ашдан не этерге билмей, абери туталмай тургъан аслан тюшеди. Тюлкю ол асланнга тебирейди. Асланны биягъыца ашдан онгсуз болуп затып тургъанлай табады. Анга къартны хапарын айтады. Тюлкюге бек ийнанмаса да, ашдан онгсуз болуп тургъан аслан, тюлкюню ызындан тебирейди. Тюлкю кьууанып, къарт эр эсе, муну да мени ургъанца уруп деп, асланны къартны кьошуна келтиреди.

Алай къарт да тюлкюден сора дагъыда бек сакъ болуп тура эди. Тюлкю уа къартны зукълагъан сунуп, батыр-батыр, хапар айта келе эди.

Къарт аны хапарындан, асланны базыкъ тауушундан не болгъанын билип, тюлкюге, иги кёрмесе да:

– Сен андан бери кьайда тураса? Къатын кьазанны хазыр эт, тюлкю асланны келтиргенди, – дегенди ёхцеге.

Аны эшитип, аслан: «Бу мени кьарыусузлугъум бла файдаланып, мени сойдуругъа келтиреди», – деп, тюлкюню кьуйругъундан тутуп, ташха уруп, лыппыш этеди да, кеси уа кьачып кетеди.

Не болгъанын къарт эрттен бла биледи. Кьошундан бираз арлакъда, танг зарыкъда бир сары зат кёреди. Барып кьараса – ол а тюлкю. Терк



окъуна терисин сыдырып, къатынын уятады. Ол ишден къатыныны хапары болмайды – ол зукълап эди.

Хапарны эшитип, анга уа сейирсинип, ол тюлкю териден эрине бир омакъ зылы бёрк этип береди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 13 паспорт. КъМАССР-ны Огъары Лескен элинде 1905 жылда туугъан Занкишиланы Исламны жашы Мухадинден Гузеланы И.И. жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны баш жигитлери – кьойларын кютюп айланган къарт киши эм кьуруда аланы урларгъа кюрешген тюлкю. Къарт киши, сакълап туруп, тюлкюню таякъ бла урады, аны ючюн ол анга дерт тутады да, асланны анга алып келеди.

Къарт киши уа, абызырамай, хыйла бла ол огъурсуз жыртхыч жаныуарланы хорлайды: аслан тюлкюню ёлтюреди да, агъачха къчаады.

Бу жомакъ тюлкюню хыйласыны юсюнден жомакъланы бир вариантыды. Энчилиги – кьуруда бу жомакъда баш жигитледен бири асланды.

СТАРИК И ЛИСА

У одного старика из скотины были пять-шесть баранов и одна кобыла. Старик, взяв свою жену с собой, целое лето ходил и пас этих овец. Однажды старику пришла мысль, оставить старое место и вместе с кошем переехать в новое место, где есть трава. Эту мысль он рассказал жене, и как только она согласилась, быстро разобрал кош и загрузил на кобылу. Погоня своих овец перед собой, отправился в путь. Пришлось идти через густой лес. Кобыла у старика захромала, сам тоже устал, овцы остановились, тогда он решил остаться там на ночь. А жена говорит старику:

– Как мы останемся в этом тёмном лесу? Как будет, если волки придут и съедят? А кроме волков в этом дремучем лесу разве нет хищников?

Но многое увидевший (в своей жизни) старик жене:

– Если хищник захочет съесть, съест и по дороге. Лучше здесь сделаем типа коша, устроим себя, чтобы переночевать, – сказав, снимает с нее (с кобылы) груз.

И так они, сделав кош, остались на ночь в лесу. Хоть и остался переночевать, но старик не спал и ходил вокруг коша, подумав, что к скотине придет хищник. А за ними, с мыслью что-нибудь украсть, шла одна лиса украдкой от стариков. Услышав, что старик сказал остаться на ночь, спряталась в траву. Как только старики сделали кош и успокоились, лиса, подумав, что они спят, с мыслью украсть жир внутренностей, который везли, повесив на кобылу, приблизилась к кошу. Почувствовав, что она идет, старик ждал, взяв в руки большую палку. Когда лиса подошла достаточно близко и приняживалась к барану, старик размахнулся и ударил лису палкой. Лиса прыгнула в траву, но место, куда попала палка, не давало ей хорошо передвигаться.

Таким образом, лиса, таща одну часть тела, убежала в лес. Но лиса не забывала старику, что тот его ударил. Не зная, как ему отомстить, долго думала и в один момент обрадовалась. Она вспомнила про льва, который ничего не мог поймать и умирал с голоду. Лиса отправилась к тому льву. Она нашла лежащего льва, как обычно обессиленного от голода. Она рассказала ему про старика. Если даже (он) не слишком поверил лисе, но обессиленный от голода лев, отправился за лисой. Лиса обрадовалась мол, если старик настоящий мужчина, то и его ударит так же, как ударил ее, привела льва к кошу старика.

Но старик после лисы также был очень осторожен. А лиса, подумав, что старик спит, шла, смело-смело рассказывая (про него).

Старик от ее рассказов и грубого голоса льва, понял, что случилось, и лисе, хоть и плохо ее видел:

– Ты где до сих пор ходишь? Жена, готовь казан, лиса привела льва, – сказал специально.

Услышав это, лев: «Она, воспользовавшись моей слабостью, привела меня зарезать», – сказав, схватил лису за хвост, ударил об камень, расплющил, а сам убежал.

А том, что случилось, старик узнал утром. Недалеко от коша, на рассвете увидел что-то желтое. Когда пошел и посмотрел – это лиса. Быстро сняв с нее шкуру, будит свою жену. О том, что произошло, жена не знала – она все время спала.

Услышав весь рассказ, удивившись, она из шкуры лисы для мужа сделала красивую, теплую шапку.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 13. Записал И.И. Гузеев в Верхнем Лескене от Занкишиева Мухадина Исламовича (1905 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Главные герой сказки – старик, который пасет овец, и лиса, которая все время пытается их украсть. Старик, подкараулив лису, бьет ее палкой, на что та хочет ему отомстить и приводит к нему льва.

Старик же не растерялся и смекалкой избавляется от злых хищников: лев убивает лису и убегает в лес.

Эта сказка один из вариантов сказок о хитрой лисе. Отличается тем, что только в этой сказке одним из главных героев является лев.



ТАЛ ТЕРЕК БЛА САНГЫРАУКЪУЛАКЪ

Бир жаш тал терекни тубюнден арылакьда бир уллу сангыраукъулакъ чыгъады. Ол кеси уллу къалпагы бир жанлы болуп ёседи.

– Къарындашым, санга ненча жыл болду? – деп сорады ол тал терекден.

– Мен дуниягъа жангыдан келдим, аны ючюн а сени тенгли болгъанма. Мындан ары къалай этеме? Бу иш кеси къалай болур, къарындашым, манга былайда орун жетмезча кёрюнеди. Сен былайдан узагъыракъ кетсенг къалай болур эди, – дейди.

– Да тохтай бир тур, – деп, тал терекчик кертиси бла да къайгъылы болуп къалады да. – Эки-юч кюнча бир сабыр эте тур, андан арысын дагъыда таплыгъына кёре кёрюбюз, – дейди.

Алай эте, бир кюн ётеди, эки кюн ётеди. Сангыраукъулакъ кюн сайын ёсюп барады. Талчыкъ андан да бек къоркъуп, жарсып башлайды, алай ючюнчю кюн жетгенде, сангыраукъулакъ, башын кётюралмай, бир жанына къыйсая башлайды.

– Талым, къарындашым, бармыса? – деп, сурайды сангыраукъулакъ.

– Барма.

– Мен бир жанына къыйсыгъына аууп, кетип барама, башым кётюралмазча ауур болуп кетип барады, – дейди ол талчыкъгъа.

Ол жантайгъанындан кётюралмай, сангыраукъулакъ аууп, къурт ашап, чирип, жокъ болуп къалады. Алай тал агъашчыгъа ёсюп, уллучукъ да болуп, кюнню бюгюннге дери турады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 14 паспорт. КъМАССР-ны Нальчик шахарында Жаппулань Рашидден 25.03.1958 жылда жазылгъанды. Ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъны баш жигитлери бир бири къатында ёсген жаш тал терекчик бла сангыраукъулакъдыла. Сангыраукъулакъгъа, терк окъуна ёсе баргъанына кёре, ардан алагъа бирге жер жетмезча кёрюне эди, аны ючюн ол жаш тал терекчикни алайдан кетерирге кюрешгенди. Алай бир кесекден, кёп бармай, башыны ауурлугъу бир жанына аудуруп, чиригенди.

Бу жомакъ, кесини къарыуна базынып, кишини тюрт этерге, къыстаргъа жарамагъанын кёрюзтеди. Бу жомакъ сабийлеге аталады эм юйретюу халда жюрюйдю.

ИВА И ГРИБ

Чуть дальше под молодой ивой вырос большой гриб. Он вырос сам большой, а шляпа наклонилась в сторону.

– Брат мой, тебе сколько лет исполнилось? – спрашивает он у ивы. – Я только появился на свет, а уже вырос с размером как ты. Что я дальше буду делать? Как это теперь будет, брат мой, мне кажется, здесь мне места не хватит. Как ты думаешь, если ты отсюда уйдешь подальше, – сказал.

– Ты пока подожди, – сказала ива, а сама и вправду стала переживать. – Подожди пока два-три дня, а дальше, посмотрим, как правильно поступить.

Так проходит один день, два дня проходит. Гриб растет день ото дня. Ива, еще больше испугавшись, начала переживать, но когда наступил третий день, гриб, уже не мог поднимать голову и начал наклоняться в сторону.

– Ива, брат мой, ты здесь? – спрашивает гриб.

– Здесь.

– Я наклоняюсь в сторону, уже падаю, моя голова тяжелая настолько, что уже не могу поднимать, – говорит он иве.

Не выдержав наклона, гриб упал, его съели черви, (он) сгнил и исчез вообще. А ива выросла, стала большой, и сегодня там стоит.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 14. Записано 25.03.1958 г. в г. Нальчик КБАССР от Жаппуева Рашида. Кто осуществил запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Главными персонажами сказки являются молодое деревце ива и гриб, которые росли рядом. Гриб быстро рос, и ему казалось, что им не хватит места в дальнейшем, поэтому пытался вытеснить молодую иву. Но вскоре сам от тяжести шляпки упал в сторону и сгнил. Данная сказка учит тому, что нельзя никого упрекать и вытеснять из-за того, что кажется, что сам сильнее. Данная сказка предназначена для детей, и носит поучительный характер.



УЛАКЪ БЛА ГЫЛЫУ БАЛАЧЫКЪ

Гылыу балацкыкъ къайры эсе да цабып бара болгъанды. Кёп-аз цапхан эсе да, цабып бара улахцкыкны кёреди.

– Улакъ, негерцигим, къайры бараса, къайдан келесе? – дейди.

Бу сёзлени эшитип, улахцкык башын кетюрюп:

– Кесинг кёрмеймисе? Кесими тёрт аягъымы къуууп барама, – деди.

Анда гылыу балацкык:

– Сора сени да къайры баргъанынг белгисиз кёреме. Кел, бирге барайык!

– Да кел, барайык, манга уа башхамыды да?

Экиси да тебиредиле. Улахцкык башын да бир занына къынгыр этип, кёзлерин да бир аз къысып, суйсюнмей бара эди. Гылыу балацкык да улахцкыкны ызындан кючден зетип барады. Улахцкык гылыу баланы кёп кере тас этип, аны инче жюйюлдеген тауушундан таба эди.

Алай эте, ала бир талай зол бардыла. Бир заманда гылыу балацкык биришди:

– Улахцкык, кел букъгъуц ойнайык! Улахцкык тюз аны алай айтырын сакълап тургъанца:

– Ойнайык, ойнайык! – дейди.

Гылыу балацкык:

– Биринчи ким бугъады? – деди.

– Сен гитцециксе. Къыс кёзюнгю, мен бугъайын.

Бу сезлени эшитип, гылыу балацкык кёзлерин къысып гитче батыучукъгъа цёхдю. Улахцкыгъа цаба барып, къуругъан шауданцкыкны ызцыгъына затды.

Гылыу балацкык излей башлады, алай улахцкыкны бирда табалмады. Кёп ары бла бери цапхандан, ёлюрге аз къалды. «Тейри муну аман акъыл бла тапмасам болмай къалды», – деп:

– Улахцкык, сен кесинг бугъуп, мюйюзлеринги цыгъаргъанынг а неди? – деп къыщырды.

Аны эшитип, улахцкыгъ:

– Керти окъуна мюйюзлерими бухтургъа унутупму къойгъан болурма? Аман болду да, – деп, букъгъан жеринден цыхды.

– Сени тапдым. Энди кёзлеринги сен къыс, мен бугъайым! – деди гылыу балачыкъ.

Гылыу балачыкъ узакъмы кетерик эди. Тюз улахцкыкны аякъ тюбюнде цапыракълагъа бухду.

Улахцкык излей башлады. Кёп изледи, алай гылыу балацкыкны къайдан табсын. Аны излей кетип, улахцкык ац болду. «Энди аны да табмайма», – деп, кюте башлады. Бираздан улахцкык гылыу балацкык букъгъан зердеги цафыракъланы ашай тебиреди. Цафракъла бла бирге гылыу балацкыкны да ичине зутду. Тоюп, гылыу балацкыкны да тапмайма деп, солургъа затды. Бир заманда гылыу балацкык улахцкыкны ичин тешип, тышына цыгъыб:

– Эй, улахцкык, сен кесинг уллу болсанг да, акъылсызса. Мен а, гитцецик эсем да, сенден къарыулума, акъыллыма.

Улахцкык ёлдю.

– Бу эт энди мени сабийлериме бир талайгъа боллухду, – деп къууанды гылыу балацыкъ.

Гылыу балацыкъ улахцыкъны терисин сыдырыгъа къаргъаны цакъырды. Къаргъа кюреше кетип, бир да этхен хайыры боллухду. Эки кёзюн цыгъарды.

– Ким сыдыраллыкъ болур муну терисин? Не этейим, кимни болушдурайым? – деп сагъыш этди гылыу балацыкъ.

Бир занына къараса, тюлкю бла бёрюню келе тургъанларын кёреди. Алайгъа игида зетгинци, тюлкю:

– Сен къалай зигитсе, гылыуцукъ! Нецик семиз улахцыкъны тутханса сен. Кесинг да бек арыгъан болурса. Бар солу, зукълагъанда эт! Бёрю бла мен сояйыкъ улакъны, союп бошасакъ уятырбыз сени, – деди.

Тюлкюню ариу сёзлерине ыйнанып, гылыу балацыкъ зукълады.

– Гылыуцукъ, тур. Эт хазырды. Аша! – деди тюлкю бир аздан сора.

Гылыу балацыкъ секирип турду. Цабып улахцыкъ болгъан зерге барды. Да ол алайда не кёрлюк эди? Улакъ болгъан зерде зангы мюйюзцюклери бла тууакцыкълары тура эди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 15 паспорт. КъМАССР-ны Лескен районуну Ташла-Тала элинде 1911 жылда туугъан Цаколаны Ачейни жашы Алийден 15.02.60 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъны кёп баш жигитлери барды, ала – улакъчыкъ, гылыу балачыкъ, къаргъа, тюлкю эм бёрю. Жомакъны аллында улакъчыкъ ёхтемленип, кесин гылыу балачыкъдан иги сунуп, аны бла ойнаргъа суюмей эди. Гылыу балачыкъ кесин улакъчыкъдан акъыллы сунганды, аны аш орунун ичинден тешип, ёлтюргенде. Къаргъа сунганды кесин къарыулу, алай улакъчыкъны терисин сыдыралмагъанды. Жомакъны ахырында уа тюлкю бла бёрю, барысында алдап, гылыу балачыкъгъа уа мюйюзцюклери бла туякъчыкъларын кёйгъандыла.

Жомакъ малкъар диалектде жазылгъанды.

КОЗЛЕНОК И КРЫСЕНОК

Крысенок куда-то убежал. Много-ли, мало-ли он бегал, но пробегая, увидел козленка.

– Козленок, дружок, куда идешь, откуда возвращаешься? – спросил.

Услышав эти слова, козленок поднял голову:

– Сам не видишь? Догоняю свои четыре ноги, – сказал.

Там крысенок:

– Вижу неизвестно и то, куда ты бежишь. Давай пойдем вместе!

– Ну, пойдем, а мне, что есть разница?

Они вдвоем отправились в путь. Козленок, нагнув голову в сторону, чуть зажмурив глаза, шел недовольным. И крысенок за козленком шел, еле его догоняя. Козленок много раз терял из виду крысенка и по шуму его низкого писка находил.



Так они прошли немного дороги.

Вдруг крысенок предложил:

– Козленок, давай поиграем в прятки!

Козленок как будто ждал его этого предложения:

– Поиграем, поиграем! – сказал.

Крысенок:

– Кто первым спрячется? – сказал.

– Ты маленький, зажмурь глаза, я спрячусь.

Услышав эти слова, крысенок, закрыв глаза, сел в маленькое углубление на земле. А козленок побежал и лег на след высохшего родника.

Крысенок начал искать, но козленка так и не нашел. От того что долго туда-сюда бегал, чуть не умер. «Если я его хитростью не найду, то не найду вообще», – подумав:

– Козленок, что значит то, что ты сам спрятался, а рога выпирают? – сказав, крикнул.

Услышав это, козленок: «И вправду я забыл спрятать свои рога? Плохо получилось», – подумав, вышел из места, где прятался.

– Тебя нашел. Теперь закрой глаза, я спрячусь! – сказал крысенок.

Далеко ли мог уйти крысенок. Спрятался под листок прямо под копытами козлика.

Козленок начал искать. Долго искал, но как ему найти крысенка. Разыскивая его, козленок проголодался. «Теперь и его не найду», – подумав, начал пастись. Через некоторое время козленок начал есть листья, где прятался крысенок. Вместе с листьями проглотил и крысенка. Насытившись, и решив, что не найдет крысенка, лег отдохнуть.

Вдруг, крысенок прогрыз козленку живот и вышел наружу:

– Эй, козленок, хоть ты и большой сам, но глупый. Хотя я и маленький, но сильнее тебя и умнее.

Козленок умер. «Это мясо, моим деткам хватит на некоторое время», – сказав, обрадовался крысенок. Крысенок позвал ворона для того, чтобы содрать шкуру козленка. Ворон долго возился, но ничего полезного не сделал. Выколол ему (козленку) оба глаза.

«Кто сможет содрать с него шкуру? Что сделать, кого позвать на помощь?» – подумал крысенок.

Вдруг, увидел, как шли лиса и волк. Пока близко еще не подошли, лиса говорит:

– Какой ты смелый, крысенок! Какого жирного козленка ты поймал. Наверное, сам-то очень устал. Иди, отдохни, поспи! Волк и я разделаем козленка, когда закончим разделывать, мы тебя разбудим.

Поверив красивым словам лисы, крысенок заснул.

– Крысенок, вставай. Мясо готово. Кушай! – сказала лиса через некоторое время.

Крысенок вскочил и встал. Побежал к тому месту, где лежал козленок. Что бы он там мог увидеть? Там, где был козленок, остались одни рожки да ножки.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 15. Записал И.И. Гузеев 15.02.60 г. в с. Ташлы-Тала Лескенского района КБАССР от Цакоева Алия Ачевича (1911 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

В данной сказке много действующих персонажей – это козленок, крысенок, ворона, лиса и волк. В начале сказки козленок, думая, что он лучше крысенка и не хотел с ним играть. Крысенок считал, что он умнее козленка, когда прогрыз желудок и убил его. Ворон же думал, что сильнее, но не смог снять шкуру козленка. Но в конце всех перехитрили лиса и волк, которые оставили крысенку только рожки, да ножки от козленка.



КЪОЯН БЛА БОРСУКЪЧУКЪ

Къалай бла эсе да къоян бара-барып кеси аллына ёлген кийик эчкини кёреді. Къоян терк окъуна эт бишире башлайды. Аны алай эте тургъанын къайдан эсе да ач болуп келе тургъан борсукъчукъ кёреді.

– Кюн ахшы болсун, къоян! – дейди.

– Ахшылыкъ кёр!

– Сен бу эчкини къайдан тапханса? – деди борсукъчукъ, къояннга жете келип.

– Да алай бош: шыбыртсыз жатып тургъанлай къатына жууукъ бара-барып, алай кычырама да, алай – бу кърккъакъ эчки «дып» деп тюшюп, ёлюп къалгъанды, – дейди къоян, мыллыкларын сылай.

– Мени да бир юйрет, маржа, ашдан да ёлеме. Не этерге да билмей. Бир болуш, – деди борсукъчукъ, къоянны башында бир жанына жазыкъсындырырча.

– Да аны не юйретириги барды. Сени башынг аллай бирге жарамай эсе, неге салып айланаса?

– Бара-бар да эчкиге жууукъ, аямай кычыр. Ол уллу таууш эшитмеген эчки уа, жатар да, ёлюр, – деди къоян.

Аны эшитгенлей, борсукъчукъ жолгъа тюшдю.

Барып, къоян айтханча, этди. Алай эчки, къулакъларын да къагъа, къачып кетди. Борсукъчукъ, арып, юйюне къайытды.

Биягъы къояннга жолукъду.

– Къалай болдунг, борсукъ, ёлтюралдынгмы кийик эчкини? – деди къоян.

– Угъай-угъай, сен айтханлай этгенимде, къачдыда кетди, – деди борсукъчукъ.

– Эчки къачхан заманда, сен аны ызындан не айтып кычыргъан эдинг? – деди къоян.

– Зат да угъай, – деди борсукъ.

– Ой, сен тели! Эчкини да ёлтюралмайса! Ол къачханда сен аны ызындан: «Тохта, тохта», – деп, нек кычырмадынг. Ол заманда ол ёлюр эди! – деди къоян.

Борсукъ къояндан бек кърккъду. Къачып башлап:

– Ой, ой, ой! Сен мени да кърккъутуп ёлтюрлюксе, – деди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 15 паспорт. КъМАССР-ны Лескен районуну Ташла-Тала элинде 1911 жылда туугъан Цаколаны Ачейни жашы Алийден 15.02.60 жылда Гузеланы И.И. жазгъанды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Къоян къарачай-малкъар жомакълада къарыусуз, алай хыйлачы жигитча бериледи. Кёбюсюне ол кърккъакълыкны белгиси болуп кёргюзтюледі, алай кесини усталыгъы бла амал табылулугъуну хайыры бла, ол къыйналмай кёп тапсыз кезиуледен чыгъады.

Сёз ючюн, бу жомакъда ол борсукъчукъну аны бла алдайды, аны, къулагъына кычырып, кийик эчкини ёлтюрюрге юйретеди. Борсукъ бир ненча кере алай бла кийик эчкини ёлтюреме деп, болалмай, къояндан

кьоркьуп кьачьип кетеди. Алай бла жомакьны барьуунда биз кёребиз, бу кьоркьакь персонаж кьарьулу да, жигит да болгьанын.

Ол борсукьчукьну алдап, ол а кьачьип кетгенди.

ЗАЯЦ И БАРСУЧОК

Как-то заяц шел-шел и увидел, умершую своей смертью олениху. Заяц быстро начал варить это мясо. То, что он делал, увидел проголодавшийся барсук, который шел откуда-то.

– Добрый день, заяц! – сказал.

– День добрый!

– Откуда ты нашел эту олениху? – спросил барсучок, приближаясь к зайцу.

– Да так просто: подкрался близко к спокойно лежавшей (оленихе), и так крикнул, что трусливая олениха «дып» и упала замертво, – сказал заяц, поглаживая тушу.

– И меня научи, пожалуйста, умираю с голоду. Не знаю, что делать. Помоги, – попросил барсучок так, чтобы заяц его пожалел.

– Да, что тут учить. Если твоя голова не может пригодиться для этого, зачем ты его носишь?

– Подойди к оленихе близко и хорошо крикни. А олениха, которая не слышала громкий крик, упадет и умрет, – сказал заяц.

Услышав про это, барсучок отправился в путь.

Пошел и сделал так, как рассказал заяц. Но олениха, шевеля ушами, убежала. Барсучок, устав, вернулся домой.

Опять встретился с зайцем.

– Как ты, барсук, смог убить олениху? – спросил заяц.

– Нет-нет, когда сделал, как ты сказал, побежала и ушла, – сказал барсук.

– Когда олениха убегала, что ты ей в след крикнул? – спросил заяц.

– Ничего, – сказал барсук.

– Ой, ты дурак! Не можешь убить олениху! Когда она убегала, почему ты ей в след не крикнул: «Постой, постой». Вот тогда она умерла бы! – сказал заяц.

Барсук очень испугался зайца. Убегая:

– Ой, ой, ой! Ты и меня от страха убьешь, – сказал.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 15. Записал И.И. Гузеев 15.02.60 г. в с. Таилы-Тала Лескенского района КБАССР от Цакоева Алия Ачевича (1911 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Заяц в карачаево-балкарских сказках персонаж слабый, но хитрый. Он в основном выступает воплощением трусости, тем не менее, благодаря своей ловкости и находчивости он с легкостью выходит из затруднительных ситуаций. Например, в данной сказке он обманывает барсука тем, что учит его убить олениху, крикнув ей в ухо. Барсук после неудачных попыток убить олениху, настораживается и, испугавшись зайца, убегает. Так, по ходу повествования сказки мы видим, как этот трусливый персонаж перевоплощается в смелого и сильного. Он перехитрил барсука, и тот сбежал.



КЪЫЗЫЛ ЖИЛЯН

Эртте, бурун заманда бир патчах болганды. Ол бир кече тюшонде, бири да кьалмай кесини халкы тюлкюле болуп кьргенди. Окьюулу алим адамларын чакырып, кесини тюшон айтханды.

– Мен бу тюшге сейир-тамашама, сиз муну жоралагъыз. Не аманнга жораласагъызда кьоркьуп кьоймай, ачыкь айтыгъыз. Мен да аны жоралагъаннга бир минг алтын бериме, – дегенди.

Окьюулула не кюрешеледа бири да жораялмагъандыла. Ол заманда патчах битеу кыралгъа, кьрген тюшон айтып, жоралагъаннга минг алтын берлигинда хапар этгенди. Халкь да бек уллу шургу болганды.

Ол кезиуде патчах тургъан шахардан узакьда болмай, бир элчикде бир жарлы киши жашай болганды. Ол кеси ёмюрюнде ашдан ашап тояр чакьлы тапмагъанды, не жангы быстыр юсюне тиймегенди. Ол жигитда ханны тюш кьрген хапарын, аны жоралагъаннга минг алтын берликлерин эшитип, ол ахчаны алыргъа асыры кьазауат этгенден, кече кёзюне жукьу кирмей чыкьгъанды.

Бир кюн а: «Маржама мен да, кёлюме келгенни айтмай кьойсам. Ким биледи, мен айтханны кьабыл этип, ахчаны манга берлик эсе уа», – деп тебирегенди.

Ол да барлыкь жолун эки тенг этип, ол ач кьарыусуз адам, арыгъан да этип шауданны кьатында солургъа тохтагъанды. Эски кьалпагъын эки бюклеп, чолпу кирик этип, шаудандан ичип, кьолун, бетин да жуууп, ол суу салкынында чёкгенди.

Ол да тынгылап: «Яраби, ол тюшню кьалай жоралайым», – деп, сагъыш этип тургъанлай, кьайдан чыкьды эсе да бир кьызыл жилин, сьйреле келип, ол суудан ичип, мынга айланьп:

– Нек мудахса? Не сагъыш этесе? Кьайры бараса? – деп, ариу адам тил бла сёлешгенди. Бу да бир затында жашырмай жилиннга айтханды.

Ол заманда жилин:

– Сени насыбынг тутду, манга жолугьуп. Мен ол тюшню жоралайым, алай ол минг алтынны экибизге да теппе тенг этербиз: беш жюзю мени, беш жюзю сени болур. Сен мен айтханча этерге ыразы эсенг айтайым, алай мени алдамазгъа сёз бер. Мени, артха келе туруп да, ма бу шауданны кьатында табарса. Кьарап кьрмесенг, юч кере сызгьыр, мен санга чыгьарма, – дегенди.

Ол жарлы да жилин айтханча этерге боюн салып, жилин тюшню былай жоралагъанды: «Сен кесинг патчахны кьатына бар да, экигизден ёнге адам болмай, жангыз кесине тюшон айтдыр да, сора сен айт: сени халкьынг бусагьатда, сени сьймейдиде, ачыкь сьелмей хыйла-фитна бла сени орунунга башханы патчах этерге умут этедиде, аны себепли хар жюз юйге бир кьуллукьчу сал да, ала халкьны хыйлаларын ачып тыярла», – дегенди.

Жарлы киши да тюз ол кьызыл жилин айтханча этип, ол айтханлай айтханды. Патчах муну айтханын да кьабыл этип, минг алтын да берип жибергенди.

Алай ол жарлы киши алтынланы жартысын жилиннга берирге кёзю кьыймай, башха жол бла юйюне кетип, иги жашап башлагъанды. Жилин а бош сакьлап кьалгъанды.

Бир белек замандан: жылдан сорама, эки жылдан сорама, биягъы патчах тюшюнде кесини халкъы къалмай бөрюле болуп кёргенди. Биягъы алимлени, къуртхаланы жыйып соргъанды, билген адам чыкъмагъанды. Энтта халкъгъа хапар этип, бу жол ким жораласа да анга эки минг алтын берлигин айтханды. Биягъы киши, энди жарлылыгъы бираз жамалгъанды, болсада умут этип, биягъы жолну бара, биягъы шауданнга келип олтургъанды. Сызгырыргъа жилияндан уялады, озгъан жол юлюшюн бермегени ючюн. Жилиясыз тюшню кеси жоралай билмейди.

Бу да алай тургъанлай биягъы жилиян чыгъып, суудан да ичип:

– Не мудахса? Къайры бараса, – деп соргъанды.

Бу да ханны экинчи тюшюн да, эки минг алтын берирге айтханын да айтханды. Не киши, не жилиян алгъын жол юлюшюн келтирмегенини юсюнден зат сагъынмагъандыла.

Къызыл жилиян:

– Бар да патчахны кесине жомагъын айтдыр да: «Сени алгъын хыйла бла чыгъарыргъа умут этгенде, сен аны билип, сен хар жюз юйге бир къуллукъчу салып тыйгъанса. Энди уа халкъ бирден къозгъалып, сени зор бла къыстаргъа умут этедиле. Сен а хар он юйге бир къуллукъчу сал да, къоранчны халкъдан жыйрса, алай бла къайгъыны тыяrsa, де», – дегенди.

Ол киши да барып, жилиян айтханлай этип, эки минг алтынын да алып, жилияны юлюшюн да келтирмей башха жол бла юйюне къайытып, андан да иги жашап тебирегенди.

Биягъы патчах ючюнчю тюшюн кёргенди: бири да къалмай халкъы къойла болуп, кеси аланы сюрюучюсю болуп. Ол тюшню жоралагъаннга уа юч минг алтын берирге айтханды. Болсада киши жораялмагъан, ол алгъын жоралагъан кишини чакъыргъанды. Бу да жилиянга барыргъа уяла, билинсе патчах ёлтюрюр деп, къоркъа, амалсыздан биягъы шауданнга келгенди.

Жилиян, алдагъаны ючюн да зат айтмай, кишиге соруп, тюшню эшитгенде: «Энди халкъ санга боюн салып, аман муратларын эслеринден кетергендиле. Энди сен а керексиз къоранч этмей, ол салгъан къуллукъчуларынгы чыгъар, де», – деп юйретди. Киши да алай этип, юч минг алтын алып саулай да жилиянга келтирип, терслигин айтханды.

Жилиян а: «Сен терс туюлсе, заман алай болгъанды. Халкъ тюлкюле болуп, бөрюле болуп айланганда, сен да халкъдан биресе да, алача болгъанса. Энди халкъ тюзелди, сен да тюзелдинг. Алай манга ахча кереги жокъду. Мен сени сынагъанма», – деп, ол жарлы бай болуп, ашап-жашап къалгъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 16 паспорт. КъМАССР-ны Эльбрус районуну Кёнденден элинде Ахматланы Ибрагимден Улбашланы А.М. Жазгъанды. Къачан жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бу жомакъ юйретюу халда жазылгъанды. Баш жигитлери жилиян бла адамды. Бу жомакъда адамны табийгъат бла къаты жууукълукълары кёргюзтюледди. Мында адамны жилиян тилни ангълагъаны да аны ючюндю. Андан сора да жилиян къарачай-малкъар жаныуарланы юсюнден жомакълада, тюз да битеу дуняда аны юсюнден айтыуладача, энчи хал бла белгиленеди. Мында къуру ол билдиреди, жомакъны къалай жораларгъа эм да ахчаны алыргъа.



РЫЖАЯ ЗМЕЯ

Давным-давно, в прошлые времена был один царь. Однажды ночью он увидел сон, где весь его народ превратился в лисиц. Позвав всех своих ученых людей, рассказал свой сон.

– Я очень удивлен этим сном, вы его растолкуйте. К какой беде бы вы его не посвятили, не бойтесь, а расскажите прямо. И я тому, кто его растолкует, подарю тысяча золотых, – сказал.

Ученые как бы не старались, ни один не смог растолковать. Тогда царь, рассказав всему народу увиденный им сон, объявил, что растолковавшему отдаст тысячу золотых. Народ очень опечалился.

В то время недалеко от места, где жил царь, в маленьком селе жил-был один бедняк. За всю свою жизнь он вдоволь не смог насытиться, и ни одна новая одежда его тела не касалась. И этот смельчак, услышав про то, что хан увидел сон, и отдаст тысяча золотых тому, кто растолкует, всю ночь до утра не сомкнул глаз от большого стремления забрать эти деньги.

В один день: «Несчастный я, если не расскажу все, что об этом думаю. Кто знает, может он согласится с тем, что я расскажу, и отдаст мне эти деньги», – сказав, собрался.

Пройдя половину пути, этот голодный слабый человек, уставший остановился возле родника, чтобы отдохнуть. Сложив вдвое свою старую шляпу, смастерив что-то вроде ковша, испив из родника, помыв руки и лицо, он сел в прохладе родника.

Он про себя: «Интересно, как мне растолковать этот сон», – говоря, пока думал, откуда-то вылезла рыжая змея, подползла, выпила этой воды, повернулась к нему:

– Чем опечален? О чем думаешь? Куда путь держишь? – заговорила красивым человеческим языком. А он, ничего не скрывая, рассказал змее. Тогда змея:

– Тебе повезло, встретив меня. Я растолкую этот сон, но эти тысяча золотых мы поделим между собой поровну: пятьсот тебе, пятьсот мне. Если ты согласен поступить так, как я скажу, расскажу, только ты дай слово не обмануть меня. Меня и на обратном пути найдешь возле этого родника. Если, посмотрев, не найдешь, свистнешь три раза, я к тебе выйду, – сказала.

Этот бедняк обещал сделать все так, как велела змея. Змея сон растолковала так: «Ты сам подойди к царю, чтобы кроме вас двоих не было никого, дай ему рассказать тебе одному свой сон, а потом скажи ты: «В твоём народе сейчас люди тебя не любят, открыто не говорят, но хитростью и обманом вместо тебя хотят назначить царем другого. Поэтому на каждые сто дворов назначь одного управляющего, они раскроют заговорщиков и остановят их», – сказал.

Бедняк, сделав точно так, как сказала рыжая змея, сказал так, как она научила. Царь поверил тому, что он ему рассказал и отправил, отдав ему тысяча золотых.

Но бедняку уже стало жаль отдать змее половину этого золота, он ушел другой дорогой домой и начал хорошо жить. А змея напрасно осталась ждать.

Через некоторое время: примерно через год или через два года, тот же царь во сне увидел, что его народ до единого стали волками. Опять же собрал

ученых, и предсказателей и спросил, знающих не было. Теперь объявил народу, что тому, кто сможет предсказать отдаст две тысячи золотых. Тот же мужик, теперь его состояние улучшилось, однако в надежде, шел опять той же дорогой, опять же сел у того же родника. Свистнуть, стыдится змеи, за то, что в тот раз не отдал ее долю. Без змеи сам сон предсказать не сможет.

Пока он так стоял, опять та же змея вышла, выпила воды:

– Почему опечалился? Куда путь держишь? – спросила. Этот рассказал про второй сон царя, и про то, что он отдаст две тысячи золотых. Ни мужик, ни змея не вспомнили про то, что в тот раз он не принес ее долю.

Рыжая змея:

– Иди и заставь царя самому рассказать сон: «Раньше, когда тебя решили обманом свергнуть, ты, узнав об этом, остановил их, поставив на каждые сто домов одного смотрящего. А теперь весь народ, восстав против тебя, хотят тебя насильно свергнуть. Ты поставь на каждые десять домов одного смотрящего, убытки соберешь у людей, таким образом, отгородишься от несчастья», – сказал.

Этот мужик пошел, сделал все, как сказала змея, забрал две тысячи золотых, не отнес долю змеи, а пошел другой дорогой и начал жить еще лучше.

Царь опять увидел третий сон: его народ все доединоного превратились в баранов, а сам стал их пастухом. А тому, кто предскажет этот сон, обещал три тысячи золотых. Однако никто не смог предсказать, позвал того мужика, который в тот раз предсказал. А этот, стыдясь пойти к змее, вдруг, если раскроется, боялся, что царь убьет, от беспомощности пришел опять к тому роднику. Змея, ничего не сказав за то, что обманул, спросив мужика, услышав сон, научила: «Теперь народ подчинился тебе, забыв плохие умыслы. А теперь ты зря не траться, убери тех смотрящих, скажи». Мужик сделал все так, забрав три тысячи золотых, принес целиком змее и признался в своей неправоте.

Змея же: «Ты не виноват, это время такое. Когда народ ходит, превратившись то в лисиц, то в волков, а ты один из них, и стал таким же, как они. Теперь народ исправился, и ты исправился. Но мне деньги не нужны. Я тебя испытала», – сказала. Этот бедняк стал богатым, и так стал жить-поживать.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 16. Записал А.М. Ульбашев в с. Гунделен Эльбрусского района КБАССР от Ахматова Ибрагима. Когда осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Это сказка поучительная. Главные герои – змея и человек. В этой сказке сохранены тесные связи человека с природой. Здесь и мотив понимания человеком языка змеи. Кроме того, змея в карачаево-балкарских сказках о животных, как и в мировом сюжете о ней, наделяется сверх свойствами. Именно она здесь дает знать, как растолковать сон и получить деньги.



КЪАРТ БЛА ЖИЛЯН

Эртте, бурун заманда бир патчах болганды. Ол бир кече тюшонде, бири да квалмай кесини халкы тюлюле болуп кергенди. Окьюулу алим адамларын чакырып, кесини тюшон айтханды.

– Мен бу тюшге сейир-тамашама, сиз муну жоралагъыз. Не аманнга жораласагъызда кюркьуп кьоймай, ачык айтыгъыз. Мен да аны жоралагъаннга бир минг алтын бериме, – дегенди.

Окьюулула не кюрешеледа бири да жораялмагъандыла. Ол заманда патчах битеу кыралгъа, керген тюшон айтып, жоралагъаннга минг алтын берлигин да хапар этгенди. Халкъда бек уллу шургу болганды.

Ол кезиуде патчах тургъан шахардан узакъда болмай, бир элчикде бир жарлы киши жашай болганды. Ол кеси емюрюнде ашдан ашап тояр чаклы тапмагъанды, не жангы быстыр юсюне тиймегенди. Ол жигит да ханны тюш керген хапарын, аны жоралагъаннга минг алтын берликлерин эшитип, ол ахчаны алыргъа асыры кызауат этгенден, кече кезюне жукьу кирмей чыкьгъанды.

Бир кюн а: «Маржама менда келюме келгенни айтмай кьойсам. Ким биледи, мен айтханны кьабыл этип, ахчаны манга берлик эсе уа», – деп тебирегенди.

Ол да барлыкь жолун эки тенг этип, ол ач кьарыусуз адам, арыгъан да этип шауданны кьатында солургъа тохтагъанды. Эски квалпагъын эки бюклеп, чолпу кибик этип, шаудандан ичип, кьолун, бетин да жуууп, ол суу салкынында чекгенди. Ол да тынгылап: «Яраби, ол тюшню кьалай жоралайым», – деп, сагъыш этип тургъанлай, кьайдан чыкьды эсе да бир кызыл жилиан, сюйреле келип, ол суудан ичип, мынга айланып:

– Нек мудахса? Не сагъыш этесе? Кьайры бараса? – деп, ариу адам тил бла селешгенди. Бу да бир затында жашырмай жилианнга айтханды. Ол заманда жилиан:

– Сени насыбынг тутду, манга жолугьуп. Мен ол тюшню жоралайым, алай ол минг алтынны экибизге да теппе тенг этербиз: беш жюзю мени, беш жюзю сени болур. Сен мен айтханча этерге ыразы эсенг айтайым, алай мени алдамазгъа сез бер. Мени, артха келе туруп да, ма бу шауданны кьатында табарса. Кьарап кермесенг, юч кере сызгьыр, мен санга чыгъарма, – дегенди.

Ол жарлы да жилиан айтханча этерге боюн салып, жилиан тюшню былай жоралагъанды: «Сен кесинг патчахны кьатына бар да, экигизден енге адам болмай, жангыз кесине тюшон айтдыр да, сора сен айт: сени халкынг бусагъатда, сени сюймейдиде, ачык сюелмей хыйла-фитна бла сени орунунга башханы патчах этерге умут этедиде, аны себепли хар жюз юйге бир кьуллукьчу сал да, ала халкыны хыйлаларын ачып тыярла», – дегенди.

Жарлы киши да тюз ол кызыл айтханча этип, ол айтханлай айтханды. Патчах муну айтханын да кьабыл этип, минг алтын да берип жибергенди.

Алай ол жарлы киши алтынланы жартысын жилианнга берирге кезю кыймай, башха жол бла юйюне кетип, иги жашап башлагъанды. Жилиан а бош сакълап квалгъанды:

Бир белек замандан: жылдан сорамы, эки жылдан сорамы, биягъы патчах тюшонде кесини халкы квалмай берюле болуп кергенди. Биягъы

алимлени, къуртхаланы жыйып соргъанды, билген адам чыкъмагъанды. Энтта халкыгъа хапар этип, бу жол ким жораласа да анга эки минг алтын берлигин айтханды. Биягъы киши, энди жарлылыгъы бираз жамалгъанды, болсада умут этип, биягъы жолну бара, биягъы шауданнга келип олтургъанды. Сызгырыргъа жилияндан уялады, озгъан жол юлюшюн бермегени ючюн. Жилиясыз тюшню кеси жоралай билмейди.

Бу да алай тургъанлай биягъы жилия чыгъып, суудан да ичип:

– Не мудахса? Къайры бараса, – деп соргъанды. Бу да ханны экинчи тюшюнда, эки минг алтын берирге айтханын да айтханды. Не киши, не жилия алгъын жол юлюшюн келтирмегенини юсюнден зат сагъынмагъандыла.

Къызыл жилия:

– Бар да патчахны кесине жомагъын айтдыр да: «Сени алгъын хыйла бла чыгъарыргъа умут этгенде, сен аны билип, сен хар жюз юйге бир къуллукъчу салып тыйгъанса. Энди уа халкъ бирден къозгъалып, сени зор бла къыстаргъа умут этедиле. Сен а хар он юйге бир къуллукъчу сал да, къоранчны халкъдан жыарса, алай бла къайгъыны тыяrsa, де», – дегенди.

Ол киши да барып, жилия айтханлай этип, эки минг алтынны да алып, жилияны юлюшюн да келтирмей башха жол бла юйюне къайытып, иги жашап тебирегенди.

Биягъы патчах ючюнчю тюшюн кёргенди: бири да къалмай халкы къойла болуп, кеси аланы сюрюучюсю болуп. Ол тюшню жоралагъаннга уа юч минг алтын берирге айтханды. Болсада киши жораялмагъан, ол алгъын жоралагъан кишини чакъыргъанды. Бу да жилиянга барыргъа уяла, билинсе патчах ёлтюрюр деп, къоркъа, амалсыздан биягъы шауданнга келгенди. Жилия, алдагъаны ючюн да зат айтмай, кишиге соруп, тюшню эшитгенде: «Энди халкъ санга боюн салып, аман муратларын эслеринден кетергендиле. Энди сен а керексиз къоранч этмей, ол салгъан къуллукъчуларынгы чыгъар, де», – деп юйретди. Киши да алай этип, юч минг алтын алып саулай да жилиянга келтирип, терслигин айтханды.

Жилия а: «Сен терс туйюлсе, заман а алай болгъанды. Халкъ тюлкюле болуп, бёрюле болуп айланганда, сен да халкъдан биресе да, алача болгъанса. Энди халкъ тюзелди, сен да тюзелдинг. Алай манга ахча кереги жокъду. Мен сени сынаргъа деп айтхан эдим, «Жолунг мамукъдан, жашауунг зауукъдан» – деп ашырды.

«Ач уят къоймаз» (нарт сёз).

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 17 паспорт. Къачан, къайда, кимден, ким жазгъаны да белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бир-бирде жаныуарланы юсюнден жомакълада адам алагъа алай къаршы болады, аланы халлерин алады, не зат десенг, жаныуарланы тиллерин ангылайды.

Бу жомакъ насийхат халда жазылгъанды, «Къызыл жилия» деген жомакъны вариантыды. Энчилиги баиша баиша жомакъчыладан жазылгъанды, ахыры нарт сёз бла, алгъыи бла бошалады: «Ач уят къоймаз», «Жолунг мамукъдан, жашауунг зауукъдан».

СТАРИК И ЗМЕЯ

Давным-давно, в прошлые времена был один царь. Однажды ночью он увидел сон, где весь его народ превратился в лисиц. Позвав всех своих ученых людей, рассказал свой сон.

– Я очень удивлен этим сном, вы его растолкуйте. К какой беде бы вы его не посвятили, не бойтесь, а расскажите прямо. И я тому кто его растолкует, подарю тысяча золотых, – сказал.

Ученые как бы не старались, ни один не смог растолковать. Тогда царь, рассказав всему народу увиденный им сон, объявил, что растолковавшему отдаст тысячу золотых. Народ очень опечалился.

В то время недалеко от места, где жил царь, в маленьком селе жил-был один бедняк. За всю свою жизнь он вдоволь не смог насытиться, и ни одна новая одежда его тела не касалась. И этот джигит, услышав про то, что хан увидел сон, и отдаст тысяча золотых тому, кто растолкует, всю ночь до утра не сомкнул глаз от большого стремления забрать эти деньги.

А в один день: «Несчастный я, если не расскажу все, что об этом думаю. Кто знает, может он согласится с тем, что я расскажу, и отдаст мне эти деньги», – сказав, собрался.

Пройдя половину пути, этот голодный слабый человек, уставший остановился возле родника, чтобы отдохнуть. Сложив в двое свою старую шляпу, смастерив что-то вроде ковша, испив из родника, помыв руки и лицо, он сел в прохладе родника.

Он про себя: «Интересно, как мне растолковать этот сон», – говоря, пока думал, откуда-то вылезла рыжая змея, подползла, выпила этой воды, повернулась к нему:

– Почему печален? О чем думаешь? Куда путь держишь? – заговорила красивым человеческим языком. А он, ничего не скрывая, рассказал змее. Тогда змея:

– Тебе повезло, встретив меня. Я растолкую этот сон, но эти тысяча золотых мы поделим между собой поровну: пятьсот тебе, пятьсот мне. Если ты согласен поступить так, как я скажу, расскажу, только ты дай слово не обмануть меня. Меня и на обратном пути найдешь возле этого родника. Если, посмотрев, не найдешь, свистнешь три раза, я к тебе выйду, – сказала.

Этот бедняк обещал сделать все так, как велела змея. Змея сон растолковала так: «Ты сам подойди к царю, чтобы кроме вас двоих не было никого, дай ему рассказать тебе одному свой сон, а потом скажи ты: «В твоём народе сейчас люди тебя не любят, открыто не говорят, но хитростью и обманом вместо тебя хотят назначить царем другого. Поэтому на каждые сто дворов назначь одного управляющего, они раскроют заговорщиков и остановят их», – сказал.

Бедняк, сделав точно так, как сказала рыжая змея, сказал так, как она научила. Царь принял то, что он ему рассказал и отправил, отдав ему тысяча золотых.

Но бедняку уже стало жаль отдать змее половину этого золота, он ушел другой дорогой домой и начал хорошо жить. А змея осталась ждать зазря.

Через некоторое время: примерно через год или через два года, тот же царь во сне увидел, что его народ до единого стали волками. Опять же собрал

ученых, и предсказателей и спросил, знающих не было. Теперь объявил народу, что тому, кто сможет предсказать отдаст две тысячи золотых. Тот же мужик, теперь его состояние улучшилось, однако в надежде, шел опять той же дорогой, опять же сел у того же родника. Свистнуть, стыдится змеи, за то, что в тот раз не отдал его долю. Без змеи сам сон предсказать не сможет.

Пока он так стоял, опять та же змея вышла, выпила воды:

– Почему опечалился? Куда путь держишь, – спросила. Этот рассказал про второй сон царя, и про то, что он отдаст две тысячи золотых. Ни мужик, ни змея ни вспомнили про то, что в тот раз он не принес ее долю.

Рыжая змея:

– Иди и заставь царя самому рассказать сон: «Раньше, когда тебя решили обманом свергнуть, ты, узнав об этом, остановил их, поставив на каждые сто домов одного смотрящего. А теперь весь народ, восстав против тебя, хотят тебя насильно свергнуть. Ты поставь на каждые десять домов одного смотрящего, убытки соберешь у людей, таким образом, отгородишься от несчастья», – сказал.

Этот мужик пошел, сделал все, как сказала змея, забрал две тысячи золотых, не отнес долю змеи, а пошел другой дорогой и начал жить хорошо.

Царь опять увидел третий сон: его народ все до единого превратились в баранов, а сам стал их пастухом. А тому, кто предскажет этот сон, обещал три тысячи золотых. Однако никто не смог предсказать, позвал того мужика, который в тот раз предсказал. А этот, стыдясь пойти к змее, вдруг если раскроется, боялся, что царь убьет, от беспомощности пришел опять к тому роднику. Змея, ничего не сказав за то, что обманул, спросив мужика, услышав сон, научила: «Теперь народ подчинился тебе, забыв плохие умыслы. А теперь ты зря не трагся, убери тех смотрящих, скажи». Мужик сделал все так, забрав три тысячи золотых, принес целиком змее и признался в своей неправоте.

Змея же: «Ты не виноват, это время такое. Когда народ ходит, превратившись то в лисиц, то в волков, а ты один из них, и стал таким же как они. Теперь народ исправился, и ты исправился. Но мне деньги не нужны. Я сказала, чтобы тебя испытать «Пусть дорога твоя будет из ваты, пусть жизнь будет счастливая», – сказав, проводила.

«Голод не оставит стыда» (пословица).

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 17. Когда, где, от кого, кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Иногда в сказках о животных человек становится настолько близко к ним, что может овладеть и его свойством, а именно, понимать язык зверей и птиц. Эта сказка поучительного характера является вариантом сказки «Рыжая змея». Отличие в том, что сказители разные и конец данной сказки заканчивается пословицей и пожеланиями: «Голод не оставит стыда»; «Пусть дорога твоя будет из ваты, пусть жизнь будет счастливая».



БЁРЮ, ТЮЛКЮ, АТ

Эртте, бек эртте заманда бёрю, тюлкю, ат шуёхла болгъандыла. Жаз ала кереклилерин табып, кыйналмай жашагъандыла. Къыш келди, терен къар жауду. Ат, туякълары бла къарны къазып, къаудан ашай эди. Ингирде жазгъыдача тоюп келе эди.

Бёрю уа эрттенден ингирге дери, ашарыкъ излей, жортуп айланганлыкъгъа, жукъ да тапмай ачлай къайытханды. Тюлкю да аны кирик, ары-бери чабып, чычхан гылыу тапсам эди деп, тешик тюплерине къарап, жукъда тутмай, ачдан ёле, къайыта эди.

Атны токълугъу аланы ачыуландырып: «Энди мынга не хата этейик», – деп, бёрю бла тюлкю кенгешгендиле.

– Бир хыйла бла атны алдап, аны ашамасакъ, экибиз да ачдан ёллюкбюз, – дегендиле.

Андан сора, бир ингирде, бёрю атха, тюлкюге да айланып, сёлешгенди:

– Бизни ишибиз осалды. Бу таулада терен къар жаууп, бизге бек кыйынды, ачдан ёлюрге жетгенбиз. Биз акъыллы болуп, бир амал этмесек, кырыллыкъбыз.

– Манга сёз берсегиз, мен сизге болушургъа болурма, – дегенди хыйлачы тюлкю.

– Нек бермей эдик биз санга сёз? – Эшта, сен акъылсыз сёз айтмазса.

– Угъай, тенглерим, манга, сиз умут этгенча, аллай акъыл къайда. Уллу акъыл менде болмагъанды, болгъан да этерик туюнюлдо, алай, мени муратыма кёре, былай этсек, барыбызгъа иги болур эди дейме: хар бирибиз анга ненча жыл болгъанын жашырмай айтсын, ким тамата эсе да аны ашарбыз. Бирда андан башха амал жокъду деп, мен кысмайма, сизден жаш мен да болмам. Сагъыш кесигиз этигиз.

– Тюлкю тюз айтханды деп, мени акъылым алайды. Сен а анга къалай къарайса? – деп, бёрю атха соргъанды.

– Мен а не айтайым, – дегенди ол. – Ючюбюзда бери бирге келгенбиз, урушмай-туююшмей, бек ариу жашагъанбыз. Кыйынлыкъ жетген кюн а бир-бирибизни ашау бир затха ушатмагъан ишди, Аллах, адам да бизге не айтыр! Алай сиз экигиз да бир болуп, таматаны ашайыкъ дей эсегиз, мен да угъай демейме.

– Аллах болушса, атны ашарбыз, бир иги тоярбыз, – деп тюлкю бёрюню къулагъына шыбырдады.

Хар бири жыл санларын айтып башладыла. Бёрю айтды:

– Мен эминаны* биринчи заманында туугъанма.

– Эй, да мен а сенден кичи кёреме, – дейди тюлкю, – мен экинчи эминаны заманында туугъанма.

– Энди сен айт, – дедиле атха бёрю да, тюлкю да.

– Тюзюн айтсам, – дейди ат, – биринчи, экинчи эмина да къачан болгъанындан мени хапарым жокъду, аны ангылагъан да этмейме. Айып этмегиз, туугъан жылымы билмейме, айтхан эселе да унутханма. Мени анам, хариц, жаннетли болсун аны жаны, унутуругъуму билип, туугъан жылымы онг арт туягъыма жазгъанын айтыучу эди. Аны унутмай турама. Мен не окъуй-не жаза билмейме, окъуяллыкъ бар эсе, келигиз да къарагъыз.

* Эмина – чума, холера.

– Атам-анам мени окъургъа юйретмегендиле, алай окъуялгъан а этерикме, – дейди бёрю.

Терк окъуна жеринден къобуп, бёрю атны арт туягына жууукълашды. Тюлкую да ашыгъышлы сакълай эди, кеси да бёрюге кёз къыса, бусагъат экибиз да тоябыз, деген мурат бла къууана эди. Бёрю, эринлерин жалай, гимхотун алгъа созуп, къараргъа хазырланды. Ат да, аягъын кётюрюп, кючю келгени чакълы бирге, бёрюню башына урду. Башы чачылып, бёрю жерге къапланды да къалды. Асыры къоркъгъандан, тюлкуюню эси ауаргъа жетди, кёзлери жукъ кёрмей, жеринден да къобалмай, бир кесек мычыды, ай, сора, къычырыкъ этип, мыллыгын алайдан атды. Къарап-къарагъынчы, агъачны жетип, ары ташайды.

Ат тауладан ырахат тюшдю да, тюзледе жашап башлады.

Ма андан бери атны, тюлкуюню бла бёрюню арасында шуёхлукъ жокъду.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 18 паспорт. КъМАССР-ны Хабаз элинде Бёзюланы Ахматдан жазылгъанды. Къачан, ким жазгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кётюргенди.

Ат кеси аллына да эркинликни бла иичиликни белгисиди, жомакълада игиликни белгилеп кёргюзтген баш жигитди. Бу жомакъда ол, аны ашаргъа мурат этген, жьыртхыч жаныуарла бла шуёхлукъ жюрютеди. Алай ат кесини къаты эсин тас этмей, шуёхларын угъай, жауларын алдау, хыйла акъыл бла хорлайды. Бу жаныуар, хыйлачы тюлкуюню алдагъан эм халге юйретген, кеп болмагъан жаныуарланы санына киреди.

ВОЛК, ЛИСА, ЛОШАДЬ

Раньше, давным-давно волк, лиса и лошадь были друзьями. Летом они все добывали и жили, ничем не обременяясь. Зима наступила, выпал глубокий снег. Лошадь, выкапывая копытами снег, ест сухую траву под ним. Вечером возвращалась домой сытой, как и летом.

А волк с утра до вечера, разыскивая, что поест, хоть и бродил, возвращался ничего, не находя. Лиса тоже, как и он, бегала туда-сюда, думая: «Хоть бы нашла крысу», смотрела в норки, ничего не находя, умирая с голоду, возвращалась.

Тучность лошади их очень злила: «Как бы ей навредить», – сказав, волк и лиса посовещались.

– Если мы хитростью не обманем лошадь, если ее не съедим, мы оба умрем с голоду, – сказали.

После этого, в один вечер, волк повернулся к лошади и лисе, и сказал:

– Наши дела плохи. В этих горах выпал глубокий снег, нам очень трудно, умираем с голоду. Если мы не соберемся с умом, и не придумаем что-нибудь, умрем.

– Если вы мне дадите слово, может я смогу вам помочь, – сказала хитрая лиса.

– Почему не дадим тебе слово? Видимо ты не скажешь плохого.

– Нет, друзья мои, откуда у меня такой ум, как вы думаете. Большого ума у меня не было, и не будет никогда, но по моему мнению, если мы



сделаем так, считаю, что всем нам было бы лучше: пусть каждый из нас, не скрывая, расскажет по сколько им лет, кто старше, того и съедим. Что другого выхода нет, я не настаиваю, наверное, и я не старше вас. Сами подумайте...

– Я думаю, что лиса права. А ты как на это смотришь? – спросив, волк спросил у лошади.

– Что я могу сказать, – сказала она. – Мы все трое пришли сюда вместе, не ссорясь-не дерясь, очень хорошо жили. Но когда пришло несчастье поедание друг друга – это ни на что не похоже. Что нам Аллах и люди скажут! Но если вы вдвоем вместе предлагаете съесть старшего по возрасту, то я не против этого.

«Аллах повелит, съедим лошадь, хорошо насытимся», – сказав, лиса прошептала в ухо волку.

Каждый начал называть свой возраст.

Волк говорит:

– Я родился в первый год чумы.

– Эй, оказывается я младше тебя, – сказала лиса, – Я родилась во вторую половину чумы.

– Теперь скажи ты, – сказали лошади лиса и волк.

– Честно сказать, – сказала лошадь, – мне не известно когда была первая или вторая чума, я это даже не понимаю. Не посчитайте за позор, не знаю свой год рождения, если даже сказали, то забыл. Моя мать, покойная, пусть будет в раю ее душа, зная, что забуду, говорила, что мой год рождения написала под моим правым копытом. Этого не забыл. Я не умею ни писать, ни читать, кто может прочитать, идите и посмотрите.

– Моя мать и отец меня читать не научили, но прочитать я смогу, – сказал волк.

Быстро вскочив с места, волк приблизился к заднему копыту лошади. Лиса тоже спешно ждала, а сама подмигивала волку, с намерением, что сейчас насытимся, радовалась. Волк, облизывая губы, засунув морду вперед, собрался рассмотреть. А лошадь, подняв копыто, изо всех сил ударил волка по голове. С разбитой головой волк свалился на землю. От страха лиса чуть в обморок не упала, ее глаза ничего не видели, не могла встать с места, немного задержалась, ай, а потом с криком, бросила свое тело от туда вон. В мгновение ока, добежала до леса и исчезла там.

А лошадь спокойно спустилась с гор и начала жить на равнине.

Вот с тех пор между лошадей, лисой и волком дружбы нет.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 18. Записано в с. Хабаз КБАССР от Бозиева Ахмата. Когда и кем осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Лошадь сама по себе является олицетворением свободы и трудолюбия, в сказках выступает как атрибут положительного героя. В данном тексте она состоит в дружбе с хищными зверями, которые хотят его съесть. Но лошадь, сохраняя холодный разум, побеждает своих уже не друзей, а врагов хитростью и смекалкой. Это животное одно из немногих, которые смогли обхитрить и проучить коварную лису.

КЮЛТЫПЫСЧЫКЪ

Эртте-эртте бир кюлтыпысчыкъ* зашап болгъанттей. Ол а эшикке бирда цыкъмауцеттей. Цыхса да кѣп турмай юйге къайтыуцу эттей. Бир кюн алай эшикке цыгъып къайтып келсе юйюне бир текецик кирип турийиттей. Аппакъ текецикни кирип кюлюп къаза тургъаннгы кѣргентта, зылагъантта, артха къасханды, кюлтыпысчыкъ. Баргъантта бир таш башына мингента: хайда зыла, хайда зыла.

– Ы-ы-ы, юйюме бир зат киргентта, кетерге унамайды. – Ы-ы-ы, нетейим. Ы-ы-ы, – дегенттей.

Аны алай зылай тургъанын бир цыфцыхцыкъ кѣргенттей. Сора соргъанды:

– О, нек зылайса, кюлтыпыс, не болгъанды?

– Да, зыламайын а, не этейим, эки къулагъы тѣре болуп, эки мюйюзю ёре болуп, юйюме бир зат киргентта, кетерге унамайды. Ы-ы-ы, – дегенттей.

– Келци, кюлтыпыс, аны мен къыстайым, – дегентта, цыфцыкъ кюлтыпысны биргесине юйюне баргъанды. Келсе уа, текецик, цуцхумагъан зери къалмай, пырх-цырх этип айланыиттей. Кюлтыпыста бир занына букъкъанды. Цыфцыхцыгъа, юйге кирип, текецикни тѣгерегине: «Чыф-пыж! Чыж-пыж», – деп айлана кетхентта, текецик юркентта, къацхантта кетхенди. Цыфцыхцыгъ айтханды кюлтыпысчыкъгъа: – Кир энди юйюнге, къыстадым текени да. Къоркъмай заша, зылама энди.

Талай заманны зашагъанды кюлтыпысцыгъ юйюнде. Сора, бир кюн къараса, эмегенни аны юйю таба келе тургъанын кѣргенди. Асыры къоркъкъандан, не этерге билмегентта, къацып дюгерликке минггенди.

Эмеген, оттан кесеу сермеген, кюлтыпысчыкъны юйюне ктргентта:

– Ким барды юйде, – деп сѣлешгенди.

– Мен барма, – деп, кюлтыпысчыкъ дюгерлихтен сѣлешхенди.

– Ким жукълау да, ким ияу? – дегенди эмеген.

Кюл ичинде кюлтыпысчыкъ:

– Мен ияу, – дегенди кюлтыпысчыкъ.

– Кимсе сен? Къайданса сен а? – дегенди дагъыда эмеген.

– Мемме. Д-д-дюгерлихт-те турама, – дегенди кюлтыпысчыкъ.

– Андамы турса? Ы-ым, сора, – дегентта эмеген, кюлтыпысчыкътан: «Къой, ол мени ашар да къояр, мен аныца бийикгеми миналмам», – дегентта, къоркъкъантта кетхенди.

Кюлтыпысцыгъ а аннан сора бираз батырыракъ болгъантта, ашап-зашап къалгъанттей. Аны кѣзюбюз бла кѣрмегенибиз кибики, ауруу-талау кѣрмей къалайыкъ.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 19 паспорт. КъМАССР-ны Хасанья элинде 1894 жылда туугъан Таумырзаланы Къурманны къызы Зариятдан 1959 жылда Таумырзаланы Д.М. жазгъанды.

Архивден Гергъоқъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Жомакъны энчилигинден бири магъанасыды. Аны ѳтюрюк, сейир-тамаша халы барды, не ючюн десенг, бир баш жигити къурап айтылгъан персонажды – эмеген.

* Кюлтыпыс – лентяй.

Жомакъ юйретиу халда жюрютюледи. Муну мардасында юйретиу кезиуле салынындыла. Жомакъны битеу сулатлау магъанасы ахыр айтыуда жыйылынды: «Аны кёзюбюз бла кёрмегенибиз кибик ауруу, талау кёрмей къалайыкъ», ол мында хар зат къралып-куралып болгъанын ангылатады.

ЛЕНТЯЙ

Давным-давно жил-был один лентяй, говорят. Он никогда не выходил на улицу, говорят. Если выходил, то через немного возвращался домой, говорят. Однажды, когда он вышел и возвратился домой, в его дом зашел один козленок, говорят. Когда увидел, что чисто-белый козленок зашел и копошился там, заплакал и обратно убежал лентяй. Пошел, полез на один камень и давай плакать, давай плакать.

– Ы-ы-ы, кто-то зашел в мой дом и не хочет уходить. Ы-ы-ы, что мне делать. Ы-ы-ы, – сказал, говорят.

Его так плачущего увидела одна птичка, говорят.

Тогда спросила:

– О, зачем ты плачешь, лентяй, что случилось?

– А что мне делать, как не плакать, оба уха торчат по сторонам, оба рога торчат вверх, ко мне в дом кто-то зашел и не хочет уходить. Ы-ы-ы, – сказал, говорят.

– Идем, лентяй, я его прогоню, – сказала, и птичка с лентяем пошла с ним к нему домой. Когда пришла – это козленок ходил, пыхтя, не осталось места, где он не ковырялся. Лентяй спрятался в сторонке. А птичка зашла в дом: «Чыж-пыж! Чыж-пыж», – крича, летала, козленок испугался и убежал.

Птичка сказала лентяю:

– Зайди теперь в дом, я прогнала козленка. Живи, не боясь, и не плачь больше.

Некоторое время лентяй жил в доме. Вдруг в один день смотрит и видит, что к его дому идет великан. Из-за огромного страха, не зная, что делать, побежал (лентяй) и залез на крышу.

Великан зашел в дом лентяя и схватил из огня головешку.

– Кто есть в доме? – сказал.

– Я здесь, – сказав, лентяй ответил из крыши.

– Кто спит, а кто не спит? – спросил великан.

– Я не сплю, – ответил лентяй.

– Кто ты? Откуда ты? – спросил еще великан.

– Это я. На крыше нахожусь, – ответил лентяй.

– Ты там находишься? Ы-ым, тогда, – сказал великан, лентяя: «Оставлю (его) тогда, а то он меня съест, я не смогу подняться так высоко как он», – подумав, испугался и ушел.

А лентяй после этого немного осмелел и стал жить-поживать. Так же, как мы это не видели глазами, пусть не увидим болезни.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 19. Записал Д.М. Таумурзаев в 1959 г. в с. Хасанья КБАССР от Таумурзаевой Зарият Курмановны (1894 г.р.).

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Одной из отличительных черт сказки является сюжет. Он носит вымышленный, фантастический характер, так как в данной сказке один из героев вымышленный персонаж – великан.

Сказка «Лентяй» несет воспитательную функцию. Здесь заложены поучительные моменты. Вся художественная ценность сказки концентрируется в последней фразе текста: «Так же, как мы это не видели глазами, пусть не увидим болезни», которая объясняет, что это все вымышленно и придумано.



КЪАРГЪА БЛА БАЛАЛАРЫ

Эки уллу тенгизни арасында бир ариу айыркъам болгъанды. Ол айыркъам. Къалын агъач бла жабылып эди. Бир бийик терекни баш чокайында къаргъаны уясы, уясында юч баласы ёсе эдиле.

Бир кюн айыркъамны бир жанындан от тюшгенди. Жел отну ашырып, отну къанатлары жел бла юзюлюп, тереклени башлары бла ауа тебирегенди. Кириши тартып жаннган ёрген, къаргъагъа къоркъуу салгъанды. Къаргъа тёрт жанына къарагъанды, галасха къалгъанды. Ёзге мадар тапмай, кечер къайгыгъа киргенди.

Абадан баласын аркъасына салып, уча-уча барып, тенгизни юсюнде тохтап:

– Ха, балам! Мен сени былай кёп къыйынлыкъгъа къалып ёсдюреме. Мен къарт болсам, сен манга къарармыса, бу къыйынымы эсинге алырмыса, – деп соргъанды.

Баласы:

– Айхай къарарма, анам. Сыртыма кётюрюп турурма, – дегенди.

– Ай, налат, ётюрюк айтаса! Тюзюн айтмайса, – деп, баласын тенгизге атып кетгенди.

Къайытып барып, аны кичисин келтирип, тенгизни юсюнде анга да тамата баласына соргъаныча соргъанды. Ол аныча: «Къарарма», – деп жууап бергенди.

– Ай, налат, сен да жалгъанчыса, ётюрюк айтаса, къарарыкъ туююлсе, – деп, аны да тенгизге ташлап, биягъы уясына кетгенди.

Эм кичи баласын сыртына кётюрюп, уча-уча барып, тенгизни юсюне жетгенде:

– Аха, кичи балам! Барындан да сени бек сюе эдим. Мен сени бу къадар кёп къыйналып ёсдюреме, мен гым-гым къарт болсам, анамса деп сен манга къарармыса, – деп соргъанды.

– Сен атанга-ананга къарагъанча, мен да санга къарарма. Андан артыкъ къараялмам. Сени да ананг ёсдюргенди. Сен да мени тапханынг кибик, ёсдюрюрге борчунгду. Сен ананга этгенлей, мен да санга этерме, – деди.

– Ыхы, сен манга ахшы туююлсе, болсада кертисин айтдынг, – деп, тенгизден ётдюрюп, агъачха бошлап кетгенди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 20 паспорт.

Насталаны С.Б. жазгъанды. Къачан, къайда, кимден жазылгъаны белгисизди.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Къаргъа къарачай-малкъар жомакълада эм баиша къырал жомакълада – ол биринчиден хар зат да билген, бек акъыллы къанатлыды. Кёбюсюне ол акъыл бла узакъ ёмюр бла байламлы болады. Бу жомакъда къаргъа балаларын къутхара, хар биринден энчи сорады, къартлыгъында анга къарарыкъмыды деп. Биринчи экисини жууаплары аны ыразы этмейди да, ол аланы, башы бла алып баргъан, тенгизге атады. Ючюнчюсю уа анга тюзюн айтады, сабийине этилгенин, атасы анасы анга да этгенин.

Жомакъны баш ниети: сен сабийлеринг сыйынгы кётюрююн сюе эсенг, атангы-анангы сыйын кётюр.

ВОРОНА И ЕЕ ПТЕНЦЫ

Между двумя большими морями был один красивый остров. Этот остров был покрыт густым лесом. На самой верхушке высокого дерева было гнездо вороны, а там росли три ее птенца.

Однажды в одной стороне острова начался пожар. Ветер гнал огонь так, что крылья огня отрывал ветер, и они стали переходить через верхушки деревьев. Морозящий огонь представлял опасность для вороны. Ворона посмотрела на все четыре стороны, начала тревожиться. Не находя другого выхода, собралась уйти отсюда.

Старшего птенца, посадив на спину, летела-летела и, остановившись над морем, спросила:

– Ха, птенец мой! Я тебя с таким трудом ращу, когда я состарюсь, ты будешь за мной ухаживать, вспомнишь про мой труд?

Птенец:

– Конечно, буду ухаживать. Буду носить на спине, – сказал.

– Ай, бесовестный, врешь! Правду не говоришь, – сказав, сбросила птенца в море и улетела.

Вернувшись, принесла его младшего и над морем спросила его о том же, что и старшего. Он, как и тот, ответил: «Буду ухаживать».

– Ай, бесовестный, ты тоже обманщик, говоришь неправду, не будешь ухаживать, – сказав, сбросила его в море, опять вернулась в гнездо.

Самого младшего, посадив на спину, летела-летела, когда долетела до середины моря:

– Аха, младший птенец! Больше всех тебя любила. Я тебя ращу с таким огромным трудом, когда я очень состарюсь, будешь ли ты за мной ухаживать, называя матерью, – спросила.

– Точно так же, как ты ухаживала за отцом и матерью, я за тобой буду ухаживать. Лучше не смогу ухаживать. И тебя мать вырастила. Так как ты меня родила, обязана вырастить. Что ты сделала для матери, я сделаю и тебе, – сказала.

– Бхы, ты для меня не лучший, но, по крайней мере, правду рассказал, – сказав, перенесла через море и, отпустив в лес, улетела.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. Папка 45, паспорт 20. Записал С.Б. Настаев. Когда, где, от кого осуществлена запись, неизвестно.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Ворона в карачаево-балкарских сказках и в сказках других народов – это, прежде всего, вещая и очень разумная птица. В основном она ассоциируется с мудростью и долголетием.

В данной сказке ворона, спасая свих птенцов, спрашивает у каждого, будет ли тот смотреть за ней в старости. Ответ первых двух ее не удовлетворяет, и она бросает их в море, через которое несла их. А третий с ней был честен в том, что все что ни делаешь для детей, для тебя же сделали родители.

Мораль сказки: если хочешь, чтобы твои дети тебя уважали, уважай своих родителей.



БЁРЮ

Бир бёрю мардасыз ач болуп кетип бара, агъач кыйырында сюрюуден айырылып тургъан бир арыкъ кыйгъа жолукъгъанды.

– Аха, энди сени ашап бир тояйым, – деп, ауузун да кенг ачып, кыйгъа чапханды.. Кый кюлгенди.

Бёрю сейир болуп:

– Неге кюлесе, мен бусагъат сени ашайма, – дегенде, кый:

– Мен аны билип, сени телилигинге кюлеме. Сен мени немми ашарыкъса? Тери бла сюек болмаса, ёнге затым жокъ. Алай сен ач эсенг, мен сюрююню жетейим да, семизлеринден артха бёлейим. Ол заманда зауукъ этерсе дегенди.

Бёрю да кыйну сёзюне ийнанып, бёледидеп сакълап, кый да къутулуп кетгенди.

Биягъы бёрю бара кетип, батмакъгъа жатып тургъан гаммешни кёрюп, ашаргъа тебирегенди. Гаммеш да угъай дегенди.

Болсада:

– Мени юсюм былай кир болуп тургъанлай, сенича таза жаныуар мени къалай ашайлыкъса жийиргенмей, – деп, кирип жуугъан сылтау бла, суугъа кирип, жюзюп, ол жанына ётүп, къутулуп кетеди.

Бёрю да биягъы аш излей бара, наллары бла да отлай тургъан бир атха тубеп:

– Аха! Энди сени да ашайым, – дегенди.

Ат:

– Мен бек ырызыма. Кесим да сени излеп тура эдим. Мен кесими санга къурманнга береме, алай тилейме, бир да болмай эсе да арт аягъымда налымы бир къобар деп.

Бёрю налны къобарыргъа, артына баргъанлай, уруп, бёрюню бетин жарып, ёлтюргенди.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 45 папка, 20 паспорт. КъМАССР-ны Огъары Басхан элинде 74 жылы болгъан Къурданланы Исмаилден 10.07.1968 жылда Асанланы Ю.Н. жазгъанды.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Бёрю жаныуарланы юсюнден къарачай-малкъар жомакълада кыызгъанчлыкъ бла огъурсузлукъну белгисиди. Аны кёбюсюне акъылсыз жигитча кёргюзтедиле, аны ючюн хар заманда да аны жомакълада андан акъыллыракъ жигитле алдайдыла, сёз ючюн, бу жомакъда кый, гаммеш, ат. Бёрю хар заманда да ач турады эм баиха жаныуарланы тынч жашауларын бузады. Аны ючюн баиха жигитле аны сюймейдиле.

ВОЛК

Один волк беспредельно голодный, пробегал и на окраине леса встретился с одним тощим бараном, который отбился от стада.

– Аха, теперь я насытюсь, съев тебя, – сказав, широко раскрыв пасть, набросился на барана. Баран рассмеялся.

Волк удивленно:

– Чему смеешься, я сейчас тебя съем, – сказал, но баран:

– Я, зная это, смеюсь твоей глупости. Ты что у меня съешь? Кроме кожи да костей другого ничего у меня нет. Но если ты голоден, я догоню стадо и отделю назад из стада жирных баранов. Тогда насладишься, – сказал.

Волк же, поверив словам барана, ждал, что поделит назад из стада жирных баранов, но баран сбежал.

Опять же волк шел-шел, встретил лежащего в грязи буйвола и бросился его съесть. Буйвол тоже не воспротивился. Все же сказал:

– Как ты, такой чистоплотный зверь, сможешь меня съесть, не брезгуя, таким грязным, – и с причиной пойти и смыть с себя грязь, зашел в реку, переплыл на тот берег и скрылся.

А волк опять искал еду и шел, встретившись с одним пасущимся подкованным конем:

– Аха! Сейчас я тебя съем, – сказал.

Конь:

– Я очень доволен. Я и сам тебя ходил, искал. Я тебе себя отдаю на курман, но прощу, что бы ни было оторви подкову на моем заднем копыте.

Как только волк подошел сзади, чтобы оторвать подкову, (конь) ударил, разбив волку морду, убил.

Архивный фонд КБИГИ. Балкарский фольклор. Папка 45, паспорт 20. Записал Ю.Н. Асанов 10.07.1968 г. в с. Верхний Баксан КБАССР от 74-летнего Курданова Исмаила.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Волк в карачаево-балкарских сказках о животных традиционно олицетворяет собой жадность и злобу. Его часто изображают глупым персонажем, поэтому его часто одурачивают герои сказок поумнее и хитрее, например, в данной сказке баран, буйвол и конь. Волк всегда голоден и нарушает безмятежную жизнь животных, за что другие персонажи его не любят.



УЛАКЪЧЫКЪЛА

Бир тар сызганы ичи бла суучукъ саркъа эди. Ол сызганы уа эки жаны да уллу агъач болганды. Бир уллу терек сызганы чегет жанындан аугъанды да, кюнлюм жанына баш къыйыры тийип тохтаанды.

Энишге тигелеп, суучукъгъа кирип ётерге да чырмала турмай, ол тар кёпюрню юсю бла терк окъуна тар сызганы бир жанындан бирси жанына ётуп кетерге бек тап болганды. Алай бир хайыуан кеси жангыз болмаса, экеу бирге жанлап ётерге да амал болмагъанды: терек кёпюр такъыр болганды.

Бир кюнлени кюнюнде эки улакъчыкъ сызганы эки жанына экиси келгендиле.

Бир улакъчыкъ чегетден кюнлюмге ётерге суйгенди, бирси улакъчыгъа кюнлюмден чегетге ётерге суйгенди.

Эки улакъчыкъ да терек – кёпюрню эки жанындан юсюне мингендиле. Улакъчыкъла бара-барып, кёпюрню тюз ортасында бир-бирге тюбешгендиле. Улакъчыкъла кёпюрню ортасында бир-бирге тюбегенлеринде, экиси да бир-бирге бек махтанышхандыла эм ёхтемлешгендиле.

Чегетден келген улакъчыкъ кюнлюмден келгеннге:

– Жол болсун! – дегенди.

– Сау бол! Санга да жол болсун! – деп, бирси да жууаплагъанды.

– Сен къайры бараса? – деп бирси соргъанды.

– Мен кюнлюмге барама, сен а къайрыса? – деп экинчиси соргъанды.

– Мен да чегетге, – дегенди

– Манга жол къой, келгеними кёрмеймисе, – деп бири айтханды.

– Сен жол къой, мени келгеними уа сен кёрмеймисе, – деп экинчиси айтханды.

Даулашхандыла-даулашхандыла да, болмагъандыла.

Даулашхандыла-даулашхандыла, бири да бири айтханны ётерге унамагъанды.

Сора туююшуп тебирегендиле.

Туююшгендиле-туююшгендиле да, экиси да суугъа кетгендиле.

Ала уа экиси да бир анадан эгиз туугъан къарындашчыкъла болгъанларын билгендиле.

Аллай бош махтанчакълыкъ бла керексиз ёхтемликни палахындана жоюлгъандыла да кетгендиле.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 34 папка. Отарланы К.С. сабийлеге хазырлагъан «Малкъар жомакъла» деген китанны къол жазмасы.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчургенди.

Жомакъ бир бирге жол берирге унамагъан, эки улакъ къарындашланы юсюнденди, насийхат халда жазылгъанды. Ахырында керексиз махтанчакълыкъны, ёхтемликни хатасындан экиси да керексиз жоюладыла.

КОЗЛЯТА

По узкой ложбине текла речка. По обе стороны этой ложбины был большой лес. Одно большое дерево упало с западной стороны ложбины и остановилось, зацепившись верхним краем за восточную сторону.

Чтобы не спускаться вниз, заходить в реку и создавать препятствия себе, стало очень удобно переходить через этот узкий мост с одной стороны ложбины в другую. Но только одно животное, а не вдвоем рядом, могли перейти, мост из дерева был очень узок.

Однажды два козленка с двух сторон ложбины подошли туда.

Один козленок хотел с северной стороны перейти на южную, а другой козленок хотел перейти с южной на северную.

Оба козленка быстро взобрались с двух сторон на мост. Козлята шли-шли и встретились друг с другом прямо посередине моста, оба похвастались друг другу и гордились друг перед другом.

Козленок, шедший с северной стороны, сказал тому, который шел с южной:

– В добрый путь!

– Спасибо! И тебе в добрый путь! – сказав, ответил другой.

Ты куда идешь? – спросил другой.

– Я иду на южную сторону, а ты куда? – сказав, спросил второй.

– А я на северную сторону.

– Уступи мне дорогу, не видишь, что иду, – сказал один.

– Ты уступи дорогу, а ты не видишь, что я иду, – сказал второй.

Спорили-спорили, не получилось.

Спорили-спорили, ни один не захотел сделать то, что говорит второй.

Тогда начали драться.

Дрались-дрались и оба упали в воду.

А они тогда узнали, что близнецы, родившиеся от одной матери.

Из-за этой простой хвастливости и по вине ненужной гордости бесполезно пропали.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. 34 папка. Рукописный вариант книги «Балкарские сказки», подготовленной К.С. Отаровым для детей.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка поучительная о двух козлятах-братьях, которые не могут уступить друг другу дорогу. В итоге из-за ненужной хвастливости и по вине излишней гордости бесполезно пропали оба.



КЮННЮ ЧЫКЪГЪАНЫН КИМ АЛГЪА КЁРЮР?

Сууукъ кыш жууукълашып тебирегенди. Агъач жаныуарла барысы да жыйылгъандыла да, битеу кышны узунуна кеслерине ашны кыалай хазырларгъа болаллыкларыны юсюнден оноулашып тебирегендиле.

Кыш сууукъда кеслерине аш излеп, сууукъда желде айланмакылык, алагъа бек кыйын кёрюнгенди.

Оноулашхандыла – кеп тюрлю оноула этгендиле, алай болгъанлыкыгъа бир оноугъа да келишалмагъандыла. Ахырында уа, кеслерини даулашханларын айырып ючюн Алахха барыргъа таукел болгъандыла.

Айыу, бёрю, сюлесин, тюлкю, борсукъ бирге жыйылгъандыла да Аллахха баргъандыла.

Аллах аланы алларына арбазгъа чыкыгъанды да:

– Сизге не керекди? – деп соргъанды.

Бара туруб а оноулашхан этгендиле: Аллах бла тюлкю селеширекди деп.

Сора тюлкю айтханды:

– Аллах, биз санга бек уллу даулашны айыртыргъа деп келгенбиз. Ол да ма буду. Биз кече-кюн да кыарныбызгъа аш мажарлап айланабыз. Биз мындан ары ол жашауну кетюралмайбыз, биз кесибизни уяларыбызда жатып тургъанлай, тойгъан да этип, бир тюрлю затдан да керекли болмай, жарсымай тутур ючюн бизге сен бир зат эт.

Аллах сагъышланнганды да айтханды:

– Агъач жаныуарланы барына да, аланы кеслерини кыйынлары болмагъанлай, кереклерин алай табып турургъа, насыпны барагъызгъа бералмам. Алай ол кюнню бек алгъа чыкыгъанын ким кёрсе да ол аллыкды, – дегенди.

Ол заманда жаныуарла кечени жукъламагъанлай, кюнню кыалай чыкыгъанына тохтагъандыла. Сау кечени узунуна жукъламагъандыла. Аякларыны юслерине сюелгенлей, кюн чыкыгъан жанына кыарап тургъандыла. Тангы тёбен жанындан агъарып башлагъанды. Жаныуарла барысы да кюн чыкыгъан жанына кыараргъа болгъандыла, айыу а хар заманда да аман акылыды. Ол кесини жүрегинде болгъан затны биреуге да ачмаз. Къалгъанла кюн чыкыгъан жанына кыарагъанда, ол а тутханды да ызына айланып Минги тауну башына кыарагъанды.

Минги тауну кюнбатхан жанындагы тёппеси кюн тийип, алтын окъа бёркюн кийгенинде уа айыу:

– Уй, ма, ма, Кюн, – деп уллу кычырып, Минги тауну кюн тийип тургъан тёппесин кёрюзтгенди.

Керти окъуна, пелиуан Минги таугъа кюз арты кюн тийип тургъанын жаныуарла барысы да кёргендиле.

– Жаныуарланы ичинде бек акылы айыуду. Санга битеу кышынга болур кибик чаклы бир аш береме.

Керти окъуна, айыу сау кышны узунуна кесини куркасында жатханлай, кесини табанын эмип, аны бла тоюп турады.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 34 папка. Отарланы К.С. сабийлеге хазырлагъан «Малкъар жомакъла» деген китанны къол жазмасы.

*Архивден Гергъокъланы Л. С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.
Халкъда айтылады, айыу кыишда жукъугъа жатады да, аягъын эмеди деп.
Бу жомакъ да ол ишге аталыпды. Ол магъанасына кёре таурухлагъа жууукъду.*

*Бу жомакъны артдан жазылгъан текстлеге кёшаргъа боллукъду,
ислам дин алыннгандан сора.*

КТО ПЕРВЫМ УВИДИТ ВОСХОД СОЛНЦА?

Холодная зима приближалась. Лесные звери все вместе собрались и начали обсуждать то, как на протяжении всей зимы смогут припасти себе еду.

В холодную зиму, разыскивая себе еду, ходить в холод для них казалось очень тяжело.

Посоветались, много всего разного решили, но, несмотря на это не смогли согласиться ни с одним решением. А в конце, чтобы разрешить свой спор решили пойти к Аллаху.

Медведь, волк, рысь, лиса и барсук собрались вместе и пошли к Аллаху. Аллах вышел во двор их встречать и:

– Что вам нужно? – спросил.

Когда шли, решили, что с Аллахом будет разговаривать лиса.

Тогда лиса сказала:

– Аллах, мы пришли тебе рассказать о большом споре. И вот о нем: мы и днем и ночью добываем для нашего живота еду. Уже дальше мы не можем вынести такой жизни, мы, лежа у себя в норах, чтобы наедались, чтобы ни в чем не нуждались, чтобы ни о чем не переживали, ты сделай что-нибудь для нас.

Аллах задумался и сказал:

– Всем лесным зверям, без их собственного труда, чтобы находили все таким образом, такое счастье всем вам дать не смогу. Но кто самым первым увидит восход солнца, он все получит, – сказал.

Тогда звери всю ночь, не засыпая, стали ждать, как восходит солнце. Всю ночь не спали. Стоя на ногах, смотрели в ту сторону, где восходит солнце. Начало рассветать с северной стороны. Звери все смотрели в сторону восхода солнца, а медведь всегда был коварным. Он никому не откроет то, что у него на душе. Когда все смотрели в сторону восхода солнца, он взял и посмотрел назад на вершину Минги-тау.

У Минги-тау на западной вершине солнце засветило и одело украшенную золотом шапку, медведь:

– Уй, вот, вот, солнце, – сказав, громко закричав, показал освященную солнцем вершину Минги-тау.

И в правду, как на богатырский Минги-тау светило осеннее солнце увидели все звери.

– Среди животных самый умный медведь. Я тебе, чтобы хватило на всю зиму, даю столько еды.

И в правду, медведь всю зиму ледит в своей берлоге, сосет свою лапу, и насыщается этим.



*Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. 34 папка.
Рукописный вариант книги «Балкарские сказки», подготовленной
К.С. Отаровым для детей.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

*В народе говорится, что медведь зимой впадает в спячку и сосет лапу.
Данная сказка посвящается этому событию. Она близка по содержанию
к легендам.*

*Эту сказку также можно отнести к поздним сюжетам после
принятия ислама.*



КИШТИК БЛА ЧЫЧХАНЛА

Киштикни зорлугъундан чычханла тауусулуп къалырғыа жетгендиле. Чычханла жыйылгъандыла да оноулашхандыла: киштик болгъан жерге бармазғыа, анга кёрюнемезге.

Киштик ашарғыа аш тапмай, къыйналып тебирегенди. Айлана-жюрюй кетгенди да, чычханлагыа баргъанды. Чычханла тышына чыгъарғыа унамагъандыла.

Киштик айтханды:

– Сиз менден нек къоркъасыз? Мен кесим этген кёп терсликлерими Аллахха кечдирир ючюн Меккагыа хажиликге барама.

Чычханла ийнанмагъандыла.

Киштик ант этгенди.

– Бизге тиймезге айт, – дегендиле.

Киштик:

– Аллах бла ант этеме – тиймем, – деп сёз бергенди.

Аланы ол ушакъларын бир гитче сокъур чычханчыкъ эшитгенди да, киштикге ийнанмай, къоркъуп, гитче тешикге кирип, букъгъанды. – Антыга ийнанабыз, кел, жууукъ бол, – деп, чычханла эшикни ачхандыла.

Киштик киргенди, ызындан эшиклени къаты бегитгенди.

Сёлеше келгенде, киштик аман акъыл этерге тебирегенди. Алай этген антын бузарғыа болмагъанды. Аны бузар ючюн сылтау чыгъарыргыа башлагъанды.

Киштик огъурсуз ёнде, кесин кёпдюрюп, къуйругъунда къынгыр этип соргъанды.

– Сиз къапчыкъны башы ачылып тургъанлай, аны ичинде башы бла кирмей къапчыкъны тюбюн тешип нек киресиз? – деп соргъанды.

Чычханла айтыргыа жуап тапмагъандыла, бек къоркъгъандыла, тегерекге секиргендиле, болса да юйлерини эшиклери бегитилип болгъаны себепли чыгъалмагъандыла. Ол заманда огъурсуз кишдик чычханланы барын да къыргъанды.

Ол бугъуп къалгъан сокъур чычханчыгыа бууаз эди. Ол чычханчыкъ къозлагъанды да, чычханланы тукъуму дагыда жангыдан алай жайылгъанды. Ол болмаса эди чычханланы тукъуму тюп болуп къаллыкъ эди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 34 папка. Отарланы К.С. сабийлеге хазырлагъан «Малкъар жомакыла» деген китапны къол жазмасы.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ юйретиу халда жазылгъанды. Киштикни жигитини сыфатында жомакъчы зорлукъчуну халин кёргюзтеди. Чычханла уа ышаныучу эм акъылсыз сыфатланадыла.

Жомакъны баш ниети былайды, бир заманда да жарамайды ышаныргыа, бир алдагъанга, алай болса хатадан къачалмазса.

КОТ И МЫШИ

Из-за кошачьего угнетения мыши чуть совсем не закончились. Мыши собрались и договорились: никогда не ходить туда, где есть кот и не показываться ему.

Кот, не находя еду, начал мучиться. Ходил-бродил и пошел к мышам. Мыши отказались выходить наружу (из норки).

Кот сказал:

– Почему вы меня боитесь? Я, что искупить перед Аллахом многие свои грехи, иду в Мекку в хадж.

Мыши не поверили. Кот поклялся.

– Поклянись нас не трогать, – сказали.

Кот:

– Клянусь Аллахом, не трону, – сказав, дал слово.

Их эти разговоры услышала одна слепая мышка, не поверив коту, испугавшись, забила в одну маленькую дырочку и спряталась.

– Мы верим его клятве, добро пожаловать, – сказав, мыши открыли двери.

Кот зашел и за собой сильно закрыл двери.

Пока разговаривали, кот собрался осуществить хитрые планы. Но не мог нарушить данную клятву. Чтобы ее нарушить, начал искать причину.

Кот грозным голосом, напучив шерсть, искривив хвост, спросил:

– Вы, когда мешок открыт, почему дырявите снизу, а не заходите сверху? – спросил.

Мыши не нашли ответа, чтобы ответить, очень испугались, бросились туда-сюда, но так как двери их дома были закрыты, никуда не смогли выйти. Тогда злой кот всех мышей перебил.

А та, спрятавшаяся слепая мышка, была беременная. Эта мышка разродилась, и так собрался весь мышинный род сначала. Если бы не она, весь род мышинный исчез бы.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. 34 папка. Рукописный вариант книги «Балкарские сказки», подготовленной К.С. Отаровым для детей.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Сказка поучительного характера. В образе персонажа кота сказочник выражает характер притеснителя. А мыши доверчивы и глупы.

Мораль сказки такова, что никогда нельзя доверять тому, кто уже один раз обманул, иначе не избежать беды.

НЁГЕРЧИКЛЕ

Къозу къочхарчыкъ, улакъ текечик, тана бугъачыкъ – ючюсю да бир жыйын болуп, къууанчыкъда бек алаMAT ашап-жашап, ырахат тургъандыла. Ала жашагъан тийреде, аланы хорлагъан, башха хайыуан, не уа тап жаныуар окъуна болмагъанды. Бирем-бирем къалсала, аланы хорларыкъла табылып эдиле, алай ала уа ючюсю да бир бирден айырылмай, бирге айланып, къыйынлыкъгъа, зауукълукъгъа да бирден тубей, бир бирге болуша, бир бирни къутхара айлангандыла.

Жаныуарла бла хайыуанла уа алагъа «Нёгерчикле» атагъандыла.

Нёгерчикле къозу къочхарчыкъ, улакъ текечик, тана бугъачыкъ ючюсю да Азау талагъа отларгъа, семиррге алай баргъандыла.

Нёгерчикле отлай-отлай кетгендиле. Азау таланы ариу жашил кырдыкларындан зауукъ этгендиле. Бир кесекден сора къозу къочхарчыкъгъа тана бугъачыкъ айтханды:

– Кел кетейик!

Къозу къочхарчыкъ айтханды:

– Сени бир быдырынг болгъанлыкъгъа, мени юч быдырым барды, мен алыкъа тоймагъанма. Бизни сакъла да, бирге барырбыз.

Тана бугъачыкъ анга тынгыламай, кеси аллына юйге кетгенди. Ол бара-баргъанлай, аллында ана бёрю тубегенди.

– Ашхы улан, жол болсун! – дегенди бёрю.

– Сау бол, – дегенди тана бугъачыкъ.

Ана бёрю:

– Тюбюндегиле нелелле? – деп соргъанды.

– Хабур-чубурчукъларым.

– Башындагъыларынга?

– Мюйюзчюклерим.

– Къуйрукъчугъунг нек къымылдайды?

– Сенден къоркъгъандан.

– Алай ары бир атлачы, – дегенди да, тана бугъачыкъ арлакъгъа атлагъанлай ана бёрю, «хап» дегенди да, тана бугъачыкъны къапханды да къойгъанды.

Бир талай замандан сора улакъ текечик къозу къочхарчыкъгъа:

– Кел юйге кетейик, – дегенди.

Къозу къочхарчыкъ:

– Мен тоймагъанма. Сакъла да, бирге бара-барырбыз, – дегенди.

Улакъ текечик анга тынгыламагъанды да, кеси аллына юйге кетгенди. Бара-баргъанлай, аллында биягъы ана бёрю тубегенди.

– Жол болсун, ашхы улан! – дегенди.

Улакъ текечик:

– Сау бол, – дегенди.

– Тюбюндегиле нелелле?

– Хабур-чубурчукъларым, – дегенди улакъ текечик.

– Башындагъыла уа?

– Мюйюзчюклерим.

– Къуйругъунг нек къымылдайды?

– Сенден къоркъгъандан.



– Арлакъгъа бир атлачы.

Улакъ текечик арлакъгъа атлагъанлай, ана бѣрю аны да къапханды да, кьойгъанды.

Бир талай замандан сора кьозу кьочхарчыкъ юйге тебирегенди. Азау таладан бери тигелегенлей, къарангы агъач ичинде биягъы ана бѣрю аллында тубегенди да:

– Жол болсун, ахшы уланчыкъ! – дегенди.

Кьозу кьочхарчыкъ, ёхтемленип, тик къарап, суху ён бла:

– Сау бол, къарт бѣрючюк, – деп жууаплагъанды.

Ана бѣрю:

– Къайры бараса? – деп соргъанды.

– Юйге, – дегенди кьозу кьочхарчыкъ.

– Кимникисе? – деп соргъанды.

– Домайны, – деп жууаплагъанды.

– Домай кимди?

– Учуду.

– Не уугъа жюрюйдю.

– Бѣрю уугъа.

Ана бѣрю бир кесек къоркъгъанды, алай ашыкъгъанды да, соргъанды:

– Тубюнгдегиле уа нелерингдиле?

– Темир токъмакъларым!

– Башынгдагъыла уа?

– Темир кылычларым!

– Аланы неге жюрютесе?

– Сени кибик аман бѣрючюклени ёлтюрюрге!

Кьозу кьочхарчыкъ алай айтып, ана бѣрюню къоркъутама деп темирчилегенлей, ана бѣрю, къоркъуп, къачама деп секиргенлей, кесин турукъ терекни жютю бутагъына ургъанды да, ёлгенди да, къалгъанды.

Ма батыр кьозу кьочхарчыкъ аман бѣрюню алай хорлагъанды.

КъМГТИ-ни архиви. Таулу фольклор фонд. 34 папка. Отарланы К.С. сабийлеге хазырлагъан «Малкъар жомакъла» деген китапны кьол жазмасы.

Архивден Гергъокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Башында айтылгъан жомакъ шувълукъну юсюнденди. Аны башха вариантлары да бардыла. Аланы баш жигитлери башха юй жануу арладыла, жомакъны магъанасы бирге келишеди. Бу жомакъда бѣрюню кьозучукъ хорлайды, алай башхалада не текечик, не бугъачыкъ болады.

ДРУЗЬЯ

Барашек, козленок и теленок – все втроем собравшись, в радости жили счастливо и спокойно. В той местности, где они жили, не было зверей, или таких животных, которые могли бы их одолеть. Если бы они остались по одному, нашлись бы те, которые могли их одолеть, но они все втроем не расставались, ходили вместе, проходили все трудности и радости вместе, помогая друг другу, выручая друг друга.

Звери и домашние животные дали им название «Друзья».

Друзья: барашек, козленок, теленок втроем пошли на равнину Азау-тала, чтобы пасть и потучнеть.

Друзья паслись-паслись. Наелись красивой зеленой травы Азау-талы. Через некоторое время теленок сказал барашку:

– Давай уйдем!

Барашек сказал:

– Если у тебя есть один желудок, то у меня есть три желудка, я еще не насытился. Подожди нас, вместе уйдем.

Теленок, не послушав его, сам ушел домой. Он шел-шел и впереди встретил волчицу.

– Добрый молодец, в добрый путь! – сказала волчица.

– Спасибо, – ответил теленок.

Волчица:

– Что это у тебя внизу? – спросила.

– Барохло.

– А на голове это что?

– Рожки.

– Почему трясется хвостик?

– От страха перед тобой.

– Пройди-ка вон туда, – сказала, как только теленок прошел туда, волчица «хап» и проглотила теленка.

Через некоторое время козленок говорит барашку:

– Давай уйдем домой.

Барашек:

– Я не насытился. Подожди, и вместе пойдем, – сказал.

Козленок не послушал его, сам ушел домой. Шел-шел, а навстречу ему встретила опять та же волчица.

– В добрый путь, добрый молодец!

Козленок:

– Спасибо, – ответил.

– Что это у тебя внизу?

– Барохло, – сказал козленок.

– А на голове это что?

– Рожки.

– Почему трясется хвостик?

– От страха перед тобой.

– Пройди-ка вон туда, – сказала, как только козленок прошел туда, волчица проглотила козленка.

Через некоторое время барашек собрался домой. Как только спустился вниз из Азау-талы, среди дремучего леса опять встретила на пути волчица.

– В добрый путь, добрый молодец! – сказала.

Барашек, гордо посмотрев сверху вниз, резко грубым голосом ответил:

– Спасибо, старая волчица.

Волчица:

– Куда идешь? – спросила.

– Домой, – сказал барашек.



– Ты чей? – спросила.

– Домая, – ответил.

– Домай – это кто?

– Охотник.

– На кого охотится?

– На волков.

Волчица немного испугалась, но, поспешив, спросила:

– А что это у тебя внизу?

– Железные колотушки.

– А на голове – это что?

– Железные мечи.

– Для чего их носишь?

– Чтобы таких плохих волчиц убивать!

Барашек, так сказав, чтобы напугать волчицу, замахнулся. Волчица, испугавшись, хотела убежать, прыгнула, ударилась об острую ветку высохшего дерева и умерла.

Вот так победил смелый барашек злую волчицу.

Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. 34 папка. Рукописный вариант книги «Балкарские сказки», подготовленной К.С. Отаровым для детей.

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

Вышеизложенная сказка про дружбу. Есть еще варианты этой сказки. Их главные герои другие домашние животные, но сюжет одинаков. В данной сказке волк побеждает барашек, а в других или козленок, или бычок.

ИЧГИЧИЛЕ

Айыу, бёрю, тюлкую айыуну куркасына жыйылгъандыла да, эрикгенлерин кетере, хапар айта, келгендиле. Хапар не затны юсюнден да айта, хапарлай келгенлеринде, хар ким кесини бош заманын къалай ашыргъанларындан да айтып башлагъандыла.

Айта, хапарлай, келгенлеринде, ичгичиликге да жетгендиле.

Айыу айтханды:

– Мен чагъырны бек сюеме. Алай бир челек бла бир чагъырны ичгенлей, кеф болуп къалама.

Бёрю айтханды:

– Чагъырны уа мен бек сюеме, алай тилиме бир кесекчиги жетгенлей окъуна кеф болуп къалама...

Бёрю сёзюн бошаргъа, тюлкую арына аугъанды да тенгеренди да кетгенди.

Айыу сермеп тутмаса эди, тюбюнде окъуна кетерик болур эди. Тюлкуюно бетине суу сылап аяздырып:

– Не болгъанды санга?

Тюлкую уа:

– Билемисиз, мен чагъырны атын айтылып эшитгенлей окъуна кеф болуп къалама, – дегенди.

КъМГТИ-ни архиви. Тауду фольклор фонд. 34 папка. Отарланы К.С. сабийлеге хазырлагъан «Малкъар жомакъла» деген китапны къол жазмасы.

Архивден Гергёокъланы Л.С. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Жомакъ чам халда жазылгъанды. Жаныуарланы сыфатларыны юсю бла ичгичи адамла кёргюзтюледиле.

АЛКОГОЛИКИ

Медведь, волк, лиса собрались в берлоге медведя, разговаривали, разгоняли скуку. О чем только они разговаривали и рассказывали, начали рассказывать о том, как они проводят свое свободное время.

Рассказывая, рассказывая, дошли до пьянства.

Медведь сказал:

– Я очень люблю вино. Но если (я) выпью одно ведро вина, сразу пьянею.

Волк сказал:

– Вино я тоже очень люблю, но как только чуть-чуть коснется (моего) языка, сразу пьянею.

К тому времени как волк закончил свое слово, лиса утомилась и упала.

Если бы медведь ее не схватил, она упала бы вниз. Лису привели в чувства, ополоснув (ее) лицо водой.

– Что с тобой случилось, лиса?

А лиса:

– Вы знаете, я, как только услышу про вино, тут же пьянею, – сказала.

*Архив КБГИГИ. Карачаево-балкарский фольклорный фонд. 34 папка.
Рукописный вариант книги «Балкарские сказки», подготовленной
К.С. Отаровым для детей.*

Выписала из архива и перевела на русский язык Гергокова Л.С.

*Сказка написана с юмористическим смыслом. В образе животных
здесь показывается человек.*

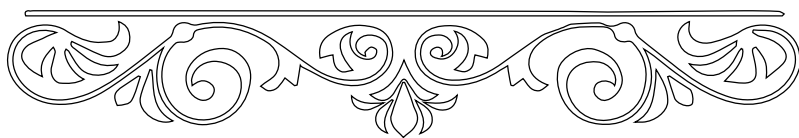


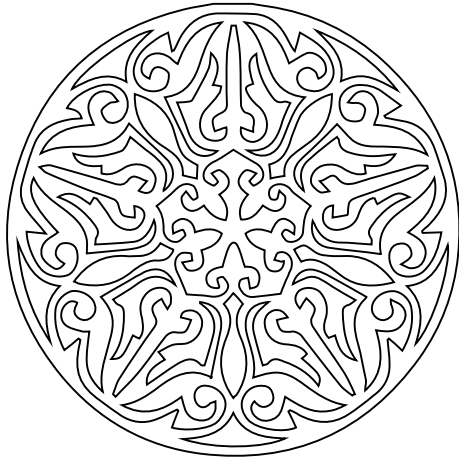


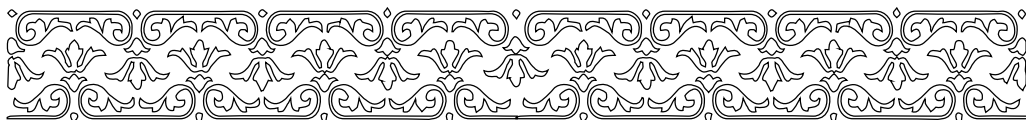
V. ЖАШАУ-ТУРМУШ ЖОМАКЪЛА



V. БЫТОВЫЕ СКАЗКИ







ОРАЗАЙ

Оразай, жортууулгъа айланып, дунияны кёрюрге суйген, аллына адам ётмезча, жигитлиги да болгъан киши эди. Алай а не файда? Аны къатыны, нечик эсе да, эрини адамлыгъына тийишли, кесини да намысына ушагъыулу иш этмегенди. Эр бла къатынны арасында борч болгъан ийнамлыкъны бузгъанды.

Хапарда айтылгъанына кёре, кюнлени биринде Оразай узакъ жолоучулукъгъа чыгъады. Ол кезиуде аны къатыны къарынында сабийи бла къалады. Бир бёлек замандан Оразай юйюне къайтып келсе, къатыны ауурлугъундан къутулуп, сабийи уа – жокъ. Не мурат бла этгенин ким билсин, бу бир жукъ да айтмады. Алай а къатынына ишекли болса керек.

Оразай, мычымай, жангыдан «жолгъа атланады» да, къатыныны анга кертичилигин сынап, марайды. Ол кетгенлей, къатыны, юйден чыгып, эл къыйырына бир къазакъ чыгып тургъан юйге киреди. Оразай да, къатынны ызындан сынчылай барып, ол юйге киргенде, къатыны шапалыкъ эте, тосу да бешикте сабийни тебирете тургъанын кёреді.

Оразай ол сыйсызлыкъны юсюне киргенде, кёзлерине къан чапды, ачыудан кёкюреги кёрюкча кёпдю. Айтыргъа сёз, тёзерге мадар тапмады. «Ачыу келсе, акъыл кетер» дегенча болуп, бир зат да сормай, къылычын сууруп, сермейди да, экисини да башларын юздюртеди. Сабийге-субюйге да къарамай: «Хайда энди жатыгъыз!» – деп, экинчи кере къатын алмаздан, жортууулгъа кетеди.

Кёпмю-азмы жүрюдю, бир кюн кеси жангыз кетип бара, ызындан бир суху атлы жетеди. Жетеди да, Оразайны бир жаны бла аллына озуп, артха бурулуп, салам береди. Экиси да батырлыкъны болумунда саламлашадыла.

Ол атлы Оразайгъа:

– Жангыз жүрюген къазакъ атлы! Сен мени кесинге нёгер этемисе? – дейди.

Оразай, ол атлыны жарашдырылгъан сауутун-сабасын сыйырыр умут этип:

– Айхай, этеме, тебیره! – дейди.

Экиси да, жорта барып, бир жангыз юйню къатына жетедиле. Алайда Оразайны нёгери, атындан тюшюп:

– Энди сен, мени нёгерге санай эсенг, мен ол юйге кирип чыкыгъынчы, атымы тута тур! – деп, кетеди.

Сора бу, кёп да мычымай а, бир адам баш бла бир чёмюч адам къан алып къайтады. Қаннны алайда окъуна ичип, башны да къанжыгъасына байлап, экиси да андан ары тебирейдиле.



Оразай ол ишге бек сейир этди, болсада, аллай затлагъа кеси да тюбей келгени себепли, жукъ сормады. Нёгерини кеси мурат этгенча болмагъанын да сезди.

Жорта барып, была дагъыда аллай бир юйге жетедиле. Оразайны нёгери, ол юйге да кирип, биягъыча этип къайтады. Энтта да бир чёмюч къан ичип, келтирген башын да къанжыгъагъа байлап, алай кетедиле.

Энди Оразай, тынгылап, ишни ахыры къалай болурун сакълап жюрюйдю.

Экиси да, къыдыра барып, бир агъач этегинде ат солутадыла. Алайда Оразайны нёгери, жайылып, бир кийик ёлтюрюп келеди да:

– Терисин сыдыр да, бишир, экибиз да ашарбыз, – деп, Оразайгъа береди.

Оразай кийик этни биширгинчи, нёгери ол эки адам башны къуууруп ашайды. Кийик этни да эки юлешип, экиси да ашайдыла, алай а Оразай юлюшюн ашап тауусалмады.

Атларын сорукъдургъандан сора, экиси да, къыдыра барып, бир къалагъа жетедиле. Алайда Оразайны нёгери, атындан тюшюп:

– Аха, энди, жортууул нёгерим! Мен, сени ызынгдан жетип, жол нёгер эт дегенимде, сен мени сауутуму-сабамы сыйырыр мурат бла нёгер этген эдинг. Мен ол затны сезген эдим. Энди ма, мени сауут-сабамы да ал! Мен былайда къаллыкъма, жолунг мамукъдан! – деп, къалагъа кирип кетеди.

Оразай, кетерге, къалыргъа да билмей, агуман болуп тургъанлай, биягъы нёгери, къолунда да – къамасы, къаладан чыгъып:

– Нек кетмей тураса? – деп сорду.

– Да биз бир бёлек заманны нёгер болуп жюрюгенбиз. Танышыргъа тийишли ишлеге да тюбегенбиз. Ол себепден сени ким болгъанынгы билмей кетерге арсар болуп турама, – деди.

– Да аны ючюн тура эсенг, ол мен эм алгъа адам баш алып чыкыгъан юйде бир къарт къатын барды, тюзюнлей анга бар! Хапарны ол айтыр, – деп, бурулуп, къалагъа кирип кетеди.

Оразай, чыдаялмай, бираздан сора аны ызындан къалагъа киреди. Тынгысыз атлай барып, экинчи отоугъа ётсе, – бир къыз сыртындан жатып, жюрек аузуна къама чанчылып, тозурагъан чачы да юсюне жайылып тургъанын кёреді. Тёгерекге къарап, андан башха жукъ эслемей:

– Аха, мен тюшюналмагъан бир тамаша иш барды! – деп, тюзюнлей ол къарт къатыннга тебирейди.

Къарт къатын, Оразайны не ючюн келгенин билгенден сора, кесини къыйынлыгъын айтып берди:

– Балам, къонагъым! Мени юч жашым бар эди. Ала бир бирлери бла кюреше кетип, эки абаданым кичи жашымы ёлтюргендиле. Ол сени бла нёгерликде жюрюген а ёлген жашымы къатыны эди. Эри ёлгенден сора, ол, эрини сауутун-сабасын алып, атына да минип, аны къанын алмай къоймазгъа деп чыкыгъан эди. Адеп, намыс, жигитлик бла да мени ол келиними аллына не эр, не тиши ётмеген бир тиширыу эди. Кесинг кёрген болурса, эки абадан жашымы да, тургъан жерлерине барып, ёлтюрюп, эрини къанын да алды, кесин да жойду.

Оразай, ол хапарны эшитгенде:

– Эй, къарт анам, намысын г төппемде болсун! Тиширыуну игисине иги жетмез, аманына да аман жетмез. Мен аланы бир аманына тюртюлген эдим да, башымы тюзледе айландыргъан олду. Сени келинингча, эрине кертичи бир тиширыуум болгъан болса эди, аны жашауу ючюн, тауладан – тюз, тюзледен тау этип, жашатыр эдим, – деп ахсынды.

– Да, балам, ол мени келиним ёлтюрген кийик этден юлюшюнгю ашап бошасанг эди, ол санга къатын боллукъ эди. Алай а сен аны эталмагъанса, ол себепден ол, сенден умутсуз болуп, кеси кесин уруп къойгъанды. Алай энди сен, балам, бир аманнга тюбегенме деп, тиширыуулары барына да ол бет бла къарама. Аман болгъан жерде иги да болады, юйдегили бол, – деди.

Кёп айланган, кёпню кёрген Оразай, къарт къатынны сёзюне тюшюнүп, ызына къайтады. Сора, жарагъан бир къатын да алып, аны бла зауукълу жашап къалгъанды деп айтылады хапарда.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 255–257 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Оразай» деген жашау-турмуш жомакъ магия илишанла бла байламлыды. Бир жолда юй бийчеси эрине сатхычлыкъ этгени себепли, ол жамаутдан бир жанына чыгып кетип, жашаргъа умут этеди. Алай «магия театрда» болгъан жорукъгъа ушаи, анга бир жолоучу кеси аллына тюбеп, эс тапдырады. Андан сора да, обур къатынны сёзлери аны кесини кючюне ийнанмакълыкъ туудурадыла.

Жаш адам жашау кёргюзтген жангы дерслени эсге алып, акъылын башына жыйып, кесини ёз жашауу бла бирге, юйюр жашауун да къурайды.

ОРАЗАЙ

Оразай был мужчиной, который любил путешествовать, видеть мир. В таких делах его бы никто не опередил. Ну, а что из этого? Его жена почему-то повела себя не достойно мужа и своей совести. Она нарушила обязательное доверие между мужем и женой.

Как рассказывают, в один из дней Оразай отправился в далекий путь. В это время жена Оразая осталась с ребенком в утробе. Спустя некоторое время, когда Оразай вернулся домой, жена уже успела родить, а ребенка – нигде нет. Почему она так поступила, кто ее знает, он ей ничего не сказал. Однако, он заподозрил жену.

Оразай, долго не раздумывая, снова отправляется в дорогу. И чтобы проверить истинное отношение жены к нему, он начал следить за ней. Когда он ушел, его жена, выходя из дому, заходит в дом, стоящий на окраине села. Оразай, также пошел за ней следом, выслеживая ее. Она вошла в дом. Следом за ней заходит он и видит, как его жена ухаживает за своим возлюбленным, а он качает в люльке ребенка.

Когда Оразай увидел такое позорное зрелище, его глаза налились кровью, от злости его грудь вздулась как кузнечный мех. Что сказать, как все это вытерпеть, он не знал. «Когда злость приходит, ум уходит» – в таком состоянии он, ничего не спрашивая, вытаскивает свой кинжал,



размахнувшись, обоих обезглавливает. Не оглядываясь на ребенка: «Теперь лежите вот так!» – сказал он и с мыслью, что второй раз не женится, отправился в путь.

Много ли, мало ли скакал, однажды, когда шел в одиночестве, его догоняет торопящийся всадник. Будучи рядом, он Оразая опережает сбоку и, оглянувшись назад, приветствовал его. Они между собой поздоровались как два богатыря.

После этого тот всадник Оразая:

– В одиночестве скачущий всадник! Ты меня возьмешь к себе в друзья? – спросил он.

Оразай захотел у всадника отобрать его отличное боевое снаряжение.

– Конечно, беру, пошли! – ответил он.

Они вдвоем скакали и добрались к одиноко стоящему дому. Там попутчик Оразая, слезая с коня:

– Если ты меня за друга считаешь, пока я в тот дом зайду и выйду, придержи моего коня! – сказал он и ушел.

После этого, он в скором времени, выносит человеческий череп и в чашке человекью кровь. Кровь там же выпивает, а голову привязывает к седлу и так они вдвоем продолжили свой путь.

Оразай сильно удивился такому событию, однако, так как он с такими делами был знаком, у него ничего не спросил. И понял, что товарищ не такой, как он предполагал.

Пока скакали, они достигли еще такого же дома. Попутчик Оразая зашел в этот дом и повторяет то же самое. Еще раз выпивает чашку крови, и голову, которую принес, привязывает к седлу и двигаются дальше.

Теперь Оразай, тихонько ждет, чем все это закончится.

Они, путешествуя вдвоем на окраине леса, решили дать отдых своим коням. Там друг Оразая, ушел в сторону и вернулся, застрелив тура:

– Сними шкуру, свари мясо, вдвоем покушаем, – сказал он Оразая, протягивая ему тушу.

Пока Оразай варил турье мясо, друг пожарил две человекью головы и съел. И турье мясо они, поделив пополам, начали есть. Однако Оразай свою долю так и не смог закончить.

После того, как их кони немного отдохнули, они, вдвоем путешествуя, приходят в какой-то дворец. Там друг Оразая, слезая с коня:

– Аха, теперь, мой набеговый друг! Когда я тебя догнав, попросил меня взять с собой в попутчики, ты согласился, чтобы отобрать у меня боевое снаряжение. Я это сразу понял. Теперь вот, бери все мое снаряжение! Я остаюсь здесь, пусть твоя дорога будет, словно вата! – сказал он и зашел во дворец.

Оразай, пока стоял в раздумье, не зная, что делать, уйти или остаться, тот же друг с кинжалом в руке, выходя из дворца:

– Почему не уходишь? – спрашивает у него.

– Мы же длительное время путешествовали друзьями. Познакомились, были свидетелями многих дел. Поэтому, пока не узнал кто ты на самом деле, не могу уходить, – ответил он.

– Если ты из-за этого задерживаешься, то, в первый раз, когда я вынес из дому человеческую голову, там живет одна старушка, прямоком иди к

ней! Она тебя все расскажет, – сказал он и, повернувшись, зашел обратно во дворец.

Оразай, не выдержав, через некоторое время заходит за ним во дворец. Тревожно шагая, когда он вошел во вторую комнату, то увидел, что одна девушка лежала на спине, вонзенная в сердце кинжалом, растрепанные волосы лежали на ее теле. Он оглянулся по сторонам и больше ничего не заметив:

– Да, значит, есть еще какая-то тайна, которая не доступна мне! – подумал он и напрямик держит путь к старушке.

Старушка, когда узнала, зачем пришел Оразай, начала рассказывать про свои страдания:

– Сын, ты мой гость! У меня было три сына. Когда они повздорили между собой, двое старших убили младшего сына. С тобой, который в друзьях путешествовал, была женой умершего сына. После того, когда у нее умер муж, она взяла с собой боевое снаряжение мужа, оседлав коня, отправилась в путь, чтобы отомстить. В воспитании, в порядочности, в героизме эту мою сноху ещё ни один мужчина, ни одна женщина не опередили. Ты сам, наверное, видел, как она пошла туда, где находились два моих старших сына, убила их, отомстила за своего мужа и собой покончила.

После ее рассказа Оразай:

– Эй, бабушка, ваша честь выше моей головы! Хорошая женщина – во всем хороша, у плохой также много подлости. Мне попала из плохих, из-за нее я стал скитальцем в степях. Была бы у меня женщина, верная мужу, как твоя сноха, за ее жизнь я бы горы превратил в степи, а степи – в горы, так бы я относился к ней, – сказал он, вздыхая.

– Да, сын мой, если бы ты съел свою долю мяса тура, которая убила моя сноха, она бы стала твоей женой. Но ты этого не смог сделать, поэтому она, отчаявшись в тебе, сама себя угробила. Однако теперь, мой сын, повстречав одну плохую, не смотри на всех женщин таким взглядом. Где плохие, там и хорошие бывают, обзаведись семьей, – сказала она.

Много скитавшийся, много видевший Оразай, поверив в слова бабушки, возвратился обратно. После этого, он, поженившись на порядочной женщине, зажил счастливо. Так говорится в повествовании.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 255–257) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка с элементами магического реализма. Муж, которого однажды жена предала, решил порвать с социумом и уйти навсегда в отшельники. Но «магический театр», который перед ним развернул случайный спутник, а также наставления ведуньи, вернули ему веру в себя. Впитав в себя новые уроки жизни, помудревший молодой человек берется за строительство новой личной и семейной жизни.



САЛИМА

Бурун ёмюрледе бир элде, ата-анадан сабийлей ёксюз кьалып, бир эгеч бла бир кьарындаш жашагъандыла. Кьызчыкьны атына Салима, жашны атына Солтан дегендиле. Экиси да сёзде айтырча чырайлы, фахмулу да болгъандыла.

Онбеш жылы толгъандан сора, Солтан, тауда, тюзде да уугъа айланып, кийик ёлтюрюп, эгечин, кесин да кечиндирип тургъанды. Кесини уста мараучулугъу бла Солтан сабийлей окьуна халкьны ауузунда таурухха айтырлай болгъан эди. Солтанны уучу итине сукъланмагъан а жокъ эди. Ол анга Чолпан деп бош атамагъан эди. Солтан не буйрукъ берсе да, аны Чолпан, адамча ангылап, толтуруп болгъанды. Солтан да Чолпанны кесини санындан кем этмей суйгенди.

Солтан уугъа кетген заманда, эгешчиги Салима юйде хар затны, жетген кьызча, жарашдырып, Солтаннга тансыкъ болуп сакълаучу эди. Узагъыракъда кёрсе, аллына чабып, кьучакълап, кьолунда жюгюн алып, Солтан бла, кьууана, кюле, юйге келиучю эди. Эгеч бла кьарындаш болуп, бир бирин аладан бек суйген дунияда чыкьмагъанды.

Кюнлени бир кюнюнде Салима бла Солтан, олтуруп, оноу этедиле. Ол оноуда Салима:

– Къатын ал, – деп, Солтандан тиледи.

Солтан да, Салиманы айтханын кьабыл кёрюп:

– Алырма, – деди.

Кьоншу эллеринде Сапра деп бир кьызны Солтаннга келтиредиле. Ол кезиуге Салиманы онтогъуз жылы толгъан эди. Аны чырайы, акьылы, кьоншу элдеде юлгю болуп, хапарда, алгъышда да айтыла эди.

Кеси тенгли кьызла Салимагъа сукъланып, кеслерин анга ушатыргъа бек кьадалып кюрешгендиле, алай а аллай ариу сыфатлы, билимли, акьыллы болургъа ала, не бек кюрешселе да, болалмагъандыла.

Салиманы бу халлы, былай сейирлик, тауушлукъ болгъанын келини Сапра эрттеден да эшитип, зарланып тургъанды. Аны кьарындашына чыкьгъандан сора уа, Салиманы дуниядан кетерир муратда, кёп тюрлю хыйлала, фитнала кьурап, кёзюне жукъу кирмей, танг атдырып, зор бла кюн батдырып тургъанды. Хапаргъа кёре, Сапраны зарлыгъыны не чеги, не мардасы жокъ эди.

Сапра кесини зар ишлерин Солтандан жашыргъан этгенликге, кьайын кьызына ыразы болмагъанын сездире-сездире тургъанды. Алай а Солтан бу кьажаулукъгъа артыкъ уллу эс бурмагъанды.

Талай заман ётгенден сора, Солтан, иши болуп, бир жерге кетеди, ол кезиуде кьатыны Сапра, барып, аны ол акьыллы уучу итин жатхан орунунда от берип ёлтюреди.

Солтан, юйюне кьайтып, итима да бир аш берейим деп барса, аны ёлюп жатханын кёредди.

– Чолпанны ким ёлтюргенди? – деп, Солтан, мудах болуп, кьатынына сорады.

– Да ким ёлтюрлюгюн билмеймисе? Сени уялмагъан эгечинг ёлтюргенди, – деп, кеси этген кир ишни Салиманы юсюне атады.

Сапраны, бу этилген кир ишин Салимагъа жагъып, аны аман бетли этип, къарындашына къыстатыр мураты толмады. Солтан, ити ёлгени ючюн, Салимагъа бир ауур, хыны сёз да айтмады.

Алай а Сапра аны бла тынчаймады. Эрин Салимагъа хаман юсгюрюп кюрешеди. Болсада Сапраны этген хыйлалары файда бермейдиле. Ахырында Сапра башха тукъум хыйлала этерге ойлашады, къалай тукъум, не жол бла хорларын а билалмайды, ашсыз, жукъусуз кёп кюнле, кечеле ашырады.

Субай, акъыллы, ариу Салиманы уа Сапраны ол ишлеринден хапары жокъду.

Заман бара, Солтаннга улан тууады, бу сабийге кимден да бек Салима къууанады. Жашчыкъ, шашмай, атасына ушагъаны ючюн а Салима аны артыкъда бек сюеди, кесине да Зауур деп атайды. Туугъан кюннөндөн башлап, Салима Зауурну кёкюрегине къысханлай, кече-кюн да къоюнунда, аркъасында жүрютеди.

Эгечини Зауургъа былай татлы болгъанын кёрюп, Солтан бютюнда бек къууанады.

Салима, юйде, эшикде да он бармагъы он ишни толтура келип, Зауур эсине тюшсе, чабып келип, аны жумушакъ бетчигине ариу, исси эринлерин салып, ийнакълап, татлы сёзле айтып кетиучю эди. Зауурдан багъалы Салимагъа дуняда жан жокъ эди. Солтан да Салиманы, бу халал, таза ниети ючюн, артдан-артха бекден-бек багъалагъанды.

Эгеч бла къарындаш бир бирлерин алай багъалагъан заманда, Сапра, ичине къызгъан темир тюшгенча, аллай аман халгъа келиучю эди. Ол кезиуде Салима ёлюп къалса, Сапра бек уллу насып сынарыкъ эди.

Келин келген тойлада Салима халкъны, къонакъ жашланы да кёзлерине къалгъан къызладан айырма кёрюннгенди.

Салимача тепсеген къыз да, жаш да болмагъанды. Бу халда талай заман кетди. Сапра уа кир ниетин унутмайды. Салимагъа ёлюм излейди.

Жанындан суюючю Зауурчукъну Салима кече биргесине алып, башха отоуда жатыучю эди. Бир кече, Салима бла Зауур къаты жукълап тургъан кезиучюкде, Сапра, отоугъа акъырын кирип, Салиманы къоюнундан тынч жукълап тургъан Зауурну мурдар къоллары бла бери алып, буууп ёлтюрдю. Зауаллы Зауурчукъ тыпырдаргъа кюрешди, ычхыналмады. Татлы жукълап тургъан Салима уа, тюрлю-тюрлю тюшле кёре, Зауурчукъну, бууулуп, жанында ёлюп тургъанын билмеди.

Эрттенликде Салима, Зауурчукъну анасыны эмчегине элтейим деп къараса, аны ёлюп, суууп тургъанын кёрюп, ачы-ачы къычырып жилайды, сарнайды. Къычырыкъгъа Солтан да, жашчыкъны анасы Сапра да, къоншулары да чабадыла. Не файда, жазыкъ Зауурчукъ жарыкъ дунядан кетипди. Жаныуар кёллю мурдар ана ёз баласын – онайлыкъ Зауурчукъну буууп атды. Дагъыда, тартынмай, аны къаралгъан бетчигине къарап турады. Ичинден а, къууанып: «Акъыллы Чолпан да, Зауур да бошдула, мен энди муратыма жетдим, – узаймай, Салимадан къутулама!» – дейди.

Къычырыкъгъа халкъ кёпден-кёп жыйылады.

– Неден ёлдю? – деп, адамла сорадыла.

Мурдар Сапра уа, халкъ аллына чыгъып:

– Салима буууп ёлтюргенди! Жамауат, бир мадар этигиз! Бу уялмагъан базгъыч бизге сынатмагъан не къалды! Бир кере Солтанны адам тил билген акъыллы Чолпанын ёлтюрдю, аны кечдик. Экинчи жангыз балам Зауурну бууду! Мен бу артыкълыкъны кётюралмайма! Быллай уялмагъан къанчыкъ арбаздан, юйден да къорасын! – деп, жилиу-сыйытдан къырады.

Къатыныны тилине ийнанып, хата кимден чыкыгъанын билмей, Солтан жазыкъ Салимагъа аман, ачы оноу этеди: юсюнден кийимлерин сыдырып алады, къолларын артына байлайды, кёзлерине быстыр чулгъайды, сора, малны салгъанча, ат арбагъа салып, бир кюн бла бир кечелик жолгъа чыгъады. Эрте барып, къалын агъачны ортасында тохтап, субай Салиманы чырпыла ичинде къоюп, сылжырап кетеди.

Насыпсыз Салима хатасыз, гюняхсыз жеринде азапха тюшдю! Солтанда эгечине алгъын суймеклигинден бир зат да къалмады. Салиманы ачы-ачы къычырыкъларына къарындашы аз да, кёп да эс бёлмеди; этген ишине ыразы болуп, юйюне келди.

Насыпсыз Салима керексиз азап чегип башлады. Аны субай, суйдюмлю санлары чегетде тереклеге къонакъ болдула. Къызгъа асыры эригенден, терекле, ийилип, чапыракъларындан, бутакъларындан да Салиманы юсюне жилимукъларын текдюле. Не келсин, андан ары ала башха мадар эталмайдыла. Жаланда Салиманы:

– Мени къатыма кел, мени тюбюме кел, – деп, жазыкъсынып чакъырадыла.

Кёгет терекчикле уа:

– Мени кёгетимден аша, уялма, Салима! – деп, жарыкъ болургъа кюрешедиле.

Къапхан кёгети Салимагъа ачы да, татыусуз да кёрюнеди. Энди анга жашаудан окъуна татыу къалмады. Хансладан чапыракъланы жырттып, жумушакъ чырпычыкъланы сындырып, юсюне жабады, сагъатларын аман бла ашырады. Асыры сагъышлы болгъандан, кюнню батханын, чыкыгъанын билмейди, къайсы жанына барлыгъын эслеялмайды.

Эки кюн мындан алда халкъны ичинде тургъан Салима бюгюн агъач ичинде тереклеге нёгер болуп жашайды. Узун къара кирпичлеринден къаядан тамычыла акыгъанча, жилимукъла ариу санларына тохтамай агъадыла. Тёртден эшилген жаухар чачы, юйюгюп, буршу-буршу болгъанды. Энди олтурса – туралмайды, турса – олтуралмайды. Насыпсыз, армаулу Салима азап чегеди.

– Мен не насыпсыз жарлы жан эдим, бу къыйынлыкъгъа мен не ючюн къалдым?! – деп, ачы-ачы ахсынады.

Арып, къарыусуз болуп, таянып къалкыгъан кезиуонде, Зауурчукъну къоюнуна алып эркелетгенин тюшюнде кёре эди. Бир жол да тюз алай тюшюнде Зауурну ариу бетчигин кесини бетине къаты къысып ийнакълый тургъанлай, къулагъына тауушла эшитилип, сескенип уянды. Къараса, – узакъ болмай, тёрт ит бийик ташны башындан Салима таба айланып, гузаба-гузаба юре. Олсагъат итлени ызындан бир адам келип сюелди. Салиманы кёрюп:

– Эй, сен кимсе, не айланаса? – деп сорду.

Салима акъылын жыялмайды, ол адамны сорууна да жууап эталмайды. Сора ол адам, Салиманы къатына келип, уллу тамаша болады.

– Жалангачма, иги жаш, уялама, – деп, Салима кесин букьдуругъа кюрешеди.

Уучу жаш, юсюнден тешип, Салимагъа кийим береди. Къоркъа-къоркъа, насыпсыз Салима уучуну кийимин кийип, аллына суюелди. Салиманы бу жаш бир ай мындан алгъа таныгъан болса эди, аны кеси кесине чыртда ушаталмаз эди. Салиманы ариулугъу, акъылы, башха жигерликлери къайры кетдиле? Къызгъа бу къара кюн нек келгенин, бу артыкълыкъла не чурумла бла этилгенин, кимни башчылыгъы бла болгъанын уучу къайдан биллик эди?!

Салима чегетде кѣп азап чексе да, аны юсюнде къалгъан суююмю эс бурурча эди. Соруп, тинтип, уучу жаш Салиманы юйюне элтирге оноу этеди. Экиси да жолда бара, уучу жаш, Салимагъа айтып, кесини ким болгъанын танытады. Эгечине къарагъан кѣз бла къарайды. Ол затны Салима да сезеди.

– Мен былайдан жетмиш къычырым узакълыкъда жашайма, атам бла анамы, менден сора, сабийлери болмагъанды. Мюлкюбюз, байлыгъыбыз уллуду. Кесим бир шахарда тыш халкъланы тиллерине юйрене, бусагъатда уа юйюбюзге келип турама. Бираздан биягъы кетерикме да, бир жылдан а арталлыда къайтып келликме: юйде жашау бек игиди! Бир эгечим болса эди деп, кѣпден бери термилеме, алай... Кесим да алыкъа юйдегили болмагъанма. Сени уа бек багъалы къууанча санайма.

Узун сѣзню къысхасы, не андан-мындан келтирип айтса да, жашны кѣзю Салимагъа илингенди. Жаш да къыз къарамаз жаш а туююл эди. Кѣп ариу сѣзле айта келип:

– Атым да Назирди, – деди.

Кенг жауурунлу, узун бойлу Назир экинчи кюн, адам жатар заманга, Салиманы да алып, юйге жетеди. Къартла Салимагъа бек къууанадыла. Кѣп мычымай, анга кийим, орун, башха керек затларын да бердиле. Салима юйдегини бири болады.

Талай кюнден Салиманы бурунгу сыфаты къайтады. Бууулуп ѳлген ариу, добар Зауурчугъа аны не эсинден, не кѣзюнден кетмейди, тюшюнде кѣрмеген кечеси да хазна озмайды. Эрттен болуп, излесе, тапмайды, аны ючюн кюнюн ахсынганлай ашырады. Харамжюрек келини да, экинчи ачыу болуп, юрегине ийне чанчылгъанча чанчылып, къыйнап турады. «Ах, Солтан а!» – деп, къарындашын тохтамай эгереди.

Назирланы къоншулары Салиманы быллай сейир, алапат билимли, ариу болгъанына, аны жигерлигине сѣз тапмайдыла. Салима былайда жашагъанлы, эки ай толду. Назирни да ызына къайтыр заманы жетди.

Ол кезиуде ата-анасы Назирни: «Юйдегили бол!» – деп къысадыла. Назир не этерге, къаллай жууап берирге билмейди.

– Кимни алсанг да – ал, эркинлик сендеди, – деп, къартла, жууукъла да къадаладыла. Ол заманда Назир алагъа:

– Ал дей эсегиз, мен агъачдан табып келтирген къыздан башханы алалмам, – деп билдиреди.

Адетдеча, неках этилип, талай кюнню ат чапдырып, тепсеп, жырлап, уллу, тауушлукъ той этедиле.

Кѣп турмай, Назир кетеди. Салима, хар ай сайын ауурдан-ауур бола, къыз сыфатын бираз ташлады.



Назир кетип, сегиз ай озгъандан сора, Салима уланчыкъ табады. Жашчыкъгъа, Солтанны жашчыгъы Зауурну бек суйгени ючюн, Зауур деп атады.

Назирге хапар билдирирге керек болду. Элде жаза, окъуй билген адамгъа къагъыт жаздырып, атлы жибердиле. Ол атлы, келе келип, танымагъан бир элге жетерге кеч болуп, бир юйде къонакъгъа тохтады. Ол юй Салиманы къарындашыны юйю болады. Атлы ашап-ичип бошагъандан сора, харам жүреккли Сапра анга хапар сорады. Атлы къайры баргъанын, кимге не ючюн баргъанын айтып, жазылгъан къагъытын да ачып кёргюзтеди. Ариу Салиманы сау къалып, былай насыплы болгъанына Сапра бютюнда бек зарланады, ичинден ачы-ачы ахсынады, тышына жукъ билдирмейди, айтмайды.

Арып келген жолоучу сыртындан тюшюп жукълап къалады. Къагъытны къыйыры къоюнундан кёрюнеди. Акъырын туруп, Сапра ол къагъытны, жыртып, дуккул-дуккул этип атады. Орунуна уа: «Назир, балабыз! Сени къатынынг чырт адам сыфаты болмагъан бир жаныуар тапханды. Салима кеси да намыссыз, жаныуар къылыкълы бола башлагъанды. Не этерге билмейбиз, кёлюнге келгенни бизге терк билдир», – деп жазып, къонагъыны хуржунуна салады.

Сапраны этген харам ишинден хапары болмай, атлы эрттенликде жолгъа чыгып кетеди. Талай кюнню барады. Ол кезиу а чапыракъ акъгъан заман эди: болгъан саргъалып, табийгъат да къарт бет ала башлагъан заман.

Атлы Назир болгъан шахаргъа киреди. Назирни табып, къууанып, къагъытын кёргюзтюрден алгъа, суйюнчюлюк алып муратда:

– Назир, жаш санга туугъанды! – деп, къолун туталды.

Сора къагъытны, чыгъарып, Назирге береди. Назир ол къагъытны къууанып алгъанлыкъгъа, къууанчы ачы бушуу бола, терен-терен ахсынады: къагъытда Сапра жазгъан ётюрюк хапарны окъуйду.

Кёп сагъыш этмей, Назир былай жазады: «Атам, анам, жамауат! Жашагъан ёмюрюмде – жыйырма беш жылны ичинде – мен бу жолча мудах болмагъанма. Сиз жиберген къагъытда жүрегиме жара салгъан, жарыкъ кюнюмю къарангы этген ачы зат окъудум. Бу къагъытны алгъанлай, ол гажини ит кючюгю бла, элтип, терен агъачха атыгъыз. Айтханымы этмесегиз а, мен сизни балагъыз туююлме! Назир». Сора, къагъытны атлыгъа берип, ызына ашырады.

Атлы Назирни къартларына келеди. Назир жазгъан къагъытны окъуп, жарлы къартла акъылдан шашаргъа жетедиле, кёп жууукъ-ахлу жыйып, кенгешедиле. Не мадар? Жангыз уланларыны буйругъун толтурмай амал тапмадыла. Насыпсыз, хатасыз Салимагъа экинчи кере да азап чегерге узакъ, къыйын жол тууду.

Салиманы, Зауурчукну да жолгъа хазырладыла. Ол кюн Салима бла аны къагъанакъчыгъын ючайлыкъ Зауурчукну, кёрюп жилямагъан, ахсынмагъан адам жокъ эди. Назирланы арбаз жумушчулары, аланы экисин да арбагъа миндирип, кече узуну бардыла. Сора бир терен агъачха жетдиле да, келтирген, Салиманы да, жашчыгъын да анда къоюп, ызына айланды.

Онгуз, эмчек ичген Зауурчукъ бла Салима агъачлагъа, ташлагъа къонакъ болду.

Талай заманны Салима аман бла кюнле, кечеле ашырды. Сора, агъачдан чыгып, элlege, тийрелеге кьонакь бола, айлана, жюрюй кетип, Назирни кьартлары жашагъан жерге келеди. Юсю зыккыл, кеси жунчуп, Заурчукъ да кьоюнунда, Салиманы кьргенле, аны садакьачыгъа ушатып, жазыкьсынып, ашаргъа аш береди.

Назирлада уа ол кече жарыкь жырла айтыла, – уллу кьууанч, той. Назирни окьууун бошап арталлыда кьайтып келгенлигиди.

Салима эски жаулугъуну тубюнден, кез алмай, Назирге кенген кьарайды. Алай анга не Назир, не кьалгъанла хазна эс бурмай, садакьачы сунуп турадыла.

Бир кезиуде уа Назир, ойлаша келип:

– Аланла! Бу садакьачы бир хапар айтса, иги болмазмы эди? – деп негерлерине сорду.

– Айхай, иги болур, ол да адамды, бир жукь биле эсе, соруп керейик! – деди ала да.

– Эгечим, кьайдан келесе, не айланаса? Бир хапар айт, тынгылайыкь, – деди Назир.

– Кез кьргенними, кьулакь эшитгенними айтайым? – деп сорду Салима.

– Кез кьргенни айт! – деди.

– Алай эсе, тынгылагъыз, адамла! – деп, туугъан кюнюнден башлап, ата-анадан ексюз кьалгъанын, агъач ичине гюняхсыз атылгъанын, аны учу жаш тапханын, ол, юйюне келтирип, кьызны кесине кьатынга алгъанын, ол кьызны аламат, ариу жашчыкь тапханын, атасы аны юсюнден этюрюк кьагъыт алгъанын, ол а, ишни болумун билмей, келинни сабийчиги бла узакь агъачха элтип атаргъа буюргъанын, эри тыш халкьланы тиллерине юренип тургъанын – бар хапарын да Салима былайда олтургъанлагъа, бир башха адамы юсюнден айтханча, жарашдырып айтды.

Бу кезиуде анга кимден да бек Назир эс белюп тынгылады. Аны бла бирча, Салиманы ариу сыфаты, кьара жылтырауукь эшмелери, башха игиликleri кез аллы бла тизилип этеди, башында жокку жыйылып, мыйысын кьатышдырадыла. Ол кеп сагъыш этеди. Юсюнде санларына тенг этилген мор чепкени, акьбаш хазырлары, кьара чачы, акь келеги, жасалгъан кюмюш бел бауу Назирни кьалгъанладан башха, субай кьргюзтедиле. Ол кийимле, Назиргеча, башхалагъа алай жарашмайдыла. Эрин кьргенли, насыпсыз Салима бар этилген артыкьлыкьланы да унутуп, жаны, саны, акьылы да Назирге тансыкь болуп, жиляп, кьучакьлайма дерчады.

Салима хапарын айтып бошагъанлай, Назир, аны кьатына келип:

– Айып этме, эгечим! Бу айтхан хапарынгы мен ахырын, тюзюн билирге бек сюеме. Ол сен айтхан тишируу бла сабийчик кьайдадыла? Саумудула? Аланы кьайда табаргъа боллукьду? – деп, Салимадан билирге изледи.

Назир Салиманы кьатына алай жууукьлашханында, Салима аны бек уллу насыпха санады...

– Керек болса, иги жаш, ол тишируу бла сабийчик узакьда туююлдюле, табарыкьса, – дегенде, Назир бетин энишге тутду, адам айтмазлай армаугъа туюшдю.

Салима, андан кеп тезалмай, башындан зыккыл жаулугъун тешип, ачыкь тюрсюнюн кьргюзтдю. Заурчукъну Назирге ушагъаны уа ким да сейирсинирча эди. Назир, хар затны да ангылап, келю тола, жашчыгъын кьоюнуна алды. Бары ачыкь баямланды да, той юсюне той болду.



Халкъны кючю, насыбы да уллуду! Сапра халкъны кючюн, насыбын теплер мурат этген эди да, ол мураты толмады, аны бу харам, кир ишин халкъ да кечмеди. Аны табып, тутуп, халкъ аллына алып келдиле да, ол а, кеси эркинлигиндеча, анга тийишли оноу чыгъарды. Сапраны агъачха элтип атып кетдиле. Аны энтта да ол терен агъачда айланган хапары барды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 257–263 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

«Салима» деген жашау-турмуш жомакъны бурундан келген ѳзеге бла бирге, артда къошулгъан, жангы заманны илишанлары уллу жерни аладыла: окъуу, тыш къыраллы тиллери, жазмачылыкъ. Хар заманда болуучу огъурсуз, ѳге ананы сыфатын мында къылыкъсыз келинни сыфаты тутады. Ол кесини халал жюрекли, халиси иги, ариу къайын къызына кѣп тюрлю оюнла кѣргюзтеди. Анга аны барысын этдирген – зарлыкъды.

Чюйре халда суратланады кюйсюз келинни къутургъаны. Ол кесини жашчыгъын окъуна жояды, артдан аны бла къайын къызын терслерча.

Жомакъда бир къауум затны къайтарып кѣргюзген жорукъ хайырланылады: жомакъны баш жигитине экинчи кере да адамсызлыкъны сынаргъа тюшеди. Алай болгъанлыкъгъа, чынтты халкъ жомакъладача, ахырында, тюзлюк кюйсюзлюкню хорлайды.

САЛИМА

В древние времена в одном селе, от отца и матери оставшись сиротами, жили сестра с братом. Девочку звали – Салима, а мальчика – Солтан. Они оба были статные, красивые, талантливые.

Когда исполнилось пятнадцать лет, Солтан в горах и в степях охотясь, убивая туров, обеспечивал себя и сестру. Так как он еще с детства был настоящим охотником, про него в народе ходили интересные легенды. А охотничьей собакой Солтана все были в восторге. Он назвал ее Чолпан* неспроста. Что бы не приказывал ей Солтан, она тут же все поняв, как человек, выполняла полностью. Солтан также ценил ее не меньше части своего тела.

Когда Солтан уходил на охоту, его сестра Салима, как взрослая, по дому все приводила в порядок и, соскучившись по брату, ждала его. Если видела вдалеке, бежала ему навстречу, обнимала, брала его ношу, вместе с ним радуясь, смеясь, приходила домой. Будучи братом и сестрой, на свете как они, никто друг друга не любил.

В один из дней, усевшись Салима и Солтан, принимали решения. В этом размышлении Салима:

– Женись, – сказала Солтану с просьбой.

Солтан соглашаясь с Салимой:

– Женюсь, – ответил.

* Чолпан – Венера; утренняя звезда [3, 736].

Из соседнего села Солтану привели девушку по имени Сапра. К тому времени Салиме исполнилось девятнадцать лет. Про ее обаяние, ум в соседних селениях говорили, рассказывали как предание, приводили в благопожеланиях.

Ровесницы Салимы завидовали ей, сильно хотели быть похожими на нее, однако стать такой краснолицой, образованной, умной, как бы они не хотели, не получилось.

Что Салима такая интересная, известная, ее сноха Сапра издавна слышала и завидовала ей. А после того, как она вышла замуж за ее брата, она намереваясь сжить ее со свету, придумывая много хитростей, интриг, не смыкала глаз до рассвета, в тяжелом состоянии доходила до заката. По рассказам, козням Сапры не было ни предела, ни ограничений.

Хотя Сапра свои завистливые козни старалась скрывать от Солтана, временами показывала, что она недовольна своей золовкой. Однако Солтан этому противостоянию не обращал особого внимания.

Спустя некоторое время, Солтан уехал по делам, отлучился из дому, в тот момент его жена Сапра, пошла и отравила лежащую в конуре умную собаку, дав ей отраву.

Солтан, вернувшись домой, когда пошел покормить свою собаку, видит, что она лежит мертвая.

– Кто убил Чолпана? – спросил Солтан с грустью у жены.

– Разве не знаешь, кто мог убить? Твоя бесстыжая сестра убила, – ответила она, и свое злодеяние перекинула на Салиму.

Сапра, своим подлым делом обвинив Салиму, опозорив ее, была уверена, что брат ее прогонит из дому – но не получилось. Солтан, из-за умершей собаки в адрес Салимы ни слова упрека, грубости не высказал.

Однако, Сапра этим не успокоилась. Она постоянно натравливает мужа на Салиму. И все равно все ее хитросплетения оказывались безуспешными. В конце концов, Сапра хочет придумать другие козни, каким способом, как она ее одолеет, не знает, без еды и сна она проводит много дней и ночей.

А стройная, умная, красивая Салима не ведает, что может натворить Сапра.

Со временем, у Солтана рождается сын, этому ребенку больше всего обрадовалась Салима. Так как мальчик был сильно похож на отца, Салима особенно полюбила его и дает ему имя – Заур. С самого дня рождения, Салима, прижав Заура к груди, днем и ночью его держала на руках, носила на спине.

Что сестра Зауру так сильно привязана, Солтан очень обрадовался.

Салима, в доме, во дворе десятью пальцами десять дел выполняя, когда вспоминала Заура, тут же прибегала, и его мягкому лицу прикладывала свои красивые, горячие губы, подбадривала, говоря сладкие слова и после уходила по своим делам. На свете для Салимы дороже Заура не было ни души. Из-за этого, Солтан тоже, эту добрую, чистую душу с каждым днем ценил всё больше и больше.

Когда брат с сестрой друг с другом так дорожили, Сапра, как будто вовнутрь попала горячее железо, впадала в удручающее состояние. Если бы в то время Салима умерла, она посчитала бы себя счастливой.



На свадьбах Салима на глазах у общества и у гостящих парней сильно отличались от остальных девушек.

Красиво танцующей, как Салима, не было ни среди девушек, ни среди парней. В таком положении прошло некоторое время. А Сапра все не может забыть свое грязное намерение. Желает смерть Салиме.

Больше жизни любящего маленького Заура, Салима на ночь забирала к себе и ложилась вместе с ним в другой комнате. Однажды ночью, когда Салима и Заур крепко спали, Сапра, тихонько проникла в комнату, спокойно спящего на груди Салимы Заура забрав, своими жестокими руками и насмерть его задушила. Бедный маленький Заур старался дергаться, однако ему спастись не удалось. А спящая сладким сном Салима, видя различные сны, не ведала, что рядом лежит задушенный, мертвый маленький Заур.

Утром Салима, когда захотела отнести маленького Заура к груди матери, вдруг увидев мальчика мертвого, холодного, громко заплакала, запричитала. На ее крик прибежали Солтан, мать мальчика Сапра, также соседи. А что толку, бедный Заурчик ушел из светлой жизни. Со звериной душой убийца своего ребенка, мать – десятимесячного Заурчика задушила. И еще, не стесняясь, смотрит на его почерневшее лицо. А про себя радуется: «Умный Чолпан и Заур пустяки, я теперь достигла своей цели, – скоро покончу и с Салимой!» – думала она.

На крик собирается все больше и больше народу.

– Отчего он умер? – спрашивают люди.

А убийца Сапра перед народом:

– Салима убила, задушив! Люди, придумайте что-нибудь! Эта бессовестная, самонадеянная, какие испытания только не заставила нас перенести. В первый раз убила собаку Солтана, умного Чолпана, которая знала человеческий язык, это ей простили. Во второй раз единственного моего ребенка Заура задушила! Я не могу пережить такое насилие! Такая бессовестная, кровожадная, пускай убирается из двора, из дому! – сказала она и своим плачем, рыданием извела людей.

Поверив языку жены, не ведая, откуда пришла беда, Солтан бедной Салиме вынес страшный, жуткий приговор: он сдирает с нее одежду, привязывает руки за спину, завязывает на глаза тряпку, после, как скотину, закинув на бричку, выходит на дорогу длиной в один день и в одну ночь. Увозя далеко, остановился посередине густого леса, и стройную Салиму оставив в кустах, потихоньку уходит.

Несчастливая Салима без вины, без греха попала в тяжелое состояние. У Солтана к сестре от прежней любви ничего не осталось. На душераздирающие крики Салимы брат ни мало, ни много внимания не обратил: довольный содеянным, он вернулся домой.

Несчастливая Салима начала испытывать напрасные мучения. Ее стройный, очаровательный стан в лесу деревьям стал гостем. Из-за большой жалости к девушке, деревья, согнувшись, из листьев, ветвей на Салиму пролили слезы. Что делать, другого они ничего не могут. Единственное они Салиме:

– Приди ко мне ближе, прижмись к моему стволу, – произносят и жалостливо зовут.

А плодовые деревья:

– Поешь моих плодов, не стесняйся, Салима! – говорят и стараются быть весёлыми.

Плоды, которые ест Салима, ей кажутся горькими и безвкусными. Теперь ей даже от жизни не осталось смысла. Из трав листья сорвав, мягкие кустики сломав, накрывая себя, она провожает свое время в мучении. Из-за глубокого замешательства, она не замечает восход и закат солнца, не знает, в какую сторону идти.

Два дня назад, находившаяся среди людей Салима, сегодня оказалась в лесу и живет, становясь подругой деревьям. Из ее длинных черных ресниц как из скал капая капли, слезы ее беспрестанно текут по ее красивому стану. Сплетенные в четыре косички волосы, скомкавшись, стали помятыми. Теперь, если садится – не может встать, когда встает – не может садиться. Несчастливая, растерянная Салима испытывает большие муки.

– Какая я несчастная, бедная душа моя, почему я оказалась в этой беде?! – говорит она и тяжело-тяжело вздыхает.

В то время, когда она уставшая, обессиленная, засыпала, она видела во сне, как нянчила маленького Заура на груди. И однажды, когда она также во сне сильно прижав красивое личико Заурчика к своему лицу, игралась, до ее слуха дошли звуки, и тогда она с испугом проснулась. Когда посмотрела, – невдалеке четыре собаки на высоком камне смотрят в сторону Салимы и громко-громко лают. Тут же следом за собаками показался человек. Он, увидев Салиму:

– Эй, ты кто, что здесь делаешь? – спросил он.

Салима не сразу сообразила и не смогла ответить тому человеку. Потом этот человек, подошел близко к Салиме и сильно удивился.

– Я нагая, молодой человек, я стесняюсь, – сказала Салима и старается как-то укрыться.

Охотник, снял свои вещи и дал Салиме. Побавиваясь, несчастная Салима одела на себя одежду охотника и встала перед ним. Если бы этот молодой человек увидел Салиму месяц тому назад, он бы никак ее не узнал. Куда исчезли красота, ум и другие способности Салимы? Почему у этой девушки настал черный день, в связи с чем нанесены ей эти лишения, кто руководил всем этим делом, откуда мог знать этот охотник?!

Хотя Салима в лесу испытала много горя, но оставшееся в ее облике обаяние все еще сохранялось. Расспросив, разузнав, парень-охотник решил привести Салиму к себе домой. Когда они шли вдвоем, охотник рассказал Салиме о себе. Он отнесся к ней как к своей сестре, это осознала и Салима сама.

– Я живу отсюда на расстоянии семидесяти человеческих криков, у моего отца и матери, кроме меня не было детей. У нас имеется большое хозяйство, богатство. Я сам изучаю иностранный язык в одном городе, а сейчас нахожусь дома. Через некоторое время я снова уеду, а через год вернусь навсегда: дома отличная жизнь! Была бы у меня сестра, я так давно мечтаю о ней, но... Я до сих пор не женат. Я тебя считаю моей большой радостью.

Короче говоря, что бы он не говорил, Салима ему понравилась. И парень оказался не из простых. Говоря много красивых слов:

– Меня зовут Назир, – сказал он.



Широкоплечий, статный Назир на второй день, в то время, когда людям пора ложиться, с Салимой приходит домой. Старики сильно обрадовались Салиме. Быстро ей достали одежду, приготовили постель и обеспечили всем, что ей нужно было. Так, Салима становится членом семьи.

Через несколько дней к Салиме возвращается прежний вид. А умерший от удушья маленький, плотненький Заур, не уходит из ее сознания, стоит перед глазами, и не проходит ни одной ночи, чтобы она его не видела во сне. Утром, когда она его ищет, не находит, из-за этого она проводит целый день вздыхая. И сноха, с черствым сердцем, став следующей головной болью, иглой вонзившись в ее сердце, не дает ей покоя. «Ах, а Солтан!» – говорит она и постоянно брата вспоминает.

Соседи Назира удивляются, что Салима такая удивительная, образованная, красивая, трудолюбивая и не находят слов выразить свое восхищение. Как Салима начала у них жить, прошло два месяца. И Назиру пришла пора вернуться обратно.

В это время отец и мать Назиру: «Обзаведись семьей!» – говорят ему и стоят на своем. Назир не знает, что делать, и что ответить.

– Женись на ком хочешь, твое право, – сказали старики и родственники начали тоже его уговаривать. В это время Назир им:

– Вы хотите, чтобы я женился, я женюсь только на девушке, которую привёл из леса, – объявляет он.

По обычаю, проводя обряд бракосочетания, на несколько дней устроив скачки, танцы, исполняя песни, провели большую, удивительную свадьбу.

В скором времени Назир уезжает. Салима из-за беременности с каждым месяцем начала терять девичий облик.

После отъезда Назира, через восемь месяцев, у Салимы рождается сын. Мальчика, из-за любви к сыну Солтана Заура, называет Зауром.

Надо было сообщить Назиру эту весть. В селе нашли человека, кто умеет писать, читать и поручили ему написать письмо и через всадника отправили. Этот всадник, по дороге, поздно остановился около незнакомого селения погостить в одном доме. Этот дом был домом брата Салимы. Когда всадник поел-попил, с черствым сердцем Сапра спрашивает у него. Куда, к кому и зачем всадник держит путь. Он раскрывает и показывает написанное письмо. Что красивая Салима выжила и стала счастливой, она начала сильно ей завидовать, и про себя глубоко-глубоко вздыхает, а на наружу ничего не показывает и ничего не говорит.

Уставший путник падает на спину и засыпает. Край письма был виден в грудном его кармане. Сапра тихо встала, вытащила эту бумагу, разорвала по кусочкам и выбросила. А вместе него: «Назир, сынок! Твоя жена родила непохожего на человека зверя. И Салима сама не воспитанная, начали в ней проявляться звериные повадки. Не знаем, что делать, как ты на все это смотришь, сообщи нам», – написала и засунула обратно в карман гостя.

Не ведая, про злодеяния Сапры, всадник на рассвете отправляется в путь. Идет несколько дней. А это время было, когда падала листва: кругом все пожелтело, была пора, когда природа начала приобретать старческий вид.

Всадник появляется в городе, где находился Назир. Встретив Назира, радостный, прежде, чем показать бумагу, хотел получить сюрприз:

– Назир, у тебя родился сын! – сказал он и поздоровался за руку.

После этого вытащив бумагу, передает Назиру. Хотя Назир бумагу получил с радостью, радость у него превращалась в горе и он глубоко начинает вздыхать: на бумаге он читает ложь, которую написала Сапра.

Долго не думая, Назир пишет так: «Отец, мать, односельчане! На своем веку – вот уже двадцать пять лет – я как сейчас никогда не был опечален. В письме, которое вы прислали, я прочитал весть, которая ранила мое сердце, заставила светлый день потускнеть. Как только получите эту бумагу, эту суку, с собачьим щенком отнесите и выбросьте в глухом лесу. Если вы не выполните эту мою просьбу, то я не ваш сын! Назир». После этого он вручил бумагу посыльному и отправил обратно.

Всадник вернулся к старикам Назира. Прочитав письмо от Назира, бедные старики дошли до сумасшествия, собрав много родственников, близких людей, они думают, что делать? Не выполнить просьбу единственного сына они не смогли. Несчастной, невинной Салиме и во второй раз пришлось испытать лишения, ей предстоял тяжкий путь.

И Салиму, и маленького Зауура они приготовили к дороге. В тот день из тех, кто видел Салиму и ее трехмесячного Заурчика не было никого, кто не плакал, кто не вздыхал. Работники Назира по двору, посадив их обоих на арбу, везли целую ночь. После этого, они доехали до густого леса, оставив там Салиму с мальчиком, отправились в обратный путь.

Слабенький Заурчик, который еще питался молоком матери с Салимой стали гостями леса, камней.

Некоторое время Салима проводила тяжелые дни и ночи. Но потом она вышла из леса, начала гостить в селах, жилищах, коротая много дорог, пришла туда, где жили старики Назира. Одежда растрепанная, сама растерянная, держа на руках маленького Заура, кто видел Салиму, думая, что она нищенка, из-за жалости давали ей пищу.

А в доме у Назира в ту ночь пелись радостные песни, – большая радость, той*. После окончания учебы, он вернулся домой навсегда.

Салима из-под старого платка, не смыкая глаз, издалека смотрит на Назира. Однако, в ее сторону ни Назир, не остальные ничуть не обращали внимания, думая, что она нищенка.

В одно время Назир, подумав:

– Аланы**! Было бы неплохо, если бы эта нищенка, о себе что-нибудь рассказала, – сказал он своим друзьям.

– Конечно, было бы хорошо, она тоже человек, может что-то знает, сейчас спросим, – поддержали его и остальные.

– Сестра, откуда идешь, чего ходишь? Расскажи что-нибудь, а мы послушаем! – сказал Назир.

– Рассказывать, то, что глазами видела, или же, что ушами слышала? – спросила Салима.

– Рассказывай про то, что глазами видела! – сказали ей.

– Если так, слушайте, люди! – ответила она и начала рассказывать с самого дня рождения, как она осталась сиротой без отца и матери, как была выброшена в лес без вины, как ее подобрал молодой охотник, что он, ее привел домой, женился на ней, что эта девушка родила здорового,

* Той – пиршество.

** Аланы – обращение, принятое у карачаевцев и балкарцев, означает соплеменники.

красивого мальчика, что ее отец получил ложное письмо, а он не зная, правду, повелел молодую жену с ребенком выбросить в далекий, глухой лес, что ее муж изучает иностранные языки. Салима рассказала здесь сидящим про все, как будто говорила о другом человеке, приводя подробности.

Все это время больше всех ее слушал Назир. И вместе с тем, красота Салимы, ее черные блестящие косы и другие добрые дела проходят перед его глазами и, стусившись в голове в пучок, затуманивают его мозги. Он долго размышляет. На нем бордовая национальная одежда, сшитая по его стану, белые газыри, черные волосы, белое платье, серебряный пояс выделяют Назира от остальных, к тому же он отличается стройностью. Такая одежда, как Назиру никому не подходит. Когда Салима увидела своего мужа, она несчастная позабыла все надругательства, всей душой, телом, умом, соскучившись по Назиру, со слезами, готова была его обнять.

Когда Салима закончила свой рассказ, Назир подходя к ней:

– Не обессудь меня, сестра! Я очень хочу узнать в твоём рассказе всю правду, чем она заканчивается? То, что ты говорила про женщину и ребенка, где они? Они живы? Где их можно разыскать? – спросил он, желая узнать всю историю у Салимы.

Когда Назир близко подошел к Салиме, Салима посчитала это для себя большим счастьем...

– Если тебе это нужно, хороший человек, эта женщина и ребенок находятся невдалеке, найдешь, – когда она это сказала, Назир опустил свое лицо вниз, и попал в такое замешательство, что трудно человеку это выразить.

Салима, более не выдержав, сняла с головы старый растрепанный платок, полностью раскрыла свое лицо. А маленький Зауур всем на удивление был похож на Назира. Назир, поняв все, растрогавшись в душе, взял на руки своего сына. Всем все стало ясно, и на радость прибавилось еще одно счастливое событие.

У народа сила и счастье большое! Сапра захотела силу, счастье народа растоптать, однако ее желание не исполнилось, ее эту нечистоплотную, грязную затею народ не простил. Ее нашли, поймали, привели и поставили перед народом, а он по праву, вынес достойное ей решение. Сапру увезли и выбросили в лесу. Говорят, она до сих пор ходит в том глухом лесу.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 257–263) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка, в которой архаический сюжет отмечен напластованиями нового времени: учеба, иностранные языки, письменность.

Традиционный образ злой мачехи здесь заменен на образ жестокой снохи, которая устраивает козни против своей золовки – доброй, милосердной, красивой. Основная причина – зависть. В гротесковой форме описывается одержимость злой снохи, которая душит собственного сыночка-младенца, чтобы вина пала на золовку. В сказке используется принцип повтора: главная героиня и во второй раз сталкивается с человеческим коварством. Однако как в классической народной сказке, в итоге, добро побеждает зло.

МУРАТ БЛА АБИДАТ

Бурун заманда бир бай жашагъанды. Аны байлыгы хыйсапсыз эди, алай а анга неден да багъалы жангыз жашы Мурат болгъанды. Бу бай киши жашыны айтханын жерге тюшюрмей ёсдюреди.

Мурат саны, сыфаты келишген, иничке белли, къара къашлы, ушагыулу, ариу жаш болады. Алай, атасы не бек жан атып кюрешсе да, жашы байлыкны, урушчулукну хунерин алыргъа унамайды. Ол жаланда уугъа барыуну, къушланы, тауланы, тюзлени, тюрлю-тюрлю гокка хансланы кёрююню, кюн таякъладан кеслерине хычыуунлукъ табып жашагъан жаныуарлагъа къарай айланыуну суйгенди. Артдан-артха уа кесини тенглери жеталмагъан алапат сейирлик хунерге – жыргъа да ие болады. Тейри, ол жырлагъан заманда къадау таш окъуна орунундан тебе болур эди. Аны жырын эшитген адамла – кёлленип, къобуз сокъса уа, аланы кёз жашлары сакъ жауунча тёгюлюп къалыучу эдиле. Къушла окъуна, Муратны жырларындан хайран болуп, учуп келип, аны къолуна къоннгандыла. Адам улусуна быллай жырчы алыкъа туумагъан эди.

Кюнлени бир кюнюнде Муратны атасы дуниядан къайтады. Сора бу халалжюрек Мурат, атасыны байлыгын, асырамай, жарлы халкъгъа акъырын-акъырын юлеше, кеси жарлы болуп къалады. Алай табийгъат берген хунерин а атмайды. Аны жыргъа усталыгы башха элlege да айтыла башлайды. Юйюню аллы бла ётюп бара, адамла, аны жыр айтханына тынгылап, уллу ыразылыкъ бла кете эдиле.

Ол заманлада уа батырлыкъ бла, жигитлик бла да аллына киши ётмеген аскер башчысы Азрет бир элге хан болады. Азрет жыргъа да бек уста жаш эди.

Арадан бир талай заман ётеди да, Муратны хапары Азретге да жетеди. Сора бу жангы хан ол тауушлукъ жырчыны кёрюрге истейди. Бир кюн а Мурат, тенглери бла олтуруп, жыр айта тургъанлай, аладан бирлери Азрет-ханны анга жолугъургъа суйгенин сагъынады. Муратны жюрегине къайгы тюшеди. Сора Азрет бла тюбешиуню юсюнден иги сагъыш этеди да, атына иер салып, жолгъа чыгъады.

Мурат жолгъа чыгъар кюнню кечесинде уа Азрет-батыр тюшюнде Мурат аны излей келгенча кёрген эди.

Эрттенликде Азрет, къууанып, адамларына тюшюн айтады.

– Биринчи болуп, Муратны мени аллыма ким алып келсе да, анга жангыз эгечим Абидатны берликме! – деп ант да этеди.

Аны эшитгенлей, жашла, атларына иер салып, чабышып кетедиле. Аланы хар бири да Абидатны алырма деген умутлуду. Абидатны ариулугъу уа не сёз бла айтып, не къалам бла жазып бералмазча алай эди.

Азрет, жангыз эгечи Абидатны асыры суйгенден, айтханын жерге салмай этип тургъанды.

Мурат а, ол затладан арталлыда хапары болмай, жолда кёргенин жыргъа сала, жыр эте, келеди. Кюн асыры къыздыргъандан бла жолда да бек арыгъандан, Мурат бир уллу жюзжыллыкъ эмен терекни тюбюнде солургъа тохтайды. Сора, къобузун да терек бутакъгъа тагъып, жукълап къалады. Энди бу жер а Азретни жериди. Тюз да ол заманнга Азретни бек суйген шапасы, сарайдан чыгып, Мурат жатхан терекни тюбюне келип къалады.



Жырчы жашны кёрюп, шапа:

– Оллахий, бу, баям, Мурат болур, – сыфаты, чырайы да бир бек ариуду, – деп, чапханлай, ёпке солуу этип, Азрет-ханны аллына барады.

– Ханым, мен санга бир кьюуанч хапар алып келеме, – дейди да, Азрет да:

– Не кьюуанч хапарынг барды, айт? – деп сорады.

– Мурат бизни элни кыйырында ол уллу терекни тюбюнде жукълап турады.

Аны эшитип, Азрет бек кьюуанады. Алай кыйгы да этеди. «Чолпан жулдуз кибик, ариулугу кез каматхан эгечим Абидатны шапама берсем, неге ушар? Батырлыклары, байлыклары бла да халкы аллында кезге урунган ненча жашдан калдырганма кесин а», – деп ойлашды.

Энди уа не этейим деп, сагышха кылып, Азрет шапасы бла Мурат солургъа тохтаган терекни тюбюне келип кырайды да, аны жукълап турганын кереди. Сора кеси кесине: «Бу керти да Мурат болса, уятмай кетейик да, манга келе эсе, юююмю табар да, кеси келир», – деп, шапасын да алып, кыйтып кетеди.

Мурат, иги кесек да жукълап, солуп, сора, туруп, хар затын да жыйып, атха минип, жолгъа чыгады. Бираздан а Азретни элине жетеди. Жетеди да, орамда ойнай турган сабийлеге:

– Манга Азретни юююм ким кергюзтсе, анга ахча берликме, – дейди.

Ахчаны бегирек да суйген бир кыра шинли жашчыкы, сабийлени ичинден чыгып:

– Мен элтейим! – деп, атны жоюенинден тутуп, Азретни ююю таба тебирейди.

Кезню кысып ачынчы, Мурат Азретни юй аллына келип кылады.

Мурат, жыр бла:

– Иер салып мингенде атына,

Жау келалмаган кыатына,

Багъалы болган тууган халкына,

Намыс берген кыартына, жашына,

Тюшюмде керюндю сени сыфатынг,

Кеп жылланы айтылыр сени атынг! – деп, Азретге кесини келгенин

билдиреди.

Азрет, жырны эшитип, тюшюнде керюп, тюберин сакълаган багъалы кыонагыны аллына гузаба чыгады.

– Ай, жаным, кыонагым, хар ишинге Аллах негеринг болсун! Битеу элlege атынг айтылган Мурат сенмисе? Жууук бол! Мени элимде, тууган юююндеча, ырахатланып жашарынгы тилейме. Мени юйлерими эшиклери санга ачыкдыла, – деп, Муратны кыолун тутуп, юйге чакырады.

Мурат излеп келген батыр досуну юююне уллу хурмет бла киреди. Тамаша ариу жасалган юйде экиси да олтурадыла. Ол заманда Азрет:

– Эй, жырчыланы устасы! Аллах сени манга жиберген эсе, мен бек ыразыма. «Тюш – тюнюю келечесиди». Ахшы жырчы да халкыны кезюю жарытхан чырагыды, – деди.

Экиси да, тууган кыарындашлача, бир бирин ийнакыладыла. Олсагатдан тюрюлю-тюрюлю ашла, ичерикле келдиле. Сыйланып бошагандан сора, Мурат солургъа жатады.

Экинчи кюнюю эрттенлигинде Азретни суйген шапасы Хамзат, Азретге келип:

– Эй, уллугу болган мени сыйлы ханым Азрет! Сени сезюнг кьурчдан кьатыды. «Муратны табып, биринчи келген адамгъа Абидатны берликме!» – деген сен эдинг. Мен биринчи болдум. Энди не этсенг да, иш сени кьолунгдады, – деди.

Ол заманда Азрет:

– Мен сезюмю эки этмеучюме. Аны кесинг да билесе. Бош мудах болма, ашыкъма, кьайгъысыз кьал, – деп, шапасын ариу айтып ашырды.

Хамзат, кеси кесине кёл эте, чыгып кетди. Азрет а, мудах болуп, Муратха барады. Сора жанында олтуруп:

– Шургулу жүрекни кьайгъысын чачхан бир жыр айтчы, – деп, хурмет бла тилейди.

Къарангы кечеден табийгъатны битеу жаныуарлары жукьугъа батхандан сора, Мурат кьобузу чыгъарган макъамгъа алакат келишген ариу ёню бла жыр айтып башлайды. Аны эшитгенлей, Азретни кёзлери жилимукьдан толуп, несин да унутуп, ырахатланып кьалады.

Мурат жыр айта туруп, Абидат кеси отоунда эди. Бу сейирлик жырлагъан кимди, бу тамаша ауаз неди деп, гузаба чабып, терезеден къараса, ариулугу гокка хансча болган Муратны Азрет бла олтуруп тургъанын кёрдю. Кёргенлей а, жүрегинде суймеклик оту жана башлады. Муратдан кёз алалмай, къарай келип, Абидат жилип иеди.

Мурат, сескенип, ол жилигъан таууш таба бурулду да, терезени ары жанында бир алакат ариу кьызын кёрдю. Тамаша болду. «Былай ариу жан адам улудан жаратылган болмаз», – деп, сейирге кьалды. Алай а ичин Азретге сездирмезге кюрешди.

Мурат, Абидатны кёргенден сора, не затны юсюнден жырлагъанын кеси да билмей кьалады. Аллай ариулугу болган кьызын жилимукьдан толган уллу кёзлерин эслеген Муратны, жүреги кьаты-кьаты уруп башлайды.

Азрет жыргъа асыры кёлю бла тынгылагъандан, бу экисини ортасында болган тамашадан хапары жокьду. Бир-бирде, жыргъа сейирсинип, башын чайкьай олтурады.

Жырдан сора, Азрет, Муратны башха кьонакь отоугъа элтип, анда кьояды да, кеси отоуна кьайтып келип, суйген эгечи Абидатны сагъышына киреди.

Абидат бла Мурат, аны билмей, кеслерини суймеклик сагъышларында боладыла. Былай эте, арадан бир ненча кюн озады.

Абидат суймеклик ауруундан бек азады. Алай болса да, аны уллу кёзлери, биягъыча жашнап, кёргенни сукъландырадыла. Мурат а, орундукьдан кьопмай, Абидатдан сора, башына бир акьыл кирмей, жатады. Суймеклик аурууу жырчы жашны борбайындан алады.

Азрет, кьонагъыны, энди уа кесини суйген тенгине санап башлагъан Муратны ауруп кьалгъанын кёргенде, кьатындан кетмей, сагъыш этгенлей турады. Билгичле чакьыртып, Муратны алагъа кёргюзтеди – жукь эталмайдыла, башларын чайкьап, жашны аурууун билалмай кетедиле.

Мурат а, кюнден-кюннге аман бола, тюз да юшюген гюлча болуп кьалады. Аны хапарын эшитип, Абидат, кьарт Зурумну чакьырып:

– Мени уллу этген амма, жаным, айтчы! Сен адамны сырын сакьлап, анга жандауурлукь эталлыкьмыса? – деп сорду.



– Абидат, жаным, сени сырынгы кишиге айтсам, жаным чыкъсын, я Аллах! – деп жууап берди.

– Алай эсе, тынгыла! Мен Муратны сюеме. Аны бир киши да иги эталлыкъ туююлдо. Сен а Азретге бар да, мен аны бир айдан сау этерикме, Муратны мени юйюме келтирсинле де! Алай а аны киши кёрмезча, билмезча да Азрет буйрукъ берсин, – деп, Абидат къарт аммагъа юйретди.

Зурум, Азретге барып:

– Муратны мени юйюме жибер, бир ай болжал да бер, мен аны сау этейим, – деди.

Азрет сейрсинди, алай болса да Муратны Зурумну юйюне келтиртди. Бираздан а Абидат, келип, Муратны мангылайын сылап, къол жаулугъун анга къоюп кетеди.

Мурат, кёзюн ачып, жан-жанына къарайды да, эс жыйып, орунунда олтурады. Сора Зурумгъа:

– Бу неди, Абидатны къол жаулугъумуду?! – деп сорады.

– Хау, балам, хау, муну Абидат санга берип кетгенди. Кеси да салам айтады. Бир кесек ашыкъмай тур, Аллахны кючю кёпдо, алыкъа сиз бир биригизни кёрюсюз, табарсыз, – деп жапсарады.

Мурат, асыры къууаннгандан, Абидатны къол жаулугъун уппа этип, къууана-къууана ахсынады. Экинчи кюн Муратны бети биягъы агъарып башлайды да, Зурумгъа айланып:

– Анам, энди мен суйгенимден айырылып жашаяллыкъ туююлме. Акъыллы анам, айтчы, Абидатны къалай бла кёраллыкъма? – деп сорады.

Къарт амма уа, сагъыш этип:

– Къайгъы алма башынга, мен сау болсам, сиз экигиз бир биринге тюберча этерме. Мени жашым Абидатны терек бахчасыны жанында къой кютеди, ол хар кюнден алайгъа барады. Тамбла сен алайгъа бар да, бир уллу къойну союгуз да, сен, аны терисин юсюнге кийип, къойла бла бахчагъа кирсенг, кёз жарыгъын Абидат бла тюбеширсе, – дейди.

Мурат тюз ол айтханча этеди: эрттенликде, къой терини да юсюне къаплап, къойла бла Абидатны бахчасына киреди. Сора, терини тешип, чырпыла ичинде бугъады. Абидатны кёреме деп, асыры ашыкъгъандан, Муратны кёзлери тёрт кёре башлайдыла.

Бир заманда – пу анасына уа! – будай бюртюкле ичинде пиринч бюртюк кирик, Абидат акъ дарийге чулгъанып келеди. Мурат аны уллу кёзлерине, узун чачына, иничке белине, къара къашларына сукъланып, чырпыла ичинден кёз къакъмай къарай эди. Сора, букъгъан жеринден чыгып, Абидатха кесин кёргозтеди. Эки суйген тюбедиле...

Кёзню къысып ачхынчы, ингир болуп къалады. Мурат, кёлю да тола, биягъы къой териге кирип, ызына къайтады да, къойчу жашны биргесине алагъа келеди.

Ариу Абидатны бир кёрсем эди дегенни ёлтюрюрге хазыр болгъан Хамзат а Азретни къаласын къоруп айланады.

Зурум Муратха:

– Ха, жашым, къалай болдугъуз, суйгенинги кёрдюнгмю? – деп сорады.

– Ай, анам, кёрген а этдим, алай мени анга болгъан суймеклигим чексизди – къанмадым, – деди Мурат, ёхтюнюп.

– Къайгъырмаз, балам, сизни ишигиз тап болур, – деп, къарт Зурум Муратны кёлюн алыргъа кюрешди.

Сюйгенин кёрюр ючюн, Мурат, къой терини файдаланып, бир ненча кюн жюрюйдю.

Азрет а, жанындан эсе бек суйген Муратны саулугъун соруп, хар кюнден Зурумгъа келип турады.

Зурум да анга:

– Ай, балам, тюненеден бюгюн игирекди, алай алыкъа аны кёрюрге жарамайды, тура тур, артда келирсе, – деп къоя эди.

Бир кюн а Мурат суйгенчигине:

– Наным, кёзюмю гинжиси! Бизни ишибиз былай бла тап болмаз, кел, барайыкъ да, къарындашынга айтайыкъ, – деди.

– Мурат, жаным! Азретни сёзю барды: анга кёре, мен Хамзатха барыргъа керекме. Алай мен, сенден айырылгъандан эсе, ёлсем игиди. Кел, сен бир уллу бичакъ да, кебинлик да ал да, Азретге бар. Аланы аллына сал да: «Азрет, ма бичакъ, ма кебинлик! Не мени ёлтюр да, кебиннге сал, не да эгечинги манга бер!» – де да, къаты бол, – деп, Абидат Муратны юйретди.

Экинчи кюн Мурат Азретге келеди. Азрет, тенгини хатасыз иги болгъанына къууанып, аякъ тюбюнде чёп сынмай къалады. Саламлашып бошагъандан сора, Мурат сёз башлайды.

– Эй, батыр тенгим, Азрет, эрни сёзю ачыкъды – айып этме! Мен сени эгечинг Абидатны сюеме, ол да мени сюеди. Алайды да, не да Абидатны манга бер, не да бу бичакъ бла башымы кес да, кебиннге чулгъап, жерге басдыр! – деди.

Азрет, мудах болуп, башын энишге ийди. Ол Муратны бек сюеди, алай халкъ аллында сёз бергени да эсиндеди. Хамзат кеси да, бек суйген шапасы болгъандан сора да, хар тюрлю къыйынлыкъ ишледен сакълаучу тенгиди. Кёп сагъыш эте келип, ахырында Азрет:

– Мурат, тенгим! Сен манга бек къыйын затны сагъындын, алай а, хо, сен айтханлай болсун. Эгечими санга береме.

Ол кюнню экинчи эрттенлигинде Азрет сылтау бла Хамзатны узакъ жерге жибереди да, Хамзатны тамата къарындашы Къанботха:

– Мурат бла Абидатны тоюна къойланы союп, иги хазырла, – деп, буйрукъ береди.

Алай бла ол кюн той башланады.

Адамла быллай уллу, алапат тойну кёп замандан бери кёрмеген эдиле. Той-оюн, кюлкю, жыр ингирге дери тохтамады. Той бошалады да, Азрет Муратны ашырып бара тургъанлай, Хамзат, къайтып келип, биягъыча, Абидатны отоуун сакълап тургъанын кёреди. Хамзатны уа тойдан хапары жокъ эди. Азрет, терк окъуна, Муратны кеси тонуна чулгъап, къолтукъ тюбюне алгъанлай, аны аллы бла ётюр кетеди. Хамзат бийине жол береди да, ызындан эслеп къарайды. Къарайды да, – тёрт аякъны кёрюп, сейирсинеди.

Сора:

– Я Аллах, Азрет! Не мен акъылдан шашханма, не да сени аякъларынг тёрт болгъандыла?! – дейди.

– Кертиси да, сен акъылдан тайгъанса ансы, битеу адамланы бирер башлары, экишер аякълары болады, мени да бир башым, эки аягъым барды. Сени кёзюнге кёрюнген а тонуму женглеридиле, – деп кетеди.



Сора Хамзат ишни болушун биледи. Олсагыатдан кёзлерине кыан чабып, чапханлай, кыарындашы Кыанботха келеди. Ол а, Хамзатны халын, кыылыгыын билгени себепли, юйюню эшигин-терезесин кыаты бегитип кыойгыан эди.

Кюреше кетип, болмагыандан сора, Хамзат Мурат бла Абидат кыалгыан отоугыа ёлю мыллыгыын атады. «Экисин да ёлтюрейим!» – деп барады. Алай Абидат да, аны халын уста билгенликден, эшикни, терезелени да кыаты бегитип кыойгыан эди.

Не эшикни, не терезелени ачалмагыандан сора, Хамзат Муратха:

– Эй, кыоркыакъ, бери чыкы! Эр эсенг, кыарыу сынашайыкы, бичакы оюн этейик! – деп кыычырады.

Мурат да, кеси намысын сындырмай, кыолуна бичагыын алып, эшикге чыгыаргыа кыобады. Алай Абидат, Муратны аякларына жатып:

– Тилейме, чыкыма! Ол хайыуаннга ушагыан бир затды. Тоюбузну биринчи кечесинде сабырлыкы эт, жаным, – деп тилейди.

Ол алай тилегенден сора, Мурат эшикге чыкымады. Абидатны айтханын этди. Кыычырыкы-хахайны шапаладан бири эшитип, Азретге чабып барды.

Азрет келеди да, Хамзатны кыолундан тутуп:

– Бу этгенинг жарамайды. Хамзат, сен мени тенгимсе, мени эгечим сени эгечинг болсун. Энди сен бу ишге бир зат да эталлыкы туююлсе. Ийнан анга, мен санга кыызланы кыаллайын суйсенг, аллайын табарма, – деп, тыяды. Сора: – Ол жангызды, сенден бла менден башха адамы жокыду, анга экибиз да иги болургыа керекбиз, Хамзат, – дейди.

Хамзат, Азретни сёзюне тынгылап, юйюне кыайтып кетеди, алай а, кыалай да этип, Муратдан дерт алырма деп, танг атхынчы, кёз кыысмай, сагыыш этип чыгыады. Болсада ол кече башына жукы да келмейди.

Танг атады да, Хамзат биягыы шапалыкы ишине тохтайды. Кеси уа Муратха кыалай этип дерт жетдирейим деген акыылдады.

Азрет, энди Хамзат Муратха дерт этмез деп, кыайгыысызды. Арадан бир талай заман ётеди. Хамзатны башына да аман акыыл тюшеди...

Бир жол Азрет бла Мурат да уудан кыайтып келедиле да, Мурат отоуунда жукылап кыалады. Аны билген Хамзат, эрлай эшикге уллу кыылыч бичакыны кёндеден салып:

– Ой Мурат, тур, кыурурукы юйюнг, Абидат ёлюп кыалгыанды! – деп кыычырады.

Жукыу арасында Мурат, секирип, эшикге чабып чыгыама дейди да, кесин бичакыгыа уруп, эки болады. Алайда, артына аууп, кыызыл кыанына боялады. Кыычырыкы-хахайгыа Абидат чабып келеди. Кыараса, босагыа аллында, кыызыл кыанына боялып, Муратны ёлюп жатханын кёреди. Тирилип кыалыр деген акыыл бла, Абидат суйгенини кёкюрегине жатып, аямай уппа этеди. Сау болмазын билгенде, Абидат, суйгенини жанына жатып, жюрегине кыыптысын урады.

Аны бла сейирлик суйгенле, муратларына аз жетип, бир кюн ёледиле, экиси да бирге асыралып кыаладыла.

Чыгыарманы «Кыарачай-малкыар халкы жомакыла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 263–269 бб.) Берберланы Б.А. алгыанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Мурат бла Абидат» деген жомакъ юйюр-жашау-турмуш жомакъланы санындады. Аны айныуунда эки тюрлю ызны кёрюрге боллукъду: бири искусство бла байламлы, баишасы уа – суймеклик бла. Жашауда жыргъамакъамгъа бек уллу магъана берилгени чертиледи.

Суймекликни ызы Абидат бла Муратны арасында бардырылады. Анга ушаш кеп тюрлю жашау халла битеу дунияны келден чыгъармачылыкларында бола келгендиле, аны себепли бу жомакъ бийик трагедиягъа жетише кетеди.

МУРАТ И АБИДАТ

В давние времена жил богатый человек. Было у него несметное состояние, но дороже всего в его жизни был для него единственный сын Мурат. Этот богатый человек растил своего сына, выполняя все его прихоти.

Мурат вырос статным, обаятельным, чернобровым, общительным, красивым парнем с тонкой талией. Однако, как бы отец не старался, его сын не тянулся к богатству и воинственный характер не принимал. Единственное – он любил смотреть на охоту, орлов, гор, степей, глядеть на разные цветы, солнечными лучами наслаждающихся животных и зверей. Потом уже научился тому, что не умели делать его друзья – стал хозяином песен. Тейри*, когда он пел, даже кадау-таш**, наверное, приходил в движение. Люди, которые слышали его песни – вдохновлялись, а если играл на кобузе***, их слезы лились как во время дождя. Даже орлы из-за песен Мурата, в замешательстве прилетев, садились на его ладони. Человеческому роду еще не родился такой певец.

В один из дней отец Мурата переходит в мир иной. И этот добросердечный Мурат, все богатство отца не оберегая, начал раздавать по чуть-чуть бедному народу и сам стал бедным. Но свой талант от природы он не бросает. Его изумительное пение распространяется и в другие села. Кто проходил мимо его дома, прислушивались к его пению и уходили с большой благодарностью.

В те времена в одном селе ни геройством, ни удачью, которого никто не опережал, воевода Азрет становится ханом. Азрет также был мастером пения.

Через несколько дней весть о Мурате доходит и до Азрета. Тогда этот новый хан захотел встретиться с этим известным певцом. Однажды, когда Мурат сидел с друзьями, распевая песни, один из них сказал, что Азрет – хан хочет с ним встретиться. В сердце Мурата закрадывается страх. Потом хорошо поразмыслив о встрече с Азретом, оседлав коня, он отправляется в путь.

Перед тем, как Мурат должен был отправиться в дорогу, ночью Азрет-батыру снится сон, где Мурат приходил и искал его.

Утром Азрет с радостью рассказывает свой сон людям.

– Кто первым приведет ко мне Мурата, я за него выдам единственную сестру Абидат! – сказал он и поклялся.

* Тейри – верховное божество в язычестве.

** Къадау таш – основа, краеугольный камень [5, 465].

*** Кобуз – национальная гармошка.



Молодые ребята, когда такое услышали, оседлав своих коней, поторопились в дорогу. Каждый из них думал, что женится на Абидаг. А красоту Абидаг ни словом, ни пером невозможно было описать.

Азрет единственную сестру Абидаг сильно любил и тут же выполнял все ее просьбы.

А Мурату обо всем этом ничего не было известно, он скакал на коне, слагая песни обо всем увиденном. Так как солнце пекло сильно и из-за усталости, Мурат остановился рядом со столетним дубом, чтобы отдохнуть. Здесь он повесил свой кобуз на ветку дерева, а сам заснул. А эта территория принадлежала Азрету. Именно в то время Азрета любимый шапа* выходит из сарая, приходит к дереву, где отдыхал Мурат.

Увидев певца, шапа:

– Оллахий**, это несомненно Мурат, – облик, обаяние необыкновенное, – подумал он и бегом побежал сообщить об этом Азрет-хану.

– Мой хан, я принес тебе радостную весть, – говорит он Азрету.

– Что за радостная весть у тебя, говори? – сказал он.

– Мурат на окраине нашего села под сенью большого дерева спит.

Услышав это, Азрет сильно обрадовался. Без волнения тоже не обошлось. «Как звезда Чолпан***, красота которой ослепляет зрение, мою сестру Абидаг, если выдам за своего прислугу, на что это будет похоже? От скольких крепких, богатых, известных парней в народе я ее отстоял», – подумал он про себя.

Не зная, как дальше поступить, размышляя, Азрет со своей прислугой приходит посмотреть на то место, где Мурат решил отдохнуть под деревом. И видит, что он спит. Потом, он самому себе: «Если он по-настоящему Мурат, не станем будить, если держит путь ко мне, найдет мой дом и сам придет ко мне», – подумал он, и, уводя с собой прислугу, возвращается обратно.

Мурат, хорошенько поспав, отдохнул, потом встал, все вещи собрал, сел на коня, отправился дальше в путь. Через некоторое время приходит в село Азрета. Приходит и спрашивает у играющих на улице детей:

– Кто мне покажет дом Азрета, тому дам деньги, – сказал он.

Чернобровый один из мальчиков, который больше всех тянулся к деньгам, отходя от остальных детей:

– Я поведу! – сказал, схватив узду коня, направился в сторону дома Азрета.

За короткое время Мурат оказался перед домом Азрета.

Мурат начинает с песни:

– Когда оседлав, садился на своего коня,

Враг не мог приближаться к нему,

Благороден он для своего народа,

Почитает стариков, молодежь,

Во сне я видел твой образ,

Многие лета будут произносить твое имя! – сказав, он дал понять

Азрету, что прибыл.

* Шапа – прислуга, повар.

** Оллахий – клянусь богом.

*** Чолпан – Венера; Утренняя звезда [3, 736].

Азрет, услышав песню, приснившуюся ему во сне, ждавший встречу с дорогим гостем, вышел торопливо.

– Ай, моя душа, мой гость, пусть во всех твоих делах Аллах будет другом! Во всех селениях, где говорят твое имя Мурат – это ты? Будь гостем! В моем селе, как у себя дома, я хочу, чтобы ты, расположившись, жил. Двери моих домов для тебя всегда открыты, – сказав он, взял за руку Мурата и повел его в дом.

Мурат, с удовольствием разыскав дом богатырского друга, вошел в него с большим почтением. В красиво убранном доме они уселись вдвоем. В это время Азрет:

– Эй, глава певцов! Если Бог тебя послал ко мне, я очень рад. «Сон – предвестник яви». И хороший певец, также светоч, озаряющий зрение народа, – сказал он.

Они вдвоем как родные братья, повеселились друг с другом. Тут же принесли различные кушанья и напитки. После всех угощений Мурат лег отдохнуть.

На второй день утром уважаемый Азретом его прислуга Хамзат, пришел к Азрету:

– Эй, высокопочтенный, мной уважаемый хан Азрет! Твое слово крепче стали. «Кто первым найдет Мурата и приведет ко мне, я выдам Абида!» – пообещал ты. Я был первым. Теперь все в твоих руках, – сказал он.

Тогда Азрет:

– Я не размениваюсь словами. Ты сам это хорошо знаешь. Зря не печалься, не торопись, не беспокойся, – сказал он своей прислуге и проводил его.

Хамзат, сам себя, подбадривая, ушел. А Азрет, опечаленный, пришел к Мурату. Сел рядом:

– Спой песню, которая разгоняет печаль в сердце, – сказал он с просьбой и с почтением.

Темной ночью, когда в природе все звери крепко заснули, Мурат под мелодию своего кобуза, красивым голосом начал исполнять песню. Азрет, когда услышал это, глаза у него наполнились слезами, он, забыв про все, тихо успокоился.

Когда Мурат пел песню, Абида была в своей комнате. Кто так красиво поет, чей этот удивительный голос? Когда она второпях вышла и посмотрела в окно, то увидела Мурата, красота, которого была похожа на цветок. Он сидел рядом с Азретом. Как пригляделась, так у нее сразу в душе зажегся огонь любви. Не отрывая глаз от Мурата, Абида вдруг расплакалась.

Мурат, испугавшись, оглянулся в ту сторону, откуда шел плач, и увидел за окном девушку неопишуемой красоты. Сильно удивился. «Такое удивительное создание. Неужели от человека родилось!» – сказал он, сильно удивляясь. Но то, что у него внутри творилось, он старался не показывать.

Когда Мурат увидел Абида, даже забыл, о чем пел. Когда он заметил такой красоты девушку, ее наполненные слезами большие глаза, тогда сердце у Мурата начало биться все сильнее и сильнее.

Азрет сильно от души заслушался этой песней. И все что происходило между ними, он не замечал. Иногда, удивляясь песне, покачивая головой, он продолжал сидеть.



После песни Азрет отвел Мурата в другую гостевую комнату и, оставив его там, потом вернулся в свою комнату и проникся думами любимой сестры Абидат.

Абидат и Мурат об этом ничего не зная, находились в своих любовных грезах. Так прошло несколько дней.

Абидат из-за любовной болезни сильно исхудала. Однако, ее большие глаза, как прежде сверкали так, что все ей завидовали. Мурат также, не вставая с постели, не имея в голове, кроме Абидат, ни одной мысли, лежит. Любовная болезнь молодого певца полностью обессилила.

Азрет своего гостя, а теперь посчитавшего за своего любимого друга Мурата, когда увидел, что он заболел, не отходил от него, и все время думал о нем. Пригласив знахарей, Мурата показывает им. Они не в силах ему помочь, не зная причину болезни у юноши, покачивая головами уходили.

В это время Мурат, с каждым днем слабея, стал похожим на замерзшего цветка. Услышав про это, Абидат, пригласила старую Зурум:

– Вырастившая меня бабушка, душа, скажи мне! Ты сможешь, охраняя тайну человека, помочь ему? – спросила она.

– Абидат, душа, если я выдам кому-нибудь про твою тайну, пусть моя душа сгинет, клянусь Богом! – ответила она.

– Если так, то слушай! Я люблю Мурата. Его никто не сможет вылечить. А ты сходи к Азрету, и скажи, я его за один месяц вылечу, пусть Мурата приведут ко мне домой! Но чтобы это никто не видел и не знал, чтобы Азрет дал такой приказ, – сказала Абидат и научила старушку как поступить.

Зурум, проходя к Азрету:

– Отпусти Мурата ко мне домой и дай месяц сроку, я его вылечу, – сказала она.

Азрет удивился, но все равно повелел, чтобы Мурата повели домой к Зурум. А через некоторое время пришла Абидат, погладила рукой лоб Мурата и ушла, оставляя свой носовой платок ему.

Мурат, раскрыв глаза, оглянулся по сторонам, собрался с мыслями, сел на кровать. Потом у Зурум:

– Что это, неужели носовой платок Абидат?! – спросил он.

– Да, мой сын, да, это Абидат оставила тебе. И привет она тебе передавала. Ты сильно не торопись, Бог всемогущий, вы еще увидите друг друга, найдете, – пыталась она его успокоить.

Мурат от большой радости, поцеловал носовой платок Абидат, от счастья продолжает вздыхать. На второй день, когда лицо Мурата снова начало бледнеть, он, поворачиваясь к Зурум:

– Мать, в разлуке с любимой я больше не смогу прожить. Моя умница, мама, скажи, как я смогу увидеть Абидат? – спрашивает он.

Бабушка призадумавшись:

– Не бери в голову, пока я жива, я сделаю, чтобы вы встретились друг с другом. Мой сын пасет овец около фруктового сада Абидат, она каждый день приходит туда. Завтра ты приходи туда, зарежь там самую большую овцу, а ты надень на себе шкуру, и с овцами вместе зайди в сад, и там встретишься со светочем глаз твоих Абидат, – сказала она.

Мурат все делает так, как она сказала: утром, накинув на себе шкуру, с овцами заходит в сад Абидат. Потом, сняв с себя шкуру, спрятался в кустах. Он так торопился увидеть Абидат, что зрение начало его подводить.

И тут – на тебе! – как будто среди зерен пшеницы, зерно риса, появляется Абидат, укутавшись в белые шелка. Мурат смотрит на ее большие глаза, на длинные волосы, на тонкую талию, восхищаясь ее черными бровями, из-под кустов, не моргая глазами, глядит на нее. Потом, выходя из укрытия, показывает себя Абидат. Двое любящих встретились...

За время, которое можно сомкнуть и разомкнуть глаза, наступил вечер. Мурат, со встревоженной душой, накинув на себя ту же овечью шкуру, возвращается обратно вместе с пастухом.

А того, кто изъявит желание увидеть красивую Абидат, готовый убить Хамзат ходит, охраняя дворец Азрета.

Зурум Мурату:

– Ну, сын мой, как все было, ты увидел свою любимую? – спросила у него.

– Ай, мама, конечно, увидел, но моя любовь к ней безгранична, – я не утолился, – сказал Мурат, вздыхая.

– Не переживай, мой сын, все у вас уладится, – сказала старая Зурум, подбадривая настроение у Мурата.

Чтобы увидеть свою любимую, Мурат, используя овечью шкуру, несколько дней ходит.

А Азрет, спрашивая про здоровье дорогого его сердцу Мурата, каждый день приходит к Зурум.

Зурум ему:

– Ай, мой сын, сегодня лучше, чем вчера, но пока его видеть нельзя, потерпи, потом придешь, – отвечала она.

В один день Мурат любимой:

– Любимая, свет моих очей! Наши дела так хорошо не кончатся, пойдем, сходим, и все расскажем твоему брату, – сказал он.

– Мурат, душа моя! Азрет дал слово: исходя из этого, я должна выйти замуж за Хамзата. Но, чем я с тобой расстанусь, лучше умереть. Давай, ты возьми с собой большой нож, также возьми саван и сходи к Азрету. Все это положи перед Азретом: «Азрет, вот нож, вот саван! Или убей меня и положи на саван, или же выдай свою сестру за меня!» – скажи так, стой крепко на этом, – научила Абидат Мурата.

На второй день Мурат приходит к Азрету. Азрет, увидев своего друга здоровым, невредимым, сильно обрадовался, что под ногами не сломалась бы травинка. После того, как они поздоровались, Мурат начал свою речь.

– Эй, мой друг – богатырь, Азрет, у мужчины разговор всегда открытый, – ты не обессудь! Я люблю твою сестру Абидат и она меня любит. Поэтому, выдай за меня Абидат, или же отрежь мою голову этим ножом, заверни в саван, захорони в землю! – сказал.

Азрет, опечаленный, опустил голову. Он Мурата очень любит, но он еще помнит перед народом данное слово. Сам Хамзат, кроме того, что прислуга, он еще и друг, который охраняет его от всяких бедствий. После долгих раздумий, в конце Азрет:

– Друг мой, Мурат! Ты задал мне трудное дело, но, я согласен, пускай будет по-твоему. Я отдаю свою сестру за тебя.

На второе утро того дня Азрет под предлогом Хамзата отправляет в далекий путь, а старшему брату Хамзата Канботу говорит:



– На свадьбу Мурата и Абидат зарежь барашек, все приготовь как надо, – приказал ему.

Таким образом, в тот день начинается свадьба.

Люди такую большую, прекрасную свадьбу давно не видели. Танцы, песни, шутки, игры длились до вечера. В конце свадьбы, когда Азрет шел с Муратом, провожая его, он увидел, что Хамзат, вернувшись, как всегда стоит, охраняя комнату Абидат. Про свадьбу Хамзат ничего не знал. Азрет быстро, укутав Мурата в свой тулуп, взял к себе в бок и проходит перед ним. Хамзат уступает дорогу своему князю, и следом смотрит пристально. Смотрит и – видит четыре ноги, сильно удивляется.

Потом:

– Боже мой, Азрет! Или я сошел с ума, или же твоих ног стало четыре?! – говорит.

– На самом деле, ты сошел с ума, а то, у всех людей бывает одна голова, две ноги, и у меня есть одна голова, две ноги. А то, что тебе показались, это рукава моего тулупа, – сказал и двинулся дальше.

Позже Хамзат узнает всю правду. И тут же его глаза наливаются кровью и он бегом прибегает к брату Канботу. Он, увидя состояние Хамзата, так как хорошо знал его характер, тут же крепко запер в доме двери, окна.

После всего, освободившись, Хамзат взбешенным кинулся в комнату, где находились Мурат и Абидат. «Я убью обоих!» – сказал он. Но, так как Абидат знала его дикий нрав, она тоже двери, окна заперла крепко.

Когда Хамзату не удалось открыть двери или окна, он говорит Мурату:

– Эй, трус, выйди сюда! Если ты мужчина, давай поборемя, с ножами поиграемся! – закричал он.

Мурат в свою очередь, чтобы не уронить свою честь, взял в руки свой нож и засобирился выйти наружу. Однако Абидат легла на ноги Мурату:

– Прошу, не выходи! Он похож на зверя. В первую ночь нашей свадьбы будь терпелив, дорогой мой, – просит она.

После ее такой просьбы Мурат не вышел во двор. Послушался Абидат. Один из слуг услышав крики, шум, прибежал к Азрету.

Азрет приходит и берет Хамзата за руку:

– Так нельзя делать. Хамзат, ты мой хороший друг, моя сестра пусть будет и твоей сестрой. Теперь ты этому делу не сможешь помешать. Поверь мне, я тебе достану девушку, какую ты захочешь, – говорит и останавливает его. Потом: – Он одинок, кроме тебя и меня у него никого нет, мы с тобой вместе должны его оберегать, Хамзат, – сказал он.

Хамзат, выслушав слова Азрета, идет к себе домой, однако, как бы то ни было, он хотел отомстить Мурату, и поэтому он до утра, не смыкая глаз, был весь в раздумье. Но в голову в эту ночь ничего не пришло.

Наступило утро и Хамзат принялся за работу прислуги. А сам все думает, как бы отомстить Мурату.

Азрет теперь успокоился и думал, что Хамзат Мурату не станет мстить. Проходит некоторое время. И в голову Хамзата приходит дурная мысль...

Однажды Азрет и Мурат вернулись из охоты, и Мурат засыпает в своей комнате. Об этом узнал Хамзат, быстро пошел и на дверях установил большой кинжальный нож поперек.

– Ой, Мурат, вставай, горе в твоём доме, Абидат умерла! – начал кричать.

Спросонья Мурат вскочил, хотел во двор выбежать и тут себя пронзает ножом и режется пополам. Тут же падает на спину и пачкается в свою красную кровь. На крик-шум прибегает Абидат. Она увидела на пороге в крови Мурата, лежащего мертвым. В надежде, что он еще придет в себя, Абидат легла на грудь своего любимого и начинает долго его целовать. Когда Абидат поняла, что он не выживет, легла рядом с любимым и ножницами пронзает себя в грудь.

На этом удивительно любившие друг друга, немного достигли своих желаний и в один день умерли и похоронили их вместе.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 263–269) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка может быть отнесена к жанру семейно-бытовой сказки. В ней две сюжетные линии – линия искусства и линия любви. Музыкально-песенное искусство представлено как одна из величайших ценностей жизни.

Сюжетная линия любви между Абидат и Муратом восходит к многочисленным типологически сходным сюжетам в мировом фольклоре и может трактоваться как высокая трагедия.



ЗАН УЛУ АДИЛГЕРИЙ

Дунияны бир кезиуюнде Зан улу Адилгерий деп бир белгили киши болганды. Анга бир иш бла кыйры эсе да бир узакъ жерге атланыргъа тюшгенди да, кьоншуларына:

– Мен кыйтхынчы, кьатыным сизге аманатды, кез-кзулакъ бола туругъуз, – деп, тилеп кетгенди.

Ол да кетип, бир алты-жети кюн озгъандан сора, бир кьоншу тиширыу, келип, аны кьатынына:

– Ах кюнюм, бир саудюгерчи келгенди, ол бир ырысхы-хазна келтиргенди да, мен ёмюрюмде аллай затлагъа кез ачмагъанма. Келин, сен аланы бир керсенг эди! – дегенди.

Адилгерийни кьатыны анга:

– Аллах-Аллах, сен алай тангкёрдю этерча не келтиргенди бу?! Мен аллыкъ зат а жокъду, Адилгерий болмай, мен сатыу этмеучюме. Сукъланнганынг бар эсе, быллай бир термилмей, кесинг алып кыйсанг а! – деди.

– Аллах хакъына, бек сукъланама, алай, санга кергюзтмей, алаллыкъ туююлме. Кел, эринме да, экибиз да бирге кьарайыкъ, – деп кьадалды ол тиширыу.

Адилгерийни кьатыны, ыразы болмаса да, кьоншуму жанына тиймейим деп, арбазгъа чыккъды. Тюз ол да арбазгъа чыккъганлай, кимле эселе да, сермеп, аны бир фыйтоннга атып, жел ургъанча, думп этип, алып кетедиле.

Ол кьоншу кьатын а, юйюне кыйтып келип, олтуруп кьалады.

Адилгерийни кьатынын кьачыргъан залим бай адам урлап сатхандан башха иш этмеген, аманлыкъчы Жантемир эди. Аны бла бир тилли болуп, кеп ахча да алып, ол кьоншу тиширыу Адилгерийни кьатынын арбазгъа алдап чыгъаргъан эди. Арадан бир төрт-беш сагъат озгъанлай а, Адилгерийни юйюне барып, кыйчырыкъ этип, мыллыгын эшикке атады:

– Ах кюнюм, келин кыйры кетген эсе да, тапмайма, думп болганды! – деп, төгерекге чабып, сау элни жыйды.

Халкъ, кыйгъыгъа кьалып, гузабалыккъда ары да, бери да кьууулады, алай кьатын табылмайды.

Кьоншулары, эл саулай да ачыу этедиле, мудах да боладыла. «Бир аманат кьатынны сакълаялмадыкъ, энди Адилгерийге бетибизни, уялмай, кьалай кергюзтюрюкбюз?» – деп, этер амаллары тауусулуп, шургулуккъда кьаладыла.

Бир ыйыккъдан а Адилгерий юйюне кыйтып келеди. Аны келген хапарын эшитгенле, аллына барып:

– Айыплы болдукъ, юй бийченги сакълаялмадыкъ. Жюрегибиз кыйналады, уялгъандан да ёлебиз, алай... – деп, кьатынны тас болгъанын билдирдиле.

Адилгерий, алагъа жукъ да айтмай, гюрбежиге барып, кесине эки темир чурукъ бла темир таякъ сапарыш этди. Ала битгинчи уа, бир-эки кюн да солуп, кьуралып, жолгъа чыккъды. Орамны бара, элни ныгъыш кьартларына жолугъуп:

– Аллах айтса, табарма, бу эки темир чурукъ бла бу темир таякъ тауусулгъунчу жюрюрме. Ёлсем – ёлюрме, ёлмесем – кьатынымы табып кыйтырма, – деп, саламлашып кетеди.

Жолда тубегенге сора, сурай, Адилгерий тамам бир жыл жюрюйдю. Жерге кирген эсе да, кёкге чыкыгъан эсе да, кьатынындан бир тюрлю хапар билмейди. Аман да, кьарыусуз да болуп, эки темир чуругъу да тауусулуп, жюрюр кючу кьалмай, бу бир уллу сууну боюнунда кьамиш кьатында кёк кырдыкга олтурду. Энди уа не этейим деп, уллу сагышха кирип тургъанлай, кьамиш ичинден, шырт деп, учхан жулдузча, бир атлы юсюне келеди. Сора, секирип, атдан тюшгенлей:

– Салам алейкум, Зан улу Адилгерий! – деп, кьолун узатады.

– Алейкум салам, – деп, Адилгерий жашны кьолун туттады.

Саламлашып, экиси да кьыргышха олтурадыла да, жаш:

– Адилгерий, не айланаса, сен бери кьайдан чыкыгъанса? – деп сорады.

– Ай, жигит, мени Адилгерий болгъанымы сен кьайдан билесе?

– Мен сени Адилгерий болгъанынгы тюгел да билмейме, алай жигитликде хапары эшитиле тургъаны себепли, ол сен болурмуса деп айтама.

– Тюз таныгъанса, – деп, Адилгерий хапарын башлайды. – Да, ахшы улан, айланганым, жюрюгеним а анданды: мени кьатыным урланып кетгенли, бир жылдан артыкь болады. Не халгъа жетгеними кесинг кёресе. Мен аны излеп айланганлы жыл болду, алай бирда хапары чыкьмайды. Сен а аны юсюнден зат иш эшитген болурмуса?

– Да, мен сени кьатынынгы табып берсем, сен манга не саугъа этерсе? – деп сорады жаш.

– Аллах-Аллах, сен аны манга табып берсенг, жанымы десенг да, аямам, – дейди Адилгерий да.

– Алай эсе... – деп, жаш боюнундан кёзюлдюреуюгюн тешип, Адилгерийге береди. Сора: – Муну бла бизни аллыбызда тауну башына бир кьарачы! – дейди.

Адилгерий кьарайды да:

– Да ол тауну башында, бир акъ юйледен сора, мен кёрген зат жокьду, – дейди.

– Аха, Адилгерий, тауну башында акъ юйлени кёре эсенг, сени кьатынынг ма ол акъ юйледеди. Кесин да жети кьаты аскер сакълайды. Аны аладан кьутхаргъан бек кьыйын боллукьду. Алай мен санга болушургъа дедим да... Сен, факьырача кийинип, ары бар да, не амал бла да кьатынынга кесинги бир кёргозт. Сора, тегерек-башда халгъа да иги кьарап, билип, алай кьайт, ишибизни да анга кёре этербиз, – деди.

– Сен айтханлай болсун, – деп, Адилгерий, факьырачы кийимле да кийип, эки инбашына да эки артмакь атып, кетеди. Иги да кьыйналып, ол тауну башына чыгъады. Анда бир-эки кюн да кьалып, кесин таза да факьыра сундурады. Аскерле муну уллу сан этмейдиле. Бу да, жанлай барып, кьабакьдан ары кьутулады. Сора, кьысыла барып, кьатыны кёрюрча, терезе аллында олтурады. Кьатыны, Адилгерийни бир кёргенлей окьуна танып, чамланып, терезени эки жанына ачды.

– Тохтагъыз сиз, Жантемир бир келсин! Анга айтып, мен сизге этерими кёрюрсюз. Кьайда болса факьыраны мен тургъан жерге жибергенигиз ючюн, жаныгъызны алырма! – деп, аскерчилени жаныды.

Ала уа, олсагъатлай жетип, Адилгерийни тутдула да, табанлары бла туююп, ауузундан, бурунундан кьанын келтирдиле. Ёлтюрюрге жетдирип, кьабакьдан тышына атдыла.



Жыйырыла, сюркеле, Адилгерий суу боюнуна кьайтды. Биягъы жаш а, кьамиш ичинден чыгъып:

– Адилгерий, халынг кьалайды, кьатынынгы кёрдюнгмю? – деп сорду.

– Да кёргенден не файда? «Бу факъыраны бери нек жибергенсиз?» – деп кьыжырады да, аскерлери мени тьююп, ёлтюрюрге аздан кьоюп кьыстадыла, – деди.

– Алай эсе, Адилгерий, энди кьалай этерге дейсе?

– Да, тейри, энди уа мен не айтыргъа да билмейме.

– Сора сен иги сагъыш эт! Мен а бусагъатдан кьайтырма, – деп, жаш биягъы кьамишге ташайып кетди.

Сагъыш этиб'а, Адилгерий не сагъыш эталлыкь эди?! Жанын кьолуна алып, кючден-бутдан кьутулгъанды.

«Энди мен ары, ёлсем да, бармайма», – деп, кеси кесине алай айта тургъанлай, ол жаш, бир адеж атны да башындан тутуп, шырылдап, кьамишден чыгъады да:

– Аха, Адилгерий! Муратынг неди? Не сагъыш этдинг? – деп сорады.

– Тейри, билмейме, мен акъыл эталгъан зат жокьду.

– Алай эсе, мен санга эки сайлау берейим: суюсенг, ол сен кёрген аскерни бичакь бла бир жанына тыяса, суюсенг а, ол темир кьабакьны ууатып, кьатынынгы алып чыгъаса. Кьайсын эталырса?

Адилгерий, бираз сагъыш да этип:

– Кьабакьны ууатыргъа кьолумдан келлик тьююлдю, алай аскерни уа, сауут бла чапсам, кьозу сюрюуге бёрю киргенча этерме, – деп, таукел болады.

– Алай эсе, ма бу атха мин! – деп, юсюнде да сауут кереклери бла адеж атны Адилгерийге береди.

Адилгерий, кьууанып, атны алады, сауутланы да тагъады. Сора экиси да, жулдуз учханча, тебирейдиле да, уруп, тауну башына чыгъадыла.

Адилгерий, суууруп, бичагъын чыгъарып, аскерни ичине киреди. Кьойланы сюргенча, сюрюп, бир жанына тыйып тохтайды.

Жаш, аны алай кёргенде, кьууанып, чабып, кьабакьны табаны бла уруп, ууатып, бир жанына ачады. Ызы бла кьаланы ичине кирип, сермеп, кьатынны, чачындан тутуп, суюрегенлей, тышына чыгъарады. Секирип, атха минип, Адилгерийге да кьарамай кьачады. Жаш кьутулгъунчу, Адилгерий жанын-кьанын да аямай урушады. Сора, жаш узайгъан болур дегенлей, аскерден айырылып кьачады. Сюрюп, жашны жетеди. Кьатынны да алып, суу боюнунда олтуруучу жерлерине келедиле. Бираз эс жыйгъандан сора:

– Энди уа кьалай этебиз, Адилгерий? – деп сорады жаш.

– Не затха? – дейди Адилгерий.

– Мени да кьыйыным барды, кьатындан манга да юлюшюмю бер!

– Мен сени кьыйынынгы, адамлыгъынгы да кьайтармай кьалай кьоярма?! Сен манга этген адамлыгъынгы эки кере кьайтарып, кёлюнге жетерме.

– Мен кьыйынымы кьыйналгъан кюнюмде алыргъа сюеме, – деп, сермеп, кьылычын суууруп, Адилгерийни кьатыныны тюз тёппесинден уруп, эки бёлдюрюп, адурады.

Аны алай этгенине Адилгерийни жүреги бек кьыйналады.

– Эй-хей, таланган, былай нек этдинг? Мени быллай бир кыйынымы жоюп кыйдунг да! Энди мен бетими халкыга кылай кыргюзтейим, бу ишге ким ийнанырыкыды? – деди.

– Адилгерий! Аны ючюн сени жюрегинг кыйналмасын, – деди жаш. – Бу иш дуняда билинир сыйсыз ишди. Сен иги ойлачы! «Адилгерийни кыатыны кесини эрин абирек Жантемирни аскерине чурукъ табанлары бла тыйдюрюп кыыстатханды!» – деп жайылсамы иги эди? Мени акылым бла, тюз этгенбиз. Сен, Адилгерий, бу кыатынны кыатын этип тутарга керек тыйюл эдинг. Ол санга кыатын боллукъ болса, санга ол кыйынлыккыны берлик тыйюл эди, аны себепли, жюрегинг жарыла жашагъандан эсе, аны ёлюп кетгени игиди. Кыайгы этме! Сен кыатын табарса. Кыатын аллыкъ эсенг, ол жерде, тауланы артында, тогуз кыарындаш жашайды, аланы уа бир жангыз эгечлери барды. Ала эгечлерин санга берирле. Ол санга кыатынлыкъ этерикди, – деп, жаш, секирип, атына минип: «Ахшы жолга бар, Адилгерий!» – деп, кыамишге ташайып кетди.

Адилгерий, кеп тюрлю амалсыз болса да, алайдан, уруп, юйюне барады. Юйюне баргъанда, Адилгерийге хошкелдиге келедиле. Тынчылыкъ-саулукъ хапар сорадыла:

– Адилгерий, кыатынынгы тапдынгымы, кыалай болдунг? – дейдиле.

– Кыатынымы тапханма. Бир кыауум тенг бла барып келтирирме деп, кыюуп келеме. Аны ким урлагъанын а келгенден сора билирсиз, – деп кыояды.

Бир кюн озгъандан сора, ол, бу деген бир кыауум тенгин жыйып, кыатынны келтирирге деп, атланып кетедиле.

Бир бёлек кюн да жюрюгенден сора, ол жаш айтхан тогуз кыарындашха барадыла. Барсала, тогуз кыарындаш да, зурнуклача тизилип, чалгы чала. Адилгерий:

– Иш кыолай болсун! – деп салам береди.

Бары да бирден:

– Ой, сау бол! – деп, жарыкъ жууап кыайтарадыла.

– Мени сизни бла бир сёзюм бар эди, – деп, Адилгерий бек артда бир акъ сакъаллыны юсюне барады.

Акъ сакъаллы:

– Мени таматама бар! – деп, кеси аллындагыын кыргюзтеди. Адилгерий анга баргъанда, ол да кеси аллындагыын кыргюзтеди.

Алай кыргюзте, бек алларында кыап-кыара сакъаллы, бурулган кыара мыйыккылы бир келбетли кишини аллына барады. Сора Адилгерий:

– Сиз тогуз кыарындаш бла да мени бир сёзюм бар эди, ыразы болсагыыз, айтыр эдим, – деди.

Ол алай айтханда:

– Аллах-Аллах, бизни кыонакыдан сыйгенибиз жокъду! Жюрюгюз, жашла, – деп, ишни кыюуп, бары да кыошха тебирейдиле.

Сора Адилгерий ол кыарасакъал кишиге:

– Кыонаккыны сёзюм кыонаккыбай жулады, айып этме! Кыарындашларынгы барындан да сен жашса деп туюшнеме, – деди.

– А, ахшы улан, дуняда кыартлыкъ, жашлыкъ да адамга тенг келмейди. Кыартлыкъ адамга жашаудан келирге да болады. Мен быланы барындан да таматама, алай барындан да мен жашма. Не ючюн десенг, мен кыатын



бла жашагъанлы, кырк жыл болады. Ол заманны ичинде не тюрлю кыйынлык, заууклук кюнде да, жууап этип, мени кыатыным мени кезюме кыарамагъанды. Эр кишиге бары кыйынлыкны да унутдургъан, не тюрлю кыйгыны да тас этген кыатынды. Юйюнде кыатынындан кыуанганга кыартлык, кыарыусузлук да терк келир амалы жокъду. Ма кыесе, мени кыарындашларымы эм кичиси барыбыздан да кыартды, не ючюн десенг, ол ёмюрде юй тынчлык кырегенди. Жюреги тынчайып, ох деп солумагъанды. Ма анга ол кыартлык андан жетгенди. Ансы, бизни ашыбыз-суубуз да бирди, биз алыкыа бир бирден айырылмагъанбыз; не тапсак да, бирге ашайбыз, ишлесек да, бирге ишлейбиз. Ма алайды иш, ахшы кыарындашым. Энди сени да болур бир сёзюнг, айт, ахшы улан! – деди кыарасакъал.

– Да сёзюм а олду: мен Зан улу Адилгерийме, «Эрни сёзю ачык» дегенча, сизни бир жангыз эгечигиз барды деп эшитгенме да, тийишли кырегенди, аны тилей келгенме. Кесими танылмасагъыз да, атымы, хапарымы уа эшитген да болурсуз.

– Аллах-Аллах, Зан улу Адилгерий таныулу адамды, бизни сенден кыачар жерибиз жокъду. Алай биз да бир сорушайык, – деп, тогъуз кыарындаш да кенгеш боладыла. Сёз тылпыулары:

– Бизни эгечибизни Зан улу Адилгерийден артык тийишли болуп ким тилей келликди? Берирге керекбиз. Алай, базынып, аны эгечибизге ким айтсын? – деп, бир бирин тежедиле.

Болсада, ахыргыа кыалгъанда:

– Санга иги тынгылар, сен бар, – деп, тамата кыарындашларына айтдыла. Таматалары, аккыл болуп:

– Кючюн-кыарыуун кесигиз билесиз, кёлю тутмагъан затны айтсак, тогъузбузну да бир бири юсюбюзге салып тюймезми? Мен, кесим барып, бу хапарны анга кыалай айтырыкыма? – деди.

– Келечиге барсанг, жук да айтмаз, ыразы болуп кыаллык эсе уа, кыайдан билесе? Бар! – дедиле.

Ызы бла кеслерини ыразылыкларын Адилгерийге билдирдиле:

– Барайык, эгечибизге айтайык, ыразы болса, берирбиз, ыразы болмаса уа, зорлук жырамаз. Биз сюйгенликге, кеси сюймесе, биз анга абери эталлык тюйюлбюз, – дедиле.

Тамата кыарындаш кесини энчи отоуунда тигиу эте тургъан эгечини кыатына барып олтурады.

– Кыарындашым, бюгюн а ишге чыкмай кыалай кыалгъанса? – деди кыыз.

– Ишге да баргъанма, алай, эгечим, сени бла бир кенгешим болуп, аны ючюн келгенме. Жанынга тиймесе, айтыр эдим.

– Да нек тиеди жаныма? Айт, бир да кыоркыма!

– Ахшы эгечим, сени тилей, Зан улу Адилгерий деп, халк ортасында адамлык, жигитлик бла да аты айтылгъан бир адам келгенди. Да энди, кесинге сормай, кыалай жууап берирге билмей, мени келгеним анданды.

– Ха-ха-ха, – деп кюледи кыыз. – Да, жанымы кыйыры, сиз тогъуз кыарындашым да ыразы болупму жетди бу соруу манга?

– Угъай, сенден сёз эшитмей, биз ыразылыкыбызны да билдирмегенбиз. Сен айтханнга кыре этерикбиз нени да.

– Алай эсе, мен сиз айтханнга ыразыма. Тогъуз къарындашым да мени аман адамгъа буюрмазларын мен уста билеме!

Къызыны ол сёзлерин эшитгенлей, къарындашы, секирип къобуп, эгечин къучакълап, къарындашларына къууанып келди да:

– «Сиз айтханлай этерме», – деп айтханды эгечибиз, – деди.

Аны бла, жарашып, уллу къурманлыкъла этип, бу тогъуз къарындаш жангыз эгечлерин Адилгерийге береди.

Адилгерий, къызыны алып, нёгерлери бла юйюне атланады. Келе келип, аны алгъыннгы къатыны тууралгъан жерде тохтайдыла. Адилгерий алгъыннгы къатыныны тууралгъан хапарын къызгъа айта тургъанлай, къыз, тилеп, къамишге кирип кетеди. Сора жашча кийинип чыгъады да, Адилгерий таба атлайды.

– Кел-кел-кел, сау кел! Сен былайда мени алгъыннгы къатынымы ёлтюрген хапарынгы жангы къатыныма айта тура эдим. Кеси да былай къамишге киргенди, – деп суйюндю.

– Адилгерий, энди уа не тукъум къатын алдың? – деп сорду.

– Энди уа, сени ахшылыгъынгдан, алапат къатын алгъанма. Кел бизни бла, мен жарагъандан уллу той этерикме. Сени къыйынынгы да унутуп турмайма, къайтарлыкъма, – деди Адилгерий.

– Да, сау бол, жан эсен болса, баргъан да этербиз. Алай а жангы алгъан къатынынгы былайда бир кёрсем, бек ахшы эди.

Адилгерий алыкъа жукъ да сезмейди.

– Айхай да, бусагъат кёрюрсе, энди чыгъа болур, ашыкъма, – деди Адилгерий.

– Да мени кёп сакълар заманым жокъду.

– Алай эсе, сабыр бол! Мен аны алып келейим, – деп, Адилгерий ызына къарамаздан къамишге кирип барады.

«Жаш» а, терк окъуна къыз болуп, Адилгерийни аллындан чыгъып:

– Адилгерий, къайры бараса? – деп сёлешди.

– Да мен сени излей барама, – деди Адилгерий. – Ол мени къатынымы ёлтюрген жаш, келип, къатынынгы бир кёрсем эди дегенди да...

– Охо-охо-охо, кёрюр, ол бизни табар. Мен аны иги таныйма. Кёрмесе да, ол мени ким болгъанымы уста биледи, – деп, къайтып, экиси да къамишден чыгъадыла.

Нечик эсе да Адилгерий ол жашны андан сора сурап кюрешмеди. Нёгерлери бла алайдан атланып, бир ненча кюнден Адилгерийни юйюне жетедиле.

Адилгерий, битеу элни жыйып, кесини къатыны бла болгъан хапарын, аны ким урлагъанын, къалдырмай, ахшы адамларына баянлады. Тамаша, сейир той-оюн болду, къууанчын битеу эл бирден этди.

Адилгерийни алгъыннгы къатыныны къайда болгъанын айтхан, аны ёлтюрген, тогъуз къарындашны эгечин ал деп жиберген, аланы жангыз эгечлери да Адилгерийни ма бу жангы къатыны болуп чыкъды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 269–275 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Зан улу Адилгерий» деген жомакъда, баиша кѣп тюрлю къарачай-малкъар жомакъладача, жаш адам кесине жол нѣгер сайлауда тюбеген чурумланы юсюнден айтылады.

Жигитни биринчи юй бийчесин урлап кетедиле. Экинчисин кеси сайлап алады. Жашауда болдурулгъан бу эки хал адамны ич дуниясын айный баргъанын ачыкълайды.

«Тазрет» деген батырлыкъ жомакъгъа ушаса да, мында жигитликден эсе, юй-турмуш бла байламлы болумла уллуракъ жер аладыла.

АДИЛГЕРИЙ, СЫН ЗАНА

В давние времена жил известный мужчина Адилгерий, сын Зана. Однажды ему пришлось по какому-то делу отправиться в дальнюю дорогу, и он к соседям:

– Пока я вернусь, свою жену поручаю вам, проследите за ней, – обратился с просьбой и ушел.

Когда он уехал, по прошествии где-то шести-семи дней, одна женщина-соседка, пришла и говорит его жене:

– Ах, дорогая, пришел один торгаш, он столько богатства привез, мои глаза не видели такого за всю мою жизнь. Сноха, посмотри сама на все это! – сказала она.

Жена Адилгерия ей:

– Боже, боже, чтобы тебя так удивило, что же это такое может быть?! Мне брать нечего, в отсутствие Адилгерия, я покупки не делаю. Если что-то так сильно хочешь, чего ты так мучаешься, почему себе не берешь! – сказала она.

– Бог свидетель, я так хочу, но тебе не показав, не смогу купить. Пойдем, не ленись, с тобой вдвоем посмотрим, – сильно вцепилась эта женщина.

Жена Адилгерия, хотя была недовольна, чтобы не обидеть соседку, вышла во двор. Как только она вышла во двор, какие-то люди, ее схватили и бросили в фаэтон, и ее как ветром сдуло, быстро посадили и укатали.

А женщина-соседка, вернувшись к себе домой, уселась там.

Тот, который украл жену Адилгерия, жестокий, богатый преступник Жантемир*, занимался тем, что крал людей и продавал их. Эта соседка – сговорившись с ним, получила много денег. Жену Адилгерия вызволила из дому обманом. Спустя где-то четыре-пять часов, она пошла в дом к Адилгерию, с криком бросилась к их дверям:

– Ой, горе-то какое, сноха, куда исчезла, не нахожу, совсем исчезла! – сказала и забегала кругом и собрала все селение.

Народ, в смятении, второпях, забегал во все стороны, но женщину не смогли найти.

Соседки и все село сильно огорчились и опечалились. «Одну женщину поручили и ты не смогли сберечь, теперь, как взглянем в лицо Адилгерию без стыда?» – говорили они и, не зная, что делать, остались в оцепенении.

Через неделю Адилгерий возвращается в свой дом. Кто слышал, что он вернулся, идя ему навстречу:

* *Жантемир* – железная душа.

– Мы опозорились, не смогли сберечь твою жену. Сердца наши изнывают, от стыда умираем, но... – сказали они и дали понять, его жена пропала.

Адилгерий им ничего не сказал, пошел на кузню и заказал себе две обуви из железа и железную палку. Пока ему все это изготавливали, он отдохнул день-два, собрался и отправился в дорогу. Когда шел по улице, встретился со стариками, которые сидели на ныгыше*.

– Даст Бог, найду, пока эта обувь из железа и этот железный посох не износятся, буду ходить. Если умру – то умру, если не умру – найду жену и вернусь, – сказал он и, попрощавшись, ушел.

Кого встречал по дороге, спрашивая, Адилгерий ровно один год исходил. В землю ушла, в небо поднялась, от жены нет никаких известий. Он исхудавший, обессиленный, железная обувь его изнасилась, не было сил идти, сел на берегу большой реки среди камышей на зеленую траву. Не зная, что дальше делать, когда он был в раздумье, из камышей, быстро, как летящая звезда, один всадник подошел прямо к нему. Потом, соскочив, слез с коня:

– Салам алейкум**, Адилгерий, сын Зана, – сказал он.

– Алейкум салам***, – ответил Адилгерий, здороваясь за руку с ним.

После того, как поздоровались, они уселись на траве, и парень:

– Адилгерий, чего ты хочешь, откуда ты здесь взялся? – спросил он.

– Ай, жигит****, откуда ты знаешь, что я Адилгерий?

– Я точно не знаю, что ты Адилгерий, однако, в героических преданиях я слышал о нем, может это ты, я подумал.

– Правильно ты узнал, – сказал Адилгерий и начал свой разговор. – Да, молодой человек, брожу, хожу из-за того, что, как украли мою жену, прошло больше года. До какого состояния я дошел, ты видишь, как я начал ее искать, год прошел, однако никаких известий. Может ты о нем что-нибудь слышал?

– Если я тебе верну твою жену, какую ты мне награду дашь? – спросил молодой человек.

– Боже мой, если ты мне ее найдешь, если потребуешь мою жизнь, я не пожалею, – сказал Адилгерий тоже.

– Если так... – сказал молодой человек, снял с шеи бинокль и подал Адилгерию. Потом: – Вот с этим впереди нас на вершину горы посмотри! – сказал.

Адилгерий посмотрел:

– Да, на вершине той горы, кроме белых домов, ничего не вижу, – ответил.

– Это хорошо, Адилгерий, если на вершине горы белые дома видишь, твоя жена находится в тех белых домах. Их сторожит крепкая армия в семь рядов. Ее от них спасти будет очень сложно. Однако я же обещал тебе помочь... Ты оденься как нищий, сходи туда, любым путем покажись своей жене. Потом, хорошенько осмотревшись вокруг, узнав, вернись, и дальше будем думать, что делать, – сказал он.

* *Ныгыш* – завалинка.

** *Салам алейкум* – приветствие.

*** *Алейкум салам* – ответ на приветствие.

**** *Жигит* – герой, храбрец.

– Пусть будет, как ты скажешь, – сказал Адилгерий и, переодевшись в одежду нищего, на обе плечи накинув два баула, отправился в дорогу. С большим трудом он поднимается на вершину горы. Оставаясь там на несколько дней, он себя показал настоящим нищим. Армейцы на него не обращают особого внимания. И он, шагая не спеша, просачивается за ворота. Потом, прижимаясь в сторону, чтобы жена увидела, садится перед окном. Жена, как только увидела Адилгерия, сразу узнала и начала поднимать шум, открыв окна на две стороны.

– Подождите вы, вот придет Жантемир! Я ему все расскажу, посмотрите, что я с вами сделаю. Из-за того, что вы всякого нищего пропускаете в мое местоположение, я вас уничтожу! – сказала и сильно отругала армейцев.

А они, тут же догнали Адилгерия, схватили, начали бить ногами, и у него изо рта, из носа потекла кровь. Избив до полусмерти, выбросили из-за ворота.

Съжившись, отползая, Адилгерий вернулся на берег реки. Тут к нему из камышей вышел тот же молодой человек.

– Адилгерий, как у тебя самочувствие, увидел свою жену? – спросил он.

– А что толку, что увидел? «Почему этого нищего сюда пустили?» – сказала она с руганью и ее армейцы, избив меня, чуть не убили, после прогнали, – сказал он.

– Если так, Адилгерий, в дальнейшем, что ты собираешься делать?

– Да, тейри*, теперь я не знаю, что и сказать.

– Тогда ты хорошенько думай! А я сейчас вернусь, – сказал молодой человек и вернулся обратно в камыши.

Думая, что мог Адилгерий придумать?! Еле остался в живых, чудом спасся.

«Под страхом смерти, я уже туда не вернусь», – разговаривал он с собой, в это время, тот молодой человек, ведя за узду породистого скакуна, шурша, вылезает из камышей:

– Ну, а теперь, Адилгерий! Как ты хочешь? Что решил? – спрашивает он.

– Тейри, не знаю, я ничего не могу придумать.

– Если так, я тебе дам два выбора: если захочешь, армию, которую ты видел, кинжалом отдвигаешь в сторону, а по-другому, если захочешь, разгромив эти железные ворота, вытаскиваешь оттуда свою жену. Какой вариант выбираешь?

Адилгерий, немного подумав:

– Я не смогу разгромить железные ворота, но армию, если я на нее вооруженным нападом, то будет, как будто на отару из ягнят напал волк, – сказал он уверенно.

– Если так, то садись на этого коня! – сказал он и вручил ему коня в военном снаряжении Адилгерию.

Адилгерий, обрадовавшись, берет коня и на себя надевает боевые доспехи. После этого, они вдвоем, как летящая звезда, отправляются в путь и тут же оказываются на вершине горы.

* *Тейри* – у карачаевцев и балкарцев верховный бог в язычестве, именем которого клялись, позже перешло в модальное слово.

Адилгерий умело вытаскивает кинжал и нападает на армейцев. И начинает их гонять как овец и загоняет всех в угол.

Как это увидел, молодой человек радостный, бегом, ногой ударил в ворота, разломав, отодвигает их в сторону. Следом заходит во дворец, схватывает женщину, берет за волосы и вытаскивает наружу. Вскочив, сел на коня, не оглядываясь и на Адилгерия, начинает убегать. Пока молодой человек далеко не ушел, Адилгерий не щадя ни здоровья, ни жизни, бьется. После того, когда юноша исчез из виду, он бросает армейцев и убегает. Быстро скача, догоняет молодого человека. Захватив с собой женщину, они вернулись на берег реки, где и раньше отдыхали. Немного опомнившись:

– А теперь, что будем делать Адилгерий? – спрашивает молодой человек.

– На что? – спрашивает Адилгерий.

– У меня тоже есть вклад в это дело, от этой женщины выдели мою долю!

– Как я могу не отблагодарить твой труд, твою доблесть?! То, что ты мне сделал, я тебе верну сторицей, и ты будешь доволен.

– Я свой труд хочу вернуть в трудный день для меня, – сказал он, схватив быстро, умело вытащил кинжал, и нанес удар по макушке жены Адилгерия, разделив пополам, сваливает ее.

То, что он так поступил, Адилгерий сильно огорчился.

– Эй, сумасшедший, что ты сделал? Столько моего труда ты уничтожил! Теперь как я буду выглядеть перед народом, кто в это поверит? – сказал он.

– Адилгерий! Ты зря переживаешь, – сказал молодой человек. – Это в жизни постыдное дело. Ты хорошо подумай! «Жена Адилгерия своего мужа соизволила прогнать, избив пятками армейских сапог абрека Жантемира!» – чтобы такой разговор был, ты хотел? Как я думаю, мы поступили правильно. Ты, Адилгерий, эту женщину должен был держать у себя не как жену. Если бы она была тебе нормальной женой, она не доставила тебе столько неприятностей, поэтому, чем жить с сердечными муками, лучше, чтобы она ушла из жизни. Не переживай! Ты найдешь еще себе жену. Если собираешься жениться, в тех землях, за горами, живут девять братьев, у них есть единственная сестра. Они сестру свою тебе отдадут. Она будет тебе женой, – сказал молодой человек, вскочив, сел на своего коня: «В добрый путь, Адилгерий!» – сказал он и исчез в камышах.

Адилгерий, не зная, что делать, оттуда поторопился к себе домой. Когда Адилгерий вернулся домой, поприветствовать его к нему пришли люди. Спросили про его здоровье, дела:

– Адилгерий, ты нашел свою жену, как все получилось? – спросили у него.

– Я жену свою нашел. Решив ее привести с несколькими друзьями, оставил там. А кто ее украл, после того, как ее верну, узнаете, – сказал он.

Через день, он собрал несколько своих знакомых, и все отправились в дорогу, чтобы привести жену.

После долгих дней в дороге, они прибыли к тем девятерым братьям, про которых говорил молодой человек. Когда пришли туда, они увидели, что девять братьев, выстроившись друг за другом, косят сено. Адилгерий:

– Чтобы работа ваша была к добру, – сказал он и поздоровался.

Они все вместе ответили:



– Будь здоров! – сказали и радостно его встретили.

– Я хотел с вами поговорить, – сказал Адилгерий и подошел в самом конце стоящему седобородому старику.

Седобородый:

– Иди к тому, кто старше меня! – сказал он, показывая впереди стоящего. Когда Адилгерий подошел к нему, тот показал впереди себя стоящего.

Все его направили в самом начале стоящему с черной бородой, с завернутыми черными усами обаятельному мужчине. Адилгерий подошел к нему:

– У меня есть разговор с девятью братьями, если вы позволите, я бы начал свою речь, – сказал он.

Когда он это произнес:

– Боже мой! Мы больше всего ценим гостей! Пойдемте, ребята, – сказал он, оставив работу и все они направились к кошаре.

Тогда Адилгерий тому чернобородому мужчине:

– Речь гостя хозяин дома всегда выслушает, позвольте! Среди братьев, мне кажется, ты младше всех, – сказал он.

– А, славный сын, на свете старость, молодость не поровну достается человеку. Старость человеку может прийти по жизни. Я старше их всех, в то же время я младше из всех. Это из-за того, с тех пор как я живу с женой, исполняется сороклет. За это время были горестные и счастливые дни, но моя жена ни разу с укоризной мне в глаза не смотрела. Мужчину заставляющая забыть все горести, любые испытания помогающая преодолеть – это жена. Кто в доме доволен женой, к нему и старость, и слабость прийти быстро не смогут. Вот видишь, из моих братьев самый младший старее нас всех, это из-за того, что он в своей жизни не испытал счастья семейного очага. Со спокойной душой он никогда не отдыхал. Вот поэтому его настигла эта старость. А так, у нас еда-питье общее, мы еще друг от друга не отделились: все, что находим, вместе кушаем, если трудимся, то вместе трудимся. Вот так обстоят дела, дорогой наш брат. Теперь, наверное, и у тебя есть, что сказать, говори, славный сын! – сказал чернобородый.

– Я вот, что хочу сказать: я Адилгерий, сын Зана. «У настоящего мужчины речь открыта» – говорят. Я слышал, что у вас есть единственная сестра, если посчитаете достойным, я пришел просить ее. Может быть, меня не узнали, а имя, разные истории про меня, наверное, слышали.

– О боже, Адилгерий, сын Зана – известный человек, мы тобой не пренебрегаем. Однако, нам нужно принять решение, – сказал он, и девять братьев начали совещаться. От них исходило:

– Нашу сестру достойнее, чем Адилгерий, сын Зана, кто может прийти и попросить руки? Нужно выдать. Но, надеясь на себя, кто об этом сможет сообщить нашей сестре? – сказали они и начали предлагать друг друга.

И все-таки в конце концов:

– Тебя больше послушается, сходи ты, – сказали старшему брату.

Старший, неторопливо:

– Вы сами знаете, какая у нее сила, если мы ей скажем, что ей не по душе, она запросто всех нас вдвядтером друг на друга положит и поколотит же? Я один, как смогу пойти и рассказать ей об этом? – ответил он.

– Если пойдешь как посыльный, ничего не скажет, а, может, станет довольной, откуда ты знаешь? Иди! – сказали они.

Следом они дали знать Адилгерию, что довольны им:

– Сходим, скажем сестре, если согласится, выдадим, если не согласится, насилие не будем применять. Тот, кто нам нравится, если ей не понравится, мы с ней ничего не сможем сделать, – сказали.

Старший брат подошел и присел рядом с сестрой, которая в своей комнате занималась шитьем.

– Брат мой, сегодня как ты не ходил на работу? – спросила сестра.

– И на работу ходил, но, сестра моя, я сюда явился посоветоваться с тобой, поэтому пришел. Если ты не обидишься, я бы рассказал, в чем дело.

– А почему я должна обидеться? Говори, за это не беспокойся!

– Хорошо, сестра моя, Адилгерий, сын Зана пришел к тебе свататься, своей человечностью и богатырством он очень известен в народе. Однако, не спросив у тебя, мы не знали, что ответить, поэтому я пришел сюда.

– Ха-ха-ха, – засмеялась девушка. – Да, душа моя, вы девять братьев согласны в этом вопросе? После этого вы хотите узнать мое мнение?

– Нет, мы, не спросив твоего мнения, мы не дали своего согласия. Как ты скажешь, мы так и поступим.

– Если так, то я соглашусь с вашим мнением. Я уверена в том, что девять моих братьев плохого человека не будут мне предлагать!

Когда он услышал от девушки такие слова, брат, тут же вскочил, обнял сестру, с большой радостью прибежал к братьям:

– «Как вы скажете», – сказала сестра, – сообщил он.

Итак, договорившись, сыграли большую свадьбу, эти девять братьев единственную дочь выдали за Адилгерию.

Адилгерий, поженившись на этой девушке, с друзьями отправляется к себе домой. По дороге они остановились на том месте, где была разрублена прежняя жена. Адилгерий пока рассказывал девушке историю своей первой жены, девушка, отпросилась и исчезла среди камышей. После этого вышла, переодевшись в мужчину, направилась в сторону Адилгерию.

– Иди-иди-иди, добро пожаловать! Я тут рассказывал своей новой жене как ты здесь мою первую жену убил. Сама только что зашла в камыши, – сказал он с удовольствием.

– Адилгерий, а теперь на какой девушке ты женился? – спросила она.

– А теперь, благодаря тебе, я женился на прекрасной девушке. Пойдем с нами, я хочу провести грандиозную свадьбу. И твои услуги я не забыл, обязательно отблагодарю, – сказал Адилгерий.

– Да, спасибо, если будем живы, может быть и придем. Но я бы хотел твою новую жену увидеть здесь, было бы очень хорошо.

Адилгерий до сих пор ни о чем не догадывается.

– Ну, конечно, сейчас увидишь, наверное, скоро выйдет, не торопись, – сказал Адилгерий.

– Но у меня долго ждать времени нет.

– Если так, успокойся! Сейчас я ее приведу, – сказал Адилгерий, не поворачиваясь, начал уходить в камыши.

А «молодой человек», быстро превратившись в девушку, вышла навстречу Адилгерию:



– Адилгерий, куда ты идешь? – спросила она.

– Да, я шел искать тебя, – ответил Адилгерий. – Тот молодой человек, который убил мою первую жену, пришел, и изъявил желание увидеть мою жену...

– Хорошо, хорошо, увидит, он найдет нас. Я его хорошо знаю. Если и не увидит, он прекрасно знает, кто я такая, – сказала она, повернувшись обратно, они вдвоем вышли из камышей.

Почему-то Адилгерий не стал больше ничего спрашивать про того молодого человека. С друзьями они отправились в дорогу и через несколько дней добрались до дома Адилгерия.

Адилгерий, созвав всех жителей села, рассказал историю своей жены, кто ее украл, ничего не утаивая, раскрыл все как было, всем хорошим людям. Была удивительная, грандиозная свадьба, эту радость разделили всем селом.

Кто сказал где находилась прежняя жена Адилгерия, кто ее убил, кто посоветовал жениться на сестре девятерых братьев, и их единственной сестрой оказалась вот эта новая жена Адилгерия.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 269–275) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Одна из многочисленных карачаево-балкарских сказок, повествующих о сложном процессе выбора молодым человеком спутницы жизни. Первую жену героя похитили. Вторую он выбрал сам. Эти две части истории характеризуют процесс взросления человеческой личности.

Несмотря на некоторое сходство с героической сказкой «Тазрет», здесь, тем не менее, большее место отводится не героике, а семейно-бытовым отношениям.

ТАБЫЛГЪАН САУБАР

Эртте-эртте, адамла узун сакъал, мыйыкъ ёсдюрген ёмюрледе, къуру тери, жюн кийимле бла жашагъан ауукълада, жерни юсюнде жаныуар, кийик да кёп болгъан кезиуледе, адамланы онглусу онгсузун урлап, хайыуанны орунунда жюрютген чакълада Ийналукъ деп бир мардасыз ёхтем хан жашап болгъанды.

Ол ёхтем Ийналукъну, замандан-заманнга узакъ жерлеге атланып, дуняны тюрлю-тюрлю сейирликлерин кёрюп, кёз ача, эрикгенин кетере жюрюген адети болгъанды.

Ма бир кюн да ол, атланып, жолгъа чыгъады. Айлана, къыдыра барып, бир уллу сууну жагъасына жетип къарагъанда, олтуруп, китап окъуй тургъан бир къарт кишини кёреди. Тюзюнлей тартып, къартны къатына барады да, атындан тюшмей:

– Эй къарт! Обур кибик, сен былайда не эте тураса? – деп, къамичини къыйыры бла къатылып тюртеди.

Болсада ол къарт, анга бурулуп да къарамай:

– Мен жашладан, къызладан да кимни жазыуу кимге болгъанын окъуп жаза турама, – деп, сансыз жууап къайтарды.

– Да, алай биле эсенг, къартчыкъ, мени жангыз бир къызым барды да, аны жазыуу кимге боллугъун бир айтчы!

– Да аны уа айтаймы: сени къызынгы жазыуу сени юй тюбюнгю сибирип тургъан къарауаш къатынны къарынындан жаратыллыкъ жашхады. Ангыладынгмы?

Ёхтем Ийналукъ хан, аны эшитгенде, ачыуланып, къартны къолундан китабын тартып алып, чайкъалып баргъан уллу суугъа быргъады да, кеси да алайдан ызына къайтып кетди.

Юйюне жете келгенлей, жумушчуларын чакъырып:

– Ол къарауаш къатынны ёлтюрюгюз да, мыллыгын агъачны теренине элтип, чауулгъа атыгъыз! – деп буюрду.

Ийналукъну жумушчулары къатынны элтип барадыла да, буууп, чауулгъа ташлап, ёлгенди деп, кетедиле. Алай ол къарауаш къатын, ёлмей, тунчукъганлай къалады, бир бёлек кюн да жашайды. Ахырында уа, кюченнгиси жетип, жаш табады. Аны да ёшюнюне къаплап, эмчегин эмизгенлей, бу къатын кеси ёлюп, жашчыгъы къалады.

Ажалсызгъа мадар къайдан да табылады. Тамам ол кезиучюкде Къазбек ханны учулары, айлана барып, чауулну юсю бла ёте тебирегенлеринде, таш тюбюнден сабий жилигъан тауушну эшитедиле. Барып къарасала, къатын ёлюп, жанында сабийи жилий тургъанын кёредиле. Тамаша боладыла да, къатынны басдырадыла, сабийчигин а, элтип, Къазбек ханнга сауугъага бередиле.

Къазбек хан, къаратон болгъаны себепли, табылгъан жашны бек къууанып алады. Кесине да Саубар атап, асыраргъа береди. Жаш мардасыз женгил ёседи, юсюнде шарайыбы болмагъан акъыллы, чырайлы, жигит жаш болады. Ол себепден Къазбек хан Саубарны хыйсапсыз бек сюеди. Хар кереклисин тапдырып, кесини жашы кибик ёсдюреди.

Къазбек хан а Саубарны анасын ёлтюртген Ийналукъ ханны суйген татлы тенги болгъанды. Аралары уа бек узакъ жол эди.



Кюнлени биринде, Ийналуць хан кесини суйген татлы тенги Къазбек ханны тансыкълап, кёрюрге деп атланады. Узакъ жолну къыдырып келип, къонакъгъа тюшеди. Суйген тенгле жарыкъ саламлашып, бир бирин тансыкълай, хапарлаша, ашай-иче олтурадыла. Ол заманда Саубар, юйдегини бирича, кире-чыгъа кёрюнеди. Ийналуць хан, аны чырайына сукъланыш:

– Багъалы тенгим, сен къаратон болуучу эдинг, бу чырайлы жанны къайда тапханса? – деп сорду.

– Ол а табылгъан Саубарды, – деп ышарды Къазбек хан.

– Да табылгъан Саубар деб’а нек атагъансыз?

– Багъалы тенгим, сенден жашырып мени керти сёзюм жокъду. Бир бёлек жыл мындан алда, мени уучуларым уугъа айлана баргъан жерлеринде, бир чауулну ичинде, анасы ёлюп, сабийи да ёшюнюнде жилий тургъанлай, табып келтиргендиле. Мен аны кесиме жаш этип ёсдюргенме. Ма кёресе, бюгюн а къаллай жаш болгъанды! Энди мен аны дунияда бир затха да тенг этмейме, – дегенде, Ийналуць хан, ишни болушун сезип, чач тюклери забача суюлдиле.

Болсада, Къазбек ханнга жукъ билдирмеди, алай олсагъатлай окъуна жашны жояр хыйла къурай башлайды. Сора, лахор къызыу бара тургъанлай, къуйругъуна шинжи чанчылгъанча, секирип, ёрге турады.

– Ай медет, Къазбек, – дейди Ийналуць, – сени кёрюрге ашыгъып, бек керек бир затны этерге унутуп кетгенме. Энди, келгенден ары, бир бёлек кюнню сенден тансыгъымы алмай болмайма. Ол себепден юйюме къагъытчыкъ жазайым да, мен барыргъа, аны тындырып турурла. Сен а табылгъан Саубардан ол къагъытчыкъны теркирек ашыр!

Къазбекни къагъытха жазылгъан затдан хапары болмай, жарагъандан бир атха да миндирип, Саубарны жолгъа ашырады.

Танымагъан, билмеген жерлеринде кёп кюнлени къыйналып, ахырында Саубар адам жатар кезиуге элге жетеди. Ийналуцьну юйюню тегерегине айлана келип, жукълагъанланы уятмаз ючюн, атын кишенлеп, ат жерни жастыкъ этип, жамычысын да узун жиберип, къыртышда жатады.

Эрттенликде Ийналуцьну къызы ариу Алакёз, сарайгъа чыгъып къарагъанда, кишенленген атны отлай, жамычы тюбюнде да биреуню жатып тургъанын эслейди. Барып, жамычыны къанатын кётюреди да, тамашагъа къалады: бет чырайы, нюрю кесине мукъуладисча тартхан бир ариу жашны кёреди. Юсюне къапланып къалады дерча, жутланып, Алакёз ол жашха, кёз къакъмай, иги кесекни къарайды. Къызын жюрегине суймеклик желимча жабышып къалады. Арып, талчыгъып келген жаш а уянмай жукълайды.

Къыз, жамычыны ёргерек кётюрюп, жашны хуржунундан къагъыт къыйыры къарап тургъанын эслейди. Сора аны бери акъыртынчыкъ алып окъуйду: «Бу къагъытны алып баргъан сизге жетгенлей, мычымай башын кесип, тёммегин, башын да адам кёрмез терен жерге кёмюгюз. Мени сакъламай, бу ишни тындырыгъыз! Ийналуць хан».

Къыз къагъытны дуккул-дуккул этип атады да, сора: «Бу къагъытны алып баргъан жаш сизге жетгенлей окъуна, мени барырымы сакъламай, къызым Алакёзню анга берип, тоюн-оюнун тындырып туругъуз! Ийналуць хан», – дегенни жазып, жашны хуржунуна салады.

Табылгъан Саубар бир заманда жукъудан уянып турады да, Ийналукуъну «къагъытын» элтп, жумушчуларына береди. Алып, къагъытны окъуйдула, къол ызын кѳредиле.

– Аха, ханнга энди киеу табылды! – деп, уллу къууанча ишни болдуруп жолуна киришедиле.

Жашны да сыйлы къонакъ отоугъа элтедиле. Юсюне шапала саладыла. Эрикмей туурча, жырчыланы чакъырадыла.

Табылгъан Саубар, бир уллу ханны баласыча, жарыкъ жыйынны тѳрюнде эркеленип олтурады. Ийналукуъ хан анга ёлюм къагъытны берип жибергенинден аз да хапары жокъду, Алакѳзню бу жашха беригиз деп жазгъан сунады. Саубар, тамаша чырайлы жаш болгъанлыкъгъа, окъуй билмей эди. Тышында уа аяусуз той барады.

Кѳгюрчюн боюнлу Алакѳзню, шапа къызлары кийиндирип, юсюне дух къуюп, хазырлайдыла. Чачын тарайдыла, кѳзюн-къашын сымарлайдыла.

Энди къалай-алай болса да, толкъун-толкъун алгъышла бла эки ийнакъны жашау насыплары бир болду. Ала къууанч жашау бардырадыла.

Ийналукуъ Къазбек тенгинде бир бѳлек кюнню турады, тансыгъын алады, юйюне жиберген къагъытын да ол жазгъанча тындыргъандыла деген муратда, жолгъа чыгъады. Ханлыгъына жууукълаша келгенинде, жолда тюбеген адамла, аллында ийилип:

– Сени жазып ийген къагъытынгы алып келген киеуюнг да огъурлу болсун! Тоюн-оюнун бек къууанып этгенбиз, – деп алгъышлайдыла.

Ёхтем хан, ол сѳзлени эшитгенде, къара дыгаласха къалады. Мыйыкълары, къашлары забача сюеледиле. Кѳкюреги кѳрюкча урады. Алгъыш этгенге жууап къайтармай, къутургъан халлы жюрюйдю.

– Ай, эки итден бир туугъан, жетгенлей, сени мен кюл-кѳмюр этип къояйым! – деп, атха къамичини сюртеди.

Жол-жолсуз деп къарамай, кѳзлерине къан чабып, атны тѳртгюллетеди. Болсада, элине жетгинчи, къарангылыкъ тутады. Эл къыйырына жетип келе, аты юркюп, бир жанына секиргенде, Ийналукуъ, жыгъылып, аягъы ёзенгиге бегитиледи. Ат, элгенип, чочуйду да, иери къарын тюбюне айланып, Ийналукуъну бир хурттагы ёзенгиге тагъылып, ат орунуну аллына барады.

Ийналукуъну орунуна Саубар хан болуп къалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 277–280 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

«Табылгъан Саубар» деген жашау-турмуш жомакъны кѳзге алай бош кѳрюннген хапарында, къадарны бир да болмагъанча ёлчемсиз кючу ачыкъланады. Билгичи болгъан адам ханнга аны киеую жумушчусуну жашы боллугъун айтханда, ол, анга тенгши болмагъан адам бла жууукъ болмаз ючюн, къолундан келгенни этип, кѳп кюрешиди. Алай, бийикден келген къадар, андан эсе къарыулу болады. Жомакъда болгъан чурумланы арасында, къадарны тюрлендирген къагъытны алышындыргъанлары уллу жерни алады.

Андан сора, жомакъда «Саубар» деген адам атны магъанасына да эс бурургъа тийишлиди.



НАЙДЕНЬШ САУБАР*

Давным-давно, в те времена, когда люди отращивали длинные бороды, усы, носили только кожаные изделия и шерстяные вещи, когда на земле было много зверей, диких животных, когда сильные люди крали слабых и продавали как животных, жил Ийналук – безмерно гордый хан.

Этот гордый Ийналук, временами отправлялся в далекий путь, видел в мире много различных интересных вещей, путешествуя, – была у него такая привычка развлекаться.

И вот однажды, он, собравшись, отправляется в дорогу. Проходя много земель, придя на берег большой реки, когда он посмотрел, то увидел одного старика, сидя, читающего книгу. Он направился прямо к нему, подошел близко к старику и, не слезая с коня:

– Эй, старик! Чем ты здесь занимаешься, как ведьма? – спросил он и кончиком своего кнута, сильно толкает.

Однако, этот старик, в его сторону даже не посмотрел:

– Я из парней и из девушек, чья судьба кому уготована, прочитываю, а после записываю, – ответил он, особо не беря во внимание.

– Да, если ты все так знаешь, старичок, у меня есть единственная дочь, кому уготована ее судьба, скажи-ка!

– Да, я смогу на это ответить: судьба твоей дочери уготована тому, кто подметает полы твоего дома женщины-служанки в утробе, которой зародится молодой человек она ему будет принадлежать. Понял?

Гордый хан Ийналук, когда это услышал, сильно разозлился, вырвал из рук старика книгу и выбросил в бурлящую реку, и сам ушел оттуда в обратном направлении.

Как только добрался до дому, он вызвал всех своих слуг:

– Эту женщину-служанку убейте, а труп выбросите в глубине глухого леса, в заросли! – повелел он.

Слуги Ийналука схватили женщину и понесли, задушив, кинув в заросли, подумав, что она умерла, и ушли. Однако эта служанка не умерла, без сознания живет несколько дней. А в конце, когда подошло время родов, она родила сына. Она его, прижав к себе, когда дала ему грудь, эта женщина сама умирает, а сын остался в живых.

Тому, кто время смерти еще не подошел, находится спасение. Именно в это время охотники хана Казбека, путешествуя, когда хотели перейти через заросли, услышали из-под камня детский плач. Когда пришли и посмотрели, женщина лежала мертвая, а рядом увидели плачущего ребенка. Они сильно удивились, похоронили женщину, а ребенка отвезли и отдали в подарок Казбеку.

Хан Казбек, так как был бездетным, сильно обрадовался ребенку-найденышу. Дав ему имя Саубар, отдал на воспитание. Мальчик рос очень быстро, на нем не было никакого изъяна, умница, обаятельный, настоящий богатырь. Поэтому хан Казбек сильно полюбил Саубара. Обеспечивая всем необходимым, растит как своего сына.

Казбек хан был настоящим другом Ийналука хана, который убил мать Саубара. А между ними была дальняя дорога.

* *Саубар* – ходи здоровым, будь здоров!

В один из дней, хан Ийналул соскучившись по своему любимому, близкому другу ханом Казбеком, отправился повидаться с ним. Исколесив дальнюю дорогу, приходит в гости. Любимые друзья весело поздоровались, расспрашивая друг о друге, рассказывая различные истории, сидят трапезничая. В то время Саубар, как член семьи, был занят домашними хлопотами. Хан Ийналул удивившись его обаянию:

– Дорогой друг, ты был бездетным, где нашел такое прекрасное создание.

– Кого нашли, зовут Саубар, – сказал Казбек хан и улыбнулся.

– А почему назвали того, кого нашли – Саубар?

– Дорогой друг, мне от тебя нечего скрывать. Несколько лет тому назад, мои охотники, когда охотились на дальних землях, среди каких-то зарослей, с умершей матерью, на груди с плачущим ребенком нашли и принесли его ко мне. Я его усыновил и вырастил. Вот видишь сегодня, каким он парнем стал! Теперь я его в этом мире ни на что не променяю, – когда он сказал, хан Ийналул, поняв в чем дело, волосы на голове встали как космы вверх.

Однако Казбек хану он ничего не сказал, но тут же начал придумывать злодейские планы, чтобы его прикончить. Потом, когда разговор был в разгаре, как-будто в его хвост колючка зацепилась, он, вскочив, встал на ноги.

– Ай, молодец, Казбек, – говорит Ийналул, – я так торопился тебя видеть, что забыл одно важное дело завершить. Теперь, раз пришел, несколько дней я должен побыть с тобой, так как по тебе я сильно соскучился. Поэтому, я напишу домой записку, пока я приду, они его выполнят. А ты через Саубара, которого подобрали, эту записку побыстрее отправь!

Казбек не зная, что было написано в той записке, посадив его на породистого скакуна Саубара и отправляет его в дорогу.

Среди чужих, незнакомых земель Саубар много дней измучавшись, к тому времени, когда люди легли спать, приходит в село. Обойдя вокруг дома Ийналука, чтобы не разбудить спящих там людей, стреножив своего коня, седло положив вместо подушки, укрывшись в длину своей буркой, лег на траве.

Утром, когда дочь Ийналука – красавица Алакёз, выходя в сарай, посмотрела, то увидела, что стреноженный конь пасется, и что под буркой кто-то лежит. Когда она подошла, и, подняв край бурки, посмотрела, сильно удивилась, увидев красивого парня: обаятельное, лучезарное лицо его как магнитом тянуло ее к себе. Алакёз с сильным желанием, готовая припасть к тому парню, не моргая глазом, смотрит на него долго. Любовь, на сердце девушки, прилипла, как клей. А усталым, обессилевшим пришедший молодой человек, спит непробудным сном.

Девушка, когда приподняла бурку, то увидела, как из кармана юноши выглядывал край бумаги. Она ее тихонько вытащила и начала читать: «Как только этот человек с бумагой появится у вас, тут же отрубите ему голову, а тело и голову подальше от людских глаз закопайте. Не дожидаясь меня, выполните это задание! Ийналул хан».

Девушка тут же разрывает бумагу по кускам и после этого: «Этот молодой человек, как только прибудет к вам, вы тут же, не дожидаясь моего прихода, мою дочь Алакёз выдать за него, по-настоящему сыграйте свадьбу! Хан Ийналул», – написав такие слова, она кладет бумагу в карман молодому человеку.



Саубар, которого когда-то подобрали, пробудившись ото сна, «записку» Ийналука относит и отдает прислуге. Они, получив, читают бумагу и обратили внимание на почерк.

– А-а, хану, наконец-то, нашелся зять! – сказали, и с большой радостью взялись за исполнение дела.

И молодого человека отвели в комнату для почетных гостей. К нему приставили прислугу. Чтобы он не скучал, пригласили певцов.

Саубар, которого когда-то подобрали, будто сын большого хана, среди веселого общества сидит избалованным. А то, что хан Ийналук отправил его, вручив смертельную записку, он совсем не ведает, он думает, что там было написано, о выдаче Алакёз этому молодому человеку. Саубар, хотя был парнем удивительной красоты, не умел читать. А во в дворе свадьба была в разгаре.

С шеей голубя Алакёз девушки-служанки приодели, забрызгали духами, подготовили. Расчесав волосы, поправили глаза-брови.

Теперь, как бы то ни было, шли волнами поздравления двум счастливым молодым людям, жизненная судьба, которых соединилась. Они проводят радостную жизнь.

Ийналук у своего друга Казбека находился несколько дней, хорошенько отдохнув, и записку, которую он отправил домой, думал, что выполнили, как он написал в надежде, отправляется в путь. Когда он начал подходить в свои владения, люди, которые попадались ему по дороге, кланялись ему:

– Бумага, которую ты написал и отправил через своего зятя, пусть будет счастливой! Свадьбу мы сыграли с большой радостью, – говорят и поздравляют.

Великий хан, когда услышал эти слова, не знает, что делать. Усы, брови встают как кочки. Грудь бьет как кузнечный лемех. Тем, кто его поздравлял, не отвечая им, ходит как бешеный.

– Ай, собачий сын, сейчас я до тебя доберусь, и превращу я тебя в золу, в пепел! – сказав он, плеткой подстегнул своего коня.

Несмотря, где дорога, где бездорожье, с кровавыми глазами он пустил свою лошадь вскачь. Однако, пока он не доскакал до своего села, сильно потемнело. Когда он уже доходил на край села, его лошадь, испугавшись, когда прыгнула в сторону, Ийналук упал, а нога его застряла в стремях. Лошадь, еще больше испугалась, начала ногами бодаться, тогда седло лошади, перевернувшись к живот, и небольшая часть тела повиснув в стремени, остановилась у своей кормушки.

Саубар стал вместо Ийналука ханом.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 277–280) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

За простым сюжетом семейно-бытовой сказки проглядывает философское повествование о всеильном роке судьбы. Когда ясновидящий предрек хану, что его зятем станет сын служанки, хан предпринял все меры, чтобы предотвратить этот нежеланный союз с простолюдином. Однако судьба, предписанная свыше, оказалась сильнее. Среди представленных мотивов важную роль играет мотив подмены судьбоносного письма. Обращает на себя также семантически мотивированное имя «Саубар» – «Будь жив».

ХАРИБ БЛА САНАМ

Эртте заманлада, бир бири бла антлы шуёх болуп, эки кьоншу жашагъандыла. Аланы жашау болумлары окъуна бирчаракъ эди. Ол эки шуёхну, бирине жаш, бирине къыз тууса, экисин да бир юйюрлю этерге деп, антлы бегимлери да болгъанды.

Заман бара, кюнле, ыйыкъла, айла да оза, быланы экисини да къатынлары сабий табадыла. Бирине улан, бирине къыз тууады да, жашха Хариб, къызгъа Санам атайдыла.

Хариб бла Санам кюнден-кюннге ёсе, аякълана, бир бири бла ойнай тебиредиле. Бири бирине илешдиле. Ахырында, бир бирин кёрмеселе, тёзалмай башладыла.

Хариб бла Санамны алай татлы болгъанларын кёрюп, экисини да аталары, аналары чексиз къууана эдиле. Араларында этилген бегимге да чогъожлукълары жокъ эди.

Тура турса, къала да оюлады. Харибни да атасы ёледди. Быланы юйюр жашаулары оюлады, иги мураглары тюнгулюуге айланады, жарлы боладыла. Жарлыны жууукъ этерге уа ким суйгенди?

Хариб бла Санамны онбешешер жыллары толады. Санамны суймеклиги бекден-бек ёседди, Хариб да аны кибикиди. Алгъын суйюулери сабий суйюу эди, энди уа была юйдегилениу суйюуню аладыла. Болсада, Харибни, Санам суйгенча, Санамны атасы, бютунда бег'а анасы суймедиле.

Харибни атасы ёлюп, жашаулары тозурагъанлай окъуна, Санамны атасы бла анасы антлы бегимлерин бузгъан эдиле. Санамны ызындан мараучу болуп, Хариб бла бирге олтурургъа, селеширге да кьоймаучу эдиле. Алай а, ачыкъдан тюбеялмасала да, аланы, бир чола кезиуню табып, кёрюшмеген кюнлери озмаучу эди. Аталары къол тутушуп этген бегимни юсюнден а къыз бла жаш жукъ да билмедиле.

Кюнлени биринде Харибни анасы:

– Сени жауунг жарлы болсун. Жарлыны юсюнде итни сыйы окъуна болмаз, сёзю уа чапыракъдан ётмез. Онглу кюнюнгде татахынг онгсуз кюнюнгде бурунун чюелтир. Да, не этейик: «Кимни – аллы, кимни – арты» дейдиле, – деп ахсынды.

– Анам, бу жарлы, бай хапарларынг недиле? – деп, Хариб сагъаяракъ сорду.

– Да не болуб'а, атанг сау заманда Санамны атасы юйюбюзден да чыкъмаучу эди, сени киеу этерге деп, сёз да берген эди. Ма энди уа, биз жарлы болгъанлы, санга къызын берген угъай, бурулуп селеширге да тенгсинмедиле. Къатыны да кесин кёкден тюшген сунады.

Хариб, анасындан ол сёзлени эшитгенде, шош туруп, арбазгъа чыгъып кетди. Бир къызчыкъны чакъырып:

– Санамгъа бар да, не мадар да этип, бюгюн манга жашырын бир тюбесин дегенни айт, – деп жиберди.

Санам бла Хариб тюбешдиле. Жаш суйген къызыны не мураты болгъанын, къалай этерини хапарын да сорду.

Санам, не айтыргъа билмей, кеси аллына иш этерге да таукел болалмай, жилиамсырады. Ахырында:



– Атама бла анама кесинг да бир сагъынып кёр, – деди.

Хариб Санамны атасына келечи иеди. Болсада ол не хау, не угъай демеди. Ичинден ыйлыкъса да, абери айтмай, юй бийчем бла да бир кенгешейим деген сылтау бла, келечини ызына ашырды. Сора, барып, хапарны къатынына билдирди. Къатыны гогушча кёпдю, кёкге минди, жерге тюшдю.

– Э киши, сен, уялмай, манга ол сёзню айтып къалай келдинг?! Акъылынгданмы шашханса?! Мени жаууму да къызын Хариб тилесин! Аты да Хариб, кеси да харип! Мени къызым, аны чакъмакъ анасына келин болгъандан эсе, ёлюп, кебин болсун! Хариб эсе да, жазыкъ эсе да, ол бизни бетибизни бир жоймай къоймазын мен уста билеме! Алайды да, аны бу журтдан къурутур мадарны эт! – деп, къатыны эрин тырмандан сойду.

Харибни аман кюнлери башландыла. Аны думп этер ючюн, ырысхы, мал да аямадыла. Ол ишледен а Санамны арталлыда хапары жокъ эди.

Къызын атасы бла анасы, Хариб кибик, эки жарлыгъа кёп харекет, мал да берип:

– Не да этигиз, Харибни жоюгъуз. Сау болсакъ, дагъыда унутмабыз, – деди.

Кюнлени биринде ол эки жарлы да, Харибге барып:

– Бизни бла уугъа кел, – деп алландырдыла.

Ючюсю да, жарашдырылып, ючкюнлюк уугъа кетдиле.

Эки кюн айланып, ючюнчю кюн бир къалын агъачны ичинде азыкъгъа тохтадыла. Алайчыкъда ол экеуден бирлери:

– Хариб, сен да, биз да бир кесеу башны жилтинлерибиз. Алай сен бюгюнню ишге шагъырей туююлсе. Биз Санам бла сени арагъызын бир кесек билебиз. Къолларындан келип, аны ата-анасы къызлары санга берлик туююлдюле. Бизни да, Харибни жоюгъуз деп, сени уугъа чакъыртханла ала болгъандыла. Биз сени бек сюебиз, жашауунгу да аяйбыз. Сен бир бёлек заманга деричин элингден жанла. Халгъа къара да, андан ары иш кеси кесин кёргюзтюр. Биз а сени ёлтюрдюк дербиз да, барырбыз, – дейди да, Харибден айырыладыла.

Хариб агъачда кеси къалады. Бара барып, жолда къарангы болады да, бу жатып къалкъыйды.

Эрттенбласында уа, айлана, бурула, чырмаша барып, бир бийик тёбеге ёрлейди. Сора, къарап, узакъда бир тютюн чарс кёреді. Анасы бла Санам да эсине тюшедиле.

Хариб, тирилип, ал кёрген элине тарта тебирейди. Бир анасы, бир да суйген Санамы акъылына сингип, чекген къыйынлыкълары да сынтыл бола, Хариб ол элге жетеди. Сора, эл ичи бла бара барып, бир тойгъа тюбейди. Бу да, тохтап, ол тойгъа къарай тургъанлай, бир киши аны къатына келеди да, элтип, муну бир жерге олтуртады. Ашатып, тойдуруп бошагъандан сора уа, хапар сорады.

Жаш кесини къадарын башдан-аякъ айтады. Ол киши бу жашны анасыны жууугъу болуп чыгъады да, тансыкълап, юйюне элтеди, жууундуруп, кийиндирип, тюз да кеси баласына кибик къарайды.

Жаш ана къарындашыны юйюнде бир ауукъ заманны жашады. Алай, туюн, туюшо да бир анасына, бир Санамгъа бёлюнюп, чыдамсыз болады.

Санам, суйген жашы тас болгъандан сора, аллын халын ташлайды. Нюрлю бети – саз, жарыкъ кёлю мудах болады. Ышармай, кюлмей, булут ургъан кюнча, мутхузлай турады. Атасы бла анасы да къайгыгъа къаладыла.

Бир кюн а къызын атасына бир къуртха къатын келип:

– Сени къызынг, эригип, мудах болуп, амандан-аманнга кетип барады. Аны кёзюн ачар ючюн, къыркъ къул эр кишиден бла къыркъ къул тиширыудан жыйын къурап, къыркъ къычырымгъа терек салдыр. Терекле араларына уа тюрлю-тюрлю ариу ийисли гокка хансла орнатдыр. Ол, жаннет кибик, бир бахча болур. Аны ичинде жүрек жапсаргъан, кёз жарытхан, мудахлыкъны кетерип, къууанчыкъ келтирген тюрлю-тюрлю затла болурла. Къызынгы жашауун да аны бла игилендирирсе, – дейди.

Бу киши, айланып, отуз тогъуз къул бла къыркъ къарауаш табады. Ишин болжалына къуртха айтханча толтурур ючюн, энтта бир къул табып, къыркъ адам этерге керек болду. Ол бир адамны уа табалмады.

Сора биягъы къуртха къатын, келип:

– Уллу бай! Сен ол бир адамны бу элдеде тапмайса. Былайдан онкюнлюк жол узакълыкъда бир эл барды да, жумушчуларынгы ары жибер да, къыркъынчы къулну анда излет, – деди.

Хариб, кеси элине жол излей, адамлагъа сора, ол эл къыйырына чыкъгъанлай, байны адамлары, айлана келип, анга жолугъадыла. Сора была:

– Аха, энди байгъа къул тапдыкъ! – деп, Харибни, биргелерине алып кетип, къуллагъа къошадыла.

Къуртха айтханча, къулла терекле да, гокка хансла да орнатадыла.

Гокка хансла, терк-терк ёсюп, къып-къызыл, жап-жашил, кём-кёк, сапсары омакъ чечекле боладыла.

Къуртха къатын къулланы хар бирисине бирер гокка чечек юздюртеди да, аланы хар бирин, башха-башха алып келип, къызгъа береди. Къыз, чечеклени алып, ийисгей келип, Хариб юзген чечекни ийисинден билип, тансыкълап, къоюнуна къысып, жияяды.

Харибни ол къулла ичинде болгъанын ишексиз билир ючюн, Санам, къуртханы чакъырып:

– Энди гюл чечеклени келтирсенг, къайсы чечекни къайсы къул юзюп бергенин, ашашмай, толу билип келтир! – деп тилейди.

Къуртха, билмейми къаллыкъ эди, олсагъат къуллагъа барып:

– Чечекле юзюп беригиз, – дейди.

Сора, ким къайсы чечекни юзюп бергенин ышан этип, Санамгъа келтиредди. Биягъы Харибни чечегин алгъанда, учарыкъ къушча, жүреги алгъа уруп, ахсынады. Чечекни уппа эте, эркелете келип, къуртхагъа:

– Бу чечекни ким юзюп бергенди, аны танырыкъмыса? – деп сорады.

– Танырыкъма, – дейди къуртха.

– Алай эсе, бу чечекни юзюп берген кесини ким болгъанын жазып берсин, – деп, къагъыт бла карандаш берип, къуртхадан жибереди.

Къуртха, элтп, аланы Харибге берип, Санамны айтханын да ангылатады. Хариб, карандашны алып, кесини къулланы ичинде болгъанын билдирип жазады.



Санам Харибни ол жерде болгъанын толу биледи. Сора, къуртханы кенгеш нёгерге алып:

– Къалай этейим? – деп сорады.

Къуртха, Санамны муратын ангылап, кесине жукъ да айтмай, тюзюнлей къызны атасы байгъа барады. Байгъа:

– Къулла энди гюл бахчаладан кетсинле. Санам эригип турады, кёзюн ачар, бахчагъа чыгып, бираз айланган да этсин, – дейди.

Бай эркинлик береди.

Къуртха, къайтып келип, къулланы бахчадан чыгъарып, Харибни букъдуруп, къызгъа келеди.

Къулла бары да кетедиле. Къыз, терек бахчагъа чыгып, айлана келип, Хариб болгъан жерге жетип сюеледи. Сора, тёгерге терекле бла къуршалгъан кём-кёк кёлде Харибни суратын кёрюп, симсиреп къалады. Хариб, терек башындан тюшюп, Санамны аллына келеди. Экиси да хайранлыкъда бир бирге къарап тохтадыла. Дунияда нелерин да унута, бир бирин мукъуладисча тартып, къаты къучакълашдыла. Иги кесекден сора, айырылып, бир бирине къарап, ахсынышдыла.

Къыз, бир кесек эс жыйып, жашха:

– Сен былай тура тур! Мен санга юч эшек жюгю алтын жиберейим. Ызы бла, атама барып, суйген жашым барды, мени анга бер дейим. Ол, сени жояр акъылгъа кирип, адамла жиберсе, бир эшек жюгю алтын берип, башынгы жулурса. Мен а, ишни болумун билип, сени табарма, – деп, кетеди.

Хар нени да керегича этгенден сора, къыз, барып, муратын атасына айтады.

Атасы:

– Къайдады жаш? – деп сорады.

Къыз аны болгъан жерин айтханда, атасы, чамланып:

– Не бери алып келигиз, неда ол болгъан жеринде ёлтюрюгюз! – деп, адамларын жибереди.

Ёлтюрюрге баргъанлагъа бир эшек жюгю алтын берип, Хариб башын къутхарады. Ала да байгъа:

– Ёлтюрдюк, – деп келедиле.

Къуртха къатын а, къызны жети къаты кийиндирип, анга:

– Энди экигиз да къачыгъыз! Атанг ызыгъыздан болса, мен сизни табарма, – дейди.

Къыз да, жаш да къачадыла. Къызны атасына хапар жетгенде, атасы, жыйын къурап, жашны ёлтюрюрге ызындан тебирейди. Сюрюп, жолда жетедиле. Жашны, байлап, келтирип, халкъ аллында ёлтюрюрге тебиреген заманларында уа, къуртха къатын, чыгып:

– Эй, бай, дуня байлыгъы биреуде къалмаз. Къан тёгюуде бала болмаз. Женгилликни сабыр хорлар. Жалгъан байлыкъны къабыр хорлар. Кече кетер, кюн тиер. Бала жойгъан от киер, – деп, байгъа айланып сёлешди.

Бай, къызсыз къалырын билип, къуртханы сёзюн къабыл кёрдю. Къызын Харибге берип, уллу той-оюн этип, ашап-жашап къаладыла. Эсиргенле да бар эдиле. Алай уруш-туйюш а болмады.

Ол тойдан бери суула кёп акъдыла, жылла да кёп оздула. Энди аладан туууп къалгъан адам да эсленмейди.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 280–284 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

«Хариб бла Санам» деген юйюр-жашау-турмуш жомакъны бек аллында эки нѣгер бир бирге сѣз береди, гитче сабийчиклени, уллу болсала, юйдегили этерге.

Жомакъда айтылгъаннга кѣре, жаш адамла бир бирге бек ариу кѣзден къарагъандыла. Алай болгъанлыкъгъа, аланы халларына тенгсизликни жоругъу хыянат жетдиреди. Ол заманнга жашны юйюрюню аталары ёлюп, ала жарлы боладыла. Андан арысында болдурулгъан ишле жаш бла къызны кюрешлери бла байламлыды. Кеслерини суймекликлерин сакълар ючюн, ала абадан тѣлюню эски, жарасуз адетлерине къажасу турадыла. Жаш адамлагъа болушлукъ къуртха тиширыу да этеди.

ХАРИБ И САНАМ

В давние времена жили два соседа, которые сильно дружили друг с другом. У них даже жизненные условия были похожими. Вот эти два друга, если у одного родится сын, а у другого дочь, решили провести совместную свадьбу и на это они дали настоящую клятву.

По истечении времени, дни, недели, месяцы проходили, и у них у обоих у жен рождаются дети. Одному родился сын, другому дочь, мальчика назвали – Хариб, девочку – Санам.

Хариб и Санам с каждым днем взрослели, становились на ноги, и начали друг с другом играть. Начали дружить и в конце, если не увидят друг друга, стало не хватать терпения.

Когда родители увидели, что у Хариба и Санам отношения между собой близкие, у обоих отцы и матери безмерно радовались. И то, что между ними была договоренность, их не смущала.

Со временем и крепость разрушается. И у Хариба умирает отец. Разрушается их семейный уклад жизни и хорошие надежды превращаются в уныние, и они становятся бедными. А кто хотел породниться с бедным?

Харибу и Санам исполнилось по пятнадцать лет. У Санам любовь с каждым днем крепчает, и у Хариба также. Раньше у них была детская любовь, а теперь они захотели влюбиться так, чтобы обзавестись семьей. Однако, как Хариба Санам любила, отец Санам и особенно ее мать его не любили.

Когда умер отец Хариба, и их жизнь оскудела, отец и мать Санам нарушили свою клятву. Постоянно следили за Санам, не давали садиться рядом с Харибом, разговаривать с ним не разрешали. Но все равно, хотя они не могли открыто встречаться, они каждый день находили повод увидеться. А то, что их отцы дали клятву, пожав друг другу руки, ни девушка, ни парень ничего не знали.

В один из дней мать Хариба:

– Пусть твой враг будет бедным. У бедного почета меньше, чем у собаки, а его слово будет лишено смысла. Когда ты в жизни силен – друг. Когда в один из дней ослабнешь, начнет нос отворачивать. Ну, а что делать, «У кого – начало, у кого – конец» – говорят, – сказала она со вздохом.



– Мама, что за разговоры о богатых, о бедных? – спросил Хариб с некоторой осторожностью.

– Разговоры о том, что когда твой отец был жив, отец Санам не выходил из нашего дома, давал слово, что тебя сделает зятем. А теперь, когда мы обеднели, не то, что за тебя выдаст свою дочь, даже не соизволит повернуться в твою сторону и поговорить. И жена его, думает, что она с неба упала.

Когда Хариб услышал от матери эти слова, тихо встал, и вышел во двор. Позвав одну девочку:

– Сходи к Санам, чтобы не случилось, сегодня тайком пусть со мной встретится, – сказал и отправил ее.

Санам и Хариб встретились. Молодой человек спросил намерения у любимой девушки, и что собирается делать.

Санам, не зная, что сказать, и не в состоянии самой принимать какие-то решения, прослезилась. И в конце:

– Моему отцу и матери ты сам тоже попробуй намекнуть, – сказала.

Хариб отправляет отцу Санам посыльного. Однако, он не сказал, ни да, ни нет. Хотя про себя он стыдился, он ничего не сказал, огласив свою мысль, что будет советоваться с хозяйкой, по причине отправил посыльного обратно. Потом, пришел и рассказал все своей жене. Жена вздулась как индюк, поднялась в небо, опустилась на землю.

– Эй, супруг мой, как тебе не стыдно, прийти и рассказать мне такое. Ты, что, с ума сошел?! Пусть Хариб просит руки у дочери моего врага! И зовут его Хариб, и сам он харип*. Чтобы моя дочь не стала снохой его матери в лохмотьях, пусть умрет, пусть станет саваном! Я так и знала, что этот харип несчастный, не остановится, пока нас совсем не опозорит! Поэтому сделай так, чтобы его духу не было в этих краях! – сказала жена и своей злобой довела мужа до исступления.

Для Хариба начались тяжелые дни. Чтобы его убрать, не пожалели ни богатства, ни скотины. Про их проделки Санам абсолютно не была в курсе.

Отец и мать девушки, как Хариб, двоим слугам дали много имущества и скотины:

– Что хотите, то и сделайте, уничтожьте Хариба. Будем живы, не забудем, – сказали они.

В один день эти двое прислуги вдвоем, пришли к Харибу: «Пойдем с нами на охоту», – сказали они и он согласился.

И они втроем, подготовившись, отправились на охоту на три дня.

Два дня охотясь, они на третий день остановились в густом лесу трапезничать. Там один из двоих:

– Хариб, и ты, и мы одной головешки искры. Однако ты не осведомлен сегодняшними делами. Мы хорошо знаем твои отношения с Санам. По возможности ее отец-мать свою дочь за тебя не выдадут. И нам дали задание погубить Хариба, поэтому они тебя вызвали на охоту. Мы тебя очень любим, и твою жизнь ценим. Ты на некоторое время покинь свое село. Приглядись, а дальше видно будет. А мы, возвратившись, скажем, что тебе убили, – сказали они и расстались с Харибом.

Хариб один остался в лесу. Пока он шел по дороге, кругом стало темно и лег поспать.

* *Харип* – бедный, несчастный.

А на утро, прогуливаясь, присматриваясь, карабкаясь, он поднялся на большую сопку. Потом посмотрел и увидел вдалеке клубок дыма. Он вспомнил свою мать и Санам.

Хариб, взбодрившись, решил добраться до первого селения. Вспоминая мать, то любимую Санам, и все тяжкие испытания немного смягчив, Хариб приходит в то село. Потом, проходя через село, он пришел к одной свадьбе. Когда, он, остановившись, глядел на эту свадьбу, к нему подошел один мужчина и отвел его и посадил в одном месте. После того, как накормил, насытил, он начал у него спрашивать.

Парень полностью рассказал про свою судьбу. Когда, этот мужчина оказался родственником его матери, он ее обласкав, привел домой, искупал, приодел, и начал за ним ухаживать как за своим ребенком.

Итак, молодой человек у родственника своей матери пожил некоторое время. Но, и во сне, и наяву он думал, то о матери, то о Санам, он стал раздражительным.

Санам, когда ее любимый парень исчез, потеряла прежнее настроение. Обаятельное лицо стало бледным, веселое состояние печальным. Не улыбаясь, не смеясь, как облаком скрытое солнце, оставалась печальной, невзрачной. И мать, и отец ее стали сильно переживать.

В один день к отцу дочери пришла знахарка:

– Твоя дочь, соскучившись, опечалившись, становится все хуже и хуже. Чтобы ее глаза засветились, возьми сорок рабов и сорок рабынь и на расстоянии сорока криков посади деревья. А между деревьями посадите различные цветы, которые пахнут красиво. Этот сад станет как рай. А там внутри можно будет развеселить сердце, радовать глаза, убрать печаль, и много всего, что будет приносить счастье. И жизнь своей дочери ты сможешь улучшить этим, – сказала она.

Это мужчина, разыскивая, нашел тридцать девять рабов и сорок рабынь. Чтобы успеть выполнить свою работу как знахарка сказала, надо было найти еще одного раба и довести число до сорока. А одного человека он никак не находил.

Тогда пришла та же знахарка и сказала:

– Великий богач! Ты того, одного человека не сможешь найти в этих селах. В села, куда надо идти отсюда десять дней пошли своих помощников, и сорокового раба ищи там, – сказала она.

Хариб, разыскивая дорогу в свое село, расспрашивая у людей, когда вышел на окраину того села, люди посланные князем проходя, встретились с ним. Тогда они:

– Да, теперь мы нашли князю раба! – сказали и, забрав Хариба с собой, включили в состав рабов.

Как сказала знахарка, рабы посадили и деревья, и цветы.

Цветы росли очень быстро, сильно красные, очень зеленые, иссиня – синие, сильно желтые были у них лепестки.

Знахарка заставила каждого раба сорвать по одному цветку, потом их по одному совершенно отдельно, вручила девушке. Девушка, получив цветы, нюхая их, узнала цветок, который сорвал Хариб, соскучившись по нему, прижав к груди, она заплакала.



Чтобы удостовериться, что Хариб среди рабов, Санам вызвала знахарку:
– Если еще принесешь лепестки, узнай, какой лепесток, какой раб сорвал, не путая, узнай по-настоящему! – попросила она.

Колдунья, как всезнающая, тут же сходила к рабам:

– Сорвите, мне лепестки, – сказала она.

Потом, подумав, кто, какой лепесток могла принести, вручила Санам. Когда она еще раз получила лепесток Хариба, она словно как орел перед полетом с учащенно бьющимся сердцем, вздыхает. Поцеловав лепесток, играясь с ним, она знахарке:

– Вот этот лепесток кто сорвал и принес, его можешь узнать? – спросила она.

– Узнаю, – ответила знахарка.

– Если так, то, тот, кто сорвал этот лепесток, пусть напишет, кто он такой, – сказала и, вручив знахарке бумагу с карандашом, отправила.

Знахарка, отнесла и вручила Харибу, и объяснила слова Санам. Хариб, взяв карандаш, объяснил, что он среди рабов.

Санам полностью удостоверилась, что Хариб там. Потом позвала к себе знахарку посоветоваться:

– Что мне делать? – спрашивает она.

Знахарка, поняв намерения Санам, ей ничего не говоря, прямо идет к богачу, к отцу девушки. Богач:

– Пусть теперь рабы покинут цветочные огороды. Санам стало скучно, чтобы ее развеселить, она должна выйти в огород, и некоторое время прогуляться, – сказала она.

Богач дал разрешение.

Знахарка, вернулась, освободила огород от рабов, спрятав Хариба, пришла к девушке.

Все рабы ушли. Девушка вышла в сад, прогуливаясь, подошла к тому месту, где должен был находиться Хариб. Потом, в синем озере, опоясанном деревьями, увидела изображение Хариба и оцепенела. Хариб, слезая с дерева, пошел навстречу к Санам. Они вдвоем в замешательстве смотрели друг на друга. Позабыв про все на свете, магнитом притягиваясь друг к другу, они сильно обнялись. И через много времени, когда они освободились, глядя друг на друга, начали вздыхать.

Девушка, немного сообразив, парню:

– Ты стой здесь! Я тебе отправлю золото, которое смогут нести три осла. А следом, я схожу к отцу, и скажу ему, что у меня есть любимый парень, выдай меня за него, скажу. А если, он вздумает тебя убить, и пошлет людей, ты отдашь золото, которое находится в одном осле, и спасешь свою голову. А я, узнаю, как обстоят дела, и найду тебя, – сказала и ушла.

Когда она все сделала как надо, девушка пошла к отцу и раскрыла ему свое желание.

Отец:

– Где парень, – спросил он.

Когда девушка сказала, где он находится, отец сильно разгневался:

– Или приведите сюда, или же убейте его на месте? – сказал и послал своих людей.

Тем, кто пришел его убить Хариб отдал все золото погруженное на одном осле, и этим спас свою жизнь. И они вернулись к богачу:

– Убили, – сказали они.

А знахарка, одев девушку в семь слоев:

– Теперь вы убегайте вдвоем! Если отец погонится за вами, я вас найду, – сказала.

И девушка, и парень убежали. Когда это донесли до отца девушки, отец, собрав дружину, отправился в путь, чтобы убить парня. Погнавшись, они настигли их по дороге. Связав парня, приволокли, и перед народом, когда захотели убить, знахарка вышла:

– Эй, богач, богатство мира не останется в одном человеке. В кровопролитии не различить ребенка. Ярость победит терпение. Земное богатство – победит могила. Ночь пройдет, солнце засветит. Кто убьет ребенка – тот будет гореть в огне, – сказала, повернувшись к богачу.

Богач, когда понял, что может остаться без дочери, внял всем словам знахарки. Выдал свою дочь за Хариба, и сыграли они большую, прекрасную свадьбу, и они зажили в здравии, счастливо. Были и пьяные. Но не было ни драки, ни побоища.

С той свадьбы много воды утекло, и много лет прошло. Теперь от них родившихся людей не видно.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 280–284) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Зачином семейно-бытовой сказки выступает родительский договор о предварительном добровольном обручении разнополых детей еще в младенчестве. По сюжету, молодые люди испытывали серьезные чувства друг к другу. Однако в их отношения вмешался фактор классового неравенства. Семья юноши к этому времени обеднела из-за смерти отца. Дальнейшие перипетии связаны с борьбой парня и девушки за свою любовь, против косных и ханжеских установок старшего поколения. В роли помощника молодых выступает знахарка.



АХШЫЛЫКЪ УНУТУЛМАЙДЫ

Биз туугъунчу, бурунгу ёмюрледе бир кызыны эки жаш да бирча суююп болгъандыла. Кызы жашланы экисине да сёз бере тургъанды.

Ахырында жашла экиси да, кызыгъа барып:

– Къайсыбызгъа келесе, тюзюн айт! – деп, кысып тохтагъандыла.

Кызы, экисине да къарап:

– Энди сиз мени керти да сую эсегиз, башлары къара, кеслери чыммакъ эки атны, келтирип, мени арбазымда къайсыгъыз такъса, ол манга эр боллукъду, – деди.

Жашланы бири, кызыны айтханына бюсюремей:

– Да, алай эсе, аллай атла келтиргенге барырса, – деп, ачыуланyp кетгенди.

Ол бирси жаш а, кызыдан айырылып къалыргъа болалмай, атланы табар къайгысына киреди. «Не ёлюрме да, жокъ болурма, не да, ол атланы табып, кызыны къолгъа этерме», – деген мурат бла, атланып, жолгъа чыгъады.

Ёмюрледе эшитмеген узакъ жерлени айлана, кыдыра барып, бир элге жетеди. Ол элде эшиги ачылып тургъан бир юйню кёрюп, суусап ичерге къайтады. Кысыла барып:

– Эй! Юйде ким барды? – дейди.

Бир жаш чартлап чыгъады.

– Ой, болгъан бары да юйдеди, жууукъ бол, къонакъ! – деп, жүгенине жабышады.

– Жууугъунг, насыбынг да кёп болсун! Мени жууукъ бола туруп заманым жокъду, ичим кызып айланган адамма, айып этмей, бир суусап тартдырыгъыз деп бурулгъанма.

– Айхай, айтсанг а, маржа, къонакъ! Не къайгынг барды? Къолубуздан келген зат бла болушурбуз, – дейди жаш.

– Да къайгым а олду: юйдегили болууда муратыма жетер ючюн, башлары къара эки акъ ат табаргъа керекме!

– Аха! Къайгынг ол эсе, андан кыйын къайгыдан Тейри сакъласын, атдан тюш! Атланы да табарбыз, – деп, юйге чакъырды.

Жашны сёзюнден умутлу жылыуну сезгенде, къонакъ, атдан тюшюп, юйге кирди. Жашны къатыны бла саламлашды. Суусап ичеди, ашайды, ызы бла таянып солуйду.

Жолоучу, ырахатланып, ызы бла жолуна тебирегенде, къонакъбай:

– Сен къонакъса, жанынгы да аямазлыкъ иш ючюн жүрюгенча кёрюнесе, сен мени юйюмде къал, ол сен излеген атлагъа мен бир барайым, – деп, кетеди.

Кёп, азмы кыдырды, бир талай күнден къонакъбай ол жаш излеген атланы кёмюк этдирип жетеди.

Атла къолуна тюшгенде, жаш, мычымайын, ызына айланып, элтип, атланы кызыны арбазымда такъды. Кызы, аланы кёргенде, къууанды, кирпилдеди.

Жаш кесини керти да эрлигин кёргюзтгенде, кызы жашны тилеуюне бойсунду, анга барды.

Юйдегили болуп, бир-эки жыл озгъандан сора, жаш, атланып, ол акъ атланы табып берген жашны юйюне къонакъгъа барады. Болсада бу жол



барыуу алгыын жолча болмады. Жашны кыатыны ёлюп, башын уллу бушуу басып тура эди.

Кыайгы сёзю бла кьонакь муну бушуууна кьошулады. Жюрегин жапсарады. Бир ауукь заманны юйюнде болады, ызы бла уа:

– Сен манга кыатын алыуумда болушханса, энди сен биз жашагъан жерлеге кел, суюгенинги сайла, ол сен манга этген адамлыкьны мен да санга этерме, – дейди.

Экиси да, атланып, энди ол жашны элине келедиле. Жаш бир да кьалдырмай элни кызын жыяды, кесини ариу кыатыны да кызыланы арасында болады.

– Аха, багъалы тенгим! Энди суюгенинги сайла, сен сайлагъан сениди, – дегенде, кызыланы ичинден ол жашны кыатынын сайлайды.

Ол сайлагъаны тенгини кыатыны болгъанын а билмейди. Айхай, аны, айтып, башхала да билдирмедиле.

Жаш кесини кыатынын, кийиндирип, нёгерине берип жибереди. Жолда кетип бара, анга ишни болумун кыатын кеси ачыкьлап айтады.

Аны эшитгенлей, бу нёгерини кыатынын, сыйлы кийимле бла кийиндирип, эрине алып келеди.

– Былай нек этген эдинг? – деп сейирсинип, тенгине сорады.

Ол заманда жаш:

– Ахшылыкь унутулмайды. Сен, мени танымагъанлай, манга этген адамлыкьны мен да толтуруп кыайтарыгъа борчлу эдим. Ол себепден сен суююп сайлагъан тиширыугъа кеси кыатынымды дерге намысым кыабыл кёрмеген эди, – деп жууаплады.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакьла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 284–285 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Ахшылыкь унутулмайды» деген юйюр-жашау-турмуш жомакьда эки жаш адамны бир бирге чынтты шухьлукьлары бла жюрек ачыкьлыкьлары сурагланады. Бир жаш жангы шухьуна кеси жашагъан элинден ол кыайсы кызыны жаратса да, алыргъа болушургъа айтады.

Бир заманда ол аны кыатынына кёрюзтеди (билмегенден). Быллай болумда окьуна ол анга угъай деп айталмайды, ахшылыкьны ахшылыкь бла кыайтара.

ДОБРО НЕ ЗАБЫВАЕТСЯ

В древние времена, когда мы еще не родились, одну девушку одинаково сильно полюбили два парня. Девушка, в свою очередь, давала обещания обоим.

В конце двое молодых людей пришли к девушке:

– За кого ты выйдешь, скажи правду! – говоря, они твердо стояли на своем.

Девушка посмотрела на обоих:

– Если вы меня любите по-настоящему, приведите коней, чтобы их головы были черными, а сами чисто белые, кто у меня во дворе их привяжет, тот станет моим мужем, – сказала она.



Один из парней, недовольный словами девушки:

– Да, если так, выйдешь за того, кто приведет тебе таких коней, – сказал и со злостью ушел.

А другой парень, не находя силы бросить эту девушку, начал искать этих коней. «Или я умру и исчезну, или найду этих коней и женюсь на этой девушке», – с таким намерением отправляется в дорогу.

Преодолевая, пробираясь через дальние земли, про которые в жизни не слышал, пришел в одно селение. И в том селе увидев дом, где двери были открыты, завернул туда, чтобы выпить напиток для утоления жажды. Подойдя туда:

– Эй! Дома кто есть? – спрашивает.

Один молодой человек выскакивает из дому.

– Ой, кто есть, все дома, добро пожаловать, гость! – сказав, хватается за узду.

– Чтобы у тебя было много родни и счастья! У меня нет времени заходить, я человек, у которого все внутри горит, не обессудьте, я завернул к вам, чтобы вы мне дали напиток.

– Конечно, ты только скажи, пожалуйста, гость! Какая забота у тебя? Все, что в наших силах сделаем, поможем, – сказал молодой человек.

– А забота моя такова: чтобы достичь своего желания обзавестись семьей, мне надо найти двух белых коней с черными головами.

– Ага! Если тебя только это тревожит, от большой тревоги тебя пусть убережет Тейри*, слезай с коня! И таких коней найдем, – сказал он и пригласил к себе домой.

Когда гость услышал из уст молодого человека подбадривающие слова, слез с коня и вошел в дом. Поздоровался с женой молодого человека. Попил, поел, а следом прилег, чтобы отдохнуть.

Путник, придя в себя, когда приготовился ехать обратно, хозяин дома:

– Ты – гость, кажется, что ты странствуешь ради дела, на которое и жизни не пожалеешь, ты оставайся в моем доме, а за лошадьми, которых ты ищешь, я схожу, – сказал он и отправился в путь.

Много ли, мало ли ездил, через несколько дней хозяин дома пригнал молодому человеку взмыленными лошадьми, которых он искал.

Когда заполучил лошадей, молодой человек, не мешкая, повернул в обратный путь, и, пригнав их, привязал во дворе девушки. Девушка, увидев их, сильно обрадовалась, встрепелась.

Когда молодой человек показал ей по-настоящему мужскую хватку, девушка покорно отнеслась к его предложению и вышла за него замуж.

После женитьбы, спустя год-два, молодой человек, отправился в гости домой, к тому человеку, который достал ему этих белых лошадей. Однако этот приход для него оказался иным. У хозяина дома умерла жена, из-за этого он пребывал в глубокой печали.

Гость, выразив ему соболезнование, присоединяется к его горю. Старается как-то его подбодрить. Некоторое время находится у него в доме, а следом:

– Ты помог мне с женитьбой, теперь ты приходи в земли, где мы живем, выбери кого хочешь, какую ты мне оказал честь, я тебе тоже постараюсь предоставить, – говорит.

* *Тейри* – в язычестве верховное божество у карачаевцев и балкарцев.

Оба, отправившись, прибывают в село того парня. Молодой человек, не оставив ни одну в стороне, собрал всех девушек села и его жена-красавица оказывается среди этих девушек.

– Да, дорогой друг! Теперь выбирай кого хочешь, которую выберешь, та будет твоей, – когда сказал, среди девушек он выбирает жену молодого человека.

Он не знал, что девушка, которую он выбрал, жена его друга. Об этом и другие ничего не сказали, промолчали.

Молодой человек, приодев свою жену, отдал другу и отправил их в путь. По дороге, когда они ехали, женщина рассказала ему все как есть.

Едва это услышал, молодой человек, нарядив жену друга в дорогие одежды, возвращает ее мужу.

– Почему так поступил? – спросил он друга с большим удивлением.

Тогда молодой человек:

– Добро не забывается. То, что ты, не зная меня, проявил доброту, я обязан был вернуть сполна. Поэтому, женщину, которую ты выбрал с любовью, назвать своей женой, мне не позволила моя честь, – ответил он.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 284–285) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка, в которой воспевается абсолют мужской дружбы и абсолют добра. Мужчина пообещал своему новому другу помочь жениться на любой девушке с его селения, которая ему понравится. Когда тот указал на его жену (по незнанию), даже в этом случае он не смог тому отказать, поскольку на добро следует отвечать добром.



ОЮМСУЗ ПАТЧАХ

Эртте заманлада бир патчах болгъанды. Аны кыралында бир деп бир жангыз тутмакъ юй окъуна болмагъанды. Аманлыкъ этгенлени, жашау низамын бузгъанланы, тутмакъгъа салмай, халкъны жыйып, аны аллында, уруп, башларын кетертип къоя эди. Алайды да, бу патчах адам танымазча кийине да, кыралында айлана, аманлыкъчыны ким болгъанын биле да, чакъырта да, ёлтюрте тургъанды.

Патчахны ёзюрю уа, бу ёлтюрюю тёрени къабыл кёрмей, кесини жюйюсханы бла даулашхандан бошамай эди.

Бир жол даулаша келгенлеринде, патчах ёзюрюне:

– Бек ахшы, мен, сени кеси орунума къоюп, жыллыкъ жолоучулукъгъа кетейим. Кыралда бузукълукъ, аманлыкъчылыкъ тыйылса, мен сен айтханча этерме, алай эталмасанг а, келгенлей, кеси башынгы кесерме, – дегенди.

Андан сора патчах, бир узакъ жерге кетип, ким болгъанын да кишиге билдирмей, къатын алып жашап турады.

Айтхан болжалы жетип, ызына къайтыргъа тебирегенде, патчах, мухурун айлы къатынына къоюп:

– Жаш тууса, бу мухурну аны онг билегине такъ, не уллу болса да, тешме, – деп, кетеди.

Патчах, биягъы жашырын келип, битеу кыралына айланып, аманлыкъчыланы кёп болуп тургъанларын кёргенди. Сора ёзюрюне:

– Кыралынг аманлыкъчыдан толу болгъанда, сен аланы кырмай нек тураса? – деп соргъанды.

Ёзюрю патчахха:

– Мен аланы жокъ этерикме, алай манга энтта бираз заман керекди, – дегенди.

– Охо, сен айтхан, – деп, патчах кыралыны оноуун ёзюрюне дагъыда бергенди. Патчахны ол айлы болуп къалгъан къатыны уа жашчыкъ тапханды да, аны мухурун жашыны билегине такъгъанды. Жаш, ёсюп, тенглерине къошулгъанда, ала муну:

– Кимденди бу атасыз? – деп, хыликкя этгендиле.

Жаш, юйюне келип:

– Мени атам кимди? Къайдады? – деп, анасын кыысып тохтагъанда, анасы ол сахарны атын айтханды. Сора бу, сурай барып, атасы жашагъан сахарны тапханды. Жаш кеси уа мардасыз ариу, ётгюр да болгъанды. Алай айлана, жюрюй кетип, ёзюрню кызы жашагъан юйню къаты бла озуп баргъанлай, кыз муну кёреди да, чакъырып шагъырей болады. Сора кыз, бу жашха ахча берип, кесини юйюню къатында юйню сатып алдырып, кеси юйюнден жашны юйюне жерни тюбю бла жол ишлетеди. Алай бла ёзюрню кызы жашны кесине тос этеди.

Биягъы патчах, тасхагъа айлана келип, ол жашны юйюнде къонакъда къалады. Была да олтуруп тургъанлай, ёзюрню кызы, жашны чакъырта, къарауашын иеди. Жаш:

– Къонагъым барды, – деп, барыргъа унамайды.

– Къонагъын да алып келсин, – деп, кыз къарауашын дагъыда иеди.



Сора была жер туюбу жол бла кызыны юйюне келедиле. Ол кече жаш – кызы бла, патчах да кырауаш бла кыладыла.

Экинчи кече патчах, ёзюрюн алып келип, кызыны не ишле этип айланганын кёргюзтүп, эрттенликде быланы ёлтюртюрге халкыны жыяды. Жашны алгъа тешиндиредиле да, аны билегинде хан кесини мухурун кёреді. Жашын танып, ёлтюртюрге кёзю кыймайды. Ёлтюрюу кеси башына жетгенде, аны ачылыгын сезеди, тюшюнеди, чоғъожланады.

Сора жыйылып тургъан халкыгъа ол кюнден арысында адам ёлтюртююню кыойгъанын билдирди. Ёзюрню кызын кесини жашына алып, дамырлыкъ той-оюн да этди.

Ол тойну бозасын ичген неда анда аякъ бюкген адам тапсанг а, кыойма!

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакыла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 285–286 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Оюмсуз патчах» деген жомакъ жюрек халаллыкъ бла бирге, сакылыкыгъа да юйретеди. Мында женгиллик бла болдурулгъан иш бир заманда тюз болмазлыкыгъа шарт кёргюзтюлюнеди. Патчахны, улуу сагыш эте турмай, аманлыкычылагъа зорлукъ жетдирип тургъаны, аны халисинде эди. Алай бир заманда «аманлыкычыланы» санына кесини жашы тюшгенінде, ол жашаугъа кёз кыарамын тюрлендирип, адамлыкъ жанына тартады.

НЕРАЗУМНЫЙ ЦАРЬ

В древние времена жил один царь. В его государстве не было ни одного дома для заключенных. Если кто совершал преступление, кто нарушал жизненный распорядок, он, не заключая преступника в тюрьму, собирал народ, и пред ним, ударом отсекал повинную голову. Итак, этот царь одевался так, чтобы его люди не узнавали, путешествуя по стране, он вычислял, кто преступник, и, вызывая, убивал его.

А визирь царя не соглашался с его законом, убивавшим людей, он постоянно спорил со своим благодетелем.

В один день, когда они сильно спорили, царь сказал своему визирю:

– Очень хорошо, ты останешься вместо меня, а я отправлюсь в путешествие на год. Если в государстве прекратится преступность, бандитизм, я сделаю, как ты скажешь, а если так не сможешь, как только я вернусь, твою голову отрублю, – сказал он.

После этого царь уехал в далекие края и, не показывая, кто он есть на самом деле, женившись, проводил свое время.

Когда, обозначенные сроки вышли и надо было возвращаться, царь достал свою печатку и вручил своей беременной жене:

– Если родится сын, вот эту печатку привяжи на его правое плечо, насколько бы он ни повзрослел, не снимай, – сказал и отправился в дорогу.

Царь, опять же, вернувшись тайком, обошел все свое государство, видит, что преступников стало больше. И говорит своему визирю:



– Когда в твоём государстве стало преступников так много, почему ты их не истребишь? – спросил он.

Визирь ответил царю:

– Я их истреблю, но мне для этого еще нужно немного времени, – сказал.

– Да, пусть будет по-твоему, – сказал царь и еще раз оставил своего визиря править страной. А у царя от беременной жены, которая осталась месячным ребенком в утробе, родился сын и она его печатку привязала сыну на плечо. Когда сын, подросток, присоединился к своим сверстникам, они ему:

– От кого этот безотцовщина? – говоря, высмеивали.

Сын, вернувшись домой:

– Кто мой отец? Где он? – спросил у матери настойчиво, тогда мать произнесла название того города. Потом он, расспрашивая, нашел город, где жил его отец. А сын был безмерно красив, отважен. И так, прохаживаясь, прогуливаясь, он проходил мимо дома дочери визиря, она его увидела и, пригласив к себе, познакомилась. Потом девушка дала этому парню деньги и купила дом рядом со своим домом и велела выстроить дорогу под землей из своего дома в дом этого парня. И таким способом дочь визиря держала этого молодого человека в любовниках.

Опять этот царь, путешествуя тайком, остается в доме этого парня в гостях. Когда они сидели вдвоем, дочь визиря, чтобы вызвать парня, послала свою служанку. Парень:

– У меня гость, – сказав, не захотел идти.

– Пускай идет вместе с гостем, – сказала девушка и опять послала служанку обратно.

После этого они подземной дорогой пришли в дом девушки. В ту ночь парень с девушкой, а царь со служанкой остались.

Во вторую ночь царь, приведя своего визиря, показав, чем занимается его дочь, утром созывает народ, чтобы их убить. Парня первым раздевают и царь видит на его плече свою печатку. Узнав своего сына, ему стало жалко его убивать. Когда смертный приговор коснулся его самого, он осознает его жестокость, неправильность и сожалеет об этом.

Тогда он всему собравшемуся народу объявил, что с этого дня прекращает убивать людей. Взяв в жены своему сыну дочь визиря, сыграл роскошную свадьбу.

Человека, которого на той свадьбе пил бузу* и танцевал, сейчас не найдешь!

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 285–286) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка учит милосердию, осмотрительности. Здесь крупным планом демонстрируется неправота тех, кто привык рубить с плеча. Царь имел привычку жестоко и безрассудно расправляться с преступниками. Но когда в «преступники» случайно попал его собственный сын, он пересмотрел собственное мнение и стал гуманным.

* Боза – национальный хмельной напиток.

МАХМУТ БЛА АЛАКЁЗ

Махмутчукъ юйдегиде жаппа-жангыз бир сабий эди. Гитчеликден окъуна тулпарлыгъы, жигитлиги бла эл сабийледен айырма болуп, ёсе келгенде уа, эслилиги бла да кёзге уруна башлайды. Кесини уа атдан суйген заты жокъ эди.

Жарлы жашагъанлары себепли, он жылы жетгенлей, Махмут бешжыллыкъ жылкычы жалгъа киреди. Беш жылдан а, айтхылыкъ жылкычы да болуп, хакъына да жарагъан бир ат бла бир ийнек алып чыгъады. Бир ауукъ жылны кьадалып ишлеп, кюрешип, юй жашауларын кьолай этеди.

Кюнлени биринде атасы, Махмутну чакъырып:

– Жашым, энди биз да кьарт болгъанбыз. Биз саулукъдан юйдегили бол, – деп селешди.

Махмут, жюйрюк атына да минип, кьыз кёре жайылады. Айлана, кьыдыра барып, кеч бола, бир узакъ элге жетеди. Атым ач болмасын деп, элге кирмей, ырбында кьабырлагъа кьайтады.

«Кьоркьуусузлукъ излесенг, кьабырла болгъан жерге бар», – деп, гитче заманчыгъында эшитген эди да, атын кьыртышда кишенлеп, кеси кьабырла ичине киреди. Айлана барып, бир жангы кьабыргъа тубейди да, башын кьабыргъа салып, жамычысын юсюне жабып жатады.

Кёзлерине татлы кьалкыу кире тебирегенлей: «А-а-й, а-а-й, о-ой анам!» – деген бир таууш кьулагъына чалынады.

Жаш, секирип туруп, тегерекге кьарайды, болсада жукъ кёрмейди. Ызы бла кьайтып жатханлай, дагъыда: «А-а-й мен харип, жаным саулай жер тубюнде ёлеме да!» – деген бир ачы ынычхагъан таууш эшитеди.

Махмут биягъы секирип турады, жукъусу кьачады, акъылы сагъаяды. «Ярабий, бу тамаша неди?» – деп, кьабыр сайын ийилип тынгылайды, жукъ эшитмейди. «Кьулагъыма бош алай чалына болур», – деп, келип жатады. Бираздан а дагъыда: «О-о-й анам, о-ой эгечим, жаным саулай кьабыргъа кёмюп кьойдугъуз да, ай-ай-ай!» – деген тауушланы эшитди. «Тоба-тоба», – деп, иги кьулакъ салып тынгылагъанында, таууш ол жангы кьабырны ичинден чыкьгъанын ангылады.

– Да мында уа тамаша бар кёреме да! – деп, атына минип, элге кьууулады.

Орамны жортуп бара, ныгъышда лахор эте тургъан жашланы кёрюп:

– Жигитле, кече ахшы болсун! – деп саламлашды.

– Сау бол, жууукъ бол, кечги кьонакъ, – дедиле жашла да.

– Жигитле, бюгюн бу элде адам ёлгенмиди?

– Да, хау, бир ахшы жаш ёлген эди да, ингир ала басдыргъандыла.

– Аны юйю кьалайдады?

– Ма ол тёбени аллына барсанг, жилигъан тауушларын эшитирсе. Баргъан эт, алай а ала бюгече кьонакъ алып болумда туююдюле, – дедиле жашла.

Махмут, жортуп, эшик аллына барды. Бушуу бет бла, салып, юйге кирди да, жилий тургъан юч тиширыу бла эки эр кишини кёрдю. Кьарт кьатыннга айланып:

– Амма, нек жилийсыз, не кьыйынлыкъ жетгенди, айтыгъыз, билирге сюеме, – деди.



– Балам, бизге болгъанны сурама. Жашымдан туугъан кез жарыгъымы бюгюн жер тюбюне кёмгенбиз.

– Амма, андан сора, бюгюн бу элде адам ёлюп басдырылгъанмыды?

– Угъай, балам, андан башха, киши да ёлмегенди. Къара кюн жангыз мени балама келгенди.

– Да алай эсе, амма, терк окъуна чыракъла, кюрекле да алыгъыз! Бусагъат биз сени туудугъунгу къабырына барабыз, – деди жаш.

– Балам, не болгъанды, бу сёзню нек айтаса? – деп, амма, жюгене, ёрге сюелди.

– Амма, сени баланг ёлмегенди, ол къабырдан кычыра турады, – дегенинде, къарт къатын эсин ташлап жыгъылды.

Къалгъан юйдеги да, бирден кычырыкъ этип:

– Ай къонакъ, бу айтханынг неди?! Кертими айтаса огъесе бизними жапсараса, дуняда аллай иш ким кёргенди?! – деп, армау, ауара болдула.

Къонакъ биягъы ашыкъдырды да, чыракъла, кюрекле да алып, бёлек адам аны бла тебиреди. Махмут, аланы элтип барып:

– Жашыгъызны къабыры бумуду? – деп сорду.

– Хау, буду, – дегенни айтып, ёлгенни эгечи чёгюп сытылды.

Махмут:

– Эгечим, жиялгъанны къой да, келип, сен да къабыргъа бир тынгыла, – дегенинде, ёлген жашны эгечи Алакёз, жияй барып, къабыргъа къулакъ салды. Сора къарындашыны: «Ай анам, ай эгечим!» – деген ынычхагъан тауушун эшитгенлей, кычырыкъ этип, кесин къабыргъа-къабыргъа урду.

Олсагъат къабырны топурагъын чачып, «ёлюкню» ачдыла. Алакёз кесин къабыргъа атады, болсада Махмут аны бошламады.

– Сен тиширыуса. Сабыр эт, мен тюшейим, – деди.

Тюшюп, жашны кётюрдю. Башындан узалып, «ёлюкню» ёрге чыгъардыла. Жаны ичинде, эси жокъ, сант эте тургъанын кёрдюле.

Олсагъатдан юйге келтирдиле. Жаш юч кюнден эс жыйды. Игиге айланды. Ол жашны юйдегисини Махмутха къарауларын а несин айтайыкъ! Къол аязларында тутханча этедиле. Алакёзню жюрюшюне, сёзюне, кылыгъына Махмут сынчылап къарайды да, жаратады, бюсюрейди.

Ол заманда жюрюген адетлеге кёре, юч кюнден сора, къарт амма, Махмутну кесине чакъыртып, хапар сорады.

Махмут, жашырмай, кыыз излей айланган хапарын айтады. Амма, аны эшитгенинде:

– Да, балам, алай эсе, былай арлакъда да бир эл барды, ары бар да, эрикгенинги кетер. Сен къайта келирге, мен санга бек ахшы кыыз табарма. Сен бизге этген ахшылыкъны биз санга, башыбызны берсек да, къайтараллыкъ туйюлбюз, – деди.

Махмут, атланып, башха элге кетди. Анда айлана, кыдыра, кеч бет алады. Элден чыгып, ызына келе, къарангы да болуп, кёп къабырланы жаны бла ёте тебирегенлей, аллына бир къозучукъ макъырып чыгъады. «Ярабий, бу жазыкъчыкъны сюрюучюлеми къоюп кетгендиле?» – деп, къоюнуна алып, тебирейди. Олсагъатдан аты, терлеп, баралмай башлайды. Атны къамичи бла уруп-уруп кёрсе да, ат, аллына атлаялмай, тентиреп тебирейди. «Бу къозу ючюн эте болур», – деп, къозуну жерге атханда, къаяла зангырдап, ачы таууш этедиле. Къозуну атханлай, Махмутну аты



къанатланып тебирейди. Бу не сейирди деп, Махмут артына къарагъанында, мардасыз бир эриши жаныуар ызындан къуууп келгенин кѳредиди. Къачып-къачып, аманны кебинден къутулуп, адам жата, къонакъбайына келеди.

Эрттенбласында къарт амма, Махмутну чакъырып, хапар сорады. Ол да жолда кѳрген, тюбеген затларын аммагъа айтады.

Ол хапарны эшитгенде, амма, гузабаракъ да къымылдап:

– Балам, алай кечге къалып нек жюрюйсе? Тоба-тоба, сен нечик жигит адамса, сенден сора, кече жюрюп, алайдан саулай киши къутулмагъанды. Ол санга къозучукъ болгъан башхалагъа киштик, жаныуар болуп, адам жибермей, ашап тургъанды. Балам, къурманынг болайым, сен керти да жигитсе да! – деп эркелетди. – Балам, мен санга этмеген, санга суймеген ахшылыгъымы дуняда бир кишиге сюерик да, этерик да туйюлме, сен анга толу ийнан! Ол себепден, ыразы болуп, жаратсанг, мени жашымдан туугъан Алакѳзню къатыннга ал! Санга къатынлыкъгъа бек кѳл ашап тапханым олду. Ол санга къатынлыкъ этер деп ийнанам, – деди.

Да Махмут суймеген а олму эди! Алакѳзню кѳргенлей окъуна, Махмутну кѳзлери анга илиннген эдиле. Тюзюн айтсакъ, Алакѳз да жашха кесин суйдюрмез къыз а туйюл эди. Къабырдан чыкыгъан жашларыны къууанчын, аны бла бирча Алакѳзню Махмутха берген къууанчларын да бирге этдиле. Хапарлагъа кѳре, бизден сора, ол тойгъа бармагъан адам къалмагъанды. Байтамал, биз ол тамаша тойну заманында тууалмагъан болурбуз. Алай болса да хапарын айтхан да аны кѳрген кибикиди.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 287–289 бб.) Берберланы Б.А. алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

«Махмут бла Алакѳз» деген жомакъда тамашалыкъ шарт да тюбейди (сейир жаныуар). Алай жашау-турмуш халла уллуракъ жер аладыла. Бир жаш адам, юйдегили болур ючюн, бир талай сынаудан ѳтеди.

МАХМУТ И АЛАКѳЗ

Маленький Махмут был в семье единственным ребенком. С самого детства он выделялся своей ловкостью, смелостью среди сельских детей, а когда стал взрослее, он начал отличаться и своим умом. А больше всего он любил коня.

Так как они жили бедно, когда ему исполнилось десять лет, Махмут устроился батрачить на пять лет у табунщика. А через пять лет, он стал знаменитым табунщиком, и за работу получил породистого коня и одну корову. Несколько лет работая без устали, не покладая рук, он жизнь семьи привел к благополучию.

В один день отец Махмута вызвал к себе:

– Сын мой, теперь и мы постарели. Пока мы живы, обзаведись семьей, – сказал он.

Махмут сев на своего быстрого коня, отправляется на поиск девушки. Путешествуя, передвигаясь, поздним вечером пришел в дальнее селение. Чтобы лошадь не проголодалась, он, не заходя в село, повернул в сторону кладбища.



«Если ищешь безопасное место, иди туда, где находится кладбище», слышал он в детстве, поэтому, застреножив на лужайке своего коня, сам зашел на кладбище. Проходя, он наткнулся на новую могилу и, положив на нее голову, укрывшись своей буркой, прилег.

Как только он начал сладко засыпать: «А-а-й, а-а-й, о-ой, мама!» – такие крики дошли до его слуха.

Молодой человек, тут же вскочив, оглянулся по сторонам, однако, ничего не заметил. Снова вернулся обратно, когда снова прилег, он снова услышал: «А-а-й, бедный я, будучи живым под землей, я умираю!» – он услышал пронзительный стон.

Махмут снова вскочил на ноги, сна как будто и не было, умом насторожился. «Боже мой, что за чудесное явление?» – подумал он и начал подходить к каждой могиле, наклоняясь, прислушивается, и ничего не слышит. «Наверное, моему уху, что-то ложное слышится», – подумал он, и, вернувшись обратно, опять прилег. Через некоторое время опять: «О-о-й мама, о-ой сестра, как вы меня живого в могилу закопали, ай-ай-ай!» – такие звуки дошли до его слуха. «Тоба-тоба*», – сказал он и когда ухом по-настоящему приложившись, послушал, он понял, что крик доносится изнутри новой могилы.

– Да, оказывается, здесь происходят чудеса! – сказал он, сев на своего коня, помчался в село.

Когда он скакал по улице, то увидел молодых людей на ныгыше**, которые беседовали между собой.

– Джигиты, добрый вечер! – поздоровался он.

– Будь здоров, просим милости, поздний гость, – ответили молодые ребята.

– Жигиты, сегодня в этом селе кто-нибудь умер?

– Да, да, очень хороший парень умер, и его похоронили вечером.

– А где его дом?

– Подойди туда, где высится сопка, и там услышишь тихий плач. Ты, конечно сходи, но они сегодня не в состоянии принять гостя, – сказали молодые ребята.

Махмут, примчавшись быстро, встал у их двери. С опечаленным лицом он вошел в дом и увидел плачущих трех женщин и двух мужчин. И повернувшись к старушке:

– Бабушка, почему вы плачете, какое горе настигло вас, скажите, я хочу знать, – сказал он.

– Сынок, то, что с нами сегодня случилось, не спрашивай. Сегодня мы похоронили моего внука, светоча моих глаз.

– Бабушка, а кроме него, сегодня в этом селе, кого-нибудь похоронили?

– Нет, сынок, кроме него никто не умер. Черный день настиг только моего ребенка.

– Если так, бабушка, срочно возьмите лампы и лопаты возьмите! Сейчас мы пойдем на могилу твоего внука, – сказал молодой человек.

– Сынок, что с тобой, какие слова ты говоришь? – сказала бабушка и вздрагивая, встала на ноги.

* Тоба-тоба – удивление.

** Ныгыш – завалинка.

– Бабушка, твой ребенок не умер, он кричит из могилы, – когда он это сказал, бабушка, тут же потеряв сознание, упала.

И остальные, кто находился в доме, начали вместе кричать:

– Ай, гость, что ты говоришь?! Ты правду говоришь или хочешь нас утихомирить, кто видел на свете такое?! – сказали они в оцепенении, не зная, что делать.

Гость снова их поторопил и они, схватив лампы, лопаты и группа людей пошли вместе с ним. Махмут привел их:

– Вашего сына могила вот это? – спросил он.

– Да, это, – ответила сестра умершего, и, присев на корточки, зарыдала.

Махмут:

– Сестра, прекрати плакать, подойди и ты тоже послушай могилу, – когда сказал он, умершего парня сестра Алакёз, со слезами подойдя, ухом прислонилась к могиле. Потом она услышала слова брата: «Ай, мама, ай сестра!» – когда она услышала стонущие звуки, с криком бросилась и начала бить себе о могилу.

Тут же они раскидали землю и раскрыли «умершего». Алакёз бросается в могилу, однако Махмут ее не пустил.

– Ты, женщина. Бери себя в руки, я спущусь, – сказал он.

Он спустился и поднял наверх молодого человека. Потянув сверху, «умершего» вытащили наверх. Они увидели, что душа у него была в теле, без памяти, он что-то бормотал.

В скором времени привезли его домой. Молодой человек через три дня пришел в себя. Стал поправляться. А семья этого молодого человека как обхаживала Махмута, словами невозможно выразить! Слово его носили на руках. Поведение Алакёз, ее манеры, как она разговаривает, Махмут внимательно присматривался, и она ему приглянулась и очень понравилась.

По обычаю, принятым в те времена, через три дня, старушка вызвала к себе Махмута и спросила о его жизни.

Махмут, не скрывая, рассказал, что странствует, разыскивая девушку. Бабушка, услышав это:

– Да, сынок, если так, недалеко отсюда есть одно село, сходи туда, поразвлекайся. К тому времени, когда ты вернешься, тебе подберу хорошую девушку. То, доброе дело, которое ты нам оказал, если мы и головы сложим, то не сможем вернуть, – сказала она.

Махмут собрался и отправился в другое село. Пока он там передвигался, ходил, стало темнеть. Выходя из села, когда он отправился обратно, кругом стало темно. Он, начал проходить через множество могил, и тут к нему навстречу выскочил ягненок и заблеял. «О боже, эту бедняжку чабаны что ли оставили?» – подумав он, взял его на руки, отправился дальше в путь. И тут же его конь вспотев, перестал ходить. Хоть коня стегнул кнутом несколько раз, конь, не сумев шагнуть вперед, начал качаться. «Из-за этого ягненка, наверное, так себя ведет», – подумав, когда бросил ягненка на землю, скалы зазвенев, резкий звук произвели. Едва бросил ягненка, у лошади Махмута словно появились крылья. «Это что за чудо?» – подумав, когда Махмут оглянулся, увидел, как безмерно страшное животное гонится за ним. Убегая-убегая, он еле-еле спасся и к тому времени, когда люди начинали ложиться, прибывает к своему конакбаю*.

* *Къонакъбай* – хозяин дома, куда пришел гость [5, 658].



Утром, эта старушка позвала Махмута и расспросила у него обо всем. И он рассказал бабушке, все, что видел, кого встретил по дороге.

Когда бабушка услышала эту историю, то она быстро задвигалась:

– Сынок, почему ты ходишь так поздно? О боже! Какой ты мужественный человек, кроме тебя, кто ночью ходит, оттуда никто живым не спасся. Тот, который показался тебе ягненком, для других становился кошкой, зверем, и, не пропуская людей, их съедал. Сынок, как я за тебя счастлива, ты на самом деле – герой! – сказала она ему, подбадривая. – Сынок, доброе дело, которое я тебе не сделаю, не пожелаю, в мире никому не сделаю и не пожелаю, ты полностью поверь мне! Поэтому, с твоего согласия, если она тебе понравилась, женись на Алакёз, которая родилась от моего сына! От души, сколько я не выбирала, выбор выходит на нее. Я верю, что она тебе будет верной женой, – сказала она.

Да, разве Махмут не этого желал! Как только показалась Алакёз, Махмут взглядом сразу приметил ее. Правду говоря, и Алакёз была девушкой, что нельзя было парню в нее не влюбиться. Пиршество, которое они посвятили сыну, вызволенному из могилы, а также радость, которую предоставили Алакёз с Махмутом со своей женьбой, они провели вместе. По рассказам, нет людей, кто бы ни присутствовал на том тое*, кроме нас. Скорее всего, мы не смогли родиться во времена этого удивительного пиршества. Однако, и то, что мы рассказали, стоит того, словно мы его видели.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 287–289) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В сказке «Махмут и Алакёз» имеется и элемент чуда (фантастическое животное), однако бытовые мотивы в нем преобладают. Молодой человек, чтобы жениться, проходит через некоторые испытания.

* Той – свадьба, пиршество.

МАРАУЧУ БЛА АГЪАЧ КИШИ

Мараучу, уугъа айлана барып, бир жугъутур ёлтюргенди. Аны терисин алып, агъач ичинде асырай тургъанлай а, юсюне бир агъач киши келгенди. Жууугъуракъ да жанлап, агъач киши мараучугъа:

– Чох-чох, – дегенди.

Мараучу иги онгсунмагъанды, болсада ол да:

– Чох-чох, – деп саламлашханды.

Экиси да уучу къазанчыкъ бла эт биширгендиле. Ашап, тоюп, жатаргъа тебирегендиле да, агъач киши мараучугъа:

– Атынг неди? – деп, жарты-къурту ангылатып соргъанды.

Мараучу анга:

– Кесим-Этдим-Кесиме, – дегенди.

Хапарны андан ары созмай, экиси да жатадыла. Алай бираздан бу агъач киши мараучугъа:

– Сиз жукъласагъыз, кёзлеригиз къалай боладыла? – деп сорады.

Мараучу анга:

– Жукъласакъ, бизни кёзлерибиз уллу болуп, ачылгъанлай, жылтырап турадыла, – деди. Сора: – Сизни кёзлеригиз а къалай боладыла? – деп, кеси да сорду.

– Да бизни уа бир кёзюбюз барды да, жукъласакъ, къып-къызыл болуп турады, – деди ол да.

Бир кесек замандан агъач киши жукълайды. Кёзю къып-къызыл болуп, жилтинлери кёкге учадыла. Ол заманда мараучу жатхан жеринден шош турады. Кесини орунуна бир зылды салады, аны юсюне жамычысын жабады. Ызы бла ушкогун алып, терек башына минип, агъач кишини атып, тюз кёзюнден урады.

Агъач киши къыжырап турады да, къатында зылдыны жамычы бла бирча туурап, ызы бла, къычырыкъ этип, агъачха чабады. Ол кезиуде мараучу къачып къутулады.

Бир заманда агъач кишиле, ол жаралы агъач кишини къычырыгъына чабып жетип:

– Уо, не болуп къалды санга? Ким чыгъарды кёзюнгю? Ким этди? – деп сордула.

– Уо, Кесим-Этдим-Кесиме! Бу ишни манга Кесим-Этдим-Кесиме этди, – деп ёкюрдю ол жарлы.

Агъач кишиле, аны эшитгенде:

– Да кесинг кесинге этген эсенг, биз а санга не этейик?! – деп, ызларына кетгендиле.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 289–290 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Мараучу бла агъач киши» деген чам жомакъны анекдотха ушагъан жерлери бардыла. Сёзлени айтханда, адам кюльюрча магъана жаратылады. Кюлью андан къуралгъанды. Баш жигитни аты Кесим Этдим Кесимеди. Мараучу агъач кишини жаралы этип, сора кесини ахлуларыны: «Кимди

бу ишде терс?» – деген сорууларына, агъач киши алагъа «Кесим-Этдим-Кесиме», – деп жууап береди.

Бу айтымны эки тюрлю ангылашыннганы кюлкюге жол ачады.

ОХОТНИК И ЛЕСНОЙ ЧЕЛОВЕК

Охотник, отправившись на охоту, убил одного тура. Сняв с него шкуру, когда он начал прятать тушу в лесу, к нему подошел лесной человек. Он подошел близко к нему, лесной человек сказал охотнику:

– Чох-чих, – сказал он.

Охотнику это не сильно понравилось, однако, он тоже:

– Чох-чих, – сказав, поздоровался.

Они вдвоем в охотничьем котелке сварили мясо. Когда они поели, досыта и начали ложиться, лесной человек охотнику:

– Как тебя зовут? – спросил он, помня сумбурно.

Охотник ему:

– Сам-Себе-Сделал, – ответил он.

Дальше не продолжая разговор, они легли вдвоем. Однако, через некоторое время лесной человек охотнику:

– Когда вы спите, ваши глаза какими становятся? – спросил он.

Охотники ему:

– Когда спим, наши глаза становятся большими, остаются открытыми, сверкающими, – сказал. Потом: – А ваши глаза какими становятся? – спросил он сам тоже.

– А у нас имеется один глаз, когда спим, он становится сильно красным, – ответил он тоже.

Через некоторое время лесной человек засыпает. Его глаз стал сильно красным и из него искры разлетаются в небо. В это время охотник встал тихонько с того места, где лежал. Вместо себя положил дерн. И на него накинул свою бурку. Следом схватил свое ружье, залез на дерево, и лесному человеку выстрелил в единственный глаз.

Лесной человек, встав разъяренный, рядом с дерном бурку раскромсав, с криком бежит в лес. В это время охотник спасается бегством.

В это время лесные люди, прибежали на крик бедного лесного человека:

– Ой, что с тобой случилось? Кто вытащил твой глаз? Кто это? – спрашивают они.

– Ой, Сам-Себе-Сделал! Это дело Сам-Себе-Сделал совершил, – зарычал бедный.

Лесные люди, услышав это:

– Да, если Сам-Себе-Сделал, а мы тебе, что сможем сделать?! – ответили и вернулись обратно.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. Нальчик, 2012. С. 289–290) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Полуанекдотическая сказка, построенная на игре слов. Смех построен на том, что главного героя зовут «Сам-Себе-Сделал». Охотник ранил лесного человека и на вопрос сородичей, кто виноват в случившемся, лесной человек отвечает «Сам-Себе-Сделал». Двойной смысл выражения становится источником смеха.

ЖАЛЧЫ БЛА БАЙ

Бир жаш жалгъа кирип акъылда айлана келгенди да, бир байны къошуна жетип:

- Кёп болсун! – деп саламлашханды.
- Сау бол. Жууукъ бол къошха, – дегенди къош иеси да.
- Жууукъ да болурбуз. Къошну иеси уа кимди? – деп соргъанды жаш.
- Менме, – дегенди ол адам.
- Санга жалчы керекмиди?

Бай бираз кыым-тымыракъ этгенди да:

– Да артыкъ керек болуп да туююлдо, алай барыр жеринг жокъ эсе, мында окъуна тохта. Хакъынгы аман эттем, – дегенди.

Байгъа жалчы уа керек эди. Алай жалын аз тёлер умутда багъалы этдире эди.

Жашны жалгъа кирмей амалы жокъ эди да, тауусум этип, жаш бу байда бешжыллыкъ жалгъа тохтагъанды. Жангы жалчысы эшикге чыгып тебирегенлей, бай:

– Да тауусум этдик, алай сени ким болгъанынгы мен билмейме. Атынгы къалай айтып кычырлыкъма? – деп соргъанды.

Жалчы, бир кесек сагъышланып:

– Мени атым а Итдентуугъанды, – дегенди.

Бай, сейирсинип, дагъыда къайтарып соргъанды:

– Ол дегенинг? Адамны аллай аты боламыды да?

– Бир да сейирсинме, жюйюсхан. Мени андан башха атым жокъду. Мени атым тюз алайды, – деп, жалчы ишине кетгенди.

Байда бу жаш толу беш жыл жалчы болуп турады. Ол беш жылны ичинде бай, кереклиде-керексизде да, анга Итдентуугъан деп кычыра эди. Жал кезиую чыгып, хакъчыгъын да алып, жаш кетип тебирегенди. Жал хакъгъа берген малын кёзю кыймай, бай аны ызындан:

– Ой, Итдентуугъан, къайры кетип бараса? Бери къайт, сёзюм барды, – деп кычыргъанды.

Жалчы, ызына къайтып келип, байны къатына баргъанды. Жашлыгъына хорлатып, кысхатамакъ да болмай, ырахат:

– Итден мен туумагъанма, итден сен туугъанса. Мени уа атым ма былайды, – дегенди да, атын айтханды.

Жашны алай батыр сёлешгенине да бай сейирсине:

– Да эндиге дери кесинги атынгы манга нек айтмагъанса? Мен соруп кюрешген эдим да, – дегенди.

Ол заманда жаш:

– Санга дери да мен бир байда жалгъа тохтагъан эдим. Ала мени атымы бек уста биле эдиле, алай манга хар заманда да Итдентуугъан деп тура эдиле. Аланы алай айтханлары мени жүрегими бек сындырыучу эди. Сен да мени жүрегими сындырырса деп, мен санга байла айтыучу атымы айтхан эдим. Сен Итдентуугъан десенг, мени жаныма тиймеучу эди, нек дегенде сен мени тюз атымы билмей эдинг! Алай энди уа эсингде тут: итден жалчыла туумагъандыла, итден байла туугъандыла. Жалчыны хакъын бермей кыйнагъанла аладыла. Энди уа, хайда, итден туугъан, сау къал, – деп, бурулуп кетгенди.



Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 298–299 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Жалчы бла бай» деген жашау-турмуш жомакъда жарлы адамланы къыйнап тургъан къолайлы адамланы къылыкъсызлыкъларына айып салынады. Мында «Итден туугъан» деген сёз тутуш хайырланылады. Бай адамла юйренчек болуп, бу сёзню кеслерини жалчыларына айтып тургъандыла, аланы керти атларын биле турмай.

БАТРАК И БОГАЧ

Один юноша, захотев наняться в батраки, отправился в дорогу и придя в кош* к богатому человеку:

- Желая, чтобы у вас было много добра! – поздоровался он.
- Благодарю. Проходите, гостем будете, – ответил и хозяин коша.
- И гостем будем. А кто хозяин коша? – спросил тот юноша.
- Я, – ответил тот человек.
- Тебе батрак нужен?

Бай, немного озираясь, неторопливо:

– Да, не очень-то нужно, но, если тебе некуда идти, хоть здесь останавливайся. Буду платить неплохое жалованье, – сказал он.

Баю, конечно, нужен был батрак. Однако чтобы ему платить маленькое жалованье, он набивал себе цену.

Юноше невозможно было не наняться в батраки, договорившись, он у этого бая устроился на пять лет батрачить. Когда новый батрак начал выходить на улицу, бай:

– Да, мы договорились, но я не знаю, кто ты такой. Как я буду на тебя кричать? – просил он.

Батрак, немного подумав:

– Меня зовут Итдентууган**, – ответил он.

Бай, удивившись, еще раз повторно спросил:

– Что ты сказал? У человека такое имя может быть?
– Тут нечего удивляться, мой господин. У меня другого имени нет. Меня так и зовут, – сказал батрак и пошел работать.

У бая этот юноша батрачил ровно пять лет.

И в течение этих пяти лет бай, по поводу, и без повода, кричал на него Итдентууган. Когда вышел срок батрачества, получив свое жалованье, юноша засобиралися уходить. То, что бай ему выплатил скотом за его батрачество, он сильно пожалел, бай крикнул вслед ему:

– Ой, Итдентууган, куда ты пошел? Вернись сюда, мне надо что-то сказать.

Батрак, вернувшись обратно, подошел близко к баю. Из-за молодости не допуская слабинки, не писклявым голосом:

– От собаки не я родился, от собаки ты родился. А меня зовут вот так, – сказал он и назвал свое имя.

* Кош – стойбище.

** Итдентуугъан – собачий сын.

То, что юноша заговорил как богатырь, бай сильно удивляясь:

– Но, а почему до сих пор ты не называл своего имени? Я же у тебя расспрашивал, – сказал он.

Тогда юноша:

– И до тебя я батрачил у одного богатого человека. Они прекрасно знали, как меня зовут, однако все время меня называли Итдентууган. То, что они так называли меня, мое сердце сильно огорчило. Я думал, что ты тоже будешь меня оскорблять и назвал свое имя, которым меня нарекли богатые. Когда вы меня называли Итдентууган, я не обижался, потому что вы не знали мое настоящее имя! Но, а теперь запомни: от собаки батраки не родились, от собаки родились богатые. Это они мучают батраков, не давая им жалованье. А теперь, давай, собачий сын, будьте здоровы, – сказал и, повернувшись, ушел.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 298–299) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Социально-бытовая сказка, в которой изобличаются античеловеческие нравы эксплуататоров, которые унижают простолюдинов. Обыгрывается оскорбительная кличка «Итдентууган» – «родившийся от собаки». Богачи имели привычку этим словом называть батраков, не интересуясь их подлинными именами.



ЧОМАРТ КЪОЙЧУ

Эртте-эртте бир элде бир кишини къатыны ёлюп, къызчыгы бла кеси къалгъандыла. Кюнлени бир кюнюнде ол киши, Кябагъа барып, хажкъылып къайтыр мурат этгенди. Къызы атасыны кетерине ыразы болмагъанды. Алай ол киши:

– Мен, Сыйлы Аллахны юйюнде гюняхларымы жулмай, ахыратха къалай барлыкъма? – деп, жолгъа атланганды. Кете туруб’а, къызчыгын элни эфендисине аманат этгенди. Къоншулары, жууукълары биз къарарбыз дегенликге, киши кимден да бек эфендиге ышанады.

Къызчыкъ дуняда болмагъанча акъыллы да, ариу да бир жан эди. Тюз да ол юйюне жарашхан кюнден башлап, эфенди, аман ниетге берилип, къыз бла тос жюрюрге излегенди. Атасы ышанып къойгъан адамны иймансызлыгына сейирден ёле, айып да этип, къыз ич отоугъа къутулгъанды. Ишни ариу бла болмазын билип, эфенди кече белинде мынга зор этерге киргенди. Алай къыз, эфендиге хорлатмай, агъачха къачып кетгенди. Агъач ичи бла бара барып, ингир болгъанлай, бир терекге ёрлегенди. Кече узуну аны башында тургъанды. Танг аласы бла уа бир залим уучу, айлана келип, къызны кёргенди да:

– Эй, не затса сен, адаммыса, жинмисе? – деп, терек тюбюне келип соргъанды.

– Мен жин да, шайтан да тюйюлме, жазыкълыкъ жетип айланган адамма, – деп, къыз жууап бергенди.

– Тюш бери, тигеле да, хапарынгы айт, мен болушур зат эсе, къолумдан келгенни аямам, – дегенди жаш.

– Хыянат этмем деп, Аллахны атын жюкге берсенг, тюшерме, алайсыз а – угъай! – деп, къыз тюшерге унамагъанды.

– Аллахны аты бла ант этеме, мен санга тиймем.

Алай къаты ийнандыргъанында, къыз терекден тюшгенди. Къыз да, жаш да бир бирлери бла саламлашхандыла. Алайдан экиси да бирге жашны юйюне келгендиле. Къыз, бираз солугъандан сора, ариу жарашдырып, жашха эфенди бла болгъан хапарын айтханды.

Бир ауукъ замандан а къыз бла жаш бир бирин суйгендиле. Сора бу къыз ол уучу жашха барып, къууанч бла жашап башлагъандыла. Кёп да турмай, быланы экисине да бир аламат жашчыкъ туугъанды. Бир жол бу къыз:

– Сен эркинлик берсенг, барып, атамы бир кёрюп келир эдим. Энди ол, сау эсе, Кябадан да къайтхан болур, мени да къайдагымы билмей, инжиле болур, – деп тилегенди.

– Айхай, жаным, айхай, бек тийишлиди барыргъа. Жашчыкъны да ала бар, анга да къууаныр, – деп, эри ыразы болгъанды. Сора, арба, ат да къурап, жолгъа ашарыкъ, атасына да саугъа хазырлап, юй бийчесин ашыра чыкъгъанды. Ол заманда къатыны:

– Кесим жангыз барыргъа суймей эдим, арбачыдан сора да, бир нёгер болса эди, – дегенди.

– Мен барайым, кимни да нек къыйнайсыз, – деп, биргелерине къайын атасы тебирегенди.

Къоюнунда жашчыгы бла келин, къайын атасы, арбачы жолгъа атлангандыла. Бара барып, бир уллу сууну боюнунда кече къалыргъа тохтагандыла. Азыкъ ашагандыла, хар ким жукъларгъа жатханды. Кече къайын атасы келинине кир ниет тутханды. Келин унамаганды.

– Мен айтханны этмесенг, жашынгы суугъа атарыкъма, – дегенди киши.

– Зорда марда жокъду, суюгенинча эт, ёнге, жаным чыкъмай, ол сен айтхан затны мен унамам, – деп сюелгенди келин.

Киши, кесини туудукъчугъун, анасыны къоюнундан тартып алып, суугъа атып:

– Мен айтханны этмесенг, сени боллугъунг да алайды, – деп, дагыда келинине къадалганды.

Къайын атасыны къоймазлыгъын билгенде, къатынчыкъ, къутулуп кетип, башын суугъа атханды.

Сууда бара барып, жаны саулай бир айрыкамгъа чыкъганды.

Ол да алай олтуруп, не этерге билмей турганлай, айрыкамны бир жанында бир уллу къой сюрюу кёрюнгенди. Къойчу жаш а, ол сюрюуну ызындан келе келип, арлакъда сыртындан тюшюп жатханды.

– Энди барайым да, аны кесиме жаш этейим, ол манга болушур, – деп, къатын, барып, жашны аузуна эмчегин салганды.

Алайда экиси да ана-бала болгандыла. Сора къатын бу жашха:

– Мен къыйынлыкъ жетип айланган бир адамма, мени тиширыу болгъаным сен адамгъа айтмай, юсюме кьерге эски эр киши кийимле табып, мени атанга къой жалгъа жарашдыр, – дегенди.

Жаш олсагъатлай анга кийимле келтирип кийдиргенди. Ингирде юйюне элттип:

– Атам, бир алапат къойчу тапханма, аны къой жалгъа алмай амал жокъду, – дегенди.

– Да алайыкъ, сен ыразы эсенг, мен да угъай демейме, – деп, жашны атасы ыразы болганды.

Алай бла къатын беш жылгъа къой жалгъа жарашханды. Ол болжалны ичинде къойланы ариу кютюп, заманы жетгенде, жалына бир бёлек къойчукъну да алып, жолгъа тебирегенди. Атасыны ыразылыгы бла уа, биргесине эмчек жашын да алганды. Талай заманны тюрлю-тюрлю жерледе айлангандыла, къойлары да кёп болганды. Сора была бирде къошларын жети жол айырылган жерге салгандыла. Андан болур эди, кеслерине да къонакъла таймаздан келип башлагандыла. Келген къонакъгъа уа была да къонакъбайлыкъ этмей къоймагандыла. Ол себепден къатыннга Чомарт Къойчу деп атагандыла. Къатын да хар келген къонакъгъа эрин, атасын соруп турганды.

Къатынны эрини бу затладан хапары болмаганды. Жашны атасы:

– Келинни да, жашчыкъны да ата юйюне элтгенме, тансыкъларын алсала, келирле, – деп алдаганды.

Кёп заман озгандан сора, жаш, къайгылы болуп, къоймай, атасын да биргесине алып, излей кетип, къызны атасын тапханды. Къызны атасы уа, эфенди аны: «Къызынг ёлгенди», – деп алдаган эди да, керти да алай болган сунуп турганды. Жаш да, жашны атасы да, къызны атасы да, салып, эфендиге барып, хапар сорганларында, эфенди:



– Мен аны кеси кьолум бла асырагъанма, жаназысын да кесим кьылдыргъанма, – деп, жалгъан шагъатла туудуруп башлагъанды.

Алай болса да кьызы эри бла атасы эфендини, кьоймай, биргелерине алып, тёртеулен болуп, бары да кьызы излерге атлангандыла.

Кёп заманланы кёп жерледе айланып, арыгъан да этип, ач да болуп, жети жол айырылгъан жерде Чомарт Кьойчуну хапарын эшитгендиле.

– Ярабий, ол Чомарт Кьойчу бизни тойдургъан да этер эди, аны кибик, ол адамланы кёп жюрюген жеринде кьыздан да бир хапар айтыр эди, – деп, салып барып, Чомарт Кьойчуну кьошуна тюшгендиле.

Кьыз эрин, атасын, кьайын атасын, эфендини да таныгъанды, ала уа муну танымагъандыла. Таныб'а, кьайдан танырыкъ эдиле: кёп жылланы ичинде аны сыфаты да тюрленген эди, андан сора да юсюне кийгени эр киши кийимле эдиле. Къатын, аланы таныса да, кесин танымагъанча этгенди. Ариу, кьошха кийирип, олтуртханды, тынчайтханды. Эмчек жашы уа, эрлай бир алаамат кьойну союп, хант этгенди. Кьонакълагъа ашатхандыла, ичиргендиле. Жатарны аллы бла кьызы атасы Чомарт Кьойчугъа:

– Ярабий, былай-былай, кьызым, жашчыгъы да биргесине, тас болгъанды, дуняда аны кёргенинг неда хапарын эшитгенинг иш жокъмуду? – деп, жарашдырып соргъанды.

– Да аллай адам кёргеним болмагъанды, ёнге сиз айтхан кьызгъа ушаш бир тиширыуну ала-чола хапарын а къачан эсе да эшитгенме. Айт десегиз, унутмагъан эсем, айтырма, – дегенди Чомарт Кьойчу.

Олсагъатлай окъуна эфенди бла жашны атасы элгенгендиле, кьоркыгъандыла, кьошдан къачып чыгъарча болгъандыла, кьызы атасы бла эри уа, кьууанып:

– Ай, маржа, айт, – деп, кёзлери, башлары жарып тилегендиле.

– Хапарны башлардан алгъа, сизден бир тилеригим барды, аны этсегиз, айтырма, алай болмаса уа, айталлыкъ туююлме, – дегенди Чомарт Кьойчу.

– Не зат дейсе, аурууунг тас, не десенг, аны этербиз, болгъан мюлкюбюзно санга берирбиз, – дегендиле кьызы атасы бла эри.

– Мен хапарны бошагъынчы, кьошдан эшикге киши чыкъмасын, тышындан да кьошха киши кирмесин, – дегенди.

– Айхай, айхай! – дегендиле.

Сауут-саба алып, къатынны эмчек жашы эшикни сакълагъанды, къатын да, сюрюучю таягъын кьолуна алып, хапарны башдан-аякъ айтып тебирегенди.

– Быллай-быллай бир адам, Кябагъа тебирегенинде, кесини кьызыны аманатын бир эфендиге берген эди. Ол эфенди кьызгъа зор этерге тебирегенде, кьыз, башын алып, агъачха къачхан эди. Кьызы быллай-быллай бир жигит мараучу табып, юйюне элтип, экиси да бир бирлерин сюйюп, эр-къатын болгъан эдиле, бир жашчыкъ да туугъан эди алагъа. Къатын, жашчыгъын да биргесине алып, атасын кёрюрге бара тургъанлай, аны ашыра келген кьайын атасы, жолда келинине аман ниет тутуп, зор этерге излеген эди. Келини унамагъанда, кьайын атасы, сабийчикни да суугъа атып, келинге чапханда, келин башын суугъа атхан эди. Андан, сууда бара барып, бир айрыкамда чыгып, бир сюрюучю жашчыкъ бла ана-бала болуп, тиширыу болгъанын да жашырып, эр киши кийимле кийгенди... – деп, Чомарт Кьойчу хапарыны артына жетгинчи, кьызы эри



бла атасы, муну болумун ангылап, эфендини бла кызыны кыйын атасын алайда окыуна уруп ёлтюрюрча болгандыла.

Ол эки аманлыкчы уа:

– Кыйчуну айтханы терсди, алдагъан этеди, – деп, дауур-сыйюр этгенди.

– Олтуругъуз, олтур, бир биригизге хыны этмегиз, хапарда ётюрюк, керти да болады. Мен эшитгеними айтама, сёзюмю артын бошаргъа кыюгъуз, – дегенди Чомарт Кыйчу. Ала сабыр болгъанлай а: – Жангылмай эсем, хапарда айтылгъан адамла сиз болурсуз, – дегенди.

Эфенди бла кызыны кыйын атасы жерге кирлик болгандыла, эри бла атасы уа:

– Алайды, жаным, алайды, – дегенди.

– Ма ол кызыны атасына бу къарт бек ушайды, – деп, кызы кесини атасын кёргюзтгенди.

– Керти айтаса, ол менме! – дегенди къарт.

– Ма ол аманат алгъан кызына зор этерге чапхан эфендиге бу ушайды, – деп, Чомарт Кыйчу эфендини кёргюзтгенди.

– Ётюрюкдю, Аллах бла ант этеме, ётюрюкдю! – деп, эфенди кыйгенди-бишгенди.

– Ма ол да кызыны эри мараучугъа бек ушайды.

– Кертиди, – деп силкиннгенди жаш.

– Ма бу къарт да, ол келинине зор этерге умут этип, уланындан туугъан сабийни суугъа атып, келинин суугъа секиртгенге бек ушайды, – деп, кыйын атасын кёргюзтгенди.

– Алай деген неди?! Муну айтханына ийнанмагъыз, бу дунияны бир бирге юсюрюрге тебирегенди. Бу аман ётюрюк сёзле бла Аллахны чамландырады, – деп, кесин ариуларгъа кюрешгенди ол да.

– Ма ол эшикни сакълап тургъан жигит – ол къатынны эмчек уланыды, сизге бу хапарны айта тургъан Чомарт Кыйчу уа – ол кызы кесиди, – деп, кызы, бёркюн алып, къонакылагъа къутас чачын ачханды.

Иш ачыкъ болганды. Атасы бла эри кызыны бир бирлеринден алып къуачакылагандыла, къууанч болгандыла. Эфенди бла кызыны кыйын атасы саудан ёлгенди. Алайда болгъан адамланы жыйып, ол эки аманлыкчыны эки эмилик атны къуйрукларына къаты байлап, бошлагандыла. Эмилик атла, чочуп-чочуп, уруп, аланы бут-бут, къол-къол этгенди.

Была уа, бир бирлерин табып, къууанч бла юйлерине келип, жашап къалгандыла.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 299–303 бб.) Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кёрюгенди.

«Чомарт кыйчу» деген жашау-турмуш жомакъда бир ёксюз кызыны къадарыны юсюнден айтылады. Анга бир талай кере аманлыкчыланы хыянатлары жетеди. Алай ол хар заманда кыйын болумладан, бетин тас этмей, чыгып турады.

Жомакъда аманлыкчыланы айгакъ этиу уллу жерни алады: кызы эр киши кийимлени кийип, анга зараны болгъан адамланы белгили этип, терсликлерине жолукъдурады.



ЩЕДРЫЙ ЧАБАН

Давным-давно в одном селе у одного мужчины умерла жена, он остался с одной дочкой. В один из дней этот мужчина, решил сходить в Кябу, и задумал, совершив хадж*, вернуться домой. Дочка была недовольна, что отец отправился туда. Однако этот мужчина:

– Я, если в священном доме Аллаха от своих грехов не избавлюсь, как без этого уйду на тот свет? – сказал и двинулся в путь. А уходя, он свою дочь поручил сельскому эфенди**, чтобы он за ней присматривал. Хотя соседи, родственники обещали за ней присмотреть, отец больше всех доверил эфенди.

Девочка была красивой, умной, таких не было на свете. С того дня, как вошел в дом, эфенди, поддавшись низменным инстинктам, захотел держать девочку в любовницах. Вероломный человек презрел доверие отца девочки, потянуло его на кощунственный поступок. Но девочка спаслась во внутренней комнате. Эфенди поняв, что по-хорошему ничего не получится, среди ночи зашел к ней, чтобы насильно ею овладеть. Однако, девушка, не сдаваясь эфенди, убежала в лес. Когда она шла по лесу, стало вечереть, и она полезла на дерево. До утра она находилась там наверху. А под утро один смелый охотник, продвигаясь по лесу, увидев девушку:

– Эй, кто ты такой, человек или джин? – спросил, подходя близко к дереву.

– Я не джин и не шайтан, я человек, которого настигло несчастье, – сказала девушка ему в ответ.

– Слезай сюда, спускайся, и расскажи все, как есть, если я смогу чем-то помочь, что в моих силах я не пожалею, – сказал юноша.

– Если ты меня не испортишь, поклянись Аллахом, тогда слезу, а так нет! – сказала девушка и не стала слезать.

– Клянусь именем Аллаха, я тебя не буду трогать.

Когда он так сильно поклялся, девушка слезла с дерева. И девушка, и парень поздоровались между собой. Оттуда они вдвоем пришли домой к парню. Когда девушка немного отдохнула, она полностью рассказала, что хотел с ней сделать эфенди.

Через некоторое время юноша и девушка полюбили друг друга. После этого девушка вышла замуж за юношу – охотника, и начали счастливую жизнь. И в скором времени у них родился прекрасный мальчик. Однажды девушка:

– Если ты мне разрешишь, я бы сходила, проведала бы своего отца. Если он жив, наверное, вернулся из Кябы, и не зная, где я нахожусь, сильно переживает, – попросила она.

– Конечно, жаным***, обязательно, несомненно надо пойти. Возьми с собой и мальчика, ему тоже обрадуется отец, – сказал муж, от души согласившись. Потом, приготовил бричку, коня, на дорогу еду, и отцу приготовил подарок, он вышел, провожая жену. В это время жена:

* *Хадж* – паломничество.

** *Эфенди* – священнослужитель.

*** *Жаным* – моя душа.

– Я бы не хотела одна ехать, кроме аробщика, было бы хорошо, кто-нибудь еще, – сказал.

– Я поеду, зачем кого-то еще тревожить, – сказал свекор, и они двинулись все вместе в дорогу.

Сноха с ребёнком на руках, свекор и аробщик отправились в дорогу. Ехали-ехали и, когда стало поздно, им пришлось остановиться на берегу большой реки. Поели, и каждый из них лег спать. Ночью свекор захотел приблизиться к снохе. Сноха отказала.

– Если ты не исполнишь мое желание, твоего сына выброшу в реку, – сказал мужчина.

– В насилии нет меры, делай все что хочешь, но, пока я жива, на то, что ты мне предложил, я не соглашусь, – настояла на своем сноха.

Мужчина, резко выхватив своего внука из груди матери, выбросил в реку:

– Если ты не исполнишь мое желание, с тобой то же самое случится, – сказал он и опять начал приставать к снохе.

Когда сноха поняла, что он ни перед чем не остановится, спасаясь, выбросилась в реку.

Плывя по реке, она живой выкарабкалась на острове.

Пока она сидела, не зная, что делать, на одной стороне острова она увидела большую отару. А чабан, двигаясь за отарой, неподалеку упав на спину, прилег.

– Я сейчас туда схожу, и сделаю его себе сыном, тогда он мне поможет, – сказала женщина и, подойдя к нему, в рот юноше положила свою грудь.

Там они вдвоем стали матерью и сыном. После этого эта женщина юноше:

– Я человек, которого настигло большое горе, ты никому не говори, что я женщина, и найди, чтобы я одела старую мужскую одежду, и устрой меня к своему отцу чабаном, чтобы я батрачила, – сказала.

Юноша тут же принес ей одежду и она приделась. Вечером он привел ее домой:

– Отец, я нашел прекрасного чабана, его надо обязательно взять к нам в чабаны, – сказал он.

– Да, возьмем, если ты так хочешь, я тоже не против, – сказал отец юноши, согласившись.

Таким образом, женщина нанялась в батраки на пять лет пасти овец. За это время она пасла овец красиво, а когда подошло время, за работу взяла несколько овец и отправилась в дорогу. Получив согласие отца, она взяла с собой и молочного сына. Некоторое время они передвигались по разным землям, и овец у них стало больше. Однажды они свой кош установили на том месте, где расходились семь дорог. Из-за этого, наверное, к ним постоянно начали наведываться гости. А гостям они всегда были рады. Поэтому, эту женщину начали называть Щедрый Чабан. И женщина, у каждого гостя, кто к ней приходил, спрашивала про мужа, отца.

Муж этой женщины не знал про всю эту историю. Отец юноши:

– И сноху, и мальчика отвел к ним домой, когда соскучатся, придут, – сказал и обманул.



Когда прошло много времени, юноша, растревожившись, не зная покоя, взяв с собой своего отца, разыскивая долгое время, нашел отца девушки. А отец девушки, когда эфенди ему сказал: «Твоя дочь умерла», – обманув ее, и он подумал, что все произошло по-настоящему. И юноша, и его отец, и отец девушки, собравшись, когда пришли к эфенди и расспросили его, эфенди:

– Я ее похоронил своими руками и обрядом захоронения сам руководил, – сказал и начал приводить ложных свидетелей.

Однако, муж девушки и ее отец заставив эфенди, взяли с собой, и вчетвером, они все вместе отправились искать девушку.

Много времени во многих местах странствуя, сильно уставшие, проголодавшиеся, пришли к тому месту, где расходились семь дорог и услышали историю о Щедром Чабане.

– Ярабий*, этот Щедрый Чабан накормил бы нас, и еще, где много людей проходят, мог бы рассказать и о девушке, – сказав, они направились, напрямиком в кош к Щедрому Чабану.

Девушка узнала мужа, отца, свекровь, эфенди, а они ее не могли узнать. Узнать, а как бы они ее узнали: за много лет она изменилась и внешне, кроме этого, одежда, которую она носила, была мужской. Хотя женщина их узнала, но вела себя так, как будто ничего не произошло. Она красиво всех завела в кош, усадила и дала им покой. А молочный сын сразу, зарезал отборного барана и приготовил пищу. Так они накормили, напоили гостей. Перед тем, как они готовились лечь, отец девушки к Щедрому Чабану:

– Ярабий, вот так, вот так, моя дочка с мальчиком вместе потерялись, на всем белом свете ты про них ничего не слышала, ничего не видела? – спросил он и неторопливо начал расспрашивать.

– Да, откуда, я не видела такого человека, однако, похожую на девушку, которую вы спрашиваете хоть мельком, но слышала. Вы хотите знать, если я не забыла, то я вам расскажу, – ответил Щедрый Чабан.

Тут же эфенди и отец сына встрепнулись, побоялись, готовы были выбежать из коша, а отец девушки и ее муж, обрадовались:

– Ну, давай, скорей, – говорят, и в глазах, и в мыслях посветлев, сильно начали просить.

– До того, как я начну свой рассказ, у меня есть к вам просьба, если вы это выполните, расскажу, а если не так, не смогу рассказывать, – сказал Щедрый Чабан.

– Что ты хочешь, чтобы все болезни твои исчезли, что ты скажешь, мы все выполним, все наше имущество тебе отдадим, – сказали отец девушки и ее муж.

– Пока я не закончу свой рассказ, чтобы из коша никто не вышел, и снаружи в кош, чтобы никто не зашел, – сказала она.

– Ну конечно, конечно, – ответили они.

Вооружившись, боевым снаряжением, молочный сын стал сторожить у двери, и женщина, взяв в руки пастушью палку, начала рассказывать, все как было.

– Вот такой-то, такой-то человек, когда готовился отправиться к Кябе, свою дочь доверил одному эфенди. Когда этот эфенди хотел силой завладеть

* *Ярабий* – эмоциональный возглас, боже мой.

ею, девушка, спасая голову, сбежала в лес. Эту девушку нашел какой-то смелый охотник, привел домой, они, там полюбив друг друга, стали мужем и женой, а потом у них родился сын. Эта женщина, взяв с собой мальчика, когда шла встретиться с отцом, ее свекор, который шел, ее сопровождая в дороге, с плохими намерениями хотел к ней приблизиться. Когда его сноха отказала, ее свекор, кинув ребенка в реку, набросился на свою сноху, тогда сноха тоже бросилась в реку. После этого она плыла по реке, и выплыла где-то на одном острове, и она начала скрывать, что она женщина и носила на себе мужскую одежду... – рассказал Щедрый Чабан, пока он до конца не дошел своего рассказа, девушки муж и отец, поняли ее состояние, они эфенди и свекра девушки там же на месте готовы были избить до смерти.

А эти двое злоумышленников:

– То, что чабан рассказывает – это ложь, – говоря, начали возмущаться и ругаться.

– Садитесь, сядьте, не грубите друг другу, в рассказе может быть и правда, и ложь. Я рассказываю, то, что слышал, дайте мне договорить, – сказал Щедрый Чабан. А когда они более-менее успокоились:

– Если я не ошибаюсь, в рассказе о которых рассказывалось о людях, это вы, наверное, – сказал.

Эфенди и свекровь девушки готовы были провалиться сквозь землю, а муж и ее отец:

– Да это так, жаным, да, это так, – сказали.

– Вот этот старик очень похож на отца той девушки, – сказала девушка, показывая на своего отца.

– Правду ты говоришь, это я! – ответил старик.

– А вот девушку, которую взял на себя в аманат*, а потом хотел над ней надругаться эфенди, похоже вот этот, – сказал Щедрый Чабан и показал на эфенди.

– Это ложь, я клянусь Аллахом, это ложь! – сказал эфенди, сокрушаясь, изнемогая.

– А вот тот человек очень похож на мужа девушки, который был охотником.

– Это правда, – сказал парень, восторженно.

– А вот этот старик похож на того человека, который хотел к своей снохе проявить насилие, от своего сына родившегося ребенка выбросил в реку, вынудил сноху броситься в пучину, – сказала она, и показала на своего свекра.

– Что она говорит?! Не верьте тому, что она болтает, она здесь собралась весь мир перевернуть. Этими пошлыми, ложными словами она накличет на себя гнев Аллаха, – сказал он, также желая обелить себя.

– А вот тот, джигит который, сторожит дверь – он молочный сын той женщины, а тот, который вам все это рассказывает Щедрый Чабан – это девушка сама, – сказала девушка, и сняла с себя шапку и показала гостям свои густые волосы.

Все стало ясно. Ее отец и муж друг за другом начали обнимать девушку и сильно обрадовались. Эфенди и свекор девушки стали, словно мертвые. Собрал всех людей, которые там находились, этих двух злоумышленников

* *Аманат* – поручение.



крепко привязав к хвостам двух необъезженных коней, отпустили. Необъезженные кони, брыкаясь-брыкаясь, ударяя копытами, их превратили в месиво, ноги, руки оторвали.

А эти, после того, как встретились, с радостью пришли домой, и продолжили свою жизнь.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 299–303) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка о судьбе девушки-сироты, которая неоднократно становилась мишенью для злоумышленников, но каждый раз выходила с достоинством из трудных ситуаций.

Важное место в сказке принадлежит мотиву разоблачения: девушка переделась в мужскую одежду, вывела всех своих обидчиков на чистую воду и жестоко наказала.



ХАЛАЛ СОМЛА

Эртте-эртте, бек эртте бир бай ханны бир ариу кызы болганды. Кюнлени бир кюнюнде хан, бешжыллык жалгъа тохтап, кьолунда ишлеген бир жашны, хакъын бермей, ачыуланып:

– Къарынынга ашагъанса, – деп кыстаганды.

Барын да кёрюп тургъан кызы:

– Атам, ол жарлы жашны, хакъын да бермей, урушуп, нек кыстадын? – дегенди.

Сора бай кызына да ачыуланады:

– Сен жалчыгъа жазыксындынг, жарлы жашаргъа сые болурса, – деп, мыртазакъларын чакъырып: – Муну, элтип, эл кыйырында бир жарлы жашагъан юйню къатына атыгъыз да келигиз! – деп буюрады.

Ала да, кызыны алып барып, эл кыйырында бир жер юйчюкню эшигин къакъгъандыла. Юйден хан кыстагъан жарлы жаш чыкыгъанды. Кызы анга хапарын айтханды.

Сора киси, юйленип, бирге жашау этип башлагъандыла. Кызыны жюзюклерин, сыргаларын сатып, аны бла бираз кечингендиле.

Андан сора жаш иш излей кетгенди. Бара барып, узакъ элде бир байгъа ишге жарашханды, малчы болуп, юч жыл турургъа сёз бергенди. Бай:

– Жылынга юч халал сомму аласа огъесе онбеш харам сомму аласа? – деп соргъанды.

– Юч халал сом алама, – дегенди жаш.

Сора, жылы жетип, жаш жалын алгъанда, байгъа:

– Юйюме элтип келейим, – деп тилегенди.

Бай айтханды:

– Мен алай ары барама да, бере келирме, – дегенди бай.

Алай айтып, юч сомун алып кетгенди. Бара барып, бир элде базаргъа къайтханды, жалчысыны ахчасына бир кюзгючюк сатып алгъанды, дагыда бара барып, бир башха элде бир байда кьонакда кьалгъанды. Эртгенбла тургъанында, байны кызы, кюзгю орунуна челекде суугъа къарап, чачын тарай тургъанын кёрюп, ол кюзгючюкню кёргюзтгенди.

Сора кызы, кьууанып, сейир-тамаша болганды. Алада кюзгю болмагъанды. Кызы, атасына барып:

– Муну багъасына не дей эсе да, берип, манга алчы, – деп тилегенди.

Атасы да ол кишиден тилеп, ол да сатаргъа унамагъанча этип, эм ахырында юч тюмен алтын ахчагъа сатханды. Андан сора бу бай, барып, жарлы жашны къатынына ол ахчаланы бергенди.

– Эринги биржыллык хакъыды, энди эки жылдан келликди, былагъа юй ишлетсин деп ийгенди, – дегенди да, кетгенди.

Бай ызына келгенинде, жаш хапар сорады. Бу да:

– Тура эди тынч-эсен, – деп кьояды.

Жаш кетгенли, къатыны жашчыкъ табып тура эди. Бай, аны айтмай, жашырып кьояды.

Тура туруп, биягъы жашны экинчи жылы жетгенлей, энтта:

– Юйюме жетип келейим, – дегенинде, бай, иймей:

– Мен бере келирме, – деп, ахчасын алып, жолгъа чыгъады.



Бара барып, бир элде базардан жашны юч сомуна киштик сатып алады. Бара барып, дагыда бир башха элде бир байда кече кьалыргъа кьайтады. Сора муну аллына ушхууур салгъандыла да, кьолларына кьазыкьла алып, ючеулен тегерегине сюелгендиле.

Бай, кьоркьуп:

– Не этесиз? – деп соргъанды.

– Чычханла ашаргъа кьоярыкь тьююлдюле, – дегендиле ол ючеулен.

Алай а бу, ийнанмай:

– Кьайда? Кьазыкьларыгъызыны атчыгъыз, – дегенди.

Кьазыкьланы былай атханлай, тёрт жаны чычхандан толуп, ушхуууруна чабышхандыла.

Бай, олсагъатдан машокдан киштикни чыгъарып, юй тьюбюне ийгенди. Киштикчик эрлай чычханланы барын да сойландыргъанды. Аны кёрюп, кьонакьбай:

– Кеси тартхан бир алтын берейим, бу киштикни манга сат! – деп тилегенди.

Кьонакь да, хо деп, киштикчикни кеси ауурлугъу тенгли алтыннга берип, жолуна кетгенди. Сора, бара барып, жарлы жашны юйюне жетгенди. Барса, жарлы жашны кьатыны ол жер юйчюкню орунуна, кьалача, бир тьюплю-башлы юй ишлетип, жашчыгъы да жангы жюрюй тура эди.

Бу да:

– Ма, бу ахчаланы эринг ийгенди, энди кеси да бир жылдан келликди, мынга ырысхы, мал кьурасын дегенди, – деп, кьатыннга алтынланы берип, кетип кьалгъанды.

Кьайтып келгенинде, жаш, чабып, хапар соргъанды. Бу да биягъынлай:

– Тура эди тынч-эсен, ийген ахчанга кьууанды, салам айта эди, – деп кьойгъанды.

Юч жылы жетип, жаш эли, юйю таба кетгенди. Кетип бара, ызындан бир киши жетгенди да, биргесине келгенди, чыртда селешмегенди. Жаш:

– Нек селешмейсе? – деп соргъанында, ол:

– Мен бошунакьгъа селешмейме, юч акьыл сёз юйретейим, юч сом бере эсенг, – дегенди.

Жаш, болсун деп, юч сомун бергенде, ол киши:

– Биринчиси – жёнгеринге харамлыкь тутма. Экинчиси – кече тюзде кьалсанг, кьулакь ичинде кьалма. Ючюнчюсю – ишни артын билгинчи, женгиллик этме! – деп юйретип, жашны озуп кетип кьалгъанды.

Жаш, бара барып, жолда ючеуленнге тьюбегенди, ала бла жёнгер болуп, бара баргъанды. Бек кьызыу кюн болгъанды да, суусапдан ёлюрге жетип, бир кьуюгъа тьюбегендиле. Сора, сен тюш, мен тюш дегендиле да, жаш:

– Мен тюшейим, – деп, кьуюгъа тюшгенди. Тюшсе, аны тьюбюнде адам сюеклени кёрюп, кьоркьуп, тегерегине кьарап, бир жанында бир уллу тешик эслеп, ары киргенди. Кирсе, аны ичинде бир дорбун, анда уа – бир ариу кьыз, бир уллу макъа, бир жаш. Саламлашханларындан сора, ол жаш мынга:

– Жаш, бу макъамы ариуду, огъесе ол кьызымы ариуду? – деп соргъанды.

Жаш, экисине да кезиу кьарап:

– Жюрегинг кьайсысын сюе эсе, ол ариуду, – дегенди.

Олсагъатлай олтуруп тургъан жаш, секирип, ёрге туруп, муну кьучакълагъанды, сора, къамасын сермеп алып, ол кьызыны башын юздюргенди. Алайда ол жарлы жашха хапарын айтханды:

– Бу кьыздан кьачып, жерни тешигине киргенимде да, ызымдан кьуууп келгенди, мени ал деп, мен а андан эсе ол макъаны да аллыкъма. Ол баш сюеклени кёремисе – ала бары да кьыз ариуду дегенледиле, башларын юзюп баргъанма, энди сен мени башыма бош этдинг, ол алтындан алалгъанынгы ал, – деп, бир алтын къалауну кёргюзтгенди.

Жаш болгъанын аладан толтургъанды, башында жёнгерлерине суу ийгенди, кеси да чыкыгъанды да, алагъа хапарын айтханды, ызы бла алтынларын кьуйгъанды, бир кесегин жашырыргъа да излегенди, алай а сатып алгъан сёзю эрлай эсине тюшюп, алтынланы барын да ортагъа салып, тенг юлешгенди.

Кетип бара, кеч болуп, была бир жерде тохтайдыла. Жарлы жаш:

– Келигиз, сыртда къалайыкъ, – дейди.

Алай а жёнгерлери, унамай, кьулакъ ичинде кьалгъандыла, бу уа сыртда къалады. Кече бир уллу ырхы келгенди да, жолоучу жёнгерлерин алып кетгенди...

Бу жаш а, келе келип, элине жетеди. «Сатып алгъан юч сёзюмю экисине тубедим», – деп сагъыш этгенди. Излеп, жер юйчюгю болгъан жерге барса – бир уллу юй, арбазы-бауу жарашып, бир байны ыстауаты. Сейирсинеди, кече болгъаны себепли, сорургъа киши кёрмей, терезеден къарайды. Къараса – юй ичинде кесини къатыны, ары-бери чабып, омакъ кийинип, жумуш этип айлана, эки-юч жыл болгъан жашчыкъ да юй тубюнде ойнай. Сора жаш: «Мен кетгенлей, мени тиширыуум башхагъа эрге барып, бай болуп, сабий да табып турады!» – деп ачыгуланады. Алай а сатып алгъан сёзю эсине тюшюп, сабыр болуп, юйге киреди.

Къатыны, кьууанчлы болуп, чабып, муну кьучакълайды. Жаш хыны болургъа излесе да, къатыны муну, эрлай омакъ кийиндирип, кьонакъ юйге элтеди. Кирсе – уллу юй толу кьонакъла, ашай-иче, къайын атасы да, бу жалда тургъан бай да мында. Кьызыны атасы, мынга чабып, ийнакъ-кьучакъ болады, кёп ариу сёзле айтады.

«Ол байым а бери къалай чыкъды?» – деп, жаш сейирсинеди. Сора бай, жарашдырып, хапар айтып, жашха болгъанны ангылатады.

– Тюзюн айтсам, сен кетип кьаллыкъ эдинг да, аны ючюн жашырып тургъанма, сора сен, женгиллик этип, къатынынгы ёлтюрюп кьойма деп, сенден алгъа келгенме. Ызынгдан жетип, юч акъыл сёз сатхан киши да мен эдим, санга кесими танытмай кетген эдим ансы, – дегенди.

Да бек татыулу ашап-жашап кьалдыла деп, хапарлары энтта да айтылады. Аны кёрмегеним кибик, кесим алай ёлмейим.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 303–306 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Халал сомла» деген жашау-турмуш жомакъда кеси кыйыны бла ишлеп алгъан хайырны берекети уллу болгъаны ангылашынады. Ол адамгъа уллу насып келтирирге да боллукъду ырысхы, ниет жаны бла да.

Жомакъда ачыкъ акъыл юйретюу сёзле айтыладыла. Аланы арасында: «Ишни артын билгинчи, женгиллик этме!»



ПРАВЕДНЫЕ ДЕНЬГИ

Давным-давно, в древние времена у одного богатого хана была дочь – красавица. В один из дней хан юноше, который батрачил на него пять лет, не отдал честно им заработанное и со злостью:

– Ты все проел себе в живот, – сказал и прогнал.

Дочь, которая все это видела:

– Отец, этому парню, ты не отдал заработанное, отругал, и почему так прогнал? – спросила.

Тогда богач разозлился и на свою дочь:

– Ты пожалела своего раба, наверное, ты хочешь жить в бедности, – сказал и, вызвав своих стражников: – Вот эту, отведите, и на краю села выкиньте рядом с домом, с бедными жильцами и вернитесь! – приказал он им.

И они, забрав девушку, отправились в дорогу и в конце села постучались в двери маленькой землянки. Из дому вышел бедный юноша, которого прогнал хан. Девушка рассказала ему все, как было.

Потом они вдвоем обзавелись семьей и начали жить вместе. Продав кольца, серьги девушки, они некоторое время продержались.

После того юноша отправился искать работу. Странствуя, он дальнем селении, нанялся к одному богачу на работу и дал слово пасти ему скот три года. Богач:

– Как ты хочешь: за год получить три честно заработанных рубля, или же пятнадцать грешно заработанных рублей? – спросил он.

– Три честно заработанных рубля, – ответил юноша.

По истечении одного года, когда юноша получил заработанное, он богачу:

– Можно я отнесу домой и вернусь, – начал он просить.

Богач сказал:

– Я еду в те края, я передам, – сказал богач.

Таким образом, он, забрав у него три рубля и ушел. Путешествуя он, заглянул в одном селе на базар, на деньги своего батрака купил зеркальце, и еще странствуя, в другом селе погостил в доме у одного богатого человека. Утром, когда он встал, то увидел, что дочь богача, вместо зеркала смотрела в ведро с водой, и расчесывала свои волосы, тогда он ей показал на зеркальце.

После этого девушка обрадовавшись, сильно удивилась и была в восторге. У них зеркала не было. Дочь, приходя к отцу:

– Сколько бы не стоила эта штука, заплати и купи мне, – начала просить.

И отец начал просить у этого мужчины, и он делал вид, что не хочет продать, и, в конце концов продал за тридцать рублей золотых. А после этого этот богач сходил, и жене этого бедного юноши вручил деньги.

– Твой муж за один год заработал столько, теперь он вернется через два года, и сказал, чтобы на эти деньги ты построила дом, – сказал он и ушел.

Когда богач вернулся обратно, юноша спрашивает у него. И он:

– В жизни у нее все благополучно, – лишь сказал.

Пока юноша отсутствовал в доме, жена у него успела родить сына. Богач, это ему не сказал, просто скрыл.

Время шло, и опять у юноши закончился второй год, и он сказал богачу, что хочет навестить свой дом, богач его не отпуская:



– Я передам, – сказал, и забрав у него деньги, отправился в дорогу.

Путешествуя, в одном селе на базаре за три рубля юноши он купил кошку. Далее, передвигаясь, опять в другом селе он завернул переночевать к богатому человеку. Потом перед ним поставили еду, потом взяли в руки дубины, и три человека окружили его.

Богач испугавшись:

– Что вы делаете? – спросил.

– Мыши не дадут вам кушать, – ответили те трое.

Однако, он не поверив:

– Где? Бросьте свои дубины, – сказал он.

Как они бросили дубины, со всех сторон набежали мыши и накинулись на его еду.

Богач, тут же вытащил из мешка кота, и пустил по дому. Кот сразу же истребил всех мышей. Увидев это, хозяин дома:

– Дам столько золота, сколько он весит, продай мне этого кота! – сказал и начал просить.

И гость, согласившись, отдал кошку за такой вес золота, сколько он весил, и отправился в дорогу. Потом, путешествуя, он дошел до дому бедного юноши. Когда пришел, увидел, что жена бедного юноши вместо землянки настоящий дворец со многими этажами построила, и сынок только начинает ходить.

А этот:

– Возьми, эти деньги, твой муж тебе прислал, теперь и сам через год вернется, чтобы на это ты обзавелась скотом, имуществом, – сказал он, и его жене вручив золото, сам отправился в дорогу.

Когда он вернулся домой, юноша, прибежал и начал расспрашивать. А этот также:

– Живет в благополучии, деньгам, которые ты прислал, очень обрадовалась, передавала привет, – сказал и все.

Когда прошло три года, юноша держит путь в сторону своего села, своего дома. Когда он шел, следом его догнал один мужчина, и начал идти рядом, совсем не разговаривая. Юноша:

– Почему ты не разговариваешь? – спросил у него, а он:

– Я просто так не разговариваю, я тебе научу трем умным словам, если ты мне дашь три рубля, – сказал он.

Юноша согласившись, когда дал ему три рубля, тот мужчина:

– Во-первых, никогда не держи зла на друга. Во-вторых, если ночью остался в степи, не ночуй в овраге. В третьих, пока до конца не понял суть дела, не торопись делать выводы! – сказал он и ушел, обгоняя его.

Когда юноша двигался к дому, он встретил по дороге троих людей, и они вместе, подружившись, двинулись дальше. День был жаркий и они от жажды просто умирали, и тут дошли до одного колодца. Потом начали друг другу предлагать: «Ты полезай, нет, ты полезай», – тогда юноша:

– Я полезу, – сказал и спустился в колодец. Спустившись, он увидел внизу человечески кости, испугался, оглянувшись по сторонам, он увидел сбоку одну большую дверь и зашел туда. Зашел, а внутри большая пещера, а там – одна красивая девушка, большая лягушка и один молодой человек. После того, как они поздоровались, этот юноша им:



– Юноша, кто красивее, вот это лягушка, или же вот это девушка красивее? – спросил он.

Молодой человек поочередно посмотрев по сторонам:

– Кого сердце полюбит, тот красивее, – ответил.

Тут же юноша, который сидел, вскочив, встал на ноги, обнял его, после этого, резко вытащил свой кинжал, и отрубил этой девушке голову. И там он рассказал бедному юноше свою историю:

– Я, спасаясь от этой девушки, зашел в трещину земли, и тогда, она гналась за мной, предлагая себя, а я чем ее, лучше возьму лягушку. Вот эти человечьи головы видишь – все они говорили, что девушка красивее, я всем отрубал головы, теперь ты меня сделал свободным, вон с того золота бери, сколько хочешь, – сказал он, показывая на груды золота.

Юноша набрал золота, сколько смог, а наверху своим попутчикам передал воду, и сам поднялся, и рассказал им все, как было, следом высypал свое золото, какую-то часть он хотел скрыть, однако, вспомнив свои слова, которые покупал, и он тут же все золото положил посередине, и поделил поровну.

Когда они двинулись дальше, стало темнеть, и они остановились в одном месте. Бедный юноша:

– Давайте, останемся на пригорке, – сказал.

Однако друзья отказались и остались в овраге, а этот остался на возвышенности. Ночью пришла большая вода и унесла его попутчиков...

А этот юноша, шел-шел и пришел к своему селу. «Из трех советов, которые я купил, с двумя встретился», – задумался он. Разыскивая, когда он пришел, на то место, где стояла его землянка – там уже стоит большой дом, и двор и различные постройки настоящего богача. Сильно удивился, так как была ночь, не зная у кого спросить, смотрит в окна. Когда посмотрел, то увидел, в доме его жена, туда-сюда бегает, красиво одетая, вся нарядная, выполняет бытовые дела, и мальчик в возрасте двух-трех лет играет на полу. После этого, юноша: «Пока меня здесь не было, моя жена вышла за другого замуж, разбогатела, родила ребенка!» – подумав, сильно разозлился. Однако, слова, которые он купил, вспомнил, немного успокоился и зашел в дом.

Жена, радостная, подбежала и обняла его. Хотя муж собирался наругать, жена его, быстро переодела в красивую одежду и отвела в кунацкую комнату. Когда он зашел, то увидел, большой дом полон гостей, пьют-кушают, и свекор его и богач, у которого он был в батраках – все они здесь. Отец девушки, прибежал к нему и начал обнимать, хвалить, и говорить много красивых слов.

«А этот мой богач как здесь оказался?» – подумал юноша и сильно удивился. После этого богач, не торопясь, начинает объяснять парню, все как было.

– Если бы я сказал правду, ты бы ушел, поэтому я скрывал, и, чтобы ты погорячившись, не убил жену, я сейчас здесь нахожусь раньше тебя. Мужчина, который догнав тебя следом говорил три умных слова, это был я, просто я ушел, не раскрывая себя, – сказал он.

Да, до сих пор говорят, они живут очень сладко. Как этого я не видел, так же я, чтобы долго жил.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 303–306) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка с философским подтекстом. Честно заработанные трудовые деньги способны человеку принести большое счастье, как материальное, так и духовное.

В сказке прямым текстом излагаются мудрые советы, среди которых особое значение имеет высказывание: «Не торопись делать выводы, пока не узнаешь суть дела!»



ЮСЮП

Эртте-эртте бир ханны онеки жашы болганды. Аланы онусу – алда кьатынындан, экиси да артда алган кьатынындан эдиле. Артда юйдегисинден жашларыны таматасыны аты Юсюп, гитчесини аты Бунями болганды. Ханны он жашы, кеслерини малларын жюрютюп, кьошда тургъандыла. Эки гитче жаш а – юйде аталары-аналары бла. Бир кюн жашла, кьошха тебирегенлеринде, аталарына:

– Ата, Юсюпню да бизни бла ий, кьошда бузоулагъа кьарар, – деп тилегендиле.

– Бу алыкьын гитчечикди, кьошха чыгъар заманы болмагъанды, – деп, атасы иерге унамайды.

Андан сора, кёп турмай, Юсюп, жукълап уяннганында, атасына:

– Бюгече бир алапат тюш кёрдюм, – дейди.

– Хайыр болсун! Не кёрдюнг? Айт, тынгылайым, – деп, атасы Юсюпню кьатына олтурады.

– Ай да, кюн да, онбир жулдуз да тюз башымдан чыгъып, мени тегерегиме айланып, баш уруп кёрдюм, – деп, Юсюп тюшюн айтады.

– Ай бла кюн ананг бла манга кёрюнедиле. Онбир жулдуз онбир кьарындашынга кёрюнедиле. Биз, кьачан болса да, санга бир жалынчакъ боллукъ болурбуз, сен бу тюшюнгю кьарындашларынга билдирме, ала санга зарлыкъ этмесинле, – деп, атасы Юсюпге юйретеди.

Экинчи жол да Юсюпню кьарындашлары, кьошха тебирегенлеринде, аталарындан:

– Юсюпню да бизни бла кьошха ий, – деп тилейдиле.

Алай, аталарыны ыразы болмагъанына кьарамай, Юсюпню да биргелерине алып кетедиле. Бара барып, жети жол айырылган бир жерде тохтап, кьарындашла бир бирине:

– Бизни атабыз бизни барыбыздан да Юсюпню бек сюеди, биз муну дунияны башындан тас этейик, – деп, аны бир терен кьуюгъа атадыла да, кёлегин кьаннга бояп, атасына алып барып:

– Бюгече малланы кьыйырында жатып тургъанлайыбызгъа, Юсюпню бёрю ашап кьойду, – деп, кьан жугъу кёлегин кёргюзтедиле.

– Бёрю зат да ашамагъанды, не этген эсегиз да, кесигиз ёлтюрдюгюз, – деп, аталары ийнанмай жилияды.

Кьарындашла, аталарына жууап да кьайтармай, ызларына, кьошха, чыгъып кетедиле. Жети жол айырылган жерге жетгенлеринде, жарым патчахны саудюгерчилери кьуюдан атларына суу ичирирге тебирегенлерин кёрюп, алайда тохтайдыла. Саудюгерчиле челекни кьуюгъа жиберип, ёрге тартханлай, сау-саламат Юсюп, челекге тагъылып, чыгъып келеди. Саудюгерчиле анга бирда мардасыз кьууанадыла. Юсюпню сау чыкьгъанын кёрюп, кьарындашлары, чабып жетип:

– Бу бизни кьулубуз эди, кьайдан чыкьды? – деп ачыуланадыла.

– Кьулугъуз эсе, бизге сатыгъыз, – деп, саудюгерчиле тилейдиле.

Кьарындашлары Юсюпню бир кьара сомгъа сатадыла да:

– Сакъ болугъуз, кьачып кетмесин, – дейдиле.

Саудюгерчиле Юсюпню, алып барып, сабийи болмагъан кьаратон жарым патчахларына саугъагъа бердиле. Ол, бирда мардасыз кьууанып,



сыйлы кийимле да кийдирип, аны кесине жаш этеди. Юсюп, кимни да кёзю тохтарча, бек ариу жаш болганды.

Арадан талай заман ётгенден сора, жарым патчахны кьатыны Юсюпню суюе башлайды. Бир кюн ол кьатын, жюрек сезимин ичинде тыялмай, Юсюпге суюмеклигин айтады.

– Ол дегенинг неди? Мен санга анамса деп турама, – деп, Юсюп чарлайды.

– Хо демесенг, эриме айтып, мен сени ёлтюртген этерикме, – деп, кьатын да ачыуланады.

Муну бу хапарын эшитип, кьоншу кьатынлары:

– Сен, жарым патчахны кьатыны болгъанлай, кесинги да бу ариулугъунг бла, жумушчунгу суюесе, – деп айып этедиле.

– Сиз манга бош айып этесиз. Келчигиз мени юйюме! – деп, кьатынланы барын да кесини юйюне кьонакьгъа чакьырып, хар бирини кьолуна бирер быхы бла бирер бичакъ берип: – Кесигиз да, ашагъыз, – деп, Юсюпню аланы аллары бла оздурады.

Кьатынла, Юсюпню ариулугъуна сейирсинип, эслери кетип, бары да бармакъларын бичакъ бла кеседиле.

– Ыхы, кьалайды?! Энди манга айып этерикмисиз? – деп сорады кьатын.

– Энди санга айып этмейбиз, – деп, кьатынла, кесген бармакъларын да байлап, юйлерине кетедиле.

Эри юйде болмагъан заманны марап, биягъы кьатын Юсюпге, ачыкь этип, суюмеклигин алгъындан эсе деменгили айтады.

– Экинчи кьайтарып, бу затны манга сагъынма! – деп, Юсюп эуюл болуп тохтайды.

Кьатын, дертленип, эрине барып:

– Аман адамны айнытсанг, эрининги-бурунунгу кьан этер дегенлей, сен кетгенлей, Юсюп, манга артыкълыкь этеме деп, мыллыгын атханды да, кьачып, кючден кьутулгъанма, – деп, жияп тарыкьгъанды.

Жарым патчах, ачыуланып, Юсюпню тюрмеге салдырады. Юсюп болгъан тюрмеде уа, аманлыкълары чыгъып, патчах тутдургъан эки нёгери болгъандыла. Аланы бири, Юсюпге кьарап:

– Алан, сени тюшден хапарынг жокьмуду? Бюгече тюшюмде патчах бла бир тепсиде ушхууур ашап кёрдюм, – деп сорады.

Юсюп, не айтыргъа билмей, эсине келип:

– Сени эрттенбла, кьагъыт ийип, патчах башынга бош этдирликди, кесинг да эски ишингде ишлериксе, – дейди.

Аны эшитгенлей, ол бир нёгери да, тюш кёрмегенлей, Юсюпню хыликкя этип:

– Мен да тюшюмде табакъ бла бир хычинни башыма салып кётюрюп баргъанлай, учуп келип, кьушла ашап кетдиле, – дейди.

– Сени эрттенбла патчах, ушкок бла урдуруп, ёлюгюнгу эшикге атдырылыкьды, мыйынгы кьаргъа-кьузгъун ашарыкьды, тюшюнг анга кёрюнеди, – дейди Юсюп.

– Угъай, мен, тюш кёрмегенлей, сени алдап айта эдим, – деп, ол адам кьайгъылы болады.

– Айтырынгы айтдынг, сени боллугъунг алайды, – деп кьояды Юсюп.



Эрттенбла, тап, Юсюп айтханча, бир нёгери, башына бош болуп, юйюне барып, эски ишине жарашады. Бир нёгерин а, ушкок бла уруп, ёлюгюн орамгъа атадыла да, къаргъагъа, къузгъуннга аш болады.

Арадан талай заман ётгенден сора, патчах тюшонде тогъуз семиз ийнек бла тогъуз арыкъ ийнек, тогъуз толу будай баш бла тогъуз къуру будай баш кёреди. Сора ол тогъуз семиз ийнекни тогъуз арыкъ ийнек ашагъанын, ол тогъуз толу будай башны да тогъуз къуру будай баш ашагъанын кёрюп, уянады.

Патчах, билгичлени жыйып, тюшон сорады, алай а билгичле аны тюшюне жууап эталмайдыла. Бу хапарны эшитип, тюремеден бош болуп келген адам патчахха:

– Мени тюремде Юсюп деп бир нёгерим бар эди, ол сени тюшонгю биллик эди, – дейди.

Патчах, Юсюпню тюремеден чакъыртып, тюшон айтады. Юсюп, бир кесек тынгылап, сагъыш этип:

– Мындан ары тогъуз жылны битим бек мардасыз уллу болуп, адам аш да, мал аш да бек эркин боллукъду. Тогъуз семиз ийнек бла тогъуз толу будай баш анга кёрюннгендиле. Андан сора тогъуз жылны жерге тюк чыгъарыкъ туююлдо. Тогъуз арыкъ ийнек бла тогъуз къуру будай баш тогъуз семиз ийнек бла тогъуз толу будай башны ашагъанлары анга кёрюнеди, – деп, патчахны тюшоню магъанасын айтып береди.

Патчах, Юсюпню акъыллылыгъын, аны адамлыгъын, эслилигин да жаратып:

– Сени тюремеден бош этеме, кесинг да мени къолумда ишле, – дейди.

Юсюп, патчахны айтханын унамай:

– Мени терслигим, тюзлюгюм айырылмай, тюремеден чыгъарыкъ туююлме, – деп, не ючюн тутулгъаныны хапарын башдан-аякъ патчахха айтады.

– Керти да алай болгъанына шагъатынг бармыды? – деп, патчах Юсюпге сорады.

– Ийнанмай эсенг, ол бармакъларың кесген къатынлагъа сор, – дейди.

Патчах, ол къатынланы барын да чакъыртып, соруу этеди. Қъатынла Юсюпню терслиги болмагъанын, терс жарым патчахны къатыны болгъанын айтдыла. Олсагъатдан патчах, жарым патчахны чыгъарып, орунуна Юсюпню салады. Ала экиси да, биригип, тогъуз жылны битген мирзеуню, бир бюртюгюн къоратмай, кюфлеге жыядыла. Мал ашны да аны кибики этедиле. Тап, Юсюп айтханча, тогъуз жылдан сора жерден жукъ чыкъмай, тегерек элlege уллу ачлыкъ жете башлайды. Узакъ жерледен келип, халкъ быладан, алтынларын, кюнюшлерин аямай берип, мирзеу алып башлайдыла.

Ол жыллада бир къатын бла бир киши, онбир да аладан жашыракъ адам, садакъа жыя, къаланы къатына келедиле. Юсюп атасын, анасын, харам къарындашларын да танийды. Қъарындашлары Юсюпге къалай этгенлерин кеслерине айтдыртады.

Атасын, анасын биргесине къояды, къарындашларын а къыстайды.

– Қыстама, барыбыз да сени къарын жалчыларың болайыкъ, – деп, тилеп-жалбарып, ала да алайда къаладыла.

Аны кёрмегенибиз кибики, ауруу-талау кёрмей къалайыкъ.



Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 306–309 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Юсюп» деген жомакъда жигитни сыфаты Тауратда айтылгъан Иосиф Прекрасныйны къарачай-малкъар тюрлюсюдю. Жаш адамны дуняда болмагъан ариулугъу, тегерегинде кеп тюрлю зарлыкъ туудуруу, анга кеп тюрлю зорлукъ, жарсыу сынатханды. Алай аны терен акъылы, тюшледен хапары болгъаны, жашауда белгилени магъаналарын ачыкълай билгени анга жауларын хорларгъа себеплик этедиле.

ЮСЮП

Давным-давно у одного хана было двенадцать сыновей. Из них десятеро были от первой жены, двое – от второй жены. От последней жены старшего сына звали Юсюп, а младшего звали Бунями. Десять сыновей хана, находясь в коше*, содержали свой скот, а два младших брата жили вместе с отцом и матерью. В один день, когда ребята направлялись в кош, сказали отцу:

– Отец, отпусти с нами и Юсюпа, посмотреть в кошаре за телятами, – начали просить.

– Он еще маленький, ему еще не время выходить в кош, – сказал отец и не стал отпускать.

После этого, спустя некоторое время, когда Юсюп проснулся, он говорит отцу:

– Сегодня я видел один прекрасный сон.

– На удачу! Что видел? Говори, послушаю, – сказал отец и присел рядом с Юсюпом.

– И луна, и солнце, и одиннадцать звезд прямо взошли над моей головой, кружились вокруг меня, и склонили головы передо мной, – сказал Юсюп и рассказал про свой сон.

– Луна и солнце показались, обозначая твою маму и меня. Одиннадцать звезд обозначили – одиннадцать твоих братьев. Мы, когда-нибудь, наверное, будем у тебя просителями, а ты сделай так, чтобы этот сон не знали твои братья, они начнут завидовать, – сказал отец, наставляя Юсюпа.

И во второй раз братья Юсюпа, когда начали собираться в кошару, просят отца:

– И Юсюпа отпусти с нами в кошару.

Однако, видя, что их отец недоволен, они и Юсюпа забрали с собой. Понемногу передвигаясь, братья остановились на развилке семи дорог и начали друг другу: Наш отец из нас больше всех любит Юсюпа, мы должны его убрать из этого мира, – решили они, и, бросив в глубокий колодец, испачкав рубашку в крови, принесли отцу:

– Сегодня ночью, когда мы лежали на окраине стойбища, неподалеку от животных, Юсюпа сожрал волк, – сказали они и показали ему окровавленную рубашку.

– Волк никого не сожрал, что-то вы сами совершили, убили его, – сказал им отец, и не веря им заплакал.

* Кош – стойбище.



Братья, не отвечая отцу, собираясь обратно в кош, ушли оттуда. Когда они пришли на развилку семи дорог, увидели, как торговцы визиря из колодца набрав воды, готовились поить своих лошадей, и там остановились. Торговцы, опустив ведро в колодец, как только наверх вытянули, Юсюп живым-здоровым, прицепившись к ведру, вылез наверх. Торговцы ему сильно обрадовались. Когда братья увидели, что Юсюп вышел живым-здоровым, тут же прибежали:

– Он был нашим рабом, откуда он взялся? – сказали они и сильно разгневались.

– Если он ваш раб, то продайте его нам, – сказали торговцы и начали просить.

Братья Юсюпа продали за один кара сом*:

– Будьте начеку, чтобы он не сбежал, – предупредили они.

Торговцы, забрав Юсюпа, отвели к бездетному визирю и отдали вместо подарка. Он сильно обрадовался, придел его в дорогие одежды и усыновил. Юсюп стал красивым юношей, на которого все обращали внимание.

Через некоторое время, жена витязя влюбляется в Юсюпа. В один из дней эта женщина, не в силах сдержать свои эмоции, призналась в любви Юсюпу.

– Что это такое? Я тебя считаю своей матерью, – сказал Юсюп и разозлился.

– Если ты не скажешь «да», то я расскажу своему мужу, и заставлю, чтобы тебя убили, – сказала женщина и тоже разозлилась.

Услышав историю этой женщины соседки:

– Ты, жена визиря, и с такой красотой, влюбилась в своего слугу, – сказали и начали стыдить.

– Вы зря меня стыдите. Пойдемте ко мне домой! – сказала она, и всех женщин пригласила к себе домой в гости, и вручила каждой в руки по одной моркови и по одному ножу: – Сами тоже покушайте, – сказала и послала Юсюпа, чтобы он прошелся перед ними.

Женщины, удивившись красоте Юсюпа, потеряли сознание и все разом порезали свои пальцы ножами.

– А-ха, ну как?! Теперь вы меня будете стыдить? – спросила женщина.

– Теперь мы тебя не будем стыдить, – сказали женщины и, повязав порезанные пальцы, отправились к себе домой.

Выследив время, когда мужа дома нет, та же женщина открытым образом начала настойчивее, чем прежде, показывать свою любовь к Юсюпу.

– Еще раз ты об этом мне не говори, – сказал Юсюп, немного смущаясь.

Женщина, чтобы ему отомстить, пришла к мужу:

– Если плохого человека выкормишь, он твои губы – нос превратит в кровь, говорят. Как ты ушел, Юсюп в надежде, чтобы мной завладеть, кинулся на меня, я сбежала, еле-еле спаслась, – пожаловалась она со слезами на глазах.

Визирь, разгневавшись, приказывает, чтобы Юсюпа заперли в тюрьму. Там, в тюрьме, где был Юсюп, сидели два его приятеля, из-за совершенных преступлений, по приказу патчаха** они были посажены в тюрьму. Один из них посмотрев на Юсюпа:

* *Къара сом* – четвертак; двадцать пять копеек.

** *Патчах* – царь.

– Алан*, ты в снах не разбираешься? Сегодня во сне я видел, как трапезничал за одним столом с патчахом, – спросил у него.

Юсюп, не зная, что ответить, собираясь с мыслью:

– Тебе утром пришлют бумагу, патчах твоей персоне даст свободу, и ты сам будешь трудиться на прежней работе, – ответил.

Когда услышал этот разговор, и другой приятель, хотя сон не видел, насмехаясь над Юсюпом:

– Я тоже видел во сне как я нес чашку с хычинами**, положив на голову и откуда-то прилетели орлы, съели их и улетели, – сказал он.

– Тебя утром, по приказу патчаха, расстрелят из ружья и труп выбросят на улицу, твои мозги съедят вороны-сороки, твой сон из-за этого приснился, – ответил Юсюп.

– Нет. Мне не приснился сон, я все тебе наврал, – сказал он, и этот человек несколько растревожился.

– Ты сказал все, что думал, с тобой случится именно такое, – сказал Юсюп.

Утром, все было, как говорил Юсюп, один приятель освободившись, вернулся домой и устроился на прежней работе. А другого приятеля, застрелили из ружья и труп выбросили на улицу, и он стал пищей воронам-сорокам.

Через некоторое время, патчах увидел во сне девять откормленных коров и девять худых коров, девять полных зерен стебля пшеницы и девять пустых стеблей пшеницы. После этого этих девять откормленных коров съели девять худых коров и девять полных стебельков пшеницы, съели девять пустых стеблей, увидев это во сне, он проснулся.

Патчах, собрав всех знахарей, спросил про свой сон, однако, они не смогли разгадать его. Услышав этот разговор, освободившийся из тюрьмы человек сказал патчаху:

– Со мной в тюрьме сидел мой приятель Юсюп, он бы разгадал ваш сон, – говорит.

Патчах, освободив Юсюпа из тюрьмы, спросил про свой сон. Юсюп, некоторое время молчал, задумавшись:

– С этого времени девять лет урожаи будут сильно высокими, и пища для людей, и корм для животных будут в изобилии. Девять вскормленных коров и девять полных стеблей пшеницы приснились к этому. После этого девять лет на земле не вырастет ни травинки. Девять тощих коров и девять пустых стеблей пшеницы, что сожрали девять вскормленных коров и девять полных стеблей пшеницы, приснились к этому, – ответил он и раскрыл смысл приснившегося патчаху сна.

Патчаху понравился его ум, человечность, прозорливость:

– Я тебя освобождаю из тюрьмы, и ты сам работай у меня, – сказал.

Юсюп не соглашаясь с патчахом:

– Пока не раскроют мою вину, мою правоту, я из тюрьмы не выйду, – сказал и полностью рассказал, из-за чего его посадили.

– Что это было на самом деле, у тебя есть свидетели? – спросил патчах у Юсюпа.

* Алан – вежливое обращение принятое у карачаевцев и балкарцев, означает «соплеменник».

** Хычины – тонкие печеные пироги.



– Если мне не верите, спросите у тех женщин, которые порезали себе пальцы, – ответил он.

Патчах, вызвав всех женщин, начал расспрашивать. Женщины рассказали, что Юсюп не виноват, виновата жена визиря. Тут же патчах, освободив от работы своего визиря, на его место назначил Юсюпа. Они, вдвоем объединившись, в течение девяти лет выращенный урожай, не потеряв ни одного колоска, собрали в амбары. И кормов для домашней живности также заготовили. На самом деле, как говорил Юсюп, через девять лет из земли ничего не выросло, кругом, в селениях наступил большой голод. Прибывая из дальних земель, люди у них начали, не жалея, обменивать свое золото, серебро, выкупать зерно.

В те годы одна женщина, один мужчина, и одиннадцать молодых людей, немного моложе их, собирая милостыню, пришли в их дворец. Юсюп узнает отца, мать и своих черствых братьев. Юсюп заставляет своих братьев рассказать самим, как с ним поступили.

Он оставляет отца, мать с собой, а братьев прогоняет.

– Не выгоняй, все мы будем твоими рабами, чтобы с голоду не помереть, – сказали они, умоляли, поклонялись ему, тогда их тоже там оставили.

Как все это мы не видели, чтобы не видели болезней и горя.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 306–309) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка представляет собой карачаево-балкарскую интерпретацию библейского мифа об Иосифе Прекрасном. Неземная красота юноши, вызывая зависть окружающих, принесла ему много страданий и бед. Но благодаря феноменальному уму, способности разгадывать сновидения, понимать тайный смысл вещей, он победил своих противников.



АКЪЫЛГЪА ТЮШЮННГЕН

Эртте-эртте Умар деп бир адам болгъанды. Аны бир жашы бар эди. Ол жаш, элден-элге барып, кесин кѳргюзтѳп, омакъланып, хауле айланган болмаса, башха иш этмегенди. Хар баргъан элинде кесича хауле жашланы жыйып, ала бла ичип, эсирип айлана эди. Кѳлю уа, башым булутла бла тенгди, тап, аладан да бираз ѳрге озады деп, алай болгъанды.

– Хаулеликни кѳй, ичгини сюрген онгмайды, – деп, атасы не кѳаты кюрешсе да, жашы анга тынгыламагъанды.

– Манга не жарлылыкъ жетерикди? – деп кѳйгъан болмаса, атасыны айтханы кѳулагъына да кирмей эди.

Кюнле, айла, жылла оза, Умар кѳарт болгъанды. Ёлсе, артында кѳалгъанлагъа ачылыкъ-жалангачлыкъ, жарлылыкъ жетерден кѳоркѳуп, бир темир юй ишлетгенди. Жашыртын ол темир юйню чардагъына алтын жыйгъанды да, бир жыжымчыкъдан бери ким тартса да, юсюне алтын кѳуюлуп кѳалырча этдиргенди.

Бир жол Умар бир бек аурукъсуннганында, жашын чакъырып:

– Мен не кѳп тиледи эсем да, сен бир да тынгыламадынг, тюшюнмединг. Малынгы, ырысхынгы бошасанг, «Умарны тели жашыча» деп айтдырмаз ючюн, ол чардакъдан кѳыйыры кѳарап тургъан, мен кеси кѳолум бла такъгъан жыжымны тюбюне бир шинтик сал да, боюнунга аны такъ да, аякъларынгы тюбюнде шинтикни бир жанына тюрт да, бууул да, ёл да кѳал. Алайсыз жашауунг боллукъ тѳйюлдѳ, ёлюр кюнюнге деричи, жыжымгъа кѳолунгу уа тийирме, – деп осуят этгенди.

Жашны кѳлюне: «Атам харип сер болуп сѳлешеди ансы, мен бу мюлкню, бу ырысхыны кѳайдан бошарыкъма, аны бошагъынчы бир жашагъа эдим ансы, андан сора ёлсем да, жарсырыкъ тѳйюл эдим», – деген акъыл келсе да, атасыны кѳзюне кѳарап, жукъ айталмай, хар айтханын толу этерге сѳз бергенди.

Бир ауукъ замандан атасы ёлгенди, мюлкге иеликни кѳолгъа алгъанында, жаш аны андан да бек зыраф жоюп, элни хаулесине ашатыуну, ичириуню алгъындан да кемсиз этип тебирегенди.

Ырысхысы алыкъын тауусулмагъан эди да, ала да, ызындан кѳалай айтсала да, кѳзюнден сѳкмей эдиле, хаман кѳара махтау берип тура эдиле.

«Ол мен мюлкюмю ашатхан адамла барысы да саудула. Мен бюгюн алагъа берсем, ала да кезиулерине бизге болушурукъдула. Мен алагъа барсам, ала да манга, адам жюрютѳп кѳолундан келмезча, мал, ырысхы да берип иерикдиле», – деп, жашны акъылы алай эди. Алай бла кюнлени бир кюнюнде бу жашны мюлкю тауусулгъанды.

– Бар, жашым, бир зат эт, ёлюп кѳалабыз ачдан, – деп, анасы, кѳймай, жашын ол ичгичи жѳнгерлерине ашыргъанды.

Барып, бирине тюбеп, кюлюп, ышарып сѳлеширге мурат этгенди. Алай болгъанлыкъгъа бурунча ол анга жууап бермегенди. Бек ачыуланып, мудах да болуп, андан озуп, дагъыда бирине баргъанды. Ол да, аны кибик этип, сѳлеширге да унамай, жууукъ бол деп да айтмай, ызына айланып, юйюне кирип кетгенди.

Андан да бек эрини салынып, кѳайтып кетерге болмай, юйде кѳарт анасы ачдан ёле, эки аягъын тыпыр ташха салып, жаягъына таянып, эсней



тургъанын кёзюне кёргюзтүп, дагъыда къалгъан тенглерине-жууукъларына айланганды. Барындан да тапханы бир жууап болгъанды.

Кеси кесини насыбын тьялмай, палах этгенин ангылап, атасыны сёзлери эсине тюшүп, бурунун къысха-къысха тарта, бёркюн къолуна алып, жолда ташха, агъачха абына, къайтып келип, юйге киралмай, эшик аллында тырхыкчыкъда олтуруп, сагъышланып тургъанлай, анасы, юйден юсюне чыгып:

– Къайда тенглеринген келтирген малынг, мюлкюнг? – деп соргъанды. Жаш, мурулдап къойгъан болмаса, анга ачыкъ жууап этмегенди.

Анасы:

– Бир адам, атангы заманындан таныш кёре эдим, жолну озуп бара, мени эшик аллында эслеп, къайтып, атдан тюшүп, хапар-хайыр соруп, жетген дунябызны айтханымда, жазыкъсынып, бек мудах да болуп, ма бу жангыз апасыны берип кетгенди да, ёле башласакъ, бир гыржын кесек алып къабарбыз деп, асырап тура эдим. Сени жүрегинги быллай бир къыйналгъанын кёрмеге эдим да... Бир кюнню алгъа ёллюк болурбуз да, ёлейик, не этерикбиз, – деп, апасыны жашына бергенди.

Апасы къолуна тюшгенлей, жаш, чабып барып, башха зат тапмай, эки къой ёпке алып, тенглерине тебирегенди. Агъач ичи бла барлыкъ эди да, агъач ортасына жетгенлей, анасына хапарын айтмай кетгенин эсине тюшүрүп, ёпкелени къайын терекни башында бутакъгъа тагып, ызына къайтып, анасына хапарын айтып, жан солуу этип жетсе, богъурдакъ кемирчегинден къалгъанын къанатлыла ашап, аны да ары-бери тарта тургъанларын кёргенди. Бек мудах болгъанды, алай болса да, этер амал тапмай, тенгleri жыйылып тургъан жерге баргъанды.

Къарап, жашны кёргенлей, биреулен:

– Аланла, Умар улу сыйларгъа арбалары бла ашарыкъ-ичерик алып келеди, – деп масхара этгенди.

– Ол бюгюн арбалары бла былайгъа келтирлик ашарыкъ-ичерикни агъач жаныуарла бизге къошулсала да, бошайлмабыз, – дегенди экинчиси да.

– Бизни угъай, ол саулай къыралны да тойдуруп, ашатыр, ичирир, – деп, бир бирлерине къарап, кёз къысып, бары да хыликкя этип кюлгендиле.

Жашха ачыу тийип, жүреги да къыйнала, нёгерлерине ёпкелени хапарын айтханды. Аны эшитгенлеринде, кюлкю андан да уллу болгъанды.

– Ёпкелени къанатлыла къалай ашарыкъдыла, адам ийнанмазлыкъ затны бу къалай айтады? – деп, бек уллу айып этгендиле.

Ким аллындан, ким артындан кюле, хыликкя этип, жан-жанындан сызгыра, ол да, ыйлыкъгъандан, бёркюн кёзлерине басханлай, къайтып, юйюне келгенди.

Ашаргъа аш, ишлерге иш тапмай, ачдан таза къарыусузгъа жетгенди. Сора, атасыны осуяты эсине тюшүп, жаш:

– Ёлеме да, ёлеме, орамда аузум ачыла, суюгенни-суюмегенни арасында ёлмейим да, атамы осуятын да толтуруп, ол къолу бла жарашдырып кетген жыжымчыкъны кесиме асмакъ этип ёлейим, – деп, атасы хазырлап кетген асмакъ жыжымчыкъ болгъан темир юйчюкде кесин асаргъа акъыл этгенди.

– Анам, мен мындан кёп бу элде туралмайма, турсам да, экибиз да ачдан ёлорге башлагъанбыз, экибизни бирге киши асырарыкъ туююлдю, мен кете барайым. Сен а къарындашынга бар, ол, не этсе да, сени ачдан



ёлтюрмез, мен да, сау болсам, келирме. Унутуп кьоймай, нёгерле да алып, темир юйчюкню эшигин ача тур, кесинг жангыз а келип, юйчюкге кирме. Хайда, анам, сау кьал, – дегенди.

– Бар, балам, бар, мен бек кьарыусузма, алай болса да, сен айтханча, кьарындашым мени ачдан ёлтюрмез, – деп, экиси да кьучаккьлашып айырылгьандыла.

Жаш, келип, темир юйчюкню эшигин ызына кьайтарып, шинтикге минип, боюнуна жьжымны кийдиргенинде, дуния жарыкь ёчюлюп, кьап-кьарангы болгьан эди.

Аякьларыны тьбюнден шинтикни тьуртгенде, шинтик бир жанына аууп, ол боюнундан тагьылгьанында, жьжымны арт жаны ычхынып, жаш, келип, сыртындан жерге тийгенди. Ол жьжымны кьыйыры бегитилип тургьан тешикден а, зыр деп, алтын ахча юсюне кьуюлгьанды.

Секирип кьобуп, анасына сьуйюнчюге чапханды. Барып, анасыны от жагьагьа тёнгереп, ачдан кьарыусуз болуп тургьанын кёрюп, анга да жукь айтмай, кьатларында тюкенден тьюрлю-тьюрлю ашарыкьла алып жетдирип, анасыны аллына салып, ол да аз-аз кьабып, аязып, хапар соргьанды. Жаш, жашырмай, битеу болумун айтханында, анасы жилягьан, кьууаннган да этгенди.

Энди жаш, ичгини, хаулеликни да кьоюп, хар затын орунуна салыр кьайгьыгьа киргенди. Кече да, кюн да ишлеп, кьорешип, ол хазыр ахчаны да алып, атасыны заманындача, мал, ырысхы да кьурап тебирегенинде, биягьыла:

– Эй, бёрюню баласы бёрю болады, атасыча, ишин алай кьурады, биз аны кьозутханыбызны аман этгенбиз, андан эсе ариу айтып турсакь, бу бизге мындан ары да аш эди, кесибиз кеси ырысхыбызны кесдик, – дегендиле.

Бир кюн жаш халкьны жьйды, бир талай заманны багьылып тургьан бир ёгюзню кесди, ашарыкь-ичерик кёп этди. Ашарыкь тепсилеге салына башланнганлай, эшикге чьгьып кетди. Ол юйреннген жазыкьла, ашыгьып, эринлерин, бурунларын жалап, бир бирлерине:

– Жанларыбыз чьгьып кьалады, тепсиле жетмеймидиле? – деп, жаякь этлерин чайнай тургьанлай, жаш, эшикден кесин мудах кибик этип кирип, олтуруп, баш энишге кьарап тохтады.

«Санга жукь болгьандан эсе, биз ёлюп да кьалайыкь», – дегенча, кёзюне жьютю кьарап, бир аууздан:

– Бир ариу халынг, ариу кефинг бар эди, былай салкьын, мудах нек болдунг? – деп сордула.

– Ёзге мудахлыгьым жокьду, атамы заманындан кьалгьан бир сабан темир бар эди да, аны чардакьгьа чьгьарып асырагьан эдим. Бусагьатда чьгьып кьарагьанымда, чьчханла, ашап, ариу кьара халек этип турадыла. Кеслери да бир кьыйырындан ашамагьандыла, жер-жеринден ашап, элекни тьбюча, ууакь тешикден толтуруп, жараусуз этип кетгендиле. Не жарлы, жаланнгах болгьанымда да, мен анга тиймеген эдим, андан эсе ол ачдан-жаланнгахдан инжилген кюнлерими биринде кесиме жаратха эдим. Бюгюн мен жамауатымы, элими жьйып, той-оюн, уча этип сьйлайма деп атам осуят этген, мен да аны кёзюнден кёрюп тургьан сабан темирни чьчханлагьа ашатханыма кьыйналама ансы, ёзге хатам жокьду, – деп жууап берди жаш.



Кеслерине бир уллу кыйынлык жетгенча, барысы да мудах кибик болдула. Аланы сынар ючюн, жаш, бир да башын кетюрмей, ахсынып турду. Бираздан а тамата орунунда олтурган, кьалганла таба айланып, эки кьолун эки тобугуна салып:

– Ярабий, ол чычханланы кьалай тутар эдик, бизни сыйлы тенгибизни мудах этгенлери ючюн, аланы кьалай кьырыр эдик? – деди.

– Тейри, керти айтаса, ол чычханланы бирин кьоймай кьырырга керекбиз, – деп, жашны ичгичи тенглери бары да ыразылыклары билдирдиле.

Аланы ичлеринде уа бу ишледен хапары болмаган бир жарлы адам бар эди. Ол, быланы этгенлерине бек уллу сейир болуп, ууакь-ууакь ышара:

– Сиз барыгыыз да менден билимли, акьыллы адамласыз, алай а мен ёмюрюмде эшитмеген неда кёрмеген затымы бюгюн былайда сизден эшите турама: аланла, чычхан темирни кьалай ашайды?

Андан тебиредиле, бир бирден алып, ол жарлыны букьусун кьагып. «Тап, терс эселе да, ауузуму нек тыймадым, жулкьуп кьоядыла да!» – деп, ол адам сёзге кьошулганына сокьуранды.

Жаш, кесин, биягынлай, мудах кибик этип, баш энишге кьарап турады.

Сора бозачы тенглени таматалары, кьартха айланып, хыликкя этгенча, бармагы бла мангылайына да тигине-тигине тюртюп:

– Ой, жарлы адамдан сен кьууанма, жарлы жарлы болмаз эди, башында акьылы болса, нелай бир жыл жашаганды, алай а башына акьыл кирмегенди, энди да кирлик тьойюлдю. Сен хайьуанса да, чычхан темирни ашаганын аны ючюн кёрмегенсе. Кьалганла уа – кёргендиле! Айт десегиз а, дагыда бир сейир зат айтайым, – деди.

– Айхай, айт, тамата, айхай, айт! – деп, нёгерлери кьычырдыла.

– Бир жолда атам базардан бир жангы кьалажук келтирген эди. Алдым да, жатма тьобюне салдым, эрттенликде кьараганымда, кьалажюкню чычханла бир тот кесегинден кьалганын ашап тура эдиле. Келдим да, атама хапарын айтдым. Ол а манга: «Ай юйюнг кьурумаган, алайда нартюх гённю нартюхю тьонене бошалган эди, чычханла уа ач болган эдиле да, аны ашамай, не этерик эдиле?» – деп чамланган эди. Аны айтханым, чычхан темир ашамайды дегенге бирда ийнанмагыыз, – деди.

Сора жаш, аланы ётюрюк сёзлерине андан кёп тёзюп болалмай:

– Жамауат! Атамы мюлкю тауусулгунчу, аны мени биргеме ма бу кьауум адам ашай эди да, бары да мени бек махтай эдиле. Жарлы кезиуюмде уа: «Чий ёпкелени кьанатлыла ашап кетдиле», – дегенимде, ийнаньрга унамай, хыликкя этген эдиле. Энди бюгюн а учама юсюнде: «Темирни чычханла ашадыла да, кетдиле», – дегениме «ийнанып» кьалгандыла. Была бизни жауларыбыздыла, адамла тьойюлдюле, – деп, бозачыланы кьыстап, ашын, олтуруп, жарлыла бла бирге ашады.

Андан сора, акьылгьа тьюшюнюп, бу жаш алапат тап жашап кьалганды.

Чыгьарманы «Кьарачай-малкьар халкь жомакьла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 309–313 бб.) Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кёчюргенди.

«Акьылгьа тьюшюнген» деген жашау-турмуш жомакьда атасыны айтханын кьулакьгьа алмай турган жаш адамгьа иги кесек заман керек болады, ол кесини бек сьуйген тенглерини ич сезимлерин ангылар ючюн.

Къыйын кезиунде, ол жашаудан тюнгилюп тургъанлай, анга деп, атасы къоюп кетген алтынланы кѳреді. Атасыны аллай сейирлик иши, анга эс тапдырады. Андан сора ол ѳтюрюк тенглеринден айырылып, тюз жашауну бардырады.

УРАЗУМЕВШИЙ

Давным-давно жил человек по имени Умар. У него был один сын. Этот молодой человек, ходил из села в село, показывал себя, нарядившись, вел разгульную жизнь и другим делом не занимался. В каждом селе, куда он приходил, он собирал таких же разгульных парней, пил с ними, и с ними ходил, пьянствовал. А в душе он думал, что голова у него находится на уровне облаков, а иногда казалось думал, что даже немного выше их, таким казался он самому себе.

– Оставь разгульную жизнь, кто гоняется за выпивкой, никогда благополучным не станет, – говоря, сколько бы не твердил отец, сын его не слушался.

– Какая беда меня может настичь? – отвечал он, а то, что ему твердил отец, он совсем не слушал.

Проходили дни, месяцы, годы и Умар постарел. В страхе, что когда он умрет, беспокоясь за тех, кто после него остаются, чтобы их не настигли голод, холод, нищета, он построил железный дом. Тайком на чердаке этого железного дома он собрал золото, он так его соорудил если кто потянет за веревку вниз, чтобы на него посыпались драгоценности.

В один день, когда Умар сильно заболел, позвал к себе своего сына:

– Сколько бы я не просил, ты меня не слушался, не предпочел мое мнение. Когда истратишь своих домашних животных, сбережения, «Как дурной сын Умара», чтобы тебе не говорили, из чердака край, где виднеется, куда я сам своей рукой привязал веревку, поставь стул, привяжи себе на шею, и из-под ног толкни в сторону стул, повисни и умри. Без этого у тебя жизни не будет, но до дня смерти, не дотрагивайся рукой до той веревки, – произнес он свое завещание.

Сын его подумал: «Бедный отец, наверное, с ума сошел, что так разговаривает, а то я такое хозяйство, столько имущества как могу истратить, дожить мне до тех дней, пока это все растрочу, после этого и умереть не жалко», – такие мысли приходили ему в голову. Он, глядя в глаза отцу, не в силах что-либо сказать, дал слово, что он выполнит все его пожелания.

Через некоторое время отец его умер, он стал хозяином всего состояния, сын начал еще больше разбазаривать все попусту, начал кормить, поить сельских лодырей пуще прежнего.

Пока он имущество еще не полностью истратил, они ему вослед говорили всякое, а в глаза его не ругали, постоянно в его адрес произносили восхваления.

«Те, люди которых я кормил своим благосостоянием, они все живы. Если я сегодня им дам, и они в свое время мне помогут. Если я к ним приду, и они мне помогут справиться, дадут столько домашних животных, имущества сколько ему понадобится и отправят», – говорил он, так и думал. Таким образом, в один из дней имущество этого молодого человека иссякло.



– Иди, сынок, придумай что-нибудь, с голоду помираем, – сказала ему мать и отправила его к своим друзьям, которые любили выпивать.

Приходя к ним, он встретился с одним, засмеялся, заулыбался и пытался с ним заговорить. Однако, как раньше он ему не ответил. Сильно рассердившись и опечалившись, покинув его, он сходил еще к одному. И он, поступил так же, не стал с ним разговаривать, даже не пригласил к себе, отвернувшись, он зашел к себе домой.

У него пуще прежнего опустились губы, и он был не в силах двигаться. Дома у него осталась старенькая мать, с голоду помирая, положив ноги на очажный камень, щекой опираясь, зевая. Представив себе все это, он еще сходил к остальным друзьям – родственникам. И от всех он услышал один и тот же ответ.

Поняв, что он не смог сохранить свое счастье, уяснив, что накликал на свою голову беду, он, вспомнил слова отца, резко-резко дыша носом, взяв в руки свою шапку, по дороге спотыкаясь то об камень, то о бревно, вернувшись, он не в силах зайти в свой дом, уселся во дворе в углу, весь в раздумье. Мать вышла к нему из дому:

– Где твои домашние животные, имущество, которые ты принес от друзей? – спросила она.

Сын лишь что-то пробормотал, внятно ничего не ответил.

Мать ему:

– Один человек, оказывается, знал нас со времен твоего отца. Когда шел по дороге, увидев меня во дворе, вернулся, слез с коня, расспросил обо всем. Я ему рассказала о нашем состоянии, он, сжалившись, и сильно опечалившись, вот эту единственную монету оставил, когда начнем умирать, думала, купим кусочек хлеба, и потому хранила. Чтобы не видеть, что ты настолько переживаешь сердцем... На один день, наверное, раньше умрем, ну и пусть умрем, что поделаешь, – сказала она и дала монету сыну.

Когда сын заполучил монету, он бегом, не находя что-нибудь другое, купил два бараньих легких и направился в сторону друзей. Он должен был идти через лес, когда он оказался посередине леса, вспомнил, что не предупредил свою маму, он бараньи легкие повесил повыше на ветку березы, вернувшись обратно, рассказав матери, и задыхаясь, когда прибежал, кроме гортани в легких все съели птицы, и что осталось они туда-сюда таскают. Он сильно опечалился, однако, не зная, что дальше придумать, пришел в то место, где все его друзья, собравшись, его ждали:

Когда один из них заметил парня:

– Аланы*, сын Умара, чтобы нас угостить, бричками нам везет еду, питье, – говорит с издевкой.

– То, что он сегодня на бричках принесет еду, питье, если все лесные звери вместе соберутся, мы не сможем закончить, – добавил второй тоже.

– Он не только нас, всю страну сможет накормить, насытит, напоить, – сказал, и, поглядывая, подмигивая друг другу, они все вместе с издевкой засмеялись.

* *Аланы* – вежливое обращение, принятое у карачаевцев и балкарцев, означает «соплеменники».

Молодой человек сильно огорчился, и сердцем изнывая, он рассказал своим друзьям историю о легких. Когда они это услышали, смех стал еще больше.

– Легкие как могут съесть птицы, в это человеку сложно поверить, что он такое рассказывает? – сказали они и пристыдили его.

Кто впереди, кто сзади, насмехались, поиздевались и со всех сторон освистали его, и он от стыда шапку опустив на глаза, возвратился к себе домой.

Чтобы поесть – пищу, чтобы заработать – работу не находя, из-за голода он сильно ослабел. После этого, вспомнив завещание отца, молодой человек:

– Умирать, так умирать, чем с раскрытым ртом ходить по улице, чем умирать среди уважаемых и не уважаемых людей, лучше выполню завещание отца, он своей рукой изготовил веревку, виселицу из нее сделаю и так умру, – подумал он, и пошел туда, где его отец виселичную веревку оставил в железном домике. И таким образом он решил повеситься.

– Мама, я больше не в силах находиться в этом селе, если бы и находился, тогда мы вдвоем умрем с голоду, нас обоих вместе никто не похоронит, я пойду. А ты иди к своему брату, он придумает что-нибудь, чтобы ты с голоду не умерла, и я, если буду жив, появлюсь. Меня, не забывая, бери с собой подруг, иногда открывай двери железного домика, а одной не надо приходить туда, не заходи в домик. Ну, теперь, мама, оставайся с добром, – сказал он.

– Иди, сынок, иди, я очень ослабла, в любом случае, как ты сказал, мне мой брат не даст с голоду помереть, – сказала она, и они, обняв друг друга, расстались.

Сын пришел, закрыл двери железного домика, залез на стул и, когда надел на шею веревку, белый свет потух и кругом стало темным-темно.

Когда он отодвинул из-под своих ног стул, он отлетел в сторону, и когда он повис на веревке, конец веревки развязался, и молодой человек, упал спиной на землю. А из дыры сверху, где был прикреплен конец веревки, потоком на него посыпались золотые деньги.

Он быстро встал и с радостной вестью побежал к матери. Прибыв, увидел свою мать, лежащую у очага, от голода обессиленную. Ей ничего не говоря, из магазина купил различные продукты, быстро принес, поставил перед матерью, и она начала есть по чуть-чуть, приходя в себя, и спросила откуда все это. Сын, ничего не скрывая, рассказал все полностью, тогда мать расплакалась и после этого обрадовалась.

Теперь сын, бросив пить, перестал гулять, и взялся приводить в доме все в порядок. Он начал днем и ночью работать, сильно трудиться, и на готовые деньги, как во времена отца, завел домашних животных, восстановил имущество, тогда прежние дружки:

– Эй, детеныш волка, волком становится, как отец, он работу свою восстановил, а мы плохо поступили, что над ним издевались, лучше надо было ему красивые слова говорить, он нам и в дальнейшем был бы пищей, мы сами своему имуществу нанесли урон, – сказали.

В один день этот молодой человек собрал весь народ, откормленного быка зарезал, еды и питья много заготовил. Когда начали накрывать столы



он вышел во двор. Эти бедные, по привычке, второпях, облизывая свои губы, носы, говорили друг другу:

– Мы так можем умереть, что столов не хватает что ли? – сказали они прожевывая свое мясо на щеках, в это время зашел молодой человек, сделал печальный вид, сел и с поникшей головой:

«Лишь бы с тобой ничего не случилось, а мы готовы и умереть», – так пристально они смотрели в его глаза.

– Какое у тебя было хорошее настроение, как ты хорошо выглядел, почему теперь ты стал сумрачным, печальным? – спросили они.

– Я особо не опечален, со времен отца оставшаяся была у меня железная соха для пахоты, я ее хранил на чердаке. Сейчас поднялся туда и увидел, мыши съели, прямо-таки уничтожили. И они съедали не с одной стороны, ели в разных местах, превратили дно в сито, продырявили много дырочек, что теперь никуда не годится. Когда я был очень бедным, нищим, даже тогда я его не трогал, лучше бы в один из тех голодных, тяжелых дней, я бы для себя ее использовал. Я сегодня, собрав свой народ, село, устроив празднество, веселье, приготовил жертвенное животное, чтобы угостить гостей по завещанию отца, а железный посох для пахоты я держал как подарок от него. И то, что мыши съели по моей вине, я горюю из-за этого, а так у меня все нормально, – такими словами ответил молодой человек.

Как будто их всех настигло горе, все они как будто бы опечалились. Чтобы их испытать, молодой человек, ни разу не поднимал головы, сидел вздыхая. Через некоторое время, тот, который сидел на месте тамады*, повернувшись к остальным, положив руки на колени:

– Ярабий**, как бы нам словить этих мышей, что нашего уважаемого друга опечалили, как бы их истребить? – сказал.

– Тейри***, правду говоришь, мы должны всех мышей истребить, не оставляя ни одного, – сказали они, таким образом, все друзья молодого человека по выпивке согласились с этим.

А среди них был один бедный человек, который не был в курсе их дел. Он, видя их поведение, сильно удивлялся, тихо улыбаясь:

– Вы все образованные люди, умнее, чем я, однако то, что я в жизни не слышал и не видел, я сегодня слышу от вас: аланы, как может мышь съесть железо?

Тогда они тут же начали с него трясти пыль. «Хоть они и неправы, почему я раскрыл рот, сейчас общипают меня полностью!» – подумал он и сожалел, что вник в их разговор.

Молодой человек, по-прежнему, сделав опечаленный вид, сидел с поникшей головой.

После этого старший из друзей по выпивке бузы****, повернувшись к старику, насмехаясь над ним и пальцем отталкивая его лоб:

– Ой, бедный человек никогда не обрадует, бедный не стал бы бедным, если в голове у него был разум, сколько лет он прожил, а в голове так и нет ума, и впредь не будет. Ты, животное, поэтому ты и не видел, как мыши

* Тамада – старший, руководитель.

** Ярабий – эмоциональный возглас, боже мой.

*** Тейри – верховный бог в языческом пантеоне карачаевцев и балкарцев.

**** Буза – хмельной напиток.

едят железо. А все остальные – видели! А если хотите, я еще могу вам рассказать одну интересную вещь, – сказал он.

– Конечно, Расскажи, тамата, конечно, Расскажи! – закричали его дружки.

– Однажды отец принес с базара новую соху. Я взял и отнес под навес, а когда утром посмотрел, мыши соху полностью съели, кроме частей ржавчины. Я пришел и рассказал отцу все, как есть. А он мне: «Ай ты бедолага, там находился амбар с кукурузой, а кукуруза вчера закончилась, а голодные мыши не могли не съесть ее?! – сказал, разозлившись. Поэтому, если вам кто-нибудь скажет, что мыши не едят железо, не верьте, – сказал.

После этого, молодой человек больше не выдержав их ложные слова:

– Люди! Пока не иссякло все имущество моего отца, им питались вот эти люди тоже, они меня все сильно хвалили. А когда я обнищал: «Сырые легкие птицы поели и улетели», – когда я им сказал, они, мне не поверив, издевались надо мной. А сегодня вокруг моего жертвенного животного: «Железо мыши съели и ушли» – когда я говорю, они поверили. Они наши враги, они не люди, – сказал он, и друзей по выпивке бузы прогнав, сел и свою еду поел с бедными людьми.

После этого молодой человек, поняв цену разума, зажил прекрасно.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 309–313) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка с философским подтекстом. Понадобилось время для того, чтобы молодой человек, который слушался своих эгоистичных друзей и игнорировал мудрые наставления отца, внутренне прозрел. В трудный час, решившись свести счеты с жизнью, молодой человек обнаружил золото, припрятанное для него отцом. Благороднейший поступок отца отрезвил юношу, он распрощался с лжедрузьями и стал вести праведную жизнь.



БОЛЖАЛЧЫ КЕЛИН

Эртте-эртте бир келин, кыйын анасы турган отоуда от тамызыргъа деп, кшоншуларындан от алыргъа чыгып барганлай, арбаз чалыгъа илинип квалган бир жюн устукку тапханды. От кюбураны жерге салып, жюн устуккуну алганды да: «Охо, муну титейим да, от алыргъа алай барырма», – деп, артха кыйтханды. Титгенди. «Охо, муну ийирейим да, от алай алырма», – дегенди да, урчукъ буруп, ийирип башлаганды. Урчугъу толганды, жюн да бошалганды.

Сора бу келин, ийирген халысына кырап: «Охо, муну кыатлайым да, от алай алырма», – дегенди да, ийирген халысын кыатлап башлаганды. Кыатлаганды, токал этгенди. Токалына кыараганды да: «Охо, энди муну чепкен бойгъа иейим да, чык тюйюп, от алай алырма» – деп, ийирген халысын чепкен бойгъа ийгенди. Санап, чыкла тюйгенди. Чыклары саноганды, оюм этгенди. «Охо, энди муну тауатха тартайым да, кису таракъ салып хазырлайым да, от алай алырма», – дегенди да, чепкенликни тауатха тартханды, кису таракъ бла ётдюргенди, чыкга тюйюлген бойну бир жанын тауат кыурукъгъа, экинчи жанын кююн агъачха бегитгенди. Кыараганды да – тауат да бир тап, кису таракъ да бир тюз, чоллакъ да бир женгил.

Келин дагыда сагыш этгенди да: «Охо, энди бу кесек чыкны согъайым да, от алай алырма» – деп, таукел болуп, тауатха олтурганды. Сокъганды, кююн агъач да толганды. Жигит келин сокъган чепкенине кыараганды – ол да бир иги! «Охо, энди муну басайым да, бет кыусдурайым да, жайып, кыурума кююп, от алай алырма», – деп, бу ишлени этип башлаганды. Чепкенни жууганды, басханды, бет кыусдурганды, кыурутургъа жыйгъыч аллына жайганды. Чепкен олсагыт окуна кыуруганды.

Келин кыараганды да, башына бютюнда иги акъыл келгенди: «Охо, энди муну бичейим да, эрим кюшдан келирге, анга чепкен этейим, сора аны жыйгъыч аллында ёрге тагырма да, от алыргъа алай барырма», – дегенди. Чепкенни бичип, тигип башлаганды. Чепкен да битгенди. Келин, аны агъырыкъгъа тагып: «Охо, энди, барып, от да алайым, кыйын анамы отоун жылытайым», – деп чыкыганды. Чыкыса уа, кыар да терен жаууп, кыйын анасы да босагъа юсюнде бузлап тура эди.

Чыгырмананы «Кыарачай-малкыар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 315–316 бб.) Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кечюргенди.

«Болжалчы келин» деген жомакъ кыарачай-малкыар жомакъланы арасында тиширыулары сыфатлары эки тюрюлю магъанада ангылашыныргъа боллугъун кёргозтеди. Бир жанындан юйде тиширыуну ауур кымылдагъанына айып салынады, башхасындан а – таулу тиширыуну ёмюрледен келген жюн ишге берилгени суратланады.

СНОХА, КОТОРАЯ ВСЕ ДЕЛА ОСТАВЛЯЛА НА ПОТОМ

Давным-давно одна сноха хотела разжечь огонь в печи комнаты, где находилась ее свекровь. Когда она шла к соседям, чтобы взять огонь, по

дороге она нашла кусочек шерсти, зацепившийся за куст. Она, положив пороховницу на землю, взяла кусок шерсти: «Ладно, вот это расчесу, потом схожу и возьму огонь» – сказала она и вернулась обратно. Расчесала: «Ладно, вот это спряду, потом схожу, возьму огонь», – сказала она, и тут же начала крутить веретено и прясть шерсть. Веретено наполнилось, и шерсть закончилась.

После этого сноха, посмотрев на спяженные нити: «Ладно, вот это сверну в клубок, потом схожу, возьму огонь», – сказала она, и начала нити сматывать в клубок. Намотала и сделала клубок. Посмотрела на клубок: «Ладно, я сейчас его пушу в ткацкий станок, петли завяжу, потом пойду брать огонь», – сказала она и спяженные нити пустила в основу ткани. Посчитав, завязала петли. После того, как посчитала пели, она призадумалась. «Ладно, теперь все это установлю на ткацкий станок, после этого схожу взять огонь», – сказала она, и ткань натянула на оборудование, пропустила пряжу через него; петлю, куда был завязан на основу один конец, привязала на перекладину станка, второй конец закрепила на деревянном стояке. Посмотрела – все на месте, все детали ткацкого станка работают ровно, челнок тоже вращается легко.

Сноха еще раз призадумалась: «Ладно, теперь остаток петель довершу, после этого схожу, возьму огонь», – сказала она и уверенно села за станок. Ткала и соткала полотно. Умелая сноха посмотрела на сотканную ею ткань – и она тоже хороша! «Ладно, теперь это сваляю, после разложу, потом высохнет, потом схожу, возьму огонь», – сказала она и начала производить эти дела. Ткань намочила, сваляла, цвет одинаковый обозначился, и чтобы высушить, повесила полотно перед станком. Ткань для чепкена* тут же высохла.

Сноха посмотрела и в голову ей пришла хорошая идея: «Ладно, сейчас я это раскрою, и пока муж вернется из коша**, сошью ему чепкен, после этого я его повешу на перекладину, наверх и схожу возьму огонь», – сказала. Она начала чепкен кроить и шить. И чепкен уже готов. Сноха его повесила на перекладину: «Ладно, теперь схожу, возьму огонь, и разогрею дом своей свекрови», – и вышла из дому. А когда вышла, во дворе выпал глубокий снег и свекровь на пороге стояла замерзшая.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 315–316) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Среди множества карачаево-балкарских сказок о женщинах данная сказка занимает особое место своим амбивалентным содержанием. С одной стороны, в ней порицается нерасторопность хозяйки, а с другой – описывается сверхпреданность горской женщины исконному шерстяному промыслу.

* Чепкен – национальная одежда.

** Кош – стойбище.



САНГЫРАУ ЭЛДЕ

Эртте-эртте эрттеледе бир элде сангырау адамла жашап тургандыла. Ол элде жашагъан бир сангырау кишини юч эчкиси бир жол тас болгандыла. «Тоба-асто, быланы къайры жер жутуп къойду?!» – деп, ол киши эчкилерин излей жайылганды. Излей-излей, бара барып, бир сабан сюре тургъан кишиге тюбегенди. Сабанчы да ол элден, ол да сангырау.

– Кёп болсун! – деп, салам бергенди эчкилени иеси.

– Этиб’а, не этеме, кёресе, сабан сюре турама! – дегенди сабанчы.

– Юч эчки эслегенинг болмадымы? – дегенди бу.

– Да кесими атамдан кългъан мюлк жерчигим эди, – дегенди ол да.

– Ой, сау бол, къууандырдынг, сора хазна узайгъан да болмазла, – деп, эчки излеген кете барганды да, алайдан арлакъда эчкилерин тапханды.

Эчкилерин да аллына этип, ызына айланып, келе келгенди да, ол сабан сюре тургъан кишиге жетгенди. Сора анга:

– Хурметли акъсакъл, эчкилерими табаргъа болушханынг ючюн, бу семиз акъсакъл эчкими санга береме, шо бир ал, кесерсе, халалынг болсун! – дегенди.

Къулагъына бир затла чала-къула чалышып, сабанчы, ачыуланып:

– Ой, сау къллыкъл, манга неге кёлюнг къалады, сени эчкинги мен акъсатмагъанма, мени не гюняхым барды?! – дегенди.

Сора, бири бир айта, бири да бир айта, дауур болгандыла.

Юслерине ол элде жашагъан бир атлы келгенди.

– Ай юйюнге, бу манга эчкилерими табаргъа болушханы ючюн, саугъагъа акъсакъл эчкими береме да, алмайды, мени адамгъа санамайды! – дегенди эчкилени иеси.

– Мен аны эчкисин акъсатхан угъай эсенг, къарап, кёрген да этмегенме! – дегенди сабанчы.

Сора ала:

– Энди сен бизге бир сюд эт, терсни-тюзню айыр! – деп, атлыны атыны жюгенинден тутхандыла.

– Бу мени кесими атымды, сора сизге нек берирге керекме мен аны? – деп ачыуланганды атлы.

Алайда ючюсю да къаугъа болгандыла. Араны айыралмагъандыла. Сора ючюсю да, жыйылып, ол элни эфендисине баргандыла. Жарашдырып, ючюсю да хапарны хар бири кеси ангылагъаныча айтып:

– Сюд эт да, арабызны айыр, – дегендиле.

Эфенди да аланы:

– Эй, асыл адамла, бош даулашасыз, ораза бюгюн угъай, тамбла жабылады, ораза тамбла тутуп башлагъыз, – деп ашырганды.

Ала да кетгенлей, эфенди къатынына:

– Хычин этсенг, кълбар эдик, ансы ач болгъанбыз, – дегенди

Ол да, чыгъа барып, кызына:

– Атанг тюкеннге бар да, чепкенлик ал дейди, барчы, кызычыкъл, тюкенден, сайла да, бир ариу чепкенлик алып кел, – дегенди.

«Атанг эрге чыгъаргъа эркинлик береди», – дейди деп кёлуне келип, кызы аланы кълларын кюте тургъан жалчы жашха салып барганды да:



– Ай жаш, мен сени къарындашымча кёреме. Мен бюгюн эрге чыгъама да, сен, къыз жёнгер болуп, биргеме барыргъа керексе, юйге кел, – дегенди.

Жалчы жаш да: «Жалчылыкъ болжалынг жетгенди, малланы къой да, кел да, жалынгы ал да, юйюнге кет», – дейди деп кёлуне келип, малланы къююп, къыз бла бирге юйге кетгенди.

Сюрюючюсюз, кеслери алларына къалгъан малланы уа жанлы къыргъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 316–317 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Сангырау элде» деген жомакъ насийхат халда жазылгъанды, аны ахыры чынты юйретюу даражада тауусулады. Андан сора да бир бири бла ушакъ бардыргъан адамланы адет-къылыкъларына тийишли эс бёлунеди.

В СЕЛЕНИИ ГЛУХИХ

Давным-давно, в очень древние времена в одном селении жили глухие люди. Однажды у одного глухого мужчины, жившего в том селении, пропали три козы. «Тоба асто^{*}, как они могли провалиться сквозь землю?!» – сказал мужчина и пошёл искать своих коз. Разыскивая, когда он шел, то встретил мужчину, который занимался пахотой. Пахарь оказался из того же селения, и он тоже был глухим.

– Да, будет тебе много добра! – поздоровался хозяин коз.

– Что я делаю, делаю то, что ты сам видишь, занимаюсь пахотой! – ответил пахарь.

– Ты не видел три козы? – спросил тот.

– Да свое хозяйство, земельный участок, который достался от отца, – ответил другой тоже.

– Ой, спасибо, обрадовал, значит, они не могли далеко уйти, – сказал и пошел дальше тот, который разыскивал своих коз, и недалеко от того места нашел их.

Погоняя впереди своих коз, когда он шел обратно, опять пришел туда, где пахарь занимался своей пашней. Потом он ему:

– Дорогой аксакал^{**}, из-за того, что ты помог мне найти своих коз, вот эту жирную хромую козу отдаю тебе, пожалуйста, забери, зарежешь, покушаешь на здоровье! – сказал.

До слуха пахаря дошли какие-то непонятные вещи, и он разозлившись:

– Ой, чтобы ты был всегда здоровым, почему ты на меня обижаешься, твоя коза не из-за меня хромает, в чем я провинился? – спросил он.

Потом, один одно скажет, другой другое скажет, и они поссорились.

К ним подъехал один всадник, который жил в их селе.

– Дорогой, из-за того, что он мне помог найти моих коз, в подарок ему даю хромую козу, а он не берет, меня за человека не считает! – сказал хозяин коз.

^{*} Тоба-асто – возглас удивления.

^{**} Аксакал – белобородый, уважительное обращение к пожилым людям.



– Я его козу не только покалечил, я ее даже видеть не видел! – ответил землепашец.

После этого они:

– Теперь ты рассуди нас, определи, кто прав, кто виноват! – сказали они и ухватились за уздечку коня у всадника.

– Эта моя собственная лошадь, почему я должен ее вам отдавать? – сказал он, разозлившись.

Они там втроем подняли шум. И не смогли никак разобраться между собой. И тогда, собравшись втроем, пошли к эфенди того селения. Каждый из троих по-своему начал объяснять случившееся:

– Устрой суд и рассуди нас, – сказали они.

И эфенди на них:

– Эй, уважаемые люди, зря вы спорите, урза* не сегодня, а завтра заканчивается, начинайте держать уразу с завтрашнего дня, – сказал он и отправил их.

Когда они ушли, эфенди говорит своей жене:

– Сделай-ка хычины**, поели бы, иначе проголодались, – сказал.

И она, выходя, сказала своей дочери:

– Отец тебе сказал, чтобы ты сходила в магазин и купила ему чепкенлик***, сходи, девочка, выбери в магазине, и принеси самый красивый чепкенлик, – сказала она.

«Отец разрешает выходить замуж», – подумав, девушка направилась к юноше-батраку, который у них пас овец:

– Ай, молодой человек, я тебя воспринимаю как брата. Я сегодня выхожу замуж, ты должен поехать со мной в качестве дружка, приходи к нам домой, – сказала она.

А юноша – батрак: «Срок службы вышел, оставь отару, приходи, получи свое жалованье и уходи к себе домой», – подумал и, оставив отару, вместе с девушкой пошел к ней домой.

Без чабана, на произвол судьбы заброшенную отару дикие звери растерзали.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 316–317) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Данная сказка может быть отнесена к роду притчевых сказок с выраженной нравоучительной концовкой. В сказке решается проблема выработки коммуникативной культуры между участниками диалога.

* Урза – мусульманский пост.

** Хычины – национальные лепешки.

*** Чепкенлик – ткань для национальной одежды.

АЛТЫНЛАРЫН ТАС ЭТГЕН КЪЫЗГЪАНЧ

Эртте заманлада бир къызгъанч адам жашап болгъанды. Ашамаз эди, ичмез эди: ишлеген ахчасын жыйып туруп эди. Бир ауукъ жылны ичинде кюбюрчек толу бир алтын жыяды. Ол адам, асыры къызгъанчдан, алтынларын кесинден окъуна аягъанды. Кёзю бла кёрсе да, къолу бла тиерге уа – къайда! Алай къызгъанч эди ол.

Ахырында ол адам алтынларына къул болуп къалгъанды.

Кече-кюн да акъылы-сагъышы алтынларында эди. «Биреу алтынларымы урлап кетсе, мен не этерикме?» – деп, кёзюне жукъу кирмей башлайды. Сора: «Былай этип турургъа жарарыкъ тюйюлдю», – деп, алтынларын къабырлада басдыргъанды. «Мында алтын барды деп, кимни акъылына келликди? Кишини да угъай», – деп, кеси кесин жапсарыргъа кюрешсе да, тынчаялгъан а этмегенди. Жарсып тургъандан, азгъанды, тозурагъанды.

Къабырлада ишлеген мезарасы, бу адамны тынгысызлыгъын кёрюп, ызын марлап башлагъанды.

Бир жол ол къызгъанч алтынларын, чыгъарып, санагъанды да, сора, жүреги хош болуп, биягъы басдырып кетгенди. Аны кёрюп тургъан мезарасы уа, алтын кюбюрчекни къазып чыгъарып, орунуна уллу таш басдырып къойгъанды.

Къызгъанч экинчи кюн да къабырлагъа баргъанды. «Алтынларым тура болурламы?» – деп, къаза келгенди да, алтын кюбюрчекни орунуна бир уллу таш кёрюп, кеси кесин тюйюп башлагъанды.

Ол кезиуде алайтын биреу ётюр бара болгъанды. Къызгъанч кишини халын кёрген жолоучу сейир-тамашагъа къалады.

– Алтынларымы урлагъандыла! Тюз былайда басдыргъан эдим! – деп тюр эди ол киши кесин.

– Алтыны болгъан алаймы этеди? Халкъча, юйюнде тутуп, керекден-керекге жоя-жоя турсанг эди уа! – дегенди жолоучу.

Къызгъанч, алтынларын керти да жоярыкъ кибик, жүрегине къоркъуу кирип:

– Не-е?! Алтынларымы жояргъамы дейсе?! – деп, къычырып жилигъанды.

– Хей, Аллахны тюз къулу, алтынларынгдан файда кёрлюк тюрюл эсенг, алтынынгы ол ташдан башхалыгъы неди?! Алай олтур да, сакъла да тур, – деп кюрюп кетгенди ол жолоучу.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 317–318 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Алтынларын тас этген къызгъанч» деген жомакъны юйретюу магъанасы ниет байлыкъны бла мюлк байлыкъны араларын чертгениндеди. Алай бла, мында ниет байлыкъгъа алчы магъана бериледи.

СКУПОЙ, ПОТЕРЯВШИЙ ЗОЛОТО

В давние времена жил один жадный человек. Не ел, не пил: все заработанные деньги копил. Через несколько лет он собрал полный сундук



золота. Этот человек был настолько жадным, жалел золото даже для себя. Хотя видел зрением, а рукой потрогать – куда там! Насколько был он жаден.

В конце концов, этот человек стал рабом своего золота.

И днем, и ночью все помыслы, размышления его были связаны со своим золотом. «Если вдруг кто-то украдет мое золото, что я буду делать?» – думал он и никак не мог сомкнуть глаз. Потом: «Так дальше жить нельзя», – решил он, и свое золото схоронил на кладбище. «Что здесь есть золото, кто может подумать? Абсолютно никто», – говоря, сколько бы он себя не старался утешить, полностью найти успокоение не получалось.

Из-за переживаний он похудел и ослаб.

Работник на кладбище, заметив его нервное состояние, начал следить за ним.

Однажды этот жадный человек вытащил свое золото, пересчитал, после этого душа у него успокоилась, и снова он обратно закопал и ушел. А работник, который все это видел, выкопав золотой сундук, вытащил, а вместо него закопал большой камень.

Этот жадный человек и на следующий день пришел на кладбище. «Мое золото на месте ли? – сказал он, и начал копать и вместе сундука с золотом увидев большой камень, начал сам себя бить.

В это время там оказался один прохожий. Увидев состояние жадного человека, он сильно удивился.

– Мое золото украли! Вот здесь я его закапывал! – с такими словами он сам себя бил. – Обладающий золотом разве так поступает?

Как принято в народе, надо было держать дома и по надобности по чуть-чуть тратить! – сказал путник.

Жадный человек, сильно боялся, что его будут заставлять тратить золото и поэтому в его сердце закрался страх:

– Что-о?! Ты хочешь потратить мое золото?! – сказал он и громко заплакал.

– Эй, раб Божий, если ты не собираешься получить выгоду от своего золота, то чем отличается твое золото от того камня?! Сиди там и жди, – сказал тот путник и, смеясь, пошел своей дорогой.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 317–318) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Нравоучительный смысл сказки заключается в разграничении духовного и материального богатства. Сказка закрепляет приоритетное начало за ценностями духовного порядка.

УРУЧУНУ СЮЙГЕН КЪЫЗЫ

Мындан алгъын кѣп заман эл къыйырында бир тирменчи бла къатыны жашап болгъандыла. Аланы уа Зайнаф деп бир ариу къызлары бар эди. Къызгъа онсегиз жыл толгъанда, атасы-анасы аны эрге кимге берейик деп сагъышлана башлагъандыла.

Зайнафны уа Жаннетхан деп бек суйген тенг къызы болгъанды. Бу къызла, жашырмай, не ичги сѣзлерин да бир бирлерине айта эдиле.

Кюнлени бир кюнюнде, ат кереклери да кюнюшден болгъан, бир ариу къуралгъан фазтонда биреулен тирменчиге Зайнафны тилей келеди. Къызны атасы-анасы да: «Къызыбызны быллай бай адам тилей келген эсе, бермей къояргъа жарамаз», – деп, ичлеринден бек къууандыла. Зайнаф да, жашны жаратып, Жаннетханнга:

– Къарачы, Жаннетхан, нечик бай адамды бу мени тилей келген жаш. Атам-анам да ыразыдыла, мен анга барлыкъма, – деп, къууанып айтды.

Тенг къызы да:

– Кертиди, бек бай адам кѣрюнеди. Аллайгъа уа бар, – деди.

Сора келечи, кете туруп, тирменчиге:

– Къызыгъызны элтирге къачан келирме? – деп сорду.

Тирменчи да:

– Да не къадар терк этсенг ишни, ол къадар бир иги болур, – деди. – Къыз кеси да ыразыды, чырмау кѣрмейме.

Киеулюк да, жууукъ заманда келип, къызны элтирге сѣз берип, сѣз да алып кетди.

Зайнафны атасы-анасы хапарны жууукъларына айтыргъа, жашны юсюнден да сорургъа эки-юч кюннге юйден кетдиле. Ала кетгенлей, Зайнаф бла Жаннетхан да, кесине билдирмей, киеуню юйюн, жерин, байлыгъын да бир кѣрейик деп, жолгъа чыкъдыла.

Эки къыз да, излей кетип, бир терен, къарангы агъачны ичинде киеуню юйюн тапдыла. Барсала, – эшик аллында бир огъурсуз ит, адам а – жокъ. Ит юргенде, анга да гыржын атып, жууаш этдиле да, юйню ичине кирип бардыла. Барсала, экинчи эшикни аллында да бир уллу ит. Анга да гыржын берип, ючюнчю отоуну эшигине жетдиле. Алайда да бир уллу ит кѣзлерин жандырып тура эди. Итни аллында уа – ит тегене бла бир къан. Биягъыча, анга да гыржын берип къутулуп, къызла бир уллу отоугъа кирдиле. Анда уа – бир уллу хант къанга, аны юсюнде – юч жыйырма аякъ, аллай бир да къашыкъ, юч жыйырма да кѣтюртме орундукъ. Жаннетхан бла Зайнаф, бу затланы кѣрюп, сейирсинип, кетерге бла кетмезге билмей, абызырап тургъанлай, бир адам тауушла эшитилдиле. Къызла орундукъладан бирини тюбюне кирип букъдула.

Бир заманда биреулен, келип, хант къангагъа азыкъ салып, чыгъып кетди. Олсагъатдан талай адам юйге муштухул кирдиле, – ала барысы да эр кишиле эдиле. Аланы ызларындан а тѣртеулен бир ариу тиширыуну созуп келдиле. Юйню мюйюшюнде уа бир башкес, балтасын да къолуна алып, сакълайды. Тиширыу:

– Жанымы къоюгъуз, тилейме. Мени хатерими этмесегиз да, къарынымда сабийге жаныгъыз аурусун, – деп жалынды.



Алай ол адамла аны жазыксынмадыла, урдула да, ёлтюрдюле. Тиширыуну кьолунда алтын жюзюгюн алалмай, балта бла уруп, бармагьын чартлатдыла. Жюзюгю бла бармакь, чартлап барып, бугьуп тургьан Зайнафны кьоюнуна тюшдю.

Энди уа эки кьыз да, асыры кьоркьгьандан, не этерге билмейдиле. Бармакьны уа Зайнаф, алып, кьоюнуна терен букьдурду.

Чыракьны да жандырып, башкесле бармакьны аямай изледиле, алай тапмадыла.

Урочу башкеслени бири:

– Ким эсе да мында бир тыш адам барды, ансы бу не аламат, не сейирди, бармакь кьайры тас боллукь эди?! – деди.

– Да ким боллукьду да мында? Итле бери бир кишини да жиберлик туююлдюле, – деди бирсилери.

Бирлери уа орундукь туююне кирип излерге тебирегенлей, жёнгерлери анга:

– Кьой, юйюнге, не этесе муну, адам бар эсе да, кьайры кетерикди? Эрттенбла табарбыз адамны да, бармакьны да, – деп, хыны-хыны айтдыла.

Бираз заман озгьанлай, башкесле бир арбачыны кийирип келдиле да, башын кетердиле, аны атларын а ат орунда атлагьа кьошдула. Урочулану таматалары уа – Зайнафны тилей баргьан:

– Атланы тап жерге жыйыгьыз – эрттенликде ала манга керек боллукьдула, – деп, ол адамладан бирине буюрду.

Дагьыда бираздан а бир учу жашны сюйреп кийирип келдиле. Жаш:

– Жанымы сау кьоюгьуз! – деп, бек эриулю тиледи, алай аны да урдула да, башын кетердиле.

Хар ёлтюрюп баргьан адамларындан чыкьгьан кьанны уа ит тегенелеге кьотара эдиле. Ёлюклени артда кьайры эсе да элтип кете эдиле.

Аллай мурдар ишлеринден сора, барысы да хант кьангагьа ашаргьа олтурдула. Ичги челек бла кьуйгьан кибики жюрюйдю. Бираздан барысы да кеф бола башладыла. Таматалары, туруп:

– Да энди ахча кюбюрюбюз да тола кетгенди. Биразчыгьы кьалгьанды да, ол азчыкьны уа тамбла, мен кьызны юйюне баргьанлай, тап этербиз. Тирменчини ахчасы бек кёп болгьан хапары барды, – деди да, жёнгерлерини кёллерин кётюрдю.

Аманлыкьчыла, аллай хапарла айта, этген огьурсуз ишлерин да эсгере, кёп олтурдула. Сора, бир заманда барысы да жатдыла да, кьаты жукьугьа батдыла. Кёп бармай, кьалауурла да шошайдыла, чыракь да ёчюлдю.

Ол заманда эки кьыз да, букьгьан жерлеринден чыгьып, жукьлап тургьан урочулану ичлери бла эшикге шыхыртсыз кьутулдула. Эшик аллында итле уа, асыры адам кьандан тойгьандан, алагьа кьарагьан да этмедиле. Юйден чыкьгьанлай, экиси да юйлери таба думп болдула.

Танг атып, кюн чыгьа башлагьанлай, Зайнаф бла Жаннетхан юйге жетдиле. Кьызны атасы-анасы да, жууукьларындан кьайтып, тойгьа хазырлана тура эдиле. Алайда Зайнаф бла Жаннетхан кьайда болгьанларын да, битеу не кёргенлерин да тирменчиге бла кьатынына толусунлай айтдыла. Кьызны атасы бла анасы, асыры сейирсингенден, ауузларын ачып, не этерге билмей кьалдыла. Зайнаф дагьыда:



– Мени тилеген адам бек байды, алай аны байлыгы мурдарлыкъ бла тышген байлыкъды. Бизге да, мени элтирге келген сылтау бла, нёгерлерин да жыйып, тонаргъа келликди, – деп ангылатды.

Тирменчи олсагъат башкес уручуланы тыяр амал табыуну къайгысынын этип башлады. Сора, патчахха барып, аны аскерин хазыр этип, «киеу» келгенлей, тёгерегин къуршалап, уручу мурдарланы тутаргъа хазырланды.

Экинчи кюн «киеу», алты ат жегилген ариу фазтоннга да минип, нёгерлери бла тирменчини юйюне жетди.

«Киеуню» кёрсенг а, несин айтдыраса, ойнай-кюле, – бек жарыкъ. Тирменчи тойну-оюнну башлатды. Къонакъла да ашаргъа-ичерге киришдиле.

Бир заманда Зайнаф «киеуге»:

– Бюгече тыш кёрдюнгомю? – деп сорду.

– Бизни тоюбузну-оюнубузну болмаса, башха зат кёрмегенме, – деди ол.

– Да мен а сейир тыш кёргенме, – деп, Зайнаф тынене кече уручуланы юйлеринде болгъан ишлени тышюнча айтды.

Алайлай «киеу», ишни осалгъа тергеп, ёрге туруп башлады. Зайнаф:

– Олтур, олтур, мен алыкъа тышюмю айтып бошамагъанма, – деди да, хапарын андан ары бардырды. Сора: – Ийнанмай эсенг, ма ол сиз ёлтюрген тиширыуну бармагы, – деп, букъдуруп тургъан жюзюгю бла бармакъны кёргюзтдю.

Уручуланы таматасы – «киеу» – не этерге билмей, кесин терезеге атды. Алай терезе тубюнде орналып тургъан аскер «киеуню» да, аны башкеслерин да, ычхындырмай, тутуп, патчахха элтдиле. Уручуланы урлап-тонап жыйгъан ахчаларын, байлыкъларын да барып келтирдиле. Тирменчиге, этген иши ючюн, сыйлы саугъала бердиле, андан сора аны юйюрю ашап-жашап къалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 327–330 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Уручуну суйген къызы» деген юйюр-жашау-турмуш жомакъда, сейир-тамаша жомакъдан илишанла хайырланылгъандыла. Бир къыз, жомакъны баш жигити, эрге чыгъарыны аллында, кесини тенг къызыны кючю бла киеулюкню ич сырын ачыкълайды.

Жомакъда бир къызны аты Жаннетхан болгъаны жомакъгъа ислам культурадан къошумчулукъ этилгенин кёргюзтеди.

ЛЮБИМАЯ ДЕВУШКА БОРА

Много лет тому назад, на окраине села жил один мельник со своей женой. И у них была дочь – красавица Зайнаф. Когда девушке исполнилось восемнадцать лет, ее отец и мать, не зная за кого ее выдать замуж, начали задумываться.

А у Зайнаф была любимая подруга по имени Жаннетхан. Эти девушки рассказывали все друг другу, не утаивая ничего.



Как-то раз один мужчина, у которого все конское снаряжение было из серебра, в красиво сооруженном фаятоне приехал к мельнику сватать Зайнаф. И отец, и мать девушки: «Если нашу дочь пришел сватать такой богатый человек, то ему нельзя отказать», – сказали, и про себя сильно обрадовались. И Зайнаф понравился парень, и она говорит Жаннетхан:

– Посмотри, Жаннетхан, какой богатый человек, который пришел ко мне свататься. И отец, и мать согласны, я выйду за него замуж, – сказала она с большой радостью.

И подруга:

– Правда, видно, что очень богатый человек. За такого выходи, – сказала.

После этого сват, уходя, у мельника спросил:

– Когда мне прибыть, чтобы забрать вашу дочь?

И мельник:

– Да, как можно быстрее, если это дело исполнишь, тем будет лучше, – сказал. – И девушка сама согласна, никаких препятствий я не вижу.

И будущий зять в ближайшее время прибыв, пообещал забрать девушку, и у них тоже взял слово.

Отец и мать Зайнаф, чтобы про все рассказать родственникам, и заодно разузнать о парне, ушли на два-три дня из дому. Когда они ушли, Зайнаф и Жаннетхан, чтобы зять не знал, захотели увидеть его дом, землю, богатство и отправились в дорогу.

Эти две девушки, долго разыскивая, внутри глухого, темного леса нашли дом зятя. Когда пришли, во дворе была злая собака, а людей – нет. Когда залаяла собака, они ей бросили хлеб, этим ее успокоив, зашли во внутрь дома. Оказавшись внутри помещения, они увидели, что перед вторыми дверьми стояла еще одна большая собака. И ей дали хлеба, и дошли до дверей третьей комнаты. И там стояла одна большая собака с вытаращенными глазами. А перед собакой собачье корыто, наполненное кровью. И как прежде, девушки ей тоже дали хлеба, и этим спасаясь, вошли в одну большую комнату. А там – большой стол для еды, на нем – шестьдесят чашек, столько же ложек и шестьдесят приподнятых кроватей. Жаннетхан и Зайнаф увидев все это, удивившись, не зная уходить или остаться, когда стояли обессиленные, слышались голоса каких-то людей. Девушки спрятались под одной из кроватей.

Через некоторое время один зашел, поставил на обеденный стол пищу, и тут же вышел. И вдруг несколько людей второпях зашли в дом, – они все были мужчины. Следом за ними четверо приволокли одну красивую девушку. А в углу дома один головорез, держа в руке топор, ждет. Женщина:

– Оставьте меня в живых, я очень прошу. Если меня не жалуете, то пожалейте ребенка в моей утробе, – взмолилась она.

Однако эти люди ее не пожалели, одним ударом убили. Золотое кольцо, которое было на руке у девушки, вытащить не удавалось, и поэтому, они ударили топором и отсекали ее палец. Палец с кольцом, отлетев в сторону, прямо попало в грудь спрятавшейся Зайнаф.

И теперь эти девушки из-за большого страха, не знали, что делать. А палец Зайнаф взяла и на своей груди глубоко спрятала.

Головорезы, включив свет, усиленно начали искать палец, но так и не нашли.

Один из воров-головорезов:

– Кто-то здесь есть один посторонний человек, а то, что за чудеса, волшебство, куда бы затерялся палец?! – сказал.

– Да, кто может здесь находиться? Собаки сюда никого не пропустят, – ответил другой.

А когда один из них захотел забраться под кровать и поискать, дружки ему:

– Оставь, чего ради, что ты делаешь, если там есть человек, до утра куда денется? На рассвете найдем и человека, и палец, – сказали они ему грубо-грубо.

Через некоторое время головорезы приволокли одного аробщика и отрезали ему голову, а его коней в конюшне запустили к другим коням. А главарь воров – тот, который приходил свататься к Зайнафу:

– Расположите коней поудобнее – утром они мне понадобятся, – сказал он и поручил это дело одному из людей, рядом стоящих.

И еще тут же приволокли и затащили одного молодого охотника. Молодой человек:

– Оставьте меня в живых! – умолял их очень жалостливо, однако, ему тоже одним ударом отсекали голову.

Из каждого человека, которого они умерщвляли, вытекала кровь, которую они выливали в собачьи корыта. А трупы выносили куда-то и оставляли там.

После таких убийственных дел, они все вместе сели покушать за обеденный стол. Спиртные напитки разливали, как будто из ведра. Через некоторое время они все начали пьянеть. Главарь из них, привстав:

– Да, теперь денежный сундук почти полон. Чуть-чуть не достаёт, и эту чуточку я завтра, как появлюсь в доме девушки, мы исправим. Говорят, что у мельника очень много денег, – сказал он и взбодрил своих друзей.

Эти преступники, рассказывая всякую всячину, вспоминая свои разбойные дела, сидели долго. Потом, через некоторое время, все легли и утонули в крепком сне. И тут же не слышно стало и сторожей, к тому же они потушили свет.

В это время эти две девушки вышли из своего укрытия, перешагивая через спящих воров, вышли во двор без шороха, и спаслись. А собаки во дворе настолько насытились человеческой кровью, что даже не посмотрели в их сторону. Когда девушки вдвоем вышли оттуда, они тут же поторопились домой.

Рано утром на восходе солнца Зайнаф и Жаннетхан добрались до дому. А отец и мать девушки, вернувшись от родственников, готовились к свадьбе. И тут Зайнаф и Жаннетхан мельнику и его жене рассказали полностью, где они были и все, что видели. Родители девушки от сильного удивления с раскрытыми ртами, стояли, не зная, что делать. Зайнаф еще:

– Тот, который меня просит, очень богатый человек, но его богатство, разбойным путем нажито. И под предлогом, что приехал меня забирать, вместе с друзьями придет нас ограбить, – объясняла она.

Мельник тут же принялся решать проблему, как остановить воров-головорезов. Немедленно сходил к царю, поднял его войско, подготовился к тому, когда «зять» придет, чтобы его окружить и захватить воров-убийц.



На второй день «зять» на фэтоне, запряженном шестью лошадьми, с друзьями прибыл в дом мельника.

На «зятя» посмотришь, что там говорить, вел себя игриво, смеялся, был очень веселым. Мельник распорядился, чтобы начали свадебное пиршество, веселье. И гости поторопились к угощению.

В это время Зайнаф «зятю»:

– Сегодня ночью тебе сон не приснился? – спросила она.

– Кроме нашей свадьбы, пиршества, другое ничего не снилось, – ответил он.

– А я видела удивительный сон, – сказала Зайнаф, и то, что она вчера видела в доме воров, рассказала как сон.

И тут «зять», видя, что дела плохи, начал подниматься. Зайнаф:

– Сиди, сиди, я еще не закончила свое сновидение, – сказала она и продолжила рассказ дальше. Потом: – Если не веришь, вот палец женщины, которую вы убили, – сказала, и вытащив, показала спрятанный палец и кольцо.

Главарь воров – «зять» – не зная, что делать, выбросился из окна. Но, внизу наготове находившееся войско и «зятя», и его головорезов, ни одного не упустив, захватили и привели к царю. И то богатство, что воры разбоем, воровством добыли, царская дружина сходила и принесла. Мельнику за его работу дали дорогие подарки, после этого его семья зажила спокойной жизнью.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 327–330) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка, где главная героиня перед заключением брака с помощью подруги разоблачает своего жениха, приоткрывая завесу над его злодеяниями.

Имя женского персонажа «Жаннетхан» свидетельствует о проникновении в древний сюжет сказки элементов исламской культуры.

УЛУТХА

Эртте бир жарлы киши бла бир бай киши кьоншуда жашап болгъандыла. Бай хар жаны бла да жарлыны ырбыннга кыса тургъанды. Къайда малын къауулгъа тыя, къайда, бахчасына суу салгъанда, сууун тыя, къайда жолу бла ётдюрмей, дагъыда анга кёре хар жаны бла онгсуз этгенди. Жарлы уа, харип, байгъа хата тежеген угъай, аны ол ишлерине тёзюп окъуна тургъанды. Жарлыны жукъ айтмагъаны бла хайырланып, бай, эсине не тюшсе, аны этип къоя эди. Бир кюн а бу бай, жарлыны жангыз ийнегин къауулгъа тыйып, жарлы баргъанда уа, къатына да кьоймай, кыстап, ызындан да итле бла къуудуруп жибергенди. Жарлыны ийнегин берирге уа эсине да келмегенди. Жарлы, андан ары чыдаялмай, салып, сюдге баргъанды. Сюд этиучю адам а, тынгылап, тамбла келирсе деп кьойгъанды. «Тамбла» дегени уа улутха алып кел деген магъананы тутханды. Жарлы киши аны сезгенди, алай несин элтирик эди?

Сагъыш эте кетип, бу жарлы, сатаргъа деп аяп, кеси да ашамай тургъан жумуртхачыкъларын четеннге жыйып баргъанды. Сюдю, къууанып, кишиге:

– Ишни тап этерме, – деп сёз бергенди.

Бай, жарлы кишини алай этгенин билип, экинчи кюн сюдюге бир семиз тана элтип баргъанды. Ол да, танагъа къууанып, байгъа уллу сёз береди. Бай, ыразы болуп, юйюне келеди.

Бир кюн быланы сюдге чакъырадыла. Экиси да барадыла да, сюдю сорууун башлайды. Жарлы киши, улутхамы унутуп къояды деп:

– Мен жумуртханы агъындан да тазама, – дейди сюдюге.

Сюдю уа анга:

– Жумуртхаланы тана сындыргъанды, – деп къояды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012–330 б.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Улутха» деген жашау-турмуш жомакъ кесини къуралыу онглары бла насийхат халда жазылгъанды. Жомакъда сюдюню жутлугъуна айып салынады. Бир жарлы адам кесини баи эркинлигин сакълаган заманда, ол жумуртхаланы улутха орунуна алып, анга болушургъа излегенди. Артда ол, кесини оноун тюрлендирип, андан мажсал улутханы, семиз бузоуну алыргъа излейди.

«Жумуртхаланы тана сындыргъанды», – деген айтым къарачай-малкъар айтыу болуп, улутхачылыкъгъа айып салады.

ВЗЯТКА

Давным-давно бедняк и богач жили по соседству. Богач бедняка все время вытеснял к подворотне. Часто его скот держал на сухой траве, не давал оросить огород, удерживал от него воду, временами не давал ему пройти по дороге и еще подобными случаями он его обижал. А бедняк, страдалец, не то, что хотел богачу зла, а наоборот, терпеливо переносил



его издевательское отношение. Воспользовавшись тем, что бедняк ничего не говорит, богач, что вздумается в голову, то и проделывал. Однажды этот богач, загнал единственную корову бедняка туда, где сухая трава, а когда бедняк подошел, не дал к ней близко подойти, прогнал. И следом пустил собак, чтобы ее отогнали еще дальше. А бедняку и в голову не приходило отдать ему корову. Бедняк, больше не в силах выносить, принял решение и пошел к судье. А тот, кто рассматривал судебные дела, выслушав, просто сказал прийти завтра. То, что он сказал «завтра» подразумевало, чтобы он пришел со взяткой. Бедный мужчина это понял, однако, что бы он понес?

Этот бедняга, подумав, собрал в корзину яйца, который он заготовил, хранил для продажи, сам не ел, принес ему. Судья, обрадовавшись, мужчине:

– Дело улажу, – дал слово.

Богач, узнав, что бедный мужчина поступил так, на второй день судье отвел жирного теленка. Он обрадовался теленку и дал ответственное слово богачу. Богач, довольный, возвращается домой.

Через несколько дней их вызывают к судье. Они вдвоем приходят туда, и судья начинает задавать им вопросы. Бедный мужчина, побоявшись, что о его взятке забыли, говорит:

– Я чище даже, чем белок яйца, – говорит судье.

А судья ему:

– Яйца теленок раздавил, – ответил.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 330) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

«Взятка» относится к разряду социально-бытовых сказок, по своим жанроразличительным признакам приближенных к притче. В сказке высмеивается алчность судьи, который за взятку в виде яиц хотел помочь бедняку в отстаивании его социальных прав, но позже пересмотрел свое мнение из-за более весомого подношения в виде жирного теленка. Ключевая фраза сказки «Теленок яйца раздавил» стала карачаево-балкарской поговоркой, осуждающей взяточничество.

ОРАДАДА БЛА ЖАБАГЪЫ

Тёрт туугъан къарындаш бир элде къоншу жашагъандыла. Ала барысы да бир улакъчыкъ сатып алгъандыла да, аны жаны саулай юлешгендиле. Улакъ ёлген иш этсе, хар ким кесини юлюшюн арсарсыз алып кетерча белгилегендиле. Жаз башында тёрт къарындаш да, бир болуп, элни бал батманларын, жыйып, къошха чыгъаргъандыла да, бир къарындашны бал къошха къараргъа къойгъандыла. «Улакъ да къошда турсун», – деп оноулашхандыла.

Бир жол улакъчыкъны аягъы сыннганды да, балчы аны быстыр бла байлагъанды. Улакъчыкъ да бал батманла ичинде чикай-чикай эте айланнганды. Жазгъы жунчуу, кирши кюнлени биринде балчы, къошчугъунда отчугъун да кёмноп, къош эшикни уа этмей, отуннга кетгенди.

Сууукъгъа чыдамсыз кютю улакъчыкъ, от жагъагъа келип, кюлге жатады. Байланнган аягъы кюлге терен ташаяды да, быстыр, мыдыхха жетип, къабынады. Къургъакъ быстыр терк окъуна жанып, улакъны тынгысыз этеди. Амалсыздан, улакъ къошну теренине къачып киреди да, къошха ёрген салады. Жана тургъан къошха чыдаялмай, улакъ, къачып, бал батманла ичине кирип, битеу бал батманлагъа да от салады. Балчы къошха къайтып келгенде, аны эки кёзюне къан чабады, башы къара къайгъыгъа къалады. Элни бал батманларын къалай телеригине асыры сагъышланнгандан, ёлюр сагъышын да унутханды.

Иш Тёреге тюшеди.

Тёрени төрюнде Орадада олтурады. Хыйсапсыз кёп адам жыйылып, сейирсинип тынгылайды. Кюйген батманланы иелери тёрт къарындашдан батманларын телетирге излейдиле, къарындашлары да битеу айыпны сыннган аякъны иесине салыргъа кюрешедиле.

Орададаны башчылыгъында төречиле, шагъатны, даучуну да соруп бошاپ: «Битеу кюйген батманланы, улакъны, къошну да сыннган аякъны иесине телеу этерге», – деп, кеслерини оноуларын баямлайдыла.

Кими мудах, кими да жарыкъ болуп, элни адамы юйюне къайтады.

Ол жыл къыш эртте тюшген эди. Жашчыкъла аямай бузда ашыкъ ойнай эдиле. Орадада, атланып, жолгъа чыгъады да, ашыкъ ойнай тургъан жашчыкълагъа тюбейди. Жашчыкъла кимни ашыгъы озгъаныны юсюнден даулашханлары къулагъына чалынады.

– Алан, сен а Орададаны кесаматынлай эте кёреме, – дейди бир жаланнгач жашчыкъ.

Орадада, атдан тюшюп, ат айылларын тартхан кибик эте, жашланы даулашларына тынгылайды. Кесини этген оноун жашла терсге санагъанларын ангылап, жаланнгач жашчыкъны кенгешге чакъырады.

– Жашчыкъ, Орадада къарындашлагъа къалай терс сюд этген эди дейсе? – деп сорады.

– Да къалай этиб’а, сыннган аякъ кеси къайры бараллыкъ эди? Аны сау аякълары элтип, отну къошха да, батманлагъа да салгъандыла, ахырында уа кеслери да кюйгендиле. Сыннган аякъны не терслиги боллукъ эди? – дегенди жашчыкъ.



Орадада сагъышланады. Сора, атына да минип, ызына къайтады да, Тёрене, халкъны да жыйып, ишге жангыдан къарайды. Тёлеу сыннган аякъны иесине угъай, сау аякъланы иелерине салынады.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 332–333 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Орадада бла Жабагъы» деген жомакъны мурдору сюдюню тюз бардыргъан иши бла байламлыды. Анда асхакъ улакъчыкъны юлгюсюнде сюдюлени ишлеринде хыйлалыкъла болгъанлары ачыкъланадыла. Тюзлюк бла ётюрюк бек таша жерледе букъдурулуп турургъа боллукъдула.

Былай къарагъанда от тюшгенине, бал четенлени кюйгенлерине, улакъны сакъат аягъы терсге саналады. Алай сюдю, битеу акъылын башына жыйып, терк окъуна аны ишин тюзюча бардырады. Ол кыйынлыкъны келтиргенле, аны от болгъан жерге алып келгенле, улакъчыкъны сау аякълары болгъанларын тохташдырады.

ОРАДАДА И ЖАБАГИ

В селе четыре родных брата жили по соседству. Они вкладчину купили одного козленка и тут же при жизни его поделили. В случае, если козленок умрет, чтобы каждый из них получил конкретно свою долю и ушел. Ранней весной четверо братьев, объединившись, изготовили в селе улей, отправились на кош* и одного из братьев оставили сторожить медовый кош. «И козленок пусть находится в коше», – договорились они.

Однажды у козленка сломалась нога, и пчеловод перевязал ее. И козленок среди ульев ходил, прихрамывая. В один из весенних, пока на пасеке не благоустроенных, сложных дней пчеловод в своем небольшом коше потушил огонь, но двери коша не закрыв, пошел за дровами.

Не привыкший к холоду маленький козленок подошел к очагу и лег на золу. Перевязанная нога ушла глубоко в пепел, ткань на ноге дошла до углей и загорелась. Сухая ткань очень быстро воспламенилась и отняла покой у козленка. От безысходности козленок быстро забегал по кошу и устроил там пожар. Не выдерживая горящего коша, козленок всем медоносным ульям также устроил пожар. Когда пчеловод вернулся в кош, его глаза облились кровью, его голову охватили черные тревоги. Он настолько задумался о том, как будет выплачивать сельчанам их медоносные ульи, что у него даже исчезли мысли о своей смерти.

Дело передали в Тёре**.

Посередине Тёре сидит Орадада. Большое количество собравшихся людей с удивлением его слушают. Хозяева, у которых сгорели медоносные ульи, хотят, чтобы четверо братьев выплатили им ульи, а братья всю вину хотят переложить на хозяина поломанной ноги козленка.

Во главе с Орадада судьи после того, когда полностью расспросили свидетелей, истцов: «Вину за все сгоревшие ульи, козленка и кошару –

* Кош – стойбище.

** Тёре – народный суд.

переложить на хозяина поломанной ноги козленка и чтобы он всем выплатил», – сказали и вынесли свое решение.

Одни – опечаленные, другие – повеселевшие, сельчане вернулись по домам.

В том году зима наступила рано. Мальчики на льду с наслаждением играли в альчики. Орадада вышел в дорогу и встречает мальчиков. Спор мальчиков о том, чей альчик опередил, дошли до его уха.

– Алан*, ты, оказывается, поступаешь как приговор Орадады, – говорит один мальчик-голодранец.

Орадада слез с коня, и как будто бы подтягивает подпруги коня, слушает спор детей. Поняв, что его приговор мальчики посчитали несправедливым, он вызывает одного из них на беседу.

– Мальчик, Орадада братьям несправедливый суд вынес, говоришь? – спрашивает он.

– А что там он вынес, поломанная нога сама как смогла бы пойти? Его повели здоровые ноги и устроили пожар и в коше, и среди улей, а в конце и сами погорели. Какая вина могла быть в сломанной ноге? – спросил мальчик.

Орадада призадумался. Потом, сев на коня, вернулся обратно и, собрав Тёре и народ, рассматривает дело заново. Выплатить обязали не хозяину сломанной ноги, а хозяевам здоровых ног.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 332–333) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Основу сказки составляет архифабула справедливого судейства. На примере хромого козленка в сказке показываются хитросплетения судопроизводства, где правда и кривда могут таиться в самых неожиданных местах. Поначалу, на поверхностный взгляд, виновником пожара, уничтожившего ульи, может выступить травмированная нога козленка. Но, судья, вооруженный резонансной логикой, легко доказал, что виновники трагедии – здоровые ноги козленка, доставившие его к месту пожара.

* Алан – соплеменник.

КЁСЕ БЛА ЖАШЧЫКЪ

Эртте-эртте бир элде бир жарлы къатынны бир жангыз жашчыгы болгъанды. Ол къатынны бла жашчыкъны юйлеринде, бир гоппан будайдан башха, мирзеулер кълмагъан эди. Жашчыкъны анасы, ол будайчыгъын да берип, жашын тирменнге жибереди.

– Къайда да, жашым, – дейди ол къатын, – кёсе болгъан тирменнге барма.

– Ахшы, анам, бирда кёсе болгъан тирменнге кирмем, – деп, жашчыгы да сёз береди.

Будайчыкъны да улакъ къапчыкъ бла къолтукъ тубюне салып, жашчыкъ тирменнге жортуп кетди.

Тирменле боюнуна жетип: «Энди бу тирменнге кирейим», – дегенлей, аллына бир эриши кёсе чыгып къалды.

Жашчыкъ, аны кёргенлей, терк-терк атлап, алайдан озуп тебиреди.

– Жашчыкъ, къайры бараса? – деп сорду ол кёсе.

– Унуму тирменде тартыргъа, – деди жашчыкъ.

– Да мени тирменим бош турады, анда нек тартмайса? – деди кёсе.

– Угъай, анам кёсе болгъан тирменде тартма дегенди, – деп жууаплады жашчыкъ.

Кёсе, терк окъуна, къысха жол бла чабып, жашчыкъдан эсе алгъа жетип, экинчи тирменни аллында сюелди.

Жашчыкъ, былайда да кёсе сюелгенин кёрюп, арлакъгъа озуп тебиреди.

– Жашчыкъ, къайры бараса? – деп сорду биягъы кёсе.

– Унуму тирменде тартыргъа, – деди жашчыкъ.

– Мени тирменим бошду, анда тарт, – деди кёсе.

– Угъай, анам кёсе болгъан тирменде тартма дегенди, сени тирменингде тартырыкъ туююлме, – деди жашчыкъ.

Биягъы кёсе, къысха жолну (билип, – *Б.Б.*) жашчыкъдан алгъа жетип, тирменни аллында сюеледи. Жашчыкъ, кёсени кёрюп, арлакъны кетип тебиреди.

– Жашчыкъ, къайры бараса? – деп сорду кёсе.

– Унуму тирменде тартыргъа, – деп жууаплады жашчыкъ.

– Мени тирменим бошду, анда тарт, – деди кёсе.

– Угъай, анам кёсе болгъан тирменде тартма дегенди, сени тирменингде тартырыкъ туююлме, – деди жашчыкъ.

– Да, ахшы улан, мында кёсе болмагъан тирмен жокъду, сора сен къайсы тирменде тартырыкъса?

– Алай эсе, ол бек алгъа кёрген тирмениме барайым, баям, бирсиледен ол мажалыракъ болур, – деп, жашчыкъ артха айланып кетди.

Биягъы кёсе, жашдан алгъа жетип, тирменини аллында сюелип тура эди.

– Жашчыкъ тирменнгеми келесе? – деди кёсе.

– Хау, тирменнге келеме.

– Да ананг не айтыр, мени тирменимде тартсанг?

– Айтып, не айтырыкъды? Мында кёсе болмагъан тирмен жокъду сора уа!

– Алайды, ахшы жаш, алайды. Кел, мени тирменимде тарт, – деп чакьырды кесе.

Будайчыкьны тирмен кюфге кьуйдула, тирмен ташла, тыхар-мухур этип, тегерек бурула башладыла, канкурак да кьагьып-кьагьып, будай бюртюкчюклени кюфден тирмен ташны тешигине тюшюре башлады.

Кеп бармай, будай ариу акь ун болуп чыкьды, жашчыкь унну кьапчыкьчыгына кьуяр умут этгенлей, кесе:

– Тутчу, унунг иги ун болган эсе, бир керейим, – деп, ундан ууучуна алып, тюкюрюк мылы этип кердю.

– Асыры кьаты болду кере эдим, – деп, суучукь кьуйду. – Асыры хыра болду кере эдим, – деп, ундан кьошду.

Алай эте, битеу унчукьну суу бла кьатышдырып, тылы этди да бошады.

– Энди бу тылыны кетюрюпмю айланырыкьса, этмек этейик да, былайда сыгын отда биширейик, – деди кесе.

Ол, уллу сыгын от этип, этмекни табала бла кьызыу отха салды. Жашчыкь, тылыны этмек эте туруп да, этмекни табала бла отха сала туруп да, бир сез айтмай, кьарап турду.

Кесе этмек этерге, аны биширирге да уста эди. Аны кьолу аш этерге тап жарашханын, аны усталыгьын жашчыкь бек жаратды. Этмек бишгинчи, ауузун ачып, сез айтмазгьа кесине борч алды да, ол борчун бузмай толтурду.

Этмек бише башлагьаны аны ариу ийисинден билине башлады. Кесе табаны ачып кьарады. Кьараса, этмек, кьып-кьызыл бишип, адам кезюн алмазча, ариу зат болуп тура эди. Ол ариу бишген, алапат ийис этген этмек адамны аууз сууларын келтире эди.

Жашчыкь бишген этмекни, сермеп алып, кьолтукьгьа уруп, юйге кетерге башлады.

– Тохта, иги жаш, – дегенни айтды кесе, – бу иги этмекден мени да юлюшюмю бер.

– Не юлюш берликме мен санга? – деди жаш.

– Да мен санга керексизгеми этмек этип кюрешгенме?

– Ким тилеген эди сенден этмек эт деп?

– Ахшы, алай эсе, этмекни былай сал. Экибизден ким тап этюрюк айталса, этмек аныкьы болур, – деди кесе.

– Болсун. Алгьа сен айт! – деди жашчыкь.

– Мен, – деди кесе, – бу сен керген тирменимде бир кечеге жюз арба будай тартып чыкьган кечелерим болгьанды.

– Оу-у! Ол а этюрюкмюдо?! – деп кюлдю жашчыкь. – Энди кезиу мениди. Жаз башында, хар ким акьтереклерин ариулагьан заманда, бизни кьоншубуз да тереклерини бутакьларын жукьарта тебиреди. Аны кесген бутакьчыкьларындан бирин алдым да, юйге келтирдим. Сора, жерни кьазып, ол акьтерек бутакьны орнатдым. Суучукь кьуя, суучукь кьуя, ол терекни, ёсдюрюп, уллу этдим. Ол, ёсе-ёсе кетип, кекге жетди. Терегими кекге жетгенин билип, кесими да ары чыгьарлыгьым келди. Терек сыйдам эди, не кьол бла тутар, не аякь салыр жери жокь эди. Не амал этип чыгьаргьа бир да билмедим. Сора эсима бир зат тюшдю. Эсима тюшген а неди десенг, барып, гюрбежиден ат туякьладан чыгьарылган нал чюйлени жыйып келип, аланы уруп, терекге алай минерге кереклиси.



Ишни болжалгъа салмай, гюрбежиге бардым, жерге атылып тургъан эски нал чюйлени хуржунларыма жыйдым да, терегиме келип, чөгюнчю алып, ишлеп тебиредим. Чюйню ура да, мине, терек бла кёкге чыкъдым. Кёкге чыкъгъан да алай тынч тюйюлдю. Къыйын болса да, чыкъдым. Ой, чыкъсанг а, аллайгъа чыкъ! Тёп-төгерек, кёз тутхан къадарда, адамны басдыргъан будай, тенгиз чайкъалгъанча, чайкъала тура эди. Биргеме оракъ да ала чыкъгъан эдим да, мычый турмай, будай оруп башлады. Мен да энди арый ушайма деген заманда, аллымдан бир тюлкючюк чыгып, менден къача башлады. Алайлай оракъны сызып жибердим да, барып, арт аягына оракъ сапны бауу чырмашды, жарлы тюлкю, этер амал тапмай, оракъ ора башлады. Ол – оракъ оруп, мен – гысты къысып, кюн ортагъа дери ишледик. Къарап-къарагъынчы, ол уллу ёзен гыстыдан толду. «Энди бу тюлкю да бир солусун», – деп, тюлкюню солургъа бошлады. Къарасам, тюлкю къачып барады. «Аха, алаймыды этеригинг?» – деп, биягъы оракъны ызындан сызып жибердим да, барып, биягъы арт аягына оракъ бау чырмашды. Тюлкю оракъ оруп башлады, мен да, гысты къысып, тюлкюню ызындан къысха барама. Алай бла, ол уллу ёзенни хазнасын къоймай бошай кетгенде, тюлкючюкню ичи кюйюп ёлдю. Тюлкюню неден ёлгенин билир ючюн, мен аны ичин жардым. Ичин жарып къарагъанымда, тюлкюню къарынында – бир къагъыт. Ма ол къагъытда: «Кёсе, ётмек жашха къалады!» – деп жазылып тура эди.

Жашчыкъ, ётмекни къолтукъгъа уруп, кетип башлады.

– Шо, Аллах ючюн, бир къапдыр! – деп тиледи кёсе.

– Жанынг чыкъса да, къапдырмаз эдим, – деди жашчыкъ.

– Ананг ёлмесин, шо эки шай багъасы ётмекчик сат, – деп жалынды кёсе.

– Бер эки шайынгы! – деди жашчыкъ.

– Эки шайны юйде берирме, шёндю жанымда ахчам жокъду, – деди биягъы хыйлачы.

Жашчыкъ эки шай багъасы ётмек кесип, кёсеге берди. Къалгъанын а юйге алып келди. Жашчыкъ къыйырындан кесилген ётмекни юйге алып келгенинде, анасы:

– Ётмекни жартысы уа къайдады? – деп сорду.

– Эки шай багъасын кёсеге сатханма, – деди жашчыкъ.

– Кёсе берген эки шайынг а къайда? – деди жашчыкъны анасы.

– Кёсе юйде берирге айтханды, – деди жаш.

– Барып, бусагъатдан алып кел! – деп, анасы жашчыкъны кёсени юйюне жиберди.

Жашчыкъ кёсени арбазына келгенинде, кёсени къатыны юзгеле жыя тура эди.

– Кёсе юйдемиди? – деп сорду жашчыкъ.

– Юйдеди. Не этесе кёсени? – деп сорду къатыны.

– Эки шай берлик эди да, аны алыргъа келгенме.

– Ой харип, кёсени къайгъысы сени эки шайынг тюйюлдю. Ол ёле турады, – деди кёсени къатыны.

– Ай таланган, ёле тура эсе, жарлы кёсени кёре кетейим, – деп, жашчыкъ юйге кирди.



Кёсе, жатып, жан бере тура эди да, жашчыкъ аны кёюп кеталмады.

Кёсени кьатыны жашчыкъга:

– Бар да, маржа, бу жарлы кёсе иймансыз жан алып кетгинчи, бир эфенди чакъырып кел, – деп тиледи.

– Да сизни манга берирге эки шайыгъыз жокъду сора, эфендиге берирге ахча кьайдан табарыкъсыз? – деп сорду жашчыкъ.

– Охо, алай эсе, иймансыз ёлсун да кетсин, – деди кёсени кьатыны.

Жан бере тургъан кёсе осуятын эте башлады.

– Мен ёлсем, – деди кёсе, – кьабыр кьазар адамым жокъду. Ёлюгюмю, кьолан кийизге чулгъап, кешенеге салып кьоярсыз, – деп, жан берди.

Кёсе ёлдю, кьатыны жилиамсырады.

– Энди не этейик? – деп, кёлю бла сорду жашчыкъ.

– Да эшек арбаны жегейик да, ёлюгюн да кьолан кийизге чулгъап, кьабырлагъа элтейик. Сен болушмасанг, манга киши болушурукъ тьююлдю. Кёсени суйген адам жокъду, – деди кёсени кьатыны.

– Да болушайым, харип, болушайым, – деп, жашчыкъ эшекни арбагъа жекди.

Была экиси да, кёсени ёлюгюн арбагъа салып, кьабырлагъа жетдиле. Сора, элтип барып, ёлюкню бир эски кешенеге сукъдула. Кёсени кьатыны, арбаны да алып, юйюне кетди. Жашчыгъ'а кешене аллында олтуруп кьалды.

Кеч кире башлагъанда, кёсе башын кётюрюп кьарады. Олсагъатдан жашчыкъ:

– Кёсе, эки шайымы бер! – деп кьычырды.

Кёсе жангыдан «ёлдю» да, кешенеге тынчайды.

Кеч болуп, тегерек кьарангылыкъга тумаланганда, кёсе, жангыдан «тирилип», башын кётюрдю.

– Кёсе, эки шайымы! – деди жашчыкъ.

Кёсе башын кийиз тьююне букъдурду.

Кёсе, жашчыкъны кетерин сакълап, юйюне кьайтыргъа ашыгъып, жашчыкъ да кёсени кьобарын сакълап, экиси да бир бирни марлап турушадыла. Ол заманда юч урочу урлагъан затларын юлеширге кьабырлагъа келдиле. Ол аманлыкъчыла аланы былайда киши кёрмезлигин иги биле эдиле.

Урочула тонагъан затларын юлеше тебиредиле. Тоноу юлешу тюз кешене кьатында бардырыла эди. Урочула урланган затланы юч юлюш этип бошай келгенлей, арада бир алтын бичакъ кьалды. Аны юсюнде уллу даулаш болдула.

Даулаша келип, бир бирге сауут бла да темирчилешдиле. Ахырында ол урочуладан бири, бичакъны сермеп алып:

– Мен бу бичакъ бла бу ёлюкню, уруп, эки этип кьойсам, бичакъны манга беремисиз? – деп, бичакъ бла кьолан кийизге чулгъанган ёлюкню тууаргъа керилди.

Бичакъны кесине тиеригин сезгенлей, кёсе секирип кьопду. «Ёлюкню» кьопханын кёргенлей, урочула, хапчук-хабурларын да кёюп, аямай кьачдыла.

– Кёсе, эки шайымы бер! – деп башлады жашчыкъ.

Кёсе ол кьадар ырысхыны эки юлешип тебиреди, жашчыгъ'а:



– Эки шайымы, эки шайымы! – дегенлей турду.

Уручуланы кьоркьгъанлары бир кесек ётгенден сора, ол кешенеде не этилгенни билир умут этдиле. «Сен бар», «мен бар» болдула. Даулаша келгенде, аладан бирлери барып кьараргъа таукел болду.

Уручу, кьоркьа-кьоркьа, кешенеге жууукьлашды. Ол да кешенени терезесинден бери кьарагъанлай, кёсе, аны бёркюн сермеп алып, жашчыкьгъа:

– Ма, эки шайынг ючюн! – деп берди.

Уручу кьачып келди да, солууун да кючден ала, нёгерлерин болмагъанча кьоркьутду.

– Не болду? – деп сордула уручула нёгерлерине.

– Болуб'а, не боллукьду? Кьабырлада ёлюкле битеу кьобуп, ол кьадар ырысхыдан адам башындан экишер шай жетдиралмай кюрешедиле. Мени бёркюмю да бирлерине эки шай ючюн бердиле. Биз былайдан терк кьурумасаць, ала бизни да юлешип кьоярыкьдыла, – деди да, уручула алайдан думп болдула.

Кёсе, ырысхыны, юлешип, эки тебе этип, бирин жашчыкьгъа берди, бирсин а кесине алды.

Алай бла жашчыкь юйюне эки шайын да, аны юсюне башха ырысхычкь да алып кьайтды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкьар халкь жомакьла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 334–338 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Кёсе бла жашчыкь» деген юйюр-жашау-турмуш жомакьда кьужур (авантюра) жомакьны илишанлары бардыла. Анда иш тирменде бла кьабырлада барады. Жашчыкь хыйлачы тирменчиден кесини эки шайын артха алыргъа излеп, кьабырлагъа тюшеди. Ол тохтамай: «Мени эки шайымы кьайтар», – деп, кьадалып айланады. Алтынны урлагъан гудучула, кьадарны буйругъундан, ол заманда кьабырлада болгъандыла. Аны ёлген адамла айтадыла деп, ала уллу сагъышха кьалып, кьоркьуп, алтынларын да атып, алайдан кьачып кетедиле. Битеу харакет а жашчыкь бла тирменчиге кьалады.

КЁСЕ* И МАЛЬЧИК

Давным-давно в одном селении у бедной женщины был единственный сын. У этой женщины с сыном в доме кроме пшеницы в гоппане** не оставалось зерна. Мать отдала своему сыну остаток пшеницы и отправила его на мельницу.

– Ни в коем случае, сын мой, – говорит эта женщина, – не ходи в мельницу, где находится кёсе.

– Хорошо, мама, ни за что не зайду в мельницу, где будет находиться кёсе, – мальчик дал слово матери.

* Кёсе – безбородый. Персонаж из сказок, отличающийся хитростью и жадностью.

** Гоппан – деревянная чаша.

Остаток пшеницы в капчыке* из козленка засунув в подмышку, мальчик побежал в сторону мельницы.

Добежав до берега, где находилась мельница: «Теперь зайду в эту мельницу», – когда он сказал, навстречу ему вышел страшный на вид кёсе.

Когда мальчик его увидел, он тут же начал быстро-быстро оттуда уходить.

– Мальчик, куда ты идешь? – спросил у него кёсе.

– На мельницу перемолоть муку, – ответил мальчик.

– Да, у меня же мельница простаивает, почему здесь нельзя перемолоть? – спросил кёсе.

– Нет, моя мама предупредила: в мельнице, где находится кёсе, не надо молотить, – сказал в ответ мальчик.

Кёсе, тут же побежав через кратчайший путь, добравшись раньше мальчика, стоял перед второй мельницей.

Мальчик, увидев, что здесь тоже стоит кёсе, начал уходить подальше.

– Мальчик, куда ты идешь? – спросил опять тот же кёсе.

– На мельницу, перемолоть муку, – ответил мальчик.

– У меня мельница пустует, здесь можешь перемолоть, – сказать кёсе.

– Нет, моя мама сказала, в мельнице, где будет кёсе, не надо молотить, поэтому, в твоей мельнице не буду молотить, – ответил мальчик.

Опять тот же кёсе, через кратчайший путь раньше мальчика добежав, стоял перед следующей мельницей. Мальчик, увидев кёсе, начал уходить от него подальше.

– Мальчик, куда ты идешь? – спросил кёсе.

– На мельнице перемолоть в муку, – ответил мальчик.

– У меня мельница свободна, можешь перемолоть там, – сказал кёсе.

– Нет, моя мама сказала, в мельнице, где будет кёсе, не надо молотить, поэтому на твоей мельнице не буду молотить, – ответил мальчик.

– Да, добрый молодец, здесь без кёсе нет мельницы, поэтому, на какой ты мельнице сможешь еще перемолоть?

– Если так, я пойду на мельницу, которую увидел в самом начале, наверное, она получше остальных, – сказал мальчик и повернувшись, пошел обратно.

Опять тот же кёсе, прибыв раньше мальчика, стоял перед своей мельницей.

– Мальчик, ты пришел на мельницу? – спросил кёсе.

– Да, пришел на мельницу.

– А что твоя мать скажет, если ты обмолотишь на моей мельнице?

– А что она сможет сказать? Раз здесь нет мельницы без кёсе!

– Это так, добрый молодец, это так. Иди сюда, обмолоти на моей мельнице, – сказал кёсе и позвал его к себе.

Остаток пшеницы насыпали в мельничный кюф**, жернова с шумом начали вращаться по кругу и колотушки все время ударяя зерна пшеницы об кюф, начали направлять их в щель мельничного камня.

Через немного времени из пшеницы получилась красивая, белая мука, и когда мальчик захотел муку насыпать в свой капчык, кёсе:

* *Капчык* – мешок (из снятой чулком шкуры овцы, козы).

** *Кюф* – загром.



– Дай сюда, посмотрю, хорошая ли у тебя получилась мука, – сказал он, и, взяв в свою ладонь муку, смешав ее со своей слюной, начал проверять.

– Я смотрю, слишком твердой получилась, – сказал он и добавил водички. – А теперь вижу, слишком жидкой получилась, – сказал и добавил муки.

Таким образом, всю муку размешав с водой, превратил полностью в тесто.

– Теперь вот это тесто будешь с собой носить что ли, сейчас выпечем хлеб, здесь на кизячном огне, – сказал кёсе.

Он разжег большой огонь из кизяка и тесто на сковородах положил на горячий огонь. Мальчик, когда он из теста делал хлеб, и когда хлеб на сковородах клал в огонь, не сказал ни одного слова, просто глядел.

Кёсе был мастером печь хлеб. То, что его руки умеючи готовят еду, его мастерство мальчику сильно понравилось. Пока хлеб не испечется, он дал себе слово, что рот не откроет, слово не скажет и, исполнив свое обещание, он продержался.

То, что хлеб выпекается, было понятно по его вкусному запаху. Кёсе, подняв сковороду, заглянул туда. Когда посмотрел, то увидел, хлеб испекся красно-красным, на загляденье человеку, выглядел прекрасно. Так красиво испекся и чудесные шли запахи от хлеба, что у человека текли слюны.

Мальчик, схватив испеченный хлеб, засунув в подмышку, собрался уходить домой.

– Подожди, добрый молодец, – сказал ему кёсе, – от этого хлеба выдели мою долю.

– Какую долю я тебе должен выделить? – спросил юноша.

– Да я тебе просто так что ли испек хлеб?

– Кто тебя просил испечь хлеб?

– Хорошо, если так, положи хлеб сюда. Кто из нас круче вранья расскажет, того и будет хлеб, – ответил кёсе.

– Хорошо. Сначала ты рассказывай! – сказал мальчик.

– Я, сказал кёсе, – бывало, вот на этой своей мельнице, которую ты видишь, за одну ночь сто арб пшеницы молотил, были такие ночи.

– Оу-у! Разве это вранье?! – рассмеялся мальчик. – Теперь моя очередь. Ранней весной, когда все начали приводить в порядок тополя, и наш сосед начал в своих деревьях ветки обрезать. Одну из веток, которые он обрезал, я взял и принес домой. После этого, выкопав яму, ту ветку тополя посадил туда. Все время поливая, то деревце вырастил, и оно стало большим. И оно так и росло-росло и дошло до неба. Узнав, что мое деревце дошло до неба, мне самому захотелось туда подняться. Дерево было гладкое, невозможно было ни рукой держать, ни ногой ступить. Каким способом можно было туда подняться, я не знал. После этого мне вспомнилось такое. А вот что вспомнилось, что надо сходить в кузницу, там взять подковные гвозди, выдернутые из лошадиных копыт, собрать их и принести, и что надо их прибить, и таким способом залезть на дерево.

Дело не оставляя на потом, сходил на кузницу, там собрал в карманы валявшиеся на земле старые подковные гвозди, вернулся к своему дереву, взял молоток и начал работать. Забивая гвоздь, поднимаясь по дереву, я взобрался на небо. Взобраться на небо не так уж и легко. Хоть и было

тяжело, но поднялся. Ой, этот подъем, это было восхождение! Кругом, все, что можно было охватить взглядом, росла высокая пшеница, что в ней не видно было даже человека, она колыхалось как море. Когда я поднимался наверх, я собой взял серп, не мешкая сразу, начал косить пшеницу. В то время, когда я решил, что меня настигает усталость, впереди выскочила одна лисичка и начала от меня убегать. И я тут же бросил на нее серп, и тогда, на ее заднюю ногу завязалась веревка от ручки серпа, бедная лиса, не зная, что делать, начала косить серпом. Она косила серпом, а я – завязывая снопы, так потрудились до обеда. Не успели оглянуться, это огромное ущелье наполнились пшеничными снопами. «Пускай теперь и эта лиса отдохнет», – решил я и отпустил лису на отдых. Когда оглянулся, то увидел, как лиса убегает. «Ага, вот так ты поступаешь?» – сказал я, и бросил на нее серп, еще раз веревка серпа зацепилась за ее заднюю ногу. Лиса начала косить серпом, и я начал, завязывая снопы, быстро идти следом за лисой. Итак, в том большом ущелье, не оставляя земного богатства, когда почти все закончили, лисичка умерла от внутренней жажды. Чтобы узнать, отчего умерла лисичка, я разрезал ее внутренности. Когда я ее разрезал внутренности и посмотрел, в животе лисы – какая-то бумага. И вот на той бумаге: «Кёсе, хлеб принадлежит юноше!» – так было там написано.

Мальчик, засунув хлеб в подмышку, начал уходить.

– Ради Аллаха, дай один раз откусить! – начал просить кёсе.

– Если ты испустил бы и душу, я бы не дал тебе откусить, – сказал мальчик.

– Чтобы твоя мать была всегда жива, пожалуйста, продай хлебушка на десять копеек, – сказал кёсе и начал просить.

– Давай свои десять копеек! – ответил мальчик.

– Десять копеек я тебе отдам дома, сейчас при себе денег нет, – ответил опять тот же хитрец.

Мальчик, за десять копеек отрезал хлеба и дал кёсе. А остальное принес к себе домой. Когда мальчик принес домой хлеб с отрезанным краем:

– А где половина хлеба? – спросила его мать.

– По стоимости за десять копеек продал кёсе, – ответил мальчик.

– А где десять копеек, которые дал тебе кёсе? – спросила мать мальчика.

– Кёсе обещал дать дома, – ответил мальчик.

– Сходи и прямо сейчас принеси сюда! – сказала мать и отправила мальчика домой к кёсе.

Когда мальчик пришел ко двору к кёсе, жена кёсе собирала щепки.

– Кёсе дома? – спросил мальчик.

– Дома. Зачем тебе кёсе? – спросила его жена.

– Он должен был мне дать десять копеек, я пришел забирать их.

– Ой, бедняжка, то, что тревожит кёсе, не твои десять копеек. Он умирает, – сказала жена кёсе.

– Ай, непутевая, раз он умирает, я должен проведать бедного кёсе, – сказал мальчик и вошел в дом.

Кёсе лежал и готовился испустить дух, поэтому, мальчик не мог оставив его, уйти.



Жена кёсе мальчику:

– Сходи, маржа*, пожалуйста, этот бедный кёсе пока не умер без иймана**, пригласи сюда одного из эфенди, – сказала она с просьбой.

– Да, у вас нет десяти копеек, чтобы мне дать, а для эфенди, где вы найдете денег? – спросил у нее мальчик.

– Да, ладно, если так, пусть умрет и уходит без иймана, – сказала жена кёсе.

Кёсе, который был на издыхании, начал делать свое завещание.

– Когда я умру, – сказал кёсе, – у меня нет человека, чтобы выкопали мне могилу. Мой труп заверните в пестрый войлок и оставьте в кешене***, – сказал он и испустил дух.

Кёсе умер, его жена всплакнула.

– Что теперь будем делать, – чистосердечно спросил мальчик.

– Ну, теперь запряжем ослика в арбу и труп завернем в пестрый войлочный коврик и отвезем на кладбище. Если ты мне не поможешь, мне никто не поможет. Нет человека, который бы любил кёсе, – сказала жена кёсе.

– Да, конечно, помогу, бедняжка, помогу, – сказал мальчик и запряг ослика в арбу.

Они вдвоем, погрузив труп кёсе в арбу, дошли до кладбища. После этого понесли его и труп засунули в один из старых кешене. Жена кёсе забрала арбу и отправилась домой. А мальчик остался сидеть перед кешене.

Когда начало темнеть, кёсе подняв голову, оглянулся. И тут же мальчик:

– Кёсе, верни мои десять копеек! – закричал.

Кёсе заново «умер» и успокоился в кешене.

Когда стало совсем темно, и вся округа окунулась как в темный туман, кёсе, «ожив», снова поднял голову.

– Кёсе, мои десять копеек! – спросил мальчик.

Кёсе спрятал свою голову под низ войлочного коврика.

Кёсе, торопясь вернуться домой, дожидался, когда уйдет мальчик, и мальчик, в ожидании, когда поднимется кёсе, проводили время, выслеживая друг друга. В это время три вора, чтобы поделить наворованное, пришли на кладбище. Эти преступники очень хорошо знали, что их здесь никто не увидит.

Воры начали делить наворованное имущество. Дележ награбленного имущества они вели прямо рядом с кешене. Воры, когда все украденное заканчивали делить на три части, посередине оказался один золотой нож. Вокруг него возник большой спор.

Во время ссоры между собой они дошли и до оружия. В конце один из тех воров, быстро схватив нож:

– Если я сейчас ударом этого ножа вот этот труп разрублю пополам, то тогда вы отдадите мне этот нож? – спросил и ножом собрался завернутый в пестрый войлочный ковер труп раскромсать.

Когда кёсе понял, что нож его самого достанет, он быстро вскочил и встал. Когда воры увидели, что «труп» поднялся, они оставив все имущество, оттуда быстро убежали.

* *Маржа* – обращение-просьба со значением «пожалуйста».

** *Ийман* – верование.

*** *Кешене* – усыпальница.

– Кёсе, верни мои десять копеек! – начал разговор мальчик.

Кёсе начал делить поровну огромное количество имущества, а мальчик:

– Мои десять копеек, мои десять копеек! – все время повторял.

Когда страх воров немного поостыл, они решили узнать, что творится там, в кешене. «Ты сходи или я схожу», – начали они друг на друга кивать. Во время ссоры один из них пообещав, вознамерился сходить и все разузнать.

Вор, побаиваясь, приблизился поближе к кешене. Когда он взглянул из окна в эту сторону, кёсе, быстро схватив его шапку, мальчику:

– Вот, вместо твоих десять копеек! – сказал он и вручил ему.

Вор, оттуда сбежав, с трудом дыша, пришел к ним и, как никогда, напугал своих друзей.

– Что случилось? – спросили вору у напарника.

– А что могло случиться? На кладбище все трупы ожили, от того большого количества имущества на каждого человека не могли обеспечить по десять копеек. И мою шапку отдали одному из них вместо десяти копеек. Если мы отсюда быстро не исчезнем, они и нас могут поделить, – сказал он и вору оттуда быстро сгинули.

Кёсе все имущество так поделил, что получилось два холма, один отдал мальчику, а другой забрал себе.

Таким образом, мальчик вернулся домой, забрав свои десять копеек, и сверх того, другого имущества.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 334–338) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка с элементами авантюрной сказки. Действие происходит на мельнице и на кладбище. Мальчик, желая отобрать у хитрого мельника свои десять копеек, попадает на кладбище и постоянно приговаривает: «Верни мои десять копеек!» Грабители, волею судьбы оказавшиеся в этот момент на кладбище, подумали, что это требование мертвецов. Они испугались, побросали золото и убежали, оставив сокровища мальчику и мельнику.



БИЛГИЧЛЕ

Бир элде юч эгиз кьарындаш жашап болгъандыла. Ала бир ёгюзню багып семиртгендиле. Ол ёгюз, асыры жылтырагъандан, кёз кьаматханды. Кьарындашла аны суу ичерге жиберселе, эл анга тамаша этип кьарай эди. Аллаи семиз ёгюз бу тийреледе ёмюрден бери да болмагъан эди.

Бир кече ёгюз урланып чыгъады. Жашла, эрттенликде ёгюзню орунунда тапмай, бушуу-бушман этедиле. Сора, эрлай кьуралып, ёгюзню излей, жолгъа чыгъадыла.

Бир уллу ёзенни ичи бла ызланнган жолну тутуп баргъанлай, жашла эрттен чыкьда сюзюле тургъан чаллыкьгъа эс бурадыла. Чыкь кьалын тюшгенден, биченликде ызла кёзге уруна тура эдиле. Кьарындашладан бири:

– Былайтын кьадыр озгъанды, – дейди.

Экинчиси:

– Ол кьадыр чубур эди, – дегенни айтады.

Ючюнчюсю да:

– Аны бир кёзю уа сокьур эди, – деп кьошады.

Эрттен аяз бетлерин сылай, жан-жанларындан чыпчыкьла да жырлай, чибинле да жангы кьозгъала, жолоучула, тохтамай, кетип барадыла.

Былагъа биреулен жолугъады да:

– Жол болсун, ахшы уланла! – деп саламлашады.

– Ой, сау бол! Жол Аллах берсин! – дейдиле кьарындашла да.

– Жашла, былай ары хайыуан озуп иш кёрюрмю эдигиз? – деп сорду ол адам.

– Сен излеген кьадырмы эди? – деди жашладан бири.

– Кьуйругьу уа чубурму эди? – деди экинчилери.

– Кёзю да сокьур? – деп кьошулду ючюнчюлери да.

– Тамам алайды. Кьалайда кёрдюгюз?

– Тейри, биз кёрмегенбиз, – деп, жашла бир аууздан жууапладыла.

– Кьалай кёрмегенсиз?

– Кёрмегенбиз, – дедиле кьарындашла.

– Ай, юйюгюзге ахшылыкь кирликле, кьадырмы эди деп соргъанла сиз туююлмю эдигиз?

– Биз эдик.

– Алай эсе, кьалайда кёргенигизни айтыгьыз, – деди жолоучу.

– Биз сени кьадырынгы кёрмегенбиз сора, кьалайда кёргенибизни кьайдан айталайыкь?

Даулаш кёпге созулду, жолоучу ишекли болду. «Была кьадырны жоюп, энди тюзюн айтыргъа суймейдиле», – деп, эсине келди да:

– Не этген эсегиз да, мени кьадырымы сиз жойгъансыз ансы, кёрмеген малыгьызыны сокьур болгъанын да, чубур болгъанын да кьайдан биллик эдигиз? Келигиз Тёреге. Ол бизни ортабызны айырыр, – деп, жолда жолукьгъан киши жолоучуланы төречиге келтирди.

Төречи жашладан жумушларын айтырларын изледи.

– Бизни санга бир жумушубуз да жокьду, – дедиле жашла.

– Сени уа манга не жумушунг барды, Аллахны сюери боллукь? – деп, төречи ол кишиге айланды.

– Бу ючюсю мени тас болгъан къадырымы кѳргендиле да, энди къайда кѳргенлерин айтыргъа унамайдыла. Быланы бир хаталары жетмесе, нек айтырыкъ тѳююл эдиле? – деди даучу.

Тѳречи жашлагъа:

– Сиз къадырны къайда кѳрген эдигиз? – деп сорду.

– Биз аны кѳрмегенбиз, – дедиле жашла.

– Сора аны къадыр болгъанын къалай билгенсиз?

– Жибиген жолда хайыуанны ызлары ариу сакъланган эдиле, ол жолда, андан башха, ыз жокъ эди. Ол туякъ тамгъала ат аякъ ыздан гитчерек, эшек аякъ ыздан уллуракъ эдиле. Алай болса уа, къадырны ызы боллугъун билген къыйын тѳююл эди, – дедиле жашла.

– Ол болсун. Сокъур болгъанын а неден билдигиз?

– Жолда отлай баргъан хайыуан эки жанына да айланып отлайды, аны ким да биледи. Алай а хайыуан сокъур болса, ол кѳрген кѳзю айланган жанын отлап барады ансы, сокъур кѳзю болгъан жанын отламайды. Ол къадыр да бир жанына айланып отлагъанды ансы, бирси жанында отлагъан ызы жокъ эди.

– Ол да хайыр. Чубур болгъанын а къалай билдигиз?

– Чыкъда баргъан хайыуанны тѳрт аягъы тѳрт ыз къояды, къуйругъу да, сѳйрелип, ыз этип барыргъа керекди. Бу жолда уа бешинчи ыз кѳрюнмей эди. Ма аны ючюн биз ол къадыр чубур болур эди деп ойлагъанбыз.

– Тѳюз айтасыз, жашла, барыгъыз жолугъузгъа, – деп, тѳречи бу жашланы бошлап къойду.

Жашла, ѳгюзню излеи кетип бара, жолда бир чыпчыкъчыкъ былай жилигъанын эшитип, къулакъ салдыла:

– Жашай эдиле бир элде юч эгиз,

Багъа эдиле ала бир ѳгюз.

Болгъан эди ол хайыуан бек семиз,

Хайырланалмадыла андан юч эгиз.

«Бу хайырсыз чыпчыкъ да бизни масхарайды. Не ѳлюрбюз, не да ѳгюзюбюзню табарбыз, алайсыз юйге къайтыу жокъду!» – деп, къарындашла алгъа бютѳнда таукел болдула.

Бара барып, бир уллу элни къыйырындан кирдиле да, арбазы адамдан толуп тургъан бир ариу межгитни кѳрдюле. Сора:

– Ёгюзюбюзню урлагъан киши былайда болур! – деп, бир аууздан къычырдыла.

– Аны урлагъан кишини эки кѳзю кѳк болур, – деди бир жаш.

– Аны эки кѳзю кѳк болса, сакъалы сары болмай амалы жокъду, – дегенни экинчи жаш айтды.

– Эки кѳзю кѳк болса, сакъалы сары болса, аны аты да Сосурукъа болмай амалы жокъду, – деди ючюнчю эгиз.

Жашла жамауатха жууукъ келдиле да, салам бердиле. Жамауат жашланы саламларын алды. Межгит аллында узун шинтикде олтургъан намыслы къартланы ортасында юсю-башы да ушагъыулу бир кѳккѳз, сарысакъал киши барды. Жашладан бири, ол кишиге жууугъуракъ барып:

– Сосурукъа, былай бир келсенг эди, сени бла бир кенгешир ишчигибиз бар эди, – дегенлей, ол кѳккѳз киши, секирип къобуп, жашланы алларына келди.



Бир кесек бир жанлы туруп, жашла Сосурукъаны ортагъа алдыла да:

– Бизни ёгюзюбюзню не этгенсе? – деп сордула.

– Мен сизни ёгюзюгюзню кёрмегенме.

– Биз жалгъан сёзлю адамладан туююлбюз, ишни тюзюн билмей, адамны керексиз сёз бла жанын къыйнамаучубуз. Ёгюзню бусагъатдан къолубузгъа берип къоймасанг, иш аманнга кетерге болур, – дедиле эгизле.

– Жашла, – деди жумушагъыракъ ауаз бла Сосурукъа, – энди былайда дауур этмегиз да, юйге жууукъ болугъуз! Ёгюзню юсюнден да юйде сёлеширбиз.

Сосурукъа, эгизлени юйге элтип, хан къонакъланыча къубултду. Къонакълыкъгъа къой сойду. Жашланы кеслерин бир энчи отоуда олтуртдула да, эшик юсюне бир сынчы салдыла.

Эт бишип, тепсиге хант келгенде, эгизле этге, гыржыннга, Сосурукъаны кесине да бирер чурум тапдыла:

– Бу гыржын къабырлада битген будайны унундан этилгенди, – деди бир эгиз.

– Бу эт а итле бла ёсген къойну этиди, – деди экинчи эгиз.

– Бу киши кеси да неяхсыз туугъанды, – деди ючюнчю эгиз.

Эшик аллында жашырын тынгылап тургъан сынчы бу хапарны Сосурукъагъа айтды. Ол, кесини тирменчисин чакъыртып:

– Бу бусагъатда тартылгъан унубуз къайда битген будайданды? – деп сорду.

– Ол а къабырлада битген будайданды, – деди тирменчи.

Сосурукъа терк окъуна къойчусун да чакъыртды.

– Ол къонакълыкъгъа союлгъан къой къайда ёсген эди?

– Ол а, – деди къойчу, – анасындан ёксюз къалып, итле бла аш ашап ёсген эди.

Мычымай, анасына барып, Сосурукъа:

– Анам, мени атам бармы эди? – деп сорду.

– Атанг болмай а, атанг бар эди, алай сен неяхсыз туугъан эдинг. Бийибиз неях этдирирге унамай, атанг бла мен бек кёп къыйналгъан эдик.

Сосурукъа жашланы билгичле болгъанларын ангылады. Сора, ала олтургъан отоугъа келип:

– Жашла, мен сизни билгичле болгъаныгъызны билеме. Энди бир сынап кёрейим да, ол сынаугъа чыдасагъыз, таза билгичлесиз. Андан къутулсагъыз, ёгюзню да берип жибереме, – деди.

– Сына, сына! Биз хазырбыз! – дедиле къарындашла.

– Мени къолумдагъы не затды?

– Сени къолундагъы тегерек затды, – деди эгизледен бири.

– Ол тегерек болса, аны тышы къаты болур, – деди эгизлени экинчиси.

– Ол тегерек болса, аны тышы да къаты болса, аны ичи да татлы болур, – деди эгизлени ючюнчюсю.

– Билдигиз, – деди Сосурукъа, къолун ачып, анда жашырып тургъан къозну кёргозте. – Энди, жашла, бу ёгюз сизни халал хакъыгъыз болгъанына мен толугъа ийяндим. Ёгюзюгюзню сюрюп, ахшы жолгъа, къууанч жерге барыгъыз! – деп, билгич жашланы жолларына ашырды.



Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 338–341 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

«Билгичле» деген жашау-турмуш жомакъда акъылгъа уллу сый бериледи. Аны бла бирге адамны кѣп тюрлю белгилени, ышанланы магъаналарын ачыкълай билгени, этилген ишни чурумуне затда болгъанын ангылагъаны да сейирге къалдырады.

Юч эгиз къарындашчыкъны ёгюзлерин урлагъанларында, ала кѣзге кѣрюнмеген кѣп тюрлю белгиле бла гудучуланы кимле болгъанларын тохташдырадыла.

ВЕДУНЫ

В одном селении жили три брата-близнеца. Они держали одного быка и откормили его. Этот бык так сильно блестел, что глаза слепил. Когда братья его выпускали на водопой, все село на него глядело с удивлением. Настолько жирного быка издавна не было в этой округе.

В одну из ночей быка украли. Ребята, утром не обнаружив быка в загоне, сильно загоревали. После этого они, быстро собравшись на поиски быка, отправились в путь.

Когда они шли через большое ущелье, сквозь проложенную тропу, на утреннем инее обратили внимание на колыхающуюся траву. Иней выпал настолько глубоким, что в густой траве следы были явными. Один из братьев:

– Здесь проходил мул, – сказал.

Второй:

– У этого мула хвост был коротким, – ответил.

И третий:

– Он был на один глаз слеп, – добавил.

Утренний ветер гладил их лица, со всех сторон пели птицы, и мухи только начинали шевелиться, путники не останавливаясь, продолжали свой путь.

Им встретился другой путник:

– Чтобы дорога ваша была счастливой, добры молодцы! – поздоровались они.

– Ой, спасибо! Хороший путь пусть Аллах даст! – ответили братья.

– Ребята, в ту сторону чтобы животное проходило, вы не заметили? – спросил тот человек.

– То, что ты ищешь, был мул? – спросил один из ребят.

– А хвост был коротким? – спросил второй.

– На один глаз слеп? – присоединился третий.

– Точно так. Где видели?

– Тейри*, мы не видели, – ответили ребята одновременно.

– Как вы не видели?

– Не видели, ответили братья.

* Тейри – верховное божество в язычестве.

– Эй, чтобы в ваших домах присутствовало всегда добро, не вы ли спрашивали, не мул ли был?

– Мы спрашивали.

– Если так, говорите, в каком месте видели? – спросил путник.

– Мы твоего мула не видели, поэтому, как мы можем сказать, где видели?

Спор продолжался долго, и путник в них засомневался. «Они мула потратили, а теперь не хотят правду говорить» – подумал он.

– Что-то вы сделали, моего мула вы израсходовали, а то, откуда вам знать, что животное, которого вы не видели, что он слеп, что хвост короток. Пойдемте в Тёре*. Там они нас рассудят, – сказал путник, который встретился им по дороге, и привел их к судье.

Судья приготовился выслушать проблемы молодых людей.

– У нас к вам нет никакого дела, – ответили молодые люди.

– А тебя ко мне какие проблемы привели, чтобы Аллах тебя возлюбил? – спросил представитель тёре и обратился к тому мужчине.

– Вот эти трое увидели моего пропавшего мула, а теперь не хотят признаться, где видели. Если они не повинны в этом, почему бы они не рассказали? – спросил обвинитель.

Представитель тёре молодым людям:

– Где вы видели мула? – спросил он.

– Мы его не видели, – ответили молодые люди.

– Тогда, как вы узнали, что он был мул?

– На влажной дороге следы животного хорошо сохранились, на той дороге, кроме них, других следов не было. Следы от его копыт были поменьше, чем у лошади, и побольше, чем следы у осла. В таком случае не трудно было догадаться, что это были следы от мула, – ответили молодые люди.

– Пусть будет так. А что он был слеп, откуда вы узнали?

– Животное, которое идет по дороге, пасется, оборачиваясь по обе стороны, это знает каждый. А если животное слепое, оно пасется стороной, куда зрячий глаз смотрит, на той стороне, где слепой глаз, не пасется. И тот мул пасся одной стороной, а иначе, по другую сторону, что он пасся, следов не было.

– Пусть это тоже будет так. А откуда вы узнали, что у него хвост короткий?

– У животного, который идет по инею четыре ноги оставляют четыре следа, и хвост, который тянется за ним, должен оставлять след. А в этот раз пятого следа не было видно. И поэтому мы решили, что у этого мула хвост короткий.

– Вы говорите правильно, молодые люди, ступайте своей дорогой, – сказал представитель тёре и отпустил молодых людей.

Молодые люди, когда шли, разыскивая быка, по пути услышав плач птички, прислушались:

– Жили в одном селении трое близняшек,

Откармливали они одного быка.

И это животное стало очень жирным,

И не смогли трое близняшек им воспользоваться.

* Тёре – третейский суд.

«И эта бестолковая птичка над нами издевается. Или умрем, или найдем нашего быка, иначе нам нет возврата домой!» – сказали братья и еще больше настроились идти вперед.

Все время передвигаясь, они пришли к краю одного селения и увидели красивую мечеть, во дворе которой было много людей. После этого:

– Мужчина, который украл нашего быка, наверное, находится здесь! – прокричали они хором.

– У мужчины, который украл его, глаза должны быть синими, – сказал один молодой человек.

– Если у него глаза синие, то борода обязательно должна быть рыжей, – высказал свое мнение второй молодой человек.

– Если два глаза синие и борода рыжая, то его имя непременно должно быть Сосурука, – сказал третий близнец.

Молодые ребята подошли поближе к людям и поздоровались. Народ принял приветствие этих ребят. Перед мечетью на длинной скамейке, среди сидевших почетных пожилых людей находился прилично одетый один голубоглазый, рыжебородый мужчина. Один из ребят, подойдя к этому мужчине:

– Сосурука, подойди-ка сюда, у нас к тебе есть дело, – когда он так сказал, этот голубоглазый мужчина, тут же вскочив, пошел навстречу этим ребятам.

Оставаясь чуть в стороне, ребята, окружив Сосурука:

– Куда ты подевал нашего быка? – спросили они.

– Я не видел вашего быка.

– Мы не из тех людей, которые говорят неправду, пока мы не узнаем суть дела, не осторожным словом душу человека не расстраиваем. Если быка, прямо сейчас, не вручишь нам в руки, то дела будут обстоять очень плохо, – сказали близнецы.

– Молодые люди, – сказал Сосурка мягким голосом, – давайте здесь не поднимайте шум, приходите к нам домой! О быке поговорим дома.

Сосурка отвел братьев-близнецов к себе домой и принял их как гостей-ханов. Зарезал им барашка. И самих ребят поместили в отдельной комнате, и у двери выставил наблюдателя.

Когда мясо сварилось, и подали к столу кушанье, близнецы нашли по одному недочету в мясе, хлебе и самом Сосуруке:

– Этот хлеб изготовлен из муки пшеницы, выращенной на кладбище, – пожаловался один близнец.

– А вот это мясо из овцы, которая содержалась с собаками, – сказал второй близнец.

– И сам этот мужчина, незаконнорожденный, – сказал третий близнец.

У двери тайком стоял и слушал наблюдатель, который все это рассказал Сосуруке. Он вызвал к себе своего мельника:

– Только что обмолотой муки пшеница где выращена? – спросил он.

– Эта пшеница была выращена на кладбище, – ответил мельник.

Сосурука тут же вызвал своего чабана.

– Овцу, которую вы зарезали гостям, где была выращена?

– Она, – ответил чабан, – от матери оставалась сиротой, и выросла, питаясь вместе с собаками.



Дальше Сосурука пришел к матери:

– Мама, у меня был отец? – спросил он.

– Как же без отца, был у тебя отец, однако, ты являешься незаконнорожденным. Наш князь не давал нам провести обряд бракосочетания, поэтому твой отец, и я долго мучились.

Сосурука понял, что эти молодые люди ведуны. После этого он вошел в комнату, где они сидели:

– Ребята, я знаю, что вы ведуны. Я еще раз испытаю вас, и если вы одолеете это испытание, то вы настоящие ведуны. Если вы справитесь с этим, я вас отправляю вместе с быком, – сказал он.

– Испытай, испытай! Мы готовы! – сказали братья.

– Что находится в моей руке?

– В твоей руке находится что-то круглое, – ответил один из близнецов.

– Если это круглое и снаружи твердое, то внутри должно быть вкусным, – сказал третий из близнецов.

– Вы отгадали, – сказал Сосурука, раскрывая свою ладонь и показывая спрятанный там орех. – Теперь, ребята, я полностью уверен, что этот бык принадлежит вам по праву. Погоняя своего быка, отправляйтесь в добрый путь, к радостному краю! – сказал он и отправил в путь ребят-ведунов.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 338–341) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В данной семейно-бытовой сказке утверждается культ разума. Здесь опоэтизирована способность человека читать знаки, устанавливать причинно-следственную связь, следовать логике. Трое близнецов-братьев, у которых украли быка, по многочисленным, подчас невидимым глазу знакам вычислили вора.



БУЗОУЧУ БЛА ШАЙТАН

Чопай, эрттенликде бузоулары кютерге сюрсе, агъачда чыпчыкълары жырлагъанларына, аланы сызгъыргъанларына бек сейирсинип тынгылаучу эди. Бюгюн да ол жашил кырдыкда сыртындан тюшюп, бузоула да отларгъа къадалып тургъан кезиуде, тюк басхан къынгыр бутларын да баймакъ баса, аяз ургъаны сайын ары-бери чайкъала, къайдан эсе да шайтан чыгъып къалды.

– Кёп болсун, Чопай! – деди ол.

– Ой, сау бол, сау кел, жууукъ бол, шайтан!

– Чопай, былайда не ишлейсе?

– Бузоула кютеме.

– Сен кютмесенг, бузоула кеслери отлаялмаймыдыла?

– Ол мени ишимди.

– Къой, харип, къой! Бузоула сенсиз да отлаялырла. Бу жарлы хайыуанлары да ары-бери тыя, жанларындан этгенсе, кесинги да башынгы аурутуп, ийнеден ётерик болгъанса. Андан эсе солугъан эт: бир жашауунг минг боллукъ туююдю. Жашлыкъ адамгъа жаланда бир кере бериледи, – деди шайтан.

– Бар, харип, бар жолунга. Ол къадар иги сёзюнгю да керексизге къоратма. Мен ол сен алдачуладан туюолме. Мени бузоуларым тойсала, кесим да тояма. Аланы бири тас болса неда жыгъылса, мени жукълагъанымдан эсе манга уллу заран тюшерикди.

– Да мен къалай алдайма? Ол мен айтхан сёздеде бир ётюрюк бармыды?

– Айтхан а бек тюз этгенсе, алай, адамны бир алдар ючюн, жюз кертти сёз айтыргъа керекди.

– Кертти сёз бла адамны алдагъан болмайды. Алай сени ким эсе да бир бек къаты алдап турады.

– Не бла? – деп сейирсинди Чопай.

– Не бла болуб’а, сен жарлыны, тангны буруну бла къобарып, бузоу орунну аллына сюейдиле. Эрттен сууукъдан аякъларынг юшюй, къайда ийнек жатхан жерде, къайда жылы тууар мешхутда аякъ жылытыргъа кюреше, жан кечиндиресе. Сен жарлыны ашынг – чайкъалгъан айран бла нартюх гыржын; жукълар, солур заман тапмай айланган а – башынг. Ол алданнганынг кёлюнге ётмеймиди?

– Угъай, ол алданган туююдю. Ол адамны баш кечиндирген мадарыды.

– Ол сёзюнг а бек кюлкюлюдю.

– Да аны не кюлкюлюгю барды?

– Ай юйюнге, сенича жашлары кёбюсю, эрттенбла татлы жукълап, суйген затларын ашап, юслерине таза кийимле кийип, суйгенлерича, ойнап-кюлюп жашайдыла.

– Аллайла санга ушайдыла. Ала, кеслери ишлемей, алдау бла башхаланы хакъларын ашайдыла.

– Да, Чопай харип, сен кишини алдаялмагъандан къыйналып жашайса. «Амал билген – амал бла, амал билмеген – аман бла жашайды» деп сёз барды.

– Мен, кишини да алдамай, кеси къыйыным бла жашаргъа сюеме. Не къыйынлыкъгъа да чыдаргъа юйренип, чыныкыгъан адам болуп ёсерге сюеме. Мени атам-анам да мени алай юйретедиле.



– О, ха-ха! Ол кюлюкюлюкге бир къара! – деп, шайтан кёз акъларын айландырып, тюкюлю къынгыр къоллары бла къарынындан тутуп, кырдыкга аууп, аууз кёмюклери да, шыгыла болуп, чачыла, аяусуз кюлюп къатады.

– Айт-айт, ишлерге бюгюнден юйренмесенг а, заман табылмаз! Ол ишлерге юйренмегенле уа ачдан ёле болурла, бир бар! Мени тюз айтханымы терсге санай эсенг, от тёбеси бол! Маржаса, ол тыкыр аякъларынг айры болгунчу, бузоуланы тегереклерине айланып турмасанг. Мен ёмюрюмде бир тюз сёз айтхан эдим да, анга да сени ийнандыралмадым.

– Ёмюрюмде къуру ётюрюк, терс сёз айтып жюрюй эсенг, шайтан, санга уа хар ким да керти, тюз сёз айтыпмы жюрюйдю?

– Манга да айта болурла терс сёз а, алай мен хар кимни сёзюне да бир чурум тапмай къоймайма. Мени алдагъан бек къыйынды.

– Сен чурум табалмай кълсанг а?

– Аллай сёзю киши табаллык тюйюлдю.

– Мен тапсам, не бересе?

– Мен бир шарайып, бир чурум табалмагъан сёз айтсанг, – мен сен айтханны этерге, табалмасанг а, – сен мен айтханны этерге. Келишдикми?!

– Болсун.

– Айт, алай эсе, Чопай.

Чопай, шайтанны ауузун тутар ючюн, кёп сагъыш эте да кюрешмей, хапарын башлайды:

– Бюгю мен, бузоуланы сюрюп, сыртха чыкъланлай, бир бёрю бир къушну тюпге уруп ашай тургъланлай, юсюне чыгълып кълдым.

– Да къуш да аллай къуш болур эди, – деп, шайтан узун тили бла тюкюлю эринлерин жалады.

– Аллай къуш болуб’а, эки къланаты – эки отоу болгълан къуш.

– Да отоула да аллай отоула болур эдиле.

– Отоула уа – ичлеринде тюе балала, чабып, эркин ойнагълан отоула эдиле.

– Тюе балала да аллай тюе балала болур эдиле.

– Тюе балала уа, айтдырмай къоймай эсенг, бир кёл бар эди да, ала ары кирселе, ол кёл тюе балаланы тобукъларындан ёрге озмай эди.

– Кёл да аллай кёл болур эди, – деп, шайтан самаркълау этди.

– Кёлню сурасанг а, жууугълум, – деди Чопай, – анга эрттенбла бир таш атсанг, ол таш ингирге дери тюбюне жетмей эди.

– Да, харип, – деп ышарды шайтан, – кюн да аллай кюн болур эди!

– Кюнню уа бирда айтмай къой. Эрттенбла бугълагъла айлангълан ийнек ингирге бузоуу бла кълта эди.

Аны эшитгенлей, шайтан жыйырылды, кълуурулду, кълнгыр, тёрт гуппур болду. Ол, урчукъла, тегерек айлана кетди да, санлары кълурушуп, тили тутулуп, тыпырдай башлады. Ахырында, ол шайтан бузоучугъла бир тап жууап табалмагъланыны ачуундан, жаны чыгълып, сын кълтды да кълды.

Чопай, сырт башына чыгълып, жамычысын да таягълына тагълып, аны тегерегине аяусуз тепсеп, аякъл бюге эди: «Эй, шайтан! Бузоучуну алдайма деп, жангылдынг! Биреуге кълзгълан урунга кесинг жыгълылдынг», – деп жырлай эди.



Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 346–348 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

Культурология илмуланы доктору Орусбийланы Аныуарны къызы Фатиманы оюмуна кѣре «Бузоучу бла шайтан» деген жомакъны малчылыкъ бла байламлы жомакълагъа къошаргъа тийишлиди.

Жомакъны айырмалы этген, анда аз жигитле болгъаныды. Битеу да эки жигит барды: бузоула кютген жашчыкъ бла шайтан. Шайтанны умуту, не да этип мал кютген жашчыкъны ишинден айырыргъады. Ариу, халал ишин эриши кѣргюзтюргеди. Бу тутушууда къара кюнню жашчыкъ хорлайды, аны излемине кесин хорлатмайды. Андан бек а, кесини ниет къарыуу, акъылы, сѣзге усталыгъы бла ол аны аякъ юсюнде туралмазча этеди.

Жомакъны эки жигитинден бири шайтан болгъанлыкъгъа, ол керти да болгъан, тубеген затха саналгъаны ючюн, бу чыгъарманы насийхат халлы жашау-турмуш жомакъгъа санаргъа боллукъду.

ПАСТУХ ТЕЛЯТ И ШАЙТАН*

Чопай рано утром, когда выгонял телят на пастбище, с большим удивлением слушал в лесу пение птиц, их свисты. И сегодня, когда он лежал на спине на зеленом лугу, пока телята с усердием паслись, с обросшими волосами, кривыми коленями, каждый раз, когда ветер дул, из стороны в сторону качаясь, криво наступая, откуда-то появился шайтан.

– Чтобы было много добра, Чопай! – сказал он.

– Ой, спасибо, здравствуйте, будьте родственником, шайтан!

– Чопай, что ты здесь делаешь?

– Пасу телят.

– Если ты не будешь пасти, что телята сами не могут пасть?

– Это моя работа.

– Оставь, бедняжка, оставь! Телята и без тебя смогут пасть. И этих бедных животных туда-сюда загоняя, изморил ты их, и свою голову тоже замучил, ты стал таким, что пролезешь в отверстие иголки, лучше ты отдохни: твоя одна жизнь тысячей не станет. Человеку молодость дается один лишь раз, – сказал шайтан.

– Иди, бедняжка, иди своей дорогой. Столько хороших слов понапрасну не трать. Я не из тех, кого ты можешь обмануть. Когда мои телята становятся сытыми, я сам тоже становлюсь сытым. Если один из них потеряется или упадет, на меня падет больший ущерб, чем мой сон.

– Да я разве обманываю? В моих словах, которые я произнес, есть хоть одно вранье?

– Что сказал ты, правильно сделал, однако, чтобы человека один раз обмануть, нужно сто настоящих слов произнести.

– Чтобы человека настоящим словом обманывали, не бывает. Но тебя все время кто-то сильно обманывает.

– Как? – спросил с удивлением Чопай.

* Шайтан – черт.

– Вот как, тебя, бедолагу, на рассвете поднимают и ставят перед загоном телят. От утреннего холода твои ноги замерзают, в том месте, где корова лежала, в теплом навозе животных стараясь обогреть свои ноги, продолжаешь ты свою жизнь. У тебя, бедолаги, пища – разбавленный водой айран* с кукурузной лепешкой. А чтобы поспать, отдохнуть, у которого нет времени – эта твоя голова. Столько твоих заблуждений тебе недостаточно?

– Нет, это не заблуждение. Это возможность, данная человеку, чтобы жить.

– А эти твои слова очень смешные.

– Да что в них смешного?

– Послушай-ка, большинство ребят как ты, утром сладко спят, едят любимую пищу, одевают на себя чистую одежду, как сами хотят, играючи, весело живут.

– Такие на тебя похожи. Они, сами не работают, обманом пожирают чужое добро.

– Да, Чопай, бедолага, ты не можешь никого обмануть и поэтому живешь, мучаясь. «У кого есть умение, тот живет умением, а у кого нет умения – тот живет в мучении» говорят, есть такое изречение.

– Я никого не обманывая, хочу жить своим трудом. Хочу научиться переносить все тяготы, хочу выносливым человеком вырасти. Мой отец и моя мать меня так воспитывают.

– О, ха-ха! Посмотри на это посмешище! – сказал шайтан и, вывернув белки глаз, волосатыми, кривыми руками держась за живот, упал на траву, с пеной изо рта, свисающей как слюни, брызгая, безмерно смеясь, доходит до изнеможения.

– Говори-говори, если работать не научишься прямо с сегодняшнего дня, времени больше не найдется! А те, которые не научились работать, как будто с голоду помирают, сходи, погляди! То, что я тебе говорю правду, если ты считаешь неправильным, пусть огонь тебя настигнет! Посмотрим, эти твои слабенькие ноги пока не разойдутся, будешь ходить вокруг телят. Я за всю жизнь одно правдивое слово произнес, и этому я не мог тебя заставить поверить.

– Если ты всю свою жизнь живешь, лишь обманывая, произнося несправедливые слова, шайтан, а тебе, думаешь, каждый из нас правдивые, истинные слова, говорит?

– И мне, наверное, говорят несправедливое слово, но я в каждом их слове обязательно найду какой-нибудь подвох. Меня обмануть очень сложно.

– А если ты вдруг не смог найти какой-нибудь подвох?

– Такое слово никто не сможет найти.

– А если я найду, что ты дашь?

– Слово, в котором я не найду изъяна, какого-нибудь подвоха, если ты найдешь, – то я, выполню все что ты скажешь, а если не сможешь найти, – ты будешь выполнять то, что я скажу. Договорились?!

– Хорошо.

– Если так, скажи Чопай.

Чопай, чтобы заткнуть рот шайтана, долго не раздумывая, начал свой рассказ:

* *Айран* – кисломолочной продукт.

– Я сегодня, выгнав телят, когда поднялся на холм, то, увидел, как один волк, забив под собой одного орла, поедал, и я в это время прямо на них наткнулся.

– Да, и орел, наверное, был таким орлом, – сказал шайтан, длинным языком облизывая свои волосатые губы.

– Такой был орел, два крыла у него – были как две комнаты, вот такой орел.

– Да, и комнаты, наверное, были такими комнатами.

– А комнаты – внутри их детеныши верблюдов, они там бегали, вольготно игрались, вот такие комнаты.

– А детеныши верблюдов, если хотите знать, было одно такое озеро, когда они заходили туда, это озеро не поднималось выше колен детенышей верблюдов.

– И озеро, наверное, было таким озером, – сказал шайтан, усмехаясь.

– Если хочешь знать про озеро, родной мой, – сказал Чопай, – когда утром туда закинешь один камень, то этот камень до вечера не доходил до дна.

– Да, бедняжка, – сказав, улыбнулся шайтан, – и день, наверное, был таким днем!

– А про день совсем не спрашивай. С утра корова, которая гуляла с быком, к вечеру возвращалась с теленком.

Когда шайтан это услышал, то он съежился, сжался, скривился, сгорбился четырежды. Он, как веретено, начал кружиться, и его тело охватила судорога, язык онемел и начал дергаться. В конце этот шайтан разозлившись, что не смог найти нужный ответ пастуху, разозлился, испустил душу, остался стоять замертво.

Чопай, поднялся на вершину холма, повесил свою бурку на пастушью палку, и вокруг него станцевал, что было силы, сгибая колени: «Эй, шайтан! Ты захотел обмануть пастуха телят и ошибся! То, что ты копал яму другому, туда же сам попал», – пел он такую песню.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 346–348) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

По определению доктора культурологии Ф.А. Урусбиевой, данное произведение относится к жанру пастушеской сказки. Она отличается малоперсонажностью. В ней два действующих лица: пастух и черт. Сверхзадача шайтана – сбить пастуха с истинного пути, отвлечь его от честной, сознательной работы.

Победу в этом поединке одерживает пастух, который не поддается на уловки нечистой силы. Более того, крепостью духа, остроумием, красноречием он сражает его наповал.

Хотя одним из двух персонажей сказки является шайтан (черт), поскольку он считается реально существующим, встречающимся в природе существом, это произведение может считаться бытовой сказкой нравоучительного (притчевого) характера.



УРУЧУНУ ЖАШЫ

Эки кёзден бирин кьоймагъан эки уручу болгъандыла. Аланы аякълары жетмеген, ала малын, жылкысын сюрмеген хазна жер къалмагъанды. Ол экисинден бири ёлгенде, аны жашчыгъы ёксюз къалады.

Тенгини жашын атып кьоймай, бир баш кечиндирир амалгъа юйретир ючюн, сау къалгъан уручу нёгерини юйюне келеди. Ол, хайыр-хапар да соруп, ёксюз жашчыкъны анасына ахчачыкъ да берип, кетерге башлайды.

Ёлген уручуну къатыны эрини тенгинден:

– Мени эрим бла сен, жан бла тёммек кибик, татлы тенгле болуучу эдигиз. Энди мени къолумда бу ёксюз жашчыкъ бир затха юйренмей къалып кетеди. Сенден башха, бизни жан аурутур адамыбыз жокъду. Кьорсадагъа болайым, бу сабийге бир оноу эт, – деп тилейди.

– Ахшы, – дейди уручу, – келсин мени бла. Мен анга кесим билгенни юйретирме.

Алай бла жашчыкъ уручу бла жолгъа атланады. Кетип бара, была жолда бир улакълы эчкини башындан тартып баргъан кишини кёредиле.

– Кел, ол кишини улакълыгъын урлайыкъ, – деди жашчыкъ.

– Ай юйюнге! Адам эчкини башындан тартып бара тургъанлай, аны улагъын къалай урларса? – деп сорады уручу.

– Былай бир къарачы, мен аны къалай урласам да, – деп, жашчыкъ жолгъа чырпыла кесип атады.

Эчкини улагъы чырпыланы бутакълыгъыларын кемире къалды. Жолоучу уа, эчкисини башындан тартханлай, озуп кетеди. Жол жанында бугъуп тургъан уручула, жолоучуну озма кьоюп, улакълы сермеп тутадыла да, элтп, бир ташада букъдурадыла. Улакълы иеси, ол анасыны ызындан келмегенин кёргенинде, эчкисин да жол жанында чырпыгъа байлап, улакълы излерге артха атланады. Жолоучу алайдан озгъанлай, жашчыкъ нёгерине:

– Кел, ол эчкини да урлайыкъ, – дейди.

Была, иеси къайтхынчы, эчкини урлап, боюнун кеседиле да, башын а батмакъгъа сугъуп, мюйюзлерин къаратып къоядыла. Кеслери уа ташадан къарап турадыла.

Киши келип къараса, эчки кьойгъан жеринде жокъ. «Ярабий, улагълым тас болду эсе да, эчкими тапха эдим», – деп къараса, эчкиси батмакъгъа батып.

– Ай таланган, энди батмакъгъа уа не ишге кирдинг? – деп, ол киши эчкини мюйюзлеринден тартама десе, башы, юзюлюп, кьолуна келеди.

– Батмакъгъа батхан эчкими чыгъарама деп, башын юзюп алдым ушайды да, – деп, жолоучу, тешинип, батмакъгъа киреди.

Кийимлерин жол жанына салып, эчкисин чыгъарыргъа батмакъгъа кирген кишини жашчыкъ быстырларын да урлап кетеди.

Бу жарлы киши батмакъдан топуракъл жугъу да, сууукъл да болуп чыкъды. Кийимлерин излейди. Аланы уа – тапсанг, кьойма: кийимлерин ким эсе да алып кетип тура эди.

– Ай, мени къара шайтан къаргъагъан кёре эдим. Энди эчкиден, улакълдан да айырылдым, кийимлерими да урлатдым. Энди жарлы жанымы



саулай юйюме бир жетдиралгъа эдим, – деп, кишичик жолну мукъут этип бара тургъанлай, аллындан бир бёлек аскер чыгъады:

– Эй, алан, бюгюн алай исси да туююлдю, нек кызыл кымыжа болгъанса? – деп сорады аскер тамата.

– Манга келген кюн мени жаума да келмесин! – деп жилиды жарлы киши.

Аскерчиле кишини масхара-хыликкя да этедиле, кюледиле. Ол жарлы уа, асыры уялгъандан, башын кётюрмей, кёзден ташайгъынчы, жортханлай барады.

Уручу жашчыкъ аскерчиле ол жарлы адамгъа этген масхарагъа ыразы болмайды:

– Бу жолдан сора, мен жарлы адамны малына къол жетдирмем. Алай ол ханны аскерине уа жарлы кишини кёлю кенгер иш этмей кьоймам, – дейди.

Ханны аскери кече къалыргъа бир тюппе-тюз жерни сайлайды. Алайда атланы, иерлерин алып, отларгъа бошладыла да, гёзетге бир аскерчини жибердиле. Шапала от этип, отха эт къазанла асдыла. Къалгъан аскерчиле уа, аш бишгинчи, солургъа жатдыла. Арыгъан аскерчиле терк окъуна хурулдап жукъладыла, шапала уа, къадалып, къазанланы къайнатадыла.

Уручу жашчыкъ шапалагъа келеди да:

– Аланла, сиз да бир кесек солугъуз, къазанланы мен къайнатайым, – дейди.

– Хайда, маржа, эт бишсе, бизни терк уят! – деп, шапала арсарсыз жатып жукълайдыла.

Къазанлада эт бишгенлей, жашчыкъ этлени, къазанладан чыгъарып, тана тулукъгъа жыяды, шорпаларын гыбытлагъа къуяды да, къазанлагъа уа ат терликлени сугъуп кетеди. Аскер а, жукъ да сезмей, ырахат жукълайды.

Жашчыкъ, гёзетчиге барып:

– Сени ашаргъа чакъырадыла. Атлагъа, сен келгинчи, мен къарай турурма, – дейди.

Ол кетгенлей, жашчыкъ, эрлай атладан бирине минип, жылкыны будуман этдирип сюреди. Уручула, атлагъа этни, шорпаны да жюклеп, жылкыны да сюрюп, думп болуп кетедиле.

Гёзетчи къайтып келгенинде, аскерни ырахат жукълагъанын кёрюп, сейирге къалады. От тютюн эте, къазанла тылпыу эте, от къатында уа бир дерге шапа да жокъ. «Эт бишген эсе, кесим алып да ашялырма», – деген муратда, къазаннга узалды.

Узалса уа, этни орунуна ат терликни чыгъарады. Анда бу гёзетчи гузаба кётюреди.

– Сиз, манга эт кьоймай, этни кесигиз ашап нек тауусхансыз? – дейди.

Шапала, ашыгъышлы къобуп, къазанлагъа чабышадыла. Хар къазандан ат терлик болмаса, эт чыкъмагъанын кёрюп, шапала сейир-тамашагъа къаладыла.

Аскер къозгъалып къобады. Кёп да бармай, аш-азыкъ да, минерге да ат болмагъаны белгили болады. Аскерчиле, ат иерлерин да аркъаларына кётюрюп, арып-талып, кеслерин да ач-суусап кысып, эллерине аманны кевинден келедиле.

Ол айыплы иш тегерекге терк жайылады. Ханны аскери къалгъан бедишлик ханны кесине да бедиш эди. Аны хан тенглери бу иш ючюн аны хыликкя этип келгенлери ичин отлай жандырады.



Уручуну жашчыгызы уа ёседи, уллу болады. Ол энди, байланы малларын урлап, жарлылагыа юлешген болмаса, бир жарлы адамны мюлкюне тиймейди. Халкъ, муну къубултуп, той-оюн болгъан жерледе тёрге ётдюрюп, сый-намыс берип турады.

Ханны сынчылары не бек излеселе да, халкъ бу жигитни тапдырмайды. Мынга къоркъуу келген кюн хар жарлыны ююю муну жашырыр жер хазырлап болгъанды.

Уручуну тутар ючюн, хан къуртхаланы жыйып кенгешеди. Къуртхаладан бири:

– Бир жерде бир алтын тюкю теке барды. Ол текени, эки адамгъа берип, эл сайын айландырыгъыз. Аллай белгили уручу ол текени урларгъа кюрешмей амалы жокъду. Эки къалауур салсакъ, ала уручуну тутуп къоярыкъдыла, – дейди.

Ол оноу бла алтын тюкю текени келтирип, башындан да эки хайт деген жашха тутдуруп, эл сайын айландыртадыла.

Айлана келип, бу жашла бир элде бир тюкенни аллында тохтайдыла. Жашладан бири тюкеннге тютюн алыргъа киргенлей, бир адам, келип, текени башын тутханнга:

– Алан, нёгеринг бери кел деп чакъырады, – дейди да, текени баш бауун къолуна алады.

Не этерик эди, харип, кюндюзгю кюнде текени адамгъа ышанмай. Ол да нёгерини ызындан тюкеннге киреди.

Ол алгъа тюкеннге кирген, нёгери да кирип келгенин кёрюп:

– Нёгерим, сен а нек келдинг, текени кимге къойгъанса? – деп, къайгъылы сорду.

– Да бир жаш сен чакъыргъан этесе, текени уа мен тутуп турайым деди да, келдим, – деди.

– Ай, бир палах болмагъа эди, – деп, жашла тюкенден чартлап чыкъсала, ол жерде текени аты-чууу да жокъ.

– Энди уа ханнга не бет бла кёрюнейик, къалай барайыкъ? – деп, жашла бушуу-бушман болдула.

Ол элде сурап-тинтип да кюрешдиле, алай андан бир хайыр да чыкъмады. Жашла, сандалып, ханнга келдиле да, ишни болушун айтдыла.

Хан терк окъуна къуртхаланы жыйды. Аланы бирлери:

– Энди мен, садакъачыча болуп, юй сайын кирип: «Этчик ашарыкъ эдим», – деп айланайым. Текени этинден ашагъан юююмю къабакъ эшигине: «Бу юйде теке эт ашадым», – деп жазарма. Сиз а ол юйден текени ким урлагъанын тынч табарсыз, – деди.

Ол оноуну бары да тюзге санадыла.

Къуртха, садакъа жыя, юйден юйге кире айланады. «Ай, аурууунгу алайым, бир этчик ашарыгъым келип ёлеме. Манга бир этчик къапдырсанг, битеу гюняхларынг кечилир эдиле», – деп, къуртха юй сайын кирип айланады. Ол тасхачы «тюкю» уручу жашны юйюне да келеди. Жашны анасы, ол жарлы «факъырачыгъа» асыры жан аурутхандан, теке этден шишлик этип ашатады. «Факъырачы» уа, чыгъа барып, юйню къабакъ эшигине: «Бу юйде теке эт ашадым», – деп жазып кетеди.

Жаш, юйюне къайтып келе, эшикге тытыр бла жазылып тургъан сёзлеге кёзю жетеди. Бу зат ахшылыкъгъа этилмегенди деген оюм башына келип,

эрлай ол тийреде юйлени эшиклерини барында да: «Бу юйде теке эт ашадым», – деп жазады.

Кёп бармай, элни мыртазакъла кьуршаладыла. Эшигине: «Бу юйде теке эт ашадым», – деп жазылгъан юйню тюп этип башлайдыла. Жаш, келип, мыртазакълагъа:

– Аланла, сизни бу этгенигиз неди? – деп сорады.

– Биз эшигине: «Бу юйде теке эт ашадым», – деп жазылгъан юйню гунч этерге керекбиз, – дедиле мыртазакъла.

– Да, жюйюсханла! Бизни тийреде эшигине алай жазылмагъан юй жокъду. Сора бизни барыбызны да гунч этипми кетериксиз? – деп «сейирсинди» жаш.

– Угъай. Бизге жангыз бир юйню кьуртургъа буйрукъ берилгенди ансы, башха юйлеге уа тиерге жарарыкъ туююлдю, – деди чериухан.

Бу жол да хан муратына жеталмады. Ханны душманы, халкъны уа керти ёкюлю тутулмай къалды. Жашны шуёхлары кёпден-кёп бола барады. Хан а, муну кьурутмай, жюреги тынчаймазлыгъын биледи. Энди ол жашны тутаргъа не кючюн, не ырысхысын аямайды. Билгичлени, кьуртхаланы да жыйып, бек кёп кенгешгенден сора, хан, элни жыйып, межгитде уллу кьурманлыкъ этерге оноу этеди. Кьуртхала айтханнга кёре, ол аманлыкъчыны кёзю ханны кызына да кьараргъа керекди. Халкъ межгитге жыйылса, ханны кызын межгитни отоуларындан биринде олтуртургъа оноулашадыла. Анда ханны кызы кеси жангыз къалса, ол «аманлыкъчы» ары келмей къаллыкъ туююлдю. Ол ары келсе, ханны кызы, ариу айтып, эслетмей, бир мыйыгъын кесип жиберсе, аны тутаргъа тынч боллукъду.

Хан кызы бла ол ишни юсюнден сёлешгенде, кызы ыразылыгъын билдиреди.

Алай бла межгитде уллу кьурманлыкъ этиледи. Элни саулай ары жыядыла. Межгитде намаз эте, кьурманлыкъ ашай, эл сау кечени къалады. Ханны кызы да, ол кьурманлыкъгъа келип, межгитде бир отоуда олтурады. Аны кесин жангызлай кьоядыла.

Кече эки тенг бола, ханны кызына уручу келеди. Жаш бек чырайлы эди. Ханны кызы да ол жашны жаратмай кьоймайды. Алай, атасы юйретгенча, кокаланып, къаушалып, жашны алдаргъа не кючюн, усталыгъын да аямайды. Ол кызыны ариулугъу, аны хыйлалыгъы да жашны бир кесек алдайдыла. Кызыны «тузагъына» тюшгени себепли, жаш, эслемей, мыйыкъларындан бирин кесдиреди. Алай, кызы олтургъан отоудан чыкъгъанлай, мыйыкъларын бурады да, мыйыгъы кесилгенин сезеди. Сора, чабып, межгитге кирип, анда жукълап тургъан адамланы къалдырмай бирер мыйыкъларын кеседи.

Эртгенбла, адамла, уянып, эшикге чыгъар заманга, межгитни эшиклерине къалауурла сюеледиле. Ала бир мыйыгъы кесилген адамланы тутуп башлайдыла. Жаш, келип, къалауурлагъа:

– Аланла, бу жарлы адамланы нек тутасыз, была сизге не хата этгендиле? – деп сорады.

– Хан бир мыйыгъы кесилген адамны тутугъуз деп жибергенди, – дейдиле ала да.

– Да мында бир мыйыгъы кесилмеген адам жокъду. Быланы барысын дамы тутарыкъсыз?



– Угъай. Бизге мыйыгы кесилген жангыз бир адамны тутаргъа буюрулгъанды.

– Сиз а не къадар адам тутдугъуз?

– Аланы барысын да бошларгъа керекди. Биз этген мурат болмады, – деди къалауурланы таматалары.

Алай бла да хан муратына жеталмады: аманлыкъчыны энтта туталмады.

Халкъ суйген адамны тутуп къойгъан алай тынч иш болмагъанын хан энди ангылады.

Сора, элни жыйып, хан:

– Ол мени аскерими, кесими да сындырып, бирси ханлагъа хыликка этдирген адам, мени бек масхараучу ханнга бир кёлум кенгерча этсе, мен аны бар хатасын да кечеме, ханлыгъымы жартысын да, къызымы да берип, киеу этеме, – деп, оноун билдирди.

Халкъда ханны оноуна ишекли болгъан адамла да чыкъдыла. Алай: «Хан айтмаз, айтса, айтханындан къайтмаз», – деген сёзге кертилигин хан жыйылгъанланы аллында этген анты бла ышандырды.

Ол кезиуде бу уручу жаш да ханны ыразы этерге таукел болады. Сора, алтын тюклю теке терини да кийип, самаркъаучу ханны аякъ жолуна кирип бугъады.

Эрттен намазгъа абидез алырдан алгъа, хан аякъ жолгъа киреди. Эрттен къарангыда зат эслемейди. Алай бир кесекден аллында сюелген алтын терили «жаныуарны» эслеп, ханны жаны тамагъына жыйылды. Ол «жаныуар», адам тилде сёлешип, ханны эсин бир кесек орунуна келтирди:

– Мени санга Аллах жибергенди. Мен сени жанынгы алыргъа келгенме. Тауушсуз, мен айтханны этип жүрюсенг, жанынгы алмай къояргъа да болурма!

– Жанымы алмай къойсанг, – деп симсирейди хан, – не айтсанг да, этерме.

– Алай эсе, – дейди алтын тюклю терини кийген, – кийимлеринги тешип, къыппа-къымыжа бол да, бу мен кийген алтын тюклю терини ичине кир.

«Жан алыучуну» ол буйругъун хан мычымай толтурады. Жаш, тери тулукъгъа кирген къымыжа ханны да кётюрюп, жолгъа чыгъады. Орамда сакълап тургъан атына минип, теке тулукъну да ат боюнуна алып, будуман этип ташаяды.

Хан, жашны келгенин билип, элни, халкъны жыяды.

Жигит жаш, теке тулукъну да аркъасына кётюрюп, халкъны тюз ортасына келип тохтайды.

– Былай тегерек туругъуз да, къачхан адам иш болса, аны ары-бери жибермегиз, – дейди жаш.

Эл тегерек турады, жаш да, тулукъну башын тешип, ичинден къымыжа ханны чыгъарып, ортагъа атады. Бу, уялгъандан, жер тешик болса, кирип эди: къапханнга тюшген бёрюча, ары-бери къачаргъа кюрешеди. Бирлени этек тюбуне бугъар умут да этеди, алай аны киши къатына къоймайды. Ол жарлы хан, отха тюшген чычханча, ачыудан къыл чайнайды. Халкъ а кюлюп къатады. Ма алай бла белгили жигит жаш ханны да, халкъны да ыразы этеди.

Хан къызын бу жигитге берип, аны кесине киеу этгенине халкъ бек къууанады. Ханнга киеу да болуп, аны ханлыгъыны эки тенгден бирине да



ие болгъандан сора, белгили жигит халкъгъа не жаны бла да болушургъа онг табып тургъанды.

Алай бла уручуну жашы, ахырында халкъ суюген жигит болуп, ашап-жашап къалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 348–353 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѣчюргенди.

«Уручуну жашы» деген жомакъда хыйлалыкъны, юйюр-жашау-турмуш жомакъланы бла халкъ жигитлени юслеринден жомакъланы илишанлары бардыла. Аны айныу кючюн бардыргъан, баи жигитни баиша тюрлю сыфат алгъаныды. Ол аманлыкъдан, гудучулукъдан къутулуп, халкъны жакъчысы болады.

Жомакъда дагъыда кесине эс бурдургъан муслийманлыкъ бла байламлы сѣзледиле – «межгит», «намаз», «къурманлыкъ».

СЫН ВОРА

Жили два вора, которые из двух глаз не оставляли ни одного. Не было земель, куда они ногой не ступали, скот, табуны не угоняли. Когда один из двух умер, его мальчик остался сиротой.

Не бросая сына своего друга, чтобы научить его каким-то жизненным премудростям, оставшийся в живых вор приходит в дом к своему другу. Он, расспросил об их положении, вручил матери сироты денег и начал ухаживать.

Жена умершего вора у друга мужа:

– Мой муж и ты, были как душа и тело, были сладкими друзьями. А теперь на моих руках этот мальчик-сирота, не научившись ничему, неужели так останется? Кроме тебя нет человека, кто бы к нам относился с душевной болью. Я тебя умоляю, придумай что-нибудь для этого ребенка, – начала она просить.

– Хорошо, – отвечает вор, – пускай идет со мной. Я обучу его тому, что я сам знаю.

Итак, мальчик с вором отправляется в путешествие. Когда они шли, по дороге увидели, как один мужчина тащил козу с козленком, схватив ее за голову.

– Давай, у этого мужчины козленка украдем, – сказал мальчик.

– Да, ты что! Человек тащит козу, схватив ее за голову, как ты его козленка сможешь украсть? – спрашивает вор.

– Смотри-ка сюда, как я его украду, – сказал мальчик и, сорвав ветки, бросил на дорогу.

Этот козленок отстал от козы, прогрызая ветки кустов. А путник, протаскивая свою козу, прошел дальше. Спрятавшиеся вдоль дороги воры, дали возможность путнику пойти дальше, и резко схватив козленка, отнесли и спрятали в одном тайнике. Хозяин козленка, когда заметил, что он не идет за матерью, привязав у дороги за ветку свою козу, отправляется обратно искать своего козленка. Когда путник отошел от того места, мальчик говорит попутчику:



– Давай и эту козу украдем, – говорит.

Они, пока хозяин вернулся, украв козу, зарезали ее, а голову воткнули в болото, оттуда выглядывали только ее рога. А сами за ним следили из укрытия.

Когда хозяин вернувшись, посмотрел, козы уже на том месте нет, где он оставил. «Ярабий* , козленка-то потерял, теперь бы козу мне найти», – сказал и, оглянувшись, видит, что коза в болоте утопилась.

– Ай, бестолковая, зачем тебе надо было в болото-то лезть? – сказал этот мужчина, и когда начал вытаскивать козу взяв за рога, голова, оторвавшись, оказалась у него на руках.

– Желая вытащить из болота утопившуюся свою козу, получается, я оторвал ее голову, – сказал путник и, раздевшись, сам зашел в болото.

Мужчина, всю одежду сложив у дороги, зашел в болото, чтобы вытащить свою козу оттуда, а в это время, мальчик украл все его вещи и исчез.

Этот бедный мужчина вылез из болота весь в грязи, и, замерзая от холода, начал искать свою одежду. А ее – откуда найдешь: все вещи кто-то забрал и ушел.

– Ай, оказывается, меня проклял черный шайтан** . Теперь я расстался и с козленком, и с козой, и одежду мою успели украсть. Теперь бы мне душу свою живым бы смочь донести до дому, – сказал мужичок и когда по дороге бежал, как мог, впереди появляется группа армейцев:

– Эй, алан*** , сегодня не так уж и жарко, почему ты весь красный, оголился полностью? – спрашивает у него глава армейцев:

– Какой день меня постиг, пусть такое не постигнет даже моего врага! – заплакал бедный мужчина.

Армейцы над мужиком поиздевались, подшучивали, насмехались. А этот бедняга, от большого стыда не поднимая головы, пока не исчез из виду, шел, подпрыгивая.

Мальчику-воришке сильно не понравилось, что над бедным человеком армейцы так сильно поиздевались.

– С этого дня я на имущество бедного человека руки не подниму. Но армейцам хана я такое устрою, чтобы у этого бедного человека душа воспряла, – говорит он.

Армия хана себе на ночлег выбирает равнинную, ровную землю. На том месте они сняли с лошадей седла и отпустили пастись, и послали одного солдата вместо ночного табунщика. Прислужники развели костер, и на костры поставили котлы с мясом. Остальные армейцы, пока пища варилась, легли отдохнуть. Уставшие армейцы тут же заснули с храпом, а прислужники старательно кипятят казаны**** .

Мальчик-воришка подошел к прислужникам:

– Аланы, вы тоже немного отдохните, а я буду кипятить казаны, – сказал.

– Ну, давай, маржа**** , когда мясо сварится, нас сразу разбудишь! – сказали прислужники и без всяких сомнений легли спать.

* *Ярабий* – частица, выражающая любопытство, интерес, желание узнать, сомнение.

** *Шайтан* – черт.

*** *Алан* – соплеменник.

**** *Казан* – котел.

***** *Маржа* – одобрительный возглас.



Когда в казанах мясо сварилось, он мясо вытащил и положил в тана-тулук*, бульон залил в бурдюки, в казаны сунул подстилки из-под седел и ушел. А армия, ничего не подозревая, спит спокойным сном.

Мальчик подошел к ночному табунщику:

– Тебя зовут кушать. За лошадьми, пока ты вернешься, я буду присматривать, – говорит он.

Когда он ушел, мальчик, быстро сев на одного из коней, погнал табун с большой силой. Воры, на коней погрузив мясо, бульон и понуждая к быстрому бегу табун тут же исчезли из виду.

Когда ночной табунщик вернулся обратно, то увидел, как армейцы спят спокойным сном и сильно удивился. От огня шел дым, от казанов исходил пар, а возле костра не было хоть одного повара. «Если мясо сварилось, я и сам могу достать и поесть», – с такими мыслями он полез в казан.

А когда потянулся, вместо мяса он вытащил конский потник. Этот ночной табунщик всех быстро поднял на ноги.

– Вы мне не оставили мяса, почему вы сами без меня его съели и закончили? – спрашивает он.

Повара резко встали и побежали к казанам. Они, увидев, что в каждом казане вместо мяса вытаскивается конский потник, приходят в сильное удивление.

Армия взбудоражившись, приходит в движение. И в скором времени становится ясно, что нет пищи, продуктов, да и, чтобы оседлать не оказалось лошадей. Воины, свои седла подняв на спины, сильно уставшие, мучимые голодом, жаждой, с большим трудом возвращаются в свои села.

Это постыдное явление очень быстро распространилось по всей округе. Опозоренная армия хана, так же опозорила и самого хана. Его нутро горело огнем, из-за того, что его ханские друзья прибывали к нему с открытой издевкой.

А сыночек вора растет, становится большим. Он теперь лишь крадет скот у богатых и делит его между бедными, и в то же время не трогает имущество нищих. И народ, его сильно уважая, на праздниках, сходах проводит его на почетное место, оказывает ему честь и уважение.

Сколько бы не старались сыщики хана найти его, но народ не выдал своего героя. В день, когда ему угрожала опасность, в доме у каждого бедняка было подготовлено место для его укрытия.

Чтобы поймать вора, хан собрал куртха**, чтобы посоветоваться. Одна из гадалок:

– В каких-то землях есть козел с золотой шерстью. Этого козла надо отдать двум людям, и они должны водить его по каждому селу. Такой известный вор обязательно постарается украсть этого козла. Если мы выставим двух охранников, они сразу этого вора поймают, – сказала она.

С этим решением они привели золотошерстного козла и ее голову дали держать двум здоровенным охранникам, заставив их водить его по каждому селу.

Странствуя, эти ребята остановились в одном селе, перед магазином. Один из парней, когда зашел в магазин за куревом, какой-то человек подошел к тому, кто держал козла за голову.

* *Тана тулукъ* – мешок из шкуры телянка.

** *Къуртха* – старуха; вещунья, гадалка, предсказательница; ведьма [5, 710].



– Алан, твой друг тебя зовет, говорит, иди сюда, – произнес он и взял себе в руки веревку на голове козла.

Как он, бедняга, в дневное время мог не доверить козла человеку. И он следом за другом зашел в магазин.

Тот, который раньше находился в магазине, увидев, что его друг тоже заходит туда:

– Друг ты мой, ты зачем пришел сюда, козла кому ты оставил? – спросил он, встревоженный.

– Да, один юноша сказал, что ты меня зовешь, и что он подержит козла, потому и пришел сюда, – ответил он.

– Ай, не случилось бы горя, – успел сказать он, и когда ребята из магазина выскочили, на прежнем месте козла и духу не было.

– Теперь мы к хану с какой совестью покажемся, как придем к нему? – сказали ребята и начали сильно горевать.

В том селе они долго расспрашивали, разыскивали его, но от этого поиска никакой пользы не вышло. Молодые люди, оболваненные, пришли к хану и рассказали суть дела.

Хан тут же собрал всех своих гадалок. Одна из них:

– Теперь я, как нищая, буду заходить в каждый дом: «Я бы поела чуть-чуть мяса», – причитая, буду ходить. На воротах того дома, где я поела мясо козла: «В этом доме я поела мясо козла», – напишу. А вы из этого дома кто мог украсть козла, легко найдете, – сказала она.

Такое решение все посчитали верным.

Гадалка начала ходить из дома в дом, собирая милостыню. «Ай, чтобы все ваши болезни ко мне перешли, сильно хочется поест чуточку мяса, умираю. Если мне дадите откусить кусочек мяса, все ваши грехи отпадут», – произносила гадалка и ходила, заглядывая в каждый дом. Этот сыщик, как «лиса» приходит в дом и к вору-юноше. Мать юноши из сильной жалости, эту бедную «нищенку» угостила шашлыком из мяса козла. А «нищенка», выходя оттуда, на воротах дома: «В этом доме я покушала мясо козла», – написала и ушла.

Юноша, возвращаясь к себе домой, обратил внимание на слова, написанные известью на его дверях. «Эта затея проделана не к добру», – пришла ему в голову мысль, и тут же, мигом, в той округе на всех воротах домов: «В этом доме я поела мясо козла», – написал.

В скором времени это село окружили мыртазаки* и у кого на дверях была надпись: «В этом доме я поела мясо козла», – начинают тот дом полностью уничтожать. Юноша, приходя к мыртазакам:

– Аланы, что вы здесь творите? – спросил он.

– Мы дома, где на дверях есть надпись «В этом доме я поела мясо козла», должны полностью разрушить, – ответили мыртазаки.

– Да, жюйюсханы**! В нашей округе нет дома, у которого на дверях не было бы такой надписи. Теперь вы нас всех полностью уничтожите и уйдете? – спрашивал он с удивлением.

– Нет. Нам велено уничтожить только один дом, трогать другие дома никак нельзя, – объяснил правитель войска.

* Мыртазак – стражник.

** Жюйюсханла – господа.

И в этот раз хан не смог достичь своей цели. Враг хана, но настоящий защитник народа не был пойман. А у этого юноши друзей становится все больше и больше. А хан знает, что, не уничтожив его, у него сердце не успокоится. И теперь-то, чтобы поймать этого юношу, он не жалеет ни сил, ни средств. Он созвал всех гадалок, посоветовался с ними, и после хан, собрав все села, принял решение провести в мечети курманлык* и устроить большое угощение. Как предсказывали знахари, глаз этого преступника должен заметить и ханскую дочь. Когда народ соберется в мечети, решили дочь хана посадить в одной из комнат мечети. Если дочь хана останется одна, этот «преступник» непременно там появится. Когда он туда придет, дочь хана, красивыми словами, незаметно, если отрежет один ус и отпустит, тогда его поймать будет легко.

Когда хан по этому поводу поговорил со своей дочерью, она дала согласие.

Таким образом, в мечети проводится огромное праздничное мероприятие. Все село собралось там. Селяне в мечети проводили намаз**, угощаясь мясом жертвенного животного, они остаются там на целую ночь. И дочь хана, прибыв на это торжество, устроилась в одной из комнат мечети. Ее оставляют там одну.

Где-то, ровно в полночь, к дочери хана приходит вор. Юноша выглядел очень красивым. И дочери хана он приглянулся. Однако, как научил ее отец, она начала играть с ним, прикидывалась смиренной, чтобы обмануть парня она не жалела ни сил, ни таланта. И красота этой девушки, ее хитрость, парня несколько обманули. Так как парень попал в «сети» девушки, она невзначай отрезает у него одну половину усов. Покидая комнату, где находилась девушка, он начал крутить свои усы, и ту же почувствовал, что один его ус отрезан. После этого, он забежал в мечеть и там у спящих людей, не оставляя ни кого отрезает по одной половинке усов.

Утром к тому времени, когда люди проснувшись, должны были выходить наружу, у дверей мечети стояли охранники. Они начали ловить тех, у кого был отрезан один ус. Юноша, подходя к охранникам:

– Аланы, почему вы ловите этих бедных людей, что они вам плохого сделали? – спросил он.

– Хан нас отправил сюда ловить людей, у кого отрезан один ус, – ответили они ему.

– Да здесь нет человека, у которого один ус не отрезан. И вы их всех будете ловить?

– Нет. Нам велено поймать человека, у которого отрезан один ус.

– А вы сколько людей словили?

– Их всех надо отпустить. Так как мы хотели, не получилось, – сказал старший из охранников.

И таким образом хан снова не достиг своей цели: преступника опять не смогли поймать.

Хан теперь понял, что поймать любимого народом человека, нелегкое дело.

* Курманлык – жертвоприношение, угощение.

** Намаз – молитва; молебен, богослужение у мусульман.



После этого хан, собрав все село:

– Того человека, который и мою армию, и меня самого унизил, довел дело до того, что другие ханы надо мною издеваются, и того хана, который больше всех надо мной насмехается, кто поставит на место, сделает так, чтобы моя душа успокоилась, я его все проступки прощаю, отдаю половину своего ханства, отдаю и дочь свою, и сделаю его зятем для себя, – сказал и объявил свое решение.

Среди народа нашлись и такие люди, кто сомневался в решении хана. Но: «Хан не скажет, а если скажет, не повернет от сказанного», – в подтверждение этим словам хан дал клятву перед собравшимися, показывая свою искренность.

В это время этот воровской парень набрался решимости исполнить желание хана. После этого, надев на себя золотошерстную шкуру козла, он зашел в уборную хана, над которым он продолжает насмехаться и прячется там.

Перед утренним намазом, чтобы провести ритуальное омовение, хан зашел в уборную. Из-за раннего утра в темноте он еще ничего не видел. Но, через некоторое время, он заметил перед собой «зверя» в золотой шкуре, тогда душа хана подкатила к горлу. Этот «зверь», разговаривая человеческим языком, сознание хана вернул на место:

– Меня к тебе послал Аллах. Я пришел, чтобы унести твою душу. Если тихо будешь вести себя, как я повелеваю, могу и не забрать твою душу!

– Если ты не забереешь мою душу, – говорит растерянный хан, – исполню любое твоё пожелание.

– Если так, – говорит одетый в золотошерстную шкуру, – сними с себя всю одежду, останься полностью раздетым и залезь в эту золотошерстную шкуру, в которой я нахожусь.

Веление этого «душегуба» хан тут же исполнил. Тогда юноша, подняв на себе раздетого хана, который залез в тулук*, отправляется в дорогу. Он сел на лошадь, которая его поджидала на улице и забрав кожаный мешок из шкуры козла на шею коня, быстро исчезает от того места.

Хан, узнав о прибытии, собрал все село, весь народ.

Смелый парень, подняв на плечо мешок из шкуры козла, приходит и останавливается прямо посередине собравшегося народа.

– Как-нибудь встаньте в круг, если кто-то вдруг захочет убежать, его ни туда, ни сюда не выпускайте, – говорит молодой человек.

Все село становится в круг и молодой человек, развязав верх кожаного мешка, изнутри вытаскивает обнаженного хана и бросает его посередине. Он, от стыда, если бы была щель на земле, готов был туда залезть: как волк, попавший в капкан, старается убежать туда-сюда. Хочет спрятаться под низ подола кого-нибудь, однако, никто его и близко не подпускает. Этот бедный хан, как мышь, попавшая в огонь, от злости как будто жуёт рыбки косточки. А народ от смеха умирает. Вот так известный, смелый молодой человек получает благодарность и от хана, и от народа.

Тому, что хан свою дочь выдал за этого джигита, и тому, что он его сделал своим зятем, народ сильно обрадовался. После того, как он стал зятем хана, и хозяином ровно половины его ханства, у известного жигита появилась возможность всячески помогать своему народу.

* Тулук – мешок (из снятой чулком шкуры).

Таким образом, сын вора, в конце концов, становится любимцем народа, героем, и продолжает жить да поживать.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 348–353) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

«Сын вора» – сказка в которой переплелись элементы плутовской сказки, семейно-бытовой сказки и сказки о народном герое. Движущей силой сказки является трансформация главного героя, который из обыкновенного, преступника, потомственного вора превращается в народного заступника.

Обращает на себя внимание мусульманская лексика сказки – «мечеть», «намаз», «курманлык».



ЗАЛИМ

Эртте-эртте бир киши бла бир къатын жашап болгъандыла. Жашай баргъан заманда алагъа бир жаш туугъанды. Анга Залим деп атагъандыла. Жаш уллу болгъандан сора, атасы аны, сюрдю жерлерине элтип, хар затха юйретип башлайды. Залим, ёгюзлени башларындан тартып, атасы уа сабан агъачны тутуп, жер сюрюп, тирлик ёсдюрюп тургъандыла. Алай, къыйынлыкъ соруп келмейди, кюнлени биринде аналары, ауруу тийип, андан къайтышмагъанлай, ёлюп кетеди.

Жашны атасы жангыдан юйленди, экинчи кере ата да болду. Бир талай жыл тынч-ырахат озду. Алай, билмей тургъанлай, къыйынлыкъ экинчи кере да быланы эшиклерин къакъды. Атасы, жашын къатына чакъырып, осуят этди:

– Балам, мени халым тап туююлдо. Билген Аллахды, бу мени ажал саламым болур, бу ауруудан хазна тюзелмезме... Мени сюрдю жерлерими таныгъанса, барын да билгенсе, эки ёгюзюмю да санга осуят этеме, иги жаш кибик, къартлыкъ таяннгынчы, аланы къолунгдан кетермезсе. Сюрюучю жерлерибизни сюрюп файдаланырса. Жерни сюрсенг, жауу башына чыгъар, кюз артында уа, Аллах айтса, сыйынмагъан тирлик алырса. Жерни байлыгъы уллуду, балам. Осуятымы эсингде тут, унутма...

Кёп бармай, Залимни атасы ёлдо.

Жашау а барады, жаз башы да кезиуюнде келди... Жаш, ёгюзлеге боюнса да салып, боюнсагъа уа сабан агъачын тагъып, сюрдю жерлерине кетди. Эки-юч кюнден сора ёге ана, аурумай, «тёшек болду». Залим а, ингирикде келе келип, ёге анасын тёшекде кёргенлей:

– Не этесе, анам? Не болгъанды санга? Нек жатханса? – деди, жарсыды.

– Ауруйма, балам.

– Абери уа къапханмыса?

– Хоу бир да, къапханны айтаса, тангнга не чыгъарма, не къалырма.

– Не зат къабар эдим деп келеди кёлюнге?

– Бир зат да угъай.

– Айт, анам, жер башында жүрегинг тартхан зат бар эсе, табарма.

– Керекмейди бир зат да, балам, дунияны къояргъа ушашлы болуп турама.

Экинчи кюн жашны ёге анасыны ауругъанын къоншулары да билдиле. Залим а ёге анасына биягъы:

– Турма былай. Болур жүрегинг тартхан бир зат, айт манга, мен табарма, – деп тилейди.

Ол а:

– Балам, жүрегим тартхан жангыз бир затды: ёгюзледен бирин союп, аны шорпасындан ичсем, кесими къайтышырыкъ сунама, – дейди.

– Угъай, анам, бир башха зат тиле, атам осуят этген ёгюзледен соялыкъ туююлме. Андан сора, чыпчыкъ сютю десенг да, жер башында болгъандан мен тапмазлыкъ жокъду, алай ёгюзню уа соялмам, – деди Залим да.

Иш тийреге, элге белгили болду. Залимге келечиле жүрюйдюле:

– Аны бла къайтышырма деп, ниетине ол келген эсе, сой, жигит, – дейдиле.



Залим а:

– Угъай, соялмам. Андан сора, не айтса да, боюнум кыылдан иничкеди, – деп жууаплайды.

Къатын, энди аузуна суу алмагъанлай, төрт күн бла төрт кечени ётдюрдю. Келечиле уа, кёпден-кёп болуп, жашны ортагъа алдыла. Ол заманда жаш ёге анасына:

– Сен мени ёз анам болсанг, манга бу күн таянмаз эди. Сени керти акъылынг бир заманда ачыкъ болур. Алай, мен ёгюзню союп, сен да жалгъан дуниягъа къайтышып, жолоучулукъгъа чыкъгъан күн а, ёгюзге жал ёгюз табалмасам, ийнан сен манга, Аллах бла ант этеме, антымы ашамам, кесинги боюнсагъа жегерме. Бу ёкюллюк этген адамла санга шагъат болсунла, – дегенди.

Ёгюз союлду, къазан асылды. Залимни ёге анасы, ёгюзню этинден ашар-ашамаз, шорпасындан бир-эки уртлагъанлай, белинден жаулугъун тешип, олтурду. Жаш: «Ай, итден туугъан ит, мени ёгюзден айырдынг!» – деди ичинден.

Ёге ананы харам ниети уа: «Ёгюзледен бирин кетерсем, Залим экинчи ёгюз табалмаз. Алай болмаса, жашчыгъым жетген күнүнде ёгюз эркинлик кёрмез», – деп болгъанды.

Залим аны ол акъылын сезгенди... Да күнлени бир күнүнде тирменнге барыргъа тюшгенди. Залим, элде кирмеген ююу къалмай, кёп заманны айланды, алай ёгюзюне нёгер тапмады.

Ол күн, тынмай, аккыл болуп, ююүнде олтургъанды. Экинчи күн а, ёкюллюк, шагъатлыкъ да этген тиширыулары барысын да ююүне жыйып:

– Сиз барыгъыз да бир эдигиз... Да энди антыма ёллюк туююлме, айып этмегиз. Тур, анам, сёзюм башында айтылгъан эди, аягъында да боллугъу олду, – дегенди.

Баш бауну боюнуна тагъып, бир ёгюзню да боюнсаны бир жанына келтирип, къатынны да боюнсагъа жегип, жолоучу болуп тебиреди.

Чыбыкъ бла ёгюзге тие, къатын да ёгюзден къалмай, жол салып кетдиле.

Элден узайып, күн аллына бир жерге жетдиле. Ол элде межгит аллында күн тууушта олтуруп тургъан къартла, тиширыуну арбагъа жегилип келгенин кёрюп, хайран болдула. Жаш, арба бла жете келгенлей:

– Ассалам алейкум, жамауат! – деп сёлешди.

– Алейкум салам! – деп, бары да ёрге турдула.

– Жигит, алай бир сабырлан. Ол тиширыуну боюнсадан бир бошла.

Жаш ёгюзню да, анасын да боюнсадан бошлады. Абаданла:

– Былай кел, бизни таба, – дедиле.

Залим алларына барды.

– Не затды бу ишинг, жигит, айт бизге, ангылат. Тогуз ата-бабадан да, биз жетген заманда да быллай жумуш эшитмегенбиз. Не зулмусу барды бу тиширыуну?

Жаш ишни башындан ахырына дери айтып ангылатды. Ныгъышчылары ичинден бир орта жашаулу киши, чыгъып:

– Жигит, анангы боюнундан жипни ал да, мени бла кел. Юйреталлыкъ эсенг, мен санга төртге чыкъгъан ууанык береме. Бир тюрлю бир затынг керек туююлду, анангы акъ сютюнден халал болсун, – деди.



Ол киши баууну ауур эшигин ачхан заманда, бауда огъурсуздан хыйсабы болмагъан, төртге чыкыгъан ууанык кёрюндю.

– Къалай да эт, ууаныкны бизни элни ичинде юйрет. Алай энди ол тиширыу боюнсагъа тохтамасын.

– Сау бол, менден къайтмаса да, Аллахдан къайтсын. Энди тилеригим: бир юч кюннге малны эркинлигин манга бер.

– Беш кюннге десенг да, он кюннге десенг да, мал сени эркинлигингдеди.

Жаш ууаныкга юч кюнню ичинде не бичен, не суу кёргюзтмеди. Тёртюнчю кюн а, чабыр салам чакълы биченчикни къолтугъуна сугъуп барып, ол аны къабаргъа узалгъанда уа, башына бау салып, ол биченчик бла бек аздан эки жыйырма юйге кийирген болур эди, къапдырмай.

Ууанык ёгюзню къатына келген заманда, ёгюз, алгъа аны ийисгеп, ызы бла, жууашсынып, тохтап къалды. Жаш, ёгюзлени экисине да боюнсаны салып, анасын да арбагъа миндирип, жолуна тебиреди.

Тирменден къайтып келе, биягъы кюн тууушда олтуруп тургъан къартлагъа тубеди. Залим ныгъышха жете келгенде, ёгюзню иеси:

– Жамауат, алай айтханыма айып этмегиз, алай бу жаш ол огъурсуз, кюйсюз ууаныгымы жаратханды. Аллах арада болсун, мен анга къызымы да берир эдим... Биригиз келечи болугъуз, – деп, сёзюн ачыкъ айтханды.

Таматаладан бири ол келечиликни жашха жетдирди. Залим:

– Малындан къачмагъан, адамындан къалай къачарма, – деди.

Келечилик айтхан тамата:

– Сау бол, жигит, толу адамлыгъынг барды, – деп, къызыны алып келирге буйрукъ берди.

Келтирдиле. Алай къыз а арбагъа артыкъ ыразы болмай олтурду. Аны атасы бу жашха:

– Жигит, къызыны бир тюрлю айыбы жокъду. Жалан айтырыгъым: жангызымды, эсирикди, эт дегенинги этмейди да, этме дегенинги этеди. Хайда, ахшы жолгъа бар, жолунгдан къууан, алгъыш биргеди, – деди.

Жол салып кетдиле. Къызыны бир отоугъа кийирип, жаш ёге анасына:

– Менсиз мынга ашаргъа бир тюрлю бир зат берме, – деди.

Алай бла, эркинлик бермей, ашын-сууун кемлей тутду. Андан сора къыз таза боюн салып тохтады.

Кюнлени биринде Залим юйдегисине:

– Юйюбюз тарды, мен, Аллах айтса, тамбла, ёгюзлени жегип, агъачха барайым, бир жарагъан эки айры алып келейим. Аны бла таш тартып, юйге мурдор салайыкъ, – деди.

– Тюз айтгаса, – деди юй бийчеси.

Жаш агъачдан жарагъан эки айры алып къайтды, ол кюн окъуна таш ташып тебиреди. Таш ташып бошагъандан сора, ол, изеу этип, юй мурдорун салып, къабыргъаларын къалап бошаргъа: «Мурдорун сала туруп чакъырмагъан эсем да, башын жапхан кюн а къайын атама да бир билдирейим», – деп акъыл этди.

Юй баш жабылгъан кюн атасы бир ючлю ууанык бла, сырасы, бозасы бла келе тургъанын къызы юй башындан къарап кёргенди. Чабып барып, атасын къучакълап:

– Атам, Аллах ючюн, юйге жетип, ёгюзлеринги боюнсадан бошлагъанлай, ишлеп башла ансы, мында ишлемегеннге аш бермейдиле, – дегенди.



– Хо-хо, балам, бар, сен мени аллыма чабып келгенинги адам кёрсе, айып этер. Мен а ишлеп башларма, – деди кызыны атасы, жашырын ышара.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 356–359 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Залим» деген жомакъда кертисинден да залим адамны юсюнден айтылады. Жомакъны баи жигитини къолундан кён зат келеди. Ол адет-къылыкъны бузгъанланы жерлерин тапдырады. Биринчиден ол хыйлачы, ётюрюкчю ёге анасын тынч этеди, аны хатасындан ол сюйген ёгюзюнден къуру къалгъанды, экинчиден – жаи бугъачыкыны тынчайтады, ючюнчюден – халисиз кызыны тюз жолгъа салады.

Юйюр-жашау-турмуш жомакъда ушакъ насийхат халда бардырылады. Анда жюрек халаллыкъ бла иш кёллююкге уллу сый бериледи.

ЗАЛИМ

Давным-давно вместе жили мужчина и женщина. За время их совместной жизни у них родился мальчик. Назвали его именем Залим. Когда мальчик стал большим, отец отвез его на свои пахотные земли, и начал там всему обучать. Залим тянул за головы волов, а отец держал пахотный деревянный плуг, вспахивая землю, они ежегодно выращивали урожай. Однако горе приходит без предупреждения, в один из дней мать заболела какой-то болезнью, и от нее не смогла выздороветь, так и умерла.

Отец мальчика женился второй раз и вскоре снова стал отцом. Несколько лет прошло в спокойствии и мире. Но, они ни о чем не ведали, горе и во второй раз постучалось в их двери. Отец позвал сына к себе поближе и сделал завещание:

– Сынок, мое самочувствие неважное. Аллах знает, это у меня, наверное, приветствие смерти, от этой болезни я навряд ли восстановлюсь... Ты знаком с моими пахотными землями, все узнал, и двух моих волов я завещаю тебе, как достойный сын, пока ты жив, не упускай их из своих рук. Вспахивая наши земли, получишь выгоду. Когда будешь пахать землю, то ее жир всплывет наверх, а позднее осенью, даст Аллах, ты получишь несметный урожай. Богатство земли – безгранично, сын мой. Помни мое завещание, не забывай...

Спустя немного времени умер отец Залима.

А жизнь продолжается и весенняя пора пришла вовремя... Юноша, надев на волов ярмо, а на ярме закрепив пахотный деревянный плуг, отправился на поле. Через два-три дня мачеха, не заболевшая, «слегла в постель». А Залим, вечером возвращаясь домой, увидев мачеху в постели:

– Что ты делаешь, мама? Что с тобой случилось? Почему ты слегла? спросил он, ее сожалея.

– Я болею, мой мальчик.

– А что-нибудь ты поела?

– Куда там, о еде ты говоришь, до утра доживу, не доживу.

– А чтобы ты хотела поест, что приходит тебе на ум?



– Абсолютно ничего.

– Скажи, мама, если есть на земной поверхности, то, что ты желаешь, я тебе достану.

– Нет надобности, мой мальчик, я, похоже, оставляю этот мир.

На второй день о том, что у этого юноши заболела мачеха, узнали и соседи. А Залим своей мачехе опять:

– Нельзя так. Есть, наверное, что-нибудь, чего твоя душа желает, скажи мне, я найду, – говорит и просит.

А она:

– Мой мальчик, единственное, чего моя душа желает: зарезать одного из волов, и если я выпью бульон, я думаю, что выздоровею, – сказала.

– Нет, мама, проси что-нибудь другое, то, что отец мне завещал я не смогу зарезать. Кроме этого, хоть молоко птицы пожелаешь, на земле нет ничего, чтобы я тебе не достал, но зарезать одного вола я не смогу, – ответил ей Залим.

Эти разговоры распространились в округе, по всему селу. И к Залиму начали приходить посыльные:

– Если она думает, что благодаря воловьему мясу вылечится, если в ее душу эта мысль закралась, зарежь, джигит, – говорят ему.

А Залим:

– Нет, не смогу зарезать. Кроме этого, любое ее пожелание я готов выполнить! – отвечает он им.

Эта женщина, не беря капли воды в рот, провела четыре дня и четыре ночи. А посыльных становилось все больше и больше, и они все взяли в круг молодого человека. В это время молодой человек своей мачехе:

– Если бы ты была моей родной матерью, у меня бы не было таких дней. Твои истинные помыслы когда-нибудь раскроются. Но я зарежу вола, и ты возвратишься в этот бранный мир, а в день, когда я буду отправляться в дорогу, я одному волу не найду пару, поверь мне, клянусь именем Аллаха, я свою клятву не нарушу, я тебя саму запрягу в это ярмо. Вот эти посыльные люди, которые стоят здесь, пусть будут свидетелями, – сказал он.

Вола зарезали, поставили казаны*. И мачеха Залима, только успела откусить мясо быка и выпить два-три глотка бульона, она тут же сняла со своей поясницы платок, села. Молодой человек: «Ай, собачье отродье, ты отняла у меня вола!» – сказал он про себя.

А у мачехи нечистые помыслы: «Если я уберу одного из волов, то Залим не сможет найти второго вола. Если так не сделать, то в дни, когда мой мальчик подрастет, он не увидит свободы от волов», – подумала она.

Залим сразу же разгадал эти ее мысли... В один из дней ему пришлось отправиться на мельницу. Не оставалось ни одного дома в селе, куда бы Залим не заходил, не искал много времени, однако своему волу пару не нашел.

В тот день, не успокоившись, не зная, что делать, он сидел у себя дома. А на второй день, всех, кто был свидетелем, защитником той женщины, он собрал у себя дома:

– Вы все были заодно... А теперь я из-за своей клятвы не умру, не обессудьте меня. Вставай, мать, мое слово было сказано и в начале, и в конце будет тоже самое, – произнес он.

* Казаны – котлы.

Он накинул веревку на ее голову, вола подвел с другой стороны, обоих запряг к ярму и отправился в дорогу.

Кнутом дотрагиваясь до вола и женщины, он вывел их на прямой путь.

Отъехав от села подальше, к утру они прибыли к одному месту. В том селе перед мечетью на солнечной завалинке сидящие старики, женщины, увидев запряженную в арбу женщину, оказались в замешательстве. Юноша на арбе, когда приблизился к ним:

– Ассалам алейкум*, жамауат**! – начал он разговор.

– Алейкум салам*** – ответили они и все встали.

– Джигит, а ну-ка, повремени немного. Ту женщину отпусти-ка из ярма.

Юноша и вола, и мачеху выпустил из ярма. Старшие:

– Иди-ка сюда, в нашу сторону, – сказали ему.

Залим пошел к ним навстречу.

– Что это такое, жигит, расскажи нам, объясни, в чем дело. От девяти поколений отцов и прадедов и за то время, когда мы повзрослели, про такие дела не слышали. В чем проклятие этой женщины?

Юноша, обо всех делах, связанных с ней, рассказал и объяснил с начала до конца. Из людей, находившихся на завалинке, один пожилой мужчина, выходя вперед:

– Жигит, сними из шеи матери аркан и пошли со мной. Если сможешь научить, я тебе дам четырехгодовалого вола. Ничего мне от тебя взамен не надо, пусть будет во благо, как белое молоко твоей матери, – сказал он.

Когда мужчина открыл тяжелые двери, в загоне с безмерным диким нравом, показался четырехгодовалый бык.

– Поступай, как хочешь, этого молодого вола приручи в нашем селе. Но, чтобы та женщина больше не становилась под ярмо.

– Спасибо, если я не смогу отблагодарить пусть Аллах возместит. Еще одна просьба: на три дня дайте мне полное право распоряжаться с этим животным.

– Хоть на пять дней, если захочешь, на десять дней, это животное в твоей власти.

Юноша в течении трех дней этому молодому волу не показывал ни сена, ни воды. А на четвертый день он засунул сено в подмышки, размером с соломой, когда ее кладут в чабыры****, а когда молодой вол потянулся к нему поесть, он надел на его голову веревку, и этим маленьким кусочком сена, он его завел как минимум к сорока домам, не давая ему кушать. В то время, когда молодой вол подошел ближе к волу, вол сперва его обнюхал, а следом, смирившись, полностью успокоился. Юноша, надел на обоих волов ярмо, посадил мачеху на арбу и отправился дальше в путь.

Возвращаясь с мельницы, он опять встретил сидящих на солнечной завалинке стариков. Когда Залим приближался уже к завалинке, хозяин молодого вола:

* Ассалам алейкум – приветствие.

** Жамауат – люди; народ.

*** Алейкум салам – ответ на приветствие.

**** Чабыры – рабочая мужская обувь из бычьей кожи, в которую клали солому для утепления.



– Жамауат, не обессудьте меня за мои слова, но этот молодой человек смог укротить моего дикого, необузданного вола. Аллах свидетель между нами, я бы за него выдал бы и свою дочь... Один из вас будьте сватом, сказал он открыто, ничего не тая.

Кто-то из старших полномочия свата донес до молодого человека. Залим:

– Я не избегнул его животного, а его людей как я избегу? – сказал.

Старший, который был вместо свата:

– Спасибо, джигит, ты настоящий человек, – сказал и распорядился, чтобы сюда привели девушку.

Ее привели. Однако девушка села в арбу без особого удовольствия. Ее отец этому молодому человеку:

– Джигит, у девушки нет ничего такого, чтобы ее можно было в чем-то упрекнуть. Лишь я тебе должен сказать: она у меня единственная, избалованная, не делает то, что говоришь делать, а делает то, что говоришь «не делай». Давайте, в добрый путь, пусть будет счастливой дорога, будем благоразумны, – сказал.

Они отправились в дорогу. Парень сперва завел девушку в комнату, после этого говорит мачехе:

– Без меня ей кушать ничего не давай.

Таким образом, он содержал ее, не давая свободу, урезая ее пищу и питье. После этого девушка была полностью в его подчинении.

В один из дней Залим сказал своей жене:

– Наш дом тесноват, я, даст Аллах, завтра запрягу быков, схожу в лес, привезу крепкий сруб с двумя толстыми раздвоенными ветками. На нем будем притаскивать камни и начнем устанавливать фундамент.

– Правильно ты говоришь, – отвечает ему жена.

Молодой человек из лесу приволок крепкий сруб с двумя толстыми ветками и в тот же день начал притаскивать камни. После того, как заготовил камни, он собрал людей на *изеу** и начал ставить фундамент и когда уже достраивал стены: «Когда строил фундамент, не звал, но когда буду перекрывать крышу, приглашу тестя», – подумал он.

В день, когда они перекрывали крышу, отец девушки шел с трехгодовалым быком, с бузой и сырой**, и это заметила дочь, которая в это время была на крыше дома. И она побежала ему навстречу и обняла своего отца:

– Отец, ради Аллаха, когда придешь домой, как освободишь своих быков из ярма, сразу начинай работать, а то здесь, кто не работает, тому еду не дают, – сказала.

– Хорошо, хорошо, дочь моя, иди, то, что ты ко мне навстречу побежала, если кто увидит, потом будет позорить. А я возьмусь сразу за работу, – ответил отец девушки, незаметно улыбаясь.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 356–359) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Имя «Залим» в переводе с карачаево-балкарского языка означает «сильный, всемогущий». Оправдывая свое «говорящее» имя, главный

* *Изеу* – толока (работа сообща в помощь кому-либо).

** *Боза, сыра* – напитки домашнего приготовления.



герой выступает в сказке как всемогущий укротитель необузданных нравов. В первом случае он наказывает хитроумную лживую мачеху, по вине которой он лишился любимого вола, во втором случае ему удается обуздать молодого бычка, в третьем – избалованную девушку.

Произведение можно отнести к семейно-бытовым нравоучительным сказкам, где утверждаются такие ценности, как добрый нрав и трудолюбие.



ЖАРЛЫНЫ АЙТХАНЫ ЧАПЫРАКЪДАН ЁТМЕЗ

Эртте-эртте, бек эртте, бир элден жети киши Мекка-Мадинагъа барыргъа оноулашхандыла. Аны эшитгенде, бир жарлы адам да:

– Оллахий, мен да алагъа къошулур эдим, – деп, ниет этгенди.

Ала эки-юч кюнню ичинде, къарыуларына кёре, жол азыкъларын хазырлагъандыла. Ол жарлы киши да, юйюне келип, юй бийчесине:

– Жети адамгъа такъмакъ болама да, жол азыкъгъа не зат къурайыкъ? – дейди.

– Да къураб’а, не къуарыкъса. Эки тауугъубуз барды да, аланы боюнларын тарт. Мен а аланы да, бир юч-тёрт таба гыржын да биширейим, – дейди къатын.

Сегизиси да жолоучу болуп чыкъдыла. Элден узайгъандан сора, кюн ортада тюш азыкъгъа олтурдула. Аладан бирине таматалыкъ этерге тюшдю.

– Келигиз, аланла, кимде не азыкъ болгъанын жазып къояйыкъ, – деди тамата.

Кимини учасы, кимини жарты къою... Жарлыны уа – эки тауугъу бла юч-тёрт гыржыны.

Азыкъларын жазгъандан сора: «Кюннге юч кере ашасакъ, ма быллай бирибизге жетерикди», – деп оноулашхандыла. Да болсада жарлыны артмагъына тиймейирек баргъандыла. Алай жети кишиден бир фитначырагъы кече, адамла тынчайгъандан сора, жарлыны артмагъын ачып, гыржынларын жеринде къоюп, эки тауугъун да ашап къойгъанды.

Кюнлени бир кюнюнде жарлыгъа:

– Чыгъар, бюгюн сени азыгъынгы ашайыкъ, – дегендиле.

Жарлы артмагъыны башын ачса – тауукъла жокъ...

– Аланла, эки тауугъум бла юч-тёрт гыржыным барды деп жаздыргъан эдим, энди уа тауукъла жокъдула, – дейди.

– Кет-кет, ким берлик эди санга тауукъ, гыржын окъуна къыйналып табаса! – деп, жазгъанларын унутханча, аны масхара этдиле.

Меккагъа-Мадинагъа жетгинчи, жарлыны жаны къыйналгъанлай барды. Кеси уа: «Аллах арада болсун, ёлмегенлей, элиме, жамауатыма жыйылсам, бу ишни бир ачыкъламай къоймам», – деп, жүрегине алады.

Хаж къылып, юйюне келгенлей, юйдегисине жан къыйынын айтды.

– Жанынги къыйнама, бурунгулула: «Жарлыны айтханы чапыракъдан ётмез», – дегендиле. Не этериксе? Алай болса да, бар, бир амал изле да, не болса да, мал ал, – дейди къатыны. – Мен боза этерме. Малынги уа сояrsa да, биширесе, сора ол сени бла баргъан жети адамны да чакъырыrsa. Ала бла бирге уа тийрени, къоншуну да жыяrsa. Ашны-сууну къангагъа салгъанда: «Не зат ючюндю бу къууум?» – деп сорсала, сен а: «Атам бек иги заманны жашап ёлгенди. Аны аса-темир таягъын ёрге тагъып къойгъан эдим, аны уа къол тутхан жерин чычханла кемирп, атны жалкъасында къылы тенгли бир жерчиги тыйып турады», – де.

Жарлы юй бийчеси айтханча этди. Ол атасыны аса-темир таягъыны юсюнден айтханда, нёгерлеринден бири:

– Оллахий, болур! – деп, туз-гыржынны юсюнде Аллах бла ант этди.

– Аланла, къарагъыз бу адамгъа! Мекка-Мадинагъа жолоучу болуп чыкъгъан заманыбызда, эки тауугъум урланнганды дегенимде: «Ким берлик



эди санга эки тауукъну?» – деп, масхара этип, бетими жерге кьаратхан эдинг да. Бюгюн а, атамы аса-темир таягъын чычханла кемирп, атны боюнунда кьыл тюгю тенгли жерчиги тыйып турады дегенимде: «Оллахий, болур!» – деп ант этесе. Мындан чыгъып кетигиз, туз-гыржынымы ашаргъа тийишли адамла туйюлсюз, – деп, хажи жёнгерлерин юйюнден кьыстагъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 359–361 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Жарлыны айтханы чапыракъдан ётмез» деген юйюр-жашау-турмуш жомакъ муслийманлыкъ бла байламлыды. Аны бла бирге жомакъда жашау халлагъа да кьаралады. Меккагъа атланган адамланы араларында бир жарлы адам болгъанды. Жолоучула аны хыликкя эте баргъандыла. Юйлерине кьайтхандан сора, ол кьатыныны болушлугъу бла кьутсуз адамлагъа эс тапдырады. Аланы жалгъан жашау оюмларын эслерине салады.

СЛОВО БЕДНЯКА НЕ ИМЕЕТ ВЕСА

Давным-давно, очень давно, из одного села семеро мужчин решили отправиться в Мекку-Медину*. Когда это услышал один бедняк:

– Оллахий**, я бы тоже отправился с ними, – сказал он и в душе принял решение.

Они в течение двух-трех дней, исходя из своих возможностей, приготовили для себя дорожную пищу. И этот бедный мужчина, придя домой, своей жене:

– Я к семерым людям присоединяюсь, какую пищу нам в дорогу приготовить? – спрашивает.

– Готовить-то, что будешь готовить. У нас есть две курицы, нарежь их. А я и их, и еще три-четыре хлеба на сковороде испеку, – отвечает ему жена.

Они восьмером отправились в путь. И в полдень, когда оказались от села далеко, остановились пообедать. Там одному из них пришлось стать тамадой***.

– Давайте, аланы**** у кого какая пища имеется, проведем запись, – сказал тамада.

У кого уча*****, у кого половина барашки... А у бедного – две курицы и три-четыре хлеба.

Когда они закончили записывать пищу: «Если в день будем три раза питаться, хватит на столько-то времени», – решили они. В любом случае они шли, особо не дотрагиваясь до артмака***** бедного. Однако, из семерых мужчин один хитроватый, ночью, когда все легли спать, открыв артмак у бедного, оставив хлеба нетронутыми, съел две его курицы полностью.

* Мекка, Медина – священные города мусульман.

** Оллахий – клянусь богом!

*** Тамада – глава, старший.

**** Аланы – обращение, означает «соплеменник».

***** Уча – туша барашка, зажаренная целиком.

***** Артмак – переметная сума.

В один из дней бедному:

– Вытаскивай, сегодня покушаем твою еду, – сказали путники.

Когда бедный раскрыл сверху свой арткам – курей там не оказалось...

– Аланы, я записывал, что у меня есть две курицы и три-четыре хлеба, а теперь курей нет, – сказал он.

– Хватит-хватит, кто бы тебе дал курей, хлеб и то с трудом достаешь! – сказали они ему, как будто забыли про свои записи, и начали насмехаться над ним.

Пока они дошли до Мекки-Медины, душа у бедного все время горевала. А сам: «Пусть Аллах будет между нами, если я живым вернусь в свое село, в свое общество, это дело обязательно раскрою», – сказал он и схоронил свою обиду в сердце.

Совершив хадж*, когда он вернулся к себе домой, всю душевную боль рассказал своей жене.

– Не гневи свою душу, древние люди: «Слово бедняка не имеет веса», – говорили. Что поделаешь? Что бы не было, сходи, разыщи какую-нибудь возможность, приобрети какое-нибудь животное, – советует ему жена. – Я приготовлю бузу**. А животное зарежешь, сварить, после этого пригласишь тех семерых людей, которые были с тобой. И вместе с ними соберешь всю округу, всех соседей. Когда еду-питье начнут ставить на стол: «По какому поводу эта затея?» – если спросят, тогда ты: «Отец мой в очень хорошее время пожив, умер. Его железный посох я повесил в свое время под крышу, а его рукоятку мыши загрызли, размером как у лошади на гриве волосинка держится он», – скажешь им.

Бедняк поступил, как жена сказала. Он, когда рассказывал о железном посохе, один из его друзей:

– Оллахий, может быть! – сказал и, где рядом находились хлеб-соль, поклялся Аллахом.

– Аланы, посмотрите на этого человека! В то время, по дороге в Мекку-Медину, когда я ему сказал, что у меня украли две курицы: «Кто бы тебе дал две курицы?» – ответил, издеваясь, заставил мой взор опустить на землю. А сегодня, у моего отца железный посох прогрызли мыши, что он удерживается на волоске размером как у лошади на гриве, сказал: «Оллахий, может быть», – говоришь и произносишь клятву. Выйдите все отсюда, вы не достойные люди у меня есть хлеб-соль, – сказал хаджи*** и прогнал своих друзей из своего дома.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 359–361) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка, отмеченная мусульманской тематикой. Также в сказке заострена социальная проблематика. Среди паломников, отправившихся в Мекку, оказался один бедняк, над которым путники издевались в дороге. По возвращении домой крестьянин с помощью жены проучил недостойных людей с ложными ценностями.

* Хадж – паломничество.

** Буза – национальный хмельной напиток.

*** Хаджи – человек, совершивший паломничество в мусульманские святые места – Мекку и Медину.

ТУЗЛУ ХЫЧИНЛЕ

Бир амманы кьаты жүреккли, огьурсуз келини болгъанды. Ол келин, кьайын анасын сүймей: «Башха жашаса, аны жумушундан кьутулур эдим», – деп, хаман хычинле этгенди. Бир хычиннге тузну ахшы кьуюп, адам аузуна алмазча этип, аны кьайын анасына салып тургъанды. Ол да, келинине, былай деп, жукь айталмай, ашагъан да эталмай, бир-экичик кьап да, ары тюрт да, ачлай кьал, – бек абызырагъанды. Азгъанды. Къарыусуз болгъанды. Жашы аны эслемегенди, хычин этип, келини аммагъа алапат кьарайды деп тургъанды.

Ачдан онгсуз болгъан амма: «Мен былай бла ажымлы ёлюрге тебирегенме. Къызыма барайым, ол жан аурутур», – деп, кьоншу элде кызына баргъанды.

Къызы анасыны алада жашаргъа келгенин онгсунмагъанды, алай а жукь айтмагъанды. Киеу а иги адам болгъанды, кьайын анасына кьууаннганды, кьой кесип, аммагъа кьонакълыкь этгенди. Отха кьазан бла эт асып, жумушха кьарай, амманы кьызы да, киеую да тышына чыгъып кетгендиле. Амма, от жагъадан арлакьда таянып, баш кьагъа тургъанды.

Эт бишер заманда кьызы, кирип, аммагъа салынырыкь сыйлы сюеклени кьазандан чыгъарып, бусхулгъа чырмап, кьалкьып тургъан анасыны узун этегини тюбуне салып, чыгъып кетгенди.

Бир кесекден а ол да, киеу да келгендиле. Этни чыгъарып, тепсиге сала башласала – аммагъа салынырыкь сыйлы сюекле жокь болуп тура. Сейирсинип, тегерекге, тапкагъа, тепсиге кьарайдыла, излейдиле, – жокь.

– Анам, ёрге бир кьопчу, юйде, сенден ёзге, жан жокь эди, сен кьапхан болурса! – дегенди кьызы.

– У-оу, ол а не хапарды?! – дегенди амма.

– Болмагъанны гырылдама! – деп кьыжырагъанды киеу юй бийчесине. – Сен ананга кьаллайла сёлешесе?!

Алай а, жанына тийип, амма ёрге кьопханды. Этегинден этле тышгендиле.

– Жашыртын алмасанг, биз сенденми аярыкь эдик? – дегенди кьызы.

– Кьой, болмагъанны айтма! Сенден чыкьгъанды бу да, сенсе гынттылы, кьайгъылы! – дегенди киеу анга.

Аммагъа да ариу айтханды. Алай а амманы жүреги кьыйналгъанды, кёлуне чабаргъа жетгенди. Эс ташлагъанды. Ыйлыкьгъандан, жерге кирлик болгъанды. Эс жыйып:

– Кьоюгъуз бла хантыгъыздан эсе келиними туз хычини игиди. Юйюме кетейим, ач болсам да, сыйым бла ёлейим! – деп, чыгъып кетгенди.

Киеую ариу айтып кюрешгенди, – кьайтаралмагъанды.

Юйюне келе, амма чегетчикни арасы бла баргъан жолчукьда, жилияй: «Кьой, фасыкь кьызымы бал гыржынындан эсе, харам келиними туз хычини мажалды!» – дей баргъанды.

Ол кезиуде жашы чегетчикде отун жыя тургъанды да, анасыны ауазын эшитгенди. Сейирсинип, алгъа атлап, терек ташадан тынгылагъанды. Кесин а кёргюзтмегенди.

Анасы, ол сёлени, жилияй да, айта, озуп кетгенди. Жашы уа, отун да алып, ардан келгенди. Сагъышланнганды, сейир этгенди.



Келин, биягынлай, эрлай, хычинле этип, тепсиге салгъанды. Ашай башлагъандыла.

Анасы биягъы хычинни, ашамай, ары тюртгенлейине, юй бийчесине эслетмей, узалып, жашы анасыны аллында хычинден къапханды. Къапса уа, аллайны къапсын, ичи-тышы да – туз гюттю, бёрю оту!

Жаш, жукъ айтмай, тепсиден къобуп кетгенди.

Экинчи жол да, биягынлай, ингирде тепсиге олтургъандыла да, юй бийче, келтирип, хар кимни аллына хычин табакъланы салып, нени эсе да алыргъа ызына бурулгъанлайына, жаш, марап туруп, сермеп, амма бла келинини табакъларын эрлай ауушдургъанды. Келин да олтуруп, бары да табакъларына узала башлагъандыла. Талай замандан бери къарыны тоюп аш ашамагъан амма ырахатланып ашагъанды. Келини уа, хычининден бир къабып, чайнай башлагъанлайына, жыйырылып, эслетмезча, ууучуна тюркюргенди. Экинчи кере къапханды да, дагъыда алай болгъанды. Сора, эр кишиси эслейди деп къоркъуп, кесин тездюрюп, хычинин ашагъанды. Ашап бошагъандыла да, жатхандыла.

Эр киши къопханды да, эшикге чыкыгъанча этип, юйде чырт суу къоймай, барын да, чыгъарып, тышында тёркенди. Киргенди да, жатханды.

Кече келин суусап болгъанды. Туруп, аш юйде сауутланы, челеклени жокълагъанды, алай а бир деп бир тамычы суу табалмагъанды. Орамдан арлакъда баргъан суучукъ болгъанды. Тамам амалсыз болуп, кечегиде, челек да алып, келин ары жумулгъанды. Марап тургъан жаш, къарангыда кесин эслетмезча, арлакътын ызындан жумулгъанды. Тиширыу, жетип, челекге алыргъа да тёрзалмай, эрлай бауурундан къапланып, суу тогъуп башлагъанды. Жаш, сермеп, аны чачындан тутуп, башын суугъа-суугъа батдыргъанды, тунчукъдура башлагъанча этгенди. Ол да, суу ичерин да унутуп, алмосту бууду деп, къоркъуп, къобар, къачар дыгалас этгенди, алай а ычхыналмагъанды, къобалмагъанды. Жаш, ол танымазча, башха ауаз бла:

– Ич, ич, битеу сууну ичип боша! Анагъа аман – былай болады! – деп, дагъыда аны башын суугъа-суугъа кёргенди. Келин:

– Ай, бу жол бир сау къалсам, амманы мен къол аязда тутар эдим. Туз хычинни татыуун энди билдим! – деп жилягъанды. – Не зат эсенг да, бу жол бир сау къой, энди акъыллы болдум! – деп жалбаргъанды.

– Ма, ал суунугу! – деп, челегин да къолуна тутдуруп, жаш эрлай думп болуп кетгенди.

Сора, келип, жатып, жукълап тургъанча этгенди. Тиширыу, бир заманда эсин жыйып, челегин да алып келип, юйге шыбыртсыз, жашыртын кирип, орунуна жатханды. Баш иесини солугъанына тынгылап кёрюп, ол уянмаздан жукълагъанча ангылап, кёл басханды. Ол жолдан сора тузлу хычин этгенни къойгъанды. Ол угъай, амманы не кереклисине да ажымсыз къарап, ыразы этип тургъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 361–363 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёрюгенди.

«Тузлу хычинле» деген юйюр-жашау-турмуш жомакъны насийхат магъанасы барды. Анда айтылгъаннга кёре, келин кесини къайын анасын

кьурутургъа излеп, иш этип, анга тузлу хычинле ашатып турады. Жашы аны билип, мадар этип, къатынына тюз акъыл салыргъа къолундан келеди.

Ол тиширыу, «тюз акъылгъа юйрениуню дерслерин» алгъандан сора, юлгюлю келин болуп къалады.

СОЛЕННЫЕ ХЫЧИНЫ*

У одной бабушки была жестокосердная, невоспитанная сноха. Невзлюбив свою свекровь, она мечтала жить отдельно, избавившись от ее поручений. Она так решила и начала постоянно готовить соленые хычины. В один хычин она безмерно сыпала соль, так, что никто бы не взялся попробовать, и его она ставила перед свекровью. Старушка ничем своей снохе не могла возразить, не могла и поесть, раз-два откусывала и откладывала в сторону, оставаясь голодной, – в итоге она сильно изнемогла. Исхудала. Стала слабой. Сын все это не замечал, видя пекущиеся хычины, он думал, что сноха за ней прекрасно ухаживает.

С голоду обессиленная бабушка: «В таком положении я могу умереть раньше времени. Схожу к своей дочери, она с душой отнесется ко мне», – подумала она и пришла к ней в соседнее село.

Дочери то, что мать пришла к ней жить, не понравилось, однако, она ничего не сказала. А зять был хорошим человеком, свекрови сильно обрадовался, зарезав барашку, встретил бабушку как настоящего гостя. Положив мясо в казан**, он поставил его на огонь, занимаясь делами, дочка старушки и зять вышли на наружу. Бабушка, неподалеку от очага прислонившись, кивала головой.

Ко времени, когда мясо должно было свариться, ее дочь зашла и сыйлы-сюек***, предназначенный бабушке, вытащила из казана, завернула в тряпку и, положив спящей матери под длинный подол, вышла и ушла.

Через некоторое время она вернулась, и зять тоже. Когда начали вытаскивать мясо и засобирались поставить на стол – ценных кусков, которые полагались бабушке, там не оказалось. Удивившись, начали искать кругом, смотрят на полку, на стол, ищут, и не находят нигде.

– Мама, поднимись-ка наверх, в доме, кроме тебя не было ни души, ты, наверное, съела! – сказала ее дочь.

– Ой-ой-ой, что за козни?! – сказала бабушка.

– Что ты болтаешь! – сказал зять и поругал свою жену. – Как ты со своей мамой разговариваешь?!

И все-таки, бабушка, растревоженная, встала на ноги. Из ее подола упали куски мяса.

– Если бы ты тайком не брала, мы, для тебя разве пожалели бы? – сказала дочь.

– Оставь, хватит нести бессмыслицу! Все это исходит от тебя, ты такая вздорная, неумная! – сказал зять ей.

* Хычины – пирог.

** Казан – котел.

*** Сыйлы сюек – почетная доля (при подаче на стол мяса-курманлык кости распределяются согласно возрасту, старшинству гостей).

И по-хорошему он старался бабушку успокоить. Но все равно сердце бабушки загоревало и ей стало плохо. И она потеряла сознание. От позора чуть было сквозь землю не провалилась. Приходя в сознание:

– Чем ваш баран и ваша пища лучше соленые пироги моей снохи? Пойду я к себе домой, хоть буду голодной, но умру с честью! – сказала она и ушла.

Зять всячески старался ее уговорить, но вернуть обратно так и не смог.

Бабушка возвращалась к себе домой по дорожке, которая вела через лес и плача: «Все равно, чем никуда негодной моей дочери медовые хлеба, лучше злостной снохи соленые пироги!» – говорила она по пути.

В это время ее сын собирал в лесочке дрова и услышал ее голос. Удивившись, чуть передвигаясь вперед, из-за деревьев тайком начал ее слушать. А сам не показывался.

А его мать, эти слова, плача, произносила, и шла дальше. А сын, заготовив дрова, пришел позже. Сильно задумавшись, удивился.

Сноха опять быстренько сделала хычины и поставила на стол. Они начали есть.

Мать снова хычин не стала есть, как только отодвинула в сторону, не показывая своей жене, сын откусил хычин, который был подан матери. Как только он откусил, такое с ним случилось, и снаружи и внутри – соленая лепешка отравя для волка!

Сын, ничего не говоря, встал из-за стола и ушел.

И во второй раз вечером, когда они сели за стол, хозяйка принесла и перед каждым поставила чашки с хычинами, и в связи с чем-то, когда она отвернулась что-то взять, сын, выследив, и быстро схватив, поменял тарелки матери и снохи. Сноха вернулась, села за стол и все потянулись к своим тарелкам. Бабушка, которая много времени сытно не наедалась, сейчас ела спокойно. А сноха, один раз откусив хычин, когда начала разжевывать, она зажмурилась, и чтобы не показать, выплюнула к себе в ладони. И во второй раз она откусила, и во второй раз так получилась. После этого, испугавшись, что муж заметит, еле стерпела и съела свой хычин. Все кончили есть и легли спать.

Муж встал, как будто по своим делам и, не оставив дома ни капли воды, все что было, вытащил и вылил на улицу. И вернувшись обратно, лег спать.

Ночью его жене сильно захотелось пить. Она встала и на кухне всю посуду, ведра перевернула, однако ни капли воды не нашла. А подальше от улицы текла речка. От безысходности ночью жена, взяв ведро, поторопилась в том направлении. А муж ночью незаметно издалека следил за ней. Женщина, еле добрав до речки, терпения не хватило даже набрать воды в ведро, быстренько легла грудью на землю и начала большими глотками пить воду. А молодой человек, быстро схватив ее за волосы, опустил ее головой вниз и топил в реке, казалось, что он ее хочет задушить. Она, в свою очередь, позабыв, про жажду, испугавшись, что ее схватил алмосту*, старалась встать и убежать, однако ей не удалось освободиться, она не смогла подняться на ноги. Мужчина другим голосом, чтобы она не узнала:

– Пей, пей, чтобы ты всю воду выпила! Кто плохо обращается с матерью – с такими вот, что случается! – сказал и еще раз начал ее голову топить в воде. Жена:

* *Алмосту* – демоническое существо.

– Ай, если бы в этот раз осталась живой, я бы бабушку носила на руках. Теперь я поняла вкус соленого хычина, – сказала и начала плакать. – Кто бы ты ни был, в этот раз оставь меня в живых, теперь-то я поумнела! – начала она умолять.

– Вот, возьми свою воду! – сказал он и вручив ей в руки ведро, молодой человек быстро исчез из виду.

После этого он вернулся обратно домой, лег и сделал вид, что спит. Женщина, через некоторое время пришла в себя, взяла в руки ведро, возвратившись, тихонько и незаметно легла в свою кровать. Она прислушалась к дыханию мужа и, решив, что он спит крепким сном, несколько успокоилась. После этого жена перестала делать соленые хычины. И, кроме того, очень хорошо ухаживала за старушкой, и она была ею всегда довольна.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 361–363) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка с ярко выраженным нравоучительным содержанием. По сюжету, сноха, желая выжить свою свекровь, намеренно кормила ее пересоленными хычинами.

Глава семьи, узнав об этом, проучил свою жену весьма остроумным способом. Женщина, прошедшая «школу перевоспитания», стала образцовой снохой.



АКЪЫЛЛЫ КЪЫЗ БЛА ЮЧ СОРУУ

Бурун заманлада бир акъыллы, иги хан болгъанды. Ол, ким не айтып кюрешсе да, юйленирге, юйюне тиширыу келтирирге унамай тургъанды.

– Сыйлы хан, ай юйюнге, былай нек этесе, сен къарт болмаймы турлукъса? Санга уа, къалгъанлагъа киби, сабий керек туююлмюдю? Заманында сабийлеринги ёсдюрсенг иги болмазмы? – деп, ол ханнга жууукъ-тенг алай айтсала, ол да:

– Айхай, сабийлери болса, алагъа иги оноу эте билген, игиге юйрете билген, аллай бир акъыллы, мени кесиме да эс тапдыра турур киби бир эсли тиширыу керек эди, – деп, кишини жаратыргъа унамагъанды.

– Былай этип, кишини сан этмей турсанг, акъыллы тиширыу къайдан табарыкъса? Сагъыш эт! – дегендиле адамла.

Ахырында бу хан:

– Юч соруу берейим да, аланы жууапларын билип айталгъан къызны келтирмей къоймам! – дегенди.

Ханны адамлары ханлыкъда битеу къызланы жыйып, хан да юч сорууун бергенде, ол къызланы бири да аланы тюз жууапларын айталмагъанды.

– Ханны юч сорууу берилмеген къыз къалдымы? – деп соргъандыла.

– Угъай, – дегендиле. Алай, дагъыда жокълай кетип, жумушчуланы бирини къызы алыкъын чакъырылмагъанын айтхандыла.

– Аны да чакъырыгъыз! – дегенди хан.

Чакъыргъандыла.

– Эрттенбла ингирни арасы неллай бирди? – дегенди хан.

– Эрттенбла ингирни арасы биркюнлюкдю. Кюн, эрттенбла чыгъып, ингирде батып кетеди, – дегенди къыз.

– Кёк бла жерни ортасы уа неллай бирди? – деп соргъанды хан.

– Кёк бла жерни ортасы уа – бирди. Бир къарап – экисин да кёресе!

– Ётюрюк бла кертини ортасы уа?

– Ётюрюк бла кертини ортасы уа – тёрт элиди! – деп, къыз къулагъы бла кёзюню ортасына къол аязын салады. – Кёз кертини кёреди, къулакъ ётюрюкню эшитеди. Кёз бла къулакъ ортасы уа тёрт элиди.

Ол къызны акъыллылыгына сейирсинип, хан аны алгъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 363 б.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Акъыллы къыз бла юч соруу» деген жашау-турмуш жомакъда сёз жарыкъландырыу ишни юсюнден барады. Анда бир бирге бойсунган жашау халла тозурап, юлгюге башха тюрлюсю кёргюзтюлюнеди.

Бир бирледе ахшы оюмну бардыргъанла бош адамла, халкъны келечилери болуп чыгъадыла. Башха жанындан а, жомакъда тиширыуну акъылыны къарыууна, кючюне ыспас этиледи.

УМНАЯ ДЕВУШКА И ТРИ ВОПРОСА

В древние времена жил один умный и хороший хан. Он, кто бы, что не говорил, не соглашался жениться и в дом не разрешал привести женщину.

– Святейший хан, пойми же, зачем так делаешь, ты думаешь, что к тебе старость не придет? Тебе, как и другим, ребенок не нужен? Не лучше ли вовремя вырастить своих детей? – говорили ему близкие и родственники. А он им в ответ:

– Ну, конечно, нужна единственная умная, мудрая женщина, если дети будут, чтобы ими могла хорошо руководить, чтобы им она дала хорошее воспитание, чтобы и мне вправляла ум, – говорил он и никого не хотел признавать.

– Если ты себя будешь вести так, не будешь никого признавать, откуда ты найдешь умную женщину? Подумай хорошенько! – говорили ему люди.

И в конце этот хан:

– Тогда я задам три вопроса, ту, которая найдет на них правильный ответ, я непременно приведу домой! – сказал он.

Люди хана из его окружения собрали всех девушек, и когда он им задал три вопроса, из всех этих девушек ни одна не смогла дать правильный ответ.

– Есть еще девушка, которой не задали три вопроса хана? – спросили.

– Нет, – ответили ему. Однако, еще раз проверив, поняли, что дочь одного из слуг еще не пригласили, не поставили ее в известность.

– Ее тоже пригласите, – сказал хан.

Позвали.

– Утром какова середина вечера? – спросил хан у нее.

– Утром середина вечера один день. Солнце утром восходит, а вечером заходит, – ответила девушка.

– А середина неба и земли какова? – спросил хан.

– А середина неба и земли – одна. Один раз взглянешь – и то, и другое увидишь.

– А середина вранья и правды?

– А середина вранья и правды – четыре эли*! – сказала девушка и приложила свою ладонь между ухом и глазом. – Глаз видит правду, ухо слышит вранье. А расстояние между глазом и ухом – четыре эли.

Удивившись уму этой девушки, хан женился на ней.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 363) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Семейно-бытовая сказка на просветительскую тематику. В сказке сокрушается иерархическое мышление и доказывается, что зачастую носителями здравого смысла являются именно простолюдины, выходцы из народа. С другой стороны, в сказке воспеваются сила и мощь женского интеллекта.

* Эли – палец (линейная мера).



ЭКИ КЪАРЫНДАШ БЛА БИР БАШХА ЖАШЧЫКЪ

Бир къарындаш бирси къарындашына къонакъгъа баргъанды да, эшегин босагъа къатында такъгъанды. Эшек, ычхынып, къайры эсе да кетгенди. Эки къарындаш да, эшекни излей бара тургъанлай, бир жашчыкъгъа жолукъгъандыла да, анга:

– Эшек кѳрмегенмисе? – деп соргъандыла.

– Къаллай эшек? Сол кѳзю сокъур болгъан, арт аягъындан акъсагъан, сыртында да арпасы бла эски жашил машогу болгъан эшекними излейсиз?

– Ыхы, ма ол эшекни излейбиз. Къайдады ол?

– Угъай, мен аллай эшек кѳрмегенме, – дегенди жашчыкъ.

– Къалай кѳрмегенсе?! Сен аны сокъурлугъун, акъсакълыгъын, юсюнде жюгюн да билесе, къайда болгъанын билмей амалынг жокъду! – деп, къарындашла ачыулангандыла.

– Ётюрюк жарамаз, сизни эшегигизни мен кѳрмегенме, – деп, жашчыкъ жолуна тебирегенди.

Ала жашчыкъны, къолундан тутуп, эшегигизни ол урлагъанды деп, тюзюнлей Тѳреге элтгендиле.

– Аланла, – дегенди жашчыкъ, – мен жолда эшекни ызын кѳргенме. Онг арт аягъыны ызы, аны бирси аякъларыны ызыча, терен туююлду, атламы да къысхады. Ол эшек онг арт аягъындан акъсагъанын ким да билликди. Жолну онг жанында хансла ашалыпдыла. Сол жанында хансны кѳрсе эди, эшек аланы да ашар эди. Сол кѳзю сокъурду. Эшек терек къатында къабыргъасын ышыргъа тохтагъанды да, терек юсюнде жашил халыланы къойгъанды. Машокдан акъгъан арпа бюртюклеге кѳре уа, тешиклери бла эски машок болгъанын билгенме.

Быланы барына да тынгылап, Тѳре, ол эки къарындашха да аяусуз урушуп, жашчыкъны жолуна бармагъа къойгъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китатдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 363–364 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

Къарачай-малкъар кѳлден чыгъармачылыкъда акъылгъа сый берген бир къауум жомакъны бирге жыйышдыргъанда, «Эки къарындаш бла бир башха жашчыкъ» деген жомакъны да алагъа къошаргъа тийишлиди. Мында биз бийик акъылны келечиси болургъа фахмусу жетишиген, жашауда бола тургъан ишлени чурумун сезе, ачыкълай билген жашчыкъны кѳребиз.

ДВА БРАТА И ЧУЖОЙ МАЛЬЧИК

Один брат, придя в гости к другому брату, привязал своего осла у порога. Осел, отвязался и отправился куда-то. Два брата, когда пошли на поиски осла, встретили одного мальчика:

– Ты осла не видел? – спросили у него.

– Какого осла? Осла, у которого левый глаз слепой, на заднюю ногу хромой, на спине в старом зеленом мешке ячмень?

– Да, да, именно этого осла ищем. Где он?

– Нет, такого осла я не видел, – ответил мальчик.

– Как ты не видел?! Ты знаешь, что он слепой, хромой, какой груз у него на спине, знаешь, а где он находится, ты обязательно должен знать! – сказали братья и разгневались.

– Врать я не хочу, вашего осла я не видел, – сказал мальчик и пошел своей дорогой.

Они, схватили мальчика за руку, обвинили его в том, что он украл их осла, и напрямик привели его в Тёре*.

– Аланы**, – обратился мальчик, – я по дороге видел след осла. След от правой задней ноги, в отличие от других ног, не глубокий, и шаг короткий. И всякий поймет, что этот осел хромал на заднюю правую ногу. По дороге справа трава общипана. Если бы осел видел на левой стороне траву, он бы и эту траву съел бы. У него левый глаз слепой. Осел около дерева остановился, чтобы почесать свой бок, и на дереве оставил зеленые нитки. А видя, высыпавшиеся из дырявого мешка семена ячменя, я понял, что мешок старый и дырявый.

Выслушав всех, Тёре, сильно отругал братьев и отправил мальчика своей дорогой.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 363–364) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В карачаево-балкарском фольклоре можно выделить целую группу сказок, объединенных тематикой культа разума. «Два брата и чужой мальчик» – одна из таких сказок. Как носитель высокого интеллекта и логических способностей в ней представлен мальчик, способный устанавливать причинно-следственные связи в окружающем мире.

* Тёре – третейский суд.

** Аланы – обращение, принятое у карачаевцев и балкарцев, означает «соплеменник».

ДУНИЯ БЫЛАЙ ТУРМАЗ

Эртте, биз туумагъан ёмюрледе, бир шахарда бир бек ахшы киши болгъанды. Ол киши кеси ёмюрюнде бир адамгъа бир капек къыйматы заран этмегенди неда, аман сёз айтып, кишини жанын аурутмагъанды. Кимге не бла болушайым, не бла жашаууна жарайым деп айланганды.

Бир жол, шахардан чыгып бара, ол киши эл сабанларына жетгенде, боюнсаны бир жанына ёгюзню, бирси жанына уа бир кишини жегип, сабан сюре тургъан биреуню кёргенди. Ол боюнса тюбюнде кишиге жазыгъы келип, къатларына жанлап:

– Иш къолай болсун! – деди.

Салам къайтармагъанлары ачыу тийип:

– Сен кесинг да адам суратда кёрюнесе, кесинг кибик бир адамны боюнсагъа, кёлюнг барып, къалай жегесе? – деп сорду.

Сабан сюрген:

– Ол мени къулумду, мен анга не суйсем да этерге эркинме, сени аны бла ишинг жокъду, – деп ачыуланды.

– Ахшы киши, бу сени къулунг эсе, манга сат! Кеси тартхан тенгли бир алтын берирме, – деди.

Болсада ол сатаргъа унамады.

Ол боюнса тюбюнде тургъан къул бу ахшы кишиге:

– Эй, адыллы адам, сен мынга ырысхынгы къоратма, дуня былай турмаз! – дегенде, ахшы киши да жолуна кетеди.

Болсада сау жылны ичинде ол боюнсада тургъан киши бу ахшы кишини тюшонде да, тюнюнде да эсинден кетмей турду.

Бир жол а дагъыда, алайтын кетип бара, элге къайтып, сураса, ол къулну, азат болуп, кеси юйюнде жашап тургъанын эшитеди. Дагъыда бир жылдан, айланып, биягъы элге къайтханда, ол къул элге оноучу болуп тургъанын кёредди. Эки жылдан а ол къул къыралгъа баш болуп къалады.

Сора бу ахшы киши, ол къулгъа барып:

– Сен бу бийик даражагъа къалай жетдинг? – деп сорду.

Ол а, айтыгучусуча:

– Дуня былай турмаз, – деп къойгъанды.

Бир бёлек замандан а ол къул патчах ёледи. Биягъы киши, келип, аны къабырыны сын ташында «Дуня былай турмаз» деген жазыуну кёредди. Сора: «Энди ёлдю, дуниядан кетди, бу былай нек айтхан болур эди?» – деп, сейир-тамаша болады.

Бир талай жылдан барып къараса, ол къабырланы барын да суу алып, ол сын ташны уа ким эсе да суу ыздан чыгъарып, «Дуня былай турмаз» деген, онгмай, жазыуу да тургъанын кёредди.

Сын ташха терен сейирсинген халында къарап, ол ахшы киши: «Да, кертиди, адамны жашаууну, ауалы болгъан кибик, ахыры да боллукъду: къартаяды, ёледи, жашауу бирча турмайды, сагъатла бла тюрленеди. Бу сын ташны иеси аны билип айтханды. Ол затны кертилигине бу сын таш кеси да шагъатды», – деп оюмлай, юйюне кетди.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 364–365 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Дуния былай турмаз» деген жомакъны мурдорунда халкъны жашаугъа кѣз къарамы бла бирге кѣлден чыгъармачылыкъны фикирин да эслерчады. Ол хар заманда тюрлене тургъан дуняны айныу халын кѣргюзтеди.

Адамны къолундан кѣп зат келирге боллукъду: бюгюнлюкде жумушчу болуп тургъан адам, тамбласында къырал баичы болуп къалыргъа боллукъду.

Жомакъны ахырында ол сейирлик суратлау халда кѣргюзтюлюнеди. Суудан чыгъарылгъан сын таида окъуна аллай жазыу бар эди: «Дуния тюрленмей турмаз!» – деп.

Бу жомакъ насийхат халда битеу аламны жорукъларындан бирин эсге салады.

МИР НЕ ОСТАНЕТСЯ ТАКИМ

Давно, в те времена, когда мы еще не родились, в одном городе жил очень хороший мужчина. Этот мужчина за свою жизнь ни одному человеку ценой в одну копейку вреда не нанес, или же, произнеся плохое слово, никому душу не поранил. Он ходил с мыслями, кому чем помочь, как облегчить людям жизнь.

Однажды, выезжая из города, этот мужчина дошел до сельской пашни, и заметил, как один человек пахал землю, на ярмо с одной стороны поставив вола, а с другой – мужчину. Он, пожалев мужчину под ярмом, подошел к ним поближе:

– Да будет ваш труд добрым! – поздоровался.

Разозлившись на то, что они не ответили на его приветствие:

– Ты сам находишься в человеческом облике, как ты мог себе подобного человека впрячь в ярмо, как у тебя духу на это хватило? – спросил у него.

Землепашец:

– Он мой раб, я имею право поступить с ним, как захочу, тебе до него не должно быть никакого дела, – сказал со злостью.

– Добрый человек, если этот мужчина – твой раб, продай его мне! Сколько он весит, столько я тебе дам золота, – сказал он.

Но все равно он не захотел его продать.

Раб, который находился под ярмом, этому доброму человеку:

– Эй, справедливый человек, ты зря не трать на него свое состояние, мир не останется таким! – после этих слов благородный человек пошел своей дорогой.

Однако, этот благородный человек не мог забыть ни во сне, ни наяву в течение целого года облик раба, который находился под ярмом.

Однажды, когда он еще раз проходил по тем местам, он свернул в село, и, расспросив, узнал, что тот раб, освободившись, живет в своем доме. Еще через год, путешествуя, он заглянул в это же село, и увидел, что бывший раб стал главой села. А через два года раб становится правителем этого государства.

После этого благородный человек, придя к рабу:

– Как ты смог достичь такой высокой чести? – спросил.

А он, как и раньше:



– Мир не останется таким, – сказал долге не думая.

Через некоторое время погибает этот раб-правитель. Тот же благородный человек, придя туда, на надгробном камне его могилы видит надпись: «Мир не останется таким». Тогда он: «Теперь он умер, ушел в иной мир, зачем же он так говорил?» – подумал он и сильно удивился.

Через несколько лет, когда он пришел на то же место, он увидел, что все могилы затоплены, а тот надгробный камень кто-то вытащил из-под воды. На нем виднелась неиспорченная надпись: «Мир не останется таким».

С удивлением взглянув на надгробный камень этот благородный человек: «Да, это правда, в жизни у человека есть начало, но есть и конец: он стареет, умирает, его жизнь не остается неизменной, ежечасно меняется. Хозяин этого надгробного камня, знал, что говорил. Что это истина, тому свидетель этот надгробный камень», – призадумался он и отправился к себе домой.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 364–365) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В основу сказки положено народное, фольклорное представление об изменчивости, диалектичности мира.

Возможности человека безграничны: сегодняшний раб может завтра стать правителем государства. Символичен финал сказки. Даже на надгробном камне, извлеченном из воды, значилась надпись: «Мир не останется таким!» Это медитативная сказка, сказка-притча об одном из законов мироздания.

ПАТЧАХ БЛА БИР БАЙНЫ ЖАЛЧЫСЫ

Бир жол бир патчах халкыны, не ишлеп, кылай жашау этгенин билир муратда, зыккыл кийимле кийип, кыолуна да таяк алып, жаяулай, жолгга чыггады.

Узак да бармай, жол жанында илипин кыза турган бир жалчыны кйрүп, озады. Ингирде патчах, юйюне кыайтып келе, биягы жалчыны алайда кюреше турганын кйрүп, кыатына жанлап:

– Эй, алан, ишинг кылай болсун! – деп саламлашады.

– Ой, сау бол, кылай да Аллах берсин! – деди анга жалчы.

– Кйп иш этгенча кйрүнесе, алган ахчангы уа кыайры жибересе? – деп сорду патчах.

– Алганым хазна туйюлдо, болсада бир бйегин суугга атама, андан кыалган бир бйегин борчума береме, андан кыалган бирин ёнкючге кесим береме, андан да кыалганын а кыатыным бла кесим ашайбыз, – деди.

Не кйп ойлашса да, патчах бу сйзлени магъанасына туюшонмейди. «Да бу кылай болады? Эрттен намаздан ахшамгга дери жер кызып, тапхан ахчасын суугга неге атады? Неда, кеси борчундан кыутулмай турганлай, тапхан ахчасын биреуге ёнкючге неге береди?» – деп, патчах кйп сагыш этди.

Алай, не кйп кюрешсе да, бу сйзлеге туюшонюрге патчахны акылы жетмеди. Сора ол:

– Мен бош адам туйюлме, сизни патчахыгызма. Ханлыгымда халны билейим деп, бюгюн зыккыл кийим кийип чыкыганма. Алайды да, сен манга бусагъатдагы сйзлеринги магъанасын айт. Мен а аны ючюн санга юч алтын берейим, – деп, жалчыгга юч алтын узатды. – Алай мен эшитирикни башха адамгга айтма, – деп, кыаты билдирди.

Алган алтынларын кыюнуна салып, жер кызган жалчы сйзюн былай башлады:

– Мени жашауум биямукук блады. Бир кюнню иш хакыма туз сатып алама да, аны биямукук бишген суугга атама. Экинчи кюн иш хакымы атам бла аны аш-сууларына береме. Алагга кыараргга борчум болганын кесинг да билесе. Ючюнчю кюнюмю хакын сабийлериме кыоранч этеме. Мен бусагъатда алагга кыарамасам, мен кыарт болсам, ала да манга кыарамазла. Сен ол затны да билесе. Тйртюнчю кюн хакымы уа кыатыным бла кесим ашайбыз. Тоймасакук да, аманны кебинден кечине барабыз, – деди.

Юйюне кыайта келгенлей, патчах, кесини кыыралыны жан-жанына атлыла чапдырып:

– Мени бир элберим барды, аны магъанасын ким билсе, анга патчахлыгымы жартысын береме, – деп хапар салады.

Кыаланы ары, бери жанындан байла, бийле, эфендиле, кыуртхала да жыйылдыла. Ала бла бирча, ол жалчыны иеси да келди. Тюрлю магъанала жоралап кюрешдиле, алай болса да, бири да билип айталмады.

Бир кюн ол жалчыны иеси, аны ишлегенине кыараган сылтау бла келип, сйз арасында:

– Патчах манга бир кыыйын элберле сорду. Тапхан ахчасыны бир бйегин суугга атады, бир бйегин борчуна береди, бир бйегин ёнкючге береди,



андан кьалгъанын а кеси хайырланады. Аны кьалай билирге боллукьду? Аны ойлаша, башым кьепгенди, билиб'а болалмайма, – деди.

– Да юйюнге, ол элберни патчахха мен юйретгенме да, аны бла уа элни неге кьыйнап кюрешеди бу? – деп сейирсинди жалчы.

– Тохта, сен бу элберни магъанасын билемисе? – деп сорду жалчыгъа иеси.

– Да билмей а. Патчах кеси аны ючюн манга юч алтын бергенди! – деп махтанды жалчы.

– Ай юйюнге, мен юч алтын угъай, эки кере юч алтын окъуна берейим, сен манга ол элберни магъанасын айт ансы, – деди иеси.

Жарлы жалчы, алты алтынны хапарын эшитгенде, кьууанып, патчахны: «Менден сора, кишиге да айтма», – дегенин да унутуп, элберни жууабын айтды да кьойду.

Бай, олсагъатдан патчахха барып, элберни жууабын айтады. Алай патчах, ол затны байгъа ким айтханын билип, жалчыгъа кьаты ачуланады.

– Ай, ант ургъан, сени мен бир кьереийим! Айтхан сьезюнде турмагъанын кьеремисе аны! – деп жаныды.

Патчах алайда окъуна жалчыны, чакьыртып, асмакьгъа асаргъа буюрады. Жалчыны, келтирип, патчахны аллына элтедиле. Ол заманда жалчы ол тогъуз алтынны да кьоюнуна салып келеди.

– Сен кесинги байынга элберни магъанасын неге айтдынг? – деп, патчах ачулу кьзлери бла кьарады. – Экибизни сьезюбюз кьайдады? Мени бла бир кьорюшгюнчю, кишиге ауузунгдан сьез чыгъарма деген эдим да, сьезюнде нек турмадынг?

– Да бир кере кьорюшгюнчю деген эдинг. Андан бери уа мен сени бла бир ненча кере окъуна кьорюшгенме. Айтдырмай кьоймай эсенг, мен сени юч кере кьргенме. Ма, ётюрюк эсе, – деп, кьоюнуна узалып, алтынларын кьол аязына жайып, патчахны кьезюне кьргюздтю. – Ма, хар алтында сени башынг кьорюнуп турады, – деди.

Ол заманда патчах, байны жалчысына айтыргъа жууап тапмай:

– Аперим! – деп, дагъыда юч алтын берип жиберди.

Ол жалчыны иеси байгъа уа патчах, жукъ да бермей, ачуланып, итни кьыстагъанлай кьыстагъанды да, кьойгъанды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакьла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 365–367 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кьчюргенди.

«Патчах бла бир байны жалчысы» деген жомакьда халкъны акъылы, аны хунери, ниет байлыкьны бек сыйлы жери болуп, бу жомакьда суратлау халда кьргюзтюлюнеди.

Бир жарлы, кесини акъылыны жютюлюгюнден бла сьезге усталыгьындан башын ёлюмден алгъан угъай, бай окъуна болады.

ЦАРЬ И СЛУГА ОДНОГО БОГАЧА

Как-то один царь, чтобы посмотреть, как его народ трудится, как себе жизнь обеспечивает, надел на себя одежду из лохмотьев, взял в руки посох и пешком отправился в дорогу.

Не успел он отойти далеко, как он увидел вдоль дороги копавшего канаву батрака и прошел мимо него. Вечером царь, возвращаясь обратно домой, опять встретил того же батрака, работающего так же, и подошёл к нему поближе:

– Эй, алан*, чтобы твой труд был тебе во благо! – поздоровался он с ним.

– Ой, спасибо, дай Аллах всем благо! – ответил ему батрак.

– Видно, что ты много трудишься, а заработанные деньги на что ты тратишь? – спросил у него царь.

– Зарабатываю совсем немного, при этом одну часть бросаю в воду, от оставшейся части возвращаю долги, другую долю я сам отдаю людям в долг, а еще, что осталось, мы с женой едим, – сказал он.

Сколько бы не размышлял царь над этими словами, но так и не понял в чем их смысл. «А как это получается? От времени утреннего намаза** до сумерек копая землю, и то, что заработал, почему бросает в воду? Или же, когда он сам не расплатился со своими долгами, почему он заработанные деньги отдает кому-то в долг?» – подумал царь и долго размышлял.

Однако, как бы царь не старался понять смысл этих слов, ума у него не хватило. После этого он:

– Я не простой человек, я – ваш царь. Чтобы узнать обстановку в своём царстве, я сегодня вышел, переодевшись в лохмотья. Поэтому, ты разъясни мне смысл слов, которые ты сейчас сказал. А я тебе за это дам три золота, – сказал и протянул батраку три золота. – Но то, что сейчас я услышу, ты другому человеку не говори, – сказал он ему, серьезно предупреждая.

Батрак, который копал землю, полученное золото спрятал за пазуху и свой разговор начал так:

– Моя жизнь проходит с похлебкой. За каждый день своего труда я покупаю соль и ее бросаю в воду, где варится похлебка. На второй день то, что заработаю, отдаю на еду-воду отцу и матери. Уход за ними – моя обязанность, ты сам это понимаешь. На третий день, то, что заработаю, трачу на нужды своих детей. Если я сегодня за ними не буду хорошо ухаживать, когда я состарюсь, и они за мной не будут присматривать. И ты это тоже понимаешь. А на четвертый день заработанное, едим мы с женой. Хоть не сыты, но еле-еле выживаем, – сказал он.

Возвратившись домой, царь, вокруг своего царства на все стороны послал гонцов на лошадях:

– У меня есть одна загадка, кто разгадает ее смысл, тому я отдам полцарства, – распространил он такую весть.

Со всех концов дворца начали собираться бай***, бий****, эфенди, куртха*****. Наравне с ними пришел и хозяин того батрака. Приводили различные смыслы, однако, ни один из них не смог в точности раскрыть.

В один день хозяин этого батрака, как бы проверяя его работу, в разговоре:

* Алан – обращение, означает «соплеменник».

** Намаз – молебен; богослужение у мусульман.

*** Бай – богач.

**** Бий – князь.

***** Куртха – ведьма.



– Царь мне задавал очень трудные загадки. Часть заработанных денег бросает в воду, другой частью возвращает свои долги, еще одну часть сам дает в долг, а остальной частью сам пользуется. Как это можно разгадать? Думая над этим, голова у меня разбухла, но никак не могу разгадать, – сказал он.

– Да, что ты, этой загадке царя я научил и почему этим делом он мучает народ, – сказал батрак с удивлением.

– Подожди, ты знаешь смысл этой загадки? – спросил у батрака его хозяин.

– А как мне не знать. Царь из-за этого дал мне три золота! – похвастался батрак.

– Да за это, я не только три золота, даже дважды могу по три золота дать, ты мне только раскрой смысл этой загадки, – попросил его хозяин.

Бедный слуга, когда услышал о шести кусках золота, обрадовавшись, позабыв про обещание царю: «Кроме меня никому не говори», – раскрыл ему ответ этой загадки.

Этот богач сразу же пошел к царю и рассказал ответ этой загадки. Однако царь, узнав, кто сказал богачу, сильно рассердился на батрака:

– Ай, клятвопреступник, лишь бы мне тебя увидеть! Смотри на него, как не сдержал обещанное слово! – говоря, сильно разгорячился.

Царь тут же приказал позвать батрака и повелел его повесить. Батрака приволокли сюда и представили перед царем. В это время батрак держал за пазухой девять кусков золота.

– Почему ты своему хозяину-богачу раскрыл смысл этой загадки? – сказал царь и посмотрел на него свирепыми глазами. – Где наша договоренность? Пока со мной не встретишься, никому не говори ни одного слова, я же тебе приказал, почему ты не сдержал свое слово?

– Да, вы же говорили до первой встречи. С тех пор я с вами сколько раз виделся. Если на то пошло, я вас видел три раза. Вот, если это вранье, – сказал он, полез за пазуху и оттуда вытащил золото, разложив его на ладони, представил взору царя. – Вот, в каждом золоте твоя голова виднеется, – сказал он.

В это время царь, не зная, что сказать в ответ батраку:

– Молодец! – сказал и дал еще три куска золота и отпустил.

А хозяину батрака, зажиточному человеку, не дал ничего, разозлившись, прогнал его как собаку.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 365–367) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Народный ум, народная смекалка, как высшие ценности духовного порядка, опоэтизированы в данной сказке. Бедняк благодаря своему острому уму и красноречию не только избежал смерти, но обогатился.

БИР АБЫННГАН МИНГ СЮРЮНЮР

Заманланы бир заманында эки къарындаш болгъандыла. Аланы бири жарлы, бири уа мал иеси болуп жашагъанды. Бай къарындашны аты Къасай, жарлы къарындашны аты уа Ийнал эди.

Къасай, кеси кибик бир байны кызын алгъанда, шапалыкъ этерге, учаланы биширирге да Ийналны чакъыргъанды.

Ийнал, къарындашлыкъ жюрек бла барып, Къасайны къурманлыкъын этген заманда, бир къойну башын, аякъларын да къатынына берип:

– Бишир да, сабийлеге ашат, – деп жибергенди.

Биреу а, аны эслеп, Къасайгъа барады да:

– Ийнал этлени, урлап, юйюне жибереди, – деп тил этеди.

Аны эшитгенде, Къасай, Ийналгъа келип:

– Къурманлыкъ этледен юйюгюзге ийгенмисе? – деп сорады.

Ийнал къарындашына:

– Да хау, бир къойну башын бла аякъларын сабийле ашасынла деп ийгенме, – дегенинде, Къасай:

– Алан, мен сени къонакълагъа кесилген къурманлыкъны жаланбыдыр сабийлеринге ташы депми чакъыргъан эдим бери? – деп кычырды.

Ийнал, ийменерек да болуп:

– Да халкъ ашагъан къурманлыкъдан ала да къапсынла деп ийгенме да, кыызгъана эсенг, аны тюрбюнде кълалмабыз, къайтарырбыз, – деп жууаплады.

– Къапсала уа, халкъдан кълалса кълбар эдиле, – деп, тюртерек тырман этди Къасай.

– Ярабий, бу тюркюлю аякъла ючюн не уллу тырман этдинг, бай къарындашны къатында жарлы къарындаш жашамаймыды?! Андан эсе келмегеним, кърмегеним да ол аякъла болгъа эдиле! – деп кючсундю Ийнал.

– Да сени уа жарлы менми этгенме?! Сен да болсанг а бай! Сен да мен туугъан ата-анадан туугъан ушайса да! Сен манга къарындаш болмагъа эдинг да! – деп, Къасай оспар-оспар сёлешди.

– Да, ыйлыгъа эсенг, бу элни санга къююп, сен болмагъан жерге кетерме, сора, зауукъ этип, ыйлыкъмай жашарса, – деди анга Ийнал.

Къысхасы, сылтау болмагъан жерде терен чурумлагъа жете, бир бири бетине къарамазлай болдула. Ахырында Къасай, Ийналны ол элден къурутур ниет бла, уручуду деп, Тёреге тарыкъды. Да не? «Байны сийдиги тирмен айландырады», «Жарлыны сёзю уа чапыракъдан ётмейди» деген сёзле жашаудан алыннгандыла.

Кюнлени биринде Ийналны Тёреге чакъыргъанларында, сабийлери аны бутларына чулгъанып жилядыла. Ийнал а Тёреде кесине не тюрлю дау айтылырын да алыкъа билмейди.

Къасай атха минип, Ийнал жаяулай – жолгъа чыкъдыла. Экиси да бир бирге кёз-къаш бермей, бара барып, бир элге жетедиле. Ийнал бек арыйды, бек талчыгъады, суусап да болады. Сора бу, суу тилей, бир юйге бурула тебирегенде, сылжырагъа этеди деп, Къасай аны ызындан ат бла чабады. Аны чабыуул этип келгенин кёргенде, Ийнал, кърккюп, хунаны башы бла арбазгъа секирди да, кълонда ауругъан сабийчиги бла олтуруп тургъан къатынны юсюне тюрдю. Ол заманда къатын, чексиз элгенип, хыны секиргенде, ауругъан сабий, аны кълондан ычхынып, ташха тиеди да, ёледди.



Энди жазыкь Ийнал саудан ёлду, суусабын, арыгъанын да унутду. «Къыйынлыкъны азындан кёбю игиди» дегенча болду. Халкъ басынды. Къасай да жетди. Сабийни атасы бир жанындан сюелип, анга не затла этмедиле!

Дауурну ахырында, Ийналны мурдаргъа да тергеп, экиси да муну Тёреге бирден сюрюп тебирейдиле. Ала атлыла, ол жаяу – кетип бара, эшеги балчыкыгъа батып, чыгъаралмай кюреше тургъан бир адамны юсюне жетедиле.

Ол адам эшегини къулакъларындан тутуп тартханын кёргенде, Ийнал болушургъа барады да, эшекни къуйругъундан тутуп тартханлай, ол хужулукъну къуйругъу, юзюлюп, къолуна келип къалады.

Эшекни иеси аны кёргенде, кёзлерине къан чапды.

– Да сени уа юйюнг оюлду да, кел да, эшекни къуйругъун юз деп, сени ким чакъыргъан эди? – деп, ол да Ийналны Тёреге сюргенлеге къошулду.

Не этерик эди? «Ташны ата билмеген, башына урур», – деп, ёкюнюп тебиреди. Сагъышдан башы кёпдю. Ачыудан кеси кесин жоярча болду.

Юч даучу да, Ийнал да кетип бара, бир жар къыйыры бла озаргъа тюшдю. Ол заманда Ийнал: «Энди мен Тёреге барсам да бир, бармасам да бир. Тёре, аланы къююп, мангамы ийнанырыкъды? Андан эсе, аланы табасы болмай, кеси кесими ёлтюрейим», – деп, жардан энишге секиреди да, тюбюнде сюрюу кюте тургъан жашны юсюне тюшюп, аны билегин бла бутун сындырады.

Ыхы, энди бютюнда онгду! Ол сюрюучюню атасы да алагъа къошулуп, Тёреге тебиредиле.

Алгъыннгы даучула аздыла дегенча, энди уа бу да тёртюнчюге къошулуп, Тёреге жетдиле. Ийнал, тагъылгъан ат кибик, эшикде сирелип къалды, ала уа тюзюнлей Тёре жыйылычу юйге кирдиле.

Сокъур насып да болады. Ийнал эшик аллында сюелип тургъанлай, тёречи, ишине келе, Ийналны юсюне болду.

– Да, жюйюсхан, мени тёрт адам болуп келтиргендиле. Сен мени бу ишден къутхарсанг, мени мюлкюм да сени болур, кесим да ёмюрюмде сени юй жумушчунг болурма, – деп тиледи.

Тёречи Ийналны сёзюне бюсюреди. Кеси да аман адам болмаз эди, баям.

– Кёрюрбюз, – деп, юйге ётдю.

Дауачыланы кёрдю. Ийнал да кирди.

– Не жумуш бла келгенсиз? – деп сорду тёречи.

Къасай, туруп, Ийналны кёргюзтюп:

– Ма бу мени къурманлыгъыма мени мюлкюмден онеки къююму сойгъанды, менден эркинлик болмай, къонакъланы юлюшлеринден урлап, бир къойну башын, аякъларын да юйюне жибергенди, – деди.

– Ахшы, андан сора айтырынг бармыды?

– Угъай, жокъду.

– Да бу киши юйюне жиберген баш бла аякъланы, сен башха адамгъа берирге деп, юлюшге айыргъанмы эдинг?

– Угъай, аллай зат а болмагъанды. Алай ол аланы менден эркинликсиз жибергенди.

– Ол да ахшыды. Ол баш бла аякъладан ёзге, бу адам сени къурманлыгъындан жукъ иш а ашагъанмыды?



– Угъай, андан сора ашаргъа къоймагъанма, – деди Къасай.

Ол заманда төречи:

– Ыхы, энди ангылашынды. Сен къурманлыкъны халкъгъа деп этгенсе. Халкъ ойнай, жырлай, учангы ахшысын ашагъанда, Ийнал а онеки къойну сойгъанда, бир баш бла төрт аякъ ашагъанды. Дагъыда сен урлагъанды деп сюелесе. Сени бетинг къайдады?! Төрени оноуу: Ийнал къурманлыкъ этсе, сен да аны онеки къоюн союп, бир баш бла төрт аякъ урларса, хайда, бар, – деп, Къасайны алай ары ашырды. Сора:

– Экинчи дауачы, айт дауунгу, эшитейим, – деди.

– Мени айтырым а олду: бу адам, хунадан секирип, къатынымы къоркъутханды да, сабийими аны къолундан тюшюртүп ёлтюргенди, – деди экинчи дауачы.

– Ахшы. Да ол сени къатынынгы билипми къоркъутханды?! Ургъанмыды?! Неда сабийинги ат да, ёлтюр дегенмиди?! – деп сорду төречи.

– Да аны уа билмейме, мен алайда болмагъанма, – деди ол экинчи дауачы.

Төречи да:

– Ыхы, да сора сени къатынынг сабийин андан къоркъуп атмагъанды, тауушдан къоркъуп атханды. Тауушну Тёреге чакъырсанг, ол заманда ишинге къарарбыз, бар, – деп, экинчи дауачыны да юйюне ашырды.

Ол да тайды.

Төречи:

– Ючюнчю дауачы, айт, энди сени да эшитейик! – деди.

– Мени эшегим батмакъгъа батып, мен да аны чыгъаралмай тургъанлай, бу адам, чаба келип, балчыкъдан чыгъарама деп, аны къуйругъундан тартханды да юзюп къойгъанды! Юзгени кибик, энди сау да этсин! – деди ол да.

– Ахшы, – деди төречи. Сора: – Сени эшегинг, къуйругъу юзюлгенликге, кёрюрюнден, эшитириден неда жюрюрюнден жарты боллукъ туююлдо. Жыгъылгъанда, къуйругъун, уруп, кеси сындыргъан эсе да, ол бизге белгили туююлдо. Сен эшекни батмакъгъа батдырмасанг, ол эшекни къуйругъун тартырыкъ да, юзерик да туююл эди. Терс сен кесингсе, бар, – деп, аны да юйюне жиберди.

Ол да башын къашый чыкъды. Төречи:

– Аха, төртюнчю, сени уа не дауунг барды?

Төртюнчю:

– Мени дауум олду: жашым жар тюбюнде къойла кюте тургъанлай, бу адам, башындан секирип, юсюне тюшгенди да, билегин, бутун да сындыргъанды, – деди.

Төречи:

– Ыхы. Да сени жашынгы алайда тургъанын ол къайдан биллик эди? Неда, барып, ол секирип жерде тюбюне кирип нек тура эди? Ол а, жардан секирип, сени жашынга тийгенде, ачымагъан сунамыса? Кёзюнг тёмзей эсе, ол, барып, жарны тюбюнде туруп, сени жашынг а барсын да, башындан секирип, аны билегин, бутун да сындырсын. Анга къабылмыса?

– Угъай, мени жашым ол бийик жардан ёмюрге да секирмез, – деди төртюнчю.



– Да бар сора, экинчиде жашынг аллай кьоркьюулу жерде хатаны сакълап турмасын, – деп, төречи аны да ашырды.

Андан арысы кялай болгъанын билеме деген а алдарыкъды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 367–370 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Бир абынган минг сюрюнюр» деген жомакъны жашау-турмуш жомакълагъа санаргъа тийишлиди. Мында башдан аякъ бардырылгъан сурутлау онгла адам улуну жашауунда тенглик болмагъанын, къолайлары болгъанла, баишаланы эниш этгенлерин, аланы сыйларын теплегенлерин ачыкълайдыла.

Жомакъны баиша ёзеге уа тюзлюкню жакълагъан сюдюню сыфаты (Төрени келечиси) бла байламлыды. Ол бир къарыусуз, жаланнгач элчини жакъларгъа онг табады. Болгъан ишлени кесича сейир тохташдыра билип, бирде уа адам къыйналып ангыларча окъуна айтып, ол жарлыны терслиги болмагъанын кёрюзтюр, башын жууандан алады.

ОДИН РАЗ СПОТКНУВШИЙСЯ ТЫСЯЧУ РАЗ ПОШАТНЕТСЯ

В давние времена жили два брата. Из них один был бедным, а другой имел много скота. Богатого брата звали Касай, а бедного – Ийнал.

Касай, когда женился, как он сам на дочери одного богача, чтобы их обслуживать и приготовить им уча* он позвал Ийнала.

Ийнал пошел к нему с братским сердцем, когда делали курманлык**, голову барашки и ноги он передал своей жене:

– Свари и дай покушать детям, – сказал и отправил.

А один человек это заметил и приходит к Касаю:

– Ийнал у тебя похитил мясо и отправил к себе домой, – сказал он.

Услышав это, Касай пришел к Ийналу:

– Ты от жертвенного мяса часть к себе домой отправлял? – спросил он у него.

Ийнал брату:

– Да, да, голову барашки и ноги передал, чтобы дома дети покушали.

Когда Касай это услышал:

– Алан***, разве я тебя позвал, чтобы ты для гостей приготовленное жертвенное животное отправлял своим голопузым детям? – закричал на него.

Ийнал, несколько смутившись:

– Ну, да, я решил, что пищей, которой весь народ угощается, пусть мои дети тоже покушают, если тебе это так жалко, мы как-нибудь осилим и вернем тебе, – ответил он ему.

– Могли бы остатки, если останутся от народа, покушать, – сказал Касай с пренебрежением.

* Уча – туша барашка, зажаренная целиком.

** Курманлык – жертвоприношение в религиозный праздник курман, а также в честь какого-либо события, угощение.

*** Алан – обращение, означает «соплеменник».

– Ярабий*, из-за этих волосатых ног как можно столько возмущаться, разве рядом с богатым братом бедный брат не живет?! Лучше бы я сюда не приходил и не видел бы этих ног! – сказал Ийнал возмущенно.

– Да, я что ли тебя сделал бедным?! Ты бы тоже стал богачом! Ты же тоже родился от той матери, того отца, от которых я родился! Лучше бы ты не был моим братом! – сказал Касай в сердцах.

– Да, если ты стесняешься, я оставлю это село тебе, уйду туда, где тебя не будет, после этого ты проживешь счастливо, не стесняясь, – сказал ему Ийнал.

Короче говоря, на ровном месте, находя глубокие причины для раздора, они стали такими, что уже не могли друг другу смотреть в лицо. В конце Касай в надежде прогнать Ийнала из села, обозвал его вором и обратился в Тёре**. И что? «Моча богатого жернова крутит», «Слово бедняка не имеет веса» – такие выражения взяты из жизни.

В один из дней Ийнала вызвали в Тёре, а его дети плакали, вцепившись в его колени. Ийнал еще не знал, какие обвинения в том Тёре ему предъявят.

Касай сел на коня, а Ийнал пешком – оба вышли на дорогу. Они вдвоем, не обращая друг на друга внимания, шли-шли и оказались в одном селе. Ийнал сильно устал, изнемог и захотел выпить. Когда он, чтобы попросить воды, завернул в один дом, Касай подумал, что он хочет тихо сбежать, и погнался за ним на лошади. Ийнал, увидел, что за ним гонятся, и, испугавшись, запрыгнул через каменный забор во двор и там, попал на женщину, которая сидела с больным ребенком. Тогда женщина, сильно испугавшись, резко отпрыгнула в сторону, а больной ребенок, выскользнув из ее рук, ударился об камень и погиб.

Теперь, бедный Ийнал, будучи живым, умер, он позабыл о том, что хотел пить, забыл про свою усталость. «Горя, чем больше, тем лучше» говорят, так и получилось. Народу собралось много. Тут же подоспел и Касай. Отец ребенка стоя с одной стороны, что ему только не сделали!

В конце ссоры, посчитав Ийнала за убийцу, оба вместе начали его гнать на Тёре. Они – всадники, а он – пеший, когда шли, то заметили одного человека, у которого осел погряз в болоте, а он всячески старался его вытащить оттуда.

Ийнал увидев, как хозяин вытаскивает своего осла за уши, пошел ему помочь, и как потянул его за хвост, этот проклятый хвост оторвался и оказался в его руках.

Когда хозяин осла это заметил, его глаза налились кровью.

– Да, чтоб у тебя дом обрушился, кто тебя просил прийти и оторвать хвост осла? – спросил он и примкнул к тем, кто гнал Ийнала в Тёре.

Что он мог сделать? «Кто не умеет кидать камень, тот на свою голову попадет» говорят, и он начал сам себя оговаривать. От всяких дум голова его разбухла. От злости готов был сам себя уничтожить.

Когда трое обвинителей и Ийнал шли, им надо было пройти по краю обрыва. В это время Ийнал: «Теперь я хоть пойду или не пойду в Тёре, мне без разницы. Тёре, не согласившись с ними, мне, что ли поверит? Чем

* Ярабий – частица, выражающая любопытство, интерес.

** Тёре – третейский суд.



буду их посмешим, лучше я сам себя убью», – решил он и прыгнул вниз в пропасть и попал там на голову юноше, который пас овец и сломал ему плечо и колено.

Вот это да, теперь стало еще лучше! Этого пастуха отец присоединился к ним, и они вместе отправились в Тёре.

Обвинителей как будто раньше было мало, теперь к ним присоединился четвертый и они вместе дошли до Тёре. Ийнал, как привязанный конь, остался стоять на улице, а они напрямик вошли в дом, где собирались представители Тёре.

В жизни бывает и слепое счастье. Когда Ийнал стоял во дворе, представитель Тёре шел на работу и наткнулся прямо на Ийнала.

– Да, господин, меня сюда привели четверо человек. Если ты меня освободишь от этого дела, все мое хозяйство будет твоим, и я сам буду всю жизнь твоим придворным слугой, – начал он просить.

Представителю Тёре слова Ийнала понравились. Он и сам, наверное, не был плохим человеком.

– Посмотрим, – сказал он и вошел в дом.

Увидел обвинителей. Ийнал тоже вошел.

– Какие хлопоты привели вас ко мне? – спросил представитель Тёре.

Касай привстал и, показывая на Ийнала:

– Вот этот на мой праздник из моего хозяйства зарезал двенадцать овец и без моего разрешения, похитил от той доли, что полагалась гостям, одну голову барашки, ее ноги и отправил к себе домой, – сказал.

– Хорошо, есть у тебя еще что-либо сказать?

– Нет.

– Вот этот мужчина, который отправил к себе домой голову и ноги барашки, ты намеревался другому человеку отдать, ты выделил их кому-то в долю?

– Нет, такого не было. Но он их передал без моего разрешения.

– Это тоже хорошо. Кроме головы и ног, этот человек от твоего курманлыка что-нибудь поел?

– Нет, после этого случая, я не дал ему покушать, – ответил Касай.

В это время представитель Тёре:

– Ну, да, теперь все понятно. Ты совершил курманлык для народа. Когда народ веселился, пел, ел твой уча, в это время Ийнал зарезал двенадцать твоих овец, он съел одну голову и четыре ноги. И еще, ты тут говоришь, что он что-то украл. Где твоя совесть? Решение Тёре: когда Ийнал будет делать курманлык, ты зарежешь у него двенадцать овец и украдешь одну голову и четыре ноги барашки. Теперь иди, – сказал он и отправил Касая подальше в сторону. После этого:

– Второй обвинитель, теперь ты говори свои претензии, я слушаю, – сказал он.

– А я вот что хочу сказать: вот этот человек, перепрыгнув через каменный забор, испугал мою жену, которая выронила ребенка, после этого ребенок умер, – пожаловался второй обвинитель.

– Хорошо. Да разве он осознанно напугал твою жену?! Побил?! Или же он сказал ей, брось ребенка, и убей?! – спросил у него представитель Тёре.

– Ну, этого я не знаю, меня там не было, – ответил второй обвинитель.



И представитель Тёре:

– Если так, то твоя жена выбросила своего ребенка, испугавшись не его, а шума. Если пригласишь этот шум в Тёре, тогда будем рассматривать твое дело, – сказал и второго обвинителя также отправил домой.

Он тоже отошел в сторону.

Представитель Тёре:

– Третий обвинитель, говори, теперь и тебя послушаем! – сказал он.

– Когда мой осел застрял в болоте, я всячески старался его оттуда вытащить, а вот этот человек быстро прибежал, тоже захотел его вытащить из болота, ухватился за его хвост, потянул его к себе и оторвал! Как оторвал, так пусть обратно и прикрепит! – сказал он.

– Хорошо, – сказал представитель Тёре. Потом: – Из-за того, что у твоего осла оторвался хвост, он из-за этого не станет меньше видеть, слышать или же его ходьбе не будет вреда. Может быть, когда он упал, ударившись, сам мог свой хвост сломать, нам это неизвестно. Если бы ты не потопил своего осла в болоте, он бы не стал его тянуть за хвост и не оторвал бы. Виноват ты сам, иди, – сказал он, и его тоже отправил домой.

И он, тоже почесывая свою голову, вышел оттуда. Представитель Тёре:

– Ага, четвертый, а у тебя к нему какие претензии?

Четвертый:

– Моя жалоба заключается в этом: когда мой сын под оврагом пас овец, вот этот человек, прыгнув сверху, прямо попав на него, поломал его плечо и колено, – сказал он.

Представитель Тёре:

– М-да. Да, откуда он мог знать, что твой сын находится там? Или же, почему он вниз пошел и встал там, куда он должен был прыгнуть? А он, прыгнув с оврага, столкнувшись с твоим сыном, думаешь, не пострадал? Если ты не можешь себя успокоить, пускай он встанет под оврагом, а твой сын сходит наверх, и сверху прыгнет на него, и пусть ломает ему плечо и колено. Одобряешь такое?

– Нет, мой сын с такого высокого оврага во веки веков не прыгнет, – ответил четвертый пострадавший.

– Тогда, иди, в следующий раз, чтобы твой сын не становился в таких опасных местах, дожидаясь увечья, – сказал представитель Тёре и его тоже отправил.

А в дальнейшем, кто скажет, что знает, как все закончилось, тот, значит, обманывает.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 367–370) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Сказка может быть причислена к жанру социально-бытовой сказки. Один из сквозных мотивов – мотив социально-классового неравенства, унижения власть имущим человеческого достоинства простолюдина. Другой мотив связан с образом гуманного судьи (представителя Тёре), который встает на защиту обездоленного и незадачливого крестьянина. Разворачивая факты неожиданными, порою алогичными сторонами, он доказывает невиновность простолюдина и освобождает его от наказания.



АТАСЫНЫ ЖАШЫНА ОСУЯТЫ

Бир кишини жангыз бир жашы бар эди. Аны юйдегили этгенден сора, ол кишиге ауруу тийип, ёлюр ууахтысы жууукълашханды. Ол заманда бу, жашын чакъырып, анга юч затны этме деп, осуятын къойгъанды:

– Биринчиси – ёмюрюнгде кесингден къарыулу адамгъа ёнкюч ахча берме. Экинчиси – къатынынга ичги сёзюнгю айтма. Ючюнчюсю – къарыусуз, аман жууугъунгу айнытма. Не да болсун, мен айтханны унутма – деп, киши ёлгенди.

Аны жашы уа, урунуп, ырысхы этген адам болгъанды. Элни бийи бир кюн, ёнкюч ахча тилете, анга бир адамын жибергенди. Жаш, атасыны осуяты эсине тюшюп, ёнкюч ахча бермегенди. Бермегенин къатынына да айтханды. Ол бий адамын экинчи кере да жибергенди. Жаш бермезден болгъанды. Алай а къатыны, оноугъа къатышып:

– Башы къайтыр затны нечик тыяса, айып болмазмы? – деп сюелгенде, жаш ол бийни адамына ёнкюч ахча бергенди.

Жашны уа бир жарлы жууугъу да болгъанды. Ол аны хар кереклисине да къарап, жашауун ёсдюрюп, байыкъдырып тургъанды. Алай жарлы жууугъу дагъыда анга ыразы туююл эди.

– Мен андан бай болуп, ол манга тилекчи болуп турса, нечик ахшы боллукъ эди! – деп зарланганды, жашны онгмазын да суюгенди.

Бир ауукъ заман озгъандан сора, жаш:

– Ёнкюч алгъан ахчангы бер, – деп, бийге баргъанды.

Алай ол бий, сылтау этип, бермей къайтаргъанды. Экинчи кере баргъанда да, алгъынча этип жибергенди. Ючюнчю кере баргъанда уа, ол бий, халкъны жыйып:

– Жамауат! Бу эл мени элиммиди? – деп соргъанды.

– Хау, сени элингди, – дегенди жамауат.

– Бу эл жашагъан жер мени жериммиди? – дегенди бий.

– Хау, сени жерингди, – дегенди жамауат.

Ол заманда бий, бу жашха бурулуп:

– Да сора сен, ахшы улан, мени жеримде къазанган ахчангы: «Санга ёнкюч бергенме, энди ызына къайтар», – деп, манга неге келесе? – деп, жукъ да бермей, зыбыр сёлешип кыыстагъанды.

Жашха бек ачыу тийгенди. Бийден ахчаны дертин алыр мурат этгенди. Ёзге амал тапмай, бийни терек бахчасында ойнай тургъан жашчыгъын урлап, элтип барып, ол бийни къажуу бир кишини юйюне берип:

– Мен излегинчи, кишиге билдирмей сакълагъыз, мен сизни къууандырырма, – деп кетгенди.

Сора, юйюне къайтып:

– Бийни жашын урлап ёлтюргенме, – деп, къатынына хапарлагъанды.

Бий: «Жашым тас болду!» – деп, халкъына къууугъун этди. Битеу эл изледи, тапмады. Жаш гунч болду.

Бий, кёп сагъыш эте келип, ол ахчасын алгъан жашдан башхагъа ишекли болмады. Аны халкъ арасында бетин жояр, намысын сындырыр ючюн, аман акъыл этип, къуртханы чакъырды. Къуртха, келип, бийни аллында жүгюндю.

– Къуртха! Сен не да эт, ол мени къанлым болгъан жашны халкъ арасында бетин уялт, юйюрюн да чачарча, бир мадар эт! – деди бий.

Къуртха, бир кюн жашны аллына барып:

– Балам, сени къатынынг тос жюрюйдю, сен аны бла къалай жашайса? – дегенди.

Аны эшитгенде, жаш, ачыуу бла келип, къатыныны къыркъыуун берди. Экинчи кюн ишден келгенде уа, къатынын юйде тапмады. Сейирми эди? Къуртха, аны къатынына барып:

– Сени эринг, сени ёлтюрюп, башха къатын алыргъа айланады, ачыуланып келликди, ол келген заманда юйден бир жанына сылжыра, – деп, къатынны къоркъутхан эди.

Энди къатыны да юйде болмай тургъанлай, эри юйюне келгенде, къуртха, бу жашха барып, биягъыча, къатынындан тил этгенди.

Эри, сакълап туруп, къатыны юйге къайтханлай, кесеме деп, къатынын тубюне салды. Къоншулары басынып, сыйырыргъа чапдыла. Ол заманда къатын халкъ аллында:

– Сен адам ёлтюрюрге эртте юйреннгенсе, энди мени да бийни жашын ёлтюргенлей ёлтюрюгеми тебирегенсе? – деп, эрин даулагъанды.

Халкъ, ол сёзю эшитгенде, бийге жашыны хапарын билдиргенди. Олсагъатдан бий жашны тутдургъанды. Тёреге бердиргенди. Тёре ёлтюрюрге хукму этгенди. Болсада муну ёлтюрюр адам табылмады.

Ахырында аны кесини ол жарлы жууугъу:

– Мен ёлтюрейим! – деп чыкъды.

Ол чыкъгъанда, бу жаш аяусуздан кюлгенди.

Халкъ, сейирге къалып:

– Ёлюрюнгю аллында ненге кюлесе? – дегенде, жаш:

– Мени атамы манга юч осуяты бар эди. Ол осуятланы ма энди эсеме тюшюрюп кюлеме.

– Не осуяты бар эди атангы? – деп сорады халкъ.

Жаш:

– Биринчиси – кесингден къарыулугъа ёнкюч ахча берме деген эди. Экинчиси – къатынынга ичги сёзюнгю айтма деген эди. Ючюнчюсю – аман жууугъунгу айнытма деген эди. Энди бюгюн мен, ол сёзлени кертиликлерин кёзюм бла кёрюп, ачыудан кюлеме. Мен, атамы осуятын толтурмай, бу юч жангылычны этгенме. Бийни жашы уа ёлмегенди. Менден алгъан ахчасын ызына къайтарса, бийни жашы, табылып, аллына келеди, – дегенде, бий жашны ахчасын къайтарды.

Жаш да бийни баласын, алып келип, къолуна берди.

Жаш аман жууугъун да кесинден кенг этди, къатынын да юйюнден къуууп кетерди. Андан сора къалай болгъаны уа алыкъа белгили туююдю.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 370–372 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

«Атасыны жашына осуяты» деген жомакъны терен магъанасыны мурдорун салгъан къартлыкъны сыйына табыныуду эм да аны бурундан келген адет-къылыгына кертичи болууду. Атасы ёле туруп, кесини



осуятында жашыны эсин юч тюрлю затха бёледі: бай адамгъа ёнкюч бермезге, къатыннга ышанмазгъа, андан сора терсакъыл жууукъ адамына болушлукъ этмезге.

Жаш атасы айтханны этмегени себепли, уллу къыйынлыкъгъа тюшерге аздан къалады.

Бу жомакъ юйюр-жашау-турмуш жомакълагъа саналады.

ЗАВЕЩАНИЕ ОТЦА СЫНУ

У одного мужчины был единственный сын. После того, как он его женил, мужчине настала смертельная болезнь. В это время он позвал сына и сказал три вещи, которые нельзя делать в жизни и огласил свое завещание:

– Первое – никогда в жизни человеку сильнее себя займы денег не давай. Второе – жене не рассказывай, что у тебя на душе. Третье – слабому, плохому родственнику сильно не старайся помогать. Что бы не было, не забывай о том, что я тебе сказал, – произнес мужчина и умер.

А его сын был работающим, который умел копить богатство. Однажды бий* села, послал к нему одного человека с просьбой дать ему денег займы. Юноша, вспомнив завещание отца, не дал ему денег в долг. Что не занял денег, он рассказал своей жене. Этот бий своего человека послал еще во второй раз. Юноша категорически отказался. Однако его жена начала принимать участие в его делах:

– Тебе же вернут, почему ты отказываешь, стыдно не будет? – когда она настояла, юноша тому человеку от бия дал деньги в долг.

А у этого юноши был еще один бедный родственник. Он ему помогал во всех его делах, благоустраивал его жизнь, обогащал всячески. Однако, бедный родственник все равно был недоволен.

– Если я был бы его богаче, и он все время просил бы у меня, как было бы хорошо! – говорил, завидовал и не хотел, чтобы юноша процветал.

Через некоторое время, юноша пошел к бию, чтобы ему вернули долг.

Однако, этот бий придумал причину и, не возвратив долг, отправил его обратно. Когда он пошел во второй раз, он его отправил по-прежнему ни с чем. В третий раз, когда он пришел, этот бий собрав народ:

– Люди! Это село – мое село!?! – спросил он.

– Да, твое село, – ответили ему люди.

– Эта земля, где проживают селяне, моя земля? – спросил бий.

– Да, твоя земля, – ответили ему люди.

Тогда бий, повернувшись к этому юноше:

– Тогда ты, добрый молодец, на моей земле заработанные деньги заняв мне же, как ты можешь ко мне прийти, чтобы я их тебе вернул? – сказал он и грубо ответив, прогнал его ни с чем.

Юноша сильно разозлился. И начал думать, как бы отомстить бию за невозврат денег. Не зная, что придумать, он княжеского сына, игравшего в саду, украл и отнес одному мужчине в дом, который был врагом этого бия.

– Пока я сам не разыщу тебя, никому не говори, спрячь его, потом я тебя отблагодарю, – сказал и ушел.

* Бий – князь.

Потом, вернувшись домой:

– Я украл сына бия и убил его, – рассказал он своей жене.

Бий, что у него пропал сын, объявил всему народу. Всем селом его искали, но не нашли. Мальчик просто исчез.

Бий долго размышляя, заподозрил человека, у которого занял денег и решил, что именно он мог на такое пойти. Чтобы его перед народом опозорить, сломать его честь, он задумал злой умысел и пригласил к себе ведьму. Ведьма пришла и встала перед бием.

– Ведьма! Ты сотвори такое, чтобы этот юноша, мой кровный враг, опозорился перед народом, разори его семью, придумай что-нибудь! – попросил бий.

Ведьма в один из дней, придя к этому юноше:

– Дитя мое, твоя жена гуляющая, как ты с ней можешь жить? – спросила она у него.

Когда он это услышал, пришел домой и сильно отругал свою жену. А на второй день, когда он пришел с работы, он не нашел дома свою жену. Ничего удивительного!

Ведьма пришла к его жене:

– Твой муж хочет тебя убить и собирается жениться на другой женщине, он вернется гневным, к тому времени, когда он придет, уходи в сторону куда-нибудь, – сказала она и напугала женщину.

Когда жены дома не было, муж вернулся домой, а ведьма пришла к этому юноше и опять начала говорить сплетни про его супругу.

Муж дождался прихода жены домой, и когда она явилась, угрожая ее прикончить, подмял жену под себя. Все соседи прибежали гурьбой их разнимать. В это время его жена перед народом:

– Ты давно научился убивать людей, теперь ты хочешь умертвить меня, как когда-то убил сына бия? – начала она обвинять мужа.

Когда люди услышали эти слова, они рассказали князю историю о судьбе его сына. Тут же бий приказал поймать юношу. Донесли и до Тёре*. Тёре вынес решение убить его. Однако не нашлось человека, чтобы согласился убить его.

В конце его близкий, бедный родственник вышел, изъявив желание его убить.

Когда он подошел, этот юноша от души рассмеялся.

Народ сильно удивился:

– Перед смертью почему ты так смеешься? – когда спросили у юноши, он:

– У моего отца было три завещания. Вот эти завещания вспоминая, смеюсь.

– Какое завещание было у твоего отца? – спрашивает у него народ.

Юноша:

– Первое – человеку, который сильнее тебя, не давать взаймы денег, – он говорил. Второе – никогда не рассказывать своей жене, что в душе у тебя. Третье – плохому родственнику не помогай, говорил. И я сегодня правдивость этих слов своими глазами вижу и от злости смеюсь. Я не выполнив завещание отца, совершил эти три ошибки. А сын бия не умер.

* Тёре – третейский суд.



Если бий вернет деньги, которые брал у меня, то его сын найдется и предстанет перед ним.

Когда он это сказал, бий вернул юноше его деньги.

И юноша, привел ребенка бия, и вручил ему в руки.

Этот юноша прогнал своего плохого родственника от себя подальше и жену удалил из дому.

После этого как все было, пока неизвестно.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 370–372) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Философскую основу сказки составляет культ старости, следование морально-этическим наставлениям предков. Умирая, отец оставил сыну три завета: не давать в долг богатому, не доверять жене и не помогать дурному родственнику. Сын ослушался отца и чуть не поплатился за это головой.

Сказка относится к жанру семейно-бытовых сказок.



ТАУУКЪ – АЙТА БИЛГЕННГЕ ЗАУУКЪ

Эртте-эртте бир бай патчах болгъанды. Аны юйдегиси төртеу эдиле: кеси, кьатыны, сора бир жашлары бла бир кьызлары. Ол патчахны элинде уа бир жарлы кьарт киши да жашагъанды.

Кюнлени биринде, «Жашау суйген жалынчакъ» дегенлей, ол кьарт киши бир тауукъ кеседи да: «Муну кёлюн бир алайым», – деп, патчахха барады.

– Даражасы бийик жюйюсхан! Жангыз бир тауукъ мюлкюм бар эди да, сени уллу хурметинге кьурманлыкъ этип келтиргенме. Энди сен ол керекли да тюйюлсе, алай санга ыразылыгъымы билдирмей болалмадым, – деди.

– Да, харип, келтиргенинг ючюн, сау бол! Алай энди, келтиргенинг кибик, юлешген да эт, – деди патчах.

– Да алай эсе, жюйюсхан, сен юйдегини угъай, кьыралны да башыса. Аны ючюн мен санга тауукъну башын тийишли кёреме. Бийче уа юйде, сибиртгича, хар затха ышыла айланады да, аны ючюн тауукъну кьуйругъун анга береме. Кьызынг а, тауукъ кьанатлы кибик, башха юйге учуп кетерикди да, аны ючюн тауукъну кьанатларын анга береме. Жашынг а, сен ёлсенг, сени орунунга оноу этип жюрюрюкдю да, аны ючюн тауукъну аякъларын анга береме. Тауукъну андан кьалгъан тёммеги уа кесиме кьалыргъа тюшеди, – деп, кьарт келтирген тауугъун юлешип чыкъды.

Патчах, кьартны сёзге алай усталыгъына сейирсинип, ышарды да, махтап, ахшы саугъала да берип ийди.

Ол жарлы жашагъан элде ёмюрюнде адамгъа ахшылыкъ этмеген а бир адам жашагъанды. Бу жарлы адамны патчахха баргъан хапарын ол да эшитди. Сора: «Эй-я, ол, бир тауукъ элтип, саугъа алгъанды, мен а төрт тауукъ элтип барсам, аны тенгли төрт саугъа алып да келирме», – деп ойлашды.

Бир кюн а төрт тауугъун кесип, жарашдырып, салып, патчахха барды. Кукаланып:

– Жюйюсхан, сени хурметинги уллу кёрюп, бу төрт тауукъну санга ыразылыгъымы билдирип мурат бла келтиргенме, айып этме, – деди.

– Да ахшы, аны ючюн бек сау бол! Алай а, келтире билгенинг кибик, юлешген да этерсе! – деди.

– Да мен быланы нелерин юлеше турлукъма, кьабыл этип алсагъыз, – деп, жууап кьайтарды.

Ол заманда патчахны ачыуу чыгъып:

– Да сен мени сорууума адамча жууап эте билмейсе, сора бу тауукъланы нек алып келгенсе? Сен келтирмесенг, мен тауукъ тапмаймамы? Манга сени тауукъларынг керек тюйюлдюле. Сени сёзюнг, адамлыгъынг керекди. Бар, ол жарлы кьарт кишини чакъырып кел! – деди.

Киши абызырады, жунчуду, терледи; барыргъа бир да суймеди. Суймесе да, бармай не амалы бар эди?! Кьууулуп келди да, кьартха:

– Сени жюйюсханыбыз чакъырады! – деди.

«Ай, бу аман адам мени бир палахха чакъырта болур», – деп, жарлы кишичик патчахха буюгъа, тартына келди да:

– Жюйюсхан, буюрдунг да, келдим, – деп, аллында сюелди.

Патчах анга:

– Ахшы, келдинг эсе, ахшы. Бу сени жанынгда сюелип тургъан мени хурметиме бу төрт тауукъну алып келгенди. Энди ол төрт тауукъну сен



юлешсе эдинг деп чакъыртханма, – дегенде, къартны къоркъуу да тайып, тауукъланы къолгъа алды. Сора:

– Да, жюйюсхан, тёрт тауукъдан бирин жашынг бла санга берсем, сиз юч боласыз. Бирин да къатынынг бла къызынга берсем, ала да юч боладыла. Къалгъан эки тауукъну кесиме алсам, биз да юч болабыз. Барыбыз да кёлкъалдысыз тенг болдукъ, – деди.

– Ыхы, тёрт тауукъ! Сёзню да керегича табып айта билген, жашауну таплыгъын да кесине бура билген къартны кёрдюнгмю? – деп, биягъы къартны махтап, саугъа да берип ашырды. Ол бирсине уа, чамланып: – Кет, мени кёз туурамдан къуру! Сени сёзюнг да, къылыгъынг да, тауугъунг да тас болгъун! – деп къыстады.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 372–373 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Халкъны акъылы, аны сёзге жютюлюгю, жашауда мажарыргъа тийишли ишлени «Тауукъ – айта билгеннге зауукъ» деген жомакъда кёрюрге болдукъду. Ала мында бийик ниет къылыкъны нюзюрюча ангылашынадыла.

Элчи адамны тауукъну тюз юлеше билгени жашауда низамгъа, тенгликге уллу сый берилгенин чертеди. Мында, халкъ оюмну багъалата билгени ючюн, патчахны сыфаты да суйдюмлю суратланады.

КУРИЦА – ТОМУ, КТО УМЕЕТ ГОВОРИТЬ, НАСЛАЖДЕНИЕ

Давным-давно жил один богатый царь. Они в семье жили вчетвером: он сам, его жена, один сын и одна дочь. Еще в селе у этого царя жил один бедный старик.

В один из дней, как говорят «Жизнь любит – просящего», этот старик режет одну курицу и, чтобы смилостивить его душу, идет к царю.

– Высокочитимый господин! У меня в хозяйстве была единственная курица, я для твоего высочества зарезал ее и принес к тебе. Конечно, ты не нуждаешься в этом, однако, я не смог бы иначе выразить свое почтение, – сказал он.

– Да, бедняга, за то, что принес, спасибо! Но теперь, как сумел принести, так и сумей разделить ее по частям, – сказал царь.

– Если так, господин, ты не только хозяин семьи, но и глава государства. Поэтому, я считаю, что вам принадлежит голова курицы. А жена в доме, как веник, ходит, трется повсюду, поэтому, хвост курицы принадлежит ей. А твоя дочь, как курица с крыльями, в чужой дом улетит, поэтому, крылья курицы отдаю ей. А сын твой, когда умрешь, вместо тебя будет ходить, руководить, поэтому куриные ноги ему отдаю. А оставшаяся часть курицы, туша, видно, достается мне, – сказал старик и таким образом закончил деление курицы.

Царь, удивившись старику-мастеру слова, улыбнулся и похвалил, и, вручив ему ценные подарки, отправил домой.

А в том селе, где жил бедный старик, проживал один человек, который за свою жизнь ничего хорошего ни сделал.

Он услышал, как этот бедный человек сходил к царю. После этого: «Эй, он понес одну курицу и получил подарки, а я, если понесу четыре курицы, то вернусь с четырьмя достойными подарками», – решил он.

В один из дней, зарезав своих четырех курей, приготовив их, он прибыл к царю. Угодливо:

– Господин, возвышая твой почет, с надеждой показать свое расположение к вам, я принес эти четыре курицы, не обессудьте, – сказал он.

– Да, хорошо, за это большое спасибо! Однако, как ты сумел принести, так и сумей разделить! – сказал он.

– Да, что их делить, если вы их с удовольствием примете, – ответил он.

В это время у царя появилась злость:

– Да, ты на мой вопрос даже по-человечески не можешь ответить, тогда зачем ты этих курей принес сюда? Если ты не принесешь, я что курей не найду? Мне не нужны твои курицы. Твои слова, твой человеческий облик нужен. Сходи и приведи того бедного старика! – сказал он.

Мужчина оторопел, замялся, вспотел: а идти никак не хочет. Хоть желания у него не было, но не пойти откуда была такая возможность?!

Быстро прибежал к старику:

– Тебя вызывает наш господин! – сказал он.

«Ай, этот плохой человек меня, наверное, вызывает к какому-нибудь горю», – подумав, бедный мужичок пришел к царю, сильно стесняясь, смущаясь, подошел к нему:

– Господин, вы изъявили желание, и я пришел, – сказал и предстал перед ним.

И царь ему:

– Хорошо, если пришел, хорошо. Тот, который рядом с тобой стоит, в честь меня вот этих четырех курей принес. Я тебя вызвал, чтобы ты их поделил, – после этих слов у старика страх исчез, и он взял кур в свои руки. Продолжая свой разговор:

– Да, господин, из четырех кур, если одну я отдам тебе с сыном, тогда вас станет трое. И еще одну отдам твоей жене и дочери, и их станет трое. Остальные две курицы, если возьму себе, и нас будет трое. Теперь мы все без обиды будем равными, – сказал он.

– Да, четыре курицы! Увидел старика, который мастерски находит нужные слова и умеет говорить, и жизненные ситуации может поворачивать в свою сторону? – сказал он, похвалил прежнего старика, дал ему подарки и отправил. А на другого разозлившись: – Уходи, исчезни из моего поля зрения! И твои слова, и твое поведение, и твои куры пусть исчезнут! – сказал и выгнал.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 372–373) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Народный ум, острое слово, нетривиальное решение проблем в данной сказке квалифицируются как ценности высшего духовно-нравственного порядка.

В крестьянском умении правильно поделить курицу видится идеализация порядка, социальной справедливости. Знаком положительной личности отмечен и образ царя, способного оценить народную смекалку.



АЛЛАЙ ТЁРЕ ДА БОЛАДЫ

Тюзюн айтсакъ, болгъанмыды, болмагъанмыды, белгили туююлдо, хапарда айтылады, кёрген адам а табылмайды.

Оза келген ёмюрледе эллени биринде бир къарт киши бла къарт къатынны юч къызлары болгъанды. Аланы таматалары «сокъур» эди, ортанчылары – «сангырау», кичилери да – «чолакъ».

Дагъыда бир элде уа бир къарт къатынны юч жашы болгъанды. Аланы таматалары кёзден бек жютю, ортанчылары шыхыртны бек эшитиучю, кичилери да къолдан бек чемер эди дейдиле. Бир кюн жашланы аналары:

– Жашларым! Энди мени да кёресиз: халыны, алып, ийнеге суууралмайма. Башыгъызгъа мадар этигиз! – деди.

Ол заманда жашланы таматалары:

– Анам, эсингдемиди, мени атам, ёле туруп: «Жашым, къатын алсанг, кёзю кёрген тиширыуну алма, сокъурну ал!» – деген эди. Мен, сокъурну болмаса, башханы аллыкъ туююлме, – деди.

Ортанчылары:

– Манга да атам: «Сангырауну болмаса, къулагъы эшитгенни алма», – деп, осуяты барды, мен да сангырауну аллыкъма, – деди.

Кичилери да:

– Манга уа: «Чолакъны болмаса, башхасын алма», – деп, атам осуяты барды. Мен да чолакъдан ёзгесин аллыкъ туююлме, – деп тохтады.

– Да, балаларым, жанларым, атагъыз бир зат билмей айтхан болмаз, ол айтханлай этигиз, – деди аналары да.

Жашла ючюсю да къатын излей жайыладыла. Жолда кетип бара, абадан къарындашлары чогъожланады да:

– Угъай, мени саным сау, къанымы алгъа ургъан заманы, атам айтханлыкъгъа, мен сокъур тиширыуну аллыкъ туююлме! – деп тохтады.

– Да, алмасанг – алма. Санга ким дау этеди?! Сюйгенинги сюйре, – деп, эки къарындашы башха жолгъа бурулуп кетедиле.

Ол эки къарындаш да, айлана, къыдыра барып, ол къыяулу къызланы юйлерине къонакъгъа тюшдюле.

– Излегенибизни тапдыкъ! – деп, жашла бир бирине жүрек ыразылыкъларын билдиредиле.

Жашла, къонакъ адетде сыйланып бошагъандан сора, къалай-алай эсе да, къызла бла игирек шагъырей боладыла. Ызы бла, заманны узайтмай, къызланы аналарына сёзню ачыкълап саладыла.

Къызланы аналары:

– Да, жашларым, мени къызларым кими сокъур, кими сангырау, кими да чолакъды. Ала, сизни кибик, тартып, темир юзген жашлагъа тийишли туююлдоле сора уа, – деп, жашланы жапсарып селешеди.

Жашла:

– Угъай, анабыз, кёлюнге башха зат келмесин, биз кесибизге тюз да аллай тиширыула излеп келгенбиз, – деп, керти муратларын билдирдиле.

– Да, алай эсе, жаныгъыз ыразылай этигиз. Ма къызла – ма сиз. Аталары бла мени сартын тыйгъыч жокъду, – деди.



Къысхасы, жашланы бири сангырауну, бири да чолакъны сюзюлтюрге жарашдыла.

Абадан къарындашлары да, айлана барып, бир бай юйге къонакъгъа тюшгенди. Ол юйню чынтгы да ариу бир къызын кѳреди. Ол къызын тѳрт саны сау, кѳзю, къулагъы да къыяусуз болады. Аны хар затха къолу жарашып, юйде шапалыкъ этип айланнганына жашны кѳзю илинеди.

Сагъыш эте келип, ахырында бу жаш, къыяусуз къызын алып, юйюне келеди. Ол кезиуде бирси эки къарындашы да, аныча, къатынлары бла келедиле. Адетде жюригенича, халкъ, жыйылып, тойларын-оюнларын да этип, чачылды.

Бир талай кюнден бир къарт къатын, жашланы аналарына келип:

– Эгечим, келинлеринг нечикдиле, жаратамыса? – деп сорду.

– Да, эгечим, жаратмай не этейим, кеслери ушатханларын алгъандыла. Кичи жашым: «Чолакъ къатын алгъанма», – деп, бирни келтиргенди, чолакълыгъын да эслемейме, хар затха къолу жарашхан бир алтын адам кѳрюнеди.

– Аха, эгечим! Сен билемисе, ол урламайды, къолу жютю тюйюлдю да, «чолакъды» деп, аны ючюн айтадыла. Ол бек игиди! Органчы жашынг а не тиширыу келтиргенди?

– Да аны да несин айтаса, сангырауду деп келтиргенди, алай не айтсанг да, эшитеди, ѳресине бир алтын терекни сюеп къойгъан кибикди.

– Эгечим, ол да огъурлулукъду! Ол сангырау тюйюлдю, ол аман ушакъланы эшитмейди, осал къуш-мушлагъа тынгыламайды да, «сангырау» деп аны ючюн айтылады! Ала бары да ахшы. Абадан жашынг а не къатын келтиргенди?

– Ой, эгечим, аны уа сурагъан да этмей къой! «Сауну, байны алгъанма!» – деп, бирни келтиргенди да, сѳзю – ачы, къолу – жютю, айтханымы уа бир да эшитмейди. Болсада не этейим? Сѳз къошаргъа къоркъуп, жарлы кибик, тынгылап турама. Эгечим, сенден несин жашырайым, сѳлешсе, тауушу къулакъларымы шешдиреди. Аякъ-къашыкъгъа узалса уа, барын да ууатыпмы къояды дерсе. Эки да, юч да къычырмасам а, сѳзюмю эшитип, жууап бермейди. Андан эсе, сангырау да, сокъур да, чолакъ да болгъан ол болгъа эди, – деп ахсынды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 373–375 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди.

«Аллай тѳре да болады» деген жомакъда халкъны кѳз къарамы бла юй бийчени, келинни, юйде тиширыуну къудуретини сыйлы сыфаты бийик халда суратланады. Ол бийикликни тохташдырыр ючюн жомакъда метафорала хайырланыладыла: юлгюлю келин «сокъур», «сангырау», «чолакъ» болургъа керекди. Аны тюзюча ангылап къарагъанда уа: ол керексиз затны кѳрмейди, анга керек болмагъан затны эшитмейди, башиха адамны мюлкюне да узалмайды.

Битеулей алып къарагъанда, «хар заты да толу, сау келин» деген ангылам, былайда аны сыфатына хыянат келтиредди.



БЫВАЕТ И ТАКОЕ СЛУЧАЕТСЯ

Если правду сказать, было это или не было, ничего не известно, в преданиях говорится, но не нашлось человека, который бы все это видел.

В недавно прошедших веках в одном селении у старика со старухой были три дочери. Старшая была «слепой», средняя – «глухой», а младшая – «безрукой».

В другом селении у другой старушки было три сына. У старшего из них глаза были зоркие, средний хорошо слышал каждый шорох, а младший был искусным мастером, говорят. В один из дней мать этих парней:

– Мои сыновья! Теперь вы меня сами видите: взяв нитку, я не могу продеть в иголку. Обзаведитесь семьями! – сказала она.

В это время старший из сыновей:

– Мама, а ты помнишь, как мой отец, перед смертью: «Сын мой, когда женишься, не женись на зрячей женщине, а бери слепую!» – говорил. Если она не будет слепой, я на другой не женюсь, – сказал он.

Средний:

– И мне отцовское завещание: «Если не будет глухой, не бери ту женщину, у которой уши слышат», – говорил, у него было такое завещание, я тоже женюсь только на глухой, – сказал он.

Младший в свою очередь:

– А мне: «Если она не будет безрукой, другую не бери», – отец оставил такое завещание. И я тоже, если она не будет однорукой, не женюсь, – сказал он и стал настаивать на своем.

– Да дети мои, моей души светочи, ваш отец, не зная, в чем дело, не сказал бы, делайте, как он говорил, – сказала мать.

Все три сына пошли искать для себя жен. Когда они шли по дороге, старший брат с сожалением:

– Нет, я совершенно здоров, кровь во мне кипит, хоть отец и говорил, я не возьму слепую девушку! – сказал настоятельно.

– Если не хочешь брать – не бери. Кто тебя заставляет?! Кого любишь – того приведи, – сказали двое братьев и завернув на другую дорогу, ушли.

И эти двое братьев, разъезжаясь, путешествуя, пришли в гости к этим девушкам с недостатками.

Нашли то, что искали! – сказали парни, и друг другу выразили душевное удовлетворение.

Парни, после того, как и положено гостям, хорошенько угостились, начали понемногу знакомиться. А следом, не теряя времени, они матери девушек открыто признались в своих намерениях:

А мать девушек:

– Да, добры молодцы, мои дочери – кто слепая, кто глухая, кто безрукая. Они вряд ли достойны таких парней, как вы, которые могут порвать железо, – произнесла она, успокаивая их.

Парни:

– Нет, матушка, пусть у вас душа ничего плохого не подумает, мы сами себе именно таких девушек ищем, поэтому и пришли, – сказали они, пояснив свои цели.



– Да, если так, то поступайте, как душа пожелает. Вот девушки – вот вы. Я и их отец тоже не будем вам препятствовать, – сказала она.

Короче говоря, один из парней за глухой, а другой за безрукой начали ухаживать.

А старший брат путешествуя, попал в гости в дом богача. В том доме он видит по-настоящему красивую девушку. У этой девушки все было в порядке, руки и ноги были здоровыми, и глаза, и уши были без изъяна. Как она выполняла работу по дому, готовила, можно было подумать, что она настоящая мастерица, и своим взглядом парень все это оценивал.

Этот парень после долгих раздумий, в конце концов взял эту здоровую девушку и привел ее домой. В это время домой возвращаются и те два брата, как и он, с женами. Согласно обычаям, люди собрались, провели свадьбу и разошлись.

Через несколько дней одна старушка пришла к матери сыновей:

– Сестра моя, как твои снохи, они тебе нравятся? – спросила она.

– Да, моя сестра, как они мне не понравятся, кто кого захотел, на той и женился. Младший сын сказал, что женился на безрукой и привел одну, но я не замечаю ее безрукость, она большая мастерица, золотой человек.

– Ага, сестра моя! Ты знаешь, он ничего не крадет, рука у нее не воровитая, ее «безрукой» поэтому называют. Это очень хорошо! А средний сын, какую девушку привел?

– А что там говорить, привел из-за того, что она глухая, однако, что не скажешь, все слышит, когда она во весь рост стоит, как будто золотое дерево соорудили.

– Сестра моя, это тоже к добру! Она не глухая, она просто не слышит плохие разговоры, скверные шушуканья, «глухая» – поэтому ее так называют! Это все очень хорошо. А старший сын какую жену привел?

– Ой, сестра моя, про эту совсем не спрашивай! «На здоровой, богатой женился!» – сказал и привел какую-то девушку, слова ее – горькие, руки резкие, то, что я ей говорю, не слышит. Однако что поделаешь? Боясь, произнести какое-нибудь слово, я, как бедная, помалкиваю. Сестра моя, что мне от тебя скрывать, когда она заговорит, звук ее голоса доводит мой слух до безумия. А если она возьмется за чашки-ложки, подумаешь, что все разобьет. Если два, три раза не крикну, она не услышит моих слов и не даст ответа. Чем такая, лучше бы она была и глухой, и слепой, и безрукой, – сказала она и глубоко вздохнула.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 373–375) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В сказке рисуется народный идеал жены, снохи, хозяйки дома. Для объективизации идеала в тексте используется метафоризация: образцовая невеста должна быть «слепая», «глухая», «безрукая», что в переводе на общебытовой язык означает, что она не видит недолжного, не слышит того, что ее не касается, и не берет чужого имущества.

В данном контексте понятие «здоровая» по отношению к снохе, приобретает негативный оттенок.



КЕРТМЕ КЁСЕ

Болгъанмыды, къалгъанмыды, аны Тейри билсин. Къачан эсе да бир заманланы заманында кёселе жашагъандыла. Ала юч тюрлю болгъандыла. Биринчи тюрлюлери – Тау кёседи. Аны тюклери жангыз сакъалыны жютюсюнде болады. Экинчи тюрлюлери – Медет кёсе. Аны анда-мында бирер тюгю болады. Ючюнчю тюрлюлери уа – Кертме кёседи. Бу кёсе тюксюз, кертмеча, сыйдам къымыжады.

Кертме кёсе ойнаргъа, кюльорге, чам этерге да бек суйгенди, кеси уа бек жарлы эди дейдиле. Алай а Кертме кёсени аякъдан жюйрюклюгю, къолдан тулпарлыгъы, сёзге да усталыгъы аны ашсыз этмегенди.

Кюнлени биринде Кертме кёсе бек ач болду. Хуржунларын къармай кетип, сом бла къара сом ахча тапды.

Кертме кёсе кёп сагъыш этди: «Сом бла къара сомгъа не зат алып ашайым?» – деп, акъылы сыртха-тюзге да жетди. Ахырында, тартып, бай къоншусу Малбайгъа барды.

– Ой, салам алейкум, эл таныгъан бай къоншум!

– Кел, не керекди, Кертме кёсе?

– Кереклим олду: сом бла къара сом кюмюш ахчам барды. Аны сен алып, арыкъ-марыкъ болса да, манга бир мал берирми эдинг деп келгенме.

– Кюмюш ахчамы дейсе?

– Да хау, кюмюш ахча.

– Аха, кюмюш ахча эсе уа, алыргъа да болурма, – деп, бир аман къотур улакъны келтирип берди.

Кертме кёсе улакъны къайдан алсын:

– Улакъны да, ахчаны да санга береме, бир ишек бер, – деди.

Малбай алдана тургъанын сезалмады: «Да мындан артыкъ манга не керекди? Бу алышыу аман тюйюлдю. Бир жангыз ишекге бир улакъ да, сом бла къара сом да тапсам, нек алышмайма? Мен алдамай эсем, ол а мени алдамайды», – деп, ишегни берип, улакъны, ахчаны да Кертме кёседен алды.

Кёсе дагъыда хыйла этди:

– Эй, мени аты чыкыгъан таныгъыулу байым, энди манга бир семиз ирик берсенг, озса да, санга озсун, ишегни да, улакъны да, ахчаны да санга къоюп кетер эдим, – деди.

Да Малбай, харип, тюшюналмаса, не этерик эди? Анга да ыразы болду. Жараулу бир семиз ирикни, келтирип, кёсеге берди.

Ол заманда Кертме кёсе Малбайгъа:

– Эй, мени байым, сен мени нечик уллу алдадынг! Бир ирикге бир ишек, бир улакъ, сора сом бла къара сом да алдынг. Аллай сатыу бла мен энтта да санга келе турурма, – деп, ирикни алып кетди.

Малбай а, кесин кёсеге алдатханын билмей, уллу къууанып:

– Ой, маржа, аллай сатыула бла къуруда келе тур, – деп, ызындан къычыра къалды.

Чыгъарманы «Къарачай-малкъар халкъ жомакъла» деген китапдан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 375–376 бб.) Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.

Кёсе – къарачай-малкъар, битеу да шаркъ халкълада болгъан Насра-Хожаны, Алдар-Кёсени къарачай-малкъар тюрлюсюдю. Ол чамчы, оюнчу, сейир адамны сыфатын ачыкълайды. Кеслерин алдатыргъа хазыр болуп тургъан адамланы селеке этген аны жашаууну магъанасыды.

Бу жомакъда кёсе, кесини хыйла санауларын бардырып, малы кёп болгъан бир бай адамны алдап жибереди.

ГРУШЕВЫЙ КЁСЕ*

Было такое или не было, это известно только Тейри**. В очень давние времена жили кёсе. Они были трех видов. Первый вид – это Тау (Горный) кёсе. У него волосы растут только лишь на острие подбородка. Второй вид – Медет*** кёсе. У них волосы растут по одному – то там, то здесь. Третий вид – Кертме (Грушевый) кёсе. Этот кёсе был без волос, как груша гладкий.

Грушевый кёсе очень любил играть, смеяться, шутить, а сам он жил очень бедно, говорят. Однако, у Грушевого кёсе были быстрые ноги, сильные руки, мастерство слова, которые не оставляли его без пропитания.

В один из дней Грушевый кёсе сильно проголодался. Копаясь в своих карманах, он нашел один рубль и двадцать пять копеек.

Грушевый кёсе долго размышлял. Думая, что можно купить и покушать на рубль и двадцать пять копеек, он в мыслях ушел в горы, в степи. В конце он решительно пошел к богатому соседу Малбаю****.

– Ой, салам алейкум****, богатый мой сосед, которого все знают!

– Проходи, что тебе нужно, Грушевый кёсе?

– Вот что мне нужно, у меня есть деньги – один рубль и двадцать пять копеек из серебра. Ты их возьми, и дай мне хоть какую-нибудь скотину, хоть тощую, поэтому я пришел.

– Серебряные деньги говоришь?

– Да, да, серебряные деньги.

– Ага, если серебряные деньги я могу и взять, – сказал он, притащил и дал ему очень паршивого козленка.

Грушевый кёсе как мог взять козленка:

– Я отдаю тебе и козленка, и деньги, но ты дай мне годовалую овцу, – сказал он.

Малбай не понял, что его обманывают: «Да, больше этого, что мне еще нужно? Такая торговля не плоха. За одну годовалую овцу если дадут козленка, один рубль и двадцать пять копеек, почему бы не поменяться? Если я ему не вру, то он мне, тем более не врет», – подумал он и отдал годовалую овцу, а козленка и деньги забрал у Грушевого кёсе.

Кёсе еще раз пошел на хитрость:

* Кёсе – безбородый, с жидкими усами, лукавый, коварный, хитрый мужчина [5, 301–302]. в текстах чаще всего переводится как «плешивец», что, на наш взгляд, не вполне полно передает значение данного термина (Б.Б.).

** Тейри – верховный бог языческого пантеона карачаевцев и балкарцев.

*** Медет – в современном карачаево-балкарском языке данное слово функционирует лишь как междометие, выражающее сожаление, досаду [5, 879].

**** Малбай – в переводе означает «Богатый скотом».

***** Салам алейкум – приветствие.



– Эй, известный своим состоянием мой богач, имя которого все знают, если ты мне сейчас дал бы одного жирного валуха, пусть тебе больше достанется, то годовалую овцу, козленка и деньги я бы оставил тебе и ушел, – сказал.

Да, Малбай, бедный, если не понимал, что бы он сделал? Он дал на это свое согласие. По-настоящему жирного валуха принес и отдал кёсе.

В это время Грушевый кёсе Малбаю:

– Эй, мой богач, как ты меня так мог обмануть! За одного валуха ты получил одну годовалую овцу, одного козленка, потом один рубль и двадцать пять копеек. С такой торговлей я к тебе еще буду приходить, – сказал и ушел, забрав с собой валуха.

А Малбай, не зная, что дал себя обмануть кёсе, сильно обрадовался:

– Ой, маржа*, с такой торговлей приходи ко мне постоянно, – говоря, остался, крича вслед за ним.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 375–376) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

Кёсе – карачаево-балкарский вариант плута, пройдохи, имеющего много общего с общевосточными образами Ходжи-Насреддина и Алдар-Кёсе. Одурачивание простаков – основной способ его существования.

В данной сказке воспроизводится алогичная арифметика кёсе, который своими хитроумными калькуляциями обводит богача-скотовода вокруг пальца.

* *Маржа* – возглас одобрения.

КИШТИК КЪУЙРУГЪУ БЛА ОЙНАГЪАНЛАЙ

Бир элде эр бла къатын жашагъандыла. Эр, бек аламат уучу болмагъан эсе да, бир узун мылтыкъны да тагъып, мараучулагъа къошула айланганды. Мажарып, кѣп зат эталмаса да, аны жашаугъа талпыныуу уллу эди.

Къатын а эрине ушамагъанды. Эрини хар бир къылыгъын, халын да уста билип, аны бла къалай жашарыны эбине да тюшюнѳп, кесин артыкъ бек къыйнамай болгъанды. Ол себепден, эри бир абери алып келсе, аны хылжы-мылжы бишире да, эрине къапдыра, кеси уа, тохтамаздан, чайыр чайнагъанлай, ышныр эте, бир къоншудан бир къоншугъа кире, кюнѳн ишсиз-кючсюз ашыра эди.

Бир жол къатынны эри кесини мараучу нѳгерини юйюне баргъанды. Нѳгерини къатыны чепкен согъа тургъанлай кирип, аны бла:

– Кюнѳн ахшы болсун, эгечим! – деп саламлашды.

– Ахшылыкъ кѳр, жууукъ бол, – дегенни айтып, ол да, къоюн агъачны артындан ѳрге турду.

– Турма, эгечим, турма, ишинги эт, мен уучу нѳгерими излей келген эдим. Юйде жокъмуду?

Нѳгерини къатыны:

– Кел, ѳт, олтур! Былай ары чыкыгъанды да, бусагъат къайтыр, – дегенде, багъалы этдирген кибик этсе да, ѳтѳп, тырхыкга чѳкдю.

Къатын тауатны артына чѳгѳп, чоллакъны къанатландырып тебиреди. Аякълары бла кисиу бауланы кезиу-кезиу баса, кисиу таракъла аркъау халыны араларын айыра, чоллакъ да эки халыны арасы бла жырылдап, ары-бери ѳтгенин кѳргенинде, мараучу кишичик бек сукъланып къарады да: «Тоба-тоба, ярабий, бу ол бизде аман къатынны да былай ишлерге юйретмезми эди, экен», – деп, кеси кесине сѳлеше, туруп, ашыкъ-бушукъ болуп, юйюне кетди.

Юйюне кире келгенлей:

– Ай, сен да къатынма деп тураса, къатын а мен кѳрдюм. Аны бла сени араңг кече бла кюн кибикди, – деди.

Къатын, эрине къарай келип:

– Э киши, бу къатын-матын хапарларыңг недиле? Ким эсе да кѳлѳнге жарагъанды. Биз танымагъан ол кимди? Аллай бир сукълана эсенг, ким эсе да, нек алып къоймайса? Мен жумушугъузну этерме да турумма, – деп чам этерге кюрешди.

– Да аны манга ала турмай, сен да аныча къатын болсанг а?

– Да аны менден неси артыкъды? Ол да – къатын, мен да – къатын.

– Къатынны да къатын биледи. Башына жаурукъ къысханла бары да къатынла болуп барсала эди уа! Ол мен кѳрген къатынны чепкен сокыгъанын менича кѳрсенг эди, ѳй анасыны, андан арысын айтмай къоыйым. Чайыр чайнай, кюн ашыргъан къатынла да бардыла, – деп кючбюсюреди.

Эри ол сѳзлени айтхандан сора, къатын чибинледи да:

– Да, киши, сен мени къагъып кѳрме да, кесинг кесинге бир къарачы. Къоймай бергендиле ансы, мен сангамы келлик эдим? «Мараучума!» – деп, сен да айланаса. Нѳгерлеринг ѳлтюрген кийиклерин санга кѳтюртѳп айланадыла, – деп, къатын иги танг чарлады.



– Оллох-оллох, къатын, не бек бурунунга ётдю, санга уа сёз айтып къарыу жокъ кёреме да!

– Айхай, бурунума ётер. Къайда эсе да бирни кёрюп келгенме деп, манга силкинме. Ол махтагъан къатынынгы эрича, уста киши сен да бол! Тауат ишле, кёюн агъач ишле, кисиу таракъ ишле, чоллакъ ишле! Тауат амалтын, ийирилген хазыр урчукъларымы кюе къыркъып турады, – деп, бир жангыз кьолда айланнганны жыйгъыч тюбюнден къайтара да, чыгъара, алты кере кёргюзтдю.

Эри къатынны хыйласын сезалмады. Урчукъла кёп кёрюндюле.

– Эй, мен терс болуп турама да, – деп, экинчи кюн тауатлыкъ алыргъа агъачха кетди.

Энди къатын чийим чыгъады деп кьоркъады да, экинчи кере да хыйла кьурайды.

Эри агъачха баргъанда, ол да жашыртын аны ызындан барды. Эри, сайлап, тауатлыкъны кесип тебирегенлей, къатын, арлакъда бугъуп:

– Тауат алгъан тауда ёлсюн, кёюп кетмесе, тюзде ёлсюн! – деп, эки-юч кере да эшитдирип-эшитдирип кычырды.

Киши сирелип тынгылады. Жюрегине кьоркъуу келди. Санлары жызылдадыла, чачы бёркюн ёрге кётюрдю. «Агъач кишиге кесими ашатып кьоя ушайма!» – деп, тауатны-мауатны да унутуп, юйюне тебиреди. Къатын андан алгъа юйге келген эди. Ол да бираздан сора кьоркъуу бет алып жетди. Жетер-жетмез:

– Аллах-Аллах, къатын! Тауат алама деп, башыма къан жаудура эдим да. Агъач кишиден кючден-бутдан кьутулуп келеме, – деп тарыкъды.

Къатын, сагъайып, гузаба кирик этип:

– Оу, киши, кесинг саулай кьутулгъанынг насыпды, жарлы. Алынмай къалгъан ол тауат болсун. Ансыз жашарбыз, жанынг сау къалсын ансы, – деген кирикле этди.

Киши, тюнгюлюп къалалмай, дууала тагъып, дагъыда тауатлыкъгъа барды. Къатыны да, марлап, жашыртын ызындан барып, кёкенле тюбюне букьду.

Киши: «А, бисмилляхи!» – деп, терекни ургъанлай, биягъы къатын кёкен тюбюнден:

– Тауат-тауат, тауатлансын, тауат алгъан кетип къалсын. Кетмесе уа, къатып къалсын! – деп, эки-юч кере да кычырды.

Да, харип, не айтыры барды. Аны эшитгенде, кишини ахы кьуруду. «Къачмасам, бусагъат былайда ёлюп къалама!» – деп ийнанды.

Къатын, терк окъуна сылжырап, юйге келди. Эрини уа несин айтаса! Ызындан жан алыгучу сюргенча, хырылдап, юйюне жетди.

Къатыны, кесин абызыратхан кирик этип:

– Оу кюнум, эй киши, бетинг нек тюрленгенди? Энди уа биягъы санга не палах болгъанды? – деди.

– Ай къатын, манга болгъан палахны сурама. Ай сени жауунга манга къадалгъан къара шайтан къадалсын! Энди, агъачха барып, балта уругъа кьолубуздан келмей къалды да.

Къатын, ичинден кюле, тышындан а жарсыгъан кирик кёргюзтюп:

– Тоба-тоба, мен озгъан кече тюшюмде сени алай болурунгу кёрген эдим. Айтыргъа уа ырыслап кьойгъан эдим. Энди, алынмай къалгъан ол



тауат болсун, аны кыяллы биз кыалайыкы. Жанынг сау кыалсын, чепкен сокымагыанла жашамаймыдыла? – деп, эрин да алдады, кесини да ишден башын жулду.

Чыгырманы «Кыарачай-малкыар халкы жомакыла» деген китандан (Биринчи китабы. Нальчик, 2012. 376–378 бб.) Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кычургенди.

«Киштик кыуйругу бла ойнагыанлай» деген жомакыда терсакыыл юй бийчени сыфаты сурагланады. Халахоста, хыйла, эринчек тиширыу ишлерге, чепкен согыаргыя сюймейди.

Ол кесини чепкен сокыган тауаты болмагыаны себепли, баш иесине айып салганды. Болмазлыгыын ангылаганда, аны эри ишине жараулу агыач керекле хазырлар муратда агыачха атланганды. Алай ол тиширыу, тереклени артына бугунуп, башха ауаз бла: «Терекни ким кесе, ол ёлюп кыаллыкыды», – дейди. Алай бла эрини этген умутундан тюнгюлтеди. Кыатыны да анга бюсюреп, баш иесини жашауу багыалы болганын айтып, аны угыай дегенине кыуанып кыалады.

Бу жомакы юйюр-жашау-турмуш жомакылары санындады.

СЛОВНО КОШКА ХВОСТОМ ВИЛЬНУЛА

В одном селе жил мужчина со своей женой. Может быть, он и не был отличным охотником, но взяв с собой длинное ружье, ходил наравне с охотниками. Хоть в своем деле он не добивался больших успехов, стремление к жизни у него было огромное.

А жена его не была похожа на мужа. Она хорошо знала его повадки, настроение, научилась с ним жить, поэтому себя особо не утруждала. Когда муж что-нибудь приносил, она готовила кое-как, давала покушать мужу, а сама, беспрестанно жевала смолу, от одних соседей заходила к другим, так проводила свои дни без забот и хлопот.

Однажды муж этой женщины пошел в дом к своему другу-охотнику. Жена друга ткала сукно, он зашел к ней и поздоровался:

– Добрый день, моя сестра!

– Добрый день, добро пожаловать, – сказала она, и привстала от ткацкого станка.

– Не вставайте, сестра моя, не вставайте, делайте свое дело, я пришел повидаться со своим другом-охотником. Он дома?

Жена друга:

– Проходите, проходите, садитесь! Он вышел куда-то, сейчас вернется, – когда она так сказала, он как бы набивая себе цену, прошел и сел в углу завалинки.

У хозяйки, когда она сидела за ткацким станком, челноки как бы обретали крылья. Она ногами поочередно нажимала на веревки, привязанные к кисю*, раздвигая в чесалках серединную нить, в это время челноки проходили между двумя нитями, издавая звуки, и мужчина-охотник, увидев

* Кисю – деталь ткацкого станка [5, 342].



это движение из стороны в сторону, с восхищением: «Тоба-тоба, ярабий*», плохую женщину, которая у нас находится, она не смогла бы научить так работать?» – говоря сам себе, встав, заторопившись, ушел к себе домой.

Зайдя к себе в дом:

– Ай, и ты себя считаешь женой, вот я видел настоящую жену. Между вами расстояние как между ночью и днем, – сказал он.

Жена, внимательно осмотрев своего мужа:

– Эй, муж мой, что за разговоры о женах-женщинах? Кто-то твою душу усладил. Та, которую мы не знаем, кто это? Если настолько ты ею восхищен, кто бы она ни была, почему на ней не женишься? Я буду выполнять все ваши поручения, – сказала она и постаралась пошутить.

– Да, зачем нужно меня на ней женить, ты не можешь стать такой женой как она?

– Да, что у нее особенного? И она – чья-то жена, и я – жена.

– Жена жене рознь. Все, кто носит платок на голове, если бы становились женами! Если бы ты сама видела женщину, которая ткала сукно, о мать моя, дальше и не буду говорить. А есть такие жены, которые жуют смолу, и этим провожают свой день, – сказал он и глубоко вздохнул.

После этих слов жена встрепелась:

– А, мужик, чем ты меня здесь будешь унижать, сам на себя посмотри. Меня насильно за тебя выдали, а то я бы за тебя разве вышла? Ты тоже мне ходишь и говоришь: «Я – охотник!» Твои друзья убивают горных туров, а тебя заставляют лишь таскать их, – сказала она и еще больше разозлилась.

– Боже мой, жена, как ты свой нос задрала, тебе, оказывается, слово нельзя сказать, я вижу!

– Конечно, задеру свой нос. Где-то какую-то встретил, и на меня нападаешь. У твоей хваленой женщины какой муж есть, ты тоже будь таким мастером! Смастери ткацкий станок, смастери валик ткацкого станка, смастери кисию, смастери челноки! Из-за отсутствия ткацкого станка мои спряденные нити моль съела, – сказала она, и один моток, который держала в руке, попеременно вытаскивая из шкафа, показала шесть раз.

Муж, хитрость своей жены не смог разгадать. Шерстяных мотков показалось множество.

– Эй, оказывается, я сам виноват, – сказал он, и на второй день отправился в лес, чтобы заготовить детали для ткацкого станка.

Она из-за боязни, что ее муж может разоблачить во лжи и во второй раз пошла на хитрость.

Когда муж ушел в лес, она пошла тайком за ним. Когда ее муж, выбрав дерево, начал рубить его для ткацкого станка, жена, спрятавшись подальше:

– Тот, кто возьмет меня для тауат**, пусть умрет в горах, если не оставит в покое и не уйдет, пусть умрет в степи! – сказала она и два-три раза, чтобы он хорошо услышал, прокричала.

Муж ее тут же выпрямился и прислушался. В сердце его поселился страх. Все части тела загудели, волосы подняли шапку на его голове. «Неужели теперь я лесному человеку стану пищей!» – подумал он и, забыв про ткацкий станок, отправился к себе домой. Его жена раньше мужа уже

* *Тоба-тоба, ярабий* – междометия, выражающие удивление, недоумение, любопытство.

** *Tauat* – самодельный станок для ткания сукна (чепкена) [6, 399].



была дома. Он тоже через некоторое время, весь в страхе, добрался до дому. Как только он пришел:

– Аллах-Аллах, жена моя! Решил изготовить ткацкий станок, но на мою голову чуть было кровь не полилась. От лесного человека еле спасся, – сказал он с жалобой.

Жена, выслушав его, как будто торопливо:

– Ой, мой муж, то, что спасся, живым пришел – это счастье, бедняжка. Пусть этот ткацкий станок нам никогда не достанется. Без него проживем как-нибудь, лишь бы ты был живым, – сказала она, притворившись.

Ее муж, все-таки не успокоился, нацепил на себе талисманы и еще раз отправился заготавливать детали для ткацкого станка. И снова жена пошла за ним, тайком и спряталась в кустах.

Муж: «А, бисмилляхи*!» – сказал и стукнул по дереву, тут опять его жена из под кустов:

– Тауат-тауат, пусть останется тауат, взявший тауат пусть уйдет. А если не уйдет, пусть умрет! – произнесла и раза-два-три прокричала.

Да, что можно тут сказать! Как только это услышал, у мужа дух испарился. «Если не убегу, то могу сейчас здесь умереть», – поверил он этому.

Жена его быстренько, незаметно добралась до дому. А о ее муже, что и говорить! Как будто за ним гнался душегуб, еле дыша, добрался до дому.

Дома его жена, как будто ей тягостно стало:

– Ой, мое солнце, мой муж, почему на тебе лица нет? А теперь с тобой какое горе приключилось? – спросила.

– А, жена моя, такое горе у меня, даже не спрашивай. Да, пусть моего врага настигнет тот черный шайтан**, который за меня ухватился! Теперь пойти в лес и топором ударить не в наших силах.

Жена, про себя смеясь, а наружу показывая свое горевание:

– Тоба-тоба, я прошлой ночью видела сон, что с тобой такое могло случиться. Не стала тебе рассказывать из-за суеверия. Пропади пропадом этот ткацкий станок, обойдемся без него. Лишь бы ты был живым, те которые не ткут сукно, разве не живут? – сказала она, обманув мужа, и избавила себя от работы.

Выписал из книги «Карачаево-балкарские народные сказки» (Т. I. – Нальчик, 2012. С. 376–378) и перевел на русский язык Б.А. Берберов.

В приведенной сказке изображается антиидеал жены. Нерадивая, хитрая, ленивая женщина не хотела трудиться, заниматься домотканым ремеслом.

Когда она упрекнула мужа в том, что у нее нет ткацкого станка, он отправился в лес за древесным материалом. Но женщина, спрятавшись за деревьями, потусторонним голосом предрекла смерть тому, кто срубит дерево. Муж отказался от затеи и жена лицемерно поддержала его отказ, сославшись на ценность его жизни.

Сказка относится к жанру семейно-бытовой сказки.

* Бисмилляхи – во имя Аллаха милостивого и милосердного.

** Шайтан – черт.



БАТЫР ЗАУУР

Батыр Зауур бек къарыулу болгъанды. Кеси да бек батыр болгъанды. Бир жолда батыр Зауур: «Жан алычум ким эсе да, аны табып, бир тутушмай къоймам», – деп, жан алычусун излерге кетеди.

Батыр Зауур кесини жанын аллыкъ жан алычуну излей, айлана барып, бир къабырлагъа жетеди. Къабырлагъа жетсе, бир тиширыу жалан, акъ ич кийимлери бла чачын да аллына бошлап, олтургъанын кёреди. Андан аты да юркюп, кеси да бек къоркъады. Болсада, батыр Зауур: «Мен дуняда бир затдан къоркъамагъанма, бу не зат эсе да, мен мындан къалай къоркъайым», – деп, атха да къамичини иги жетдирип, ол тиширыуну къатына къаршчы барып, кючюнден келгени чакълы бир керилип, ол тиширыуну ат ургъан къамичи бла урады.

Алайлай ол тиширыу:

– Ой, Аллах! – деп, секирип ёрге турады да, батыр Зауурну кёзюне къарап: – Эй, санга Аллах ыразы болсун, сен мени сау этдинг, мен шайтанлы болуп айлана эдим, сен мени уруп, мени шайтанларымы къачырдынг, – дейди. – Энди ол жерде, ол элде мени атам жашайды, мени ары элт, – дейди да, батыр Зауурдан тилейди.

Батыр Зауур ол тиширыуну атасыны юйюне элтеди да:

– Ма былай-былай, мен сизни къызыгъызны ол жерде, ол къабырлада, бу халда тапхан эдим. Ол мени былай къоркъутхан эди. Мен а ачыуланып, къамичи бла урдум. Мен аны къамичи бла ургъанымлай: «Сен мени шайтанларымы къыстап, мени сау этдинг», – деди да: «Энди уа мени юйюме элт», – деп, келген эди. Ма алып келдим, – деди.

Андан ол тиширыуну атасы, уллу къууанып, батыр Зауургъа уллу саугъа да берип, элни жыйып, той-къурманлыкъ этеди.

Батыр Зауур а юйюне кетеди да, бир кюн эки нёгери бла уугъа барады. Уугъа бара, бир дупшурну башында бир малны кёреди да, жугъутур сунуп, атады да, ёлтюреди. Андан барып къарасала, ол а – бир ийнек.

Андан бир жарлы къатын жылап* жетеди:

– Мени жангыз ийнегими нек ёлтюрдюгюз, мен энди ийнексиз къалай жашайым, ийнек да къайда табайым? – дейди да, жылайды.

Андан батыр Зауур нёгерлерине айтады:

– Барып бу харип къатыннга эки бузоулу ийнекни мени ийнеклеримден сайлап, сюрюп беригиз. Бу ийнегини этин да кесине берейик, – дейди да, ол ёлтюрген ийнеги ючюн, эки бузоулу ийнек да береди, ол ёлген ийнекни да этин ол къатыннга кююп, юйюне къайтып келеди.

Бир кюн, къатыны да къайры эсе да кетип, батыр Зауур кеси юйде къалады. Къатыны, къайтып, юйге келсе, батыр Зауур ёлюп тургъанын кёреди да, къатыны:

– Мынга не болду? – деп къараса, батыр Зауурну боюну бууулуп, къаралып, боюнунда киштик аякъ тамгала тюшюп кёреди.

Андан батыр Зауурну бир гитче киштикчик буууп ёлтюрдю деп, элге хапар болады.

Батыр Зауур алай бла дунядан кетди.

* Жиляп.

КъМГТИ-ну архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 1 паспорт. КъМАССР-ны Чегем районуну Яникой элинде Къудайланы Идрисден 23.02.1958 жылда жазылганды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алганды эм орус тилге кечюргенди.

«Батыр Заур» деген жомакъ иги ангылашынмагъан илишанла бла байламлыды. Жашауда бола тургъан халла, кезге ачыкъ кёрюнмейдиле, тасхалыдыла, тутхучсуздула. Жигитни батырлыгы, аны ёлумден жанын къалдырмагъаны да анга шагъатды.

ХРАБРЫЙ ЗАУР

Храбрый Заур был очень сильным человеком. И сам он ничего не боялся. Однажды храбрый Заур: «Того, кто должен отнять мою душу, я должен найти и обязательно с ним побороться», – решил и отправился искать того, кто должен отнять у него жизнь.

Храбрый Заур, разыскивая в странствии того, кто должен отнять у него жизнь, очутился возле какого-то кладбища. Оказавшись на кладбище, он увидел одну раздетую женщину, которая сидела в белом нательном белье, с распущенными вперед волосами. От нее отскочил в сторону его конь, и он сам сильно испугался. Однако, храбрый Заур: «Я в этом мире ничего не боялся, что это такое, как мне его бояться?» – решив, и ударив сильно плеткой своего коня, близко подъехал к этой женщине, не жалея своих сил, с большим размахом, ударил эту женщину кнутом, которым бил свою лошадь.

И эта женщина тут же:

– Ой, Аллах! – сказала и быстро встала на ноги и, глядя в глаза храброму Зауру: – Эй, да благословит тебя Аллах, благодаря тебе я выздоровела, во мне сидел шайтан, ты, ударив меня, прогнал моих чертей, – говорит. – Теперь в тех краях, в таком-то селе живет мой отец, отведи меня туда, – говорит она, и просит у храброго Заура.

Храбрый Заур эту женщину отводит в ее отцовский дом:

– Вот так-то так, я вашу дочь в тех-то краях, на том-то кладбище нашел в такой форме. Она меня сильно напугала. А я со злостью ударил ее кнутом. Как только я ее ударил кнутом: «Ты прогнал моих чертей, ты меня вылечил, а теперь отведи меня домой», – сказала, вот я и привел ее, – доложил он.

Отец этой женщины, сильно обрадовавшись храброму Зауру, преподнес большой подарок и собрав все село устроил огромный праздник.

А храбрый Заур возвратился к себе домой, и в один из дней с двумя друзьями отправляется на охоту. По пути на охоту он видит на вершине холма одного животного, и он, подумав, что это тур, выстрелив, его убивает. Когда они подошли и посмотрели на него, она оказалась коровой.

В это время откуда-то прибегает одна бедная женщина со слезами:

– Почему вы мою единственную корову убили, как теперь я буду жить без коровы, и откуда мне еще достать корову? – говорит она и плачет.

После этого храбрый Заур говорит своим друзьям:

– Сходите и этой бедной женщине дайте корову с двумя телятами, выберите такую среди моих коров, пригоните их сюда и отдайте ей. И мясо



этой коровы оставим ей самой, – сказал он, и вместо убитой коровы, дает корову с двумя телятами, и мясо убитой коровы оставляет этой женщине, и возвращается к себе домой.

В один из дней жена храброго Заура куда-то ушла, и он дома остался один. Когда жена вернулась домой, то увидела, что храбрый Заур мертв, и жена:

– Что же с ним случилось? – сказала и, когда начала осматривать, увидела, что храбрый Заур был задушен, отчего он и почернел, и на шее видит следы кошачьих ног.

После этого в селе начали поговаривать, что храброго Заура убила, задушив, одна маленькая кошка.

Таким образом, храбрый Заур ушел в мир иной!

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 1. Записано 23.02.1958 г. в с. Яникой Чегемского района КБАССР от Кудаяева Идриса (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказка с таинственными элементами. Многочисленные мотивы, связанные с перевертышами, свидетельствуют об изменчивости мира.

ЖЮЗ ЁТЮРЮК

(Батокъаны, чалгъы чалмай, ётюрюк айтып къутулгъаны, кюз биченде)

Бир жолда бир элде Батокъа деп биреу болгъанды. Ол а бир кюз бир байгъа бичен чалыргъа жалчы болады. Бир къауум адам бла бичен чала, къуругъанын жыя, бай бир кюнню юслеринден кетмей, биченчилени таза эрикдиреди. Бир кюн барындан да къарыусузуракъ Батокъа, чалгъыдан эригип: «Аллах, бир солуп ёлсем эди», – деп, амал излейди.

Ингирде чалгъычыла, къошха жыйылгъанлай, Батокъа айтады:

– Аланла, мен сизге жюз ётюрюк сёз айтыр эдим, бары да кертиге ушап, сиз мени тамбла чалгъыгъа элтмей, къошда къойсагъыз эди, – дейди.

Биченчи жыйын байдан эркинлик тилейди. Биченчиле алай тилегенден сора, бай да эркинлик береди да, сора жыйын тамата Батокъагъа:

– Айт, бары да ётюрюк болуп, кертиге ушасынла, жюзден аз сёз да болмасын, – дейдиле.

Батокъа айтып башлайды.

– Мени, – дейди, – анам бир кюн тогъуз эшекге да миндирип: «Эшеклени отундан жүклеп кел», – деп, агъачха жиберген эди, – дейди. – Тогъуз эшекге да минип, кетип бара тургъанлай, бир уллу суугъа жетдим да, андан ётюп келе тургъанымлай, жанымда бичагъымы суугъа тюшюрдюм да, эшекледен да тюшюп, хайда изле, хайда изле, асыры излегенден, сууну да ары-бери чачып, халек этдим, алай бичагъымы уа тапмадым. Алайлай ачыуланып, суугъа сирнекни жандырып жетдирдим да, алайлай суу жанып, алайы ариу къургъакъ болуп къалды да, къарасам, бичагъымы темири кюйюп, сабы къалып тура эди. Аны да алып, биягъы тогъуз эшегиме да минип, агъачха жетип, эшеклерими алайда къоюп, кесим алагъа жүк болур кибик отун этип, эшеклериме келсем, эшеклерим жокъ. Хайда ары чап, хайда бери чап, эшеклерими табалмадым. Андан юйге барып, анамы чирги ийнесин да алып, тауукъ адакъасына да минип келип, бир терен къолгъа кирип, адакъаны да терекге тагъып, чирги ийнени гумух жанын жерге уруп, кесим а ийнени жютю жанына минип къарасам, эшеклерим бир уллу сыртны артында, суугъа батып тура эдиле.

Хайда андан, ийнеми да алып, биягъы адакъагъа минип, эшеклерим батхан жерге барсам, ала уа, суусап болуп, бузну жалай кетип, энишге батып, артха чыгъалмай, буз къысып тура эди, жалан къуйрукълары кёрюне. Андан, ары этип, бери этип, къуйрукъларындан адакъагъа тагъып да кюрешдим, чыгъаралмадым.

Алайлай башымы буруп, бери чыгъарып, бузну уруп кёреме да, бузну бир да мычымай ууатып, эшеклерими да буздан чыгъарып, бир терекни тогъуз эшекге да жүклеп, анабызны тауукъ адакъасына да минип, юйге алай келген эдим, – деди.

КъМГТИ-ну архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 1 паспорт. КъМАССР-ны Чегем районуну Яникой элинде Къудайланы Идрисден 23.02.1958 жылда жазылгъанды (автозапись).

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кёчюргенди.



Бу жомакъны къуралыу ызы битеудуня фольклорда бек жайылыпды. Ол ётюрюк халда жазылгъанды. Анда болдурулгъан ишлени, сынжыргъа ушаи жорукъда къуралгъанлары да, кесине эс бурдурады.

Чыгъармада ёч не бла бошалгъаны ачыкъланмай къалады.

СТО НЕБЫЛИЦ

(О том, как осенью Батока на сенокосе, не занимаясь косьбой, отделался сотней небылиц)

Однажды в одном селе жил мужчина по имени Батока. И он осенью нанимается в батраки одному богачу косить сено. Несколько человек, косили траву, высушенную собирали, а богач, не отходя от них ни дня, сильно надоедал косарям. В один из дней слабейший из всех Батока, подустав от косы: «Аллах, умер бы хоть отдохнувши», – сказал и начал искать выход.

Когда вечером косари собрались в кошаре, Батока говорит:

– Аланы*, я бы вам рассказал сто небылиц, и все они будут похожи на правду, если бы вы меня завтра оставили в кошаре, не забирая на сенокос, – говорит он.

Бригада косарей просит богача дать ему такую возможность. После того, как косари попросили, а богач дал разрешение, глава косарей говорит Батоке:

– Рассказывай свои небылицы, которые будут похожи на реальность, и чтобы было не меньше ста слов.

Батока начинает рассказывать:

– Меня, – говорит он, – однажды мать, посадив на девять ослов, и: «Дровами нагрузив ослов, возвращайся», – сказав, послала в лес, – говорит. – Итак я разом оседлав девять ослов, отправился в путь, доехал до большой реки, и, переходя через нее, когда я двинулся дальше, уронил нож в воду, который носил при себе, тогда я слез с ослов, начал искать, долго искал, настолько усердно искал, что разбрызгал воду на все стороны, довел реку до уничтожения, но нож свой так и не нашел. Тогда я сильно разозлился, поджег спичинку и поднес ее к воде, тут же вода загорелась, и то место стало засушливым, и когда я посмотрел, то увидел, что железная часть моего ножа сгорела, осталась только ручка. Я взял ее, и сев на тех же девять ослов, дошел до леса, оставил там своих ослов, сам я заготовил столько дров, чтобы загрузить всех, и когда вернулся, моих ослов на том месте не оказалось. И я начал бегать туда-сюда, но своих ослов так и не удалось найти. После этого я, вернувшись домой, взял у матери большую иголку, сел на петуха, вошел в глубокое ущелье, привязал петуха к дереву, а иголку тупую сторону воткнул в землю, а сам залез на острую часть иголки, огляделся и увидел, что мои ослы находятся за большим холмом, полностью погуженные в воду.

Я тут же вытащил свою иголку, сел на того же петуха, добрался до места, где находились мои утопленные ослы, а они жаждали пить воды, долгое время облизывая лед, оказались на дне, и не в силах были вылезти

* Алан – обращение. «Эй!», «Слушай!», «Друг!», «Товарищ!» [3, 48].

обратно, их постепенно сковывал лед, лишь только виднелись их хвосты. После этого я старался и так, и сяк, не спеша привязал их хвосты к петуху, но так и не мог их оттуда вытащить.

И тут я, повернув голову, высунул ее оттуда, начинаю бить лед, и через некоторое время, разбив его, освободил своих ослов из льда, загрузил одно дерево на девять ослов, и сев на петуха своей матери, так и вернулся к себе домой, – сказал он.

Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 1. Записано 23.02. 1958 г. в с. Яникой Чегемского района КБАССР от Кудалева Идриса (автозапись).

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказка относится к распространенному в мировом фольклоре типу сказок-небылиц с подчеркнутым вниманием к фантастическим элементам. Обращает на себя внимание цепевидная структура приведенной сказки.

В произведении остается нераскрытым, чем закончилось пари.



ЮЧ ЭГЕЧ

Бир къарындашны юч эгечи болгъанды. Бир кюн жюн тарай тургъанлай, тѳбен жанына къарап, бир келе тургъан атлыны кѳргендиле.

– Ол мени таматамы эри болса эди, мен бетими былай жыртыр эдим, – деп, экинчи эгеч, бетин жыртып, къан этгенди.

– Ол мени ортанчы эгечими болса эди, мен а былай жыртыр эдим, – деп, гитче эгеч къанатады.

– Ол мени бек гитче эгечимики болса, мен да былай этер эдим, – деп, бек тамата да узалгъанды бетине.

Ючюсю да, бетлерин къанатып, сарнаугъа къалып тургъанлай, къарындашлары келип киреди.

– Неди бу этгенигиз? – деп соргъанда, эгечлери айтадыла болгъанын болгъанлай.

– Сизден тели тапхынчы барайым да, кѳрейим, – деп, жолгъа чыккыгъанды. Бара-бара кетип, бир къатыннга жолугъады.

– Къайры бараса? – деп соргъанда, къатын айтады:

– Къызымы ахыратха элтип барама, къолу къошуннга бекленнгенди да.

– Къызыны бер, мен элтейим, – дейди да, арлакыгъа барып, къошунну уруп, ууатып, къызыны къатыннга алады.

Андан бара кетип, тууарланы, тупар-тупур этип, тѳе тургъан бир кишиге тѳбейди.

– Нек тѳесе? – деп сорады.

– Дюгерликге минип, туз ашамайдыла, – дейди.

Жаш:

– Мен тузну ашарча этейим, не бересе? – дейди.

– Тууарланы эки этип, жартысы сени, – дейди.

Жаш, тузну къыртышге къуюп, тууарлагъа ашарча этип, жартысын да алайдан сюрюп кетеди.

Бир кесек барып, къойлагъа жетеди. Къойла къаяны аллында быттым эте, къауум-къауум болуп, сюрюучюлери, терлегенлери барып, къая ауады деп, аркъасын тиреп тургъанын кѳреди.

– Къаяны тьяйым, не бересе ансы?

– Къойланы орталарына бѳрк атайыкъ да, эки бѳлюнселе, бири сени, бири мени.

Барады да арлакъдан бир чыпынчыкъ келтирип тирейди. Аумагъан къая къайры ауарыкъ эди? Алайда къойланы жартысын да алгъанды.

Ма алай, къатын, тууар, къой къоллу болуп, ашап, жашап къалгъанды.

– Аладан ким тели, ким акъыллы болгъанды? – деп, жомакъны айтып бошаса, атабыз соруучу эди.

КъМГТИ-ну архиви. Таулу фольклор фонд. 44 папка, 21 паспорт. КъМАССР-ны Совет районуну Бызынгы элинде 100-жыллыкъ Холаланы Къоналийни жашы Муссадан 1972 жылны август айында Кючмезланы М.Ч. жазгъанды.

Архивден Берберланы Б.А. жазып алгъанды эм орус тилге кѳчюргенди. Жомакъны Мусса атасындан эшитгенди.

«Юч эгеч» деген жомакыда адамны эссизлиги кюлкюлю халда суратланады, бир да болмагъанча сандыракъ халгъа жетдириледи.

Аны бла бирге мында акъылгъа уллу магъана бериледи. Ол дуняда болгъан жашау халланы тюрлендирирча кючю болгъан бийик ниет хазнача кӛргюзткюлюнеди.

ТРИ СЕСТРЫ

У одного брата были три сестры. В один из дней, когда они чесали шерсть, они посмотрели вниз, и заметили какого-то всадника.

– Если бы он был мужем моей старшей сестры, я бы свое лицо так бы искромсала, – сказала вторая сестра и, разодрав свое лицо, пустила кровь.

– Если бы он был мужем моей средней сестры, я бы вот так искромсала свое лицо, – сказала младшая сестра и расцарапала себе лицо.

– Если бы он был мужем моей самой младшей сестры, я бы так же поступила, – сказала самая старшая сестра, и потянулась к своему лицу.

Когда все трое, разодрав свои лица, громко рыдали, их брат зашел к ним.

– Что вы делаете? – когда он их спросил, его сестры рассказали ему все, как было.

– Пока не найду дурнее вас, буду ходить, искать, – сказал он и отправился в дорогу.

Когда он шел-шел, то встретил одну женщину.

– Куда ты идешь? – он у нее спросил, а женщина отвечает:

– Дочь свою веду в ад, так как рука у нее застряла в кувшине.

– Девушку поручите мне, я поведу, – сказал он и, отойдя в сторону ударил кувшин об камень, разбил, а девушку взял себе в жены.

После этого он продолжил свой путь дальше, увидел одного человека, который сильно избивал скот.

– Чего ты их бьешь? – спросил он у него.

– Потому, что они, поднявшись на дюгерлик*, соль не кушают, – ответил он. Юноша:

– Если я сделаю так, чтобы они ели соль, что ты мне дашь? – спросил.

– Вот это стадо поделим пополам, половина будет твоей, – ответил он.

Юноша рассыпал соль на траве, чтобы коровы могли есть, и половину стада отогнав, забрав с собой, ушел оттуда.

Он шел-шел и дошел до отары. Овцы находились перед скалой, сбившись в кучу. Чабан, который их пас, в поте лица, из-за страха, что скала может упасть, стоял, спиной подпирая ее.

– Если я скалу остановлю, что ты мне дашь?

– Мы бросим посредине отары шапку, когда они разделятся на две части, одна часть будет твоей, а другая – моей.

Он сходил, где-то на стороне достал подпорку, принес и прислонил к скале. Не падучая скала, куда бы упала?! И здесь он забрал с собой часть овец.

* Дюгерлик – защитная решетка над дымоходом для удерживания искр [4, 708].



Вот так, жену, коров, овец приобрета, он стал счастливо жить да поживать.

– Из них кто глупее, а кто умнее был? – спрашивал наш отец после того, как заканчивал рассказывать эту сказку.

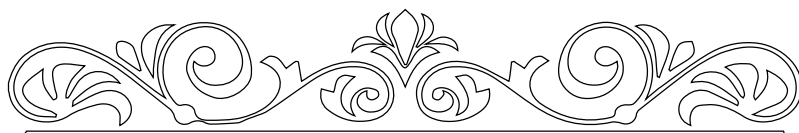
Архив КБИГИ. Балкарский фольклорный фонд. Папка 44, паспорт 21. Записала М.Ч. Кучмезова в августе 1972 г. в с. Безенги Советского района КБАССР от 100-летнего Холаева Муссы Коналиевича.

Выписал из архива и перевел на русский язык Берберов Б.А.

Сказку Мусса слышал от отца.

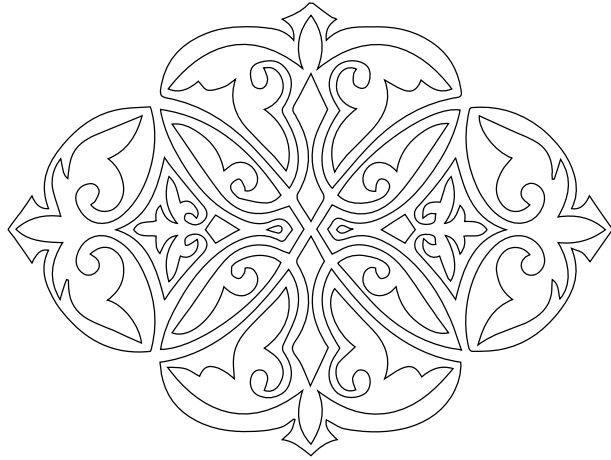
В сказке высмеивается человеческая глупость, доведенная до абсурда, и, наоборот, утверждается разум как высшая духовно-нравственная категория, способная изменить миропорядок.





ГЛОССАРИЙ





Айыу – жыртхыч жаныуар, жомакълада аслам тюбеучо жигитледен бири. Ол кеси да акъылсыз, хар ким да аны алдарча кѣргюзтюледи. Кѣбюсюне текстде ол жигитни сыфаты бѣрю бла, тюлкю бла бирге бериледи.

Айыу (Медведь) – хищный зверь, один из главных героев, который часто встречается в сказках. Он сам показывается как глупый, которого каждый сможет обмануть. В основном в тексте образ этого персонажа дается вместе с волком и лисой.

Айыу улучукъ – ол атлы жомакъны баш жигити, айыу къарыулу деу жашчыкъ. Аны анасы айыу, атасы адам улу болгъанды. Ол, атасы бла айыу анасындан къачып, адамла бла жашап башлагъанды, ёсюп, батыр, пелиуан жаш болгъанды.

Айыу улучукъ (Сын медведицы) – главный герой одноименной сказки, могучий парень с медвежьей силой. Его матерью была медведица, а отцом – человек. Он с отцом сбежал от матери-медведицы, стал жить с людьми, вырос и стал отважным богатырем.

Акъ атлы – «Къаракъундет улу Къундет» деген жомакъда тюбеген сыфат. Ол тулпар къыз болуп чыкъгъанды, чыгъарманы ахырында Къундетге эрге баргъанды.

Акъ атлы (Белый всадник / Всадник на белом коне) – встречающийся в сказке «Каракундетов Кундет» образ. Он оказался девушкой-богатыршей, которая в конце произведения вышла замуж за Кундета.

Аламат тайчыкъ – ол атлы жомакъда хар кюнден бир тай табыучу бурул байталдан туугъан, кѣп сейир кючю болгъан тайчыкъ.

Аламат тайчыкъ (Чудесный жеребенок) – в одноименной сказке жеребенок, обладающий многими чудесными способностями, рожденный от седой кобылы, жеребящейся каждый день.

Албѣрю – «Албѣрю бла Тутбѣрю» деген жомакъны иги халли баш жигити, кесини да Тутбѣрю деп къызгъанч къарындашы барды.

Албѣрю – положительный герой сказки «Албѣрю и Тутбѣрю», у которого есть скупой брат Тутбѣрю.

Алладин – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити, быстыр тикген устаны жашы, ажайып чыракъны иеси.

Алладин – главный герой одноименной волшебной сказки, сын портного, хозяин волшебной лампы.

Аллахберди – «Къаратон хан» деген сейир-тамаша жомакъны баш жигити, туугъунчу окъуна хан атасы харам этген батыр, тогъуз эмегени къурутхан уста мараучу. Кесине бек къаты ушагъан, билгичлиги болгъан, эмегенден туугъан къарындашы барды. Узунсакъал шылап кишичик жутуп, Аллахберди аны чыначыгъына тюшюп, андан а, жукълап тургъанлай, гитче къарындашы чыгъаргъанды.

Аллахберди – герой волшебной сказки «Бездетный хан», сын хана, который отрекся от него еще до его рождения, богатырь, умелый охотник,



истребивший девятерых эмегенов. Имеет очень похожего на него брата-полуэмегена, который наделен даром предвидения. Будучи проглоченным длиннобородым карликом, Аллахберди оказался в его мизинце, откуда его спящего и достал младший брат-полукровка.

Алтын тюклю кьуш – ол атлы жомакьда тубеген ажайып кьанатлы бий. Тыш сыфаты орус фольклордагы Жар-птицагьа келишеди. Аны тутуп, эркин этген Бийбогьа сейир тепсини, токьлуну эм токьмакьны берип, жашауун онгуна айландыргьанды.

Алтын тюклю кьуш (Птица с золотыми перьями) – встречающийся в одноименной сказке чудесный царь птиц. Внешним обликом напоминает Жар-птицу из русского фольклора. Подарив пойманному и отпущившему его Бийбо волшебный обеденный столик, барашка и дубину, помог ему улучшить жизнь.

Алтын чабакь – сейир-тамаша жомакьланы бир кьауумунда сагьынылгьан ёлур ауруудан сау этерик дарман. «Жомакь (Алтын чабакь)» деген чыгьармада алтын чабакь, адам сыфатха кирип, аны тутуп, жан аурутуп, артха тенгизге бошлагьан, аны ючюн а элинден кьысталгьан ханны жашына жашауун кьуараргьа болушады.

Алтын чабакь (Золотая рыба) – упоминающееся в ряде волшебных сказок лекарство от смертельных болезней. В произведении «Сказка (Золотая рыба)» золотая рыба, приняв человеческий облик, помогает устроить свою жизнь сыну хана, который, поймав ее и пожалев, отпустил обратно в море, за что был изгнан из родного села.

Аман кьол – «Кьаратон хан» деген сейир-тамаша жомакьда тубеген жер ат. Аны юсюнден халкьда кьоркьуулу хапарла жюригендиле, кесинде да батырлыкьларын кьёргюзтюрге суйген кьеп жигитле жоюлгьандыла.

Аман кьол (Аман-кол) – упоминающийся в волшебной сказке «Бездетный хан» топоним, местность, имеющая дурную славу, место, где погибали храбрецы, пожелавшие доказать свою отвагу.

Арабий – «Жарыкьбий» деген сейир-тамаша жомакьны жигитлеринден бири, патчахны жашы, баш жигитни атасы. Селеше билген бууну кьыяулу этгени ючюн, кесине, халкьына да кьеп жыллагьа кьарангылыкь, мудахлыкь жетген эди, жашы туугьунчу, кюнню кьёзю ачылмагьанды, кьыралында сабий туумагьанды.

Арабий – один из персонажей волшебной сказки «Жарыкьбий», сын царя, отец главного героя. Тем, что покалечил говорящего оленя, на долгие годы навлек на себя и свой народ темноту и печаль, пока не родился его сын, солнце практически не появлялось, в стране не рождались дети.

Ариу – «Жарыкьбий» деген сейир-тамаша жомакьда Арабий патчахны кьатыны, баш жигитни анасы, ажайып жюзюкню иеси.

Ариу (досл.: «Красавица») – в волшебной сказке «Жарыкьбий» жена царя Арабия, мать главного героя, владелица чудесного кольца.

Асадуллах – «Юч къарындаш (II)» деген сейир-тамаша жомакъда жарлы сюрюучюню тамата жашы. Бир байгъа бир жылгъа бла бир кюннге жалчылыкъгъа кирип, жер сюралмай, эринеден-эрине барып, иесини юйюне, чычханланы къурутурча, от салгъаны ючюн хакъсыз кысталгъанды эм юйюне къурлай келгенди.

Асадуллах – в волшебной сказке «Три брата (II)» старший сын бедного пастуха. Нанявшись к одному баю в работники на один год и один день, не справившись с пахотой, все больше и больше ленясь, из-за того, что, чтобы изгнать мышей, спалил хозяйский дом, был выгнан без платы и вернулся домой ни с чем.

Аслан – уллу жырхыч жаныуар. Тюлкую бла бирге жаланда бир жомакъда тюбейди. Тюлкуюню алдагъанын сезип, аны уруп, жагъып кетеди.

Аслан (Лев) – большой хищный зверь. С лисой встречается только в одной сказке. Узнав, что лиса – обманщица, ударив, размазал ее и ушел.

Аслан кырал – «Жарыкъбий» деген сейир-тамаша жомакъда сагъынылгъан, Маймул кыралгъа къоншу, алагъа къажау тургъан кырал. Жарыкъбийге бла аны нёгерлерине маймулладан ол жерлени юсю бла къачаргъа тюшген эди.

Аслан кырал (Страна Львов) – упоминаемое в волшебной сказке «Жарыкъбий», соседствующее со страной Обезьян, враждебное им государство. Жарыкбию и его друзьям пришлось бежать от обезьян через эти земли.

Ат – бир туякълы жегилиучю, минилиучю, уллу юй хайыуан [4, 211]. Жаныуарланы юсюнден жомакълада бир ненча тюбейди. Кесини акъыллы жаныуар болгъанын билдиреди. Жыртхыч жаныуарланы ичинде акъылыны хайыры бла хорлам алады. Текстлени кёбюсюнде тюлкую эм бёрю бла бирге тюбейди.

Ат (Лошадь) – парнокопытное, запрягаемое, большое домашнее животное. В сказках о животных упоминается несколько раз. Показывает себя как умное животное. Среди диких животных становится победителем, благодаря уму. В текстах в основном встречается вместе с лисой и волком.

Ахшы-улан – ол атлы жомакъны, кесинден батыр жокъ сунуп, Таукъуш деген сокъур къартчыкыгъа хорлатхан баш жигити.

Ахшы-улан (в интерф.: «Добрый молодец / сын») – главный герой одноименной сказки, который считал, что отважнее его нет, и проиграл слепому старцу по имени Таукуш.

Баксан / Бахсан тары – «Ахшы-уланни хапары» деген жомакъда сагъынылгъан, керти да болгъан Къабарты-Малкъарны тарларындан бири.

Баксан / Басхан тары (Баксанское ущелье) – упоминающееся в сказке «История Ахшы-улана», одно из реально существующих ущелий Кабардино-Балкарии.

Бай улу Бат – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити. Къатыны бла тосу аны кёп тюрлю кыйынылыкыгъа къалдыргъандыла, алай ол,

биягы адам болуп, ажайып кьамичини кьолгъа этип, аланы бирде эшекле этип ишлетгенди, бирде уа, тонгузла этип, агъачха кьыстагъанды.

Бай улу Бат (Баев Бат) – главный герой одноименной волшебной сказки. Его жена с любовником причинили ему много бед, однако он, вновь став человеком, заполучив волшебную плеть, иногда превращая их в ослов, заставлял работать, а порой, превратив в свиней, прогонял в лес.

Бай улу Махамет – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити. Къатыны, тосу бла бирге, аны, ажайып кьамичи бла уруп, кезиу-кезиу ат, ит, уку этедиле. Алай обурну болушлугъу бла Махамет биягы адам болады эм ажайып кьамичини кьолгъа этип, аланы не эшекле, не атла, не ёгузле этип, ишлетип, кече уа балчыкъ орунга жыйып тургъанды.

Бай улу Махамет (Баев Махамет) – главный герой одноименной волшебной сказки. Его жена вместе с любовником, ударяя волшебной плетью, превращают его поочередно в коня, пса, сову. Однако с помощью ведьмы Махамет вновь становится человеком и, прибрав к рукам волшебную плеть, превращая их то в ослов, то в коней, то в волов, заставляет весь день работать, а на ночь загоняет в грязный хлев.

Баш сюек – ол атлы сейир-тамаша жомакъда сагъынылгъан, юсюнде кьоркьунчлу жазулары болгъан адам сюек.

Баш сюек (Череп) – упоминающаяся в одноименной волшебной сказке человеческая кость со зловещей надписью.

Бёдене – сабанлада, чаллыкълада жашаучу, жаз тауукъгъа ушагъан, кьуйругъу кьысха, кьанатлары жютю, эти ашаргъа жарагъан кьанатлычыкъ [4, 412]. «Тюлкю бла бёдене» деген жомакъда тюлкю бла бирге тубейди. Бёдене тюлкюню ачыуландыргъанда, ол аны ашар умут этип, сермеп тутады, алай бёдене тюлкюню алдап, кьутхарылып кетеди.

Бёдене (Перепелка) – похожая на курицу с острыми крыльями, живущая на полях и пастбищах, со съедобным мясом птица. В сказке «Лиса и перепелка» встречается вместе с лисой. Когда перепелка разозлила лису, она хотела ее съесть и схватила, но перепелка, обманув лису, спаслась.

Бёрю – жаныуарланы юсюнден кьарачай-малкьар жомакълада кьызгъанчыкъ бла огъурсузлукъну белгилеген сыфат. Ол асламында акъылсызча бериледи, аны себепли аны кёбюсюне хыйлачы жигитле алдайдыла, сёз ючюн, тюлкю. Бу эки кьарыулу жаныуарны бир бирге тенгleshдирип айтылгъан магъанасы болгъан жомакъла кёп тубейдиле, барысында да бёрю, акъылсыз, зат ангыламагъан болуп, хар заманда да кесин алдатдырады.

Сейир-тамаша жомакълада уа бёрю жигитге болушхан, анга кьажау тургъан кьуча да берилирге болады. Сёз ючюн, «Сокъур Алиюкъ» деген жомакъда бёрю алгъа мараучугъа жылкысын Мушт кьобюрчекге жьыргъа болушады, алай аны ючюн не атланы жартысын, не уучуну жангыз жашын, неда кьыз бермезни эрге бармаз кьызын берирлерин излейди. Ахырында кесин тюлкюге алдатып жоюлады.

Бёрю (Волк) – в карачаево-балкарских сказках о животных образ, воплощающий жадность и злобу. Он часто изображается глупым,

поэтому в основном его часто обманывают персонажи сказок похитрее, например, лиса. Сопоставление этих двух сильных зверей встречается во многих сказочных сюжетах, во всех волк, являясь бестолковым и непредусмотрительным, все время дает себя обмануть.

В волшебных сказках волк может выступать как в качестве помогающей герою, так и противостоящей ему враждебной силы. Например, в сказке «Слепой Алиюк» волк сперва помогает следопыту собрать его табун в ларец Мушт, но за это требует отдать ему либо половину коней, либо единственного сына охотника, либо нейдущую замуж дочь отца, который не отдаст свою дочь. В конце погибает, будучи обманутым лисой.

Бийбо – «Алтын тюклю кьуш» деген сейир-тамаша жомакьда гюл бахчаны сакълагъан къарт киши. Ол къанатлы, тутуп, эркин этгени ючюн, анга ажайып затла (хант къанга, къара токълу, токъмакъ) бергенди эм аны бла жашауун игиге айландырырға, огъурсуз къатынын да жууаш этерге болушханды.

Бийбо – в волшебной сказке «Птица с золотыми перьями» охранявший цветочный сад старик. Эта птица за то, что поймал и отпустил на свободу, подарила волшебные предметы (обеденный стол, черного барашка, дубинку) и тем самым помогла ему улучшить жизнь и угомонить злонравную жену.

Билгич – «АлаMAT тайчыкъ» деген жомакьда Сафарны жетинчи жашы. Ол алаMAT тайчыкъны, жауладан къоруулап, кесине жарагъан ат этгенди. Аны болушлугъу бла, эмегенлени хорлап, патчахны кызын къатыннга алгъанды.

Билгич – в сказке «Чудесный жеребенок» седьмой сын Сафара. Он, защитив чудесного жеребенка от врагов, вырастил для себя замечательного коня. С его помощью, победив эмегенов, взял в жены дочь падишаха.

Бит – малны, адамны, къанатлыны къанларын эмип жашагъан ууакъ жаныуар [4, 440]. Жомакълада бир ненча тубейди, асламысында шуёхлукъну багъалылыгъын кёргюзтеди.

Бит (Вошь) – насекомое, питающееся кровью животных и людей. В сказках встречается несколько раз, в основном показывает ценность дружбы.

Бойнакъ – «Бай улу Махамет» деген сейир-тамаша жомакьда баш жигитге.

Бойнакъ (Бойнак, в интерф. «Белошей») – в волшебной сказке «Баев Махамет» кличка, данная главному герою, когда он был превращен в пса.

Борсукъчукъ – узун, зыбыр тюклю жыртхыч жаныуарчыкъ. «Къоян бла борсукъчукъ» деген жомакьда борсукъ къоянны кийик эчкини этин ашай тургъанлай кёреди. Ол къояндан кесин эчки тутаргъа юйретирын тилейди. Алай махтанчакъ къоян аны алдайды. Ахырында борсукъчукъ, къояндан къоркъуп, къачып кетеди.

Борсукъчукъ (Барсучок) – дикий зверек с длинной, грубой шерстью. В сказке «Заяц и барсучок» барсук увидел, как заяц ест мясо оленихи. Он попросил зайца научить его тоже поймать олениху. Но хвастливый заяц обманул его. В конце барсук, испугавшись зайца, убегает.



Буу – бутакълы мюйюзлери болгъан, ариу санлы, ышныр этиучю жаныуар. Жаныуарланы юсюнден жомакъланы баш жигитлеринден бири болуп тюбейди. Текстде ариу сыфаты, бийик даражасы кёргюзтюледди.

Буу (Олень) – с ветвистыми рогами, с красивым телом, жвачное животное. Встречается в сказках о животных как один из главных героев. В тексте описывается его статный и уважительный вид.

Буу – «Жарыкъбий» деген жомакъда тюбеген жаныуар сыфат. Патчахны жашы Арабий, аны жаралы этип, кесине, халкъына да къарангылыкъ бла мудахлыкъны келтиргенди. Аны жашы Жарыкъбийге, жыйыны бла бууну ёлтюргенден сора, туугъан жеринден айырылып, кёп къыйынлыкъдан ётерге тюшгенди.

Буу (Олень) – встречающийся в волшебной сказке «Жарыкъбий» звериный образ. Сын царя Арабий, ранив его, навлек на себя и свой народ темноту и печаль. Его сыну Жарыкъбию, после того, как вместе с дружиной убили оленя, расставшись с родиной, пришлось пройти через многие испытания.

Буху – «Жанакъайыт» деген жомакъда уллу жылкъыны айтхылыкъ иеси.

Буху – в сказке «Жанакаит» знаменитый хозяин большого табуна.

Бюрче – къан ичип жашагъан гитче, секириучю жаныуарчыкъ. Жомакълада бит бла шуёх болады. Бюрче, сууну ётеме деп, суугъа кетеди, бит а аны чыгъарыргъа мадар излейди. Ахырында шуёхун суудан чыгъарады.

Бюрче (Блоха) – живущее, питаясь кровью, маленькое, прыгающее насекомое. В сказке дружит с вошью. Блоха хотела перейти реку и упала в воду, а вошь ищет возможность ее вытащить. И в конце вытаскивает друга из воды.

Гылыу балачыкъ – «Улакъ бла гылыу балачыкъ» деген жомакъда батыр, ойнакълаучу, алай акъылсыз баш жигит. Кесин тюлюкю бла бёрюге тынч алдатады.

Гылыу балачыкъ (Крысенок) – смелый, игривый, но глупый персонаж сказки «Козленок и крысенок». Легко дает обмануть себя лисе с волком.

Джансыз-Мыджыкъ / Жансыз-Мыжыкъ – «Мырза улу Къанмырза» деген сейир-тамаша-жигитлик жомакъда баш жигитге къажау тургъан, къара ключени жанын тутхан сыфат. Орус фольклордагъы Кощей Бессмертныйге ушайды. Аны жаны бууну ичиндеги юч кёгюрчюнню ичинде тургъан юч сокъур чибинде сакъланнганды. Мырза улу Къанмырза, дуня уллусу къуш бла бирге, аланы табып, Джансыз-Мыджыкъны ёлтюргендиле.

Джансыз-Мыджыкъ / Жансыз-Мыжыкъ (Джансыз-Мыджык / Жансыз-Мыжык) – в волшебной-героической сказке «Мырзаев Канмырза» противостоящий главному герою представитель темных сил. Схож с Кошеем Бессмертным русского фольклора. Его душа / жизнь хранилась в трех слепнях внутри трех голубей, находившихся внутри оленя. Мырзаев



Канмырза вместе с самой большой в мире орлицей, разыскав их, убивает Джансыз-Мыджыка.

Джин / жин киши – «Алладин» деген сейир-тамаша жомакъда эски тот чыракъда жашагъан, чыракъны иесини хар айтханын толтургъан ажайып зат.

Джин / жин киши (Джин) – в волшебной сказке «Алладин» живущее в старой, ржавой лампе, исполняющее все пожелания хозяина лампы сверхъестественное существо.

Дунья уллусу къуш – къарачай-малкъар сейир-тамаша-жигитлик жомакълада тюбеучю бек мазаллы ажайып къанатлы. Ол баш жигитни, аны балаларын сарыуекден къутхаргъаны ючюн, жер тешикден / тюп дуниядан башына чыгъарады, бир-бирде уа жауун хорларгъа да болушады («Мырза улу Къанмырза»).

Дунья уллусу къуш (Самая крупная в мире орлица) – встречающаяся в карачаево-балкарских волшебных-героических сказках очень крупная волшебная птица. В благодарность за спасение ее птенцов от дракона она поднимает главного героя из земной дыры / нижнего мира на поверхность, а иногда даже помогает ему одолеть врага («Мырзаев Канмырза»).

Ёгюз – «Ёгюз бла ит» деген жомакъны баш жигити. Урчула урларгъа келгенде, аны ит къорууларгъа суймегенди. Ёгюз кетсе, иеси анга иги къарар деп, алай ёгюз аны алдап, къатына чакъырып, сынсытып, кесин урчуладан къоруулатханды.

Ёгюз (Вол) – главный герой сказки «Вол и собака». Когда воры пришли его красть, собака не захотела его защитить. Когда вол уйдет, хозяин за ней лучше будет смотреть, думала, но вол, обманув ее, подзвал к себе, заставив скулить, защитил себя от грабителей.

Ёзюр – «Таурух» деген жигитлик жомакъда тюбеген сыфат. Ол, патчахны буйругъун бузуп, аны жашларын сау къалдыргъанды.

Ёзюр (Визирь) – встречающийся в героической сказке «Легенда» образ. Он, послушавшись приказа падишаха, помог его сыновьям сохранить жизни.

Жанакъайыт – ол атлы жигитлик жомакъны баш жигити.

Жанакъайыт (Жанакит) – главный персонаж одноименной героической сказки.

Жантемир – «Жанакъайыт» деген жомакъда тюзде жашагъан эки жигит къарындашдан бири.

Жантемир – в сказке «Жанакит» один из двух храбрых братьев, живших на равнине.

Жарлы – жаныуарланы юслеринден жомакъланы баш жигитлеринден бири. Кёп жомакълада тюбейди. Ахырында жаныуарланы хайырындан бай болады.



Жарлы (Бедняк) – один из главных героев сказок о животных. Встречается во многих сказках. В конце, благодаря животным, становится богатым.

Жарыкъбий – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити, Арабий деген патчахны жангыз жашы. Ажайып бууну жыйыны бла бирге ёлтюрюп, аны юсю бла ата журтундан айырылганды, нёгерлери да жоюлуп, кеси жангыз къалып, кёп къыйынлыкъгъа тюшгенди, алай иги адамла (саудюгерчи, къанатлыланы таматасы) билеклик этип, аладан къутулганды. Къуш сыфатха кире билген къызны алып, аны болушлугъу бла юйюне къайтханды.

Жарыкъбий (Жарыкбий, досл.: «Светлый бий / князь») – главный герой одноименной волшебной сказки, единственный сын царя Арабия. Убив со своей дружиной чудесного оленя, вследствие этого был оторван от родины, потеряв друзей, оставшись один, попал во многие беды, но, благодаря поддержке добрых людей (купца, повелителя птиц), выбрался из них. Женившись на девушке, перевоплощавшейся в орлицу, с ее помощью вернулся домой.

Жел Анасы Кибитки – «Ёксюз къызчыкъны юсюнден жомакъда» тубеген сыфат. Ол къарт къатынча кёргюзтюледди. Кулидамны игилиги ючюн аны ай, кюн жаякълы ариу этип, кесине да кёп алтын берип ашырганды, ёге эгечине уа, зарлыгъы, эринчеклиги ючюн, жаякъларына эшек, ит губусла битдиргенди. Кибитки деп мында къарачайлыланы бла малкъарлыланы ата-бабалары мирзеу артханда, жел къаты болгъанда, аны тыярча табынган мажюсю тейриледен бирине, жел иеси Химиккиге айтыла болур. Ол оюмну кертилигине Кулидам бла аны ёге эгечи анга, адетде келгенича айланып: «Жел Анасы Кибитки, эшик арты сибиртги», – айтханлары да шагъатлыкъ этеди.

Жел Анасы Кибитки (Мать Ветра Кибитки) – встречающийся в «Сказке про девочку-сиротку» образ. Она предстает в виде старухи. За добрые качества превращает Кулидам в лунощекую, солнцешекую красавицу и дает ей много золота, а на щеках ее сводной сестры за жадность и леность отращивает ослиные и собачьи бородавки. Возможно, под Кибитки здесь имеется в виду Химикки – покровительница ветра в языческом пантеоне предков карачаево-балкарцев, к которой обращались при веянии зерна или во время долгих и сильных ветров с просьбой усмирить стихию. В пользу этого говорит и традиционное обращение к ней Кулидам и ее сводной сестры: «Жел Анасы Кибитки, эшик арты сибиртги» – «Мать Ветра Кибитки, задверная метла».

Жёге-хан – ол атлы жомакъны баш жигити. Ёге анасы аны атасына жашчыкъны къарангы агъачда къойдурганды. Аны анда тюлкю тапханды, жёге къабукълагъа кийдиргенди эм «Жёге-хан» деген атны бергенди. Тюлкю жашны кеси ёсдюргенди эм жашауун къураганды.

Жёге-хан (досл.: «Липовый король») – главный герой одноименной сказки. Мачеха заставила его отца оставить мальчика в темном лесу. Его там нашла лиса, одела в липовую кору и дала ему имя «Липовый король». Лиса его сама вырастила и устроила его жизнь.

Жин патчахны кызы – «Оруслан» деген сейир-тамаша жомакъда баш жигит эмегенден кыутхарган эм кесине кыатынга алган ариу кызы. Ол жашны, анасы бла аны эмеген эри, кезлерин чыгъарып, ёлюрге атханда, багып, сау этгенди.

Жин патчахны кызы (Дочь царя джиннов) – в волшебной сказке «Оруслан» девушка-красавица, которую главный герой спас от эмегена и взял себе в жены. Она, когда мать и ее муж-эмеген, выколол глаза, бросили парня умирать, выходила и поставила его на ноги.

Жюзюк – «Жарыкбий» деген сейир-тамаша жомакъда Ариугъа гитче заманында атасы берген, алтындан ишленген ажайып зат. Ол, иесини адамларына хата болса, тот болуп, хар зат игиге айланса, жангыдан жылтырап башлаганды.

Жюзюк (Кольцо) – в волшебной сказке «Жарыкбий» изготовленный из золота чудесный предмет, который отец подарил Ариу еще в детстве. Он, если случалась беда с кем-то из членов семьи своего владельца, покрывалось ржавчиной, а когда все приходило в норму, вновь начинало блестеть.

Ийнек – жаныуарланы юсюнден жомакълада тубеген сыфат.

Ийнек (Корова) – встречающийся в сказках о животных персонаж.

Иран – «Таурух» деген жомакъда тубеген, керти да болган кыралны аты.

Иран – название реально существующей страны, упоминаемое в сказке «Легенда».

Кеси бир кырыш, сакъалы минг кырыш – «Къаратон хан» деген жомакъда сагынылган, бийиклиги бир кырыш болган, бек узун сакъаллы шалып, адакбагъа минип жюрюген, обур кишичик. Баш жигитни жаууча бериледи. Аны сакъалындан бир тюгю итлеге сынжыр, батырны кыаты байларча жип болганды, ушкокну, быргысын тот этдирип, бузалганды. Ол кесинден иги да уллу адамны жуталганды, табанындагы жауу уа кез шарайыпланы сау этерча дарман болганды.

Кеси бир кырыш, сакъалы минг кырыш (Сам с карыш, борода в тысячу карышей) – мифический карлик ростом с карыш, с очень длинной бородой, злой колдун, едзящий верхом на петухе. Встречается в сказке «Бездетный хан», где выступает в роли противника главного героя. Один волосок из его бороды может служить цепью для собак, веревкой, накрепко связывающей богатыря, а также может испортить ружье, покрыв его дуло ржавчиной. Он способен проглотить человека во много раз крупнее самого себя, а жир с его пятки является лекарством от глазных дефектов.

Кеси Къуран окъуй, зикир айта турган / кеси окъуй, жырлай турган – «Тюз ётмеги тюзге жетеди» деген сейир-тамаша жомакъда патчах кесини кыаласын шарайыпсыз, тамам этерча, юч жашын да жиберип келтиртген ажайып зат.

Кеси Къуран окъуй, зикир айта турган / кеси окъуй, жырлай турган (Сам Коран читающий, зикры поющий / сам читающий,



поющий – в волшебной сказке «Праведный хлеб праведному достается» нечто волшебное, добыть которое царь отправляет троих своих сыновей, чтобы его замок стал безупречным, совершенным.

Кийиз къамичи – «Сокъур Алиюкъ» деген жомакъда сагъынылгъан эмегенни ажайып заты. «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат», «Бай улу Махамет» деген жомакълада тубеген къамичи адамны жаныуаргъа айландыргъан эсе, мындагъы ёлгенлени сау этерге, сейир кюбюрчюкню ачаргъа, жабаргъа да себеплик этгенди.

Кийизкъамичи (Войлочная плеть) – упоминающийся в сказке «Слепой Алиюк» чудесный предмет, принадлежавший эмегену. Если встречавшаяся в сказках «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет» плеть превращала людей в животных, здесь она помогает оживлять умерших, открывать и закрывать чудесный ларец.

Кирпи – «Эки къоншу» деген жомакъны акъыллы, шуёхлукъну суйген, сакъ баш жигити. Ол хар заманда халаллыкъны эм шуёхлукъну кёргозтеди, кёбюсюне аны эки келишмеген жанын бир бирден айырады. Ол хар заманда да тюзюча этеди.

Кирпи (Ёжик) – умный, дружелюбный и осторожный персонаж сказки «Два соседа». Он всегда выражает доброту и дружелюбие, и в основном его приглашают для разрешения спора обиженных сторон. Он всегда поступает справедливо.

Киштик – «Киштик бла чычханла» деген жомакъны хыйлачы баш жигити. Акъыллы сёзле бла ол чычханланы алдайды. Ала, анга ышанып, биринден къалгъан барысы да ашаладыла.

Киштик (Кот) – хитрый персонаж сказки «Кот и мыши». Мудрыми речами он обманывает мышей. Они, доверившись ему, все кроме одной оказались съеденными.

Кулидам – «Ёксюз къызчыкъны юсюнден жомакъ» деген чыгъарманы баш жигити. Атасындан, анасындан да ёксюз къалып, бир бай къатын кесине алып, кесини къызыны орунуна ишлетип тургъанды. Адеплилиги, жигерлиги, кертичилиги ючюн Жел Анасы Кибитки аны ай, кюн жаякълы этгенди, бир хан а, аны хапарын эшитип, аны кесине къатыннга алгъанды.

Кулидам – главная героиня произведения «Сказка о девочке-сиротке». Оставшись круглой сиротой, была взята в семью одной богатой женщины, которая заставляла ее выполнять всю работу вместо своей дочери. За воспитанность, трудолюбие и честность Мать Ветра Кибитки превратила ее в лунощековую, солнцещековую красавицу, а один хан, прослышав об этом, взял ее себе в жены.

Кюзгю – «Эльяс бла золоуцу» деген сейир-тамаша жомакъда тубеген ажайып зат. Анга къарагъан адам тюрлю-тюрлю жерлени, анда болгъан ишлени кёргенди эм, тауушун эшитдирип, алагъа къатышалгъанды.

Кюзгю (Зеркало) – встречающийся в волшебной сказке «Эльяс и путник» чудесный предмет. Посмотревший в него человек видел различные

места и происходящие там события и посредством своего голоса мог воздействовать на их ход.

Къамичи – «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат», «Бай улу Махамет» деген сейир-тамаша жомакълада сагъынылгъан, аны бла урсала, адамны ат, ит, уку, эшек, ёгюз, мегежин / къабан этген ажайып зат. «Бай улу Бат» деген текстде айтылгъаннга кёре, ол нарт Къарашауайны къамичиси эди.

Къамичи (Плеть) – упоминаемый в волшебных сказках «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет», превращающий человека, если им ударить, в коня, пса, сову, осла, вола, свинью / кабана волшебный предмет. Согласно тексту «Баев Бат», это была плеть нарта Карашауая.

Къанатлыланы таматасы – «Жарыкъбий» деген жомакъда тюбеген сыфат. Къарачай-малкъар кёлден чыгъармачылыкъда ол Сюлемен / Сюлемен-файгъамбарча белгилиди, алай мында аны аты сагъынылмайды, Жарыкъбийни аякъ юсюне салгъан, кесине жаш этип, юйдегили болургъа болушхан къарт кишича бериледи.

Къанатлыланы таматасы (Предводитель пернатых / птиц) – встречающийся в сказке «Жарыкъбий» образ. В карачаево-балкарском устном творчестве он известен как Сюлемен / пророк Сюлемен (Соломон), однако здесь его имя не упоминается, он дается как поставивший Жарыкъбия на ноги, усыновив, помогший ему обзавестись семьей старик.

Къаракъундет улу Къундет – ол атлы жомакъны баш жигити.

Къаракъундет улу Къундет (Каракундетов Кундет) – главный герой одноименной сказки.

Къара тюклю токълу – «Алтын тюклю къуш» деген жомакъда сагъынылгъан ажайып къой. Анга: «Чыч, токълу», – дегенде, алтын къатыш будай тёкгенди.

Къара тюклю токълу (Барашек с черной шерстью) – упоминающийся в сказке «Птица с золотыми перьями» волшебный баран. Когда ему говорили: «Испражняйся, барашек», – он извергал пшеницу вперемешку с золотом.

Къозучукъ – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити. Ол алгъа къарт киши бла къарт къатындан туугъан жаныуарча бериледи, ызы бла, къатын алгъандан сора, адам болады. Ахырында, обур къозу къабын кюйдюргенден сора, алтын къанатлы кёгюрчюн болуп, учуп кетеди. Бу сыфатны юсюнде къарачайлыланы бла малкъарлыланы ата-бабаларыны мажюсю динлерини ызлары ачыкъ эсленедиле.

Къозучукъ (Ягненок) – главный герой одноименной волшебной сказки. Сперва он дается как родившееся от старика и старухи животное, затем, после женитьбы, превращается в человека. В конце, после того, как ведьма сожгла его овечью шкуру, обернувшись златокрылым голубем, улетает. В этом образе отчетливо прослеживаются следы языческих (тотемических) представлений предков карачаево-балкарцев.



Къочхар – «Алакат тайчыкъ» деген жомакъда Сафар деген кишини жети жашындан бири.

Къочхар (Кочхар) – один из семи сыновей человека по имени Сафар в сказке «Чудесный жеребенок».

Къоян – жаныуарланы юсюнден жомакъланы бир къауумуну къарыусуз, алай хыйлачы баш жигити. Ол къёбюсюнде къоркъакълыкъны белгилейди. Алай кесини жигерлигини хайыры бла ол къыйын заманында тынч къутулады. Сёз ючюн, «Къоянны эрини нек жырыкъ болгъанды?» деген жомакъда къоянла биринчиден къоркъакълыкъны белгиси болуп кёргозтюледиле, алай жомакъ баргъаны сайын биз кёребиз, ол къоркъакъ жигит къалай тюрленнгенин. Аны сылтауу ала сюрюучюле бла къойланы къоркъутханлары болгъанды, ол аланы кеслерине ийнандыргъанды. «Къоян бла борсукъ» деген жомакъда да къоян, борсукъну алдап, аны къоркъурча этгенди.

Къоян (Заяц) – в ряде сказок о животных слабый, но хитрый главный герой. Он часто выступает олицетворением трусости, тем не менее, благодаря своей ловкости и находчивости он с лёгкостью выходит из затруднительных положений. Например, в сказке «Отчего у зайца губа рассечена?» изначально зайцы представляются нам символом трусости, но по ходу повествования мы видим, как этот трусливый герой преобразуется. Причиной этому стало то, что они нагнали страх на овец и пастухов, что помогло им поверить в себя. В сказке «Заяц и барсук» заяц также перехитрил барсука и нагнал на него страх.

Къуртха / къуртха къатын – жомакълада сагъынылыгучу аман акъыллы, харам ниетли къарт тиширыу («Къолан атла»). Асламында ол, баш жигитни жауларына болушуп, анга тюрлю-тюрлю аманлыкъла этеди, чурумла къурайды, ахырында уа аны къолундан жоюлады.

Къуртха / къуртха къатын (Старуха; вещунья; ведьма / хитрая старуха) – упоминающаяся в сказках хитрая, корыстная старуха («Пегие кони»). В основном, она, помогая врагам главного героя, всячески вредит ему, чинит препоны, а в конце погибает от его руки.

Къуш къызла – «Жарыкъбий» деген чыгъармада тюбеген сыфатла. Ала адам, къанатлы къапха да киралгъан ажайып жанладыла. Къуш къызла, къанатлыланы таматасы болгъан къарт кишини шауданына келип, Жарыкъбийни эки кере алдап, жукълатып кетгендиле. Ючюнчю кере алдаялмай, кичилери Жарыкъбийге эрге барады, аны бла бирге жашайды, ата журтуна къайтыргъа да болушады. Эри анга ышанмагъанына ёпкелеп, кеслерини тау башындагъы терек бахчада тургъан юйлерине учуп кетгенди. Жарыкъбий, ары барып, артха къайтаргъанды, къатыныны ыразылыгъы бла къуш къабын кюйдюрюп, андан сора ырахат жашап къалгъандыла.

Къуш къызла (Девушки-орлицы) – встречающиеся в произведении «Жарыкъбий» образы. Это чудесные существа, способные принимать облик человека или птицы. Девушки-орлицы, прилетая на родниковое озеро старика, бывшего предводителем птиц, дважды обманув, усыпив Жарыкъбия, улетали. Не сумев обмануть в третий раз, младшая сестра выходит замуж за Жарыкъбия и остается с ним жить, а также помогает ему

вернуться на родину. Обидевшись из-за недоверия мужа, улетела в свой дом, расположенный в саду на вершине горы. Жарыкбий, отправившись туда, возвращает ее обратно и с согласия жены сжигает ее орлиную личину, после чего они стали жить в мире и покое.

Къызыл-Къан-Черек – «Юч къарындаш (I)» деген сейир-тамаша жомакъда сагъынылгъан суу ат.

Къызыл-Къан-Черек (досл.: «Кроваво-Красный-Черек / Река») – упоминаемый в волшебной сказке «Три брата (I)» гидроним.

Къызыл чабакъчыкъ – «Баш сюек» деген жомакъда сагъынылгъан, ханны къатынына ачыуланып, эки жарылып ёлген сейир чабакъчыкъ.

Къызыл чабакъчыкъ (Красная рыбка) – упоминающаяся в сказке «Череп» чудесная рыбка, которая, умерла, треснув пополам от злости на ханскую жену.

Къыттай – «Ёксюз къызчыкъны юсюнден жомакъда» тубеген сыфат. Кулидамны ёге анасыны адам тилде сёлеше билген, эки къызны да къалай келгенлерин къычырып билдирген хоразы.

Къыттай (Петух) – встречающийся в «Сказке о девочке-сиротке» образ. Умеющий разговаривать по-человечески, криком оповещающий всех о том, в каком виде возвращаются обе девушки, петух, принадлежавший мачехе Кулидам.

Магомет-Али – «Юч къарындаш (II)» деген сейир-тамаша жомакъда жарлы сюрюочюню телиге саналгъан кичи жашы. Тамата къарындашлары жалчылыкдан къурлай къайтханларында, иш излерге кетип, келбетлиги ючюн къумурчала болушуп, ханнга ишге киргенди, кёп жигитликле да этип, юйюне кёп ахча келтирип, юйюрюн байыкъдыргъанды.

Магомет-Али – в волшебной сказке «Три брата (II)» считавшийся дураком младший сын бедного пастуха. Когда старшие братья вернулись с заработков с пустыми руками, отправившись на поиски работы, благодаря своей доброте, щедрости получив подсказку от муравьев, поступил на службу к хану и, совершив много подвигов, принесся домой много денег, обогатил свою семью.

Маймул къырал – «Жарыкбий» деген жомакъда сагъынылгъан ажайып къырал. Анда асланла бла уруш бардыргъан маймулла жашагъандыла. Жарыкбий бла нёгерлери ары бууну ёлтюргенлеринден сора тюшген эдиле.

Маймул къырал (Страна Обезьян) – упоминающееся в сказке «Жарыкбий» волшебное государство. Там жили воевавшие со львами обезьяны. Жарыкбий и его друзья попали туда после убийства оленя.

Мараучу – жомакълада тубеучю сыфат. Бир къауум чыгъармада ол анда хапарланган ишни башланыууна себеплик этеди («Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат», «Бай улу Махамет»), бир-бирледе уа баш жигит да болады. Сёз ючюн, «Сокъур Алиюкъ» деген жомакъда ол, ёлтюрюп, сау болгъан кийикден хапарын эшитип, Сокъур Алиюкъну табып, анга жетген



кыйынлыкны болумун биледи эм, эмегени хорлап, къартны жашларын сау этип, анга болушады.

Мараучу (Охотник) – встречающийся в сказках образ. В ряде произведений он способствует завязке сюжета («Бндырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет»), но иногда может выступать и в качестве главного героя. Например, в сказке «Слепой Алиюк», услышав о нем от убитой им и ожившей лани, найдя Слепого Алиюка, узнает подробности постигнутого его горя и, победив эмегена, оживив сыновей старика, помогает ему.

Минчакъ – «Къолан атла» деген жомакъда баш жигитни желкесиндеги чач тыгонде тагъылгъан, аны жаны болгъан ажайып зат.

Минчакъ (Бусина) – в сказке «Пегие кони» висящий на волосинке на затылке главного героя, являющийся хранилищем его души / жизни чудесный предмет.

Минги тау / Эки-Башлы – къарачай-малкъар жомакълада тубеген керти да болгъан тауну аты. «Кюнню чыкъгъанын ким алгъа кёрюр» деген жомакъда, кюн Минги тауну башында чыгъады. Аны биринчи айыу кёреди. Аны себепли башха жаныуарла айыуну башчыгъа санаргъа оноу этедиле.

Минги тау / Эки-Башлы (Эльбрус / Двухголовая / Двухвершинная) – встречающееся в карачаево-балкарских сказках о животных реально существующее название горы. В сказке «Кто первым увидит, как восходит солнце» солнце восходит именно над горой Эльбрус. Его первым видит медведь, поэтому все другие животные решают присудить лидерство ему.

Мияла тау – «Юч къарындаш (II)» деген сейир-тамаша жомакъда сагъынылгъан жер ат. Ол къаягъа аты бла миналгъан жигитге бир хан кесини битеу дунягъа белгили ариу къызын берирге айтханын эшитип, Магомет-Али ол ёчню толтурады, алай ханны къызын алыргъа унамай, юйюне кетеди.

Мияла тау (Мияла-тау, досл.: «Стеклянная / Ледяная гора») – упоминающийся в волшебной сказке «Три брата (II)» топоним. Услышав, что некий хан пообещал выдать замуж свою всемирно известную красавицу-дочь за джигита, который на коне поднимется на эту гору, Магомет-Али выполняет условие, но, отказавшись жениться на дочери хана, возвращается домой.

Мурат – «Алапат тайчыкъ» деген жомакъда Сафар деген кишини жети жашындан бири.

Мурат (собственное имя) – один из семи сыновей человека по имени Сафар в сказке «Чудесный жеребенок».

Мушт ящик / кюбюрчек – «Сокъур Алиюкъ» деген жомакъда сагъынылгъан, ичине да жерни юсюн жапхан жылкы сыйынган, сейир кюбюрчук.

Мушт ящик / кюбюрчек (Ящик / ларец Мушт) – упоминающийся в сказке «Слепой Алиюк» чудесный сундучок, внутри которого помещался табун, способный покрыть всю землю.

Мырза улу Къанмырза – ол атлы жомакъны баш жигити, батыр уучу. Ханны жашын ёсдюрюп, анга юйдегили болургъа болушханды, арта да келинин Джансыз-Мыджыкъдан, жашны да хан жиберген мурдарладан къутхарып, сын болгъанды. Ахырында келини, жангы тапхан уланын ёлтюрюп, аны къаны бла жуууп, отоугъа кетгенде, Къанмырзагъа, сабийчикге да жан киргенди.

Мырза улу Къанмырза (Мырзаев Канмырза) – главный герой одноименной сказки, храбрый охотник. Вырастив ханского сына, помог ему жениться, а затем, спасши невестку от Джансыз-Мыджыка, а парня от посланных ханом убийц, обратился в камень. В конце, когда его невестка, убив своего новорожденного сына, омыв его кровью, ушла в комнату, Канмырза и ребенок ожили.

Некях белгиле – «Юч къарындаш (I)» деген сейир-тамаша жомакъда кичи къарындаш эмегенни дорбунундан чыгъаргъан юч ариу къызыны кюмюшден къочхар мюйюзлеча ишленген затлары. Аланы келтирмей, къызла эки тамата къарындашха эрге барыргъа унамай эдиле.

Некях белгиле (Свадебные знаки / символы) – в сказке «Три брата (I)» изготовленные из серебра в форме бараньих рогов предметы, которые принадлежали трем красавицам, освобожденным младшим братом из норы эмегена. Без них девушки отказывались выходить замуж за двух старших братьев.

Ногъай улу сокъур Ногъай-Неф – ол атлы жомакъны баш жигитлеринден бири.

Ногъай улу сокъур Ногъай-Неф (Ногаев слепой Ногай-Неф) – один из главных героев одноименной сказки.

Обур – сейир-тамаша жомакълада тюбеучю сыфат, тюрлю-тюрлю жаныуарланы (асламында, киштикни) сыфатларына кирип, сабийлени, ариу къызланы буууп, къанларын ичип айланган, аманлыкъдан артха турмагъан тиширыу. Адамгъа къажар сюелген кючлени санына киреди («Къозучукъ»), алай бир-бир жомакълада обур анга болушхан да этиучюдо. Сёз ючюн, «Ындырбай улу Махамет», «Бай улу Бат», «Бай улу Махамет» деген чыгъармалада баш жигит, ит сыфатда аны тутуп, тилегенден сора жибергени ючюн, ол анга, уку сыфатда болгъанында, болушханды, биягъы адам кепге кирип амалын да юйретгенди.

Обур (Ведьма, колдунья, оборотень; вампир, упырь [5, 1008]) – встречающийся в волшебных сказках образ, не гнушающаяся зла, превращаясь в различных животных (чаще всего кошку), душащая, пьющая кровь детей и красивых девушек женщина. Входит в число противостоящих человеку сил («Ягненок»), но в некоторых сказках ведьма помогает ему. Например, в произведениях «Ындырбаев Махамет», «Баев Бат», «Баев Махамет» за то, что главный герой в образе собаки, поймав, когда попросила, отпустил ее, она, когда он был в облике совы, помогла ему, научила способу опять стать человеком.

Окъ – сейир-тамаша жомакълада тюбеучю баш жигит кесини саулугъун неда ёлгенин негерлери / къарындашлары билирча къойгъан зат. Аны отха



атханда («Къолан атла»), неда къарагъанда, сют чыкъса – хар зат тапды, къан тамса уа жигит бир палахха тыошгенин, неда ёлгенин билгендиле.

Окъ (пуля / стрела) – встречающийся в волшебных и волшебного-героических сказках предмет, который главный герой оставляет своим друзьям / братьям, чтобы они были в курсе жив он или мертв. Когда его бросали в огонь («Пегие кони») или просто смотрели на него, если выступало молоко – все в порядке, а если капала кровь, узнавали, что герой попал в беду или же мертв.

Патчах – жаныуарланы юсюнден жомакълада аслам тубеген сыфатладан бири. Битеу баш жигитле алыргъа термилген къызы атасы.

Патчах (Царь) – один из часто встречающихся в сказках о животных персонажей. Отец принцессы, руки которой добиваются главные герои сказок.

Сангыраукъулакъ – «Тал терек бла сангыраукъулакъ» деген жомакъны баш жигити. Тал терек анга жер къойса сую эди, алай кеси уа чирип, жокъ болуп кетгенди.

Сангыраукъулакъ (Гриб) – главный персонаж сказки «Ива и гриб». Хотел, чтобы ива ушла, оставив ему место, но сам сгнил и исчез.

Сарыуек – сейир-тамаша жомакълада тубеучю сыфат. Уллу жилиннга, неда гургуннга ушагъан, бир, неда кёп башы болгъан, бир-бир чыгъармалада уа сёлеше да билген ажайып жаныуар. Асламында ол адамгъа къажу тургъан кючча бериледи («Мырза улу Къанмырза»), алай бир-бирде сарыуек баш жигитге болушхан да этеди («Киши бла сарыуек»).

Сарыуек (Дракон) – встречающийся в волшебных сказках образ. Похожее на большую змею или ящерицу, одно- или многоголовое, а в некоторых произведениях и владеющее речью чудесное животное. В основном позиционируется как враждебная, противостоящая человечеству сила («Мырзаев Канмырза»), но иногда дракон помогает главному герою («Мужчина и дракон»).

Сокъур Алиюкъ – ол атлы сейир-тамаша-жигитлик жомакъны жигити, сюрюучю эмеген жойгъан тогъуз къарындашны аталары, кеси да анга аш болурдан кючден къутулгъанды. Жигит мараучу, эмегенге аны дертин жетдирип, жашларын да сау этип келтиргени ючюн, Алиюкъ анга жангыз къызын, ажайып кюбюрчекни да бергенди.

Сокъур Алиюкъ (Слепой Алиюк) – персонаж одноименной волшебного-героической сказки, отец погубленных эмегеном-пастухом девяти братьев. Сам он едва избежал участи быть съеденным им. За то, что храбрый охотник, отомстив за него эмегену, оживив сыновей, вернул их обратно, Алиюк выдал за него замуж свою единственную дочь и подарил чудесный сундучок.

Солтан-Хамид – «Юч къарындаш (II)» деген сейир-тамаша жомакъда жарлы сюрюучюню къолу хар ишге жарашхан органчы жашы. Байгъа жалчы болуп, ишлей келип, ауруп, аш юйге кирип, иесини къатынын къоркъутханы ючюн, жалсыз къысталгъанды.

Солтан-Хамид – в волшебной сказке «Три брата (II)» умелый в любой работе средний сын бедного пастуха. Нанявшись к баю, работая, за то, что, заболев, войдя в кухонное помещение, напугал хозяйскую жену, был выгнан без платы.

Тазрет – ол атлы батырлыкъ жомакъны баш жигити.

Тазрет – главный герой одноименной богатырской сказки.

Тал терек – «Тал терек бла сангыраукъулакъ» деген жомакъны сангыраукъулакъ бла бир жерде ёсген баш жигити.

Тал терек (Ива) – главный персонаж сказки «Ива и гриб», который рос в одном месте с грибом.

Тарычы – «Бит бла бюрче» деген жомакъны жигити. Бюрче суугъа жыгъылгъанда, битчик аны къутхарыр ючюн тарычыгъа, тары тилей баргъанды.

Тарычы (Фермер) – персонаж сказки «Вошь и блоха». Когда блоха упала в воду, вошка, чтобы спасти ее, пошла к фермеру, прося зерно.

Таубек – «Ахшы-уланны хапары» деген жигитлик жомакъда Таукъуш деген къартчыкъны, жаш заманында онглап, кёзюн да чыгъаргъан адам.

Таубек – в героической сказке «История Ахшы-улана» человек, победивший и выбивший глаз старца Таукуша в его молодые годы.

Таукъуш – «Ахшы-уланны хапары» деген жомакъда тубеген, баш жигитни хорлагъан сокъур къартчыкъ.

Таукъуш (в интерф. «Горный орел») – встречающийся в сказке «История Ахшы-улана» слепой старец, победивший главного героя.

Таулу – «Аламат тайчыкъ» деген жомакъда Сафар деген кишини жети жашындан бири.

Таулу (собственное имя) – один из семи сыновей человека по имени Сафар в сказке «Чудесный жеребенок».

Теке – «Аламат тайчыкъ» деген жомакъда Сафар деген кишини жети жашындан бири.

Теке – один из семи сыновей человека по имени Сафар в сказке «Чудесный жеребенок».

Темиржан – «Жанакъайыт» деген батырлыкъ жомакъда тюзде жашагъан эки жигит къарындашдан бири.

Темиржан – в богатырской сказке «Жанакъайыт» один из двух храбрых братьев, живших на равнине.

Терек – жаныуарланы юсюнден жомакълада тубеген сыфат. «Къарт бла айбуу» деген жомакъда биринчи тубеп, оноуун айтхан ол болгъанды.

Терек (Дерево) – один из персонажей сказок о животных. В сказке «Старик и медведь» дерево одно из первых встречных, у которого спросили совета.



Тёрт аякълы къолан ат – «Къолан атла» деген жомакъда, тулпар къызны ючаякъ атыча, эмегенлени байталларындан туугъан, мараучу жашны тауушлукъ аты.

Тёрт аякълы къолан ат (Четырехногий пегий конь) – в сказке «Пегие кони» рожденный от той же кобылицы эмегенов, что и трехногий конь девушки-богатырши, принадлежащий юноше-охотнику отменный конь.

Тирменчи – «Тюлкую бла тирменчи» деген жомакъны баш жигити. Ол хар заманда да текстледе тюлкую бла бирге тюбейди. Тирменчи бла тюлкуюню юсюнден жомакъла къарачай-малкъар фольклорда кёп вариантлада тюбейдиле.

Тирменчи (Мельник) – главный герой сказки «Лиса и мельник». Он в сказочных текстах всегда встречается вместе с лисой. Сказки про мельника и лису в карачаево-балкарских сказках встречаются в разных вариантах.

Токъмакъ – «Алтын тюкю къуш» деген жомакъда сагъынылгъан ажайып сауут (орус фольклорда – дубинка-самобойка). Анга: «Ур, токъмакъ», – дегенде, иесини жаулары туюгенди. Аны болушлугъу бла къарт Бийбо сейир хант къанганы, токълуну да артха къайтаргъанды, огъурсуз къатынын да жууаш этгенди.

Токъмакъ (Дубинка) – упоминающееся в сказке «Птица с золотыми перьями» волшебное оружие (в русском фольклоре – дубинка-самобойка). ри произнесении слов «Бей, дубинка» начинала избивать врагов своего хозяина. С ее помощью старый Бийбо сумел вернуть чудесный обеденный стол и чудо-барашка, а также перевоспитал свою злую жену.

Тонгуз – «Бит бла бюрче» деген жомакъны жигитлеринден бири. Бюрче суугъа жыгългъанда, битчик аны къутхарыр ючюн тонгузгъа туюк тилей баргъанды.

Тонгуз (Свинья) – один из персонажей сказки «Вошь и блоха». Когда блоха упала в воду, вошка пошла к свинье, просить волосинку, чтобы ее спасти.

Тулпар къыз – «Къолан атла» деген жомакъда баш жигитни эки къарындашын да жыйындары бла бирге къурутхан, жигит, къарыулу, бек да ариу тиширыу. Ючаякъ къолан атны иеси. Мараучу жаш, аны чачын ундурукъ къулакълагъа байлап, жанындагъы хамайылы бла къаргъандыргъандан сора, анга бой салып, къатыны болгъанды.

Тулпар къыз (Девушка-богатырша) – в сказке «Пегие кони» уничтожившая двух братьев главного героя вместе с их дружинами, храбрая, сильная и очень красивая женщина. Хозяйка трехногого пегого коня. После того, как охотник, привязав ее волосы к прикроватным столбикам, вынудил ее поклясться носимым с собой молитвенником (оберегом), подчинившись ему, стала его женой.

Тутбёрю – «Албёрю бла Тутбёрю» деген жомакъны баш жигитлеринден бири.

Тутбёрю – один из главных героев сказки «Албёрю и Тутбёрю».

Тюлкю – жаныуарланы юсюнден къарачай-малкъар халкъ жомакълада кѣп тюбеген сыфат. Ариу, субай, алдаучу жыртхыч жаныуар. Бу жанрда жазылган кѣп текстледе тюлкюню сыфаты экили бериледи. Бир жомакълада («Ышангысыз юч нѣгер» эм б.) ол хыйлачы эм ѳтюрюкчюдю. Жыртхыч жаныуарны халлерин кѣргюзтеди. Башхалада («Тюлкю бла темирчи») ол акъыллы, иги кѣргюзтюледи. Алай къаллай сыфатда болса да тюлкю, ол кеси суйгенни алыр ючюн, бир затдан да къалмайды.

Сейир-тамаша жомакълада тюбегенде, тюлкю амалгъа уста хыйлачыча бериледи. «Сокъур Алиюкъ» деген чыгъармада ол мараучуну жашына бѣрюню хорларгъа болушады, къой, ариу кызы, мюфтю сыфатлагъа да киреди, къыл къобузну ишлей, анда ойнай да биледи.

Тюлкю (Лиса) – образ, часто встречающийся в карачаево-балкарских сказках о животных. Красивый, стройный, хитрый, хищный зверь. Во многих текстах сказочного жанра в карачаево-балкарском фольклоре образ лисы изображается двойко. В одних сказках («Ненадежные три друга» и др.) она является коварной и хитрой. В ней пробуждается образ дикой хищницы. В других («Лиса и кузнец» и др.) она представляется умной, положительной героиней. Но в какой роли лиса ни была бы, она пойдет на все, чтобы получить свое.

Когда встречается в волшебных сказках, лиса предстает в образе хитреца, умелого дельца. В произведении «Слепой Алиюк» она помогает сыну охотника победить волка, превращается в откормленного барана, девушку-красавицу, муфтия, способна изготовить скрипку и сыграть на ней.

Улакъ – жаныуарланы юсюнден къарачай-малкъар халкъ жомакълада бѣрюню хорлаялган, къоркъуталган жигитледен бири.

Улакъ (Козленок) – в карачаево-балкарских народных сказках о животных один из персонажей, сумевших одолеть, напугать волка.

Хажимырза – «Къозучукъ» деген сейир-тамаша жомакъда жаныуар сыфатлы баш жигитге юйдегили болургъа болушхан шыйых.

Хажимырза (Хажимурза) – в волшебной сказке «Ягненок» шейх, помогший зооморфному главному герою создать семью.

Хамайыл – «Къолан атла» деген жомакъда тулпар кызыны жанында жюрютген сыйлы заты / китабы. Аны бла къаргъаннгандан сора, кызы толусунлай мараучу жашха бой салгъанды, къарыуун тас этгенди.

Хамайыл (Молитвенник / оберег) – в сказке «Пегие кони» носимый девушкой-богатыршей с собой священный предмет / книга. После клятвы этим предметом, девушка полностью подчинилась юноше-охотнику, потеряла свою силу.

Хан – жаныуарланы юсюнден жомакълада кѣп тюбеген сыфатладан бири. Битеу баш жигитле алыргъа термилген кызыны атасы.

Хан – один из часто встречающихся персонажей сказок о животных. Отец принцессы, руки которой добиваются главные герои сказок.



Хант кьанга – «Алтын тюкло кьуш» деген жомакъда сейир кьанатлы Бийбогъа берген ажайып тепси. Орус фольклордагъы скатерть-самобранкагъа келишеди. Анга къарап: «Хант кьанга», – дегенде, юсю тюрлю-тюрлю ашарыкъладан толгъанды.

Хант кьанга (Обеденный стол) – в сказке «Птица с золотыми перьями» подаренный чудесным пернатым Бийбо волшебный столик. Соответствует скатерти-самобранке из русского фольклора. Когда, глядя на него, произносили: «Обеденный стол», – его поверхность заполнялась разнообразными кушаньями.

Хасан – «Алладин» деген сейир-тамаша жомакъда баш жигитни атасы, быстыр тикген уста.

Хасан – в волшебной сказке «Алладин» отец главного героя, умелый портной.

Худуйчукъ – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити. Аны жети жашы болгъанды. Аланы кечиндирир ючюн, патчахха барып, аны буйругъу бла бешбашлы эмегенни алгъа агъачындан кесип келтирип, ызы бла уа кесин да агъач кюбюрге беклеп тапдыргъанды. Ол эмеген патчахны ёлтюргенден сора, Худуйчукъ, аны да хыйла бла беш башын да тюшюрюп, кеси патчах болгъанды.

Худуйчукъ (Худуйчик) – главный герой одноименной волшебной сказки. У него было семь сыновей. Чтобы их прокормить, пойдя к царю, по его приказу сперва рубил и возил дрова из леса пятиглавого эмегена, а затем доставил и его самого, запертым в сундук. После того, как эмеген убил царя, Худуйчик, с помощью хитрости снеся все его пять голов, сам стал царем.

Хыйнычы араблы / араплы – «Алладин» деген сейир-тамаша жомакъда ажайып чыракъгъа ие болургъа кюрешген, баш жигитге къажар тургъан, ахырында аны кьолундан жоулгъан хыйлачы, аман акъыллы адам.

Хыйнычы араблы / араплы (араб-колдун) – в волшебной сказке «Алладин» пытающийся завладеть чудесной лампой, противостоящий главному герою и в конце погибающий от его руки хитрый, злобный человек.

Чомарт – «Чомарт бла Момарт» деген жомакъны тюрлюню, айыуну, бёрюню хапарларын эшитип, аны бла хайырланып, байыкъгъан, тюз ниетли баш жигити.

Чомарт – положительный герой сказки «Чомарт и Момарт», который, услышав рассказы лисы, волка и медведя и воспользовавшись этим, разбогател.

Чыракъ – «Алладин» деген жомакъда сагъынылгъан, ичинде да иесини хар айтханын толтургъан жин киши жашагъан, ажайып зат.

Чыракъ (Лампа) – упоминающийся в сказке «Алладин» чудесный предмет, внутри которого жил джинн, исполнявший все пожелания своего хозяина.

Чычханла – «Киштик бла чычханла» деген жомакъны асыры ышаныгучу эм акъылсыз баш жигитлери Аланы кемсиз киштикге ийнанганлары ёлюмге тубетеди

Чычханла (Мыши) – доверчивые и глупые герои сказки «Кот и мыши». Безоговорочное доверие коту, приводит их к гибели.

Ындырбай улу Махамет – ол атлы сейир-тамаша жомакъны баш жигити. Къатыны, тосу бла бирге, аны, ажайып къамичи бла уруп, алгъа ат, ызы бла ит, ахырында уа уку этедиле. Алай обурну болушлугъу бла Махамет, биягъы адам болуп, дертин жетдиреди.

Ындырбай улу Махамет (Ындырбаев Махамет) – главный герой одноименной волшебной сказки. Его жена вместе с любовником, ударяя его волшебной плетью, превращают его сперва в коня, затем в пса, а в конце – в сову. Однако с помощью ведьмы Махамет вновь становится человеком и мстит своим обидчикам.

Эльяс – «Эльяс бла золоуцу» деген сейир-тамаша жомакъны бек акъыллы болгъан баш жигити. Юч жылында анасындан ёксюз къалып, ёге анасы суймей, онтёрт жылында юйюнден атасыны къарт анасына кетерге тюшгенди, андан а юч жылдан жашауну билир, жерлени кёрюп ючюн жолоучулукъгъа кетип, бир кишиге тубеп, аны юйюне барып, анда къалады эм отуз жылны жашайды. Ажайып кюзгюде кёрген ишлеге къатышып, башына гюнях алады да, киши юйюнден къыстайды. Юч жылдан сора, гюняхларын телеп, кишини ариу къызын алады. Бир къауум жылдан, къайын атасы ёлгенден сора, Эльяс, аны байлыгъыны жартысын да алып, акъылманлыгъы ючюн ол тийрени ханларына тамата болады. Ёге анасыны этген аманлыкъларын биллип, халкъны да жыйып, анга сюд этип, адам жашамагъан айрыкамгъа кёчюрюп, аны бла дертин жетдиреди.

Эльяс – очень умный главный герой волшебной сказки «Эльяс и путник». В три года оставшись без матери, не полюбившись мачехе, в четырнадцать лет ему пришлось переселиться к бабушке по отцу, а оттуда через три года отправляется в путешествие, чтобы познать жизнь, повидать земли. Повстречав путника, пойдя к нему домой, остается там и живет тридцать лет. Вмешавшись в события, увиденные в волшебном зеркале, совершает много грехов, за что хозяин выгоняет его из дома. Спустя три года, искупив свои грехи, женится на красавице-дочери хозяина. Через несколько лет, после того, как умирает его тесть, Эльяс, получив половину его богатства, благодаря своей мудрости становится главой всех ханов той местности. Узнав о злодеяниях своей мачехи, собрав народ, учинив над ней суд, выселяет ее на необитаемый остров, тем самым отомстив ей.

Эмеген – къарачай-малкъар нарт эпосда, сейир-тамаша эм жаныуарланы юсюнден жомакълада тубеген сыфат. Жомакълада да эмегенлени эки тюрлюсю барды: адамлагъа жаулукъ этген, бир, неда кёп башы болгъан, бек къарыулу, эриши затла [6, 1070] («Сокъур Алиюкъ», «Худуйчукъ», «Юч къарындаш (I)»); баш жигитге ата / къарындаш болуп, анга сёз бла иш бла да болушургъа кюрешген эмегенле («Къолан атла», «Юч къарындаш (I)»). Бу экинчи къауумну сыфатларында башха миллетли адамла берилгенге ушайды.



Эмеген – встречающийся в карачаево-балкарском нартском эпосе, волшебных и сказках о животных образ. И в сказках также наличествуют два вида эмегенов: враждебные по отношению к людям, одно- или многоголовые, очень сильные, уродливые существа [6, 1070] («Слепой Алиюк», «Худуйчик», «Три брата (I)»); став главному герою отцом / побратимом, старающиеся помочь и словом, и делом эмегены («Пегие кони», «Три брата (I)»). По всей видимости, через образы второй группы передавались иноплеменные соседи карачаевцев и балкарцев.

Эмеген къатын – «Къолан атла», «Юч къарындаш (I)» дегенча жомакълада тубеген сыфат. Нарт эпосдача, мында да ол, баш жигитни эмчек анасы болуп, эринден (жашларындан) къоруулайды, анга болушургъа кюрешеди.

Эмеген къатын – встречающийся в сказках «Пегие кони», «Три брата (I)» и др. образ. Как и в нартском эпосе, здесь она становится молочной матерью главного героя и защищает его от своего мужа (сыновей), старается ему помочь.

Эчки – жаныуарланы юсюнден къарачай-малкъар жомакълада баш жигитледен бири. Ол къалгъан юй жаныуарладан эсе акъыллы, эсли кёргюзтюледи, эм жыртхыч жаныуарла бла къазауатда хар заманда хорлам алады.

Эчки (Коза) – один из главных героев карачаево-балкарских сказок о животных. Она всегда изображается более умной и смышленной, чем остальные домашние животные, и в борьбе с хищными животными всегда берет верх.

Юч аякълы къолан ат – «Къолан атла» деген жомакъда эмегенлени байталларындан туууп, тулпар къыз бёрюден къутхарып ёсдюрген ат. Аны тылпыуу къара туманча кёрюннгенди, ургъаны адамланы, жаныуарланы да къол этгенди. Иесини тынчлыгъын сакълагъанды, къоркъуу болса, кишнеп, белги бергенди.

Юч аякълы къолан ат (Трехногий пегий конь) – в сказке «Пегие кони» рожденный от кобылицы эмегенов, спасенный от волка и выращенный девушкой-богатыршей конь. Его дыхание казалось черным туманом, а его удар обращал людей и животных в пепел. Охранял покой своей хозяйки, при виде опасности предупреждал ржанием.



ЛИТЕРАТУРА

1. *Джуртубаев М.Ч.* Карачаево-балкарский героический эпос. М.: Поматур, 2003. 288 с.
2. Къарачай-малкъар жомакъла, таурухла, айтыула (Карачаево-балкарские сказки, легенды, предания): в 2-х т. Т. 2. / сост., предисловие Т.М. Хаджиевой. Нальчик: Эль-Фа, 2003. 472 с.
3. Къарачай-малкъар-орус сѣзлюк (Карачаево-балкарско-русский словарь). М.: Русский язык, 1989. 832 с.
4. Къарачай-малкъар тилни ангылатма сѣзлюгю (Толковый словарь карачаево-балкарского языка): в 3-х т. Т. I. А–Ж. Нальчик: Эль-Фа, 1996. 1019 с.
5. Къарачай-малкъар тилни ангылатма сѣзлюгю (Толковый словарь карачаево-балкарского языка): в 3-х т. Т. II. З–Р. Нальчик: Эль-Фа, 2002. 1171 с.
6. Къарачай-малкъар тилни ангылатма сѣзлюгю (Толковый словарь карачаево-балкарского языка): в 3-х т. Т. III. С–Я. Нальчик: Эль-Фа, 2005. 1159 с.
7. Къарачай-малкъар халкъ жомакъла (Карачаево-балкарские народные сказки): в 2 кн. Кн. 1 / сост. С.А. Мусукаева. Нальчик: Эльбрус, 2012. 592 с.



Научное издание

СВОД КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКОГО ФОЛЬКЛОРА

Том 3

КАРАЧАЕВО-БАЛКАРСКАЯ СКАЗКА

На русском и карачаево-балкарском языках

Верстка и техническое редактирование
А.В. Гергоковой

Художественное оформление
А.В. Гергоковой

Публикуется в авторской редакции

Подписано к размещению 13.12.2017
Формат 70x108¹/₁₆. Гарнитура Times New Roman
Усл. п. л. 87. Заказ 194